

पारा नं - 1 से 15
पेज नं - 001 से 544

क्रूरआन मजीद

मय तर्जुमा व अरबी मतन

तर्जुमा

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह॰

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

एम॰ ए॰ (अलीग॰)

ibsbookstore.com





यह ऐसी किताब है जिसमें कोई शुब्हा नहीं

कुरआन मजीद

(मय तर्जुमा व अरबी मतन)

तर्जुमा

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रह०

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी एम. ए. (अलीग०)
मौहल्ला महमूद नगर, मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०
नई दिल्ली

© All Rights Reserved with
Islamic Book Service (P) Ltd.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted
in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise
without the prior written permission of the Publisher.

القرآن الكريم

कुरआन मजीद

मय हिन्दी तर्जुमा, अरबी मतन एवं लिपियंतरण

Translation by

Hakimul Ummat Hadhrat Maulana Ashraf Ali Thanvi Rah.

Rendered in Hindi by

Maulana Mohammad Imran Qasmi Bigyanvi

ISBN 978-81-7231-456-9

First Published 2003
Nineteenth Impression 2021

Published by *Abdus Sami* for

Islamic Book Service (P) Ltd.

1516-18, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002 (India)

Tel.: +91-11-23244556, 23253514, 23286551

e-mail: info@ibsbookstore.com

Website: www.ibsbookstore.com

Our Associates

Husami Book Depot, Hyderabad (India)



Printed in India

अपनी बात

अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि उसने इस नाचीज़ को एक अहम और अज़ीमुश्शान दीनी ख़िदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं, आप चौदहवीं सदी के ज़बरदस्त आलिमे दीन गुज़रे हैं। ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर (उ. प्र.) के कसबा 'थाना भवन' में 5 रबीउस्सानी 1280 हिजरी में पैदा होने वाले इस आलिमे दीन ने इस्लाम की वे ख़िदमात अन्जाम दीं कि जिनसे कियामत तक उम्मत मुस्लिमा फ़ायदा उठाती रहेगी और अपने दीन को सँवारती रहेगी। मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह. ने करीब बीस साल की उम्र में इस्लामी दुनिया की अज़ीम दीनी दर्सगाह दारुल उलूम देवबन्द से फ़राग़त हासिल की, आपने करीब चौदह साल कानपुर में पढ़ाया और फ़तवे लिखने की ख़िदमत अन्जाम दी। उसके बाद हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. की हिदायत के मुताबिक़ ख़ानकाह इमदादिया 'थाना भवन' में रिहाइश इख़्तियार की, और उम्र की आखिरी साँस तक यहीं रहकर दीनी ख़िदमात अन्जाम देते रहे। आपका इन्तिकाल 17 रजब 1362 हिजरी (19 जौलाई 1943 ई.) में हुआ।

हज़रत थानवी रह. की किताबों की तायदाद तकरीबन एक हज़ार तक पहुँचती है, जिनमें इस्लामी उलूम और दीनी व इल्मी मौजूआत के तकरीबन हर गोशे में आपने उम्मत की रहनुमाई फ़रमाई। दो बातों पर आपका ध्यान ख़ास तौर पर रहा- एक समाज का सुधार और इस सिलसिले में इस्लामी तालीमात का प्रसार और उनको आम करना। दूसरे तसवुफ़ यानी इनसान का अपनी हकीक़त को पहचान कर दुनिया में आने और पैदा किए जाने के मक़सद को सामने रखकर उन तकाज़ों को पूरा करना जिनका उसके पैदा करने वाले और मालिक ने उससे मुतालबा किया है।

आपने उम्मत मुस्लिमा की हर-हर मैदान में रहनुमाई फ़रमाई और इस्लामी तालीमात को दुनिया के सामने उनके असली रंग में पेश किया। उम्मत के अन्दर जो बिगाड़ और ख़राबियाँ हैं आपने उनकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई और उनके सुधार की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया इसी लिए आपका लक़ब "हकीमुल उम्मत" मशहूर हुआ।

आप हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. के ख़लीफ़ा थे, मख़्लूक की रहनुमाई और बैअत की लाईन से भी आपने ज़बरदस्त ख़िदमतें अन्जाम दीं। आपके ख़लीफ़ाओं में बड़ी-बड़ी हस्तियाँ शामिल हैं, जिनमें बड़े-बड़े अल्लामा, दीनी रहनुमा, सूफ़िया और समाज सुधारक शामिल हैं।

जिन दीनी किताबों का प्रकाशन हर साल लाखों में होता है उनमें हज़रत थानवी रह. की दो किताबें पहली सफ़ में अपना दर्जा रखती हैं- बहिश्ती ज़ेवर और तर्जुमा-ए-कुरआन। ये दोनों किताबें हर साल लाखों की तायदाद में छपती हैं, और मुस्लिम कौम की दीनी रहनुमाई और हिदायत का ज़रिया बन रही हैं।

मुझे हज़रत थानवी रह. की शख़्सियत और आपकी किताबों से बचपन ही से मुनासबत और ताल्लुक रहा। मेरे उस्ताज़ मोहतरम हज़रत मौलाना कारी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब (मोहतामिम मदरसा मसीहुल उलूम ग्रा. बिज्ञाना ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.) को हज़रत थानवी रह. की किताबों ख़ास तौर पर उनके मवाज़िज़ (यानी तकरीरों) से एक तरह का इश्क़ है। मैंने होश संभाला तो अपनी बस्ती में इस मदरसे को कायम होता देखा, यही मेरी पहली दर्सगाह (शिक्षा स्थान) है। मौलाना कारी अब्दुल ग़फ़ूर साहिब के इस जौक का थोड़ा बहुत हिस्सा इस नाचीज़ को भी हासिल हुआ, और हज़रत थानवी रह. की जात व शख़्सियत से बचपन ही में एक अकीदत व मुहब्बत कायम हो गयी जो अल्हम्दु लिल्लाह दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली गयी।

पिछले कई सालों से मुझे दीनी किताबों की प्रूफ़ रीडिंग और हिन्दी अनुवाद का मौका मिलता रहा है, कई

बार मेरी ख्वाहिश हुई कि हज़रत थानवी रह. की कुछ अहम किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया जाए ताकि हिन्दी पढ़ने और जानने वाले हज़रत भी उनसे फ़ायदा उठा सकें।

करीब दो साल पहले की बात है कि मेरे करम-फरमा जनाब अब्दुल मुईन खाँ साहिब डायरेक्टर इस्लामिक बुक सर्विस ने नाचीज़ बन्दे से हिन्दी में तर्जुमा-ए-कुरआन छापने का इरादा ज़ाहिर किया और मुझे फरमाइश की कि हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी या हज़रत मौलाना महमूदुल हसन शैखुल-हिन्द के तर्जुमों में से कोई एक तर्जुमा को हिन्दी में करने की खिदमत मैं अन्जाम दूँ। चूँकि काम अहम था इसलिए एक बार को मेरी हिम्मत नहीं हुई मगर फिर भाई अब्दुल मुईन खाँ के इसरार (जिसमें इस नाचीज़ के साथ उनका बिरादराना ताल्लुक और खुलूस शामिल था) के सबब मैंने अल्लाह का नाम लेकर काम शुरू किया और नमूने के तौर पर एक पारः करके ले गया, ताकि वह किसी माहिर और ज़िम्मेदार शख्स को दिखला कर यह तय कर लें कि हिन्दी अनुवाद में ज़बान का मेयार क्या रहे। अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि उनको इस नाचीज़ का किया हुआ काम पसन्द आया और उन्होंने फौरन मुझे इस काम की तकमील (यानी पूरा करने) का हुक्म दिया और उसूल व ज़ाबते के तहत एक मुआहदा उसी वक़्त तैयार कराकर बन्दे को इनायत फरमाया।

तर्जुमा का काम शुरू किया तो बहुत-सी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा। हज़रत थानवी रह. की ज़बान व तहरीर बड़ी ही नपी-तुली और इल्मी अन्दाज़ की है, उनकी तहरीर के मफहूम व मतलब को हिन्दी में मुन्तकिल करना कोई आसान बात नहीं। मैंने अपनी बिसात-भर पूरी कोशिश की है कि उनकी तहरीर का मफहूम व मतलब ज़रूर निकल आये और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे इसमें काफ़ी हद तक कामयाबी भी मिली है। तफ़सीर में कहीं-कहीं ज़बान और अन्दाज़े बयान इस क़दर इल्मी है कि पूरी कोशिश के बावजूद शायद सौ फीसद उसे आसान ज़बान में बयान करने में नाचीज़ को कामयाबी न मिली हो मगर मफहूम व मतलब को पकड़ने की भरपूर कोशिश की है, ऐसे मक़ामात (स्थान) चन्द ही नज़र आयेंगे। अल्लाह का शुक्र है कि यह तर्जुमा इतना आसान हो गया है कि उर्दू तर्जुमा इसके सामने मुश्किल मालूम हो सकता है मगर इससे आसानी से फ़ायदा उठाया जा सकता है।

हज़रत थानवी रह. ने अपने तर्जुमा में मक़सद व मफहूम को स्पष्ट और वाज़ेह करने के लिए ब्रेकेट को इस्तेमाल किया है, ऐसे में मुझे जहाँ यह महसूस हुआ कि यहाँ तर्जुमा का असल लफ़्ज़ बाकी रहना चाहिए या यह कि हिन्दी का जो मुतबादिल लफ़्ज़ हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह उस उर्दू लफ़्ज़ की सौ फीसद नुमायन्दगी और तर्जुमानी नहीं करता, तो अगर हम भी वहाँ ब्रेकेट में इबारत बढ़ाते तो फिर यह पहचान करनी दुश्वार हो जाती कि कौनसी इज़ाफ़े वाली इबारत हज़रत थानवी रह. की है और कौनसी इबारत इस नाचीज़ (यानी हिन्दी अनुवादक) की है। इस मुश्किल को हमने इस तरह हल किया कि हज़रत थानवी रह. की ब्रेकेट वाली इबारतों को ब्रेकेट ही में रहने दिया और जहाँ कहीं इस नाचीज़ (हिन्दी अनुवादक) को इज़ाफ़े की ज़रूरत महसूस हुई तो तर्जुमा के अन्दर उद्धरण चिन्ह (" ") के दरमियान उस इबारत का इज़ाफ़ा किया, अब पढ़ने वाला अच्छी तरह समझ सकता है कि कौनसी इबारत हज़रत थानवी की है और कौनसा इज़ाफ़ा हिन्दी अनुवादक का। तफ़सीर के अन्दर चूँकि उर्दू अनुवादक (हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रह.) ने ब्रेकेट का इस्तेमाल नहीं किया है, शायद ही पूरी तफ़सीर में दो-चार जगह हो, इसलिए तफ़सीर में बन्दे ने अगर कहीं किसी बात को वाज़ेह करने की ज़रूरत पेश आई है तो ब्रेकेट का इस्तेमाल किया है।

मैं बहुत आभारी हूँ जनाब प्रोफ़ेसर मुहम्मद सुलैमान साहिब (देवबन्द) और जनाब प्रोफ़ेसर अब्दुर-रशीद आगवान साहिब (देहली) का, जिन्होंने मेरे इस काम को तवज्जोह की नज़र से देखा और प्रशंसा व दुआओं और मुफ़ीद मशिवरों के ज़रिये मेरी हिम्मत बढ़ाई। इसी तरह मुझे जनाब ख़ालिद निज़ामी साहिब (देहली) का

भी शुक्रिया अदा करना है जिन्होंने बड़ी मेहनत से इस तर्जुमा की प्रूफ रीडिंग की और अपने तजुर्बात से मुझ नाचीज़ की रहनुमाई फ़रमाई, अल्लाह तआला उनको इसका दोनों ज़हान में बेहतरीन बदला इनायत फ़रमाये। साथ ही दिल से दुआ निकलती है अपनी बच्ची ज़ैनब ख़ातून के लिए जो अगरचे अपनी उम्र की सिर्फ़ बारहवीं मन्ज़िल में है मगर अल्लाह तआला ने उसको एक ख़ास सलीके से नवाज़ा है, ग़लतियों के बनाने और प्रूफ़ रीडिंग में इस बच्ची ने भी मेरा बहुत सहयोग किया।

मैंने इस तर्जुमा को हिन्दी का रूप देने में इस बात का पूरा ख़याल रखा कि हिन्दी के मुश्किल अल्फ़ाज़ न आने पायें बल्कि आम बोल-चाल में जो उर्दू-हिन्दी की मिली-जुली ज़बान इस्तेमाल होती है, कोशिश की है कि उसी आम बोल-चाल के स्तर की ज़बान इस्तेमाल की जाए ताकि उसको हर शख्स आसानी से समझ सके। क्योंकि उर्दू ज़बान भले ही तालीमी इदारों से नापैद होती जा रही हो, भले ही उसके लिखने-पढ़ने वालों की तायदाद में कमी आ रही हो, मगर इसकी अदायगी में आसानी, मिठास और मतलब के समझने-समझाने में असरदार होने के सबब आम बोल-चाल और मीडिया पर अस्सी फीसद तक आज भी इस ज़बान का कब्ज़ा बरकरार है।

मैं एक बार फिर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूँ जिसने मुझे अपनी पवित्र और कियामत तक रहने वाली और इनसानियत की रहनुमाई करनी वाली किताब कुरआन मजीद की इस खिदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई। न सिर्फ़ हिन्दी अनुवाद बल्कि इसकी कम्पोज़िंग और सैटिंग भी मेरी ही निगरानी में अन्जाम पाई और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे खुद इसकी सैटिंग करने और तरतीब देने का मौक़ा मिला। यह काम करीब डेढ़ साल की मुद्दत में पूरा हुआ।

कुरआन पाक के अरबी मतन को किसी दूसरी ज़बान में मुन्तकिल करने के बारे में मैं अपनी राय “एक ज़रूरी तंबीह” के उन्वान में लिख चुका हूँ। कुरआन पाक के हुसूफ़ को देखना और इज़्ज़त व अदब से वुजू की हालत में छूना भी इबादत का दर्जा रखता है, ऐसे में वह फज़ीलत किसी और ज़बान में कैसे हासिल हो सकती है जो अरबी ज़बान में है। मेरी तमाम मुसलमानों से गुज़ारिश है कि कुरआन पाक की तिलावत की सआदत और अज़ीम दौलत को हासिल करने के लिए कुरआन पाक को अरबी ही में सीखें और पढ़ें, इससे हमें दोनों ज़हान की कामयाबी हासिल होगी।

इनसान अपनी कोशिश का मुक़ल्लफ़ है, हमने भी पूरी कोशिश की है कि हमारा यह काम ग़लतियों से पाक हो जाए, मगर इनसान की कोई कोशिश ग़लती से पाक नहीं हो सकती, यह मक़ाम अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को बख़्शा है कि अल्लाह तआला ख़ताओं और ग़लतियों से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है। हमने पूरी कोशिश की है कि इस हिन्दी मतन, तर्जुमा और तफ़सीर में कोई ग़लती न रहे, अगर आपकी नज़र से कोई ग़लती गुज़रे तो मेहरबानी फ़रमा कर प्रकाशक को उसकी सूचना दें ताकि अगले संस्करण में उसको दुरुस्त किया जा सके। शुक्रिया।

आख़िर में अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारी इस मेहनत में इख़लास पैदा फ़रमाये और इसको कबूल फ़रमाये आमीन। इसके प्रकाशन का बन्दोबस्त करने वाले इदारे ‘इस्लामिक बुक सर्विस/समी पब्लीकेशंस प्रा. लि.’ के मालिकान, अधिकारियों और कारकुनान सभी को इसकी ख़ैर व बरकत से नवाज़े, आमीन।

मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अलीग.)

79 महमूद नगर, गली न. 6 मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.

25.12.2002

कुरआन मजीद के नाज़िल होने, इकट्ठा किए जाने और तरतीब देने के हालात

जानते हो कुरआन मजीद क्या चीज़ है? एक मुकद्दस और पावेत्र किताब है जो सबसे आखिरी नबी तमाम पैगम्बरों के सरदार मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई। यह अर्श व कुर्सी के मालिक का कलाम है, जो उसने अपने एक सम्मानित पैगम्बर और मुकर्रम बन्दे से किया। इस्लाम की बिना इसी पाक आसमानी फ़रमान पर है। जिसने फ़रमाँबरदारी की वह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुआ और जिसने ज़रा भी सरकशी और नाफ़रमानी की वह उस पाकीज़ा जमाअत से ख़ारिज हो गया और अल्लाह जल्ल शानुहू के बाग़ियों में शामिल हुआ। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई उस वक़्त आपको नुबुव्वत अता फ़रमाई गई और रिसालत का ताज आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर पर रखा गया। उसी ज़माने से कुरआन पाक के नाज़िल होने की शुरूआत हुई। वक़्त वक़्त पर ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा-थोड़ा तेईस (23) साल तक नाज़िल होता रहा। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नाज़िल नहीं किया गया। (1)

सही यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के बाद रमज़ान की शबे-क़द्र में पूरा कुरआन मजीद लौहे-महफूज़ से इस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं, अल्लाह रब्बुल इज़ज़त के हुक्म के मुताबिक़ नाज़िल हो गया और उसके बाद हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम को जिस वक़्त जिस क़द्र हुक्म हुआ उन्होंने इस मुकद्दस कलाम को बिलकुल उसी हालत में बिना किसी कमी-बेशी और बिना किसी बदलाव और अदल-बदल के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुँचा दिया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें, कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें, कभी-कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअत में 'वह्य' कहते हैं। उलमा ने 'वह्य' के अनेक तरीक़े हदीसों से निकाल कर पेश किये हैं।

1. फ़रिश्ता 'वह्य' लेकर आये और एक आवाज़ घन्टी जैसी मालूम हो। यह कैफ़ियत बहुत-सी हदीसों से साबित है, और यह किस्म 'वह्य' की तमाम किस्मों में सख़्त थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत तकलीफ़ होती थी, यहाँ तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी 'वह्य' आती है तो मैं समझता हूँ कि अब मेरी जान निकल जायेगी।

2. फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

3. फ़रिश्ता आदमी की शक्ल में आकर बात-चीत करे। यह किस्म बहुत आसान थी, इसमें तकलीफ़ न होती थी।

4. अल्लाह तआला बिना किसी वास्ते के जागने की हालत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कलाम फ़रमाये, जैसा कि शबे-मेराज में।

5. अल्लाह तआला ख़्वाब की हालत में कलाम फ़रमाए। यह किस्म भी सही हदीसों से साबित है।

1. जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इन्जील और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर ज़बूर। ये सब किताबें पूरी एक ही दफ़ा में नाज़िल हो गईं। और इसपर सबका इतिफ़ाक़ है कि ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरतीं। (इत्फ़ाक़)

6. फरिश्ता ख्वाब की हालत में आकर कलाम करे। मगर याद रहे कि अखीर की दो किस्मों (5. 6.) की 'वह्य' से कुरआन मजीद खाली है। पूरा कुरआन जागने की हालत में नाज़िल हुआ। अगरचे बाज़ उलमा ने सूर: कौसर को अखीर की किस्म से करार दिया है मगर मुहक्किक्क उलमा ने इसको रद्द कर दिया है और उनके शुब्हे का काफी जवाब दे दिया है। (इत्कान)

कुरआन मजीद के थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होने में यह भी हिक्मत थी कि उसमें बाज़ आयतें वे थीं जिनका किसी वक़्त मन्सूख़ (यानी निरस्त और रद्द) कर देना खुदा-ए-तआला को मन्ज़ूर था। कुरआन मजीद में तीन किस्म के मन्सूखात हैं। बाज़ वह जिनका हुक्म भी मन्सूख़ और तिलावत भी मन्सूख़।

मिसाल: 1. सूर: 'लम् यकुन्' में "लौ का-न लि-इब्नि आद-म वादियम् मिम्-मालिन् ल-अहब्-ब अय्यकू-न इलैहिस्-सानी, व लौ का-न लहुस्-सानी ल-अहब्-ब अय्यकू-न इलैहिम्स्-सालिसु व ला यम्लउ जौफ़िन् आद-म इल्लत्-तुराबु व यतूबुल्लाहु अला मन् ता-ब" भी था।

मिसाल: 2. दुआ-ए-कनूत भी कुरआन मजीद की दो सूरतें थीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गयी मगर हुक्म बाकी है। जैसे 'आयते रज़्म' कि हुक्म उसका बाकी है मगर तिलावत उसकी नहीं होती। ये दोनों किस्में कुरआन मजीद से निकाल दी गईं और इनका लिखना भी कुरआन मजीद में जायज़ नहीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत बाकी है मगर हुक्म मन्सूख़ हो गया है। यह किस्म कुरआन मजीद में दाख़िल है और इसकी बहुत-सी मिसालें हैं। बाज़ अलिमों ने मुस्तक़िल किताबें लिखकर उनको जमा किया है। तफ़सीर के फ़न में उनसे बहुत बहस होती है मगर यह मक़ाम उनकी तफ़सील का नहीं। (तफ़सीरे इत्कान)

जब नबी-ए-करीम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने हकीकी मालिक से जा मिले और इस दुनिया से पर्दा फ़रमाया और वह्य के नाज़िल होने का सिलसिला बन्द हो गया, कुरआन मजीद किसी किताब में, जैसा कि आजकल है, जमा न था, विभिन्न चीज़ों पर सूरतें और आयतें लिखी हुई थीं और वे मुख़्तलिफ़ लोगों के पास थीं। अक्सर सहाबा को पूरा कुरआन मजीद ज़बानी याद था। सबसे पहले, कुरआन मजीद के इकट्ठा करने का ख़्याल हज़रत अमीरुल-मोमिनीन फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में पैदा हुआ और हक़ तआला ने उनके ज़रिये से अपने उस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैग़म्बर से किया था, यानी यह कि कुरआन मजीद के हम हाफ़िज़ हैं, इसका जमा करना और हिफ़ाज़त करना हमारे ज़िम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़ते राशिदा का था। हज़रत फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि कुरआन के हाफ़िज़ शहीद हो जाते हैं, और बहुत-से यमामा की लड़ाई में शहीद हो गये। मुझे डर है कि अगर यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा कुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा। इसलिये मैं मुनासिब समझता हूँ कि आप इस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाइए और कुरआन मजीद के जमा करने का एहतिमाम कीजिये। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको तुम कैसे कर सकते हो? हज़रत फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि खुदा की क़सम! यह बहुत अच्छा काम है। फिर वक़्त वक़्त

पर हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु इस तरफ़ तवज्जोह दिलाते रहे। यहाँ तक कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में यह बात जम गयी। उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को तलब किया और यह सब किस्सा बयान करके फरमाया कि कुरआन मजीद के जमा करने के लिये मैंने आपको चुना है। आप 'वह्य' के लिखने वाले थे और नेक जवान हैं। उन्होंने भी वही उज़्र किया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको आप लोग कैसे कर सकते हैं? आख़िरकार वह भी राजी हो गये और उन्होंने बहुत ही एहतिमाम और हद दर्जा एहतियात से कुरआन मजीद को जमा करना शुरू किया।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को चुनने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरआन मजीद का दौर किया करते थे, (1) और वफ़ात के साल में दो बार कुरआन मजीद का दौर हुआ और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु उस अख़ीर दौरे में शरीक थे और अख़ीर दौरे के बाद फिर कोई आयत मन्सूख़ नहीं हुई। जिस क़द्र कुरआन उस दौरे में पढ़ा गया वह सब बाकी रहा, इसलिये उनको मन्सूख़ हुई आयतों का ख़ूब इल्म था। (शरहे सुन्नह)

जब कुरआन मजीद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के निहायत एहतिमाम से जमा हो चुका, हज़रत फारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उसकी नज़रे-सानी की और जहाँ कहीं लिखने में ग़लती हो गयी थी उसको दुरुस्त किया। कई साल तक इस फ़िक्क में रहे और अक्सर समय सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मुनाज़रा भी किया। फिर जब इस एहतिमाम व पाबन्दी और एहतियात के बाद यह काम पूरा हो गया तो हज़रत फारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके पढ़ने-पढ़ाने का सख़्त एहतिमाम किया। जो सहाबा हाफ़िज़ थे उनको दूर-दराज़ मुल्कों में कुरआन व फ़िक्क (यानी मसाइल) की तालीम के लिये भेजा जिसका सिलसिला हम तक पहुँचा।

हक़ यह है कि हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु का एहसान इस बारे में तमाम उम्मत मुहम्मदिया पर है, उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास कुरआन मजीद मौजूद है और हम इसकी तिलावत से फ़ायदा उठाते हैं। इस एहसान का बदला किससे हो सकता है। ऐ अल्लाह! तू उनके दर्जे बुलन्द फ़रमा और उनको अपनी रिज़ा व शिक़टता का आला मक़ाम अता फ़रमा, आमीन।

फिर हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस एहसान को और भी का मिल कर दिया। अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उन्होंने कुरआन मजीद के उस नुस्ख़े (प्रति) की सात नक़लें कराकर दूर-दराज़ के मुल्कों में भेज दीं और किराअत (पढ़ने) के इख़िलाफ़ की वजह से जो फ़सादात बरपा हो रहे थे और एक-दूसरे की किराअत को ख़िलाफ़े हक़ और बास्तिल समझता था उन सब झगड़ों से दीने इस्लाम को पाक कर दिया। सिर्फ़ एक किराअत पर सबको मुत्तफ़िक़ कर दिया। अब अल्हन्दु लिल्लाह जैसी मज़बूत किताब मुसलमानों के पास है कोई मज़हब दुनिया में इसकी मिसाल नहीं ला सकता। इन्ज़ील व तौरात की हालत तो ख़स्ता है, उनके अन्दर वह

1. हदीस में 'मुआरज़े' का लफ़्ज़ है जिसका मतलब यह हुआ कि कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनको सुनाते थे कभी वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुनाते थे। (फतहुल-बारी)

तब्दीली और कमी-बेशी हुई कि अल्लाह अपनी हिफाज़त में रखे। कुरआन मजीद के बारे में मुखालिफों को भी इकरार है कि हाँ यह वही किताब है जिसके बारे में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह का कलाम होने का दावा फरमाया था। इसमें किसी किस्म की कमी-ज्यादती उनके बाद नहीं हुई। इसपर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

कुरआन मजीद में आयतों और सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने में है यह भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने दी है, मगर अपनी राय और किसी अन्दाज़े से नहीं बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस तरतीब से पढ़ते थे और जो तरतीब उस मुबारक ज़माने में थी उसके ज़रा भी ख़िलाफ़ नहीं किया। सिर्फ़ दो सूरतों की तरतीब अलबत्ता सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने कियास से दी है। सूर: बराअत और सूर: अन्फ़ाल। तो यह भी यकीनन लौहे-महफूज़ के ख़िलाफ़ न होगी, जिसकी हिफाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने ली हो उसमें तरतीब भी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में कुरआन मजीद में सूरतों के नाम, पारों के निशानात वगैरह कुछ न थे बल्कि हफ़ों पर नुक्ते भी न दिये गये थे, बल्कि बाज़ सहाबा इसको बुरा समझते थे, वे चाहते थे कि मुसहफ़ में सिवाय कुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाये। अब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल-अस्वद या इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इसमें नुक्ते बनाये और उसके बाद फिर खुम्स (पाँचवाँ) और उश्र (दसवाँ) लिखे गये और सूरतों और पारों के नाम भी लिख दिये गये। उलमा इन सब चीज़ों के जायज़ होने पर मुत्तफ़िक़ हैं इसलिये कि ये ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिनके कुरआन होने का शुब्हा हो, और उन चीज़ों का लिखना मना है जिनके कुरआन होने का शुब्हा पैदा हो।

कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल और उसकी तिलावत वगैरह का सवाब

कुरआन मजीद की अज़मत, बुजुर्गी और उसकी फ़ज़ीलत और बुलन्दी के लिये इसी क़दर काफ़ी है कि वह तमाम मख़्लूक़ात के ख़ालिक व मालिक का कलाम है, तमाम ऐबों और कमियों से बरी और पाक है, ज़बान और बयान के एतिबार से इसकी बुलन्द और बेमिसाल हैसियत को तमाम अरब ने मान ली, बड़े-बड़े फ़साहत व बलागत के दावे करने वाले इसके जैसे दो-तीन जुमले भी वर्षों की कोशिशों में भी न बना सके। सरेआम ऐलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले ख़िताब से कहा गया कि अगर तुम इसके खुदा का कलाम होने में शक करते हो और इसको इनसानी कलाम समझते हो तो तुम इसकी छोटी से छोटी सूर: के जैसी कोई इबारत बना लाओ और अपने तमाम मददगारों और सहयोगियों को जमा करो, हरगिज़ न बना सकोगे, हरगिज़ न बना सकोगे। जिन्नों की कौम ने जब इस कलाम को सुना, बेसाख़्ता कह उठे कि “इन्ना समिअ्ना कुरआनन् अ-जबा, यहदी इलर्रशिद फ-आमन्ना बिही व लन् नुशिर-क बि-रब्बिना अ-हदन्” (यानी बेशक हमने एक अजीब कुरआन सुना जो नेकी की तरफ़ हिदायत करता है, हम उसपर ईमान लाये और अपने परवर्दिगार का किसी को शरीक हरगिज़ न समझेंगे) खुद अल्लाह जल्ल शानुहू इस मुकद्दस कलाम की तारीफ़ फरमाता है फिर हम लोगों की ज़बान व कलम में क्या ताक़त है कि इसकी खूबियाँ और फ़ज़ाइल का एक मामूली-सा हिस्सा भी

बयान कर सकें।

इसकी तिलावत और पढ़ने-पढ़ाने का सवाब किसी बयान का मोहताज नहीं। तमाम उलमा-ए-उम्मत मुत्तफिक हैं कि कोई जिक्र कुरआन मजीद के पढ़ने से ज्यादा सवाब नहीं रखता। इस बारे में बहुत ज्यादा हदीसे हैं, नमूने के लिये बरकत के तौर पर चन्द हदीसें नकल की जाती हैं।

1. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हक तआला फरमाता है कि जो कोई कुरआन मजीद के पढ़ने में मशगूल हो और दुआ या किसी दूसरे जिक्र की उसको फुरसत न मिले, मैं उसको दुआ माँगने वालों से भी ज्यादा दूँगा और कलामुल्लाह की बुजुर्गी तमाम कलामों पर ऐसी है जैसे खुदा की बुजुर्गी तमाम मखलूक पर। (दारमी शरीफ)

2. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कुरआन मजीद अल्लाह तआला के नज़दीक ज्यादा महबूब है तमाम आसमानों और ज़मीनों और उन चीज़ों से जो उनमें हैं। (दारमी शरीफ)

3. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर कुरआन मजीद किसी खाल में हो तो वह खाल आग में नहीं जल सकती। (दारमी शरीफ)

खाल से मुराद मोमिन का दिल है, कि अगर उसमें कुरआन मजीद हो तो वह दोज़ख के अज़ाब से महफूज़ रहेगा।

4. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि तीन किस्म के लोगों को कियामत में ख़ौफ न होगा, न उनसे हिसाब लिया जायेगा, और उन तीन में से कुरआन मजीद पढ़ने वाले को आपने बयान फरमाया। (दारमी शरीफ)

5. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार अपने खुतबे में फरमाया कि ऐ लोगो! मैं भी एक आदमी हूँ करीब है कि मेरे रब की तरफ से कोई मुझको बुलाने आये और मैं चला जाऊँ। मैं तुममें दो बहुत कीमती और बड़ाई वाली चीज़ें छोड़े जाता हूँ- एक खुदा की मुकद्दस किताब, इसमें हिदायत व नूर है, पस तुम लोग अल्लाह की किताब को मज़बूत पकड़ लो और उसपर अमल करो। (रिवायत करने वाले कहते हैं कि फिर आपने लोगों को इसपर बहुत रग़बत दिलाई)। दूसरे मेरे अहले-बैत हैं, (यानी घर वाले और आल-औलाद), तुमको खुदा का ख़ौफ याद दिलाता हूँ अपने अहले-बैत के हुक्क की रियायत करने में। (दारमी शरीफ)

6. कुरआन मजीद की तिलावत के वक़्त फरिश्ते और रहमत नाज़िल होते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत उसैद बिन हज़ीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक रात को वह सूरः ब-करः पढ़ रहे थे और उनका घोड़ा करीब ही बँधा हुआ था, वह भड़कने लगा। वह चुप हो गये, घोड़े को भी सुकून हो गया। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया, फिर उसकी वही हालत हुई। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया फिर उसकी वही हालत हुई। तब उन्होंने तिलावत बन्द कर दी, इस ख्याल से कि उनके साहिबज़ादे यह्या करीब ही थे, कहीं घोड़ा ज्यादा भड़के और वह कुचल न जायें। सुबह को यह वाकिआ हज़रत नबी-ए-करीम की खिदमत में अर्ज़ किया, आपने फरमाया, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ। तब उन्होंने अपना वह ख़ौफ उज़्र में पेश किया और कहा कि तिलावत ख़त्म करने के बाद मैंने सर उठाकर देखा तो बादल का एक टुकड़ा था जिसमें चिराग़

रोशन थे। यहाँ तक कि वह मेरी नज़र से गायब हो गया। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जानते हो यह क्या चीज़ थी? उन्होंने अर्ज़ किया कि नहीं! आपने फरमाया कि ये फरिश्ते थे, तुम्हारी किराअत की वजह से नज़दीक आ गये थे। अगर तुम पढ़े जाते तो वे फरिश्ते तुम्हारे पास आ जाते और सुबह को सब लोग उनको देखते। इसी किस्म का वाकिआ कई सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को कुरआन मजीद के पढ़ने के वक़्त पेश आया जो सही हदीसों में बयान किया गया है। कई किस्से तो बुख़ारी शरीफ़ में हैं।

7. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हसद की इजाज़त नहीं मगर दो शख्सों पर- एक वह जो कुरआन मजीद पढ़ता हो और वह उसकी तिलावत में रातों को मशगूल रहता हो। दूसरे वह जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया हो और वह उसको दिन-रात अल्लाह की राह में खर्च करता हो। (बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस में हसद से मुराद रश्क करना है। दोनों में फर्क यह है कि किसी शख्स की नेमत के ख़त्म हो जाने की ख्वाहिश करना हसद है, और उस नेमत की अपने लिये ख्वाहिश करना बग़ैर इसके कि दूसरे शख्स से ख़त्म हो, यह रश्क है। रश्क करना मुतूलकन जायज़ है, हसद मुतूलकन नाजायज़। इस हदीस में रश्क करने की इजाज़त सिर्फ़ इन्हीं दोनों चीज़ों में मुन्हसिर (सीमित) करना मकसूद नहीं बल्कि मतलब यह है कि कोई नेमत इन दोनों नेमतों से बढ़कर नहीं, जिसके हासिल होने की ख्वाहिश की जाये।

8. हज़रत अबू सालेह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि कुरआन मजीद अपने पढ़ने वालों की कियामत में सिफ़ारिश करेगा। पस उसको बुजुर्गी का लिबास पहनाया जायेगा। फिर कुरआन मजीद कहेगा कि ऐ अल्लाह! और ज़्यादा इसके ऊपर इनाम फरमा, तब उसको बुजुर्गी का ताज पहनाया जायेगा। फिर कहेगा ऐ अल्लाह! और ज़्यादा दे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपनी रज़ामन्दी का परवाना उस शख्स को अता फरमायेगा। (दारमी शरीफ़)

9. जो शख्स अच्छी तरह कुरआन मजीद पढ़े और उसके हलाल को हलाल और हराम को हराम जाने, अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल फरमायेगा और उसके दस अज़ीज़ों (रिश्तेदारों) के हक़ में जो दोज़ख़ के मुस्तहिक होंगे, उसकी सिफ़ारिश कबूल फरमायेगा। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

10. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कुरआन मजीद पढ़ने से हर हर्फ़ के बदले में दस नेकियाँ मिलती हैं। मैं नहीं कहता कि 'अलिफ़, लाम, मीम,' एक हर्फ़ है, बल्कि 'अलिफ़' एक हर्फ़ है, 'लाम' एक हर्फ़ है, 'मीम' एक हर्फ़ है। (दारमी शरीफ़)

मकसद यह है कि सिर्फ़ 'अलिफ़-लाम-मीम' कहने से तीस नेकियाँ मिलती हैं। अल्लाहु अकबर।

11. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम सबमें बेहतर वह शख्स है जिसने कुरआन मजीद को पढ़ा और पढ़ाया। यह हदीस अबू अब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु से सुनकर कुरआन मजीद पढ़ाना शुरू किया। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त के वक़्त से हज्जाज के ज़माने तक पढ़ाते रहे और फरमाते थे कि इसी हदीस ने मुझे इस जगह बिठला दिया है कि कुरआन पढ़ाने में मशगूल हूँ। (बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़)

12. हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख्स अपने लड़के को कुरआन की तालीम करता है, हक़ तआला उसको कियामत में जन्नत का एक ताज पहनायेगा। (तिबरानी)

13. मुआज़ इब्ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख्स अच्छी तरह कुरआन पढ़े और उसपर अमल करे, कियामत के दिन उसके माँ-बाप को एक ताज पहनाया जायेगा जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से कहीं ज़्यादा होगी। फिर क्या कहना उस शख्स का जिसने पढ़ा और अमल किया। (अबू दाऊद)

14. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि यह कुरआन अल्लाह का नेमत-ख़ाना है, इससे लो जिस कद्र ले सको, मेरे नज़दीक उस घर से ज़्यादा बेबरकत कोई मक़ाम नहीं जिस घर में खुदा की किताब न हो, और बेशक वह दिल जिसमें कुछ भी कुरआन न हो एक वीरान घर है जिसमें कोई रहने वाला नहीं। (दारमी शरीफ़)

15. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स कुरआन मजीद याद करके भूल जाये वह कियामत के दिन कोढ़ी होगा। (बुख़ारी शरीफ़) अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

16. ख़ालिद बिन मअदान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख्स कुरआन मजीद पढ़े उसको इकहरा सवाब मिलेगा और जो उसको सुने उसको दोहरा सवाब मिलेगा। (दारमी शरीफ़) इसी हदीस से उलमा ने यह बात निकाली है कि कुरआन मजीद के सुनने में पढ़ने से भी ज़्यादा सवाब है। (कबीरी)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी बहुत पसन्दीदा था कि कोई दूसरा शख्स कुरआन मजीद पढ़े और आप सुनें। एक बार अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से इर्शाद हुआ कि तुम पढ़कर मुझको सुनाओ। उन्होंने कहा कि मैं आपको सुनाऊँ? आप ही पर नाज़िल हुआ है। इर्शाद हुआ कि मुझे अच्छा मालूम होता है कि किसी दूसरे से सुनूँ। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूर: निसा पढ़ना शुरू की यहाँ तक कि इस आयत पर पहुँचे: “फ़कै-फ़ इज़ा जिअना मिन् कुल्लि उम्मतिल् बि-शहीदिन्-व जिअना बि-क अला हा-उला-इ शहीदा” (1) हुज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया बस बस। इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि आपकी मुबारक आँखों से आँसू बह रहे थे।

(बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़) (2)

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु जब कभी हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु को देखते तो फ़रमाते कि ऐ मूसा! हमको अपने प्रवर्दिगार की याद दिलाओ। वह कुरआन पढ़ना शुरू कर देते। (दारमी शरीफ़)

यह अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत अच्छी आवाज़ के मालिक थे। कुरआन मजीद बहुत अच्छा पढ़ते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पढ़ने की बहुत तारीफ़ फ़रमाई है।

(1) तर्जुमा: क्या हाल होगा उस वक़्त जब हम हर उम्मत के लिये उनमें से एक गवाह निकालेंगे और उन लोगों पर तुमको गवाह बनायेंगे। यह ज़िक्र कियामत का है कि उस दिन खुदा तआला हर उम्मत पर उनके पैग़म्बर को गवाह बनायेगा और हम लोगों पर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

(2) हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शायद इस सबब से रोये कि इस आयत में आपके गवाह बनाने का ज़िक्र है और आपको अपनी उम्मत के तमाम अच्छे-बुरे हालात बयान करने पड़ेंगे, और उम्मत की बुराई आपको नागवार है। इसके अलावा आपकी आदत भी थी कि कुरआन मजीद के पढ़ने में अक्सर रोया करते थे।

इसी तरह कुरआन मजीद की खास-खास सूरतों की फज़ीलतें भी सही हदीसों में बहुत आई हैं। मुख्तसर तौर पर चन्द हदीसों नक़ल की जाती हैं।

सूरः फ़ातिहा के बारे में हदीसों में आया है कि 'सब्अे-मसानी' और 'कुरआने अज़ीम' यही है। (बुख़ारी शरीफ़) (1) ऐसी सूरः किसी नबी पर नहीं नाज़िल हुई। (मुस्तद्रक)

सूरः ब-करः के हक़ में आया है कि जिस घर में यह सूरः पढ़ी जाये वहाँ से शैतान भाग जाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़) उसको पढ़ो बरक़त होगी वरना हसरत होगी। (मुस्लिम शरीफ़) दो तरोताज़ा चीज़ों को पढ़ा करो, सूरः ब-करः और सूरः आलि इमरान। ये दोनों कियामत में अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअत करेंगी और खुदा तआला से झगड़ा करके उसको बख़्शवायेंगी। **आयतुल-कुर्सी** तमाम कुरआनी आयतों की बुजुर्ग और सरदार है। (मुस्लिम शरीफ़) सूरः ब-करः के आख़िर की दो आयतें जिस घर में पढ़ी जायें तीन दिन तक शैतान उस घर के करीब नहीं जाता। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः अन्आम जब उतरी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तस्बीह पढ़ी और फ़रमाया कि इस क़द्र फ़रिश्ते उसके साथ थे कि आसमान के किनारे भर गये। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूरः कहफ़ जुमा के दिन जो शख़्स पढ़े उसके लिये एक नूर होगा दूसरे जुमा तक। (मुस्तद्रक) उसके लिये नूर होगा कियामत के दिन। (हिस्ने हसीन)

सूरः यासीन कुरआन मजीद का दिल है। जो कोई शख़्स इसको खुदा के लिये पढ़े वह बख़्श दिया जायेगा, इसको अपने मुर्दों पर पढ़ो। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूरः फ़तह मुझको तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है। (बुख़ारी शरीफ़)

सूरः मुल्क ने एक शख़्स की सिफ़ारिश की यहाँ तक कि बख़्श दिया गया। (सिहाहे-सित्ता) यह अपने पढ़ने वालों के लिये मग़फ़िरत की दुआ करती है यहाँ तक कि वह बख़्श दिया जायेगा। (इब्ने हब्बान)

मैं चाहता हूँ कि यह सूरः हर मोमिन के दिल में रहे। (मुस्तद्रक, हाकिम) यह सूरः अपने पढ़ने वाले को कब्र के अज़ाब से बचाती है। जो इसको रात को पढ़ ले उसने बहुत नेकी की और अच्छा काम किया।

(मुस्तद्रक)

सूरः ज़िज़ाल आधे कुरआन के बराबर सवाब रखती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः काफ़िरून में चौथाई कुरआन के बराबर सवाब है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः नम्र का सवाब चौथाई कुरआन का सवाब है। (बुख़ारी शरीफ़) एक शख़्स इस सूरः को हर नमाज़ में पढ़ा करते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनसे कह दो कि अल्लाह उनको दोस्त रखता है। (बुख़ारी शरीफ़) उसकी मुहब्बत तुमको जन्नत में दाख़िल करेगी। (बुख़ारी शरीफ़)

एक शख़्स को यह सूरः पढ़ते हुए आपने सुना तो फ़रमाया कि जन्नत ज़रूरी होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः फलक और **सूरः नास** अल्लाह तआला के नज़दीक ज़्यादा महबूब हैं। (मुस्तद्रक) इससे बढ़कर कोई

(1) कुरआन मजीद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़िताब है कि हमने तुमको 'सब्अे-मसानी' और 'कुरआने अज़ीम' इनायत फ़रमाया है। उसी को आपने फ़रमा दिया कि सबअे-मसानी और कुरआने अज़ीम से यही सूरः मुराद है।

दुआ या इस्तिगफार नहीं है। (निसाई शरीफ) यानी यह बहुत आला दर्जे की दुआ है और इसके पढ़ने से तमाम बलाओं से नजात मिलती है। जब से ये दोनों सूरते नाजिल हुईं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्हीं को विद कर लिया और दूसरी दुआएँ जो जिन्न और हसद वगैरह के शर और बुराई से बचने के लिए पढ़ते थे, छोड़ दीं। (तिर्मिजी शरीफ)

कुरआन मजीद तमाम जिस्मानी और रुहानी बीमारियों की दवा है। अल्लाह तआला फरमाता है “शिफाउव्व-व रस्मतुल् लिल्-मुअ्मिनी-न, व शिफाउल्-लिमा फिस्सुदूरि”। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर कोई सच्चे दिल से कुरआन मजीद पढ़े तो पहाड़ भी हिल जाये। अल्लामा सुयूती इत्कान में लिखते हैं कि कुरआन मजीद रुहानी तिब (दवा और इलाज) है बशर्ते कि नेक लोगों की ज़बान से अदा हो। अल्लाह के हुक्म से हर बीमारी और रोग की शिफा इससे हासिल होती है, मगर चूँकि नेक लोग कम हैं और हर किसी की ज़बान में असर नहीं होता इसलिये लोगों ने जिस्मानी तिब की तरफ रुजू किया।

खास-खास सूरतों के ख्वास भी सही हदीसों में बहुत आये हैं, सैकड़ों मरीजों को इससे शिफा हुई है, हजारों बलायें इससे दूर हुई हैं।

बुखारी शरीफ में अनेक तरीकों से रिवायत किया गया है कि एक शख्स को साँप ने काट लिया था, कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम वहाँ सफर की हालत में उतरे हुए थे। उन लोगों ने आकर कहा कि यहाँ के सरदार को साँप ने काट लिया है, आप लोगों में अगर कोई झाड़ते हों तो चलें। उनमें से एक सहाबी चले गये और उन्होंने सूरः फातिहा पढ़कर फूँक दी, वह अच्छा हो गया।

कश्ती पर सवार होते वक़्त “बिस्मिल्लाहि मन्रेहा व मुरसाहा इन्-न रब्बी ल-गफूरु-रहीम” पढ़ लेने से कश्ती डूबने से महफूज़ रहती है। (इत्कान)

“कुलिद्दुल्ला-ह अविद्दुअुर-रस्मा-न” आखिर सूरः तक पढ़ लेने से चोरी से अमान होता है। (इत्कान)

रात को जिस वक़्त उठना मन्ज़ूर हो सोते वक़्त सूरः कस्फ का आखिरी हिस्सा पढ़ ले, उस वक़्त ज़रूर आँख खुल जायेगी। इस हदीस के एक रिवायत करने वाले कहते हैं कि यह मेरा आजमाया हुआ है। (इत्कान)

“कुलिल्लाहुम्-म मालिकल् मुल्कि तुअ्तिल्-मुल्-क.....बिगैरि हिसाब” तक पढ़ लेना कर्ज़ की अदायगी के लिये मुफ़ीद है। (इत्कान) यह आयत इस नाचीज़ बन्दे की आजमाई हुई है मगर मुझे एक खास तरीका इसके पढ़ने का बतलाया गया है, वह यह कि नमाज़ के बाद शुरू व आखिर में तीन-तीन बार दुख्द शरीफ पढ़कर सात बार यह आयत पढ़े। वाकई बहुत जल्द अपना असर दिखाती है। चालीस दिन भी नहीं गुज़रने पाते कि असर ज़ाहिर होने लगता है।

“रब्बि हब्-ली मिल्लदुन्-क ज़ुर्रियतन् तय्यि-बतन्” जिस औरत के लड़का न होता हो, चालीस दिन तक पढ़ने से कामयाब हो जाती है, यह भी मेरे सामने कई मर्तबा आजमाई गई है।

कुरआन मजीद के फज़ाइल और उसके पढ़ने-पढ़ाने का सवाब मुख्तसर तौर पर बयान हो चुका। ग़ालिबन इस क़द्र सवाब व फज़ीलत मालूम करने के बाद फिर कोई मुसलमान ज़ुर्रत नहीं कर सकता कि कुरआन मजीद की तिलावत और इसके पढ़ने-पढ़ाने से ग़फ़लत करे।

ऐ अल्लाह! ऐ अर्श व कुर्सी के मालिक! ऐ तौरात, ज़बूर, इन्जील और कुरआन को नाज़िल करने वाले! ऐ कुरआन को तमाम किताबों पर फज़ीलत देने वाले, ऐ नेमत देने वाले! अपने फज़ल व करम, अपनी रहमते कामिला और करम के सदके में हम सब मुसलमानों को इस अपनी मुकद्दस किताब से फ़ैज़याब फरमा। इसकी तिलावत की हमें तौफीक दे, हमारे आमाल व अफ़आल को इसके मुवाफ़िक़ कर, कियामत के दिन जब हमारे बुरे आमाल हमें दोज़ख़ का मुस्तहिक़ बना दें तो कुरआन मजीद को हमारा सिफ़ारिशी कर और कुरआन पढ़ने वालों के सदके में हमें बख़्श दे, आमीन। कितना खुशनसीब है वह शख़्स जिसको हर दिन कुरआन मजीद की ज़ियारत और तिलावत नसीब होती हो। सो उस नेक बन्दे पर फ़िदा होना पसन्दीदा जानें जिसका वज़ीफ़ा ऐसी मुकद्दस किताब हो, बेशक़ इन्शा-अल्लाह तआला उन लोगों की यह उम्मीद पूरी होगी जिसको अल्लामा शातबी अपने इन शे'रों में ज़ाहिर फरमाते हैं:

ल-अल्-ल इलाहल्-अर्शि या इख़्बती यकी

जमा-अ-तना कुल्लल्-मकारिहि हुव्वला

व यज़अलुना मिम्-मय्यकूनु किताबुहू

शफ़ीअन् लहू इज़् मा नसूहु फियम्हला

तर्जुमा: उम्मीद है कि ऐ भाइयो! अर्श व कुर्सी का मालिक हमारी जमाअत को तमाम बुराइयों और ख़ौफ़ की चीज़ों से बचा ले, और हमको उन लोगों में शामिल फरमाये जिनके लिये उसकी मुकद्दस किताब कियामत के दिन शफ़ाअत करेगी। इसलिये कि हमने उसकी मुकद्दस किताब को भुलाया नहीं जो वह नाख़ुश होकर हमसे कुछ बुराई करे। आख़िरी जुमले में उस हदीस की तरफ़ इशारा है जिसका मज़मून यह है कि जो लोग कुरआन मजीद से ग़फ़लत करते हैं कुरआन मजीद उनको दोज़ख़ में भिजवायेगा। जमाअत से मुराद वे लोग हैं जो कुरआन मजीद पढ़ते हैं और उसके उलूम हासिल करते हैं।

यह भी जान लेना चाहिए कि कुरआन मजीद की तिलावत का सवाब इसपर मौकूफ़ नहीं कि उसके मायने समझकर तिलावत की जाये, जो शख़्स अरबी ज़बान न जानता हो, कुरआन के मायने न समझ सकता हो उसको भी कुरआन मजीद की तिलावत का सवाब मिलेगा और वह भी इस आम फ़ैज़ से महरूम न रहेगा, इसलिये कि कुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ भी तासीर और फ़ायदे से ख़ाली नहीं हैं। (1) यह दूसरी बात है कि अगर मायने समझकर तिलावत की जाये तो ज़्यादा सवाब मिलेगा।

(1) शेख़ अब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी ने 'शरह स-फ़रुस्-सआदत' के दीबाचे में लिखा है कि मैंने इस किताब में दुआ व अज़कार का तर्जुमा नहीं किया इसलिये कि इनके असल अल्फ़ाज़ में ख़ासियत है, मायने मालूम हों या न हों, अगरचे मायने मालूम हो जाने से एक किस्म की खुशी और ताज़गी हासिल हो जाती है। पस कुरआन मजीद जो तमाम ज़िक्रों से अफ़ज़ल है इसके अल्फ़ाज़ तासीर व फ़ैज़ से कैसे ख़ाली रह सकते हैं?।

कुरआन मजीद की तिलावत वगैरह के आदाब

जब कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल मालूम हो चुके और उसकी अज़मत दिल में बैठ गई तो यह बात काबिले बयान न रही कि इसकी ताज़ीम व अदब में किस दर्जा कोशिश करनी चाहिये और इसके पढ़ने और सुनने में कैसा अदब और एहतिमाम पेशे नज़र रखना चाहिये। मगर चन्द ज़रूरी और मुफ़ीद बातें हम बयान किये देते हैं।

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिये किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नहीं, हाँ इस कदर ज़रूरी है कि कुरआन मजीद सही पढ़ता हो, अगर इतनी काबलियत अपने में न देखे तो उसको ज़रूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे या उससे पढ़ ले। (इत्क़ान)

यह भी शर्त नहीं है कि कुरआन मजीद के मायने समझ लेता हो, और अगर कुरआन मजीद में ऐराब (यानी ज़ेर, ज़बर, पेश वगैरह) न हों तब भी उसके सही ऐराब पढ़ लेने पर कादिर हो। (1)

सही यह है कि कुरआन मजीद की तिलावत की नेमत सिर्फ़ इनसान को दी गयी है, शयातीन वगैरह इसकी तिलावत पर कादिर नहीं, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीब नहीं हुई, वे भी इस आरज़ू में रहते हैं कि कोई इनसान तिलावत करे और वे सुनें। हाँ मोमिनीन जिनको अलबत्ता यह नेमत नसीब है और वे कुरआन की तिलावत पर कादिर हैं। (इत्क़ान)

शायद इससे हज़रत ज़िबराईल अलैहिस्सलाम अलग हों, इसलिये कि उनके बारे में हदीस में आया है कि हर रमज़ान में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हज़्र अस्कलानी ने फतहुल्-बारी में इसका खुलासा किया है कि कभी वह पढ़ते थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुनते थे और कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पढ़ते थे और वह सुनते थे। और अल्लाह ही को ख़ूब इल्म है।

बेहतर यह है कि किब्ला की तरफ़ रुख़ करके पाक-साफ़ निहायत अदब से किसी पाकीज़ा जंगह पर बैठकर कुरआन मजीद पढ़ा जाये, सबसे बेहतर इस काम के लिये मस्जिद है। जो लोग हर वक़्त या अक्सर वक़्त इसकी तिलावत में मशगूल रहना चाहें उनके लिये हर हाल में कुरआन मजीद पढ़ना बेहतर है, लेते हों या बैठे हों, वुजू के साथ हों या बे-वुजू हों। हाँ मगर नापाकी की हालत में न पढ़ना चाहिये।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कैफ़ियत बयान फरमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर हाल में तिलावत फरमाया करते थे, वुजू की हालत में भी, बे-वुजू भी, हाँ अलबत्ता नापाकी की हालत में न करते थे।

कुरआन मजीद की तिलावत के लिए एक ख़ास वक़्त मुकर्रर कर लेना भी दुरुस्त है। अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़ज़्र की नमाज़ के बाद कुरआन मजीद पढ़ा करते थे। वक़्त मुकर्रर कर लेने में नागा भी नहीं होता।

(1) अल्लामा सुयूती वगैरह की इबारत से यह मुद्दा बाख़ूबी जाहिर है और इस शर्त की कोई वजह भी नहीं मालूम होती। इन सब के अलावा अगर यह शर्त लगाई जाए तो तिलावत बिल्कुल ही बन्द हो जायेगी। और अल्लाह ही ख़ूब जानते हैं।

सुन्नत यह है कि पढ़ने वाला शुरू करने से पहले “अऊजु बिल्लाहि मिनशैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम” पढ़ ले। और अगर पढ़ने के दरमियान में कोई दुनियावी बात करे तो उसके बाद फिर इस अमल को दोहरा ले।

कुरआन मजीद की तिलावत ज़बानी पढ़ने के मुकाबले में मुसहफ़ में देखकर ज़्यादा सवाब रखती है इसलिये कि वहाँ दो इबादतें होती हैं- एक तिलावत, दूसरे मुसहफ़ शरीफ़ की ज़ियारत। (1)

कुरआन मजीद पढ़ने की हालत में कोई कलाम करना या और किसी ऐसे काम में मसरूफ़ होना जो दिल को दूसरी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, मक्रूह है। कुरआन मजीद पढ़ते वक़्त अपने को पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, न यह कि ज़बान से अल्फ़ाज़ जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़्यालात।

कुरआन मजीद की हर सूरः के शुरू में ‘बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम’ कह लेना मुस्तहब है मगर सूरः बराअत के शुरू पर बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिये।

बेहतर यह है कि कुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीब से पढ़े जिस तरतीब से मुसहफ़ शरीफ़ में लिखी हैं, हाँ बच्चों के लिये आसानी की गरज़ से सूरतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारः अम्-म य-तसा-अलून में दस्तूर है, बिना किसी कराहत के जायज़ है। (दुर्रे मुख़्तार) और आयतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ना सबके नज़दीक मना है। (इत्क़ान)

कुरआन मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों की आयतों को एक साथ मिलाकर पढ़ने को उलमा ने मक्रूह लिखा है, इस वजह से कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को आपने इससे मना फ़रमाया था। (इत्क़ान वग़ैरह)

मगर मेरे ख़्याल में यह कराहत उस वक़्त होगी जब उन आयतों की तिलावत सवाब की गरज़ से हो, इसलिये कि झाड़-फूँक के वास्ते मुख़्तलिफ़ आयतों का एक साथ पढ़ना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा से सही तौर पर नक़ल किया गया है। और हर एक आयत के ख़्वास अलग-अलग हैं, इसलिये जो ख़ास असर हमें मतलूब है वह जिन-जिन आयतों में होगा हमको उनका पढ़ना ज़रूरी है।

कुरआन मजीद ख़ूब अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ना चाहिये जिससे जिस क़द्र भी हो सके। सही हदीसों में आया है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स कुरआन मजीद अच्छी आवाज़ से न पढ़े वह हममें से नहीं है। (दारमी शरीफ़) मगर जिसकी आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है और किराअत (2) के कायदों की पाबन्दी से कुरआन मजीद पढ़ना चाहिये। और इसपर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि कुरआन मजीद को राग से पढ़ना और उसको गाने की तरह गाना मक्रूह तहरीमी है।

कुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े बहुत तेज़ी से पढ़ना सब उलमा के नज़दीक मक्रूह है। (3)

(1) अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि ने इत्क़ान में चन्द मरफूअ हदीसों भी इस बारे में नक़ल की हैं। जैसे यह कि मुसहफ़ में बेदेखे तिलावत करने से एक हज़ार दर्जा सवाब मिलता है और देखकर पढ़ने से दो हज़ार दर्जा।

(2) यह (यानी किराअत) एक मुस्तक़िल फ़न है जिसमें कुरआन मजीद के पढ़ने के कायदे बयान किये जाते हैं और उन मुख़्तलिफ़ किराअतों का ज़िक्र होता है जिनमें कुरआन नाज़िल हुआ। इस फ़न में बहुत-सी किताबें हैं, मगर हक़ यह है कि उस्ताद के बग़ैर नहीं आता।

(3) ऐसी तेज़ी और जल्दबाज़ी कि जिससे अल्फ़ाज़ के समझने में दिक्कत हो मक्रूह है। ठहर-ठहर कर पढ़ने में असर भी ज़्यादा होता है, इसीलिये अज़मी (यानी ग़ैर-अरबी) लोग जो कुरआन मजीद के मायने नहीं समझे उनको भी ठहर-ठहर कर पढ़ना मुफीद है। (इत्क़ान)

अफ़सोस! हमारे ज़माने में कुरआन मजीद की सख़्त बे-अदबी होती है, पढ़ने में ऐसी तेज़ी की जाती है कि सिवाय बाज़-बाज़ अल्फ़ाज़ के और कुछ समझ में नहीं आता। तरावीह में अक्सर हाफ़िज़ों को ऐसा ही देखा गया। खुदा जाने उनपर किसने ज़बरदस्ती की जो ये तरावीह पढ़ने आये, इससे बेहतर होता कि ऐसे हज़रात न पढ़ते, कुरआन मजीद की बे-अदबी तो न होती।

जो शख्स कुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उसको कुरआन मजीद पढ़ते वक्त उसके मायनों पर गौर करना और हर मज़मून के मुवाफ़िक़ अपने में उसका असर ज़ाहिर करना मसनून है। जैसे जब कोई ऐसी आयत पढ़े जिसमें अल्लाह की रहमत का ज़िक्र हो तो रहमत माँगे, और अज़ाब का ज़िक्र हो तो उससे पनाह माँगे। कोई जवाब-तलब मज़मून हो तो उसका जवाब दे। जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सूर: वत्तीनि के आख़िर में पहुँचते तो “बला व अ-न अला ज़ालि-क मिनशशाहिदी-न” पढ़ लेते। (1) (तिर्मिज़ी शरीफ़)

या सूर: कियामह के आख़िर में जब पहुँचते तो फ़रमाते “बला” (तिर्मिज़ी शरीफ़)। सूर: फातिहा को जब ख़त्म करते तो आमीन कहते, लेकिन यह जवाब देना या दुआ माँगना उस वक्त मसनून है कि कुरआन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ में या तरावीह में न पढ़ा जाता हो, अगर फ़र्ज़ नमाज़ या तरावीह में पढ़ा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिये। (रद्दुल्ल-मुस्तार)

कुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है। अगर रोना न आये तो अपनी संगदिली पर रन्ज व अफ़सोस करे।

सूर: वज्जुहा के बाद से अख़ीर तक हर सूर: के ख़त्म होने के बाद “अल्लाहु अकबर” कहना मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है। कुरआन मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ माँगना मुस्तहब है। इसलिये कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हर ख़त्म के बाद दुआ मकबूल होती है। (इत्क़ान)

कुरआन मजीद ख़त्म करते वक्त सूर: इज़्लास को तीन बार पढ़ना मुतअख़िबरीन (बाद के उलमा) के नज़दीक बेहतर है, बशर्ते कि कुरआन मजीद नमाज़ से बाहर पढ़ा जाये।

जब एक बार कुरआन मजीद ख़त्म कर चुके तो मसनून है कि फ़ौरन दूसरा शुरू कर दे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि अल्लाह तआला के नज़दीक बहुत ही महबूब है कि जब कुरआन एक मर्तबा ख़त्म हो जाये तो दूसरा शुरू कर दिया जाये और दूसरे को सिर्फ़ “उलाइ-क हुमुल् मुफ़िलहून” तक पहुँचाकर छोड़ दे, उसके बाद दुआ वग़ैरह माँगे। इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सही हदीसों में रिवायत किया गया है।

जहाँ कुरआन मजीद पढ़ा जाता हो वहाँ सब लोगों को चाहिये कि पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह रहें। किसी दूसरे काम में, जो सुनने में हर्ज पैदा करने वाला हो, मशगूल न हों, इसलिये कि कुरआन मजीद का सुनना फ़र्ज़ है। हाँ अगर हाज़िरीन को कोई ज़रूरी काम हो जिसकी वजह से वे उस तरफ़ मुतवज्जह न हो सकें तो पढ़ने वाले को चाहिये कि आहिस्ता आवाज़ से पढ़े, और अगर ऐसी हालत में बुलन्द आवाज़ से पढ़ेगा तो गुनाह उसी पर होगा।

अगर कोई लड़का कुरआन मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहा हो और लोग अपने ज़रूरी कामों में मशगूल हों तो कुछ हर्ज नहीं, इसलिये कि शरीअत में तंगी नहीं है। अगर लड़का आहिस्ता आवाज़ से पढ़े तो आदतनू याद नहीं होता। (रद्दुल्ल-मुस्तार)

(1) हाँ, और हम इसपर गवाह हैं। चूँकि इस सूर: के अख़ीर में हक़ तआला पूछता है कि क्या हम सब हाकिमों के हाकिम नहीं हैं? इसलिये उसके जवाब में यह जुमला अर्ज़ किया गया।

सुनने वालों को तमाम उन बातों की रियायत करनी चाहिये जो ऊपर जिक्र हुई हैं, सिवाय “अअज़ू बिल्लाहि और बिस्मिल्लाह के।

अगर कोई शख्स अच्छी आवाज़ वाला हो, कुरआन अच्छा पढ़ता हो, उससे कुरआन मजीद पढ़ने की दरख्वास्त करना मसनून है। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से कुरआन सुनाने की फरमाइश की, हज़रत फारुके आजम अबू मूसा अश्शरी से दरख्वास्त फरमाया करते थे, रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

सज्दा-ए-तिलावत का बयान

सज्दा-ए-तिलावत के वाजिब होने के तीन सबब हैं:

1. सज्दे वाली आयत की तिलावत, चाहे पूरी आयत की तिलावत की जाये या सिर्फ उस लफ़्ज़ की जिसमें सज्दा है और उसके साथ पहले या बाद का कोई लफ़्ज़, और चाहे सज्दे की आयत के असल अल्फ़ाज़ के साथ तिलावत की जाये या उसका तर्जुमा किसी और ज़बान में, और चाहे तिलावत करने वाला खुद अपनी तिलावत को सुने या न सुने, जैसे कोई बहरा तिलावत करे। सही यह है कि अगर रुकूअ या सज्दे या तशह्हुद (यानी अतूतहिय्यात पढ़ने की हालत) में सज्दे की आयत तिलावत की जाये तब भी सज्दा वाजिब हो जायेगा और उसी हालत में उसकी भी नीयत कर ली जायेगी। (रददुल-मुह्तार)

अगर कोई शख्स सोने की हालत में सज्दा की आयत तिलावत करे उसपर भी इत्तिला मिलने के बाद सज्दा वाजिब है।

2. आयते सज्दा का किसी इनसान से सुनना, चाहे पूरी आयत सुने या सिर्फ लफ़्ज़े सज्दा मय एक लफ़्ज़ उसके पहले या उसके बाद के, और चाहे अरबी ज़बान में सुने या और किसी ज़बान में, और चाहे सुनने वाला यह जानता हो कि यह तर्जुमा आयते सज्दा का है या न जानता हो, लेकिन न जानने से सज्दा अदा करने में जिस क़द्र ताख़ीर और देरी होगी उसमें वह माज़ूर समझा जायेगा। (फ़तावा आलमगीरी)

किसी जानवर से जैसे तोते वगैरह से अगर आयते सज्दा सुनी जाये तो सही यह है कि सज्दा वाजिब न होगा, इसी तरह अगर किसी ऐसे मजन्नू से आयते सज्दा सुनी जाये जिसका जुनून यानी पागलपन एक दिन रात से ज़्यादा हो जाये और ख़त्म न हो तो सज्दा वाजिब न होगा।

3. ऐसे शख्स की इक्तिदा करना (यानी नमाज़ में उसकी पैरवी करना) जिसने आयते सज्दा की तिलावत की हो कि चाहे उसकी इक्तिदा से पहले या इक्तिदा के बाद, और चाहे उसने ऐसी आहिस्ता आवाज़ से तिलावत की हो कि किसी मुक़्तदी ने न सुना हो या बुलन्द आवाज़ से की हो। अगर कोई शख्स किसी इमाम से आयते सज्दा सुने उसके बाद उसकी इक्तिदा करे तो उसको इमाम के साथ सज्दा करना चाहिये और अगर इमाम सज्दा कर चुका हो तो उसमें दो सूरतें हैं- जिस रक़अत में इमाम ने आयते सज्दा की तिलावत की हो वही रक़अत उसको अगर मिल जाये तो उसको सज्दे की ज़रूरत नहीं, उस रक़अत के मिल जाने से समझा जायेगा कि वह सज्दा भी मिल गया। और अगर वह रक़अत न मिले तो फिर उसको नमाज़ पूरी करने के बाद

नमाज़ से बाहर सज्दा करना वाजिब है। (बहरूर-राइक, रद्दुल-मुस्तार)

मुक्तदी से अगर सज्दे की आयत सुनी जाये तो सज्दा वाजिब न होगा, न उसपर न इमाम पर, न उन लोगों पर जो उस नमाज़ में शरीक हैं। हाँ जो लोग उस नमाज़ में शरीक नहीं, चाहे वे लोग नमाज़ ही न पढ़ते हों या कोई दूसरी नमाज़ पढ़ रहे हों तो उनपर सज्दा वाजिब होगा। (रद्दुल-मुस्तार)

ये तीन सबब जो सज्दे के वाजिब होने के बयान किये गये इनके सिवा किसी और चीज़ से सज्दा वाजिब नहीं होता, जैसे कोई शख्स आयते सज्दा लिखे या दिल में पढ़े, ज़बान से न कहे, या एक-एक हर्फ़ करके पूरी पढ़े, पूरी आयत एक दम न पढ़े, या इसी तरह किसी से सुने तो उन सब सूरतों में सज्दा वाजिब न होगा।

(रद्दुल-मुस्तार)

(1) सज्दा-ए-तिलावत उन्हीं लोगों पर वाजिब है जिनपर नमाज़ वाजिब है। हैज़ वाली (माहवारी की हालत में होने वाली औरत) और निफ़ास वाली (यानी ज़च्चा होने की हालत वाली) औरत पर वाजिब नहीं, न उस वक़्त और न बाद में उसकी कज़ा की ज़रूरत है। नाबालिग़ पर और ऐसे मजन्नों पर वाजिब नहीं जिसका जुनून एक दिन रात से ज़्यादा हो गया, चाहे उसके बाद ख़त्म हो या नहीं। जिस मजन्नों का जुनून एक दिन रात से कम रहे उसपर वाजिब है, इसी तरह मस्त और नापाकी की हालत में होने वाले पर भी।

(2) सज्दा-ए-तिलावत के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं, यानी तहारत (पाकी) और सतूरे औरत (यानी वह हिस्सा जिसका छुपाना ज़रूरी है जो मर्द के लिए नाफ़ से घुटनों तक और औरत के लिए हाथ, पाँव और चेहरे के अलावा पूरा बदन है) और नीयत और किब्ला की तरफ़ रुख़ होना। तकबीरे तहरीमा उसमें शर्त नहीं। उसकी नीयत में आयत का मुतैयन करना शर्त नहीं कि यह सज्दा फ़लाँ आयत के सबब से है। और अगर नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी जाये और फ़ौरन सज्दा किया जाये तो नीयत भी शर्त नहीं। (रद्दुल-मुस्तार)

(3) जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है उन चीज़ों से सज्दा-ए-तिलावत में भी फ़साद आ जाता है और फिर उसका लौटाना वाजिब हो जाता है, हाँ इस क़द्र फ़र्क़ है कि नमाज़ में क़त्क़हा मारकर हँसने से जुजू जाता रहता है और इसमें क़त्क़हा मारने से जुजू नहीं जाता, और औरत के मुक़ाबिल होने से भी यहाँ कोई ख़राबी नहीं आती।

(4) सज्दा-ए-तिलावत अगर नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि फ़ौरन अदा कर ले और अगर उस वक़्त अदा न करे तब भी जायज़ है मगर मक्ख़ुहे तन्ज़ीही है। और अगर नमाज़ में वाजिब हुआ हो तो उसका अदा करना फ़ौरन वाजिब है, देर करने की इजाज़त नहीं। (रद्दुल-मुस्तार)

(5) नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ में और नमाज़ में वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ से बाहर बल्कि दूसरी नमाज़ में भी अदा नहीं किया जा सकता। पस अगर कोई शख्स नमाज़ में आयते सज्दा पढ़े और सज्दा करना भूल जाये तो उसका गुनाह उसके ज़िम्मे होगा जिसकी तदबीर इसके सिवा कोई नहीं कि तौबा करे, अरूहमुर्-राहिमीन अपने फ़ज़ल व करम से माफ़ फ़रमा देगा। (बहरूर-राइक)

नमाज़ का सज्दा नमाज़ से बाहर उस वक़्त अदा नहीं हो सकता जबकि नमाज़ फ़ासिद न हो, अगर

नमाज़ फ़ासिद हो जाये और उसका फ़ासिद करने वाला हैज़ (यानी माहवारी) का आना न हो तो वह सज्दा ख़ारिज में यानी नमाज़ से बाहर अदा कर लिया जाये। और अगर हैज़ की वजह से नमाज़ में फ़साद आया हो तो वह सज्दा माफ़ हो जाता है। (बहरूर-राइक, दुर्रे मुख्तार वग़ैरह)

(6) अगर कोई शख्स नमाज़ की हालत में किसी दूसरे से आयते सज्दा सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज़ में हो तो यह सज्दा नमाज़ से बाहर का समझा जायेगा और नमाज़ के अन्दर वह अदा न किया जायेगा बल्कि नमाज़ से बाहर अदा किया जाएगा।

(7) अगर एक आयते सज्दा की तिलावत एक ही मज्लिस में कई बार की जाये तो एक ही सज्दा वाजिब होगा। और एक आयते सज्दा की तिलावत की जाये फिर वही आयत मुख्तलिफ़ लोगों से सुनी जाये तब भी एक ही सज्दा वाजिब होगा। अगर सुनने वाले की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा वाजिब होगा चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदल जाये या न बदले। अगर सुनने वाले की मज्लिस बदल जाए तो उसपर भी मज्लिस बदलने के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे, चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदले या न बदले। और अगर पढ़ने वाले की मज्लिस बदल जायेगी तो उसपर भी मज्लिस के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे। (बहरूर-राइक)

(8) अगर एक आयते सज्दा कई मर्तबा एक ही मज्लिस में पढ़ी जाये तो इख़्तियार है कि सबके बाद सज्दा किया जाये या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने से पहले और बाद में की जाने वाली तिलावत के लिये काफी है, मगर एहतियात इसमें है कि सबके बाद किया जाये। (बहरूर-राइक)

अगर आयते सज्दा नमाज़ में पढ़ी जाये और फ़ौरन रुकूअ किया जाये या दो तीन आयतों के बाद, और रुकूअ में झुकते वक़्त सज्दा-ए-तिलावत की भी नीयत कर ली जाये तो सज्दा अदा हो जायेगा। और इसी तरह अगर आयते सज्दा की तिलावत के बाद नमाज़ का सज्दा किया जाये तब भी यह सज्दा अदा हो जायेगा और उसमें नीयत की भी ज़रूरत न होगी। (दुर्रे मुख्तार, रद्दुल-मुह्तार वग़ैरह)

(9) जुमा और ईदों और आहिस्ता आवाज़ की नमाज़ों में आयते सज्दा न पढ़ना चाहिये, इसलिये कि सज्दा करने में मुक्तदियों के शुब्हे में पढ़ने का ख़ौफ़ है। (बहरूर-राइक)

(10) किसी सूरः का पढ़ना और ख़ासकर आयते सज्दा को छोड़ देना मक्रूह है। (बहरूर-राइक)

(11) अगर हाज़िरीन वुजू के साथ सज्दे के लिये मुस्तैद न बैठे हों तो आयते सज्दा का आहिस्ता आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है, इसलिये कि वे लोग उस वक़्त सज्दा न करेंगे और दूसरे वक़्त शायद भूल जायें तो गुनाहगार होंगे। (दुर्रे मुख्तार)

सज्दा-ए-तिलावत का तरीका

सज्दा-ए-तिलावत का तरीका यह है कि किब्ला-रू होकर नीयत करके 'अल्लाहु अकबर' कहे और सज्दा करे, फिर उठते वक़्त 'अल्लाहु अकबर' कहकर उठे और खड़े होकर सज्दा करना मुस्तहब है। सज्दा-ए-तिलावत कई आदमी मिलकर भी कर सकते हैं, इस तरह कि एक शख्स को इमाम की तरह आगे खड़ा करें और खुद मुक्तदियों की तरह सफ़ बाँधकर पीछे खड़े हों और उसकी पैरवी करें। यह सूरत हकीकत

में जमाअत की नहीं है, इसी लिये अगर इमाम का सज्दा किसी वजह से फासिद हो जाये तो मुक्तदियों का सज्दा फासिद न होगा, और इसी सबब से औरत का आगे खड़ा कर देना भी जायज़ है।

आयते सज्दा अगर फर्ज नमाज़ों में पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में नमाज़ के सज्दे की तरह 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ल' कहना बेहतर है, और नफ़िल नमाज़ों में या नमाज़ से बाहर अगर पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में इख़्तियार है कि 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ल' कहें या और तस्बीहें जो हदीसों में आई हैं वे पढ़ें, जैसे यह तस्बीह "स-ज-द वज्ही लिल्लज़ी ख़-ल-कहू व सब्ब-रहू व शक्-क सम्अहू व ब-स-रहू बिहौलिही व कुव्वतिही फ-तबा-रकल्लाहु अह्सनुलु-ख़ालिकीन" और दोनों को जमा कर लें तो और भी बेहतर है।

उलमा ने लिखा है कि अगर कोई शख्स सज्दे की तमाम आयतों को एक ही मज्लिस में तिलावत करे तो हक़ तआला उसकी मुश्किल को दूर फरमाता है। और ऐसी हालत में इख़्तियार है कि सब आयतें एक दफ़ा पढ़ ले और उसके बाद चौदह सज्दे करे, या हर आयत को पढ़कर उसका सज्दा करता जाये। (रद्दुल-मुह्तार)

रुमूज़े औकाफे कुरआन मजीद

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़्यादा। और उस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़ल है। कुरआन मजीद की इबारत भी गुफ़्तगू के अन्दाज़ में है इसी लिये आलिमों ने इसके ठहरने न ठहरने की निशानियाँ मुकर्रर कर दी हैं, जिनको "रुमूज़े औकाफे कुरआन मजीद" कहते हैं। ज़रूरी है कि कुरआन मजीद की तिलावत करने वाले इन रुमूज़ का पूरा ख़याल रखें। रुमूज़े औकाफे कुरआन मजीद की तायदाद तकरीबन पन्द्रह है, लेकिन चूँकि हमने उनमें से सिर्फ़ दो चीज़ों की निशानियाँ मुकर्रर की हैं इसलिए उन्हीं का बयान किया जाता है।

वक्फ़े लाज़िम: वक्फ़े लाज़िम का एक निशान है उसपर ज़रूर ठहरना चाहिये, अगर न ठहरा जाये तो अन्देशा है कि मतलब कुछ-का-कुछ हो जाये। इसकी मिसाल हिन्दी में यूँ समझनी चाहिये कि जैसे किसी को यह कहना हो कि: उठो, मत बैठो। जिसमें उठने का हुक्म और बैठने की मनाही है। तो 'उठो' पर ठहरना लाज़िम और ज़रूरी है, अगर ठहरा न जाये तो 'उठो मत बैठो' हो जायेगा। जिसमें उठने की मनाही और बैठने के हुक्म का एहतिमाल और अन्देशा है। यानी सामने वाला इससे यह भी समझ सकता है कि उठने की मनाही की जा रही है। और अगर ऐसा हो जाए तो यह कहने वाले के मतलब और मन्शा के खिलाफ़ हो जायेगा। अरबी में इसकी निशानी (◌) यह हर्फ़ है, हमने पढ़ने वालों की सहूलत के लिए अरबी के हिन्दी मतन में (✱) यह निशानी मुकर्रर की है।

निशान सज्दा: कुरआन पाक में चौदह स्थान ऐसे हैं जहाँ सज्दा करने का हुक्म है और वहाँ सज्दा करना लाज़िमी है। सज्दा से मुताल्लिक़ मसाइल और उसका तरीक़ा हमने इस मुकद्दिमा के पृष्ठ 19-22 पर बयान किया है वहाँ तफ़सील देख लें। इसी तरह सज्दों के स्थानों की एक सूचि पृष्ठ 24 पर दी गयी है। हमने सज्दा के स्थान को बताने के लिए यह निशान (□ सज्दा) मुकर्रर किया है।



आयत नम्बर: जहाँ बात पूरी हो जाती है वहाँ (अरबी मतन में) एक गोल दायरा बना देते हैं। यह पूरी तरह ठहरने की अलामत (निशानी) है। इसको आयत कहते हैं। हमने पढ़ने वालों की आसानी और सहूलत के लिए ब्रेकेट के अन्दर आयत का नम्बर लिख दिया है। इसपर ठहरना चाहिये।

निशान रुकूअ: यह (❖) रुकूअ का निशान है। अगर हाशिए पर ऐसा निशान लगा है तो इसका मतलब है कि रुकूअ का निशान है। इसमें जो संख्याओं की तरतीब है वह कुरआन पाक में जो रुकूअ के निशान लगे हैं उन्हीं के मुताबिक है। जैसे (❖ रु. 12/3/10) इस तरह लिखा है तो इसका मतलब है कि वह उस सूरः का बारहवाँ रुकूअ है और उसके अन्दर तीन आयतें हैं और वह उस पारः का दसवाँ रुकूअ है।

निशान रुबूअ: हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। उनमें से पहले हिस्से को रुबूअ 1/4 यानी चौथाई कहते हैं। उसके लिए हमने यह निशान (◆ रुबूअ 1/4) मुकर्रर किया है।

निशान निस्फ: हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ आधा पारः हो जाता है उसको निस्फ कहते हैं। आधे की निशानी के लिए हमने यह निशान (● निस्फ 1/2) मुकर्रर किया है।

निशान सलासह: हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ पारः का तीन चौथाई हिस्सा मुकम्मल हो गया है वहाँ हमने यह निशान (▲ सलासः 3/4) मुकर्रर किया है।

निशान आधा कुरआन: हफ़ों की तायदाद के एतिबार से जहाँ कुरआन आधा हुआ है वहाँ हमने अरबी मतन में यह (⊙) निशान लगाया है। इसको पारः 15 में सूरः कटफ की आयत 19 में देखा जा सकता है।

कुरआन मजीद की मन्ज़िलें

क्रम. सं.	सूरः	सूरः सं.	पृष्ठ सं.	पारः सं.	नाम पारः
1	फ़ातिहः	1	1- 190		अलिफ-लाम्-मीम्
2	मा-इदः	5	192- 371	6	ला युहिब्बुल्लाहु
3	यूनुस	10	373- 507	11	यअ्तज़िरु-न
4	बनी इस्राईल	17	509- 659	15	सुब्हानल्लज़ी
5	शु-अरा-इ	26	661- 801	19	व क़ालल्लज़ी-न
6	वस्साफ़ात	37	803- 931	23	व मा लि-य
7	क़ाफ़	50	933- 1111	26	हा-मीम

कुरआन मजीद में सज्दा-ए-तिलावत के स्थान

क्रम. सं.	पार:	सूर:	सज्दे वाले शब्द	सज्दे का स्थान	पृष्ठ सं.	आयत सं.
1	9	सूर: आराफ़	यसजुदून	यसजुदून	317	206
2	13	सूर: रअद	व लिल्लाहि यसजुदु	वल-आसाल	451	15
3	14	सूर: नह्ल	व लिल्लाहि यसजुदु	मा युअमरून	491	49-50
4	15	सूर: बनी इस्त्राईल	यख़िर्स्-न लिल् अज़्कानि सुज्ज-दन्	खुशूआ	529	107-109
5	16	सूर: मरियम	ख़र्स् सुज्जदन्	व बुकिय्या	557	58
6	17	सूर: हज	यसजुदु लहू	मा यशा-उ	603	18
7	17	सूर: हज ¹	वसजुदू	तुफ़िलहून	615	77
8	19	सूर: फुरकान	उसजुदू	नुफूरा	651	60
9	19	सूर: नम्ल	अल्ला यसजुदू	रब्बिद्-अर्शिल् अज़ीम	683	25-26
10	21	सूर: सज्दा	ख़र्स् सुज्जदन्	ला यस्तक़बिरून	751	15
11	23	सूर: सौद ²	व ख़र्-र राकिअन्	व अनाब	819	24
12	24	सूर: हा-मीम सज्दा	वसजुदू लिल्लाहि	ला यसअमून	865	37-38
13	27	सूर: नज्म	फसजुदू	वअबुदू	951	62
14	30	सूर: इन्शिकाक	ला यसजुदून	ला यसजुदून	1083	21
15	30	सूर: अलक	वसजुद्	वक्तरिब्	1099	19

1. 2. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूर: 22 आयत 77 पर इमाम शाफई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक नहीं है। और सूर: 38 आयत 24 पर इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफई के नज़दीक नहीं है। वहरहाल दोनों इमामों के नज़दीक सज्दों की कुल तायदाद 14 ही है।

कुरआन मजीद को कितने समय में खत्म किया जाए

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने तीन दिन से कम में कुरआन मजीद खत्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफा से नकल किया गया है कि जिसने हर साल में दो बार कुरआन मजीद खत्म किया उसने हक अदा किया। इसलिये कि हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात (इन्तिकाल) के साल में दो ही बार कुरआन खत्म किया था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि उस इबादत में कुछ बेहतरी नहीं है जिसमें समझ न हो, औ न उस किराअत (पढ़ने) में जिसमें फ़िक्र (सोच-समझ) न हो। इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं कि अपने आपको कुरआन मजीद के खत्म करने की गिनती पर हावी न करो, बल्कि एक आयत का सोचकर पढ़ना सारी रात में दो कुरआन खत्म करने से बेहतर है।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे साथ खड़े हुए तो आप यह आयत बड़ी देर तक पढ़ते रहे:

“इन तुअज़िज़हुम फ-इन्नुहुम् अ़िबादु-क”

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे पाँच दिन से कम समय में पूरा कुरआन मजीद खत्म करने की इजाज़त नहीं दी।

ज़रूरी तंबीह

कुरआन मजीद के मतन को अरबी के अलावा हिन्दी या किसी दूसरी भाषा के रस्मुलख़त (लिपि) में रुपान्तर करने पर उलमा की रायों में मतभेद है। कुछ उलमा का ख़्याल है कि इस तरह करने से कुरआन मजीद के हफ़ों की तहरीफ़ (कमी-बेशी) होती है और उनको भय (डर) है कि जिस तरह इन्ज़ील और तौरात तहरीफ़ का शिकार हो गईं वैसे ही खुदा न करे इसका भी वही हाल हो, जबकि यह नामुम्किन है। करोड़ों हाफ़िज़ों को कुरआन मजीद ज़बानी याद है।

इस सिलसिले में नाचीज़ भुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी (इस कुरआन का हिन्दी अनुवादक) अर्ज करता है कि हकीकत यह है कि अरबी रस्मुलख़त के अलावा दूसरी भाषा में कुरआन मजीद को कतई तौर पर सौ फ़ीसद सही नहीं पढ़ा जा सकता। इसलिए कि हफ़ों की बनावट के एतिबार से भी किसी दूसरी भाषा में यह गुन्जाइश नहीं कि वह अरबी ज़बान के तमाम हुरूफ़ का मुतबादिल (विकल्प) पेश कर सके। फिर अगर किसी तरह कोई निशानी मुक़र्रर करके इस कमी को पूरा करने की कोशिश भी की जाए तो ‘मख़ारिजे हुरूफ़’ यानी हुरूफ़ के निकालने का जो तरीका और इल्म है वह उस वैकल्पिक तरीके से हासिल नहीं किया जा सकता। जबकि यह सबको मालूम है कि सिर्फ़ अल्फ़ाज़ के निकालने में फ़र्क़ होने से अरबी ज़बान में मायने बदल जाते हैं। मैं यहाँ सिर्फ़ तीन मिसालें बयान करके अपनी बात की ताईद पेश करूँगा:

(1) कुरआन पाक में एक लफ़ज़ जगह-जगह आता है “अलीम”। इस लफ़ज़ में अगर “अ” को हलक़ के अगले हिस्से से निकाला जाए तो इसके मायने होंगे “तकलीफ़ देने वाला” जैसे ‘अज़ाबुन् अलीम’ यानी

तकलीफ देने वाला अज़ाब। और अगर इस लफ़्ज़ को हलक़ के दरमियानी हिस्से से निकाला जाए यानी “अ” तो अब “अलीम” के मायने होंगे “जानने वाला”।

(2) कुरआन पाक में “असा” का लफ़्ज़ आया है। यह दो तरह लिखा है- एक “अैन, सीन और या” के साथ। “सीन” को ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारे से निकाला जाता है तो उस सूरत में इसके मायने होंगे “उम्मीद है, शायद”। और दूसरे “अैन, सॉद और या” के साथ, “सॉद” को ज़बान की नोक और अगले दाँतों के बीच से निकाला जाता है। अब “असा” के मायने होंगे “नाफ़रमानी की, ग़लती की”।

(3) तीसरी मिसाल यह है कि कुरआन पाक में “मुनु-ज़रून” का लफ़्ज़ भी कई जगह आया है। यह भी दो तरह लिखा जाता है- एक “मीम, नून, ज़ाल, रा और नून” से, और दूसरे “मीम, नून, ज़ोए, रा और नून” के साथ, यानी दोनों में एक हर्फ़ का फ़र्क़ है, एक तरफ़ “ज़ाल” है और दूसरी तरफ़ “ज़ोए” है। यह फ़र्क़ भी और इस लफ़्ज़ के निकालने और अदा करने का तरीका भी क़िराअत का इल्म पढ़े और सीखे बग़ैर नहीं आ सकता। “ज़ाल” ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारों से अदा किया जाता है। और “ज़ोए” को भी इसी स्थान से निकाला जाता है मगर जो माहिर हैं वह इसको अलग अन्दाज़ से अदा करने की मशक़ कराते हैं। अब जिस लफ़्ज़ में “ज़ाल” है, उसके मायने हैं “जिन लोगों को डराया गया हो” और जिस लफ़्ज़ में “ज़ोए” है उसके मायने हैं “जिसको मोहलत दी गयी हो, जिसको छोड़ दिया गया हो”।

इन मिसालों के बाद यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि जब तक अरबी के हुरूफ़ की सही पहचान और उनकी अदायगी का सही तरीका नहीं सीखा जाएगा उस वक़्त तक कुरआन पाक की सही तिलावत मुश्क़िन नहीं। और यह सिर्फ़ और सिर्फ़ कुरआन मजीद को अरबी ज़बान के अन्दर सीखने से आ सकता है, किसी दूसरी ज़बान के ज़रीए इसको सीख पाना तैराकी का फ़न पानी से बाहर सीखने वाली बात होगी। अब सवाल यह पैदा होता है कि हमने यह सब जानते हुए अरबी मतन को हिन्दी में तब्दील करने की कोशिश क्यों की? सो इसका एक जवाब तो यह है कि आपके अन्दर इस चीज़ का शौक़ पैदा करने के लिए कि आप इस अज़ीम दौलत को हासिल करने की कोशिश करें और आपको इस तरफ़ तवज्जोह हो। दूसरी बात यह है कि अरबी ज़बान में एक मिठास है और फिर कुरआन तो तमाम ज़हानों के ख़ालिक व मालिक का कलाम है इसके अन्दर तो एक कुदरती कशिश भी है जो अपनी तरफ़ खींचे बग़ैर नहीं रहती, इसलिए हो सकता है किसी अल्लाह के बन्दे के कुरआन सीखने का यही ज़रिया बन जाए।

अगर आप मेरी इस बात से इत्तिफ़ाक़ न करें कि कुरआन पाक को अरबी के अज़ावा सही नहीं पढ़ा जा सकता तो मैं आपको इसकी आजमाइश का भी एक तरीका बतलाता हूँ। वह यह कि आप हिन्दी या किसी और ज़बान में मतन तब्दील शुदा कुरआन खोलकर बैठें और किसी अच्छे कारी के पढ़े हुए कुरआन की कैसिट लें और उसी जगह से उसको चलाएँ जहाँ आप कुरआन पाक में कोई मक़ाम खोले बैठे हैं, फिर जो आवाज़ उस रिकार्ड से निकलती जाए उसको अल्फ़ाज़ पर फिट करते जाएँ और देखें कि क्या मैं इस लिखी हुई इबारत को इस तरह अदा कर सकता हूँ? और जो हुरूफ़ ज़बान से निकल रहे हैं क्या मैं उनके इस तरह निकालने पर कादिर हूँ? देखने में तो “स” एक हर्फ़ है मगर अरबी के तीन हर्फ़ों की नुमायन्दगी करता है।

बहरहाल इस अर्ज करने का मकसद यह है कि आप सिर्फ इस भरोसे पर न बैठ जाएँ कि हम अरबी के अलावा दूसरी भाषाओं में जो कुरआन पाक पढ़ते हैं वह सही तौर पर अदा हो जाता है, बल्कि डर है कि किसी जगह ऐसा न हो जाए कि मायने ही बदल जाएँ और बजाय सवाब के गुनाह के हकदार बन जाएँ। अल्लाह तआला इस से हमारी हिफाजत फरमाए और हमें कुरआन को हासिल करने और उसको पढ़ने और उसपर अमल करने की तौफीक नसीब फरमाए, आमीन।

कुरआन मजीद की सूरतों की ख़ासियतें और असरात

अगर कोई यह अक़ीदा रखे कि कुरआन अमलियात और तावीज़ों के लिये नाज़िल हुआ है तो यह जहालत और बड़ा गुनाह है। क्योंकि कुरआन हकीकत में खुदा के हुक्क जो लोगों पर हैं और साथ ही लोगों के जो आपस में एक-दूसरे पर हुक्क हैं और उनके अदा करने या न करने के सबब जो परिणाम दुनिया में और मरने के बाद सामने आयेंगे उन सबके बयान के लिये खुदा की तरफ से नाज़िल हुआ है। मगर इसके साथ ही बहुत-सी आयतों और सूरतों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाबा-ए-किराम और बुजुर्गाने दीन अमलियात के तौर पर मुसीबतों के दूर करने के लिये भी पढ़ते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी, मगर जो शख्स किसी मतलब के लिये कोई अमल पढ़ता हो और असबाब की दुनिया के तकाज़े के मुताबिक ज़ाहिरी कोशिश न करता हो तो वह यकीनन नाकाम होगा, क्योंकि उसकी मिसाल एक ऐसे बीमार के जैसी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज़ न करता हो, बल्कि अमल पढ़ने का यह मतलब होता है कि अमल की वजह से ज़ाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। अब आगे हम सूरतों के ख़्वास (ख़ासियतें और असरात) लिखते हैं जो रसूले करीम की हदीसों, सहाबा-ए-किराम के आसार और नक्शबन्दी, चिशितया, कादिरिया और सह्रवरदिया ख़ानदान के बुजुर्गों के तजुर्बों के मुताबिक हैं, और उन सब बुजुर्गाने दीन का तजुर्बा है कि जिस आयत के मज़मून को जिस काम से मुनासबत पाई जाये तो वह आयत उस काम के लिये अमल के तौर पर पढ़ी जा सकती है। जैसे कुरआन में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने दुआ की “का-ल रब्बिशरह ली सद्री व यस्सिर ली अम्नी, वस्तुल उक्द-तम् मिल्लिसानी, यफ़कहू कौली”

तर्जुमा: मूसा अलैहिस्सलाम ने (फिरऔन को हिदायत की तरफ बुलाने के लिए जाते वक़्त) कहा ऐ खुदा! मेरे सीने को खोल और मेरे काम को मेरे लिये आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल (ताकि बयान में सफ़ाई हो) और वे लोग मेरी बात को समझें।

इस आयत को हर शख्स मुश्किल कामों की आसानी के लिये पढ़ सकता है और इस मतलब के लिये पढ़ सकता है कि उसकी ज़बान में तासीर हो ताकि दूसरे लोग उसकी बात और फैसले को मान लें। और अपने ज़ेहन व अक्ल के बढ़ने के लिये पढ़ सकता है। और तथा सूर: नूह में जहाँ हज़रत नूह ने कुप्फ़ार की तबाही के लिये दुआ की है कि ऐ खुदा! किसी काफ़िर को ज़मीन पर ज़िन्दा न छोड़, इन आयतों को दुश्मन की तबाही के लिये पढ़ सकता है।

कुरआन के अमल के मामले में वक़्त का निश्चित करना और पढ़ने की तायदाद की कैद नहीं है, बल्कि

हर शख्स को चाहिये कि वह खुद इशा, या सुबह की नमाज़ के बाद, या कोई और वक़्त मुक़र्रर करके, और पढ़ने की तायदाद भी अपनी तरफ़ से कायम करके पढ़ा करे, अव्वल व आख़िर में दुरुद हो और हर चीज़ को पाक रखे। मगर यह बात तजुर्वी से सावित हुई है कि अगर कोई शख्स कुरआन की आयत किसी नाजायज़ काम के लिये अमल के तौर पर इस्तेमाल में लाये तो वह सरसब्ज़ नहीं होता और पागल हो जाता है।

सूर: फ़ातिह: की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी शख्स पर कोई मुसीबत पड़ती देखते तो आप सूर: फ़ातिह: पढ़ने का हुक़्म करते। और जो शख्स फ़ज़्र की सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान विस्मिल्लाह के साथ चालीस (40) बार पढ़कर किसी बीमार के मुँह पर दम करे तो अल्लाह तआला इस सूर: की वरक़त से उसको मुकम्मल सेहत अता फ़रमायेगा। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “अल्फ़ाति-हतु शिफ़ाअु कुल्लि दाइन” यानी सूर: फ़ातिह: हर बीमारी के लिए शिफ़ा है। चुनाँचे एक शख्स बीमार हुआ तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने सूर: फ़ातिह: को पढ़कर उसके मुँह पर दम किया, उसको विलकुल आराम हो गया।

सूर: ब-क़र: की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि यह सूर: जिस घर में पढ़ी जाती है उस घर में शैतान दाख़िला नहीं पाता। और एक हदीस में फ़रमाया कि सूर: ब-क़र: को पढ़ो कि उसमें ख़ैर व वरक़त है।

सूर: आलि इमरान की ख़ासियतें:- इस सूर: शरीफ़ का विर्द रखने वाला कर्ज़ के बोझ से छुटकारा पायेगा। और जो शख्स सात मर्तबा पढ़े तो तमाम कर्ज़ा दूर हो जाये और उसको मालूम न हो कि उसके लिये रिज़्क किस जगह से आता है।

सूर: निसा की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स हर दिन सात मर्तबा इस सूर: शरीफ़ का विर्द करे तो बीवी को उससे मुहव्वत ज़्यादा हो। और अगर बीवी पढ़े तो मर्द ज़्यादा मुवाफ़क़त करे।

सूर: मा-इद: की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स कहत-साली (अकाल) के दिनों में सूर: मा-इद: को पढ़े तो वह शख्स कहत से महफूज़ रहे।

सूर: अनज़ाम की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को एक मर्तबा पढ़े तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ करते हैं और हर किस्म की ज़रूरतों और हाजतों में पढ़ने से मुश्किलात में आसानी होती है, और जो मुश्किल होती है वह हल हो जाती है।

सूर: आराफ़ की ख़ासियतें:- जो शख्स सूर: आराफ़ को पढ़े तो क़ियामत के दिन उसका हाथ जनाब आदम अलैहिस्सलाम के हाथ में होगा। और अगर किसी बादशाह का ख़ौफ़ दिल पर तारी हो या किसी ज़ालिम बादशाह से वास्ता पड़े तो तीन बार पढ़े, ज़ालिम अपने जुल्म से बाज़ आयेगा और मेहरबानी से पेश आयेगा।

सूर: अनफ़ाल की ख़ासियतें:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स इस सूर: शरीफ़ के पढ़ने पर पाबन्दी रखेगा तो क़ियामत के दिन मैं गवाही दूँगा कि यह शख्स निफ़ाक़ से बेज़ार है। और अगर कोई शख्स कैद में मुब्तला हो तो वह इस सूर: को पढ़ा करे। अगर वह बेक़सूर है तो अल्लाह तआला इसकी वरक़त से उसको नज़ात देगा। अगर खुद न पढ़ सके तो कोई रिश्तेदार पढ़ लिया करे। और

हाकिम उसपर मेहरबान होगा।

सूर: तौबा की ख़ासियतें:- इस सूर: का हर दिन एक बार पढ़ना ईमान की सलामती का सबब होता है। चुनाँचे बुजुर्गाने दीन इसकी तिलावत से ऐसे-ऐसे फायदे उठाते रहे हैं कि ज़ाहिरी आँखें उनको नामुष्किन ख्याल करती हैं। किसी हाकिम के सामने पढ़कर जाये तो वह मेहरबान हो जाता है। और अगर कोई ख़ता हो तो उसकी बख़्शिश हो जाती है।

सूर: यूनुस की ख़ासियतें:- इस सूर: का जो हमेशा विद रखे उसपर जान निकलने की सख़्ती और क़ब्र का अज़ाब न होगा। और जो शख्स इक्कीस (21) मर्तबा पढ़े वह दुश्मनों पर ग़ल्बा और फ़त्ह पाएगा। और अगर कोई सख़्ती या मुसीबत पेश आए तो तेरह (13) बार पढ़ें, वह सख़्ती और मुसीबत दूर हो जाती है। इन्शा-अल्लाह।

सूर: यूसुफ़ की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स अपने ओहदे (पद) से हटा दिया गया हो तो वह इसकी तिलावत की पाबन्दी इख़्तियार करे, इस सूर: की बरकत से बहाल हो जायेगा। और अगर किसी हाकिम से कोई हाजत हो तो तेरह (13) बार पढ़कर उसके पास जाये अपने मक़सद में ज़रूर कामयाब होगा।

सूर: कट्फ़ की ख़ासियतें:- जो शख्स कर्ज़ में मुब्तला हो, जुमा की नमाज़ के बाद सूर: कट्फ़ सात बार पाढ़े और अल्लाह के सामने रो-रोकर दुआयें करे, उसका कर्ज़ा उतर जायेगा और वह हैरान हो जायेगा। और जो कोई इसको जुमा की रात में पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसको ऐसा नूर अता करेगा कि जिसकी रोशनी बैतुल्लाह शरीफ़ तक पहुँचे और उसके गुनाह माफ़ किये जायेंगे। और इस सूर: को पाबन्दी के साथ पढ़ने वाला ताऊन, सफ़ेद कोढ़, ख़ून ख़राब होने की बीमारी और दज्जाल के फ़ितने से महफूज़ रहेगा। और उसकी शुरू की दस आयतों के पढ़ने की सख़्त ताकीद है। और ज़वान बन्दी, बलाओं और मुसीबतों से हिफ़ाज़त रिज़्क में बढ़ोतरी व बरकत के लिए रोज़ाना सुबह को पढ़ें।

सूर: मरियम की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़गार और काम-धन्धे की कमी के सबब परेशान हो तो सूर: मरियम को सात बार पढ़कर दुआ करे। और अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो तीन बार पढ़ें।

सूर: तौ-हा की ख़ासियतें:- इसके आमिल पर जादू या सेहर कोई असर नहीं करता और रिज़्क की फ़रागत होती है।

सूर: अम्बिया की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स परेशान हाल हो और अक्सर मुख़्तलिफ़ किस्म की परेशानियों में घिरा रहता हो तो रोज़ाना तीन बार सूर: अम्बिया को पढ़ें, अल्लाह तआला उसके तमाम ग़म और परेशानियों को दूर कर देगा। जो सूर: अम्बिया पढ़ेगा कियामत के दिन उसका हिसाब न होगा।

सूर: सबा की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को दस बार पढ़ेगा तो वह आफ़तों और बलाओं से महफूज़ रहेगा। और फ़रमाया हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जो आदमी इस सूर: को पढ़ता रहे वह खुशनसीब है क्योंकि कियामत के दिन कोई ऐसा नबी न होगा जो उसके साथ मुसाफ़ा न करे।

सूर: यासीन की ख़ासियतें:- इस सूर: की ख़ासियतें और असरात इस क़द्र हैं कि कलम उनको लिखने की ताकत नहीं रखता, क्योंकि यह कुरआन का दिल है। चुनाँचे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया कि हर चीज़ का दिल होता है और कुरआन मजीद का दिल सूरः यासीन है। और जो शख्स इसको किसी हाजत के लिये एक बार पढ़े तो उसकी हाजत पूरी हो। और अगर बाँझ औरत को किसी चीनी के बरतन पर लिखकर और अर्क गुलाब से धोकर पिलाते रहें तो उसके नरीना औलाद हो। और मोहताज पढ़े तो मालदार हो जाये। और अगर किसी ऐसे शख्स पर पढ़ी जाए जिसपर जादू का असर हो तो वह सेहर और जादू दूर हो जाये। अगर किसी ऐसे शख्स पर पढ़कर दम की जाए जिसपर कोई जिन्न भूत वगैरह का असर हो तो वह असर भाग जाए। अगर कोई शख्स रात को नीयत के खुलूस के साथ पढ़े तो वह जन्नती है और दीन व दुनिया की तमाम मुश्किलें उसपर आसान हो जाती हैं। और हर मुहिम और हर मतलब के लिये इसका पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। और अगर किसी शख्स की जान अटक जाये तो उसपर इस सूरः शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दम करें, उसकी रूह फौरन निकल जाये। और अगर बीमार पर पढ़कर फूँकें तो वह सेहत पाये।

सूरः सौद की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः को बुरी नज़र के दूर करने के लिये सात बार पढ़कर दम करें तो नज़रे-बद दूर होगी।

सूरः जुमर की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़ाना सात बार इस सूरः को पढ़े तो इज़्ज़त और रुतबे का मालिक हो, और उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी और रुतबे में बुलन्दी हो और हमेशा राहत रहे।

सूरः मुहम्मद की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़े या लिखकर गुलाब से धोकर पिये तो वह रुतबे व पद में बुलन्द हो। और अगर लिखकर गले में डाले तो दुश्मनों पर फ़तह पाये। अगर सख़्त मुहिम दरपेश हो तो शुरू और आख़िर में ग्यारह (11) बार दुरुद शरीफ़ को पढ़े, इन्शा-अल्लाह नजात हासिल हो और उस मुहिम पर ग़ालिब आये।

सूरः फ़तह की ख़ासियतें:- जो शख्स सूरः फ़तह को इक्तालीस (41) बार पढ़े तो दुश्मनों पर फ़तह पाये। और अगर रमज़ान का चाँद देखकर खड़े-खड़े तीन बार पढ़े तो तमाम साल अमन में रहे। जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़ता है गोया कि वह मेरे साथ जिहाद में शामिल है।

सूरः काफ़ की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः शरीफ़ को लिखें और बारिश के पानी से धोकर पेटदर्द के मरीज़ को पिलायें तो सेहत हो। और जिस लड़के के दाँत मुश्किल से निकलते हों उसको पिलायें बहुत आसानी से दाँत निकल आयें। और इस सूरः के पढ़ने की पाबन्दी करने वाले पर मौत के वक़्त की सख़्ती में आसानी हो जाती है, और इस सूरः का अमिल जब मर जाता है तो उसकी कब्र में एक रोशनी पैदा हो जाती है।

सूरः कमर की ख़ासियतें:- अगर किसी को हाकिम का ख़ौफ़ पैदा हो, या उससे कोई तकलीफ़ पहुँचने का अन्देशा लगा हुआ हो तो सूरः कमर को सात बार पढ़े।

सूरः रहमान की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख्स सूरः रहमान को पढ़ता है गोया वह अल्लाह तआला की तमाम नेमतों का शुक्र अदा करता है। और आँख के दर्द में पढ़कर दम करें तो अल्लाह तआला शिफा बख़्शे। और तिल्ली के मरीज़ पर दम करें तो सेहत हो जाये। और अगर कोई ग्यारह (11) बार पढ़े तो अपने मतलब को पहुँचे।

सूर: वाकिआ की ख़ासियतें:- 'तब्‌अे ताबिईन' में बाज़ बुजुर्गों ने मालदारी हासिल करने के लिए सूर: वाकिआ का अमल इस तरह लिखा है कि जुमा के दिन से सात दिन तक बिना नागा किए हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर जब जुमा की रात आये तो इस सूर: को मगरिब की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर इशा की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुख़द शरीफ़ भेजे, उसके बाद रोज़ाना सुबह व शाम एक बार नमाज़ के बाद पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उसको मालदार कर देगा। या जिस मतलब के वास्ते पढ़ेगा वह मतलब पूरा होगा।

सूर: मुजादला की ख़ासियतें:- अगर किसी कौम में झगड़ा फ़साद बरपा हो तो सूर: मुजादला पढ़ें क्योंकि इस सूर: शरीफ़ का पढ़ना आपसी निफ़ाक़ और बुग़ज़ व कीना को दूर करता है। और दुश्मनों को नीचा करने के लिए भी आज़माई हुई है।

सूर: हश्र की ख़ासियतें:- अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो चार रकअत नमाज़ पढ़ें और हर रकअत में फ़ातिह: (यानी अल्हम्दु) के बाद सूर: हश्र एक बार पढ़ें, फिर सलाम फेरकर जो दुआ करें कबूल होगी।

सूर: जुमा की ख़ासियतें:- जिन मियाँ-बीवी के दरमियान में नाइत्तिफ़ाकी हो उनमें से कोई जुमा के दिन इस सूर: शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दुआ माँगे। उनमें मुहब्बत बढ़ जायेगी और आपस का झगड़ा दूर होगा। और कोई शख्स अच्छी तरह कलाम न कर सकता हो तो इसका विद रखे, उसकी ज़बान दुरुस्त हो जायेगी।

सूर: मुनाफ़िकून की ख़ासियतें:- अगर कोई शख्स किसी चुगलख़ोर की तरफ़ से तकलीफ़ में हो तो सूर: मुनाफ़िकून को एक सौ साठ (160) बार पढ़े, अल्लाह तआला उसके हाल पर रहम करेगा और उस तकलीफ़ से बचालेगा। या उस चुगलख़ोर की ज़बान को बन्द कर देगा।

सूर: तगाबुन की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में आया है कि जो कोई सूर: तगाबुन को रोज़ाना एक बार पढ़े तो वह आदमी नागहानी और अचानक की मौत से महफूज़ रहे। और अगर कोई शख्स तीन बार पढ़ा करे तो उसके माल में ख़ैर व बरकत हो।

सूर: मुल्क की ख़ासियतें:- हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कुरआन में एक सूर: है जिसमें तीस आयतें हैं। उसने एक शख्स की शफ़ाअत की यहाँ तक कि वह शख्स बख़्शा गया। और इब्ने हब्बान से रिवायत है कि यह सूर: अपने पढ़ने वाले के लिए इस्तिग़फ़ार करती है यहाँ तक कि वह बख़्शा जाता है। और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का यह लफ़ज़ है कि यह सूर: नजात देने वाली है, क़ब्र के अज़ाब से नजात देती है। मैं चाहता हूँ कि यह सूर: हर मोमिन के दिल में हो। और जो शख्स इसको इक्तालीस (41) बार पढ़े तो उसकी तमाम मुश्किलें हल हों और वह तमाम आफ़तों से महफूज़ रहे। और अगर कर्ज़दार हो तो उसका कर्ज़ा उतर जाये।

सूर: मअारिज की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़ाना सूर: मअारिज को पढ़े वह तमाम दिन शैतानी वस्वों से बचा रहे। और जिस शख्स को एहतिलाम (स्वपनदोष) कसरत से होता हो वह आठ बार सूर: मअारिज को पढ़े, या सोते वक़्त रोज़ाना एक बार पढ़ लिया करे, इन्शा-अल्लाह तआला वह शख्स महफूज़ रहेगा।

सूर: नूह की ख़ासियतें:- अगर किसी सख़्त दुश्मन से पाला पड़ जाये और उसको दफ़ा करना नामुम्किन

हो तो एक हजार बार सूर: नूह पढ़ें या बहुत-से आदमी जिनकी तायदाद ताक (यानी बेजोड़ हो, जैसे पाँच, सात, नौ, ग्यारह) हो, एक ही मजलिस में बैठकर खत्म करें या दो तीन दिन में खत्म करें, दुश्मन हलाक हो जायेगा।

सूर: जिन्न की ख़ासियतें:- अगर किसी शख्स को आसेब (जिन्न भूत वगैरह का असर) हो गया हो तो सूर: जिन्न को सात बार पढ़कर सात दिन तक दम करें, आसेब भाग जायेगा। और जिन्न व परी को कब्जे में करने के वास्ते सात सौ (700) बार पढ़ें, जिन्न काबू में आ जायेगा।

सूर: मुज्जम्मिल की ख़ासियतें:- जो शख्स रोज़ाना सूर: मुज्जम्मिल को अपना विर्द बनाये तो वह हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत पाये और ख़ैर व बरकत का सबब है। अगर इस सूर: को पढ़कर हाकिम के पास जाये तो हाकिम मेहरबान हो जाये। और ज़बान बन्दी और तलवार बन्दी के वास्ते आजमाई हुई है। और अगर लिखकर मरीज़ के गले में लटकाये तो उसको सेहत हो और हर दिन सात बार पढ़े तो रिज़्क में फ़राखी हो।

सूर: इन्शिराह की ख़ासियतें:- अगर किसी शख्स के सीने में दर्द हो तो इस सूर: पाक से दम किया हुआ पानी छाती पर मले। और दिल के दर्द के वास्ते अक्सीर है। और अगर कोई काम अनेक कारणों से बन्द हो गया हो तो इस सूर: को बीस (20) बार पढ़े, वह काम खुल जायेगा। और जो शख्स कुछ माल ख़रीदे उसपर पढ़कर दम करे तो बरकत हो।

सूर: क़द्र की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को सुबह व शाम तीन-तीन बार पढ़े तो सब दोस्त व आशना उसकी इज़्ज़त करें और बुलन्द रुतबे हासिल करने के लिए हमेशा इसका विर्द रखना अजीब व ग़रीब असर रखता है। और चीनी के बरतन पर लिखकर और उसे गुलाब या बारिश के पानी से धोकर मरीज़ को पिलायें तो इन्शा-अल्लाह शिफ़ा हो।

सूर: इख़्लास की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख्स तीन बार सूर: इख़्लास को पढ़े तो उसको एक कुरआन ख़त्म करने का सवाब हासिल होगा और जन्नत उसपर वाजिब हो जाती है। और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि “कुल् हुवल्लाहु शरीफ़” का पढ़ने वाला अपनी मुरादों को पहुँचेगा चाहे दुनियावी हों या दीनी। और अगर इशा की नमाज़ के बाद खड़े होकर एक सौ एक (101) बार पढ़े तो तमाम गुनाह उसके माफ़ किये जायें। और अगर बीमार को लिखकर और धोकर पिलायें तो उसे सेहत हासिल हो। यह हर बला को दूर करने वाली है।

सूर: फ़लक़ की ख़ासियतें:- इस सूर: को हर दिन बिना नागा तिलावत करने वाला हर तरह की आफ़तों से महफूज़ रहता है। और हासिदों और दुश्मनों के शर और बुराई से बचा रहता है। और अगर किसी शख्स पर सेहर या जादू असर कर गया हो तो इस सूर: को पढ़कर दम करें, और जिसपर जादू का असर हुआ है अगर वह सौ (100) बार पढ़े तो उससे छुटकारा पाये, और घोलकर पिये और लिखकर गले में बाँधे।

सूर: नास की ख़ासियतें:- जो शख्स इस सूर: को अपने ऊपर पढ़कर दम करे उसपर किसी का जादू न चले और हर बला से महफूज़ रहे। और जादू के वास्ते सौ (100) बार पढ़ें। और अगर हर रोज़ पढ़ें तो तमाम गुनाह माफ़ किये जाते हैं। और जिस आदमी पर जादू कर दिया गया हो या उसपर किसी जिन्न भूत वगैरह का असर हो उसपर दम करें तो उसे नजात हासिल हो।

सूरतों की तरतीब

क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
1	सूर: फातिह:		1	31	सूर: लुकमान	21	741-747
2	सूर: ब-कर:	1-2-3	3-87	32	सूर: सज्दा	21	747-753
3	सूर: आलि इमरान	3-4	89-137	33	सूर: अहज़ाब	21-22	753-771
4	सूर: निसा	4-5-6	137-189	34	सूर: सबा	22	771-783
5	सूर: मा-इद:	6-7	191-229	35	सूर: फातिर	22	783-793
6	सूर: अन्आम	7-8	229-269	36	सूर: यासीन	22-23	793-803
7	सूर: आराफ	8-9	271-317	37	सूर: साफ़ात	23	803-817
8	सूर: अन्फाल	9-10	317-335	38	सूर: सौद	23	817-825
9	सूर: तौबा	10-11	335-371	39	सूर: जुमर	23-24	825-841
10	सूर: युनुस	11	373-397	40	सूर: मुअ्मिन	24	841-859
11	सूर: हूद	11-12	397-423	41	सूर: हा-मीम सज्दा	24-25	859-869
12	सूर: यूसुफ	12-13	423-445	42	सूर: शूरा	25	871-881
13	सूर: रअद	13	447-461	43	सूर: जुख़रुफ़	25	881-893
14	सूर: इब्राहीम	13	461-471	44	सूर: दुख़ान	25	893-897
15	सूर: हिज्र	13-14	471-481	45	सूर: जासिय:	25	897-903
16	सूर: नह्ल	14	481-507	46	सूर: अहकाफ़	26	905-913
17	सूर: बनी इस्त्राईल	15	509-529	47	सूर: मुहम्मद	26	913-919
18	सूर: कह्फ़	15-16	529-549	48	सूर: फह	26	921-927
19	सूर: मरियम	16	551-563	49	सूर: हुजुरात	26	927-933
20	सूर: तौ-हा	16	563-579	50	सूर: काफ़	26	933-937
21	सूर: अम्बिया	17	581-597	51	सूर: ज़ारियात	26-27	937-943
22	सूर: हज	17	599-615	52	सूर: तूर	27	943-947
23	सूर: मुअ्मिनून	18	617-631	53	सूर: नज़्म	27	947-951
24	सूर: नूर	18	631-649	54	सूर: कमर	27	951-957
25	सूर: फुरकान	18-19	649-661	55	सूर: रहमान	27	957-961
26	सूर: शु-अरा	19	661-679	56	सूर: वाकिआ	27	963-967
27	सूर: नम्ल	19-20	679-693	57	सूर: हदीद	27	969-975
28	सूर: कसस्	20	695-715	58	सूर: मुजादला	28	979-985
29	सूर: अन्कबूत	20-21	715-729	59	सूर: हश्	28	985-991
30	सूर: रूम	21	729-741	60	सूर: मुस्तहिना	28	993-997

क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूर:	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
61	सूर: सफ़्फ	28	997-1001	88	सूर: गाशय:	30	1087-89
62	सूर: जुमुअ:	28	1001-03	89	सूर: फज्र	30	1089-91
63	सूर: मुनाफिकून	28	1003-07	90	सूर: बल्द	30	1091-95
64	सूर: तगाबुन	28	1007-11	91	सूर: शम्स	30	1095
65	सूर: तलाक	28	1011-15	92	सूर: लैल	30	1095-97
66	सूर: तहरीम	28	1015-17	93	सूर: जुहा	30	1097
67	सूर: मुल्क	29	1021-25	94	सूर: इन्शिराह	30	1097
68	सूर: कलम	29	1025-29	95	सूर: तीन	30	1099
69	सूर: हाक्क:	29	1029-33	96	सूर: अलक	30	1099
70	सूर: मआरिज	29	1033-37	97	सूर: कद्र	30	1101
71	सूर: नूह	29	1037-41	98	सूर: बय्यिन:	30	1101
72	सूर: जिन	29	1041-49	99	सूर: जिल्जाल	30	1103
73	सूर: मुज्जम्मिल	29	1049-51	100	सूर: आदियात	30	1103
74	सूर: मुद्दसिर	29	1051-55	101	सूर: कारिअ:	30	1103-05
75	सूर: कियाम:	29	1055-57	102	सूर: तकासुर	30	1105
76	सूर: दहर	29	1057-61	103	सूर: अस्र	30	1105
77	सूर: मुरसलात	29	1061-63	104	सूर: हु-मज़:	30	1105-07
78	सूर: नबा	30	1067-69	105	सूर: फील	30	1107
79	सूर: नाज़िआत	30	1069-71	106	सूर: कुरैश	30	1107
80	सूर: अ-ब-स	30	1071-73	107	सूर: माअून	30	1107
81	सूर: तकवीर	30	1075	108	सूर: कौसर	30	1109
82	सूर: इन्फितार	30	1075-77	109	सूर: काफिरून	30	1109
83	सूर: तत्फीफ	30	1077-79	110	सूर: नस्र	30	1109
84	सूर: इन्शिकाक	30	1079-83	111	सूर: ल-हब	30	1109-11
85	सूर: बुरुज	30	1083-85	112	सूर: इख्लास	30	1111
86	सूर: तारिक	30	1085	113	सूर: फलक	30	1111
87	सूर: अअ्ला	30	1087	114	सूर: नास	30	1111

नोट: यहाँ सूरतों की तरतीब उसी तरह है जिस तरह कुरआन पाक में है। वैसे हमने सूरतों के साथ उनके नाज़िल होने की तरतीब का नम्बर भी लिखा है, चुनाँचे आप देखेंगे कि हमने हर सूर: के साथ दो नम्बर लिखे हैं जैसे: (2 सूर: ब-कर: 87---- 96 सूर: अलक 1) इसका मतलब यह है कि कुरआन पाक में स्थान की हैसियत से सूर: ब-कर: का नम्बर 2 वाँ और सूर: अलक का नम्बर 96 वाँ है, और इनके नाज़िल होने के एतिबार से सूर: ब-कर: का नम्बर 87 वाँ और सूर: अलक का नम्बर 1 वाँ है। (मुहम्मद इमरान कासमी)



व कालरू-रसूलु या रब्बि

इन्-न कौमित्त-खज़ू हाज़ल-कुरआ-न महज़ूरा

तर्जुमा: और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ परवर्दिगार! मेरी कौम ने

इस कुरआन को छोड़ रखा था।

फ़ायदा: जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कियामत के दिन खुदा से शिकायत करेंगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी कौम ने कुरआन को छोड़ दिया। छोड़ देने की कई सूरतें हैं- इसको न मानना और इसपर ईमान न लाना भी छोड़ देना है, इसमें ग़ौर न करना और सोच समझकर न पढ़ना भी छोड़ देना है, और इसके अवामिर (यानी जिन चीज़ों का हुक्म फ़रमाया गया है) पर अमल न करना और मन्हियात (यानी जिन चीज़ों और कामों से रोका गया है उन) से न बचना भी छोड़ देना है। कुरआन पाक की परवाह न करके दूसरी चीज़ों जैसे बेहूदा नाविलों, शायरी की किताबों, बेमकसद बातों, खेल-तमाशों, राग-रंग में मसरूफ़ (व्यस्त) होना भी छोड़ देना है।

अफ़सोस है कि आजकल के मुसलमान कुरआन की तरफ़ से बहुत ही ग़ाफ़िल हो रहे हैं। इसके पढ़ने, सोचने-समझने और हिदायतों से फ़ायदा उठाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते और यह खुल्लम-खुल्ला कुरआन पाक को छोड़ देना है। खुदा तआला उनको इसकी तरफ़ राग़िब और इसकी तिलावत में मशगूल होने की तौफ़ीक़ बख़्शे, ताकि वे इसपर अमल करें और दोनों ज़हान की कामयाबी और फ़लाह हासिल हो।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



1 सूरतुल्-फातिहति 5

(मक्की) इस सूर: में अरबी के

123 अक्षर, 25 शब्द, 7 आयतें

और 1 रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन

(1) अर्रहमानिर्रहीम (2) मालिकि

यौमिद्दीन (3) इय्या-क नअबुदु व

इय्या-क नस्तअीन (4) इहदिनस्-

सिरातल्-मुस्तकीम (5) सिरातल्लज़ी-न

अन्अम्-त अलैहिम् (6) गैरिल्-मग्ज़ूबि

अलैहिम् व लज़्ज़ाल्लीन (7) ❖





1 सूर: फातिह: 5

सूर: फातिह: मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 7 आयतें और 1 रुकूअ है।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

'सब तारीफें अल्लाह तआला के लायक हैं जो पालने वाले हैं हर-हर आलम के।' (1) जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं। (2) जो मालिक हैं बदले के दिन के। (3) हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही से मदद की दरखास्त करते हैं। (4) बतला दीजिए हमको रास्ता सीधा। (5) रास्ता उन लोगों का जिनपर आपने इनाम फरमाया है। (6) न रास्ता उन लोगों का जिनपर आपका गुज़ब किया गया और न उन लोगों का जो रास्ते से गुम हो गए। (7) ♦

1. यह सूर: रब्बुल आलमीन ने अपने बन्दों की ज़बान से फरमाई कि इन अल्फाज़ में अपने ख़ालिक व राज़िक के सामने दरखास्त पेश किया करें।
2. मख़्लूक़ात की अलग-अलग ज़िन्स एक-एक आलम कहलाता है, जैसे आलमे मलायका, आलमे इनसान, आलमे परिन्द, आलमे हैवानात, आलमे ज़िन्न।
3. इनाम से दीनी इनाम मुराद है। इनाम वाले चार ग़िरोह हैं, अम्बिया, सिद्दीकीन, शुहदा और नेक लोग।
4. गुज़ब के हक़दार वे लोग हैं जो तहक्कीक़ात के बावजूद हिदायत के रास्ते को छोड़ दें और गुमराह वे हैं जो सीधे रास्ते की तहक्कीक़ात न करना चाहें, इनमें से मग़ज़ूब ज़्यादा नाराज़ी के हक़दार हैं जो देखते-भालते हक़ की मुख़ालफ़त में सरगर्म हैं।

पहला पारः

अलिफ-लाम्-मीम्

2 सूरतुल् ब-क-रति 87

(मदनी) इस सूरः में अरबी के

20000 अक्षर, 6021 शब्द

286 आयतें और 40 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ्-लाम्-मीम् (1) ज़ालिकल्-

किताबु ला रै-ब फीहि हुदल्लिल्-

मुत्तकीन (2) अल्लज़ी-न युअ्मिन्-न

बिल्-गैबि व युकीमूनस्सला-त व

मिम्मा र-ज़क्नाहुम् युन्फिकून (3)

वल्लज़ी-न युअ्मिन्-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् कब्लि-क व

बिल्-आखि-रति हुम् यूकिनून (4)



पहला पार:

अलिफ़-लाम्-मीम्

2 सूर: ब-कर: 87

सूर: ब-कर: मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 286 आयतें और 40 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम्-मीम्।¹ (1) यह किताब ऐसी है जिसमें कोई शुब्हा नहीं² राह बतलाने वाली है खुदा तआला से डरने वालों को।³ (2) वे खुदा से डरने वाले लोग ऐसे हैं जो यकीन लाते हैं छुपी हुई चीज़ों पर⁴ और कायम रखते हैं⁵ नमाज़ को, और जो कुछ दिया है हमने उनको उसमें से खर्च करते हैं।⁶ (3) और वे लोग ऐसे हैं कि यकीन रखते हैं इस किताब पर भी जो आपकी तरफ़ उतारी गई है और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले उतारी जा चुकी हैं⁷ और आख़िरत पर भी वे लोग यकीन रखते हैं।⁸ (4) बस ये लोग हैं ठीक राह पर जो उनके परवर्दिगार की तरफ़ से

1. इन हुरूफ़ के मायने से अ़वाम को इतिला नहीं दी गई, शायद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतला दिया गया हो, क्योंकि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहतिमाम के साथ वही बातें बताई हैं जिनके न जानने से दीन में कोई हर्ज और नुकसान लाज़िम आता था, लेकिन इन हुरूफ़ का मतलब न जानने से कोई हर्ज न था इसलिए हमको भी ऐसी बातों की तफ़्तीश न करनी चाहिए।

2. यानी कुरआन के अल्लाह की जानिब से होने में कोई शक नहीं। यानी यह बात यकीनी है चाहे कोई ना-समझ इसमें शुब्हा रखता हो, क्योंकि यकीनी बात किसी के शुब्हा करने से भी यकीनी ही रहती है।

3. क्योंकि जिसको ख़ौफ़े खुदा न हो वह कुरआन का बतलाया हुआ रास्ता नहीं देखता।

4. यानी जो चीज़ें हवास और अक्ल से पोशीदा हैं उनको सिर्फ़ अल्लाह व रसूल के फ़रमाने से सही मान लेते हैं।

5. यानी उसको पाबन्दी से हमेशा अदा करते हैं और उसकी शर्तों और अरकान को पूरा-पूरा बजा लाते हैं।

6. यानी नेक कामों में।

7. यानी कुरआन पर भी ईमान रखते हैं और पहली आसमानी किताबों पर भी। ईमान सच्चा समझने को कहते हैं, अमल करना दूसरी बात है। पस हक़ तआला ने जितनी किताबें पिछले अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर नाज़िल की हैं सबको सच्चा समझना फ़र्ज़ और ईमान की शर्त है, रह गया अमल सो वह सिर्फ़ कुरआन पर होगा, पहली किताबें मन्सूख़ हो गई हैं इसलिए उनपर अमल जायज़ नहीं।

8. आख़िरत से कियामत का दिन मुराद है, चूँकि वह दिन दुनिया के बाद आएगा इसलिए उसको आख़िरत कहते हैं।

उलाइ-क अला हुदम्-मिररिबिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफलिहून (5) इन्नल्लजी-न क-फरु सवाउन् अलैहिम् अ-अन्ज़र-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िरहुम् ला युअमिनून (6) ख-तमल्लाहु अला कुलूबिहिम् व अला सम्अिहिम् व अला अब्सारिहिम् गिशा-वतुव्-व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम (7) ❖

व मिनन्नासि मय्यकूल आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आखिरि व मा हुम् बिमुअमिनीन ❖ (8)

युखादिअूनल्ला-ह वल्लजी-न आमनू, व मा यख्दअू-न इल्ला अन्फुसहुम् व मा यशअुरून (9) फी कुलूबिहिम् म-रजुन् फज़ा-दहुमुल्लाहु म-रज़न् व लहुम् अज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यकिज़बून (10) व इज़ा की-ल लहुम् ला तुप्सिदू फिल्अर्जि कालू इन्नमा नहनु मुस्लिहून (11) अला इन्नहुम् हुमुल्-मुप्सिदू-न व ला किल्ला यशअुरून (12) व इज़ा की-ल लहुम् आमिनु कमा आ-मनन्नासु कालू अनुअमिनु कमा आ-मनस्-सु-फहा-उ, अला इन्नहुम् हुमुस्-

सु-फहा-उ व लाकिल्ला यअलमून (13) व इज़ा लकुल्लजी-न आमनू कालू आमन्ना व इज़ा खलौ इला शयातीनिहिम् कालू इन्ना म-अकुम् इन्नमा नहनु मुस्तहज़िऊन (14) अल्लाहु यस्तहज़िउ बिहिम् व यमुद्दुहुम् फी तुगयानिहिम् यअमहून (15) उला-इकल्लजीनशत-रवुज़-ज़ला-ल-त बिल्हुदा फमा रबिहत्-तिजारतुहुम् व मा कानू मुस्तदीन (16) म-सलुहुम् क-म-सलिल्-लज़िस्तौ-क-द नारन् फ-लम्मा अज़ा-अत् मा हौ-लहू ज-हबल्लाहु बिनूरिहिम्

الْبَقَرَةُ
أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنذِرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ خَمَةَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَهُمْ يَكْفُرُونَ ۝ يُخَذُّونَ اللَّهُ مَثَلًا فَيَتَنَصَّرُونَ ۝ وَآلَا يَعْلَمُونَ أَنَّهُ يُخَذُّونَ إِلَٰهَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۝ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يُمَآكِنُوا لِيَأْخُذُوا بِهِمْ ۝ وَلَا أَقْبِلُ لَهُمُ التَّغْيِيدُ ۝ وَإِنِّي أَخْذُلُهُم مَّصْلُحُونَ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُتَغْيِيدُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَا أَقْبِلُ لَهُمُ أَمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ ۝ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ الشُّفَهَاءُ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الشُّفَهَاءُ ۝ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَا الْقَوْلَ الَّذِينَ اتُّوَقَّاتُوا ۝ أَمَنَّا ۝ وَلَا أَخْلَوْا إِلَىٰ شَيْطَانِهِمْ ۝ قَالُوا إِنَّكَ مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ۝ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمْدُدُّهُمُ فِي طُغْيَانِهِمُ يَعْمَهُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتِ ثِمَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۝ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ

مَثَلًا

मिली है, और ये लोग हैं पूरे कामयाब।¹ (5) बेशक जो लोग काफ़िर हो चुके हैं बराबर है उनके हक में चाहे आप उनको डराएँ या न डराएँ, वे ईमान न लाएँगे।² (6) बंद लगा दिया है अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर, और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए सज़ा बड़ी है।³ (7) ♦

और उन लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं, हम ईमान लाए अल्लाह तआला पर और आखिरी दिन पर, हालाँकि वे बिल्कुल ईमान वाले नहीं। (8) चालबाज़ी करते हैं अल्लाह तआला से और उन लोगों से जो ईमान ला चुके हैं। (यानी सिर्फ़ चालबाज़ी की राह से ईमान का इज़हार करते हैं) और हकीकत में किसी के साथ भी चालबाज़ी नहीं करते सिवाय अपनी ज़ात के, और वे इसका शऊर नहीं रखते।⁴ (9) उनके दिलों में बड़ा मर्ज़ है सो और भी बढ़ा दिया अल्लाह तआला ने उनका मर्ज़,⁵ और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है इस वजह से कि वे झूठ बोला करते थे। (10) और जब उनसे कहा जाता है कि फ़साद “यानी ख़राबी और बिगाड़” मत करो ज़मीन में, तो कहते हैं कि हम तो सुधार ही करने वाले हैं। (11) याद रखो बेशक यही लोग मुफ़सिद “यानी बिगाड़ पैदा करने वाले” हैं, लेकिन वे इसका शऊर नहीं रखते। (12) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी ऐसा ही ईमान ले आओ जैसा ईमान लाए हैं और लोग, तो कहते हैं, क्या हम ईमान लाएँगे जैसा ईमान लाए हैं ये बेवकूफ़? याद रखो बेशक यही हैं बेवकूफ़, लेकिन वे इसका इल्म नहीं रखते। (13) और जब मिलते हैं वे मुनाफ़िक़ उन लोगों से जो ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं, और जब तन्हाई में पहुँचते हैं अपने बुरे सरदारों के पास तो कहते हैं कि हम बेशक तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ मज़ाक़ किया करते हैं। (14) अल्लाह ही मज़ाक़ कर रहे हैं उनके साथ और ढील देते चले जाते हैं उनको कि वे अपनी सरकशी में हैरान व सरग़रदाँ हो रहे हैं। (15) ये वे लोग हैं कि उन्होंने गुमराही ले ली वज़ाय हिदायत के, तो फ़ायदेमंद न हुई उनकी यह तिजारत और न ये ठीक तरीक़े पर चले।⁶ (16) उनकी हालत उस शख्स की हालत के जैसी है जिसने कहीं आग जलाई हो, फिर जब रोशन कर दिया हो उस आग ने उस शख्स के आस-पास की सब चीज़ों को, ऐसी हालत में छीन लिया हो अल्लाह तआला ने उनकी रोशनी को और छोड़ दिया हो उनको अन्धेरों में कि कुछ देखते भालते न हों। (17) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, सो ये अब रुजू

1. यानी ऐसे लोगों को दुनिया में यह नेमत मिली कि हक़ का रास्ता नसीब हुआ और आखिरत में यह दौलत नसीब होगी कि हर तरह की कामयाबी उनके लिए है।

2. इस आयत में सब काफ़िरों का बयान नहीं बल्कि खास उन काफ़िरों का ज़िक्र है जिनके बारे में खुदा तआला को मालूम है कि उनका ख़ात्मा कुफ़्र पर होगा। और इस आयत से यह ग़रज़ नहीं कि उनको अल्लाह के अज़ाब से डराने और अहक़ाम सुनाने की ज़रूरत नहीं बल्कि मतलब यह है कि आप उनके ईमान लाने की फ़िक्र न करें और उनके ईमान न लाने से रंजीदा न हों, उनके ईमान लाने की उम्मीद नहीं।

3. उन्होंने शरारत और दुश्मनी करके अपने इख़्तियार से खुद अपनी सलाहियत बर्बाद कर ली है, सो इस सलाहियत के तबाह होने का सबब और करने वाले तो वे खुद ही हैं, मगर चूँकि बन्दों के तमाम अफ़आल का ख़ालिक अल्लाह सुब्बानहू व तआला है इसलिए इस आयत में अपने ख़ालिक होने का बयान फ़रमा दिया कि जब वे सलाहियत के तबाह करने वाले हुए और उसको अपने इरादे से इख़्तियार करना चाहा तो हमने भी वह बुरी सलाहियत की कैफ़ियत उनके दिलों वग़ैरह में पैदा कर दी। बन्द लगाने से इसी बुरी सलाहियत का पैदा करना मुराद है, उनका यह फ़ैल (काम) इस ख़त्म यानी बन्द लगाने का सबब हुआ, अल्लाह का बन्द लगाना इस फ़ैल का सबब नहीं हुआ।

4. यानी इस चालबाज़ी का बुरा अन्जाम खुद उन्हीं को भुगतना पड़ेगा।

5. मर्ज़ में उनका बुरा एतिकाद रखना, हसद और हर वक़्त का अन्देशा व ख़लजान सब कुछ आ गया, चूँकि इस्लाम की रोज़ाना तरक्की होती जाती थी इसलिए उनके दिलों में साथ-साथ ये बीमारियाँ तरक्की पाती जाती थीं।

6. यानी उनको तिजारत का ढंग न आया कि हिदायत जैसी चीज़ छोड़ी और गुमराही जैसी बुरी चीज़ ली।

व त-र-कहुम् फी जुलुमातिल्ला युब्सिरून (17) सम्मुम्- बुक्मुन् अमुयुन् फहुम् ला यर्जिअून
 (18) औ क-सय्यिबिम्-मिनस्समा-इ फीहि जुलुमातुं-व रअदुं-व बरकुन्, यजअलू-न
 असाबि-अहुम् फी आजानिहिम् मिनस्सवाअिकि ह-जरल्मौति वल्लाहु मुहीतुम्-बिल्काफिरीन
 (19) यकादुल्-बरकु यख्ताफु अब्सा-रहुम्, कुल्लमा अजा-अ लहुम् मशौ फीहि व इजा
 अजल-म अलैहिम् कामू, व लौ
 शा-अल्लाहु ल-ज-ह-ब बिसम्अिहिम् व
 अब्सारिहिम्, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि
 शैइन् कदीर (20) ♦

या अय्युहन्नासुअबुदू रब्बकुमुल्लजी
 ख-ल-ककुम् वल्लजी-न मिन् कब्लिकुम्
 लअल्लकुम् तत्तकून (21) अल्लजी
 ज-अ-ल लकुमुल्अर्-ज फिराशं-व-
 वस्समा-अ बिनाअं-व-व अन्ज-ल
 मिनस्समा-इ माअन् फ-अखर-ज बिही
 मिनस्स-मराति रिजकल् लकुम् फला
 तजअलू लिल्लाहि अन्दादं-व-व अन्तुम्
 तअलमून (22) व इन कुन्तुम् फी
 रैबिम्-मिम्मा नज्जल्ला अला अब्दिना
 फअतू बिसू-रतिम् मिम्-मिस्लिही वद्अू

शु-हदाअकुम् मिन् दूनिल्लाहि इन कुन्तुम् सादिकीन (23) फ-इल्लम तफ्अलू व लन्
 तफ्अलू फत्तकुन्नारल्लती व कूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु उअिद्दत् लिल्काफिरीन (24) व
 बश्शिरिल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति अन्-न लहुम् जन्नातिन तजरी मिन्
 तह्तिहल्-अन्हारु, कुल्लमा रुजिकू मिन्हा मिन् स-म-रतिर्-रिजकन् कालू हाजल्लजी रुजिक्ना

الْقُرْآنِ
 صُمْ بِكُمْ عُمْرُ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ أَوْ كَصَيْبٍ مِّنَ السَّمَاءِ
 فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ
 مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۝ وَاللَّهُ مُخِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ۝
 يَكَادُ الْبَرَقُ يُخْطِفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا
 فِيهِ ۖ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ
 بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
 يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ
 قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا
 وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ
 الثَّمَرَاتِ رِزْقًا ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
 وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّنْ
 مِّثْلِهِ ۚ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ
 فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُفُودَهَا
 النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ أَعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۚ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا
 وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
 كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرٍ رَّزِقَ قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا

न होंगे¹ (18) या उन मुनाफ़िकों की ऐसी मिसाल है जैसे बारिश हो आसमान की तरफ़ से, उसमें अन्धेरा भी हो और बिजली व कड़क भी हो, जो लोग उस बारिश में चल रहे हैं वे ठूँसे लेते हैं अपनी उंगलियाँ अपने कानों में कड़क के सबब मौत के अन्देश से, और अल्लाह तआला धरे में लिए हुए हैं काफ़िरो को। (19) बिजली की यह हालत है कि मालूम होता है कि अभी उनकी आँखों की रोशनी उसने ली। जहाँ ज़रा उनको बिजली की चमक हुई तो उसकी रोशनी में चलना शुरू किया और जब उनपर अन्धेरा हुआ फिर खड़े के खड़े रह गए, और अगर अल्लाह तआला इरादा करते तो उनके आँख-कान सब छीन लेते, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर हैं।² (20) ♦

ऐ लोगो! इबादत इख़्तियार करो अपने परवर्दिगार की जिसने तुमको पैदा किया और उन लोगों को भी कि तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, अज़ब नहीं कि तुम दोज़ख़ से बच जाओ।³ (21) वह ज़ाते पाक ऐसी है जिसने बनाया तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत, और बरसाया आसमान से पानी, फिर नापैदी के परदे से निकाला बज़रिए उस पानी के फलों की गिज़ा को तुम लोगों के वास्ते, तो अब मत ठहराओ अल्लाह के मुकाबिल और तुम जानते बूझते हो।⁴ (22) और अगर तुम कुछ ख़लजान में हो इस किताब के बारे में जो हमने नाज़िल फ़रमाई है अपने ख़ास बन्दे पर, तो अच्छा फिर तुम बना लाओ एक महदूद “यानी सीमित” टुकड़ा जो उसके जैसा हो,⁵ और बुला लो अपने हिमायतियों को जो खुदा से अलग (तजवीज़ कर रखे) हैं अगर तुम सच्चे हो।⁶ (23) फिर अगर तुम यह काम न कर सके और कियामत तक भी न कर सकोगे तो फिर ज़रा बचते रहो दोज़ख़ से जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं, तैयार हुई रखी है काफ़िरो के वास्ते।⁷ (24) और खुशख़बरी सुना दीजिए आप ऐ पैग़म्बर उन लोगों को जो ईमान लाए और काम किए अच्छे, इस बात की कि बेशक उनके वास्ते जन्नतें हैं कि बहती होंगी उनके नीचे से नहरें, जब कभी दिए जाएँगे वे लोग उन जन्नतों में से किसी फल की गिज़ा तो हर बार में यही कहेंगे कि यह तो वही है जो हमको मिला था इससे पहले और मिलेगा भी उनको दोनों बार का फल मिलता जुलता।⁸ और उनके वास्ते उन जन्नतों में वीदियाँ होंगी साफ़, पाक की हुई, और वे लोग उन जन्नतों में हमेशा को बसने वाले होंगे। (25) हाँ वाकई अल्लाह तआला तो नहीं शरमाते इस बात से कि बयान कर दें कोई मिसाल भी चाहे मच्छर की हो चाहे उससे

1. यानी हक़ से बहुत दूर हो गए हैं कि उनके कान हक़ सुनने के काबिल न रहे, जबान उनकी हक़ बात कहने के लायक़ न रही, आँखें हक़ देखने के काबिल न रही, सो अब उनके हक़ की तरफ़ रज़ू होने की क्या उम्मीद है।
2. मुतरहिद (शक़ में पड़े हुए) मुनाफ़िकीन इस्लाम के ग़ालिब होने के आसार की ज़्यादती देखकर कभी इस्लाम के नूर की झलक देखकर इधर को बढ़ने लगते हैं और कभी खुद-ग़रज़ी के अन्धेरे में पड़कर फिर हक़ से रुक जाते हैं।
3. शाही मुहावरे में ‘अज़ब नहीं’ का लफ़्ज़ वायदे के मौक़े में बोला जाता है।
4. यानी इस बात को जानते हो कि इन तसरूफ़ात का (यानी इन कामों का) सिवाय खुदा तआला के कोई करने वाला नहीं, तो इस सूरत में कब मुनासिब है कि खुदा के मुकाबले में दूसरों को माबूद बनाओ।
5. नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बेशुमार मोज़िज़े अता हुए, जिनमें सबसे बड़ा मोज़िज़ा कुरआन शरीफ़ है कि नुबुव्वत के साबित करने की बड़ी दलील है। इसके मोज़िज़ा होने में मुख़ालिफ़ीन को शुब्हा था कि शायद इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद तसनीफ़ कर लिया करते हों तो इस सूरत में इसके मोज़िज़ा होने में कलाम की गुन्जाइश हो गई, पस नुबुव्वत की दलील मुश्तबह हो गई, इसलिए अल्लाह तआला इस शुब्हा को ख़त्म फ़रमाते हैं ताकि इसका मोज़िज़ा होना साबित हो जाए। फिर नुबुव्वत पर क़तई दलील बन सके।
6. जब बावजूद इसके न बना सकेंगे तो इन्साफ़ की रू से बिना सोचे साबित हो जाएगा कि यह मोज़िज़ा अल्लाह की जानिब से है, और बिला शुब्हा आप पैग़म्बर हैं और यही मक़सूद था।
7. यह सुनकर कैसा कुछ जोश व ख़रोश और बल व गुस्सा न आया होगा, और कोशिश की कोई कसर क्यों उठा रखी होगी? फिर आजिज़ होकर अपना-सा मुँह लेकर बैठ रहना क़तई दलील है कि कुरआने करीम मोज़िज़ा है।
8. दोनों बार के फलों की सूरत एक-सी होगी, जिससे वे यूँ समझेंगे कि यह पहली ही किस्म का फल है मगर खाने में मज़ा दूसरा होगा, जिससे लुफ़ और खुशी बढ़ जाएगी।

मिन् कब्बु व उतू बिही मु-तशाबिहन्, व लहुम् फीहा अज्वाजुम् मु-तहह-रतुव्- व हुम् फीहा खालिदून् (25) इन्नल्ला-ह ला यस्तह्यी अय्यजिर-ब म-सलम्मा बअू-जतन् फमा फौ-कहा, फ-अम्मल्लजी-न आमनू फ-यअलमू-न अन्नहुल्हक्कु मिररब्बिहिम्, व अम्मल्लजी-न क-फरु फ-यकूलू-न माजा अरादल्लाहु बिहाजा म-सलन् ❖ युजिल्लु बिही कसीरव्-व यहदी बिही

कसीरन्, व मा युजिल्लु बिही इल्लल्-फासिकीन (26) अल्लजी-न यन्कुजू-न अहदल्लाहि मिम्-बअदि मीसाकिही व यक्तअू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अय्यू-स-ल व युफिसदू-न फिलुअर्जि, उलाइ-क हुमुल्-खासिरुन (27) कै-फ तक्फुरू-न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ-अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअून (28) हुवल्लजी ख-ल-क लकुम् मा फिलुअर्जि जमीअन्, सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ-सव्वाहुन्-न सब्-अ समावातिन्, व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम (29) ❖

الْبَقَرَةُ
مِنْ قَبْلُ وَأَنَّا بِهٖ مُّشَآئِلُهُمْ فِيهَا أَرَاكُ فَطَقَرَةً
وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيَى أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا
مَّا بَعُوضَةٌ فَمَا فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ
بِهَٰذَا مَثَلًا يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُغْنِي
بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَ
كُنْتُمْ أَشْوَاثًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ مِيتَكُمْ ثُمَّ أَخْيَاكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ
هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ فَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى
السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ وَإِذْ
قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً قَالُوا
اتَّجَعَلُ فِيهَا مَنْ يَفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ وَعَلَّمَ
آدَمَ الْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي
بِأَسْمَآءِ هَٰؤُلَآءِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ قَالُوا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا

व इज् का-ल रब्बु-क लित्मलाइ-कति इन्नी जाअिलुन् फिलुअर्जि खली-फतन्, कालू अ-तज्अलु फीहा मय्युफिसदु फीहा व यसफिकुद्दिमा-अ व नहनु नुसब्बिहु बिहम्दि-क व नुकद्दिसु ल-क, का-ल इन्नी अअलमु मा ला तअलमून (30) व अल्ल-म आ-दमल्-अस्मा-अ कुल्लहा सुम्-म अ-र-जहुम् अलल्-मलाइ-कति फका-ल अम्बिकुनी बिअस्मा-इ हा-उला-इ इन कुन्तुम् सादिकीन (31) कालू सुब्हा-न-क ला अिल्-म लना इल्ला मा

भी बढ़ी हुई हो, सो जो लोग ईमान लाए हुए हैं चाहे कुछ ही हो वे तो यकीन करेंगे कि बेशक यह मिसाल तो बहुत ही मौके की है उनके रब की जानिब से, और रह गए वे लोग जो काफ़िर हैं, सो चाहे कुछ भी हो जाए वे यूँ ही कहते रहेंगे: वह कौन-सा मतलब होगा जिसका इरादा किया होगा अल्लाह ने इस हकीर मिसाल से, गुमराह करते हैं अल्लाह तआला उस मिसाल की वजह से बहुतों को और हिदायत करते हैं उसकी वजह से बहुतों को। और गुमराह नहीं करते अल्लाह तआला उस मिसाल से किसी को मगर सिर्फ़ बेहुक्मी करने वालों को। (26) जो कि तोड़ते रहते हैं उस मुआहदे को जो अल्लाह तआला से कर चुके थे, उसकी मज़बूती के बाद और ख़त्म करते रहते हैं उन ताल्लुकात को कि हुक्म दिया है अल्लाह ने उनको वाबस्ता रखने “यानी जोड़ने” का¹ और फ़साद “यानी बिगाड़” करते रहते हैं ज़मीन में, पस ये लोग पूरे घाटे में पड़ने वाले हैं।² (27) भला क्योंकिर नाशुकी करते हो अल्लाह की हालाँकि थे तुम महज़ बेजान सो तुमको जानदार किया, फिर तुमको मौत देंगे, फिर ज़िन्दा करेंगे (यानी कियामत के दिन) फिर उन्हीं के पास ले जाए जाओगे। (28) वह जाते पाक ऐसी है जिसने पैदा किया तुम्हारे फ़ायदे के लिए जो कुछ भी ज़मीन में मौजूद है सब का सब, फिर तवज्जोह फ़रमाई आसमान की तरफ़, सो दुरुस्त करके बनाए सात आसमान³ और वह तो सब चीज़ों के जानने वाले हैं। (29) ♦

और जिस वक़्त इर्शाद फ़रमाया आपके रब ने फ़रिश्तों से कि ज़रूर मैं बनाऊँगा ज़मीन में एक नायब⁴ फ़रिश्ते कहने लगे: क्या आप पैदा करेंगे ज़मीन में ऐसे लोगों को जो फ़साद करेंगे और ख़ून बहाएँगे? और हम बराबर तस्बीह करते रहते हैं बिहम्दिल्लाह, और पाकी बयान करते रहते हैं आपकी।⁵ हक़ तआला ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं जानता हूँ उस बात को जिसको तुम नहीं जानते।⁶ (30) और इल्म दे दिया अल्लाह तआला ने (हज़रत) आदम (अलैहिस्सलाम) को (उनको पैदा करके) कुल चीज़ों के नामों का⁷ फिर वे चीज़ें फ़रिश्तों के सामने कर दीं, फिर फ़रमाया कि बतलाओ मुझको नाम इन चीज़ों के (उनके आसार व ख़ासियतों के साथ) अगर तुम सच्चे हो। (31) फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि आप तो पाक हैं हमको कोई इल्म नहीं, मगर वही जो कुछ आपने हमको इल्म दिया।

1. इसमें तमाम शरई ताल्लुकात दाख़िल हो गए।
2. यहाँ तक उस शुब्हा के जवाब का सिलसिला था जो कि कुप्फ़ार ने पेश किया था कि अल्लाह के कलाम में ऐसी कम-क़द्र चीज़ों का ज़िक्र क्यों आया। अब उस मजमून की तरफ़ रुजू करते हैं जो इससे ऊपर आयत “या अय्युहन्नासुअबुदु” में तौहीद से मुताल्लिक मज़कूर हुआ था।
3. अव्वल ज़मीन का माद्दा बना और अभी इसकी मौजूदा शक़ल न बनी थी कि उसी हालत में आसमान का माद्दा बना, जो धुँए की सूरत में था। उसके बाद ज़मीन मौजूदा शक़ल पर फैला दी गई, फिर उसपर पहाड़ और पेड़ वग़ैरह पैदा किए गए। फिर उस धुँए के बहते हुए माद्दे के सात आसमान बना दिए।
4. यानी वह मेरा नायब होगा कि अपने शरई अहक़ाम को जारी करने और लागू करने की ख़िदमत मैं उसके सुपूर्द करूँगा।
5. यह बतौर एतिराज़ के नहीं कहा, न अपना हक़ जताया बल्कि यह फ़रिश्तों की अर्ज़ व दरख़्वास्त इन्क़िसारी और आजिज़ी के इज़हार के वास्ते थी।
6. यानी जो मामला तुम्हारे नज़दीक आदम की औलाद की पैदाइश के लिए रुकावट है, वही मामला हकीकत में उनकी पैदाइश और तख़लीक का सबब है।
7. यानी रू-ए-ज़मीन पर मौजूद तमाम चीज़ों के नामों और उनकी ख़ासियतों का इल्म दे दिया।

अल्लमुतना इन्न-क अन्तल्-अलीमुल्-हकीम (32) का-ल या आदमु अम्बिअहुम् बिअस्मा-इहिम् फ-लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् का-ल अलम् अकुल्लकुम् इन्नी अअ्लमु गैबस्समावाति वल्अर्जि व अअ्लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमून (33) व इज् कुल्ना लिलुमलाइ-कतिस्जुदू लिआ-द-म फ-स-जदू इल्ला इब्लीस, अबा वस्तक्ब-र व का-न मिनल्काफिरीन (34) व कुल्ना या

आ-दमुस्कुन् अन्-त व जौजुकल्-जन्न-त व कुला मिन्हा र-गदन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक्वरबा हाजिहिश्-श-ज-र-त फ-तकूना मिनज्-जालिमीन (35) फ-अजल्-लहुमश्-शैतानु अन्हा फ-अखर-जहुमा मिम्मा काना फीही व कुल्-नहबितू बअजुकुम् लिबअजिन् अदुव्वुन् व लकुम् फिल्अर्जि मुस्तकरूरुव्-व मताअुन् इला हीन (36) फ-त-लक्का आदमु मिर्रबिही कलिमातिन् फता-ब अलैहि, इन्नहू हुवत्तव्वाबुरहीम (37) कुल्लहबितू मिन्हा जमीअन् फ-इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ-मन् तबि-अ हुदा-य फला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहज़नून (38) वल्लज़ी-न क-फरु व कज़्ज़बू

बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा ख़ालिदून (39) ♦

या बनी इस्राईलज्जुरु निअ्मतियल्लती अन्अम्तु अलैकुम् व औफू बि-अह्दी ऊफि बि-अह्दिकुम् व इय्या-य फरहबून (40) व आमिन् बामा अन्जल्लतु मुसदिकल्लिमा म-अकुम् व ला तक्नू अव्व-ल काफिरिम् बिही व ला तशतरु बिआयाती स-मनन् कलीलंव्-व

الْاَعْلَمْتَنَّا اَنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ قَالَ يَادُمُ اسْمُهُمْ
يَا اَيُّهُمْ فَلْيَا اَبَاءَهُمْ يَسْمَآءَهُمْ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّي
اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ
تَكْتُمُوْنَ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْا اِلَّا الْيٰسِيْنَ
اٰبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِيْنَ وَقُلْنَا يَادُمُ اسْكُنْ اَنْتَ
وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ
الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظَّالِمِيْنَ فَارْكَبُهَا السَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاخْرَجَهُمَا
مِمَّا كَانَا فِيْهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي
الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ فَتَلَقٰى اٰدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَتٍ
فَتَابَ عَلَيْهِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيعًا
فَاَنزَلْنَا بِئْسَ لَكُمْ مَقَرٌّ يَّهْدٰى فَمَنْ تَبِعَ هٰدٰى فَلَاخُوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ وَالَّذِيْنَ نَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بَآيٰتِنَا اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ يٰيٰبَنِيْ اِسْرٰٓءِيْل اذْكُرُوْا نِعْمَتِيْ الَّتِيْ
اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوا بِعَهْدِيْ اُوْفٍ بِعَهْدِكُمْ وَاِيَّاى
فَاٰمِنُوْا بِمَا اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْا اَوَّلَ
كَافِرِيْةٍ وَلَا تَشْتَرُوْا بِآيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا وَاِيَّاى فَاَتَّقُوْنَ وَلَا تَكْلِسُوْا

बेशक आप बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं (कि जिस कद्र जिसके लिए मसलिहत जाना उसी कद्र समझ व इल्म अता फरमाया)। (32) हक़ तआला ने इर्शाद फरमाया कि ऐ आदम! इनको इन चीज़ों के नाम बतला दो, सो जब बतला दिए उनको आदम ने उन चीज़ों के नाम तो हक़ तआला ने फरमाया: (देखो) मैं तुमसे कहता न था कि बेशक मैं जानता हूँ तमाम छुपी चीज़ें आसमानों और ज़मीन की, और जानता हूँ जिस बात को तुम जाहिर कर देते हो और जिस बात को दिल में रखते हो। (33) और जिस वक़्त हमने हुक्म दिया फ़रिश्तों को (और ज़िन्नो को भी) कि सज्दे में गिर जाओ आदम के सामने,¹ सो सब सज्दे में गिर पड़े सिवाय इबलीस के, उसने कहना न माना और गुरुर में आ गया, और हो गया काफ़िरोँ में से।² (34) और हमने हुक्म दिया कि ऐ आदम! रहा करो तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में, फिर खाओ दोनों इसमें से फ़रागत के साथ जिस जगह से चाहो, और नज़दीक न जाइयो उस दरख़्त के, वरना तुम भी उन्हीं में शुमार हो जाओगे जो अपना नुक़सान कर बैठते हैं।³ (35) फिर बहका दिया आदम और हव्वा को शैतान ने उस दरख़्त की वजह से, सो निकलवाकर रहा उनको उस ऐश से जिसमें वे थे, और हमने कहा: नीचे उतरो तुममें से बाज़े बाज़ों के दुश्मन रहेंगे, और तुमको ज़मीन पर कम ही ठहरना है, और काम चलाना एक मुक़र्ररा मीयाद तक।⁴ (36) उसके बाद हासिल कर लिए आदम ने अपने रब से चन्द अलफ़ाज़, तो अल्लाह तआला ने रहमत के साथ तवज्जोह फरमाई उनपर (यानी तौबा कबूल कर ली) बेशक वही हैं बड़े तौबा कबूल करने वाले, बड़े मेहरबान। (37) हमने हुक्म फरमाया: नीचे जाओ इस जन्नत से सबके सब, फिर अगर आए तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से किसी किस्म की हिदायत, सो जो शख्स पैरवी करेगा मेरी उस हिदायत की तो न कुछ अन्देशा होगा उसपर और न ऐसे लोग ग़मगीन होंगे। (38) और जो लोग कुफ़्र करेंगे और झुटलाएँगे हमारे अहक़ाम को, ये लोग होंगे दोज़ख़ वाले, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (39) ❖

ऐ बनी इसराईल! याद करो तुम लोग मेरे उन एहसानों को जो किए हैं मैंने तुमपर, और पूरा करो तुम मेरे अह्द को, पूरा करूँगा मैं तुम्हारे अह्द को, और सिर्फ़ मुझ ही से डरो। (40) और ईमान ले आओ उस किताब पर जो मैंने नाज़िल की है (यानी कुरआन पर) ऐसी हालत में कि वह सच बतलाने वाली है उस किताब को जो तुम्हारे पास है (यानी तौरात के अल्लाह की किताब होने की तस्दीक़ करती है) और मत बनो तुम सबमें पहले इनकार करने वाले इस (कुरआन) के, और मत लो मेरे अहक़ाम के मुकाबले में हकीर मुआवज़े को, और ख़ास मुझ ही से पूरे तौर पर डरो।⁵ (41) और मख़्लूत “यानी गड़-मड़” मत करो हक़ को नाहक़ के साथ, और छुपाओ भी मत हक़ को

1. ग़ालिबन फ़रिश्तों को बिला वास्ता हुक्म किया होगा और ज़िन्नो को किसी फ़रिश्ते वग़ैरह के ज़रिए से कहा गया होगा।
2. उसपर काफ़िर होने का फ़तवा इसलिए दिया गया कि उसने हुक्मे इलाही के मुकाबले में तकबुर किया और उसके कबूल करने में बुरा समझा और उसको खिलाफ़े हिक्मत और खिलाफ़े मसलहत ठहराया।
3. खुदा जाने वह क्या दरख़्त था।
4. यानी वहाँ भी जाकर दवाम (हमेशा का रहना) न मिलेगा, कुछ वक़्त के बाद वह घर भी छोड़ना पड़ेगा।
5. यानी मेरे अहक़ाम छोड़कर और उनको बदल कर और छुपाकर आम लोगों से दुनिया-ए-ज़लील व क़लील को वसूल मत करो, जैसा कि उनकी आदत थी।

इय्या-य फत्तकून (41) व ला तल्बिसुल्-हक्-क बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक्-क व अन्तुम् तअलमून (42) व अकीमुस्सला-त व आतुज्जका-त वर-कअ म-अर्राकिअीन (43) अ-तअमूरुनन्ना-स बिल्बिरि व तन्सौ-न अन्फुसकुम् व अन्तुम् तल्लूनल्-किता-ब, अ-फला तअकिलून (44) वस्तअीनू बिस्सब्रि वस्सलाति, व इन्नहा ल-कबी-रतुन् इल्ला अलल्-खाशिअीन (45) अल्लजी-न यजुन्नू-न अन्नहुम्-मुलाकू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिअून ♦ (46) ♦

या बनी इस्राईलज्कुरू निअमति-
-यल्लती अन्अम्तु अलैकुम् व अन्नी
फज्जल्लुकुम् अलल् आलमीन (47)
वत्तकू यौमल्ला तज्जी नफ्सुन् अन्-
नफिसन् शैअव्-व ला युक्बलु मिन्हा
शफा-अतुव्-व ला युअ-खजु मिन्हा
अद्लुव्-व ला हुम् युन्सरून (48) व
इज् नज्जैनाकुम् मिन् आलि फिरऔ-न
यसूम-नकुम् सूअल्-अजाबि युजब्बिहू-न
अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्
व फी जालिकुम् बलाउम् मिररब्बिकुम्
अजीम (49) व इज् फ-रक्ना

الْحَقُّ بِالْبَاطِلِ وَكَتَبُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَارْزُقُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ۚ إِنَّا مُرَوِّدُونَ النَّاسَ بِالْبِزْوِ
تَسُونَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ وَاسْتَعِينُوا
بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ۚ الَّذِينَ
يُظَنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقَوْنَ رَبَّهُمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ۚ يٰبَنِي إِسْرَءِيلَ
اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا
شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۚ وَإِذْ
نَجَّيْنَكُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يَدْبَحُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَعْمُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ
عَظِيمٌ ۚ وَإِذْ فَرَقْنَا بَيْنَكُمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ
وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۚ وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلًا ثُمَّ
أَخَذْنَا مِنَ الْجَبَلِ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۚ ثُمَّ عَقَوْنَا عَنْكُمْ
مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعْنَكُمْ فَتَشْكُرُونَ ۚ وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ
وَالْفُرْقَانَ لَعْنَكُمْ فَتَهْتَدُونَ ۚ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ
إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْجِبَلَ كُتُبًا فَمُتُّوا إِلَىٰ بَارئِكُمْ

منال

बिकुमुल्-बह्-र फ-अन्जैनाकुम् व अग्रक्ना आ-ल फिरऔ-न व अन्तुम् तन्जुरून (50) व
इज् वाअदना मूसा अरबअी-न लै-लतन् सुम्मत्तखज्जुमुल्- अिज्-ल मिम्-बअदिही व अन्तुम्
जालिमून (51) सुम्-म अफौना अन्कुम् मिम्-बअदि जालि-क लअल्लकुम् तश्कुरून (52)
व इज् आतैना मूसल्-किता-ब वल्फुरका-न लअल्लकुम् तह्त्तदून (53) व इज् का-ल मूसा

जिस हालत में कि तुम जानते हो।¹ (42) और कायम करो तुम लोग नमाज़ को (यानी मुसलमान होकर) और दो ज़कात को और आजिज़ी करो आजिज़ी करने वालों के साथ।² (43) क्या ग़ज़ब है कि कहते हो और लोगों को नेक काम करने को (नेक काम करने से मुराद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना है) और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालाँकि तुम तिलावत करते रहते हो किताब की, तो फिर क्या तुम इतना भी नहीं समझते।³ (44) और (अगर तुमको माल और जाह की मुहब्बत के ग़लबे से ईमान लाना दुश्वार मालूम हो तो) मदद लो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह नमाज़ दुश्वार ज़रूर है मगर जिनके दिल में खुशूअ “यानी आजिज़ी और गिड़गिड़ाना” हो उनपर कुछ दुश्वार नहीं। (45) वे खाशिअीन, वे लोग हैं जो ख़्याल रखते हैं इसका कि वे बेशक मिलने वाले हैं अपने रब से। ♦ (46) ♦

और इस बात का भी ख़्याल रखते हैं कि वे बेशक अपने रब की तरफ़ वापस जाने वाले हैं। ऐ याकूब की औलाद! तुम लोग मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुमको इनाम में दी थी और उस (बात) को (याद करो) कि मैंने तुमको तमाम दुनिया जहान वालों पर (खास बर्ताव में) फ़ौकियत दी थी। (47) और डरो तुम ऐसे दिन से कि न तो कोई शख्स किसी शख्स की तरफ़ से कुछ मुतालबा अदा कर सकता है और न किसी शख्स की तरफ़ से कोई सिफारिश कबूल हो सकती है, और न किसी शख्स की तरफ़ से कोई मुआवज़ा लिया जा सकता है, और न उन लोगों की तरफ़दारी चल सकेगी।⁴ (48) और (वह ज़माना याद करो) जबकि रिहाई दी हमने तुमको फिरऔन के मुताल्लिकीन से जो फ़िक् में लगे रहते थे तुम्हें सख्त तकलीफ़ पहुँचाने के, गले काटते थे तुम्हारे लड़कों के और ज़िन्दा छोड़ देते थे तुम्हारी औरतों को। इस (वाकिए) में एक इम्तिहान था तुम्हारे रब की जानिब से बड़ा भारी।⁵ (49) और जब फाड़ दिया हमने तुम्हारी वजह से दरिया-ए-शोर “यानी नमकीन या काले पानी के दरिया” को, फिर हमने (डूबने से) तुमको बचा लिया और फिरऔन के मुताल्लिकीन को (मय फिरऔन के) डुबो दिया, और तुम (उसका) मुआयना कर रहे थे।⁶ (50) और (वह ज़माना याद करो) जबकि वायदा किया था हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) से चालीस रात का, फिर तुम लोगों ने तजवीज़ कर लिया गौसाला को मूसा के (जाने के) बाद, और तुमने जुल्म पर कमर बाँध रखी थी। (51) फिर भी हमने (तुम्हारे तौबा करने पर) माफ़ किया तुमसे इतनी बड़ी बात होने के बाद, इस उम्मीद पर कि तुम एहसान मानोगे। (52) और (वह ज़माना याद करो) जब दी हमने मूसा को किताब (तौरात)

1. शरीअत के अहकाम की तब्दीली दो तरह से किया करते हैं। एक तो यह कि उसको ज़ाहिर ही न होने दिया, यह छुपाना है। और अगर छुपाए न छुप सका और ज़ाहिर ही हो गया तो फिर उसमें गड़-मड़ करना चाहते हैं, यह “लब्स” (हक़ के साथ नाहक़ को मिला देना) है। हक़ तअ़ाला ने दोनों से मना कर दिया।
2. नमाज़ से उनकी रुतबे और मन्सब की मुहब्बत कम होगी, ज़कात से उनकी माल की मुहब्बत घटेगी, बातिनी तवाज़ो से हसद वगैरह में कमी आएगी। यही मर्ज़ उनमें ज़्यादा थे।
3. इससे यह मसला नहीं निकलता कि बे-अमल को वाइज़ बनना जायज़ नहीं, बल्कि यह निकलता है कि वाइज़ को बे-अमल बनना जायज़ नहीं।
4. यह दिन कियामत का होगा।
5. किसी ने फिरऔन से भविष्यवाणी कर दी थी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जिसके हाथों तेरी हुकूमत जाती रहेगी, इसलिए उसने नये पैदा होने वाले लड़कों को क़त्ल करना शुरू कर दिया।
6. यह किस्सा उस वक़्त हुआ कि मूसा अलैहिस्सलाम पैदा होकर पैग़म्बर हो गए और मुद्दतों फिरऔन को समझाते रहे।
7. फैसले की चीज़ या तो उन अहकाम को कहा जो तौरात में लिखे हैं, या मोज़िज़ों को कहा, या खुद तौरात ही को कह दिया।

लिकौमिही या कौमि इन्नकुम् ज-लम्तुम् अन्फु-सकुम् बित्तिखाजिकुमुल्-अिज्-ल फतूबू इला
 बारिइकुम् फक्तुलू अन्फु-सकुम्, जालिकुम् खैरुल्लकुम् अिन्-द बारिइकुम्, फता-ब अलैकुम्
 इन्नहू हुवत्तव्वाबुरहीम (54) व इज् कुल्लुम् या मूसा लन्-नुअमि-न ल-क हत्ता नरल्ला-ह
 जह-रतन् फ-अ-खाजत्कुमुसाअि-कतु व अन्तुम् तन्जुरून (55) सुम्-म बअस्नाकुम्
 मिम्-बअदि मौतिकुम् लअल्लकुम्
 तश्कुरून (56) व जल्लल्ला अलैकुमुल्-
 गमा-म व अन्जल्ला अलैकुमुल्मन्-न
 वस्सल्वा, कुलू मिन् तथियबाति मा
 रजक्नाकुम्, व मा ज-लमूना व लाकिन्
 कानू अन्फु-सहुम् यज़िलमून (57) व
 इज् कुल्लदखुलू हाजिहिल्-कर-य-त
 फकुलू मिन्हा हैसू शिअ्तुम् र-गदव्-
 वदखुलुल्-बा-ब सुज्जदव्-व कूलू हित्ततुन्
 नगुफिर लकूम खातायाकुम्, व
 स-नजीदुल् मुत्सिनीन (58)
 फ-बद्-द-लल्लजी-न ज-लमू कौलन्
 गैरल्लजी की-ल लहुम् फ-अन्जल्ला
 अलल्लजी-न ज-लमू रिज्जम्-मिनस्-
 समा-इ बिमा कानू यफ्सुकून (59) ♦

فَاتْلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِكِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
 إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِذْ قُلْتُمْ يَمُوسَى لَنْ تُؤْمِنَ لَكَ
 حَتَّى نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذْنَا لَكُمْ الضِّعْفَةَ وَأَنْتُمْ تُنْظَرُونَ ۝
 ثُمَّ بَعَثْنَاكَ مِنْ بَعْدِ مُوسَى لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَظَلَلْنَا
 عَلَيْكُمُ الظُّلُمَاتِ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَى كُلَّامٍ ۝
 طَبَّيْتُمْ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَأَنْتُمْ أَنْفُسُكُمْ
 يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ
 شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ
 خَطِيئَتَكُمْ وَسَيَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا
 غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ آيَاتٍ
 السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَإِذْ اسْتَسْقَى مُوسَى لِقَاؤَهُ
 فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
 عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ
 وَلَا تَتَعَدَّوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَإِذْ قُلْتُمْ يَمُوسَى لَنْ
 نَصْبِرَ عَلَى طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِنْ أَثْنَيْتِ
 الْأَرْضِ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصِلَهَا

और फैसले की चीज़,⁷ इस उम्मीद पर कि तुम राह पर चलते रहो। (53) और (वह ज़माना याद करो) जब मूसा ने फरमाया अपनी कौम से कि ऐ मेरी कौम! बेशक तुमने अपना बड़ा नुकसान किया, अपनी इस गौसाला (को पूजने) की तजवीज़ से, सो तुम अब अपने ख़ालिक की तरफ़ मुतवज्जह हो, फिर बाज़ आदमी बाज़ को क़त्ल करो।¹ यह (अमल करना) तुम्हारे लिए बेहतर होगा तुम्हारे ख़ालिक के नज़दीक, फिर हक़ तआला तुम्हारे हाल पर (अपनी इनायत से) मुतवज्जह हुए, बेशक वह तो ऐसे ही हैं कि तौबा क़बूल कर लेते हैं और इनायत फरमाते हैं। (54) और जब तुम लोगों ने (यूँ) कहा कि ऐ मूसा! हम हरगिज़ न मानेंगे तुम्हारे कहने से यहाँ तक कि हम (खुद) देख लें अल्लाह तआला को खुले तौर पर, सो (इस गुस्ताखी पर) आ पड़ी तुमपर कड़क बिजली और तुम (उसका आना) अपनी आँखों से देख रहे थे। (55) फिर हमने तुमको ज़िन्दा कर उठाया तुम्हारे मर जाने के बाद, इस उम्मीद पर कि तुम एहसान मानोगे। (56) और साया डालने वाला किया हमने तुमपर बादल को, (तीह के मैदान में) और (ग़ैब के ख़ज़ाने से) पहुँचाया हमने तुम्हारे पास तुरन्जबीन और बटेरें। खाओ नफीस चीज़ों से जो कि हमने तुमको दी हैं, और (इससे) उन्होंने हमारा कोई नुकसान नहीं किया, लेकिन अपना ही नुकसान करते थे।² (57) और जब हमने हुक्म किया कि तुम लोग उस आबादी के अन्दर दाख़िल हो, फिर खाओ उस (की चीज़ों में) से जिस जगह तुम रग़बत करो बेतकल्लुफी से, और दरवाज़े में दाख़िल होना (आजिज़ी से) झुके-झुके और (ज़बान से) कहते जाना कि तौबा है (तौबा है)। हम माफ़ कर देंगे तुम्हारी ख़ताएँ और अभी उसपर और ज़्यादा देंगे दिल से नेक काम करने वालों को। (58) सो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक और कलिमा जो ख़िलाफ़ था उस कलिमे के जिस (के कहने) की उनसे फरमाइश की गई थी, इसपर हमने नाज़िल की उन ज़ालिमों पर एक आसमानी आफ़त, इस वजह से कि वे नाफरमानी करते थे।³ (59) ♦

और (वह ज़माना याद करो) जब (हज़रत) मूसा ने पानी की दुआ माँगी अपनी कौम के वास्ते, इसपर हमने (मूसा को) हुक्म दिया कि अपनी इस लाठी को फ़लाँ पत्थर पर मारो, पस फौरन उससे फूट निकले बारह चश्मे (और बारह ही ख़ानदान थे बनी इसराईल के, चुनौचे) मालूम कर लिया हर-हर शख्स ने अपने पानी पीने की जगह को। खाओ और (पीने को) पियो अल्लाह के रिज़्क से और (दरमियाना दर्जे की) हद से मत निकलो फ़साद (व फ़ितना) करते हुए मुल्क में।⁴ (60) और जब तुम लोगों ने (यूँ) कहा कि ऐ मूसा (रोज़ के रोज़) हम एक ही किस्म के खाने

1. यह बयान है उस तरीके का जो उनकी तौबा के लिए तजवीज़ हुआ, यानी मुजरिम लोग क़त्ल किए जाएँ।
2. ये दोनों किस्से वादी-ए-तीह में हुए, तीह के मायने हैं सरगर्दानी (हैरानी व परेशानी)।
3. वह ख़िलाफ़ कलिमा यह था कि “हित्तुनु” जिसके मायने तौबा की जगह के हैं, इसकी जगह मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में “हब्बतुनु फ़ी शअरतिनु” यानी ‘ग़ुल्ला जौ के दरमियान’ कहना शुरू कर दिया, और वह आसमानी आफ़त ताऊन था।
4. यह किस्सा वादी-ए-तीह में हुआ, वहाँ प्यास लगी तो पानी माँगा, मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की तो एक ख़ास पत्थर से सिर्फ़ लाठी के मारने से बारह चश्मे अल्लाह की कुदरत से निकल पड़े, और खाने से मुराद “मन्न” व “सल्वा” का खाना है, और पीने से यही पानी पीना मुराद है। और फ़साद व फ़ितना फरमाया नाफरमानी और अहक़ाम के छोड़ने को।

मिम्-बकिलहा व किस्सा-इहा व फूमिहा व अ-दसिहा व ब-सलिहा, का-ल
अ-तस्तब्दिलूनल्लजी हु-व अदना बिल्लजी हु-व खैरुन्, इहबितू मिस्रन् फ-इन्-न लकुम् मा
सअल्लुम, व जुरिबत् अलैहिमुज्जिल्लतु वल्मस्क-नतु व बाऊ बि-ग-जबिम्-मिनल्लाहि,
जालि-क बिअन्न-हुम् कानू यक्फुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक्तुलूनन्-नबिय्यी-न बिगैरिल्-
हक्कि, जालि-क बिमा असव्-व कानू

यअतदून (61) ❖

इन्नल्लजी-न आमनू वल्लजी-न हादू
वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न
बिल्लाहि वल्यौमिल् -आखिरि व अमि-ल
सालिहन् फ-लहुम् अजूरुहुम् अिन्-द
रब्बिहिम व ला खौफुन् अलैहिम वला
हुम् यहज़नून (62) व इज़् अखाज़्ना
मीसा-ककुम् व र-फअना फौ-ककुमुत्तू-र
खुजू मा आतैनाकुम् बिक्रव्वतिव्वज्कुरू मा
फीहि लअल्लकुम् तत्तकून (63) सुम्-म
तवल्लैतुम् मिम्-बअदि जालि-क फलौला
फज्जुल्लाहि अलैकुम् व रहमतुहू लकुन्तुम्
मिनल् खासिरीन (64) व लकद्
अलिम्तुमुल्लजीनअतदौ मिन्कुम् फिस्सब्ति

फकुल्ला लहुम् कूनू कि-र-दतन् खासिईन (65) फ-जअल्लाहा नकालल्लिमा बै-न यदैहा व
मा खल्फहा व मौअि-जतल् लिल्मुत्तकीन (66) व इज़् का-ल मूसा लिकौमिही इन्नल्ला-ह
यअमुरुकुम् अन् तज्बहू ब-क-रतन्, कालू अ-तत्तखिजुना हुजुवन्, का-ल अअजू बिल्लाहि
अन् अकू-न मिनल्लाहिलीन (67) कालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य, का-ल

قَالَ اسْتَبْدِلُونِ الَّذِي هُوَ أَدْنَى بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ أَهْطُوا
مَصْرًا فَإِنْ لَكُمْ تَأْسَاتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَاءَ وَبَعْضٍ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ
اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الشَّهِيدِينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَى وَ
الطَّالِبِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ
وَلَا أَخْذَانَا مِمَّا فَعَلْتُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمْ الظُّرُوحَ وَأَمَّا أَنْتُمْ
بِقَوْلِهِمْ وَآذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ
بَعْدِ ذَلِكَ قَالُوا لَا فَضْلَ لِلَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ
الْخَاسِرِينَ وَقَدْ عَلِمْتُمْ الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ
فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ فَبَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِبَاطِنٍ
يَذَّبْنَهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ وَإِذْ قَالَ مُوسَى
لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَنْتَ جُنْدُنَا
هَؤُلَاءِ قَالِ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ قَالُوا ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا

مَذْكُورٌ

पर कभी न रहेंगे, आप हमारे वास्ते अपने परवर्दिगार से दुआ करें कि वह हमारे लिए ऐसी चीज़ें पैदा करें जो ज़मीन में उगा करती हैं, साग (हुआ) ककड़ी (हुई) गेहूँ (हुआ) मसूर (हुई) और प्याज़ (हुई) आपने फरमाया: क्या तुम बदले में लेना चाहते हो अदना दर्जे की चीज़ों को ऐसी चीज़ के मुकाबले में जो आला दर्जे की है। किसी शहर में (जाकर) उतरो, (वहाँ) ज़रूर तुमको वे चीज़ें मिलेंगी जिनकी तुम दरख्वास्त करते हो, और जम गई उनपर ज़िल्लत और परस्ती (कि दूसरों की निगाह में कद्र और खुद उनमें हिम्मत व जुर्रत न रही) और मुस्तहिक हो गए अल्लाह के ग़ज़ब के।¹ (और) यह इस वजह से (हुआ) कि वे लोग इनकारी हो जाते थे अहकामे इलाही के और कत्ल कर दिया करते थे पैगम्बरों को नाहक (और दूसरे) यह इस वजह से हुआ कि उन लोगों ने इताअत न की और (इताअत के) दायरे से निकल निकल जाते थे। (61) ♦

यह तहकीकी बात है कि मुसलमान और यहूदी और नसारा “यानी ईसाई” और फ़िर्का साबिईन (इन सबमें) जो शख्स यकीन रखता हो अल्लाह तआला (की ज्ञात और सिफ़ात) पर और कियामत के दिन पर, और कारगुज़ारी अच्छी करे, ऐमों के लिए उनका अज़्र भी है उनके परवर्दिगार के पास, और (वहाँ जाकर) किसी तरह का अन्देशा भी नहीं उनपर और न वे ग़मज़दा होंगे।² (62) और जब हमने तुमसे कौल व क़रार लिया (कि तौरात पर अमल करेंगे) और हमने तूर पहाड़ को उठाकर तुम्हारे ऊपर (बिलकुल सामने मुकाबिल में) लटका दिया कि (जल्दी) कबूल करो जो किताब हमने तुमको दी है मज़बूती के साथ, और याद रखो जो (अहकाम) उसमें हैं जिससे उम्मीद है कि तुम मुत्तकी बन जाओ। (63) फिर तुम इस कौल व क़रार के बाद भी (उससे) फिर गए, सो अगर तुम लोगों पर खुदा तआला का फज़ल और रहम न होता तो ज़रूर तुम (फ़ौरन) तबाह (और हलाक) हो जाते। (64) और तुम जानते ही हो उन लोगों का हाल जो तुममें से (शरीअत की) हद से निकल गए थे, (उस हुक्म के) बारे में (जो) शनिवार के दिन के (मुताल्लिक था) सो हमने उनको कह दिया कि तुम बन्दर ज़लील बन जाओ। (65) फिर हमने उसको एक सबक (हासिल किए जाने वाला वाकिआ) बना दिया उन लोगों के लिए भी जो उस कौम के ज़माने के लोग थे और उन लोगों के लिए भी जो बाद के ज़माने में आते रहे, और नसीहत का ज़रिया (बनाया खुदा तआला से) डरने वालों के लिए।³ (66) और (वह ज़माना याद करो) जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी कौम से फरमाया कि हक़ तआला तुमको हुक्म देते हैं कि तुम एक बैल ज़िब्ह करो। वे लोग कहने लगे कि आया आप हमको मस्ख़रा बनाते हैं। (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फरमाया: मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ जो मैं ऐसी जहालत वालों जैसा काम करूँ।⁴ (67) वे

1. ज़िल्लत व आजिजी में से यह भी है कि यहूदियों से हुक्मत कियामत के करीब होने तक के लिए छीन ली गई।
2. कानून का हासिल ज़ाहिर है कि जो शख्स पूरी इताअत एतिकाद और आमाल में इख़्तियार करेगा, चाहे वह पहले से कैसा ही हो, हमारे यहाँ मकबूल और उसकी ख़िदमत काबिले क़द्र है। मतलब यह हुआ कि जो मुसलमान हो जाएगा अज़्र व आख़िरत में नजात का हक़दार होगा।
3. बनी इसराईल के लिए शनिवार का दिन अज़मत वाला और इबादत के लिए मुकर्रर था और मछली का शिकार भी इस दिन मना था। ये लोग समुद्र के किनारे आबाद थे, मछली के शौकीन हजार जाल डालकर शिकार करना था सो किया, उसपर अल्लाह तआला का यह अज़ाब शक्ल को बिगाड़ देने का नाज़िल हुआ और तीन दिन के बाद वे सब मर गए।
4. बनी इसराईल में एक खून हो गया था, लेकिन उस वक़्त कातिल का पता न लगा था। बनी इसराईल ने मूसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि हम चाहते हैं कि कातिल का पता लगे। आपने अल्लाह के हुक्म से एक बैल के ज़िब्ह करने का हुक्म फरमाया। इसपर उन्होंने अपनी फितरत के मुवाफ़िक़ हुज़्जतें निकालना शुरू कीं।

इन्नहू यक्लू इन्नहा ब-क-रतुल्ला-फारिजुवं-व ला बिक्रुन्, अवानुम् बै-न ज़ालि-क, फफ़अलू
मा तुअमरून (68) कालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा लौनुहा, का-ल इन्नहू यक्लू
इन्नहा ब-क-रतुन् सफ़रा-उ फाकिअुल् लौनुहा तसुरुन्नाज़िरीन (69) कालुद्अु लना रब्ब-क
युबय्यिल्लना मा हि-य इन्नल् ब-क-र तशाब-ह अलैना, व इन्ना इन्शा- अल्लाहु लमुहत्तदून

(70) का-ल इन्नहू यक्लू इन्नहा
ब-क-रतुल् ला ज़लूलुन् तसीरुल्-अर्-ज़
व ला तस्किल्-हर-स मुसल्ल-मतुल्-
-लाशिय-त फीहा, कालुल्आ-न जिअ-त
बिल्हक्कि, फ-ज़-बहूहा व मा कादू
यफ़अलून (71) ❖

व इज़् कतल्लुम् नफ़सन् फदार्अुतुम्
फीहा, वल्लाहु मुख़िरजुम्-मा कुन्तुम्
तक्तुमून (72) फ-कुलनज़िर्बूहु
बि-बअज़िहा, कज़ालि-क युस्तिल्लाहुल्-
मौता व युरीकुम् आयातिही लअल्लकुम्
तअ़किलून (73) सुम्-म कसत्
कुलबुकुम् मिम्-बअ़दि ज़ालि-क फहि-य
कल्हिजा-रति औ अशद्दु कस्वतन्, व
इन्-न मिनल्-हिजारति लमा य-तफ़ज्जरु

मिन्हुल्-अन्हारु, व इन्-न मिन्हा लमा यशक्ककु फ-यख़्कजु मिन्हुल्मा-उ, व इन्-न मिन्हा
लमा यह़बितु मिन् ख़श्यतिल्लाहि, व मल्लाहु बिगाफिलिन् अम्मा तअ़मलून (74)
अ-फतत्मअू-न अय्युअ़मिन् लकुम् व कद् का-न फरीकुम् मिन्हुम् यस्मअू-न कलामल्लाहि
सुम्-म युहरिफ़ूनहू मिम्-बअ़दि मा अ-कलूहु व हुम् यअ़लमून (75) व इज़ा लकुल्लज़ी-न

الْقُرْآنُ
فَارِضٌ وَلَا يَكْرَهُونَ ۚ بَيْنَ ذَلِكَ فَاعْمَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۚ
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْهَاهُ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا
بَقَرَةٌ ۖ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ۚ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَبَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن
شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ ۖ لِذُكُلٍ
تُؤْتِيهِ الْأَرْضُ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسْلِمَةً ۚ لَا شَيْءَ فِيهَا قَالُوا
الَّذِي جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ قَدْ أَخَذْنَا مَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ۚ وَإِذْ
قَتَلْتُمْ نَفْسًا قَدْ دُرِّعْتُمْ فِيهَا ۚ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ
تَكْتُمُونَ ۚ فَكُنَّا اضْرِبُوهُ بَعْضَهَا كَذَلِكَ يُعْجِ اللَّهُ
الْمُؤْمِنَ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۚ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ
مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارِ ۖ قَوَادٍ شَدَّ قَسْوَةً ۚ وَإِن مِّن
الْحِجَارِ لَمَّا يَنْفَجِّرُ مِنْهُ الْآخَرُ ۚ وَإِن مِّنْهَا لَمَّا يَشَقُّ ۚ فَيَخْرُجُ
مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِن مِّنْهَا لَمَّا يَحْبِطُ ۚ مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَمَا
اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۚ أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا لَكُمْ
وَقَدْ كَانَ قَوْمٌ قَبْلَهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يَحْرُفُونَهُ
مِّنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۚ وَإِذْ الْقَوَالِ الَّذِينَ آمَنُوا

مَنْ

लोग कहने लगे कि आप दरखास्त कीजिए अपने रब से कि हमसे बयान कर दे कि उस (बैल) की सिफ़तें क्या हैं। आपने फ़रमाया कि वह यह फ़रमाते हैं कि वह ऐसा बैल हो कि न बिलकुल बूढ़ा हो न बहुत बच्चा हो, (बल्कि) पट्टा हो, दोनों उम्रों के दरमियान में, सो अब (ज़्यादा हुज्जत मत कीजियो बल्कि) कर डालो जो कुछ तुमको हुक्म मिला है।¹ (68) कहने लगे कि (अच्छ यह भी) दरखास्त कर दीजिए हमारे लिए अपने रब से कि हमसे यह भी बयान कर दें कि उसका रंग कैसा हो। आपने फ़रमाया कि हक़ तआला यह फ़रमाते हैं कि वह एक ज़र्द रंग का बैल हो, जिसका रंग तेज़ ज़र्द “यानी तेज़ पीला” हो कि देखने वालों को अच्छा लगता हो। (69) कहने लगे कि (अबकी बार और) हमारी खातिर अपने रब से दरियाफ़्त कर दीजिए कि हमसे बयान कर दें कि उसकी खूबियाँ और सिफ़तें क्या-क्या हों, क्योंकि हमको उस बैल में (किसी कद) इशतिबाह “यानी सिफ़तें पहचानने में शक व शुब्हा” है, और हम ज़रूर इन्शा-अल्लाह तआला (अबकी बार) ठीक समझ जाएँगे। (70) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने जवाब दिया कि हक़ तआला यूँ फ़रमाते हैं कि वह न तो हल में चला हुआ हो, जिससे ज़मीन जोती जाए और न उससे खेती को पानी दिया जाए (गरज़ हर किस्म के ऐब से) सालिम हो और उसमें कोई दाग़ न हो। (यह सुनकर) कहने लगे कि अब आपने पूरी बात फ़रमाई। फिर उसको ज़िब्ह किया और (उनकी हुज्जतों से बज़ाहिर) करते हुए मालूम न होते थे। (71) ♦

और जब तुम लोगों (में से किसी) ने एक आदमी का खून कर दिया फिर एक-दूसरे पर उसको डालने लगे, और अल्लाह को उस मामले का ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था, जिसको तुम पोशीदा रखना चाहते थे। (72) इसलिए हमने हुक्म दिया कि उसको उसके कोई से टुकड़े से छुआ दो, इसी तरह हक़ तआला (कियामत में) मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे, और अल्लाह तआला अपनी कुदरत के नज़ारे तुमको दिखलाते हैं, इसी उम्मीद पर कि तुम अक्ल से काम लिया करो।² (73) ऐसे-ऐसे वाकिआत के बाद तुम्हारे दिल फिर भी सख़्त ही रहे तो (यूँ कहना चाहिए कि) उनकी मिसाल पत्थर जैसी है, बल्कि सख़्ती में (पत्थर से भी) ज़्यादा सख़्त। और कुछ पत्थर तो ऐसे हैं जिनसे (बड़ी-बड़ी) नहरें फूटकर चलती हैं और उन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं कि जो फट जाते हैं, फिर उनसे (अगर ज़्यादा नहीं तो थोड़ा ही) पानी निकल आता है, और उन्हीं पत्थरों में कुछ ऐसे हैं जो खुदा तआला के खौफ़ से ऊपर से नीचे लुढ़क आते हैं, और हक़ तआला तुम्हारे आमाal से बेख़बर नहीं हैं।³ (74) (ऐ मुसलमानो!) क्या अब भी तुम उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएँगे, हालाँकि इनमें के कुछ लोग ऐसे गुज़रे हैं कि अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसको कुछ का कुछ कर डालते थे (और) उसको समझने के बाद (ऐसा करते) और जानते थे।⁴ (75) और जब मिलते हैं (मुनाफ़िकीन यहूद) मुसलमानों से तो (उनसे तो) कहते हैं कि हम (भी) ईमान ले आए हैं, और

1. हदीस में है कि अगर वे हुज्जतें न करते तो इतनी कैदें (शर्तें) उनके ज़िम्मे न होती, जो बैल ज़िब्ह कर देते काफ़ी हो जाता।

2. उस क़त्ल किए गए शख्स ने ज़िन्दा होकर अपने क़ातिल का नाम बतला दिया और फ़ौरन फिर मर गया।

3. इस मक़ाम पर इन पत्थरों की तीनों किस्मों में तरतीब निहायत लतीफ़ और जो फायदा पहुँचाना मकसूद है उसमें निहायत बलीग़ है। यानी कुछ पत्थरों से मख़्लूक को नहरों का बड़ा नफ़ा पहुँचता है, उनके दिल ऐसे भी नहीं। कुछ पत्थरों से थोड़े पानी का कम नफ़ा पहुँचता है, लेकिन उनके दिल उनसे भी सख़्त हैं, और कुछ पत्थरों से अगरचे किसी को नफ़ा नहीं पहुँचता मगर खुद तो उनमें एक असर है, मगर उनके दिलों में असर क़बूल करने की यह मामूली कैफ़ियत भी नहीं।

4. मतलब यह कि जो लोग ऐसे निडर और नफ़सानी गरज़ों के बन्धक हों, वे किसी के कहने से कब बाज़ आने वाले और किसी की कब सुनने वाले हैं।

आमनू कालू आमन्ना व इज़ा ख़ला बअज़ुहुम् इला बअज़िन् कालू अतुहदिसू-नहुम् बिमा
फ-तहल्लाहु अलैकुम् लियुहाज्जूकुम् बिही अिन्-द रब्बिकुम्, अ-फला तअकिलून (76) अ-व
ला यअलमू-न अन्नल्ला-ह यअलमु मा युसिरू-न व मा युअलिनून (77) व मिन्हुम्
उम्मिय्यू-न ला यअलमूनल् किता-ब इल्ला अमानियू-य व इन् हुम् इल्ला यजुन्नून ● (78)

फवैलुल्-लिल्लजी-न यक्तुबूनल्-किता-ब
बिएदीहिम, सुम्-म यकूलू-न हाज़ा मिन्
अिन्दिल्लाहि लियश्तरु बिही स-मनन्
कलीलन्, फवैलुल्लहुम् मिम्मा क-तबत्
ऐदीहिम व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून
(79) व कालू लन् तमस्स-नन्नारु
इल्ला अय्यामम् मअदू-दतन्, कुल्
अत्तखज़्तुम् अिन्दिल्लाहि अहदन् फ-लंयू-
युख़लिफ़ल्लाहु अहदहु अम् तकूलू-न
अलल्लाहि मा ला तअलमून (80) बला
मन् क-स-ब सय्यि-अतंव-व अहातत्
बिही ख़तीअतुहू फ-उलाइ-क अस्हाबुन्-
नारि हुम् फीहा ख़ालिदून (81)
वल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति
उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फीहा
ख़ालिदून (82) ♦

قَالُوا امْكُتْ وَادْخُلْ بِعَضْمِهِمْ إِلَى بَعْضِ قَالُوا اتَّخَذُوا لَهُمْ
بِمَا فَكَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ لِمَا يَحْجُوكُم بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ۝ أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا
يُعْلِنُونَ ۝ وَمِنْهُمْ أَهْبِئُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمْلَى
وَلَنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ۝ قَوْلِ لِلَّذِينَ يَكْتُوبُونَ الْكِتَابَ
بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيُشْرُوا بِهِ
ثُمَّ أَقْلِيلًا قَوْلِ لَهُمْ مِمَّا كُتِبَ إِلَيْهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ
مِمَّا يَكْسِبُونَ ۝ وَقَالُوا لَنْ نَسْتَنَ الْفَارَ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً
قُلْ اتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ
أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ بَلَى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً
وَآحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ الْفَارِ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَإِذَا أَخَذْنَا مِنْ آلِ
بَنِي إِسْرَءِيلَ لَاتَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا
وَذَى الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا
وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ

जब तन्हाई में जाते हैं ये बाज़े दूसरे कुछ (ऐलानिया) यहूदियों के पास तो वे उनसे कहते हैं कि तुम मुसलमानों को वो बातें बतला देते हो जो अल्लाह ने तुमपर ज़ाहिर कर दी हैं, तो नतीजा यह होगा कि वे लोग तुमको हुज्जत में मगलूब कर देंगे कि यह मज़मून अल्लाह के पास (से) है, क्या तुम (इतनी मोटी बात) नहीं समझते। (76) क्या उनको इल्म नहीं है इसका कि हक़ तआला को सब ख़बर है उन चीज़ों की भी जिनको वे पोशीदा रखते हैं (77) और उनकी भी जिनका वे इज़हार कर देते हैं। और उन (यहूदियों) में बहुत से अनपढ़ (भी) हैं जो किताबी इल्म नहीं रखते, लेकिन (बग़ैर सनद के) दिल खुश करने वाली बातें (बहुत याद हैं) और वे लोग और कुछ नहीं, ख़्यालात पका लेते हैं। ● (78) तो बड़ी ख़राबी उनकी होगी जो लिखते हैं (अदल-बदलकर) किताब (तौरात) को अपने हाथों से, फिर कह देते हैं कि यह (हुक्म) खुदा की तरफ़ से है। गर्ज़ (सिर्फ़) यह होती है कि इस ज़रिये से कुछ नक़द किसी क़द्र थोड़ा वसूल कर लें। सो बड़ी ख़राबी (पेश) आएगी उनको उसकी बदौलत (भी) जिसको उनके हाथों ने लिखा था और बड़ी ख़राबी होगी उनको उसकी बदौलत (भी) जिसको वे वसूल कर लिया करते थे। (79) और यहूदियों ने यह भी कहा कि हरगिज़ हमको (दोज़ख़ की) आग छुएगी (भी) नहीं, मगर (बहुत) थोड़े दिन जो (उँगलियों पर) गिन लिए जा सकें। आप यूँ फ़रमा दीजिए: क्या तुम लोगों ने हक़ तआला से (इसके मुताल्लिक) कोई मुआहदा ले लिया है, जिसमें अल्लाह तआला अपने मुआहदे के ख़िलाफ़ न करेंगे, या अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी कोई इल्मी सनद अपने पास नहीं रखते। (80) क्यों नहीं? जो शख्स जान बूझकर बुरी बातें करता रहे और उसको उसकी ख़ता (और कुसूर इस तरह) घेर ले (कि कहीं नेकी का असर तक न रहे) सो ऐसे लोग दोज़ख़ वाले होते हैं, (और) वे उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। (81) और जो लोग (अल्लाह और रसूल पर) ईमान लाएँ और नेक काम करें, ऐसे लोग जन्नत वाले होते हैं (और) वे उसमें हमेशा (हमेशा) रहेंगे। (82) ♦

और (वह ज़माना याद करो) जब लिया हमने (तौरात में) कौल व करार बनी इसराईल से कि इबादत मत करना (किसी की) सिवाय अल्लाह तआला के, और माँ-बाप की अच्छी तरह ख़िदमत गुज़ारी करना और रिश्तेदारों व करीबी लोगों की भी, और यतीम बच्चों की भी और ग़रीब मोहताजों की भी, और आम लोगों से बात भी अच्छी तरह (अच्छे अख़लाक़ से) करना, और पाबन्दी रखना नमाज़ की, और अदा करते रहना ज़कात, फिर तुम (कौल व करार करके) उससे फिर गए सिवाय कुछ के, और तुम्हारी तो मामूली आदत है इकरार करके हट जाना। (83) और (वह ज़माना भी याद करो) जब हमने तुमसे यह कौल व करार (भी) लिया कि आपस में खून मत बहाना और एक-दूसरे को वतन से मत निकालना, फिर तुमने इकरार भी कर लिया और (इकरार भी इशारे में नहीं बल्कि ऐसा

1. यह मामला तहकीकी है कि अगर मोमिन गुनाहगार हो तो अगरचे गुनाहों की वजह से दोज़ख़ में अज़ाब पाए, लेकिन ईमान की वजह से हमेशा दोज़ख़ में न रहेगा। कुछ मुद्त के बाद नजात हो जाएगी।
2. कुफ़ की वजह से कोई नेक अमल मक़बूल नहीं होता, बल्कि अगर कुछ कुफ़ के पहले के आमाल हों तो वे भी बेकार और ज़ाया हो जाते हैं। इस वजह से कुफ़्कार में सब बदी ही बदी होगी, ब-ख़िलाफ़ ईमान वालों के कि अब्बल तो उनका ईमान खुद एक सबसे बड़ा नेक अमल है, दूसरे और आमाल भी उनके आमाल नामे में दर्ज होते हैं, इसलिए वे नेकी के असर से ख़ाली नहीं।

मुअर्रिज़ून (83) व इज़् अख़ज़्ना मीसा-ककुम् ला तस्फ़िक्-न दिमा-अकुम् व ला तुख़िरजू-न
 अन्फु-सकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्-म अकररतुम् व अन्तुम् तशहदून (84) सुम्-म अन्तुम्
 हा-उला-इ तक्तुलू-न अन्फु-सकुम् व तुख़िरजू-न फ़रीकम् मिन्कुम् मिन् दियारिहिम
 तज़ाहरु-न अलैहिम बिल्इस्मि वल्-अुद्वानि, व इय्यअतूकुम् उसारा तुफ़ादूहुम् व हु-व
 मुहर्रमुन् अलैकुम् इख़राजुहुम्, अ-फ-
 तुअ्मिन्-न बिबअज़िल्-किताबि व
 तक्फ़ुरू-न बिबअज़िन् फ़मा जज़ा-उ
 मय्यफ़अलु ज़ालि-क मिन्कुम् इल्ला
 ख़िज़्युन् फ़िल्हयातिदुन्या व यौमल्-
 कियामति युरद्दू-न इला अशादिल्-
 अज़ाबि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा
 तअ्मलून (85) उला-इकल्लज़ीनश्-
 -त-र-वुल्हयातदुन्या बिल्आख़िरति फ़ला
 युख़फ़्फ़ु अन्हुमुल् अज़ाबु व ला हुम्
 युन्सरून (86) ♦

व लकद् आतैना मूसल्-किता-ब व
 कफ़फ़ैना मिम्-बअदिही बिरुसुलि व
 आतैना अीसब्-न मर्यमल्बय्यिनाति व
 अय्यद्नाहु बिरुहिल्कुदुसि, अ-फकुल्लमा

जाअकुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फुसुकुमुस्तक्वरतुम् फ-फ़रीकन् कज़्ज़बुम् व फ़रीकन्
 तक्तुलून (87) व कालू कुलूबुना गुल्फ़ुन्, बल् ल-अ-नहुमुल्लाहु बिकुफ़िरहिम फ-कलीलम्मा
 युअ्मिन् (88) व लम्मा जाअहुम् किताबुम् मिन् अिन्दिल्लाहि मुसदिकुल्लिमा म-अहुम् व
 कानू मिन् कब्लु यस्तफ़ितहू-न अलल्लज़ी-न क-फरू, फ-लम्मा जा-अहुम् मा अ-रफ़ू क-फरू

وَأَنْتُمْ مُعْرِضُونَ ۚ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ
 وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ
 تَسْمَهُونَ ۚ ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ
 فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
 وَإِنْ يَأْتُواكُمْ أُسْرَى تَقْتُلُوهُمْ وَهُمْ مَحْرُومُونَ ۚ إِخْرَاجُهُمْ
 أَفْئُتُونَ بِبَعْضِ الْكُذِبِ وَكَافِرُونَ ۚ بَعْضُ قَبَاحِ مَا
 مَنْ يَفْعَلُ ذَلِكَ مِنْكُمْ لِأَخْزَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ
 الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَى أَشَدِّ الْعَذَابِ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۚ
 أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يَخَفُفُ
 عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۚ وَلَقَدْ اتَّيْنَا مُوسَى الْكَلْبَ
 وَقَفَيْنَاهُ مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۚ وَاتَّيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَنِي
 وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى
 أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَقَرِيقًا تَقْتُلُونَ ۚ وَ
 قَالَ الْوَاقِلُونَ بِالْغُلَّتِ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكَفَرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ
 وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ وَ
 كَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ

مَذَك

साफ़ जैसे) तुम शहादत देते हो। (84) फिर तुम यह (आँखों के सामने मौजूद ही) हो (कि) क़त्ल व क़िताल भी करते हो और एक-दूसरे को वतन से भी निकालते हो (इस तौर पर कि) उन अपनों के मुकाबले में (उनकी मुख़ालिफ़ कौमों की) इम्दाद करते हो, गुनाह और जुल्म के साथ, और अगर उन लोगों में से कोई गिरफ़्तार होकर तुम तक पहुँच जाता है तो ऐसों को कुछ खर्च कर कराकर रिहा करा देते हो, हालाँकि यह बात (भी मालूम) है कि तुमको उनका वतन से निकाल देना भी मना है।¹ क्या (पस यूँ कहो कि) किताब (तौरात) के बाज़ “यानी कुछ” (अहकाम) पर तुम ईमान रखते हो और बाज़ पर ईमान नहीं रखते, सो और क्या सज़ा हो ऐसे शख्स की जो तुम लोगों में से ऐसी हरकत करे, सिवाय रुस्वाई के दुनियावी ज़िन्दगी में और कियामत के दिन को बड़े सख़्त अज़ाब में डाल दिए जाएँ, और अल्लाह तआला (कुछ) बेख़बर नहीं है तुम्हारे (बुरे) आमाल से। (85) ये वे लोग हैं कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी (के लुफ़्, और मज़ों) को ले लिया है आख़िरत (की नजात) के बदले में, सो न तो उनकी सज़ा में (कुछ) कमी की जाएगी और न कोई उनकी तरफ़दारी (पैरवी) करने पाएगा। (86) ♦

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी, और (फिर) उनके बाद एक के बाद एक पैग़म्बरों को भेजते रहे, और फिर हमने ईसा इब्ने मरियम को (नुबुव्वत की) वाज़ेह दलीलें अता फ़रमाई और हमने रूहुल्-क़ुदुस से ताईद दी, क्या जब कभी (भी) कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऐसे अहकाम लाए जिनको तुम्हारा दिल न चाहता था, (जब ही) तुमने तकब्बुर करना शुरू कर दिया, सो बाज़ों को तो तुमने झूठा बतलाया और बाज़ों को (बे-धड़क) क़त्ल ही कर डालते थे। (87) और वे (यहूदी फ़ख़र के तौर पर) कहते हैं कि हमारे दिल महफूज़ हैं, बल्कि उनके कुफ़्र के सबब उनपर खुदा की मार है, सो बहुत ही थोड़ा-सा ईमान रखते हैं। (88) और जब उनको एक ऐसी किताब पहुँची (यानी कुरआन) जो अल्लाह की तरफ़ से है (और) उसकी (भी) तस्दीक़ करने वाली है जो पहले से उनके पास है, (यानी तौरात) हालाँकि इसके पहले वे (खुद) बयान किया करते थे कुफ़्रार से। फिर जब वह चीज़ आ पहुँची जिसको वे (ख़ूब जानते) पहचानते हैं तो उसका (साफ़) इनकार कर बैठे। सो (बस) खुदा की मार हो ऐसे इनकार करने वालों पर। (89) वह हालत (बहुत ही) बुरी है जिसको इख़्तियार करके वे अपनी जानों को छुड़ाना चाहते हैं, (और वह हालत) यह (है) कि कुफ़्र करते हैं ऐसी चीज़ का जो हक़ तआला ने नाज़िल फ़रमाई, सिर्फ़ (इसी) ज़िद पर कि

1. इस बारे में उनपर तीन हुक्म वाजिब थे। अब्ल क़त्ल न करना, दूसरे न निकालना, तीसरे अपनी कौम में से किसी को गिरफ़्तार व बन्द देखे तो रुपया खर्च करके छुड़ा देना। सो उन लोगों ने पहले और दूसरे हुक्म को तो जाया कर दिया था और तीसरे की पाबन्दी किया करते थे। जिन मुख़ालिफ़ कौमों कि इम्दाद का ज़िक्र फ़रमाया है, मुराद उन कौमों से औस और खज़रज हैं, कि औस बनू कुरैज़ा की मुवाफ़क़त में बनू नजीर के मुख़ालिफ़ थे और खज़रज बनू नजीर की मुवाफ़क़त में बनू कुरैज़ा के मुख़ालिफ़ थे। गुनाह और जुल्म दो लफ़्ज़ लाने में इशारा हो सकता है कि इसमें दो हक़ जाया होते हैं, अल्लाह का हक़ भी कि हुक्मे इलाही की तामील न की, और बन्दे का हक़ भी कि दूसरे को तकलीफ़ पहुँची।

बिही फ-लअनतुल्लाहि अलल्-काफिरीन (89) बिअ-स-मशतरौ बिही अन्फु-सहुम् अय्यक्फुरु
बिमा अन्जलल्लाहु बग्यन् अय्युनज्जिलल्लाहु मिन् फज्जिलही अला मय्यशा-उ मिन् अिबादिही
फ-बाऊ बि-ग-जबिन् अला ग-जबिन्, व लिल्काफिरी-न अजाबुम् मुहीन (90) व इजा
की-ल लहुम् आमिनु बिमा अन्जलल्लाहु कालू नुअमिनु बिमा उन्जि-ल अलैना व यक्फुरु-न

बिमा वरा-अहू, व हुवल्-हक्कु
मुसदिकल्-लिमा म-अहुम, कुल् फलि-म
तक्तुलू-न अम्बिया-अल्लाहि मिन् कब्बु
इन् कुन्तुम् मुअमिनीन (91) व लकद्
जाअकुम् मूसा बिल्-बय्यिनाति
सुम्मत्तखज्जुमुल्-अिज्-ल मिम्-बअदिही
व अन्तुम् जालिमून (92) व इज्
अखाज्ना मीसा-ककुम् व र-फअना
फौ-ककुमुत्-तू-र, खुजू मा आतैनाकुम्
बिक्कुव्वितिन्-वस्मअू, कालू समिअना व
असैना व उशिरबू फी कुलूबिहिमुल्-
अिज्-ल बिक्फिरहिम, कुल् बिअसमा
यअमुरुकुम् बिही ईमानुकुम् इन् कुन्तुम्
मुअमिनीन (93) कुल् इन् कानत्
लकुमुद्-दारुल्-आखिरतु अिन्दल्लाहि

وَأَعْرِضُوا لِمَا كُفِّرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ يَسْمَا شَرَّوَابِهِ
أَنفُسُهُمْ أَن يَكْفُرُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ بَعِيًّا أَن يُنَزَّلَ اللَّهُ مِنْ
فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ فَأَمَّا يُعْصِبُ عَلَى غَضَبٍ
وَالْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝ وَلَا أَقِيلَ لَهُمْ أَسْمَاءُ مَا أَنزَلَ
اللَّهُ قَالُوا تَأْتُونَنَا بِمَاءٍ كَرِيمٍ ۝ وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ
الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ قُلْ فَلِمَ تَقُولُونَ أَتَسْمَا اللَّهُ مِنْ
قَبْلِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَى بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا
مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْمِعُوا
قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَشْرَبْنَا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ
قُلْ بِسْمَا يَا أَمْرُكُمْ بِهِ إِنَّا نَكْفُرُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ إِنْ
كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ
فَتَمَتَّعُوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَلَنْ يَسْمُوهُ أَبَدًا بِمَا قَدِمَتْ
أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَلَتَجِدُنَهُمْ آخِرَ النَّاسِ
عَلَى حَيَوةٍ ۝ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ أَنْ يُعْذَرَ الْف
سَنَةً ۝ وَمَا هُمْ بِخُرُوجِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعْذَرَ اللَّهُ بِصَدِّ

منزل

खालि-सतम् मिन् दूनिन्नासि फ-तमन्नवुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिकीन (94) व लय्य-तमन्नौहु
अ-बदम् बिमा कद्द-मत् ऐदीहिम, वल्लाहु अलीमुम् बिज्जालिमीन (95) व ल-तजिदन्नहुम्
अहरसन्नासि अला हयातिन्, व मिनल्लजी-न अशरकू यवद्दु अ-हदुहुम् लौ युअम्मरु अल्-फ
स-नतिन्, व मा हु-व बिमुजहिजहिही मिनल्-अजाबि अय्युअम्म-र, वल्लाहु बसीरुम् बिमा

अल्लाह तआला अपने फज़ल से जिस बन्दे पर उसको मन्ज़ूर हो नाज़िल फ़रमाए, सो वे लोग ग़ज़ब पर ग़ज़ब के हक़दार हो गए, और इन कुफ़्र करने वालों को ऐसी सज़ा होगी जिसमें ज़िल्लत (भी) है।¹ (90) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम ईमान लाओ उन (तमाम) किताबों पर जो अल्लाह तआला ने (अनेक पैग़म्बरों पर) नाज़िल फ़रमाई हैं, तो कहते हैं कि हम (तो सिर्फ़) उस (ही) किताब पर ईमान लाएँगे जो हमपर नाज़िल की गई है, (यानी तौरात) और जितनी उसके अलावा हैं उन (सब) का इनकार करते हैं, हालाँकि वे भी हक़ हैं और तस्दीक़ करने वाली भी हैं उसकी जो उनके पास है (यानी तौरात की)। आप कहिए कि (अच्छा तो) फिर क्यों क़त्ल किया करते थे अल्लाह के पैग़म्बरों को इससे पहले के ज़माने में अगर तुम (तौरात पर) ईमान रखने वाले थे। (91) और (हज़रत) मूसा तुम लोगों के पास साफ़-साफ़ दलीलें लाए (मगर) इसपर भी तुम लोगों ने गौसाला को (माबूद) तज़वीज़ कर लिया मूसा (अलैहिस्सलाम) के (तूर पर जाने के) बाद, और तुम सितम ढा रहे थे।² (92) और जब हमने तुम्हारा कौल व करार लिया था और तूर को तुम्हारे (सरो के) ऊपर ला खड़ा किया था, जो कुछ (अहक़ाम) हम तुमको देते हैं हिम्मत (और पुख़्तगी) के साथ लो और सुनो। (उस वक़्त) उन्होंने ज़बान से कह दिया कि हमने सुन लिया और हमसे अमल न होगा, और (वजह इसकी यह है कि) उनके दिलों में वही गौसाला जम गया था, उनके (पहले) कुफ़्र की वजह से। आप फ़रमा दीजिए कि ये आमा़ल बहुत बुरे हैं जिनकी तालीम तुम्हारा ईमान तुमको कर रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो। (93) आप कह दीजिए कि अगर (तुम्हारे कहने के मुताबिक़) आ़लमे आख़िरत सिर्फ़ तुम्हारे लिए ही नफ़ा देने वाला है अल्लाह के पास किसी दूसरे की शिर्क़त के बग़ैर तो तुम (इसकी तस्दीक़ के लिए ज़रा) मौत की तमन्ना कर (के दिखला) दो, अगर तुम सच्चे हो। (94) और वे हरगिज़ कभी उस (मौत) की तमन्ना न करेंगे उन (कुफ़्रिया) आमा़ल (की सज़ा के डर) की वजह से जो अपने हाथों समेटे हैं, और हक़ तआला को ख़ूब इत्तिला है इन ज़ालिमों (के हाल) की। (95) और आप (तो) उनको (दुनियावी) ज़िन्दगी के (आ़म) लालची आदमियों से भी बढ़कर पाएँगे, और मुशिरकीन से भी इनका एक-एक (शख्स) इस हवस में है कि उसकी उम्र हज़ार साल की हो जाए, और यह चीज़ अज़ाब से तो नहीं बचा सकती कि (किसी की बड़ी) उम्र हो जाए, और हक़ तआला के सब सामने हैं उनके (बुरे) आमा़ल।³ (96) ♦

1. एक ग़ज़ब तो कुफ़्र पर था ही, दूसरा ग़ज़ब उनके हसद पर हो गया। और अज़ाब में “मुहीन” (ज़िल्लत वाले) की कैद से कुफ़्रार को ख़ास करना हो गया, क्योंकि मोमिन गुनाहगार को अज़ाब गुनाहों से पाक करने के लिए होगा।
2. “बय्यिनात” से मुराद वे दलीलें हैं जो इस किस्से से पहले कि उस वक़्त तक तौरात न मिली थी, मूसा अलैहिस्सलाम के सच्चा होने पर कायम हो चुकी थीं, जैसे ‘अ़सा’ (लाठी) और ‘चमकता हुआ हाथ’ और ‘दरिया का फटना’ और इनके अलावा और मोज़िज़े।
3. बावजूद आख़िरत के एतिकाद के लम्बी उम्र की तमन्ना साफ़ दलील है कि यह आख़िरत की नेमतों के हक़दार होने और अपने ख़ास होने का दावा ही दावा है, दिल में ख़ूब समझते हैं कि वहाँ पहुँचकर जहन्नम ही नसीब होना है। इसलिए जब तक बचे रहें तब तक ही सही।

यअम्लून (96) ❖

कुल् मन् का-न अदुव्वल्लिजिब्री-ल फ-इन्नहू नज्ज-लहू अला कल्बि-क बि-इज्जिल्लाहि
मुसदिकल्लिमा बै-न यदैहि व हुदव्-व बुशरा लिल्-मुअमिनीन (97) मन् का-न अदुव्वल्-
लिल्लाहि व मला-इ-कतिही व रुसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ-इन्नल्ला-ह अदुव्वुल्-

लिल्काफिरीन (98) व लकद् अन्जल्ला

इलै-क आयातिम्- बय्यिनातिन् व मा

यक्फुरु बिहा इल्लल्-फासिकून (99)

अ-व कुल्लमा आ-हदू अह्दन् न-ब-जहू

फरीकुम् मिन्हुम, बल् अक्सरुहुम् ला

युअमिनीन (100) व लम्मा जाअहुम्

रसूलुम् मिन् अिन्दिल्लाहि मुसदिदकुल्-

लिमा म-अहुम् न-ब-ज फरीकुम् मिनल्-

-लजी-न ऊतुल्-किता-ब किताबल्लाहि

वरा-अ जुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला

यअम्लून (101) वत्त-बअू मा तल्लुश्-

शयातीनु अला मुल्कि सुलैमा-न व मा

क-फ-र सुलैमानु व लाकिन्नशशयाती-न

क-फरू युअल्लिमूनन्नासस्सिह्-र, व मा

उन्जि-ल अलल् म-लकैनि बिबाबि-ल

हारू-त व मारू-त, व मा युअल्लिमानि मिन् अ-हदिन् हत्ता यकूला इन्नमा नहनु फिल्लतुन्

फला तक्फुर, फ-य-तअल्लमू-न मिन्हुमा मा युफरिक्कू-न बिही बैनल्-मरइ व जौजिही, व मा

हुम् बिज़ार्री-न बिही मिन् अ-हदिन् इल्ला बि-इज्जिल्लाहि, व य-तअल्लमू-न मा यजुरुहुम्

व ला यन्फअहुम, व लकद् अलिमू ल-मनिशतराहु मा लहू फिलआखिरति मिन् खलाकिन्, व

بِمَا يَعْمَلُونَ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلْجِبْرِيلِ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ وَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ أَوْ كَلِمَاتٍ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ وَلَنَبَاغِيَهُمْ رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَأَوْا ظُهُورَهُمْ كَانَتْهُمْ لَا يَعْلَمُونَ وَاتَّبِعُوا مَا نَزَّلْنَا الشَّيْطَانُ عَلَى لُلُوكِ سُلَيْمَانَ وَمَا كَفَرُوا سُلَيْمَانَ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانِ كَفَرُوا يَعْلَمُونَ النَّاسُ السَّحَرَةُ وَمَا أَنْزَلَ عَلَى الْمَلَائِكَةِ إِلَّا مَا رُؤِيَ وَمَا رُؤِيَ وَمَا يَعْلَمِينَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَ إِنَّمَا سَحْنُ فِتْنَةٍ فَلَا تَكْفُرُوا فَيَعْلَمُونَ مِنْهَا مَا يَفْقَهُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَرَوْحِهِ وَمَا هُمْ بِضَائِرِينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَعْلَمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَوْ شَاءَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

مَنْ

आप (इनसे) यह कहिए कि जो शख्स जिबराईल से दुश्मनी रखे, सो उन्होंने यह कुरआन आपके दिल तक पहुँचा दिया है अल्लाह के हुक्म से, उसकी (खुद) यह हालत है कि तसदीक़ कर रहा है अपने से पहले वाली (आसमानी) किताबों की, और रहनुमाई कर रहा है और खुशख़बरी सुना रहा है ईमान वालों को। (97) जो (कोई) शख्स हक़ तआला का दुश्मन हो और फ़रिश्तों का (हो) और पैग़म्बरों का (हो) और जिबराईल का (हो) और मीकाईल का (हो) तो अल्लाह तआला दुश्मन है ऐसे काफ़िरो का।¹ (98) और हमने तो आपके पास बहुत-सी दलीलें खुली नाज़िल की हैं, और कोई इनकार नहीं किया करता मगर सिर्फ़ वही लोग जो नाफ़रमानी के आदी हैं। (99) क्या और जब कभी भी उन लोगों ने कोई अहद किया होगा (ज़रूर) उसको उनमें से किसी न किसी फ़रीक़ ने नज़र-अन्दाज़ कर दिया होगा, बल्कि उनमें ज़्यादा तो ऐसे ही निकलेंगे जो (मेरे उस अहद का) यकीन ही नहीं रखते। (100) और जब उनके पास एक पैग़म्बर आए अल्लाह की तरफ़ से, जो तसदीक़ भी कर रहे हैं उस किताब की जो उन लोगों के पास है (यानी तौरात की)। इन अहले किताब में के एक फ़रीक़ ने खुद उस अल्लाह की किताब ही को पीठ पीछे डाल दिया है, जैसे उनको गोया बिलकुल इल्म ही नहीं। (101) और उन्होंने ऐसी चीज़ का (यानी जादू का) इत्तिबा किया जिसका चर्चा किया करते थे शयातीन (यानी ख़बीस ज़िन्न) (हज़रत) सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की हुक्म के ज़माने में, और (हज़रत) सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कुफ़्र नहीं किया,² मगर (हाँ) शयातीन कुफ़्र करते थे, और (हालत यह थी कि) आदमियों को भी (उस) जादू की तालीम किया करते थे, और उस (जादू) की भी जो कि उन दोनों फ़रिश्तों पर नाज़िल किया गया था शहर बाबिल में जिनका नाम हासूत व मासूत था।³ और वे दोनों किसी को न बतलाते जब तक यह (न) कह देते कि हमारा वजूद भी एक इम्तिहान है, सो तू कहीं काफ़िर मत बन जाइयो (कि इसमें फँस जाए) सो (कुछ) लोग उन दोनों से इस किस्म का जादू सीख लेते थे जिसके ज़रिए से (अमल करके) किसी मर्द और उसकी बीवी में जुदाई पैदा कर देते थे। और ये (जादूगर) लोग उसके ज़रिए से किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते थे मगर खुदा ही के (तक़दीरी) हुक्म से। और ऐसी चीज़ें सीख लेते हैं जो (खुद) उनको नुकसान पहुँचाने वाली हैं और उनको नफ़ा देने वाली नहीं हैं। और ज़रूर ये (यहूदी) भी इतना जानते हैं कि जो शख्स इसको इख़्तियार करे ऐसे शख्स का आख़िरत में कोई हिस्सा (बाकी) नहीं। और बेशक़ बुरी है वह चीज़ (यानी जादू व कुफ़्र) जिसमें वे लोग अपनी जान दे रहे हैं। काश उनको (इतनी) अक्ल होती! (102) और अगर वे लोग (बजाय इसके) ईमान और तक्वा (इख़्तियार) करते तो खुदा तआला के यहाँ का मुआवज़ा बेहतर था। काश उनको

1. बाज़े यहूदियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सुनकर कि जिबराईल अलैहिस्सलाम वद्व लाते हैं, कहा कि उनसे तो हमारी दुश्मनी है, मशक्कत में डालने वाले अहक़ाम और डरावने वाकिआत उन्हीं के हाथों आया किए हैं। मीकाईल ख़ूब हैं कि बारिश और रहमत उनसे मुताल्लिक़ है। अगर वह वद्व लाया करते तो हम मान लेते। इस आयत में इसी का रद्द है।

2. ये बेवकूफ़ लोग जो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ जादू की निस्बत करते थे यहूद हैं, इसलिए अल्लाह तआला ने बीच में उन (सुलैमान अलैहिस्सलाम) का बरी होना भी ज़ाहिर फ़रमा दिया।

3. इन आयतों के मुताल्लिक़ एक लम्बा-चौड़ा किस्सा ज़ोहरा का मशहूर है जो किसी मोतबर रिवायत से साबित नहीं।

लबिअ-स मा शरौ बिही अन्फु-सहुम, लौ कानू यअलमून (102) व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तकौ ल-मसू-बतुम् मिन् अिन्दिल्लाहि खैरुन्, लौ कानू यअलमून (103) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तक्लू राअिना व क़लुन्जुर्ना वस्मअ, व लिल्काफिरी-न अज़ाबुन् अलीम (104) मा यवदुल्लजी-न क-फरु मिन् अहिल्ल- किताबि व लल्-

मुशिरकी-न अय्युनज्ज-ल अलैकुम् मिन् खैरिम्-मिररब्बिकुम्, वल्लाहु यदतस्सु बिरह्मतिही मय्यशा-उ, वल्लाहु जुल्-फज़िलल्-अज़ीम (105) मा नन्सख् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअति बिखैरिम् मिन्हा औ मिस्लिहा, अलम् तअलम् अन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् कदीर (106) अलम् तअलम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अरज़ि, त मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंवलियिन्-त ला नसीर (107) अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन् कब्लु, व मय्य-य-तबदलिल्-कुफ्र-र बिल्ईमानि फ-कद् जल्-ल सवाअस्सबील (108) वद्-द

कसीरुम् मिन् अहलिल्-किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम्-बअदि ईमानिकुम् कुप्फारन् ह-सदम्-मिन् अिन्दि अन्फुसिहिम् मिम्-बअदि मा तबय्य-न लहुमुल्-हक्कु फअफू वस्फहू हत्ता यअतियल्लाहु बिअमिही, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् कदीर ▲ (109) व अकीमुस्-सला-त व आतुज्जका-त, व मा तुकदिमू लिअन्फुसिकुम् मिन् खैरिन् तजिदूहु अिन्दिल्लाहि,

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوُا الْمَثُوبَةَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّو كَانُوا يَعْلَمُونَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ مَا يُوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمَشْرِكِينَ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ مَا نَسْتَعِزُّ مِنْ آيَةٍ أَوْ نَذِيرٍ هَانَتْ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَقَالُوا كَمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلِ الْمُؤْمِنِينَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ وَكَثِيرٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَدْعُوكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ لَقَالُوا احْسَبْ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ

(इतनी) अक्ल होती! (103) ♦

ऐ ईमान वालो! तुम (लफ़ज़) 'राज़िना' मत कहा करो और 'उन्ज़ुरना' कह दिया करो, और (इसको अच्छी तरह) सुन लीजियो, और (इन) काफ़िरों को (तो) दर्दनाक सज़ा (ही) होगी।¹ (104) ज़रा भी पसन्द नहीं करते काफ़िर लोग, (चाहे) उन अहले किताब में से (हों) और (चाहे) मुशिरकीन में से, इस बात को कि तुमको किसी तरह की बेहतरी (भी) नसीब हो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से, हालाँकि अल्लाह तआला अपनी रहमत (व इनायत) के साथ जिसको मन्ज़ूर होता है मख़सूस फ़रमा लेते हैं, और अल्लाह तआला बड़े फज़ल (करने) वाले हैं।² (105) हम किसी आयत का हुक्म जो मौकूफ़ "यानी रोक देते और मुलतवी" कर देते हैं, या उस आयत (ही) को (ज़ेहनों से) भुला देते हैं, तो हम उस आयत से बेहतर या उस आयत ही की मिसल ले आते हैं। (ऐ एतिराज़ करने वाले!) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि हक़ तआला हर चीज़ पर कुदरत रखते हैं।³ (106) क्या तुझको यह मालूम नहीं कि हक़ तआला ऐसे हैं कि ख़ास उन्ही की है हुक्मूत आसमानों की और ज़मीन की, और (यह भी समझ रखो कि) तुम्हारा हक़ तआला के सिवा कोई यार व मददगार भी नहीं। (107) हाँ क्या तुम यह चाहते हो कि अपने रसूल से (बेजा-बेजा) दरख्वास्तें करो, जैसा कि इससे पहले मूसा (अलैहिस्सलाम) से भी (ऐसी-ऐसी) दरख्वास्तें की जा चुकी हैं, और जो शख्स बजाय ईमान लाने के कुफ़्र (की बातें) करे, बेशक वह शख्स सीधे रास्ते से दूर जा पड़ा। (108) इन अहले किताब (यानी यहूद) में से बहुत-से दिल से यह चाहते हैं कि तुमको तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर कर डालें, सिर्फ़ हसद की वजह से जो कि खुद उनके दिलों ही से (जोश मारता) है हक़ वाज़ेह होने के बाद। ख़ैर (अब तो) माफ़ करो और दरगुज़र करो, जब तक हक़ तआला (इस मामले के मुताल्लिक) अपना हुक्म (नया क़ानून) भेजे,⁴ अल्लाह तआला हर चीज़ पर कादिर हैं। ▲ (109) और (फ़िलहाल सिर्फ़) नमाज़ें पाबन्दी से पढ़े जाओ और ज़कात दिए जाओ, और जो नेक काम भी अपनी भलाई के वास्ते जमा करते रहोगे हक़ तआला के पास (पहुँचकर) उसको पा लोगे, क्योंकि अल्लाह तआला तुम्हारे सब किए हुए कामों को देखभाल रहे हैं।⁵ (110) और (यहूदी और ईसाई यूँ) कहते हैं कि जन्नत में हरगिज़ कोई न जाने पाएगा सिवाय उन लोगों के जो यहूदी हों या उन लोगों के जो ईसाई हों, यह (ख़ाली) दिल बहलाने की बातें हैं। आप कहिए कि (अच्छा) अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे

1. कुछ यहूदियों ने एक शरारत ईजाद की कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुज़ूर में आकर "राज़िना" से आपको ख़िताब करते, जिसके मायने उनकी इबरानी ज़बान में बुरे हैं। और वे उसी नीयत से कहते, और अरबी में इसके मायने बहुत अच्छे हैं। और उस अच्छे मायने के इरादे से बाज़े मुसलमान भी हुज़ूर को इस कलमे से ख़िताब करने लगे। इससे उन शरीरों को और गुन्जाइश मिली, हक़ तआला ने उस गुन्जाइश को ख़त्म करने के लिए मुसलमानों को यह हुक्म दिया।
2. बाज़े यहूद बाज़ मुसलमानों से कहने लगे कि जुदा की कसम! हम दिल से तुम्हारा भला चाहने वाले हैं, मगर तुम्हारा दीन हमारे दीन से अच्छा साबित नहीं हुआ। हक़ तआला इस भला चाहने के दावे का झूठा होना इस आयत में बयान फरमाते हैं।
3. यहूद ने क़िबला का हुक्म बदल जाने पर जिसका ज़िक्र आगे जल्द ही आता है, एतिराज़ किया था और मुशिरकीन भी बाज़े हुक्मों के मन्सूख़ हो जाने पर ज़बान-दराज़ी करते थे, हक़ तआला उस ताना मारने और एतिराज़ करने का इस आयत में जवाब देते हैं।
4. इशारे के तौर पर बतला दिया कि उनकी शरारतों का इलाज आम अमन के इन्ज़ामी क़ानून यानी क़िताल व ज़िज़्या (मुस्लिम हुक्मूत में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिमों से उनकी जान-माल की हिफ़ाज़त के बदले में लिया जाने वाला टैक्स) से हम जल्दी ही करने वाले हैं।
5. उस वक़्त मौजूदा हालत का तकाज़ा यही था। फिर हक़ तआला ने इस वायदे को पूरा फरमा दिया और जिहाद की आयतें नाज़िल फरमा दीं।

इन्नल्ला-ह बिमा तअमलू-न बसीर (110) व कालू लंय्यदखुलल् जन्न-त इल्ला मन् का-न
हूदन् औ नसारा, तिल्-क अमानिय्युहुम, कुल् हातू बुरहानकुम् इन् कुन्तुम् सादिकीन (111)
बला, मन् अस्ल-म वज्हुहू लिल्लाहि व हु-व मुहसिनुन् फ-लहू अज्हुहू अिन्-द रब्बिही व ला
खौफुन् अलैहिम व ला हुम् यहज़नून (112) ❖

व कालतिल् यहूदु लैसतिन्नसारा
अला शैइव्-व कालतिन्नसारा लैसतिल्
यहूदु अला शैइव्-व हुम् यतूलून्-
किता-ब, कज़ालि-क कालल्लज़ी-न ला
यअलमू-न मिस-ल कौलिहिम् फल्लाहु
यहकुमु बैनहुम् यौमल्-कियामति फीमा
कानू फीहि यख़्तलिफून (113) व मन्
अज़्लमु मिम्मम्-म-न-अ मसाजिदल्लाहि
अंय्युज़्क-र फीहस्मुहू व सअा फी
ख़ाराबिहा, उलाइ-क मा का-न लहुम्
अंय्यदखुलूहा इल्ला ख़ा-इफी-न, लहुम्
फिद्दुन्या ख़िज़युंव्-व लहुम् फिल्-
आख़िरति अज़ाबुन् अज़ीम (114) व
लिल्लाहिल् मशिरकु वल्-मशिरबु
फ-अैनमा तुवल्लू फ-सम्-म वज्हुल्लाहि,
इन्नल्ला-ह वासिअुन् अलीम (115) व

الْأَمَنُ كَانَ مُؤَدًّا أَنْ تَصْرِي بِتِلْكَ آيَاتِهِمْ قُلْ مَا تَأْتِيهِمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَ
قَالَتِ النَّصْرَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ
الْكِتَابَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللَّهُ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُنَازِلُ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَ
مَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ
وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهِمْ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا
الْأَخَافِينَ هَٰ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَأَيْنَمَا تُولَٰؤْا فَتَمُوجُهُ
اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ
بَلْ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَدَيْهِ قَائِمُونَ ۝ بَدِيعُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَٰذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا
آيَةٌ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ

منك

कालुत्त-खज़ल्लाहु व-लदन् सुब्हानहू, बल्-लहू मा फिस्समावाति वल्अर्जि, कुल्लुल्लहू कानितून
(116) बदीअुस्समावाति वल्अर्जि, व इज़ा कज़ा अमूरन् फ-इन्नमा यकूलु लहू कुन्
फ-यकून (117) व कालल्लज़ी-न ला यअलमू-न लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअतीना
आयतुन्, कज़ालि-क कालल्लज़ी-न मिन् कब्लिहिम् मिस-ल कौलिहिम्, तशाब-हत् कुलूबुहुम,
कद् बय्यन्नल्-आयाति लिकौमिय्यूकिनून (118) इन्ना अरसल्ला-क बिल्हक्कि बशीरव्-

हो। (111) ज़रूर (दूसरे लोग भी जाएँगे) जो कोई शख्स भी अपना रुख अल्लाह तआला की तरफ झुका दे और वह मुख़्तलस भी हो तो ऐसे शख्स को उसका अज़्र मिलता है उसके परवर्दिगार के पास पहुँचकर, और न ऐसे लोगों पर (क़ियामत में) कोई अन्देशा है और न ऐसे लोग (उस दिन) गुमगीन होने वाले हैं।¹ (112) ♦

और यहूद कहने लगे कि ईसाइयों का मज़हब किसी बुनियाद पर कायम नहीं और (इसी तरह) ईसाई कहने लगे कि यहूद किसी बुनियाद पर नहीं, हालाँकि ये सब (लोग आसमानी) किताबें (भी) पढ़ते हैं। इसी तरह ये लोग (भी) जो कि (महज़) बेइल्म हैं उनके जैसे बात कहने लगे। सो अल्लाह उन सबके दरमियान (अमली) फैसला कर देगे क़ियामत के दिन, उन तमाम (मुकद्दमों) में जिनमें वे आपस में इख़िलाफ़ कर रहे थे।² (113) और उस शख्स से ज़्यादा और कौन ज़ालिम होगा जो खुदा तआला की मस्जिदों में उनका ज़िक्र (और इबादत) किए जाने से बन्दिश करे, और उनके वीरान (व बेकार) होने (के बारे) में कोशिश करे, उन लोगों को तो कभी निडर होकर उनमें क़दम भी न रखना चाहिए था (बल्कि जब जाते डर और अदब से जाते)। उन लोगों को दुनिया में भी रुस्वाई (नसीब) होगी और उनको आखिरत में भी बड़ी सज़ा होगी।³ (114) और अल्लाह ही की ममलूक हैं (सब सन्तों) मशिरक़ भी और मग़रिब भी, पस तुम लोग जिस तरफ़ मुँह करो (उधर ही) अल्लाह तआला का रुख़ है, क्योंकि अल्लाह तआला (तमाम सन्तों को) घेरे हुए हैं, कामिल इल्म वाले हैं।⁴ (115) और ये लोग कहते हैं कि खुदा तआला औलाद रखता है। सुब्हानल्लाह! (क्या बेकार बात है) बल्कि ख़ास अल्लाह तआला की ममलूक हैं जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में (मौजूद चीज़ें) हैं, (और) सब उनके महकूम (भी) हैं। (116) (हक़ तआला) बनाने वाले हैं आसमानों और ज़मीन के। और जब किसी काम को पूरा करना चाहते हैं तो बस उस काम के बारे में (इतना) फ़रमा देते हैं कि हो जा, पस वह (उसी तरह) हो जाता है।⁵ (117) और (बाज़े) जाहिल यूँ कहते हैं कि (खुद) हमसे क्यों नहीं कलाम फ़रमाते अल्लाह तआला, या हमारे पास कोई और ही दलील आ जाए।⁶ इसी तरह वे (जाहिल) लोग भी कहते चले आए हैं जो इनसे पहले हो गुज़रे हैं, उन्हीं के जैसा (जाहिलाना) कौल, उन सबके दिल (टेढ़ी समझ रखने में) आपस में एक दूसरे के जैसे हैं, हमने तो बहुत-सी दलीलें साफ़-साफ़ बयान कर दी हैं, (मगर वे) उन लोगों के लिए (फ़ायदेमन्द हैं) जो यकीन (हासिल करना) चाहते हैं। (118) हमने आपको एक सच्चा दीन देकर भेजा है कि

1. दलील का हासिल यह हुआ कि जब यह क़ानून मुसल्लम है तो अब सिर्फ़ यह देख लो कि यह मज़मून किस पर फ़िट बैठता है। सो जाहिर है कि किसी पहले हुक्म के मन्सूख़ हो जाने के बाद उसपर चलने वाला किसी तरह फ़रमाँबर्दार नहीं कहा जा सकता। पस यहूदी और ईसाई किसी तरह फ़रमाँबर्दार न हुए।
2. अमली फैसला यह कि अहले हक़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में भेज देंगे। और यह कैद इसलिए लगाई कि कौल से और दलील के ज़रिए फैसला तो हक़ व बातिल के दरमियान अक्ली और नक्ली दलीलों से दुनिया में भी हो चुका है।
3. मस्जिदों में मक्का की मस्जिद, मदीना की मस्जिद, बैतुल मक्दिदस की मस्जिद और सब मस्जिदें आ गई।
4. यहूद ने किब्ला के बदलने के हुक्म पर एतिराज़ किया था, उसका जवाब हक़ तआला यह देते हैं कि सब सन्तें अल्लाह तआला की मिल्क में हैं। जब वह मालिक हैं तो जिस सन्त को चाहें किब्ला मुक़र्रर कर दें।
5. 'कुन' कहने में दो एहतिमाल हैं, एक यह कि मुराद हो जल्दी हो जाने और जल्दी बना देने से, दूसरे यह कि हकीकत में हक़ तआला की यही आदत हो।
6. यहूद व नसारा (ईसाइयों) को बावजूद अहले किताब व अहले इल्म होने के जाहिल इसलिए कह दिया गया कि यह बात जाहिलों जैसी कही थी कि बावजूद मज़बूत, कतई और बहुत-सी दलीलों के कायम हो चुकने के अभी तक इनकार किए जाते हैं।

व नजीरंव-व ला तुसअलु अन् अस्थाबिल् जहीम (119) व लन् तरजा अन्कल्-यहूदु व लन्-नसारा हत्ता तत्तबि-अ मिल्ल-तहुम, कुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्-हुदा, व ल-इनित्त-बअ-त अह्वा-अहुम् बअदल्लजी जाअ-क मिनल्-अलिम मा ल-क मिनल्लाहि मिन्वलिथियंव-व ला नसीर (120) अल्लजी-न आतैनाहुमुल्-किता-बं यतलूनहू हक्-क तिलावतिही, उलाइ-क युअमिन्-न बिही, व मय्यक्फूर् बिही फ-उलाइ-क हुमुल्-खासिरून (121) ♦

या बनी इस्राईलज्कुरु निअमति-
-यल्लती अन्अमत्तु अलैकुम् व अन्नी
फज्जल्लुकुम् अलल् आलमीन (122)

वत्तकू यौमल्ला-तज्जी नफ्सुन् अन्-
नफ्सिन् शैअंव-व ला युक्बलु मिन्हा
अदलुंव-व ला तन्फअुहा शफाअतुंव-व
ला हुम् युन्सरून (123) व इजिबल्ला
इब्राही-म रब्बुहू बि-कलिमातिन् फ-
अ-तम्म-हुन्-न, का-ल इन्नी जाअिलु-क
लिन्नासि इमामन्, का-ल व मिन्
जुर्रियती, का-ल ला यनालु अहदिज्-

जालिमीन (124) व इज् जअल्लल्बै-त मसा-बतल् लिन्नासि व अमूनन्, वत्तखिज्ज
मिम्-मकामि इब्राही-म मुसल्लन्, व अहिद्ना इला इब्राही-म व इसमाअी-ल अन् तहिरा
बैति-य लिता-इफी-न वल्-आकिफी-न वर्रक्कअिस्सुजूद (125) व इज् का-ल इब्राहीमु
रब्बिज्जअल् हाजा ब-लदन् आमिनंव्वर्रजुक् अहलहू मिनस्स-मराति मन् आम-न मिन्हुम्

قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ
بِكُتُبٍ وَإِنذِيرًا ۖ وَلَا تَسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ۚ وَلَنْ
تَرْضَى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَتَّبِعَهُمْ ۚ قُلْ
إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ بَعْدَ
الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ظَالِمُونَ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ
آمَنُوا أَتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَةٍ أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ
بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ ۚ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۚ يَبْقَىٰ
إِسْرَءِيلُ ۚ أَذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ ۚ وَأَنِّي
فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ وَأَتَقُوا أَيَّامَنَا لَعَنَ نَفْسٌ عَنْ
نَفْسٍ شَيْئًا ۚ فَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ ۚ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۚ وَإِذْ
أَبْرَاهِيمُ رَبَّهُ يَخْلِبُ ۚ فَانْتَبَهْنِ ۚ قَالَ إِنِّي جَاءُكَ لِلنَّاسِ
إِمَامًا ۚ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۚ قَالَ لَا يَنْتَهِ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ۚ
وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ۚ وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ
إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۚ وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا
بَيْتَنَا لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ۚ وَإِذْ قَالَ
إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آمِنًا ۚ وَارْزُقْ أَهْلَكَ مِنَ الثَّمَرِ ۚ

مَثَل

खुशख़बरी सुनाते रहिए और डराते रहिए, और आपसे दोज़ख़ में जाने वालों की पूछ-ताछ न होगी! (119) और कभी खुश न होंगे आपसे यहूद और न ईसाई जब तक कि आप (खुदा न करे) उनके मज़हब के (बिल्कुल) पैरवी करने वाले न हो जाएँ। (आप साफ़) कह दीजिए कि (भाई) हकीकत में तो हिदायत का वही रास्ता है जिसको खुदा तआला ने बतलाया है, और अगर आप इत्तिबा करने लेंगे उनके ग़लत ख़्यालात का (अल्लाह की वद्व से साबित कतई) इल्म के आ चुकने के बाद तो आपका कोई खुदा से बचाने वाला न यार निकले न मददगार। (120) जिन लोगों को हमने किताब (तौरात व इन्ज़ील) दी, शर्त यह है कि वे उसकी तिलावत (उस तरह) करते रहे जिस तरह कि तिलावत का हक़ है। ऐसे लोग उसपर ईमान ले आते हैं, और जो शख्स न मानेगा (किसका नुक़सान करेगा) खुद ही ऐसे लोग घाटे में रहेंगे। (121) ♦

ऐ याक़ूब की औलाद! मेरी उन नेमतों को याद करो जिनका मैंने तुमपर (वक़्त-वक़्त पर) इनाम किया, और इसको (भी) कि मैंने तुमको बहुत-से लोगों पर फ़ौकियत “यानी रुतबा और बढ़ाई” दी। (122) और तुम डरो ऐसे दिन से जिसमें कोई शख्स किसी शख्स की तरफ़ से न कोई मुतालबा (वाजिब हक़) अदा करने पाएगा और न किसी की तरफ़ से कोई मुआवज़ा कबूल किया जाएगा, और न किसी को कोई सिफ़ारिश (जबकि ईमान न हो) मुफ़ीद होगी, और न उन लोगों को कोई बचा सकेगा। (123) और जिस वक़्त इम्तिहान किया (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का उनके परवर्दिगार ने चन्द बातों में, और वह उनको पूरे तौर से बजा लाए, (उस वक़्त) हक़ तआला ने (उनसे) फ़रमाया कि मैं तुमको लोगों का मुक़्तदा “यानी रहनुमा और ऐसा शख्स जिसकी पैरवी की जाए” बनाऊँगा। उन्होंने अर्ज किया: और मेरी औलाद में से भी किसी-किसी को (नुबुव्वत दीजिए) इश्राद हुआ कि मेरा (यह नुबुव्वत का) औहदा ख़िलाफ़-वर्ज़ी करने वालों को न मिलेगा। (124) और (वह वक़्त भी ज़िक्र करने के काबिल है) जिस वक़्त हमने काबा शरीफ़ को लोगों के इबादत की जगह और अमन (की जगह) मुक़र्रर किया¹ और मक़ामे इब्राहीम को (कभी-कभी) नमाज़ पढ़ने की जगह बना लिया करो² और हमने (हज़रत) इब्राहीम और (हज़रत) इसमाईल (अलैहिमस्सलाम) की तरफ़ हुक्म भेजा कि मेरे (इस) घर को ख़ूब पाक-साफ़ रखा करो, बाहर से आने वालों और मक़ामी लोगों (की इबादत) के वास्ते, और रुकू और सज्दे करने वालों के वास्ते। (125) और जिस वक़्त इब्राहीम

1. यहाँ तक यहूद की चालीस क़बाहते “यानी ख़राबियाँ और बुराइयाँ” जिनमें से कुछ में ईसाई भी शरीक हैं, बयान फ़रमाई गई। आगे यह बतलाना मक़सूद है कि ऐसे हठ-धर्म लोगों से ईमान की उम्मीद न रखनी चाहिए। और इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुम व फ़िक्र को दूर करना है, कि आप उनके आ़म तौर पर ईमान लाने से मायूस हो जाइए और परेशानी और कुल्फ़त दिल से दूर कीजिए। और इसके अलावा आगे उनकी एक और बुराई का भी बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करने की तो उनको क्या तौफ़ीक़ होती वे तो यहाँ तक सोचते हैं कि ‘अल्लाह की पनाह’ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी राह पर चलाने की नामुम्किन फ़िक्र में हैं।

2. अमन का मक़ाम दो वजह से फ़रमाया, एक तो यह कि इसमें हज व उमर: और नमाज़ व तवाफ़ करने से दोज़ख़ के अज़ाब से अमन होता है, दूसरे इस वजह से कि अगर कोई ख़ूनी काबा की हदों में जिसको “हरम” कहते हैं, जा घुसे तो वहाँ उसे मौत की सज़ा न देगे।

3. मक़ामे इब्राहीम एक ख़ास पत्थर का नाम है जिसपर खड़े होकर आपने काबा की इमारत बनाई। वह काबा के पास एक महफूज़ जगह रखा है और वहाँ नफ़िलें पढ़ना सवाब है।

बिल्लाहि वल्पोमिल्-आखिरि, का-ल व मन् क-फ-र फ-उमत्तिअुहू कलीलन् सुम्-म अज्तरुहू
इला अजाबिन्नारि, व बिअस्ल्-मसीर (126) व इज् यरफअु इब्राहीमुल् क्वाअि-द मिनल्-
बैति व इस्माअीलु, रब्बना त-कब्बल् मिन्ना, इन्न-क अन्तस्समीअुल्- अलीम (127)

रब्बना वज्अल्ना मुस्लिमैनि ल-क व
मिन् जुर्रिय्यतिना उम्म-तम् मुस्लि-मतल्
ल-क व अरिना मनासि-कना व तुब्
अलैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्- रहीम
(128) रब्बना वब्अस् फीहिम् रसूलम्-
मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयाति-क व
युअल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्-हिक्म-त
व युजक्कीहिम, इन्न-क अन्तल्
अजीजुल्-हकीम (129) ❖

व मय्यरगबु अम्-मिल्लति इब्राही-म
इल्ला मन् सफि-ह नफ्सहू, व
ल-कदिस्तफै नाहु फिद्दुन्या व इन्नहू
फिल्-आखिरति लमिनस्सालिहीन (130)
इज् का-ल लहू रब्बुहू असलिम् का-ल
अस्लम्तु लि-रब्बिल् आलमीन (131) व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ्कूबु, या
बनिय्-य इन्नल्लाहस्तफा लकुमुद्दी-न फला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम्-मुस्लिमून (132) अम्
कुन्तुम् शु-हदा-अ इज् ह-ज-र यअ्कूबल्-मौतु इज् का-ल लि-बनीहि मा तअ्बुदू-न
मिम्-बअ्दी, कालू नअ्बुदु इलाह-क व इला-ह आबाइ-क इब्राही-म व इस्माअी-ल व
इस्हा-क इलाहव्-वाहिदव्-व नहनु लहू मुस्लिमून (133) तिल्-क उम्मतुन् कद् खलत् लहा

۱۹
مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمِتُمْ
فَإِنْ لَمْ تُضِطُّوا إِلَى عَذَابِ الْكَارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝
وَإِذْ يُفَعِّلُهُمْ أَنْوَاعُ الْقَوَاعِدِ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ
مِنَّا إِنَّاكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمِينَ لَكَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَإِنَّا مَنَّاسِكُنَا وَتُبْ
عَلَيْنَا إِنَّاكَ أَنْتَ الثَّوَابُ الرَّحِيمُ ۝ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ
رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَمَنْ يَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ
إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا
وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَكَانَ الصَّالِحِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ
قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَوَضَى بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ
وَيَعْقُوبُ يُبْنِي إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ
إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ
الْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ
إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَٰهًا
وَاحِدًا وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ بَلَاكُ أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا

مَثَلُ

(अलैहिस्सलाम) ने (दुआ में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! इसको एक (आबाद) शहर बना दीजिए¹ अमन (व अमान) वाला, और इसके बसने वालों को फलों से भी इनायत कीजिए, उनको (कहता हूँ) जो कि उनमें से अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर ईमान रखते हों।² हक़ तआला ने इर्शाद फरमाया और उस शख्स को भी जो कि काफिर रहे, सो ऐसे शख्स को थोड़े दिन तो ख़ूब आराम बरताऊँगा फिर उसे खींचते हुए दोज़ख के अज़ाब में पहुँचाऊँगा, और वह पहुँचने की जगह तो बहुत बुरी है। (126) और जबकि उठा रहे थे इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) खाना-काबा की दीवारें और इसमाईल भी,³ (और यह कहते जाते थे) ऐ हमारे परवर्दिगार! (यह ख़िदमत) हमसे कबूल फरमाइए बिला शुब्हा आप ख़ूब सुनने वाले जानने वाले हैं। (127) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको अपना और ज़्यादा फरमाँबर्दार बना लीजिए और हमारी औलाद में से भी एक ऐसी जमाअत (पैदा) कीजिए जो आपकी इताअत करने वाली हो, और (तथा) हमको हमारे हज (वगैरह) के अहक़ाम भी बतला दीजिए और हमारे हाल पर तवज्जोह रखिए, (और) हकीकत में आप ही हैं तवज्जोह फरमाने वाले, मेहरबानी करने वाले। (128) ऐ हमारे परवर्दिगार! और उस जमाअत के अन्दर उन्हीं में से एक ऐसे पैगम्बर भी मुकर्रर कीजिए जो उन लोगों को आपकी आयतें पढ़-पढ़कर सुनाया करें, और उनको (आसमानी) किताब की और अक्ल व समझ की तालीम दिया करें और उनको पाक कर दें। बेशक आप ही हैं ग़ालिब कुदरत वाले, कामिल इन्तिज़ाम वाले।⁴ (129) ♦

और मिलते इब्राहीमी से तो वही मुँह फेरेंगे जो अपनी ज़ात ही से अहमक हो, और हमने उन (इब्राहीम अलै.) को दुनिया में चुना और (इसी की बदौलत) वह आख़िरत में बड़े लायक लोगों में शुमार किए जाते हैं। (130) जबकि उनसे उनके परवर्दिगार ने फरमाया कि तुम इताअत इख़्तियार करो, उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने इताअत इख़्तियार की रब्बुल-आलमीन की। (131) और इसी का हुक्म कर गए हैं इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अपने बेटों को और (इसी तरह) याकूब (अलैहिस्सलाम) भी, मेरे बेटो! अल्लाह ने इस दीन (इस्लाम) को तुम्हारे लिए मुन्तख़ब फरमाया है, सो तुम सिवाय इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना। (132) क्या तुम खुद (उस वक़्त) मौजूद थे जिस वक़्त याकूब (अलैहिस्सलाम) का आख़िरी वक़्त आया, (और) जिस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि तुम लोग मेरे (मरने के) बाद किस चीज़ की परस्तिश “यानी पूजा और इबादत” करोगे। उन्होंने (मुत्तफ़िक़ होकर) जवाब दिया कि हम उसकी इबादत करेंगे जिसकी आप और आपके बुजुर्ग (हज़रात) इब्राहीम व इसमाईल व इसहाक़ इबादत करते आए हैं, यानी वही माबूद जो अकेला है जिसका कोई शरीक नहीं है, और हम उसी की इताअत पर (कायम) रहेंगे। (133) यह (उन बुजुर्गों की) एक जमाअत थी जो गुज़र चुकी, उनके काम उनका किया हुआ आयेगा

1. शहर होने की दुआ इस वास्ते की थी कि उस वक़्त यह जगह बिल्कुल जंगल थी, फिर अल्लाह तआला ने उसको शहर कर दिया।
2. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो काफ़िरों के लिए रिज़्क की दुआ नहीं माँगी, ग़ालिबन् इसकी वजह यह हुई कि पहली दुआ के जवाब में हक़ तआला ने ज़ालिमों को एक नेमत की सलाहियत से ख़ारिज फरमा दिया था, इसलिए अदब की वजह से इस दुआ में उनको शामिल नहीं किया कि कहीं अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ़ हो।
3. हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का शरीक होना दो तरह हो सकता है, या तो पत्थर-गारा देते होंगे या किसी वक़्त चुनाई भी करते होंगे।
4. जिस जमाअत का इस आयत में ज़िक्र है वे सिर्फ़ इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद हैं, जिनमें जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भेजे गए। क्योंकि यह दुआ दोनों हज़रात ने की है, तो वही जमाअत मुराद हो सकती है जो दोनों की औलाद हो, और पैगम्बर के ज़िक्र में कहा गया है कि वे इस जमाअत से हों तो वह जमाअत इसमाईल की औलाद हुई और पैगम्बर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुए जो कि इसमाईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। इसी लिए सही हदीस में नबी करीम का इर्शाद है कि मैं अपने बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ का जुहर हूँ।

मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अम्मा कानू यअमलून (134) व कालू कून् हूदन् औ नसारा तह्त्तद्, कुल् बल् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफन्, व मा का-न मिनल्-मुशिरकीन (135) कूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्जि-ल इलैना व मा उन्जि-ल इला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क व यअकू-ब वल्-अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अीसा व मा ऊतियन्नबिय्यू-न

मिररब्बिहिम् ला नुफरिर्कु बै-न अ-हदिम्-मिन्दुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून (136)

फ-इन् आमनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ-कदिह्त्तदौ व इन् तवल्लौ फ-इन्नमा हुम् फी शिकाकिन्

फ-सयक्फी-कहुमुल्लाहु व हुवस्समीअुल् अलीम (137) सिब्गत्ल्लाहि व मन् अह्सनु मिनल्लाहि सिब्ग-तंव-व नहनु लहू आबिदून (138) कुल्

अतुहाज्जू-नना फिल्लाहि व हु-व रब्बुना व रब्बुकुम् व लना अअमालुना व लकुम् अअमालुकुम् व नहनु लहू मुखिलसून (139) अम् तकूलू-न इन्-न इब्राही-म

व इस्माअी-ल व इस्हा-क व यअकू-ब

वल्-अस्बा-त कानू हूदन् औ नसारा, कुल् अ-अन्तुम् अअलमु अमिल्लाहु, व मन् अज्लमु मिम्मन् क-त-म शहा-दतन् अिन्दहू मिनल्लाहि, व मल्लाहु बिगाफिलिन् अम्मा तअमलून (140) तिल्-क उम्मतुन् कद् खलत् लहा मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अम्मा कानू यअमलून (141) ♦

كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَنْهَا أَنْتُمْ يَعْمَلُونَ ﴿١٣٤﴾
 قَالُوا كُنُوا مُّودَّةً أَوْ نَصْرَى تَهْتَدُ الْقُلُوبُ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ
 حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾ قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا
 أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
 وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَى وَعِيسَى وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ
 رَبِّهِمْ لَا نُفْرِقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾
 فَإِنْ أَنْتُمْ بَوِشْتُمْ مَا مُّوَدَّتُمْ بِهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا
 هُمْ فِي شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣٧﴾
 صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً وَنَحْنُ لَهُ عِبْدُونَ ﴿١٣٨﴾
 قُلِ الْمُؤْمِنُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَ
 لَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُّخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾ أَمْ يَقُولُونَ
 إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ
 كَانُوا هُودًا أَوْ نَصْرَى قُلْ إِنَّا نَعْلَمُ أَمْرَ اللَّهِ وَمَنْ
 أَظْلَمُ مِنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
 عَنِ الْعَمَلُونَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ الَّتِي نَزَّلْنَا بِهَا
 وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَنْهَا أَنْتُمْ يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ आयेगा, और तुमसे उनके किए हुए की पूछ भी तो न होगी। (134) और ये (यहूदी व ईसाई) लोग कहते हैं कि तुम लोग यहूदी हो जाओ या ईसाई हो जाओ, तुम भी राह पर पड़ जाओगे। आप कह दीजिए कि हम तो मिल्लते इब्राहीम (यानी इस्लाम) पर रहेंगे, जिसमें टेढ़ का नाम नहीं, और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) मुशिरक भी न थे।¹ (135) (मुसलमानो!) कह दो कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस (हुक्म) पर जो हमारे पास भेजा गया और उसपर भी जो (हज़रत) इब्राहीम और (हज़रत) इसमाईल और (हज़रत) इसहाक और (हज़रत) याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब की औलाद की तरफ़ भेजा गया, और उस (हुक्म व मोज़िज़े) पर भी जो (हज़रत) ईसा को दिया गया, और उसपर भी जो कुछ और नबियों (अलैहिमुस्सलाम) को दिया गया उनके परवर्दिगार की तरफ़ से, इस कैफ़ियत से कि हम उन (हज़रत) में से किसी एक में भी तफ़रीक़ नहीं करते, और हम तो अल्लाह तआला के फ़रमाँबर्दार हैं।² (136) सो अगर वे भी इसी तरीक़े से ईमान ले आएँ जिस तरीक़े से तुम (मुसलमान) ईमान लाए हो, तब तो वे भी (हक़) रास्ते पर लग जाएँगे, और अगर वे रूग़दानी करें तो वे लोग तो (हमेशा से) मुख़ालफ़त पर कमर बाँधे हुए हैं ही, तो (समझ लो कि) तुम्हारी तरफ़ से जल्द ही निमट लेंगे अल्लाह तआला, और अल्लाह तआला सुनते हैं, (और) जानते हैं। (137) हम (दीन की) उस हालत पर हैं जिसमें (हमको) अल्लाह तआला ने रंग दिया है, और (दूसरा) कौन है जिसके रंग देने की हालत अल्लाह तआला से ज़्यादा अच्छी हो, और (इसी लिए) हम उसी की गुलामी इख़्तियार किए हुए हैं। (138) आप फ़रमा दीजिए कि क्या तुम लोग हमसे (अब भी) हुज्जत किए जाते हो अल्लाह तआला के बारे में, हालाँकि वह हमारा और तुम्हारा (सबका) रब है, और हमको हमारा किया हुआ मिलेगा और तुमको तुम्हारा किया हुआ मिलेगा, और हमने सिर्फ़ हक़ तआला के लिए अपने (दीन) को (शिरक़ वग़ैरह) से ख़ालिस कर रखा है। (139) या कहे जाते हो कि इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक और याकूब और याकूब की औलाद (में जो नबी गुज़रे हैं, ये सब हज़रत) यहूदी या ईसाई थे। (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! कह दीजिए कि तुम ज़्यादा वाकिफ़ हो या हक़ तआला, और ऐसे शख्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो ऐसी गवाही को छुपाए जो उसके पास अल्लाह की जानिब से पहुँची हो, और अल्लाह तुम्हारे किए हुए से बेख़बर नहीं हैं।³ (140) यह (उन बुजुर्गों की) एक जमाअत थी जो गुज़र गई, उनके काम उनका किया हुआ आएगा और तुम्हारे काम तुम्हारा किया हुआ आएगा, और तुमसे उनके किए हुए की पूछ भी तो न होगी।⁴ (141) ♦

1. 'मिल्लते इब्राहीम' एक लक़ब है 'शरीअते मुहम्मदिया' का। सो यह कहना कि हम मिल्लते इब्राहीम पर रहेंगे, या यह कहना कि तुम मिल्लते इब्राहीम की इत्तिबा करो, इसका मतलब यही है कि हम शरीअते मुहम्मदिया पर रहेंगे और तुम शरीअते मुहम्मदिया की इत्तिबा करो।
2. हुक्म में सहीफ़े और किताबें सब दाख़िल हैं। मज़मून का हासिल यह हुआ कि देखो हमारा दीन कैसा इन्साफ़ और हक़ का है कि सब नबियों को मानते हैं, सब किताबों को सच्चा जानते हैं, सबके मोज़िज़ों को हक़ पहचानते हैं। अगरचे ज़्यादातर अहक़ाम के रद्द हो जाने की वजह से दूसरी मुस्तक़िल शरीअत यानी शरीअते मुहम्मदिया पर अमल करते हैं लेकिन इनकार और झुठलाना किसी का नहीं करते।
3. पस जब ये हज़रत यहूद व ईसाई न थे तो तुम दीन के तरीक़े में उनके मुवाफ़िक़ कब हुए? फिर तुम्हारा हक़ पर होना भी साबित न होगा।
4. और जब ख़ाली तज़क़िरा भी न होगा तो उससे तुमको कोई नफ़ा नहीं पहुँच सकता। इससे साबित हुआ कि किसी बुजुर्ग से ख़ाली किसी निस्बत और ताल्लुक़ का होना आख़िरत की नजात के लिए काफ़ी नहीं हो सकता।

दूसरा पारः स-यकूलु

सूरतुल् ब-क-रति (आयत 142 से 252)

स-यकूलुस्सु-फहा-उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अन् किब्लतिहिमुल्लती कानू अलैहा, कुल्
लिल्लाहिल्-मशिरकु वल्मगिरबु, यह्दी
मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तकीम
(142) व कज़ालि-क जअल्नाकुम्
उम्मतंव-व-स-तल्लितकूनू शु-हदा-अ
अलन्-नासि व यकूनरसूलु अलैकुम्
शहीदन्, व मा जअल्लल्-किब्लतल्लती
कुन्-त अलैहा इल्ला लिनअल-म
मंय्यत्ताबिअुरसू-ल मिम्-मंय्यन्कलिबु अला
अकिबैहि, व इन् कानत् ल-कबी-रतन्
इल्ला अलल्लज़ी-न हदल्लाहु, व मा
कानल्लाहु लियुज़ी-अ ईमानकुम्,
इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफुरहीम
(143) कद् नरा तकल्लु-ब वज्हि-क
फिस्समा-इ फ-लनुवल्लियन्न-क किब्लतन्
तरज़ाहा फ-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-
मस्जिदिल्-हरामि, व हैसु मा कुन्तुम्
फ-वल्लू वुजू-हकुम् शत्रह्, व इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ल-यअलमू-न अन्नहुल्- हक्कु
मिर्रिब्बिहिम, व मल्लाहु बिगाफिलिन् अम्मा यअमलून (144) व लइन् अतैतल्लज़ी-न ऊतुल्-
किता-ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबिअू किब्ल-त-क व मा अन्-त बिताबिअिन् किब्ल-तहुम् व
मा बअज़ुहुम् बिताबिअिन् किब्ल-त बअज़िन्, व ल-इनिन्नबअ-त अह्वा-अहुम् मिम्-बअदि
मा जाअ-क मिनल्-अिल्मि इन्न-क इज़ल्- लमिनज़ज़ालिमीन ❖ (145) अल्लज़ी-न

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ عَن قِبَلِهِمُ الْبَقَى
كَانُوا عَلَيْهَا قُلُوبًا يَلُغُوا الشَّرْقَ وَالْمَغْرِبَ يُعَدِّى مَنْ يَشَاءُ
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا
شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۚ وَمَا
جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يَتَّبِعُ الرَّسُولَ
مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى
الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ أُمَّةً إِنْ كَانَ اللَّهُ
بِالنَّاسِ لَرُؤُوفًا رَّحِيمًا ۚ قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ
فَلَنُؤَلِّيكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا أَوْجُهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ وَلِلَّذِينَ آمَنُوا
الْكِتَابَ لِيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۚ
وَلِلَّذِينَ آمَنُوا الْقِبْلَتِ الَّذِينَ آمَنُوا بِكُلِّ آيَةٍ تَأْتِيهِمْ وَأَقْبَلَتْكَ وَمَا
أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتِهِمْ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ وَلَكِن
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِّن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّكَ إِذْ لَنْتَ
الظَّالِمِينَ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْكِتَابِ يَعْرِفُونَ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۚ

مَكَّة

दूसरा पार: स-यकूल

सूर: ब-कर: (आयत 142 से 252)

अब तो (ये) बेवकूफ लोग ज़रूर कहेंगे ही, कि उन (मुसलमानों) को उनके (पहली सप्त वाले) किब्ला से (कि बैतुल मक्दिस था) जिस तरफ पहले मुतवज्जह हुआ करते थे, किस (बात) ने बदल दिया। आप फरमा दीजिए कि सब पूरब और पश्चिम अल्लाह ही की मिल्क हैं।¹ जिसको खुदा ही चाहें (यह) सीधा रास्ता बतला देते हैं।² (142) और हमने तुमको ऐसी ही एक जमाअत बना दी है जो (हर पहलू से) दरमियानी राह पर है, ताकि तुम (मुख़ालिफ़) लोगों के मुकाबले में गवाह हो, और तुम्हारे लिए (अल्लाह के) रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) गवाह हों।³ और जिस (सप्त) किब्ला पर आप रह चुके हैं (यानी बैतुल मक्दिस) वह तो सिर्फ़ इसलिए था कि हमको मालूम हो जाए कि कौन तो (अल्लाह के) रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैरवी इख़्तियार करता है और कौन पीछे को हटता जाता है। और यह (किब्ला का बदलना बेराह और नाफ़रमान लोगों पर) बड़ा भारी है, (हाँ) मगर जिन लोगों को अल्लाह तआला ने हिदायत फरमाई है। और अल्लाह तआला ऐसे नहीं हैं कि तुम्हारे ईमान को जाया (और नाकिस) कर दें, (और) वाकई अल्लाह तआला तो (ऐसे) लोगों पर बहुत ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान हैं।⁴ (143) हम आपके मुँह का (यह) बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं, इसलिए हम आपको उसी किब्ला की तरफ़ मुतवज्जह कर देंगे जिसके लिए आपकी मर्ज़ी है, (लो) फिर अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (काबा) की तरफ़ किया कीजिए, और तुम सब लोग जहाँ कहीं भी मौजूद हो अपने चेहरों को उसी (मस्जिदे हराम) की तरफ़ किया करो, और ये अहले किताब भी यकीनन जानते हैं कि यह (हुक्म) बिल्कुल ठीक है, (और) उनके परवर्दिगार ही की तरफ़ से (है) और अल्लाह तआला उनकी कार्रवाइयों से बेख़बर नहीं हैं।⁵ (144) और अगर आप (इन) अहले किताब के सामने तमाम (दुनिया भर की) दलीलें पेश कर दें जब भी यह (कभी) आपके किब्ला को कबूल न करें, और आप भी उनके किब्ला को कबूल नहीं कर सकते, (फिर मुवाफ़क़त की क्या सूरत) और उनका कोई (फरीक़) भी दूसरे (फरीक़) के किब्ला को कबूल नहीं करता। और अगर आप उनके (उन) नफ़्सानी ख़्यालात को इख़्तियार कर लें (और वे भी) आपके पास इल्म (वह्य) आने के बाद तो यकीनन आप (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) ज़ालिमों में शुमार होने लगें।⁶ (145) जिन लोगों को हमने किताब (तौरात व इन्जील) दी है वे लोग इन (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ऐसा पहचानते हैं जैसा कि अपने बेटों को पहचानते हैं, और बाज़े उनमें से हक़ को इसके बावजूद कि ख़ूब जानते हैं, (मगर) छुपाते हैं।⁷ (146) (हालाँकि) यह हक़ बात अल्लाह की जानिब से (साबित हो

1. खुदा तआला को मालिकाना इख़्तियार है, जिस सप्त (दिशा) को चाहें किब्ला मुकर्रर फरमा दें, किसी को वजह दरियाफ़्त करने का हक़ नहीं।

2. जिस चीज़ को इस मक़ाम पर सीधा रास्ता कहा गया है हकीक़त में सलामती और अमन उसी तरीके में है।

3. यानी तुम एक बड़े मुक़द्दमे में जिसमें एक फरीक़ हज़रते अम्बिया अलैहिमुस्सलाम होंगे और दूसरा फरीक़ उनकी मुख़ालिफ़ कौमें होंगी, उन मुख़ालिफ़ लोगों के मुकाबले में गवाह तजवीज़ हो, और इज़्ज़त पर इज़्ज़त यह है कि तुम्हारे गवाही के काबिल और मोतबर होने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गवाह हों।

4. किब्ला की तब्दीली पर एतिराज़ का हाकिमाना जवाब देकर अब हकीमाना जवाब शुरू होता है जिसमें कई हिक्मतों की तरफ़ इशारा है।

5. इस आयत से बैतुल मक्दिस का मन्सूख़ करना और काबा को किब्ला मुकर्रर करना मन्ज़ूर है। हासिल हिक्मत का यह है कि हमको आपकी खुशी मन्ज़ूर थी और आपकी खुशी काबा के किब्ला मुकर्रर होने में देखी, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 42 पर)

मन्जिल 1

चुकी) है, सो हरगिज़ शक व शुब्हा लाने वालों में शुमार न होना। (147) ♦

और हर शख्स (मज़हब वाले) के वास्ते एक-एक किब्ला रहा है जिसकी तरफ वह (इबादत में) मुँह करता रहा है, सो तुम नेक कामों में दौड़-धूप करो चाहे तुम कहीं होगे (लेकिन) अल्लाह तआला तुम सबको हाज़िर कर देंगे। यकीनन अल्लाह तआला हर मामले पर पूरी कुदरत रखते हैं। (148) और जिस जगह से भी (कहीं सफ़र में) आंफ बाहर जाएँ तो (भी) अपना चेहरा (नमाज़ में) मस्जिदे हराम (यानी काबा) की तरफ रखा कीजिए, और यह (हुक्म आम किब्ला का) बिलकुल हक है (और) अल्लाह की जानिब से (है) और अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों से हरगिज़ बेख़बर नहीं। (149) और (फिर कहा जाता है कि) आप जिस जगह से भी (सफ़र में) बाहर जाएँ अपना चेहरा मस्जिदे हराम की तरफ रखिए और तुम लोग जहाँ कहीं (मौजूद) हो अपना चेहरा उसी की तरफ रखा करो, ताकि (इन मुख़ालिफ़) लोगों को तुम्हारे मुक़ाबले में गुफ़्तगू (की मजाल) न रहे, मगर उनमें जो (बिलकुल ही) बेइन्साफ़ हैं, तो ऐसे लोगों से (हरगिज़) अन्देशा न करो, और मुझसे डरते रहो, और ताकि तुमपर जो (कुछ) मेरा इनाम है मैं उसकी तक्मील कर दूँ, और ताकि (दुनिया में) तुम हक़ रास्ते पर रहो।¹ (150) जिस तरह तुम लोगों में हमने एक (अज़ीमुश्शान) रसूल भेजा, तुम ही में से, जो हमारी आयतें (और अहक़ाम) पढ़-पढ़कर तुमको सुनाते हैं और (जहालत से) तुम्हारी सफ़ाई करते रहते हैं और तुमको (अल्लाह की) किताब और समझ की बातें बतलाते रहते हैं। और तुमको ऐसी (मुफ़ीद) बातें तालीम करते रहते हैं जिनकी तुमको ख़बर भी न थी।² (151) तो (इन नेमतों पर) मुझको याद करो मैं तुमको (इनायत से) याद रखूँगा और मेरी (नेमत की) शुक्र गुज़ारी करो, और मेरी नाशुक्री मत करो। (152) ♦

ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से सहारा हासिल करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ (रहते) हैं। (और नमाज़ पढ़ने वालों के साथ तो और भी ज्यादा)³ (153) और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए जाते हैं उनके बारे में (यूँ भी) मत कहो कि वे (मामूली मुर्दों की तरह) मुर्दे हैं, बल्कि वे तो (एक खास ज़िन्दगी के साथ) ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम (इन हवास से उस ज़िन्दगी का) एहसास नहीं कर सकते।⁴ (154) और (देखो) हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे किसी क़द्र ख़ौफ़ से, और फ़ाके से, और माल और जान और फलों की कमी से, और आप ऐसे सब्र करने वालों को खुशख़बरी सुना दीजिए (155) (जिनकी यह आदत है) कि उनपर जब कोई मुसीबत पड़ती है तो वे

(पृष्ठ 40 का शेष) इसलिए उसी को किब्ला मुक़र्रर कर दिया। रहा यह कि आपकी खुशी इसमें क्यों थी, वजह इसकी यह मालूम होती है कि आपकी नुबुव्वत की निशानियों में से एक निशानी यह भी थी कि आपके किब्ला की यह सन्त होगी। अल्लाह तआला ने आपके नूरानी दिल में उसी के मुवाफ़िक़ तमन्ना पैदा कर दी।

6. आपका ज़ालिम होना मासूम (यानी ख़ता व गुनाहों से महफूज़ होने की वजह से) मुहाल है, इसलिए यह बात कि: आप उनके ख़ालात को जिनमें से एक उनका किब्ला भी है, कबूल कर लें मुहाल है।

7. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहचानने को जो बेटों के पहचानने के मानिन्द बताया है तो तश्बीह यानी मिसाल देने में बेटे के बेटा होने का लिहाज़ नहीं है बल्कि बेटे की सूरत का लिहाज़ किया गया है।

1. किब्ला की बहस के शुरू और आखिर के इत्तिहाद में इशारा है कि काबा का इन नबी की शरीअत में किब्ला मुक़र्रर होना कोई ताज्जुब की बात नहीं, क्योंकि काबा इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तामीर किया हुआ है और यह नबी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं, और इस इमारत के कबूल होने की और इस "बेटे" के रसूल होने की उन्होंने दुआ भी की थी, हमने उनकी दोनों दुआएँ कबूल कर लीं।

2. ऊपर की आयतों में हक़ तआला की बड़ी-बड़ी नेमतों का ज़िक्र था, इसलिए अगली आयत में नेमत देने वाले (यानी अल्लाह पाक) के ज़िक्र और उनकी नेमत के शुक्र का हुक्म फ़रमाकर ज़िक्र की हुई आयतों के मज़मून को उम्दा तरीक़े से मुकम्मल फ़रमाते हैं।

3. जब सब्र में यह वायदा है तो नामज़ जो उससे बढ़कर है उसमें तो और ज्यादा यह खुशख़बरी होगी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 44 पर)

अम्वालि वल्-अन्फुसि वस्स-मराति, व बशिशरिस्साबिरीन (155) अल्लजी-न इज़ा
असाबतुहुम् मुसीबतुन् क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून (156) उलाइ-क
अलैहिम स-लवातुम्-मिररब्बिहिम् व रस्मतुन्, व उलाइ-क हुमुल्-मुह्तदून (157) इन्नस्सफ़ा
वल्मरूव-त मिन् शआ-इरिल्लाहि फ़-मन् हज्जल्बै-त अविअ्त-म-र फ़ला जुना-ह अलैहि

अय्यत्तव्व-फ़ बिहिमा, व मन् त-तव्व-अ
ख़ैरन् फ़-इन्नल्ला-ह शाकिरुन् अलीम
(158) इन्नल्लजी-न यक्तुमू-न मा
अन्ज़ल्ला मिनल् बय्यिनाति वल्हुदा
मिम्-बअदि मा बय्यन्नाहु लिन्नासि
फिल्-किताबि उलाइ-क यल्अनुहुमुल्लाहु
व यल्अनुहुमुल्-लाअिनून (159)

इल्लल्लजी-न ताबू व अस्लहू व बय्यनू
फ़-उलाइ-क अतूबु अलैहिम् व
अ-नत्तव्वाबुरहीम (160) इन्नल्लजी-न
क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़फ़रुन्
उलाइ-क अलैहिम् लअनतुल्लाहि वल्-
मलाइ-कति वन्नासि अज्मअीन (161)
ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युखाफ़फ़ु
अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रुन
(162) व इलाहुकुम् इलाहुव्- वाहिदुन्
ला इला-ह इल्ला हुवरस्मानुरहीम (163) ♦

इन्-न फ़ी ख़ल्किस्समावाति वल्अर्जि वख़ितलाफिल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तजरी
फिल्बह्रि बिमा यन्फ़अुन्ना-स व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल्-
अर्-ज़ बअ-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् व तस्रीफिर्रियाहि वस्सहाबिल्-
मुसख़्ख़ारि बैनस्समा-इ वल्अर्जि लआयातिल् लिक्वौमिन् यअकिलून (164) व मिनन्नासि

بِقَوْلِهِ
۲۳
الْبَقَرَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَلَهُوَ إِلَٰهُنَّ وَرَبُّنَّ ۚ وَأُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ
وَرَحْمَةٌ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۚ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ
مِن شَعَابِرِ اللَّهِ ۖ فَمَن حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرٌ فَإِنَّ اللَّهَ
شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ
وَالْهُدَىٰ مِّن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۚ أُولَٰئِكَ
يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعِينُونَ ۚ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا
وَيَتَّبِعُوا فَأُولَٰئِكَ آتُونَ عَلَيْهِمُ أَثُوبٌ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۚ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ
وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۚ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يَخْفَعُ
عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۚ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ۚ وَلِأَحَدٍ
لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۚ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالْخِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلُوكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ
بِمَائِنَةِ النَّاسِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ
فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَيَّنَّا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ
وَنَصْرُوفٍ الزَّيْجَ وَالتَّحَابِ الْمُسْتَفْرَبِينَ السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ

कहते हैं कि हम तो (मय माल व औलाद हकीकत में) अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं, और हम सब (दुनिया से) अल्लाह तआला के पास जाने वाले हैं। (156) उन लोगों पर (अलग-अलग) खास-खास रहमतें भी उनके रब की तरफ से होंगी, और (सबपर मुश्तरका) आम रहमत भी होगी, और यही लोग हैं जिनकी (असल हकीकत तक) पहुँच हो गई। (157) यह बात तहकीकी है कि सफा और मर्वा अल्लाह (के दीन) की यादगारों में से हैं, इसलिए जो शख्स हज करे (अल्लाह के) घर का, या (उसका) उमरः करे, उसपर ज़रा भी गुनाह नहीं उन दोनों के दरमियान आना-जाना करने में (जिसका नाम “सई” है) और जो शख्स खुशी से कोई ख़ैर की बात करे तो हक़ तआला (उसकी बड़ी) क़दर-दानी करते हैं, (और उसकी नीयत को) ख़ूब जानते हैं। (158) जो लोग छुपाते हैं उन मज़ामीन को जिनको हमने नाज़िल किया है, जो कि (अपनी ज़ात में) वाज़ेह हैं और (दूसरों को) हिदायत देने वाले हैं बाद इसके कि हम उनको (अल्लाह की) किताब (तौरात व इन्जील) में आम लोगों पर ज़ाहिर कर चुके हैं, ऐसे लोगों पर अल्लाह तआला भी लानत फ़रमाते हैं और (दूसरे बहुत-से) लानत करने वाले भी उनपर लानत भेजते हैं। (159) मगर जो लोग तौबा कर लें और सुधार कर लें और (उन मज़ामीन को) ज़ाहिर कर दें तो ऐसे लोगों पर मैं मुतवज्जह हो जाता हूँ, और मेरी तो आदत ही है तौबा कबूल कर लेना और मेहरबानी फ़रमाना। (160) अलबत्ता जो लोग (उनमें से) इस्लाम न लाएँ और इसी ग़ैर-इस्लामी हालत पर मर जाएँ, ऐसे लोगों पर (वह) लानत (जिसका ज़िक्र हुआ) अल्लाह की और फ़रिश्तों की और आदमियों की भी सबकी (161) (ऐसे तौर पर बरसा करेगी कि) वे हमेशा-हमेशा उसी (लानत) में रहेंगे। उनसे अज़ाब हल्का न होने पाएगा और न (दाख़िल होने से पहले) उनको मोहलत दी जाएगी। (162) और (ऐसा माबूद) जो तुम सबके माबूद बनने का मुस्तहिक़ “यानी हक़दार” है, वह तो एक ही (हकीकी) माबूद है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, (वही) रहमान है और रहीम है। (163) ♦

बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने में और जहाज़ों में जो कि समुद्रों में चलते हैं, आदमियों के नफे की चीज़ें (और असबाब) लेकर और (बारिश के) पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से बरसाया, फिर उससे ज़मीन को तरोताज़ा किया उसके सूख जाने के बाद, और हर किस्म के जानदार उसमें फैला दिए, और हवाओं के बदलने में, और बादल में जो ज़मीन व आसमान के दरमियान मुक़ैयद (और लटका हुआ) रहता है, (तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल (सही सलामत) रखते हैं। (164) और एक आदमी वह (भी) है जो खुदा तआला के अलावा औरों को भी (खुदाई में) शरीक़ करार देते हैं, उनसे ऐसी

(पृष्ठ 42 का शेष) 4. ऐसे क़त्ल किए गए शख्स को शहीद कहते हैं, और उसके मुताल्लिक अगरचे यह कहना कि वह मर गया सही और जायज़ है लेकिन उसकी मौत को दूसरे मर्दों के जैसी मौत समझने की मनाही की गई है।

1. यह ख़िताब सारी उम्मत को है, तो सबको समझ लेना चाहिए कि दुनिया मुसीबतों और परेशानियों का घर है, यहाँ के हादसों को अजीब और बर्द न समझना चाहिए।

2. हज, उमरः और सई का तरीका मसाइल की किताबों में बयान किया गया है, और सई इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक सुन्नते मुस्तहिबा है, और इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि व इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक फ़र्ज़ है, और इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक वाजिब है, कि उसके छोड़ने से एक बकरी जिब्ब करनी पड़ती है।

3. इस आयत में हक़ के छुपाने पर जो वर्द (डॉट-डपट और सज़ा की धमकी) ज़िक्र हुई, हर चन्द कि हर हक़ मामले के बारे में लफ़्ज़ों के एतिबार से आम है, लेकिन जुमला “यअरिफून्हु कमा यअरिफून् अब्ना-अहुम्” के करीने से मक़ाम के ख़ास होने के सबब ज़्यादा मक़सूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत का मसला है, पस इस लिहाज़ से इस आयत में रिसालत के मसले को साबित करना हुआ, चूँकि तौहीद व रिसालत का एतिकाद दोनों शरीअत में जुड़े हुए हैं, इसलिए अगली आयत में तौहीद के मसले की तक्रीर फ़रमाई जाती है।

4. अरब के मुश्रिक लोगों ने जो आयत “इलाहुकुम् इलाहुन् वाहिदुन्” (यानी ऐसा माबूद जो तुम सबके माबूद (शेष तफ़सीर पृष्ठ 46 पर)

मंयत्तखिजु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बू-नहुम् कहुब्बिल्लाहि, वल्लजी-न आमनू अशद्दु
हुब्बल्-लिल्लाहि, व लौ यरल्लजी-न ज-लमू इज् यरौनल्-अजा-ब अन्नल्-कुव्व-त लिल्लाहि
जमीअंव-व अन्नल्ला-ह शदीदुल् अजाब (165) इज् त-बरअल्लजीनत्तुबिअू मिनल्लजीनत्-
त-बअू व र-अवुल्-अजा-ब व त-कत्तअत् बिहिमुल् अस्बाब (166) व कालल्लजीनत्त-बअू
लौ अन्-न लना कर्तन् फ-न-तबर-अ
मिन्हुम् कमा तबरअू मिन्ना, कजालि-क
युरीहिमुल्लाहु अज्मालहुम् ह-सरातिन्
अलैहिम्, व मा हुम् बिखारिजी-न
मिनन्नार (167) ♦

या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फिल्-
अर्जि हलालन् तय्यिबंव-वला तत्तबिअू
खुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अदुवुम्-
मुबीन (168) इन्नमा यअ्मुरुकुम्
बिस्सू-इ वल्-फहशा-इ व अन् तक्लू
अलल्लाहि मा ला तअ्लमून (169) व
इजा की-ल लहुमुत्तबिअू मा अन्जलल्लाहु
कालू बल् नत्तबिअू मा अल्फैना अलैहि
आबा-अना, अ-व लौ का-न
आबाअुहुम् ला यअ्किलू-न शैअंव-व ला
यह्त्तदून (170) व म-सलुल्लजी-न

क-फरू क-म-सलिल्लजी यन्जिक्कु बिमा ला यस्मअु इल्ला दुआअंव-व निदाअन्, सुम्मुम्
बुक्मुन् अुम्युन् फहुम् ला यअ्किलून (171) या अय्युहल्लजी-न आमनू कुलू मिन् तय्यिबाति
मा रजक्नाकुम् वश्कुरू लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्बुदून (172) इन्नमा हर-म
अलैकुमुल्-मै-त-त वद्द-म व लह्मल् खिन्जीरि व मा उहिल्-ल बिही लिगैरिल्लाहि

سورة البقرة ٢٢
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَتَّقُونَ ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ
اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ أُمُّوْا أَشَدَّ حُبًّا
لِّلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا ۖ وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ۚ إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ
اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا ۖ وَأَوَّاهُوا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ
الْأَسْبَابُ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنَتَبَرَّأَ
مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّأُوا مِنَّا ۚ كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ
عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُمْ بِمُخْرَجِينَ مِنَ النَّارِ ۚ يَا أَيُّهَا النَّاسُ ۚ كُلُوا
مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ
إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ ۚ وَ
أَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا
مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَفْقَيْنَا عَلَيْهِ ۖ إِنَّا نَآءُ ۚ أَوْ لَوْ
كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَحْتَدُونَ ۚ وَمِثْلَ الَّذِينَ
كَفَرُوا كَمِثْلِ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ بِمَا لَا يَسْمَعُونَ إِلَّا دُعَاءَ وَتَدَا
صَمْرُكُمْ عَنِ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كُلُوا
مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّ لَكُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۚ

مَنْ

मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से (रखना ज़रूरी) है, और जो मोमिन हैं उनको अल्लाह तआला के साथ कवी मुहब्बत है,¹ और क्या खूब होता अगर ये ज़ालिम (मुशिरकीन) जब (दुनिया में) किसी मुसीबत को देखते तो (उसके पेश आने में गौर करके) समझ लिया करते कि सब कुव्वत हक़ तआला ही को है, और यह (समझ लिया करते) कि अल्लाह तआला का अज़ाब (आखिरत में और भी) सख़्त होगा!² (165) जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से साफ़ अलग हो जाएँगे जो उनके कहने पर चलते थे, और सब अज़ाब को देख लेंगे, और आपस में उनमें जो ताल्लुकात थे उस वक़्त सब टूट जाएँगे। (166) और (जब) ये पैरोकार लोग यूँ कहने लगेंगे कि किसी तरह हम सबको ज़रा एक दफ़ा (दुनिया में) जाना मिल जाए तो हम भी उनसे साफ़ अलग हो जाएँ, जैसा कि ये हमसे (इस वक़्त) साफ़ अलग हो बैठे, अल्लाह तआला यूँ ही उनकी बद-आमालियों को ख़ाली अरमान करके उनको दिखला देंगे, और उनको दोज़ख़ से निकलना भी नसीब न होगा!³ (167) ♦

ऐ लोगो! जो चीज़ें ज़मीन में मौजूद हैं उनमें से (शरई) हलाल पाक चीज़ों को खाओ (बरतो) और शैतान के कदम से कदम मिलाकर मत चलो, हकीकत में वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (168) वह तो तुमको उन्हीं बातों की तालीम करेगा जो कि (शरई तौर पर) बुरी और गन्दी हैं, और यह (भी तालीम करेगा) कि अल्लाह तआला के ज़िम्मे वे बातें लगाओ जिसकी तुम सनद भी नहीं रखते। (169) और जब कोई उन (मुशिरक) लोगों से कहता है कि अल्लाह तआला ने जो हुक्म भेजा है उसपर चलो, तो कहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उसी (तरीके) पर चलेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या अगरचे उनके बाप-दादा (दीन की) न कुछ समझ रखते हों और न (किसी आसमानी किताब की) हिदायत रखते हों!⁴ (170) और इन काफ़िरो की कैफ़ियत (ना-समझी में) उस (जानवर की) कैफ़ियत के जैसी है कि एक शख्स है, वह ऐसे (जानवर) के पीछे चिल्ला रहा है जो सिवाय बुलाने और पुकारने के कोई ब्रात नहीं सुनता। (इसी तरह ये कुपफ़ार) बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, इसलिए समझते कुछ नहीं। (171) ऐ ईमान वालो! जो (शरीअत की रू से) पाक चीज़ें हमने तुमको इनायत फ़रमाई हैं, उनमें से (जो चाहो) खाओ (बरतो) और हक़ तआला की शुक्र गुज़ारी करो, अगर तुम ख़ास उनके साथ गुलामी (का ताल्लुक) रखते हो। (172) अल्लाह तआला ने तो तुमपर सिर्फ़ हराम किया है मुर्दार को, और खून को (जो बहता हो) और सुअर के गोश्त को, (इसी

(पृष्ठ 44 का शेष) बनने का हक़दार है, वह तो एक ही हकीकी माबूद है) अपने अक़ीदे के खिलाफ़ सुनी तो ताज्जुब से कहने लगे कि कहीं सारे ज़हान का एक माबूद भी हो सकता है? और अगर यह दावा सही है तो कोई दलील पेश करनी चाहिए। हक़ तआला आगे तौहीद की दलील बयान फ़रमाते हैं।

5. ऊपर की आयतों में तौहीद का सूबूत था, आगे मुशिरकीन की गुलती और वईद (डॉट और धमकी) का बयान फ़रमाते हैं।

1. अगर किसी मुशिरक को यह साबित हो जाए कि मेरे माबूद से मुझपर नुक़सान पड़ेगा तो फ़ौरन मुहब्बत ख़त्म हो जाए, और मोमिन बावजूद इसके कि नफ़े व नुक़सान का पहुँचाने वाला अल्लाह तआला ही को एतिकाद करता है, लेकिन फिर भी मुहब्बत व रिज़ा उसकी बाकी रहती है।

2. और आखिरत के अज़ाब को सख़्त फ़रमाया है। आगे उस सख़्ती की कैफ़ियत का बयान फ़रमाते हैं।

3. इस अज़ाब में कई तरह की सख़्ती साबित हुई, हसरत और आग से निकलना न होने की वजह वगैरह से। ऊपर मुशिरकों के अक़ीदे के बातिल होने का बयान है, आगे मुशिरकों के बाज़ आमाल के बातिल होने का बयान है, जैसे सॉड का अदब व ताज़ीम वगैरह।

4. बाज़ मुशिरकीन बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे और उनसे फ़ायदा उठाने को, उनकी ताज़ीम के एतिकाद की वजह से हराम समझते थे। और अपने इस फ़ैल को हुक्मे इलाही और अल्लाह तआला की रिज़ा का सबब और उन बुतों की सिफ़ारिश के वास्ते से अल्लाह तआला के कुर्ब का ज़रिया समझते थे, इस आयत में इसकी मनाही की गई है।

फ-मनिज्जुर्-र गै-र बागिंव-व ला आदिन् फला इस्-म अलैहि, इन्नल्ला-ह गफूररहीम
(173) इन्नल्लजी-न यक्तुम्-न मा अन्जलल्लाहु मिनल्-किताबि व यशतरु-न बिही स-मनन्
कलीलन् उलाइ-क मा यअकुलू-न फी बुतूनिहिम् इल्लन्ना-र व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल्-
कियामति व ला युजक्कीहिम व लहुम् अजाबुन् अलीम (174) उला-इकल्लजीनशत-रवुज्-

जलाल-त बिल्हुदा वल्-अजा-ब बिल्-
मगिफ-रति फमा अस्ब-रहुम् अलन्नार
(175) जालि-क बिअन्नल्ला-ह
नज्जलल्-किता-ब बिल्हकिक्, व
इन्नल्लजीनख्त-लफू फिल्-किताबि लफी
शिकाकिम्-बअीद ♦ (176) ♦

लैसलूबिर्-र अन् तुवल्लू वुजू-हकुम्
कि-बलल्-मशूरिकि वल्-मगिरबि व
लाकिन्नल्-बिर्-र मन् आम-न बिल्लाहि
वलयौमिल्-आखारि वल्मलाइ-कति
वल्किताबि वन्नबिय्यी-न व आतल्मा-ल
अला हुब्बिही जविल्कुरबा वलयतामा
वल्मसाकी-न वन्नस्सबीलि वस्सा-इली-न
व फिर्रिकाबि, व अकामस्सला-त व
आतज्जका-त वल्मूफू-न बि-अह्दिहिम

इजा आ-हदू वस्साबिरी-न फिल्-बअसा-इ वज्जरा-इ व हीनल्-बअसि, उलाइ-कल्लजी-न
स-दकू, व उलाइ-क हुमुल्-मुत्तकून (177) या अय्युहल्लजी-न आमनू कुति-ब
अलैकुमुल्-किसासु फिल्कल्ला, अल्हुरु बिल्हुरि वल्अब्दु बिल्अब्दि वल्-उन्सा बिल्-उन्सा,
फ-मन् अुफि-य लहू मिन् अखीहि शैउन् फत्तिबाअुम् बिल्मअरुफि व अदाउन् इलैहि

سورة البقرة ٢٥

اِنَّا نَحْنُ عَلَيْنَا الْبَيْتَةِ وَالْذَّمَّ وَنَحْنُ الْخَيْرُ وَمَا اَهْلُ
بِهِ لِيُغَيِّرَ اللَّهُ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَاوٍ فَلَا اِثْمَ عَلَيْهِ
اِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَا اَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ
الْكِتَابِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ مَا يَأْكُلُوْنَ فِي
بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يَكْلَهُمْ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمْ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوْا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى
وَالْعَذَابُ بِالْغَفْوَةِ فَمَا اَصْبَرُّهُمْ عَلَى النَّارِ ذٰلِكَ بِاَنَّ
اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتَابِ
لَيَنْ شِقَاقِيْ بَعِيْدٌ لَّيْسَ الْبِرُّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قَبْلَ
الشَّمْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّنَّ وَآتٰى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ
ذَوٰى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَالسَّآئِلِيْنَ
وَفِي الرِّقَابِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَآتٰى الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ بِمَهْرِهِمْ
اِذَا عَاهَدُوْا وَالصَّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاسِءِ وَالْفَخْرَةِ وَجِيْنَ الْبَاسِ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِيَاصُ فِي الْقَتْلِ الْحَرْبِ بِالْحَرْبِ وَالْعَبْدُ

مقل

तरह उसके सब अंगों और हिस्सों को भी) और ऐसे जानवर को जो (निकटता हासिल करने के इरादे से) अल्लाह के ग़ैर के लिए नामजद कर दिया गया हो, फिर भी जो शख्स (भूख से बहुत ही) बेताब हो जाए, शर्त यह है कि न तो मजे का तालिब हो और न (ज़रूरत की मात्रा से) आगे बढ़ने वाला हो, तो उस शख्स पर कोई गुनाह नहीं होता, वाकई अल्लाह तआला हैं बड़े बख़्शने वाले, रहम करने वाले।¹ (173) इसमें कोई शुब्हा नहीं कि जो लोग अल्लाह की भेजी हुई किताब (के मज़ामीन) को छुपाते हैं और उसके मुआवज़े में (दुनिया की) मामूली कीमत और फायदा वसूल करते हैं,² ऐसे लोग और कुछ नहीं अपने पेट में आग (के अंगारे) भर रहे हैं, और अल्लाह तआला उनसे न तो क़ियामत में (नरमी और मेहरबानी के साथ) कलाम करेंगे और न (गुनाह माफ़ करके) उनकी सफ़ाई करेंगे, और उनको दर्दनाक सज़ा होगी। (174) ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने (दुनिया में तो) हिदायत छोड़कर गुमराही इख़्तियार की और (आख़िरत में) मग़फ़िरत छोड़कर अज़ाब (सर पर लिया) सो दोज़ख़ के लिए कैसे हिम्मत वाले हैं। (175) ये (सारी ज़िक्र की गई सज़ाएँ उनको) इस वजह से हैं कि अल्लाह ने (उस) किताब को ठीक-ठीक भेजा था। और जो लोग (ऐसी) किताब में बेराही करें वे बड़ी दूर के इख़्तिलाफ़ में होंगे।³ ♦ (176) ♦

(कुछ सारा) कमाल इसी में नहीं (आ गया) कि तुम अपना मुँह पूरब को कर लो या पश्चिम को,⁴ लेकिन (असली) कमाल तो यह है कि कोई शख्स अल्लाह तआला पर यकीन रखे, और क़ियामत के दिन पर, और फ़रिश्तों पर, और (सब आसमानी) किताबों पर, और पैग़म्बरों पर, और माल देता हो अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और (ख़र्च से परेशान) मुसाफ़िरों को और सवाल करने वालों को और गर्दन छुड़ाने में, और नमाज़ की पाबन्दी रखता हो और ज़कात भी अदा करता हो, और जो लोग अपने अहदों को पूरा करने वाले हों जब अहद कर लें, और (वे लोग) मुस्तक़िल रहने वाले हों तंगदस्ती में और बीमारी में और क़िताल में, ये लोग हैं जो सच्चे (कमाल वाले) हैं, और यही लोग हैं जो (सच्चे) मुत्तकी (कहे जा सकते) हैं।⁵ (177) ऐ

1. इस मक़ाम के मुताल्लिक चन्द फ़िक्रही मसाइल हैं। 1: जिस जानवर का ज़िब्ह करना शरअन ज़रूरी हो और वह बिना ज़िब्ह किए हलाक हो जाए वह हराम होता है, और जिस जानवर का ज़िब्ह करना ज़रूरी नहीं है वे दो तरह के हैं: एक टिढ़ी और मछली, दूसरे जंगली जैसे हिरन वगैरह, जबकि उसके ज़िब्ह करने पर ताक़त न हो, तो उसको दूर ही से तीर या और किसी तेज़ हथियार से अगर बिस्मिल्लाह कहकर ज़ख्मी किया जाए तो हलाल हो जाता है, अलबत्ता बन्दूक का शिकार बिना ज़िब्ह किए हलाल नहीं, क्योंकि गोली में धार नहीं होती। 2: खून जो बहता न हो। इससे दो चीज़ें मुराद हैं: ज़िगर और तिल्ली, ये हलाल हैं। 3: ख़िनज़ीर (सुअर) के सब अंग और हिस्से और गोश्त, चर्बी, खाल और पट्टे वगैरह हराम भी हैं और नापाक भी हैं। 4: जिस जानवर को अल्लाह के ग़ैर के लिए नामजद इस नीयत से कर दिया हो कि वे हमसे खुश होंगे और हमारी कार्रवाई कर देंगे, वह हराम हो जाता है, अगरचे ज़िब्ह के वक़्त उसपर अल्लाह तआला का नाम लिया हो।

2. ऊपर महसूस होने वाली हराम चीज़ों का ज़िक्र था, इस आयत में उन हराम चीज़ों का बयान है जिन्हें ज़ाहिरी तौर पर महसूस नहीं किया जा सकता, जो यहूदी आलिमों की आदत थी कि अहक़ाम ग़लत बयान करके अ़वाम से रिश्तत लेते और खाते थे। तथा इसमें तालीम है उम्मेत मुहम्मदिया के आलिमों को कि हमने जो कुछ अहक़ाम बयान किए हैं, किसी नफ़सानी गरज़ और फ़ायदे से उनके बयान व तब्तीग़ में कोताही मत करना।

3. आने वाली आयतों में जो कि सूर: ब-कर: का बाक़ी का आधा हिस्सा है, ज़्यादा मकसूद मुसलमानों को बाज़ बुनियादी और कुछ अमली चीज़ों की तालीम करना है, अगरचे किसी मज़मून के ताबे होकर ग़ैर-मुस्लिमों को कोई ख़िताब हो जाए। और यह मज़मून सूर: के ख़त्म तक चला गया है, जिसको एक मुख़्तसर उन्वान "बिर्" से शुरू किया गया है जो कि तमाम ज़ाहिरी व बातिनी नेकियों को आ़ाम है। और अब्वल आयत में जामे अल्फ़ाज़ से एक तालीम की गई है, आगे इस "बिर्" की तफ़सील चली है, जिसमे बहुत से अहक़ाम वक़्त और जगह की ज़रूरत के मुताबिक़ ज़रूरत के बक़्द बयान फ़रमा कर खुशख़बरी, रहमत और मग़फ़िरत के वायदे पर ख़त्म फ़रमा दिया।

4. ख़ास सन्तों का किस्सा यहाँ इसलिए बयान हुआ है कि किस्सा की तब्दीली के वक़्त पूरी की पूरी बहस यहूद व नसारा की इसी में रह गई थी, इसलिए ख़बरदार फ़रमाया कि इससे बढ़कर और काम हैं उनकी पाबन्दी और एहतिमाम करो।

5. गरज़ यह कि दीन के असली मक़ासिद और कमालात ये हैं, नमाज़ में किसी सन्त को मुँह करना इन्हें (शेष तफ़सीर पृष्ठ 50 पर)

बि-इहसानिन्, जालि-क तख्फ़ीफ़ुम्-मिरब्बिकुम् व रहमतुन्, फ-मनिअतदा बअ-द जालि-क
फ-लहू अज़ाबुन् अलीम (178) व लकुम् फिल्लिसासि हयातुंय्या उलिल्-अल्बाबि लअल्लकुम्
तत्तकून् (179) कुति-ब अलैकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु इन् त-र-क खै-रनिल्-
वसिय्यतु लिल्वालिदैनि वल्-अकरबी-न बिल्मअरुफ़ि हक्कन् अलल्-मुत्तकीन (180) फ-मम्

बद्-द लहू बअ-द मा समि-अहू
फ-इन्नमा इस्मुहू अलल्लज्जी-न
युबदिलून्हू, इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम
(181) फ-मन् खा-फ मिम्-मूसिन्
ज-नफन् औ इस्मन् फ-अस्ल-ह बैनहुम्
फला इस्-म अलैहि, इन्नल्ला-ह
गफ़ूररहीम (182) ♦

या अय्युहल्लज्जी-न आमन् कुति-ब
अलैकुमुस्- -सियामु कमा कुति-ब
अलल्लज्जी-न मिन् कब्लिकुम् लअल्लकुम्
तत्तकून् (183) अय्यामम्-मअदूदातिन्,
फ-मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ अला
स-फरिन् फ-अिद्दतुम् मिन् अय्यामिन्
उ-ख-र, व अलल्लज्जी-न युतीकून्हू

फिद्यतुन् तआमु मिस्कीनिन्, फ-मन् त-तव्व-अ फहु-व खैरुल्लहू, व अन् तसूमू खैरुल्लकुम्
इन् कुन्तुम् तअल्लमून् (184) शहरु र-मज़ानल्लज्जी उन्जि-ल फीहिल्कुरआनु हुदल्लिन्नासि व
बय्यानातिम्-मिनल्हुदा वल्फुरकानि फ-मन् शहि-द मिन्कुमुश्शह-र फल्यसुम्हु, व मन् का-न
मरीज़न् औ अला स-फरिन् फअिद्दतुम् मिन् अय्यामिन् उ-ख-र, युरीदुल्लाहु बिकुमुल्-

سَبَّحَ
بِالْعَبْدِ وَالْأَنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عَفَى لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ
فَأَبَاءَ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَّى إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ
أَلِيمٌ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ
خَيْرًا الْوَصِيَّةَ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝ فَمَن بَدَّلْهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ
عَلَى الَّذِينَ بَدَّلُوهُ إِنِ اللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ فَمَنْ عَفَا
مِنْ مُّوَصَّ حَقًّا أَوْ إِثْبَافًا صَلَاحٌ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ
إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الْحُكْمُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝
إِنَّمَا مَتَّعْتُ ذُرِّيَّتَكُمْ فَكَانَ مِنكُمْ مَّرِيضٌ أَوْ عَلَى سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرُ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَ فَدْيَةً طَعَامُ
مِائَةِ نَفْسٍ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ
لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ
الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ فَمَن

ईमान वालो! तुमपर किसास “यानी बदले” (का कानून) फर्ज किया जाता है, (जान-बूझकर कत्ल करने से) कत्ल किए गए लोगों के बारे में, आज़ाद आदमी आज़ाद अदमी के बदले में और गुलाम गुलाम के बदले में, और औरत औरत के बदले में। हाँ जिसको उसके फरीक की तरफ से कुछ माफ़ी हो जाए (मगर पूरी न हो) तो (दावा करने वाले के ज़िम्मे) माकूल तौर पर (खून की कीमत का) मुतालबा करना और (कातिल के ज़िम्मे) खूबी के साथ उसके पास पहुँचा देना (है), यह (माफ़ करने और खून की कीमत लेने का कानून) तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से (सज़ा में) कमी और (शाहाना) रहम करना है। फिर जो शख्स उसके बाद ज़्यादाती करेगा तो उस शख्स को बड़ा दर्दनाक अज़ाब होगा। (178) और ऐ समझदार लोगो! बदले (के इस कानून) में तुम्हारी जानों का बड़ा बचाव है, (हम) उम्मीद (करते हैं) कि तुम लोग (ऐसे अमन वाले कानून की खिलाफ-वर्जी करने से) परहेज़ रखोगे। (179) तुमपर फर्ज किया जाता है कि जब किसी को मौत नज़दीक मालूम होने लगे, शर्त यह है कि कुछ माल भी अपने पीछे छोड़ा हो, तो माँ-बाप और रिश्तेदारों व करीबी लोगों के लिए माकूल तौर पर (जो कि कुल मिलाकर एक तिहाई से ज़्यादा न हो) कुछ-कुछ बतला जाए, (इसका नाम वसीयत है) जिनको खुदा का खौफ है उनके ज़िम्मे यह ज़रूरी है।¹ (180) फिर जो शख्स उस (वसीयत) के सुन लेने के बाद उसको तब्दील करेगा तो उसका गुनाह उन्हीं लोगों को होगा जो उसको तब्दील करेंगे, अल्लाह तआला तो यकीनन सुनते, जानते हैं। (181) हाँ, जिस शख्स को वसीयत करने वाले की जानिब से किसी बेइन्तिज़ामी की या किसी जुर्म के करने की तहकीक हुई हो, फिर यह शख्स उनमें आपस में सुलह-सफाई करा दे तो इसपर कोई गुनाह नहीं, वाकई अल्लाह तआला (तो खुद गुनाहों के) माफ़ करने वाले हैं (और गुनाहगारों पर) रहम करने वाले हैं। (182) ♦

ऐ ईमान वालो! तुमपर रोज़ा फर्ज किया गया, जिस तरह तुमसे पहले (वाली उम्मतों के) लोगों पर फर्ज किया गया था, इस उम्मीद पर कि तुम (रोज़े की बदौलत धीरे-धीरे) परहेज़गार बन जाओ।² (183) थोड़े दिनों (रोज़ा रख लिया करो) फिर (इसमें भी इतनी आसानी है कि) जो शख्स तुममें (ऐसा) बीमार हो (जिसमें रोज़ा रखना मुश्किल या नुकसानदेह हो) या (शरई) सफ़र में हो तो दूसरे दिनों का शुमार (करके उनमें रोज़े) रखना (उसपर वाजिब) है, और (दूसरी आसानी जो बाद में मन्सूख हो गई यह है कि) जो लोग (रोज़े की) ताकत रखते हों उनके ज़िम्मे फिदया है (कि वह) एक गरीब का खाना (खिला देना या दे देना है), और जो शख्स खुशी से (ज़्यादा) खैर करे (कि ज़्यादा फिदया दे) तो उस शख्स के लिए और भी बेहतर है। और तुम्हारा रोज़ा रखना (इस हाल में) ज़्यादा बेहतर है अगर तुम (रोज़े की फज़ीलत की) ख़बर रखते हो।³ (184) (वे थोड़े दिन) रमज़ान का महीना है जिसमें कुरआन मजीद

(पृष्ठ 48 का शेष) ज़िक्र हुए कमालात में से एक ख़ास कमाल यानी नमाज़ के कायम करने की शर्तों और ताबे चीज़ों में से है, और उसके अच्छा होने से इसमें भी अच्छाई और कमाल आ गया, वरना अगर नमाज़ न होती तो किसी ख़ास सन्त को मुँह करना भी इबादत न होता।

1. इस हुकम के तीन हिस्से थे: एक सिवाय औलाद के अलावा वारिसों के हिस्सों व हुक्क का तर्क में मुकर्रर न होना। दूसरे ऐसे रिश्तेदारों और करीबी लोगों के लिए वसीयत का वाजिब होना। तीसरे एक तिहाई माल से ज़्यादा वसीयत की इजाज़त न होना। पस पहला हिस्सा तो मीरास की आयत से मन्सूख है, दूसरा हिस्सा हदीस से जो कि इज्मा के ज़रिए ताईद-शुदा है मन्सूख है, और वाजिब होने के साथ जायज़ होना भी मन्सूख हो गया, यानी शरई वारिस के लिए माल की वसीयत बातिल है। तीसरा हिस्सा अब भी बाकी है, एक तिहाई से ज़्यादा में बिना बालिग वारिसों की रज़ामन्दी के वसीयत बातिल है।

2. रोज़ा रखने से नफ़्स को उसके अनेक तकाज़ों से रोकने की आदत पड़ेगी, और इसी आदत की पुख्तगी तक्वे की बुनियाद है। यह रोज़े की एक हिकमत का बयान है, लेकिन हिकमत इसी में सीमित नहीं हो गई, खुदा जाने और क्या-क्या हज़ारों हिकमतें होंगी।

3. अब यह हुकम मन्सूख है, अलबत्ता जो शख्स बहुत बूढ़ा हो या ऐसा बीमार हो कि अब सेहत की उम्मीद नहीं, ऐसे लोगों के लिए यह हुकम अब भी है।

युस्-र व ला युरीदु बिकुमुल्- अुस्-र व लितुक्मिलुल्- अिद्द-त व लितुकब्बिरुल्ला-ह अला
 मा हदाकुम् व लअल्लकुम् तश्कुरन (185) व इज़ा स-अ-ल-क अिबादी अन्नी फ-इन्नी
 करीबुन्, उजीबु दअ-वतद्दाअि इज़ा दआनि फल्यस्तजीबू ली वल्युअमिन् बी लअल्लहुम्
 यरशुदून (186) उहिल्-ल लकूम्
 लै-लतस्सियामिरि-फसु इला निसा-इकूम्,
 हुन्-न लिबासुल्लकूम् व अन्तुम्
 लिबासुल्-लहुन्-न, अलिमल्लाहु अन्नकुम्
 कुन्तुम् तख्तानू-न अन्फु-सकुम् फता-ब
 अलैकुम् व अफा अन्कुम् फल्आ-न
 बाशिरुहुन्-न वब्तगू मा क-तबल्लाहु
 लकुम् व कुलू वशरबू हत्ता य-तबय्य-न
 लकुमुल्खै तुल्-अब्यजु मिनल्खै तिल्-
 अस्वदि मिनल्-फज्रि सुम्-म अतिम्मुस्-
 सिया-म इलल्लैलि व ला तुबाशिरुहुन्-न
 व अन्तुम् आकिफू-न फिल्-मसाजिदि,
 तिल्-क हुदूदुल्लाहि फला तक्वरबूहा,
 कजालि-क युबय्यिनुल्लाहु आयातिही
 लिन्नासि लअल्लहुम् यत्तकून (187) व ला तअकुलू अम्वा-लकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि व
 तुदलू बिहा इलल्-हुक्कामि लितअकुलू फरीकम् मिन् अम्वालिन्नासि बिल्इस्मि व अन्तुम्
 तअलमून (188) ♦

यस्अलून-क अनिल्-अहिल्लति, कुल् हि-य मवाकीतु लिन्नासि वल्-हज्जि, व लैसल्बिर्

الشهادة
 ٢٤
 يقول
 شَهِدْ مِنْكُمْ الشَّهْرَ فَلْيَصْنَعُوهُ وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى
 سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ
 بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِكُلِّمُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ
 وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ
 أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي
 لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝ أَحَلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَى
 نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ عَلِمَ اللَّهُ
 أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تُخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ
 فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا
 حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ
 الْفَجْرِ ثُمَّ أَتُوا الصِّيَامَ إِلَى الْيَلِّ وَلَا تَبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ
 عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا كَذَلِكَ
 يُبَيِّنُ اللَّهُ لَالْتَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ
 بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتَذَلُّوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ
 أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلِ
 قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجَّةِ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا

مثل

भेजा गया है,¹ जिसका (एक) वस्फ 'यानी खूबी' यह है कि लोगों के लिए हिदायत (का ज़रिया) है, और (दूसरा वस्फ) वाज़ेह दलालत करने वाला है उन सब किताबों में जो कि हिदायत (का ज़रिया भी) हैं और (हक व बातिल में) फैसला करने वाली (भी) हैं। सो जो शख्स इस महीने में मौजूद हो उसको ज़रूर इस (महीने) में रोज़ा रखना चाहिए, और जो शख्स बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों का (उतना ही) शुमार (करके उनमें रोज़ा) रखना (उसपर वाजिब) है। अल्लाह को तुम्हारे साथ (अहकाम में) आसानी करना मन्ज़ूर है, और तुम्हारे साथ (अहकाम व क़वानीन मुक़र्रर करने में) दुश्वारी मन्ज़ूर नहीं, और ताकि तुम लोग (अदा या क़ज़ा के दिनों के) शुमार को पूरा कर लिया करो, (कि सवाब में कमी न रहे) इसलिए तुम लोग अल्लाह की बड़ाई (व तारीफ़) बयान किया करो, इसपर कि तुमको (एक ऐसा) तरीक़ा बतला दिया (जिससे तुम रमज़ान की बरकतों और फ़ायदों से महरूम न रहोगे) और (उज़्र की वजह से ख़ास रमज़ान में रोज़े न रखने की इजाज़त इसलिए दे दी) ताकि तुम लोग (इस आसानी की नेमत पर अल्लाह का) शुक्र अदा किया करो। (185) और जब आपसे मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक़ दरियाफ़्त करें तो (आप मेरी तरफ़ से फ़रमा दीजिए कि) मैं करीब ही हूँ, (और नामुनासिब दरख्वास्त को छोड़कर) मन्ज़ूर कर लेता हूँ (हर) अज़ी दरख्वास्त करने वाले की, जबकि वह मेरे हुज़ूर में दरख्वास्त दे, सो उनको चाहिए कि मेरे अहकाम को क़बूल किया करें और मुझपर यक़ीन रखें, उम्मीद है कि वे लोग हिदायत (व फ़लाह) हासिल कर सकेंगे।² (186) तुम लोगों के लिए रोज़े की रात में अपनी बीवियों से मशगूल होना हलाल कर दिया गया, क्योंकि वे तुम्हारे ओढ़ने-बिछौने (की जगह) हैं, और तुम उनके ओढ़ने-बिछौने (जैसे) हो, खुदा तआला को इसकी ख़बर थी कि तुम ख़ियानत (कर) के गुनाह में अपने को मुक्ताला कर रहे थे, (मगर) ख़ैर अल्लाह तआला ने तुमपर इनायत फ़रमाई और तुमसे गुनाह को धो दिया।³ सो अब उनसे मिलो-मिलाओ, और जो (इजाज़त का क़ानून) अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तजवीज़ कर दिया है (बिला तकल्लुफ़) उसका सामान करो, और खाओ और पियो (भी) उस वक़्त तक कि तुमको सफ़ेद ख़त (यानी सुबहे सादिक़ का नूर) अलग मालूम हो जाए काले ख़त से।⁴ फिर (सुबहे सादिक़ से) रात तक रोज़ा पूरा किया करो, और उन (बीवियों) से अपना बदन भी मत मिलने दो जिस ज़माने में कि तुम लोग एतिकाफ़ वाले हो मस्जिदों में।⁵ ये खुदाई ज़ाबते हैं, सो इन (से निकलने) के नज़दीक़ भी मत हो, इसी तरह अल्लाह तआला अपने (और) अहकाम (भी) लोगों (की इस्लाह) के वास्ते बयान फ़रमाते हैं, इस उम्मीद पर कि वे लोग (बाख़बर होकर ख़िलाफ़ करने से) परहेज़ रखें। (187) और आपस में एक-दूसरे के माल नाहक़ (तौर पर) मत खाओ, और उन (के झूठे

1. कुरआन मजीद में दूसरी आयत में आया है कि हमने कुरआन मजीद शबे क़दर में नाज़िल फ़रमाया, और यहाँ रमज़ान शरीफ़ में नाज़िल करना फ़रमाया है। सो वह शबे क़दर रमज़ान की थी, इसलिए दोनों मज़मून मुवाफ़िक़ हो गए। और अगर यह वस्वसा हो कि कुरआन मजीद तो कई साल में थोड़ा-थोड़ा करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ है फिर रमज़ान या शबे क़दर में नाज़िल फ़रमाने के क्या मायने? इसका जवाब यह है कि कुरआन लौहे-महफूज़ से दुनिया के आसमान पर एक ही बार में रमज़ान की शबे क़दर में नाज़िल हो चुका था, फिर दुनिया के आसमान से दुनिया में धीरे-धीरे कई साल में नाज़िल हुआ। पस इसमें भी इख़िलाफ़ और टकराव न रहा।
2. यह जो फ़रमाया कि मैं करीब हूँ तो जिस तरह हक़ तआला की ज़ात की हकीक़त बेनज़ीर व बेमिसल होने की वजह से महसूस नहीं की जा सकती, उसी तरह उनकी सिफ़ात की हकीक़त भी मालूम नहीं हो सकती, इसलिए ऐसी चीज़ों में ज़्यादा खोज-बीन जायज़ नहीं।
3. शुरु इस्लाम में यह हुक्म था कि रात को एक बार नौद आ जाने से आँख़ खुलने के बाद खाना-पीना और बीवी के पास जाना हराम हो जाता था। कुछ सहाबा से ग़ल्बे में इस हुक्म के पूरा करने में कोताही हो गई, फिर शर्मिन्दा होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इत्तिला की। उनकी शर्मिन्दागी और तौबा पर हक़ तआला ने रहमत फ़रमाई और इस हुक्म को मन्सूख़ कर दिया।
4. मुराद अलग और फ़र्क़ मालूम होने से यह है कि सुबह सादिक़ निकल आए।
5. एतिकाफ़ की हालत में बीवी के साथ सोहबत और इसी तरह चूमना और लिपटाना सब हराम है। एतिकाफ़ सिर्फ़ ऐसी मस्जिद में जायज़ है जिसमें पाँचों वक़्त जमाअत से नमाज़ का इन्तिज़ाम हो। जो एतिकाफ़ रमज़ान में न हो उसमें भी रोज़ा शर्त है। एतिकाफ़ वाले को मस्जिद से किसी वक़्त बाहर निकलना दुरुस्त नहीं, अलबत्ता जो काम बहुत ही लाचारी के हैं जैसे पाख़ाना या कोई खाना लाने वाला न हो तो घर से खाना ले आना या जामा मस्जिद में जुमा की नमाज़ के लिए बाहर जाना दुरुस्त है, लेकिन घर या रास्ते में ठहरना दुरुस्त नहीं। अगर औरत एतिकाफ़ करना चाहे तो जो जगह उसकी नमाज़ पढ़ने की मुक़र्रर है उसी जगह एतिकाफ़ भी दुरुस्त है।

बि-अन्तअतुल्-बुयू-त मिन् जुहूरिहा व ला किन्नलूबिर्-र मनिस्तका वअतुल्-बुयू-त मिन्
अब्रवाबिहा वत्तकुल्ला-ह लअल्लकुम् तुफिलहून (189) व कातिलू फी सबीलिल्लाहिल्लजी-न
युकातिलू-नकुम् व ला तअतदू, इन्नल्ला-ह ला युहिबुल्-मुअतदीन (190) वक्तुलूहुम् हैसु
सकिफ्तुमुहुम् व अखिरजूहुम् मिन् हैसु अखिरजूकुम् वल्फिल्तु अशददु मिनल्-कत्लि व ला

तुकातिलूहुम् अिन्दल्-मस्जिदिल्-हरामि
हत्ता युकातिलूकुम् फीहि, फ-इन्
का-तलूकुम् फक्तुलूहुम्, कजालि-क
जजाउल्-काफिरीन (191) फ-इनिन्तहौ
फ-इन्नल्ला-ह गफूररहीम (192) व
कातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फिल्तुतुव्-व
यकूनद्दीनु लिल्लाहि, फ-इनिन्तहौ फला
अुद्वा-न इल्ला अलज्जालिमीन (193)
अशशहरुल्-हरामु बिशशहरिल्-हरामि
वल्-हुरुमातु किसासुन्, फ-मनिअतदा
अलैकुम् फअतदू अलैहि बिमिस्लि
मअतदा अलैकुम् वत्तकुल्ला-ह वअलमू
अन्नल्ला-ह म-अल्मुत्तकीन (194) व
अन्फिकू फी सबीलिल्लाहि व ला तुल्कू
बिएदीकुम् इलत्तह्लु-कति, व अहसिन्

इन्नल्ला-ह युहिबुल्-मुहसिनीन (195) व अतिम्मुल्-हज्-ज वल्-अुम्र-त लिल्लाहि, फ-इन्
उहसिरुतुम् फ-मस्तै-स-र मिनल्-हदयि व ला तह्लिकू रुऊ-सकुम् हत्ता यब्लुगल्-हदयु महिल्लहू,
फ-मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ बिही अजम्-मिर्रअसिही फ-फिद्यतुम्-मिन् सियामिन् औ
स-द-कतिन् औ नुसुकिन् फ-इज़ा अमिन्तुम फ-मन् तमत्त-अ बिल्-उम्रति इलल्-हज्जि

سورة البقرة
الْبَيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْمَدِينَةَ مِنْ آثَرِهَا وَأَنبَأُوا فِي سَبِيلِ
مَنْ أَبَايَهَا وَأَنبَأُوا اللَّهَ لَعَنَ كُفْرَهُمْ فَفُلِحُوا وَقَالُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ الَّذِينَ يَقَاتِلُوكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ۖ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ
مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تَقْبِلُوهُمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ يَقَاتِلُوكُمْ فِيهِ فَإِن قَتَلُوكُمْ
فَاغْتُلُوهُمْ كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۖ فَإِن انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۖ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنِ انتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ عَلَيِ الظَّالِمِينَ ۖ
الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتُ قَصَاصٌ ۚ فَمَن
اعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۖ وَأَنفِقُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۖ وَأَيُّهَا الْحَبِيرَةُ وَالْعَبْدَةُ لِلَّهِ فَإِن
أُخْرِجْتُمْ مِمَّا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِفُوا بِرُءُوسِكُمْ
حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِ

मुकद्दमे) को हाकिमों के यहाँ इस गरज़ से रुजू मत करो कि (उसके ज़रिए से) लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के तरीके पर (यानी जुल्म से) खा जाओ और तुमको (अपने झूठ और जुल्म का) इल्म भी हो। (188) ❖

आपसे चाँदों के हालात की तहकीकात करते हैं, आप फरमा दीजिए कि वह (चाँद) वक्ती के पहचानने का आला "यानी यन्त्र" है, लोगों (के इख्तियारी मामलात जैसे इद्दत और हुक्क के मुतालबे) के लिए, (और गैर-इख्तियारी इबादात जैसे रोज़ा, ज़कात वगैरह) और हज के लिए।¹ और इसमें कोई फज़ीलत नहीं कि घरों में उनकी पुश्त की तरफ़ से आया करो, हाँ लेकिन फज़ीलत यह है कि कोई शख्स (हराम चीज़ों से) बचे, और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ,² और खुदा तआला से डरते रहो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो। (189) और (बेतकल्लुफ़) तुम लड़ो अल्लाह की राह में, उन लोगों के साथ जो (अहद को तोड़ कर) तुम्हारे साथ लड़ने लगे और (अपनी तरफ़ से मुआहदे की) हद से न निकलो। वाकई अल्लाह तआला (शरई कानून की) हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते। (190) और (जिस हालत में वे खुद अहद तोड़ें उस वक़्त चाहे) उनको क़त्ल करो जहाँ उनको पाओ और (चाहे) उनको निकाल बाहर करो जहाँ से उन्होंने तुमको निकलने पर मजबूर किया है, और शरारत क़त्ल से भी ज़्यादा सख़्त है, और उनके साथ मस्जिदे हराम के (आस) पास में (जो कि हरम कहलाता है) क़िताल मत करो जब तक कि वे लोग वहाँ तुमसे खुद न लड़ें। हाँ अगर वे (काफ़िर लोग) खुद ही लड़ने का सामान करने लगे तो तुम (भी) उनको मारो, ऐसे काफ़िरों की (जो हरम में लड़ने लगे) ऐसी ही सज़ा है। (191) फिर अगर वे लोग (अपने कुफ़्र से) बाज़ आ जाएँ (और इस्लाम कबूल कर लें) तो अल्लाह तआला बख़्श देंगे और मेहरबानी फरमा देंगे। (192) और उनके साथ इस हद तक लड़ो कि अक्कीदे का बिगाड़ (यानी शिर्क) न रहे और (उनका) दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए। और अगर वे लोग कुफ़्र से बाज़ आ जाएँ तो सख़्ती किसी पर नहीं हुआ करती सिवाय बेइन्साफी करने वालों के। (193) हुर्मत वाला महीना है हुर्मत वाले महीने के बदले, और (ये) हुर्मत तो बदला मुआवज़ा (की चीज़ें) हैं, सो जो तुमपर ज़्यादती करो तो तुम भी उसपर ज़्यादती करो जैसी उसने तुमपर ज़्यादती की है, और अल्लाह से डरते रहो और यकीन कर लो कि अल्लाह तआला डरने वालों के साथ होते हैं।³ (194) और तुम लोग (जान के साथ माल भी) खर्च किया करो अल्लाह की राह में, और अपने आपको अपने हाथों तबाही में मत डालो,⁴ और काम अच्छी तरह किया करो बिला शुब्हा अल्लाह तआला पसन्द करते हैं अच्छी तरह काम करने

1. शरीअत ने बुनियादी तौर पर चाँद के हिसाब पर अहकाम व इबादतों का मदार रखा है कि सबका जमा होना व इत्तिफ़ाक़ इन उमूर में सहूलत से मुम्किन हो, फिर कुछ अहक़ाम में तो इस हिसाब पर लाज़िम कर दिया है कि उनमें दूसरे हिसाब पर मदार रखना जायज़ ही नहीं, जैसे हज, रमज़ान के रोज़े, दोनों ईद, ज़कात और इद्दत व तलाक़ वगैरह। और कुछ में अगरचे इख्तियार दिया है, जैसे कोई चीज़ ख़रीदी और वायदा ठहरा कि इस वक़्त से एक साल सूरज के हिसाब से गुज़रने पर कीमत अदा करेंगे, इसमें शरीअत ने मजबूर नहीं किया कि चाँद के हिसाब से साल पूरा हो जाने पर मुतालबे का हक़ हो जाएगा। लेकिन इसमें शक़ नहीं है कि अगर शुरू में चाँद के हिसाब पर मदार रखा जाए तो आम तौर पर सहूलत उसमें है।

2. कई लोग इस्लाम से पहले हज के एहराम की हालत में अगर किसी ज़रूरत से घर जाना चाहते तो दरवाज़े से जाना मना समझते, इसलिए पीछे की दीवार में नक़ब देकर उसमें से अन्दर जाते थे, और इस अमल को फज़ीलत का सबब समझते थे। हक़ तआला इसके मुताल्लिक़ इशार्द फरमाते हैं कि इसमें कोई फज़ीलत नहीं कि घरों में उनकी पुश्त की तरफ़ से आया करो। इससे एक बड़े काम की बात मालूम होती है कि जो चीज़ शरीअत में मुबाह हो उसको नेकी व इबादत एतिकाद कर लेना इसी तरह उसको गुनाह और मलामत का मौक़ा एतिकाद कर लेना शरअन् बुरा है और बिद्अत में दाख़िल है।

3. काफ़िरों के साथ क़िताल करने की पहल करना जायज़ है जबकि उसके जायज़ होने की शर्तें पाई जाएँ। जज़ीरा-ए-अरब के अन्दर कुफ़्रार को वतन बनाने की इजाज़त नहीं।

4. यह जो फरमाया है कि "अपने हाथों" इस कैद लगाने का हासिल यह है कि अपने इख्तियार से कोई काम ख़िलाफ़े हुक्म न करे, और जो बिना इरादे व इख्तियार के कुछ हो जाए तो वह माफ़ है।

फ-मस्तै-स-र मिनल्-हदयि फ-मल्लम् यजिद् फसियामु सलासति अय्यामिन् फिल्-हज्जि व
सब्-अतिन् इजा रजअतुम, तिल्-क अ-श-रतुन् कामि-लतुन्, जालि-क लिमल्-तम् यकुन्
अह्लुहू हाजिरिल्-मस्जिदिल्-हरामि, वत्तकुल्ला-ह वअलमू अन्नल्ला-ह
शदीदुल्-अिकाब (196) ❖

अल्हज्जु अशहुरुम्-मअलूमातुन्
फ-मन् फ-र-ज फीहिन्नल्-हज्-ज फला
र-फ-स व ला फु-सू-क व ला जिदा-ल
फिल्-हज्जि, व मा तफ्अलू मिन्
खै रियू-यअल्महुल्लाहु, व तजव्वदू
फ-इन्-न खैरज्जादित्तक्वा वत्तकूनि या
उलिल्-अल्बाब (197) लै-स अलैकुम्
जुनाहुन् अन् तब्तगू फज्जल्-मिर्बिबिकुम्,
फ-इजा अफज्तुम् मिन् अ-रफातिन्
फज्जकुरुल्ला-ह अिन्दल्-मशअरिल्-हरामि
वज्जकुरुहु कमा हदाकुम् व इन् कुन्तुम्
मिन् कब्लिही ल-मिनज्जाल्लीन (198)

सुम्-म अफीजू मिन् हैसु अफाजन्नासु वस्तगुफिरुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह गफूररहीम (199)
फ-इजा कजैतुम् मनासि-ककुम् फज्जकुरुल्ला-ह क-जिक्विरकुम् अबा-अकुम् औ अशद्-द
जिक्विरन्, फ-मिनन्नासि मय्यकूलु रब्बना आतिना फिद्दुन्या व मा लहू फिल्-आखि-रति
मिन् खलाक (200) व मिन्हुम् मय्यकूलु रब्बना आतिना फिद्दुन्या ह-स-नतंव-व फिल्-

المعزة ٢٩ ميعول
أَذَى مِّن رَّأْسِهِ فَفُذِيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ
فَإِذَا أُمِنْتُمْ مِّن تَمَتُّعٍ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِن الْهَدْيِ فَمِنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ تِلْكَ أَيْامٍ فِي الْحَجِّ وَ
سَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ذَلِكَ لِمَن لَّمْ يَكُنْ
أَهْلَهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَةٌ فَمَن قَضَىٰ فِيهَا
الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوا
مِن خَيْرٍ يَّعْلَمُهُ اللَّهُ وَتَزُودُوا فَإِنَّ حَيْزَ الرِّزَادِ الثَّقَوَىٰ وَ
الْقَوَىٰ يَأُولَى الْأَكْبَابِ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا
فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِّن عَرَفَاتٍ فَادْكُرُوا اللَّهَ
عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَكُمُ وَإِن كُنْتُمْ مِّن
قَبْلِهِ لَمِن الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَقْبِضُوا مَن حَيْثُ أَقْبَضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِذَا قَضَيْتُمْ
مَنَاسِكَكُمْ فَادْكُرُوا اللَّهَ كَمَا كَرَّمْتُمُوهُ وَأَشَدَّ ذِكْرًا فَمِن
النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِن
خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي

مثل

वालों को। (195) और (जब हज व उमर: करना हो तो उस) हज व उमरे को अल्लाह तआला के वास्ते पूरा-पूरा अदा किया करो। फिर अगर (किसी दुश्मन या बीमारी के सबब) रोक दिए जाओ तो कुर्बानी का जानवर जो कुछ मयस्सर हो (ज़िब्ह करो) और अपने सरो को उस वक्त तक न मुंडवाओ जब तक कि कुर्बानी अपनी जगह पर न पहुँच जाए, (और वह जगह हरम है, कि किसी के हाथ वहाँ जानवर भेज दिया जाए)। अलबत्ता अगर तुममें से कोई बीमार हो या उसके सर में कुछ तकलीफ हो, (जिससे पहले ही सर मुंडाने की ज़रूरत पड़ जाए) तो (वह सर मुंडवाकर) फ़िदया (यानी उसका शरई बदला) दे दे (तीन) रोज़े से या (छह मिस्कीनों को) ख़ैरात दे देने या (एक बकरी) ज़िब्ह कर देने से, फिर जब अमन की हालत में हो (या तो पहले ही से कोई ख़ौफ़ पेश न आया हो, या होकर जाता रहा हो) तो जो शख्स उमर: से उसको हज के साथ मिलाकर मुनतफ़ा हुआ हो (यानी हज के दिनों में उमर: भी किया हो) तो जो कुछ कुर्बानी मयस्सर हो (ज़िब्ह) करे, (और जिसने सिर्फ़ उमर: या सिर्फ़ हज किया हो, उसपर हज वग़ैरह के मुताल्लिक कोई कुर्बानी नहीं)। फिर जिस शख्स को कुर्बानी का जानवर मयस्सर न हो तो (उसके ज़िम्मे) तीन दिन के रोज़े हैं हज (के दिनों) में, और सात हैं जबकि (हज से) तुम्हारे लौटने का वक्त आ जाए, ये पूरे दस हुए। यह उस शख्स के लिए है जिसके अहल (व अयाल) “यानी बाल-बच्चे और घर वाले” मस्जिदे हराम (यानी काबा) के करीब में न रहते हों (यानी करीब का वतन रखने वाला न हो) और अल्लाह तआला से डरते रहो (कि किसी बात में हुक्म के खिलाफ़ न हो जाए) और जान लो कि बेशक अल्लाह तआला (बेबाकी और मुख़ालफ़त करने वालों को) सख़्त सज़ा देते हैं।¹ (196) ♦

हज (का ज़माना) चन्द महीने हैं जो मालूम हैं, (शव्वाल, जीकादा और ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ें) सो जो शख्स इनमें हज मुक़र्रर करे तो फिर (उसको) न कोई गन्दी बात (जायज़) है और न कोई नाफरमानी (दुरुस्त) है, और न किसी किस्म का झगड़ा (मुनासिब) है। हज में² जो नेक काम करोगे खुदा तआला को उसकी इत्तिहा होती है, और (जब हज को जाने लगे) खर्च ज़रूर ले लिया करो क्योंकि सबसे बड़ी बात खर्च में (भीख माँगने से) बचा रहना है, और ऐ अक्ल वालो! मुझसे डरते रहो।³ (197) तुमको इसमें ज़रा भी गुनाह नहीं कि (हज में) रोज़ी की तलाश करो,⁴ जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से है, फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस आने लगे तो मशअरे हराम के पास (मुज़दलिफ़ा में रात को ठहर करके) खुदा तआला की याद करो,⁵ और (इस तरह) याद करो जिस तरह तुमको बतला रखा है, (न यह कि अपनी राय को दख़ल दो) और हकीकत में इससे पहले तुम महज़ अन्जान ही थे। (198) फिर तुम सबको ज़रूरी है कि उसी जगह होकर वापस आओ जहाँ और लोग जाकर वहाँ से वापस आते हैं, और (हज के अहक़ाम में पुरानी रस्मों पर अमल करने से) अल्लाह के सामने तौबा करो, यकीनन अल्लाह

1. औरत को सर मुंडाना हराम है, वह सिर्फ़ एक-एक उंगल बाल काट डाले। हज तीन तरह का होता है: “इफ़राद” कि हज के दिनों में सिर्फ़ हज किया जाए। और “तमत्तो” और “किरान” जिनमें हज के दिनों में उमर: और हज दोनों किए जाएँ। इफ़राद हर शख्स को जायज़ है और तमत्तो और किरान सिर्फ़ उन लोगों को जायज़ है जो “मीकात” की हदों से बाहर रहते हैं। और जो लोग “मीकात” के अन्दर रहते हैं उनके लिए तमत्तो और किरान की इजाज़त नहीं है।

2. गन्दी और बेहूदा बातें दो तरह की हैं: एक वह जो पहले ही से हराम है, वह हज की हालत में ज़्यादा हराम होगी। दूसरे वह कि पहले से हलाल थी जैसे अपनी बीवी से बेपर्दीगी की बातें करना, हज में यह भी दुरुस्त नहीं।

3. बेखर्च लिए हुए ऐसे शख्स को हज को जाना दुरुस्त नहीं जिसके नफ़स में तवक्कुल की ताक़त न हो।

4. हज में तिजारत यकीनन मुबाह (जायज़ और दुरुस्त) है, अब रही यह बात कि इख़्लास के खिलाफ़ तो नहीं, सो इसमें इसका हुक्म और जायज़ चीज़ों की तरह है कि दारो-मदार नीयत पर होता है।

5. ज़माना-ए-जाहिलियत में कुरैश अरफ़ात में न जाते थे, मुज़दलिफ़ा ही में ठहर कर वहाँ से लौट आते थे, इसलिए अल्लाह तआला ने इस आयत में इन अहक़ाम का आ़म होना बतला दिया।

आखि-रति ह-स-नतंव-व किना अज़ाबन्नार (201) उलाइ-क लहुम् नसीबुम् मिम्मा
क-सबू, वल्लाहु सरीअुल् हिसाब ● (202) वज़्कुरुल्ला-ह फी अय्यामिम्-मअद्दातिन्
फ-मन् त-अज्ज-ल फी यौमैनि फला इस्-म अलैहि व मन् त-अख़्ब-र फला इस्-म अलैहि

लि-मनित्तका, वत्तकुल्ला-ह वअलमू
अन्नकुम् इलैहि तुहशरून (203) व
मिनन्नासि मय्युअज़िबु-क कौलुहू
फिल्हयातिद्दुन्या व युहिदुल्ला-ह अला
मा फी कल्बिही व हु-व अलद्दुल्-
खिसाम (204) व इज़ा तवल्ला सआ
फिल्अर्जि लियुफ़िस-द फीहा व युहकिल्-
हर्-स वन्नस्-ल, वल्लाहु ला युहिब्बुल्
फ़साद (205) व इज़ा की-ल
लहुत्तकिल्ला-ह अ-खाज़तुल्-अज्जतु
बिल्-इस्मि फ-हस्बुहू जहन्नमु, व
लबिअ्सल्-मिहाद (206) व मिनन्नासि
मय्यशरी नफ़्सहुब्तिगा-अ मर्ज़ातिल्लाहि,

वल्लाहु रऊफ़ुम् बिल्-अबाद (207) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुद्खुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तंव-
व ला तत्तबिअू खुतुवातिशैतानि, इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्-मुबीन (208) फ-इन् ज़लल्लुम्
मिम्-बअदि मा जा-अत्कुमुल्-बय्यिनातु फ़अलमू अन्नल्ला-ह अज़ीजुन् हकीम (209) हल्

الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا
كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۚ وَأَذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ
فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ الْإِثْمُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَٰهٌ مُّخْتَارُونَ ۚ
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُ قَوْلَهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ
اللَّهُ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۚ وَهُوَ أَلَدُّ الْإِطْعَامِ ۚ وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ
فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۚ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ الْفَاسِدَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ
فَسَبَّ جَهَنَّمَ وَلَكِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ الْأَعْلَىٰ خَفِيًّا ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُشْرِي
نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۚ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ وَإِنْ زُلْزِلْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاذْكُرُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ هَلْ يَنْظُرُونَ
إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلُمٍ لَّيَالٍ مِنَ الْعَمَارِ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ وَ
فُضِي الْأَمْرُ إِلَى اللَّهِ تَرْجَعُ الْأُمُورُ ۚ سَلِّ بِرَبِّكَ إِسْرَءِيلَ
كَمْ أَتَيْنَهُمْ مِنْ آيَاتٍ بَيِّنَةٍ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

مَذَن

तआला माफ कर देंगे (और) मेहरबानी फरमा देंगे। (199) फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर चुको तो हक तआला का (इस तरह) जिक्र किया करो जिस तरह तुम अपने बापों (और दादाओं) का जिक्र किया करते हो, बल्कि यह जिक्र उससे (कई दरजे) बढ़कर हो।¹ सो बाजे आदमी (जो कि काफिर हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार हमको (जो कुछ देना हो) दुनिया में दे दीजिए, और ऐसे शख्स को आखिरत में (आखिरत के इनकार करने की वजह से) कोई हिस्सा न मिलेगा। (200) और बाजे आदमी (जो कि मोमिन हैं) ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको दुनिया में भी बेहतरी इनायत कीजिए और आखिरत में भी बेहतरी दीजिए और हमको दोजख के अजाब से बचाइए। (201) ऐसे लोगों को (दोनों जहान में) बड़ा हिस्सा मिलेगा उनके अमल की बदौलत, और अल्लाह तआला जल्द ही हिसाब लेने वाले हैं।² ● (202) और अल्लाह तआला का जिक्र करो कई दिन तक, फिर जो शख्स दो दिन में (मक्का वापस आने में) जल्दी करे उसपर भी कुछ गुनाह नहीं, और जो शख्स (दो दिन में) ताखीर “यानी देरी” करे उसपर भी कुछ गुनाह नहीं उस शख्स के लिए जो (खुदा से) डरे, और अल्लाह तआला से डरते रहो और खूब यकीन रखो कि तुम सबको खुदा के ही पास जमा होना है। (203) और बाजा आदमी ऐसा भी है कि आपको उसकी गुफ्तगू जो सिर्फ दुनियावी गरज से होती है मजेदार मालूम होती है और वह अल्लाह तआला को हाजिर व नाजिर बताता है अपने दिल की बात पर, हालाँकि वह (आपकी) मुखालफत में (बहुत ही) सख्त है। (204) और जब पीठ फेरता है तो इस दौड़-धूप में फिरता रहता है कि शहर में फसाद करे और (किसी के) खेत या मवेशी को बर्बाद कर दे, और अल्लाह तआला फसाद को पसन्द नहीं फरमाते। (205) और जब उससे कोई कहता है कि खुदा का खौफ कर, तो घमंड उसको उस गुनाह पर (दुगना) आमादा कर देता है, सो ऐसे शख्स की काफी सजा जहन्नम है, और वह बुरा ही ठिकाना है।³ (206) और बाजा आदमी ऐसा भी है कि अल्लाह की रिजा हासिल करने में अपनी जान तक खर्च कर डालता है, और अल्लाह (ऐसे) बन्दों (के हाल) पर निहायत मेहरबान हैं। (207) ऐ ईमान वाले! इस्लाम में पूरे-पूरे दाखिल हो, और (फासिद ख्यालात में पड़कर) शैतान के कदम से कदम मिलाकर मत चलो, वाकई वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (208) फिर अगर तुम इसके बाद कि तुमको वाजेह दलीलें पहुँच चुकी हैं (सीधे रास्ते से) बहकने लगे तो यकीन रखो कि हक तआला बड़े ज़बरदस्त हैं (और) हिकमत वाले हैं। (209) ये (टेढ़ी राह चलने वाले) लोग इस बात के मुन्तज़िर (मालूम होते) हैं कि हक तआला और फरिश्ते बादल के छज्जों में उनके पास (सजा देने के लिए) आएँ और सारा किस्सा ही खत्म हो जाए, और ये सारे मुकद्दमे अल्लाह तआला ही की तरफ लौटाए जाएँगे।⁴ (210) ♦

1. आयत में जो हुक्म याद का फरमाया इसमें नमाज़ें भी दाखिल हैं। पस यह जिक्र तो वाजिब है, बाकी जिक्र जो कुछ करे मुस्तहब है।
2. हासिल यह है कि दुनिया तलब की जगह है, खुद मतलूब नहीं बल्कि मतलूब बेहतरी है।
3. कोई शख्स था अख़्स बिन शुरैक, बड़ा फसीह व बलीग था। वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आकर कस्में खा-खाकर झूठा इस्लाम का दावा किया करता और मजिस से उठकर जाता तो फसाद व शरारत और मख़्लूक को तकलीफ पहुँचाने में लग जाता था। उस मुनाफ़िक के बारे में ये आयतें नाज़िल हुईं।
4. रूहुल-मआनी में इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसे पाक नक़ल की गई है कि कियामत के दिन अल्लाह तआला तमाम अंगलों और पिछलों को जमा फरमाएँगे और सब हिसाब किताब के मुन्तज़िर होंगे। अल्लाह तआला बादल के सायबानों (साया करने वालों) में अर्श से तजल्ली फरमाएँगे। और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत नक़ल की है कि उन सायबानों के चारों तरफ़ फरिश्ते होंगे, सो आयत में इस किस्से की तरफ़ इशारा है। मतलब यह हुआ कि कियामत के मुन्तज़िर हैं फिर उस वक़्त क्या हो सकता है?

यन्जुरु-न इल्ला अय्यअति-यहुमुल्लाहु फी जु-ललिम् मिनल्-गमामि वल्-मलाइ-कतु व
कुजियल्-अमूर, व इलल्लाहि तुरज्जुल्-उमूर (210) ❖

सल् बनी इस्राई-ल कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम् बय्यि-नतिन्, व मय्युबदिल्
निअ-मतल्लाहि मिम्-बअदि मा जाअतूहु

फ-इन्नल्ला-ह शदीदुल् अिकाब (211)

जुय्यि-न लिस्लज्जी-न क-फरुल्-

हयातुदुन्या व यस्खरु-न मिनल्लज्जी-न

आमनू ❖ वल्लज्जीनत्तकौ फौ-कहुम्

यौमल्-कियामति, वल्लाहु यरज्जुकु

मय्यशा-उ बिगैरि हिसाब (212)

कानन्नासु उम्म-तंव-वाहि-दतन्,

फ-ब-असल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबशिशरी-न

व मुन्जिरी-न व अन्ज-ल म-अहुमुल्-

किता-ब बिल्हक्कि लियह्कु-म बैनन्नासि

फी मख्त-लफू फीहि, व मख्त-ल-फ

फीहि इल्लल्लज्जी-न ऊतूहु मिम्-बअदि

मा जाअतूहुमुल् बय्यिनातु बग्यम्- बैनहुम्

फ-हदल्लाहुल्लज्जी-न आमनू लिमख्त-लफू

फीहि मिनल्-हक्कि बि-इज्जिही, वल्लाहु

यह्दी मय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तकीम (213) अम् हसिबुम् अन् तदखुलुल्-जन्न-त व

लम्मा यअतिकुम् म-सलुल्लज्जी-न खलौ मिन् कब्लिकुम्, मस्सतूहुमुल्- बअसा-उ वज्जुर्रा-उ

व जुल्लिजू हत्ता यकूलर्- रसूलु वल्लज्जी-न आमनू म-अहू मता नसरुल्लाहि, अला इन्-न

नसरुल्लाहि करीब (214) यस्अलून-क माजा युन्फिकू-न, कुल् मा अन्फक्तुम् मिन् खैरिन्

مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۚ زَيْنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْعُرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا
فَوَقَّعَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ
كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّنَ مُبَشِّرِينَ
وَمُنذِرِينَ ۚ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيُحْكُمَ بَيْنَ
النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ
مِنْ بَعْدٍ ۚ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا
الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسْتَهْمُهُمُ
الْبِاسُ وَالظُّرُوءُ وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ۚ يَسْأَلُونَكَ
مَاذَا يُنْفِقُونَ ۚ قُلْ مَا أَنْفَقْتُ مِنْ خَيْرٍ فَلِلَّهِ الدِّينُ وَ
الْآقِرِينَ وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا
مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۚ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ
لَكُمْ وَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ تُحِبُّوا

مَنْزِلَ

आप बनी इसराईल (के उलमा) से (ज़रा) पूछिए (तो सही) कि हमने आपको कितनी वाज़ेह दलीलें दी थीं,¹ और जो शख्स अल्लाह तआला की नेमत को बदलता है उसके पास पहुँचने के बाद, तो हक़ तआला यकीनन सख़्त सज़ा देते हैं।² (211) दुनियावी जिन्दगी कुफ़र को अच्छी और खुशनुमा मालूम होती है, और (इसी वजह से) इन मुसलमानों से ठट्ठा-मज़ाक़ करते हैं, हालाँकि ये (मुसलमान) जो (कुफ़ व शिर्क से) बचते हैं, उन (काफ़िरों) से आला दर्जे में होंगे क़ियामत के दिन, और रोज़ी तो अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं बेहिसाब दे देते हैं।³ (212) (एक ज़माने में) सब आदमी एक ही तरीक़े के थे⁴ फिर अल्लाह तआला ने पैग़म्बरों को भेजा, जो कि खुशी (के वायदे) सुनाते थे और डराते थे और उनके साथ (आसमानी) किताबें भी ठीक तौर पर नाज़िल फ़रमाईं, इस ग़रज़ से कि अल्लाह तआला लोगों में उनके (मज़हबी) इख़िलाफ़ी मामलों में फैसला फ़रमा दें, और इस (किताब) में (यह) इख़िलाफ़ और किसी ने नहीं किया मगर सिर्फ़ उन लोगों ने जिनको (शुरू में) वह (किताब) मिली थी, उसके बाद कि उनके पास वाज़ेह दलीलें पहुँच चुकी थीं, आपसी जिद्दा-जिद्दी की वजह से। फिर अल्लाह तआला ने (हमेशा) ईमान वालों को वह हक़ अम्र “यानी बात और मामला” जिसमें इख़िलाफ़ करने वाले इख़िलाफ़ किया करते थे, अपने फ़ज़ल व करम से बतला दिया, और अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं उसको सही रास्ता बतला देते हैं। (213) (दूसरी बात सुनो) क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि जन्नत में (मशक्कत उठाए बग़ैर) जा दाख़िल होंगे, हालाँकि तुमको अभी उन (मुसलमान) लोगों के जैसा कोई अजीब वाकिआ पेश नहीं आया जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं, उनपर (मुख़ालिफ़ों के सबब) ऐसी-ऐसी तंगी और सख़्ती पेश आई और (मुसीबतों से) उनको यहाँ तक हिलाया गया कि (उस ज़माने के) पैग़म्बर तक और जो उनके साथ ईमान वाले थे, बोल उठे कि अल्लाह तआला की (वायदा की गई) इम्दाद कब होगी।⁵ याद रखो बेशक अल्लाह तआला की इम्दाद (बहुत) नज़दीक है। (214) लोग आपसे पूछते हैं कि क्या चीज़ ख़र्च किया करें? आप फ़रमा दीजिए कि जो कुछ माल तुमको ख़र्च करना हो सो माँ-बाप का हक़ है⁶ और रिश्तेदारों व करीबी लोगों का, और बेबाप के बच्चों का, और मोहताजों का, और मुसाफ़िर का, और जो भी नेक काम-करोगे सो अल्लाह तआला को उसकी ख़ूब ख़बर है। (वह उसपर सवाब देंगे) (215) जिहाद करना तुमपर फ़र्ज़

1. जैसे तौरात मिली, चाहिए था कि उसको कबूल करते मगर उसका इनकार किया। आख़िर तूर पहाड़ गिराने की धमकी दी गई। और जैसे हक़ तआला का कलाम सुना, चाहिए था कि सर-आँखों पर रखते, मगर शुब्हात निकाले। आख़िर बिजली से हलाक़ हुए। और जैसे दरिया को फाड़कर के फ़िरऔन से नजात दी गई, एहसान मानते, मगर गौसाला को पूजा शुरू कर दिया, तो क़त्ल की सज़ा दी गई। और जैसे “मन्न” व “सत्तुवा” नाज़िल हुआ, शुक्र करना चाहिए था, मगर नाफ़रमानी की, वह सड़ने लगा और उससे नफ़रत ज़ाहिर की तो वह बन्द हो गया (यानी अल्लाह की तरफ़ से उसका अज़ा करना बंद कर दिया गया) और खेती की मुसीबत सर पर पड़ी। और जैसे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का सिलसिला उनमें जारी रहा, ग़नीमत समझते, मगर उनको क़त्ल करना शुरू किया, हुकूमत से महरूमी की सज़ा दी गई। और इसी तरह बहुत-से मामलात इस सूर: अल-बकर: के शुरू में भी ज़िक्र हो चुके हैं।
2. यह सज़ा कभी दुनिया में भी हो जाती है, कभी आख़िरत में होगी।
3. पस इसका मदार किस्मत पर है न कि कमाल और मक़बूलियत पर।
4. अव्वल दुनिया में आदम अलैहिस्सलाम मय अपनी बीवी के तशरीफ़ लाए और जो औलाद होती गई उनको देने हक़ की तालीम फ़रमाते रहे, और वे उनकी तालीम पर अमल करते रहे। एक मुद्दत इसी हालत में गुज़र गई, फिर तबीयतों के मुख़्तलिफ़ और अलग-अलग होने से मक़सद और ग़रज़ में इख़िलाफ़ होना शुरू हुआ, यहाँ तक कि एक मुद्दत के बाद आमाल व अक़ीदों में इख़िलाफ़ की नौबत आ गई।
5. नबियों और मोमिनों का इस तरह कहना नज़ु बिल्लाह (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) शक़ की वजह से न था, बल्कि वजह यह थी कि इम्दाद आने और मुख़ालिफ़ीन के मुकाबले में ग़ालिब होने का वक़्त उन हज़रात को न बतलाया गया था, वक़्त के साफ़ बयान न होने से उनको जल्दी होने का इन्तिज़ार रहता था। जब इन्तिज़ार से थक जाते तब इस तरह अर्ज़ व दरख़्वास्त करने लगते, जिसका हासिल गिड़गिड़ाने के साथ दुआ करना है, और रोना-गिड़गिड़ाना ख़िलाफ़े रिज़ा व तस्लीम नहीं है, बल्कि जब गिड़गिड़ाने और आजिज़ी करने का अल्लाह तआला के नज़दीक पसन्दीदा होना रिज़ा-ए-हक़ से है तो रोना और गिड़गिड़ाना बिल्कुल हक़ की रिज़ा से है।
6. माँ-बाप को ज़कात और दूसरे वाजिब सदकात देना दुरुस्त नहीं। इस आयत में नफ़िल ख़ैरात का बयान है।

फ-लित्वालिदैनि वल्-अकरबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि, व मा तफअलू मिन् खैरिन् फ-इन्नल्ला-ह बिही अलीम (215) कुति-ब अलैकुमुल्-कितालु व हु-व कुरहुल्लकुम् व असा अन् तकरहू शैअव्-व हु-व खैरुल्लकुम् व असा अन् तुहिब्बू शैअव्-व हु-व शरुल्लकुम्, वल्लाहु यअलमु व अन्तुम् ला तअलमून (216) ❖

यस्अलून-क अनिशशहरिल्-हरामि कितालिन् फीहि, कुल् कितालुन् फीहि कबीरुन्, व सद्दुन् अन् सबीलिल्लाहि व कुफरुम् बिही वल्मस्जिदिल्-हरामि, व इखराजु अहलिही मिन्हु अक्बरु अिन्दल्लाहि वल्-फित्नुतु अक्बरु मिनल्-कतिल्, व ला यजालू-न युकातिलू-नकुम् हत्ता यरुद्दुकुम् अन् दीनिकुम् इनिस्तताअू, व मय्यर्-तदिद् मिन्कुम् अन् दीनिही फ-यमुत् व हु-व काफिरुन् फ-उलाइ-क हबितत् अअमालुहुम् फिद्दुन्या वल्-आखि-रति व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून (217) इन्नल्लजी-न आमनू वल्लजी-न हाजरु व जाहदू फी सबीलिल्लाहि उलाइ-क यरजू-न

سَبِيلِ اللَّهِ
شَيْئًا وَهُوَ شَرُّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۖ يَسْأَلُونَكَ
عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدٌّ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالسِّجْدَ الْحَرَامِ وَإِغْوَاؤُ أَهْلِهِ
مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ
يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّى يَرْدَّوَكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنْ اسْتَطَاعُوا وَمَنْ
يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۚ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخُمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ
وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِنَّهُمْ أَكْبَرُ مِنْ نَفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ
مَاذَا يَنْفَعُونَ قُلْ الْعَفْوَ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ
الْيَتَامَى قُلْ إِصْلَاحُهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَلَا وَفَاءَ بَعْدَ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنُوا

रहमतल्लाहि, वल्लाहु गफूररहीम (218) यस्अलून-क अनिल्-खमिर वल्-मैसिरि कुल् फीहिमा इस्मुन् कबीरुव्-व मनाफिअु लिन्नासि व इस्मुहुमा अक्बरु मिन्नफ़अहिमा, व यस्अलून-क माज़ा युन्फिकू-न, कुलिल्-अफ़-व कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति लअल्लकुम् त-तफक्करुन (219) फिद्दुन्या वल्-आखि-रति व यस्अलून-क अनिल्-यतामा, कुल् इस्लाहुल्लहुम् खैरुन्, व इन् तुखालितूहुम् फ-इख्वानुकुम्, वल्लाहु यअलमुल्-

किया गया है और वह तुमको (तबई तौर पर) गिराँ “यानी भारी और नागवार” (मालूम होता) है, और यह बात मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को गिराँ समझो और वह तुम्हारे हक में ख़ैर हो, और यह (भी) मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को अच्छा समझो और वह तुम्हारे हक में ख़राबी (का सबब) हो। और अल्लाह तआला जानते हैं और तुम (पूरा-पूरा) नहीं जानते।¹ (216) ♦

लोग आपसे हराम महीने में किताल करने के मुताल्लिक सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उसमें खास तौर पर किताल करना (यानी जान-बूझकर) बड़ा जुर्म है, और अल्लाह की राह से रोक-टोक करना और अल्लाह तआला के साथ कुफ़र करना और मस्जिदे हराम (यानी काबा) के साथ, और जो लोग मस्जिदे हराम के अहल थे उनको उससे ख़ारिज कर देना बहुत बड़ा जुर्म है अल्लाह के नज़दीक, और फ़ितना उठाना (उस खास) क़त्ल से कई दर्जे बढ़कर है,² और ये कुफ़रार तुम्हारे साथ हमेशा जंग रखेंगे इस गरज़ से कि अगर (खुदा न करे) काबू पाएँ तो तुमको तुम्हारे दीन (इस्लाम) से फेर दें, और जो शख्स तुममें से अपने दीन से फिर जाए, फिर काफ़िर ही होने की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के (नेक) आमाँल दुनिया व आख़िरत में सब ग़ारत हो जाते हैं³ और ऐसे लोग दोज़खी होते हैं, (और) ये लोग दोज़ख में हमेशा रहेंगे। (217) हकीकत में जो लोग ईमान लाए हों और जिन लोगों ने राहे खुदा में वतन छोड़ा हो और जिहाद किया हो, ऐसे लोग तो अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हुआ करते हैं, और अल्लाह तआला (इस ग़लती को) माफ़ कर देंगे (और तुमपर) रहमत करेंगे। (218) लोग आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि इन दोनों (के इस्तेमाल) में गुनाह की बड़ी-बड़ी बातें भी हैं और लोगों को (बाज़े) फ़ायदे भी हैं, और (वे) गुनाह की बातें उनके फ़ायदों से ज़्यादा बढ़ी हुई हैं⁴ और लोग आपसे पूछते हैं कि (ख़ैर-ख़ैरात में) कितना खर्च किया करें, आप फ़रमा दीजिए कि जितना आसान हो, अल्लाह तआला इसी तरह अहक़ाम को साफ़-साफ़ बयान फ़रमाते हैं। (219) ताकि तुम दुनिया व आख़िरत के मामलों में सोच लिया करो। और लोग आपसे यतीम बच्चों का हुक्म पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि उनकी मस्लहत की रियायत रखना ज़्यादा बेहतर है, और अगर तुम उनके साथ खर्च शामिल रखो तो वे तुम्हारे (दीनी) भाई हैं, और अल्लाह तआला मस्लहत के ज़ाया करने वाले को और मस्लहत की रियायत रखने वाले को (अलग-अलग) जानते हैं,⁵ और अगर अल्लाह चाहते तो तुमको मुसीबत में डाल देते, क्योंकि अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (220) और

1. जिहाद फ़र्ज़ है जबकि उसकी वे शर्तें पाई जाएँ जो मसाइल की किताबों (फ़िक्ह) में ज़िक्र हुई हैं। और फ़र्ज़ दो तरह का होता है: फ़र्ज़ ऐन और फ़र्ज़ किफ़ाय। सो दीन के दुश्मन जब मुसलमानों पर चढ़ आएँ तब तो जिहाद फ़र्ज़ ऐन है, वरना फ़र्ज़ किफ़ाय है।

2. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा का एक सफ़र में इतिफ़ाक़ से काफ़िरों के साथ मुकाबला हो गया। एक काफ़िर उनके हाथ से मारा गया, और जिस दिन यह किस्सा हुआ रजब की पहली तारीख़ थी, मगर सहाबा जमादिल आख़िर की तीस समझते थे। (और रजब उन महीनों में से है जिनको हराम का दर्जा हासिल है। यानी जिन महीनों में लड़ाई और किताल की मनाही है)। कुफ़रार ने इस वाकिए पर ताना दिया कि मुसलमानों ने ‘शर्ते हराम’ (यानी हराम महीने) की हुर्मत और इज़्ज़त का भी ख़याल नहीं किया। मुसलमानों को इसकी फ़िक्र हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा। इस आयत में उसी का जवाब इशार्द हुआ है, और खुलासा जवाब का यह है कि अव्वल तो मुसलमानों ने कोई गुनाह नहीं किया, और अगर मान लें कि किया है तो एतिराज़ करने वाले इससे बड़े-बड़े गुनाह यानी कुफ़र और दीने हक से टकराने और रुकावट पैदा करने में मुक्ताला हैं। फिर उनको मुसलमानों पर एतिराज़ करने का क्या हक़ है।

3. दुनिया में आमाँल का ज़ाया होना यह है कि उसकी बीवी निकाह से निकल जाती है, अगर उसका कोई मूरिस (जिसकी मीरास मिलने वाली हो) मुसलमान भरे, उस शख्स को मीरास का हिस्सा नहीं मिलता। इस्लाम की हालत में नमाज़-रोज़ा जो कुछ किया था सब ज़ाया हो जाता है। मरने के बाद जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी जाती, मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफ़न नहीं किया जाता। और आख़िरत में ज़ाया होना यह है कि इबादतों का सवाब नहीं मिलता, हमेशा-वमेशा के लिए दोज़ख में दाख़िल होता है।

4. पहले ये दोनों चीज़ें हलाल थीं। सबसे पहली आयत शराब व जुए के मुताल्लिक यह नाज़िल की गई। इस आयत से इन दोनों को हुर्मत का इनकी ज़ात के एतिबार से बयान मकसूद नहीं था, बल्कि बाज़-बाज़ पेश आने वाली ग़ैर-ज़रूरी चीज़ों की वजह से इन दोनों के छोड़ने का मशिवरा देना मकसूद था।

5. चूँकि शुरू में हिन्दुस्तान की तरह अरब में भी यतीमों का हक़ देने में पूरी एहतियात न थी इसलिए यह वर्ड सुनाई गई थी कि यतीमों का माल खाना ऐसा है जैसा कि दोज़ख के अंगारे पेट में भरना। तो सुनने वाले डर गए। इसके मुताल्लिक यह आयत नाज़िल हुई।

मुस्फि-द मिनल्-मुस्लिहि, व लौ शाअल्लाहु ल-अअन-तकुम, इन्नल्ला-ह अजीजुन् हकीम (220) व ला तन्किहुल् मुशिरकाति हत्ता युअमिन्-न, व ल-अ-मतुम् मुअमि-नतुन् खैरुम्-मिम्-मुशिर-कतिव्-व लौ अअ-जबल्कुम् व ला तुन्किहुल् मुशिरकी-न हत्ता युअमिन्, व ल-अब्दुम्-मुअमिनुन् खैरुम् मिम्-मुशिरकिंव्-व लौ अअ-ज-बकुम, उलाइ-क यदअ-न इलन्नारि वल्लाहु यदअ इलल्-जन्नति वल्-मरिफरति बि-इज्जिनी व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि लअल्लहुम् य-तजक्करुन (221) ♦

व यस्अलून-क अनिल्-महीजि कुल् हु-व अ-जन् फअतजिलुन्निसा-अ फिल्-महीजि वला तकरबूहुन्-न हत्ता यत्तुर-न फ-इजा त-तहहर-न फअतूहुन्-न मिन् हैसु अ-म-रकुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह युहिब्बुत्तव्वाबी-न व युहिब्बुल् मु-त-तहिहरीन (222) निसाउकुम् हरसुल्लकुम् फअतू हरसकुम् अन्ना शिअतुम् व कदिमू लि-अन्फुसिकुम्, वत्तकुल्ला-ह वअलमू अन्नकुम् मुलाकूहु, व बशिशरिल्-मुअमिनीन (223) व ला तज्अलुल्ला-ह अुर-जतल् लिऐमानिकुम् अन् तबरस् व तत्तकू व तुस्लिहू बैनन्नासि, वल्लाहु समीअुन् अलीम (224) ला युआखिजुकुमुल्लाहु बिल्लग्वि फी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआखिजुकुम् बिमा क-सबत् कुलबुकुम्, वल्लाहु गफूरुन् हलीम (225) लिल्लजी-न युअलू-न मिन्निसा-इहिम् तरब्बुसु अर्-ब-अति अशहुरिन् फ-इन् फाऊ फ-इन्नला-ह गफूररहीम (226) व इन् अ-जमुत्तला-क फ-इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम (227) वल्मुतल्लकातु य-तरब्बस्-न बि-अन्फुसिहिन्-न

وَأَكْمَةٌ مُؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُكْفُرُوا
بِالشِّرْكَاءِ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ
وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَاللَّهُ يَدْعُو
إِلَى الْجَنَّةِ وَالْغَفْرِ بِأَذْنِهِ وَيَبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّيْضِ ۚ قُلْ هُوَ أَذَىٰ
فَأَعْرِضُوا ۚ السَّيْءُ فِي السَّيْضِ ۚ وَلَا تَقْرَبُوهُ ۚ حَتَّىٰ
يُطَهَّرَ ۚ فَإِذَا تُطَهَّرَ فَأَتُوهُ ۚ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝ نَسِئُكُمْ
حَزَبٌ لَّكُمْ فَأَتَوْا حَزَبَكُمْ أَلَيْ شَيْئُكُمْ وَقَدْ مَوَّلَا أَنْفُسَكُمْ
وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُّلْقَوَةٌ ۚ وَيَبَيِّرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَ
تُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمْ
اللَّهُ بِالْعَهْدِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ
فُلُوبُكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِّسَائِهِمْ
تَرِئُصْ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ فَإِنْ فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
وَلِنْ عَزْمُوا الظَّلَاقَ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ

مَنْ

निकाह मत करो काफिर औरतों के साथ जब तक कि वे मुसलमान न हो जाएँ, और मुसलमान औरत (चाहे) बाँदी (क्यों न हो, वह हजार दर्जा) बेहतर है काफिर औरत से, चाहे वह तुमको अच्छी ही मालूम हो। और औरतों को काफिर मर्दों के निकाह में मत दो, जब तक कि वे मुसलमान न हो जाएँ। और मुसलमान मर्द गुलाम बेहतर है काफिर मर्द से, चाहे वह तुमको अच्छा ही मालूम हो, (क्योंकि) ये लोग दोज़ख़ (में जाने) की तहरीक देते हैं “यानी दोज़ख़ की ओर ले जाते हैं”, और अल्लाह तआला जन्नत और मग़फ़िरत की तहरीक देते हैं अपने हुक़म से।¹ और (अल्लाह इस वास्ते) आदमियों को अपने अहक़ाम बता देते हैं ताकि वे लोग नसीहत पर अमल करें। (221) ♦

और लोग आपसे हैज़ “यानी माहवारी” का हुक़म पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि वह गन्दी चीज़ है। तो माहवारी में तुम औरतों से अलग रहा करो और उनसे निकटता मत किया करो जब तक कि वे पाक न हो जाएँ, फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएँ तो उनके पास आओ-जाओ जिस जगह से अल्लाह तआला ने तुमको इजाज़त दी है (यानी आगे से), यकीनन अल्लाह तआला मुहब्बत रखते हैं तौबा करने वालों से, और मुहब्बत रखते हैं साफ़-पाक रहने वालों से।² (222) तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारे (लिए बतौर) खेत (के) हैं। सो अपने खेत में जिस तरफ़ से होकर चाहो आओ। और आइन्दा के लिए (भी) अपने लिए कुछ करते रहो, और अल्लाह तआला से डरते रहो और यह यकीन रखो कि बेशक तुम अल्लाह तआला के सामने पेश होने वाले हो, और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऐसे ईमानदारों को खुशी की ख़बर सुना दीजिए। (223) और अल्लाह तआला को अपनी क़स्मों के ज़रिये से इन उमूर का हिजाब मत बनाओ कि तुम नेकी के और तक्वे के और मख़्लूक के दरमियान सुधार के काम करो, और अल्लाह तआला सब कुछ सुनते जानते हैं।³ (224) अल्लाह तआला तुमपर (आख़िरत में) पकड़ न फ़रमाएँगे तुम्हारी (ऐसी) बेहूदा क़स्मों पर, लेकिन पकड़ फ़रमाएँगे उस (झूठी क़सम) पर जिसमें तुम्हारे दिलों ने (झूठ बोलने का) इरादा किया था, और अल्लाह तआला बख़्शने वाले हैं, हलीम “यानी बर्दाश्त करने वाले और नर्मी बरतने वाले” हैं।⁴ (225) जो लोग क़सम खा बैठते हैं अपनी बीवियों (के पास जाने) से, उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। सो अगर ये लोग (क़सम तोड़कर औरत की तरफ़) रुजू कर लें तब तो अल्लाह तआला माफ़ कर देंगे, रहमत फ़रमा देंगे।⁵ (226) और अगर बिल्कुल छोड़ ही देने का पुख़्ता इरादा कर लिया है तो अल्लाह तआला सुनते हैं,

1. इस आयत में दो हुक़म हैं, एक यह कि काफिर मर्दों से मुसलमान औरतों का निकाह न किया जाए। सो यह हुक़म तो अब भी बाकी है। दूसरा हुक़म यह है कि मुसलमान मर्द का काफिर औरत से निकाह न किया जाए। इस हुक़म में दो हिस्से हैं, एक हिस्सा यह है कि वह काफिर औरत किताबी यानी यहूदी या ईसाई न हो और कोई मज़हब कुफ़्र का रखती हो। सो इस हिस्से में भी इसका हुक़म बाकी है। चुनाँचे हिन्दू औरत या आग को पूजने वाली औरत से मुसलमान का निकाह नहीं हो सकता। दूसरा हिस्सा यह है कि औरत किताबिया हो यानी यहूदी या ईसाई हो। इस ख़ास हिस्से में इस आयत का हुक़म बाकी नहीं, बल्कि एक आयत सूर: माइद: में इस मज़मून की है कि किताबी औरत से निकाह दुरुस्त है, सो इस सूरत में इस आयत का यह ख़ास हिस्सा मन्सूख़ हो गया। चुनाँचे यहूदी या ईसाई औरत से निकाह दुरुस्त है। अगरचे किताबी औरत से निकाह दुरुस्त है लेकिन अच्छा नहीं है। हदीस में दीनदार औरत के हासिल करने का हुक़म है, तो बद्-दीन औरत का हासिल करना इस दर्जे में ना-पसन्द होगा।

2. माहवारी की हालत में नाफ़ से घुटने तक औरत के बदन को देखना और हाथ लगाना भी दुरुस्त नहीं।

3. नेक काम का छोड़ना बिना क़सम भी बुरा है।

4. बेहूदा क़सम के दो मायने हैं, एक तो यह कि किसी गुज़री हुई बात पर झूठी क़सम बिना इरादा निकल गई, या आगे आने वाली बात पर इस तरह क़सम निकल गई कि कहना चाहता था कुछ और बेइरादा मुँह से क़सम निकल गई, इसमें गुनाह नहीं होता। इसके मुकाबले में जिसपर पकड़ होने का ज़िक्र फ़रमाया, यह वह क़सम है जो जान-बूझकर झूठी समझकर खाई हो।

5. अगर कोई क़सम खा ले कि मैं अपनी बीवी से सोहबत न करूँगा, तो अगर चार महीने के अन्दर अपनी क़सम तोड़ डाले और बीवी के पास चला जाए तो क़सम का कफ़ारा दे और निकाह बाकी है। और अगर चार महीने गुज़र गए और क़सम न तोड़ी तो उस औरत पर क़तई तलाक़ पड़ गई, रुजू करना दुरुस्त नहीं रहा, अलबत्ता अगर दोनों रज़ामन्दी से फिर निकाह कर लें तो दुरुस्त है।

सलास-त कुखइन्, व ला यहिल्लु लहुन्-न अय्यक्तुम्-न मा ख-लकल्लाहु फी अर्रहामिहिन्-न इन् कुन्-न युअमिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि, व बुअ-लतुहुन्-न अहक्कु बि-रदिहिन्-न फी जालि-क इन् अरादू इस्लाहन्, व लहुन्-न मिस्तुल्लजी अलैहिन्-न बिल्मअरुफि व लिरिजालि अलैहिन्-न द-र-जतुन्, वल्लाहु अजीजुन् हकीम (228) ❖

अत्तलाकु मरतानि फ-इम्साकुम्-बिमअरुफिन् औ तसरीहुम् बि-इत्सानिन्, व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअखुज्जु मिम्मा आतैतुमूहुन्-न शैअन् इल्ला अय्यखाफा अल्ला युकीमा हुदूदल्लाहि, फ-इन् खिफतुम् अल्ला युकीमा हुदूदल्लाहि फला जुना-ह अलैहिमा फीमफतदत् बिही, तिल्-क हुदूदल्लाहि फला तअतदूहा व मय्य-तअद्-द हुदूदल्लाहि फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (229) फ-इन् तल्ल-कहा फला तहिल्लु लहू मिम्-बअदु हत्ता तन्कि-ह जौजन् गैरहू, फ-इन् तल्ल-कहा फला जुना-ह अलैहिमा अय्य-तरा-जआ इन् जन्ना अय्युकीमा हुदूदल्लाहि, व तिल्-क हुदूदल्लाहि युबय्यिनुहा लिक्कौमिय्यअलमून

(230) व इजा तल्लक्तुमुन्निसा-अ फ-बलग्-न अ-ज-लहुन्-न फ-अम्सिकूहुन्-न बिमअरुफिन् औ सरिहूहुन्-न बिमअरुफिन्-व ला तुम्सिकूहुन्-न जिरारल् लितअ-तदू व मय्यफअल् जालि-क फ-कद् ज-ल-म नप्सहू, व ला तत्तखिज्जु आयातिल्लाहि हुजुव्व-वज्जुरू निअ-मतल्लाहि अलैकुम् व मा अन्ज-ल अलैकुम् मिनल्-किताबि वल्लिहक्मति यअज्जुकुम्

يَكْرَهُنَّ أَنْفُسَهُنَّ ثَلَاثَةً فُرُوقٌ وَلَا يَجِلُّ لَنْ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَنْفُسِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحْسَنُ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٢٢٩ الْفَلَاقُ مَرْثَنَ فَأَمَّا الْيَمْرُؤُ
أَوْتَسِرْنَ بِإِحْسَانٍ وَلَا يَجِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا بِآيَاتِهِمْ هُنَّ
شَيْئًا إِلَّا أَنْ يُخَافَا الْآفِيئِمَا حُدُّدَ اللَّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ الْآفِيئِمَا
حُدُّدَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ
حُدُّدُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُّدَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ٢٣٠ فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا يَجِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَتَّى
تُنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا
إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُّدَ اللَّهِ وَتِلْكَ حُدُّدُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ٢٣١ وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَزَوُّوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ
ضُرًّا لَكُمْ تَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ وَلَا
تُكْنِزُوا الْبَيْتَ اللَّهُ هَزُؤًا أَذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ

مَرْثَنَ

जानते हैं। (227) और तलाक दी हुई औरतें अपने आपको (निकाह से) रोके रखें तीन हैज तक,¹ और उन औरतों को यह बात हलाल नहीं कि खुदा तआला ने जो कुछ उनके रहम में पैदा किया हो (चाहे गर्भ या हैज) उसको छुपाएँ, अगर वे औरतें अल्लाह तआला पर और कियामत के दिन पर यकीन रखती हैं। और उन औरतों के शौहर उनके (बिना दोबारा निकाह किए) फिर लौटा लेने का हक रखते हैं, उस (इद्दत) के अन्दर, शर्त यह है कि इस्लाह “यानी भलाई और सुधार” का इरादा रखते हों। और औरतों के भी हुक्क हैं जो कि उन्हीं के हुक्क की तरह हैं जो उन औरतों पर हैं (शरई) कायदे के मुवाफिक। और मर्दों का उनके मुकाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है, और अल्लाह तआला ज़बरदस्त (हाकिम) हैं, हकीम हैं।² (228) ♦

वह तलाक दो बार (की) है, फिर चाहे रख लेना कायदे के मुवाफिक चाहे छोड़ देना अच्छे अन्दाज़ के साथ,³ और तुम्हारे लिए यह बात हलाल नहीं कि (छोड़ने के वक़्त) कुछ भी लो (अगरचे) उसमें से (ही सही) जो तुमने उनको (महर में) दिया था, मगर यह कि मियाँ-बीवी दोनों को अन्देशा हो कि अल्लाह तआला के ज़ाबतों “यानी कानूनों” को कायम न कर सकेंगे। सो अगर तुम लोगों को यह अन्देशा हो कि वे दोनों खुदावन्दी ज़ाबतों को कायम न कर सकेंगे तो दोनों पर कोई गुनाह न होगा उस (माल के लेने-देने) में जिसको देकर औरत अपनी जान छुड़ा ले। ये खुदाई ज़ाबते हैं सो तुम इनसे बाहर मत निकलना। और जो शख्स खुदाई ज़ाबतों से बाहर निकल जाए सो ऐसे ही लोग अपना नुकसान करने वाले हैं।⁴ (229) फिर अगर कोई (तीसरी) तलाक दे दे औरत को तो फिर वह उसके लिए हलाल न रहेगी उसके बाद, यहाँ तक कि वह उसके सिवा एक और ख़ाविन्द के साथ (इद्दत के बाद) निकाह करे। फिर अगर यह उसको तलाक दे दे तो इन दोनों पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि बदस्तूर फिर मिल जाएँ, शर्त यह है कि दोनों ग़ालिब गुमान रखते हों कि (आइन्दा) खुदावन्दी ज़ाबतों को कायम रखेंगे।⁵ और ये खुदावन्दी ज़ाबते हैं, (हक़ तआला) उनको बयान फ़रमाते हैं, ऐसे लोगों के लिए जो समझदार हैं। (230) और जब तुमने औरतों को (रज़ूअी) तलाक दे दी हो, फिर वे अपनी इद्दत गुज़रने के करीब पहुँच जाएँ तो (या तो) तुम उनको कायदे के मुवाफिक़ (लौटा करके) निकाह में रहने दो या कायदे के मुवाफिक़ उनको रिहाई दो। और उनको तकलीफ़ पहुँचाने की गरज़ से मत रोको, इस इरादे से कि उनपर जुल्म किया करोगे। और जो शख्स ऐसा (बर्ताव) करेगा सो वह अपना ही नुकसान करेगा। और अल्लाह तआला के अहक़ाम को खेल-कूद (की तरह बेवक़अत) मत समझो, और हक़ तआला की जो नेमतें तुमपर हैं उनको याद करो, और (खास कर) इस किताब और हिकमत (के मज़ामीन) को जो अल्लाह तआला ने तुमपर (इस हैसियत से) नाज़िल फ़रमाई है कि तुमको उसके ज़रिए से नसीहत फ़रमाते हैं। और अल्लाह तआला से डरते रहो और यकीन रखो कि अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। ▲ (231) ♦

1. उन औरतों में इतनी सिफ़तें हों: ख़ाविन्द ने उनसे सोहबत या “खिलवते सहीहा” (यानी इतनी देर मियाँ-बीवी को तन्हाई का मौक़ा मिलना कि अगर चाहें तो सोहबत कर सकें) की हो, उनको हैज (माहवारी) आता हो, आज़ाद हों यानी शरई कायदे से बाँदी न हों। जिस औरत से मर्द ने सोहबत या खिलवते सहीहा न की हो और उसको तलाक दे दे तो उसपर बिलकुल इद्दत लाज़िम नहीं, इद्दत के अन्दर दूसरे शौहर से निकाह दुरुस्त है।

2. तलाक पाई हुई औरत पर वाजिब है कि अपने माहवारी में होने या गर्भ से होने की हालत ज़ाहिर कर दे, ताकि उसके मुवाफिक़ इद्दत का हिसाब हो। मर्द पर औरत के ख़ास हुक्क ये हैं: अपनी गुंजाइश के मुताबिक़ उसको खाना, कपड़ा, रहने का घर और महर दे, उसको तंग न करे। और औरत पर मर्द के ख़ास हक़ ये हैं कि उसकी फ़रमाँबरदारी करे, उसकी ख़िदमत करे।

3. उस तलाक़ को ‘रज़ूअी’ कहते हैं जो कि दो बार से ज़्यादा न हो, और उसमें यह भी कैद है कि साफ़ लफ़्ज़ों से हों। और कायदे से मुराद यह है कि उसका तरीक़ा भी शरीअत के मुवाफिक़ हो और नीयत भी उसमें शरीअत के मुवाफिक़ हो, और अच्छे अन्दाज़ से भी मुराद यह है कि उसका तरीक़ा शरीअत के मुवाफिक़ हो। तथा अच्छे अन्दाज़ से छोड़ने के लिए ज़रूरी है कि नीयत भी शरीअत के मुताबिक़ हो यानी झगड़े का टालना मक़सूद हो, यह मक़सूद न हो कि उसका दिल तोड़ें, उसको ज़लील करें, इसलिए नरमी व हमदर्दी की रियायत ज़रूरी है।

4. औरत से माल ठहराकर छोड़ना इसकी दो सूरतें हैं। एक “खुला” दूसरा “तलाक़ अला माल”। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 68 पर)

बिही, वत्तकुल्ला-ह वअलमू अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम ▲ (231) ♦

व इज़ा तल्लकतुमुन्निसा-अ फ-बलग्-न अ-ज-लहुन्-न फला तअज़ुलूहुन्-न
अय्यन्किह्-न अज्वाजहुन्-न इज़ा तराजौ बैनहुम् बिल्मअरुफि, ज़ालि-क यू-अज़ु बिही मन्
का-न मिन्कुम् युअमिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि, ज़ालिकुम् अज्का लकुम् व अत्हरु,
वल्लाहु यअलमु व अन्तुम् ला तअलमून

(232) वल्-वालिदातु युरज़िअ-न
औलादहुन्-न हौलैनि कामिलैनि लि-मन्
अरा-द अय्युतिम्मरज़ा-अ-त, व अलल्-
मौलूदि लहू रिज्कुहुन्-न व किस्वतुहुन्-न
बिल्मअरुफि, ला तुकल्लफु नफ्सुन् इल्ला
वुस्अहा ला तुज़ार्-र वालि-दतुम्
बि-व-लदिहा व ला मौलूदुल्लाहू
बि-व-लदिही, व अलल्-वारिसि मिस्लु
ज़ालि-क फ-इन् अरादा फिसालन् अन्
तराजिम् मिन्हुमा व तशावुरिन् फला
जुना-ह अलैहिमा, व इन् अरत्तुम् अन्
तस्तरज़िअू औलादकुम् फला जुना-ह
अलैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम्
बिल्मअरुफि, वत्तकुल्ला-ह वअलमू
अन्नल्ला-ह बिमा तअमलू-न बसीर
(233) वल्लज़ी-न यु-तवफ़ौ-न

मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज्वाजय्य-तरब्बस्-न बिअन्फुसिहिन्-न अरब-अ-त अशहुरिव्-व
अशरन् फ-इज़ा बलग्-न अ-ज-लहुन्-न फला जुना-ह अलैकुम् फीमा फ-अल्-न फी
अन्फुसिहिन्-न बिल्मअरुफि, वल्लाहु बिमा तअमलू-न ख़ाबीर (234) व ला जुना-ह
अलैकुम् फीमा अरज़्तुम् बिही मिन् ख़ित्बतिन्निसा-इ औ अक्नन्तुम् फी अन्फुसिकुम्,

سَيَقُولُ ۚ ۝۳۵ عَلَيَّكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلْيُغْنِ
أَجَلُهُنَّ فَلَا تَضُرَّوهُنَّ أَنْ يَكُنَّ حُرًّا أَوْ أَمْسًا إِذَا تَرَاضَا
بَيْنَهُمَا بِالْمَعْرِوفِ ذَلِكَ يُؤْخَذُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ لَكُمْ وَأَظْهَرَ اللَّهُ يَعْلَمُ
وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ
كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُنْفِقَ الرِّضَاعَةَ مَوْعِلَ الْمُؤَلَّوْلَةِ
رِضْعُهُنَّ وَكُسُوهُنَّ بِالْمَعْرِوفِ لَا تَكُفُّنَّ نَفْسَ الْإِوْسَعَاءِ
لَا نُفْسًا وَالِدَةً يُولَدُهَا وَلَا مَوْلُودًا يُولَدُهَا ۝ وَعَلَى
الْوَالِدَيْنِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَ
تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْتَزِيْعُوا
أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ فَاْتَيْنَهُنَّ بِالْمَعْرِوفِ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ
يَتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا لَا تَرَىٰنَّ بِأَنْفُسِهِنَّ رَبَّنَا
أَشْهُرٌ وَعَشْرًا ۚ إِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرِوفِ ۝ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

مَثَل

और जब तुम (में ऐसे लोग पाए जाएँ कि वे) अपनी बीवियों को तलाक दे दें, फिर वे औरतें अपनी (इद्दत की) मीयाद भी पूरी कर चुकें तो तुम उनको इस बात से मत रोको कि वे अपने शौहरों से निकाह कर लें, जबकि आपस में सब रज़ामन्द हो जाएँ कायदे के मुवाफिक। इस (मज़मून) से नसीहत की जाती है उस शख्स को जो कि तुममें से अल्लाह पर और कियामत के दिन पर यकीन रखता हो, यह (यानी इस नसीहत को कबूल करना) तुम्हारे लिए ज़्यादा सफाई और ज़्यादा पाकी की बात है, और अल्लाह तआला जानते हैं और तुम नहीं जानते।¹ (232) और माएँ आपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाया करें, (यह मुद्दत) उसके लिए (है) जो दूध पिलाने की तक्मील करना चाहे। और जिसका बच्चा है (यानी बाप) उसके ज़िम्मे है उन (माओं) का खाना और कपड़ा कायदे के मुवाफिक, किसी शख्स को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दाश्त के मुवाफिक। किसी माँ को तकलीफ न पहुँचाना चाहिए उसके बच्चे की वजह से, और न किसी बाप को तकलीफ देनी चाहिए उसके बच्चे की वजह से,² और इसी तरह (यानी ज़िक्र हुए तरीके के मुताबिक) उसके ज़िम्मे है जो वारिस हो,³ फिर अगर दोनों दूध छुड़ाना चाहें अपनी रज़ामन्दी और मशिवरे से तो दोनों पर किसी किस्म का गुनाह नहीं, और अगर तुम लोग अपने बच्चों को (किसी और अन्ना का) दूध पिलवाना चाहो तब भी तुमपर कोई गुनाह नहीं, जबकि उनके हवाले कर दो जो कुछ उनको देना किया है कायदे के मुवाफिक, और हक़ तआला से डरते रहो, और यकीन रखो कि अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों को खूब देख रहे हैं। (233) और जो लोग तुममें वफ़ात पा जाते हैं और बीवियाँ छोड़ जाते हैं, वे बीवियाँ अपने आपको (निकाह वगैरह से) रोके रखें चार महीने और दस दिन, फिर जब अपनी (इद्दत की) मीयाद ख़त्म कर लें तो तुमको कुछ गुनाह न होगा ऐसी बात में कि वे औरतें अपनी ज़ात के लिए (निकाह की) कुछ कार्रवाई करें कायदे के मुवाफिक, और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों की ख़बर रखते हैं।⁴ (234) और तुमपर कोई गुनाह नहीं होगा जो (इन ज़िक्र की गई) औरतों को (निकाह का) पैग़ाम देने के बारे में कोई बात इशारे में कहो, या अपने दिल में (निकाह के इरादे को) छुपाओ, अल्लाह तआला को यह बात मालूम है कि तुम उन औरतों का (ज़रूर) ज़िक्र मज़कूर करोगे, लेकिन उनसे निकाह का वायदा (और गुफ्तगू) मत करो, मगर यह कि कोई बात कायदे के मुवाफिक़ कहो। और तुम निकाह के ताल्लुक का (फिलहाल) इरादा भी मत करो, यहाँ तक कि मुकर्ररा इद्दत अपनी इन्तिहा को (न) पहुँच जाए। और यकीन रखो इसका कि अल्लाह तआला को इत्तिला है तुम्हारे दिलों की बात की, सो अल्लाह तआला से डरते रहा करो। और यकीन रखो कि अल्लाह तआला माफ़ भी करने वाले हैं, हलीम भी हैं।⁵ (235) ♦

(पृष्ठ 66 का शेष) खुला यह है कि औरत कहे कि तू इतने माल पर मुझसे खुला कर ले और मर्द कहे कि मुझको मन्ज़ूर है। इसके कहते ही अगरचे तलाक़ का लफ़्ज़ न कहे मगर “तलाक़े बाइन” पड़ जाएगी, और उसी क़द माल औरत के ज़िम्मे वाजिब हो जाएगा। और ‘तलाक़ अला माल’ यह है कि मर्द औरत से कहे कि तुझको इस क़द माल के बदले तलाक़ है। इसका हुक्म यह है कि औरत मन्ज़ूर न करे तो तलाक़ नहीं होती और मन्ज़ूर कर ले तो “तलाक़े बाइन” हो जाएगी, और उस क़द माल औरत के ज़िम्मे वाजिब हो जाएगा।

5. इसको हलाला कहते हैं।

1. इस आयत में रोकने की सब सूरतें दाख़िल हैं, और हर सूरत में रोकने को मना फ़रमाया है।

2. यानी बच्चे के माँ-बाप आपस में किसी बात पर ज़िद्दा-ज़िद्दी न करें। माँ अगर किसी वजह से माज़ूर न हो तो उसके ज़िम्मे दियानत के तौर पर यानी अल्लाह के नज़दीक वाजिब है कि बच्चे को दूध पिलाए, जबकि वह निकाह वाली (बीवी) हो या इद्दत में हो, और उज़ूरत लेना दुर्मुस्त नहीं। और अगर तलाक़ के बाद इद्दत गुज़र चुकी तो उसपर बिना उज़ूरत दूध पिलाना वाजिब नहीं। अगर माँ दूध पिलाने से इनकार करे तो उसपर ज़बरदस्ती न की जाएगी। हाँ अगर बच्चा किसी का दूध ही नहीं लेता और न ऊपर का दूध पीता है तो माँ को मजबूर किया जाएगा। माँ दूध पिलाना चाहती है और उसके दूध में कोई ख़राबी भी नहीं तो बाप को जायज़ नहीं कि उसको न पिलाने दे और दूसरी अन्ना का दूध पिलाए। माँ दूध पिलाने पर रज़ामन्द है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 70 पर)

अलिमल्लाहु अन्नकुम् स-तज्कुरुनहुन्-न व लाकिल्ला तुवाअिदूहुन्-न सिरन् इल्ला अन् तक्कूल
कौलम्-मअरूफन्, व ला तअजिम् अक्दतन्निकाहि हत्ता यब्लुगल्-किताबु अ-ज-लहू,
वअलम् अन्नल्ला-ह यअलमु मा फी अन्फुसिकुम् फह-जखु वअलम् अन्नल्ला-ह गफूरुन्
हलीम (235) ♦

ला जुना-ह अलैकुम् इन्
तल्लक्तुमुन्निसा-अ मा लम् तमस्सूहुन्-न
औ तफिरजू लहुन्-न फरी-जतव्-व
मत्तिअहुन्-न अलल्-मूसिअि क-दरुहू व
अलल्-मुक्तिरि क-दरुहू मताअम्-
बिल्मअरूफि हक्कन् अलल्-मुहिसनीन
(236) व इन् तल्लक्तुमूहुन्-न मिन्

कब्लि अन् तमस्सूहुन्-न व कद् फरज्जुम्
लहुन्-न फरी-जतन् फ-निस्फु मा
फरज्जुम् इल्ला अय्यअफू-न औ
यअफुवल्लजी बि-यदिही उक्दतुन्निकाहि,
व अन् तअफू अक्वरु लित्तक्वा, व ला
तन्सवुल्-फज्-ल बैनकुम, इन्नल्ला-ह
बिमा तअमलू-न बसीर (237) हाफिजू
अलस्स-लवाति वस्सलातिल्-वुस्ता व
कूम लिल्लाहि कानितीन (238) फ-इन्

खिप्तुम् फ-रिजालन् औ रुक्बानन् फ-इजा अमिन्तुम् फज्कुरुल्ला-ह कमा अल्ल-मकुम् मा
लम् तक्नू तअलमून (239) वल्लजी-न यु-तवप्फौ-न मिन्कुम् व य-जखु-न अज्वाजव्-
वसिय्यतल् लि-अज्वाजिहिम् मताअन् इलल्-हौलि गै-र इखराजिन् फ-इन् खरज्-न फला
जुना-ह अलैकुम् फी मा फ-अल्-न फी अन्फुसिहिन्-न मिम्-मअरूफिन्, वल्लाहु अजीजुन्
हकीम (240) व लिल्मुतल्लकाति मताअुम्-बिल्मअरूफि, हक्कन् अलल् मुत्तकीन (241)

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا عَرَضْتُمْ بِهِ مِنْ خُطْبَةِ النِّسَاءِ
أَوْ أَكْنَنتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلَيْهِمُ اللَّهُ أَنْتُمْ سَدَّ لَوْ تَنَزَّلْنَ وَلَكِنْ
لَا تَوَاعِدُ وَمَنْ يَذَّكَّرْ فَإِنَّهُ لَهُ آجَلٌ وَلَا تَعْرَضُوا
عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ
مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمْ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ أَوْ
تَقْرِبُوهُنَّ فَرِيضَةٌ مِمَّا قَرَضْتُمْ عَلَى الْمَوْسِعِ قَدَرُهُ
وَعَلَى الْمُعْتَرِفِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْحَسَنِينَ
وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ قَرَضْتُمْ
لَهُنَّ فَرِيضَةً فَخُصُّوا مَا قَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا
الَّذِي بَيْنَهُمَا عُقْدَةُ النِّكَاحِ وَأَنْ تَعْلَمُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَى وَ
لَا تَتَّبِعُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنْ اللَّهُ يَمَّا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ
فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا
عَلِمْتُمْ مَا لَمْ يَكُونُوا يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ يَتُوقُونَ مِنْكُمْ
يَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَحِيَّةً لِأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَدَاةً

مَنْ

तुमपर (महर का) कुछ मुतालबा और पकड़ नहीं अगर बीवियों को ऐसी हालत में तलाक दे दो कि न उनको तुमने हाथ लगाया है और न उनके लिए कुछ महर मुकर्रर किया है, और (सिर्फ) उनको एक जोड़ा दे दो। गुंजाइश वाले के ज़िम्मे उसकी हैसियत के मुवाफिक है और तंगदस्त के ज़िम्मे उसकी हैसियत के मुवाफिक जोड़ा देना कायदे के मुवाफिक वाजिब है, मामले के अच्छे लोगों पर। (236) और अगर तुम उन बीवियों को तलाक दो इससे पहले कि उनको हाथ लगाओ और उनके लिए कुछ महर भी मुकर्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुकर्रर किया हो उसका आधा (वाजिब) है, मगर यह कि वे औरतें (अपना आधा) माफ कर दें या यह कि वह शर्ख्स रियायत कर दे जिसके हाथ में निकाह का ताल्लुक (रखना और तोड़ना) है। और तुम्हारा माफ कर देना (ब-निस्बत वसूल करने के) तक्वे से ज्यादा करीब है। और आपस में एहसान करने से गफलत न करो। बेशक अल्लाह तआला सब कामों को खूब देखते हैं। (237) हिफाज़त करो सब नमाज़ों की (आम तौर पर) और दरमियान वाली नमाज़ की (खास तौर पर), और खड़े हुआ करो अल्लाह के सामने आज़िज़ बने हुए। (238) फिर अगर तुमको अन्देशा हो तो खड़े-खड़े या सवारी पर चढ़े-चढ़े पढ़ लिया करो। फिर जब तुमको इत्मीनान हो जाए तो तुम खुदा तआला की याद उस तरीके से करो जो तुमको सिखलाया है, जिसको तुम न जानते थे। (239) और जो लोग वफात पा जाते हैं तुममें से और छोड़ जाते हैं बीवियों को, वे वसीयत कर जाया करें अपनी उन बीवियों के वास्ते एक साल तक फायदा उठाने की, इस तौर पर कि वे घर से निकाली न जाएँ, हाँ अगर खुद निकल जाएँ तो तुमको कोई गुनाह नहीं उस कायदे की बात में जिसको वे अपने बारे में करें, और अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (240) और सब तलाक दी हुई औरतों के लिए कुछ-कुछ फायदा पहुँचाना कायदे के मुवाफिक (यह) मुकर्रर हुआ है उनपर जो (शिक्र व कुफ्र से) परहेज़ करते हैं। (241) इसी तरह हक़ तआला तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान फरमाते हैं, इस उम्मीद पर कि

(पृष्ठ 68 का शेष)

लेकिन उसका दूध बच्चे को नुकसानदेह है तो बाप को जायज़ है कि उसको दूध न पिलाने दे और किसी अन्ना का दूध पिलवाए।

3. बाप के होते हुए बच्चे की परवरिश का खर्च सिर्फ बाप के ज़िम्मे है, और जब बाप मर जाए तो उसमें तफसील यह है कि अगर बच्चा माल का मालिक है तब तो उसी माल में से उसका खर्च होगा, और अगर माल का मालिक नहीं है तो उसके मालदार रिश्तेदारों में जो उसके मेहरम हैं और मेहरम होने के अलावा शरई तौर पर उसकी मीरास के हकदार भी हैं, पस ऐसे मेहरम वारिस रिश्तेदारों के ज़िम्मे उसका खर्च वाजिब होगा और उन रिश्तेदारों में माँ भी दाखिल है।

4. यह इद्दत उस बेवा की है जिसको हमल (गर्भ) न हो। और अगर हमल हो तो बच्चा पैदा होने तक उसकी इद्दत है, चाहे जनाज़ा लेजाने से पहले ही पैदा हो जाए या चार महीने दस दिन से भी ज्यादा में हो। यह मसला सूर: तलाक में आया। जिसका शौहर मर जाए उसको इद्दत के अन्दर सिंघार करना, सुर्मा और तेल दवा की ज़रूरत के बिना लगाना, मेहंदी लगाना, रंगीन कपड़े पहनना दुरुस्त नहीं, और दूसरे निकाह के लिए खुली बात-चीत करना भी दुरुस्त नहीं जैसा कि अगली आयत में आता है। और रात को दूसरे के घर में रहना भी दुरुस्त नहीं।

5. यहाँ इद्दत के अन्दर चार काम ज़िक्र किए गए हैं, दो ज़बान के और दो दिल के, और हर एक का अलग हुक्म है। अव्वल ज़बान से खुले तौर पर पैगाम देना, यह हराम है। “ला तुवाअिदुहुन्-न सिरन्” में इसका ज़िक्र है। दूसरे ज़बान से इशारे के तौर पर कहना, यह जायज़ है। “ला जुना-ह अलैकुम्” और “कौलम्-मअरूफन्” में इसका ज़िक्र है। तीसरे दिल से यह इरादा करना कि अभी यानी इद्दत के अन्दर निकाह कर लेंगे, यह भी हराम है। क्योंकि इद्दत के अन्दर निकाह करना हराम है, और हराम का इरादा करना हराम है। “ला तअज़िम्” में इसका ज़िक्र है। चौथे दिल से यह इरादा करना कि इद्दत के बाद निकाह कर लेंगे, यह जायज़ है। “अकान्तुम् फी अन्फुसिकुम्” में इसका ज़िक्र है।

1. जिस औरत का महर निकाह के वक्त मुकर्रर हुआ हो उसको सोहबत व मुकम्मल तन्हाई से पहले अगर तलाक दे दी हो तो मुकर्रर किए हुए महर का आधा मर्द के ज़िम्मे वाजिब होगा, हाँ अगर औरत माफ कर दे या मर्द पूरा दे दे तो इख्तियारी बात है।

2. कसूरत से उलमा का कौल बाज़ हदीसों की दलील से यह है कि बीच वाली नमाज़ ‘असर’ है क्योंकि इसके एक तरफ़ दो नमाज़ें दिन की हैं ‘फज़्र’ और ‘जोहर’ और एक तरफ़ दो नमाज़ें रात की हैं ‘मगरिब’ व ‘इशा’। (शेष तफसील पृष्ठ 72 पर)

कजालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअल्लकुम् तअकिलून (242) ❖

अलम् त-र इलल्लजी-न ख-रजू मिन् दियारिहिम् व हुम् उलूफुन् ह-ज़रल्मौति फका-ल लहुमुल्लाहु मूतू सुम्-म अह्याहुम, इन्नल्ला-ह लजू फज़िल्न् अलन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (243) व कातिलू फी सबीलिल्लाहि वअलमू अन्नल्ला-ह

समीअुन् अलीम (244) मन् जल्लजी

युकिरज़ुल्ला-ह कर्ज़न् ह-सनन्

फ-युजाअि-फहू लहू अज़्आफन्

कसीर-तन्, वल्लाहु यक्बिजु व यब्सुतु व

इलैहि तुरजअून (245) अलम् त-र

इलल्-म-लइ मिम्-बनी इस्राई-ल

मिम्-बअदि मूसा ❖ इज़् कालू

लि-नबिय्यिल्-लहुमुब्अस् लना

मलिकन्नुकातिल् फी सबीलिल्लाहि, का-ल

हल् असैतुम् इन् कुति-ब अलैकुमुल्-

कितालु अल्ला तुकातिलू, कालू व मा

लना अल्ला नुकाति-ल फी सबीलिल्लाहि

व कद् उखिरज्ना मिन् दियारिना व

अब्ना-इना, फ-लम्मा कुति-ब

अलैहिमुल्-कितालु तवल्लौ इल्ला

कलीलम् मिन्हुम, वल्लाहु अलीमुम्-

बिज्जालिमीन (246) व का-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला-ह कद् ब-अ-स लकुम् तालू-त

मलिकन्, कालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अलैना व नह्नु अहक्कु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम्

युअ्-त स-अतम् मिनल्-मालि, का-ल इन्नल्लाहस्तफाहु अलैकुम् व ज़ा-दहू बस्त-तन्

फिल्-इल्मि वल्-जिस्मि, वल्लाहु युअ्ती मुल्कहू मय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अलीम (247)

وَأَنْ خَرَجْنِ فَلَا جُنَاةَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْتُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ مِنْ
مَعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَمْ تَطْلُقْ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝ كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ أَلَمْ
تُرَى إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَّاءٌ لِلْحَرْبِ فَقَالَ
لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ
لَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَقَالُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِي يَفْرِضُ اللَّهُ قَرْضًا حَسَنًا
فِيضِعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْذُرُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَامَةِ ابْنِ إِسْرَءِيلَ مِنْ بَعْدِ مُوسَى
إِذْ قَالَ لِلَّهِ إِنِّي لَهْمُ ابْنٍ لَهَا فَبَعَثَ لَنَا مَلَكًا يُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ
هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا قَالُوا وَمَا
لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أَخْرَجَنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ
أَبْنَانَا فَلَمَّا كَتَبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۝ وَ
اللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نبيُّهُمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ
لَكُمْ طَالُوتَ بْنَ كَعْبٍ قَالُوا أَلَيْسَ كَانَ الْمَلِكُ عَلَيْكَ وَأَنْتَ أَوْعَى
بِالْمَلِكِ مِنْهُ وَلَمْ يَكُنْ سَعَةً مِنَ الْمَالِ قَالَ إِنْ اللَّهُ اصْطَفَى

مَلِكًا

तुम समझो (और अमल करो)। (242) ♦

(ऐ मुख़ातब!) तुझको उन लोगों का किस्सा तहकीक नहीं हुआ जो कि अपने घरों से निकल गए थे, और वे लोग हज़ारों ही थे मौत से बचने के लिए, सो अल्लाह तआला ने उनके लिए (हुक्म) फरमा दिया कि मर जाओ, फिर उनको जिन्दा कर दिया। बेशक अल्लाह तआला बड़ा फज़ल करने वाले हैं लोगों (के हाल) पर, मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (243) (इस किस्से में गौर करो) और अल्लाह की राह में किताल करो और यकीन रखो इस बात का कि अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाले (और) ख़ूब जानने वाले हैं। (244) (ऐसा) कौन शख्स है जो अल्लाह तआला को कर्ज़ दे अच्छे तौर पर कर्ज़ देना, फिर अल्लाह तआला उस (के सवाब) को बढ़ाकर बहुत-से हिस्से कर दे,¹ और अल्लाह कमी करते हैं और फ़राख़ी “यानी वुसूअत” करते हैं, और तुम उसी की तरफ़ (मरने के बाद) ले जाए जाओगे। (245) (ऐ मुख़ातब!) तुझको बनी इसराईल की जमाअत का किस्सा जो मूसा के बाद हुआ है तहकीक नहीं हुआ, जबकि उन लोगों ने अपने एक पैग़म्बर से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दीजिए कि हम अल्लाह की राह में (जालूत से) किताल करें। (उन पैग़म्बर ने) फ़रमाया: क्या यह एहतिमाल “यानी वहम व अन्देशा” नहीं कि अगर तुमको जिहाद का हुक्म दिया जाए तो तुम (उस वक़्त) जिहाद न करो? वे लोग कहने लगे कि हमारे वास्ते ऐसा कौन-सा सबब होगा कि हम अल्लाह की राह में जिहाद न करें? हालाँकि हम अपनी बस्तियों और अपने बेटों से भी जुदा कर दिए गए हैं, फिर जब उन लोगों को जिहाद का हुक्म हुआ तो बहुत थोड़े-से लोगों को छोड़कर (बाकी) सब फिर गए। और अल्लाह तआला ज़ालिमों को ख़ूब जानते हैं? (246) और उन लोगों से उनके पैग़म्बर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने तुमपर तालूत को बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया है। वे कहने लगे उनको हमपर हुक्मरानी का हक़ कैसे हासिल हो सकता है? हालाँकि उनकी ब-निस्बत हम हुक्मरानी के ज़्यादा हक़दार हैं, और उनको तो कुछ माली गुंजाइश भी नहीं दी गई। (उन पैग़म्बर ने जवाब में) फ़रमाया कि (अव्वल तो) अल्लाह तआला ने तुम्हारे मुकाबले में उनको चुना है, और (दूसरे) इल्म और जसामत “यानी भारी-भरकम होने और डील-डोल” में उनको ज़्यादाती दी है,³ और (तीसरे) अल्लाह तआला अपना मुल्क जिसको चाहें दें, और (चौथे) अल्लाह तआला वुसूअत देने वाले, जानने वाले हैं। (247) और उनसे उनके पैग़म्बर ने फ़रमाया कि उनके (अल्लाह की जानिब से)

(पृष्ठ 70 का शेष) और अज़ीज़ी की तफ़सीर हदीस में ख़ामोशी के साथ आई है। इसी आयत से नमाज़ में बातें करने की मनाही हुई, इससे पहले बोलना दुरुस्त था।

3. जब मीरास की आयत नाज़िल हो गई, घर-बाहर सब तरफ़ के से औरत का हक़ मिल गया तो यह आयत मन्सूख़ हो गई।

4. निकाह और तलाक़ वग़ैरह के अहक़ाम में जगह-जगह “इत्तकुल्ला-ह” और “हुदूदुल्लाह” और “समीअुन् अलीमुन्” और “अज़ीजुन् हकीमुन्” और “बसीरुन्” और “ख़बीरुन्” और “हुमुज्जालिमून्” और “फ-क़् ज-ल-म नफ़्सहू” वग़ैरह का आना कतई दलील है कि ये सब अहक़ाम शरीअत में मक़सूद और वाज़िब हैं। बतौर मशिवरे के नहीं जिनमें तर्मीम व तब्दीली करने का या अमल न करने का हमको नज़ुज़ बिल्लाह इख़्तियार हो।

1. कर्ज़ मजाज़न् कह दिया वरना सब खुदा ही की मिल्क है। मतलब यह है कि जैसे कर्ज़ का बदला ज़रूर ही दिया जाता है इसी तरह तुम्हारे खर्च करने का बदला ज़रूर मिलेगा। और बढ़ाने का बयान एक हदीस में इस तरह आया है कि अगर एक छुवारा अल्लाह की राह में खर्च किया जाए तो खुदा तआला उसको इतना बढ़ाते हैं कि वह उहुद पहाड़ से ज़्यादा हो जाता है।

2. उन बनी इसराईल ने हक़ तआला के अहक़ाम को छोड़ दिया था, अमालिका के काफ़िरों को उनपर मुसल्लत कर दिया गया, उस वक़्त उन लोगों को इस्लाह की फ़िक्र हुई। और उन पैग़म्बर का नाम शमवील मशहूर है।

3. बादशाह होने के लिए इल्म की ज़्यादा ज़रूरत है ताकि मुल्क के इन्तिज़ाम पर कादिर हो और जसामत (भारी-भरकम और डील-डोल का होना) भी इस मायने में मुनासिब है कि मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ के दिल में वक़अत व रोब पैदा हो।

व का-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्-न आय-त मुल्किही अय्यअति-यकुमुत्ताबूतु फीहि सकीनतुम्
मिर्रब्बिकुम् व बकिय्यतुम् मिम्मा त-र-क आलु मूसा व आलु हासू-न तत्तिलुहुल्-मलाइ-कतु,
इन्-न फी ज़ालि-क लआ-यतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन (248) ♦

फ-लम्मा फ-स-ल तालूतु बिल्जुनूदि का-ल इन्नल्ला-ह मुब्तलीकुम बि-न-हरिन् फ-मन्
शरि-ब मिन्हु फलै-स मिन्नी व मल्लम्
यत्अमूहु फ-इन्नहू मिन्नी इल्ला
मनिग़त-र-फ़ गुर-फ़तम् बि-यदिही
फ-शरिबू मिन्हु इल्ला कलीलम् मिन्हुम,
फ-लम्मा जा-व-ज़हू हु-व वल्लज़ी-न
आमनू म-अहू कालू ला ता-क-त
लनल्-यौ-म बिजालू-त व जुनूदिही,
कालल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम्
मुलाकुल्लाहि कम् मिन् फि-अतिन्
कलीलतिन् ग-लबत् फि-अतन्
कसी-रतम् बि-इज़िन्नल्लाहि, वल्लाहु
म-अस्साबिरीन (249) व लम्मा ब-रज़ू
लिजालू-त व जुनूदिही कालू रब्बना
अफिरग़् अलैना सबरव्-व सब्बित्
अक़दामना वन्सुरना अलल्-कौमिल्
काफिरीन (250) फ-ह-ज़मूहुम्
बि-इज़िन्नल्लाहि व क-त-ल दावूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्-मुल्-क वल्-हिकम-त व
अल्ल-महू मिम्मा यशा-उ, व लौ ला दफ़अल्लाहिन्ना-स बअ-ज़हुम् बिबअज़िल्
ल-फ-स-दतिल्-अर्जु व लाकिन्नल्ला-ह ज़ू फज़िल्न् अलल्-आलमीन (251) तिल्-क
आयातुल्लाहि नतलूहा अलै-क बिल्हक्कि, व इन्न-क ल-मिनल्-मुरसलीन (252)

عَلَيْكُمْ وَرَادَةُ بَسْطَةٍ فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مَلِكًا
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ
أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ
الْمُوسَىٰ وَالْهَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ فَلَمَّا أَفْصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ
مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَّمْ يَلْعَمْهُ
فَأَذَانٌ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَفَرَّوْا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا
بِالْيَوْمِ جَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُّلتَقُوا
اللَّهَ لَمْ يَرَوْا بَشِيرًا وَلَا نَذِيرًا وَقَدْ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهِ عَمَّ
الظَّالِمِينَ وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا آفِرْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ فَهَزَمُوهُمُ
بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاتَّهَىٰ اللَّهُ الْمُلُوكَ وَالْحِكْمَةَ وَ
عَلَّمَهُ مَتَائِدَآءَ وَلَوْ أَدْفَعُ اللَّهُ النَّاسَ بَعْضَهُمُ بَعْضًا
لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ
تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَنْزِلُهَا عَلَيْكَ بِالسَّحَابِ وَأَنَّكَ لَبِئْسَ الْمُرْسَلِينَ

बादशाह होने की यह निशानी है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जाएगा जिसमें तस्कीन (और बरकत) की चीज़ है तुम्हारे रब की तरफ से, और कुछ बची हुई चीज़ें हैं जिनको (हज़रत) मूसा (अलैहिस्सलाम) और (हज़रत) हारून (अलैहिस्सलाम) की औलाद छोड़ गई है। उस (सन्दूक) को फरिश्ते ले आएँगे। उसमें तुम लोगों के वास्ते पूरी निशानी है अगर तुम यकीन लाने वाले हो।' (248) ♦

फिर जब तालूत फौजों को लेकर (बैतुल मक्दिस् से अमालिका की तरफ) चले तो उन्होंने कहा कि हक़ तअ़ाला तुम्हारा इम्तिहान करेंगे एक नहर से। सो जो शख्स (बहुत ज़्यादा) पीना शुरू कर दिया, मगर थोड़े आदमियों ने उनमें से ¹ सो जब तालूत और जो मोमिनीन उनके साथ थे नहर के पार उतर गए, कहने लगे कि आज तो हममें जालूत और उसके लश्कर से मुकाबले की ताक़त मालूम नहीं होती, (यह सुनकर) ऐसे लोग जिनको यह ख़्याल था कि वे अल्लाह तअ़ाला के रू-ब-रू पेश होने वाले हैं, कहने लगे कि कितनी ही बार बहुत-सी छोटी-छोटी जमाअतें बड़ी-बड़ी जमाअतों पर खुदा के हुक्म से ग़ालिब आ गई हैं, और अल्लाह तअ़ाला मुस्तक़िल रहने और जमने वालों का साथ देते हैं। (249) और जब जालूत और उसकी फौजों के सामने (मैदान में) आए तो कहने लगे: ऐ हमारे परवरदिगार! हमपर इस्तिक़लाल “यानी मज़बूती और मुस्तक़िल मिज़ाजी” (ग़ैब से) नाज़िल फ़रमाइए और हमारे क़दम जमाए रखिए और हमको इस काफ़िर कौम पर ग़ालिब कीजिए। ² (250) फिर (तालूत वालों ने जालूत वालों को) खुदा तअ़ाला के हुक्म से शिकस्त दे दी और दाऊद (अलैहिस्सलाम) ने जालूत को क़त्ल कर डाला, और उनको (यानी दाऊद को) अल्लाह तअ़ाला ने हुक्मत और हिक्मत अता फ़रमाई, और भी जो-जो मन्ज़ूर हुआ उनको तालीम फ़रमाया। और अगर यह बात न होती कि अल्लाह तअ़ाला बाज़े आदमियों को बाज़ों के ज़रिये से दफ़ा करते रहा करते हैं तो सर-ज़मीन “यानी दुनिया” (पूरी की पूरी) फ़साद और बिगाड़ से भर जाती, लेकिन अल्लाह तअ़ाला बड़े फज़ल वाले हैं जहान वालों पर। ³ (251) ये अल्लाह तअ़ाला की आयतें हैं जो सही-सही तौर पर हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और (इससे साबित है कि) आप बेशक पैग़म्बरों में से हैं। (252)

1. उस सन्दूक में तबर्क़ात थे। जालूत जब बनी इसराईल पर ग़ालिब आया था तो यह सन्दूक भी ले गया था। जब अल्लाह को उस सन्दूक का पहुँचाना मन्ज़ूर हुआ तो यह सामान किया कि जहाँ उस सन्दूक को रखते वहाँ ही सख़्त बलाएँ नाज़िल होतीं। आख़िर उन लोगों ने एक गाड़ी पर उसको लादकर बैलों को हॉक़ दिया। फरिश्ते उसको हॉक़कर यहाँ पहुँचा गए, जिससे बनी इसराईल को बड़ी खुशी हुई और तालूत बादशाह मान लिए गए।

2. इस इम्तिहान की हिक्मत और वजह नाचीज़ (हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि) के जौक़ में यह मालूम होती है कि ऐसे मौकों पर जोश व ख़रोश और भीड़-भाड़ बहुत हो जाया करती है, लेकिन वक़्त पर जमने वाले कम होते हैं और उस वक़्त ऐसों का उखड़ जाना बाकी लोगों के पाँव भी उखाड़ देता है, अल्लाह तअ़ाला को ऐसे लोगों का अलग करना मन्ज़ूर था।

3. इस दुआ की तरतीब बड़ी पाकीज़ा है कि ग़ुल्बे के लिए चूँकि क़दम जमाने की ज़रूरत है इसलिए पहले उसकी दुआ की, और साबित-क़दमी का मदार दिल के जमने पर है इसलिए उससे पहले दिल के जमने और मुस्तक़िल रहने की दुआ की।

4. चूँकि क़ुरआन के बड़े मक़सिद में से हज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का साबित करना भी है, इसलिए अक्सर जिस जगह किसी मज़मून के साथ मुनासबत होने से मौक़ा होता है वहाँ उसको दोहराया जाता है। चुनाँचे इस मक़ाम पर इस किससे की सही ख़बर देना ऐसे तौर पर कि न आपने कहीं पढ़ा न किसी से सुना न आपने देखा, मोज़िज़ा होने की बिना पर नुबुव्वत के दावे के सच्चा होने की खुली दलील है, इसलिए आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर इस्तिक़लाल फ़रमाते हैं।

तीसरा पार: तिल्करूसुलु

सूर: ब-कर: आयत (253 से 286)

ये हज़रते मुसलीन ऐसे हैं¹ कि हमने उनमें से बाज़ों को बाज़ों पर फौकियत दी है, (मिसाल के तौर पर) बाज़े उनमें वे हैं जो अल्लाह तआला से हम-कलाम हुए और बाज़ों को उनमें से बहुत-से दर्जों पर सरफराज़ किया। और हमने (हज़रत) ईसा बिन मरियम को खुली-खुली दलीलें अता फरमाई, और हमने उनकी ताईद रूहुल-कुदुस (यानी जिबराईल) से फरमाई। और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो (उम्मत के) जो लोग उनके बाद हुए आपस में कत्ल व किताल न करते, बाद इसके कि उनके पास (हक बात के) दलाइल पहुँच चुके थे, लेकिन वे लोग (आपस में दीन में) मुख्तलिफ़ हुए, सो उनमें कोई तो ईमान लाया और कोई काफिर रहा, (और नौबत कत्ल व किताल की पहुँची) और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो वे लोग आपस में कत्ल व किताल न करते, लेकिन अल्लाह तआला जो चाहते हैं करते हैं² (253) ♦

ऐ ईमान वालो! खर्च करो उन चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं, इससे पहले कि वह (कियामत का) दिन आ जाए जिसमें न तो खरीद व फरोख्त होगी और न दोस्ती होगी, और न (बिना अल्लाह की इजाज़त के) कोई सिफारिश होगी, और काफिर लोग ही जुल्म करते हैं। (तो तुम ऐसे मत बनो)³ (254) अल्लाह तआला (ऐसा है कि) उसके सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं,⁴ जिन्दा है संभालने वाला है (तमाम आलम का) न उसको ऊँच दबा सकती है और न नींद, उसी के मम्लूक हैं सब जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं, ऐसा कौन शख्स है जो उसके पास (किसी की) सिफारिश कर सके बिना उसकी इजाज़त के,⁵ वह जानता है उनके तमाम हाज़िर व गायब हालात को, और वे मौजूदात उसके मालूमात में से किसी चीज़ को अपने इल्मी इहाते “यानी जानकारी के घेरे” में नहीं ला सकते, मगर जिस कद्र (इल्म देना) वही चाहे, उसकी कुर्सी ने सब आसमानों और ज़मीन को अपने अन्दर ले रखा है,⁶ और अल्लाह को उन दोनों की हिफाज़त कुछ गिराँ नहीं गुज़रती, और वह आलीशान और अज़ीमुशान है। (255) दीन में ज़बरदस्ती (का अपने आपमें कोई मौका) नहीं,⁷ (क्योंकि) हिदायत यकीनन गुमराही से मुन्ताज़ “यानी अलग और नुमायाँ” हो चुकी है, सो जो शख्स शैतान से बद-एतिकाद हो और अल्लाह तआला के साथ अच्छा एतिकाद रखे (यानी इस्लाम कबूल कर ले) तो उसने बड़ा मज़बूत हल्का थाम लिया, जिसको किसी तरह शिकस्तगी नहीं⁸ (हो सकती) और अल्लाह ख़ूब सुनने वाले (और) ख़ूब जानने वाले हैं। (256) अल्लाह साथी है उन

1. चूँकि ऊपर की आयत में जिम्नी तौर पर पैगम्बरों का मुख्तसरन् ज़िक्र आ गया था इसलिए इस आयत में किसी कद्र तफसील उनमें से बाज़ हज़रत के हालात व कमालात की और फिर उनके ज़िक्र की मुनासबत से उनकी उम्मतों की एक खास हालत और उस हालत के वजूद में आने में खुदा की हिकमत व मस्तहत के शामिल होने की तरफ़ इशारा, ये सब मज़ामीन ज़िक्र किये जाते हैं।
2. इस मज़मून में एक तरह से तसल्ली देना है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने यह बात सुना दी कि और भी पैगम्बर मुख्तलिफ़ दर्जों के गुज़रे हैं, लेकिन ईमान किसी की उम्मत में आम नहीं हुआ, किसी ने मुवाफकत की, किसी ने मुखालफत की। और इसमें भी हक़ तआला की हिकमत होती है, भले ही हर शख्स पर ज़ाहिर न हों मगर मुख्तसर तौर पर इतना अकीदा रखना ज़रूरी और लाज़िम है कि कोई हिकमत ज़रूर है।
3. मतलब यह है कि जो नेक अमल दुनिया में छूट जाएगा फिर वहाँ उसकी कोई तलाफ़ी कुदरत से ख़ारिज हो जाएगी। चुनौते तलाफ़ी के तरीकों में से कुछ तरीके तो खुद ही न होंगे, जैसे खरीद व फरोख्त, और बाज़े आम न होंगे जैसे दोस्ती, बाज़े इख्तियारी न होंगे जैसे शफाअत। और इससे मकसूद कियामत के दिन नेक आमाल के बदले और नतीजे को हासिल करने पर कादिर न होने का याद दिलाना है।
4. इस आयत का लकब “आयतुल कुर्सी” है।
5. कियामत में अम्बिया और औलिया गुनाहगारों की शफाअत करेंगे। वे पहले हक़ तआला की मरज़ी पा लेंगे जब शफाअत करेंगे।
6. कुर्सी अर्श से छोटा और आसमानों से बड़ा एक ज़िम्म है। (शेष तफसीर पृष्ठ 78 पर)

बिल्-अरुवतिल्-वुस्का लन्फिसा-म लहा, वल्लाहु समीअुन् अलीम (256) अल्लाहु वलिय्युल्लजी-न आमनू युखिरजुहुम् मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि, वल्लजी-न क-फरु औलिया-उहुमुत्तागूतु युखिरजू-नहुम् मिनन्नूरि इलज्जुलुमाति, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून (257) ♦

अलम् त-र इलल्लजी हाजू-ज इब्राही-म फी रब्बिही अन् आताहुल्लाहुल्-मुल्क ✱ इज् का-ल इब्राहीमु रब्बियल्लजी युह्यी व युमीतु का-ल अ-न उह्यी व उमीतु, का-ल इब्राहीमु फ-इन्नल्ला-ह यअ्ती बिश्शमिस् मिनल्मशिरकि फअ्ति बिहा मिनल्-मरिरबि फ-बुहितल्लजी क-फ-र, वल्लाहु ला यह्दिल् कौमज्जालिमीन (258) औ कल्लजी मर-र अला करयतिव्-व हि-य खावि-यतुन् अला अरुशिहा का-ल अन्ना युह्यी हाजिहिल्लाहु बअ-द मौतिहा फ-अमातहुल्लाहु मि-अ-त अमिन् सुम्-म ब-अ-सहू, का-ल कम् लबिस्-त, का-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ-ज यौमिन्, का-ल बल्लबिस्-त

मि-अ-त अमिन् फन्जुर इला तअमि-क व शराबि-क लम् य-तसन्नह वन्जुर इला हिमारि-क व लि-नज्अ-ल-क आयतल् लिन्नासि वन्जुर इलल्-अजामि कै-फ नुन्शिजुहा सुम्-म नक्सूहा लह्मन्, फ-लम्मा तबय्य-न लहू का-ल अअलमु अन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् कदीर (259) व इज् का-ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कै-फ तुह्यिल्मौता, का-ल अ-व

مِنْ الظَّالِمِينَ إِلَى التَّوْبَةِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ
يُخْرِجُوهُمْ مِنَ التَّوْبَةِ إِلَى الظَّالِمِينَ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ
فِيهَا خَالِدُونَ هَذَا الَّذِي حَاثَبَ ابْنَهُ فِي رِيَّةٍ أَنْ
أَنَّهُ اللَّهُ الْمَلِكُ إِذْ قَالَ ابْنُهُمْ رَبِّي الَّذِي يُبَيِّتُ
قَالَ أَنَا أَنِي وَأُمَيْتُ قَالَ ابْنُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ
مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِي بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ هَذَا الَّذِي مَرَّ عَلَى قَبْرِ
وَأَمِي خَاوِزَةَ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُغْنِي هَذَا وَاللَّهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا قَامَاتُهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ
فَانْظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَبِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ إِلَى جَنْبِكَ
وَلْيَنْصَلِّكَ آيَةُ الْكَوْنِ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا
ثُمَّ نَكْنُسُهَا تَرَاهَا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ وَإِذْ قَالَ ابْنُهُمْ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى
قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ قَالَ بَلَى وَلَكِنْ لَيْسَ بِي إِلَهٌ قَالَتْ فَذَنْ
أَرْبَعَةً مِنَ الظَّالِمِينَ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَى كُلِّ جَبَلٍ

بِأَمْرِ اللَّهِ

مَلِكٌ

लोगों का जो ईमान लाए, उनको (कुफ़ की) अन्धेरियों से निकालकर (या बचाकर) (इस्लाम के) नूर की तरफ लाता है, और जो लोग काफ़िर हैं उनके साथी शयातीन हैं, (इनसानी या जिन्नी) वे उनको (इस्लाम के) नूर से निकालकर (या बचाकर कुफ़ की) अन्धेरियों की तरफ ले जाते हैं, ऐसे लोग दोज़ख में रहने वाले हैं, (और) ये लोग उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (257) ♦

(ऐ मुखातब!) तुझको उस शख्स का किस्सा मालूम नहीं हुआ (यानी नमरूद का) जिसने (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से मुबाहसा किया था, अपने परवर्दिगार के (वजूद के) बारे में, इस वजह से कि खुदा तआला ने उसको हुक्मत दी थी। जब इब्राहीम ने फरमाया कि मेरा परवर्दिगार ऐसा है कि वह ज़िन्दा करता है और मारता है, कहने लगा कि मैं भी ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया: अल्लाह तआला सूरज को (हर दिन) पूरब से निकालता है तू (एक ही दिन) पश्चिम से निकाल दे, इसपर चकित रह गया वह काफ़िर (और कुछ जवाब बन न आया) और अल्लाह तआला (की आदत है कि) ऐसे बेजा राह पर चलने वालों को हिदायत नहीं फरमाते। (258) या तुमको इस तरह का किस्सा भी मालूम है जैसे एक शख्स था¹ कि एक बस्ती पर ऐसी हालत में उसका गुज़र हुआ कि उसके मकानात अपनी छतों पर गिर गए थे,² कहने लगा कि अल्लाह तआला इस बस्ती (के मुद्दों) को उसके मरने के बाद किस कैफ़ियत से ज़िन्दा करेंगे, सो अल्लाह तआला ने उस शख्स को सौ साल तक मुर्दा रखा, फिर उसको ज़िन्दा कर उठाया (और फिर) पूछा कि तू कितनी मुद्दत इस हालत में रहा? उस शख्स ने जवाब दिया कि एक दिन रहा हूँगा या एक दिन से भी कम, अल्लाह तआला ने फरमाया कि नहीं! बल्कि तू सौ साल रहा है।³ तू अपने खाने (की चीज़) और पीने (की चीज़) को देख ले कि नहीं सड़ी-गली, और (दूसरे) अपने गधे की तरफ नज़र कर, और तांकि हम तुझको एक नज़ीर लोगों के लिए बना दें, और (इस गधे की) हड्डियों की तरफ नज़र कर कि हम उनको किस तरह तरकीब दिए देते हैं, फिर उनपर गोशत चढ़ाए देते हैं। फिर जब यह सब कैफ़ियत उस शख्स को वाज़ेह हो गई तो कह उठा कि मैं यकीन रखता हूँ कि बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं।⁴ (259) और (उस वक़्त को याद करो) जबकि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझको दिखला दीजिए कि आप मुद्दों को किस कैफ़ियत से ज़िन्दा करेंगे। इशाद फरमाया: क्या तुम यकीन नहीं लाए? उन्होंने अर्ज़ किया कि यकीन क्यों न लाता, लेकिन इस गरज़ से यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरे दिल को सुकून हो जाए।⁵ इशाद हुआ कि अच्छा तो तुम चार पक्षी लो फिर उनको (पालकर) अपने लिए हिला लो, फिर हर पहाड़ पर उनमें का एक-एक हिस्सा रख दो (और) फिर उन सबको बुलाओ, (देखो) तुम्हारे पास सब दौड़ते चले आएँगे, और ख़ूब यकीन रखो इस बात का कि हक़ तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।⁶ (260) ♦

(पृष्ठ 76 का शेष) 7. ऊपर आयत “व इन्न-क ल-मिन्नल मुसली-न” में पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत, और “आयतुल कुसी” में हक़ तआला की तौहीद मजकूर हुई है, और यही दो चीज़ें इस्लाम की असल और बुनियादी हैं, तो उनके साबित करने से दीने इस्लाम का हक़ होना भी लाज़िमी तौर पर साबित हो गया। इस आयत में इसी से निकालते हुए इस्लाम का ज़बरदस्ती का महल न होना इशाद फरमाते हैं।

8. इस्लाम को मज़बूत पकड़ने वाला चूँकि हलाकत व घाटे से महफूज़ रहता है इसलिए उसको ऐसे शख्स से तश्बीह दी जो किसी मज़बूत रस्सी का हल्का हाथ में मज़बूत थाम कर गिरने से महफूज़ रहता है।

फ़ायदा:- अगर मुर्तद (जो दीन से फिर गया हो) पर या काफ़िर हर्बी पर दलील के मछ्फ़ी होने की वजह से इक़राह यानी ज़बरदस्ती की जाए जैसा कि शरीअत में हुक्म है तो यह अपने आपमें “इक़राह” की नफ़ी के खिलाफ़ नहीं।

1. रूहुल-मआनी में हाकिम की रिवायत से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से और इसहाक़ बिन बशर की रिवायत से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु व अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से नकल किया है कि यह बुजुर्ग उज़ैर अलैहिस्सलाम हैं।

2. यानी पहले छतें गिरीं फिर उनपर दीवारें गिर गईं। मुराद यह कि किसी हादसे से वह बस्ती बिल्कुल वीरान हो गई थी और सब आदमी मर-मरा गए थे।

3. यह तो यकीन था कि अल्लाह तआला कियामत में मुद्दों को ज़िन्दा कर देंगे, मगर उस वक़्त के ज़िन्दा करने का जो ख़्याल ग़ालिब हुआ तो अजीब मामला होने की वजह से एक हैरत-सी दिल पर ग़ालिब हो गई, और चूँकि अल्लाह तआला एक काम को कई तरह कर सकते हैं इसलिए तबीयत में इसकी ख़्वाहिश हुई कि खुदा जाने ज़िन्दा करना किस सूरत से होगा। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 80 पर)

लम् तुअमिन्, का-ल बला व लाकिल्लियत्-मइन्-न कल्बी, का-ल फ-खुज् अरब-अतम्
मिनतैरि फसुरहुन्-न इलै-क सुम्मज्अल् अला कुल्लि ज-बलिम् मिन्हुन्-न जुज्अन्
सुम्मद्अहुन्-न यअती-न-क सअयन्, वअलम् अन्नल्ला-ह अजीजुन् हकीम (260) ❖

म-सलुल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुम फी सबीलिल्लाहि क-म-सलि हब्बतिन् अम्ब-तत्
सब्-अ सनाबि-ल फी कुल्लि सुम्बुलतिम्
मि-अतु हब्बतिन्, वल्लाहु युजाअिफु
लिमंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन्
अलीम (261) अल्लजी-न युन्फिकू-न
अम्वालहुम् फी सबीलिल्लाहि सुम्-म ला
युत्बिअू-न मा अन्फकू मन्नंव्-व ला
अ-जल् लहुम् अज्जुरुहुम् अिन्-द
रब्बिहिम् व ला खौफुन् अलैहिम् व ला
हुम् यद्जन्नून् (262) कौलुम् मअर्रुफुव्-
व मर्राफि-रतुन् खैरुम् मिन्
स-द-कतिय्-यत्बअुहा अजन्, वल्लाहु
गुनिय्युन् हलीम (263) या
अय्युहल्लजी-न आमनू ला तुब्तिलू
स-दकातिकुम् बिल्मन्नि वल्-अजा
कल्लजी युन्फिकू मालहू रिआ-अन्नासि
व ला युअमिनु बिल्लाहि वल्-यौमिल्-
आखिरि, फ-म-सलुहू क-म-सलि
सफवानिन् अलैहि तुराबुन् फ-असाबहू
वाबिलुन् फ-त-र-कहू सल्दन्, ला यकिदरू-न अला शैइम् मिम्मा क-सबू, वल्लाहु ला
यह्दिल्-कौमल् काफिरीन (264) व म-सलुल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुमुब्रतिगा-अ
मर्रजातिल्लाहि व तस्बीतम् मिन् अन्फुसिहिम् क-म-सलि जन्नतिम्-बिरब्बतिन् असाबहा
वाबिलुन् फ-आतत् उकु-लहा जिअर्फैनि फ-इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन् फ-तल्लुन्, वल्लाहु बिमा
तअमलू-न बसीर (265) अ-यवद्दु अ-हदुकुम अन् तकू-न लहू जन्नतुम्-मिन्नखीलिंव्-व

مِنْهُمْ جُزْءًا مِّمَّا أَذَعْنُ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ مِّثْلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمِثْلِ
حَبَّةٍ أُنْبِتَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سَنَابِلَةٍ مِائَةُ حَبَّةٍ
وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ الَّذِينَ
يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا
مَتًّا وَلَا أَدَى لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ
صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَدَى وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَلِيمٌ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَتَكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَدَى كَالَّذِي يُنْفِقُ
مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ
كَمِثْلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ ثَرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَكَرَّكَ صَدَقَاتُ
لَا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكَافِرِينَ وَمِثْلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ
اللَّهِ وَتَحْسِبَاتٍ لِّأَنْفُسِهِمْ كَمِثْلِ جَنَّةٍ يَرْبُو فِيهَا أَصَابِعُهَا وَأَوْبُلٌ
فَاتَتْ أَكْطَافُهَا ضِعْفَيْنِ فَإِنْ لَمْ يُصَيَّبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ أَيُّوذاً أَحَدَكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ

مِثْلُ

जो लोग अल्लाह की राह में अपने मालों को खर्च करते हैं, उनके खर्च किए हुए मालों की हालत ऐसी है जैसे एक दाने की हालत (अल्लाह तआला के नजदीक) जिससे (फर्ज करो) सात बालें जमें (और) हर बाल के अन्दर सौ दाने हों, और यह बढ़ोत्तरी खुदा तआला जिसको चाहता है अता फरमाता है, और अल्लाह तआला बड़ी वुसअत वाले हैं, जानने वाले हैं।¹ (261) जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, फिर खर्च करने के बाद न तो (उसपर) एहसान जतलाते हैं और न (बर्ताव से उसको) तकलीफ पहुँचाते हैं।² उन लोगों को उन (के आमाल) का सवाब मिलेगा उनके परवर्दिगार के पास, और न उनपर कोई खतरा होगा और न वे गमगीन होंगे। (262) (कुछ पास न होने के वक्त) मुनासिब बात कह देना और दरगुज़र करना (हज़ार दर्जे) बेहतर है ऐसी ख़ैरात (देने) से जिसके बाद तकलीफ़ पहुँचाई जाए। और अल्लाह तआला ग़नी हैं, हलीम हैं।³ (263) ऐ ईमान वालो! तुम एहसान जतलाकर या तकलीफ़ पहुँचाकर अपनी ख़ैरात को बर्बाद मत करो, उस शख्स की तरह जो अपना माल खर्च करता है (महज़) लोगों को दिखलाने की गरज़ से, और ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और कियामत के दिन पर, सो उस शख्स की हालत ऐसी है जैसे एक चिकना पत्थर (हो) जिसपर कुछ मिट्टी (आ गई) हो फिर उसपर जोर की बारिश पड़ जाए सो उसको बिलकुल साफ़ कर दे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई ज़रा भी हाथ न लगेगी, और अल्लाह तआला काफ़िर लोगों को (जन्नत का) रास्ता न बतलायेंगे।⁴ (264) और उन लोगों के खर्च किए हुए माल की हालत जो अपने मालों को खर्च करते हैं अल्लाह तआला की रिज़ा हासिल करने की गरज़ से, और इस गरज़ से कि अपने नफ़्तों (को इस कठिन काम का आदी बनाकर उन) में पुख़्तगी पैदा करें, उनकी हालत एक बाग़ की तरह है जो किसी टीले पर हो कि उसपर जोर की बारिश पड़ी हो, फिर वह दोगुना (चौगुना) फल लाया हो, और अगर ऐसे जोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी उसको काफी है, और अल्लाह तुम्हारे कामों को ख़ूब देखते हैं। (265) भला तुम में से किसी को यह बात पसन्द है कि उसका एक बाग़ हो खजूरों का और अंगूरों का, उसके (पेड़ों के) नीचे नहरें बहती हों, उस शख्स के यहाँ उस बाग़ में और भी हर किस्म के (मुनासिब) मेवे हों, और उस शख्स का बुढ़ापा आ गया हो और अहल व अयाल “यानी घर वाले और बाल बच्चे” भी हों जिनमें (कमाने की) ताक़त नहीं, से उस बाग़ पर बगूला आए जिसमें आग का (माद्दा) हो, फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह तआला इसी तरह नज़ीरें बयान फरमाते हैं तुम्हारे लिए ताकि तुम सोचा करो।⁵ (266) ♦

ऐ ईमान वालो! (नेक काम में) खर्च किया करो उम्दा चीज़ को अपनी कमाई में से, और उसमें से जो कि हमने

(पृष्ठ 78 का शेष) अल्लाह तआला को मन्ज़ूर हुआ कि उसका तमाशा उनको दुनिया ही में दिखला दें ताकि एक नज़ीर के ज़ाहिर हो जाने से लोगों को ज़्यादा हिदायत हो।

4. उनकी हैरत का जवाब इस मजमूई कैफ़ियत से देना, इसकी वजह नाचीज़ (हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि) के जौक में यह है कि हैरत की बात यानी कियामत के दिन ज़िन्दा करना मुश्तमिल है कई हिस्सों पर, अब्बल तो खुद ज़िन्दा करना, दूसरे लम्बी मुदत के बाद ज़िन्दा करना, तीसरे ख़ास कैफ़ियत से ज़िन्दा करना, चौथे उस मुदत तक रूह का बाकी रखना, पाँचवे ज़िन्दा होने के बाद बरजुख़ में रहने की मुदत मालूम न होना। पहले जुज़ पर खुद उनके ज़िन्दा करने और उनके ग़धे में जान डालने से दलालत की गई, और दूसरे जुज़ के साबित करने के लिए उनको सौ साल तक मुर्दा रखा, तीसरा जुज़ खुद ग़धा उनके सामने ज़िन्दा करके दिखला दिया, चौथे जुज़ का नमूना खान-पान का बाकी रखना और खुद उनके बदन का बाकी रखना दिखला दिया जो रूह के बाकी रहने के मुम्किन होने पर अच्छी तरह दलालत करता है, क्योंकि बदन और खान-पान अनासिर पर मुश्तमिल होने के सबब रूह के मुकाबले में तब्दीली और ख़राब होने के ज़्यादा काबिल हैं, और पाँचवे अमूर की नज़ीर उनका जवाब में “यौमन् औ बअ-ज़ यौमिन्” (एक दिन या उससे भी कम) कहना है, जैसा कि बिलकुल यही जवाब बाज़ महशर वाले भी देंगे।

5. यानी ज़िन्दा करने का तो यकीन है मगर अक्ली तौर पर उसकी मुख़्तलिफ़ कैफ़ियतें हैं, अब उनमें से मालूम नहीं कौन-सी कैफ़ियत होगी।

6. इस वाकिए को दिखला कर अल्लाह ने कियामत के दिन ज़िन्दा करने की कैफ़ियत बतला दी कि इसी तरह पहले बदन के हिस्से मुख़्तलिफ़ मक़ामात से जमा होकर जिसमें तैयार होंगे फिर उनमें रूह पड़ जाएगी।

1. नेक काम में खर्च करना नीयत के एतबार से तीन किस्म का है, एक नुमाइश के साथ, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 82 पर)

तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा किया है, और रद्दी (नाकारा) चीज़ की तरफ़ नीयत मत ले जाया करो कि उसमें से खर्च करो, हालाँकि तुम कभी उसके लेने वाले नहीं हो मगर देखकर टाल जाओ (तो और बात है)¹ और यकीन रखो कि अल्लाह तआला किसी के मोहताज नहीं, तारीफ़ के लायक़ हैं। (267) शैतान तुमको मोहताजी से डराता है² और तुमको बुरी बात (यानी कन्जूसी) का मशिवरा देता है, और अल्लाह तुमसे वायदा करता है अपनी तरफ़ से गुनाह माफ़ कर देने का और ज़्यादा देने का, और अल्लाह तआला वुसूअत वाले हैं, ख़ूब जानने वाले हैं।³ (268) दीन की समझ जिसको चाहते हैं दे देते हैं, और (सच तो यह है कि) जिसको दीन की समझ मिल जाए उसको बड़ी ख़ैर की चीज़ मिल गई, और नसीहत वही लोग क़बूल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। (यानी जो सही अक्ल रखते हैं) (269) और तुम लोग जो किसी किस्म का खर्च करते हो या किसी तरह की नज़्र “यानी मन्त” मानते हो, सो हक़ तआला को यकीनन सबकी इत्तिला है, और बेजा काम करने वालों का कोई साथी (और हिमायती) न होगा।⁴ (270) अगर तुम ज़ाहिर करके दो सदकों को तब भी अच्छी बात है, और अगर उनको छुपाओ और फकीरों को दे दो तो यह छुपाना तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआला (उसकी बरकत से) तुम्हारे कुछ गुनाह भी दूर कर देंगे। अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों की ख़ूब ख़बर रखते हैं।⁵ (271) उन (काफ़िरों) को हिदायत पर ले आना कुछ आपके ज़िम्मे (फ़र्ज़ या वाजिब) नहीं, लेकिन खुदा तआला जिसको चाहें हिदायत पर ले आएँ। और (ऐ मुसलमानो!) जो कुछ तुम खर्च करते हो अपने फ़ायदे की ग़रज़ से करते हो, और तुम और किसी ग़रज़ से खर्च नहीं करते सिवाय हक़ तआला की ज़ाते पाक की रिज़ा हासिल करने के, और (तथा) जो कुछ माल खर्च कर रहे हो यह सब (यानी इसका सवाब) पूरा-पूरा तुमको मिल जाएगा, और तुम्हारे लिए इसमें ज़रा कमी न की जाएगी।⁶ (272) (सदकात) असल हक़ उन ज़रूरतमन्दों का है जो कैद हो गए हों अल्लाह की राह में,⁷ (और इसी वजह से) वे लोग कहीं मुल्क में चलने-फिरने की (आदतन) संभावना नहीं रखते, (और) नावाक़िफ़ उनको मालदार ख़्याल करता है उनके सवाल से बचने के सबब से, (अलबत्ता) तुम उनको उनके तर्ज़ से पहचान सकते हो (कि तंगदस्ती व फ़ाक़े से चेहरे पर असर ज़रूर आ जाता है) वे लोगों से लिपट कर माँगते नहीं फिरते, और जो माल खर्च करोगे बेशक हक़ तआला को उसकी ख़ूब इत्तिला है। ♦ (273) ♦

जो लोग खर्च करते हैं अपने मालों को रात और दिन में, (यानी वक़्त को ख़ास किए बग़ैर) खुले और छुपे तौर

(पृष्ठ 80 का शेष) उसका कुछ सवाब नहीं। दूसरे मामूली दरजे के इख़लास के साथ, उसका सवाब दस हिस्से मिलता है। तीसरे ज़्यादा इख़लास यानी उसके दरमियानी या आला दरजे के साथ, उसके लिए इस आयत में वायदा है दस से ज़्यादा सात सौ तक, और आयत “मन् ज़ल्लज़ी युकिज़ुल्ला-ह.....” में इस सात सौ के वायदे के बाद और ज़्यादा का भी वायदा किया गया है।

2. बर्ताव से तकलीफ़ पहुँचाना यह कि जैसे अपने एहसान की बिना पर उसके साथ अपमान से पेश आए कि इससे दूसरा तकलीफ़ पाता है, और तकलीफ़ पहुँचाना हराम और अज़ाब को वाजिब करने वाला है। एहसान जताना भी इसमें आ गया।

3. नादारी (कुछ पास न होने) की कैद इसलिए लगाई कि गुंजाइश होते हुए ज़रूरतमन्द की मदद न करना खुद बुरा है, उसको बेहतर क्यों कहा जाता, अलबत्ता नादारी के वक़्त नरमी से जवाब दे देना और साइल की सख़्ती को टाल देना चूँकि सवाब का सबब है इसलिए इसको ख़ैर फ़रमाया।

4. मालूम होता है कि खर्च करने के लिए ईमान के साथ एक शर्त इख़लास का सही होना भी है, और एहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने से बाज़ रहना उसके बाकी रहने की शर्त है, इसलिए मुनाफ़िक् और दिखावा करने वाले के खर्च करने को बातिल और एहसान जताने और तकलीफ़ पहुँचाने को बातिल करने वाला (यानी ख़ैरात को बेकार और जाया करने वाला) कहा गया, कि उसमें सही होने और बाकी रहने की शर्त मौजूद नहीं है।

5. ज़ाहिर बात है कि किसी को अपने लिए यह बात पसन्द नहीं आ सकती। पस जब तुम इस मिसाल के वाक़िए को पसन्द नहीं करते तो नेकियों के बातिल और बेकार करने को कैसे ग़वारा करते हो?

1. यह उस शख्स के लिए है जिसके पास उम्दा चीज़ हो और फिर वह बुरी और निकम्मी चीज़ खर्च करे। और जिसके पास अच्छी हो ही नहीं वह इस मुमानअत (मनाही) से बरी है और उसकी वह बुरी चीज़ मक़बूल है।

2. यानी अगर खर्च करोगे या अच्छा माल खर्च करोगे तो मोहताज हो जाओगे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 84 पर)

जर्बन् फिल्अर्जि यह्सबुहुमुल्-जाहिलु अग्नि-या-अ मिनत्त-अफ्फुफि तअरिफुहुम
बिसीमाहुम् ला यस्अलूनन्ना-स इल्हाफन्, व मा तुन्फिकू मिन् खैरिन् फ-इन्नल्ला-ह बिही
अलीम ♦ (273) ♦

अल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रव्-व अलानि-यतन् फ-लहुम्
अर्जुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् व ला खौफुन्
अलैहिम् व ला हुम् यहज़नून (274)

अल्लजी-न यअकुलूनरिबा ला यकूमू-न
इल्ला कमा यकूमल्लजी य-तखब्बतुहुश्-
शैतानु मिनल्मस्सि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम्

कालू इन्नमल्- बैअु मिस्तुरिबा ❖ व

अहल्लल्लाहुल्बै-अ व हरमरिबा, फ-मन्

जा-अहू मौअि-ज़तुम् मिररब्बिही फन्तहा

फ-लहू मा स-ल-फ, व अम्रहू

इलल्लाहि, व मन् आ-द फ-उलाइ-क

अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा ख़ालिदून

(275) यम्हकुल्लाहुरिबा व युबिस्स-

दकाति, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल

कफ़ारिन् असीम (276)

इन्नल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति

व अकामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त

लहुम् अर्जुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् व ला

खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहज़नून (277)

या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व ज़रू

मा बकि-य मिनरिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (278)

फ-इल्लम् तफ़अलू फअ-ज़नू बि-हर्बिम्

मिनल्लाहि व रसूलिही व इन् तुब्तुम् फ-लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ला तज़्लिमू-न व ला

तुज़्लमून (279) व इन् का-न ज़ू अुस्सुरतिन् फ-नज़ि-रतुन् इला मैस-रतिन्, व अन्

البقرة

२३

تلك الرسل

وَجَاءَ اللَّهُ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤْتِ الْيَتَامَىٰ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ
لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ
ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْغَايِلُ مِنْ الثَّعْتِفِ
تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْتَكُونُ النَّاسُ الْغَافِقَ وَمَا تُنْفِقُوا
مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ
بِالْيَسَرِ وَالْإِسْرَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا
لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا كَمَا يَقُولُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ
النَّاسِ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّا الْبَائِعُونَ الرِّبَا وَأَحَلَّ
اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ
فَاتَّقِهَا فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ
أَصْنَبُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ يَتَخَقَّ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرْبِي
الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِنَّ

مَثَلٌ

पर (यानी हालात को खास किए बगैर) सो उन लोगों को उनका सवाब मिलेगा अपने रब के पास, और उनपर कोई ख़तरा नहीं है और न वे ग़मगीन होंगे। (274) जो लोग सूद खाते हैं, नहीं खड़े होंगे (क़ियामत में क़ब्रों से) मगर जिस तरह खड़ा होता है ऐसा शख्स जिसको ख़बूती बना दे लिपट कर, (यानी हैरान व मद्होश) यह (सज़ा) इसलिए (होगी) कि उन लोगों ने कहा था कि बैअू “यानी तिजारत” भी तो सूद की तरह है, हालाँकि अल्लाह ने बैअू को हलाल फ़रमाया है और सूद को हराम करार दिया है। फिर जिस शख्स को उसके परवर्दिगार की तरफ़ से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया तो जो कुछ पहले (लेना) हो चुका है वह उसी का रहा, और (बातिन का) मामला उसका खुदा के हवाले रहा। और जो शख्स फिर लौट जाए ‘यानी दोबारा सूदी मामले में मशगूल हो जाए’ तो ये लोग दोज़ख़ में जाएँगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (275) अल्लाह तआला सूद को मिटाते हैं¹ और सदकात को बढ़ाते हैं,² और अल्लाह पसन्द नहीं करते किसी कुफ़्र करने वाले को (और) किसी गुनाह के काम करने वाले को। (276) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए और (खास तौर पर) नमाज़ की पाबन्दी की और ज़कात दी, उनके लिए उनका सवाब होगा उनके परवर्दिगार के पास, और (आख़िरत में) उनपर कोई ख़तरा नहीं होगा और न वे ग़मगीन होंगे।³ (277) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो और जो कुछ सूद का बकाया है उसको छोड़ दो अगर तुम ईमान वाले हो। (278) फिर अगर तुम इसपर अमल न करोगे तो इश्तिहार सुन लो जंग का अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल की तरफ़ से, (यानी तुमपर जिहाद होगा) और अगर तुम तौबा कर लोगे तो तुमको तुम्हारे असल माल मिल जाएँगे, न तुम किसी पर जुल्म करने पाओगे और न तुमपर कोई जुल्म करने पाएगा।⁴ (279) और अगर तंगदस्त हो तो मोहलत देने का हुक्म है खुशहाली तक। और यह (बात) कि माफ़ ही कर दो और ज़्यादा

(पृष्ठ 82 का शेष) 3. आयत का हासिल यह हुआ कि ऐसे खर्च करने में नुकसान तो बिल्कुल नहीं और नफ़ा हर तरह का है कि मफ़िरत भी मिले और फ़ज़ल भी। पस समझ का तकाज़ा यही है कि ऐसी हालत में शैतानी वस्वों को हरगिज़ क़बूल न करे। और अगर ज़ाहिर में और यकीनी तौर पर मोहताजी के असबाब व हालात मौजूद हों तो शरीअत खुद ऐसे शख्स को नफ़ली सदकात व ख़ैरात से रोकती है, और ऐसे शख्स के खर्च न करने को कन्ज़ूसी भी नहीं कह सकते।

4. बेजा काम करने वालों से न सिर्फ़ वे लोग मुराद हैं जो ज़रूरी शर्तों का लिहाज़ नहीं करते बल्कि वे भी मुराद हैं जो अहक़ाम की मुख़ालफ़त करते हैं, उनको खुले तौर पर वईद सुना दी।

5. यह आयत फ़र्ज़ और नफ़िल सब सदकात को शामिल है और सबमें छुपाना ही अफ़ज़ल है, और छुपाने के अफ़ज़ल होने से आयत में मुराद अपनी ज़ात में अफ़ज़ल होना है। पस अगर किसी मक़ाम पर किसी सबब से जैसे तोहमत को ख़त्म करने या इस उम्मीद पर कि लोग मेरी पैरवी करेंगे, वगैरह के सबब इज़हार को तरज़िह हो जाए तो यह अपने आपमें अफ़ज़लियत के मनाफ़ी नहीं है। और यह जो कहा ‘कुछ गुनाह’ तो पज़ह इसकी यह है कि ऐसी नेकियों से सिर्फ़ छोटे गुनाह माफ़ होते हैं।

6. यानी तुमको अपने बदले से मतलब रखना चाहिए और बदला हर हाल में मिलेगा, फिर तुमको इससे क्या बहस कि हमारा सदका मुसलमान ही को मिले काफ़िर को न मिले। खुलासा यह कि नीयत भी तुम्हारी असल में अपना ही नफ़ा हासिल करने की है, और हकीक़त में भी हासिल खास तुम ही को होगा, फिर इसपर नज़र क्यों की जाती है कि यह नफ़ा खास इसी तरीक़े से हासिल किया जाए कि मुसलमान को ही सदका दें काफ़िर को न दें। और जानना चाहिए कि हदीस में जो आया है कि तेरा खाना खास मुतकी खाया करे तो मुराद उससे दावत का खाना है, और इस आयत में ज़रूरत का खाना मुराद है, पस टकराव और इख़िलाफ़ का शुब्हा न किया जाए।

7. यानी दीन की ख़िदमत में। और जानना चाहिए कि हमारे मुल्क में इस आयत के मिस्दाक़ (यानी जिनपर यह फिट आती है) सबसे ज़्यादा वे हज़रात हैं जो दीनी उलूम की ख़िदमत और उनको फैलाने में मशगूल हैं।

1. कभी तो दुनिया ही में सब बर्बाद हो जाता है, वरना आख़िरत में तो यकीनी बर्बादी है, क्योंकि वहाँ उसपर अज़ाब होगा।

2. कभी तो दुनिया में भी वरना आख़िरत में तो यकीनन बढ़ता है, क्योंकि वहाँ उसपर बहुत-सा सवाब मिलेगा, जैसा कि ऊपर की आयत में मज़कूर हुआ।

3. ऊपर की आयत में सूद खाने वालों का कौल “इन्-मल् बैअु मिस्तुरिबा” (शेष तफ़सीर पृष्ठ 86 पर)

तसद्दकू खैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअलमून (280) वत्तकू यौमन् तुरजअ-न फीहि इलल्लाहि,
सुम्-म तुवफ्फा कुल्लु नफिसम् मा क-सबत् व हुम् ला गुज्जलमून (281) ❖

या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा तदायन्तुम् बिदैनिन् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फक्तुबूहु,
वलयक्तुब् बैनकुम् कातिबुम् बिल्अदलि व ला यअ-ब कातिबुन् अय्यक्तु-ब कमा

अल्ल-महुल्लाहु फलयक्तुब् वल्युम्लि-
लिल्लजी अलैहिल्-हक्कु वलयत्तकिल्ला-ह
रब्बहू व ला यब्दास् मिन्हु शैअन्,
फ-इन् कानल्लजी अलैहिल्हक्कु सफीहन्
औ जअीफन् औ ला यस्ततीअु
अय्युमिल्-ल हु-व फल्युम्लिल् वलय्युहू
बिल्अदलि, वस्तशिहदू शहीदैनि
मिरिजालिकुम् फ-इल्लम् यकूना रजुलैनि
फ-रजुलुव्वमूर-अतानि मिम्मन् तरजौ-न
मिनश्शु-हदा-इ अन् तजिल्-ल इह्दाहुमा
फतुजक्कि-र इह्दाहुमल्-उखरा, व ला
यअबश्-शु-हदा-उ इजा मा दुअू, व ला
तस्अमू अन् तक्तुबूहु सगीरन् औ
कबीरन् इला अ-जलिही, जालिकुम्
अक्सतु अिन्दल्लाहि व अक्वमु
लिश्शहा-दति व अद्ना अल्ला तरताबू

इल्ला अन् तक्-न तिजारतन् हाजि-रतन् तुदीरुनहा बैनकुम् फलै-स अलैकुम् जुनाहुन् अल्ला
तक्तुबूहा, व अशहिदू इजा तबायअ्तुम् व ला युजार्-र कातिबुव्-व ला शहीदुन्, व इन्
तफअलू फ-इन्नहू फुसूकुम् बिकुम्, वत्तकुल्ला-ह, व युअल्लिमुकुमुल्लाहु, वल्लाहु बिकुल्लि
शैइन् अलीम (282) व इन् कुन्तुम् अला स-फरिब्वलम् तजिदू कातिबन् फरिहानुम्

تِلْكَ الرِّسَالَةُ ٢٢٢ البقرة
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ فَإِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ فَاذْنُؤُنَا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۚ وَإِنْ تُبْتِغُوا فَلََكُمْ رُدُّوْهُمْ وَإِلَكُمْ أَمْوَالُهُمْ
وَلَا تَطْلُمُونَهَا ۚ وَإِنْ كَانَ دُونُ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ
وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ وَاتَّقُوا يَوْمًا
تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَعْتُمْ بَدَنِي
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ وَلْيَمْلِكِ
الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْغَسْ مِنْ شَيْءٍ
فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَوِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ
أَنْ يُعْلِمَ هُوَ فليَمْلِكِ وَلْيُكِّرْ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا
شَهِيدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ
وَأَمْرَئَتَيْنِ مَعْتَن تَرْضَوْنَ مِنَ الشَّهَادَةِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا
فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ وَلَا يَأْبَ الشَّهَادَةُ إِذَا مَا دُعُوا ۚ
وَلَا تَسْعَوْا أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ذَلِكُمْ
أَفْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۚ

مَنْ

बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुमको (इसके सवाब की) ख़बर हो।¹ (280) और उस दिन से डरो जिसमें तुम अल्लाह तआला की पेशी में लाए जाओगे, फिर हर शख्स को उसका किया हुआ (बदला) पूरा-पूरा मिलेगा, और उनपर किसी किस्म का जुल्म न होगा। (281) ❖

ऐ ईमान वालो! जब उधार का मामला करने लगे,² एक मुकर्ररा मीयाद तक (के लिए) तो उसको लिख लिया करो। और यह ज़रूरी है कि तुम्हारे आपस में (जो) कोई लिखने वाला हो (वह) इन्साफ़ के साथ लिखे, और लिखने वाला लिखने से इनकार भी न करे, जैसा कि अल्लाह तआला ने उसको (लिखना) सिखला दिया, उसको चाहिए कि लिख दिया करे, और वह शख्स लिखवा दे जिसके ज़िम्मे हक़ वाजिब हो, और अल्लाह तआला से जो कि उसका परवर्दिगार है डरता रहे, और उसमें से ज़रा बराबर (बतलाने में) कमी न करे। फिर जिस शख्स के ज़िम्मे हक़ वाजिब था वह अगर कम-अक़ल हो या कमज़ोर बदन वाला हो या खुद लिखने की कुदरत न रखता हो,³ तो उसका कारकुन ठीक-ठीक तौर पर लिखाए। और दो शख्सों को अपने मर्दों में से गवाह (भी) कर लिया करो,⁴ फिर अगर वे दो गवाह मर्द (मयस्सर) न हों तो एक मर्द और दो औरतें (गवाह बना ली जाएँ) ऐसे गवाहों में से जिनको तुम पसन्द करते हो, ताकि उन दोनों औरतों में से कोई एक भूल भी जाए तो उनमें की एक दूसरी को याद दिला दे। और गवाह भी इनकार न किया करें जब (गवाह बनने के लिए) बुलाए जाया करें। और तुम उस (कर्ज़) के (बार-बार) लिखने से उकताया मत करो, चाहे वह (मामला) छोटा हो या बड़ा हो। यह लिख लेना इन्साफ़ को ज़्यादा कायम रखने वाला है अल्लाह के नज़दीक और शहादत का ज़्यादा दुरुस्त रखने वाला है और इस बात के लिए ज़्यादा मुनासिब है कि तुम (मामले के मुताल्लिक) किसी शुब्हा में न पड़ो, मगर यह कि कोई सौदा हाथों-हाथ हो, जिसको आपस में लेते देते हो तो उसके न लिखने में तुमपर कोई इल्जाम नहीं, और (इतना उसमें भी ज़रूर कर लिया करो कि) ख़रीद व बेच के वक़्त गवाह कर लिया करो, और किसी लिखने वाले को तकलीफ़ न दी जाए और न किसी गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो इसमें तुमको गुनाह होगा, और खुदा से डरो और अल्लाह (का तुमपर एहसान है कि) तुमको तालीम फ़रमाता है और अल्लाह तआला सब चीज़ों के जानने वाले हैं।⁵ (282) और

(पृष्ठ 84 का शेष) उनके कुफ़ पर दलालत करता है। उसके मुकाबिल इस आयत में “आ-मनू” लाया गया। और वहाँ उनकी सूद की बद-अमली मज़कूर थी, जिससे उन लोगों का दुनिया की तरफ़ राग़िब होना भी समझ में आता था, यहाँ उनका अच्छे अमल करना मुख़्तसर तौर पर “अमिलुस्सालिहाति” से और तफ़सीली तौर पर अल्लाह की तरफ़ राग़िब होना “अक़ामुस्सला-त” से, और सूद का माल हासिल करने के बजाय उसके उलट माल ख़र्च करना “आतुज़्ज़का-त” से ज़िक्र हुआ है। और ज़ाहिर है कि इन मुकाबलों की रियायत से कलाम में किस कदर हुस्न व खूबी आ गई।

4. इस आयत में जो यह फ़रमाया है कि अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारा असल माल तुम्हें मिलेगा, इससे समझ में आता है कि तौबा न करने की सूरत में असल माल भी न मिलेगा।

1. मुफ़्तिस को मोहलत देना वाजिब है। जब उसको गुंजाइश हो फिर मुतालबे की इजाज़त है।

2. चाहे दाम उधार हो या जो चीज़ ख़रीदनी हो वह उधार हो।

3. जैसे गूँगा है और लिखने वाला उसका इशारा नहीं समझता, या जैसे दूसरे मुल्क का रहने वाला है और दूसरी ज़बान बोलता है और लिखने वाला उसकी बोली नहीं समझता।

4. शरीअत में दावे को साबित करने का असल मदार यही गवाह हैं अगरचे दस्तावेज़ न हो, और ख़ाली दस्तावेज़ बग़ैर गवाहों के ऐसे मामलात में हुज्जत और मोतबर नहीं। दस्तावेज़ लिखना सिर्फ़ याददाश्त की आसानी के लिए है कि उसका मज़मून सुनकर तबई तौर पर अक्सर वाकिआ याद आ जाता है।

5. लिखने में तीन फ़ायदे बयान फ़रमाए। अवल का हासिल यह है कि एक का हक़ (शेष तफ़सीर पृष्ठ 88 पर)

मक्बू-जतुन्, फ-इन् अमि-न बअजुकुम् बअजन् फल्युअदिदल्लजिअतुमि-न अमान-तहू
वलयत्तकिल्ला-ह रब्बहू, व ला तक्तुमुश्शहाद-त, व मय्यक्तुम्हा फ-इन्नहू आसिमुन् कल्बुहू,
वल्लाहु बिमा तअमलू-न अलीम (283) ♦

लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अजि व इन् तुब्बू मा फी अन्फुसिकुम् औ तुख्फूहू
युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु, फ-यग्फिरु
लिमय्यशा-उ व युअज्जिबु मय्यशा-उ,
वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीर

(284) आ-मनरसूलु बिमा उन्जि-ल
इलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअमिनून, कुल्लुन्
आम-न बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व
कुतुबिही व रुसुलिही, ला नुफर्रिक्कु बै-न
अ-हदिम् मिर्रसुलिही, व कालू समिअना
व अ-तअना गुफरान-क रब्बना व
इलैकल् मसीर (285) ला
युकल्लिफुल्लाहु नफसन् इल्ला वुस्अहा,
लहा मा क-सबत् व अलैहा
मक्त-सबत्, रब्बना ला तुआखिज्ना

इन्-नसीना औ अख्तअना, रब्बना व ला तस्मिल् अलैना इस्सन् कमा हमल्लतहू अलल्लजि-न
मिन् कब्लिना, रब्बना व ला तुहम्मिल्ला मा ला ताक्-त लना बिही वअफु अन्ना, वगिफ्र
लना, वरहम्ना, अन्-त मौलाना फन्सुरना अलल् कौमिल् काफिरीन (286) ♦

تِلْكَ الرِّسَالَةُ
۲۵
الْبَقَرَةُ

أَنْ تَكُونُ تِجَارَةً حَاصِرَةً تُدِيرُوهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا وَأَشْهَدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا بَضَاءُ
كَاتِبٍ وَلَا شَهِيدٍ وَإِنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا
اللَّهَ وَيَعْلَمَكُمُ اللَّهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ
عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تجدُوا كَاتِبًا فَآفَهِمْ مَقْبُوضَةً فَإِنْ أَصَحَّ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ
رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَإِنْ تُبْذَرِ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفَوُ بِحِسَابِكُمْ بِهِ
اللَّهُ يَغْفِرْ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبْ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ
وَالْمُؤْمِنُونَ كُلُّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَكَيْتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ
لَا تَفْرِقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
عُفْرَانَكُ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ لَا يَكْفُرُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا
وَسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا
إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا

مَثَلٌ

अगर तुम कहीं सफर में हो और (वहाँ) कोई लिखने वाला न पाओ, सो रहन रखने की चीजें (हैं) जो कब्जे में दे दी जाएँ।¹ और अगर एक-दूसरे का एतिबार करता हो तो जिस शख्स का एतिबार कर लिया गया है (यानी कर्ज लेने वाला) उसको चाहिए कि दूसरे का हक (पूरा-पूरा) अदा कर दे और अल्लाह तआला से जो कि उसका परवर्दिगार है डरे। और गवाही को मत छुपाया करो, और जो शख्स उसको छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा, और अल्लाह तआला तुम्हारे किए हुए कामों को खूब जानते हैं।² (283) ♦

अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं सब जो कुछ कि आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं। और जो बातें तुम्हारे नफ़्सों में हैं उनको अगर तुम ज़ाहिर करोगे या कि छुपाओगे हक तआला तुमसे हिसाब लेंगे,³ फिर (कुर्फ व शिर्क के अलावा) जिसके लिए मन्ज़ूर होगा बख़्श देंगे और जिसको मन्ज़ूर होगा सज़ा देंगे, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाले हैं। (284) एतिकाद रखते हैं रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उस चीज़ का जो उनके पास उनके रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है, और मोमिनीन भी सबके-सब अक्कीदा रखते हैं अल्लाह के साथ और उसके फ़रिश्तों के साथ और उसकी किताबों के साथ और उसके पैग़म्बरों के साथ कि हम उसके पैग़म्बरों में से किसी में तफ़रीक नहीं करते, और उन सबने यूँ कहा कि हमने (आपका इर्शाद) सुना और खुशी से माना, हम आपकी बख़्शि़श चाहते हैं ऐ हमारे परवर्दिगार, और आप ही की तरफ़ (हम सबको) लौटना है। (285) अल्लाह तआला किसी शख्स को मुकल्लफ़ नहीं बनाता मगर उसी का जो उसकी ताक़त (और इख़्तियार) में हो। उसको सवाब भी उसी का मिलेगा जो इरादे से करे, और उसपर अज़ाब भी उसी का होगा जो इरादे से करे।⁴ ऐ हमारे रब! हमपर पकड़ न फ़रमाइए अगर हम भूल जाएँ या चूक जाएँ, ऐ हमारे रब! और हमपर कोई सख़्त हुक्म न भेजिए जैसे हमसे पहले लोगों पर आपने भेजे थे, ऐ हमारे रब! और हमपर कोई ऐसा बोझ (दुनिया या आख़िरत का) न डालिए जिसकी हमको सहार न हो, और दरगुज़र कीजिए हमसे, और बख़्श दीजिए हमको, और रहम कीजिए हमपर, आप हमारे काम बनाने वाले हैं (और काम बनाने वाला तरफ़दार होता है) सो आप हमको काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कीजिए।⁵ (286) ♦

(पृष्ठ 86 का शेष) दूसरे के पास न जाएगा न रहेगा। दूसरे का हासिल यह है कि गवाहों को आसानी होगी। तीसरे का हासिल यह है कि मामला करने वालों का जी साफ़ रहेगा। तीनों फ़ायदों का अलग-अलग होना ज़ाहिर है। और इन फ़ायदों का इस तरह बयान करना करीना है लिखने के मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) होने का, इसी तरह गवाह करना भी मुस्तहब है, अलबत्ता लिखने वाले और गवाह को नुक़सान पहुँचाना हराम है, “फुसूकुन् बिकुम्” इसका खुला करीना है। और यह जो फ़रमाया कि न लिखने में इल्ज़ाम नहीं तो मुराद यह है कि दुनिया का नुक़सान नहीं वरना गुनाह तो किसी मामले के न लिखने में नहीं है।

1. जम्हूर उलमा का इतिफ़ाक़ है कि रहन रखना जिस तरह सफ़र में जायज़ है हज़र (वतन और ठहरने की जगह) में भी जायज़ है। यहाँ ज़िक्र करने में सफ़र को ख़ास करने की वजह यह है कि हज़र के मुकाबले में सफ़र में इसकी ज़रूरत ज़्यादा पड़ेगी।

मसला: जो चीज़ रहन रखी जाए उसपर जब तक उसका कब्ज़ा न हो जाए जिसके पास वह रखी गई है, वह रहन नहीं होता।

2. शहादत (गवाही) का छुपाना दो तरह से है, एक यह कि बिल्कुल बयान न करे, दूसरे यह कि ग़लत-बयानी करे। दोनों में असल वाक़िआ छुप गया और दोनों सूरतें हराम हैं। जब किसी हक़दार का हक़ बग़ैर उसकी शहादत के जाया होने लगे और वह दरख़्वास्त भी करे, तो उस वक़्त गवाही देने से इनकार करना हराम है। चूँकि शहादत का देना वाजिब है इसलिए उसपर उज़रत लेना जायज़ नहीं, अलबत्ता आने-जाने का ख़र्च और ज़रूरत के मुताबिक़ खाना-पीना साहिबे मामला के ज़िम्मे है। अगर ज़्यादा आ जाए तो बक़िया वापस कर दे।

3. ‘मा फी अन्फुसिकुम्’ से मुराद दिल की इख़्तियारी बातें हैं।

4. यहाँ जो सवाब व अज़ाब का मदार आमाल और मेहनत पर रखा, मुराद इससे सवाब व अज़ाब शुरूआत में है न कि किसी के देने या सबब बनने से।

5. हदीस में है कि ये सब दुआएँ कबूल हुईं।

3 सूरतु आलि इमरान 89

(मदनी) इस सूर: में अरबी के 15326 अक्षर, 3542 शब्द
200 आयतें और 20 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़-लाम्-मीम् (1) अल्लाहु ला
इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल्-कय्यूम् (2)
नज्ज-ल अलैकल्-किता-ब बिल्हक्कि
मुसद्दिदक् लिलमा बै-न यदैहि व
अन्जलतौरा-त वल्-इन्जील (3) मिन्
कब्सु हुदल्लिन्नासि व अन्ज-लल्
फुरका-न, इन्नल्लजी-न क-फरु
बिआयातिल्लाहि लहुम् अजाबुन् शदीदुन्,
वल्लाहु अजीजुन् जुन्तिकाम (4)
इन्नल्ला-ह ला यख्फा अलैहि शैउन्
फिल्अर्जि व ला फिस्समा-इ (5)
हुवल्लजी युसव्विरुकुम् फिल्अर्हामि
कै-फ यशा-उ, ला इला-ह इल्ला हुवल्
अजीजुल् हकीम (6) हुवल्लजी अन्ज-ल
अलैकल्-किता-ब मिन्हु आयातुम्
मुस्कमातुन् हुन्-न उम्मुल्-किताबि व

تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ الْمُبِينِ
حَمَلَتْهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْنَا مَا لَا خَلْقَ
لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفُ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ
يَا حَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ
مِنْ قَبْلِ هَذَا هُدًى لِلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو
النِّعَامِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا
فِي السَّمَاءِ هُوَ الَّذِي يَصُوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ
فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ
ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا
اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ لِمَا كُتِبَ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ
رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْ قُلُوبَنَا بَعْدَ

3 सूर: आलि इमरान 89

सूर: आलि इमरान मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 200 आयतें और 20 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ्-लाम्-मीम् (1) अल्लाह तआला ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद बनाने के काबिल नहीं और वह जिन्दा (हमेशा रहने वाले) हैं, सब चीज़ों के संभालने वाले हैं।¹ (2) अल्लाह तआला ने आपके पास कुरआन भेजा है हक के साथ इस कैफ़ियत से कि वह तस्दीक करता है उन (आसमानी) किताबों की जो उससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं, और (इसी तरह) भेजा था तौरात और इन्जील को (3) इससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते, और अल्लाह तआला ने भेजे मोजिज़ात, बेशक जो लोग इनकारी हैं अल्लाह की आयतों के उनके लिए सख़्त सज़ा है, और अल्लाह तआला ग़ल्बे (और कुदरत) वाले हैं, (और) बदला लेने वाले हैं। (4) बेशक अल्लाह से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है, (न कोई चीज़) ज़मीन में और न (कोई चीज़) आसमान में। (5) वह ऐसी ज़ाते पाक है कि तुम्हारी सूरत (व शक्ल) बनाता है रहमों “यानी बच्चेदानियों” में, जिस तरह चाहता है। कोई इबादत के लायक नहीं सिवाय उसके, वह ग़ल्बे वाले हैं (और) हिक्मत वाले हैं। (6) वह ऐसा है जिसने नाज़िल किया तुमपर किताब को जिसमें का एक हिस्सा वे आयतें हैं जो कि मुराद के इश्तिबाह “यानी पोशीदा और मुश्तबह होने” से महफूज़ हैं।² और यही आयतें असली मदार हैं (इस) किताब का,³ और दूसरी आयतें ऐसी हैं जो कि मुराद में मुश्तबह हैं,⁴ सो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है वे उसके उसी हिस्से के पीछे हो लेते हैं जो मुराद में मुश्तबह है, (दीन में) शोरिश “यानी फितना” ढूँढने की गरज़ से, और उसका (ग़लत) मतलब ढूँढने की गरज़ से, हालाँकि उनका (सही) मतलब सिवाय हक तआला के कोई और नहीं जानता। और जो लोग (दीन के) इल्म में पुख्तगी रखने वाले (और समझदार) हैं वे यूँ कहते हैं कि हम इसपर (इज्मालन् “यानी सरसरी और समझ में न आने के बावजूद” यकीन रखते हैं, (ये) सब हमारे परवर्दिगार की तरफ़ से हैं, और नसीहत वही लोग कबूल करते हैं जो कि अक्ल वाले हैं।⁵ (7) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे दिलों को टेढ़ा न कीजिए बाद इसके कि आप हमको हिदायत कर चुके हैं, और हमको अपने पास से (खास) रहमत अता फरमाइए, बेशक आप बड़े अता फरमाने वाले हैं।⁶ (8) ऐ हमारे परवर्दिगार! आप बेशक तमाम आदमियों को (मैदाने हश्म में)

1. ‘हय्यु व कय्यूम्’ की सिफ़ात लाने में बातिल माबूदों के माबूद न होने की अक्ली दलील पर इशारा है क्योंकि उनमें ये सिफ़तें नहीं हैं।
2. यानी उनका मतलब ज़ाहिर है।
3. यानी मायने ज़ाहिर न करने वाली आयतों को भी मायने ज़ाहिर करने वाली के मुवाफ़िक बनाया जाता है।
4. यानी उनका मतलब पोशीदा है, चाहे मुख़्तसर होने की वजह से, चाहे किसी ज़ाहिर मुराद वाली नस्स से टकराने की वजह से।
5. बाज़ तौहीद के इनकारी लोगों का बाज़ ऐसे कलिमात से जो तौहीद के ख़िलाफ़ वहम में डालने वाले हों, से इस्तिदलाल हो सकता था, चुनौचे कुछ ईसाइयों ने लफ़्ज़ “रुहुल्लाह” और “कलिमतुल्लाह” से जो कि कुरआन में आए हैं, अपने मुद्दा पर इल्ज़ामी तौर पर इस्तिदलाल किया था। इस आयत में उस शुब्हे का जवाब है। जिसका हासिल यह है कि ऐसे कलिमात से जिनकी मुराद पोशीदा है हुज्जत पकड़ना दुरुस्त नहीं, बल्कि अकायद का मदार वाज़ेह और खुली नुसूस (दीन के वे अहक़ाम जो वाज़ेह हैं) हैं, और जिनकी मुराद पोशीदा हो उनपर जबकि उनकी तफ़सीर मालूम न हो इज्मालन् ईमान ले आना वाजिब है, ज़्यादा तफ़तीश की इजाज़त नहीं।
6. यह हक़ परस्तों का दूसरा क़माल ज़िक्र किया गया है, कि बावजूद हक़ तक पहुँचने के उसपर नाज़ों और मगरूर नहीं बल्कि हक़ तआला से हक़ पर जमे रहने की दुआ करते हैं।

हदैतना व हब् लना मिल्लदुन्-क रह्म-तन् इन्न-क अन्तल् वह्हाब (8) रब्बना इन्न-क जामिअुन्नासि लियौमिल्-ला रै-ब फीहि, इन्नल्ला-ह ला युख्लिफुल् मीआद (9) ❖

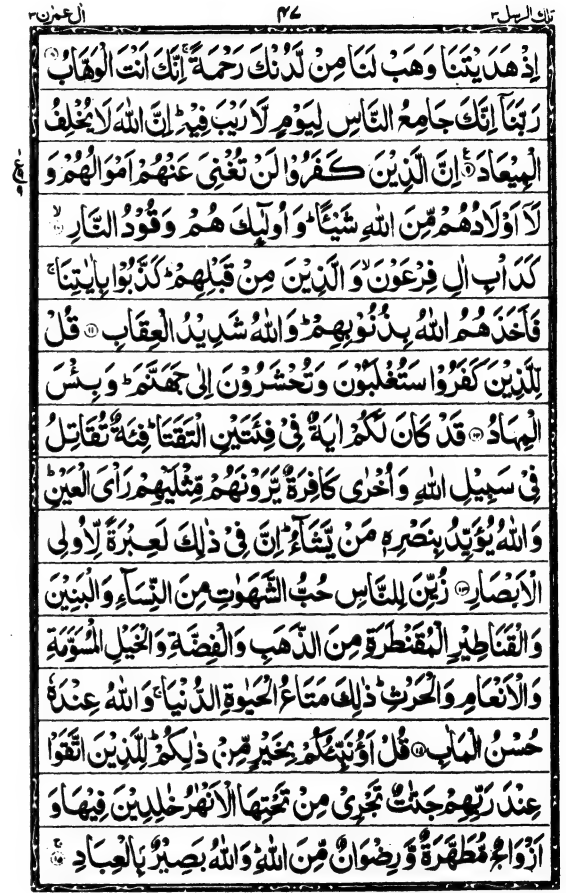
इन्नल्लजी-न क-फरु लन् तुग्नि-य अन्हुम् अम्वाल्हुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क हुम् वकूदुन्नार (10) क-दअब्बि आलि फिर्औ-न वल्लजी-न मिन्

कब्लिहिम्, कज्जबू बिआयातिना फ-अ-ख-जहुमुल्लाहु बिजुनूबिहिम्, वल्लाहु शदीदुल् अिकाब (11) कुल् लिल्लजी-न क-फरु सतुग्लबू-न व तुह्शरु-न इला जहन्न-म, व बिअ्सल् मिहाद (12)

कद् का-न लकुम् आ-यतुन् फी फि-अतैनिल् त-क ता, फि-अतुन् तुकातिलु फी सबीलिल्लाहि व उखरा काफि-रतुंय्यरौ-नहुम् मिस्लैहिम् रअयल्-औनि, वल्लाहु युअय्यिदु बिनसिरही मय्यशा-उ, इन्-न फी जालि-क ल-अिब्रतल्-लिउलिल् अब्सार (13)

जुय्यि-न लिन्नासि हुब्बुशश-हवाति मिनन्निसा-इ वल्बनी-न वल्-कनातीरिल्-मुकन्त-रति मिनज्ज-हबि वल्फिज्जति

वल्-खैलिल्-मुसव्व-मति वल्-अन्आमि वल्हर्सि, जालि-क मताअुल् हयातिदुन्या वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुल् मआब (14) कुल् अ-उनब्बिउकुम् बिखैरिम् मिन् जालिकुम्, लिल्लजीनत्तकौ अिन्-द रब्बिहिम् जन्नातुन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा व अज्वाजुम्-मुतहह-रतुंव-व रिज्वानुम् मिनल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम् बिल्अिबाद (15) अल्लजी-न



जमा करने वाले हैं, उस दिन जिसमें ज़रा शक नहीं, बेशक अल्लाह तआला वायदे के खिलाफ नहीं करते।¹ (9) ♦

यकीनन जो लोग कुफ़्र करते हैं हरगिज़ उनके काम नहीं आ सकते उनके माल (व दौलत) और न उनकी औलाद अल्लाह तआला के मुकाबले में ज़रा बराबर भी,² और ऐसे लोग जहन्नम का ईंधन होंगे। (10) जैसा मामला था फिरऔन वालों का और उनसे पहले वाले (काफिर) लोगों का, कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा बतलाया इसपर अल्लाह ने उनकी पकड़ फ़रमाई उनके गुनाहों के सबब, और अल्लाह तआला सज़ा देने वाले हैं। (11) आप उन कुफ़्र करने वालों से फ़रमा दीजिए कि जल्द ही तुम (मुसलमानों के हाथ से) मग़लूब किए जाओगे, और (आख़िरत में) जहन्नम की तरफ़ जमा करके ले जाए जाओगे, और वह (जहन्नम) बुरा ठिकाना है।³ (12) बेशक तुम्हारे लिए बड़ा नमूना है दो गिरोहों (के वाकिए) में जो कि आपस में एक-दूसरे⁴ के मुकाबिल हुए थे। एक गिरोह तो अल्लाह की राह में लड़ता था (यानी मुसलमान) और दूसरा गिरोह वे काफिर लोग थे, ये काफिर अपने को देख रहे थे कि उन (मुसलमानों) से कई हिस्से (ज़्यादा) हैं खुली आँखों देखना, और अल्लाह तआला अपनी इम्दाद से जिसको चाहते हैं कुव्वत दे देते हैं, (सो) बेशक इसमें बड़ी इब्रत है (समझने) देखने वाले लोगों के लिए।⁵ (13) अच्छी मालूम होती है (अक्सर) लोगों को मुहब्बत पसन्दीदा चीज़ों की, (जैसे) औरतें हुई, बेटे हुए, लगे हुए ढेर हुए सोने और चाँदी के, नम्बर (यानी निशान) लगे हुए घोड़े हुए, (या दूसरे) मवेशी हुए और खेती हुई, (लेकिन) ये सब चीज़ें दुनियावी ज़िन्दगानी में इस्तेमाल करने की हैं, और अन्जामकार की भलाई तो अल्लाह ही के पास है।⁶ (14) आप फ़रमा दीजिए क्या मैं तुमको ऐसी चीज़ बतला दूँ जो (बहुत ही ज़्यादा) बेहतर हो इन चीज़ों से, (सो सुनो) ऐसे लोगों के लिए जो (अल्लाह से) डरते हैं, उनके (हकीकी) मालिक के पास ऐसे-ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे और (उनके लिए) ऐसी बीवियाँ हैं जो साफ़-सुथरी की हुई हैं, और (उनके लिए) रिज़ा और खुशनूदी है अल्लाह तआला की तरफ़ से, और अल्लाह तआला ख़ूब देखते (भालते) हैं बन्दों को। (15) (ये) ऐसे लोग (हैं) जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ईमान ले आए, सो आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए

1. यहाँ तक ज़बान से हुज्जत पूरी करने का बयान था, आगे तलवार से मुकाबले का बयान और तलवार का लुक़्मा बनने और मग़लूब होने की वईद है, जो साफ़ तौर पर इस आयत में ज़िक्र की गई है: 'कुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रु...' और इससे पहले कि आयत बतौर तम्हीद के है।

2. मुकाबले में काम आने के दो मायने हो सकते हैं, एक यह कि अल्लाह तआला की रहमत व इनायत की ज़रूरत न हो, उसके बदले सिर्फ़ माल और औलाद काफ़ी और लाभदायक हो जाए, दूसरे यह कि माल व औलाद अल्लाह तआला के मुकाबिल होकर उनके अज़ाब से बचा ले। मुकाबले का लफ़्ज़ दोनों जगह बोला जाता है। सो आयत में दोनों की नफ़ी (इनकार) कर दी गई।

3. इस आयत में काफ़िरों के मग़लूब होने की ख़बर दी गई है। आगे उसकी एक काफ़ी नज़ीर बतौर दलील के इशार्द फ़रमाते हैं।

4. बदर की लड़ाई में।

5. रिवायतों में आया है कि उस दिन मुसलमान तीन सौ तेरह (313) थे और कुफ़्फ़ार एक हज़ार (1000) थे, गोया काफिर लोग मुसलमानों से तीन हिस्से थे। इस आयत में उसी ज़्यादा होने को बयान फ़रमाया है, कि कुफ़्फ़ार आँखों से देख रहे थे कि हमारा गिरोह ज़्यादा है मगर फिर भी अन्जाम देख लिया कि मुसलमान ही ग़ालिब रहे।

6. यह जो फ़रमाया कि इन चीज़ों की मुहब्बत खुशनुमा (अच्छी) मालूम होती है, इसका हासिल मेरे ज़ौक में यह है कि मुहब्बत व मैलान अक्सर हालात में फ़िलने का सबब हो जाने की वजह से डर की चीज़ थी मगर अक्सर लोग इसको नुक़सान का सबब नहीं जानते बल्कि इस मैलान को बिना किसी कैद के अच्छा समझते हैं। और अल्लाह ही को ज़्यादा इल्म है।

यकूलू-न रब्बना इन्नना आमन्ना फग्फिर् लना जुनूबना व किना अज़ाबन्नार (16)
 अस्साबिरी-न वस्सादिकी-न वल्कानिती-न वल्मुन्फिकी-न वल्मुस्तग्फिरी-न बिल्अस्हार (17)
 शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व वल्मलाइ-कतु व उलुल्-अल्मि का-इमम्
 बिल्किस्ति, ला इला-ह इल्ला हुवल्-अज़ीजुल् हकीम ● (18) इन्नद्दी-न अिन्दल्लाहिल्

इस्लामु, व मख्त-लफल्लज़ी-न ऊतुल्-
 किता-ब इल्ला मिम्-बअ्दि मा
 जा-अहुमुल् अिल्मु बग्यम् बैनहुम, व
 मय्यक्फुर् बिआयातिल्लाहि फ-इन्नल्ला-ह
 सरीअुल् हिसाब (19) फ-इन् हाज्जू-क
 फकुल् अस्लम्तु वज्हि-य लिल्लाहि व
 मनित्त-ब-अनि, व कुल् लिल्लज़ी-न
 ऊतुल्- किता-ब वल्-उम्मिय्यी-न
 अ-अस्लम्तुम्, फ-इन् अस्लमू
 फ-कदिह्तादौ व इन् तवल्लौ फ-इन्मा
 अलैकल्-बलागु, वल्लाहु बसीरुम्
 बिल्अिबाद (20) ♦

इन्नल्लज़ी-न यक्फुरु-न बिआया-
 -तिल्लाहि व यक्तुलूनन्बिय्यी-न बिगैरि
 हक्किक्व-व यक्तुलू-नल्लज़ी-न यअ्मुरू-न

बिल्किस्ति मिनन्नासि फ- बशिशरुहुम् बि-अज़ाबिन् अलीम (21) उलाइ-कल्लज़ी-न हबितत्
 अअ्मालुहुम् फिद्दुन्या वल्-आखि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (22) अलम् त-र
 इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युद्औ-न इला किताबिल्लाहि लि-यह्कु-म बैनहुम्
 सुम्-म य-तवल्ला फरीकुम् मिन्हुम् व हुम् मुअ्रिज़ून (23) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कालू लन्

النَّذِيرِينَ يُقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَكْفَرْنَا بِكَ وَفَوَقَ أَبْغَابِ
 النَّارِ الضَّالِّينَ وَالضَّالِّينَ وَالْقَاتِلِينَ وَالْمُفْسِدِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
 وَالْمَلَكُ وَالْعِلْمُ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ
 الْحَكِيمُ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ اللَّهِ أَلْهَمُوا الْإِسْلَامَ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ
 أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَيْنَهُمْ
 وَمَنْ يَكْفُرْ يَأْتِ اللَّهُ قُرْآنَ اللَّهِ سَرِيعَ الْحِسَابِ فَإِنْ
 حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَبِحَبْلِ اللَّهِ وَمَنْ اتَّبَعَنِي فَقُلْ
 لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأَقْبَنَ أَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ
 اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَاللَّهُ بِصِرَاطِ الْعَالَمِينَ
 إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ يَأْتِ اللَّهُ يُقَاتِلُونَ النَّبِيَّ بِغَيْرِ حَقٍّ
 وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ
 بِعَذَابٍ أَلِيمٍ أُولَئِكَ الَّذِينَ حَوَّطْنَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا
 وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا
 نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ
 يَتَوَلَّوْا فَرِيقٌ مِنْهُمْ وَمَهُمْ مُعْرِضُونَ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ

और हमको दोज़ख के अज़ाब से बचा लीजिए।¹ (16) (और वे लोग) सब्र करने वाले हैं और सच्चे हैं और (अल्लाह के सामने) आजिजी करने वाले हैं, और (माल) खर्च करने वाले हैं और रात के आखिरी हिस्से में (उठ-उठकर) गुनाहों की माफी चाहने वाले हैं।² (17) गवाही दी अल्लाह तआला ने इसकी कि सिवाय उस ज़ात के कोई माबूद होने के लायक नहीं और फ़रिश्तों ने भी और इल्म वालों ने भी, और माबूद भी वह इस शान के हैं कि एतिदाल के साथ इन्तिज़ाम रखने वाले हैं,³ उनके सिवा कोई माबूद होने के लायक नहीं, वह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। ● (18) बेशक (हक और मकबूल) दीन अल्लाह तआला के नज़दीक सिर्फ़ इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो इख़्तिलाफ़ किया (कि इस्लाम को बातिल कहा) तो ऐसी हालत के बाद कि उनको दलील पहुँच चुकी थी सिर्फ़ एक-दूसरे से बढ़ने के सबब से,⁴ और जो शख्स अल्लाह तआला के अहकाम का इनकार करेगा तो इसमें कोई शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआला बहुत जल्द उसका हिसाब लेने वाले हैं। (19) फिर भी अगर ये लोग आपसे हुज्जतें निकालें तो आप फ़रमा दीजिए कि (तुम मानो या न मानो) मैं तो अपना रुख़ खास अल्लाह की तरफ़ कर चुका और जो मेरी पैरवी करने वाले थे वे भी। और अहले किताब से और अरब (के मुश्रिकीन) से कहिए कि क्या तुम भी इस्लाम लाते हो? सो अगर वे लोग इस्लाम ले आएँ तो वे लोग भी राह पर आ जाएँगे, और अगर वे लोग रु-गर्दानी करें तो आपके ज़िम्मे सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह तआला खुद देख (और समझ) लेंगे बन्दों को। (20) ♦

बेशक जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआला की आयतों के साथ और क़त्ल करते हैं पैग़म्बरों को नाहक, और क़त्ल करते हैं ऐसे शख्सों को जो (अफ़आल व अख़्लाक के) एतिदाल की तालीम देते हैं, सो ऐसे लोगों को ख़बर सुना दीजिए एक दर्दनाक सज़ा की। (21) (और) ये वे लोग हैं कि उनके सब (नेक) आमाल ग़ारत हो गए दुनिया में और आखिरत में,⁵ और (सज़ा के वक़्त) उनका कोई (हिमायती और) मददगार न होगा। (22) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) क्या आपने ऐसे लोग नहीं देखे जिनको किताब (तौरात) का एक (काफ़ी) हिस्सा दिया गया,⁶ और उसी अल्लाह की किताब की तरफ़ इस ग़ुरज़ से उनको बुलाया भी जाता है कि वह उनके दरमियान फ़ैसला कर दे, फिर (भी) उनमें से कुछ लोग मुँह मोड़ते हैं बेरुख़ी करते हुए। (23) (और) यह इस सबब से है कि वे लोग यूँ कहते हैं कि हमको सिर्फ़ गिनती के थोड़े दिनों तक दोज़ख़ की आग़ लगेगी, और उनको धोखे में डाल

1. यह जो कहा कि हम ईमान ले आए सो आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए, यह इस वजह से है कि बग़ैर ईमान के मफ़िरत नहीं होती। पस हासिल यह हुआ कि कुफ़्र जो मफ़िरत में हमेशा के लिए रुकावट है उसको हम दूर कर चुके अब माफ़ कर दीजिए।
2. रात के आखिरी हिस्से की तख़्तीस इसलिए है कि उस वक़्त उठने में मशक्कत भी है और वह वक़्त कबूलियत का भी है।
3. “काइम-बिल्किस्ति” की सिफ़त ग़ालिबन् इसलिए बढ़ा दी कि वह ऐसे नहीं कि सिर्फ़ अपनी ताज़ीम और इबादत ही कराते हों बल्कि वह सबके काम भी बनाते हैं।
4. यानी इस्लाम के हक़ होने में शुब्हा करने की कोई वजह नहीं हुई, बल्कि उनमें दूसरों से बड़ा बनने का माद्दा है और इस्लाम लाने में यह सरदारी जो उनको अब अ़वाम पर हासिल है ख़त्म होती थी, इसलिए इस्लाम को कबूल नहीं किया बल्कि उल्टा उसको बातिल बतलाने लगे।
5. दुनिया में ग़ारत होना यह कि उनके साथ मुसलमानों जैसा मामला न होगा, और आखिरत में यह कि उनकी मफ़िरत न होगी।
6. अगर हिदायत के तालिब होते तो वह हिस्सा इस ग़ुरज़ को पूरा करने के लिए काफ़ी था।

तमस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम् मअद्दूदातिव्-व गरहुम् फी दीनिहिम् मा कानू यफ्तस्सुन (24)

फकै-फ इजा जमअनाहुम् लियौमिल् ला रै-ब फीहि, व वुफिफयत् कुल्लु नफिसम् मा क-सबत्

व हुम् ला युज्लमून (25) कुलिल्लाहुम्-म मालिकल्मुल्कि तुअतिल्-मुल्-क मन् तशा-उ व

तन्जिअल्मुल्-क मिम्मन् तशा-उ व तुअिज्जु मन् तशा-उ व तुजिल्लु मन् तशा-उ,

बि-यदिकल्-खैरु, इन्न-क अला कुल्लि

शैइन् कदीर (26) तूलिजुल्लै-ल

फिन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फिल्लैलि व

तुखिरजुल्-हय्-य मिनल्-मथियति व

तुखिरजुल् मथिय-त मिनल्हय्यि व तर्जुकु

मन् तशा-उ बिगैरि हिसाब (27) ला

यत्तहिजिल्-मुअमिनूनल् काफिरी-न

औलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअमिनी-न व

मय्यफअल् जालि-क फलै-स मिनल्लाहि

फी शैइन् इल्ला अन् तत्तकू मिन्हुम्

तुकातन्, व युहज्जिरुकुमुल्लाहु नफ्सहू,

व इलल्लाहिल्-मसीर (28) कुल् इन्

तुखफू मा फी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु

यअल्मुहुल्लाहु, व यअल्मु मा

फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि, वल्लाहु

अला कुल्लि शैइन् कदीर (29) यौ-म तजिदु कुल्लु नफिसम् मा अमिलत् मिन् खैरिम्

मुह्जरंव्-व मा अमिलत् मिन् सूइन् त-वद्दु लौ अन्-न बैनहा व बैनहू अ-मदम् बअीदन्, व

युहज्जिरुकुमुल्लाहु नफ्सहू, वल्लाहु रऊफुम् बिल्अिबाद (30) ♦

कुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला-ह फत्तबिअूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यगिफर् लकुम् जुनूबकुम्,

تَمَسَّسْنَا النَّارَ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ۖ فَكَيْفَ إِذَا جُمِعَهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ وَوَقَّيَتْ
كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۖ قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ
الْمَلَائِكَةِ تُوَفِّي الْمَلَائِكَةَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمَلَائِكَةَ مَنْ تَشَاءُ وَ
تُعَزِّمُ مَنْ تَشَاءُ وَتُذَلِّقُ مَنْ تَشَاءُ يُبْدِلُ الْغَيْثُ الْبَرْدَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ ۖ قَدِيرٌ ۖ تُولِيهِ الْبَيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِيهِ الْبَيْلَ فِي اللَّيْلِ
وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ
تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ لَا يَتَّخِذُ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ
مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي
شَيْءٍ ۖ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ۚ وَيُخَذِّرُكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ
إِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۚ قُلْ إِنْ تَتَّقُوا مَا فِي الصُّدُورِ كُمْ أَوْ يُبْدِلُوهُ
بِعِلْمِهِ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ يَوْمَ تُحْجَىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُخَضَّرَةٌ ۚ وَأَعْمِلْتُمْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَنَا أَمَدًا
بَعِيدًا ۚ وَيُخَذِّرُكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۚ قُلْ
إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۚ

مَزَل

रखा है उनके दीन के बारे में उनकी घड़ी हुई बातों ने, सो (उनका) क्या (बुरा) हाल होगा। (24) जबकि हम उनको उस तारीख में जमा कर लेंगे जिस (के आने) में ज़रा-सा शुब्हा नहीं, और (उस तारीख में) पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा हर शख्स को (उस काम का) जो कुछ उसने (दुनिया में) किया था, और उन शख्सों पर जुल्म न किया जाएगा।¹ (25) (ऐ-मुहम्मद) आप (अल्लाह से) यूँ कहिए कि ऐ अल्लाह तमाम मुल्क के मालिक! आप मुल्क जिसको चाहें दे देते हैं और जिससे चाहें मुल्क ले लेते हैं, और जिसको चाहें ग़ालिब कर देते हैं, और जिसको चाहें पस्त कर देते हैं, आप ही के इख्तियार में है सब भलाई, बेशक आप हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाले हैं। (26) आप रात के हिस्सों को दिन में दाखिल कर देते हैं, और (बाज़ मौसमों में) दिन (के हिस्सों) को रात में दाखिल कर देते हैं, और आप जानदार चीज़ को बेजान चीज़ से निकाल लेते हैं, (जैसे अंडे से बच्चा) और बेजान चीज़ को जानदार से निकाल लेते हैं, (जैसे परिन्दे से अंडा) और आप जिसको चाहते हैं बेशुमार रिज्क अता फ़रमाते हैं।² (27) मुसलमानों को चाहिए कि काफ़िरो को (खुले तौर पर या छुपे तौर पर) दोस्त न बनाएँ,³ मुसलमानों (की दोस्ती) से आगे बढ़ करके,⁴ और जो शख्स ऐसा (काम) करेगा सो वह शख्स अल्लाह के साथ (दोस्ती रखने के) किसी शुमार में नहीं, मगर ऐसी सूरत में कि तुम उनसे किसी किस्म का (सख़्त) अन्देशा रखते हो, और अल्लाह तआला तुमको अपनी ज़ात से डराता है, और खुदा ही की तरफ़ लौटकर जाना है।⁵ (28) आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम छुपाकर रखोगे अपने दिल की बात या उसको ज़ाहिर करोगे, अल्लाह तआला उसको (हर हाल में) जानते हैं, और वह सब कुछ जानते हैं जो कुछ आसमनों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुदरत भी मुकम्मल रखते हैं। (29) जिस दिन (ऐसा होगा) कि हर शख्स अपने अच्छे किए हुए कामों को सामने लाया हुआ पाएगा और अपने बुरे किए हुए कामों को भी, (और) इस बात की तमन्ना करेगा कि क्या ख़ूब होता जो उस शख्स के और उस दिन के दरमियान बहुत लम्बी दूरी (आड़) होती, और खुदा तआला तुमको अपनी (अज़ीमुश्शान) ज़ात से डराते हैं, और अल्लाह तआला बन्दों पर निहायत मेहरबान हैं। (30) ♦

1. अगली आयत में उम्मत मुहम्मदिया के काफ़िरो पर ग़ालिब आने की पैशिनगोई (भविष्यवाणी) की तरफ़ तालीमे मुनाजात के उन्वान में इशारा है। जैसा कि शाने नुजूल से साबित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रूम व ईरान फतह हो जाने का वायदा फरमाया तो मुनाफ़िक लोग और यहूद ने मज़ाक उड़ाया और इसे दूर की बात बताया, उसपर यह आयत नाज़िल हुई।
2. यानी हर तरह की कुदरत हासिल है। सो कमज़ोरों को कुव्वत व हुकूमत दे देना क्या मुश्किल है। इस दुआ में एक किस्म का इस्तिदलाल है इसके इम्कान (संभावना) पर, और कुफ़्र के दूर होने का दफा करना है। (यानी जो लोग यह समझते हैं कि कुफ़्र का ज़ोर नहीं टूटेगा सो उनका रद्द है) और ख़ैर की तख़्सीस इसलिए मुनासिब हुई कि यहाँ मकसूद ख़ैर का माँगना है। जैसे कोई कहे कि नौकर रखना आपके इख्तियार में होता है, अगरचे नौकर का हटा देना और अलग कर देना भी इख्तियार में होता है।
3. ऊपर कुफ़्फ़ार की बुराई ज़िक्र हुई थी, इस आयत में उनके साथ दोस्ती करने की मुमानअत (मनाही) फरमाते हैं।
4. हद से बढ़ना दो सूरत से होता है, एक यह कि मुसलमानों के साथ बिल्कुल दोस्ती न रखें, दूसरे यह कि मुसलमानों के साथ-साथ कुफ़्फ़ार से भी दोस्ती रखें, दोनों सूरतें मनाही में दाखिल हैं।
5. काफ़िरो के साथ तीन किस्म के मामले होते हैं, एक यह कि 'मवालात' यानी दोस्ती, नम्बर दो 'मुदारात' यानी ज़ाहिरी तौर पर अच्छे अख़्लाक का बर्ताव, नम्बर तीन 'मुवासात' यानी एहसान करना व फ़ायदा पहुँचाना। मवालात तो किसी हाल में जायज़ नहीं और मुदारात तीन हालतों में दुरुस्त है, एक नुक़सान और शर को दफा करने के वास्ते, दूसरे उस काफ़िर की दीनी मस्लहत यानी हिदायत की उम्मीद के वास्ते, तीसरे मेहमान के इक्राम और अदब के लिए। और अपनी मस्लहत और माल व जान के फ़ायदे के लिए दुरुस्त नहीं। और मुवासात का हुक्म यह है कि अहले हरब के साथ नाजायज़ है और ग़ैर-अहले हरब के साथ जायज़।

वल्लाहु गफूररहीम (31) कुल् अतीअुल्ला-ह वरसू-ल फ-इन् तवल्लौ फ-इन्नल्ला-ह ला
 युहिब्बुल् काफिरीन (32) इन्नल्लाहस्तफा आद-म व नूह्व-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल
 अिम्रा-न अलल् आलमीन (33) जुरिय्यतम् बअजुहा मिम्-बअजिन्, वल्लाहु समीअुन्
 अलीम (34) इज् का-लतिम्र-अतु अिम्रा-न रब्बि इन्नी नज़रतु ल-क मा फी बत्नी
 मुहर्र-रन् फ-तकब्बल् मिन्नी इन्न-क

अन्तस्-समीअुल् अलीम (35) फ-लम्मा
 व-जअत्हा कालत् रब्बि इन्नी वजअतुहा
 उन्सा, वल्लाहु अअलमु बिमा व-जअत्,
 व लैसज्ज-करु कल्उन्सा व इन्नी
 सम्मैतुहा मर्य-म व इन्नी उअीजुहा
 बि-क व जुरिय्य-तहा मिनश्-शैतानिर्-
 रजीम (36) फ-तकब्ब-लहा रब्बुहा
 बि-कबूलिन् ह-सनिंव-व अम्ब-तहा
 नबातन् ह-सनंव-व कफ-लहा
 ज-करिय्या, कुल्लमा द-खा-ल अलैहा
 ज-करिय्यल्-मिहरा-ब व-ज-द अिन्दहा
 रिज्कन् का-ल या मर्यमु अन्ना लकि
 हाज़ा, कालत् हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि,
 इन्नल्ला-ह यरजुकु मय्यशा-उ बिगैरि

हिसाब (37) हुनालि-क दआ ज-करिय्या रब्बहू का-ल रब्बि हब् ली मिल्लदुन्-क जुरिय्यतन्
 तय्यि-बतन् इन्न-क समीअुदुआ-इ (38) फनादत्हुल् मलाइ-कतु व हु-व का-इमुय्युसल्ली
 फिल्-मिहराबि अन्नल्ला-ह युबशिशरु-क बि-यह्या मुसदिकम् बि-कलिमतिम् मिनल्लाहि व
 सय्यिदंव-व हसूरंव-व नबिय्यम् मिनस्सालिहीन (39) का-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली

تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ
 وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ إِنَّمَا أَتُوبُ وَإِنِّي
 اللَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَابْنَ
 إِبْرَاهِيمَ وَالْإِسْمَاعِيلَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ ذُرِّيَّتُهُ نَبَّهَتْهُمْ بَعْضُهُمْ
 وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَدَرْتُ
 لَكَ نَافِثًا بَطْنِي فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝
 فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
 بِمَا وَضَعْتَ وَلَئِنَّ الذَّكَرَ لَأُنْثَىٰ وَلَوْ أَنَّ سَمِيئًا مَرِيئًا
 إِنِّي أُعِيدُهَا بِنَاثٍ وَذُرِّيَّتُهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ فَتَقَبَّلَهَا
 رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا
 كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا قَالَ
 يَزَيْزِيلُ إِنِّي لَأَنظُرُكَ هَؤُلَاءِ عِنْدَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ
 مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ
 هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۖ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۖ فَلَدَتْهُ
 الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ ۖ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ
 بِيَحْيَىٰ مُصَلًّى فَآبٍ ۖ كَلِمَةً مِنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا ۖ وَحُضُورًا وَنَبِيًّا
 مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ لِي غَلْمٌ وَقَدْ بَلَغَنِي

مَلَكٌ

आप फरमा दीजिए कि अगर तुम खुदा तआला से मुहब्बत रखते हो तो तुम लोग मेरी पैरवी करो और खुदा तआला तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे और तुम्हारे सब गुनाहों को माफ कर देंगे, और अल्लाह तआला बड़े माफ करने वाले, बड़ी इनायत फरमाने वाले हैं। (31) (और) आप (यह भी) फरमा दीजिए कि तुम फरमाँबदारी किया करो अल्लाह तआला की और उसके रसूल की, फिर (इसपर भी) अगर वे लोग मुँह मोड़ें सो (सुन रखें कि) अल्लाह तआला काफिरों से मुहब्बत नहीं करते। (32) बेशक अल्लाह तआला ने (नुबुव्वत के लिए) चुन लिया है (हज़रत) आदम को और (हज़रत) नूह को और (हज़रत) इब्राहीम की औलाद (में से कुछ) को और इमरान की औलाद (में से कुछ) को तमाम जहान पर। (33) बाज़े उनमें बाज़ों की औलाद हैं,¹ और अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाले हैं ख़ूब जानने वाले हैं। (34) जबकि इमरान² (मरियम के बाप) की बीवी ने (गर्भ की हालत में) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने मन्नत मानी है आपके लिए इस बच्चे की जो मेरे पेट में है, कि वह आज़ाद रखा जाएगा, सो आप मुझसे (पैदाइश के बाद) कबूल कर लीजिए, बेशक आप ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। (35) फिर जब लड़की को जन्म दिया (हसरत से) कहने लगीं कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने तो वह हमल “यानी गर्भ” लड़की जन्मी, हालाँकि खुदा तआला ज़्यादा जानते हैं उसको जो उन्होंने जन्मी, और वह लड़का (जो उन्होंने चाहा था) इस लड़की के बराबर नहीं, और मैंने इस लड़की का नाम मरियम रखा, और मैं इसको और इसकी औलाद को (अगर कभी औलाद हो) आपकी पनाह में देती हूँ शैतान मर्दूद से। (36) पस उन (मरियम अलैहस्सलाम) को उनके रब ने बेहतरीन तौर पर कबूल फरमाया और उम्दा तौर पर परवान चढ़ाया³ और (हज़रत) ज़करिया को उनका सरपरस्त “यानी अभिभावक” बनाया, (सो) जब कभी ज़करिया (अलैहस्सलाम) उनके पास उम्दा मकान में तशरीफ़ लाते तो उनके पास कुछ खाने-पीने की चीज़ें पाते (और) यूँ फरमाते कि ऐ मरियम! ये चीज़ें तुम्हारे वास्ते कहाँ से आईं, वह कहतीं कि अल्लाह तआला के पास से आईं, बेशक अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं बे-अहलियत रिज़्क अता फरमाते हैं। (37) इस मौके पर दुआ की ज़करिया (अलैहस्सलाम) ने अपने रब से, अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! इनायत कीजिए मुझको खास अपने पास से कोई अच्छी औलाद, बेशक आप बहुत सुनने वाले हैं दुआ के। (38) पस पुकार कर कहा उनसे फ़रिश्तों ने और वह खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे मेहराब में,⁴ कि अल्लाह तआला आपको खुशख़बरी देते हैं यहया की जिनके हालात ये होंगे कि वह कलिमतुल्लाह की तस्दीक करने वाले होंगे,⁵ और मुक्तदा होंगे, “यानी रहनुमा होंगे और उनकी पैरवी की जाएगी” और अपने नफ़्स को (लज़्ज़तों से) बहुत रोकने वाले होंगे,⁶

1. यह जो फरमाया कि एक-दूसरे की औलाद है, शायद मकसूद इससे उन सब हज़रत का इतिहाद या जाती शरफ़ के साथ नसब का शरफ़ बयान फरमाना हो, या इस बात का जताना हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाप-दादाओं में भी नुबुव्वत रही है, अगर आपको नुबुव्वत मिल गई तो बर्इद क्या है। वल्लाहु अज़्ज़लम्।
2. अगर यह इमरान हज़रत मूसा अलैहस्सलाम के वालिद हैं तो औलाद से मुराद हज़रत मूसा अलैहस्सलाम और हज़रत हारून अलैहस्सलाम हैं। और अगर यह इमरान हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के वालिद हैं तो औलाद से मुराद हज़रत ईसा बिन मरियम अलैहस्सलाम हैं।
3. यह जो फरमाया कि उम्दा तौर पर उनको परवान चढ़ाया तो इसके दो मायने हो सकते हैं, एक यह कि शुरू से इबादत व इताअत में मशगूल रखा, दूसरे यह कि और बच्चों कि मामूली बढ़ोतरी और फलने-फूलने से उनकी जाहिरी बढ़ोतरी थी।
4. मेहराब से मुराद या तो मस्जिद वैतुल मक्बिदस की मेहराब है, या मुराद इससे वह मकान है जिसमें हज़रत मरियम अलैहस्सलाम को रखा करते थे, क्योंकि इस जगह मेहराब के मायने उम्दा मकान के हैं।
5. यानी हज़रत ईसा अलैहस्सलाम की नुबुव्वत की तस्दीक करने वाले होंगे। कलिमतुल्लाह हज़रत ईसा अलैहस्सलाम को इसलिए कहते हैं कि वह महज़ खुदा तआला के हुक्म से ख़िलाफ़े आदत बिना बाप के वास्ते के पैदा किए गए।
6. लज़्ज़तों से रोकने में सब जायज़ ख्वाहिशों से बचना दाखिल हो गया। अच्छा खाना, अच्छा पहनना, निकाह करना, वगैरह-वगैरह।

गुलामुंव-व कद् ब-ल-गनियल् कि-बरु वमर-अती आकिरुन्, का-ल कजालिकल्लाहु यफअलु
मा यशा-उ (40) का-ल रब्बिज्अल्ली आ-यतन्, का-ल आ-यतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स
सला-स-त अय्यामिन् इल्ला रम्जन्, वज्कुर रब्ब-क कसीरं-व सब्बिह बिल्-अशिथिय
वल्-इब्कार (41) ♦

व इज् कालतिल् मलाइ-कतु या
मर्यमु इन्नल्लाहस्तफाकि व तहह-रकि
वस्तफाकि अला निसा-इल् आलमीन
(42) या मर्यमुकुनुती लिरब्बिकि
वस्जुदी वरूकअी मअर्राकिअीन (43)
जालि-क मिन् अम्बा-इल् गैबि नूहीहि
इलै-क, व मा कुन्-त लदैहिम् इज्
युल्कू-न अक्ला-महुम् अय्युहुम् यक्फुलु
मर्य-म व मा कुन्-त लदैहिम् इज्
यख्तसिमून (44) इज् कालतिल्
मलाइ-कतु या मर्यमु इन्नल्ला-ह
युबशिशरुकि बि-कलि-मतिम् मिन्हुस्मुहुल्-
मसीहु अीसब्नु मर्य-म वजीहन्
फिद्दुन्या वल्आखि-रति व मिनल्
मुकरबीन (45) व युक्ल्लिमुन्ना-स

फिल्महिद् व कह्लं-व मिनस्सालिहीन (46) कालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व-लदुं-व लम्
यम्सस्नी ब-शरुन्, का-ल कजालिकिल्लाहु यख्लुकु मा यशा-उ, इजा कजा अमरन् फ-इन्नमा
यकूलु लहू कुन् फ-यकून (47) व युअल्लिमुहुल्- किता-ब वल्-हिक्म-त वत्तौरा-त
वल्-इन्जील (48) व रसूलन् इला बनी इस्राई-ल अन्नी कद् जिअतुकुम् बिआ-यतिम्

ال عمران
٩٩
تلك السورة
الْكَافِرُ وَأَمْرَافِي عَاقِبَةُ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ قَالَ
رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۚ قَالَ إِنَّكَ الْأَكْثَرُ النَّاسِ ثَلَاثَةٌ آيَاتِهِ
الْأَمْرُ أَوْ أَذْكُرُ وَتَكَرَّرَ كَثِيرًا وَتَسْتَعِثِرُ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝
وَلَاذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ يَمْرُؤُكَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ۝ يَمْرُؤُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَ
اسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ۝ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ
نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَقُولُونَ أَفَلَا مَهْمُ إِلَيْهِمْ
يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَوِمُونَ ۝ إِذْ قَالَتِ
الْمَلِكَةُ يَمْرُؤُكَ إِنَّ اللَّهَ بِكَلِمَةٍ مِنْ آتَمَةِ السَّيْرِ
عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝
وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ قَالَتِ رَبِّ
أَنَّى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۝ وَرَسُولًا
إِلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ أَنِّي قَدْ جَعَلْتُكَ آيَةً مِنْ رَبِّكَ ۚ أَنِّي
أَخْلَقْتُ لَكَ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنْفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَكَانَ

और नबी भी होंगे और आला दर्जे के सलीके वाले होंगे। (39) ज़करिया ने अज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे लड़का किस तरह होगा हालाँकि मुझको बुढ़ापा आ पहुँचा और मेरी बीवी भी बच्चा जनने के काबिल नहीं रही, अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया कि इसी हालत में लड़का हो जाएगा, (क्योंकि) अल्लाह तआला जो कुछ इरादा करें कर देते हैं। (40) उन्होंने अज़ किया कि ऐ परवर्दिगार! मेरे वास्ते कोई निशानी मुकर्रर कर दीजिए, अल्लाह तआला ने फरमाया कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम लोगों से तीन दिन तक बातें न कर सकोगे सिवाय इशारे के, और अपने रब को (दिल से) कसूरत से याद कीजिये और (ज़बान से भी) तसबीह (और पाकी बयान) कीजिये दिन ढले भी और सुबह को भी, (कि इसकी कुदरत रहेगी) (41) ♦

और (वह वक्त ज़िक्र करने के काबिल है) जबकि फरिश्तों ने कहा¹ कि ऐ मरियम! बेशक तुमको अल्लाह तआला ने मुन्तख़ब (यानी मकबूल) फरमाया है और पाक बनाया है और तमाम जहान की औरतों के मुकाबले में तुमको मुन्तख़ब फरमाया है।² (42) ऐ मरियम! फरमाँबर्दारी करती रहो अपने परवर्दिगार की और सज्दा किया करो, और रुकूअ किया करो उन लोगों के साथ जो रुकू करने वाले हैं। (43) ये (किस्से) ग़ैब की ख़बरों में से हैं, हम उनकी वदह भेजते हैं आपके पास और उन लोगों के पास आप न तो उस वक्त मौजूद थे जबकि वे (परची डालने के तौर पर) अपने-अपने कलमों को (पानी में) डालते थे कि उन सबमें कौन शख्स (हज़रत) मरियम (अलैहस्सलाम) की ज़िम्मेदारी लें, और न आप उनके पास मौजूद थे जबकि आपस में इख़िलाफ़ कर रहे थे।³ (44) (उस वक्त को याद करो) जबकि फरिश्तों ने (यह भी) कहा कि ऐ मरियम! बेशक अल्लाह तआला तुमको खुशख़बरी देते हैं एक कलिमे की, जो अल्लाह की जानिब से होगा, उसका नाम (व लक़ब) मसीह ईसा बिन मरियम होगा, आबरू वाले होंगे दुनिया में और आखिरत में और मुकर्रबीन में से होंगे। (45) और अदमियों से कलाम करेंगे गहवारे “यानी पालने” में और बड़ी उम्र में और सलीके वाले लोगों में से होंगे। (46) (हज़रत) मरियम (अलैहस्सलाम) बोलीं, ऐ मेरे परवर्दिगार! किस तरह होगा मेरे बच्चा हालाँकि मुझको किसी बशर ने हाथ नहीं लगाया, अल्लाह तआला ने फरमाया कि वैसे ही (बिना मर्द के) होगा, (क्योंकि) अल्लाह तआला जो चाहें पैदा कर देते हैं। जब किसी चीज़ को पूरा करना चाहते हैं तो उसको कह देते हैं कि हो जा, बस वह चीज़ हो जाती है।⁴ (47) और अल्लाह तआला उनको तालीम फरमाएँगे (आसमानी) किताबें और समझ की बातें, (ख़ास तौर पर) तौरात और इन्जील। (48) और उनको (तमाम) बनी इसराईल की तरफ़ भेजेंगे (पैग़म्बर बनाकर, वे कहेंगे कि) मैं तुम लोगों के पास (अपनी नुबुव्वत पर) काफी दलील लेकर आया हूँ तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से, वह यह है कि मैं तुम लोगों के लिए गारे से ऐसी शकल बनाता

1. फरिश्तों का कलाम करना नुबुव्वत की खुसूसियत में से नहीं।

2. लफ़ज़ “निसा” से जो कि ख़ास है बालिगा के साथ, ज़ाहिर में मालूम होता है कि यह कहना फरिश्तों का हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के जवान होने के बाद था, और इस बिना पर “इस्तिफ़ा” (मुन्तख़ब करना और मकबूल बना लेना) के दो बार लाने की यह वजह बयान की जा सकती है कि पहला “इस्तिफ़ा” बचपन का हो और दूसरा “इस्तिफ़ा” जवानी का हो।

3. शरीअते मुहम्मदिया में हनफ़िया के मसलक पर कुर्आ (परची) डालने का यह हुक्म है कि जिन हुक्क के असबाब शरीअत में मालूम व मुतयन हैं, उनमें कुर्आ नाजायज़ व जुए के अन्दर दाख़िल है, और जिन हुक्क के असबाब राय पर छोड़े हुए हों उनमें कुर्आ जायज़ है।

4. यानी किसी चीज़ के पैदा होने के लिए सिर्फ़ उनका चाहना काफी है, किसी ख़ास वास्ते और सबब की उनको हाज़त नहीं।

मिरिब्विकुम् अन्नी अख्लुकु लकुम् मिनत्तीनि कहै-अतिलैरि फ-अन्फुखु फीहि फ-यकूनु तैरम् बि-इज़िनल्लाहि व उबिरउल्-अक्म-ह वल्-अबूर-स व उहियल्मौता बि-इज़िनल्लाहि व उनब्विकुम् बिमा तअकूलू-न व मा तद्दखिरू-न फी बुयूतिकुम्, इन्-न फी ज़ालि-क लआ-यतल्-लकुम् इन् कुन्तुम् मुअमिनीन (49) व मुसदिकल्लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति

व लि-उहिल्-ल लकुम् बअज़ल्लज़ी हुरि-म अलैकुम् व जिअतुकुम् बिआ-यतिम् मिरिब्विकुम्, फत्तकुल्ला-ह व अतीअून (50) इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फअबुदूहु, हाज़ा सिरातुम् मुस्तकीम (51) फ-लम्मा अ-हस्-स अीसा मिन्हुमुल् कुफ़-र का-ल मन् अन्सारी इलल्लाहि, कालल्-हवारिय्यू-न नहनु अन्सारुल्लाहि आमन्ना बिल्लाहि वशहद् बि-अन्ना मुस्लिमून (52) रब्बना आमन्ना बिमा अन्ज़ल्-त वत्त-बअनर्-रसू-ल फक्तुब्ना म-अशशाहिदीन (53) व म-करु व म-करल्लाहु, वल्लाहु खैरुल् माकिरीन ▲ (54) ♦

इज़् कालल्लाहु या अीसा इन्नी

मु-तवफ़्फ़ी-क व राफ़िअु-क इलय्-य व मुतहिहर्-क मिनल्लज़ी-न क-फरु व जाअिलुल्लज़ीनत्-त-बऊ-क फौकल्लज़ी-न क-फरु इला यौमिल्-कियामति सुम्-म इलय्-य मर्जिअुकुम् फ-अहकुमु बैनकुम् फीमा कुन्तुम् फीहि तख़तलिफ़ून (55) फ-अम्मल्लज़ी-न क-फरु फ-उअज़िबुहुम् अज़ाबन् शदीदन् फिद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (56) व अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ-युवफ़्फ़ीहिम्

تِلْكَ الْحُرُوفُ ٥٢

طِبْرًا يَأْذِنُ اللَّهُ وَأُبْرِيءُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَأُنْجِي السَّوْتِي
يَأْذِنُ اللَّهُ وَأُنْجِيكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدْخُلُونَ فِي بُيُوتِكُمْ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَصَدَّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَلِأَجْلِ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي حُرِّمَ
عَلَيْكُمْ وَحُتِّبْتُكُمْ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝
إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَلَمَّا
أَحْسَنَ عَيْشِي مِنْهُمْ الْكَفَرُ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ
السَّوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ أَمَّا يَا اللَّهُ وَالشَّهَدَاءُ أَمَا مُسْلِمُونَ ۝
رَبَّنَا أَمَّا إِنَّمَا أَنْزَلْتَ وَالْبَغْيَ الرَّسُولَ فَالْعَبَا مَعَ الشَّهِيدِينَ ۝ وَ
مَكْرًا وَمَكْرًا لِلَّهِ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝ إِذْ قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنِ
مَرْيَمَ قُمْ وَارْفَعْكَ إِلَى وَطْئِكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ
جَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ
ثُمَّ إِلَى مَرْجِعِكُمْ فَأَخْلَمَ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ فَتَخْتَلِفُونَ ۝
فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَاعْبُدْهُمْ عِدًّا يَا شَرِيدًا فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ لُحُورِينَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الطَّيَّحَاتِ فَيُوقِفُهُمْ لُجُورُهُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مَنْ

हूँ जैसी परिन्दे की शक्ल होती है, फिर उसके अन्दर फूँक मार देता हूँ जिससे वह (जानदार) परिन्दा बन जाता है खुदा के हुक्म से, और मैं अच्छा कर देता हूँ जन्म के अन्धे को, और बर्स (कोढ़) के बीमार को, और ज़िन्दा कर देता हूँ मुर्दों को अल्लाह तआला के हुक्म से,¹ और मैं तुमको बतला देता हूँ जो कुछ अपने घरों में खा (कर) आते हो और जो कुछ रख आते हो, बेशक इनमें (मेरी नुबुव्वत की) काफ़ी दलील है तुम लोगों के लिए, अगर तुम ईमान लाना चाहो। (49) और मैं इस तौर पर आया हूँ कि तस्दीक करता हूँ उस किताब की जो मुझसे पहले थी यानी तौरात की, और इसलिए आया हूँ कि तुम लोगों के वास्ते कुछ ऐसी चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुमपर हराम कर दी गई थीं, और मैं तुम्हारे पास (नुबुव्वत की) दलील लेकर आया हूँ तुम्हारे परवर्दिगार की ओर से, हासिल यह कि तुम लोग अल्लाह तआला से डरो और मेरा कहना मानो। (50) बेशक अल्लाह तआला मेरे भी रब हैं और तुम्हारे भी रब हैं, सो तुम लोग उसकी इबादत करो, बस यह है सीधा रास्ता। (51) सो जब (हज़रत) ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनसे इनकार देखा तो आपने फ़रमाया कि कोई ऐसे आदमी भी हैं जो मेरे मददगार हो जाएँ अल्लाह के वास्ते, हवारिय्यीन बोले कि हम हैं अल्लाह (के दीन) के मददगार, हम अल्लाह तआला पर ईमान लाए और आप इसके गवाह रहिए कि हम फ़रमाँबरदार हैं। (52) ऐ हमारे परवर्दिगार! हम ईमान ले आए उन चीज़ों (यानी अहकाम) पर जो आपने नाज़िल फ़रमाई और पैरवी इख़्तियार की हमने (इन) रसूल की, सो हमको उन लोगों के साथ लिख दीजिए जो तस्दीक करते हैं। (53) और उन लोगों ने खुफ़िया तदबीर की² और अल्लाह तआला ने खुफ़िया तदबीर फ़रमाई और अल्लाह तआला सब तदबीरों करने वालों से अच्छे हैं।³ ▲ (54) ♦

जबकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ ईसा (कुछ ग़म न करो) बेशक मैं तुमको वफ़ात देने वाला हूँ⁴ और (फ़िलहाल) मैं तुमको अपनी तरफ़ उठाए लेता हूँ⁵ और तुमको उन लोगों से पाक करने वाला हूँ जो इनकारी हैं,⁶ और जो लोग तुम्हारा कहना मानने वाले हैं उनको ग़ालिब रखने वाला हूँ उन लोगों पर जो कि (तुम्हारे) मुन्किर “यानी इनकार करने वाले” हैं क़ियामत के दिन तक,⁷ फिर मेरी तरफ़ होगी सबकी वापसी, सो मैं तुम्हारे दरमियान (अमली) फैसला कर दूँगा उन मामलों में जिनमें तुम आपस में इख़्तिलाफ़ करते थे। (55) (तफ़सील फैसले की यह है कि) जो लोग (इन इख़्तिलाफ़ करने वालों में) काफ़िर थे सो उनको सख़्त सज़ा दूँगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी, और उन लोगों का कोई हिमायती (व तरफ़दार) न होगा। (56) और जो लोग मोमिन थे और उन्होंने नेक काम किए थे,

1. परिन्दे की शक्ल बनाना तस्वीर था जो उस शरीअत में जायज़ था। हमारी शरीअत में इसका जायज़ होना मन्सूख़ हो गया। और कोढ़ी और जन्म से अन्धे को सही करने की संभावना अगर तबई असबाब से साबित हो जाए तो मोज़िज़ा होना इस तौर पर था कि बिना तबई असबाब के सेहत हो जाती थी।
2. चुनाँचे फ़रेब और बहाने से आपको गिरफ़्तार करके सूली देने पर तैयार हो गए।
3. एक और शख्स को ईसा अलैहिस्सलाम की शक्ल का बना दिया और ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठा लिया जिससे वह महफूज़ रहे और वह हम-शक्ल सूली दिया गया।
4. यानी अपने मुक़र्रा वक़्त पर तबई मौत से वफ़ात देने वाला हूँ। इससे मक़सूद दुश्मनों से हिफ़ाज़त की खुशख़बरी देनी थी, यह मुक़र्रा वक़्त उस वक़्त आएगा जब क़ियामत के करीबी ज़माने में ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से ज़मीन पर तशरीफ़ लाएँगे, जैसा कि सही हदीसों में आया है।
5. यह वायदा ऊपर आसमान की तरफ़ फ़िलहाल उठा लेने का है। चुनाँचे यह वायदा साथ-के-साथ पूरा किया गया, जिसके पूरा करने की ख़बर सूर: निसा में दी गई है: ‘र-फ-अहुल्लाहु इलैहि’ (यानी अल्लाह ने उनको उठा लिया है) (शेष तफ़सीर पृष्ठ 104 पर)

उजूरहुम्, वल्लाहु ला युहिब्बुज्जालिमीन (57) ज़ालि-क नल्लूहु अलै-क मिनल्-आयाति वज्जिक्कुरिल् हकीम (58) इन्-न म-स-ल अीसा अिन्दल्लाहि क-म-सलि आद-म, ख-ल-कहू मिन् तुराबिन् सुम्-म का-ल लहू कुन् फ-यकून् (59) अल्-हक्कु मिर्रिब्बि-क फला तकुम् मिनल्-मुत्तरीन (60) फ-मन् हाज्ज-क फीहि मिम्-बअदि मा जाअ-क मिनल्

अिल्मि फकुल् तआलौ नद्अु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा-अना व निसा-अकुम् व अन्फु-सना व अन्फु-सकुम्, सुम्-म नब्तहिल् फ-नज्जल्-लअ-नतल्लाहि अलत्काजिबीन (61) इन्-न हाज़ा लहुवल् क-ससुल्-हक्कु व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु, व इन्नल्ला-ह ल-हुवल्-अज़िजुल् हकीम (62) फ-इन् तवल्लौ फ-इन्नल्ला-ह अलीमुम् बिल्मुप्सिदीन (63) ❖

कुल् या अह्लल्-किताबि तआलौ इला कलि-मतिन् सवा-इम् बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ्बु-द इल्लल्ला-ह व ला नुशिर-क बिही शैअंव-व ला यत्तखि-ज़ बअज़ुना बअज़न् अरबाबम् मिन् दूनिल्लाहि, फ-इन् तवल्लौ

फ-कूलुश-हदू बिअन्ना मुस्लिमून (64) या अह्लल्-किताबि लि-म तुहाज्जू-न फी इब्राही-म व मा उज्जि-लतित्तौरातु वल्-इन्जीलु इल्ला मिम्-बअदिही, अ-फला तअ्किलून् (65) हा-अन्तुम् हा-उला-इ हाज्जुम् फीमा लकुम् बिही अिल्मुन् फलि-म तुहाज्जू-न फी मा लै-स लकुम् बिही अिल्मुन्, वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून् (66) मा का-न इब्राहीमु यहूदिय्यंव-व ला नस्रानिय्यंव-व लाकिन् का-न हनीफम् मुस्लिमन्, व मा का-न

ذٰلِكَ تَتْلُوهُ عَلَيْهِمْ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ۝ اِنْ مَثَلٌ يَّعْنٰی
عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اِدْمَ خَلْقَهُ مِنْ تَرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَا كُنْ فَيَكُوْنُ ۝
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيْهِ
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْنِ اَنْبِئْنَا بِمَا كُنْتُمْ
وَسِيْةً اَوْ نِسِيْةً اَوْ اَنْفُسًا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ تَبَتُّهْلُمْ فَيَجْعَلُ
لَعْنَتُ اللّٰهِ عَلَى الْكَافِرِيْنَ ۝ اِنْ هٰذَا هُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۝ وَ
مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۝ وَلَآ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَاَنْ تَقُوْا
۝ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝ قُلْ يٰ اَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى
كَلِمَةٍ سَوَآءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اللّٰهَ ۝ وَلَا نُشْرِكُ بِهِ
شَيْئًا ۝ وَلَا يَكُنْ لَكُمْ بَعْضُنَا اَرْبَابًا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۝ وَاَنْ تَقُوْا
فَقُوْا الشَّهَدَآءَ ۝ يٰ اَيُّهَا الْمُسْلِمُوْنَ ۝ يٰ اَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَاجُّوْنَ
فِيْ اِبْرٰهِيْمَ وَمَا اَنْزَلَتْ الشُّرٰٓةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْ بَعْدِهَا
۝ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ هَآءُنْتَ هُوَ لَا حَاجَّةَ فِيْهَا لَكُمْ بِهِ ۝ عَلِمَ فَلَمْ
تُحَاجُّوْنَ فِيْهَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ ۝ عَلِمَ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ ۝ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُودِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيفًا
مُّسْلِمًا ۝ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنْ اَوَّلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ

مَثَلٌ

सो उनको अल्लाह तआला उनके (ईमान और नेक कामों के) सवाब देंगे, और अल्लाह तआला मुहब्बत नहीं रखते जुल्म करने वालों से। (57) यह हम आपको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं जो कि (आपकी नुबुव्वत की) दलीलों में से है, और हिक्मत भरे मज़ामीन में से है। (58) बेशक अजीब हालत (हज़रत) ईसा की अल्लाह तआला के नज़दीक (हज़रत) आदम (अलैहिस्सलाम) की अजीब हालत की तरह हैं, कि उन (के जिस्मानी ढाँचे) को मिट्टी से बनाया फिर उनको हुक्म दिया कि (जानदार) हो, पस वह (जानदार) हो गये। (59) यह वाकई अम्र आपके परवर्दिगार की तरफ़ से (बतलाया गया) है, सो आप शुब्हा करने वालों में से न होजिए। (60) पस जो शख्स आपसे ईसा के बारे में (अब भी) हुज्जत करे, आपके पास (कतई) इल्म आने के बाद तो आप फ़रमा दीजिए कि आ जाओ हम (और तुम) बुला लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को, और खुद अपने तनों को और तुम्हारे तनों को, फिर हम (सब मिलकर) ख़ूब दिल से दुआ करें, इस तौर पर कि अल्लाह की लानत भेजें उनपर जो (इस बहस में) नाहक़ पर हों। (61) बेशक यह (जो कुछ ज़िक्र हुआ) वही है सच्ची बात, और कोई माबूद होने के लायक़ नहीं सिवाय अल्लाह के, और बेशक अल्लाह तआला ही ग़ल्बे वाले, हिक्मत वाले हैं। (62) फिर (भी) अगर नाफ़रमानी करें तो बेशक अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले हैं फ़साद वालों को। (63) ♦

आप फ़रमा दीजिए कि ऐ अहले किताब आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान (मुसल्लम होने में) बराबर है, (वह यह) कि सिवाय अल्लाह तआला के हम किसी और की इबादत न करें, और अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न ठहराएँ, और हममें से कोई किसी दूसरे को रब करार न दे खुदा तआला को छोड़कर, फिर अगर वे लोग (हक़ से) मुँह मोड़ें तो तुम लोग कह दो कि तुम (हमारे इस इक़रार के) गवाह रहो कि हम तो मानने वाले हैं। (64) ऐ अहले किताब! क्यों हुज्जत करते हो (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में? हालाँकि नहीं नाज़िल की गई तौरात और इन्जील मगर उनके (ज़माने के बहुत) बाद, क्या फिर समझते नहीं हो? (65) हाँ तुम ऐसे हो कि ऐसी बात में तो हुज्जत कर ही चुके थे जिससे तुम्हें किसी कद्र तो जानकारी थी, सो ऐसी बात में क्यों हुज्जत करते हो जिससे तुमको बिल्कुल जानकारी नहीं, और अल्लाह तआला जानते हैं और तुम नहीं जानते। (66) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) न तो यहूदी थे और न ईसाई थे, लेकिन (अलबत्ता) सीधे तरीके वाले (यानी) इस्लाम वाले थे, और मुशिरकीन में से (भी) न थे। (67) बेशक सब आदमियों में ज़्यादा

(पृष्ठ 102 का शेष) अब ज़िन्दा आसमान पर मौजूद हैं। अगरचे पहला वायदा बाद में पूरा होगा लेकिन उसका ज़िक्र पहले है, क्योंकि यह दूसरे वायदे के लिए दलील की तरह है, और दलील रुतबे के तौर पर मुक़द्दम होती है, और “वाव” चौँकि त़रतीब के लिए मौजू नहीं इसलिए इसको आगे-पीछे करने में कोई इश्काल नहीं।

6. इस वायदे का पूरा करना यह हुआ कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और यहूद के सब बेजा इल्ज़ामों और तोहमतों को जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़िम्मे लगते थे, उन सबको साफ़ कर दिया।

7. यहाँ फ़रमाँबदारी से मुराद ख़ास फ़रमाँबदारी है यानी नुबुव्वत का अक़ीदा रखना। पस इतिबा करने वालों के मिस्दाक़ वे लोग हैं जो आपकी नुबुव्वत के मोतकिद हैं, सो इसमें ईसाई और मुसलमान दोनों दाख़िल हैं और इनकारियों से मुराद यहूद हैं जो ईसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत के इनकारी थे। पस हासिल यह हुआ कि उम्मतें मुहम्मदिया और ईसाई हमेशा यहूद पर ग़ालिब रहेंगे।

1. आयत में ‘अपने तन’ से मुराद तो खुद बहस करने वाले हैं और ‘निसा’ से ख़ास बीवी मुराद नहीं बल्कि अपने घर की जो औरतें हों जिसमें लड़की भी शामिल है, मुराद हैं। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस वजह से कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा सब औलाद में ज़्यादा अज़ीज़ थी उनको लाए, इसी तरह ‘अबना-अना’ से ख़ास हकीकी औलाद मुराद नहीं, बल्कि औलाद की औलाद को भी आम है, और उनको भी जो मज़ाज़ी तौर पर औलाद कहलाते हों, यानी उर्फ़ में औलाद के जैसे समझे जाते हों, और इस मतलब में नवासे और दामाद भी दाख़िल हैं, चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (शेष तफ़सीर पृष्ठ 106 पर)

मिनल् मुशिरकीन (67) इन्-न औलन्नासि बि-इब्राही-म लल्लजीनत्त-बअहु व हाज़न्नबिय्यु वल्लजी-न आमनू, वल्लाहु वलिय्युल् मुअ्मिनीन (68) वद्दत्ताइ-फतुम् मिन् अह्लिल्-किताबि लौ युज़िल्लू-नकुम, व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फु-सहुम् व मा यशअुरून (69) या अह्लिल्-किताबि लि-म तक्फुरू-न बिआयातिल्लाहि व अन्तुम् तशहदून (70) या अह्लिल्-किताबि लि-म तल्बिसूनल् हक्-क बिल्-बातिलि व तक्तुमूनल्-हक्-क व अन्तुम् तअलमून (71) ♦

व कालत्ताइ-फतुम् मिन् अह्लिल्-किताबि आमिनू बिल्लजी उन्जि-ल अलल्लजी-न आमनू वज्हन्नहारि वक्फुरू आखि-रहू लअल्लहुम् यरजिअून (72) व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि-अ दीनकुम, कुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि अय्युअ्ता अ-हदुम् मिस-ल मा ऊतीतुम् औ युहाज्जूकुम् अिन्-द रब्बिकुम्, कुल् इन्नल् फज्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अलीम (73) यख्तस्सु बिरह्मतिही मय्यशा-उ, वल्लाहु जुल्फज़िल्ल अज़ीम (74) व मिन् अह्लिल्-किताबि मन् इन्

तअ्मन्हु बिकिन्तारिय्युअदिही इलै-क व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बिदीनारिल् ला युअदिही इलै-क इल्ला मा दुम्-त अलैहि का-इमन्, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कालू लै-स अलैना फिल्उम्मिय्यी-न सबीलुन् व यकूलू-न अलल्लाहिल्-कज़ि-ब व हुम् यअलमून (75) बला मन् औफा बि-अहिदी वत्तका फ-इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुत्तकीन (76) इन्नल्लजी-न यशतरू-न

لَكَذِبِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَذَاتَ ظُلُمَةٍ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَصْطَلُوكُمْ ۖ وَمَا يَصْلُوكُنَّ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْسِبُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجِهُ النَّهَارِ ۖ وَكُفُّوا أَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَن يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيْتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۖ يُخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَن إِنْ تَأْمَنَهُ بَقِطَارٍ يُؤَدِّيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمِنْهُمْ مَن إِنْ تَأْمَنَهُ بِيَدٍ لَا يُؤَدِّيهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمَّتْ عَلَيْهِ ۖ فَمَا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۖ بَلْ مَن آوَىٰ بَعْدَهُ ۖ وَاتَّقِ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ

खुसूसियत रखने वाले (हज़रत) इब्राहीम के साथ अलबत्ता वे लोग थे जिन्होंने उनका इतिबा “यानी पैरवी” किया था, और यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं और ये ईमान वाले। और अल्लाह तआला हिमायती हैं ईमान वालों के। (68) दिल से चाहते हैं बाज़े लोग अहले किताब में से इस बात को कि तुमको (दीने हक से) गुमराह कर दें, और वे किसी को गुमराह नहीं कर सकते मगर खुद अपने आपको, और इसकी खबर नहीं रखते। (69) ऐ अहले किताब! क्यों कुफ़ करते हो अल्लाह तआला की आयतों के साथ? हालाँकि तुम इकरार करते हो। (70) ऐ अहले किताब! क्यों गड़-मड़ करते हो वाकई (मज़मून यानी नुबुव्वते मुहम्मदिया) को ग़ैर वाकई से, और छुपाते हो हकीकी बात को हालाँकि तुम जानते हो।¹ (71) ♦

और बाज़े लोगों ने अहले किताब में से कहा कि ईमान ले आओ उसपर जो नाज़िल किया गया है मुसलमानों पर (यानी कुरआन पर) शुरू दिन में और (फिर) इनकार कर बैठो आखिर दिन में, (यानी शाम को) क्या ताज्जुब है कि वे फिर जाएँ।² (72) और (सच्चे दिल से) किसी के रू-ब-रू इकरार मत करना मगर ऐसे शख्स के रू-ब-रू जो तुम्हारे दीन की पैरवी करने वाला हो। (ऐ मुहम्मद) आप कह दीजिए कि यकीनन हिदायत, हिदायत अल्लाह की है, ऐसी बातें इसलिए करते हो कि किसी और को भी ऐसी चीज़ मिल रही है जैसी तुमको मिली थी, या वे लोग तुमपर ग़ालिब आ जाएँगे तुम्हारे रब के नज़दीक।³ (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप कह दीजिए कि बेशक फज़ल तो खुदा के कब्ज़े में है वह इसको जिसे चाहें अता फ़रमा दें, और अल्लाह तआला बड़ी वुसअत वाले हैं (और) ख़ूब जानने वाले हैं। (73) खास कर देते हैं अपनी रहमत (व फज़ल) के साथ जिसको चाहें, और अल्लाह तआला बड़े फज़ल वाले हैं। (74) और अहले किताब में से बाज़ा शख्स ऐसा है कि (ऐ मुखातब) अगर तुम उसके पास ढेर-का-ढेर माल भी अमानत का रख दो तो वह (माँगने के साथ ही) उसको तुम्हारे पास ला रखे, और उन्हीं में से बाज़ा वह शख्स है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार भी अमानत रख दो तो वह भी तुमको अदा न करे, मगर जब तक कि तुम उसके सर पर खड़े रहो, यह (अमानत का अदा न करना) इस सबब से है कि वे लोग कहते हैं कि हम पर ग़ैर अहले किताब के (माल के) बारे में किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं।⁴ और वे लोग अल्लाह तआला पर झूठ लगाते हैं और (दिल में) वे भी जानते हैं⁵ (कि ख़ियानत करने वाले पर इल्ज़ाम क्यों न होगा)। (75) जो

(पृष्ठ 104 का शेष) हज़रते हसन और हुसैन और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम को लाए। मुबाहला (किसी इख़िलाफी मसले को खुदा पर छोड़ते हुए एक-दूसरे के लिए बद्-दुआ करना कि जो झूठा हो वह बर्बाद हो जाए) अब भी हाजत के वक़्त जायज़ और मशरू है। मुबाहले का अन्जाम कहीं खुले अल्फ़ाज़ में तो नज़र से नहीं गुज़रा मगर हदीस में इस किस्से के मुताल्लिक इतना ज़िक्र है कि अगर वे लोग मुबाहला कर लेते तो उनके घर वाले और माल वग़ैरह सब हलाक हो जाते।

1. दोनों जगह जो ‘तशहदून’ और ‘ता-लमून’ फ़रमाया तो इसकी यह वजह नहीं है कि इकरार न करने या इल्म न होने की हालत में कुफ़ जायज़ है। जो चीज़ अपनी ज़ात में बुरी हो वह किसी हाल में जायज़ हो ही नहीं सकती, बल्कि वजह यह है कि इकरार और इल्म के वक़्त कुफ़ और ज़्यादा मलामत के काबिल है। ऊपर ज़िक्र किया गया था कि बाज़ अहले किताब मुसलमानों को गुमराह करने की फ़िक्र में रहते हैं, आगे उनकी एक तदबीर का बयान फ़रमाते हैं जिसको मोमिनों को गुमराह करने के लिए उन्होंने तजवीज़ किया था।

2. यानी मुसलमान यह ख़याल करें कि ये लोग इल्म वाले हैं और बे-तअस्सुब भी हैं कि इस्लाम कबूल कर लिया, इसपर भी जो यह फिर गए तो ज़रूर इस्लाम का ग़ैर-हक होना उनको इल्मी दलीलों से साबित हो गया होगा, और ज़रूर उन्होंने इस्लाम में कोई ख़राबी देखी होगी जब ही तो उससे फिर गए।

3. हासिल इल्तत का यह हुआ कि तुमको मुसलमानों से हसद है कि उनको आसमानी किताब क्यों मिल गई, या ये लोग हमपर मज़हबी मुनाज़रे में क्यों ग़ालिब आ जाते हैं। उस हसद की वजह से इस्लाम और मुसलमानों की शान घटाने (शेष तफ़सीर पृष्ठ 108 पर)

बि-अहिदिल्लाहि व ऐमानिहिम् स-मनन् कलीलन् उलाइ-क ला खाला-क लहुम् फिल्-
आखि-रति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व ला यन्जुरु इलैहिम् यौमल्-कियामति व ला
युजक्कीहिम् व लहुम् अजाबुन् अलीम (77) व इन्-न मिन्हुम् ल-फरीकय्यल्वू-न
अल्लि-न-तहुम् बिल्किताबि लि-तह्सबूह मिनल्- किताबि व मा हु-व मिनल्-किताबि व

यकूलू-न हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि व मा
हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि व यकूलू-न
अलल्लाहिल्- कजि-ब व हुम् यअलमून
(78) मा का-न लि-ब-शरिन्
अय्युअति-यहुल्लाहुल् किता-ब वल्हुक्-म
वन्नुबुव्व-त सुम्-म यकू-ल लिन्नासि
कूनू अिबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व
लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी-न बिमा कुन्तुम्
तुअल्लिमूनल्-किता-ब व बिमा कुन्तुम्
तद्रूसून (79) व ला यअमु-रकुम् अन्
तत्तखिजुल्- मलाइ-क-त वन्नबिय्यी-न
अरबाबन्, अ-यअमुरुकुम् बिल्कुफिर
बअ-द इज् अन्तुम् मुस्लिमून (80) ♦

व इज् अ-खज़ल्लाहु मीसाकन्-
नबिय्यी-न लमा आतैतुकुम् मिन्

किताबिन्-व हिक्मतिन् सुम्-म जा-अकुम् रसूलुम् मुसदिक्ल्लिमा म-अकुम् लतुअमिनुन्-न
बिही व ल-तन्सुरुन्हू, का-ल अ-अकररतुम् व अ-खज़तुम् अला जालिकुम् इसरी, कालू
अकररना, का-ल फशहदू व अ-न म-अकुम् मिनशशाहिदीन (81) फ-मन् तवल्ला बअ-द
जालि-क फ-उलाइ-क हुमुल् फासिकून (82) अ-फगै-र दीनिल्लाहि यब्बू-न व लहू अस्ल-म

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يُحِبُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَشْكُرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَنَّهُمْ
لَمِنَ الْفَاحِشِينَ ۝ أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ
اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَا لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوَنَ أَسْتِهِمْ بِالْكِتَابِ
لِتَحْسِبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ
مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ
الْكُذِبُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّانِينَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ الْكِتَابِ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ۝ وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَالِيَةَ
وَالنَّجَسَ أَرْبَابًا ۝ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝
وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْنَاكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ
ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ
قَالَ أَأَقْرَضُكُمْ وَلَأَنْتُمْ كُفْرًا ۖ قَالُوا أَتُؤْمِنُونَ
قَالَ فَاشْهَدُوا ۖ وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۖ فَمَنْ تَوَلَّى
بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۖ أَفَعَيَّرْتُمُونِ اللَّهُ يَبْعَثُ

مَنْ تَكُنْ

शख्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह तआला से डरे तो बेशक अल्लाह तआला महबूब रखते हैं (ऐसे) मुत्तकियों को। (76) यकीनन जो लोग हकीर मुआवज़ा ले लेते हैं उस अहद के मुकाबले में जो अल्लाह तआला से (उन्होंने) किया है, और (मुकाबले में) अपनी कसम के, उन लोगों को कुछ हिस्सा आखिरत में (वहाँ की नेमत का) न मिलेगा, और न खुदा तआला उनसे (नरमी का) कलाम फरमाएँगे, और न उनकी तरफ़ (मुहब्बत की नज़र से) देखेंगे कियामत के दिन, और न उनको पाक करेंगे, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। (77) और बेशक उनमें से बाज़े ऐसे हैं कि टेढ़ा करते हैं अपनी ज़बानों को किताब (पढ़ने) में, ताकि तुम लोग उस (मिलाई हुई चीज़) को (भी) किताब का हिस्सा समझो, हालाँकि वह किताब का हिस्सा नहीं, और कहते हैं कि यह (लफ़्ज़ या मतलब) खुदा के पास से है हालाँकि वह (किसी तरह) खुदा तआला के पास से नहीं, और अल्लाह तआला पर झूठ बोलते हैं और वह जानते हैं।¹ (78) किसी बशर से यह बात नहीं हो सकती कि अल्लाह तआला उसको किताब और समझ और नुबुव्वत अता फरमाएँ, फिर वह लोगों से कहने लगे कि मेरे बन्दे बन जाओ खुदा तआला को छोड़कर, वे लेकिन (कहेगा कि) तुम लोग अल्लाह वाले बन जाओ, इस वजह से कि तुम किताब सिखाते हो और इस वजह से कि तुम पढ़ते हो।² (79) और न यह बात बतलाएगा कि तुम फरिश्तों को और नबियों को रब करार दे लो, क्या वह तुमको कुफ़ की बात बतलाएगा? इसके बाद कि तुम मुसलमान हो। (80) ♦

और जबकि अल्लाह ने अहद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुमको किताब और इल्म दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई पैगम्बर आए, जो तसदीक करने वाला हो उसकी जो तुम्हारे पास है, तो तुम ज़रूर उस रसूल पर एतिकाद भी लाना और उसकी तरफ़दारी भी करना। फरमाया कि क्या तुमने इकरार किया और इसपर मेरा अहद कबूल किया? वे बोले हमने इकरार किया, इरशाद फरमाया, तो गवाह रहना और मैं इसपर तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ।³ (81) सो जो शख्स रू-गरदानी करेगा बाद इसके तो ऐसे ही लोग बेहुकमी करने वाले हैं। (82) क्या फिर अल्लाह के दीन के सिवा और किसी तरीके को चाहते हैं, हालाँकि अल्लाह तआला के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों

(पृष्ठ 106 का शेष) और उनको नीचे लाने की कोशिश कर रहे हो।

4. यानी ग़ैर-अहले किताब जैसे कुरैश का माल चुरा लेना या छीन लेना सब जायज़ है।
5. जिन बाज़ की अमानत की तारीफ़ की गई है, अगर उन बाज़ से वे लोग मुराद हैं जो अहले किताब में से ईमान ले आए थे, तब तो तारीफ़ में कोई इश्काल नहीं, और अगर ख़ास मोमिन मुराद न हों बल्कि बिना किसी कैद के अहले किताब में अमानतदार और ख़ियानत करने वाले दोनों का ज़िक्र करना मकसूद है तो तारीफ़ अल्लाह के नज़दीक कबूल होने के एतिबार से नहीं, क्योंकि ईमान के बग़ैर कोई नेक अमल मकबूल नहीं होता, बल्कि तारीफ़ इस एतिबार से है कि अच्छी बात चाहे काफ़िर की हो किसी दर्जे में अच्छी है।
1. मुम्किन है कि लफ़्ज़ी तहरीफ़ (यानी अल्फ़ाज़ में फेर-बदल या कमी ज़्यादती) करते हों, और मुम्किन है कि तफ़सीर ग़लत बयान करते हों। लफ़्ज़ी तहरीफ़ में तो दावा होता है कि यह लफ़्ज़ ही अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और ग़लत तफ़सीर में यह तो नहीं होता लेकिन यह दावा होता है कि यह तफ़सीर शरई कायदों से साबित है और शरई कायदों का अल्लाह की जानिब से होना ज़ाहिर है। एक सूरत में शक्ल के एतिबार से किताब का हिस्सा होने का दावा होगा, एक सूरत में मायने के एतिबार से किताब का हिस्सा होने का दावा होगा। इस तरह कि यह हिस्सा शरीअत से साबित है और हर शरीअत से साबित होने वाली बात हकीक़त में किताब से साबित है।
2. नबी की तरफ़ से अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत का हुक्म करना शरअन मनफ़ी व मुहाल है।
3. अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से तो इसका अहद लिया जाना कुरआन मजीद में वाज़ेह है। बाकी उनकी उम्मतों से या तो उसी वक़्त लिया गया होगा या अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के ज़रिये से लिया गया हो। और इस अहद का मक़ाम या तो अब्बल रूहों की दुनिया हो या सिर्फ़ दुनिया में वस्त्र से लिया गया हो। अहले किताब को यह अहद इसलिए सुनाया कि (शेष तफ़सीर पृष्ठ 110 पर)

मन् फिस्समावाति वल्अर्जि तौअंव्-व कर्हंव्-व इलैहि युरजअून (83) कुल् आमन्ना
बिल्लाहि व मा उन्जि-ल अलैना व मा उन्जि-ल अला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क
व यअक्कू-ब वल्अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अीसा वन्नबिय्यू-न मिररब्बिहिम् ला नुफरिक्कु
बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् व नहनु लहू

मुस्लिमून (84) व मय्यब्तागि गैरल्-
इस्लामि दीनन् फ-लंयुक्ब-ल मिन्हु व
हु-व फिल्-आखि-रति मिनल् खासिरीन

(85) कै-फ यद्दिल्लाहु कौमन् क-फरु
बअ-द ईमानिहिम् व शहिदू अन्नरसू-ल
हक्कुंव्-व जा-अहुमुल्बय्यिनातु, वल्लाहु
ला यद्दिल् कौमज्जालिमीन (86)

उलाइ-क जज़ाउहुम् अन्-न अलैहिम्
लअ-नतल्लाहि वल्मलाइ-कति वन्नासि
अज्मअीन (87) खालिदी-न फीहा ला
युखफफु अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला हुम्
युन्जसुन (88) इल्लल्लज्जी-न ताबू

मिम्-बअदि ज़ालि-क व अस्लहू
फ-इन्नल्ला-ह गफूररहीम (89)

इन्नल्लज्जी-न क-फरु बअ-द ईमानिहिम् सुम्मज्दादू कुफरल्-लन् तुक्ब-ल तौबतुहुम् व
उलाइ-क हुमुज्जाल्लून (90) इन्नल्लज्जी-न क-फरु व मातू व हुम् कुफफारुन् फ-लंयुक्ब-ल
मिन् अ-हदिहिम् मिलुल्-अर्जि ज़-हबंव्-व लविफतदा बिही, उलाइ-क लहुम् अज़ाबुन्
अलीमुंव्-व मा लहुम् मिन्नासिरीन (91) ♦

وَالَّذِينَ اسْلَمُوا مِنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْنَا
يَرْجِعُونَ ۝ قُلْ آمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ
عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ
وَمَا أَوْفَىٰ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالَّذِينَ مِنْ بَيْنِهِمْ لَا تَفَرِّقُ
بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ
الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ
الْخَاسِرِينَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ
وَشَهِدُوا أَنَّ الرُّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللّٰهُ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاءُهُمْ أَنْ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۚ خُلِدُوا فِيهَا
لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۚ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا
مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا الْكُفْرَ لَنْ يُقْبَلَ
تَوْبَتُهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَ
هُمْ كُفَّارًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلَّ الْعَالَمِينَ ۚ ذُحْبًا وَ لَوْ
أَفْتَدَىٰ بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنْ نُصْرَةٍ

مَنْ

और ज़मीन में हैं, खुशी से और बेइख्तियारी से, और सब अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाएंगे।¹ (83) आप फरमा दीजिए कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उसपर जो हमारे पास भेजा गया, और उसपर जो इब्राहीम व इसमाईल व इसहाक व याकूब और याकूब की औलाद की तरफ भेजा गया, और उसपर भी जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को दिया गया उनके परवर्दिगार की तरफ से, इस कैफियत से कि हम उनमें से किसी एक में भी तफरीक नहीं करते, और हम तो अल्लाह ही के फरमाँबदार हैं। (84) और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को तलब करेगा तो वह उससे मकबूल न होगा और वह आखिरत में तबाहकारों में से होगा। (85) अल्लाह तआला ऐसे लोगों को कैसे हिदायत करेंगे जो काफिर हो गए अपने ईमान लाने के बाद, और अपने इस इकरार के बाद कि रसूल सच्चे हैं, और इसके बाद कि उनको खुली दलीलें पहुँच चुकी थीं, और अल्लाह तआला ऐसे बेढंगे लोगों को हिदायत नहीं करते।² (86) ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर अल्लाह तआला की भी लानत होती है और फरिश्तों की भी और आदमियों की भी सबकी। (87) वे हमेशा-हमेशा को उसी में रहेंगे, उनपर से अज़ाब हल्का भी न होने पाएगा और न उनको मोहलत ही दी जाएगी। (88) हाँ, मगर जो लोग तौबा कर लें उसके बाद और अपने आपको संवारें।³ सो बेशक खुदा तआला बख्श देने वाले, रहमत करने वाले हैं। (89) बेशक जो लोग काफिर हुए अपने ईमान लाने के बाद, फिर बढ़ते रहे कुफ़्र में,⁴ उनकी तौबा हरगिज़ मकबूल न होगी, और ऐसे लोग पक्के गुमराह हैं। (90) बेशक जो लोग काफिर हुए और वे मर भी गए कुफ़्र ही की हालत में, सो उनमें से किसी का ज़मीन भर “यानी ज़मीन के बराबर” सोना भी न लिया जाएगा अगरचे मुआवज़े में उसको देना भी चाहे, उन लोगों को दर्दनाक सज़ा होगी और उनके कोई हामी भी न होंगे। (91) ♦

(पृष्ठ 108 का शेष) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत दलीलों से साबित है तो लाज़िमी तौर पर वे भी इस अहद के मज़मून में दाखिल हैं, फिर तुमपर यकीनन आपकी तस्दीक और मदद फर्ज़ है, और यही इस्लाम का हासिल है।

1. हासिले मक़ाम यह हुआ कि हक़ तआला के पैदा करने और मौजूद करने के अहक़ाम के तो सब ताबे हैं, और “बेइख्तियारी” से यही मुराद है। और बहुत से तशरीई अहक़ाम की भी इताअत करने वाले हैं। और “खुशी से” का मतलब यही है। तो हुक्म की एक किस्म तो सब पर ही जारी है और दूसरी किस्म को भी बहुतों ने कबूल कर रखा है, जिससे हाकिम की अज़मत नुमायाँ हैं। अब बाज़े जो दूसरी किस्म में ख़िलाफ़ करते हैं तो क्या कोई और इस अज़मत और शान का है जिसकी मुवाफ़क़त के लिए ये मुख़ालफ़त करते हैं।
2. यह मतलब नहीं कि ऐसों को इस्लाम की तौफीक़ कभी नहीं देते, बल्कि मकसूद उनके उसी पहले ज़िक्र हुए दावे की नफ़ी करना है, कि वे कहते थे कि हमने जो इस्लाम छोड़कर यह रास्ता इख्तियार किया है, हमको खुदा ने हिदायत दी है। खुलासा नफ़ी का यह हुआ कि जो शख्स कुफ़्र का बेढंगा रास्ता इख्तियार करे वह खुदा की हिदायत पर नहीं, इसलिए वह यह नहीं कह सकता कि मुझको खुदा ने हिदायत दी है, क्योंकि कुफ़्र हिदायत का रास्ता नहीं बल्कि ऐसे लोग यकीनन गुमराह हैं।
3. यानी मुनाफ़िक़ाना तौर पर ज़बान से तौबा काफ़ी नहीं।
4. यानी हमेशा कुफ़्र पर रहे ईमान नहीं लाए।

चौथा पारः लन् तनालू

सूरतु आलि इमरान (आयत 92 से 200)

लन् तनालुलुबिर्-र हत्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिब्बू-न, व मा तुन्फिकू मिन् शैइन्
फ-इन्नल्ला-ह बिही अलीम (92) कुल्लुत्तआमि का-न हिल्लल् लि-बनी इस्राई-ल इल्ला मा

हर-म इस्राईलु अला नफिसही मिन्
कब्लि अन् तुनज्जलतौरातु, कुल् फअतू
बितौराति फल्लूहा इन् कुन्तुम् सादिकीन
(93) फ-मनिफतरा अलल्लाहिल्

कजि-ब मिम्-बअदि जालि-क
फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (94) कुल्
स-दकल्लाहु फत्तबिअू मिल्ल-त

इब्राही-म हनीफन्, व मा का-न मिनल्
मुशिरकीन (95) इन्-न अव्व-ल
बैतिंव्वुजि-अ लिन्नासि लल्लज्जी

बि-बक्क-त मुबा-रकव्-व हुदल्-
लिल्लालमीन (96) फीहि आयातुम्
बय्यिनातुम् मकामु इब्राही-म, व मन्

द-ख-लहू का-न आमिनन्, व लिल्लाहि
अलन्नासि हिज्जुलबैति मनिस्तता-अ
इलैहि सबीलन्, व मन् क-फ-र

फ-इन्नल्ला-ह गनिय्युन् अनिल् आलमीन (97) कुल् या अह्लल्-किताबि लि-म तक्फुरू-न

बिआयातिल्लाहि वल्लाहु शहीदुन् अला मा तअमलून (98) कुल् या अह्लल्-किताबि लि-म

तसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न तबूनहा अि-वजव्-व अन्तुम् शु-हदा-उ, व

मल्लाहु बिगाफिलिन् अम्मा तअमलून (99) या अय्युहल्लज्जी-न आमनू इन् तुतीअू फरीकम्

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا
مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۚ كُلُّ الظَّالِمِ كَانَ حِلًّا
لِيَتَّقِيَ اسْرَآءِيلَ إِلَّا مَا حَزَمُوا اسْرَآءِيلَ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ
قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرَةُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا ۚ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ فَمَنْ أَفْضَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ
ذَلِكَ ۚ قُلْ لَكُمْ هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۚ فَاتَّبِعُوا
وَلَاةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّ
أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى
لِّلْعَالَمِينَ ۚ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا عَمِلَ إِبْرَاهِيمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهُ
كَانَ آمِنًا ۚ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حُجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ
إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفِيرٌ ۚ عَنِ الْعَالَمِينَ ۚ
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ شَهِيدٌ
عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ۚ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ ۚ
مَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۚ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنِ تُحِبُّوا
فَرِيقًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ

चौथा पार: लन् तनालू

सूर: आलि इमरान (आयत 92 से 200)

तुम कामिल ख़ैर को कभी न हासिल कर सकोगे यहाँ तक कि अपनी प्यारी चीज़ को ख़र्च न करोगे। और जो कुछ भी ख़र्च करोगे अल्लाह तआला उसको ख़ूब जानते हैं।¹ (92) सब खाने की चीज़ें तौरात के नाज़िल होने से पहले उसको छोड़कर जिसको याकूब (अलैहिस्सलाम) ने अपने नफ्स पर हराम कर लिया था,² बनी इसराईल पर हलाल थी,³ फरमा दीजिए की फिर तौरात लाओ फिर उसको पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93) सो जो शख्स उसके बाद अल्लाह तआला पर झूठ बात की तोहमत लगाए तो ऐसे लोग बड़े बेइन्साफ़ हैं। (94) आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ने सच कह दिया सो तुम मिल्लते इब्राहीम का इत्तिबा करो जिसमें ज़रा टेढ़ नहीं, और वह मुश्रिक भी न थे। (95) यकीनन वह मकान जो सबसे पहले लोगों के लिए मुकर्रर किया गया⁴ वह मकान है जो कि मक्का में है,⁵ जिसकी हालत यह है कि वह बरकत वाला है और दुनिया भर के लोगों का रहनुमा है।⁶ (96) उसमें खुली निशानियाँ हैं (उनमें से) एक मकामे इब्राहीम है,⁷ और जो शख्स उसमें दाख़िल हो जाए वह अमन वाला हो जाता है। और अल्लाह के वास्ते लोगों के ज़िम्मे उस मकान का हज करना है, (यानी) उस शख्स के ज़िम्मे जो कि ताक़त रखे वहाँ तक पहुँचने की,⁸ और जो शख्स मुनकिर “यानी इनकार करने वाला” हो तो अल्लाह तआला तमाम जहान वालों से ग़नी है।⁹ (97) आप फरमा दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम क्यों इनकार करते हो अल्लाह तआला के अहकाम का, हालाँकि अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों की इत्तिला रखते हैं। (98) आप फरमा दीजिए कि ऐ अहले किताब क्यों हटाते हो अल्लाह तआला की राह से ऐसे शख्स को जो ईमान ला चुका इस तौर पर कि टेढ़ ढूँढ़ते हो उस राह के लिए हालाँकि तुम खुद भी इत्तिला रखते हो, और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं। (99) ऐ ईमान वालो! अगर तुम कहना मानोगे किसी फिर्के का उन लोगों में से जिनको किताब दी गई है तो वे लोग तुमको तुम्हारे ईमान लाने के बाद काफ़िर बना देंगे। (100) और तुम कुफ़्र कैसे कर सकते हो हालाँकि तुमको अल्लाह तआला के अहकाम पढ़कर सुनाए जाते हैं, और तुममें अल्लाह के रसूल मौजूद हैं। और जो शख्स अल्लाह तआला

1. आयत से मालूम हुआ कि सवाब तो हर ख़र्च करने से होता है जो अल्लाह की राह में किया जाए, मगर ज़्यादा सवाब प्यारी और पसन्दीदा चीज़ के ख़र्च करने से होता है।

2. यानी ऊँट का गोश्त। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को इकुनिसा का मर्ज़ था। आपने मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह तआला इससे शिफा दें तो सबमें ज़्यादा जो खाना मुझको महबूब हो उसको छोड़ दूँ। उनको शिफा हो गई और आपको ऊँट का गोश्त सबमें ज़्यादा महबूब था, उसको छोड़ दिया। फिर यही तहरीम (हराम करना) जो मन्नत से हुई थी बनी इसराईल में भी वहा के हुक्म से रही। और मालूम होता है कि उनकी शरीअत में मन्नत से तहरीम भी हो जाती होगी, जिस तरह हमारी शरीअत में मुबाह का इजाब हो जाता है। (यानी एक चीज़ जिसका करना पहले ज़रूरी नहीं था मन्नत मानने से वह वाजिब हो जाती है) मगर तहरीम (यानी किसी चीज़ को हराम करने) की मन्नत जायज़ नहीं, बल्कि उसमें उसके खिलाफ़ करना और फिर उस खिलाफ़ करने और तोड़ने का कफ़ारा वाजिब है।

3. ‘तौरात के नाज़िल होने से पहले’ इस वास्ते फरमाया कि तौरात के नाज़िल होने के बाद इन जिक्र कि गई हलाल चीज़ों में से भी बहुत-सी चीज़ें हराम हो गई थीं, जिसकी कुछ तफ़सील सूर: अन्आम की इस आयत में है: ‘व अल्ललज़ी-न हादू हरर्मना कुल्-ल जी जुफुरिन्.....’।

4. सब इबादतगाहों से पहले उसके मुकर्रर होने से यह भी मालूम हो गया कि बैतुल-मक़िदस से भी पहले बना है, चुनौचे बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में इसका खुलासा दिया है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 114 पर)

मिनल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब यरुद्दूकुम् बअ-द ईमानिकुम् काफिरीन (100) व कै-फ तक्फुरू-न व अन्तुम् तुल्ला अलैकुम् आयातुल्लाहि व फीकुम् रसूलुह्, व मय्यअतसिम् बिल्लाहि फ-कद् हुदि-य इला सिरातिम् मुस्तकीम (101) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह हक्-क तुकातिही व ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून (102) वअतसिम्

बि-हबिल्लाहि जमीअंव-व ला तफर्रकू वज्कुरू निअ-मतल्लाहि अलैकुम् इज् कुन्तुम् अअदा-अन् फ-अल्ल-फ बै-न कुलूबिकुम् फ-अस्वहतुम् बिनिअमतिही इख्वानन् व कुन्तुम् अला शफा हुफरतिम् मिनन्नारि फ-अन्क-जकुम् मिन्हा, कजालि-क युबय्यनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअल्लकुम् तहतदून (103) वल्लतकुम् मिन्कुम् उम्मतुं य्यद् अ-न इलल्लैरि व यअमुरू-न बिल्मअरूफि व यन्हौ-न अनिल्मुन्करि, व उलाइ-क हुमुल् मुफिलहून (104) व ला तकूनू कल्लजी-न तफर्रकू वख्त-लफू मिम्-बअदि मा जा-अहुमुल्-बय्यिनातु, व उलाइ-क लहुम् अजाबुन् अजीम

(105) यौ-म तब्यज्जु वुजूहुंव-व तस्वद्दु वुजूहुन् फ-अम्मल्लजीनस्-वद्दत् वुजूहुहुम्, अ-कफर्रतुम् बअ-द ईमानिकुम् फज्जूकुल्-अजा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फुरून (106) व अम्मल्लजीनब्-यज्जत् वुजूहुहुम् फ-फी रहमतिल्लाहि, हुम् फीहा खालिदून (107) तिल्-क आयातुल्लाहि नतलूहा अलै-क बिल्हक्कि, व मल्लाहु युरीदु जुल्मल् लिल्लालमीन (108) व

لَبَّيْكَ يَا أَيُّهَا الْمَدِينَةُ وَكَفَيْتَ كُفْرُونَ وَأَنْتُمْ تَنْتَلِي عَلَيْكُمْ آيَةُ اللَّهِ وَ
فِيكُمْ رَسُولُهُ وَمَنْ يَعْتَصِرْ بِاللَّهِ فَغَدَّ هُدًى إِلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا
تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا
وَلَا تَفَرَّقُوا ۝ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً
فَالَقَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۝ وَكُنْتُمْ
عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَلَنْ كُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ
يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ ۝ أُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
تَفَرَّقُوا وَاسْتَفْتَوْا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۝ وَأُولَئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ
فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ
فَقُتِلُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ
ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝
تِلْكَ آيَةُ اللَّهِ تَنْتَلُو مَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا

को मज़बूत पकड़ता है तो ज़रूर सीधे रास्ते की हिदायत किया जाता है। (101) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरा करो डरने का हक¹ और सिवाय इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना। (102) और मज़बूत पकड़े रहो अल्लाह तआला के सिलसिले को इस तौर पर कि (तुम सब) आपस में मुत्तफ़िक भी रहो, और आपस में ना-इत्तिफ़ाकी मत करो, और तुमपर जो अल्लाह तआला का इनाम है उसको याद करो जबकि तुम दुश्मन थे। पस अल्लाह तआला ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी, सो तुम खुदा तआला के इनाम से आपस में भाई-भाई हो गए, और तुम लोग दोज़ख के गढ़े के किनारे पर थे² सो उससे अल्लाह तआला ने तुम्हारी जान बचाई, इसी तरह अल्लाह तआला तुम लोगों को अपने अहकाम बयान करके बतलाते रहते हैं, ताकि तुम लोग राह पर रहो। (103) और तुममें एक ऐसी जमाअत होना ज़रूरी है जो कि खैर की तरफ़ बुलाया करें और नेक कामों के करने को कहा करें और बुरे कामों से रोका करें, और ऐसे लोग पूरे कामयाब होंगे।³ (104) और तुम लोग उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने आपस में तफ़रीक़ कर ली और आपस में इख़िलाफ़ कर लिया, उनके पास वाज़ेह अहकाम पहुँचने के बाद⁴ और उन लोगों के लिए बड़ी सज़ा होगी। (105) उस दिन कि बाज़े चेहरे सफ़ेद हो जाएँगे और बाज़े चेहरे सियाह होंगे, सो जिनके चेहरे सियाह हो गए होंगे उनसे कहा जाएगा: क्या तुम लोग काफ़िर हो गए थे अपने ईमान लाने के बाद? तो सज़ा चखो अपने कुफ़्र के सबब से। (106) और जिनके चेहरे सफ़ेद हो गए होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (107) ये अल्लाह तआला की आयतें हैं, जो सही-सही तौर पर हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं, और अल्लाह तआला मख़्लूक़ात पर जुल्म करना नहीं चाहते। (108) और अल्लाह ही की मिल्क है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह

(पृष्ठ 112 का शेष)

5. यानी ख़ाना काबा।

6. मतलब यह कि हज़ वहाँ होता है और जैसे नमाज़ का सवाब हदीस की वज़ाहत के मुताबिक़ वहाँ बहुत ज़्यादा होता है, दीनी बरकत तो यह हुई और जो वहाँ नहीं हैं उनको उस मक़ान के ज़रिये से नमाज़ का रुख़ मालूम होता है, यह रहनुमाई हुई।

7. मक़ामे इब्राहीम एक पत्थर है जिसपर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा की तामीर की थी, और उस पत्थर में आपके कदमों का निशान बन गया था। अब वह पत्थर ख़ाना काबा से ज़रा फासले पर एक महफूज़ जगह में रखा है।

8. सबील की तफ़सील हदीस में सफ़र के खर्च और सवारी के साथ आई है।

9. दलील का हासिल यह हुआ कि देखो ये शरई अहक़ाम ख़ाना काबा से मुताल्लिक़ हैं, जिनका मुताल्लिक़ होना दलीलों से साबित है, और ऐसे अहक़ाम बैतुल-मक़्दिस के मुताल्लिक़ शरीअत में बयान नहीं किए गए, पस ख़ाना काबा की अफ़ज़लियत साबित हो गई।

1. पूरे तौर पर डरने का मतलब यह है कि जिस तरह शिर्क व कुफ़्र से बचे हो, तमाम गुनाहों से भी बचा करो। आयत का मतलब यह है कि मामूली तक्वे पर इक्तिफ़ा मत करो बल्कि आला और कामिल दर्जे का तक्वा इख़्तियार करो, जिसमें गुनाहों से बचना भी आ गया।

2. यानी काफ़िर होने की वजह से दोज़ख़ से इतने करीब थे कि बस दोज़ख़ में जाने के लिए सिर्फ़ मरने की देर थी।

3. जो शख्स अच्छाई का हुक्म करने और बुराई से रोकने पर कादिर हो, यानी हालात से ग़ालिब गुमान रखता हो कि अगर मैं अच्छाई का हुक्म करूँगा और बुराई से रोकूँगा तो मुझको कोई ख़ास नुक़सान नहीं पहुँचेगा, तो उसके लिए वाजिब उमूर में अच्छाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना वाजिब है, और मुस्तहब उमूर में मुस्तहब है। और जो आदमी इस तरह कादिर न हो उसपर यह काम वाजिब उमूर में भी वाजिब नहीं, अलबत्ता अगर हिम्मत करे तो सवाब मिलेगा।

4. आयत में जो तफ़रीक़ व इख़िलाफ़ की मज़म्मत (निंदा) है, मुराद इससे वह तफ़रीक़ है जो दीन के उसूल में हो, या वाज़ेह अहक़ाम में नफ़सानियत से हो। और जो ग़ैर-वाज़ेह अहक़ाम में या तो खुली नस्स न होने की वजह से या नुसूस के ज़ाहिरी टकराव की वजह से हो, जिनमें मुताबक़त की वजह वाज़ेह न हो तो ऐसे मसाल में इख़िलाफ़ हो जाना इस आयत में दाख़िल नहीं और बुरा नहीं, बल्कि उम्मत मरहूमा में ऐसा इख़िलाफ़ मौजूद है।

लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि, व इलल्लाहि तुरजअुल् उमूर (109) ♦

कुन्तुम् खै-र उम्मतिन् उखिरजत् लिन्नासि तअ्भुरू-न बिल्मअ्रुफि व तन्हौ-न अन्लिमुन्करि व तुअ्मिन्-न बिल्लाहि, व लौ आम-न अह्लुल्-किताबि लका-न खैरल्लहुम्, मिन्हुमुल् मुअ्मिन्-न व अक्सरुहुमुल् फासिकून (110) लंय्यजुर्सकुम् इल्ला अजन्, व इय्युकातिलूकुम् युवल्लूकुमुल् अद्बा-र,

सुम्-म ला युन्सरून (111) जुरिबत् अलैहिमुज्जिल्लतु ऐनमा सुकिफू इल्ला बि-हब्लिम् मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बाऊ बि-ग-जबिम् मिनल्लाहि व जुरिबत् अलैहिमुल्-मस्क-नतु, जालि-क बि-अन्नहुम् कानू यक्फुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक्तुलूनल्-अम्बिया-अ बिगैरि हक्किन्, जालि-क बिमा अ-सव्-व कानू यअ्तदून (112) लैसू सवाअन्, मिन् अह्लिल्-किताबि उम्मतुन् काइ-मतुंय्यतूलू-न आयातिल्लाहि आनाअल्लैलि व हुम् यस्जुदून (113) युअ्मिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि व यअ्भुरू-न बिल्-

لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۝ وَاِلٰى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۝ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ غَيْرَ اُمَّةٍ ۝ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُوْنَ وَكَثَرٌ مِّنَ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَنْ يُّضْرَؤْكُمْ اِلَّا اَذًى ۝ وَاِنْ يَّقَاتِلُوْكُمْ يُوْثُوْكُمْ الْاَدْبَارَ ۝ لَكُمْ لَا يَنْصُرُوْنَ ۝ ضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الدِّمَآءَ اِنْ مَا تَقِفُوْا ۝ اِلَّا يَحْبِلُ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٌ مِّنَ النَّاسِ ۝ وَهَآؤُا يَغْضِبُ مِّنَ اللّٰهِ وَضَرَبْتَ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةَ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ بَايَاتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْبِيَآءَ ۝ بَغْضًا حَقًّا ۝ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا ۝ وَكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ لَيْسُوْا سَوَآءًا ۝ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ ۝ وَآلِيَةٌ يَّتَلَوْنَ اٰيَاتِ اللّٰهِ اِنَّآ اَنْزِلْنَا الْبَيِّنٰتَ ۝ وَهُمْ يَسْتَعْبِدُوْنَ ۝ يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۝ يَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۝ يُسَارِعُوْنَ فِي الْحَدِيْثِ ۝ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ غَيْرِ ۝ فَلَنْ يُكْفَرُوْهُ ۝ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَا اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ ۝ شَيْئًا ۝ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ مَّثَلُ مَا

مَثَلُ

मअ्रुफि व यन्हौ-न अन्लिमुन्करि व युसारिअू-न फिल्खैराति, व उलाइ-क मिनस्सालिहीन (114) व मा यफअलू मिन् खैरिन् फ-लंय्यक्फरुहु, वल्लाहु अलीमुम् बिल्-मुत्तकीन (115) इन्नल्लजी-न क-फरु लन् तुग्नि-य अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून (116) म-सलु मा युन्फिकू-न फी

ही की तरफ सब मुकद्मात रुजू किए जाएँगे। (109) ♦

तुम लोग अच्छी जमाअत हो कि वह जमाअत लोगों के लिए ज़ाहिर की गई है, तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह तआला पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उनके लिए ज़्यादा अच्छा होता, उनमें से बाज़े तो मुसलमान हैं और ज़्यादा हिस्सा उनमें से काफिर हैं।¹ (110) वे तुमको हरगिज़ कोई नुकसान न पहुँचा सकेंगे मगर ज़रा मामूली सी तकलीफ,² और अगर तुमसे वे लड़ाई और जंग करें तो तुमको पीठ दिखाकर भाग³ जाएँगे, फिर किसी की तरफ से उनकी हिमायत भी न की जाएगी। (111) जमा दी गई उनपर बेकद्री⁴ जहाँ कहीं भी पाए जाएँगे, मगर हाँ! एक तो ऐसे ज़रिये के सबब जो अल्लाह तआला की तरफ से है और एक ऐसे ज़रिये से जो आदमियों की तरफ से है।⁵ और मुस्तहिक हो गए ग़ज़वे इलाही के, और जमा दी गई उनपर पस्ती, यह इस वजह से हुआ कि वे लोग इनकारी हो जाते थे अल्लाह के अहकाम के, और क़त्ल कर दिया करते थे पैग़म्बरों को नाहक, और यह इस वजह से हुआ कि उन लोगों ने इताअत न की और दायरे से निकल-निकल जाते थे। (112) ये सब बराबर नहीं, इन अहले किताब में से एक जमाअत वह भी है जो कायम हैं, अल्लाह तआला की आयतें रात के वक्तों में पढ़ते हैं और वे नमाज़ भी पढ़ते हैं। (113) अल्लाह पर और कियामत वाले दिन पर ईमान रखते हैं और नेक काम बतलाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं, और ये लोग सलीके वाले लोगों में से हैं।⁶ (114) और ये लोग जो नेक काम करेंगे उससे महरूम न किए जाएँगे और अल्लाह तआला तक्वे वालों को खूब जानते हैं। (115) जो लोग काफिर हैं हरगिज़ उनके काम न आएँगे उनके माल और न उनकी औलाद अल्लाह तआला के मुकाबले में ज़रा भी, और वे लोग दोज़ख वाले हैं, वे हमेशा-हमेशा उसी में रहेंगे। (116) वे जो कुछ खर्च करते हैं इस दुनियावी ज़िन्दगानी में उसकी हालत उस हालत जैसी है कि एक हवा हो जिसमें तेज़ सर्दी हो, वह लग जाए ऐसे लोगों की खेती को जिन्होंने अपना नुकसान कर रखा हो, पस वह उसको बर्बाद कर डाले, और अल्लाह तआला ने उनपर जुल्म नहीं किया लेकिन वे खुद ही अपने

1. यह ख़िताब तमाम उम्मत मुहम्मदिया को आम है। फिर उनमें से सहाबा अब्बल और अशरफ़ मुखातबीन हैं।

2. यानी जबानी बुरा-भला कहकर दिल दुखाना।

3. यह एक पेशीनगोई है जो इसी तरह ज़ाहिर हुई। चुनाँचे अहले किताब नुबुव्वत के ज़माने में किसी मौके पर भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर जो कि मक़ाम की मुनासबत से इस मज़मून के मुखातब हैं ग़ालिब न आए, खासकर यहूद जिनकी बुराइयाँ खुसूसियत से इस जगह ज़िक्र की गई हैं।

4. यानी जान की बेअम्मी।

5. अल्लाह की तरफ़ का ज़रिया यह कि कोई किताबी (किताब वाला यानी यहूदी या ईसाई) अल्लाह तआला की इबादत में ऐसा मशगूल हो कि मुसलमानों से लड़ता-भिड़ता न हो, वह जिहाद में क़त्ल नहीं किया जाता, अगरचे उसकी इबादत आखिरत में नफ़ा देने वाली न हो। और आदमियों की तरफ़ के ज़रिये से मुराद वह मुआहदा व सुलह है जो मुसलमानों के साथ हो जाए। चुनाँचे ज़िम्मी (वह ग़ैर-मुस्लिम जो मुस्लिम हुकूमत में रहे और टैक्स अदा करे, जिसके बदले में मुस्लिम हुकूमत उसकी जान-माल की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करे) व सुलह करने वाला भी मामूनी है। या किसी कौम का उनसे लड़ने का इरादा न करना, जैसा बाज़े ज़मानों में हुआ या होगा। यह अमन भी आदमियों ही की जानिब से है। बाकी और किसी को अमन नहीं।

6. आयत का हसिल उन लोगों की तारीफ़ है कि उन्होंने उन सिफ़्तों को इख़्तियार किया है जो कि इस उम्मत के ख़ैर होने के असबाब से हैं, इसलिए 'युअमिनु-न' और 'यअमुसु-न' को तख़सीस के साथ लाए, जिसकी वजह ख़ैर होने में खुलासा थी, वरना 'का-इमह' के आम होने में ये सब उमूर दाख़िल हो गए थे।

हाजिहिल् हयातिदुन्या क-म-सलि रीहिन् फीहा सिरुन् असाबत् हर-स कौमिन् ज-लम्
अन्फु-सहुम् फ-अह्ल-कत्हु, व मा ज-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् अन्फु-सहुम् यजिल्लमून
(117) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तत्तखिजू बितान-तम् मिन् दूनिकुम् ला यअलूनकुम्
खबालन्, वद्दू मा अनित्तुम् कद् ब-दतिल्- बग्जा-उ मिन् अफ्वाहिहिम् व मा तुख्फी

सुदूरुहुम् अक्बरु, कद् बय्यन्ना लकुमुल्-

आयाति इन् कुन्तुम् तअकिलून (118)

हा-अन्तुम् उला-इ तुहिब्बूनहुम् व ला

युहिब्बूनकुम् व तुअमिन्-न बिल्किताबि

कुल्लिही व इजा लक्कुम् कालू आमन्ना

व इजा खलौ अज्जू अलैकुमुल्-

अनामि-ल मिनल्-गैजि, कुल् मूतू

बिगै जि कुम्, इन्नल्ला-ह अलीमुम्

बिजातिस्सुदूर (119) इन् तम्सस्कुम्

ह-स-नतुन् तसुअहुम् व इन् तुसिब्कुम्

सय्यि-अतुंय्यफरहू बिहा, व इन् तस्बिरु

व तत्तक्कू ला यजुरुकुम् कैदुहुम्

शैअन्, इन्नल्ला-ह बिमा यअमलू-न

मुहीत (120) ♦

व इज्ज गदौ-त मिन् अहिल-क

तुबव्विउल्-मुअमिनी-न मकाअि-द लिल्कितालि, वल्लाहु समीअुन् अलीम (121) इज्ज

हम्मत्ता-इ-फतानि मिन्कुम् अन् तपशला वल्लाहु वलिय्युहुमा, व अलल्लाहि फल्य-तवक्कलिल्

मुअमिन् (122) व लकद् न-स-रकुमुल्लाहु बि-बद्रिर्व-व अन्तुम् अजिल्लतुन् फत्तकुल्ला-ह

लअल्लकुम् तश्कुरून (123) इज्ज तक्कूलु लिल्- मुअमिनी-न अलंय्यक्फि-यकुम् अय्युमिदकुम्

يَنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ يَتَجَرَّعُهَا أَصَابَتْ
حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُمُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَ
لَكِنْ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا
بِعَاطَةِ مَن دُونَكُمْ لَا يَأْتُونَكُمْ خَبْرًا وَلَا دُونَ مَا عِنْتُمْ قَدْ
بَدَتْ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝ مَا أَنْتُمْ إِلَّا خُجُوبٌ
وَلَا يُبَيِّنُوكُمْ وَأَتُومِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا النُّفُوسُ قَالُوا
أَمَّا ۖ وَإِذَا خَلَوْا عَصَوْا عَاقِبَتَهُمُ الْآكَانَ أُولَ مِنَ الْغِيظِ قُلْ
مُوتُوا بَعِيْظَكُمْ إِنْ اللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنْ
تَسْتَسْكِمُوا حَسَنَةً سَئُوهُمْ وَإِنْ تُصَبِّحُوا سَيِّئَةً يَفْرَحُوا بِهَا
وَإِنْ تُصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يُضْرَكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا إِنْ اللَّهُ عَمَّا
يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَإِذْ عَدُوٌّ مِنْ أَهْلِكَ بُيِّئَ الْمُؤْمِنِينَ
مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ
مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّبَعُوا
اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ إِذْ يَقُولُ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ لَكُمْ لَأَعْيُنًا

مَثَلًا

आपको नुकसान पहुँचा रहे हैं। (117) ऐ ईमान वालो! अपने सिवा किसी को साहिबे खुसूसियत मत बनाओ,¹ वे लोग तुम्हारे साथ फसाद करने में कोई कसर उठा नहीं रखते, तुम्हारे नुकसान की तमन्ना रखते हैं, वाकई बुग़ज़ उनके मुँह से जाहिर हो पड़ता है, और जिस कद्र उनके दिलों में है वह तो बहुत कुछ है, हम निशानियाँ तुम्हारे सामने जाहिर कर चुके, अगर तुम अक्ल रखते हो। (118) हाँ, तुम ऐसे हो कि उन लोगों से मुहब्बत रखते हो और ये लोग तुमसे बिल्कुल मुहब्बत नहीं रखते, हालाँकि तुम तमाम किताबों पर ईमान रखते हो और ये लोग जो तुमसे मिलते हैं कह देते हैं कि हम ईमान ले आए और जब अलग होते हैं तो तुमपर अपनी उँगलियाँ काट-काट खाते हैं मारे सख्त गुस्से के,² आप कह दीजिए कि तुम मर रहो अपने गुस्से में,³ बेशक अल्लाह तआला खूब जानते हैं दिलों की बातों को। (119) अगर तुमको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उनके लिए रन्ज का सबब होती है। और अगर तुमको कोई नागवार हालत पेश आती है तो वे उससे खुश होते हैं। और अगर तुम इस्तिकलाल और तक्वे के साथ रहो तो उन लोगों की तदबीर तुमको ज़रा भी नुकसान न पहुँचा सकेगी, बेशक अल्लाह तआला उनके आमाल पर इहाता रखते हैं। (120) ♦

और जबकि आप सुबह के वक़्त अपने घर से चले,⁴ मुसलमानों को जंग करने के लिए मकामात पर जमा रहे थे, और अल्लाह तआला सब सुन रहे थे, सब जान रहे थे। (121) जब तुममें से दो जमाअतों ने दिल में ख्याल किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह तो उन दोनों जमाअतों का मददगार था, और बस मुसलमानों को तो अल्लाह तआला ही पर भरोसा करना चाहिए।⁵ (122) और यह बात तहकीकी है कि हक़ तआला ने बद्र में तुम्हारी मदद फरमाई, हालाँकि तुम बेसरोसामान थे, सो अल्लाह तआला से डरते रहा करो, ताकि तुम शुक्र गुज़ार रहो।⁶ (123) जबकि आप मुसलमानों से (यूँ) फरमा रहे थे कि क्या तुमको यह बात काफ़ी न होगी कि तुम्हारा रब तुम्हारी इम्दाद

1. यहाँ जो ग़ैर-मज़हब वालों से खुसूसियत की मनाही फरमाई है उसमें यह भी दाख़िल है कि उनको अपना राज़दार बनाया जाए। और इसमें यह भी दाख़िल है कि अपने खास इन्तिज़ामी मामलात में उनको दख़ल दिया जाए।
2. यह गुस्से की सख़्ती की तरफ़ इशारा है जो मजबूरी के वक़्त हो।
3. मुराद यह है कि अगर तुम मर भी जाओगे तब भी तुम्हारी मुराद पूरी न होगी।
4. यह किस्सा ग़ज़वा-ए-उहद का है।
5. सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर खुदा तआला की कैसी इनायत है कि जुर्म के बयान के साथ उनको मददगार होने की खुशख़बरी भी सुना दी, जिसमें माफ़ी का वायदा मफ़हूम होता है। और जुर्म भी कितना हल्का बतलाया कि वापसी नहीं सिर्फ़ कम-हिम्मती, फिर उसका भी मौजूद होना नहीं बल्कि ख़्याल। पस या तो इतना ही सादिर हुआ हो या सादिर हुए कुछ हिस्से को ज़िक्र नहीं फरमाया। और पहली शकल मान लेने पर नाराज़गी की वजह इन हज़रात का हद दर्जा करीब होना है।
6. बदर असल में एक कुएँ का नाम है जो बदर बिन कुरैश ने खोदा था। बदर की लड़ाई उसके नज़दीक ही हुई थी।

مَنْزِلُكَ

करे तीन हजार फरिश्तों के साथ जो उतारे जाएंगे।¹ (124) हाँ, क्यों नहीं! अगर तुम मुस्तकिल रहोगे और मुत्तकी रहोगे, और वे लोग तुमपर एक-दम से आ पहुँचेंगे तो तुम्हारा रब तुम्हारी इम्दाद फरमाएगा पाँच हजार फरिश्तों से जो एक खास वज़ा “यानी शक्ल और हुलिया” बनाए होंगे।² ♦ (125) और अल्लाह तआला ने (यह इम्दाद) महज़ इसलिए की कि तुम्हारे लिए खुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को करार हो जाए, और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, जो कि ज़बरदस्त हैं, हकीम हैं। (126) ताकि काफ़िरों में से एक ग़िरोह को हलाक कर दे या उनको ज़लील व ख़ार कर दे, फिर वे नाकाम लौट जाएंगे।³ (127) आपको कोई दख़ल नहीं यहाँ तक कि खुदा तआला उनपर या तो मुतवज्जह हो जाएँ या उनको कोई सज़ा दे दें, क्योंकि वे जुल्म भी बढ़ा कर रहे हैं। (128) और अल्लाह ही कि मिल्क है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, वह जिसको चाहें बख़्श दें और जिसको चाहें अज़ाब दें, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले, बड़े रहमत करने वाले हैं। (129) ♦

ऐ ईमान वालो! सूद मत खाओ (यानी असल से) कई हिस्से ज़ायद (करके न लो), और अल्लाह तआला से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओ।⁴ (130) और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131) और खुशी से कहना मानो अल्लाह तआला का और रसूल का, उम्मीद है कि तुम रहम किए जाओगे। (132) और मग़्फ़िरत की तरफ़ दौड़ो जो तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से है,⁵ और जन्नत की तरफ़ जिसकी वुसूअत ऐसी है जैसे सब आसमान और ज़मीन, वह तैयार की गई है अल्लाह से डरने वालों के लिए। (133) ऐसे लोग जो कि खर्च करते हैं फरागत में और तंगी में, और गुस्से के ज़ब्त करने वाले और लोगों से दरगुज़र करने वाले, और अल्लाह तआला ऐसे नेक काम करने वालों को महबूब रखता है। (134) और ऐसे लोग कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं जिसमें ज़्यादती हो, या अपनी ज़ात पर नुक़सान उठाते हैं तो अल्लाह तआला को याद कर

1. मालूम होता है कि बड़े दर्जे के फरिश्ते होंगे वरना जो फरिश्ते पहले से ज़मीन पर मौजूद थे उनसे भी यह काम लिया जा सकता था।
2. यहाँ इम्दाद की हिकमत निहायत वज़ाहत के साथ बयान फरमाई जिसमें ग़ौर करने से इस मज़मून पर कोई शुब्हा बाकी नहीं रहता, क्योंकि हासिल इसका यह हुआ कि उन फरिश्तों के नाज़िल होने से असली मक़सद यह था कि मुसलमानों के दिल को सुकून हो।
3. ग़ज़वा-ए-उहुद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दाँत मुबारक शहीद हो गया और चेहरा मुबारक ज़ख्मी हो गया तो आपने यह फरमाया कि ऐसी कौम को कैसे फ़लाह होगी जिन्होंने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ ऐसा किया, हालाँकि वह नबी उनको खुदा की तरफ़ बुला रहा है। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई।
4. यह जो फरमाया: ‘असल से कई हिस्से ज़ायद करके’ यह सूद के हराम होने की कैद नहीं, क्योंकि सूद कम हो या ज़्यादा सब हराम है।
5. मतलब यह है कि ऐसे नेक काम अपनाओ जिससे परवर्दिगार तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दें और तुमको जन्नत इनायत हो।

मय्यगफिरुज्जुनू-ब इल्लल्लाहु व लम् युसिरु अला मा फ-अलू व हुम् यअलमून (135)

उलाइ-क जजाउहुम् मगफि-रतुम् मिररब्बिहिम् व जन्नातुन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु

खालिदी-न फीहा, व निअ-म अज्जल् आमिलीन (136) कद् खलत् मिन् कब्लिकुम्

सु-ननुन् फसीरु फिल्अजि फन्जुरु कै-फ का-न आकि-बतुल् मुकज्जिबीन (137) हाजा

बयानुल्-लिन्नासि व हुदव्-व

मौअि-जतुल् लिल्मुत्तकीन (138) व ला

तहिनू व ला तहज्जन् व अन्तुमुल्-

अअलौ-न इन् कुन्तुम् मुअमिनीन

(139) इय्यम्सस्कुम् करहुन् फ-कद्

मस्सल्कौ-म करहुम् मिस्लुह्, व तिल्कल्-

अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि व

लि-यअ-लमल्लाहुल्लजी-न आमनू व

यत्तखि-ज मिन्कुम् शु-हदा-अ, वल्लाहु

ला युहिब्बुज्जालिमीन (140) व

लियुमहिहसल्लाहुल्लजी-न आमनू व

यम्ह-कल् काफिरीन (141) अम्

हसिब्तुम् अन् तदखुलुल्-जन्न-त व

लम्मा यअ-लमिल्लाहुल्लजी-न जाहदू

मिन्कुम् व यअ-लमस्साबिरीन (142) व

ल-कद् कुन्तुम् तमन्नौनल्मौ-त मिन्

कब्लि अन् तल्कौहु फ-कद् रपेतुमूहु व अन्तुम् तन्जुस्न (143) ♦

व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् कद् खलत् मिन् कब्लिहिर्सुलु, अ-फ-इम्मा-त औ

कुतिलन्-कलब्तुम् अला अअकाबिकुम्, व मय्यन्कलिब् अला अकिबैहि फ-लंयजुररल्ला-ह

शैअन्, व स-यज्जिल्लाहुश्शाकिरीन (144) व मा का-न लि-नफिसन् अन् तमू-त इल्ला

وَمَنْ يَغْفِرِ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُعْرِضُوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا
فَهُمْ يَكْفُرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاءُ الْوَعْدِ لَهُمْ قَذْفُهُمْ فِي سَبْعِ مِائَةٍ
سَنَةٍ مِنْ تَحْتِهَا الْأَشْرَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَلَهُمْ فِيهَا أَعْمَالُ الْعَمِلِينَ ۝
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ هَٰذَا بَيْتُ لِلنَّاسِ وَهُدًى
وَمَوْعِظَةٌ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ
الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ يَسْتَسْكِمُ قَرْحٌ فَقَدْ
مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِثْلُهُ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلِيُمَخِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ
الْكُفْرِينَ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخِلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ
الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الظَّالِمِينَ ۝ وَقَدْ أَنْتُمْ تَكُونُونَ
الْمَوْتِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاسِيَتْكُمْ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝
وَأَتَيْنَاهُمُ الْإِسْرَافَ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ نَكُنَّ
أَوْفِيلَ ۝ انْقَلَبْنَاهُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ
فَلَنَ يَنْظُرَ اللَّهُ شَيْئًا وَسَيُجَنَّبِيهِ اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝ وَمَا كَانَتْ

مَذْكُورٌ

بِقُدْرَتِهِ

लेते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफी चाहने लगते हैं, और अल्लाह तआला के सिवा और है कौन जो गुनाहों को बख्शता हो। और वे लोग अपने फेल पर इसरार नहीं करते और वे जानते हैं। (135) उन लोगों की जज़ा बख़्शिश है उनके रब की तरफ से, और ऐसे बाग़ हैं कि उनके नीचे नहरें चलती होंगी, ये हमेशा-हमेशा उन्हीं में रहेंगे, और यह अच्छा बदला है उन नेक काम करने वालों का।¹ (136) तहकीक़ कि तुमसे पहले मुख़्तलिफ़ तरीक़े गुज़र चुके हैं तो तुम रू-ए-ज़मीन पर चलो फ़िरो और देख लो कि अज़ीर अन्जाम झुठलाने वालों का कैसा हुआ। (137) यह बयान काफ़ी है तमाम लोगों के लिए और हिदायत व नसीहत है ख़ास ख़ुदा से डरने वालों के लिए। (138) और तुम हिम्मत मत हारो और रंज मत करो, और ग़ालिब तुम ही रहोगे अगर तुम पूरे मोमिन रहे। (139) अगर तुमको ज़ख़्म पहुँच जाए तो उस कौम को भी ऐसा ही ज़ख़्म पहुँच चुका है, और हम इन दिनों को उन लोगों के दरमियान अदलते-बदलते रहा करते हैं, और ताकि अल्लाह तआला ईमान वालों को जान लें, और तुममें से बाज़ों को गवाह बनाना था, और अल्लाह तआला जुल्म करने वालों से मुहब्बत नहीं रखते। (140) और ताकि मैल-कुचैल से साफ़ कर दे ईमान वालों को और मिटा दे काफ़िरो को। (141) हाँ, क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि जन्नत में जा दाख़िल होंगे हालाँकि अभी अल्लाह तआला ने उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से जिहाद किया हो और न उनको देखा जो साबित क़दम रहने वाले हों। (142) और तुम तो मरने की तमन्ना कर रहे थे मौत के सामने आने से पहले ही,² सो उसको तो खुली आँखों देख लिया था। (143) ♦

और मुहम्मद सिर्फ़ रसूल ही तो हैं, आपसे पहले और भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके हैं,³ सो अगर आपका इन्तिक़ाल हो जाए या आप शहीद ही हो जाएँ तो क्या तुम लोग उल्टे फिर जाओगे, और जो शख्स उल्टा फिर भी जाएगा तो ख़ुदा तआला का कोई नुक़सान न करेगा, और ख़ुदा तआला जल्द ही बदला देगा हक़ पहचानने वाले लोगों

1. इन आयतों में दो दर्जों के मुसलमानों का बयान है, एक आला दर्जे के, एक उनसे कम। और ख़ुदा से डरने वालों में सब आ गए, क्योंकि तौबा भी ख़ुदा के डर ही से होती है।
2. इस आयत के नाज़िल होने का सबब और मौक़ा यह है कि पिछले साल बाज़ सहाबा जो बदर में शहीद हुए और उनके बड़े फ़ज़ाइल मालूम हुए तो बाज़ ने तमन्ना की कि काश! हमको भी कोई ऐसा मौक़ा पेश आए कि इस शहादत की दौलत से मुशरफ़ हों। (यानी शहीद होने की इज़्ज़त हासिल करें) आख़िर यह उहुद की लड़ाई पेश आई तो पाँव उखड़ गए, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।
3. जब उहुद की जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दाँत मुबारक शहीद हुआ और सर मुबारक ज़ख्मी हुआ तो उस वक़्त किसी दुश्मन ने पुकार दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) क़त्ल कर दिए गए। मुसलमान लड़ाई बिगड़ जाने से बद-हवास और मुन्तशिर हो ही रहे थे, इस ख़बर से और भी कमर टूट गई। किसी ने यह तजवीज़ किया कि अब कुम्फ़ार से अमन ले लेना चाहिए, बाज़े हिम्मत हारकर बैठ रहे और हाथ पाँव छोड़ दिए, बाज़े भाग खड़े हुए, बाज़े मुनाफ़िक़ बोले कि अगर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नहीं रहे तो फिर अपना पहला ही दीन क्यों न इख़्तियार कर लिया जाए, बाज़ ने कहा कि अगर नबी होते तो क़त्ल क्यों होते और बाज़ ने कहा कि अगर आप ही न रहे तो हम रहकर क्या करेंगे, जिसपर आपने जान दी उसपर हमको भी जान दे देनी चाहिए। और अगर आप क़त्ल हो गए तो क्या है, अल्लाह तआला तो क़त्ल नहीं हुए। इस परेशानी में अबल आपको हज़रत क़अ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखकर पहचाना और पुकार कर कहा कि ऐ मुसलमानो! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िन्दा और सही-सलामत हैं। गरज़ उस वक़्त फिर मुसलमान इकठ्ठे हुए, आपने उनको मलामत फरमाई। अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! यह ख़बर सुनकर हमारे दिलों में होल बैठ गई इसलिए हमारे पाँव उखड़ गए। इस मौक़े पर यह आयत नाज़िल हुई।

बि-इज्जिल्लाहि किताबम् मुअज्जलन्, व मंय्युरिद् सवाबद्दुन्या नुअतिही मिन्हा व मंय्युरिद् सवाबल्-आखि-रति नुअतिही मिन्हा, व स-नज्जिश्शाकिरीन (145) व क-अय्यिम् मिन् नबिय्यिन् का-त-ल म-अहू रिब्बिय्यू-न कसीरुन् फमा व-हनू लिमा असाबहुम् फी सबीलिल्लाहि व मा ज़अफू व मस्तकानू, वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन (146) व मा का-न कौलहुम् इल्ला अन् कालू रब्बनग़फिर लना जुनूबना व इस्राफना फी अम्रिना व सब्बित् अक्दामना वन्सुरना अलल्-कौमिल् काफिरीन (147)

फ-आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्-न सवाबिल्-आखि-रति, वल्लाहु युहिब्बुल्-मुद्सिनीन (148) ♦

या अय्युहल्लज्जी-न आमनू इन् तुतीअुल्लज्जी-न क-फरु यरुद्दकुम् अला अअकाबिकुम् फ-तन्कलिबू ख़ासिरीन (149) बलिल्लाहु मौलाकुम् व हु-व ख़ैरुन्-नासिरीन (150) सनुल्की फी कुलूबिल्लज्जी-न क-फरुर्अ-ब बिमा अशरकू बिल्लाहि मा लम् युनज्जिल् बिही सुल्तानन् व मअ्वाहुमुन्नारु, व बिअ-स

मस्वज्जालिमीन (151) व ल-कद् स-द-ककुमुल्लाहु वअद्दहू इज़् तहुस्सूनहुम् बि-इज्जिनी हत्ता इज़ा फशिल्लुम् व तनाजअतुम् फिल्अमिर व असैतुम् मिम्-बअदि मा अराकुम् मा तुहिब्बू-न, मिन्कुम् मंय्युरीदुद्दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल्-आखि-र-त सुम्-म स-र-फकुम् अन्हुम् लि-यब्तलि-यकुम् व ल-कद् अफा अन्कुम्, वल्लाहु ज़ू

لَيْسَ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كَيْفَ يُجَلِّدُ مَنْ يُرِيدُ
تُؤَابِ الدُّنْيَا تُؤَاتَى مِنْهَا وَمَنْ يُرِيدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ فُؤَاتَى
مِنْهَا وَسَيَجْزِي الشَّكِرِينَ ۝ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَبْلِي قَتَلْتُ مَعَهُ
رَبِّيُونَ كَثِيرٌ قَمَا وَهُوَ الْبَاصِبُهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا
ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكْبَرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَا
كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا
فِي أَمْرِنَا وَتُبْ عَلَيْنَا أَعْدَاءَنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝
فَإِنَّهُمْ اللَّهُ تَابِ الدُّنْيَا وَحُسْنِ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۝ وَاللَّهُ
يُحِبُّ الْمُتَّسِبِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ تَطِيعُوا اللَّهَ
كَفَرُوا بِرُؤُوسِهِمْ عَلَى أَعْقَابِهِمْ فَتَقَبَّلُوا الْحَسَنِينَ ۝ بَلِ اللَّهُ
مَوْلَاكُمْ وَهُوَ خَيْرُ الْمَوْلَى ۝ سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۝
مَا لَهُمْ الْكَارُ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ۝ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ
اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ أَخَذْتُمُ بِعَهْدِهِمْ بِأَذْنِهِ حَتَّى إِذَا فَتَحْتُمُ
تَنَازُعَهُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا أَرَاكُمْ فَأَتَّبِعُونَ
مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ثُمَّ

को। (144) और किसी शख्स को मौत आना मुश्किल नहीं खुदा तआला के हुक्म के बगैर, इस तौर से कि उसकी मुक़र्ररा मीयाद लिखी हुई रहती है। और जो शख्स दुनियावी नतीजा चाहता है तो हम उसको दुनिया का हिस्सा दे देते हैं, और जो शख्स आखिरत का नतीजा चाहता है तो हम उसको आखिरत का हिस्सा देंगे, और हम बहुत जल्द बदला देंगे हक़ पहचानने वालों को। (145) और बहुत नबी हो चुके हैं जिनके साथ होकर बहुत अल्लाह वाले लड़े हैं। सो न तो हिम्मत हारी उन्होंने उन मुसीबतों की वजह से जो उनपर अल्लाह की राह में आई और न उनका ज़ोर घटा, और न वे दबे, और अल्लाह तआला को ऐसे मुस्तक़िल मिज़ाजों से मुहब्बत है। (146) और उनकी ज़बान से भी तो इसके सिवा और कुछ नहीं निकला कि उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे गुनाहों को और हमारे कामों में हमारे हद से निकल जाने को बख़्श दीजिए और हमको साबित क़दम रखिए, और हमको काफ़िर लोगों पर ग़ालिब कीजिए। (147) सो उनको अल्लाह तआला ने दुनिया का भी बदला दिया और आखिरत का भी उम्दा बदला (दिया) और अल्लाह तआला को ऐसे नेकी करने वालों से मुहब्बत है। (148) ♦

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहना मानोगे तो वे तुमको उल्टा फेर देंगे, फिर तुम नाकाम हो जाओगे। (149) बल्कि अल्लाह तआला तुम्हारा दोस्त है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है। (150) हम अभी डाले देते हैं होल काफ़िरों के दिलों में, इसके सबब कि उन्होंने अल्लाह तआला का शरीक ऐसी चीज़ को ठहराया है जिसपर कोई दलील अल्लाह तआला ने नाज़िल नहीं फ़रमाई, और उनकी जगह जहन्नम है, और वह बुरी जगह है बेइन्साफ़ों की। (151) और यकीनन अल्लाह तआला ने तुमसे अपने वायदे को सच्चा कर दिखाया था, जिस वक़्त कि तुम उन काफ़िरों को हुक्मे खुदावन्दी से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि तुम खुद ही कमज़ोर हो गए और आपस में हुक्म में इख़िलाफ़ करने लगे, और तुम कहने पर न चले बाद उसके कि तुमको तुम्हारी दिल-पसन्द बात दिखला दी थी। तुममें से बाज़े तो वे शख्स थे जो दुनिया चाहते थे, और बाज़े तुममें से वे थे जो आखिरत के तलबगार थे, (इसलिए अल्लाह तआला ने आइन्दा के लिए अपनी इम्दाद को बन्द कर लिया और) फिर तुमको उन (काफ़िरों) से हटा दिया ताकि (खुदा तआला) तुम्हारी आजमाइश फ़रमाए और यकीन समझो कि (अल्लाह तआला ने) तुमको माफ़ कर दिया और अल्लाह तआला बड़े फज़ल वाले हैं मुसलमानों पर। (152) (वह वक़्त याद करो) जबकि तुम चढ़े चले जाते थे और किसी को मुड़कर भी तो न देखते थे, और रसूल तुम्हारे पीछे की ओर से तुमको पुकार

1. पस उसी की दोस्ती पर बस करो और उसी को मददगार समझो। दूसरा मुख़ालिफ़ अगर अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ मदद की भी तदबीर बतलाए तो अमल मत करो।
2. चुनौचे इस रोब डालने का जुहूर इस तरह हुआ कि अब्बल तो बावजूद मुसलमानों के शिकस्त खा जाने के मुशिरकीन बिना किसी ज़ाहिरी सबब के मक्का को लौट गए। फिर जब कुछ रास्ता तय कर चुके तो अपने इस तरह आ जाने पर बहुत अफ़सोस हुआ और फिर मदीने की तरफ़ वापसी का इरादा किया, मगर कुछ ऐसा रोब छाया कि फिर न आ सके और रास्ते में कोई देहाती मिल गया उससे कहा कि हम तुझको इतना माल देंगे तू मुसलमानों को डरा देना। यहाँ वहाँ से मालूम हो गया, आप उनका पीछा करते हुए 'हमराउल-असद' तक पहुँचे।
3. इस आयत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के हाल पर बड़ी इनायत मालूम हुई कि नाराज़गी में भी कई-कई तसल्लियाँ फ़रमाईं। एक यह कि सज़ा न थी बल्कि इसमें भी तुम्हारी मस्लहत थी, फिर आखिरत की पकड़ से बेफ़िक़्र कर दिया।

फज़िल्न् अलल् मुअ्मिनीन् (152) इज़् तुस्तिअद्-न व ला तल्बू-न अला अ-हदिंव-वरसूल्
यद्अूकुम् फी उख्राकुम् फ-असाबकुम् गम्मम्-बिगम्मिल् लिकैला तहज़न् अला मा फातकुम् व
ला मा असाबकुम्, वल्लाहु खबीरुम् बिमा तअ्मलून् (153) सुम्-म अन्ज़-ल अलैकुम्
मिम्-बअ्दिल्-गम्मि अ-म-नतन् नुआसंय्यश ता-इ-फतम् मिन्कुम् व ता-इ-फतुन् कद्

अहम्मत्तुहुम् अन्फुसुहुम् यज़ुन्नू-न
बिल्लाहि गै रल्-हक्कि जन्नल्-
जाहिलिय्यति, यकूलू-न हल्-लना मिनल्-
अम्रि मिन् शैइन्, कुल् इन्नल्-अम्-र
कुल्लहू लिल्लाहि, युख्फू-न फी
अन्फुसिहिम् मा ला युब्दू-न ल-क,
यकूलू-न लौ का-न लना मिनल्-अम्रि
शैउम् मा कुतिल्ना हाहुना, कुल् लौ
कुन्तुम् फी बुयूतीकुम् ल-ब-रज़ल्लज़ी-न
कुति-ब अलै हिमुल्क त्लु इला
मज़ाजिअिहिम् व लि-यब्तलियल्लाहु मा
फी सुदूरिकुम् व लियु-महिह-स मा फी
कलूबिकुम्, वल्लाहु अलीमुम्
बिजातिस्सुदूर (154) इन्नल्लज़ी-न
तवल्लौ मिन्कुम् यौमल्-तकल् जम्आनि

इन्नमस्तज़ल्लहुमुशैतानु बि-बअ्ज़ि मा क-सबू व ल-कद् अफल्लाहु अन्हुम्, इन्नल्ला-ह
गफूरुन् हलीम (155) ♦

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न क-फरु व कालू लि-इख्वानिहिम् इज़ा
ज-रबू फिल्अर्जि औ कानू गुज़ल्-लौ कानू अिन्दना मा मातू व मा कुतिलू लि-यजअलल्लाहु

لَا يَسْتَأْذِنُ ۚ
صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبَيِّنَ لَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللَّهُ ذُو
فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِذْ تَصْعَدُونَ وَلَا تَكُونُوا عَلَى
السَّيْلِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ فَأَبَىٰ أَعْنَاقُكُمْ
لِكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ وَاللَّهُ خَبِيرٌ
بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمْنَةً
ثُمَّ آسَأَ يَفْشَىٰ طَائِفَةٌ مِّنْكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ
هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ
يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ
لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قَاتَلْنَا هَهُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي
بَيِّنَةٍ لَّبَرَأَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ
وَلِيَبَيِّنَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُبَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مَشْرُكًا
يَوْمَ التَّنَجُّسِ أَتَمَنَّا أَنْ تُخَلِّفَهُمُ الشَّيَاطِينُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۚ
وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ هَذِهِ

रहे थे, सो खुदा तआला ने तुमको नतीजे और सज़ा में ग़म दिया ग़म देने के सबब से, ताकि तुम ग़मज़दा न हुआ करो, न उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल जाए और न उसपर जो तुमपर मुसीबत पड़े, और अल्लाह तआला सब ख़बर रखते हैं तुम्हारे सब कामों की। (153) फिर अल्लाह तआला ने उस ग़म के बाद तुमपर चैन भेजा यानी ऊँघ, कि तुममें से एक जमाअत पर तो उसका ग़ल्बा हो रहा था¹ और एक जमाअत वह थी कि उनको अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी, वे लोग अल्लाह तआला के साथ ख़िलाफ़े हकीकत ख़्यालात कर रहे थे जो कि महज़ बेवकूफी का ख़्याल था। वे यूँ कह रहे थे: क्या हमारा कुछ इख़्तियार चलता है? आप फ़रमा दीजिए कि इख़्तियार तो सब अल्लाह ही का है। वे लोग अपने दिलों में ऐसी बात छुपाकर रखते हैं जिसको आपके सामने ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि अगर हमारा कुछ इख़्तियार चलता तो हम यहाँ क़त्ल न किए जाते, आप फ़रमा दीजिए कि तुम लोग घरों में भी रहते तब भी जिन लोगों के लिए क़त्ल होना मुक़द्दर हो चुका है वे लोग उन जगहों की तरफ़ निकल पड़ते जहाँ वे गिरे हैं। और यह (जो कुछ हुआ) इसलिए हुआ ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे बातिन की बात की आजमाइश करे और ताकि तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे, और अल्लाह तआला सब बातिन की बातों को ख़ूब जानते हैं। (154) यकीनन तुममें से जिन लोगों ने पीठ फेर दी थी जिस दिन कि दोनों जमाअतें आपस में आमने-सामने हुईं, इसके सिवा और कोई बात नहीं हुई कि उनको शैतान ने बहका दिया उनके बाज़ आमाल के सबब,² और यकीन समझो कि अल्लाह तआला ने उनको माफ़ फ़रमा दिया। वाकई अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत करने वाले हैं, बड़े इल्म वाले हैं।³ (155) ♦

1. जब कुप्फ़ार मैदान से वापस हो गए तो उस वक़्त ग़ैब से मुसलमानों पर ऊँघ ग़ालिब हुई जिससे सब ग़म दूर हो गया।
2. 'बि-बअज़ि मा क-सबू' से मालूम होता है कि एक गुनाह से दूसरा गुनाह पैदा होता है, जैसा कि एक ताअत (यानी नेकी और अच्छाई) से दूसरी ताअत की तौफ़ीक़ बढ़ती जाती है।
3. सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के बाज़ मुख़ालिफ़ीन और दुश्मनों ने इस वाकिए से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर और खुसूसन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर तान किया है और इससे उनके अन्दर ख़िलाफ़त की सलाहियत न होना निकाला है, लेकिन यह महज़ बेकार और बेहूदा बात है। जब अल्लाह तआला ने माफ़ कर दिया तो अब दूसरों को लब हिलाने का क्या हक़ रहा। रहा ख़िलाफ़त का किस्सा, सो अहले हक़ के नज़दीक़ ख़िलाफ़त के लिए मासूम और बेगुनाह होना शर्त नहीं है।

जालि-क हसूर-तन् फी कुलूबिहिम्, वल्लाहु युह्यी व युमीतु, वल्लाहु बिमा तअमलू-न बसीर
(156) व ल-इन् कुतिल्लुम् फी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् ल-मग्फि-रतुम् मिनल्लाहि व
रस्मतुन् खैरुम् मिम्मा यज्मअून (157) व ल-इम्- मुत्तुम् औ कुतिल्लुम् ल-इलल्लाहि
तुहशरून (158) फबिमा रस्मतिम् मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् व लौ कुन्-त फज्जन्

गलीजल्कलिब लन्फज्जू मिन् हौलि-क
फअफु अन्हुम् वस्तगिफर् लहुम् व
शाविरहुम् फिल्-अमिर् फ-इजा अजम्-त
फ-तवक्कल् अलल्लाहि, इन्नल्ला-ह
युहिब्बुल् मु-तवक्कलीन (159)

इय्यन्सुरकुमुल्लाहु फला गालि-ब लकुम् व
इय्यखुल्कुम् फ-मन् जल्लजी यन्सुरुकुम्
मिम्-बअदिही, व अलल्लाहि
फल्य-तवक्कलिल् मुअमिनून (160) व
मा का-न लि-नबियिन् अय्यगुल्-ल, व
मय्यगुल् यअति बिमा गल्-ल यौमल्-
कियामति सुम्-म तुवफ्फा कुल्लु नफिसम्
मा क-सबत् व हुम् ला युज्लमून
(161) अ-फ मनित्त-ब-अ
रिज्वानल्लाहि क-मम्बा-अ बि-स-खतिम्

मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअसल्-मसीर (162) हुम् द-रजातुन् अिन्दल्लाहि,
वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअमलून (163) ल-कद् मन्नल्लाहु अलल् मुअमिनी-न इज् ब-अ-स
फीहिम् रसूलम्-मिन् अन्फुसिहिम् यल्लू अलैहिम् आयातिही व युजक्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल्-
किता-ब वल्-हिक्म-त व इन् कानू मिन् कब्लु लफी जलालिम् मुबीन ● (164) अ-व-

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ٧٥
فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُرَى لَوْ كَانُوا عِنْدَ مَا تَأْتُوا وَمَا قِيلَ
لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُخَيِّ وَيُخَيِّتُ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ وَلَكِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أَوْ مِتُّمْ لَكُفْرَةً مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ لِّمَا يَجْعَلُونَ ٧٦
لَكِنْ مِّمَّنْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَا إِلَى اللَّهِ تُخْشَرُونَ ٧٧ فِيمَا رَحِمَةً مِّنَ
اللَّهِ لَئِنْ لَّهُمْ وَلَوْ كُنْتُمْ فَكَّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَا تَفْقَهُوا
مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي
الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ
إِنْ يَنْصُرْكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَنْزِلْكُمْ فَمَا لَكُم مِّنْ ذَا الَّذِي
يَنْصُرْكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ٧٨ وَمَا
كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يَفْعَلَ مَوْمَنٌ يَفْعَلُ يَأْتِ بِهَا عَلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
تُتَوَكَّلُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ٧٩ أَفَمَن
أَتَىٰ بِضَوَانٍ لِّلَّهِ لَمَن يَأْتِ بِسُخْطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَا لَهُ جَهَنَّمُ
وَيُشْرُ الْمَصِيرُ ٨٠ هُم دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِهَا
يَعْمَلُونَ ٨١ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ

مَثَل

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना¹ जो किं काफिर हैं और कहते हैं अपने भाइयों के बारे में जबकि वे किसी इलाके में सफर करते हैं,² या वे लोग कहीं गाज़ी बनते हैं कि अगर ये लोग हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह तआला इस बात को उनके दिलों में हसरत का पैदा करने वाला कर दें, और जिलाता-मारता तो अल्लाह ही है, और अल्लाह तआला जो कुछ तुम करते हो सब कुछ देख रहे हैं। (156) और अगर तुम लोग अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो लाज़िमी तौर पर अल्लाह के पास की मग़फ़िरत और रहमत उन चीज़ों से बेहतर है जिनको ये लोग जमा कर रहे हैं। (157) और अगर तुम लोग मर गए या मारे गए तो ज़रूर ही अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। (158) उसके बाद खुदा ही की रहमत के सबब आप उनके साथ नरम रहे।³ और अगर आप कड़वे मिज़ाज वाले सख़्त तबीयत के होते तो आपके पास से सब मुन्तशिर हो जाते, “यानी अलग और इधर-उधर हो जाते” सो आप उनको माफ़ कर दीजिए और आप उनके लिए इस्तिग़फ़ार कर दीजिए और उनसे ख़ास-ख़ास बातों में मशिवरा लेते रहा कीजिए।⁴ फिर जब आप राय पुख़्ता कर लें तो खुदा तआला पर भरोसा कीजिए,⁵ बेशक अल्लाह तआला ऐसे भरोसा करने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं। (159) अगर हक़ तआला तुम्हारा साथ दें तब तो तुमसे कोई नहीं जीत सकता, और अगर तुम्हारा साथ न दें तो उसके बाद ऐसा कौन है जो तुम्हारा साथ दे (और ग़ालिब कर दे)। और ईमान वालों को सिर्फ़ अल्लाह तआला पर भरोसा रखना चाहिए। (160) और नबी की यह शान नहीं कि वह ख़ियानत करे। हालाँकि जो शख़्स ख़ियानत करेगा वह शख़्स अपनी ख़ियानत की हुई चीज़ को कियामत के दिन हाज़िर करेगा। फिर हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा, और उनपर बिलकुल जुल्म न होगा।⁶ (161) सो ऐसा शख़्स जो कि अल्लाह की रिज़ा का ताबे हो, क्या वह उस शख़्स के जैसा हो जाएगा जो कि अल्लाह के ग़ज़ब का मुस्तहिक् हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो? और वह जाने की बुरी जगह है। (162) ये (जिनका ज़िक्र हुआ) दर्जों में मुख़्तलिफ़ होंगे अल्लाह तआला के यहाँ, और अल्लाह तआला ख़ूब देखते हैं उनके आमाल को। (163) हकीकत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर एहसान किया जबकि उनमें उन्हीं की जिन्स “यानी नस्ल और जमाअत में” से एक ऐसे पैग़म्बर को भेजा कि वह उन लोगों को अल्लाह तआला की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते हैं और उन लोगों की सफ़ाई करते रहते हैं और उनको किताब और समझ की बातें बतलाते रहते हैं, और यकीनन ये लोग पहले से खुली ग़लती में थे।⁷ ● (164) और जब

1. ऊपर मुनाफ़िकों का क़ौल नक़्त किया था। चूँकि ऐसे अक्वाल के सुनने से शुब्हा हो सकता है कि मुसलमानों के दिलों में इस किस्म के वस्वसे पैदा होने लगे, इसलिए हक़ तआला इस आयत में मुसलमानों को ऐसे अक्वाल और ऐसे हालात से मुमानअत (मनाही) फ़रमाते हैं।
2. इस सफर से दीनी काम के लिए सफर करना मुराद है।
3. मिज़ाज की नरमी को रहमत का सबब इसलिए फ़रमाया कि खुश-अख़्लाकी इबादत है, और इबादत की तौफ़ीक़ खुदा तआला की रहमत से होती है।
4. यह जो कहा गया है कि ख़ास-ख़ास बातों में मशिवरा लेते रहा कीजिए तो मुराद इनसे वे मामलात हैं जिनमें आप पर वक़्त नाज़िल न हुई हो, वरना वक़्त के बाद फिर मशिवरों की कोई गुंजाइश नहीं।
5. लफ़्ज़ ‘अज़्म’ (यानी इरादा) में कोई कैद नहीं लगाई। इससे मालूम हुआ कि राय से मुताल्लिक इन्तिज़ामी मामलात में कसरते-राय (यानी बहुमत) का ज़ाबता महज़ बेअसल है। वरना यहाँ ‘अज़्म’ में यह कैद होती कि बशर्ते कि आपका अज़्म बहुमत के ख़िलाफ़ न हो। और मशिवरा व अज़्म के बाद जो तवक्कुल का हुक्म फ़रमाया तो इससे साबित हुआ कि तदबीर तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि मशिवरे व इरादे का तदबीर में दाख़िल होना ज़ाहिर है। और जानना चाहिए कि यह तवक्कुल का मर्तबा कि बावजूद तदबीर के एतिकादी तौर पर अल्लाह तआला पर एतिमाद रखे, हर मुसलमान के जिम्मे फ़र्ज़ है, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 130 पर)

लम्मा असाबकुम् मुसीबतुन् कद् असब्तुम् मिस्तैहा कुल्लुम् अन्ना हाजा, कुल् हु-व मिन्
अिन्दि अन्फुसिकुम्, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् कदीर (165) व मा असाबकुम्
यौमल्-तकल् जम्अानि फ़बि-इज़्ज़निल्लाहि व लि-यअ-लमल् मुअ्मिनीन (166) व
लि-यअ-लमल्लज़ी-न नाफ़कू व की-ल लहुम् तआलौ कातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद्फ़अ,
कालू लौ नअलमु कि तालल्-

लत्त-बअनाकुम्, हुम् लिल्कुफिर यौमइजिन्
अकरबु मिन्हुम् लिल्-ईमानि यकूलू-न
बिअप्वाहिहिम् मा लै-स फी कुलूबिहिम्,
वल्लाहु अअलमु बिमा यक्तुमून (167)
अल्लजी-न कालू लि-इख्वानिहिम् व
क-अदू लौ अताअूना मा कुतिलू, कुलू
फदरऊ अन् अन्फुसिकुमुल्मौ-त इन्
कुन्तुम् सादिकीन (168) व ला
तहसबन्नल्लजी-न कुतिलू फी
सबीलिल्लाहि अम्वातन्, बल् अह्याउन्
अिन्-द रब्बिहिम् युरज़कून् (169)

फरिही-न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन्
फज़िलही व यस्तब्शिरु-न बिल्लज़ी-न
लम् यल्हकू बिहिम् मिन् ख़ाल्फ़िहिम्

अल्ला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहज़नून ❖ (170) यस्तब्शिरू-न बिनिअमतिम्
मिनल्लाहि व फज़िल्-व अन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज़रल् मुअ्मिनीन (171) ❖

अल्लजीनस्तजाबू लिल्लाहि वरसूलि मिम्-बअदि मां असाबहुमुल्करूहु, लिल्लजी-न अह्सनू
मिन्हुम् वक्तकौ अजरुन् अजीम (172) अल्लजी-न का-ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स कद्

٦٦
 وَإِلْهَامَهُ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ أَوَلَمْ نَكُنْ
 أَصَابَكُمْ مُمْصِيبَةٌ قَدْ أَصَابَكُمْ مِثْلُهَا قُلْتُمْ إِنَّ هَذَا هَذَا قُلْ
 هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا
 أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فِإِذِ الْبَرْقُ زَلَّكَ اللَّهُ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
 وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ
 اللَّهِ وَإِذْ يَقُولُوا نَاوَلُوا الْعِلْمَ قَاتِلُوا أَلَا بَعَثْنَاكُمْ هُمْ لِلْكَفَرِ
 يَوْمَئِذٍ أَقْرَبَ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ يَا قَوْمِ هُمْ تَالَيْسَ
 فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ۝ الَّذِينَ قَالُوا إِخْوَانِهِمْ
 وَقَعَدُوا أَلَا عَاوُنَا مَا قَاتِلُوا قُلْ فَادْرَءُوا عَنِ أَنْفُسِكُمْ
 الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ فُتِلُوا فِي
 سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَالًا بَلْ أَعْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجُونَ ۝ فَوَجَّهْ
 بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَیَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَوْ يُلْقُوا
 بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝
 یَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ
 أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا
 أَصَابَهُمُ الْقَارِعُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

منزل

तुम्हारी ऐसी हार हुई जिससे दो हिस्से तुम जीत चुके थे तो (क्या ऐसे वक्त में) तुम (यूँ) कहते हो कि यह किधर से हुई, आप फरमा दीजिए कि यह (हार खास) तुम्हारी तरफ से हुई। बेशक अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है। (165) और जो मुसीबत तुमपर पड़ी जिस दिन कि दोनों गिरोह आपस में आमने-सामने हुए सो अल्लाह की मरज़ी से हुई और ताकि अल्लाह तआला मोमिनों को भी देख लें। (166) और उन लोगों को भी देख लें जिन्होंने निफ़ाक का बर्ताव किया, और उनसे (यूँ) कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ना या दुश्मनों के लिए रोक बन जाना। वे बोले कि अगर हम कोई ढंग की लड़ाई देखते तो ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते। ये (मुनाफ़िक लोग) उस दिन कुफ़्र से बहुत ज़्यादा नज़दीक हो गए, उस हालत के मुकाबले में कि वे ईमान से नज़दीक थे। ये लोग अपने मुँह से ऐसी बातें करते हैं जो उनके दिल में नहीं, और अल्लाह तआला ख़ूब जानते हैं जो कुछ ये अपने दिल में रखते हैं। (167) ये ऐसे लोग हैं कि अपने भाइयों के बारे में बैठे हुए बातें बनाते हैं कि अगर हमारा कहना मानते तो क़त्ल न किए जाते। आप फरमा दीजिए कि अच्छा तो अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (168) और (ऐ मुखातब!) जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किए गए उनको मुर्दा मत ख़्याल कर बल्कि वे तो ज़िन्दा हैं अपने परवर्दिगार के करीबी हैं, उनको रिज़्क भी मिलता है। (169) वे खुश हैं उस चीज़ से जो उनको अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से अता फरमाई, और जो लोग उनके पास नहीं पहुँचे उनसे पीछे रह गए हैं। उनकी भी इस हालत पर वे खुश होते हैं कि उनपर भी किसी तरह का ख़ौफ़ वाक़ेअ होने वाला नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। (170) वे खुश होते हैं अल्लाह की नेमत व फज़ल की वजह से, और इस वजह से कि अल्लाह तआला ईमान वालों का अज़्र ज़ाया नहीं फरमाते। (171) ♦

जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के कहने को कबूल किया उसके बाद कि उनको ज़ख़्म लगा था, उन लोगों में जो नेक और मुत्तकी हैं उनके लिए बड़ा सवाब है। (172) ये ऐसे लोग हैं कि लोगों ने उनसे कहा कि उन लोगों ने

(पृष्ठ 128 का शेष) और तवक्कुल जो तदबीर को छोड़ देने के मायने में है तो उसमें तफ़सील यह है कि अगर वह तदबीर दीनी है तो उसको छोड़ना बुरा है, और अगर दुनियावी आम आदत के मुताबिक यकीनी है तो उसका छोड़ना भी नाजायज़ है, और अगर गुमान और ख़्याल के दर्जे में है तो मज़बूत दिल वाले को जायज़ है, और अगर वहमी है तो उसके छोड़ने का हुक्म दिया गया है।

6. अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का अमीन होना यहाँ दलील से साबित किया गया है।

7. यह जो फरमाया गया कि 'उन्हीं की नस्त और जिन्स से' तो इसमें मुफ़स्सरीन के कई कौल हैं। बाज़ ने कहा कि उनके नसब से यानी कुरैश से, बाज़ ने कहा कि अरब से, बाज़ ने कहा कि आदम की औलाद से, और यही आख़िर वाला कौल ज़्यादा मुनासिब है, क्योंकि लफ़्ज़ 'मोमिनीन' इस जगह आम है और 'अन्फुसिहिम्' की ज़मीर (Pro-noun) इसी तरफ लौट रही है, पस आम सिफ़त के साथ तफ़सीर करना ज़्यादा मुनासिब है।

1. इस शिकस्त के वाक़िए में जो इताब (नाराज़गी और नागवारी) के बाद सहाबा की जगह-जगह तसल्ली की गई तो इससे नाफ़रमानी करने वाले धोखा न खाएँ कि हमसे जो गुनाह होते हैं उनमें भी अल्लाह की मशिय्यत व हिकमत होती है फिर ग़म की कोई बात नहीं। बात यह है कि अब्बल तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ग़लती से ऐसा हुआ, मुखा़लफ़त का इरादा न था। दूसरे उनपर नदामत और ग़म का बेइन्तिहा गुल्बा था जो तौबा का आला दर्जा है, इसलिए उनकी तसल्ली की गई। और जो जान-बूझकर गुनाह करे फिर उसपर ज़ुरत करे, वह तसल्ली का हक़दार नहीं बल्कि डॉट-डपट और अज़ाब की धमकी का हक़दार है।

2. ऊपर ग़ज़वा-ए-उहुद का किस्सा ज़िक्र हो चुका, आगे उसके मुताल्लिक एक-दूसरे ग़ज़वे (लड़ाई और जंग) का ज़िक्र है, जो 'ग़ज़वा-ए-हमराउल-असद' के नाम से मशहूर है। वह यह कि जब कुप्फ़ार मैदान से मक्का को वापस हुए तो रास्ते में जाकर इसपर अफ़सोस किया कि हम बाज़ूद ग़ालिब आ जाने के नाहक लौट आए, सो अब चलकर सबका ख़ात्मा कर दें। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाल दिया और फिर वे मक्का ही की तरफ हो लिए, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 132 पर)

ज-मअ लकुम् फःशौहुम् फ-जादहुम् ईमानंव-व कालू हस्बुनल्लाहु व निअमल् वकील (173)
 फन्क-लबू बिनिअमतिम्- मिनल्लाहि व फजिलल्-लम् यम्सस्हुम् सूउंव-वत्त-बअ रज्जानल्लाहि,
 वल्लाहु जू फजिलन् अजीम (174) इन्नमा जालिकुमुशैतानु युखव्विफु औलिया-अहू फला
 तखाफूहुम् व खाफूनि इन् कुन्तुम् मुअमिनीन (175) व ला यह्जुन्कल्लजी-न युसारिअ-न

फिल्कुफिर इन्नहुम् लंय्यजुरुल्ला-ह शैअन्,
 युरिदुल्लाहु अल्ला यजअ-ल लहुम्
 हज्जन् फिल्-आखिरति व लहुम्
 अजाबुन् अजीम (176) इन्नल्लजीनश्-
 -त-रवुल्-कुफ-र बिल्-ईमानि
 लंय्यजुरुल्ला-ह शैअन् व लहुम् अजाबुन्
 अलीम (177) व ला यह्सबन्नल्लजी-न
 क-फरु अन्नमा नुम्ली लहुम् खौरुल्
 लिअन्फुसिहिम्, इन्नमा नुम्ली लहुम्
 लि-यज्दादू इस्मन् व लहुम् अजाबुम्-
 मुहीन (178) मा कानल्लाहु
 लि-य-जरल् मुअमिनी-न अला मा
 अन्तुम् अलैहि हत्ता यमीज़ल्-खबी-स
 मिनत्तय्यिबि, व मा कानल्लाहु
 लियुतिल-अकुम् अलल्-गै बि व

लाकिन्नल्ला-ह यज्जबी मिरूसुलिही मंय्यशा-उ फ-आमिन् बिल्लाहि व रुसुलिही व इन्
 तुअमिन् व तत्तकू फ-लकुम् अज्जन् अजीम (179) व ला यह्सबन्नल्लजी-न यब्खलू-न
 बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फजिलही हु-व खैरल्लहुम्, बल् हु-व शरुल्लहुम्, सयुतव्वकू-न मा
 बखिलू बिही यौमल्-कियामति, व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्जि, वल्लाहु बिमा

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ
 فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ فَانْقَلَبُوا بِنِعْمَةِ
 رَبِّهِمْ إِلَىٰ آبَائِهِمْ فَوَضَّلَ اللَّهُ لَمْ يَسْسَهُمْ سُوًّا وَالْبَعُورُ رِضْوَانُ اللَّهِ
 وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّتُ
 أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا اللَّهَ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝
 وَلَا يَمِزُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنَبَضُّوا
 اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ الْأَيُّهُمُ لَعَلَّ لَهُمْ حَقٌّ فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ
 عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِسْلَامِ لَن
 يُضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسِبَنَّ الَّذِينَ
 كَفَرُوا أَنَّمَا أُتِلَ لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ إِنَّمَا أُتِلَ لَهُمْ لِيُذَادُوا
 إِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ
 عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْغَيْبَ مِنَ الظَّاهِرِ وَمَا كَانَ
 اللَّهُ لِيُظْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ رُّسُلِهِ
 مَنْ يَشَاءُ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَكُلُّكُمْ
 أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسِبَنَّ الَّذِينَ يَبْتَغُونَ بَأْسَ اللَّهِ أَنَّهُمْ
 مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لِّأَنَّهُمْ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ

مَثَل

तुम्हारे लिए सामान जमा किया है सो तुमको उनसे अन्देशा करना चाहिए, सो उसने उनके ईमान को और ज्यादा कर दिया और (उन्होंने) कह दिया कि हमको अल्लाह तआला काफी है और वही सब काम सुपुर्द करने के लिए अच्छा है। (173) पस ये लोग खुदा की नेमत और फज़ल से भरे हुए वापस आए कि उनको कोई नागवारी ज़रा भी पेश नहीं आई, और वे लोग अल्लाह की रिज़ा के ताबे रहे, और अल्लाह तआला बड़ा फज़ल वाला है। (174) इससे ज्यादा कोई बात नहीं कि यह शैतान है कि अपने दोस्तों से डराता है, सो तुम उनसे मत डरना और मुझ ही से डरना अगर तुम ईमान वाले हो।¹ (175) और आपके लिए वे लोग ग़म का सबब न होने चाहियें जो जल्दी से कुफ़्र में जा पड़ते हैं, यकीनन वे लोग अल्लाह तआला को ज़रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर है कि आख़िरत में उनको बिल्कुल हिस्सा न दे, और उन लोगों को बड़ी सज़ा होगी। (176) यकीनन जितने लोगों ने ईमान की जगह कुफ़्र को इख़्तियार कर रखा है, ये लोग अल्लाह तआला को ज़रा बराबर भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और उनको दर्दनाक सज़ा होगी। (177) और जो लोग कुफ़्र कर रहे हैं वे यह ख़्याल हरगिज़ न करें कि हमारा उनको मोहलत देना उनके लिए बेहतर है, हम उनको सिर्फ़ इसलिए मोहलत दे रहे हैं ताकि जुर्म में उनको और तरक्की हो जाए और उनको तौहीन भरी सज़ा होगी।² (178) अल्लाह तआला मुसलमानों को इस हालत में नहीं रखना चाहते जिसपर तुम अब हो जब तक कि नापाक को पाक से अलग न फ़रमा दें। और अल्लाह तआला ऐसे ग़ैबी उमूर की तुमको इत्तिला नहीं करते वे लेकिन हाँ जिसको खुद चाहें, और वे अल्लाह तआला के पैग़म्बर हैं उनको चुन लेते हैं, पस अब अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान ले आओ,³ और अगर तुम ईमान ले आओ और परहेज़ रखो तो फिर तुमको बड़ा अज़्र मिले। (179) और हरगिज़ ख़्याल न करें ऐसे लोग जो ऐसी चीज़ में बुख़ल करते हैं जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फज़ल से दी है कि यह बात कुछ उनके लिए अच्छी

(पृष्ठ 130 का शेष) लेकिन बाज़ राह चलते लोगों से कह गए कि किसी तदबीर से मुसलमानों के दिलों में हमारा रोब जमा दिया जाए। नबी करीम को वह से यह बात मालूम हो गई और आप उनका पीछा करते हुए मक़ाम हमराउल-असद तक पहुँचे। हमराउल-असद मदीने से आठ मील के फासले पर है। वहाँ आपने तीन दिन कियाम फ़रमाया। उस मक़ाम पर ताजिरो का एक काफ़िला गुज़रा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे तिजारत का माल ख़रीदा, अल्लाह तआला ने उसमें नफ़ा दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह नफ़ा साथ में मौजूद मुसलमानों को तकसीम फ़रमा दिया। आगे आने वाली आयतों में इस किस्से की तरफ़ इशारा है।

1. ऊपर मुनाफ़िकों की बेवफ़ाई और बुरा चाहने का ज़िक्र था। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक दिल पर उनकी इन हरकतों का रंज हुआ होगा, हक़ तआला आने वाली आयत में आपको तसल्ली देते हैं और उसके साथ ज़िम्न व तहत में तमाम कुफ़्रार के मामले के मुताल्लिक़ चाहे कोई हो आपकी तसल्ली फ़रमाते हैं ताकि आपके दिल पर अब या आइन्दा उनकी और दूसरों की तरफ़ से कभी ज़िद ग़ालिब न हो।

2. इस आयत से कोई यह शुब्हा न करे कि जब अल्लाह तआला ने इसी लिए मोहलत दी है कि और ज्यादा जुर्म करें तो फिर ज्यादा जुर्म करने से अज़ाब क्यों होगा? असल सबब छूट देने का सज़ा की ज्यादाती है, लेकिन इस सबब के सबब यानी गुनाह के ज्यादा करने को जो बन्दे के इख़्तियार से है कलाम में हुस्न पैदा करने के लिए सबब के कायम-मक़ाम कर दिया गया।

3. यह जो फ़रमाया कि सब रसूलों पर ईमान लाओ, हालाँकि यह मक़ाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने के ज़िक्र को चाहता है। वजह इसकी यह है कि आप पर भी ईमान जब ही साबित होगा जब सबको माने, क्योंकि एक को झुठलाना सबको झुठलाना है।

तअमलू-न खबीर (180) ❖

ल-कद् समिअल्लाहु कौलल्लजी-न कालू इन्नल्ला-ह फकीरुव्-व नहनु अग्निया-उ ❖
सनक्तुबु मा कालू व कल्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिगैरि हक्किक्-व नक्कलू जूक्क अज़ाबल् हरीक
(181) ज़ालि-क बिमा कद्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिजल्लामिल् लिल्-अबीद

(182) अल्लजी-न कालू इन्नल्ला-ह

अहि-द इलैना अल्ला नुअमि-न
लि-रसूलिन् हत्ता यअति-यना
बिकुरबानिन् तअकुलुहुन्नारु, कुल् कद्
जा-अकुम् रुसुलुम् मिन् कब्ली बिल्-
बय्यिनाति व बिल्लजी कुल्लुम् फलि-म
कतल्लुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिकीन

(183) फ-इन् कज़्ज़बू-क फ-कद्

कुज़्ज़ि-ब रुसुलुम् मिन् कब्लि-क जाऊ
बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि वल्-किताबिल्
मुनीर (184) कुल्लु नफिसन्

ज़ा-इ-कतुल्मौति, व इन्नमा तुवफ़फौ-न
उजू-रकुम् यौमल्-कियामति, फ-मन्
ज़ुहिज़-ह अन्नन्नारि व उद्ख़िलल्-
जन्न-त फ-कद् फ़ा-ज़, व मल्हयातुद्-

दुन्या इल्ला मताअुल् गुरुर (185) लतुब्लवुन्-न फी अम्वालिक्कुम् व अन्फुसिक्कुम्, व
ल-तस्मअुन्-न मिनल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् कब्लिक्कुम् व मिनल्लजी-न अशरक्क अज़न्
कसीरन्, व इन् तस्बिरु व तत्तक्क फ-इन्-न ज़ालि-क मिन् अज़्मिल् उमूर (186) व इज़्
अ-ख़जल्लाहु मिसाकल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब लतु-बय्यिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमूनहू

مَا يَخْلُؤُا بِهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَهُمْ فِيكَ الشُّعُورُ وَالْأَرْضُ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۖ لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا
لَإِنَّ اللَّهَ فَتَنُونا وَعَسَىٰ أَغْنِيَا ۖ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ
الَّذِينَ أَغْنَىٰ عَنْهُمْ وَتَقُولُ دُونَ عَذَابِ الْحَرِيقِ ۚ ذَلِكَ
بِمَا قَدَّمْتِ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَالِمٍ لِّلْعَالَمِينَ ۚ
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهْدُا إِلَيْنَا ۖ الْآثُونَ مِن رُّسُولِ حَتَّىٰ
يَأْتِيَنَا بَقْرَبَانٍ ۖ تَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن
قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ ۖ وَالَّذِينَ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۚ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ
جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۖ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۚ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ
الْمَوْتِ ۚ وَإِنَّمَا تُوَفُّونَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ فَمَن زُجِرَ عَن
النَّارِ ۖ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۖ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ
الْغَدُورِ ۚ لَتَبْلُغُنَّ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ ۖ مِنَ الَّذِينَ أَهْرَؤُوا أَدَىٰ
كَثِيرًا ۖ وَإِنْ تُصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِّنْ عِزِّ الْأُمُورِ
وَلَا أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ

होगी, बल्कि यह बात उनके लिए बहुत ही बुरी है, वे लोग कियामत के दिन तौक पहना दिए जाएंगे उसका जिसमें उन्होंने बुझ किया था, और आखिर में आसमान व ज़मीन अल्लाह तआला ही का रह जाएगा, और अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं।¹ (180) ♦

बेशक अल्लाह तआला ने सुन लिया है उन लोगों का कौल जिन्होंने (यूँ) कहा कि अल्लाह मुफ़लिस है और हम मालदार हैं। हम उनके कहे हुए को लिख रहे हैं,² और उनका नबियों को नाहक क़त्ल करना भी, और हम कहेंगे कि चखो आग का अज़ाब। (181) यह उन (आमाल) की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं, और यह (अमूर साबित ही है) कि अल्लाह तआला अपने बन्दों पर जुल्म करने वाले नहीं। (182) वे लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि अल्लाह ने हमको हुक़्म फ़रमाया था कि हम किसी पैग़म्बर पर एतिकाद न लाएँ जब तक कि हमारे सामने (अल्लाह तआला की नियाज़ व) मन्नत (का मोज़िज़ा) ज़ाहिर न करे कि उसको आग खा जाए,³ आप फ़रमा दीजिए कि यकीनन बहुत-से पैग़म्बर मुझसे पहले बहुत-सी दलीलें लेकर आए और (खुद) यह (मोज़िज़ा) भी जिसको तुम कह रहे हो, सो तुमने उनको क्यों क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो। (183) सो अगर ये लोग आपको झुठलाएँ तो बहुत-से पैग़म्बर जो आपसे पहले गुज़रे हैं झुठलाए जा चुके हैं⁴ जो मोज़िज़े लेकर आए थे और सहीफ़े और रोशन किताब लेकर।⁵ (184) हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको तुम्हारा पूरा बदला कियामत के दिन ही मिलेगा, तो जो शख्स दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया सो वह पूरा कामयाब हुआ। और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ थोड़े का सौदा है।⁶ (185) अलबत्ता आगे और आज़माए जाओगे अपने मालों में और अपनी जानों में, और अलबत्ता आगे को और सुनोगे बहुत-सी बातें दिल दुखाने वाली उन लोगों से जो तुमसे पहले किताब दिए गए हैं और उन लोगों से जो कि मुश्रिक हैं।⁷ और अगर सब्र करोगे और परहेज़ रखोगे तो यह ताकीदी अहक़ाम में से है।⁸ (186) और जबकि अल्लाह ने किताब वालों से यह अहद लिया कि इस किताब को

1. इस तौक पहनाए जाने की कैफ़ियत हदीसे बुख़ारी में आई है। हज़रत अबू हु़रैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशार्द फ़रमाया कि जिसको खुदा तआला माल दे और वह उसकी ज़कात अदा न करे तो उसका वह माल कियामत के दिन एक ज़हरीले सोंप की शक़्त बनाकर उसके गले में डाल दिया जाएगा और वह उस शख्स की बाँछें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ तेरा सरमाया हूँ। फिर हुज़ुरे पाक ने यह आयत पढ़ी।
2. आमाल नामे में दर्ज करा देने में यह हिक़मत है कि आदत यही है कि यह मुज़्रिम पर ज़्यादा हुज़्जत हो जाता है, वरना हक़ तआला को इसकी ज़रूरत नहीं।
3. पहले बाज़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का यह मोज़िज़ा हुआ है कि कोई चीज़ जानदार या ग़ैर-जानदार अल्लाह के नाम की निकाल कर किसी मैदान या पहाड़ पर रख दी, ग़ैब से एक आग ज़ाहिर हुई और उस चीज़ को जला दिया।
4. जब औरों को भी झुठलाया जा चुका है तो आपको झुठलाया जाना कोई नई बात नहीं, फिर गुम क्या।
5. यानी बाज़े सिर्फ़ मोज़िज़े लाए, बाज़े छोटी किताबें, बाज़े बड़ी किताबें, जैसे तौरात व इन्ज़ील। चूँकि किताब से बड़ी किताब मुराद है और बड़ी किताब शान और मज़ामीन में ज़्यादा होगी इसलिए उसकी सिफ़त में 'मुनीर' बढ़ाया कि उसमें शान और मज़ामीन दोनों के एतिबार से ज़ाहिर होने के मायने ज़्यादा होंगे।
6. यह जो फ़रमाया कि थोड़े का सौदा, तो इससे यह न समझा जाए कि दुनियावी ज़िन्दगी सबके लिए नुक़सानदेह है। तश्बीह देने (यानी समानता ज़ाहिर करने) से मतलब सिर्फ़ यह है कि यह असली मक़सूद बनाने के काबिल नहीं।
7. आज़माने क़त्लब यह है कि ऐसे हादसे तुमपर वक़्त-वक़्त पर आया करेंगे, इसको मज़ाज़ी तौर पर आज़माना कह दिया, वरना अल्लाह तआला आज़माने के हकीक़ी मायने से पाक है क्योंकि वह ग़ैब का जानने वाला है।
8. सब्र करने का यह मतलब नहीं कि तदबीर न करो या इन्तिक़ाम के मौक़ों में इन्तिक़ाम न लो, या क़िताल के मौक़ों में क़िताल न करो, बल्कि हादसों में तंगदिल न हो, क्योंकि इसमें तुम्हारे लिए फ़ायदे और मस्तहतें हैं। और तक्वा यह कि ख़िलाफ़े शरीअत बातों और मामलात से बचो, अगरचे तदबीर भी की जाए।

फ-न-बजूहु वरा-अ जुहूरिहिम् वशतरौ बिही स-मनन् कलीलन्, फ-बिअ-स मा यशतरून्
(187) ला तह्सबन्नल्लजी-न यफरहू-न बिमा अतव्-व युहिबू-न अय्युह्मदू बिमा लम्
यफअलू फला तह्सबन्नहुम् बि-मफाजतिम् मिनल्-अजाबि व लहुम् अजाबुन् अलीम (188)
व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि, वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीर (189) ♦

इन्-न फी खल्किस्समावाति
वल्अर्जि वखितलाफिल्लैलि वन्नहारि
ल-आयातिल्-लिउलिल् अल्बाब (190)
अल्लजी-न यज्कुरूनल्ला-ह कियामंव्- व
कुअूदंव्-व अला जुनूबिहिम् व
य-तफक्करू-न फी खल्किस्समावाति
वल्अर्जि रब्बना मा खलक्-त हाजा
बातिलन् सुब्हान-क फकिना अजाबन्नार
(191) रब्बना इन्न-क मन् तुदखिलिन्-
ना-र फ-कद् अख्जैतहू व मा
लिज्जालिमी-न मिन् अन्सार (192)
रब्बना इन्नना समिअना मुनादिय्युनादी
लिर्इमानि अन् आमिन् बि-रब्बिकुम्
फ-आमन्ना रब्बना फगिफ्र लना जुनूबना
व कफिफ्र अन्ना सय्यिआतिना व
तवप्फना मअल् अब्रार (193) रब्बना

व आतिना मा व-अत्तना अला रुसुलि-क व ला तुखिजना यौमल्-कियामति, इन्न-क ला
तुखिलिफुल् मीआद (194) फस्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उजीअु अ-म-ल आमिलिम्
मिन्कुम् मिन् ज-करिन् औ उन्सा बअजुकुम् मिम्-बअजिन् फल्लजी-न हाजरू व उखिरजू
मिन् दियारिहिम् व ऊजू फी सबीली व कातलू व कुतिलू ल-उकफिफरन्-न अन्हुम्

وَلَا تَكْتُمُونَ قَتَبَدُوهٗ وَرَأَىٰ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَدَّوَابِهِمْ تَسْمَا
فَلْيَلَا فَيَسْ مَا يَشْتَرُونَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ
بِمَا آتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ
بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَلِلَّهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ فَإِنَّ فِي
خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ
لِّأُولِي الْأَلْبَابِ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَمًا وَقُوَّةً أَوْ
عَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَذَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ
رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخُلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ أَنْصَارٍ رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ
آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا
وَكُوفِنَا مَعَ الْبَرِّ رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَ
لَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ فَاسْتَجِبْ
لَهُمْ رَبَّهُمْ إِنِّي لَا أَضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ فَمَنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ
أُنْفَىٰ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ

आम लोगों के रू-ब-रू ज़ाहिर कर देना और इसको मत छुपाना, सो उन लोगों ने उसको अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उसके मुकाबले में कम-हकीकत मुआवजा ले लिया। सो बुरी चीज़ है जिसको वे लोग ले रहे हैं। (187) जो लोग ऐसे हैं कि अपने (बुरे) किर्दार पर खुश होते हैं और जो (नेक) काम नहीं किया उसपर चाहते हैं कि उनकी तारीफ़ हो सो ऐसे शख्सों को हरगिज़-हरगिज़ मत ख्याल करो कि वे ख़ास अन्दाज़ के अज़ाब से बचाव में रहेंगे, (बल्कि) और उनको दर्दनाक सज़ा होगी।¹ (188) और अल्लाह ही के लिए है बादशाहत आसमानों की और ज़मीन की, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं।² (189) ♦

बेशक आसमानों के और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद एक रात और दिन के आने-जाने में दलीलें हैं अक्ल वालों के लिए। (190) जिनकी हालत यह है कि वे लोग अल्लाह की याद करते हैं खड़े भी, बैठे भी, लेते भी, और आसमानों और ज़मीन के पैदा होने में ग़ौर करते हैं कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने इस को बेकार पैदा नहीं किया।³ हम आपको पाक समझते हैं सो हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लीजिए। (191) ऐ हमारे परवर्दिगार! बेशक आप जिसको दोज़ख़ में दाख़िल करें उसको वाकई रुस्वा ही कर दिया, और ऐसे बेइन्साफ़ों का कोई भी साथ देने वाला नहीं। (192) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमने एक पुकारने वाले को सुना कि वह ईमान लाने के वास्ते ऐलान कर रहे हैं⁴ कि तुम अपने परवर्दिगार पर ईमान लाओ, सो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे परवर्दिगार! फिर हमारे गुनाहों को भी माफ़ फ़रमा दीजिए और हमारी बुराइयों को भी हमसे दूर कर दीजिए और हमको नेक लोगों के साथ मौत दीजिए। (193) ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको वह चीज़ भी दीजिए जिसका हमसे अपने पैग़म्बरों की मारफ़त आपने वायदा फ़रमाया है, और हमको क़ियामत के दिन रुस्वा न कीजिए,⁵ यकीनन आप वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करते।⁶ (194) सो उनके रब ने मन्ज़ूर कर लिया उनकी दरख़्वास्त को इस वजह से कि मैं किसी शख्स के काम को

1. बुरा किर्दार यही कि हक़ अहक़ाम को छुपाते थे और जो नेक काम नहीं किया उससे मुराद हक़ का इज़हार है, जिसको वे न करते थे लेकिन दूसरों को यह यकीन दिलाना चाहते थे कि हम हक़ को ज़ाहिर करते हैं, ताकि उनका धोखा देना मालूम न हो। चुनौचे जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रू-ब-रू भी यहूद ने यह ज़ुरत की।
2. पस चूँकि वह हकीकी बादशाह है, सबपर उनका हुक़म मानना ज़रूरी है और नाफ़रमानी जुर्म है। और चूँकि वह कादिर हैं इसलिए जुर्म की सज़ा दे सकते हैं। और चूँकि उन्होंने इस सज़ा की ख़बर दी है इसलिए ज़रूर सज़ा देंगे। और चूँकि ये सिफ़तें उनके साथ ख़ास हैं लिहाज़ा उनके सज़ा दिए हुए को कोई बचा नहीं सकता।
3. बल्कि इसमें हिक्मतें रखी हैं, जिनमें एक बड़ी हिक्मत यह है कि इस मख़्लूक से ख़ालिक तआला के वजूद व तौहीद पर दलील पकड़ी जाए।
4. मुराद इससे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है वास्ते से या बिला वास्ता।
5. मतलब यह है कि शुरू ही से जन्नत में दाख़िल कर दीजिए।
6. लेकिन हमको यह ख़ौफ़ है कि जिनके लिए वायदा है यानी मोमिन और नेक लोग, कहीं ऐसा न हो कि खुदा न करे हम उन सिफ़ात वाले न रहें जिनपर वायदा है, इसलिए हम आपसे यह दरख़्वास्त करते हैं कि हमको अपने वायदे की चीज़ें दीजिए। यानी हमको ऐसा कर दीजिए और ऐसा ही रखिए जिससे हम वायदे के मुखातब व महल हो जाएँ।

دِيَارِهِمْ وَأَوْدُوا فِي سَمِيحِي وَقَتَلُوا وَقَتَلُوا لَأَكْفُرَنَّ عَنْهُمْ
 سَيَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
 تَوَابًا مِمَّنْ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ التَّوَابِ
 لَا يَغْفِرُكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْهَلَاكَةِ مَتَاءٌ قَلِيلٌ
 تَعْمَأُولُهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْبِهَادُ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا
 رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
 نَزَّلَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْآبِرَارِ وَإِنْ
 مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ
 وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
 ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ اللَّهُ سَرِّهُ
 الْحِسَابُ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
 وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

या अय्युहन्नासुत्तक्क रब्बक्कुमुल्लजी ख-ल-क्कुम् मिन् नप्पिसंव्वाहि-दतिव्-व ख-ल-क्कुम्

जो कि तुममें से काम करने वाला हो अकारत नहीं करता चाहे वह मर्द हो या औरत,¹ तुम आपस में एक-दूसरे के जुज “यानी अंग” हो, सो जिन लोगों ने वतन छोड़ा और अपने घरों से निकाले गए² और तकलीफें दिए गए मेरी राह में और जिहाद किया और शहीद हो गए, ज़रूर उन लोगों की तमाम ख़ताएँ माफ़ कर दूँगा,³ और ज़रूर उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बदला मिलेगा अल्लाह तआला के पास से, और अल्लाह ही के पास अच्छा बदला है।⁴ (195) तुझको उन काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना मुग़ालते में न डाल दे। (196) कुछ दिन की बहार है,⁵ फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वह बहुत ही बुरी आरामगाह है। (197) लेकिन जो लोग खुदा से डरें उनके लिए बागात हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे, यह मेहमानी होगी अल्लाह तआला की तरफ़ से, और जो चीज़ें खुदा तआला के पास हैं वे नेक बन्दों के लिए बहुत ही बेहतर हैं। ▲ (198) और यकीनन बाज़े लोग किताब वालों में से ऐसे भी ज़रूर हैं जो अल्लाह तआला के साथ एतिकाद रखते हैं और इस किताब के साथ भी जो तुम्हारे पास भेजी गई, और उस किताब के साथ जो उनके पास भेजी गई, इस तौर पर कि अल्लाह तआला से डरते हैं अल्लाह तआला की आयात के मुकाबले में कम-हकीकत मुआवज़ा नहीं लेते, ऐसे लोगों को उनका नेक बदला मिलेगा उनके परवर्दिगार के पास, इसमें शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआला जल्द ही हिसाब कर देंगे। (199) ऐ ईमान वालों! खुद सब्र करो और मुकाबले में सब्र करो और मुकाबले के लिए तैयार रहो। और अल्लाह तआला से डरते रहो ताकि तुम पूरे कामयाब हो।⁶ (200) ♦

4 सूर: निसा 92

सूर: निसा मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 177 आयतें और 24 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ऐ लोगो! अपने परवर्दिगार से डरो जिसने तुमको एक जानदार से पैदा किया और उस जानदार से उसका जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से बहुत-से मर्द और औरतें फैलाई,⁷ और तुम खुदा तआला से डरो जिसके नाम से एक-दूसरे से मुतालबा किया करते हो, और क़सबत “यानी रिश्तेदारी और नातेदारी” से भी डरो, यकीनन अल्लाह तआला तुम सबकी इत्तिला रखते हैं।⁸ (1) और जिन बच्चों का बाप मर जाए उनके माल उन्हीं को पहुँचाते रहो,

1. दोनों के लिए एक जैसा क़ानून है।
2. यानी कुफ़ार ने वतन में परेशान किया, बेचारे घर छोड़कर परदेस को निकल खड़े हुए।
3. तमाम ख़ताएँ इसलिए कहा गया कि यहाँ हिजरत व जिहाद और शहादत की फज़ीलत ज़िक्र की गई है और हदीसों से इन आमाल का पिछले तमाम गुनाहों का कफ़ारा होना मालूम होता है।
4. ऊपर की आयत में मुसलमानों की परेशानियों का बयान और उनका नेक अन्जाम ज़िक्र किया गया था, आगे काफ़िरों की ऐश व आराम का बयान और उनका बुरा अन्जाम ज़िक्र किया गया है। ताकि मुसलमानों को अपना अन्जाम सुनकर जो तसल्ली हुई थी अपने दुश्मनों का अन्जाम सुनकर और ज़्यादा तसल्ली हो, और उनके ऐश व आराम की तरफ़ हिस्, ग़म या गुस्से के तौर पर भी तवज्जोह न करें।
5. क्योंकि मरते ही इसका नाम व निशान भी न रहेगा।
6. कामूस में “मुआवज़त” और “रिबात” के दो मायने लिखे हैं, एक इस्लामी हुक्मत और काफ़िर हुक्मत के दरमियान सरहद की जगह क़ियाम करना ताकि कुफ़ार से दारुल-इस्लाम यानी इस्लामी हुक्मत की हिफ़ाज़त रहे, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 140 पर)

मिन्हा जौजहा व बस्-स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव- व निसाअन्, वत्तकुल्लाहल्लज्जी तसाअलू-न बिही वलअरहा-म, इन्नल्ला-ह का-न अलैकुम् रकीबा (1) व आतुल्-यतामा अम्वालहुम् व ला त-तबद्दलुल्खाबी-स बित्थियिबि व ला तअकुलू अम्वालहुम् इला अम्वालिकुम्, इन्नहू का-न हूबन् कबीरा (2) व इन् खिफ्तुम् अल्ला तुक्सितू फिल्यतामा फन्किहू मा ता-ब लकुम् मिनन्निसा-इ

मसूना व सुला-स व रुबा-अ फ-इन् खिफ्तुम् अल्ला तअदिलू फवाहि-दतन् औ मा म-लकत् ऐमानुकुम्, ज़ालि-क अद्ना अल्ला तअलू (3) व आतुन्-निसा-अ सदुकातिहिन्-न निह्ल-तन्, फ-इन् तिब्-न लकुम् अन् शैडम् मिन्हु नफ्सन् फकुलूहु हनीअम्-मरीआ (4) व ला तुअतुस्सु-फहा-अ अम्वालकुमुल्लती ज-अलल्लाहु लकुम् कियामंव-वरजुकूहुम् फीहा वक्सूहुम् व कूलू लहुम् कौलम् मअरूफा (5) वबलुल्-यतामा हत्ता इज़ा ब-लगुन्निका-ह फ-इन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन् फद्फ़अू इलैहिम् अम्वालहुम् व ला तअकुलूहा इस्राफंव-व बिदारन् अय्यक्बरु, व मन् का-न

गनिय्यन् फल्यस्तअफिफ़ व मन् का-न फकीरन् फल्यअकुल् बिल्मअरूफि, फ-इज़ा द-फअ्तुम् इलैहिम् अम्वालहुम् फ-अशिहदू अलैहिम्, व कफा बिल्लाहि हसीबा (6) लिर्रिजालि नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वाल्लिदानि वल्-अकरबू-न व लिन्निसा-इ नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वाल्लिदानि वल्-अकरबू-न मिम्मा कल्-ल मिन्हु औ कसु-र, नसीबम् मफ़रूजा (7) व इज़ा ह-ज़रल् किस्म-त उलुल्लुख़ा वल्-यतामा वल्मसाकीनु फरजुकूहुम् मिन्हु व कूलू लहुम् कौलम्

كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۖ وَأَتُوا إِلَيْكُمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَجِدُوا
الْغَنِيَّةَ بِالْطُّبُبِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَى أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ
حُوبًا كَبِيرًا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَمِينِ فَأَلْجِئُوا
مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النَّسَاءِ مِنْهُنَّ وَتِلْكَ أَرْبَعٌ فَإِنْ خِفْتُمْ
أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةٌ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَلِكَ أَذَى الْأَ
تَعْوَلُوا ۖ وَأَتُوا النَّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ فِحْلًا ۖ فَمَنْ طَبَنَ لَكُمْ
عَنْ شَيْءٍ مِنْهُنَّ فَكُلُوهُ مِنْهُنَّ أَمْوَالَهُنَّ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا
الشَّفَهَاءَ أَمْوَالِكُمْ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ
فِيهَا وَاسْكُوهُمْ وَأَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۖ وَابْتَلُوا الْيَمِينَ
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا
إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ
وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا
عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۖ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ
الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ
وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ۖ وَإِذَا

مَنْ

और तुम अच्छी चीज़ से बुरी चीज़ को मत बदलो, और उनके माल मत खाओ अपने मालों (के रहने) तक, ऐसी कार्यवाही करना बड़ा गुनाह है। (2) और अगर तुमको इस बात का अन्देशा हो कि तुम यतीम लड़कियों के बारे में इन्साफ न कर सकोगे तो और औरतों से जो तुमको पसन्द हों निकाह कर लो, दो-दो औरतों से और तीन-तीन औरतों से और चार-चार औरतों से,¹ पस अगर तुमको इसका अन्देशा हो कि अदुल “यानी इन्साफ और बराबरी” न रखोगे तो फिर एक ही बीवी पर बस करो, या जो बाँदी तुम्हारी मिल्क में हो वही सही, इस जिक्र हुए मामले में ज्यादाती न होने की ज्यादा उम्मीद है।² (3) और तुम लोग बीवियों को उनके महर खुशदिली से दे दिया करो। हाँ, अगर वे बीवियाँ खुशदिली से छोड़ दें तुमको उस महर में का कोई हिस्सा तो तुम उसको खाओ मजेदार और खुशगवार समझ कर। (4) और तुम कम-अक़लों को अपने वे माल मत दो जिनको अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ज़िन्दगी का सरमाया बनाया है, और उन मालों में से उनको खिलाते रहो पहनाते रहो और उनसे माकूल बात कहते रहो।³ (5) और तुम यतीमों को आजमा लिया करो यहाँ तक कि जब वे निकाह को पहुँच जाएँ,⁴ फिर अगर उनमें किसी कद्र तमीज़ देखो⁵ तो उनके माल उनके हवाले कर दो,⁶ और उन मालों को ज़रूरत से ज़ायद खर्च करके और इस ख्याल से कि ये बालिग हो जाएँगे जल्दी-जल्दी उड़ाकर मत खा डालो, और जो शख्स ज़रूरतमन्द न हो सो वह तो अपने को बिल्कुल बचाए, और जो शख्स ज़रूरतमन्द हो तो वह मुनासिब मिक्दार “यानी मात्रा” से खा ले, फिर जब उनके माल उनके हवाले करने लगे तो उनपर गवाह भी कर लिया करो, और अल्लाह तआला ही हिसाब लेने वाले काफी हैं।⁷ (6) मदों के लिए भी हिस्सा है उस चीज़ में से जिसको माँ-बाप और बहुत नज़दीक के रिश्तेदार छोड़ जाएँ और औरतों के लिए भी हिस्सा है उस चीज़ में से जिसको माँ-बाप और बहुत नज़दीक के रिश्तेदार छोड़ जाएँ, चाहे वह चीज़ थोड़ी हो या ज्यादा हो, कतई हिस्सा।⁸ (7) और जब (वारिसों में तरके के) तकसीम होने के

(पृष्ठ 138 का शेष) मैंने यही मायने लिए हैं। दूसरे मायने मुतलक अहकाम की पाबन्दी करना। बैजावी ने यह मायने भी लिए हैं। और हदीस में नमाज़ के बाद अगली नमाज़ के इन्तिज़ार को “रिबात” फरमाया है, इसमें दोनों मायनों की गुंजाइश है। या तो पहले मायने के एतिबार से तश्बीह (उस जैसा होने) के तौर पर इसको “रिबात” फरमा दिया कि यह भी नफ़्स व शैतान के मुकाबले में तैयार और चौकन्ना रहना है, या दूसरे मायने के एतिबार से हकीकत ही के तौर पर फरमा दिया है कि यह इन्तिज़ार खुद पहचान है पाबन्दी और हमेशा करने की, जैसा कि ज़ाहिर है। और अल्लाह ही ज्यादा जानते हैं।

7. इस आयत में पैदाइश की तीन सूरतों का बयान है। एक तो जानदार का बेजान से पैदा करना, क्योंकि आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा हुए। दूसरे जानदार का जानदार से पैदाइश के आम जाने-पहचाने तरीके के खिलाफ़ पैदा होना, क्योंकि हज़रत हव्वा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पत्नी से पैदा हुई हैं। और तीसरे जानदार का जानदार से पैदाइश के आम और जाने-पहचाने तरीके से पैदा होना, जैसे और आदमी आदम और हव्वा से इस वक़्त तक पैदा होते आ रहे हैं। और अपने आपमें अजीब होने में और कुदरत के सामने अजीब न होने में तीनों सूरतें बराबर हैं।

8. ऊपर तक्वे का हुक्म था और उसके तहत इनसानी और रिश्ते के हुक्क की रियायत का इशार्द था, आगे उस तक्वे के मौकों का जो कि जिक्र किए हुए हुक्क हैं, तफ़सील से जिक्र फरमाते हैं।

1. ‘दो-दो, तीन-तीन और चार-चार’ अरबी ज़बान के कायदे के मुताबिक यहाँ यह हुक्म मुकैयद करने के लिए है, मुतलक और आम नहीं। इसलिए अगर कैद ख़त्म हो गई जैसे चार से ज्यादा हों तो वहाँ यह गुंजाइश और मुबाह होना बाकी न रहेगा।

2. अगर इन्साफ और बराबरी न हो सकने का ग़ालिब गुमान हो तो कई औरतों से निकाह करना इस मायने में ममनू (यानी वर्जित) है कि यह शख्स गुनाहगार होगा, न कि इस मायने में कि निकाह सही न होगा। निकाह यकीनन हो जाएगा।

3. यानी उनकी तसल्ली करते रहो कि माल तुम्हारा ही है। तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की वजह से अभी तुम्हारे हाथ में नहीं दिया, ज़रा समझदार हो जाओगे तो तुम ही को दे दिया जाएगा।

4. यानी बालिग हो जाएँ। क्योंकि निकाह की पूरी काबलियत बालिग होने से होती है।

5. यानी माल की हिफाज़त व मसलहतों की रियायत का सलीका और इन्तिज़ाम उनमें पाओ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 142 पर)

मअरूफा (8) वल्यरूखल्लजी-न लौ त-रकू मिन् खल्फिहिम् जुरिय्यतन् जिआफन् खाफू अलैहिम् फल्यत्तकुल्ला-ह वल्-यकूलू कौलन् सदीदा (9) इन्नल्लजी-न यअकूलू-न अम्वालल्-यतामा जुल्मन् इन्नमा यअकूलू-न फी बुतूनिहिम् नारन्, व स-यस्तौ-न सअीरा (10) ♦

यूसीकुमुल्लाहु फी औलादिकुम्, लिज्ज-करि मिस्तु हज्जिल्-उन्सयैनि फ-इन् कुन्-न निसाअन् फौकस्-नतैनि फ-लहुन्-न

सुलुसा मा त-र-क व इन् कानत् वाहि-दतन् फ-लहन्निसफु, व लि-अ-बवैहि लिकुल्लि वाहिदिम्-मिन्हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् का-न लहू व-लदुन् फ-इल्लम् यकुल्लहू व-लदुन् व-वरि-सहू अ-बवाहु फ-लिउम्मिहिस्सुलुसु फ-इन् का-न लहू इख्वतुन् फ-लिउम्मिहिस्सुदुसु मिम्-बअदि वसिय्यतिन्-यूसी बिहा औ दैनिन्, आबाउकुम् व अब्नाउकुम् ला तदरू-न अय्युहुम् अकरबु लकुम् नफअन्, फरी-जतम् मिनल्लाहि, इन्नल्ला-ह का-न अलीमन् हकीमा (11) व लकुम् निसफु मा त-र-क अज़वाजुकुम् इल्लम् युकुल्लहुन्-न व-लदुन् फ-इन् का-न

लहुन्-न व-लदुन् फ-लकुमुरुबुअु मिम्मा तरक्-न मिम्-बअदि वसिय्यतिन्-यूसी-न बिहा औ दैनिन्, व लहुन्नरुबुअु मिम्मा तरक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् व-लदुन् फ-इन् का-न लकुम् व-लदुन् फ-लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्-बअदि वसिय्यतिन् तूसू-न बिहा औ दैनिन्, व इन् का-न रजुलुंयू-रसु कलाल-तन् अविम्-अतुं-व लहू अखुन् औ उख्तुन् फ-लिकुल्लि

لَيْسَ لَهُ
62
الْمَرْءُ

حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَأَنزَلْنَاهُمْ
مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۚ وَيَبْغِشُ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا
مِنْ خَلْفِهِمْ ذَرْبَهُ ضَعْفًا أَفْوَاعًا عَلَيْهِمُ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ
وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ
ظُلْمًا إِنَّهَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ ثَارًا وَسَيَصْلُونَ سَعِيرًا ۚ
يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلَّذِ كَرِمْ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَىٰ
فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَإِنْ
كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ وَلِابْنَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ
وَوَرِثَتْهُ أَبَوَاهُ فَلِلْأُمِّهِ الثُّلُثُ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِلْأُمِّهِ
السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ لِأَبَائِهِمُ
وَأَبْنَاؤُهُمُ الَّذِينَ تَرَكَوْنَ لَهُمُ الْوَرِثَةُ مِنْ
الَّذِينَ إِنْ كَانَ اللَّهُ كَانَ عَلَيْهَا حُكْمًا ۚ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ
أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ
الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ
وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكَهُنَّ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ

वक्त (दूर के) रिश्तेदार आ मौजूद हों और यतीम और गरीब लोग, तो उनको भी उस (तरके) में से (जिस कद्र बालिगों का है) कुछ दे दो और उनके साथ अच्छे अन्दाज़ से बात करो।¹ (8) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर अपने बाद छोटे-छोटे बच्चे छोड़ जाएँ तो उनकी उनको फ़िक्र हो, सो उन लोगों को चाहिए कि अल्लाह से डरें और मौके की बात कहें। (9) बेशक जो लोग यतीमों का माल बिना हक़दार होते हुए खाते (बरतते) हैं, और कुछ नहीं अपने पेट में आग भर रहे हैं। और जल्द ही जलती हुई आग में दाख़िल होंगे।² (10) ♦

अल्लाह तआला तुमको हुक्म देता है तुम्हारी औलाद के बारे में। लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर, और अगर सिर्फ़ लड़कियाँ ही हों अगरचे दो से ज्यादा हों तो उन लड़कियों को दो तिहाई मिलेगा उस माल का जो कि मूरिस छोड़कर मरा है, और अगर एक ही लड़की हो तो उसको आधा मिलेगा।³ और माँ-बाप के लिए यानी दोनों में से हर एक के लिए मय्यित के तरके “यानी छोड़े हुए माल व जायदाद” में से छठा हिस्सा है अगर मय्यित के कुछ औलाद हो, और अगर उस मय्यित के कुछ औलाद न हो और उसके माँ-बाप ही उसके वारिस हों तो उसकी माँ का एक तिहाई है, अगर मय्यित के एक से ज्यादा भाई या बहन हों तो उसकी माँ को छठा हिस्सा मिलेगा (और बाकी बाप को मिलेगा) वसीयत निकाल लेने के बाद कि मय्यित उसकी वसीयत कर जाए या कर्ज़ के बाद,⁴ तुम्हारे उसूल व फ़ुरू “यानी बाप-दादा और औलाद व औलाद की औलाद” जो हैं तुम पूरे तौर पर यह नहीं जान सकते हो कि उनमें का कौन-सा शख्स तुमको नफ़ा पहुँचाने में ज्यादा नज़दीक है। यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से मुकर्रर कर दिया गया, यकीनन अल्लाह तआला बड़े इल्म और हिक्मत वाले हैं।⁵ (11) और तुमको आधा मिलेगा उस तरके का जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ जाएँ अगर उनके कुछ औलाद न हो। और अगर उनके कुछ औलाद हो तो

(पृष्ठ 140 का शेष) 6. तमीज़ न होने को “सफ़ह” (यानी कम-अक्ली) कहते हैं जो माल सुपुर्द करने के लिए रुकावट है, चाहे सलीका न हो चाहे सलीका हो मगर उस सलीके से काम न लेता हो। यानी इन्तिज़ाम न करता हो बल्कि माल को उड़ाता हो, दोनों सूरतों में माल अभी न दिया जाएगा।

7. यतीम के हाज़तमन्द कारकुन को अपनी लाज़िमी ज़रूरत के मुताबिक़ खर्च करना अपनी ख़िदमत करने के हक़ के तौर पर लेना जायज़ है।
8. यहाँ सिर्फ़ मीरास के हिस्सों के हक़दार होने को मुख़्तसर तौर पर बताया है, थोड़ा आगे चलकर वारिसों के हिस्सों की तफ़सील आती है। और नज़दीक के रिश्ते से मतलब यह है कि शरीअत में जो तरतीब वारिसों में मुकर्रर और साबित है उस तरतीब में नज़दीक हो, और ज़ाहिर है कि नज़दीकी दोनों जानिब से होती है। पस इससे लाज़िम आ गया कि जो रिश्तेदार ज्यादा करीब होगा वह मीरास पाएगा।

1. यह हुक्म वाजिब नहीं मुस्तहब (यानी पसन्दीदा) है। और अगर शुरू में वाजिब हुआ हो तो इसका वाजिब होना मन्सूख़ है।
2. जिस तरह यतीम का माल खुद खाना हARAM है इसी तरह किसी को खिलाना या देना अगरचे बतौर ख़ैर-ख़ैरात ही के क्यों न हो, यह भी हARAM है। और हर नाबालिग़ का हुक्म यही है चाहे वह यतीम न हो।
3. हदीस और अहले-हक़ के इज्मा से इस आयत का हुक्म अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के लिए नहीं। इसी वास्ते हज़रत सिदीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ‘फ़िदक’ (एक गाँव का नाम है जहाँ जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सरकारी बाग़ था जो आपके खलीफ़ाओं को मुन्ताकिल हो गया) वग़ैरह को मीरास में तकसीम नहीं फरमाया।
4. इन दोनों (वसीयत और कर्ज़) से पहले कफ़न-दफ़न ज़रूरी है। और वसीयत से मुराद वह है जो शरीअत के मुवाफ़िक़ हो। जैसे वारिस को वसीयत में कुछ न दे और कफ़न-दफ़न के खर्च और कर्ज़ की अदायगी के बाद जो माल बचे उसके एक तिहाई से ज़ायद की वसीयत न करे वरना वह वसीयत मीरास से मुक़द्दम न होगी। और जानना चाहिए कि कर्ज़ और वसीयत में कर्ज़ मुक़द्दम (पहले) है।
5. मीरास का मामला मय्यित की राय पर नहीं रखा गया, बल्कि खुद हक़ तआला ने सब कायदे मुकर्रर फरमा दिए।

वाहिदिम् मिन्हुमस्सुदुसु फ-इन् कानू अक्स-र मिन् ज़ालि-क फहुम् शु-रका-उ फिस्सुलुसि
मिम्-बअदि वसिय्यतिंयूसा बिहा औ दैनिन् गै-र मुज़ाररिन् वसिय्यतम् मिनल्लाहि,
वल्लाहु अलीमुन् हलीम (12) तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व मय्युतिअल्ला-ह व रसूलहू
युदखिल्हु जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा, व ज़ालिकल् फौजुल्
अज़ीम (13) व मय्यअसिल्ला-ह व
रसूलहू व य-तअद्-द हुदू-दहू युदखिल्हु
नारन् खालिदन् फीहा व लहू अज़ाबुम्
मुहीन (14) ❖

वल्लाती यअतीनल्-फ़ाहि-श-त
मिन्निहा-इकुम् फस्तशहिदू अलैहिन्-न
अरब-अतम् मिन्कुम् फ-इन् शहिदू
फ-अम्सिकूहुन्-न फिल्लबुयूति हत्ता
य-तवफ़ाहुन्नल्मौतु औ यज्जलल्लाहु
लहुन्-न सबीला (15) वल्लज़ानि
यअतियानिहा मिन्कुम् फ-आज़ूहुमा
फ-इन् ताबा व अस्लहा फ-अज़्रिज़ू
अन्हुमा, इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबररहीमा
(16) इन्नमतौबतु अलल्लाहि
लिल्लज़ी-न यअमलूनस्सू-अ
बि-जहालतिन् सुम्-म यतूबू-न मिन्
करीबिन् फ-उलाइ-क यतूबुल्लाहु अलैहिम्, व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा (17) व
लैसतित्तौबतु लिल्लज़ी-न यअमलूनस्सय्यिआति हत्ता इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दहुमुल्मौतु का-ल
इन्नी तुब्तुल्-आ-न व लल्लज़ी-न यमूतू-न व हुम् कुम्फारुन्, उलाइ-क अअ्तदना लहुम्
अज़ाबन् अलीमा (18) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निहा-अ

لَكُمْ وَلَكُلِّ قَلْبٍ الشُّمُّ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّتِهِ
تُؤْصُونَ بِهَا أَوْ دِينَ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَّةً أَوْ
أَمْرًا وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتُ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا الشُّدُّ فَإِنْ
كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ
وَصِيَّتِهِ يُؤْصَى بِهَا أَوْ دِينَ غَيْرَ مَضَاءٍ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ
وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَ
ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ
حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا فِيهَا أُولُو عَذَابٍ مُهِينٌ
وَالَّذِينَ يَأْتِيَنِ الْعَاقِبَةَ مِنْ نَسَائِكُمْ فَاستَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ
أَرْبَعَةً شَهَادَةٍ فَإِنْ شَهِدُوا فَا مِسْكُونٌ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى
يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا وَالَّذِينَ يَأْتِيَنِهَا
مِنْكُمْ فَاذْهَبُوا عَنْهَا وَلَا تَصْلَحْوا عَنَاصِرَهُمْ إِنْ أَنْتُمْ
كَانَ تَوَابًا رَحِيمًا إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ

مَرْكُ

तुमको उनके तरके से एक चौथाई मिलेगा वसीयत निकालने के बाद कि वे उसकी वसीयत कर जाएँ या कर्ज के बाद। और उन बीवियों को चौथाई मिलेगा उस तरके का जिसको तुम छोड़ जाओ अगर तुम्हारे कुछ औलाद न हो, और अगर तुम्हारे कुछ औलाद हो तो उनको तुम्हारे तरके से आठवाँ हिस्सा मिलेगा वसीयत निकालने के बाद कि तुम उसकी वसीयत कर जाओ या कर्ज के बाद। और अगर कोई मय्यित जिसकी मीरास दूसरों को मिलेगी, चाहे वह मय्यित मर्द हो या औरत, ऐसी हो जिसके न उसूल हों न फुरू, “यानी न बाप-दादा की जानिब से कोई हो और न औलाद की जानिब से कोई हो” और उसके एक भाई या एक बहन हो तो उन दोनों में से हर एक को छठा हिस्सा मिलेगा। फिर अगर ये लोग इससे ज्यादा हों तो वे सब तिहाई में शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत कर दी जाए या कर्ज के बाद, शर्त यह है कि किसी को नुकसान न पहुँचाए, यह हुक्म किया गया है खुदा तआला की तरफ से। और अल्लाह तआला खूब जानने वाले हैं, हलीम हैं।¹ (12) ये सब अहकाम जो जिक्र हुए खुदावन्दी ज़ाबते हैं, और जो शख्स अल्लाह और रसूल की पूरी इताअत करेगा अल्लाह तआला उसको ऐसी जन्नतों में दाखिल कर देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, हमेशा-हमेशा उनमें रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13) और जो शख्स अल्लाह तआला और रसूल का कहना न मानेगा और बिल्कुल ही उसके ज़ाबतों से निकल जाएगा उसको आग में दाखिल कर देंगे, इस तरह से कि वह उसमें हमेशा-हमेशा रहेगा और उसको ऐसी सज़ा होगी जिसमें ज़िल्लत भी है।² (14) ♦

और जो औरतें बेहयाई का काम करें तुम्हारी बीवियों में से सो तुम लोग उन औरतों पर चार आदमी अपनों में से गवाह कर लो, सो अगर वे गवाही दे दें तो तुम उनको घरों के अन्दर रोक कर रखो यहाँ तक कि मौत उनका खात्मा कर दे या अल्लाह तआला उनके लिए कोई और राह तजवीज़ फरमा दें।³ (15) और जो दो शख्स भी बेहयाई का काम करें तुममें से तो उन दोनों को तकलीफ पहुँचाओ, फिर अगर वे दोनों तौबा कर लें और इस्लाह कर लें तो उन दोनों से कुछ तअरूज़ “यानी रोक-टोक” न करो, बिला शुब्हा अल्लाह तआला तौबा कबूल करने वाले हैं, रहमत करने वाले हैं।⁴ (16) तौबा जिसका कबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है वह तो उन्हीं की है जो हिमाक़त से कोई गुनाह कर बैठते हैं,⁵ फिर करीब ही वक़्त में तौबा कर लेते हैं, सो ऐसों पर तो खुदा तआला तवज्जोह फरमाते हैं, और अल्लाह तआला खूब जानने वाले हैं, हिक्मत वाले हैं। (17) और ऐसे लोगों की तौबा नहीं जो गुनाह करते

1. अहकाम को बयान करके आगे उनके एतिकादी और अमली तौर पर मानने की ताकीद और न मानने पर वर्द इशार्द फरमाते हैं।
2. जाहिलियत में जैसे यतीमों और मीरास पाने वालों के मामले में बहुत-सी बेइन्तिज़मियाँ थीं जिनकी इस्लाह ऊपर की आयतों में जिक्र हुई। इसी तरह औरतों के मामले में भी तरह-तरह की बुरी और ख़राब रस्में और बेउन्वानियाँ फैली हुई थीं, आगे ‘अर्रिजालु कव्बामू-न’ तक उन मामलात की इस्लाह फरमाते हैं, और जो ख़ता व कुसूर शर्ई तौर पर मोतबर हो उसपर तंबीह की इजाज़त देते हैं।
3. वह दूसरा हुक्म बाद में नाज़िल हुआ जिसको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह इशार्द फरमाया कि अल्लाह ने वह सबील इशार्द फरमा दी है। तुम लोग समझ लो, याद कर लो कि ग़ैर-शादीशुदा के लिये सौ दुर्रे और शादीशुदा के लिये संगसारी (यानी पत्थर मार-मारकर हलाक कर देना) है। (जैसा कि हदीस की मोतबर किताबों में है) पस इस आयत का हुक्म मन्सूख है।
4. ‘जो दो शख्स भी’ इसमें शादीशुदा और ग़ैर-शादीशुदा औरत, और निकाह वाला और बेनिकाह वाला मर्द सब आ गए। पस चारों का हुक्म बयान हो गया।
5. ‘हिमाक़त’ की कैद वाकई है शर्त के तौर पर नहीं, क्योंकि हमेशा गुनाह हिमाक़त ही से होता है।

करहन्, व ला तअजुलूहुन्-न लि-तज्हबू बि-बअजि मा आतैतुमूहुन्-न इल्ला अय्यअती-न बिफाहि-शतिम् मुबय्यिनतिन् व आशिरुहुन्-न बिल्- मअरूफि फ-इन् करिस्तुमूहुन्-न फ-असा अन् तकरहू शैअंव-व यज्अलल्लाहु फीहि खौरन् कसीरा (19) व इन् अरत्तुमुस्तिब्दा-ल जौजिम् मका-न जौजिंव-व आतैतुम् इह्दाहुन्-न किन्तारन् फला तअखुजू

मिन्हु शैअन्, अ-तअखुजूनहू बुह्तानंव-व इस्मम् मुबीना (20) व कै-फ तअखुजूनहू व कद् अफजा बअजुकुम् इला बअजिंव-व अखज्-न मिन्कुम् मिसाकन् गलीजा (21) व ला तन्किहू मा न-क-ह आबाउकुम् मिननिसा-इ इल्ला मा कद् स-ल-फ, इन्नहू का-न फाहि-शतंव-व मक्तन्, व सा-अ सबीला (22) ❖

हुरिमत् अलैकुम् उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ-खावातुकुम् व अम्मातुकुम् व खालातुकुम् व बनातुल्-अखि व बनातुल्-उखित व उम्महातुकुमुल्लाती अरजअनकुम् व अ-खवातुकुम् मिनरजा-अति व उम्महातु निसा-इकुम् व रबा-इबुकुमुल्लाती फी हुजूरिकुम् मिननिसा-इकुमुल्लाती दखल्लुम् बिहिन्-न फ-इल्लम् तकून् दखल्लुम् बिहिन्-न फला जुना-ह अलैकुम् व हला-इलु अब्ना-इकुमुल्लजी-न मिन् अस्लाबिकुम् व अन् तज्मअू बैनल्-उख्रैनि इल्ला मा कद् स-ल-फ, इन्नल्ला-ह का-न गफूररहीमा (23)

النساء ٤٢
لن تنالوا
حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدُهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْإِنِّي تَبْتُ التَّنْ وَلَا الَّذِينَ
يُؤْتُونَ وَهُمْ لَكَاؤُا وَلَيْكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَجِدُ لَكُمْ أَنْ تَرْتُوا النِّسَاءَ كَرْهًا وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ
لِتَنْكِحُوا بَعْضُهُنَّ مَا أَنْتُمْ مُؤْمِنُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبِينَةٍ
وَعَايِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكُونُوا شِغَا
وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا وَإِنْ أَرَدْتُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ
زَوْجٍ وَانْتَحَمْتُمْ أَحَدَهُنَّ فَوَطَّأُوا فَلَاتَأْخُذْ وَأَمْنَةً شَيْئًا لَّا تَأْخُذْ وَنَهْ
بُهُنَّ أَنْوَإِشَاءَ مَيْنِيَا وَكَيْفَ تَأْخُذْ وَنَهْ وَقَدْ أَقْضَى بَعْضُكُمْ إِلَى
بَعْضٍ وَاتَّخَذْتُمْ مِنْكُمْ فِتْنًا فَاغْلِيظُوا وَلَا تَنْكِحُوا مَا كَتَبَ آبَاؤُكُمْ
مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّكَ كَانَ فَا حِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ
سَبِيلًا حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ
وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمُ اللَّاتِي
الرَّضَعْنَ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي جُحُورِكُمْ مِّنْ نِّسَائِكُمُ
الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمُوهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ
الْأَخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا

مَوْلَا

रहते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के सामने मौत ही आ खड़ी हुई¹ तो कहने लगा कि मैं अब तौबा करता हूँ, और न उन लोगों की जिनको कुफ़्र की हालत पर मौत आ जाती है। उन लोगों के लिए हमने एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। (18) ऐ ईमान वालो! तुमको यह बात हलाल नहीं कि औरतों के (माल या जान के) जब्रन मालिक हो जाओ² और उन औरतों को इस ग़रज़ से मुक़ैयद मत करो कि जो कुछ तुम लोगों ने उनको दिया है उसमें का कोई हिस्सा वसूल कर लो, मगर यह कि वे औरतें कोई खुली नामुनासिब और ग़लत हरकत करें। और उन औरतों के साथ ख़ूबी के साथ गुज़रान किया करो। और अगर वे तुमको नापसन्द हों तो मुम्किन है कि तुम एक चीज़ को नापसन्द करो और अल्लाह तआला उसके अन्दर कोई बड़ी ख़ैर रख दे। (19) और अगर तुम बजाय एक बीवी के दूसरी बीवी करना चाहो और तुम उस एक को ढेर का ढेर माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ भी मत लो।³ क्या तुम उसको लेते हो बोहतान रखकर और खुले गुनाह के करने वाले होकर। (20) और तुम उसको कैसे लेते हो हालाँकि तुम आपस में एक-दूसरे से बेहिजाबी के साथ मिल चुके हो, और वे औरतें तुमसे एक गाढ़ा इकरार ले चुकी हैं। (21) और तुम उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप (दादा या नाना) ने निकाह किया हो, मगर जो बात गुज़र गई गुज़र गई। बेशक यह (अक्ल के एतिबार से भी) बड़ी बेहयाई है और बहुत ही नफ़रत की बात है, और (शर्अन भी) बुरा तरीका है।⁴ (22) ♦

तुमपर हराम की गई हैं तुम्हारी माँ और तुम्हारी बेटियाँ⁵ और तुम्हारी बहनें⁶ और तुम्हारी फूफियाँ⁷ और तुम्हारी ख़ालाएँ⁸ और भतीजियाँ और भान्जियाँ⁹ और तुम्हारी वे माँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया है और तुम्हारी वे बहनें जो दूध पीने की वजह से हैं,¹⁰ और तुम्हारी बीवियों की माँ¹¹ और तुम्हारी बीवियों की बेटियाँ¹² जो कि तुम्हारी परवरिश में रहती हैं, उन बीवियों से कि जिनके साथ तुमने सोहबत की हो।¹³ और अगर तुमने उन बीवियों से सोहबत न की हो तो तुमको कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियाँ जो कि तुम्हारी नस्ल से हों,¹⁴ और यह कि तुम दो बहनों को एक साथ रखो, लेकिन जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह तआला बड़े बख़्शने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। (23)

1. मौत के हाज़िर होने का मतलब यह है कि उसे दूसरी दुनिया की चीज़ें नज़र आने लगे।

2. माल का मालिक होना तीन तरह से है। एक यह कि उस औरत का जो हक़ शरई मीरास में है उसको खुद ले लिया जाए, उसको न दिया जाए। दूसरे यह कि उसको निकाह न करने दिया जाए, यहाँ तक कि वह यहीं पर मर जाए, फिर उसका माल ले लें या वह मजबूरन खुद कुछ दे दे। तीसरे यह कि शौहर उसको मजबूर करे कि वह उसको कुछ माल दे तब यह उसको छोड़े। और जान का मालिक होना यह था कि मुर्दे की औरत को मुर्दे के माल की तरह अपनी मीरास समझते थे, इस सूरत में जबर की कैद वाकई है कि वे ऐसा करते थे। यह नहीं कि औरत अगर राज़ी हो तो वह सचमुच मीरास और मिलक हो जाएगी।

3. अगर किसी को शुब्हा हो कि हदीस में महर कम मुक़र्रर करने की ताकीद आई है और इस आयत से ज़्यादा का जायज़ होना मालूम होता है, तो उसका जवाब यह है कि यह कुरआन से जो जायज़ होने का मफ़हूम निकल रहा है यह सही हो जाने और लागू होने के मायने में है और हदीस में जायज़ होना मुत्लक़ दुरुस्त होने और मक्रूह न होने की नफ़ी है, पस कुछ टकराव नहीं। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक वाकिए में ज़्यादा महर के जायज़ और दुरुस्त होने को मान लेना इसलिए था कि सुनने वाले उसको हराम न समझने लगे, पस इससे कराहत का न होना साबित नहीं होता, न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर कोई एतिराज़ लाज़िम आता है।

4. जिस औरत से बाप ने ज़िना किया हो उससे बेटा निकाह नहीं कर सकता। इसी तरह जहाँ-जहाँ निकाह से हराम होना साबित हो जाता है ज़िना से भी हराम हो जाता है।

5. इनमें सब उसूल व फ़ुरु (यानी रिश्ते की जड़ जैसे बाप-दादा की जानिब और शाख़ जैसे औलाद की जानिब) वास्ते से और बिला वास्ता सब दाख़िल हैं।

6. चाहे हकीकी हों या माँ-शरीक या बाप-शरीक।

7. इसमें बाप की और सब मुजक्कर (Male) उसूल की तीनों किस्म की बहनें आ गईं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 148 पर)

पाँचवाँ पारः वल्ल-मुहसनातु

सूरतुन्निसा-इ (आयत 24 से 147)

वल्ल-मुहसनातु मिनन्निसा-इ इल्ला मा म-लकत् ऐमानुकुम् किताबल्लाहि अलैकुम् व
उहिल्-ल लकुम् मा वरा-अ जालिकुम्
अन् तव्तगू बिअम्वालिकुम् मुहिसनी-न
गै-र मुसाफिही-न, फमस्तन्तअतुम् बिही
मिन्हुन्-न फआतूहुन्-न उजूरहुन्-न
फरी-जतन्, व ला जुना-ह अलैकुम्
फीमा तराजैतुम् बिही मिम्-बअदिल्
फरी-जति, इन्नल्ला-ह का-न अलीमन्
हकीमा (24) व मल्लम् यस्ततिअ
मिन्कुम् तौलन् अय्यन्किहल्
मुहसनातिल्-मुअमिनाति फ-मिम्मा
म-लकत् ऐमानुकुम् मिन्
फ-तयातिकुमुल्-मुअमिनाति, वल्लाहु
अअलमु बिईमानिकुम्, बअजुकुम् मिम्-
बअजिन् फन्किहूहुन्-न बि-इजिन
अहिलहिन्-न व आतूहुन्-न उजूरहुन्-न
बिल्मअरुफि मुहसनातिन् गै-र
मुसाफिहातिव्वला मुत्तखिजाति अख्दानिन्
फ-इजा उहिसन्-न फ-इन् अतै-न बिफाहि-शतिन् फ-अलैहिन्-न निस्फु मा अलल् मुहसनाति
मिनल्-अजाबि, जालि-क लिमन् खशियल् अ-न-त मिन्कुम्, व अन् तस्बिरु खैरुल्लकुम्,
वल्लाहु गफूररहीम (25) ❖

युरीदुल्लाहु लि-युबय्यि-न लकुम् व यहिद-यकुम् सु-ननल्लजी-न मिन् कब्लिकुम् व

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ كِتَابَ
اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ
مُحْصَنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ
فَأْتُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَاضَيْتُمْ
بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنْ اللَّهُ كَانَ عَلَيْكُمْ نَبِيًّا ۖ وَمَنْ
لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكَحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ
مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتْيِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ
بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَإِنْ كُنْتُمْ هُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ
أَجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَحُصْنَتٌ غَيْرُ مُسْفِهِتٍ وَلَا تُنْجِزَاتٍ
أَخْدَانٍ فَإِذَا أَحْصَيْنَ فَإِنْ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ
نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ذَلِكَ لِمَنْ خَفِيَ
الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ
يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ الَّذِينَ يَخْتَلِفُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ
وَيُتُوبَ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ
عَلَيْكُمْ وَيُرِيدَ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهْوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا
عَظِيمًا ۖ يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَوِّفَ عَنْكُمْ وَخَلْقَ الْإِنْسَانِ

पाँचवाँ पार: वल-मुहसनातु

सूर: निसा (आयत 24 से 147)

और वे औरतें जो कि शौहर वालियाँ हैं, मगर जो कि तुम्हारी मिल्क में आ जाएँ, अल्लाह तआला ने इन अहकाम को तुमपर फर्ज कर दिया है।¹ और उन औरतों के अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई हैं, यानी यह कि तुम उनको अपने मालों के ज़रिये से चाहो,² इस तरह से कि तुम बीवी बनाओ, सिर्फ़ मस्ती ही निकालना न हो,³ फिर जिस तरीके से तुमने उन औरतों से फायदा उठाया है सो उनको उनके महर दो जो कुछ मुकर्रर हो चुके हैं। और मुकर्रर होने के बाद भी जिसपर तुम आपस में रज़ामन्द हो जाओ उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह तआला बड़े जानने वाले, बड़े हिक्मत वाले हैं। (24) और जो शख्स तुममें पूरी ताकत और गुंजाइश न रखता हो आज़ाद मुसलमान औरतों से निकाह करने की तो वह अपने आपस की मुसलमान बाँदियों से जो कि तुम लोगों की मिल्क में हैं, निकाह कर ले। और तुम्हारे ईमान की पूरी हालत अल्लाह ही को मालूम है, तुम आपस में एक-दूसरे के बराबर हो। सो उनसे निकाह कर लिया करो उनके मालिकों की इजाज़त से, और उनको उनके महर कायदे के मुवाफ़िक़ दे दिया करो, इस तौर पर कि वे निकाह में लाई जाएँ, न तो खुले-आम बदकारी करने वाली हों और न छुपे ताल्लुकात रखने वाली हों।⁴ फिर जब वे बाँदियाँ निकाह में लाई जाएँ, फिर अगर वे बड़ी बेहयाई का काम (ज़िना) करें तो उनपर उस सज़ा से आधी सज़ा होगी जो आज़ाद औरतों पर होती है।⁵ यह उस शख्स के लिए है जो तुममें ज़िना का अन्देशा रखता हो,⁶ और ज़ब्त करना ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआला बड़े बख़्शने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। (25) ♦

अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर है कि तुमसे बयान कर दे और तुमसे पहले लोगों के हालात तुम्हें बता दे और तुमपर तवज्जोह फरमाए, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़े हिक्मत वाले हैं। (26) और अल्लाह तआला को

- (पृष्ठ 146 का शेष) 8. इसमें माँ की और सब मुअन्नस (Female) उसूल की तीनों किस्म की बहनें आ गईं।
9. इसमें तीनों किस्म की बहनों की औलाद वास्ते से और बिला वास्ता सब आ गई।
10. यानी तुमने उनकी हकीकी या दूध पिलाने वाली माँ का दूध पिया है, या उन्होंने तुम्हारी हकीकी या दूध पिलाने वाली माँ का दूध पिया है, अगरचे अलग-अलग वक्तों में पिया हो।
11. इसमें बीवी के सब मुअन्नस उसूल आ गए।
12. इसमें बीवी के सब मुअन्नस फुरु आ गए।
13. किसी औरत के साथ निकाह से उसकी वह लड़की जो पहले शौहर से हो हराम नहीं होती, बल्कि जब उस औरत से सोहबत हो जाए तब हराम होती है।
14. इसमें सब मुजक्कर फुरु की बीवियाँ आ गईं। और नस्ल की कैद का मतलब यह है कि मुँह-बोले लेपालक जिसको मुतबन्ना कहते हैं, उसकी बीवी हराम नहीं।
1. यहाँ तक उनका बयान था जिनसे निकाह करना हराम है। इसके बाद उनके अलावा के निकाह के हलाल होने मय हलाल होने की शर्तों का बयान है।
2. यानी निकाह में महर होना ज़रूरी है।
3. इसके आ़म होने में ज़िना और मुत्आ (यानी एक मुहते मुकर्ररा के लिए निकाह कर लेना) सब दाख़िल हो गए।
4. बाँदी के साथ निकाह करने में दो शर्तें लगाई हैं, एक यह कि वह ऐसी औरत से निकाह न कर सके जिसमें दो सिफ़तें हों-नम्बर एक आज़ाद होना, नम्बर दो मोमिन होना। दूसरी शर्त यह है कि वह मुसलमान बाँदी हो। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक इन शर्तों का लिहाज़ रखना अफ़ज़ल है, और अगर इन शर्तों की रियायत किए बग़ैर (शेष तफ़सीर पृष्ठ 150 पर)

यतू-ब अलैकुम्, वल्लाहु अलीमुन् हकीम (26) वल्लाहु युरीदु अय्यतू-ब अलैकुम्, व युरीदुल्लजी-न यत्तबिअूनश्श-हवाति अन् तमीलू मैलन् अजीमा (27) युरीदुल्लाहु अय्युखफिफ-फ अन्कुम् व खुलिकल्-इन्सानु ज़ीफा (28) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तअकुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि इल्ला अन् तकू-न तिजा-रतन् अन् तराजिम् मिन्कुम्, व ला तक्तुलू अन्फु-सकुम्,

इन्नल्ला-ह का-न बिकुम् रहीमा (29) व मय्यफअल् ज़ालि-क अुद्वानव्-व ज़ुल्मन् फसौ-फ नुस्तीहि नारन्, व का-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीरा (30) इन् तज्जनिबू कबा-इ-र मा तुन्हौ-न अन्हु नुकफिफर् अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व नुदखिल्कुम् मुद्-खलन् करीमा (31) व ला त-तमन्नौ मा फज़लल्लाहु बिही बअज़कुम् अला बअज़िन्, लिर्रिजालि नसीबुम् मिम्-मक्त-सबू, व लिन्निसा-इ नसीबुम् मिम्-मक्त-सबू-न, वस्अलुल्ला-ह मिन् फज़िलही, इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अलीमा (32) व लिकुल्लिन् जअल्ना मवालि-य मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अकरबू-न, वल्लजी-न अ-कदत् ऐमानुकुम् फ-आतूहुम् नसीबहुम्, इन्नल्ला-ह का-न अला कुल्लि शैइन् शहीदा (33) ♦

अर्रिजालु कव्बामू-न अलन्निसा-इ बिमा फज़लल्लाहु बअज़हुम् अला बअज़िन्-व बिमा अन्फकू मिन् अम्वालिहिम्, फस्सालिहातु कानितातुन् हाफिज़ातुल्-लिल्लौबि बिमा हफिज़ल्लाहु, वल्लाती तख्राफू-न नुशूज़हुन्-न फ-अज़ूहुन्-न वहजुरुहुन्-न फिल्मज़ाजिअि वज़िरबूहुन्-न

الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا وَمَنْ يَقْعُلْ ذَلِكَ عُدُوًّا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبِيرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ تُكْفِرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا وَلَا تَحْمِلُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبْنَ وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا وَلِكُلِّ جَمَلًا مَوَالِيٍّ مِمَّا تَرَكِ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا وَلِلرِّجَالِ قُودًا مَوْنٌ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَبِهَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ فَالضَّرِيبَةُ قُنْتُ حِفْظًا لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ وَالَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاخْزِرُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَبِيرًا وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ

तो तुम्हारे हाल पर तवज्जोह फरमाना मन्ज़ूर है। और जो लोग शहवत परस्त हैं¹ वे यूँ चाहते हैं कि तुम बड़े भारी कजी “यानी टेढ़पन” में पड़ जाओ।² (27) अल्लाह को तुम्हारे साथ तख्फ़ीफ़ “यानी कमी और सहूलत करना” मन्ज़ूर है और आदमी कमज़ोर पैदा किया गया है। (28) ऐ ईमान वालो! आपस में एक-दूसरे के माल नाहक़ तौर पर मत खाओ, लेकिन कोई तिजारत हो जो आपसी रज़ामन्दी से हो तो हर्ज नहीं, और तुम एक-दूसरे को क़त्ल भी मत करो, बिला शुब्हा अल्लाह तआला तुमपर बड़े मेहरबान हैं। (29) और जो शख्स ऐसा फ़ेल “यानी काम” करेगा इस तौर पर कि हद से गुज़र जाए और इस तौर पर कि जुल्म करे,³ तो हम जल्द ही उसको⁴ आग में दाख़िल करेंगे, और यह (काम) खुदा तआला को आसान है। (30) जिन कामों से तुमको मना किया जाता है उनमें जो भारी-भारी काम हैं अगर तुम उनसे बचते रहो तो हम तुम्हारी हल्की और छोटी बुराइयाँ तुमसे दूर फरमा देंगे और हम तुमको एक इज़्ज़त वाली जगह में दाख़िल कर देंगे।⁵ (31) और तुम किसी ऐसे अमूर “यानी मामले और काम” की तमन्ना मत किया करो जिसमें अल्लाह तआला ने बाज़ों को बाज़ों पर फौकियत बख़्शी है,⁶ मर्दों के लिए उनके आमाल का हिस्सा साबित है और औरतों के लिए उनके आमाल का हिस्सा साबित है, और अल्लाह तआला से उसके फज़ल की दरख्वास्त किया करो, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। (32) और हर ऐसे माल के लिए जिसको माँ-बाप और रिश्तेदार लोग छोड़ जाएँ हमने वारिस मुकर्रर कर दिए हैं, और जिन लोगों से तुम्हारे अहद बंधे हुए हैं उनको उनका हिस्सा दे दो,⁷ बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर इत्तिता रखते हैं। (33) ♦

मर्द हाकिम हैं औरतों पर, इस सबब से कि अल्लाह तआला ने बाज़ों को बाज़ों पर फज़ीलत दी है, और इस सबब से कि मर्दों ने अपने माल खर्च किए हैं, सो जो औरतें नेक हैं इताअत करती हैं, मर्द की ग़ैर मौजूदगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त से निगरानी करती हैं, और जो औरतें ऐसी हों कि तुमको उनकी बद-दिमागी का अंदेशा हो तो उनको ज़बानी नसीहत करो और उनको उनके लेटने की जगहों में अकेला छोड़ दो, और उनको मारो, फिर अगर वे तुम्हारी इताअत करना शुरू कर दें तो उनपर बहाना मत ढूँढो, बेशक अल्लाह तआला बड़ी बुलन्दी और बड़ाई

(पृष्ठ 148 का शेष)

बाँदी से निकाह किया तो निकाह हो जाएगा लेकिन मक्रूह होगा।

5. वह सज़ा यह है कि उनको पचास दुर्रें लगाए जाएँगे।

6. और जिसको यह अन्देशा न हो उसके लिए मुनासिब नहीं।

1. इब्ने ज़ैद के कौल के मुताबिक़ शहवत परस्त लोगों से फ़ासिक लोग मुराद हैं, और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के कौल के मुताबिक़ जिनाकार मुराद हैं। यहाँ शहवत परस्ती की बुराई में मुबाह शहवतों से अलग होना दाख़िल नहीं है।

2. बड़ी भारी कजी (टेढ़पन) के दो मतलब हैं। एक यह कि बेख़ौफ़ और निडर होकर हराम कामों को करना, दूसरे यह कि हराम को हलाल समझ लेना। और उसके मुकाबले में हल्का टेढ़पन यह है कि गुनाह को गुनाह समझे और इत्तिफ़ाक़ से गुनाह हो जाए। इस आयत में ‘हल्के टेढ़पन’ (यानी थोड़ी बहुत बेराहरवी) की इजाज़त नहीं है बल्कि उन बदख़्वाहों के हाल का बयान करना है कि वे बड़ी कजी की कोशिश में हैं।

3. “उद्वान” का हासिल यह है कि वह (क़त्ल किया गया) शख्स हकीकत में क़त्ल का मुस्तहिक़ न हो और उसको क़त्ल किया जाए। और जुल्म का हासिल यह है कि जो क़त्ल का हक़दार न हो उसका क़त्ल हो जाना तीन तरह पर हो सकता है, एक यह कि फ़ेल में ख़ता हुई, यानी जैसे गोली शिकार पर चलाई और वह किसी आदमी को लग गई, दूसरे यह कि काज़ी व हाकिम से फैसला करने में ख़ता हुई, तीसरे यह कि हकीकते हाल यानी उसका क़त्ल का मुस्तहिक़ न होना मालूम है फिर भी जान-बूझकर उसको क़त्ल कर डाला। पस जुल्म कहने से पहली दो सूरतें ख़ारिज हो जाएँगी कि उनमें यह वर्ड नहीं।

4. यानी मरने के बाद।

5. गुनाहे कबीरा (यानी बड़े गुनाह) की तारीफ़ में बहुत अक्वाल हैं। सबसे ज़्यादा जामेअ कौल वह है जिसको ‘रुहुल मअानी’ में शैख़ुल इस्लाम बारज़ी से नक़ल किया है, कि जिस गुनाह पर कोई वर्ड हो या सज़ा हो या उसपर लानत आई हो, या उसमें किसी ऐसे ही गुनाह के बराबर ख़राबी हो या ज़्यादा हो जिसपर डॉट-डपट या सज़ा या लानत आई हो, या वह दीन की तौहीन करने के तौर पर सादिर हो, वह कबीरा (यानी बड़ा) है, और उसका मुकाबिल सगीरा (छोटा) है। और हदीसों में जो अ़दद आया है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 152 पर)

फ-इन् अ-तअनकुम् फला तबू अलैहिन्-न सबीलन्, इन्नल्ला-ह का-न अलिय्यन् कबीरा
(34) व इन् खिफ्तुम् शिका-क बैनिहिमा फअसू ह-कमम् मिन् अह्लिही व ह-कमम् मिन्
अह्लिहा इय्युरीदा इस्लाहंयुवफिफिल्लाहु बैनहुमा, इन्नल्ला-ह का-न अलीमन् खबीरा (35)
वअबुदुल्ला-ह व ला तुशिरकू बिही शैअंव-व बिल्-वालिदैनि इहसानंव-व बि-जिल्कुरबा

वलयतामा वल्मसाकीनि वल्जारि जिल्-
कुरबा वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहिबि बिल्-
जम्बि वब्निस्सबीलि व मा म-लकत्
ऐमानुकुम्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन्
का-न मुख्तालन् फखूरा (36)

अल्लजी-न यब्खलू-न व यअमुखनन्-
ना-स बिल्-बुखिल व यक्तुमू-न मा
आताहुमुल्लाहु मिन् फज़िलही, व
अअतद्ना लिल्काफिरी-न अज़ाबम्-
मुहीना (37) वल्लजी-न युन्फिकू-न
अम्वालहुम् रिआअन्नासि व ला
युअमिन्-न बिल्लाहि व ला बिल्-
यौमिल्-आखिरि, व मय्यकुनिशैतानु लहू
करीनन् फसा-अ करीना (38) व माज़ा
अलैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल्यौमिल्-
आखिरि व अन्फकू मिम्मा र-ज-क-
-हुमुल्लाहु, व कानल्लाहु बिहिम् अलीमा

(39) इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमु मिस्का-ल जर्रतिन् व इन् तकु ह-स-नतय्युज़ाअिफहा व युअति
मिल्लदुन्हु अजरन् अज़ीमा (40) फकै-फ इज़ा जिअना मिन् कुल्लि उम्मतिम् बि-शहीदिंव-व
जिअना बि-क अला हा-उला-इ शहीदा (41) यौमइजिय- यवद्दुल्लजी-न क-फरू व
अ-सवुर-रसू-ल लौ तुसव्वा बिहिमुल्-अरज़ु, व ला यक्तुमूनल्ला-ह हदीसा (42) ♦

الْحَمْدُ لِلَّهِ
بَيْنَهُمَا فَاَبْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا اِنْ
يُرِيدُ اِضْلَاحًا يُوفِقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا اِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا
وَاَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا
وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ
إَيْمَانُكُمْ اِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَلًا فِي الْفُتُورِ
الَّذِينَ يَخْلَفُونَ بِإِثْمِهِمْ وَالَّذِينَ يَخْلَفُونَ مَا أَنَّهُمْ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا
وَالَّذِينَ يُتَفَقَهُنَّ أَمْوَالَهُنَّ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَن يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا
فَسَاءَ قَرِينًا وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا اِنَّ اللَّهَ
لَكَيْظِلْمٌ مُّثْقَلًا ذَرْقًا اِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضَعِفَهَا وَيُؤْتِ
مِن لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ
بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ شَهِيدًا اِيَوْمَ يَوْمِ الدِّينِ
لَقَرُّوْا وَعَصُوا الرَّسُوْلَ لَوْ تَسْوَىٰ بِهِمُ الْاَرْضُ وَلَا يَكْتُمُوْنَ

مَثَل

वाले हैं। (34) और अगर तुम ऊपर वालों को उन दोनों मियाँ-बीवी में कशा-कशी का अन्देशा हो तो तुम लोग एक आदमी जो तसफिया करने की सलाहियत रखता हो मर्द के खानदान से, और एक आदमी जो तसफिया करने की सलाहियत रखता हो औरत के खानदान से भेजो, अगर उन दोनों आदमियों को इस्लाह मन्जूर होगी तो अल्लाह तआला उन मियाँ-बीवी में इत्तिफाक फरमा देंगे। बेशक अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़े खबर वाले हैं। (35) और तुम अल्लाह तआला की इबादत इख्तियार करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक मत करो और माँ-बाप के साथ अच्छा मामला करो, और रिश्तेदारों के साथ भी और यतीमों के साथ भी और गरीब-गुरबा के साथ भी और पास वाले पड़ोसी के साथ भी और दूर वाले पड़ोसी के साथ भी, और साथ रहने और उठने-बैठने वाले के साथ भी,¹ और राहगीर के साथ भी और उनके साथ भी जो तुम्हारे मालिकाना कब्जे में हैं,² बेशक अल्लाह तआला ऐसे शख्सों से मुहब्बत नहीं रखते जो अपने को बड़ा समझते हों, शेखी की बातें करते हों। (36) जो कि बुख्ल “यानी कन्जूसी” करते हों और दूसरे लोगों को भी बुख्ल की तालीम करते हों, और वे उस चीज़ को छुपाकर रखते हों जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फज़ल से दी है।³ और हमने ऐसे नाशुकों के लिए तौहीन वाली सज़ा तैयार कर रखी है। (37) और जो लोग कि अपने मालों को लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और अल्लाह तआला पर और आखिरी दिन पर एतिकाद नहीं रखते, और शैतान जिसका साथी हो उसका वह बुरा साथी है।⁴ (38) और उनपर क्या मुसीबत नाज़िल हो जाएगी अगर वे लोग अल्लाह तआला पर और आखिरी दिन पर ईमान ले आएँ, और अल्लाह तआला ने जो उनको दिया है उसमें से खर्च करते रहा करें,⁵ और अल्लाह तआला उनको खूब जानते हैं। (39) बिला शुब्हा अल्लाह तआला एक ज़रा बराबर भी जुल्म न करेंगे, और अगर एक नेकी होगी तो उसको कई गुना कर देंगे और अपने पास से और बड़ा अज़्र देंगे।⁶ (40) सो उस वक़्त भी क्या हाल होगा जबकि हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह को हाज़िर करेंगे और आपको उन लोगों पर गवाही देने के लिए सामने लाएँगे।⁷ (41) उस दिन जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और रसूल का कहना न माना होगा वे इस बात की तमन्ना करेंगे कि काश! हम ज़मीन के पैवन्द हो जाएँ, और अल्लाह तआला से किसी बात को छुपा न सकेंगे। (42) ♦

(पृष्ठ 150 का शेष) उससे मकसूद उसी में महदूद करना नहीं बल्कि वक़्त के तकाज़े से उन्हीं का ज़िक्र होगा।

6. जैसे मर्द होना या मर्दों का डबल हिस्सा होना, या उनकी गवाही का कामिल होना वगैरह-वगैरह।

7. जिन दो शख्सों में आपस में इस तरह कौल व करार हो जाए कि हम एक-दूसरे के इस तरह मददगार रहेंगे कि अगर एक शख्स के ज़िम्मे कोई दियत (यानी जुर्माना, खून-बहा) लाज़िम आई तो दूसरा भी उसको बर्दाश्त करने वाला हो, और जब वह मर जाए तो दूसरा उसकी मीरास ले, तो यह अ़हद ‘अ़वदे मवालात’ है और उनमें से हर शख्स ‘मौलल-मवालात’ कहलाता है। यह रस्म अरब में इस्लाम से पहले भी थी और शुरू इस्लाम में जब तक कि अक्सर मुसलमानों के रिश्तेदार भी मुसलमान न हुए थे, और इस वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्सार व मुहाजिरीन में आपस में ‘अ़वदे उखुवत’ (यानी भाईचारा) आयोजित फरमा दिया था, जिसका असर इसी मवालात का-सा था। उस वक़्त भी इसी पुरानी रस्म के मुवाफ़िक हुक्म रहा कि अन्सार व मुहाजिरीन में आपस में मीरास जारी होती थी। फिर जब लोग कस्ूरत से मुसलमान हो गए तो उसमें अव्वल वह तरमीम हुई जो इस आयत में ज़िक्र हुई है, यानी छठा हिस्सा उस ‘मौलल मवालात’ को और बाकी दूसरे वारिसों को दिलाया जाता था। फिर इसके कुछ बाद सूर: अहज़ाब की आयत ‘व उलुल अरहामि बअज़ुहुम् औला बि-बअज़िन्’ से बिलकुल ही इस ‘मौलल मवालात’ का हिस्सा मन्सूख हो गया।

1. चाहे वह मज्लिस हमेशा की हो जैसे लम्बे सफ़र का साथ और किसी जायज़ काम में शिर्कत, या आरज़ी हो जैसे छोटे सफ़र का साथ या इत्तिफाकी जलसे में शिर्कत।

2. ये हुक्क वाले अगर काफ़िर भी हों तब भी उनके साथ एहसान करे, अलबत्ता मुसलमान का हक़ इस्लाम की वजह से उनसे ज़्यादा होगा।

3. इससे या तो मुराद माल व दौलत है जबकि हिफ़ाज़त की मसलहत के बग़ैर महज़ बुख्ल की वजह से कि हुक्क वाले उम्मीद न करें, छुपाए, या मुराद इल्मे दीन है कि यहूद रिसालत की ख़बरों को छुपाया करते थे, पस बुख्ल भी आ़म हो जाएगा, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 154 पर)

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तकरबुस्सला-त व अन्तुम् सुकारा हत्ता तअलमू मा तकूलू-न व ला जुनुबन् इल्ला आबिरी सबीलिन् हत्ता तगतसिलू, व इन् कुन्तुम् मरज़ा औ अला स-फरिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ला-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ-लम् तजिदू माअन् फ-तयम्मू सअीदन् तय्यिबन् फम्सहू बिबुजूहिकुम् व ऐदीकुम्, इन्नल्ला-ह का-न अफुव्वन् गफूरा (43) अलम्

त-र इलल्लजी-न ऊतू नसीबम् मिनल् किताबि यशतरूनज्जला-ल-त व युरीदू-न अन् तजिल्लुस्सबील (44) वल्लाहु अअलमु बि-अअदा-इकुम्, व कफा बिल्लाहि वलिय्यव्-व कफा बिल्लाहि नसीरा (45) मिनल्लजी-न हादू युहरिफूनल् कलि-म अम्मवाजिअिही व यकूलू-न समिअना व असेना वस्मअ गै-र मुस्मअिव्-व राअिना लय्यम् बि-अल्सिनतिहिम् व तअनन् फिद्दीनि, व लौ अन्नहुम् कालू समिअना व अ-तअना वस्मअ वन्जुरना लका-न खैरल्लहुम् व अक्व-म व लाकिल्-ल-अ-नहुमुल्लाहु बिकुफिरहिम् फला

युअमिन्-न इल्ला कलीला (46) या अय्युहल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब आमिन् बिमा नज्जल्ला मुसद्दिकल्लिमा म-अकुम् मिन् कब्लि अन्नत्मि-स वुजूहन् फ-नरुद्दहा अला अद्बारिहा औ नल्अ-नहुम् कमा ल-अन्ना अस्हाबस्सबि, व का-न अमूरुल्लाहि मफअूला (47) इन्नल्ला-ह ला यगिफरु अय्युशर-क बिही व यगिफरु मा दू-न ज़ालि-क लिमय्यशा-उ व मय्युशिरक्

الحصينة
الله حديدًا يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِنَ الْمَرْغَبِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتُرُونَ الضَّلَاةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَتَّخِذُوا التَّحِيلَ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ۚ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمِعْ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَارْعَا إِنِّيَا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنَا فِي الَّذِينَ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمِعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ ۚ وَلَكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِنِّي إِنَّا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ أَنْ نَطْغَىٰ وَجُوهًا فَتَرَدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ لَعَنَهُمُ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ النَّبِيِّ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا

مَكَّة

ऐ ईमान वालो! तुम नमाज़ के पास भी ऐसी हालत में मत जाओ कि तुम नशे में हो,¹ यहाँ तक कि तुम समझने लगे कि (मुँह से) क्या कहते हो,² और नापाकी की हालत में भी तुम्हारे मुसाफिर होने की हालत को छोड़कर, यहाँ तक कि गुस्ल कर लो,³ और अगर तुम बीमार हो⁴ या सफर की हालत में हो या तुममें से कोई शख्स इस्तिन्जे से “यानी पेशाब पाख़ाने की ज़रूरत से फारिग होकर” आया हो, या तुमने बीवियों से कुरबत की हो, फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पाक ज़मीन (पर हाथ मारकर उस) से तयम्मूम कर लिया करो, यानी अपने चेहरों और हाथों पर (हाथ) फेर लिया करो,⁵ बिला शुब्हा अल्लाह तआला बड़े माफ करने वाले, बड़े बख़्शने वाले हैं। (43) क्या तुने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक बड़ा हिस्सा मिला है, वे लोग गुमराही को इख़्तियार कर रहे हैं और (युँ) चाहते हैं कि तुम राह से बेराह हो जाओ। (44) और अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानते हैं और अल्लाह तआला काफी रफ़ीक़ है, और अल्लाह तआला काफी हिमायती है। (45) ये लोग जो यहूदियों में से हैं कलाम को उसके मौकों से दूसरी तरफ़ फेर देते हैं, और (ये कलिमात) कहते हैं: समिअना व असैना और इस्मअ गै-र मुस्-मअ और राअिना इस तौर पर कि अपनी ज़बानों को फेर कर और दीन में ताना मारने की नीयत से,⁶ और अगर ये लोग (ये कलिमात) कहते, समिअना व अतअना⁷ और इस्-मअ और उन्जुरना⁸ तो (यह बात) उनके लिए बेहतर होती और मौकों की बात थी, मगर उनको खुदा तआला ने उनके कुफ़्र के सबब अपनी रहमत से दूर फेंक दिया, अब वे ईमान न लाएँगे मगर थोड़े-से आदमी।⁹ (46) ऐ वे लोगो! जो किताब दिए गए हो, तुम उस किताब पर ईमान लाओ जिसको हमने नाज़िल फरमाया है, ऐसी हालत पर कि वह सच बतलाती है उस किताब को जो तुम्हारे पास है, इससे पहले-पहले कि हम चेहरों को बिलकुल मिटा डालें और उनको उनकी उल्टी तरफ़ की तरह बना दें, या उनपर हम ऐसी लानत करें जैसी लानत उन हफ़ते वालों पर की थी, और अल्लाह तआला का हुक्म पूरा ही होकर रहता है। (47) बेशक अल्लाह तआला इस बात को न बख़्शेंगे कि उनके साथ किसी को शरीक़ करार दिया जाए और इसके सिवा जितने गुनाह हैं जिसके लिए मन्ज़ूर होगा वे गुनाह बख़्श देंगे। और जो अल्लाह तआला

(पृष्ठ 152 का शेष) जिसमें बख़ील लोग और रिसालत का इनकार करने वाले दोनों आ गए।

4. ऊपर अल्लाह व रसूल और कियामत के साथ कुफ़्र और बुख़ल और दिखावे और तकब्बुर की मज़मूत (बुराई और निंदा) फरमाई है, आगे उनकी उलट सिफ़ात की तरफ़ीब देते हैं। पस वह जो पहले गुज़रा यह उसका पूरा करने वाला, बकिया और आख़िरी हिस्सा है।

5. यानी कुछ भी नुक़सान नहीं हर तरह नफ़ा-ही-नफ़ा है।

6. ऊपर जिन उमूर की तर्गीब थी आगे उनके न करने पर डरावा और धमकी है।

7. यानी जिन लोगों ने दुनिया में खुदाई अहक़ाम न माने होंगे उनके मुक़द्दमे की पेशी के वक़्त बतौर सरकारी गवाह के अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के बयानात सुने जाएँगे। जो-जो मामलात नबियों की मौजूदगी में पेश आए थे वे सब जाहिर कर देंगे। उस गवाही के बाद उन मुख़ालिफ़ीन पर जुर्म साबित होकर सज़ा दी जाएगी।

1. यानी ऐसी हालत में नमाज़ मत पढ़ो। मतलब यह है कि नमाज़ का अदा करना तो अपने वक़्तों में फर्ज़ है और यह हालत नमाज़ अदा करने के मनाफ़ी है, पस नमाज़ के वक़्तों में नशे का इस्तेमाल मत करो, कभी तुम्हारे मुँह से कोई ग़लत कलिमा न निकल जाए।

2. यह हुक्म उस वक़्त था जब शराब हलाल थी, फिर शराब हराम हो गई। न नमाज़ के वक़्त दुरुस्त है न गैर-नमाज़ के वक़्त। पस इस आयत का पहला हिस्सा मन्सूख़ है।

3. नापाकी से गुस्ल करना नमाज़ के सही होने की शर्तों में से है। और यह हुक्म यानी नापाकी के बाद बिना गुस्ल किए नमाज़ पढ़ना उज़्र न होने की हालत में है।

4. जिस बीमारी में पानी के इस्तेमाल से बीमारी के ज़्यादा या लम्बी हो जाने का डर हो उसमें तयम्मूम दुरुस्त है। ‘मरज़ा’ में ये दोनों सूरतें दाख़िल हैं।

5. तयम्मूम हर ऐसी चीज़ से जायज़ है जो ज़मीन की ज़िन्स से हो, और ज़मीन की ज़िन्स वह है (शेष तफ़सीर पृष्ठ 156 पर)

बिल्लाहि फ-कदिफतरा इस्मन् अजीमा (48) अलम् त-र इलल्लजी-न युजक्कू-न अन्फुसहुम,
बलिल्लाहु युजक्की मय्यशा-उ व ला युज्लमू-न फतीला (49) उन्जुर कै-फ यफतरू-न
अलल्लाहिल्- कजि-ब, व कफा बिही इस्मम् मुबीना (50) ❖

अलम् त-र इलल्लजी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युअमिन्-न बिल्-जिबि वत्तागूति

व यक्कूलू-न लिल्लजी-न क-फरू

हा-उला-इ अहदा मिनल्लजी-न आमनू

सबीला (51) उला-इकल्लजी-न

ल-अ-नहुमुल्लाहु, व मय्यल्अनिल्लाहु

फ-लन् तजि-द लहू नसीरा (52) अम्

लहुम् नसीबुम् मिनल्-मुल्कि फ-इजल्ला

युअतूनन्ना-स नकीरा (53) अम्

यहसुदूनन्ना-स अला मा आताहुमुल्लाहु

मिन् फजिलही फ-कद् आतैना आ-ल

इब्राहीमल्-किता-ब वलिहक्म-त व

आतैनाहुम् मुल्कन् अजीमा (54)

फ-मिन्हुम् मन् आम-न बिही व मिन्हुम्

मन् सद्-द अन्हु, व कफा बि-जहन्न-म

सअीरा (55) इन्नल्लजी-न क-फरू

बिआयातिना सौ-फ नुस्लीहिम् नारन्,

कुल्लमा नजिजत् जुलूदुहुम् बद्दल्लाहुम् जुलूदन् गैरहा लि-यजूकुल्-अजा-ब, इन्नल्ला-ह का-न

अजीजन् हकीमा (56) वल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति सनुदखिलुहुम् जन्नातिन्

तजरी मिन् तहिल्ल-अन्हारु खालिदी-न फीहा अ-बदन्, लहुम् फीहा अज्वाजुम् मुतहह-रतुव्-व

नुदखिलुहुम् जिल्लन् जलीला (57) इन्नल्ला-ह यअमुरुकुम् अन् तु-अद्दुल् अमानाति इला

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۚ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ بَلَىٰ اللَّهُ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَلَا يُلْحِقُونَ الْفِتْيَالَ ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ۚ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَمَنْ يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ۚ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ مُلْكًا عَظِيمًا ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِمَجْهُمٍ سَعِيرًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كَلِمًا نَّصِيعَتٍ جُلُودُهُمْ بَدَلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

के साथ शरीक ठहराता है वह बड़े जुर्म का करने वाला हुआ।¹ (48) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को मुकद्दस “यानी पाकीज़ा और नेक” बतलाते हैं, बल्कि अल्लाह तआला जिसको चाहें मुकद्दस बना दें, और उनपर धागे के बराबर भी जुल्म न होगा। (49) तू देख ये लोग अल्लाह तआला पर कैसी झूठी तोहमत लगाते हैं। और यही बात खुला मुज्जिम होने के लिए काफी है। (50) ♦

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब का एक हिस्सा मिला है, वे बुत और शैतान को मानते हैं² और वे लोग काफिरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग उन मुसलमानों के मुकाबले में ज्यादा सही रास्ते पर हैं। (51) ये लोग वे हैं जिनको खुदा तआला ने मलऊन बना दिया है, और खुदा तआला जिसको मलऊन बना दे उसका कोई हिमायती न पाओगे। (52) हाँ क्या उनके पास कोई हिस्सा है हुक्मत का, सो ऐसी हालत में तो और लोगों को ज़रा-सी चीज़ भी न देते। (53) या दूसरे आदमियों की उन चीज़ों पर जलते हैं जो अल्लाह तआला ने उनको अपने फज़ल से अज़ा फरमाई हैं, सो हमने (हज़रत) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के खानदान को किताब भी दी है और इल्म भी दिया है, और हमने उनको बड़ी भारी हुक्मत भी दी है।³ (54) सो उनमें से बाज़े तो उसपर ईमान लाए और बाज़े ऐसे थे कि उससे मुँह फेरे ही रहे, और दोज़ख की दहकती हुई आग काफी है।⁴ (55) बेशक जो लोग हमारी आयतों के इनकारी हुए हम उनको जल्द ही एक सख्त आग में दाखिल करेंगे, जबकि एक दफ़ा उनकी खाल जल चुकेगी तो हम उस पहली खाल की जगह फौरन दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि अज़ाब ही भुगतते रहें।⁵ बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। ♦ (56) और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए हम उनको जल्द ही ऐसे बागों में दाखिल करेंगे कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। उनके वास्ते

(पृष्ठ 154 का शेष)

जो आग में न जले और न गले, लेकिन चूना और राख इससे अलग हैं कि चूना आग में जल जाता है मगर तयम्मूम उससे दुरुस्त है, और राख न जलती है और न गलती है मगर उससे तयम्मूम जायज़ नहीं।

6. नबी का मज़ाक उड़ाना और उसको ताना देना, यह दीन का मज़ाक उड़ाना और उसको ताना मारना है।

7. जिसके मायने यह है कि हमने सुन लिया और मान लिया।

8. ‘इस्मअ’ के मायने यह है कि आप सुन लीजिए और ‘उन्जुरना’ के मायने यह है कि हमारी मस्लहत पर नज़र फरमाइए।

9. यह ‘ता युअ्मिनु-न’ उन्हीं के बारे में फरमाया जो अल्लाह के इल्म में कुफ़र पर मरने वाले थे। पस नौ-मुस्लिमों के ईमान लाने से कोई शुब्हा नहीं हो सकता। और जो ईमान ले आता है अगर वह किसी वक़्त बेअदबी और नाफरमानी भी कर चुका हो, लेकिन जब उससे बाज़ आ गया तो वह ख़त्म हो गई।

1. कुरआन व हदीस व इज़्मा से यह मसला शरीअत की ज़रूरी चीज़ों में से है कि शिर्क और कुफ़र दोनों बख़्से नहीं जाएँगे।

2. क्योंकि मुशिरकीन का दीन बुत-परस्ती और शैतान की पैरवी था, जब ऐसे दीन को अच्छा बतलाया तो बुत और शैतान की तस्दीक साफ़ लाज़िम आई।

3. चुनौतें बनी इसराईल में बहुत से अम्बिया गुज़रे, बाज़ अम्बिया हुक्मत वाले भी हुए जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, उनका बहुत-सी बीवियों वाला होना मालूम व मशहूर है, और ये सब इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में हैं। सो जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं तो आपको अगर ये नेमतें व इनामात मिल गए तो ताज्जुब की क्या बात है।

4. पस अगर आपकी रिसालत व कुरआन पर भी आपके ज़माने के बाज़े लोग ईमान न लाएँ तो रंज की बात नहीं।

5. क्योंकि पहली खाल में जलने के बाद शुब्हा हो सकता था कि शायद उसमें एहसास न रहे इस शुब्हे को दूर करने के लिए यह सुना दिया।

अहिलहा व इजा हकम्तुम् बैनन्नासि अन् तहकुम् बिल्-अदलि, इन्नल्ला-ह निअिम्मा यअिजुकुम् बिही, इन्नल्ला-ह का-न समीअम् बसीरा (58) या अय्युहल्लजी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुरसू-ल व उलिल्-अमिर मिन्कुम् फ-इन् तनाजअतुम् फी शैइन् फरुद्दुह इलल्लाहि वरसूलि इन् कुन्तुम् तुअमिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि, जालि-क खैरुव-व अह्सनु तअवीला (59) ♦

अलम् त-र इलल्लजी-न यअुम्-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्जि-ल इलै-क व मा उन्जि-ल मिन् कब्लि-क युरीदू-न अय्य-तहाकम् इलत्तागूति व कद् उमिरु अय्यक्फुरू बिही, व युरीदुशैतानु अय्यजिल्लहुम् जलालम् बअीदा (60) व इजा की-ल लहुम् तअालौ इला मा अन्जलल्लाहु व इलरसूलि रअैतल्-मुनाफिकी-न यसुद्दू-न अन्-क सुद्दा (61) फ़ कै-फ़ इजा असाबतहुम् मुसीबतुम् बिमा कदमत् ऐदीहिम् सुम्-म जाऊ-क यहिलफू-न बिल्लाहि इन् अरद्ना इल्ला इहसानंव-व तौफीका (62) उलाइ-कल्लजी-न यअलमुल्लाहु

मा फी कुलूबिहिम्, फ-अअुरिज् अन्हुम् व अिज्हुम् व कुल्-लहुम् फी अन्फुसिहिम् कौलम्-बलीगा (63) व मा अरसल्ला मिरसूलिन् इल्ला लियुता-अ बि-इजिल्लाहि, व लौ अन्नहुम् इज्-ज-लम् अन्फु-सहुम् जाऊ-क फस्तर्फरुल्ला-ह वस्तर्फ-र लहुमुरसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्हीमा (64) फला व रब्बि-क ला युअमिन्-न हत्ता युहक्किम्-क

وَالْحَصْنَةَ
أَبَدًا لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا ظِلٌ كَثِيرٌ ۝
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ
بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي
شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ
قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا إِلَى الْغَايَةِ وَقَدْ أُمِرُوا
أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَاللَّهُ إِلَى الرَّسُولِ الْبَيِّنَاتُ
الْمُبِينَاتُ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ۝ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَهُمْ
مُصِيبَةٌ يَمَّا قَدِمَتْ آيَاتُهَا عَلَيْهِمْ ثُمَّ جَاءُواكَ بِمُلُفُونَ بِاللَّهِ
إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا
فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ
قَوْلًا بَلِيغًا ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ

مَنْزِل

उनमें पाक-साफ बीवियाँ होंगी और हम उनको बहुत ही घने साए में दाखिल करेंगे।¹ (57) बेशक तुमको अल्लाह तआला इस बात का हुक्म देते हैं कि हक वालों को उनके हुक्क पहुँचा दिया करो,² और यह कि जब लोगों का तसफिया किया करो तो अद्ल “यानी इन्साफ” से तसफिया किया करो, बेशक अल्लाह तआला जिस बात की तुमको नसीहत करते हैं वह बात बहुत अच्छी है,³ बेशक अल्लाह तआला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब देखते हैं। (58) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह तआला का कहना मानो और रसूल का कहना मानो और तुममें जो लोग हुक्मत वाले हैं उनका भी, फिर अगर किसी मामले में तुम आपस में इख़िलाफ करने लगे तो उस मामले को अल्लाह और उसके रसूल के हवाले कर दिया करो अगर तुम अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान रखते हो। ये उमूर सब बेहतर हैं और इनका अन्जाम अच्छा है। (59) ♦

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे उस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो आपकी तरफ नाज़िल की गई और उस किताब पर भी जो आपसे पहले नाज़िल की गई, अपने मुकद्दमे शैतान के पास ले जाना चाहते हैं हालाँकि उनको यह हुक्म हुआ है कि उसको न मानें, और शैतान उनको बहका कर बहुत दूर ले जाना चाहता है। (60) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस हुक्म की तरफ जो अल्लाह तआला ने नाज़िल फरमाया है और रसूल की तरफ तो आप मुनाफिकों की यह हालत देखेंगे कि आपसे किनारा करते हैं। (61) फिर कैसी जान को बनती है जब उनपर कोई मुसीबत पड़ती है उनकी उस हरकत की बदौलत जो कुछ वे पहले कर चुके थे, फिर आपके पास आते हैं खुदा की कस्में खाते हुए कि हमारा और कुछ मकसूद न था सिवाय इसके कि कोई भलाई निकल आए और आपस में मुवाफकत हो जाए। (62) ये वे लोग हैं कि अल्लाह तआला को मालूम है जो कुछ उनके दिलों में है, सो आप उनसे बेतवज्जोही कर जाया कीजिए और उनको नसीहत फरमाते रहिए और उनसे उनकी ख़ास ज़ात के मुताल्लिक़ काफी मज़मून कह दीजिए।⁴ (63) और हमने तमाम पैगम्बरों को ख़ास इसी वास्ते भेजा है कि अल्लाह तआला के हुक्म से उनकी इताअत की जाए, और अगर जिस वक़्त अपना नुक़सान कर बैठे थे उस वक़्त आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाते, फिर अल्लाह तआला से माफी चाहते और रसूल भी उनके लिए

1. यानी दुनिया का साया न होगा कि खुद साए के अन्दर भी धूप छनती है, वह बिलकुल मिला हुआ होगा।
2. यह हुक्मत वालों को ख़िताब है।
3. वह बात दुनिया के एतिबार से भी बहुत अच्छी है कि उसमें हुक्मत की बका है और आख़िरत के एतिबार से भी कि सवाब और अल्लाह की निकटता का सबब है।
4. इन आयतों में एक किस्से की तरफ़ इशारा है। एक मुनाफ़िक़ शख्स था, बिशर उसका नाम था। उसका किसी यहूदी से झगड़ा हुआ, यहूदी ने कहा: चल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास उनसे फैसला करा लें। मुनाफ़िक़ ने कहा कि काब बिन अशरफ़ के पास चल, यह यहूद का एक सरदार था। ज़ाहिर में यह मालूम होता है कि इस मामले में हक़ पर यहूदी होगा। उसने जाना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी की रियायत न फरमाएँगे वहाँ हक़ फैसला होगा, अगरचे मैं आपसे मज़हबी मुख़ालफ़त रखता हूँ। मुनाफ़िक़ क्योंकि बातिल पर था उसने समझा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहाँ तो मेरी बात चलेगी नहीं अगरचे मैं ज़ाहिर में मुसलमान हूँ मगर काब बिन अशरफ़ खुद कोई हक़-परस्त नहीं वहाँ मेरा मुकद्दमा सरसब्ज हो जाएगा। फिर आख़िर वे दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ही पास मुकद्दमा ले गए। आपने यहूदी को ग़ालिब किया, वह मुनाफ़िक़ राज़ी न हुआ। उस यहूदी से कहा कि चलो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास, ग़ालिबन् वह यह समझा होगा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कुफ़र पर सख़्त हैं, इस यहूदी पर सख़्ती फरमाएँगे। यहूदी को इत्मीनान था कि अगरचे सख़्त हैं मगर वह सख़्ती हक़-परस्ती ही की वजह से तो है। जब मैं हक़ पर हूँ तो मुझको ही ग़ालिब रखेंगे, इसलिए उसने इनकार नहीं किया। जब वहाँ पहुँचे तो यहूदी ने सारा किस्सा बयान कर दिया कि यह मुकद्दमा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहाँ से फैसले तक पहुँच चुका है, मगर यह शख्स (यानी मुनाफ़िक़) उसपर राज़ी नहीं हुआ। आपने उस मुनाफ़िक़ से पूछा: क्या यही बात है? उसने कहा हाँ! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: अच्छा ठहरो आता हूँ, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 160 पर)

फीमा श-ज-र बैनहुम् सुम्-म ला यजिदू फी अन्फुसिहिम् ह-रजम्-मिम्मा कजै-त व
 युसल्लिम् तस्लीमा (65) व लौ अन्ना कतब्ना अलैहिम् अनिकतुलू अन्फु-सकुम् अविख्रजू
 मिन् दियारिकुम् मा फ-अलूहु इल्ला कलीलुम्-मिन्हुम्, व लौ अन्नहुम् फ-अलू मा यू-अजू-न
 बिही लका-न खैरल्लहुम् व अशद्-द तस्बीता (66) व इजल्-लआतैनाहुम् मिल्लदुन्ना
 अजरन् अजीमा (67) व ल-हदैनाहुम्
 सिरातम् मुस्तकीमा (68) व
 मय्युतिअिल्ला-ह वरसू-ल फ-उलाइ-क
 मअल्लजी-न अन्अ-मल्लाहु अलैहिम्
 मिनन्-नबिय्यीन वस्सिद्दीकी-न
 वश्शु-हदा-इ वस्सालिही-न व हसु-न
 उलाइ-क रफीका (69) जालिकल्-
 फज्जु मिनल्लाहि, व कफा बिल्लाहि
 अलीमा (70) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनू खुजू
 हिजरकुम् फन्फिरु सुबातिन् अविन्फिरु
 जमीआ (71) व इन्-न मिन्कुम्
 ल-मल्लयुबतिअन्-न फ-इन् असाबकुम्
 मुसीबतुन् का-ल कद् अन्अ-मल्लाहु
 अलय्-य इज् लम् अकुम् म-अहुम्

शहीदा (72) व ल-इन् असाबकुम् फज्जुम् मिनल्लाहि ल-यकूलन्-न क-अल्लम् तकुम्
 बैनकुम् व बैनहू मवद्दतुंय-यालैतनी कुन्तु म-अहुम् फ-अफू-ज फौजन् अजीमा (73)
 फल्युकातिल् फी सबीलिल्लाहिल्लजी-न यश्रुनल्-हयातददुन्या बिल्आखि-रति, व मय्युकातिल्
 फी सबीलिल्लाहि फ-युक्तल् औ यगिल्ब फसौ-फ नुअ्तीहि अजरन् अजीमा (74) व मा

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ
 وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ فَلَا
 وَرَافَكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِي مَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ
 ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيَسْأَلُوكَ
 تَسْلِيمًا ۝ وَلَوْ أَنَّا أَكْتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوْ
 اخْرُجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ
 فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيلًا ۝
 وَلَئِذَا أَتَيْنَاهُم بِمَنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَلَهْدَيْنَاهُمْ صَرَافًا
 مُسْتَقِيمًا ۝ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ
 أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ
 وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۝ ذَلِكَ الْفَضْلُ مِنَ
 اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ عَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ
 فَاتَّقُوا ثَنَابِي أَوْ اتَّقُوا جَمِيعًا ۝ وَإِنْ مِنْكُمْ لَمَنْ لَيُّظَاهِنُ
 فَإِنْ أَصَابَكُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ
 أَكُنْ مَعَهُمْ شُهَدَاءَ ۝ وَلَكِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ
 لَيَقُولُنَّ كَانَ لَمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ لِيُكَلِّمُنِي كُنْتُ

مَثَلٌ

अल्लाह तआला से माफी चाहते तो ज़रूर अल्लाह तआला को तौबा का कबूल करने वाला और रहमत करने वाला पाते। (64) फिर कसम है आपके रब की ये लोग ईमानदार न होंगे जब तक यह बात न हो कि उनके आपस में जो झगड़ा उत्पन्न हो उसमें ये लोग आपसे तसफिया कराएँ,¹ फिर आपके उस तसफिए से अपने दिलों में तंगी न पाएँ और पूरे तौर पर मान लें।² (65) और हम अगर लोगों पर यह बात फर्ज़ कर देते कि तुम खुदकुशी किया करो या अपने वतन से बे-वतन हो जाया करो तो सिवाय थोड़े से लोगों के इस हुक्म को कोई भी न बजा लाता,³ और अगर ये लोग जो कुछ उनको नसीहत की जाती है उसपर अमल किया करते तो उनके लिए बेहतर होता और ईमान को ज़्यादा पुख्ता करने वाला होता। (66) और इस हालत में हम उनको ख़ास अपने पास से बड़ा अज़्र अज़ा फ़रमाते। (67) और हम उनको सीधा रास्ता बतला देते।⁴ (68) और जो शख्स अल्लाह और रसूल का कहना मान लेगा तो ऐसे लोग भी उन हज़रात के साथ होंगे जिनपर अल्लाह तआला ने इनाम फ़रमाया, यानी अम्बिया और सिद्दीकीन और शहीद लोग और नेक लोग, और ये हज़रात बहुत अच्छे साथी हैं। (69) यह फ़ज़ल है अल्लाह तआला की जानिब से, और अल्लाह तआला काफी जानने वाले हैं।⁵ (70) ♦

ऐ ईमान वालो! अपनी तो एहतियात रखो,⁶ फिर अलग-अलग तौर पर या इकट्ठे तौर पर निकलो। (71) और तुम्हारे मजमे में बाज़ा-बाज़ा शख्स ऐसा है जो हटता है, फिर अगर तुमको कोई हादसा पहुँच गया तो कहता है: बेशक अल्लाह तआला ने मुझपर बड़ा फ़ज़ल किया कि मैं उन लोगों के साथ हाज़िर नहीं हुआ। (72) और अगर तुमपर अल्लाह तआला का फ़ज़ल हो जाता है तो ऐसे तौर पर कि गोया तुममें और उसमें कुछ ताल्लुक ही नहीं, कहता है: हाय क्या ख़ूब होता कि मैं भी उन लोगों के साथ होता⁷ तो मुझको भी बड़ी कामयाबी होती। (73) तो हाँ उस शख्स को चाहिए कि अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़े जो आख़िरत (की ज़िन्दगी) के बदले दुनियावी ज़िन्दगी इस्तिथार किए हुए हैं,⁸ और जो शख्स अल्लाह की राह में लड़ेगा फिर चाहे जान से मारा जाए या ग़ालिब आ जाए तो हम उसको बड़ा अज़्र देंगे। (74) और तुम्हारे पास क्या उज़्र है कि तुम अल्लाह की राह में जिहाद न करो और कमज़ोरों की खातिर से जिनमें कुछ मर्द हैं और कुछ औरतें हैं और कुछ बच्चे हैं जो दुआ कर रहे हैं कि

(पृष्ठ 158 का शेष) और घर से एक तलवार लेकर आए और मुनाफ़िक का काम तमाम किया, और कहा कि जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैसले पर राज़ी न हो उसका यही फैसला है। और बहुत-से मुफ़सिरीन ने यह भी लिखा है कि फिर उस मुनाफ़िक मक्तूल के वारिसों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर दावा किया और उस मुनाफ़िक के कौली व फेली कुफ़ की तावील की, अल्लाह तआला ने इन आयतों में असल हकीकत ज़ाहिर फ़रमा दी।

1. और आप न हों तो आपकी शरीअत से।
2. फैसल बनाने और दिल में तंगी न होने और मानने के तीन दर्जे हैं। एतिकाद से, ज़बान से और अमल से। एतिकाद से यह कि शरीअत के क़ानून को हक़ और फैसले की बुनियाद जानता है और उसमें अक्ल के दर्जे में तंगी नहीं, और इसी दर्जे में उसको तस्लीम करता है। और ज़बान से यह कि इन उमूर का इक़रार करता है कि हक़ इसी तरह है, और अमल से यह कि मुक़दमा ले भी जाता है और तबई तंगी भी नहीं और उस फैसले के मुवाफ़िक़ कार्रवाई भी कर ली। सो पहला दर्जा तर्दीक़ व ईमान का है, उसका न होना अल्लाह के नज़दीक़ कुफ़्र है, और मुनाफ़िकों में खुद इसी की कमी थी, चुनाँचे तंगी के साथ लफ़ज़ इन्कार इसी की वज़ाहत के लिए ज़ाहिर कर दिया है। और दूसरा दर्जा इक़रार का है, इसका न होना लोगों के नज़दीक़ कुफ़्र है। तीसरा दर्जा तक्वे व नेकी का है, इसका न होना फ़िस्क़ है, और तबई तंगी माफ़ है। पस आयत में मुनाफ़िकों के ज़िक़्र से मुताल्लिक़ होने की वजह से पहला दर्जा मुराद है।

3. उन बहुत थोड़े और गिने-चुने लोगों में तमाम सहाबा व क़ामिल मोमिनीन दाख़िल हैं।

4. ऊपर अल्लाह व रसूल की इताअत पर ख़ास मुखातब हज़रात से वायदा था, आगे बतौर कायदा कुल्लिया के अल्लाह व रसूल की इताअत और फ़रमाँबरदारी पर आम वायदा है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 162 पर)

लकुम् ला तुकातिलू-न फी सबीलिल्लाहि वल्-मुस्तज़अफी-न मिनर्रिजालि वन्निहा-इ वल्-विल्दानिल्लज्जी-न यकूलू-न रब्बना अखिरज्ना मिन् हाजिहिल् करयतिज्जालिमि अह्लुहा वज्अल्लना मिल्लदुन्-क वलिय्यव्-वज्अल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा (75) अल्लज्जी-न आमनू युकातिलू-न फी सबीलिल्लाहि वल्लज्जी-न क-फरू युकातिलू-न फी सबीलित्तागूति फकातिलू औलिया-अशशैतानि इन्-न कैदशैतानि का-न ज़अीफा (76) ❖

अलम् त-र इलल्लज्जी-न की-ल लहुम् कुफ़फू ऐदी-यकुम् व अकीमुस्-सला-त व आतुज्जका-त फ-लम्मा कुति-ब अलैहिमुल्-कितालु इज़ा फरीकुम् मिन्हुम् यख़शौनन्ना-स क-ख़श्यतिल्लाहि औ अशद्-द ख़श्य-तन् व कालू रब्बना लि-म कतब्-त अलैनल्-किता-ल लौ ला अख़ख़ारतना इला अ-जलिन् करीबिन्, कुल् मताअुद्दुन्या कलीलुन् वल्-आखि-रतु ख़ैरुल्-लि-मनित्तका, व ला तुज्जलमू-न फतीला (77) ऐ-न मा तकूनू युद्रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम् फी

बुरुजिम् मुशय्य-दतिन्, व इन् तुसिब्हुम् ह-स-नतुय्यकूलू हाजिही मिन् अिन्दिल्लाहि व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुय्यकूलू हाजिही मिन् अिन्दि-क, कुल् कुल्लुम् मिन् अिन्दिल्लाहि, फमालि हा-उला-इल्कौमि ला यकादू-न यफ़कहू-न हदीसा (78) मा असाब-क मिन् ह-स-नतिन् फमिनल्लाहि व मा असाब-क मिन् सय्यि-अतिन् फ-मिन्नफ़िस-क, व अरसल्ला-क लिन्नासि

وَالْحَصْنَةِ ٨٢ النَّبَا
مَعَهُمْ فَأَوْزَعُوا عَظِيمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُكْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمُ اهْلُهَا وَاجْعَل لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَاجْعَل لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۚ الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الظَّالِمِينَ ۚ فَفَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝ أَلَمْ تَر إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كُتِبَ عَلَيْنَا الْقِتَالُ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاءُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۖ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى ۚ وَلَا تَظْلِمُونَ فَبَيَّلَا ۚ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ إِذْ رُكِبَ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُشِيدَةٍ ۚ وَإِنْ تُصْبِحُوا حَسَنَةً يَقُولُوهَا هَٰذِهِ مِنْ

ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इस बस्ती से बाहर निकाल जिसके रहने वाले सख्त जालिम हैं, और हमारे लिए ग़ैब से किसी दोस्त को खड़ा कीजिए, और हमारे लिए ग़ैब से किसी हिमायती को भेजिए।¹ (75) जो लोग पक्के ईमानदार हैं वे तो अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, और जो लोग काफ़िर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं, तो तुम शैतान के साथियों से जिहाद करो, हकीकत में शैतानी तदबीर लचर होती है।² (76) ♦

क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा कि उनको यह कहा गया था कि अपने हाथों को थामे रहो और नमाज़ों की पाबन्दी रखो और ज़कात देते रहो, फिर जब उनपर जिहाद करना फ़र्ज़ कर दिया गया तो किस्सा क्या हुआ कि उनमें से बाज़-बाज़ आदमी लोगों से ऐसा डरने लगे जैसा कोई अल्लाह तआला से डरता हो बल्कि उससे भी ज़्यादा डरना, और (यूँ) कहने लगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! आपने हमपर जिहाद क्यों फ़र्ज़ फ़रमा दिया, हमको और थोड़ी मोहलत की मुदत दे दी होती,³ आप फ़रमा दीजिए कि दुनिया का फ़ायदा महज़ चन्द दिन का है और आख़िरत हर तरह से बेहतर है उस शख्स के लिए जो अल्लाह तआला की मुख़ालफ़त से बचे, और तुमपर धागे के बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा। (77) तुम चाहे कहीं भी हो उसी जगह तुमको मौत आ दबाएगी अगरचे तुम कलई-चूने के किलों में ही हो,⁴ और अगर उनको कोई अच्छी हालत पेश आती है⁵ तो कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से (इत्तिफ़ाक़न) हो गई, और अगर उनको कोई बुरी हालत पेश आती है तो कहते हैं कि यह आपके सबब से है। आप फ़रमा दीजिए कि सब कुछ अल्लाह ही की तरफ़ से है। तो उन लोगों को क्या हुआ कि बात समझने के पास को भी नहीं निकलते। (78) ऐ इनसान! तुझको जो कोई खुशहाली पेश आती है वह महज़ अल्लाह की तरफ़ से है, और जो कोई बदहाली पेश आए वह तेरे ही सबब से है। और हमने आपको तमाम लोगों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा है, और अल्लाह तआला गवाह काफी हैं।⁶ (79) जिस शख्स ने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह तआला की इताअत

(पृष्ठ 160 का शेष)

5. अब जिहाद के अहक़ाम का ज़िक्र शुरू होता है। यहाँ से छह रुकू तक इसी मज़मून के मुताल्लिक अहक़ाम और तफ़सील बयान होती चली गई है।

6. यानी उनके दाव-घात से भी होशियार रहो और लड़ाई के वक़्त सामान, हथियार, ढाल, तलवार से भी दुरुस्त रहो।

7. यानी जिहाद में जाता।

8. यानी उस शख्स को अगर बड़ी कामयाबी का शौक है तो दिल दुरुस्त करे, हाथ-पाँव हिलाए, मशक्कत झेले, तीर व तलवार के सामने सीना तान कर खड़ा हो। देखो बड़ी कामयाबी हाथ आती है कि नहीं।

1. मक्का में ऐसे कमज़ोर मुसलमान रह गए थे कि अपनी जिस्मानी कमज़ोरी और कम-सामानी की वजह से हिज़रत न कर सके, फिर काफ़िरों ने भी न जाने दिया और तरह-तरह से उनको सताते थे। चुनाँचे हदीसों व तफ़सीरों में बाज़ों के नाम भी आये हैं। आख़िर हक़ तआला ने उनकी दुआ कबूल फ़रमाई और बाज़ों की रिहाई का तो पहले ही सामान हो गया और फिर मक्का मुकर्रमा फ़तह हो गया, जिससे सबको अमन व सम्मान हासिल हो गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनपर हज़रत इताब बिन उसैद को आ़मिल व हाकिम मुकर्रर फ़रमाया। पस दोस्त व हिमायती का मिस्दाक़ चाहे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहा जाए और यही अच्छा मालूम होता है, और या हज़रत इताब रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा जाए कि उन्होंने अपने हुक्मत के ज़माने में सबको ख़ूब आराम पहुँचाया।

2. ऊपर जिहाद का वाज़िब होना और उसके फ़ज़ाइल बयान करके उसकी तरगीब थी, आगे दूसरे अन्दाज़ से उसकी तरगीब है। यानी जिहाद में बाज़ मुसलमानों के तैयार न होने पर उनकी एक लुफ़ भरी शिकायत भी है, जिसकी बिना यह हुई कि मक्का में कुप्फ़ार बहुत सताते थे, उस वक़्त बाज़ सहाबा ने जिहाद की इजाज़त इसरार से चाही, मगर उस वक़्त माफ़ करने और दरगुज़र करने का हुक्म था, हिज़रत के बाद जब जिहाद का हुक्म नाज़िल हुआ तो तबई तौर पर बाज़ को दुश्वार हुआ, इसपर यह शिकायत फ़रमाई गई। और चूँकि यह बतौर इनकार या हुक्म पर एतिराज़ करने के न था बल्कि कुछ वक़्त तक और इस हुक्म के न आने की महज़ तमन्ना थी इसलिए डॉट-डपट नहीं है महज़ लुफ़-भरी शिकायत है।

3. उन हज़रात का यह तमन्नाई कौल अगर ज़बान से था तब तो उसके नाफ़रमानी न होने की वजह मालूम (शेष तफ़सीर पृष्ठ 164 पर)

रसूलन्, व कफा बिल्लाहि शहीदा (79) मय्युतिअिर-रसू-ल फ-कद् अताअल्ला-ह व मन्
तवल्ला फमा अरसल्ना-क अलैहिम् हफीजा (80) व यकूलू-न ताअतुन् फ-इजा ब-रजू मिन्
अिन्दि-क बय्य-त ता-इ-फतुम् मिन्हुम् गैरल्लजी तकूलू, वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न
फ-अअरिज़् अन्हुम् व तवक्कल्

अलल्लाहि व कफा बिल्लाहि वकीला
(81) अ-फ ला य-तदब्बरुनल्-
कुरआ-न, व लौ का-न मिन् अिन्दि
गैरिल्लाहि ल-व-जदू फीहिखितलाफन्
कसीरा (82) व इजा जा-अहुम् अम्रुम्
मिनल्-अमिन् अविल्लखौफि अजाअू बिही,
व लौ रद्दूहु इलरसूलि व इला उलिल्-
अमिर मिन्हुम् ल-अलि-महुल्लजी-न
यस्तम्बितूनहू मिन्हुम्, व लौ ला
फज़ुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू
लत्त-बअ्तुमुशशैता-न इल्ला कलीला
(83) फकातिल् फी सबीलिल्लाहि ला
तुकल्लफु इल्ला नफ़स-क व हरिज़िल्-
मुअ्मिनी-न असल्लाहु अय्यकुफ़-फ

बअ्सल्लजी-न क-फरू, वल्लाहु अशद्दु बअ्सव्-व अशद्दु तन्कीला (84) मय्यश्फअ
शफा-अतन् ह-स-नतय्यकुल्लहू नसीबुम् मिन्हा व मय्यश्फअ शफा-अतन् सय्यि-अतय्यकुल्लहू
किफ़लुम् मिन्हा, व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइम्-मुकीता (85) व इजा हुय्यीतुम्
बि-तहिय्यतिन् फहय्यू बि-अह्स-न मिन्हा औ रुद्दूहा, इन्नल्ला-ह का-न अला कुल्लि शैइन्

عِنْدَ اللَّهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ
يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۖ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا
أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ وَأَرْسَلْنَا لِلنَّاسِ رَسُولًا
وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۖ مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ
وَمَنْ تَوَلَّى فَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ
فَإِذَا بَرَأُوا مِنْ عِنْدِ بَيْتِ طَارِقَةٍ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي
تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّنُونَ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۖ أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْغُرَانِ وَلَوْ كَانَ
مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۖ وَإِذَا جَاءَهُمْ
أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوْ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ
وَأَلَى أُولَى الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ
وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَفُتِنْتُمْ الشَّيْطَانِ إِلَّا
قَلِيلًا ۖ فَتَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تَكُنْ مِنَ الْإِنْفَاقِ وَحَرِّضَ
الْمُؤْمِنِينَ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ
أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا ۖ مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ

مِثْلُ

की,¹ और जो शख्स मुँह फेरे “यानी अल्लाह और उसके रसूल की फरमाँबरदारी से अपना रुख फेर ले” सो हमने आपको उनका निगारों करके नहीं भेजा। (80) और (ये लोग) कहते हैं कि हमारा काम इताअत करना है, फिर जब आपके पास से बाहर जाते हैं तो रात के वक़्त मशिवरा करती है इन्हीं की एक जमाअत उसके खिलाफ जो कुछ कि (ज़बान से) कह चुके थे, और अल्लाह तआला लिखते जाते हैं जो कुछ वे रातों को मशिवरा किया करते हैं, सो आप उनकी तरफ़ ध्यान न कीजिए और अल्लाह के हवाले कीजिए और अल्लाह तआला काफी कारसाज़ हैं।² (81) क्या फिर कुरआन में ग़ौर नहीं करते,³ और अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें कसूरत से फर्क और इख़िलाफ़ पाते।⁴ (82) और जब उन लोगों को किसी अमूर “यानी मामले और बात” की ख़बर पहुँचती है चाहे अमन हो या ख़ौफ़ तो उसको मशहूर कर देते हैं। और अगर ये लोग उसको रसूल के और जो उनमें ऐसे मामलात को समझते हैं उनके ऊपर हवाले रखते तो उसको वे हज़रात तो पहचान ही लेते जो उनमें उसकी तहकीक़ कर लिया करते हैं। और अगर तुम लोगों पर खुदा तआला का फ़ज़ल और रहमत न होती तो तुम सबके-सब शैतान के पैरवी करने वाले हो जाते सिवाय थोड़े-से आदमियों के। (83) पस आप अल्लाह की राह में क़िताल कीजिए, आपको सिवाय आपके ज़ाती फ़ेल के कोई हुक़म नहीं, और मुसलमानों को तरगीब दीजिए, अल्लाह तआला से उम्मीद है कि काफ़िरों के जंग के ज़ोर को रोक देंगे। और अल्लाह तआला जंग के ज़ोर में ज़्यादा शदीद हैं और सख़्त सज़ा देते हैं।⁵ (84) जो शख्स अच्छी सिफ़ारिश करे⁶ उसको उसकी वजह से हिस्सा मिलेगा, और जो शख्स बुरी सिफ़ारिश करे⁷ उसको उसकी वजह से हिस्सा मिलेगा, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुदरत रखने वाले हैं। (85) और जब तुमको कोई (शरीअत के मुताबिक़) सलाम करे तो तुम उस (सलाम) से अच्छे अल्फ़ाज़ में

(पृष्ठ 162 का शेष)

हो गई। और अगर दिल में बतौर वस्वसे और ख़्याल के था तो वस्वसे और ख़्याल का नाफ़रमानी न होना कुरआन करीम व हदीस में आया है, इसलिए कोई इश्काल ही नहीं।

4. ऊपर जिहाद की तरगीब में यह ज़िक्र हुआ है कि वक़्त पर मौत नहीं टलती, चाहे जिहाद में जाओ या न जाओ। चूँकि बाज़ मुनाफ़िक़ जिहाद में जाने को मौत में मुअस्सिर (यानी असर करने वाला और सबब) और न जाने को ज़िन्दगी में मुअस्सिर समझते और कहते थे, पस जब कभी जिहाद में क़त्ल व मौत वाक़अ होती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इल्ज़ाम लगाते कि आप ही के कहने से जिहाद में गए और मौत का शिकार हुए, देखो जिहाद का मौत में असर रखना साबित हो गया। और अगर कभी बावजूद ज़ाहिरी असबाब की कमी के कुफ़्फ़ार पर फ़तह होती और उससे दलील पकड़ी जाती कि देखो अगर जिहाद मौत में असर रखता है तो अब वह असर कहाँ गया, तो कहते कि यह सिर्फ़ इत्तिफ़ाकी बात अल्लाह की तरफ़ से है। गरज़ काम बिगड़ता तो हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर इल्ज़ाम, और संवरता तो इत्तिफ़ाकी बात, आगे इसकी तरफ़ इशारा है।

5. जैसे फ़तह व कामयाबी।

6. तमाम लोगों में ज़िन्न और इनसान दोनों आ गए। पस इसमें बयान है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबके लिए नबी की हैसियत से तशरीफ़ लाने का, जो कुरआन व हदीस में और जगह भी मज़कूर व मन्सूस और कतई अक्वीदा है।

1. और जिसने आपकी नाफ़रमानी की उसने खुदा तआला की नाफ़रमानी की।

2. चुनाँचे कभी उनकी शरारत से कोई नुक़सान नहीं पहुँचा।

3. ताकि इसका अल्लाह का कलाम होना वाज़ेह हो जाए।

4. पस यकीनन यह ग़ैरुल्लाह का कलाम नहीं बल्कि अल्लाह तआला का कलाम है। हासिले कलाम यह है कि कलामुल्लाह के मोज़िज़ा होने के दलाइल में से इसके अन्दाज़े बयान का उम्दा और मौके के मुताबिक़ होने के एतबार से बेमिसल होना और इसमें दी गई ख़बरों का जिनपर इत्तिफ़ा पाने का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई ज़रिया न था, बिलकुल सही व हकीक़त के मुताबिक़ होना है। पस मालूम हुआ कि यह कलाम ख़ालिफ़ तआला का है।

5. इस भविष्यवाणी का सामने आना ज़ाहिर है। अगर ख़ास कुरैश के कुफ़्फ़ार मुराद हों जब भी और अगर सारी दुनिया के कुफ़्फ़ार मुराद हों जब भी, क्योंकि कुछ ही समय में तमाम हुकूमते मुसलमानों ने फ़तह कर लीं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 166 पर)

हसीबा ● (86) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, ल-यज्मअन्नकुम् इला यौमिल्-कियामति ला रै-ब फीहि, व मन् अस्दकु मिनल्लाहि हदीसा (87) ❖

फमा लकुम् फिल्मुनाफिकी-न फि-अतैनि वल्लाहु अर्क-सहुम् बिमा क-सबू, अतुरीदू-न अन् तद्दू मन् अजल्लल्लाहु, व मय्युजलिलिल्लाहु फ-लन् तजि-द लहू सबीला (88) वद्दू

लौ तक्फुरू-न कमा क-फरु फ-तकूनू-न सवा-अन् फला तत्तछिज़ू मिन्हुम् औलिया-अ हत्ता युहाजिरु फी सबीलिल्लाहि, फ-इन् तवल्लौ फखुजूहुम् वक्तुलूहुम् हैसु वजत्तुमूहुम् व ला तत्तछिज़ू मिन्हुम् वलिय्यव्-व ला नसीरा (89) इल्लल्लज़ी-न यसिलू-न इला कौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाकुन् औ जाऊकुम् हसिरत् सुदूरुहुम् अय्युकातिलूकुम् औ युकातिलू कौमहुम्, व लौ शा-अल्लाहु ल-सल्ल-तहुम् अलैकुम् फ-लकातलूकुम् फ-इनिअ-त-जलूकुम् फ-लम् युकातिलूकुम् व अल्कौ इलैकुमुस्स-ल-म फमा ज-अलल्लाहु लकुम् अलैहिम् सबीला

(90) स-तजिदू-न आ-खरी-न युरीदू-न अय्यअमनूकुम् व यअमनू कौमहुम्, कुल्लमा रुद्दू इलल्-फित्नति उर्किसू फीहा फ-इल्लम् यअ-तजिलूकुम् व युल्कू इलैकुमुस्स-ल-म व यकुप्फू ऐदि-यहुम् फखुजूहुम् वक्तुलूहुम् हैसु सकिफ्तुमूहुम्, व उला-इकुम् जअल्ला लकुम् अलैहिम् सुल्लानम् मुबीना (91) ❖

الْبَصِيَّةُ ٨٢
لَهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَّكَ لُفْلٌ
مِّنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْبِلًا وَإِذَا حُيِّنْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا
بِأَحْسَنِ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا
اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُ أَرْبَابِكُمْ
وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ
فِتْنَةٍ وَاللَّهُ أَرَاهُمْ هَاهُنَا كَسَبُوا التَّوْبَةَ أَنْ يَهْدُوا مَنْ
أَضَلَّ اللَّهُ وَمَنْ يَضِلَّ اللَّهُ فَلَنْ يَهْدِيَهُ سَبِيلًا وَذُؤَا
لُوكُفَرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ
أَوْلِيَاءَ حَتَّى يُهَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ وَغَدُوا
وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَاوِلِيَاءَ
لَا نَصِيرًا إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَى قَوْمِ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ أَوْ جَاءَكُمْ حَصْرَتٌ صُدُّوا عَنْهُمْ أَنْ يَقَاتِلُوا أَوْ يَفِئُوا
قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتِلُوكُمْ فَإِنْ
اعْتَرَضَكُمْ فَانْهَئُوا عَنْهَا وَأَقْبِلُوا إِلَيْكُمْ السَّلَامُ فَمَا جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا سَيَّيِدُونَ آخِرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ
يَأْمَنُواكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلًّا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكَسُوا فِيهَا

مِثْلُ

सलाम करो या वैसे ही अल्फाज़ कह दो, बिला शुब्हा अल्लाह तआला हर चीज़ पर हिसाब लेंगे।¹ ● (86) अल्लाह ऐसे हैं कि उनके सिवा कोई माबूद होने के काबिल नहीं, वह ज़रूर तुम सबको जमा करेंगे कियामत के दिन में इसमें कोई शुब्हा नहीं, और खुदा तआला से ज्यादा किसकी बात सच्ची होगी।² (87) ♦

फिर तुमको क्या हुआ कि इन मुनाफिकों के बारे में तुम दो गिरोह हो गए हालाँकि अल्लाह तआला ने उनको उल्टा फेर दिया उनके (बुरे) अमल के सबब,³ क्या तुम लोग इसका इरादा रखते हो कि ऐसे लोगों को हिदायत करो जिनको अल्लाह तआला ने गुमराही में डाल रखा है,⁴ और जिसको अल्लाह तआला गुमराही में डाल दें उसके लिए कोई सबील न पाओगे।⁵ (88) वे इस तमन्ना में हैं कि जैसे वे काफिर हैं तुम भी काफिर बन जाओ, जिसमें तुम और वे सब एक तरह के हो जाओ, सो उनमें से किसी को दोस्त मत बनाना जब तक कि वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें,⁶ और अगर वे मुँह फेरें तो उनको पकड़ो और कत्ल करो जिस जगह उनको पाओ, और न उनमें से किसी को दोस्त बनाओ और न मददगार बनाओ।⁷ (89) मगर जो लोग ऐसे हैं जो कि ऐसे लोगों से जा मिलते हैं⁸ कि तुम्हारे और उनके दरमियान अहद है या खुद तुम्हारे पास इस हालत से आएँ कि उनका दिल तुम्हारे साथ और तथा अपनी कौम के साथ लड़ने से मुन्कबिज़ “यानी नाखुश और खिंचा हुआ” हो,⁹ और अगर अल्लाह तआला चाहता तो उनको तुमपर मुसल्लत कर देता फिर वे तुमसे लड़ने लगते, फिर अगर वे तुमसे अलग रहें यानी तुमसे न लड़ें और तुमसे सलामत-रवी रखें¹⁰ तो अल्लाह तआला ने तुमको उनपर कोई राह नहीं दी।¹¹ (90) बाज़े ऐसे भी तुमको ज़रूर मिलेंगे कि वे यह चाहते हैं कि तुमसे भी बेखौफ़ होकर रहें और अपनी कौम से भी बेखौफ़ होकर रहें। जब कभी उनको शरारत की तरफ़ मुतवज्जह किया जाता है तो वे उसमें जा गिरते हैं, सो ये लोग अगर तुमसे किनारा करने वाले न हों और न तुमसे सलामत-रवी रखें और न अपने हाथों को रोकें तो तुम उनको पकड़ो और कत्ल करो जहाँ कहीं उनको पाओ। और हमने तुमको उनपर साफ़ हुज्जत दी है। (91) ♦

(पृष्ठ 164 का शेष) 6. यानी जिसका तरीका व मकसद दोनों शरीअत के मुताबिक हों।

7. यानी जिसका तरीका या गरज़ शरीअत के मुताबिक न हो।

1. अमर (हुक्म देने) के सींगे से और “हसीब” से इस हुक्म का ज़ाहिर में वाजिब होना मालूम होता है और फुकहा का यही मज़हब है। यह सलाम के जवाब का वाजिब होना किफ़ाय़ा के तौर पर है। यानी अगर जमाअत में से एक ने भी जवाब दे दिया तो सबके ज़िम्मे से उतर जाएगा। असल जवाब वाजिब है, बाकी वैसे ही अल्फाज़ या उनसे अच्छे या बाज़ सूरतों में उनसे कम, यह सब इख़्तियार में है।

2. यह तरकीब जैसे ज्यादा सच्चा होने की इनकारी है ऐसे ही मुहावरे के एतिबार से सच्चा होने में बराबर होने की भी इनकारी है। (यानी अल्लाह तआला से न कोई ज्यादा सच्चा हो सकता है और न उनके बराबर सच्चा हो सकता है)।

3. वह बुरा अमल इस्लाम से फिर कर दारुल-इस्लाम को बावजूद क़ुदरत के छोड़ देना है, जो कि एक तरह से इस्लाम के इकरार को छोड़ने की वजह से कुफ़ की निशानी थी। और हकीकत में तो वे पहले भी मुसलमान न हुए थे और इसी वजह से उनको मुनाफ़िक कहा।

4. मतलब यह है कि गुमराह को जो मोमिन कहते हो, हालाँकि मोमिन वह है जिसमें ईमान हो, और उनमें इस वक़्त तक ईमान नहीं है तो क्या अब ईमान पैदा करोगे जो उनको मोमिन कह सको, और यह मुहाल है। पस उनका मोमिन व हिदायत वाला होना मुहाल के साथ जुड़ा हुआ है इसलिए उनको मोमिन कहना मुहाल के हुक्म की तरह है।

5. पस उन लोगों को मोमिन न कहना चाहिए।

6. उस वक़्त हिजरत का वह हुक्म था जो अब शहादतैन (यानी अल्लाह के एक माबूद होने और हुज़ूरे पाक के रसूले बरहक होने) के इकरार का है।

7. मतलब यह है कि किसी हालत में उनसे कोई ताल्लुक न रखो, न अमन में दोस्ती न खौफ़ में मदद तलब करना, बल्कि बिलकुल अलग-थलग रहो। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 168 पर)

फ-मन्नल्लाहु अलैकुम् फ-तबय्यनू, इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअमलू-न खबीरा (94) ला यस्तविल् काअिदू-न मिनल् मुअ्मिनी-न गैरु उलिज्ज-ररि वल्मुजाहिदू-न फी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम्, फज्ज-लल्लाहुल्-मुजाहिदी-न बि-अम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् अलल्-काअिदी-न द-र-जतनू, व कुल्लंवू-व-अदल्लाहुल्-हुस्ना, व

٨٥

وَأَن تَمِيعَ زُلُومُهُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَامَ وَيَكْفُرُوا بِالْأَيْدِيهِمْ
فَخَذُواْهُمْ وَأَقْتَلَوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا لَكُمُ
عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۖ وَكَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا لَّا
خَطَا ۖ وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ
مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِن كَانَ مِنَ قَوْمٍ مِّنْ
كُفْرٍ وَهُوَ مٌؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَإِن كَانَ مِنَ قَوْمٍ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ
رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُّتتَابِعَيْنِ
تُوبَةً مِّنَ اللَّهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا
مُّتَعَدًّا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَ
لَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَن أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلَامَ
لَسَبْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمِنَ اللَّهِ مَغَازِمُ
كَثِيرَةٌ ۖ كَذَلِكَ كُنْتُم مِّن قَبْلُ فَمِنَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ فِتْنَةٌ وَأَمْرٌ
اللَّهُ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِّ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

और किसी मोमिन की शान नहीं कि वह किसी मोमिन को (पहल करते हुए) कत्ल करे लेकिन ग़लती से, और जो शख्स किसी मोमिन को ग़लती से कत्ल कर दे तो उसपर एक मुसलमान गुलाम या बाँदी का आज़ाद करना है, और ख़ूँ-बहा है जो उसके ख़ानदान वालों के हवाले कर दी जाए मगर यह कि वे लोग माफ़ कर दें।¹ और अगर वह ऐसी कौम से हो जो तुम्हारे मुख़ालिफ़ हैं और वह शख्स खुद मोमिन है तो एक मुसलमान गुलाम या बाँदी का आज़ाद करना, और अगर वह ऐसी कौम से हो कि तुममें और उनमें मुआहदा हो तो ख़ूँ-बहा है जो उसके ख़ानदान वालों के हवाले कर दी जाए और एक मुसलमान गुलाम या बाँदी का आज़ाद करना, फिर जिस शख्स को न मिले तो लगातार दो महीने के रोज़े हैं तौबा के तौर पर, जो अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर हुई है, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक़मत वाले हैं। (92) और जो शख्स किसी मुसलमान को जान-बूझकर कत्ल कर डाले तो उसकी सज़ा जहन्म है कि हमेशा-हमेशा को उसमें रहता² और उसपर अल्लाह तआला ग़ज़बनाक होंगे और उसको अपनी रहमत से दूर कर देंगे, और उसके लिए बड़ी सज़ा का सामान करेंगे।³ (93) ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में सफ़र किया करो तो (हर काम को) तहकीक़ (करके किया) करो, और ऐसे शख्स को जो कि तुम्हारे सामने इताअत ज़ाहिर करे⁴ दुनियावी ज़िन्दगी के सामान की ख़्वाहिश में यूँ मत कह दिया करो कि तू मुसलमान नहीं, क्योंकि खुदा के पास बहुत ग़नीमत के माल हैं। पहले तुम भी ऐसे ही थे फिर अल्लाह तआला ने तुमपर एहसान किया सो ग़ौर करो, बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे अमल की पूरी ख़बर रखते हैं।⁵ (94) बराबर नहीं वह मुसलमान जो बिना किसी उज़्र के घर में बैठे रहें⁶ और वे लोग जो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करें, अल्लाह तआला ने उन लोगों का दर्जा बहुत ज़्यादा बनाया है जो अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं घर में बैठने वालों के मुक़ाबले में, और अल्लाह तआला ने सबसे अच्छे घर का वायदा कर रखा है। और अल्लाह तआला

(पृष्ठ 166 का शेष)

8. यानी उनसे मुआहदा हो जाता है।

9. न तो अपनी कौम के साथ होकर तुमसे लड़ें और न तुम्हारे साथ होकर अपनी कौम से लड़ें, बल्कि उनसे भी सुलह रखें और तुमसे भी सुलह रखें।

10. इन सब अल्फ़ाज़ का मतलब यह है कि सुलह से रहें।

11. यानी इजाज़त नहीं दी।

1. इस आयत में 'ख़ता' यानी ग़लती से मुराद 'अन्जाने में' है।

2. लेकिन अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि यह असली सज़ा जारी न होगी बल्कि ईमान की बरक़त से आख़िरकार नज़ात हो जाएगी। तमाम अहले हक़ मुत्ताफ़िक़ हैं कि सिवाय कुफ़्र व शिर्क के कोई चीज़ जहन्म में हमेशा के लिए रहने का सबब नहीं है।

3. ऊपर मोमिन के कत्ल पर सख़्त वर्द फ़रमाई है, आगे फ़रमाते हैं कि शरीअत के अहक़ाम जारी होने में मोमिन के मोमिन होने के लिए सिर्फ़ ज़ाहिरी इस्लाम काफ़ी है। जो शख्स इस्लाम का इज़हार करे उसके कत्ल से हाथ खींच लेना वाजिब है। अन्दाज़ों और हालात की निशानियों से बातों की तफ़्तीश करना और इस्लामी अहक़ाम के जारी करने में उसके सुबूत का मुन्तज़िर रहना जायज़ नहीं।

4. जैसे कलिमा पढ़ना या मुसलमानों के तरीक़े पर सलाम करना।

5. यह हुक्म सफ़र के साथ ख़ास नहीं।

6. यानी जिहाद में न जाएँ।

फज्ज-लल्लाहुल् मुजाहिदी-न अलल्-काअिदी-न अजरन् अजीमा (95) द-रजातिम् मिन्हु व मग्फि-रतंव-व रस्म-तन्, व कानल्लाहु गफूररहीमा (96) ♦

इन्नल्लजी-न तवफ्फाहुमुल् मलाइ-कतु जालिमी अन्फुसिहिम् कालू फी-म कुन्तुम्, कालू कुन्ना मुस्तज्जअफी-न फिल्अर्जि, कालू अलम् तकुन् अरजुल्लाहि वासि-अतन् फतुहाजिरु फीहा, फ-उलाइ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु, व साअत् मसीरा (97) इल्लल्-मुस्तज्जअफी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्विल्दानि ला यस्ततीअू-न ही-लतंव-व ला यस्तदू-न सबीला (98) फ-उलाइ-क अ सल्लाहु अय्यअफु-व अन्हुम्, व कानल्लाहु अफुव्वन् गफूरा (99) व मय्युहाजिर् फी सबीलिल्लाहि यजिद् फिल्अर्जि मुरा-गमन् कसीरंव-व स-अतन्, व मय्यखरुज् मिम्-बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि व रसूलिही सुम्-म युद्रिकहुल्-मौतु फ-कद् व-क-अ अजरूह अलल्लाहि, व कानल्लाहु गफूररहीमा (100) ♦

بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً وَكَذَلِكَ وَعَدَ اللَّهُ الْحَسَنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ وَرَجَبَتْ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَوَكَّلُوا عَلَىَّ أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعِفِينَ فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضَ اللَّهِ وَسِعَةً ۖ فَهُمْ أَجْرُوا فِيهَا ۖ قُلْ لَّيْسَ بِأَمْوَالِهِمْ جَعَلْتُ مَصِيرًا ۖ إِلَّا الْمُسْتَضْعِفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۖ قَالُوا لَيْكَ عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَغْفُو عَنْهُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۚ وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَمِجْ فِي الْأَرْضِ مُرْعًا كَثِيرًا أَوْ سَعَةً ۖ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۚ وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ ۖ إِنَّ خِفَتُمْ أَنْ يُغْتَابَكُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا أَعْدَاؤُكُمْ يُؤْمِنُونَ ۚ وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقِمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ

مِثْلَ

ने मुजाहिदीन को घर में बैठने वालों के मुकाबले में बड़ा अज्रे अज़ीम दिया है। (95) यानी बहुत-से दर्जे जो अल्लाह तआला की तरफ से मिलेंगे और मग़िफ़रत और रहमत¹ और अल्लाह तआला बड़ी मग़िफ़रत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।² (96) ♦

बेशक जब ऐसे लोगों की जान फ़रिश्ते निकालते हैं जिन्होंने अपने आपको गुनाहगार कर रखा था तो वे फ़रिश्ते (उनसे) कहते हैं कि तुम किस काम में थे? वे कहते हैं कि हम सरज़मीन “यानी अपने मुल्क और ख़ित्ते” में महज़ मग़लूब थे। वे कहते हैं: क्या अल्लाह तआला की ज़मीन कुशादा और फैली हुई न थी, तुमको वतन छोड़ करके उसमें चला जाना चाहिए था, सो उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और जाने के लिए वह बुरी जगह है। (97) लेकिन जो मर्द और औरतें और बच्चे कादिर न हों कि न कोई तदबीर कर सकते हैं और न रास्ते से वाकिफ़ हैं। (98) सो उनके लिए उम्मीद है कि अल्लाह तआला माफ़ कर दें, और अल्लाह तआला बड़े माफ़ करने वाले, बड़े मग़िफ़रत करने वाले हैं।³ (99) और जो शख्स अल्लाह की राह में हिजरत करेगा⁴ तो उसको रू-ए-ज़मीन पर जाने की बहुत जगह मिलेगी और बहुत गुंजाइश, और जो शख्स अपने घर से इस नीयत से निकल खड़ा हो कि अल्लाह और रसूल की तरफ़ हिजरत करूँगा फिर उसको मौत आ पकड़े तब भी उसका सवाब साबित हो गया अल्लाह तआला के ज़िम्मे, और अल्लाह तआला बड़े मग़िफ़रत करने वाले हैं बड़ी रहमत वाले हैं। (100) ♦

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो⁵ सो तुमको इसमें कोई गुनाह न होगा (बल्कि ज़रूरी है) कि तुम नमाज़ को कम कर दो,⁶ अगर तुमको यह अन्देशा हो कि तुमको काफ़िर लोग परेशान करेंगे, बिला शुब्हा काफ़िर लोग तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।⁷ (101) और जब आप उनमें तशरीफ़ रखते हों फिर आप उनको नमाज़ पढ़ाना चाहें तो यूँ चाहिए कि उनमें से एक ग़िरोह तो आपके साथ खड़े हो जाएँ और वे लोग हथियार ले लें, फिर जब ये लोग सज्दा कर चुकें तो ये लोग तुम्हारे पीछे हो जाएँ और दूसरा ग़िरोह जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी आ जाए और आपके साथ नमाज़ पढ़ लें, और ये लोग भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार ले लें। काफ़िर लोग (यूँ) चाहते हैं कि अगर तुम अपने हथियारों और सामानों से गाफ़िल हो जाओ तो तुमपर एक बार में हमला कर बैठें। और अगर तुमको

1. यानी उन अनेक आमाल की वजह से जो कि मुजाहिद से सादिर होते हैं, सवाब के बहुत-से दर्जे खुदा तआला की तरफ से मिलेंगे और गुनाहों की मग़िफ़रत और रहमत भी, यह सब अज्रे अज़ीम की तफ़सील हुई। वे अनेक आमाल सूर: बराअत के आख़िर में ज़िक्र हुए हैं।

2. ऊपर जिहाद के वाजिब होने का हुक्म था आगे हिजरत के वाजिब होने का ज़िक्र है।

3. ऊपर हिजरत के छोड़ने पर डाँट और धमकी थी आगे हिजरत की तरगीब और उसपर दोनों जहाँ की नेक-बख़्शी का वायदा है।

4. हिजरत शुरू इस्लाम में फ़र्ज़ थी और फ़र्ज़ियत के साथ वह ज़ाहिर में ज़रूरी शिआर और किसी के मुसलमान होने के लिए सुबूत थी, लेकिन उज़्र की हालत में उसकी फ़र्ज़ियत और शिआर व पहचान होना ख़त्म हो जाता था, और इस शिआर होने की वजह से उससे बिला उज़्र फिरना इस्लाम से फिर जाने की निशानी थी।

5. जिसकी मिकदार तीन मन्ज़िल हो (यानी 48 मील)।

6. यानी ज़ोहर व असर व इशा के फ़र्ज़ की रकअत चार की जगह दो पढ़ा करो।

7. जो सफ़र तीन मन्ज़िल से कम हो उसमें पूरी नमाज़ पढ़ी जाती है।

ताइ-फतुन् उख्रा लम् युसल्लू फल्युसल्लू म-अ-क वल्यअखुजू हिज्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम्
वद्दल्लजी-न क-फरु लौ तगफुलू-न अन् अस्लि-हतिकुम् व अम्ति-अतिकुम् फ-यमीलू-न
अलैकुम् मै-लतंव्याहि-दतन्, व ला जुना-ह अलैकुम् इन् का-न बिकुम् अजम्-मिम्-म-तरिन्
औ कुन्तुम् मरजा अन् त-जअू अस्लि-ह-तकुम् व खुजू हिज्रकुम्, इन्नल्ला-ह अ-अद्-द
लिल्काफिरी-न अजाबम् मुहीना (102)

फ-इजा कजैतुमुस्सला-त फज्कुरुल्ला-ह
कियामंव-व कुअदंव-व अला जुनूबिकुम्
फ-इज्त्मअनन्तुम् फ-अकीमुस्सला-त
इन्नस्सला-त कानत् अलल् मुअमिनी-न
किताबम् मौकूता (103) व ला तहिन्
फिब्लिगा-इल्-कौमि, इन् तकून्
तअलमू-न फ-इन्नुहुम् यअलमू-न कमा
तअलमू-न व तरजू-न मिनल्लाहि मा ला
यरजू-न, व कानल्लाहु अलीमन्
हकीमा (104) ♦

इन्ना अन्जल्ला इलैकल्-किता-ब
बिल्-हक्कि लि-तहकु-म बैनन्नासि बिमा
अराकल्लाहु, व ला तकुल् लिल्-
खाइनी-न खसीमा (105)

वस्तगिरिल्ला-ह, इन्नल्ला-ह का-न गफूररहीमा (106) व ला तुजादिल् अनिल्लजी-न
यख्तानू-न अन्फु-सहुम, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न खव्वानन् असीमा (107)
यस्तख्फू-न मिनन्नासि व ला यस्तख्फू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अहुम् इज् युबय्यितू-न मा
ला यरजा मिनल्कौलि, व कानल्लाहु बिमा यअमलू-न मुहीता (108) हा-अन्तुम् हा-उला-इ

النساء
وَالْأَخْذُ وَالسَّلَامَةُ ٨٤ وَالصَّبْرُ
مَعَكُمْ وَالْأَخْذُ وَالسَّلَامَةُ ٨٤ وَالصَّبْرُ
وَلَا تَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكُمْ وَلْيَأْخُذُوا
حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتْهُمْ وَأَذَى الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَعْفُونَ عَنْ
أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِينُونَ عَلَيْكُمْ قِيْلَةً وَاحِدَةً وَ
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذَى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرَضَى
أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا مُهِينًا ٨٥ وَإِذَا أَقَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ فِي مَا كُنْتُمْ
وَعَلَى جُنُوبِكُمْ ٨٥ وَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقْبُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ
كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَقْشُورًا ٨٦ وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ
إِنْ يَكُونُوا فِي الْمَقَامِ وَالْمَقَامُ بِالْمَقَامِ كَمَا كَانُوا وَمَنْ يَرْجُ مِنْ
اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ٨٧ وَكَانَ اللَّهُ عَالِمًا حَكِيمًا ٨٨ إِنْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَادَ اللَّهُ وَلَا تَكُنْ
لِلْكَافِرِينَ خَصِيمًا ٨٩ وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا
رَحِيمًا ٩٠ وَلَا تَجَادُلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَفُونَ أَنفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَكِيمًا ٩١ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَ
لَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّنُونَ مَا لَا يَرْضَى

مَنْ

बारिश की वजह से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो तुमको इसमें कुछ गुनाह नहीं कि हथियार उतार रखो और अपना बचाव ले लो, बिला शुब्हा अल्लाह ने काफिरों के लिए तौहीन भरी सज़ा तैयार कर रखी है।¹ (102) फिर जब तुम उस नमाज़ को अदा कर चुको तो अल्लाह तआला की याद में लग जाओ खड़े भी और लेटे भी और बैठे भी,² फिर जब तुम मुत्मइन हो जाओ तो नमाज़ को कायदे के मुवाफिक पढ़ने लगो। यकीनन नमाज़ मुसलमानों पर फर्ज़ है और वक़्त के साथ महदूद है। (103) हिम्मत मत हारो उस मुखालिफ़ कौम का पीछा करने में, अगर तुम तकलीफ़ में हो तो वे भी तो तकलीफ़ के मारे हैं जैसे तुम तकलीफ़ पाए हुए हो, और तुम अल्लाह तआला से ऐसी-ऐसी चीज़ों की उम्मीद रखते हो कि वे लोग उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक्मत वाले हैं। (104) ♦

बेशक हमने आपके पास यह नविश्ता “यानी तहरीर और किताब” भेजा है हकीकत के मुवाफिक़ ताकि आप इन लोगों के दरमियान उसके मुवाफिक़ फैसला करें जो कि अल्लाह तआला ने आपको बतला दिया है, और आप इन ख़ियानत करने वालों की तरफ़दारी (की बात) न कीजिए।³ (105) और आप इस्तिग़फ़ार फ़रमाइए, बिला शुब्हा अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़रत करने वाले, बड़े रहमत वाले हैं। (106) और आप उन लोगों की तरफ़ से कोई जवाबदेही की बात न कीजिए जो कि अपना ही नुक़सान कर रहे हैं, बिला शुब्हा अल्लाह तआला ऐसे शख्स को नहीं चाहते जो बड़ा ख़ियानत करने वाला, बड़ा गुनाह करने वाला हो। (107) जिन लोगों की यह कैफ़ियत है कि आदमियों से तो छुपाते हैं और अल्लाह तआला से नहीं शरमाते, हालाँकि वह उस वक़्त उनके पास होता है जबकि वे अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ़ गुफ़्तगू के मुताल्लिक़ तदबीरें करते हैं, और अल्लाह तआला उनके सब आमाल को अपने घेरे में लिए हुए हैं। (108) हाँ, तुम ऐसे हो कि तुमने दुनियावी ज़िन्दगी में तो उनकी तरफ़ से जवाबदेही की

1. सलातुल-ख़ौफ़ (यानी ख़ौफ़ की नमाज़) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद भी मुताफ़िका तौर पर शरीअत में जायज़ है। जैसे आदमी से ख़ौफ़ के वक़्त यह नमाज़ शरीअत में जायज़ रखी गई है ऐसे ही अगर किसी शेर या अज़्दे वगैरह का ख़ौफ़ हो और नमाज़ का वक़्त तंग हो तो उस वक़्त भी जायज़ है, ऐन किताल (यानी जंग और लड़ाई) के वक़्त नमाज़ को क़ज़ा कर दिया जाएगा।

2. यानी हर हालत में यहाँ तक कि ऐन लड़ाई और जंग के वक़्त भी दिल से भी और अहक़ाम के इत्तिबा से भी, कि वह भी ज़िक्र है। चुनौचे किताल (यानी जंग और लड़ाई) में शरीअत के खिलाफ़ कोई कार्यवाही करना नाजायज़ है। गरज़ नमाज़ तो ख़त्म हुई ज़िक्र ख़त्म नहीं होता, नमाज़ में तो कमी हो गई थी लेकिन यह अपनी जगह बरकरार है।

3. बनू अबीरक़ एक ख़ानदान था, उसमें एक शख्स बशीर नामी मुनाफ़िक़ था। उसने हज़रत रिफ़ाआ की बुख़ारी (यानी बावरची ख़ाने) में नक़ब देकर कुछ आटा और कुछ हथियार जो उसमें रखे थे चुरा लिए। सुबह को पास-पड़ोस में तलाश किया और बाज़ मज़बूत अन्दाज़ों से बशीर पर शुब्हा हुआ। बनू अबीरक़ ने जो कि बशीर के शरीके हाल थे अपने बचाव के लिए हज़रत लबीद का नाम ले दिया। गर्ज़ हज़रत रिफ़ाआ ने अपने भतीजे कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु को जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजकर इस वाक़िए की इत्तिला दी, आपने तहकीक़ का वायदा फ़रमाया। बनू अबीरक़ को जो यह ख़बर हुई तो एक शख्स असीर नाम का जो उसी ख़ानदान का था सब उसके पास आए और सब मशिवरा करके जमा होकर और साथ में कुछ मोहल्ले वालों को लेकर जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत रिफ़ाआ रज़ियल्लाहु अन्हु की शिकायत की, कि बिना गवाहों के एक मुसलमान और दीनदार घराने पर चोरी की तोहमत लगाते हैं। और मक़सद उनका यह था (शेष तफ़सीर पृष्ठ 174 पर)

जादल्लुम् अन्हुम् फिल्हयातिदुन्या, फ-मंय्युजादिलुल्ला-ह अन्हुम् यौमिल्-कियामति अम्-
मंय्यकूनु अलैहिम् वकीला (109) व मंय्यअमल् सूअन् औ यज़िल्म् नफ़सहू सुम्-म
यस्तग़िफ़रिल्ला-ह यजिदिल्ला-ह ग़फ़ूररहीमा (110) व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ-इन्नामा
यक्सिबुहू अला नफ़िसही, व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा (111) व मंय्यक्सिब् खती-अतन्
औ इस्मन् सुम्-म् यरूमि बिही बरीअन्
फ-कदिहत्त-म-ल बुह्तानव्-व इस्मम्-
मुबीना (112) ♦

व लौ ला फज़लुल्लाहि अलै-क व
रहमतुहू ल-हम्मत्ता-इ-फतुम् मिन्हुम्
अंय्युज़िल्लू-क, व मा युज़िल्लू-न इल्ला
अन्फु-सहुम् व मा यज़ुर्खन-क मिन्
शैइन्, व अन्ज़लल्लाहु अलैकल्-
किता-ब वलिहक्म-त व अल्ल-म-क मा
लम् तकुन् तअलमु, व का-न
फज़लुल्लाहि अलै-क अज़ीमा ▲ (113)
ला खौ-र फी कसीरिम् मिन्नज्वाहुम्
इल्ला मन् अ-म-र बि-स-द-कतिन्
औ मअ्रुफिन् औ इस्लाहिम् बैनन्नासि,
व मंय्यफ़अल् ज़ालिकबूतिगा-अ

मर्ज़ातिल्लाहि फसौ-फ नुअतीहि अजरन् अज़ीमा (114) व मंय्युशाकिकिरसू-ल मिम्-बअदि
मा तबय्य-न लहुल्लुदा व यत्तबिअ गै-र सबीलिल् मुअमिनी-न नुवल्लिही मा तवल्ला व
नुस्लिही जहन्न-म, व साअत् मसीरा (115) ♦

इन्नल्ला-ह ला यग़िफ़रु अंय्युशर-क बिही व यग़िफ़रु मा दू-न ज़ालि-क लि-मंय्यशा-उ, व

مِنْ الْقَوْلِ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ هَٰذَا جَدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلُ اللَّهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَمَنْ يَعْمَلْ
سُوءًا أَوْ يَطْغُرْ نَفْسَهُ لَنْ يَسْتَعْفِفَ اللَّهُ عَنْهُ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبْهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ لِبًّا ثُمَّ يَمُرْ بِهِ بِرَبِّهِ فَكَفَرُ
أَحْمَلُ مَحْتَاكًا وَإِنَّمَا مُمِيتًا ۝ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ
لَهَمَّتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ
وَمَا يَضُرُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ ۝ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝
لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِنْ حُبِّهِمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ
أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ
اللَّهِ فَسَوْفَ نؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ وَلَهُ
مَا أَكُولُ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ
أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۝ وَمَنْ يُشْرِكْ

बातें कर लीं, सो अल्लाह तआला के सामने कियामत के दिन उनकी तरफ से कौन जवाबदेही करेगा, या वह कौन शख्स होगा जो उनका काम बनाने वाला होगा। (109) जो शख्स कोई बुराई करे या अपनी जान को नुकसान पहुँचाए, फिर अल्लाह तआला से माफी चाहे तो वह अल्लाह तआला को बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला पाएगा। (110) और जो शख्स कुछ गुनाह का काम करता है तो वह फ़क़त अपनी ज़ात पर उसका असर पहुँचाता है और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले हैं, बड़े हिक़मत वाले हैं। (111) और जो शख्स कोई छोटा गुनाह करे या बड़ा गुनाह, फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने बड़ा भारी बोहतान और खुला गुनाह अपने ऊपर लादा।¹ (112) ♦

और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़ल व रहमत न हो तो उन लोगों में से एक ग़िरोह ने तो आपको ग़लती में डाल देने का इरादा कर लिया था,² और ग़लती में नहीं डाल सकते लेकिन अपनी जानों को, और आपको ज़रा बराबर नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, और अल्लाह तआला ने आप पर किताब और इल्म की बातें नाज़िल फ़रमाई और आपको वे-वे बातें बतलाई हैं जो आप न जानते थे, और आप पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है। ▲ (113) आम लोगों कि अक्सर सरगोशियों “यानी कानाफूसी और चुपके-चुपके बातें करने” में ख़ैर नहीं होती। हाँ, मगर उनकी जो ऐसे हैं कि ख़ैरात की या और किसी नेक काम की³ या लोगों में आपस में सुधार कर देने की तरगीब देते हैं, और जो शख्स अल्लाह तआला को राज़ी करने के वास्ते यह काम करेगा सो हम उसको जल्द ही बड़ा अज़्र अता फ़रमाएँगे। (114) और जो शख्स रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुख़ालफ़त करेगा इसके बाद कि उसको हक़ बात ज़ाहिर हो चुकी थी और मुसलमानों का रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते पर हो लिया तो हम उसको जो कुछ वह करता है करने देंगे और उसको जहन्नम में दाख़िल करेंगे, और वह जाने की बुरी जगह है। (115) ♦

(पृष्ठ 172 का शेष) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मुक़द्दमे में उनकी तरफ़दारी करें। आपने यह तो नहीं किया लेकिन इतना हुआ कि हज़रत क़तादा जो ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने इश़ाद फ़रमाया कि तुम ऐसे लोगों पर बे-सनद क्यों इल्ज़ाम लगाते हो? उन्होंने आकर अपने चचा (रिफ़ाअ) से कहा। वह अल्लाह पर भरोसा करके ख़ामोश हो गए। इसपर ये अगली आयतें दो रुकू के करीब तक नाज़िल हुईं। गर्ज़ चोरी साबित हुई और माल बरामद हुआ और मालिक को दिया गया तो बशीर नाख़ुश होकर इस्लाम से फिर गया और मक्का जाकर मुशिरकों में जा मिला, इसपर आख़िर की आयतें नाज़िल हुईं: ‘व मय्युशाकिर्क़िरूसू-ल’ आख़िर तक।

1. जैसे बशीर ने किया कि खुद तो चोरी की और एक नेक-बख़्त बुजुर्ग आदमी लबीद के ज़िम्मे रख दी।
2. लेकिन खुदा के फ़ज़ल से उनकी लच्छेदार बातों का आप पर कोई असर नहीं हुआ और आइन्दा भी न होगा।
3. नेक काम में जो कि ‘मारूफ़’ का तर्जुमा है, वे तमाम उमूर आ गए जो नफ़ा देने वाले हों, चाहे दीनी हों या दुनियावी हों, मगर शरीअत के मुताबिक़ यानी जायज़ हों। और अगरचे इसमें सदका भी दाख़िल था लेकिन नफ़स पर भारी होने की वजह से उसका ज़्यादा एहतियाम फ़रमाया।

मन्जिल 1

बेशक अल्लाह तआला इस बात को न बख्शेंगे कि उनके साथ किसी को शरीक करार दिया जाए और इसके अलावा जितने गुनाह हैं जिसके लिए मन्ज़ूर होगा वे गुनाह बख्श देंगे। और जो शख्स अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराता है वह बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़ा।¹ (116) ये लोग खुदा तआला को छोड़कर चन्द ज़नानी चीज़ों की इबादत करते हैं² और सिर्फ़ शैतान की इबादत करते हैं जो कि हुक़्म से बाहर है। (117) जिसको खुदा तआला ने अपनी रहमत से दूर डाल रखा है, और जिसने (यूँ) कहा था कि मैं ज़रूर तेरे बन्दों से अपना (इताअत का) मुकर्रर हिस्सा लूँगा। (118) और मैं उनको गुमराह करूँगा और मैं उनको हवसें दिलाऊँगा, और मैं उनको तालीम दूँगा जिससे वे चौपायों के कानों को तराशा करेंगे, और मैं उनको तालीम दूँगा जिससे वे अल्लाह तआला की बनाई हुई सूरत को बिगाड़ा करेंगे,³ और जो शख्स खुदा तआला को छोड़कर शैतान को अपना साथी बना लेगा⁴ वह खुले नुकसान में पड़ जाएगा। (119) (शैतान) उन लोगों से वायदा किया करता है और उनको हवसें दिलाता है, और शैतान उनसे सिर्फ़ झूठे वायदे करता है। (120) ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और उससे कहीं बचने की जगह न पाएँगे। (121) और जो लोग ईमान ले आए और अच्छे काम किए हम उनको जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे कि उनके नीचे नदरें बहती होंगी, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। खुदा तआला ने वायदा फ़रमाया है (और) सच्चा वायदा (फ़रमाया है) और खुदा तआला से ज़्यादा किसका कहना सही होगा। (122) न तुम्हारी तमन्नाओं से काम चलता है और न अहले किताब की तमन्नाओं से, जो शख्स कोई बुरा काम करेगा वह उसके बदले सज़ा दिया जाएगा और उस शख्स को खुदा तआला के सिवा न कोई यार मिलेगा न मददगार मिलेगा। (123) और जो शख्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि मोमिन हो,⁵ सो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनपर ज़रा भी जुल्म न होगा। (124) और ऐसे शख्स से ज़्यादा अच्छा किसका दीन होगा जो कि अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ झुका दे⁶ और वह मुख़लिस भी हो⁷ और वह मिल्लते इब्राहीम का इत्तिबा करे⁸ जिसमें टेढ़ का नाम नहीं, और अल्लाह तआला ने इब्राहीम को अपना ख़ालिस दोस्त बनाया था।⁹ (125) और अल्लाह तआला ही की

1. चूँकि शिर्क करने वाले ने अल्लाह तआला (जो कि सबका पैदा करने वाला है) की तौहीन की इसलिए ऐसी ही सज़ा का हक़दार होगा। बख़िलाफ़ दूसरे गुनाहों के कि कुछ तो गुमराही हैं मगर तौहीद के ख़िलाफ़ और उससे बर्द नहीं इसलिए मफ़िरत के काबिल करार दिए गए।
2. ज़नानी चीज़ों से मुराद बाज़े बुत हैं जिनके नाम और सूरतें औरतों की-सी थीं, और उनको ज़ेवर वगैरह भी पहनाते थे।
3. यानी ऐसे शैतान की इताअत करते हैं जो एक तो यह कि नाफ़रमान और बागी है, दूसरे नाफ़रमानी और बगावत की वजह से मलऊन है, तीसरे इनसान का दुश्मन है जैसा कि उसके अक्वाल से साफ़ ज़ाहिर है।
4. यानी खुदा तआला की इताअत न करेगा बल्कि शैतान की बात मानेगा।
5. यह जो मोमिन की कैद लगाई गई इसका मिस्दाक़ हर फ़िर्का नहीं, बल्कि सिर्फ़ वह फ़िर्का है जिसका दीन खुदा तआला के नज़दीक़ मक़बूल होने में सबसे अच्छा हो, और ऐसा फ़िर्का सिर्फ़ इस्लाम के मानने वाले हैं, जिसकी दलील यह है कि उनके अन्दर ये सिफ़तें हैं: मुक़म्मल फ़रमाँबर्दारी, इख़्लास, मिल्लते इब्राहीम (यानी इस्लाम) की पैरवी।
6. यानी फ़रमाँबर्दारी इख़्तियार करे अक़ीदों में भी और आमाल में भी।
7. दिल से फ़रमाँबर्दारी इख़्तियार की हो, ख़ाली मस्लहत से दिखावे के तौर पर न हो।
8. मिल्लते इब्राहीमी यानी इस्लाम की पैरवी करे।
9. ख़लील होना आला दर्जे का तक्व़र्रब व मक़बूलियत है, और हज़रत जुनुदुब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इश़ाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझको भी ख़लील बनाया है जैसा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बनाया था।

फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइम् मुहीता (126) ♦

व यस्तप्तून-क फिन्निसा-इ, कुलिल्लाहु युप्तीकुम् फीहिन्-न व मा युल्ला अलैकुम् फिल्-किताबि फी यतामन्निसा-इल्लाती ला तुअतूनहुन्-न मा कुति-ब लहुन्-न व तरगबू-न अन् तन्किहूहुन्-न वल्-मुस्तज़अफी-न मिनल्-विल्दानि व अन् तकूमू लिल्यतामा बिल्किस्ति,

व मा तफअलू मिन् खैरिन् फ-इन्नल्ला-ह

का-न बिही अलीमा (127) व इनिम्-

र-अतुन् खाफत् मिम्-बअलिहा नुशूजन्

औ इअराजन् फला जुना-ह अलैहिमा

अय्युस्लिहा बैनहुमा सुल्हन्, वस्सुल्हु

खैरुन्, व उह्जि-रतिल् अन्फुसुशुह-ह,

व इन् तुह्सिन् व तत्तकू फ-इन्नल्ला-ह

का-न बिमा तअमलू-न खबीरा (128)

व लन् तस्ततीअू अन् तअदिल्

बैनन्निसा-इ व लौ हरस्तुम् फला

तमीलू कुल्लल्-मैलि फ-त-जुरुहा

कल्-मुअल्ल-कति, व इन् तुस्लिहू व

तत्तकू फ-इन्नल्ला-ह का-न गफूररहीमा

(129) व इय्य-तफर्रका युग्निल्लाहु

कुल्लम्-मिन् स-अतिही, व कानल्लाहु

वासिअन् हकीमा (130) व लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि, व ल-कद्

वस्सैनल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् कब्लिकुम् व इय्याकुम् अनित्तकुल्ला-ह, व इन् तक्फुरू

फ-इन्-न लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि, व कानल्लाहु गनिय्यन् हमीदा (131)

व लिल्लाहि मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि, व कफा बिल्लाहि वकीला (132) इय्यशअ

وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّخِيطًا ۖ وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ
اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُنْزِلُ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي رَيْبٍ مِّنَ
النِّسَاءِ الَّتِي لَا تَوْلُونَ هُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَرَغِبُونَ أَن
تُكْفَرَهُنَّ ۚ وَالْمُسْتَظْعَمُونَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۖ وَأَن تَقُولُوا
لِلَّذِينَ يَبْتَغُونَ بِالْقِسْطِ ۖ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ
عَلِيمًا ۚ وَلَئِن أَمْرًا خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ إِعْرَاضًا
فَلَا جُنَاةَ عَلَيْهِمَا ۖ أَن يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۚ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ
وَأُخْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ ۚ وَإِن تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۚ وَلَكِن تَسْتَعْجِلُونَ أَن تُعَدَّ لَكُمْ
النِّسَاءَ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَبْيُلُوا أَكْلَ الْمَيْلِ فَذَرُّوهَا
كَالْمَعْلُوقَةِ ۚ وَإِن تَصْلَحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا
وَلَئِن يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِّن سَعْيِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا
حَكِيمًا ۚ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِذَا كُنتُمْ أَن تَقُولُوا اللَّهُ
تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
غَنِيًّا حَمِيدًا ۚ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفَى

मिल्क है जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और अल्लाह तआला तमाम चीज़ों को घेरे में लिए हुए हैं।¹ (126) ♦

और लोग आपसे औरतों के बारे में हुक्म मालूम करते हैं, आप फरमा दीजिए कि अल्लाह तआला उनके बारे में हुक्म देते हैं और वे आयतें भी जो कुरआन के अन्दर तुमको पढ़कर सुनाई जाया करती हैं, जो कि उन यतीम औरतों के बारे में हैं जिनको जो उनका हक मुकर्रर है नहीं देते हो, और उनके साथ निकाह करने से नफरत करते हो, और कमज़ोर बच्चों के बारे में और इस बारे में कि यतीमों की कारगुज़ारी इन्साफ के साथ करो, और जो नेक काम करोगे सो बेशक अल्लाह तआला उसको ख़ूब जानते हैं।² (127) और अगर किसी औरत को अपने शौहर से ज़्यादा आशंका बद-दिमागी या बेपरवाई की हो, सो दोनों को इस बात में कोई गुनाह नहीं कि दोनों आपस में एक खास तरीके पर सुलह कर लें, और यह सुलह बेहतर है, और नफ़सों के अन्दर लालच भरा रहता है, और अगर तुम अच्छा बर्ताव रखो और एहतियात रखो तो बेशक हक़ तआला तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं। (128) और तुमसे यह तो कभी न हो सकेगा कि सब बीवियों में बराबरी रखो अगरचे तुम्हारा कितना ही जी चाहे, तो तुम बिल्कुल एक ही तरफ़ न ढल जाओ जिससे उसको ऐसा कर दो जैसे कोई अधर में लटकी हो,³ और अगर सुधार कर लो और एहतियात रखो तो बेशक अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (129) और अगर दोनों मियाँ-बीवी जुदा हो जाएँ तो अल्लाह तआला अपनी वुस्अत से हर एक को ज़रूरत से फ़ारिग़ कर देगा, और अल्लाह तआला बड़ी वुस्अत वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (130) और अल्लाह तआला की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं,⁴ और वाकई हमने उन लोगों को भी हुक्म दिया था जिनको तुमसे पहले किताब मिली थी और तुमको भी कि अल्लाह तआला से डरो,⁵ और अगर तुम नाशुकी करोगे⁶ तो अल्लाह तआला की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं, और अल्लाह तआला किसी के मोहताज नहीं खुद अपनी ज़ात में तारीफ़ के लायक हैं। (131) और अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं जो चीज़ें कि आसमानों में हैं और जो चीज़ें कि ज़मीन में हैं, और अल्लाह तआला काफ़ी कारसाज़ हैं। (132) अगर उनको

1. आयत नम्बर 123 से 126 तक की आयतों का खुलासा यह हुआ कि सिर्फ़ तमन्नाओं से काम नहीं चलता और मुसलमान सिर्फ़ तमन्नाओं पर नहीं हैं बल्कि काम करते हैं। और दूसरे फ़िर्के जब इस्लाम न लाए जिसपर सारा काम मौकूफ़ है तो बस सिर्फ़ तमन्नाओं पर हुए।
2. मतलब का खुलासा यह हुआ कि जो आयतें इस बारे में पहले आ चुकी हैं जिनको तुम वक़्त-वक़्त पर सुनते रहते हो, वे उन अहक़ाम के बारे में अब भी अमल करने के लिए वाजिब और ज़रूरी हैं, कोई नया हुक्म नहीं दिया जाता।
3. यानी न तो उसके हुक्म अदा किए जाएँ कि शौहर वाली समझी जाए और न उसको तलाक़ दी जाए कि बेशौहर वाली कही जाए।
4. तो ऐसे मालिक के अहक़ाम मानना बहुत ही ज़रूरी है।
5. इसको तक्वा कहते हैं जिसमें तमाम अहक़ाम की मुवाफ़क़त दाख़िल है।
6. यानी अहक़ाम की मुख़ालफ़त करोगे।

युजिहब्कुम् अय्युहन्नासु व यअति बिआ-खरी-न, व कानल्लाहु अला जालि-क कदीरा
(133) मन् का-न युरीदु सवाबद्दुन्या फ-अिन्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आखि-रति, व
कानल्लाहु समीअम्-बसीरा (134) ♦

या अय्युहल्लज्जी-न आमनू कनू कव्वामी-न बिल्किस्ति शु-हदा-अ लिल्लाहि व लौ अला
अन्फुसिकुम् अविल्-वालिदैनि वल्-
अकरबी-न इय्यकुन् गनिय्यन् औ
फकीरन् फल्लाहु औला बिहिमा, फला
तत्तबिअुल्-हवा अन् तअदिलू व इन्
तल्वू औ तुअरिज्जू फ-इन्नल्ला-ह का-न
बिमा तअमलू-न खाबीरा (135) या
अय्युहल्लज्जी-न आमनू आमिन्
बिल्लाहि व रसूलिही वल्-किताबिल्लज्जी
नज्ज-ल अला रसूलिही वल्-किताबिल्-
-लज्जी अन्ज-ल मिन् कब्लू, व मय्यक्फुर
बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व
रुसुलिही वल्यौमिल्-आखिरि फ-कद्
जल्-ल जलालम्-बअीदा (136)
इन्नल्लज्जी-न आमनू सुम्-म क-फरु
सुम्-म आमनू सुम्-म क-फरु सुम्मज्-
-दादू कुपरल्लम् यकुनिल्लाहु लि-यगिफ-र
लहुम् व ला लि-यहिद-यहुम् सबीला (137) बश्शरिल्-मुनाफिकी-न बिअन्-न लहुम्
अजाबन् अलीमा (138) अल्लज्जी-न यत्ताखिजूनल्- काफिरी-न औलिया-अ मिन्
दूनिल्-मुअमिनी-न, अ-यब्तगू-न अिन्दहुमुल्-अिज्ज-त फ-इन्नल्-अिज्ज-त लिल्लाहि जमीआ
(139) व कद् नज्ज-ल अलैकुम् फिल्लिताबि अन् इजा समिअ्तुम् आयातिल्लाहि युक्फर
बिहा व युस्तह्जउ बिहा फला तक्अुदू म-अहुम् हत्ता यखूजू फी हदीसिन् गैरिही इन्नकुम्

بِاللَّهِ وَكَيْلًا ۝ إِنَّ يَشَاءُ يُدْهِبَكُمْ أَهْلُهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ قَدِيرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَقْوَامِينَ بِالْقِسْطِ سُهَدَاءَ لِلَّهِ
وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ إِنْ يَكُنْ عَيْنًا
أَوْ قَدِيرًا ۝ قَالَ اللَّهُ أَوَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ تَعْدِلًا ۝
وَلَنْ تَكُونُوا أَوْ تُعْرِضُونَ ۝ إِنْ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي
نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ
آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا ۝ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا يَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۝ يَسِّرُ الْمُنَافِقِينَ ۝ إِنَّ لَهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ يَكُونُونَ الْكُفْرِينَ أُولَئِكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ
أَيَّتَعُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ
عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَأَلْتُمُ ابْنَةَ اللَّهِ فَيَكْفُرْ بِهَا وَيَسْتَفْزِرْ

मन्ज़ूर हो तो ऐ लोगो! तुम सबको फना कर दें और दूसरों को मौजूद कर दें, और अल्लाह तआला इसपर पूरी कुदरत रखते हैं। (133) जो शख्स दुनिया का मुआवज़ा चाहता हो तो अल्लाह तआला के पास तो दुनिया और आखिरत दोनों का मुआवज़ा है, और अल्लाह तआला बड़े सुनने वाले, बड़े देखने वाले हैं।¹ (134) ♦

ऐ ईमान वालो! इन्साफ पर खूब कायम रहने वाले, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले रहो, अगरचे अपनी ही जात पर हो² या कि माँ-बाप और रिश्तेदारों के मुकाबले में हो, वह शख्स अगर अमीर है तो, और गरीब है तो, दोनों के साथ अल्लाह तआला को ज़्यादा ताल्लुक है,³ सो तुम नफ़्स की ख्वाहिश की पैरवी मत करना, कभी तुम हक से हट जाओ, और अगर तुम कज-बयानी “यानी गुलत और ख़िलाफे हकीकत बयान” करोगे या किनारा करो और बचोगे तो बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर रखते हैं। (135) ऐ ईमान वालो!⁴ तुम एतिकाद रखो अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ, और उस किताब के साथ जो उसने अपने रसूल पर नाज़िल फरमाई, और उन किताबों के साथ जो कि पहले नाज़िल हो चुकी हैं। और जो शख्स अल्लाह तआला का इनकार करे और उसके फरिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और कियामत के दिन का तो वह शख्स गुमराही में बड़ी दूर जा पड़ा। (136) बेशक जो लोग मुसलमान हुए फिर काफिर हो गए, फिर मुसलमान हुए फिर काफिर हो गए, फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गए,⁵ अल्लाह तआला ऐसों को हरगिज़ न बर्ख़ोर्गे और न उनको (मन्ज़िले मकसूद यानी जन्नत का) रास्ता दिखलाएँगे।⁶ (137) मुनाफ़िकों को खुशख़बरी सुना दीजिए इस बात की कि उनके वास्ते बड़ी दर्दनाक सज़ा है। (138) जिनकी यह हालत है कि काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं मुसलमानों को छोड़कर। क्या उनके पास इज़्ज़त वाले रहना चाहते हैं, सो ऐज़ाज़ “यानी इज़्ज़त और सम्मान” तो सारा खुदा तआला के कब्जे में है।⁷ (139) और अल्लाह तआला तुम्हारे पास यह फरमान भेज चुका है कि जब अल्लाह के अहकाम के साथ मज़ाक-ठट्टा और कुफ़्र होता हुआ सुनो तो उन लोगों के पास मत बैठो जब तक कि वे कोई और बात शुरू न कर दें⁸ कि उस हालत में तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे,⁹ यकीनन अल्लाह तआला मुनाफ़िकों को और काफ़िरों को सबको दोज़ख़ में जमा कर देंगे। (140) वे ऐसे हैं कि तुमपर मुसीबत पड़ने के मुन्तज़िर रहते हैं, फिर अगर तुम्हारी

1. वे सबकी बातों और दरख़्वास्तों को सुनते हैं दुनिया की हो या दीन की, और सबकी नीयतों को देखते हैं। पस आखिरत के चाहने वालों को सवाब देंगे और दुनिया के चाहने वालों को आखिरत में महरूम रखेंगे, पस आखिरत ही की नीयत और दरख़्वास्त करनी चाहिए। अलबत्ता दुनिया की हाज़त मुस्तक़िल तौर पर माँगने में हर्ज नहीं, लेकिन इबादत में यह इरादा न करे।

2. इसको इकरार कहते हैं।

3. यानी गवाही के वक़्त यह ख़्याल न करो कि जिसके मुकाबले में हम गवाही दे रहे हैं यह अमीर है, इसको नफा पहुँचाना चाहिए ताकि इससे बेमुरव्वती न हो, या यह कि यह गरीब है इसका कैसे नुक़सान कर दें। तुम किसी की अमीरी-गरीबी को न देखो, क्योंकि उनसे तुम्हारा ताल्लुक जिस क़द्र है वह भी अल्लाह तआला का दिया हुआ है और अल्लाह तआला को जो ताल्लुक है वह तुम्हारा दिया हुआ नहीं। फिर जब बावजूद मजबूत ताल्लुक के अल्लाह तआला ने उनकी मस्लहत इसमें रखी है कि हक़ का इज़हार किया जाए तो तुम कमज़ोर ताल्लुक पर उनकी एक आरज़ी (यानी अस्थायी) मस्लहत का क्यों ख़्याल करते हो।

4. यानी जो मुख़्तसर तौर पर ईमान लाकर मोमिनों की जमाअत में दाख़िल हो चुके हैं।

5. यानी कुफ़्र पर मरते दम तक जमे रहे और कायम रहे।

6. क्योंकि मग़्फ़िरत और जन्नत के लिए ईमान पर मौत शर्त है।

7. चुनाँचे अल्लाह तआला ने जल्द ही मुसलमानों के हाथों सबको ज़लील व रुस्वा फरमा दिया।

8. यह मज़ाक-ठट्टा करने वाले मक्का में मुशिरकीन थे और मदीने में यहूद तो खुलेआम और मुनाफ़िक लोग सिर्फ़ गरीब व कमज़ोर मुसलमानों के सामने। पस जिस तरह वहाँ मुशिरकीन के साथ उठना-बैठना ऐसे वक़्त में मना था, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 182 पर)

इजम्-मिस्तुहुम्, इन्नल्ला-ह जामिअल्- मुनाफिकी-न वल्काफिरी-न फी जहन्न-म जमीआ
 (140) अल्लजी-न य-तरब्बसू-न बिकुम् फ-इन् का-न लकुम् फल्हुम् मिनल्लाहि कालू
 अलम् नकुम् म-अकुम् व इन् का-न लिल्काफिरी-न नसीबुन् कालू अलम् नस्तद्विज् अलैकुम्
 व नम्नअकुम् मिनल्- मुअमिनी-न, फल्लाहु यहकुम् बैनकुम् यौमल्-कियामति, व
 लंय्यज्-अलल्लाहु लिल्काफिरी-न अलल्-
 मुअमिनी-न सबीला (141) ♦

इन्नल्-मुनाफिकी-न युखादिअूनल्ला-ह
 व हु-व खादिअुहुम् व इजा कामू इलस्-
 सलाति कामू कुसाला युराऊनन्ना-स व
 ला यज्कुरुनल्ला-ह इल्ला कलीला
 (142) मुजब्बी-न बै-न जालि-क ला
 इला हा-उला-इ व ला इला हा-उला-इ,
 व मंय्युजिलिल्लाहु फ-लन् तजि-द लहू
 सबीला (143) या अय्युहल्लजी-न
 आमनू ला तत्ताखिजुल्-काफिरी-न
 औलिया-अ मिन् दूनिल् मुअमिनी-न,
 अतुरीदू-न अन् तज्जल् लिस्लाहि
 अलैकुम् सुल्लानम् मुबीना (144)

इन्नल् मुनाफिकी-न फिद्दरकिल्-

अस्फलि मिनन्नारि व लन् तजि-द लहुम् नसीरा (145) इल्लल्लजी-न ताबू व अस्लहू
 वअ्त-समू बिल्लाहि व अख्लसू दीनहुम् लिस्लाहि फ-उलाइ-क मअल्-मुअमिनी-न, व सौ-फ
 युअ्तिल्लाहुल् मुअमिनी-न अजरन् अजीमा (146) मा यफअलुल्लाहु बि-अजाबिकुम् इन्
 शकरतुम् व आमन्तुम्, व कानल्लाहु शाकिरन् अलीमा (147)

بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ
 إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلُهُمْ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ
 جَمِيعًا ۚ الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فِتْنَةٌ مِنَ اللَّهِ
 فَأُتُوا لَكُمْ بِهَا ۖ وَإِنْ كَانُوا لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ فَأُولَٰئِكَ
 لَسْتُمْ عَلَيْهِمْ بِمَنْعَةٍ وَتُمْغَنُهُم بِالنُّفُوسِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ إِنَّكُمْ
 يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۚ
 إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى
 الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَىٰ يُرَآءُونَ النَّاسَ وَلَا يُدْرُونَ اللَّهَ
 إِلَّا أَهْلِيًا ۚ هَٰؤُلَاءِ مَثَلٌ بَيْنَ يَدَيْكَ ۚ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ
 هَٰؤُلَاءِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ سَبِيلًا ۚ يَٰٓأَيُّهَا
 الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ
 أَتُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۚ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ
 فِي الدَّنَاكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَهُمْ صِدَاقًا إِلَّا الَّذِينَ
 تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا وَبِهِمْ يَرْجُو ۚ وَأُولَٰئِكَ
 مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ مَا
 يَفْعَلُ اللَّهُ بِكُمْ بَعْدَ إِلَٰهِيكُمْ أَنْ تَشْكُرُوا ۚ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۚ

مَثَلٌ

फह अल्लाह की तरफ से हो गई तो बातें बनाते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे, और अगर काफिरों को कुछ हिस्सा मिल गया तो बातें बनाते हैं कि क्या हम तुमपर ग़ालिब न आने लगे थे और क्या हमने तुमको मुसलमानों से बचा नहीं लिया। सो अल्लाह तआला तुम्हारा और उनका कियामत में (अमली) फैसला फरमा देंगे, और (उस फैसले में) अल्लाह तआला काफिरों को हरगिज़ मुसलमानों के मुकाबले में ग़ालिब न फरमाएँगे। (141) ♦

बिला शुब्हा मुनाफिक लोग चालबाज़ी करते हैं अल्लाह तआला से, हालाँकि अल्लाह तआला उस चाल की सज़ा आपको देने वाले हैं। और जब नमाज़ को खड़े होते हैं तो बहुत ही सुस्ती के साथ खड़े होते हैं¹ सिर्फ आदमियों को दिखलाते हैं, और अल्लाह तआला का ज़िक्र भी नहीं करते मगर बहुत ही मुख्तसर² (142) लटक रहे हैं दोनों के दरमियान में, न इधर न उधर,³ और जिसको अल्लाह तआला गुमराही में डाल दें ऐसे शख्स के लिए कोई सबील न पाओगे।⁴ (143) ऐ ईमान वाले! तुम मोमिनों को छोड़कर काफिरों को⁵ दोस्त मत बनाओ, क्या तुम यूँ चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह तआला की साफ हुज्जत कायम कर लो।⁶ (144) बेशक मुनाफिक लोग दोज़ख के सबसे नीचे के तबूके में जाएँगे, और तू हरगिज़ उनका कोई मददगार न पाएगा।⁷ (145) लेकिन जो लोग तौबा कर लें और सुधार कर लें और अल्लाह तआला पर भरोसा रखें और अपने दीन को ख़ालिस अल्लाह ही के लिए किया करें, तो ये लोग मोमिनों के साथ होंगे, और मोमिनों को अल्लाह तआला बड़ा अज़्र अता फरमाएँगे। (146) (और ऐ मुनाफिको!) अल्लाह तआला तुमको सज़ा देकर क्या करेंगे अगर तुम शुक्र गुज़ारी करो और ईमान ले आओ, और अल्लाह तआला बड़ी क़द्र करने वाले और ख़ूब जानने वाले हैं। (147)

(पृष्ठ 180 का शेष)

यहाँ यहूद और मुनाफिकों के साथ उठने-बैठने से मना किया गया है।

9. अहले बातिल के साथ उठने-बैठने की चन्द सूरतें हैं। अव्वल उनकी कुफ़्र भरी और ख़िलाफ़े इस्लाम बातों और आमाल पर रज़ामन्दी के साथ, यह कुफ़्र है। दूसरे कुफ़्रियात के इज़हार के वक़्त कराहत यानी नागवारी के साथ, मगर बिना किसी उज़्र के, यह फ़िस्क है। तीसरे किसी दुनियावी ज़रूरत के वास्ते, यह मुबाह (यानी जायज़ और गुन्जाइश रखता) है। चौथे अहकाम की तब्लीग़ के लिए, यह इबादत है। पाँचवे मजबूरी और बेइख़्तियारी के साथ, इसमें माज़ूर है।

1. जिस सुस्ती की यहाँ मज़म्मत (यानी निंदा) है वह एतिकादी सुस्ती है, और जो बावजूद एतिकाद सही होने के सुस्ती हो वह इससे ख़ारिज है। फिर अगर किसी उज़्र से हो जैसे बीमारी व थकन या नींद के ग़ल्बे से, तब तो काबिले मलामत भी नहीं। और अगर बिला उज़्र हो तो काबिले मलामत है।

2. यानी सिर्फ नमाज़ की सूरत बना लेते हैं जिससे नमाज़ का नाम हो जाए, और ताज्जुब नहीं कि सिर्फ उठना-बैठना ही होता हो।

3. ज़ाहिर में मोमिन तो कुफ़्रान से अलग, और बातिन में काफ़िर तो मोमिनों से अलग।

4. मतलब यह कि इन मुनाफिकों के राह पर आने की उम्मीद मत रखो। इसमें मुनाफिकों को बुरा-भला कहना और मलामत है और मोमिनों की तसल्ली, कि उनकी शरारतों से रंज न करें।

5. चाहे मुनाफिक हों चाहे खुले काफ़िर हों।

6. साफ़ हुज्जत यही कि जब हमने मना कर दिया था तो फिर ऐसा क्यों किया।

7. ऊपर मुनाफिकों की बुराइयों और ख़राबियों का बयान मकसूद था (अगरचे एक मज़मून के तहत में उनकी सज़ा जहन्नम होने का भी ज़िक्र आ गया था) आगे उनकी सज़ा का बयान मकसूद है। और चूँकि सज़ा के बयान का असर अपने आपमें यह है कि सही समझ रखने वाले आदमी को ख़ौफ़ पैदा हो जाता है, जो तौबा का सबब हो जाता है। इसलिए तौबा करने वालों का सज़ा से अलग होना और उनके नेक बदले का बयान भी फरमा दिया।

छठा पार: ला युहिब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा-इ (आयत 148 से 176)

ला युहिब्बुल्लाहुल्-जह्-र बिस्सू-इ मिनल्-कौलि इल्ला मन् जुलि-म, व कानल्लाहु समीअन् अलीमा (148) इन् तुब्दू खैरन् औ तुक्फूहु औ तअफू अन् सूइन् फ-इन्नल्ला-ह का-न अफुव्वन् कदीरा (149) इन्नल्लजी-न यक्फुरू-न बिल्लाहि व रुसुलिही व युरीदू-न अय्युफरिक्कू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक्कूलू-न नुअमिनु बि-बअजिं-व-व नक्फुरू बि-बअजिं-व-व युरीदू-न अय्यत्तछिज्जू बै-न ज़ालि-क सबीला (150) उलाइ-क हुमुल् काफिरू-न हक्कन् व अअतद्ना लिल्काफिरी-न अजाबम् मुहीना (151) वल्लजी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही व लम् युफरिक्कू बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् उलाइ-क सौ-फ युअतीहिम् उजूरहुम्, व कानल्लाहु गफूररहीमा (152) ♦

यस्अलु-क अह्लुल्-किताबि अन् तुनज़िज्-ल अलैहिम् किताबम् मिनस्-समा-इ फ-कद् स-अलू मूसा अक्ब-र मिन् ज़ालि-क फकालू अरिनल्ला-ह जहर-तन् फ-अ-खजत्तहुमुस्साअि-कतु बिजुल्मिहिम् सुम्मत-खजुल्-अिज्-ल मिम्-बअदि मा जाअत्तहुमुल् बय्यिनातु फ-अफौना अन् ज़ालि-क व आतैना मूसा सुल्लानम् मुबीना (153) व रफअना फौकहुम्लू-र बिमीसाकिहिम् व कुल्ला लहुमुदखुलुल्बा-ब सुज्जदं-व-व कुल्ला लहुम्

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالشُّعْرِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ وَ
كَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا إِنْ تَبَدُّوا خَيْرًا أَوْ نَخَفُوا أَوْ
تَعَفَّوْا عَنْ سُوءِ قَوْلِ اللَّهِ كَانَ عَفْوًا قَدِيرًا إِنْ الَّذِينَ
يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَ
رُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنُكَفِّرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ
أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ
حَقًّا وَاعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ
أُجُورُهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ
أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىَ الْأَكْبَرَ
مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا ارْبَا إِلَهُنَا جَهْدَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ
ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ
ذَلِكَ وَاتَّبَعْنَا مُوسَىَ سُلْطَانًا مُّبِينًا وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ
بِبَيْتِاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ
لَا تَعْبُدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا فَبِمَا
نَقَضْتُمْ بَيْتَاقَهُمْ وَأَنكَرْتُمْ بَايَاتِ اللَّهِ وَقَتَلْتُمْ الْأَنْبِيَاءَ بَغْيًا

छठा पार: ला युहिबुल्लाहु

सूर: निसा (आयत 148 से 177)

अल्लाह तआला बुरी बात ज़बान पर लाने को पसन्द नहीं करते सिवाय मज़्लूम के,¹ और अल्लाह तआला ख़ूब सुनते हैं, ख़ूब जानते हैं।² (148) अगर नेक काम ऐलानिया करो या उसको खुफिया करो या किसी बुराई को माफ़ कर दो तो अल्लाह तआला बड़े माफ़ करने वाले हैं, पूरी कुदरत वाले हैं। (149) जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह तआला के साथ और उसके रसूलों के साथ और (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के और उसके रसूलों के दरमियान में फ़र्क़ रखें, और कहते हैं कि हम बाज़ों पर तो ईमान लाते हैं और बाज़ों के इनकारी हैं,³ और (यूँ) चाहते हैं कि बीच की एक राह तजवीज़ करें (150) ऐसे लोग यकीनन काफ़िर हैं, और काफ़िरों के लिए हमने तौहीन वाली सज़ा तैयार कर रखी है। (151) और जो लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं और उसके सब रसूलों पर भी, और उनमें से किसी में फ़र्क़ नहीं करते, उन लोगों को अल्लाह तआला ज़रूर उनके सवाब देंगे, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़े रहमत वाले हैं।⁴ (152) ♦

आपसे अहले किताब यह दरख्वास्त करते हैं कि आप उनके पास एक खास तहरीर आसमान से मंगवा दें, सो उन्होंने मूसा से इससे भी बड़ी बात की दरख्वास्त की थी और (यूँ) कहा था कि हमको अल्लाह तआला को खुल्लम-खुल्ला दिखला दो, उनकी (इस) गुस्ताख़ी के सबब उनपर कड़क बिजली आ पड़ी,⁵ फिर उन्होंने गौसाला को तजवीज़ किया था, उसके बाद कि बहुत-सी दलीलें उनको पहुँच चुकी थीं। फिर हमने उनसे दरगुज़र कर दिया था। और मूसा (अलैहिस्सलाम) को हमने बहुत बड़ा रोब दिया था। (153) और हमने उन लोगों से कौल व करार लेने के वास्ते तूर पहाड़ को उठाकर उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया था, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि दरवाज़े में आजिज़ी से दाख़िल होना, और हमने उनको यह हुक्म दिया था कि हफ़्ते “यानी शनिवार” के दिन के बारे में हद से मत बढ़ना, और हमने उनसे कौल व करार बहुत सख़्त लिए। (154) सो (हमने उनको सज़ा में

1. यानी मज़्लूम अगर अपने ज़ालिम के बारे में शिकायत बयान करे तो वह गुनाह नहीं।
2. इसमें इशारा है कि मज़्लूम को हकीकत के खिलाफ़ कहने की इजाज़त नहीं।
3. इस कौल और अक़ीदे से अल्लाह तआला के साथ भी कुफ़्र लाज़िम आ गया और सब रसूलों के साथ भी, क्योंकि अल्लाह तआला ने और हर रसूल ने सब रसूलों को रसूल कहा है, जब बाज़ का इनकार हुआ तो अल्लाह तआला और दूसरे रसूलों को झुठलाना हो गया, जो कि तस्दीक और ईमान के खिलाफ़ है।
4. बाज़ मुफ़त्सिरनी ने इस आयत को यहूद व ईसाइयों (नसारा) दोनों की शान में कहा है, क्योंकि ईसाई भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं मानते लेकिन मज़मून के गुज़रे हुए और आने वाले हिस्से में यहूद का ज़िक्र होना इसको चाहता है कि आयत का यहूद की शान में होना ज़्यादा अहम है, अगरचे उसके तहत में ईसाई भी लफ़्ज़ के आम होने में दाख़िल हो जाएँ।
5. यहूद ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से (दुश्मनी के तौर पर) यह दरख्वास्त की कि हम आपसे जब बैअत करें कि हमारे पास अल्लाह तआला की तरफ़ से एक तहरीर (यानी लिखा हुआ) इस मज़मून की आप कि खुदा तआला की तरफ़ से फ़लाँ यहूदी के नाम यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रसूल है, इस तरह हर-हर यहूदी के नाम ये ख़त हों, अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली फ़रमाई है कि ये लोग हमेशा से ऐसी ज़हालतें करते आए हैं, आप रन्जीदा न हों।

ला तअद्दू फिस्सब्बि व अखज्जना मिन्हुम् मीसाकन् गलीज़ा (154) फबिमा नक्ज़हिम् मीसाकहुम् व कुफ़िरहिम् बिआयातिल्लाहि व कत्लिहिमुल् अम्बिया-अ बिगैरि हक्किक्व-व कौलिहिम् कुलूबुना गुल्फुन्, बल् त-बअल्लाहु अलैहा बिकुफ़िरहिम् फला युअमिनू-न इल्ला कलीला (155) व बिकुफ़िरहिम् व कौलिहिम् अला मर्य-म बुह्तानन् अज़ीमा (156) व कौलिहिम् इन्ना कतल्लल्-मसी-ह अीसब्-न मर्य-म रसूलल्लाहि व मा क-तलूहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम्, व इन्नल्लज़ीनख्त-लफू फीहि लफी शक्किम् मिन्हु, मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिन् इल्लत्तिबाअज़्जन्नि व मा क-तलूहु यकीना (157) बर-फ-अहुल्लाहु इलैहि, व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमा (158) व इम्-मिन् अदिलल्-किताबि इल्ला ल-युअमिनन्-न बिही कब्-ल मौतिही व यौमल्-कियामति यकूनु अलैहिम् शहीदा (159) फ-बिज़ुल्मिम्-मिनल्लज़ी-न हादू हरर्मूना अलैहिम् तथ्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि-सदिहिम् अन् सबीलिल्लाहि कसीरा (160) व अखिज़हिमुरिबा व कद् नुहू अन्हु व अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि, व अअ-तद्ना लिल्काफिरी-न मिन्हुम् अज़ाबन् अलीमा (161) लाकिनिर्रासिखू-न फिलुअिल्मि मिन्हुम् वल्मुअमिनू-न युअमिनू-न बिमा उन्जि-ल इलै-क व मा उन्जि-ल मिन् कब्लि-क वल्मुकीमीनस्सला-त वल्मुअतूनज़्ज़का-त वल्मुअमिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि, उलाइ-क सनुअतीहिम् अजरन् अज़ीमा (162) ♦

حَقِّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلُقٌ بَلْ طَبَعَهُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَكْرَهُمْ
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا وَكَفَرُوا بِرَبِّهِمْ فَهُمْ عَنْ رَحْمَتِنَا
عَظِيمَةٌ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَاتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ
اللَّهِ وَمَا قَاتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ
الَّذِينَ اشْتَكَوْا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مِمَّا يَلْعَنُ بِهِ مِنَ الْعَالَمِ
إِلَّا طَائِفَةٌ الْقَلِيلُ وَمَا قَاتَلُوهُ يَقِينًا بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ
وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَإِ
يُؤْمِنُونَ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ
شَهِيدًا قَدْ ظَلَمُوا مِنَ الَّذِينَ مَا دُفُوا حَزْمًا عَلَيْهِمْ
طَبَعَتْ أَجَلَتْ لَهُمْ وَبَصَلَتْهُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا
وَأَخَذُوا مِنْهُمْ الْيَتَامَى وَقَدْ هَوَّاهُ عَنْهُمْ وَأَخْلَاهُمْ أَمْوَالِ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا لَكِنَّ
الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ
إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ
الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ
أَجْرًا عَظِيمًا إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ

منزل

मुब्तला किया) उनके अहद तोड़ने की वजह से और अल्लाह के अहकाम के साथ उनके कुफ़ की वजह से, और उनके नबियों को नाहक़ क़त्ल करने की वजह से, और उनके इस कहने की वजह से कि हमारे दिल महफूज़ हैं। (महफूज़ नहीं) बल्कि उनके कुफ़ के सबब उन (दिलों) पर अल्लाह तआला ने बन्द लगा दिया है, सो उनमें ईमान नहीं मगर बहुत मामूली।¹ (155) और (उन्हें सज़ा दी) उनके कुफ़ की वजह से, और (हज़रत) मरियम (अलैहस्सलाम) पर उनके बड़ा भारी बोहतान धरने की वजह से। (156) और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरियम को जो कि अल्लाह तआला के रसूल हैं, क़त्ल कर दिया,² हालाँकि उन्होंने न उनको क़त्ल किया न उनको सूली पर चढ़ाया, लेकिन उनको धोखा और शुब्हा हो गया। और जो लोग उनके बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं वे ग़लत ख़्याल में हैं, उनके पास इसपर कोई दलील नहीं सिवाय अटकली बातों पर अमल करने के, और यकीनी बात है कि उन्होंने उनको क़त्ल नहीं किया। (157) बल्कि उनको खुदा तआला ने अपनी तरफ़ उठा लिया, और अल्लाह तआला बड़े ज़बरदस्त, हिक्मत वाले हैं। (158) और कोई शख्स अहले किताब से नहीं रहता मगर वह ईसा अलैहिस्सलाम की अपने मरने से पहले ज़रूर तस्दीक़ कर लेता है, और क़ियामत के दिन वह उनपर गवाही देंगे।³ (159) सो यहूद के इन्ही बड़े-बड़े जुर्मों के सबब हमने बहुत-सी पाकीज़ा चीज़ें जो उनके लिए हलाल थीं उनपर हराम कर दीं,⁴ और इस सबब से कि वे बहुत आदमियों के लिए अल्लाह तआला की राह से रुकावट बन जाते थे। (160) और इस सबब से कि वे सूद लिया करते थे हालाँकि उनको इससे मना किया गया था, और इस सबब से कि वे लोगों के माल नाहक़ तरीके से खा जाते थे। और हमने उन लोगों के लिए जो उनमें से काफ़िर हैं दर्दनाक सज़ा का सामान कर रखा है। (161) लेकिन उनमें जो लोग (दीन के) इल्म में पुख़्ता हैं और जो (उनमें) ईमान ले आने वाले हैं, कि इस (किताब) पर भी ईमान लाते हैं जो आपके पास भेजी गई और (उसपर भी ईमान रखते हैं) जो आपसे पहले भेजी गई थी, और जो (उनमें) नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हैं और जो (उनमें) ज़कात देने वाले हैं और जो (उनमें) अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर एतिकाद रखने वाले हैं, (सो) ऐसे लोगों को हम (आख़िरत में) ज़रूर बहुत बड़ा सवाब अता फ़रमाएँगे।⁵ (162) ♦

1. अहद तोड़ने में बाद वाला सारा मज़मून दाख़िल है, लेकिन बुराई और मलामत के ज़्यादा होने की वजह से सब मामलात को अलग-अलग भी बयान फ़रमा दिया कि अल्लाह तआला के साथ उनका मामला यह है कि उनके अहकाम के इनकारी हैं, अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के साथ यह बर्ताव है कि उनको झुठलाने से गुज़रकर उनको क़त्ल करते थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ यह मामला है कि आपके सामने अपने हक़ पर होने के दावेदार हैं, और ये सब कुफ़ की किस्में हैं।
2. ईसा अलैहिस्सलाम के नाम के साथ जो रसूलुल्लाह आया है यह यहूद का कौल नहीं, बल्कि अल्लाह तआला ने बढ़ा दिया है कि देखो ऐसे के बारे में ऐसा कहते हैं।
3. ऊपर यहूद की बाज़ शरारतें और कुछ सज़ाएँ लान-तान वग़ैरह जो कि दुनिया में होने वाली और तक़वीनी उमूर से थीं, बयान फ़रमाई हैं, आगे भी उनकी बाज़ शरारतों का ज़िक्र है और साथ में बाज़ सज़ाओं का भी, दुनिया में शरीअत के हुक्म के एतिबार से यह कि बाज़ हलाल चीज़ों का हराम होना और आख़िरत के अन्जाम का ज़िक्र कि दर्दनाक अज़ाब है, का बयान है, और चूँकि असल सज़ा यही है इसलिए यहूद के ज़िक्र के शुरू पर भी अज़ाबे मुहीन (यानी तौहीन वाले अज़ाब) के उनवान से इसको फ़रमाया था, पस दोनों तरफ़ में होने से ज़्यादा ताकीद हो गई।
4. जुर्मों की वजह से जो तहरीम (यानी हराम करना) हुई वह तहरीम आम थी, अगरचे जुर्मों से बाज़ नेक लोग महफूज़ भी थे, क्योंकि बहुत-सी हिक्मतों के तकाज़े से अल्लाह का तरीक़ा यूँ ही जारी है जैसा कि कुरआन में इसकी तरफ़ इशारा भी है, “वक्तू फ़िल्न-तल्ला तुसीबन्नल्लज़ी-न मिन्कुम् ख़ास्स-तन्” और हदीस में भी आया है कि बड़ा मुज़िम वह है जिसके बेज़रूरत सवाल करने से कोई चीज़ सबके लिए हराम हो जाए, यानी वह के ज़माने में। और शरीअते मुहम्मदिया में जो चीज़ें हराम हैं वे किसी जिस्मानी या रूहानी नुक़सान की वजह से हराम हैं, कि इस हैसियत से नापाक हैं, पस फ़ायदेमन्द हलाल चीज़ों का (शेष तफ़सीर पृष्ठ 188 पर)

इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना इला नूहिब्वन्नबिय्यी-न मिम्-बअदिही व औहैना इला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क व यअकू-ब वल्अस्बाति व औसा व अय्यू-ब व यूनू-स व हारू-न व सुलैमा-न व आतैना दावू-द जबूरा (163) व रुसुलन् कद् कसस्नाहुम्

अलै-क मिन् कब्लु व रुसुलल्लम् नक्सुसुहुम् अलै-क, व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा (164) रुसुलम् मुबशिशरी-न व मुन्जिरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अलल्लाहि हुज्जतुम्-बअदरुसुलि, व कानल्लाहु अजीजन् हकीमा (165)

लाकिनिल्लाहु यशहदु बिमा अन्ज-ल इलै-क अन्ज-लहू बिअि लिमही वल्मलाइ-कतु यशहदू-न व कफा बिल्लाहि शहीदा (166) इन्नल्लजी-न क-फरु व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि कद् जल्लू जलालम् बअीदा (167) इन्नल्लजी-न क-फरु व ज-लमू लम् यकुनिल्लाहु लियगिफ-र लहुम् व ला लियहिद-यहुम् तरीका (168) इल्ला

तरी-क जहन्न-म खालिदी-न फीहा अ-बदन्, व का-न जालि-क अलल्लाहि यसीरा (169) या अय्युहन्नासु कद् जा-अकुमुरसूलु बिल्हक्कि मिर्रब्बिकुम् फआमिन् खैरल्लकुम्, व इन् तक्फुरु फ-इन्-न लिल्लाहि मा फिस्समावाति वल्अजि, व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा (170) या अह्लल्-किताबि ला तग्लू फी दीनिकुम् व ला तकूलू अलल्लाहि इल्लल्-हक्-क, इन्नमल्-मसीहु औसब्नु मर्य-म रसूलुल्लाहि व कलि-मतुहू अल्काहा इला मर्य-म व

وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَ
إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُوشَعَ
هُرُونَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ دَاوُدَ زَكَرِيَّا وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ
مُوسَىٰ تَكْوِيمًا ۖ رُسُلًا لِّيُبَيِّنَ لَكُمْ وَتُنذِرَ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ عَلَىٰ اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا
لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلَكُ
يَشْهَدُ وَنُكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَوَظَنُوا أَنَّهُمْ يَكْفُرُونَ لِيُغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا
إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ
يَسِيرًا ۚ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ
فَأَمِنُوا خَيْرًا لَكُمْ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا
فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى
ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَةٌ أُلْقِيَهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ

हमने आपके पास वह भेजी है जैसे नूह के पास भेजी थी, और उनके बाद और पैगम्बरों के पास, और हमने इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक और याकूब और याकूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और सुलेमान के पास वह भेजी थी, और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी। (163) और (ऐसे) पैगम्बरों को (वह वाला बनाया) जिनका हाल हम इससे पहले आपसे बयान कर चुके हैं और ऐसे पैगम्बरों को जिनका हाल हमने आपसे बयान नहीं किया, और मूसा (अलैहिस्सलाम) से अल्लाह तआला ने खास तौर पर कलाम फरमाया। (164) उन सबको खुशखबरी देने वाले और ख़ौफ सुनाने वाले पैगम्बर बनाकर इसलिए भेजा ताकि लोगों के पास अल्लाह तआला के सामने उन पैगम्बरों के बाद कोई उज़्र बाकी न रहे, और अल्लाह तआला पूरे ज़ोर वाले हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं।¹ (165) लेकिन अल्लाह तआला (इस किताब) के ज़रिये से जिसको आपके पास भेजा है, और भेजा भी अपने इल्मी कमाल के साथ, शहादत दे रहे हैं और फरिश्ते तस्दीक कर रहे हैं, और अल्लाह ही की शहादत काफी है। (166) जो लोग इनकारी हैं और खुदाई दीन से रुकावट होते हैं, बड़ी दूर की गुमराही में जा पड़े हैं। (167) बेशक जो लोग इनकारी हैं और (दूसरों का भी) नुकसान कर रहे हैं अल्लाह तआला उनको कभी न बख्शेंगे और न उनको कोई और राह दिखाएँगे (168) सिवाय जहन्नम की राह के, इस तरह पर कि उसमें हमेशा-हमेशा रहा करेंगे, और अल्लाह तआला के नज़दीक यह (सज़ा देना) मामूली बात है।² (169) ऐ तमाम लोगो! तुम्हारे पास यह रसूल सच्ची बात लेकर तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से तशरीफ लाए हैं, सो तुम यकीन रखो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। और अगर तुम मुनकिर “यानी इनकार करने वाले” रहे तो खुदा तआला की मिलक है यह सब जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है, और अल्लाह तआला पूरी इत्तिला रखते हैं, कामिल हिक्मत वाले हैं।³ (170) ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में हद से मत निकलो और खुदा तआला की शान में ग़लत बात मत कहो,⁴ मसीह ईसा इब्ने मरियम तो और कुछ भी नहीं अलबत्ता अल्लाह के रसूल हैं और उसका एक कलिमा हैं, जिसको उसने मरियम

(पृष्ठ 186 का शेष) हराम होना सज़ा व सियासत है और नुकसानदेह हलाल चीज़ों का हराम होना रहमत व हिफाज़त है।

5. मुराद उनसे ये हज़रात और उनके जैसे हैं, जैसे अन्बुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु व उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु व सअलबा रज़ियल्लाहु अन्हु और आयत का यही नाज़िल होने का सबब भी है। और आयत में कामिल अज़्र को उन पहले ज़िक्र हुए उमूर के साथ जोड़ना मकसूद है, और जहाँ तक अज़्र व मुतलक नज़ात की बात है तो वह सिर्फ़ अक्रायदे ज़रूरिया को सही करने से वाबस्ता है।

1. अल्लाह तआला पूरे ज़ोर और इख़्तियार वाले हैं कि रसूलों को भेजे बिना भी सज़ा देते तो तन्हा हकीकी मालिक होने की वजह से, यह कोई जुल्म न होता, और हकीकत में किसी को उज़्र करने का हक़ भी न होता, लेकिन चूँकि बड़ी हिक्मत वाले भी हैं इसलिए हिक्मत रसूलों के भेजने में यह थी ताकि ज़ाहिरी उज़्र भी न रहे।

2. ऊपर यहूद के शुब्हा का जो कि हुज़ूरे पाक की नुबुव्वत के मुताल्लिक था, जवाब और नुबुव्वत का साबित करना, साथ ही इनकार करने वालों के लिए वर्ईद निहायत साफ़ और उम्दा अन्दाज़ से ज़िक्र हो चुकी, आगे आम ख़िताब से नुबुव्वत की तस्दीक का वाजिब होना बयान फरमाते हैं।

3. ऊपर यहूद को ख़िताब था आगे नसारा (यानी ईसाइयों) को ख़िताब है।

4. यानी इन्ज़ील वालो।

5. कि नज़्जु बिल्लाह (यानी अल्लाह अपनी पनाह में रखे) वह औलाद वाला है, जैसा कि बाज़ कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं, या वह माबूदों के मजमूए का एक हिस्सा हैं, जैसा कि बाज़ कहते थे कि अल्लाह तीन का तीसरा है और बक़िया दो हिस्से एक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को कहते थे और एक हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम को, जैसा कि आगे आयत में “व लल्मलाइ-कतुल-मुकर्रबून” के बढ़ाने से मालूम होता है, और बाज़े हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम को, जैसा कि “इत्तख़िज़्ज़नी व उम्मि-य” से मालूम होता है, या वह ऐन मसीह है, जैसा कि बाज़ कहते थे, “कि खुदा तो बस मसीह इब्ने मरियम है” ये सब अक़ीदे बातिल हैं।

रुहुम्-मिन्हु फआमिनु बिल्लाहि व रुसुलिही, व ला तकूलू सलासतुन्, इन्तहू खैरल्लकुम्, इन्नमल्लाहु इलाहुंवाहिदुन्, सुब्हानहू अय्यकू-न लहू व-लदुन् ❖ लहू मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि व कफा बिल्लाहि वकीला (171) ❖

लंय्यस्तन्किफल्-मसीहु अय्यकू-न अब्दल्-लिल्लाहि व लल्मला-इ-कतुल् मुकर्रबू-न, व मय्यस्तन्किफ् अन् अिबादतिही व यस्तक्बिर् फ-सयह्शुरुहुम् इलैहि जमीआ (172)

फ-अम्मल्लजी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति फ-युवफफीहिम् उजूरहुम् व यजीदुहुम् मिन् फजिलही व अम्मल्लजीनस्-तन्कफू वस्तक्बरु फ-युअजिजबुहुम् अजाबन् अलीमा (173) व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यं-व ला नसीरा (174) या अय्यहन्नासु कद् जा-अकुम् बुरहानुम् मिरिब्बिकुम् व अन्जल्ला इलैकुम् नूरम् मुबीना (175) फ-अम्मल्लजी-न आमनू बिल्लाहि वअ्त-समू बिही फ-सयुदखिलुहुम् फी रह्मतिल् मिन्हु व फजिलं-व यहदीहिम् इलैहि सिरातम् मुस्तफीमा (176) यस्तफतून-क, कुलिल्लाहु युफतीकुम् फिल्-कलालति,

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 إِنَّهُ قَامُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةً إِنْتَهُوَ خَيْرٌ
 لَكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا
 فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا
 لَنْ يَسْتَنْفِكَ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ
 الْمُقَرَّبُونَ وَمَنْ يَسْتَنْفِكَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْمِلْ
 إِلَيْهِ جَمِيعًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ
 أَجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنَفَكُوا
 وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَهْدِيهِمْ وَهُمْ
 قَرِيبُونَ دُونَ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا تَصْخَرُ لَهُ يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَهُمُ
 بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكَ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا فَأَمَّا الَّذِينَ
 آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةِ قَبْلِهِ
 وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ يَسْتَفْتُونَكَ
 قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنْ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ
 وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ
 لَهَا وَلَدٌ وَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الشُّكْلَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِنْ
 كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَىٰ

इनिम्फुउन् ह-ल-क लै-स लहू व-लदुं-व लहू उख्तुन् फ-लहा निस्फु मा त-र-क व हु-व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा व-लदुन्, फ-इन् का-नतस्नतैनि फ-लहुमस्- सुलुसानि मिम्मा त-र-क, व इन् कानू इख्वतर्रिजालं-व निसाअन् फ-लिज्ज-करि मिस्तु हज्जिल् उन्सयैनि, युबय्यिनुल्लाहु लकुम् अन् तजिल्लू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीम (177) ❖

तक पहुँचाया था और उसकी तरफ से एक जान हैं। सो अल्लाह पर और उसके सब रसूलों पर ईमान लाओ, और (यूँ) मत कहो कि तीन हैं, बाज़ आ जाओ तुम्हारे लिए बेहतर होगा। माबूदे हकीकी तो एक ही माबूद है, वह औलाद वाला होने से पाक है, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद चीज़ें हैं सब उसकी मिल्क हैं, और अल्लाह तआला कारसाज़ होने में काफ़ी हैं। (171) ♦

मसीह हरगिज़ खुदा के बन्दे बनने से शर्म नहीं करेंगे और न करीबी फ़रिश्ते, और जो शख्स खुदा तआला की बन्दगी से शर्म करेगा “या बुरा समझेगा” और तकब्बुर करेगा तो खुदा तआला ज़रूर सब लोगों को अपने पास जमा करेंगे। (172) फिर जो लोग ईमान लाए होंगे और उन्होंने अच्छे काम किए होंगे तो उनको उनका पूरा सवाब देंगे और उनको अपने फज़ल से और ज़्यादा देंगे, और जिन लोगों ने शर्म की होगी और तकब्बुर किया होगा तो उनको सख़्त दर्दनाक सज़ा देंगे। (173) और वे लोग अल्लाह के अलावा किसी और को अपना मददगार हिमायती न जाएँगे। (174) ऐ लोगो! यकीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक दलील आ चुकी है,² और हमने तुम्हारे पास एक साफ़ नूर भेजा है।³ (175) सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उन्होंने उसको मज़बूत पकड़ा,⁴ तो ऐसों को अल्लाह तआला अपनी रहमत में दाख़िल करेंगे और अपने फज़ल में और अपने तक उनको सीधा रास्ता बता देंगे।⁵ (176) लोग आपसे हुक्म दरियाफ़्त करते हैं,⁶ आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआला तुमको कलाला के बारे में हुक्म देता है।⁷ अगर कोई शख्स मर जाए जिसके औलाद न हो (और न माँ-बाप) और उसके एक (हकीकी या माँ-शरीक सौतेली) बहन हो तो उसको तमाम तर्क का आधा मिलेगा, और वह शख्स उस (अपनी बहन) का वारिस होगा, अगर (वह बहन मर जाए और) उसके औलाद न हो, (और माँ-बाप भी न हों)। और अगर (बहनें) दो हों (या ज़्यादा) तो उनको उसके कुल तरफ़े में से दो तिहाई मिलेंगे। और अगर (कई वारिस) भाई (बहन) हों मर्द और औरत तो एक मर्द को दो औरतों के हिस्से के बराबर,⁸ अल्लाह तआला तुमसे (दीन की बातें) इसलिए बयान करते हैं कि तुम गुमराही में न पड़ो, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं। (177) ♦

1. ऊपर इसाइयों के अक़ीदों का बातिल होना तथा इक्कार करने वालों की जज़ा और इनकार करने वालों की सज़ा का बयान हो चुका, आगे आम ख़िताब से इन मज़ामीन का और इन मज़ामीन के तालीम फ़रमाने वाले रसूल और कुरआन का सच्चा होना और तस्दीक करने वालों की फज़ीलत बयान फ़रमाते हैं, जिस तरह यहूद के सामने हुज्जत पेश करने के बाद इसी तरह ख़िताबे आम फ़रमाया था। “या अय्युहन्नासु कद जा-अकुमुरसूलु”.....

2. वह मुबारक ज़ात है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की।

3. वह कुरआन मजीद है।

4. यानी इस्लाम को।

5. हासिल यह है कि इताअत की बरकत से इताअत पर जमे रहने की तौफ़ीक़ अता होती है।

6. इस आयत के नाज़िल होने का सबब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़त्वा मालूम करना है कि उस वक़्त सिर्फ़ उनकी बहनें वारिस थीं जैसा कि नसई शरीफ़ और लबाब में इब्ने मरदूया से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सवाल करना भी नक़ल किया है।

7. कलाला यानी जिसके न औलाद हो न माँ-बाप हों।

8. क्योंकि इस सूर: में यहाँ तक बहुत-से उसूल व अहक़ाम की तफ़सील है इसलिए आख़िर में एक मुख़्तसर उनवान से पूरी की पूरी तफ़सील को दोबारा याद दिलाकर अपनी मन्नत और एहसान, शरीअत के बयान करने में और उन अहक़ाम में हिक्मत की रियायत ज़िक्र फ़रमा कर सूर: को ख़त्म फ़रमाते हैं।

5 सूरतुल्माइ-दति 112

(मदनी) इस सूर: में अरबी के 13464 अक्षर, 2842 शब्द

120 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज्जी-न आमनू औफू

बिल्-अुकूदि, उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-

अन्आमि इल्ला मा युल्ला अलैकुम् गै-र

मुहिल्लिस्-सैदि व अन्तुम् हुरुमुन्,

इन्नल्ला-ह यत्कुम् मा युरीद (1) या

अय्युहल्लज्जी-न आमनू ला तुहिल्लू

शआ-इरल्लाहि व लश्शहरल्-हरा-म व

लल्-हद्-य व लल्कलाइ-द व ला

आम्मीनल् बैतल्-हरा-म यब्तगू-न

फज्जल् मिर्रब्बिहिम् व रिज्वानन्, व इज़ा

हलल्लुम् फस्तादू व ला यज्जिमन्नकुम्

श-नआनु कौमिन् अन् सद्दूकुम् अनिल्

मस्जिदिल्-हरामि अन् तअ्तदू ✱ व

तआवनू अलल्-बिरि वत्तक्वा व ला

तआवनू अलल्-इस्मि वल्-अुद्वानि

वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-

अिकाब ♦ (2) हुर्मिन् अलैकुमुल्मैततु वद्दमु व लह्मुल्-खिन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल

लिगैरिल्लाहि बिही वल्मुन्खानि-कतु वल्मौकूजतु वल्मु-तरदियतु वन्नती-हतु व मा

अ-कलस्सबुअु इल्ला मा जक्कैतुम्, व मा ज़ुबि-ह अलन्नुसुबि व अन् तस्तक्विसमू

बिल्अज़्लामि, ज़ालिकुम् फिस्कुन्, अल्यौ-म य-इसल्लज्जी-न क-फरु मिन् दीनिकुम् फला

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ	94	بِسْمِ اللَّهِ
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ اٰحَدَتْ لَكُمْ بِهِيْمَةً		
الْاَنۡفَامِ اِلَّا مَا يَشُلُّ عَلَيۡكُمْ غَيۡرُ الْحَبۡلِ الضَّيۡدِ وَاَنۡتُمْ حُرُمٌ		
اِنَّ اللّٰهَ يَخۡتَصِمُ مَا يُرِيۡدُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَحِلُّ اِلَآ مَا شَآءَ		
اللّٰهُ وَلَا الشَّهَرُ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدٰى وَلَا الْفَلَاحَ وَلَا الْاٰخِرَ		
الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنۡ رَّبِّهِمْ وَيُضَوِّا۟مْ وَاِذَا		
حَكَمْتُمْ فَاَصۡطَادُوْا وَلَا يَجۡرِمُكُمۡ شَتَاۡنُ قَوْمٍ اَنۡ صَدَقْتُمۡ		
عَنِ الْمَسۡجِدِ الْحَرَامِ اَنۡ تَعۡتَدُوْا وَتَعَاوَنُوْا عَلٰى الْبِرِّ وَ		
التَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلٰى الْاِثۡمِ وَالْعُدُوۡا۟نِ وَاَتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ		
اللّٰهَ شَدِيۡدُ الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيۡكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَ		
لَحۡمُ الْخِنۡزِيۡرِ وَمَاۤ اَهۡلَ الْاِغۡرَابِ اللّٰهُ بِهٖ وَبِالْمُنۡحِقَةِ وَالْمُؤَفَّقَةِ		
وَالْمُرۡكَبَةِ وَالطَّيۡفَةِ وَمَاۤ اَكَلَ السَّعۡبُ اِلَّا مَا ذَكَرۡتُمۡ وَ		
مَا دُبِحَ عَلٰى النُّصَبِ وَاَنۡ تَسۡتَقْسِمُوْا بِالْاَزۡلَامِ ذٰلِكُمۡ فَنِيۡ		
الْيَوْمِ يَسۡ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوْا مِنۡ دِيۡنِكُمۡ فَلَا تَخۡشَوۡهُمۡ وَ		
اَخۡشَوۡنَ الْيَوْمَ اَكۡمَلْتُ لَكُمۡ دِيۡنَكُمۡ وَاَتَمَمْتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمٰى		

عَلَيْكُمْ

5 सूर: मा-इद: 112

सूर: मा-इद: मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 120 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ऐ ईमान वालो! अहदों को पूरा करो,¹ तुम्हारे लिए तमाम चौपाए “यानी चार पैरों पर चलने वाले चरने वाले जानवर” (यानी ऊँट, बकरी, गाय) हलाल किए गए हैं,² मगर जिनका ज़िक्र आगे आता है, लेकिन शिकार को हलाल मत समझना जिस हालत में कि तुम एहराम में हो। बेशक अल्लाह तआला जो चाहें हुकम करें। (1) ऐ ईमान वालो! खुदा तआला की निशानियों की बेहुर्मती न करो और न हुर्मत वाले महीने की, और न (हरम में) कुरबानी होने वाले जानवर की, और न उन (जानवरों) की जिनके गले में पड़े पड़े हुए हों, और न उन लोगों की जो कि बैतुल-हराम के इरादे से जा रहे हों, अपने रब के फज़ल और रज़ामन्दी के तालिब हों। और जिस वक़्त तुम एहराम से बाहर आ जाओ तो शिकार किया करो। और ऐसा न हो कि तुमको किसी कौम से, जो इसी सबब से बुग़ज़ है कि उन्होंने तुमको मस्जिदे-हराम से रोक दिया था, वह तुम्हारे लिए इसका सबब हो जाए कि तुम हद से निकल जाओ। और नेकी और परहेज़गारी में एक-दूसरे की मदद किया करो, और गुनाह और “जुल्म व” ज़्यादती में एक-दूसरे की मदद मत करो, और अल्लाह तआला से डरा करो, बेशक अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। ♦ (2) तुमपर हराम किए गए हैं मुर्दार³ और खून और ख़िन्ज़ीर “यानी सुअर” का गोशत⁴ और जो (जानवर) कि अल्लाह के अलावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो, और जो गला घुटने से मर जाए, और जो किसी चोट से मर जाए, और जो गिरकर मर जाए, और जो किसी की टक्कर से मर जाए, और जिसको कोई दरिन्दा खाने लगे लेकिन जिसको ज़िब्ह कर डालो,⁵ और जो (जानवर) इबादत गाहों पर ज़िब्ह किया जाए,⁶ और यह कि तक़सीम करो तीरों के कुरा डालने के ज़रिये, ये सब गुनाह हैं। आजके दिन ना-उम्मीद हो गये⁷ काफ़िर लोग तुम्हारे दीन से,⁸ सो उनसे मत डरना और मुझसे डरते रहना,⁹ आजके दिन मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया,¹⁰ और मैंने तुमपर अपना इनाम मुकम्मल कर दिया, और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन (बनने के लिए) पसन्द कर लिया,¹¹ पस जो शख्स शिद्दत की भूख में बेताब हो जाए शर्त यह है कि किसी गुनाह की तरफ़ उसका मैलान “यानी रुझान” न हो,¹² तो यकीनन अल्लाह तआला माफ़ करने वाले हैं, रहमत वाले हैं।¹³ (3) लोग आपसे पूछते हैं कि क्या-क्या

1. ऊपर की सूर: के ख़तम पर फ़रमाया था कि हम शरीअत के अहकाम को तुमसे बयान करते हैं। इस सूर: के शुरू में इसका हुकम है कि तुम हमारे उन बयान किए हुए शरीअत के अहकाम की पूरी-पूरी तामील करो, यह ताल्लुक तो दोनों सूरतों के आख़िर और शुरू में है, बाकी पूरी सूरतों में भी दोनों के शरीअत के अहकाम पर मुश्तमिल होने से ताल्लुक ज़ाहिर है, और खुद इस सूर: के हिस्सों में भी एक अजीब ताल्लुक और मुनासबत है कि इसके पहले की आयत एक तरह से “मतन” (यानी असल इबादत) है। और पूरी सूरत गोया उसकी शरह यानी खुलासा है, क्योंकि लफ़ज़ “अकूद” हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के कौल के मुताबिक़ शरीअत के तमाम अहकाम को आम और शामिल है और सूर: में उन्हीं अहकाम की तफ़सील है, पस अब्बलन मुख़्तसर व कुल्ली उनवान से शरीअत के अहकाम पर अमल का हुकम फ़रमाते हैं।

2. जैस हिरन, नील-गाय वगैरह सिवाय उन मवेशी जानवरों के जो कि शरीअत की दूसरी दलीलीं हदीस वगैरह से ख़ास व अलग हो चुके हैं, जैसे गधा, ख़च्चर वगैरह। इन अलग किए हुए जानवरों के सिवा और सब पालतू व जंगली जानवर हलाल हैं सिवाय उनके जिनका ज़िक्र आगे आता है।

3. यानी जो जानवर बावज़ूद इसके कि उनका ज़िब्ह करना वाजिब है, शरई तौर पर बिना ज़िब्ह किए मर जाए।

4. इसी तरह उसके सब हिस्से और अंग।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 194 पर)

तख्शौहुम् वख्शौनि, अल्यौ-म अकमल्लु लकुम् दीनकुम् व अतमस्तु अलैकुम् निअमती व रजीतु लकुमुल्-इस्ला-म दीनन्, फ-मनिज्जुर्-र फी मख्म-सतिन् गै-र मु-तजानिफिल्-लिइस्मिन् फ-इन्नल्ला-ह गफूर्रहीम (3) यस्अलून-क माज़ा उहिल्-ल लहुम् कुल् उहिल्-ल लकुमुत्तायिबातु व मा अल्लस्तुम् मिनल्-जवारिहि मुकल्लिबी-न तुअल्लिमूनहुन्-न मिम्मा अल्ल-मकुमुल्लाहु फकुलू मिम्मा अम्-सक्-न अलैकुम् वज्ज्कुरुस्मल्लाहि अलैहि वत्तकुल्ला-ह इन्नल्ला-ह सरीअुल्-हिसाब (4) अल्यौ-म उहिल्-ल लकुमुत्तायिबातु, व तआमुल्लज्जी-न ऊतुल्-किता-ब हिल्लुल्लकुम् व तआमुकुम् हिल्लुल्लहुम् वल्मुह्सनातु मिनल्-मुअ्मिनाति वल्मुह्सनातु मिनल्लज्जी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् कब्लिकुम् इज्। आतै तुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुह्सनी-न गै-र मुसाफिही-न व ला मुत्ताखिज्जी अख्दानिन्, व मय्यक्फुर बिर्ल्मानि फ-कद् हबि-त अ-मलुहू व हु-व फिल्-आखि-रति मिनल्-खासिरीन (5) ♦

या अय्युहल्लज्जी-न आमनू इज्।

कुन्तुम् इलस्सलाति फग़िसलू वुजूहकुम् व ऐदि-यकुम् इलल्-मराफिकि वम्सहू बिरुऊसिकुम् व अरजु-लकुम् इलल्कअबैनि, व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फत्तहुरू, व इन् कुन्तुम् मरज़ा औ अला स-फरिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्गा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ-लम् तजिदू माअन् फ-तयम्म-मू सअीदन् तय्यिबन् फम्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु, मा युरीदुल्लाहु लि-यज्अ-ल अलैकुम् मिन् ह-रजिन्-व लाकिंय्युरीदु लियुतहिह-रकुम् व लियुतिम्-म

وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ وَنِهَاةً فِي مَخْصَصَةٍ غَيْرِ
مُتَّحِنَةٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَتْلُونَكَ مَاذَا
أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِ
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ وَمَا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَعَلُوا مِمَّا أَمَرْتُمْ
عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا الْمَسْمُومَاتِ عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۝ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ حَلَلٌ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حَلَلٌ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ فَخُصِمْنَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ
وَلَا تُنْكِحُوا مَا أَخَذَ إِيَّاهُ مَنْ يَكْفُرُ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ
عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَجْزَلُكُمْ إِلَى الْكُعْبَيْنِ فَإِن
كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا وَإِن كُنْتُمْ مَرْضَى أَوْ عَلَى سَفَرٍ أَوْ
جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا
مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَوْيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ

(जानवर) उनके लिए हलाल किए गए हैं, आप फरमा दीजिए कि तुम्हारे लिए कुल हलाल (जानवर) हलाल रखे हैं, और जिन शिकारी जानवरों को तुम तालीम दो और तुम उनको छोड़ो भी, और उनको उस तरीके से तालीम दो जो तुमको अल्लाह तआला ने तालीम दिया है, तो ऐसे शिकारी जानवर जिस (शिकार) को तुम्हारे लिए पकड़ें उसको खाओ और उसपर अल्लाह का नाम भी लिया करो, और अल्लाह से डरते रहा करो, बेशक अल्लाह तआला जल्दी हिसाब लेने वाले हैं। (4) आज तुम्हारे लिए हलाल चीजें हलाल रखी गईं और जो लोग किताब दिए गए हैं उनका खाना (यानी ज़बीहा) तुमको हलाल है, और तुम्हारा खाना (यानी ज़बीहा) उनको हलाल है, और पारसा औरतें भी जो मुसलमान हों, और पारसा औरतें उन लोगों में से भी जो तुमसे पहले किताब दिए गए हैं जबकि तुम उनका मुआवज़ा दे दो,¹ इस तरह से कि तुम बीवी बनाओ, न तो एलानिया बदकारी करो न खुफिया ताल्लुकात पैदा करो,² और जो शख्स ईमान के साथ कुफ़ करेगा³ तो उस शख्स का अमल ग़ारत हो जाएगा और वह आख़िरत में बिल्कुल घाटे में होगा।⁴ (5) ♦

ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ को उठने लगे तो अपने चेहरों को धोओ और अपने हाथों को भी (धोओ) कोहनियों समेत, और अपने सरों पर हाथ फेरो और (धोओ) अपने पैरों को भी टख़नों समेत,⁵ और अगर तुम नापाकी की हालत में हो तो (सारा बदन) पाक करो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र की हालत में हो, या तुममें से कोई शख्स इस्तन्जे से आया हो या तुमने बीवियों से नज़दीकी की हो, फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पाक ज़मीन से तयम्मूम (कर लिया) करो, यानी अपने चेहरों और हाथों पर हाथ फेर लिया करो इस (ज़मीन पर) से,⁶ अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर नहीं कि तुमपर कोई तंगी डालें,⁷ लेकिन उसको (यानी अल्लाह तआला को) यह मन्ज़ूर है कि तुमको पाक साफ़ रखे,⁸ और यह कि तुमपर अपना इनाम पूरा फरमाए ताकि तुम शुक्र अदा करो। (6) और

(पृष्ठ 192 का शेष)

5. यानी “दम घुटने” से, “जिसको दरिन्दा खाने लगे” तक जिनका ज़िक्र है उनमें से जिनको दम निकलने से पहले शरई कायदे के मुताबिक ज़िह्न कर डालो वे इस हराम होने के हुक्म से अलग हैं।

6. अगरचे ज़बान से अल्लाह के ग़ैर के लिए नामज़द न करे, क्योंकि हराम होने का दारोमदार बुरी नीयत पर है, इसका ज़ाहिर होना कभी कौल से होता है कि नामज़द करे और कभी फ़ैल से होता है कि ऐसे मक़ामात पर ज़िह्न कराए।

7. आजके दिन से मुराद खास दिन नहीं, बल्कि वह ज़माना मुराद है जिसमें उससे मिला हुआ शुरू व आख़िर का ज़माना भी मुराद है, पस अगर उसके बाद भी किसी हुक्म का नाज़िल होना साबित हो तो मुकम्मल करने यानी अहक़ाम को मुकम्मल करने पर एतिराज़ लाज़िम नहीं आता।

8. क्योंकि माशा-अल्लाह इस्लाम का ख़ूब फैलाव हो गया।

9. यानी मेरे अहक़ाम की मुख़ालफ़त मत करना।

10. कुव्वत में भी जिससे कुफ़्रार को मायूसी हुई और अहक़ाम व कायदों में भी।

11. यानी कियामत तक तुम्हारा यही दिन रहेगा इसको मन्सूख़ करके दूसरा दिन तजवीज़ न किया जाएगा।

12. यानी न ज़रूरत से ज़्यादा खाए और न लज़्ज़त मक़सूद हो।

13. यह आयत जैसा कि इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया, असर के वक़्त जुमा के दिन ज़िलहिज्जा की नवीं तारीख़ हिज्जतुल विदाअ में जो दस हिजरी में हुआ था, नाज़िल हुई है और इसके नाज़िल होने के करीब तीन महीने के बाद तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन्दा रहे।

1. यानी महर देना अगरचे शर्त नहीं मगर वाजिब है।

2. ये सब शरीअत के अहक़ाम हैं जिनपर ईमान लाना फ़र्ज़ है।

3. जैसे क़तई हलाल के हलाल होने और क़तई हराम के हराम होने का इनकार करेगा।

4. इसलिए हलाल समझो और हराम को हराम समझो।

5. ये चार चीज़ें फ़र्ज़ हैं, तुज़ू में बाकी चीज़ें मसनून व पसन्दीदा हैं।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 196 पर)

निअम्-तहू अलैकुम् लअल्लकुम् तश्कुरुन (6) वज्कुरु निअ-मतल्लाहि अलैकुम् व मीसाकहुल्लजी वास-ककुम् बिही इज़् कुल्लुम् समिअना व अतअना वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह अलीमुम् बिजातिस्सुदूर (7) या अय्युहल्लजी-न आमनू कूनू कव्वामी-न लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्किस्ति व ला यजिमन्नकुम् श-नआनु कौमिन् अला अल्ला तअदिलू, इअदिलू, हु-व अकरबु लित्तक्वा वत्तकुल्ला-ह,

इन्नल्ला-ह खाबीरुम्-बिमा तअमलून

(8) व-अदल्लाहुल्लजी-न आमनू व

अमिलुस्सालिहाति लहुम् मरिफ-रतुव्-व

अज्जुन् अजीम (9) वल्लजी-न क-फरु

व कज्जबू बिआयातिना उलाइ-क

अस्हाबुल्-जहीम (10) या

अय्युहल्लजी-न आमनुज्कुरु

निअ-मतल्लाहि अलैकुम् इज़् हम्-म

कौमुन् अय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम्

फ-कफ़-फ ऐदि-यहुम् अन्कुम्

वत्तकुल्ला-ह, व अलल्लाहि

फल्य-तवक्कलिल् मुअमिनून (11) ♦

व ल-कद् अ-खजल्लाहु मीसा-क

बनी इस्राई-ल व बअसना मिन्हुमुसै

अ-श-र नकीबन्, व कालल्लाहु इन्नी

म-अकुम्, ल-इन् अकम्तुमुस्सला-त व आतैतुमुज्जका-त व आमन्तुम् बिरुसुली व

अज्जर्तुमुहुम् व अकरज्जुमुल्ला-ह करजन् ह-सनल् ल-उकफिफरन्-न अन्कुम् सय्यिआतिकुम्

व ल-उद्खिलन्नकुम् जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु फ-मन् क-फ-र बअ-द

जालि-क मिन्कुम् फ-कद् जल्-ल सवाअस्सबील (12) फबिमा नक्जिहिम् मीसाकहुम्

قوله مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ
لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَ
اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الّذِي وَثَقَكُمْ بِهِ
إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ
بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا نَقَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا
إِعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ
بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ
اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ
أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ
اثْنَيْ عَشَرَ نَبِيًّا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقِمْتُمُ الصَّلَاةَ
وَأَتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ
اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ

तुम लोग अल्लाह तआला के इनाम को जो तुमपर हुआ है याद करो और उसके उस अहद को भी जिसका तुमसे मुआहदा किया है, जबकि तुमने कहा था कि हमने सुना और मान लिया, और अल्लाह तआला से डरो बिना शुब्हा अल्लाह तआला दिलों तक की बातों की पूरी ख़बर रखते हैं।¹ (7) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला के लिए पूरी पाबन्दी करने वाले, इन्साफ़ के साथ शहादत अदा करने वाले रहो, और किसी ख़ास कौम की दुश्मनी तुम्हारे लिए इसका सबब न हो जाए कि तुम अदल “यानी इन्साफ़” न करो। इन्साफ़ किया करो कि वह तक्वे “यानी परहेज़गारी” से ज़्यादा करीब है, और अल्लाह से डरो, बिना शुब्हा अल्लाह तआला को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है।² (8) अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों से जो ईमान ले आए और उन्होंने अच्छे काम किए वायदा किया है कि उनके लिए मफ़िरत और बड़ा सवाब है। (9) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारे अहकाम को झूठा ठहराया ऐसे लोग दोज़ख़ में रहने वाले हैं। (10) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला के इनाम को याद करो जो तुमपर हुआ है, जबकि एक कौम फ़िक् में थी³ कि तुमपर हाथ डाल दें, सो अल्लाह तआला ने तुमपर उनका काबू न चलने दिया, और अल्लाह तआला से डरो,⁴ और ईमान वालों को हक़ तआला ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11) ♦

और अल्लाह तआला ने बनी इसराईल से अहद लिया था, और हमने उनमें से बारह सरदार मुकर्रर किए, और अल्लाह तआला ने (यूँ) फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ की पाबन्दी रखोगे और ज़कात अदा करते रहोगे और मेरे सब रसूलों पर ईमान लाते रहोगे और उनकी मदद करते रहोगे और अल्लाह को अच्छे तौर पर कर्ज़ देते रहोगे,⁵ तो मैं ज़रूर तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दूँगा और ज़रूर तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। और जो शख्स इसके बाद भी कुफ़्र करेगा तो बेशक वह सही रास्ते से दूर जा पड़ा।⁶ (12) तो

(पृष्ठ 194 का शेष)

6. ऊपर पाकी के अहकाम ज़िक्र किए गए हैं जिनमें बन्दों की रियायत, सहूलत और मस्तहत का लिहाज़ है, आगे इस पाकी और रियायत पर एहसान ज़ाहिर फ़रमाते हैं और शुक्र अदा करने की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं।

7. यानी यह मन्ज़ूर है कि तुमपर कोई तंगी न रहे, चुनाँचे ज़िक्र हुए अहकाम में ख़ास तौर पर और शरीअत के कुल अहकाम में आम तौर पर सहूलत व मस्तहत की रियायत ज़ाहिर है।

8. इसलिए तहारत (यानी पाकी) के कायदे और तरीके तय किए और किसी एक तरीके पर बस नहीं किया कि अगर वह न हो तो तहारत मुम्किन ही न हो।

1. इसलिए जो काम करो उसमें इज़्ज़ास व एतिकाद भी होना चाहिए, सिर्फ़ दिखावे के लिए हुक्म मानना काफ़ी नहीं।

2. ऐसी आयत पार: वल्मुहसनात के आख़िर के करीब में भी आ चुकी है। और दोनों में फ़र्क़ यह है कि बेइन्साफ़ी की वजह दो चीज़ें होती हैं, या तो एक फ़रीक़ की रियायत या किसी फ़रीक़ की दुश्मनी, वहाँ पहला सबब ज़िक्र है यहाँ दूसरा सबब। चुनाँचे वहाँ अल्फ़ाज़ “व लौ अला अन्फ़ुसिकुम् अविल् वालिदैनि वल् अक़रबी-न इय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़कीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा” और यहाँ लफ़ज़ “श-नआनु” इसकी साफ़ दलील है, पस इस फ़र्क़ के बाद दोहराना न रहा।

3. यानी कुरैश के काफ़िर शुरू इस्लाम में जबकि मुसलमान कमजोर थे।

4. शुरू सूरत से यहाँ तक अक्सर आयतों में हक़ तआला से डरने का हुक्म फ़रमाया है, एक जगह लफ़ज़ “ख़शिय्यत” से बाकी जगह लफ़ज़ “तक्वा” से। इससे मालूम होता है कि इसको हुक्म मानने में बहुत दख़ल है, चुनाँचे ज़ाहिर भी है।

5. ख़ैर में ख़र्च करने को मजाज़न् (अवास्तविकता के तौर पर) कर्ज़ इसलिए फ़रमा दिया कि जिस तरह कर्ज़ का अदा करना लाज़िम होता है उसी तरह अल्लाह तआला इसका बदला ज़रूर देगे।

6. यहाँ उस शख्स का हाल बयान नहीं फ़रमाया जो कुफ़्र न करे लेकिन आमाल की पूरी पाबन्दी भी न करे, और कुरआन मजीद में अक्सर जगह यही आदत है कि इलाअत में जो कामिल हो और मुख़ालफ़त में जो कामिल हो ज़्यादा ज़िक्र उन्हीं का होता है, वजह यह है कि दोनों तरफ़ वालों के हाल से बीच का हाल अक्लमन्द को खुद अन्दाज़े और क़यास से मालूम हो जाता है, कि उनकी ऐसी जज़ा होगी, ऐसी सज़ा होगी, फिर हदीसों में तफ़सील मालूम हो गई।

लअन्नाहुम् व जअल्ना कुलूबहुम् कासि-यतन् युहरिफूनल्कलि-म अम्-मवाजिअिही व नसू
हज्जम् मिम्मा जुक्किरु बिही व ला तजालु तत्तलिअु अला खाइ-नतिम् मिन्हुम् इल्ला कलीलम्
मिन्हुम् फअफु अन्हुम् वस्फह, इन्नल्ला-ह युहिबुल् मुहिसनीन (13) व मिनल्लजी-न कालू

इन्ना नसारा अखज्जा मीसाकहुम् फ-नसू
हज्जम् मिम्मा जुक्किरु बिही फ-अग्रैना
बैनहुमुल् अदा-व-त वल्बग्जा-अ इला
यौमिल्-कियामति, व सौ-फ
युनब्बिउहुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअून
(14) या अह्लल्-किताबि कद् जाअकुम्
रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम्-मिम्मा
कुन्तुम् तुख्फू-न मिनल्-किताबि व
यअफू अन् कसीरिन्, कद् जाअकुम्
मिनल्लाहि नूरुव्-व किताबुम् मुबीन
(15) यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त-ब-अ
रिज्वानहू सुबुलस्सलामि व युखिरजुहुम्
मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि बि-इज्जिनी व
यह्दीहिम् इला सिरातिम् मुस्तकीम (16)

بَدَلْتُ بَحْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بِكَ ذَلِكُمُ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ التَّبِيلِ ۝ فَبِمَا نَفَعْنَاهُمْ مِيثَاقَهُمْ
لَهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ
مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ
عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا فَهُمْ قَاتِعُ عَنْهُمْ وَأَصْفَرُّ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتْسِخِرِينَ ۝ وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نُنْصَرِي
الْعَذَابَ نَامِثًا قَهُمْ فَسَوِّحًا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ
اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ
رَسُولُنَا يَتَّبِعُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ۝
يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمُ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ
مُبْتَرَقِيمٍ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ
مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ
الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَآلَهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ

مَرْكَز

ल-कद् क-फरल्लजी-न कालू इन्नल्ला-ह हुवल-मसीहुब्नु मरय-म, कुल् फ-मय्यम्लिकु
मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द अय्युह्लिकल्- मसीहब्-न मरय-म व उम्म-हू व मन्
फिल्अर्जि जमीअन्, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनहुमा, यख्लुकु मा
यशा-उ, वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीर (17) व कालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु

सिर्फ उनके अहद तोड़ने की वजह से हमने उनको अपनी रहमत से दूर कर दिया, और हमने उनके दिलों को कठोर कर दिया। वे लोग कलाम को उसके मौकों से बदलते हैं,¹ और वे लोग जो कुछ उनको नसीहत की गई थी उसमें से एक बड़ा हिस्सा जाया कर बैठे, और आपको आए दिन किसी न किसी (नई) ख़ियानत की इत्तिला होती रहती है² जो उनसे सादिर होती है सिवाय उनमें के गिनेचुने चन्द शख्सों के, सो आप उनको माफ़ कीजिए और उनसे दरगुज़र कीजिए, बिला शुब्हा अल्लाह तआला अच्छा मामला करने वाले लोगों से मुहब्बत करता है।³ (13) और जो लोग कहते हैं कि हम ईसाई हैं, हमने उनसे भी उनका अहद लिया था, सो वे भी जो कुछ उनको नसीहत की गई उसमें से अपना एक बड़ा हिस्सा जाया कर बैठे, तो हमने उनमें आपस में कियामत तक के लिए बुग़ज़ और दुश्मनी डाल दी, और उनको अल्लाह तआला उनका किया हुआ जतला देंगे।⁴ (14) ऐ किताब वालो! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आए हैं, किताब में से जिन उमूर को तुम छुपाते हो उनमें से बहुत-सी बातों को तुम्हारे सामने साफ-साफ़ खोल देते हैं और बहुत-से उमूर को दरगुज़र कर देते हैं। तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक रोशन चीज़ आई है और एक स्पष्ट किताब (15) कि उसके ज़रिए से अल्लाह तआला ऐसे शख्सों को जो हक़ की रिज़ा के तालिब हों सलामती की राहें बतलाते हैं, और उनको अपनी तौफ़ीक़ से अन्धेरियों से निफाल कर नूर की तरफ़ ले आते हैं,⁵ और उनको सही रास्ते पर कायम रखते हैं।⁶ (16) बिला शुब्हा वे लोग काफ़िर हैं जो (यूँ) कहते हैं कि अल्लाह तआला ऐन मसीह इब्ने मरियम है। आप (यूँ) पूछिए (कि अगर ऐसा है तो यह बतलाओ) कि अगर अल्लाह तआला हज़रत मसीह इब्ने मरियम को और उनकी माँ को और जितने ज़मीन में हैं उन सबको हलाक करना चाहें तो कोई शख्स ऐसा है जो खुदा तआला से उनको ज़रा भी बचा सके, और अल्लाह तआला ही के लिए ख़ास है हुक्मत आसमानों पर और ज़मीन पर, और जितनी चीज़ें इन दोनों के दरमियान हैं उनपर, और वह जिस चीज़ को चाहें पैदा कर दें, और अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है।⁷ (17) और यहूद व नसारा “यानी ईसाई” दावा

1. यानी लफ़्ज़ी रद्दोबदल या मायनों में रद्दोबदल करते हैं।

2. नई ख़ियानत यह कि एक बार जैसे रज़ूम (यानी अगर ज़िना करने वाला शादीशुदा हो तो पत्थरों से हलाक करने) के हुक्म को छुपा लिया। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरियाफ़्त फ़रमाने पर तौरात का एक मज़मून ग़लत बयान कर दिया, जिसपर आयत “ला तस्स-बन्नल्लजी-न यफ़रहु-न” नाज़िल हुई थी, और जैसे हलाल चीज़ों के हराम करने के कदीमी होने का एक बार ग़लत दावा किया था जिसपर शुरू पार: लन्-तनालू में आयत “कुलू फ़अतू बिताौराति” नाज़िल हुई और वे सब ग़लत बयानियाँ जिनकी तफ़सील मय उनके बातिल होने के कुरआन मजीद में जगह-जगह मज़कूर है, इसमें दाख़िल हैं, जैसे “लन् तमस्स-नन्नारु” और “लैय्यदख़ुलल जन्न-त इल्ला मन् क़-न हूदन् औ नसारा” और “नस्तु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहु” और इसी तरह दूसरी ग़लत बयानियाँ।

3. ऊपर यहूद का हाल था आगे कुछ ईसाइयों का हाल बयान फ़रमाते हैं।

4. ऊपर यहूद व ईसाइयों का अलग-अलग ज़िक्र था, आगे दोनों को जमा करके नसीहत का ख़िताब फ़रमाते हैं।

5. कुरआन के ज़रिये से सलामती की राहें बतलाना आम है लेकिन यहाँ रिज़ा-ए-हक़ के तालिबों को इसलिए ख़ास किया गया कि इससे फ़ायदा वही लोग उठाते हैं।

6. ऊपर आयत “व मिनल्लजी-न कालू इन्ना नसारा” में ईसाइयों के अहद तोड़ने का मुख़्तसर तौर पर बयान था, आगे उनके बाज़ अक्रायद को तय किया गया है कि वह तौहीद में खलल डालना है।

7. ऊपर यहूद और ईसाइयों के बाज़-बाज़ बुरे आमाल और ख़राबियाँ ज़िक्र की गई थीं आगे उनमें से एक मुश्तरक़ा और मामले और उसके बातिल होने का बयान है, यानी दोनों फ़रीक़ बावजूद कुफ़ व नाफ़रमानी के अपने अल्लाह तआला के नज़दीक़ मुक़रब और मक़बूल होने के दावेदार थे।

अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहू, कुल् फलि-म युअज़िबुकुम् बिजुनूबिकुम्, बल् अन्तुम् ब-शरुम्
मिम्-मन् खा-ल-क, यग़्फिरु लिमय्यशा-उ व युअज़िबु मय्यशा-उ, व लिल्लाहि
मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा बैनुहमा व इलैहिल्-मसीर (18) या अह्लल्-किताबि कद्
जाअकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् अला फ़तरतिम् मिनरुसुलि अन् तक्लू मा जाअना

मिम्-बशीरिन्-व ला नज़ीरिन् फ-कद्
जा-अकुम् बशीरुन्-व नज़ीरुन्, वल्लाहु
अला कुल्लि शैइन् कदीर (19) ♦

व इज़् का-ल मूसा लिकौमिही या
कौमिज़्कुरु निअ-मतल्लाहि अलैकुम्
इज़् ज-अ-ल फीकुम् अम्बिया-अ व
ज-अ-लकुम् मुलूकव्-व आताकुम् मा
लम् युअति अ-हदम् मिनल्-आलमीन
(20) या कौमिदख़ुलुल् अरज़ल्
मुकद्-सतल्लती क-तबल्लाहु लकुम् व
ला तरतद्दू अला अद्बारिकुम्
फ-तन्कलिबू खासिरीन (21) कालू या
मूसा इन्-न फीहा कौमन् जब्बारी-न व
इन्ना लन् नदख़ु-लहा हत्ता यख़रूजू
मिन्हा फ-इय्यख़रूजू मिन्हा फ-इन्ना

दाख़िलून (22) का-ल रजुलानि मिनल्लज़ी-न यखाफू-न अन्-अमल्लाहु अलैहिमदख़ुल्
अलैहिमुल्बा-ब फ-इज़ा दख़ल्लुमूहु फ-इन्नकुम् ग़ालिबू-न, व अलल्लाहि फ-तवक्कलू इन्
कुन्तुम् मुअ्मिनीन (23) कालू या मूसा इन्ना लन् नदख़ु-लहा अ-बदम् मा दामू फीहा

لَا يَحْسِبُ اللَّهُ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ
أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ
بَشَرٌ مِّثْلُ بَشَرٍ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَاللَّهُ الْمَصْدِقُ ۝
يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فَتْرَةٍ
مِّنَ الرَّسُولِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ ۝
فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنبِيَاءَ وَجَعَلَ لَكُم مِّلَّةً وَاتَّكَمَ
مَا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۝ يَقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ
الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتُدُّوا عَلَىٰ دُبُرِكُمْ
فَتَقْتُلُوا خِيسَرِينَ ۝ قَالُوا يَا مَوْسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ
وَإِنَّا لَنَدْخُلُهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا ۖ إِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا
فَأِنَّا لَدْخُلُون ۝ قَالَ رَجُلٌ مِّنَ الَّذِينَ يَخْفَوْنَ أَعْمَلَ اللَّهُ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ

مِّنْ

करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं,¹ आप (यह) पूछिए कि (अच्छा तो) फिर तुमको तुम्हारे गुनाहों के बदले अज़ाब क्यों देंगे, बल्कि तुम भी और सब मख्लूक ही की तरह के एक (मामूली) आदमी हो, अल्लाह तआला जिसको चाहेंगे बख्शेंगे और जिसको चाहेंगे सज़ा देंगे, और अल्लाह तआला ही की है सब हुक्मत आसमानों में भी और ज़मीन में भी और जो कुछ उनके दरमियान में है (उनमें भी)। उसी की (यानी अल्लाह ही की) तरफ़ सबको लौटकर जाना है। (18) ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे (ये) रसूल आ पहुँचे जो कि तुमको साफ़-साफ़ बतलाते हैं, ऐसे वक़्त में कि रसूलों का सिलसिला मौकूफ़ “यानी रुका हुआ और बन्द” था,² ताकि तुम (यूँ न) कहने लगे कि हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला नहीं आया। सो तुम्हारे पास खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले आ चुके हैं, और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं। (19) ♦

और (वह वक़्त भी ज़िक्र के काबिल है) जब मूसा ने अपनी कौम से फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह तआला के इनाम को जो कि तुमपर हुआ है याद करो, जबकि अल्लाह तआला ने तुममें से बहुत-से पैग़म्बर बनाए और तुमको मुल्क वाला बनाया और तुमको वे चीज़ें दीं जो दुनिया ज़हान वालों में से किसी को नहीं दीं। (20) ऐ मेरी कौम! बरकत वाले मुल्क में दाख़िल हो कि इसको अल्लाह तआला ने तुम्हारे हिस्से में लिख दिया, और पीछे वापस मत चलो कि फिर बिलकुल ख़सारे में पड़ जाओगे।³ (21) कहने लगे कि ऐ मूसा! वहाँ तो बड़े-बड़े ज़बरदस्त आदमी हैं, और हम तो वहाँ हरगिज़ क़दम न रखेंगे जब तक कि वे वहाँ से (न) निकल जाएँ, (हाँ) अगर वे वहाँ से (कहीं और) चले जाएँ तो हम बेशक जाने को तैयार हैं। (22) उन दो शख्सों ने जो कि डरने वालों में से थे, जिनपर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया था, कहा कि तुम उनपर दरवाज़े तक तो चलो, सो जिस वक़्त तुम दरवाज़े में क़दम रखोगे उसी वक़्त ग़ालिब आ जाओगे, और अल्लाह तआला पर नज़र रखो अगर तुम ईमान रखते हो। (23) कहने लगे कि ऐ मूसा! हम तो हरगिज़ कभी भी वहाँ क़दम न रखेंगे जब तक कि वे लोग वहाँ मौजूद हैं, तो आप और

1. मतलब यह मालूम होता है कि हमको इस वजह से कि नबियों की औलाद व नस्ल से हैं दूसरे लोगों की बनिस्बत अगरचे वे हमारे मज़हब के क्यों न हों, अल्लाह तआला के साथ यह खुसूसियत है कि हमसे बावजूद नाफ़रमानियों के भी औरों के बराबर नाख़ुश नहीं होते, जैसे बाप के साथ औलाद को यह खुसूसियत होती है कि अगर वह नाफ़रमानी भी करे तब भी उसके दिल पर वह असर नहीं होता जो किसी ग़ैर-आदमी के उसी की नाफ़रमानी करने से होता है, अल्लाह तआला इसका रद्द फ़रमाते हैं।

2. ईसा अलैहिस्सलाम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरमियान जो ज़माना है वह ज़माना “फ़ितरत” का कहलाता है। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि यह ज़माना छह सौ साल का है, और इस दरमियान में कोई नबी नहीं भेजे गए।

3. दुनिया में भी मुल्क के विस्तार से महरूम रहेंगे और आख़िरत में भी कि जिहाद के फ़रीजे को छोड़ने से गुनाहगार होंगे।

फज्हब् अन्-त व रब्बु-क फकातिला इन्ना हाहुना काअिदून (24) का-ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफसी व अखी फफरुक् बैनना व बैनल् कौमिल् फासिकीन (25) का-ल फ-इन्नहा मुहरर-मतुन् अलैहिम् अरबअी-न स-नतन् यतीहू-न फिल्अर्जि, फला तअ-स अलल् कौमिल्-फासिकीन (26) ♦

वत्तु अलैहिम् न-बअब्बै आद-म बिल्हक्कि ✱ इज़् करर्बा कुरबानन् फतुकुब्बि-ल मिन् अ-हदिहिमा व लम् यु-तकब्बल् मिनल्-आखरि, का-ल लअकतुलन्न-क, का-ल इन्नमा य-तकब्बलुल्लाहु मिनल् मुत्तकीन ● (27) ल-इम् बसत्-त इलय्-य य-द-क लितकतु-लनी मा अ-न बिबासितिंय्-यदि-य इलै-क लिअकतु-ल-क इन्नी अखाफुल्ला-ह रब्बल्-आलमीन (28) इन्नी उरीदु अन् तबू-अ बि-इस्मी व इस्मि-क फ-तकू-न मिन् अस्थाबिन्नारि व ज़ालि-क जज़ाउज़्जालिमीन (29)

फतव्व-अत् लहू नफ्सुहू कत्-ल अखीहि फ-क-त-लहू फ-अस्ब-ह मिनल्

खासिरीन (30) फ-ब-असल्लाहु गुराबय्यब्बसु फिल्अर्जि लियुरि-यहू कै-फ युवारी सौअ-त अखीहि, का-ल या वै-लता अ-अजज्तु अन् अकू-न मिस-ल हाज़ल्गुराबि फ-उवारि-य सौअ-त अखी फ-अस्ब-ह मिनन्नादिमीन (31) मिन् अज्लि ज़ालि-क कतब्ना अला बनी इस्राई-ल अन्नहू मन् क-त-ल नफ्सम् बिगैरि नफिसन् औ फसादिन् फिल्अर्जि फ-कअन्नमा

غُلِبُونَ ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا
يُؤْتِيهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ أَمْ لَا إِنَّ أَوَّلَ مَا دُخِلَ فِيهَا فَادْمَغُوكَ
وَرَبُّكَ فَغَاتِلَا إِنَّهَا مُهْنٌ قَاعِدُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ
إِلَّا أَنْفُسِي وَأَخِي فَأَفِرُّ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝
قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتَيَقَّنُونَ فِي
الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۖ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِمُ
نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقْبِلَ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ لَكِنْ بَسَطَ إِلَهُ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا
أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَنَّكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ۝ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبْوَءَ بِإِصْحَاقَ وَإِثْنِكَ فَتَكُونُ مِنْ
أَصْحَابِ النَّارِ ۖ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۖ فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ
قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ فَبَعَثَ اللَّهُ
غُرَابًا يَبْحِثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِثُ سَوَادَ أَخِيهِ
قَالَ يُؤْنِسُكَ إِنَّمَا كُنْتُ وَبَشَلٌ هَذَا الْغُرَابُ فَأَوَارَى
سَوَادَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ الْمُنْصَرِّينَ ۖ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ

आपके अल्लाह मियाँ चले जाइए और दोनों लड़-भिड़ लीजिए, हम तो यहाँ से सरकते नहीं। (24) (मूसा) दुआ करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मैं अपनी जान और अपने भाई पर अलबत्ता इख्तियार रखता हूँ। सो आप हम दोनों के और इस नाफरमान कौम के दरमियान फैसला फरमा दीजिए। (25) इरशाद हुआ कि यह (मुल्क) तो उनके हाथ चालीस साल तक न लगेगा, यूँ ही ज़मीन में सर मारते फिरते रहेंगे। सो आप इस बेहुकम कौम पर ग़म न कीजिए। (26) ♦

और आप इन अहले किताब को आदम के दो बेटों का किस्सा सही तौर पर पढ़कर सुनाइए, जबकि दोनों ने एक-एक नियाज़ पेश की और उनमें से एक की तो मकबूल हो गई और दूसरे की मकबूल न हुई। (वह दूसरा) कहने लगा कि मैं तुझको ज़रूर क़त्ल करूँगा, (उस एक ने) जवाब दिया कि खुदा तआला मुत्तकियों का ही अमल कबूल करते हैं। ● (27) अगर तू मुझपर मेरे क़त्ल करने के लिए दस्त-दराज़ी करेगा जब भी मैं तुझपर तेरे क़त्ल करने के लिए हरगिज़ दस्त-दराज़ी करने वाला नहीं, मैं तो खुदा परवर्दिगारे आलम से डरता हूँ। (28) मैं (यूँ) चाहता हूँ कि तू मेरे गुनाह और अपने गुनाह सब अपने सर रख ले, फिर तू दोज़खियों में शामिल हो जाए, और यही सज़ा होती है जुल्म करने वालों की। (29) सो उसके जी ने उसको अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर दिया, फिर उसको क़त्ल ही कर डाला जिससे बड़े नुकसान उठाने वालों में शामिल हो गया। (30) फिर अल्लाह तआला ने एक कौआ भेजा कि वह ज़मीन को खोदता था ताकि उसको तालीम कर दे कि अपने भाई की लाश को किस तरीके से छुपाए। कहने लगा कि अफ़सोस मेरी हालत पर! क्या मैं इससे भी गया गुज़रा कि इस कौए ही के बराबर होता और अपने भाई की लाश को छुपा देता, सो बड़ा शर्मिन्दा हुआ। (31) इसी वजह से हमने बनी इसराईल पर यह लिख दिया कि जो शख्स किसी शख्स को बिना मुआवज़ा दूसरे शख्स के या बिना किसी फ़साद के (जो ज़मीन में उससे

1. चुनौचे चालीस साल तक ज़मीन के एक महदूद हिस्से में हैरान व परेशान फिरा किए, यहाँ तक कि सब वहाँ ही ख़त्म हो चुके। इस मुद्दत में उनके जो औलाद पैदा हुई उनको रिह्राई हासिल हुई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनसे ज़रा मुद्दत पहले हज़रत हारून अलैहिस्सलाम भी उस वादी में जिसे वादी-ए-तीह कहते हैं इन्तिकाल फ़रमा गए और हज़रत यूशा अलैहिस्सलाम जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है पैग़म्बर हुए और उनकी मारफ़त इस नई नस्ल बनी इसराईल को उस मुल्क की फ़तह का हुक्म हुआ, चुनौचे सबने उनके साथ होकर जिहाद किया और फ़तह हुई।

2. ऊपर अहले किताब की बहुत-सी बुराइयों में से उनका यह कौल नक़ल फ़रमाया था कि “नस्तु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहु” जिसका मन्शा अम्बिया अलैहिस्सलाम की औलाद में होने पर फ़ख़्र था, हक़ तआला इस घमण्ड के तोड़ने के लिए आगे हाबील व काबील का किस्सा बयान फ़रमाते हैं कि आदम अलैहिस्सलाम के हकीकी बेटे होने में इन मुद्दइयों से बढ़कर दोनों भाई बराबर थे, मगर उनमें भी मकबूल वही हुआ जो हुक्म का फ़रमाँबरदार रहा, यानी हाबील, और दूसरे ने नाफ़रमानी की तो वह मरदूद हो गया और आदम का बेटा होना कुछ काम न आया।

3. आयत के आख़िर में जो उसका शर्मिन्दा होना ज़िक्र किया गया है, यह शर्मिन्दा होना मुफ़स्सरीन के कौल के मुताबिक़ क़त्ल पर नहीं, ताकि तौबा का शुब्हा हो, बल्कि क़त्ल करने पर जो परेशानियाँ पेश आईं उनपर है, जैसे लाश के दफ़न में हैरान होना और कौए की तालीम का मोहताज़ होना और बद-हवास हो जाना, या बाज़ मुफ़स्सरीन ने लिखा है कि बदन का काला हो जाना और आदम अलैहिस्सलाम का नाराज़ हो जाना।

क-तलन्ना-स जमीअन् व मन् अह्याहा फ-कअन्नमा अह्यन्ना-स जमीअन्, व ल-कद् जाअत्हुम् रुसुलुना बिल्बय्यिनाति सुम्-म इन्-न कसीरम् मिन्हुम् बअ-द जालि-क फिल्अर्जि ल-मुस्तिफून (32) इन्नमा जज़ा-उल्लज़ी-न युहारिबूनल्ला-ह व रसूलहू व यस्औ-न फिल्अर्जि फसादन् अय्युकत्तलू औ युसल्लबू औ तुकत्त-अ ऐदीहिम् व अरजुलुहुम् मिन् ख़िलाफिन् औ युन्फौ मिनल्-अर्जि, जालि-क लहुम् ख़िज़युन् फिद्दुन्या व लहुम् फिल्-आख़ि-रति अज़ाबुन् अज़ीम (33) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिन् कब्लि अन् तक्दिरु अलैहिम् फअल्लम् अन्नल्ला-ह गफ़ूररहीम (34) ♦

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तकुल्ला-ह वक्तागू इलैहिल् वसी-ल-त व जाहिदू फी सबीलिही लअल्लकुम् तुफ़िलहून (35) इन्नल्लज़ी-न क-फरू लौ अन्-न लहुम् मा फिल्अर्जि जमीअं व-व मिस्लहू म-अहू लियफ़तदू बिही मिन् अज़ाबि यौमिल्-कियामति मा तुकुब्बि-ल मिन्हुम् व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (36)

युरीदू-न अय्यख़रूजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिन्हा व लहुम् अज़ाबुम् मुकीम (37) वस्सारिक्कु वस्सारि-कतु फक्ताअू ऐदि-यहुमा जज़ाअम् बिमा क-सबा नकालम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अज़ीजुन् हकीम (38) फ-मन् ता-ब मिम्-बअदि जुल्मिही व अस्ल-ह फ-इन्नल्ला-ह यतूबु अलैहि, इन्नल्ला-ह गफ़ूररहीम (39) अलम् तअल्लम् अन्नल्ला-ह लहू

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
كَيْتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ
أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا
فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولًا بِالْأَمَانَةِ
فَكُفِرُوا كَثِيرًا فَمِنْهُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَكَيْسٌ فَوَن
جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ
فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ
مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ جَزَاءُ فِي الدُّنْيَا
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ
أَن تَقْدُرُوا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَقِدُوا اللَّهَ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَا تُقْبَلُ
مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ يُرِيدُونَ أَن يُخْرِجُوكَ مِنَ الْمَدِينِ
وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ وَالَّذِينَ
وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءُ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِنَ
اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ

फैला हो) कत्ल कर डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को कत्ल कर डाला। और जो शख्स किसी शख्स को बचा ले तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया, और उनके (यानी बनी इसराईल के) पास हमारे बहुत-से पैगम्बर भी खुले दलाइल लेकर आए, फिर उसके बाद भी उनमें से बहुत-से दुनिया में ज्यादाती करने वाले ही रहे।¹ (32) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं² और मुल्क में फसाद फैलाते फिरते हैं,³ उनकी यही सज़ा है कि कत्ल किए जाएँ या सूली दिए जाएँ या उनके हाथ और पाँव मुख़ालिफ़ जानिब से काट दिए जाएँ या ज़मीन पर से निकाल दिए जाएँ। यह उनके लिए दुनिया में सख़्त रुस्वाई है और उनको आख़िरत में बड़ा अज़ाब होगा। (33) हाँ मगर जो लोग इससे पहले कि तुम उनको गिरफ़्तार करो तौबा कर लें तो जान लो कि बेशक अल्लाह तआला बख़्श देंगे, मेहरबानी फ़रमा देंगे।⁴ (34) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो और अल्लाह तआला का कुर्ब “यानी निकटता” ढूँढो और अल्लाह तआला की राह में जिहाद किया करो, उम्मीद है कि तुम कामयाब हो जाओगे।⁵ (35) यकीनन जो लोग काफ़िर हैं अगर उनके पास तमाम दुनिया भर की चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ इतनी चीज़ें और भी हों ताकि वे उसको देकर क़ियामत के दिन के अज़ाब से छूट जाएँ तब भी वे चीज़ें उनसे कबूल न की जाएँगी और उनको दर्दनाक अज़ाब होगा। (36) (इस बात की) ख़्वाहिश करेंगे कि दोज़ख़ से निकल आएँ और वे उससे (कभी) न निकलेंगे और उनको हमेशा का अज़ाब होगा। (37) और जो मर्द चोरी करे और जो औरत चोरी करे, सो उन दोनों के (दाहिने) हाथ (गट्टे पर से) काट डालो उनके किरदार के बदले में बतौर सज़ा के, अल्लाह तआला की तरफ़ से, और अल्लाह तआला बड़े कुव्वत वाले हैं (जो सज़ा चाहें मुक़र्रर फ़रमाएँ) बड़ी हिक्मत वाले हैं (कि मुनासिब ही सज़ा मुक़र्रर फ़रमाते हैं)।⁶ (38) फिर जो शख्स अपनी (इस) ज्यादाती के बाद तौबा करे और (आमाल की) दुरुस्ती रखे तो

1. बहुत-से इसलिए फ़रमाया कि बाज़े इताअत करने वाले और फ़रमाँबरदार भी थे।

2. ऊपर नाहक कत्ल की जो बिला मुआवज़ा किसी शख्स के कत्ल या ज़मीन में फसाद के हो, बुराई व क़बाहत बयान फ़रमाई थी, आगे कत्ल और उसके तहत आने वाले जैसे हाथ-पैर काटना और सज़ा का जारी करना जो कि हक़ के साथ हो, यानी ज़मीन में फसाद फैलाने और कत्ल के बदले में कत्ल करने के सबब से हो, इसका जायज़ और शरीअत में पसन्दीदा होना बयान फ़रमाते हैं, इसलिए पहले राहगीरों से लूटपाट करने वालों का हुक्म फिर चोर का हुक्म मज़कूर होता है, और उसके दरमियान और मज़मून ख़ास मुनासबत की वजह से लाया गया है।

3. मुराद इससे रहज़नी और डकैती है।

4. मतलब यह है कि ऊपर जो सज़ा मज़कूर हुई है वह अल्लाह के हक़ और सज़ा के तौर पर है, जो कि बन्दे के माफ़ करने से माफ़ नहीं होती, किसास व बन्दे के हक़ के तौर पर नहीं जो कि बन्दे के माफ़ करने से माफ़ हो जाता है, पस जब गिरफ़्तारी से पहले उन लोगों का तौबा करने वाला होना सबित हो जाए तो सज़ा ख़त्म हो जाएगी जो कि अल्लाह का हक़ था, अलबत्ता बन्दे का हक़ बाक़ी रहेगा। पस अगर माल लिया होगा तो उसका ज़िमान देना पड़ेगा और कत्ल किया होगा तो उसका किसास लिया जाएगा। लेकिन इस ज़िमान व किसास के माफ़ करने का हक़ माल वाले और मक्तूल के वली को हासिल होगा।

5. वह कामयाबी अल्लाह की रज़ामन्दी का हासिल होना और दोज़ख़ से नजात है।

6. माल की कम से कम मिक्दार जिसमें हाथ काटा जाता है दस दिरम है।

मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि, युअर्जिबु मंयशा-उ व यग्गिरु लिमंयशा-उ, वल्लाहु अला कुल्लि
शैइन् कदीर (40) या अय्युहरसूलु ला यह्जुन्कल्लजी-न युसारिअू-न फिल्कुफिर मिनल्लजी-न
कालू आमन्ना बिअप्पाहिहिम् व लम् तुअमिन् कुलूबुहुम् व मिनल्लजी-न हादू सम्माअू-न
लिल्कजिबि सम्माअू-न लिक्कौमिन्

आखरी-न लम् यअतू-क, युहर्हिफूनल्-
कलि-म मिम्-बअदि मवाजिअिही
यकूलू-न इन् ऊतीतुम् हाजा फखुजूहु व
इल्लम् तुअतौहु फहज़रू, व
मंय्युरिदिल्लाहु फित्त-तहू, फ-लन्
तम्मिल-क लहू मिनल्लाहि शैअन्,
उला-इकल्लजी-न लम् युरिदिल्लाहु
अंय्युतह्हि-र कुलूबहुम्, लहुम् फिद्दुन्या
खिज़्नुं-व लहुम् फिल्-आखि-रति
अज़ाबुन् अज़ीम (41) सम्माअू-न
लिल्कजिबि अक्कालू-न लिस्सुह्ति,
फ-इन् जाऊ-क फहकुम् बैनहुम् औ
अअ्रिज़् अन्हुम् व इन् तुअ्रिज़् अन्हुम्

फ-लंय्यजुर्स्-क शैअन्, व इन् हकम्-त फट्कुम् बैनहुम् बिल्किस्ति, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्
मुक्सितीन (42) व कै-फ युहविकमून-क व अिन्दहुमुत्तौरातु फीहा हुक्मुल्लाहि सुम्-म
य-तवल्लौ-न मिम्-बअदि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअमिनीन (43) ♦

इन्ना अन्जलुनत्तौरा-त फीहा हुदव्-व नूरुन् यत्कुमु बिहन्नबिय्यूनल्लज़ी-न अस्लमू

قَالَ اللَّهُ يَتُوبُ عَلَيْهِمْ إِنْ اللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ
اللَّهُ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ
لَا يَحْزَنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا
إِنَّمَا إِلَهُ الْإِنسَانِ ۖ وَلَمْ تُؤْمِنُوا فَلَوْ أَنَّهُمْ وَ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا
سَمِعُوا لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ لَقَوْمٌ آخَرِينَ لَمْ يَأْمُرُوا بِمَنْزِلِ
الْحُكْمِ مِنْ بَعْدِ مَا أُصِيبُوا يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوا
وَلَنْ تُؤْمِنُوا فَخُذُوا وَالسَّوْمِ يُرِيدُ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ
تَمْلِكَ لَهُ مِنْ اللَّهِ شَيْئًا أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُ اللَّهُ أَنْ يُفَتِّرَ
فَلَوْ أَنَّهُمْ لَعَنُوا فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ سَمِعُوا لِلْكَذِبِ أَكْثُونَ لِلْحَقِّ وَلَئِنْ جَاءَهُمْ
وَأَحْكَمُ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرَضُ عَنْهُمْ وَلَئِنْ تَعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ
يُضِلُّوكَ شَيْئًا وَلَئِنْ حَكَمْتَ فَأَحْكَمْ بَيْنَهُمْ يَاقِطُ ۖ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ وَكَيْفَ يُحْكِمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ
التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ لَمْ يَتَوَكَّلُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا
أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ

बेशक अल्लाह उसपर तवज्जोह फरमाएँगे, बेशक अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (39) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए (साबित) है हुक्म त सब आसमानों की और ज़मीन की, वह जिसको चाहें सज़ा दें और जिसको चाहें माफ़ कर दें, और अल्लाह तआला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है।¹ (40) ऐ रसूल! जो लोग कुफ़्र में दौड़-दौड़ गिरते हैं² आपको ग़मगीन न करें, (चाहे वे) उन लोगों में (हों) जो अपने मुँह से तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए और उनके दिल यकीन नहीं लाए,³ और (चाहे) उन लोगों में से हों जो यहूदी हैं। ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आदी हैं, (आपकी बातों) दूसरी कौम की खातिर कान धर-धर सुनते हैं। (जिस कौम के ये हालात हैं) कि आपके पास नहीं आए, कलाम को बाद इसके कि वह अपने मौके पर होता है बदलते रहते हैं। कहते हैं कि अगर तुमको यह (हुक्म) मिले तब तो इसको कबूल कर लेना और अगर तुमको यह हुक्म न मिले तो एहतियात रखना। और जिसका ख़राब होना खुदा तआला ही को मन्ज़ूर हो⁴ तो उसके लिए अल्लाह से तेरा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता। ये लोग ऐसे हैं कि अल्लाह को उनके दिलों का पाक करना मन्ज़ूर नहीं हुआ,⁵ उन लोगों के लिए दुनिया में रुस्वाई है और आख़िरत में उनके लिए बड़ी सज़ा है। (41) ये लोग ग़लत बातों के सुनने के आदी हैं, बड़े हराम खाने वाले हैं, तो अगर ये लोग आपके पास आएँ तो (आप मुख़्तार हैं) चाहे आप उनमें फैसला कर दीजिए या उनको टाल दीजिए, और अगर आप उनको टाल दें तो उनकी मजाल नहीं कि वे आपको ज़रा भी नुक़सान पहुँचा सकें, और अगर आप फैसला करें तो उनमें इन्साफ़ के मुवाफ़िक़ फैसला कीजिए,⁶ बेशक अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करते हैं।⁷ (42) और वे आपसे कैसे फैसला कराते हैं हालाँकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म है, फिर उसके बाद हट जाते हैं, और ये लोग हरगिज़ एतिकाद वाले नहीं। (43) ♦

1. सूर: के तीसरे रुकूअ से अहले किताब का ज़िक्र चला आ रहा था, दरमियान में थोड़े से और बाज़ मज़ामीन ख़ास-ख़ास मुनासबत से आ गए थे। अब आगे फिर उसी अहले किताब के ज़िक्र की तरफ़ लौटते हैं, जिनमें यहूद और उन यहूद में जो मुनाफ़िक़ थे, और ईसाई सब दाख़िल हैं, अहले किताब के इन्हीं तीनों फ़िर्क़ों का ज़िक्र मिले-जुले अन्दाज़ में यहाँ से दूर तक यानी पार: के ख़त्म तक चला गया है, फिर सूर: के ख़त्म के करीब ख़ास ईसाइयों के मुताल्लिक़ कुछ बयान आएगा।
2. यानी बेतक़ल्लुफ़ रग़बत से उन बातों को करते हैं।
3. मुराद मुनाफ़िक़ लोग हैं जो कि एक वाकिफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे।
4. यह पैदाइशी मन्ज़ूरी उस गुमराह के गुमराही का इरादा करने के बाद होती है।
5. क्योंकि यह इरादा ही नहीं करते इसलिए अल्लाह तआला पैदाइशी पाक करने का अमल नहीं फ़रमाते बल्कि उनके गुमराही के इरादे की वजह से पैदाइशी तौर पर उनका ख़राब ही होना मन्ज़ूर है। पस ज़िक्र हुए कायदे के मुवाफ़िक़ कोई शख्स उनको हिदायत नहीं कर सकता। मतलब यह है कि जब ये खुद ख़राब रहने का पुख़्ता इरादा रखते हैं और इरादे के बाद उस फ़ैल की पैदाइश और वजूद में लाना अल्लाह की आदत है और अल्लाह को किसी चीज़ को वजूद में लाने से कोई रोक नहीं सकता। फिर उनके राह पर आने की क्या उम्मीद की जाए, इससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़्यादा तसल्ली हो सकती है, जिससे कलाम शुरू भी हुआ था। पस कलाम की शुरूआत व आख़िर तसल्ली के मज़मून से हुआ। आगे उन आमाल का समरा (नतीजा और फल) बयान फ़रमाते हैं।
6. यानी इस्लामी क़ानून के मुवाफ़िक़।
7. और वह इन्साफ़ अब इस्लामी क़ानून में मुन्हसिर (यानी सीमित और महदूद) हो गया है, पस वही लोग महबूब होंगे जो इस क़ानून के मुवाफ़िक़ फैसला करेंगे।

लिल्लज्जी-न हादू वरब्बानिय्यू-न वल्-अह्वारु बिमस्तुत्फिजू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अलैहि शु-हदा-अ फला तख्शवुन्ना-स वख्शौनि व ला तशतरु बिआयाती स-मनन् कलीलन्, व मल्लम् यहकुम् बिमा अन्जलल्लाहु फ-उलाइ-क हुमुल्काफिरुन (44) व कतब्ना अलैहिम् फीहा अन्नन्फ-स बिन्नफिस वल्अ-न बिल्अनि वल्अन्-फ बिल्अन्फि वल्अजु-न बिल्-उजुनि

वस्सिन्-न बिस्सिन्नि वल्-जुरु-ह किसासुन्, फ-मन् तसद्-क बिही फहु-व कफ्फारतुल्लाह्, व मल्लम् यहकुम् बिमा अन्जलल्लाहु फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (45) व कफ्फैना अला आसारिहिम् बिअीसब्नि मर्य-म मुसद्दिकल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व आतैनाहुल् इन्जी-ल फीहि हुदव्-व नूरव्-व मुसद्दिकल्-लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व हुदव्-व मौअि-जतल् लिल्मुत्तकीन (46) वल्यहकुम् अह्लुल्-इन्जीलि बिमा अन्जलल्लाहु फीहि व मल्लम् यहकुम् बिमा अन्जलल्लाहु फ-उलाइ-क हुमुल् फासिकून् (47) व अन्जल्ला इलैकल्-किता-ब बिल्हक्कि मुसद्दिकल्लिमा बै-न

यदैहि मिनल्-किताबि व मुहैमिनन् अलैहि कहकुम् बैनहुम् बिमा अन्जलल्लाहु व ला तत्तबिअ अह्वा-अहुम् अम्मा जाअ-क मिनल्-हक्कि, लिक्ल्लिन् जअल्ला मिन्कुम् शिर-अतव्-व मिन्हाजन्, व लौ शाअल्लाहु ल-ज-अ-लकुम् उम्मतव्-वाहि-दतव्-व लाकिल्लियब्नु-वकुम् फी मा आताकुम् फस्तबिकुल्-खैराति, इलल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअन् फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम्

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا الَّذِينَ هَادُوا وَالزَّكَاةُ
وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُخْفِطُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ
فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَخَشَوْنَ اللَّهَ وَلَا تَتَّبِعُوا بِأَلْبَابِي ثُمَّ
قُلَيْلًا وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِهَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْكَاذِبُونَ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَ
الْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَ
السِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُومَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ
كَفَّارَةٌ لَهُ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِهَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ وَقَفَّيْنَا عَلَى آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَإِنَّهُ الْإِنْجِيلُ
فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ
وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ وَلِئَلَّكُمْ أَهْلُ الْإِيمَانِ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِهَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ

हमने तौरात नाज़िल फरमाई थी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी, अम्बिया जो कि अल्लाह तआला के फरमाँबरदार थे उसके मुवाफिक़ यहूद को हुक्म दिया करते थे, और अल्लाह वाले और उलमा भी इस वजह से कि उनको उस अल्लाह की किताब की हिफाज़त का हुक्म दिया गया था और वे उसके इक़रारी हो गए थे, सो तुम भी लोगों से अन्देशा मत करो और मुझसे डरो और मेरे अहकाम के बदले में मता-ए-कलील “यानी मामूली फायदा” मत लो, और जो शख्स अल्लाह के नाज़िल किए हुए के मुवाफिक़ हुक्म न करे सो ऐसे लोग बिल्कुल काफ़िर हैं। (44) और हमने उनपर उसमें यह बात फ़र्ज़ की थी कि जान बदले जान के, और आँख बदले आँख के, और नाक बदले नाक के, और कान बदले कान के, और दाँत बदले दाँत के, और खास ज़ख्मों का भी बदला है, फिर जो शख्स उसको माफ़ कर दे तो वह उसके लिए कफ़ारा हो जाएगा,¹ और जो शख्स खुदा के नाज़िल किए हुए के मुवाफिक़ हुक्म न करे, तो ऐसे लोग बिल्कुल सितम कर रहे हैं।² (45) और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरियम (अलैहिमस्सलाम) को इस हालत में भेजा कि वे अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ फरमाते थे, और हमने उनको इन्जील दी जिसमें हिदायत थी और वज़ाहत थी और अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ करती थी, और वह (सरासर) हिदायत और नसीहत थी (खुदा से) डरने वालों के लिए। (46) और इन्जील वालों को चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ उसमें नाज़िल फरमाया है उसके मुवाफिक़ हुक्म किया करें, और जो शख्स खुदा तआला के नाज़िल किए हुए के मुवाफिक़ हुक्म न करे तो ऐसे लोग बिल्कुल बेहुक्मी करने वाले हैं।³ (47) और हमने (यह) किताब⁴ आपके पास भेजी है जो (खुद भी) सच्चाई के साथ मौसूफ़ है और इससे पहले जो किताबें हैं उनकी तस्दीक़ करती है, और उन (किताबों) की मुहाफ़िज़ है, तो उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफिक़ फैसला फरमाया कीजिए, और यह जो सच्ची किताब आपको मिली है इससे दूर होकर उनकी ख्वाहिशों पर अमल दरामद न कीजिए, तुममें से हर एक के लिए हमने (खास) शरीअत और (खास) तरीका तजवीज़ किया था। और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही उम्मत कर देते, लेकिन (ऐसा नहीं किया) ताकि जो दीन तुमको दिया है उसमें तुम सबका इम्तिहान फरमाएँ, तो मुफीद बातों की तरफ़ दौड़ो,⁵ तुम सबको खुदा ही के पास जाना है, फिर वह तुम सबको जतला देगा, जिसमें तुम इख़िलाफ़ किया करते थे। (48) और (हम एक

1. यानी माफ़ करना सवाब का सबब है।

2. मसाइल: मसला नम्बर 9. किंसास उस क़त्ल या जुर्म में है जो नाहक़ और जान-भूझकर हो, इसलिए कि हक़ पर क़त्ल करना दुरुस्त है, और गुलती से किए गए क़त्ल में दियत (यानी खून-बहा) है। मसला नम्बर 2. जान के बदले जान में आज़ाद व गुलाम, मुसलमान व काफ़िर, ज़िम्मी, मर्द व औरत, बड़ा व छोटा, शरीफ़ व रज़ील, बादशाह और रइय्यत सब दाख़िल हैं, अलबत्ता खुद अपने ममलूक़ गुलाम और अपनी औलाद के किंसास में न मारा जाना इज़्मा व हदीस से साबित है।

3. ऊपर तौरात व इन्जील का अपने-अपने दौर में वाजिबुल-अमल होना (जिसपर अमल करना वाजिब हो) बयान फरमाया है। आगे कुरआन मजीद का अपने दौर में जो कि इसके नाज़िल होने के ज़माने से कियामत आने तक है, वाजिबुल-अमल होना बयान फरमाते हैं।

4. यानी कुरआन मजीद।

5. यानी उन अक़ीदों, आमाल और अहक़ाम की तरफ़ दौड़ो जिनपर कुरआन मुश्तमिल है, यानी कुरआन पर ईमान लाकर इसपर चलो।

फीहि तख्तलिफून (48) व अनिहकुम् बैनहुम् बिमा अन्जलल्लाहु व ला तत्ताबिअ
अह्वा-अहुम् वहज़रहुम् अंय्यफितनू-क अम्बअज़ि मा अन्जलल्लाहु इलै-क, फ-इन् तवल्लौ
फअलम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युसीबहुम् बि-बअज़ि जुनूबिहिम्, व इन्-न कसीरम्
मिनन्नासि लफासिकून (49) अ-फहुक्मल् जाहिलिय्यति यबू-न, व मन् अह्सनु मिनल्लाहि
हुक्मल् लिकौमिंय्यूकिनून (50) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला
तत्ताखिजुल् यहू-द वन्नसारा औलिया-अ
❖ बअज़ुहुम् औलिया-उ बअज़िन्, व
मंय्य-तवल्लहुम् मिन्कुम् फ-इन्नहू मिन्हुम्,
इन्नल्ला-ह ला यहिदल् कौमज़-
ज़ालिमीन (51) फ-तरल्लज़ी-न फी
कुलूबिहिम् मरज़ुंय्युसारिअ-न फीहिम्
यकूलू-न नखशा अन् तुसीबना
दा-इ-रतुन्, फ-असल्लाहु अंय्यअति-य
बिल्फहि औ अम्रिम् मिन् अिन्दिही
फयुस्बिहू अला मा असर्ल् फी
अन्फुसिहिम् नादिमीन (52) व
यकूलुल्लज़ी-न आमनू अ-हाउला-
इल्लज़ी-न अक्समू बिल्लाहि जहू-द

ऐमानिहिम् इन्नहुम् ल-म-अकुम्, हबितत् अअमालुहुम् फअस्बहू खासिरीन ▲ (53) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू मंय्यरतद्-द मिन्कुम् अन् दीनिही फसौ-फ यअतिल्लाहु बिकौमिंय-
युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू अज़िल्लतिन् अलल्-मुअमिनी-न अअिज़्जतिन् अलल्काफिरी-न
युजाहिदू-न फी सबीलिल्लाहि व ला यखाफू-न लौम-त ला-इमिन्, ज़ालि-क फज़्लुल्लाहि

لا ينجب الله
١٠٦
الآية

لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ فِرْعَوْنَ وَمُهَاجِرًا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ
أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ
إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ يَجْزِي اللَّهُ عَمَّا كُنتُمْ فِيهِ تَحْتَلِفُونَ
وَأِنْ أَحْكَمْتُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَكُنْ لَهُمْ آهْوَاءَ هُمْ وَ
أَخَذْتُمْ أَنْ يَقْتُلُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَإِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُجْزِيَ هُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ
وَإِنْ كُنْتُمْ إِنْ شَاءَ النَّاسِ لَفَسَدُونَ ۝ أَحْكَمْ أَهْلَ الْبَيْتِ يَبْعُونَ
وَمَنْ أَحْسَنَ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا الْقَوْمُ يُوقِنُونَ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ
بَعْضٍ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ فَذَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يُسَارِعُونَ
فِيهِمْ يَقُولُونَ نَحْشَى أَنْ تُصِيبَنَا دَآئِرَةٌ فَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ
بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِنْ عِنْدِهِ فَيُضْيِقُوا عَلَى مَا اسْتَوْفُوا فِي أَنْفُسِهِمْ
لِذَلِكَ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا
بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ أَنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ أَعْيَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا
خُسْرَيْنِ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ

مَنْ

बार फिर हुक्म देते हैं कि) आप उनके आपसी मामलात में इस भेजी हुई (किताब) के मुवाफिक फैसला फरमाया कीजिए और उनकी ख्वाहिशों पर अमल दरामद न कीजिए और उनसे (यानी उनकी इस बात से) एहतियात रखिए कि वे आपको खुदा तआला के भेजे हुए किसी हुक्म से भी बिचला दें, फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो (यह) यकीन कर लीजिए कि बस खुदा ही को मन्ज़ूर है कि उनके बाज़े जुर्मों पर उनको सज़ा दें, और ज़्यादा आदमी तो बेहुक्म ही (होते) हैं। (49) क्या ये लोग ज़माना-ए-जाहिलियत का फैसला चाहते हैं, और फैसला करने में अल्लाह से अच्छा कौन होगा यकीन रखने वालों के नज़दीक। (50) ♦

ऐ ईमान वालो! तुम यहूद और ईसाइयों को दोस्त मत बनाना। वे एक दूसरे के दोस्त हैं।^१ और जो शख्स तुममें से उनके साथ दोस्ती करेगा बेशक वह उन्हीं में से होगा। बेशक अल्लाह तआला समझ नहीं देते उन लोगों को जो अपना नुकसान कर रहे हैं। (51) (इसी लिए) तुम ऐसे लोगों को जिनके दिल में मर्ज़ है देखते हो कि दौड़-दौड़कर उनमें घुसते हैं, कहते हैं कि हमको अन्देशा है कि हमपर कोई हादसा पड़ जाए, सो करीब ही उम्मीद है कि अल्लाह तआला कामिल फ़तह को ज़ाहिर फरमा दे या किसी और बात को ख़ास अपनी तरफ से,^३ फिर अपने छुपे हुए दिली ख़्यालात पर शर्मिन्दा होंगे।^४ (52) और मुसलमान लोग कहेंगे: (अरे) क्या ये वही लोग हैं कि बड़े मुबालगे से “यानी बढ़-बढ़कर” अल्लाह तआला की कस्में खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, इन लोगों की सारी कार्यवाहियाँ ग़ारत गईं, जिससे नाकाम रहे।^५ ▲ (53) ऐ ईमान वालो! जो शख्स तुममें से अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह बहुत जल्दी ऐसी कौम पैदा कर देगा जिससे उसको (यानी अल्लाह तआला को) मुहब्बत होगी और उनको उससे (यानी अल्लाह तआला से) मुहब्बत होगी। वे मुसलमानों पर मेहरबान होंगे और काफ़िरों पर तेज़ होंगे, जिहाद करते होंगे अल्लाह की राह में, और वे लोग किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे।^६ यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जिसको चाहें अज़ा फरमाएँ, और अल्लाह तआला बड़ी वुसूअत वाले हैं, बड़े इल्म वाले हैं। (54) तुम्हारे

1. ऊपर यहूद व ईसाइयों की बद-आमाली और बुराइयाँ मज़कूर हुई हैं और बाज़ मुनाफ़िक लोग जो कि ज़ाहिर में इस्लाम के दावेदार थे, उनसे बाज़ वहमी मस्लहतों की बिना पर दोस्ती रखते थे, इसलिए आगे इसी मज़मून की मुनासबत से ईमान वालों को उनके साथ दोस्ती करने से मना फरमाते हैं कि जब उन लोगों के ये हालात हैं तो उनका तकाज़ा तो यही है कि उनसे मुनाफ़िकों की तरह हरगिज़ दोस्ती मत करो, ईमान वालों को मना करने के बाद उन मुनाफ़िकों की निन्दा और उन मस्लहतों का बातिल होना और अन्जामकार उनका नदामत यानी शर्मिन्दगी उठाना बतौर पेशीनगोई (यानी भविष्यवाणी) के मज़कूर है।

2. मतलब यह है कि दोस्ती होती है ताल्लुक से, सो उनमें आपस में तो ताल्लुक है मगर तुममें और उनमें क्या मुनासबत और ताल्लुक?

3. मतलब यह है कि मुसलमानों की फ़तह और मुनाफ़िकों की छुपी हालत ज़ाहिर होना दोनों बातें जल्द ही होने वाली हैं।

4. एक शर्मिन्दगी तो अपने ख़्याल की ग़लती पर कि फ़ित्री बात है, दूसरी शर्मिन्दगी अपने निफ़ाक़ पर जिसकी बदौलत आज रुस्वा हुए, ‘मा असर्स’ में ये दोनों दाख़िल हैं, और तीसरी शर्मिन्दगी कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती करने पर कि बेकार ही गई और मुसलमानों से भी बुरे बने चूँकि यह दोस्ती ‘मा असर्स’ पर मुन्हसिर थी, इसलिए इन दो नदामतों के ज़िक्र से यह तीसरी साफ़ तौर पर ज़िक्र किए बिना ही खुद समझ में आ गई।

5. चुनाँचे यह पेशीनगोई सच्ची हुई, उन मुनाफ़िकों की ज़्यादा दोस्ती मदीने के यहूद और मक्का के मुशिरकीन से थी, मक्का फ़तह हो गया और यहूद तबाह व बर्बाद हुए जिसका ज़िक्र कई बार आ चुका है।

6. चुनाँचे बाज़े लोग इस्लाम से फिर गए थे लेकिन खुदा तआला ने अपनी इस पेशीनगोई के मुवाफ़िक मुख़्लिस मोमिनो के हाथों हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में उनका ख़ात्मा फरमा दिया, बाज़ ने तौबा कर ली थी। बहर हाल इस्लाम को कोई कमज़ोरी या नुक़सान नहीं पहुँचा।

युअत्तीहि मय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअनु अलीम (54) इन्नमा वलिय्युकुमुल्लाहु व
 रसूलुह वल्लजी-न आमनुल्लजी-न युकीमूनस्सला-त व युअतूनज्जका-त व हुम् राकिअून
 (55) व मय्य-तवल्लल्ला-ह व रसूलह वल्लजी-न आमनू फ-इन्-न हिज्बल्लाहि
 हुमुल्-गालिबून (56) ❖

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला
 तत्तखिजुल्लजीनत्त-खजू दीनकुम् हुजुवन्-
 व लअिबम् मिनल्लजी-न ऊतुल्-किता-ब
 मिन् कब्लिक्कुम् वल्कुप्फा-र औलिया-अ
 वत्तकुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन
 (57) व इजा नादैतुम् इलस्सलातित्-
 त-खजूहा हुजुवन्-व लअिबन्, ज़ालि-क
 बि-अन्नहुम् कौमुल्ला यअ्किलून (58)
 कुल् या अह्लल्-किताबि हल् तन्किमू-न
 मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व
 मा उन्जि-ल इलैना व मा उन्जि-ल मिन्
 कब्लु व अन्-न अक्स-रकुम् फासिकून
 (59) कुल् हल् उनब्बिउकुम् बि-शरिम्
 मिन् ज़ालि-क मसू-बतन् अिन्दल्लाहि,
 मल्ल-अ-नहुल्लाहु व ग़ज़ि-ब अलैहि व

ज-अ-ल मिन्हुमुल् कि-र-द-त वल्खनाजी-र व अ-बदत्तागू-त, उलाइ-क शरूम् मकानव्-व
 अज़ल्लु अन् सवा-इस्सबील (60) व इजा जाऊकुम् कालू आमन्ना व कद् द-खलू बिल्कुफिर
 व हुम् कद् ख-रजू बिही, वल्लाहु अज़लमु बिमा कानू यक्तुमून (61) व तरा कसीरम्
 मिन्हुम् युसारिअू-न फिल्इस्मि वल्-अुद्वानि व अक्लिहिमुस्सुह-त, लबिअ्-स मा कानू

لَا يَسْبِقُ اللَّهُ
 فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّونَهُمْ وَيُوْحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
 أَوْفَرَةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ
 لَوْمَةَ لَائِمٍ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مِنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ
 عَلِيمٌ إِنَّمَا أَوْفَرَكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ
 الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْعَوْنِ وَمَنْ يُتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ
 وَرَسُولِهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا وَ
 لَعِبًا مِنَ الَّذِينَ أَوْفَرُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكَافَرُ أَوْلَىٰ
 وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنتُمْ مَوْفُقِينَ ۖ وَإِذَا تَدَايَعْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
 فَاخْذُوا هَآهُنَا ۖ وَلَعِبًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۚ قُلْ
 يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَتَّقُونَ وَمَا آتَاكُمُ اللَّهُ وَمَا أُنْزِلَ
 إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَإِنْ أَكْثَرْتُمْ فَيَقُون ۚ قُلْ هَلْ
 أَنْتُمْ بِمُتَّقِينَ ۚ مِنْ ذَٰلِكَ مَثُوبَةٌ عِنْدَ اللَّهِ مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَ
 غَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ
 أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۖ وَلَٰذَا جَاءَكُمْ
 قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفَرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ عَالِمُ

दोस्त तो अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वाले लोग हैं जो कि इस हालत से नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं कि उनमें खुशूअ "यानी अज़िज़ी और गिड़गिड़ाना" होता है।¹ (55) और जो शख्स अल्लाह से दोस्ती रखेगा और उसके रसूल से और ईमान वाले लोगों से, सो अल्लाह का गिरोह बिला शक़ ग़ालिब है। (56) ♦

ऐ ईमान वालो! जिन लोगों को तुमसे पहले किताब मिल चुकी है, जो ऐसे हैं कि जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रखा है, उनको और दूसरे कुफ़्फ़ार को दोस्त मत बनाओ, और अल्लाह तआला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (57) और जब तुम नमाज़ के लिए ऐलान करते हो तो वे लोग उसके साथ हँसी और खेल करते हैं, यह इस सबब से है कि वे लोग ऐसे हैं कि बिल्कुल अक्ल नहीं रखते।² (58) आप कहिए कि ऐ अहले किताब! तुम हममें कौन-सी बात ऐबदार और बुरी पाते हो, सिवाय इसके कि हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसपर जो हमारे पास भेजी गई है और उसपर जो पहले भेजी जा चुकी है बावजूद इसके कि तुममें अक्सर लोग ईमान से ख़ारिज हैं।³ (59) आप कहिए कि क्या मैं तुमको ऐसा तरीका बतलाऊँ जो इससे भी खुदा के यहाँ पादाश "यानी नतीजा और बदला" मिलने में ज़्यादा बुरा हो। वह उन शख्सों का तरीका है जिनको अल्लाह तआला ने दूर कर दिया हो और उनपर ग़ज़ब फ़रमाया हो और उनको बन्दर और सुअर बना दिया हो, और उन्होंने शैतान की परस्तिश की हो, ऐसे लोग मक़ाम के एतिबार से भी बहुत बुरे हैं और सही रास्ते से भी बहुत दूर हैं।⁴ (60) और जब ये लोग तुम लोगों के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालाँकि वे कुफ़ को ही लेकर आए थे और कुफ़ को ही लेकर चले गए, और अल्लाह तआला तो ख़ूब जानते हैं जिसको ये छुपाते हैं। (61) और आप उनमें बहुत आदमी ऐसे देखते हैं जो दौड़-दौड़कर गुनाह और जुल्म और हराम खाने पर गिरते हैं, वाकई उनके ये काम (बहुत) बुरे हैं। (62) उनको नेक लोग और उलमा गुनाह की बात कहने से और हराम माल खाने से क्यों नहीं

1. यानी अक़ायद व अज़्लाक और बदनी व माली आमाल सब के जामे हैं।
2. यह इशारा है दो किस्सों की तरफ़, एक यह कि जब अज़ान होती और मुसलमान नमाज़ शुरू करते तो यहूद कहते कि यह खड़े होते हैं, खुदा करे कभी खड़ा होना नसीब न हो। और जब उनको रुकूअ व सज्दा करते देखते तो हँसते और मज़ाक उड़ाते। दूसरा किस्सा यह है कि मदीना में एक ईसाई था, जब अज़ान सुनता "अशहदु अन्-न मुहम्मदरसूलुल्लाह" तो कहता "कद ह-रकल् काज़िब" यानी झूठा जल जाए। एक रात ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि वह और उसके घर वाले और बाल बच्चे सब सो रहे थे। कोई खादिम घर में आग लेकर गया, एक चिंगारी गिर पड़ी। वह, उसका घर और घर वाले सब जल गए। यह तो "अल्लज़ी-न ऊतुल् किता-ब" के मिस्दाक़ थे और "अल्-कुफ़्फ़ार" के मिस्दाक़ का एक किस्सा यह हुआ था कि रिफ़ाअ बिन ज़ैद बिन ताबूत और सुवैद बिन हारिस ने दिखावे के तौर पर इस्लाम का इज़हार किया था। बाज़े मुसलमान उनसे मिलना-जुलना रखते थे। इन सब वाकिआत पर ये आयतें नाज़िल हुईं।
3. अक्सर इसलिए फ़रमाया कि कुछ न कुछ हर ज़माने में ईमान वाले रहे।
4. जिनसे दोस्ती करने की ऊपर मुमानअत फ़रमाई उनमें बाज़े मुनाफ़िक़् थे जो ऊपर भी लफ़ज़ "अल्-कुफ़्फ़ार" में या लफ़ज़ के आम होने में यहूद दाख़िल होकर मज़कूर हैं, आगे उनकी एक ख़ास हालत बयान फ़रमाते हैं।

यअमलून (62) लौ ला यन्हाहुमुरब्बानिय्यू-न वल्-अह्वारु अन् कौलिहिमुल्-इस्-म व
 अक्लिहिमुस्सुह-त, लबिअ-स मा कानू यस्नअून (63) व कालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि
 मग्ललतुन्, गुल्लत् ऐदीहिम् व लुअिन् बिमा कालू ❖ बल् यदाहु मब्सूततानि युन्फिक्कु कै-फ
 यशा-उ, व ल-यजीदन्-न कसीरम् मिन्हुम् मा उन्जि-ल इलै-क मिर्बिबि-क तुग्यानंव-व
 कुफरन्, व अल्कैना बैनहुमुल्-अदाव-त
 वल्बग्जा-अ इला यौमिल्-कियामति,
 कुल्लमा औकदू नारल्-लिल्-हरबि
 अत्-फ-अहल्लाहु व यस्अौ-न
 फिल्अर्जि फसादन्, वल्लाहु ला युहिब्बुल्
 मुफिसदीन (64) व लौ अन्-न
 अहलल्-किताबि आमनू वत्तकौ
 ल-कफरना अन्हुम् सय्यिआतिहिम् व
 ल-अदखल्लाहुम् जन्नातिन्नीम (65)
 व लौ अन्नहुम् अकामुत्तौरा-त
 वल्-इन्जी-ल व मा उन्जि-ल इलैहिम्
 मिर्बिबिहिम् ल-अ-कलू मिन् फौकिहिम् व
 मिन् तह्ति अर्जुलिहिम्, मिन्हुम् उम्मतुम्
 मुक्तसि-दतुन्, व कसीरुम् मिन्हुम्
 सा-अ मा यअमलून (66) ❖

بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ
 وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ الشَّجَرَةَ لَيْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أُولَٰئِكَ
 يَنْهَكُهُمُ الرَّبُّ إِنِّي هُنَالِكَ بَاصٍ بِمَا يُكَفِّرُونَ ۝ وَالْأَخْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمُ وَأَكْلِهِمُ
 الشَّجَرَةَ لَيْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ يُدْعِي اللَّهُ
 مَعْلُوكًا ۖ عَلَتِ أَيْدِيهِمْ وَلَعُنُوا أَيْمَانَهُمْ أَلَّا يَكُونُوا مَبْسُوطَتَيْنِ
 يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَٰكِن زَيْدٌ أَكْثَرُ امْنُهُمْ مَّا أَنْزَلَ إِلَيْكَ
 مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ وَالْقَيْنَ ابْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ
 إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْعَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ
 وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝
 وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا نَعْتَمِدُهُمْ سُبُلَهُمْ
 وَلَا دَخَلَهُمْ جِدَّتِ النَّعِيمُ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا الصَّلَاةَ
 وَالْإِنْفِاقَ وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْهِمْ مِنْ ذِكْرٍ لَّا كَلُوا مِنْ قَوْعِهِمْ
 وَفِي مَنَاحِي أَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۖ وَكَثِيرٌ
 مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ
 مِنْ رَبِّكَ ۚ وَإِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ
 مِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ

मना करते, वाकई उनकी यह आदत बुरी है। (63) और यहूद ने कहा कि अल्लाह तआला का हाथ बन्द हो गया है,¹ उन्हीं के हाथ बन्द हैं और अपने इस कहने से ये रहमत से दूर कर दिए गए। बल्कि अल्लाह तआला के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं,² जिस तरह चाहते हैं खर्च करते हैं³ और जो (मजमून) आपके पास आपके परवर्दिगार की तरफ से भेजा जाता है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़ की तरक्की का सबब हो जाता है, और हमने उनमें आपस में कियामत तक दुश्मनी और बुग़्ज डाल दिया। जब कभी लड़ाई की आग भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसको ख़त्म कर देते हैं, और मुल्क में फ़साद “यानी बिगाड़ और ख़राबी” करते फिरते हैं,⁴ और अल्लाह फ़साद करने वालों को महबूब नहीं रखते। (64) और अगर अहले किताब ईमान ले आते और तक्वा इख़्तियार करते तो हम ज़रूर उनकी तमाम बुराइयाँ माफ़ कर देते और ज़रूर उनको चैन के बाग़ों में दाख़िल करते। (65) और अगर ये लोग तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) उनके परवर्दिगार की तरफ़ से उनके पास भेजी गई है उसकी पूरी पाबन्दी करते⁵ तो ये लोग अपने ऊपर से और अपने नीचे से ख़ूब फ़राग़त से खाते। उनमें एक जमाअत सही रास्ते पर चलने वाली है, और ज़्यादा उनमें ऐसे ही हैं कि उनके किरदार बहुत बुरे हैं। (66) ♦

ऐ रसूल! जो-जो कुछ आपके रब की जानिब से आप पर नाज़िल किया गया है आप सब पहुँचा दीजिए, और अगर आप ऐसा न करेंगे तो आपने अल्लाह तआला का एक पैग़ाम भी नहीं पहुँचाया,⁶ और अल्लाह तआला आपको लोगों से महफूज़ रखेगा,⁷ यकीनन अल्लाह तआला उन काफ़िर लोगों को राह न देंगे। (67) आप कहिए कि ऐ अहले

1. वजह इस गुस्ताख़ी की यह हुई थी कि पहले यहूद पर रोज़ी की फ़राग़त थी, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और वे आपके साथ दुश्मनी और मुखा़लफ़त से पेश आए तो रोज़ी में तंगी हो गई। इसपर बेहूदा बातें बकने लगे, और बार-बार कहने वाले दो ही शख्स थे। लेकिन चूँकि और यहूद भी इससे रोकने वाले नहीं हुए बल्कि राज़ी रहे इसलिए औरों को भी इस बात में शरीक़ फ़रमाया गया।
2. यानी बड़े दाता और करीम हैं।
3. क्योंकि हिक़मत वाले भी हैं इसलिए जिस तरह चाहते हैं खर्च करते हैं। पस यहूद पर जो तंगी हुई उसकी वजह हिक़मत है कि उनके कुफ़्र का वबाल उनको चखाना और दिखाना है, न यह कि बुख़ल इसकी वजह हो।
4. जैसे नौ-मुस्लिमों को बहकाना, लगाई-बुझाई करना, अ़वाम को तौरात के कमी-बेशी किए हुए मज़ामीन सुनाकर इस्लाम से रोकना।
5. यानी उनमें जिस-जिस बात पर अमल करने को लिखा है सब पर पूरा अमल करते। इसमें रिसालत की तस्दीक़ भी आ गई और इससे तब्दील किए हुए और मन्सूख़ हुए अहक़ाम निकल गए, क्योंकि उन किताबों का मजमूआ उनपर अमल करने को नहीं बतलाता बल्कि मना करता है।
6. क्योंकि इस मजमूए का पहुँचाना फ़र्ज़ है तो जैसा कुल के छुपाने से यह फ़र्ज़ छूटता है इसी तरह बाज़ के छुपाने से भी वह फ़र्ज़ छूट जाता है।
7. चुनाँचे यह वायदा इसी तरह सच्चा हुआ कि अगरचे बाज़ लड़ाई और जंगों में आप ज़ख्मी हुए और यहूद ने नामदों की तरह आपको ज़हर दिया, मगर इक़ट्टे व मुक़ाबिल होकर कोई क़त्ल व हलाक़ न कर सका। और इस पेशीनगोई का ज़ाहिर होना आपका मोजिज़ा और नुबुव्वत की दलील है। तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहरा दिया जाता था, जब यह आयत नाज़िल हुई तो आपने फ़रमाया कि चले जाओ, अल्लाह तआला ने मेरी हिफ़ाज़त कर ली, यह भी नुबुव्वत की दलील है, क्योंकि ऐसा एतमाद वक़्त के बग़ैर नहीं हो सकता।

उन्जि-ल इलै-क मिरिब्बि-क तुग्रयानव्-व कुफरन् फला तअ-स अलल् कौमिल्-काफिरीन
(68) इन्नल्लजी-न आमनू वल्लजी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन् आम-न बिल्लाहि
वलयौमिल्-आखिरि व अमि-ल सालिहन् फला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहज़नून (69)

ल-कद् अखज्जा मीसा-क बनी इस्राई-ल
व अरसल्ला इलैहिम् रुसुलन्, कुल्लमा
जाअहुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा
अन्फुसुहुम् फरीकन् कज़्जबू व
फरीकय्यक्तुलून (70) व हसिबू अल्ला
तकू-न फित्तनुन् फ-अमू व सम्मू
सुम्-म ताबल्लाहु अलैहिम् सुम्-म अमू
व सम्मू कसीरुम्- मिन्हुम्, वल्लाहु
बसीरुम् बिमा यअमलून (71) ल-कद्
क-फरल्लजी-न कालू इन्नल्ला-ह
हुवल-मसीहुब्नु मर्य-म, व कालल्मसीहु
या बनी इस्राईलअबुदुल्ला-ह रब्बी व
रब्बकुम्, इन्नहू मय्युशिरक् बिल्लाहि
फ-कद् हरमल्लाहु अलैहिल्- जन्न-त
व मअवाहुन्नारु, व मा

लिज़्जालिमी-न मिन् अन्सार (72) ल-कद् क-फरल्लजी-न कालू इन्नल्ला-ह सालिसु
सलासतिन् ❖ व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुव्वाहिदुन्, व इल्लम् यन्तहू अम्मा
यकूलू-न ल-यमस्सन्नल्लजी-न क-फरु मिन्हुम् अज़ाबुन् अलीम (73) अ-फला यतूबू-न
इलल्लाहि व यस्तग़फिरुनहू, वल्लाहु ग़फूरुरहीम (74) मल्मसीहुब्नु मर्य-म इल्ला रसूलुन्

الْبَيِّنَاتُ

109

لَا يُحِبُّ اللَّهُ

الْكُذِبِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ
مَا أَنْزَلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَكِن يَذِّنُ كَثِيرًا مِّنْهُمَا أَنْزَلَ إِلَيْكُم
مِّن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّالِحِينَ وَالنَّصَارَى مَن
آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ
لَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَارْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ رَسُولًا لِّكُلِّ أُمَّةٍ فَمَا لَتَفَوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا
كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ۝ وَحَسِبُوا أَن لَّكُلَّ دِينٍ قِسْمًا
وَصَلُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَلُّوا كَثِيرًا مِّنْهُمْ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ لِّمَا يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَقَالَ الْمَسِيحُ بَنِي إِسْرَءِيلَ اعْبُدُوا
اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ
عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ وَمَا مِنْ إِلَهٍ
إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِن لَّمْ يَنفَعُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ

مَالِكٌ

किताब! तुम किसी भी (सही) चीज़ पर नहीं,¹ जब तक कि तौरात की और इन्जील की और जो (किताब) तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से भेजी गई है उसकी भी पूरी पाबन्दी न करोगे। और ज़रूर जो (मज़मून) आपके पास आपके रब की तरफ से भेजा जाता है वह उनमें से बहुतों की सरकशी और कुफ़ की तरक्की का सबब बन जाता है, तो आप उन काफ़िर लोगों पर गुम न किया कीजिए।² (68) यह तहकीकी बात है कि मुसलमान और यहूदी और साबिईन का फ़िर्का और नसारा में से जो शख्स यकीन रखता हो अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर, और कारगुज़ारी अच्छी करे,³ ऐसों पर न किसी तरह का अन्देशा है और न वे गुमगीन होंगे। (69) हमने बनी इसराईल से अहद लिया⁴ और हमने उनके पास (बहुत-से) पैग़म्बर भेजे। जब कभी उनके पास कोई पैग़म्बर वह (हुक्म) लाया जिसको उनका जी न चाहता था तो उन्होंने बाज़ों को झूठा बतलाया और बाज़ों को क़त्ल ही कर डालते थे। (70) और (यही) गुमान किया कि कुछ सज़ा न होगी, तो वे (उससे और भी) अन्धे और बहरे बन गए, फिर अल्लाह तआला ने उन पर तवज्जोह फ़रमाई, फिर भी उनमें के बहुत-से अन्धे और बहरे बने रहे, और अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखने वाले हैं। (71) बेशक वे लोग काफ़िर हो चुके जिन्होंने (यह) कहा कि अल्लाह तआला ऐन मरियम के बेटे मसीह हैं, हालाँकि मसीह ने खुद फ़रमाया (था) कि ऐ बनी इसराईल! तुम अल्लाह तआला की इबादत करो जो मेरा भी और तुम्हारा भी रब है।⁵ बेशक जो शख्स अल्लाह तआला के साथ शरीक करार देगा, सो उसपर अल्लाह तआला जन्नत को हराम कर देगा और उसका ठिकाना दोज़ख़ है, और (ऐसे) ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा। (72) बिला शुब्हा वे लोग भी काफ़िर हैं जो कहते हैं कि अल्लाह तआला तीन में का एक है, हालाँकि सिवाय एक माबूद के और कोई माबूद नहीं, और अगर ये लोग अपने इन कौलों से बाज़ न आए तो जो लोग उनमें काफ़िर रहेंगे उनपर दर्दनाक अज़ाब होगा। (73) क्या फिर भी अल्लाह तआला के सामने तौबा नहीं करते और उससे माफ़ी नहीं चाहते, हालाँकि अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत

1. क्योंकि ग़ैरे-मक़बूल राह पर होना बेराह होने की तरह है।

2. ऊपर अहले किताब को इस्लाम की तरगीब थी, आगे भी एक आम क़ानून से जो कि अहले किताब और ग़ैर-अहले किताब सबको शामिल है, इसी की तरगीब है।

3. यानी शरीअत के क़ानून के मुवाफ़िक़।

4. यानी तमाम पैग़म्बरों की तस्दीक़ व फ़रमाँबरदारी का अहद।

5. इस कौल में अपने बन्दा होने की वज़ाहत और स्पष्टता है, फिर उनको माबूद कहना वही बात है कि “मुद्ई सुस्त ग़वाह चुस्त”।

कद् ख-लत् मिन् कब्लिहिर्सुलु, व उम्मुहू सिद्दीकतुन्, काना यअकुलानित्तआ-म, उन्जुर
कै-फ़ नुबय्यिनु लहुमुल्-आयाति सुम्मन्जुर अन्ना युअफ़कून (75) कुल अ-तअबुदू-न मिन्
दूनिल्लाहि मा ला यम्मिकु लकुम् ज़रर्व-व ला नफ़अन्, वल्लाहु हुवस्समीअुल् अलीम (76)
कुल या अह्लल्-किताबि ला तग्लू फी दीनिकुम् गैरल्-हक्कि व ला तत्तबिअू अह्वा-अ
कौमिन् कद् ज़ल्लू मिन् कब्लु व
अज़ल्लू कसीरर्व-व ज़ल्लू अन्
सवा-इस्सबील (77) ♦

लुअिनल्लज़ी-न क-फ़रु मिम्-बनी
इस्राई-ल अला लिसानि दावू-द व
अीसबि मर्य-म, ज़ालि-क बिमा असौ-
व कानू यअतदून (78) कानू ला
य-तनाहौ-न अम्-मुन्करिन् फ़-अलूहु,
लबिअू-स मा कानू यफ़अलून (79)

तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-तवल्लौन-
-ल्लज़ी-न क-फ़रु, लबिअू-स मा
कद्-मत् लहुम् अन्फुसुहुम् अन्
सखितल्लाहु अलैहिम् व फ़िल्-अज़ाबि
हुम् ख़ालिदून (80) व लौ कानू
युअमिन्-न बिल्लाहि वन्नबियि व मा

उन्ज़ि-ल इलैहि मत्त-ख़ज़हुम् औलिया-अ व लाकिन्-न कसीरम्-मिन्हुम् फ़ासिकून (81)
ल-तजिदन्-न अशहन्नासि अदा-वतल्- लिल्लज़ी-न आमनुल्-यहू-द वल्लज़ी-न अशरकू व
ल-तजिदन्-न अकर-बहुम् मवदतल्- लिल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न कालू इन्ना नसारा,
ज़ालि-क बिअन्-न मिन्हुम् किस्सीसी-न व रुह्बानर्व-व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (82)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَاللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ۝ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُتِيَ صِدْقُهُ ۝ كَانَا يَاطْلُبُ الظَّمَاءُ أَنْظِرْ
كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَنْ يُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ
أَعْبُدُونِ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَكُمْ بِيَوْمِكُمْ أَنْ تَقُولُوا لَا نَعْبُدُ إِلَّا اللَّهَ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ
غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَ
أَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝ لِعَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا
مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝ كَانُوا لَا يَتَنَبَّأُونَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ
لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَقُولُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي
الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ ۝ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ مَا اخْتَدَوْهُ أُولَئِكَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ فَسَقُونَ ۝
لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرُ
ذَلِكَ يَاقَ مِنْهُمْ قَتِيلِينَ وَرُفْبَانَا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

مَثَلُ

फरमाने वाले हैं।¹ (74) मरियम के बेटे मसीह कुछ भी नहीं सिर्फ एक पैगम्बर हैं, जिनसे पहले (और) भी पैगम्बर गुजर चुके हैं, और उनकी वालिदा सिद्दिका (यानी एक वली बीबी) हैं, दोनों खाना खाया करते थे। देखिए तो हम उनसे कैसी (कैसी) दलीलें बयान कर रहे हैं, फिर देखिए वे उल्टे किधर जा रहे हैं।² (75) आप फरमाइए क्या खुदा के सिवा ऐसे की इबादत करते हो जो कि तुमको न कोई नुकसान पहुँचाने का इख्तियार रखता हो और न नफा पहुँचाने का, हालाँकि अल्लाह तआला सब सुनते हैं, सब जानते हैं।³ (76) आप फरमाइए कि ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में नाहक का गुलू मत करो “यानी हद से मत गुजरो” और उन लोगों के ख्यालात पर मत चलो जो पहले (खुद भी) गलती में पड़ चुके हैं और बहुतों को गलती में डाल चुके हैं, और वे लोग सीधे रास्ते से बहक गए (यानी दूर हो गए) थे। (77) ♦

बनी इसराईल में जो लोग काफिर थे उनपर लानत की गई थी दाऊद और ईसा इब्ने मरियम की ज़बान से,⁴ यह (लानत) इस सबब से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुखालफत की और हद से निकल गए। (78) जो बुरा काम उन्होंने कर रखा था उससे एक-दूसरे को मना न करते थे, वाकई उनका फेल (बेशक) बुरा था। (79) आप उनमें बहुत आदमी देखेंगे कि काफिरों से दोस्ती करते हैं,⁵ जो (काम) उन्होंने आगे के लिए किया है वह बेशक बुरा है कि अल्लाह तआला उनसे नाखुश हुआ और ये लोग अज़ाब में हमेशा रहेंगे। (80) और अगर ये लोग अल्लाह तआला पर ईमान रखते और पैगम्बर पर और उस (किताब) पर जो उनके पास भेजी गई तो उन (मुशिरकीन) को कभी दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें ज़्यादा लोग ईमान से खारिज ही हैं।⁶ (81) तमाम आदमियों से ज़्यादा मुसलमानों से दुश्मनी रखने वाले आप इन यहूद और इन मुशिरकों को पाएँगे, और उनमें मुसलमानों के साथ दोस्ती रखने के ज़्यादा करीब उन लोगों को पाइएगा जो अपने को ईसाई कहते हैं,⁷ यह इस सबब से है कि उनमें बहुत-से (इल्म से दोस्ती रखने वाले) आलिम हैं, और बहुत-से दुनिया से बेताल्लुक (दुर्वेश), और (यह इस सबब से है कि) ये लोग तकब्बुर करने वाले नहीं हैं।⁸ (82)

1. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के माबूद होने का बातिल होना आ़म मज़मून से बयान फरमाया था। आगे एक ख़ास दलील से बयान करते हैं।
 2. यह दलील मादियत के इस्तिदाल के एतबार से “रुहुल-कुदुस” के माबूद होने के बातिल होने के लिए भी काफी है, क्योंकि उनका आना-जाना, चलना-फिरना कि ये सब उमूर मादे के ख़्वास से हैं, मुसल्लम हैं, और मादियत से मुम्किन होना और उससे माबूद होने का बातिल होना ज़ाहिर है, इसलिए अलग से मुस्तक़िल तौर पर इसका ज़िक्र ज़रूरी नहीं।
 3. या तो ये ईसाई जिनका ज़िक्र हुआ ईसा अलैहिस्सलाम की पूजा भी करते होंगे या यह कि इबादत में सबसे बड़ा दर्जा माबूद होने के एतिकाद का है। जब वे ईसा अलैहिस्सलाम के माबूद होने के कायल हुए तो यकीनन उनकी इबादत की।
 4. यानी ज़बूर और इन्जील में काफिरों पर लानत लिखी थी, जैसे कुरआन मजीद में है “फ-लअनतुल्लाहि अललू काफिरिन” चूँकि ये किताबें हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई इसलिए यह मज़मून उनकी ज़बान से ज़ाहिर हुआ।
 5. मदीना के यहूद और मक्का के मुशिरकीन में मुसलमानों की दुश्मनी के ताल्लुक से जिसका मन्शा कुफ़ में तनासुब था, आपस में ख़ूब मुवाफ़क़त थी।
 6. ज़्यादा का मिस्दाक़ दोनों जगह एक ही है, यानी ग़ैर-मोमिन, और यह कैद मोमिनो को अलग निकालने के लिए है।
 7. ज़्यादा करीब का मतलब यह है कि दोस्त वे भी नहीं मगर दूसरे जिनका ज़िक्र किया गया उनसे गुनीमत हैं।
 8. यह आयत तमाम ज़मानों और तमाम जगहों के ईसाइयों के बारे में नहीं है, बल्कि इससे वे ईसाई मुराद हैं जो उन सिफ़्तों से जो सबब और मुसबब में मज़कूर हैं मौसूफ़ हों, पस बाज़ चापलूसी करने वालों का दुनियावी गरज़ से इसके आ़म होने का दावा करना महज़ अपनी मनमानी और ख़्वाहिश परस्ती है।
- तंबीह: मकसूद आयत में ईसाइयों की तारीफ़ नहीं बल्कि तकरीर में इन्साफ़ है, और मकसूद दोस्ती का पूरी तरह नज़दीकी होना नहीं बल्कि इज़ाफ़ी नज़दीकी है।

सातवाँ पारः व इज़ा समिअू

सूरतुल् माइ-दति (आयत 83 से 120)

व इज़ा समिअू मा उन्जि-ल इलरसूलि तरा अअ्यु-नहुम् तफीजु मिनद्दम्अि मिम्मा अ-रफू मिनल्-हक्कि यकूलू-न रब्बना आमन्ना फक्तुब्ना मअश्शाहिदीन (83) व मा लना

ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्-हक्कि व नत्मअु अंय्युदखि-लना रब्बुना मअल्-कौमिस्सालिहीन (84) फ-असाबहुमुल्लाहु बिमा कालू जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा, व ज़ालि-क जज़ाउल् मुत्सिनीन (85) वल्लज़ी-न क-फरु व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल् जहीम (86) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहरिर्मू तय्यिबाति मा अ-हल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्तदू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन (87) व कुलू मिम्मा र-ज़-क कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्-वत्तकुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिन्न (88) ला युआखिजुकुमुल्लाहु बिल्लग्वि फी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआखिजुकुम् बिमा अक्कत्तुमुल्-ऐमा-न फ-कफ़ारतुहू इत्आमु अ-श-रति मसाकी-न मिन् औ-सति मा तुत्अिमू-न अहलीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तहरीरु र-क-बतिन्, फ-मल्लम् यजिद् फसियामु सलासति अय्यामिन्, ज़ालि-क कफ़ारतु ऐमानिकुम् इज़ा हलफ़तुम् वहफज़ू ऐमानिकुम्,

وَاِذَا سَمِعُوا مَا اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُولِ تَرَى اَعْيُنُهُمْ تَفْعَضُ
مِنَ الدَّمْعِ وَمَنَاعَرُهُمْ اَمِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا اَمَّا فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ
الْحَقِّ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الطَّالِحِينَ ۝
فَاَنذَرْتَهُمْ اَللّٰهُ بِمَا قَالُوا جِئْتَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا اُولٰٓئِكَ اَصْحَابُ الْاُجْحَمِ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا
لَا تُخَوِّمُوا وَاٰتِيَتْ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۝ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا وَمِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا
وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِي اَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُوَاخِذُكُمُ اللّٰهُ
بِالْعَوْفِ ۝ اِيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّوَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْاَيْمَانَ
فَكَفَرْتُمْ ۝ اِطَاعُوا عَشْرَةَ اَسْفُوفٍ مِّنْ اَوْسَطِ مَا تُطِيعُونَ
اَهْلِيكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ خَيْرٌ مِّنْ رَّجُلٍ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
ثَلَاثَةِ اَيَّامٍ ۝ ذٰلِكَ كَفَّارَةٌ لِّمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَاحْفَظُوا
اِيْمَانَكُمْ ۝ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْمُورُ وَالْاَنصَابُ وَالْأَسْنَانُ

مَذْكُورٌ

सातवाँ पार: व इज़ा समिअू

सूर: मा-इद: (आयत 83 से 120)

और जब वे उसको सुनते हैं जो कि रसूल की तरफ भेजा गया है तो आप उनकी आँखें आँसुओं से बहती हुई देखते हैं, इस सबब से कि उन्होंने हक को पहचान लिया,¹ (यूँ) कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम मुसलमान हो गए, तो हमको भी उन लोगों के साथ लिख लीजिए जो तस्दीक करते हैं। (83) और हमारे पास कौन-सा उज़्र है कि हम अल्लाह पर और जो हक हमको पहुँचा है उसपर ईमान न लाएँ, और इस बात की उम्मीद रखें कि हमारा रब हमको नेक लोगों के साथ दाखिल कर देगा। (84) सो उनको अल्लाह तआला उनके कौल के बदले में ऐसे बाग देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, ये उनमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे, और नेक काम करने वालों की यही जज़ा है। (85) और जो लोग काफिर रहे और हमारी आयतों को झूठा कहते रहे वे लोग दोज़ख वाले हैं।² (86) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला ने जो पाक व लज़ीज़ चीज़ें तुम्हारे वास्ते हलाल की हैं³ उन्हें हराम मत करो, और हदों से आगे मत निकलो, बेशक अल्लाह तआला हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते। (87) और खुदा तआला ने जो चीज़ें तुमको दी हैं उनमें से हलाल पसन्दीदा चीज़ें खाओ और अल्लाह तआला से डरो जिसपर तुम ईमान रखते हो।⁴ (88) अल्लाह तआला तुम्हारी पकड़ नहीं फरमाते तुम्हारी कस्मों में लगव “यानी बेअसर” कस्म (तोड़ने) पर⁵, लेकिन पकड़ इसपर फरमाते हैं कि तुम कस्मों को मज़बूत करो, (फिर तोड़ दो) सो इसका कफ़ारा दस मोहताजों को खाना देना है दरमियानी दर्जे का जो अपने घर वालों को खाने को दिया करते हो, या उनको कपड़ा देना या एक गर्दन (यानी एक गुलाम या बाँदी) आज़ाद करना।⁶ और जिसको यह हासिल न हो तो तीन दिन के रोज़े हैं। यह कफ़ारा है तुम्हारी कस्मों का, जबकि तुम कसम खा लो (फिर तोड़ दो), और अपनी कस्मों का ख़याल रखा करो। इसी तरह अल्लाह तआला तुम्हारे वास्ते अपने अहकाम बयान फरमाते हैं ताकि तुम शुक्र करो।⁷ (89) ऐ ईमान वालो! (बात यही है कि) शराब और जुआ और बुत (वगैरह) और कुर्आ के तीर (ये सब) गन्दे शैतानी काम हैं, सो इनसे बिलकुल अलग रहो ताकि तुमको कामयाबी हो। (90) शैतान तो यूँ चाहता है कि शराब और जुए के

1. मतलब यह कि हक को सुनकर मुतास्सिर होते हैं।

2. यहाँ तक तो अहले किताब के मुताल्लिक गुफ्तगू थी, आगे फिर उन अहकाम की तरफ वापस आते हैं जिनका कुछ शुरू सूर: में और कुछ दरमियान में भी बयान हुआ है।

3. चाहे खाने की किस्म में से हों या पहनने की, या निकाह करने की किस्म से हों।

4. यानी हलाल चीज़ का हराम कर लेना अल्लाह की रिज़ा के खिलाफ है, इससे डरो और इसका जुर्म मत करो।

5. यानी कफ़ारा वाजिब नहीं करते।

6. यानी तीनों में से जिसको चाहे इख़्तियार कर ले।

7. ‘लगव’ कहते हैं बेअसर को, इसके दो मायने हैं, एक वह जिसपर गुनाह का असर मुरत्तब न हो, दूसरे वह जिसपर कफ़ारे का असर मुरत्तब न हो, इस आयत में इसी का ज़िक्र है।

कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअल्लकुम् तश्कुरुन (89) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-ख़मरु वलमैसिरु वल्अन्साबु वल्अज़्लामु रिज्सुम्-मिन् अ-मलिश्शैतानि फज्जनिबूहु लअल्लकुम् तुफ़िलहून (90) इन्नमा युरीदुश्शैतानु अय्यूकि-अ बैनकुमुल् अदा-व-त वल-बग्ज़ा-अ फिल्लिख़ामि वलमैसिरि व यसुद्दकुम् अन् जिक्विरल्लाहि व अनिस्सलाति फ-हल् अन्तुम् मुन्तहून

(91) व अतीअुल्ला-ह व अतीअुरसू-ल वहज़रू फ-इन् तवल्लैतुम् फअलमू अन्नमा अला रसूलिन्ल् बलागुल् मुबीन (92) लै-स अलल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फीमा तअिमू इज़ा मत्तकौ व आमनू व अमिलुस्-सालिहाति सुम्मत्तकौ व आमनू सुम्मत्तकौ व अह्सनू, वल्लाहु युहिब्बुल् मुत्सिनीन (93) ♦

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ल-यब्बुवन्न-कुमुल्लाहु बिशैइम् मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व रिमाहुकुम् लि-यअ-लमल्लाहु मय्यखाफ़ुहू बिल्गैबि फ-मनिअतदा बअ-द ज़ालि-क फ-लहू अज़ाबुन् अलीम (94) या

अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक्तुलुस्सै-द व अन्तुम् हुरुमुन्, व मन् क-त-लहू मिन्कुम् मु-तअम्मिदन् फ-जज़ाउम्-मिस्तु मा क-त-ल मिनन्न-अमि यहकुमु बिही ज़वा अद्लिम्-मिन्कुम् हदयम् बालिगल्-कअ-बति औ कफ़फ़ारतुन् तआमु मसाकी-न औ अद्लु ज़ालि-क सियामल्-लियज़ू-क व बा-ल अमिही, अफ़ल्लाहु अम्मा स-लफ़, व मन् आ-द फ-यन्तकिमुल्लाहु मिन्हु, वल्लाहु अज़ीजुन् जुन्तिकाम (95) उहिल्-ल लकुम् सैदुल्बहिर व

وَأَذِمْهُمْ
رَجَسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْغُرُ
وَالْمُبِيرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْهَوُونَ ۝
وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا إِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا
أَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَيِّنَاتُ الْمُبِينُ ۝ لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَبْسُوْكُمْ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ
الصَّيْدِ تَلَّاهُ أَبْدَانُكُمْ وَبِمَا كُنْتُمْ يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ مِن بَيْنِ أَفْئِدَتِكُمْ
فَمَنْ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُّتَعَدِّيًا
فَعَزَّزْهُ بِمِثْلِهِ مِمَّا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ
مَّتَدْيًا بَلِغَةَ الْكَفَّةِ ۝ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ ۝ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكُمْ
لَيْسَ ذُو قِبَالٍ أَمْرُهُ عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لَمَّا سَأَلَكَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْقُصْهُ
اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝ لِحَالٍ لَّكُم صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ
مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَخُزُونٌ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ

مَنْ

जरिए से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और बुग़ज़ पैदा कर दे और अल्लाह तआला की याद से और नमाज़ से तुमको रोक दे। सो अब भी बाज़ (नहीं) आओगे?¹ (91) और तुम अल्लाह तआला की इताअत करते रहो और रसूल की इताअत करते रहो और एहतियात रखो, और अगर मुँह मोड़ोगे तो यह जान रखो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना था। (92) ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जिसको वे खाते-पीते हों, जबकि वे लोग परहेज़ रखते हों और ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ईमान रखते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ख़ूब नेक अमल करते हों, और अल्लाह तआला ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत रखते हैं। (93) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला किसी क़द्र शिकार से तुम्हारा इम्तिहान करेगा जिन तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँच सकेंगे, ताकि अल्लाह तआला मालूम करे कि कौन शख्स उससे बिन देखे डरता है?² तो जो शख्स इसके बाद हद से निकलेगा उसके वास्ते दर्दनाक सज़ा है। (94) ऐ ईमान वालो! (जंगली) शिकार को क़त्ल मत करो जबकि तुम एहराम की हालत में हो,³ और जो शख्स तुममें से उसको जान-बूझकर क़त्ल करेगा तो उसपर सज़ा और जुर्माना वाजिब होगा, जो कि बराबर होगा उस जानवर के जिसको उसने क़त्ल किया है, जिसका फैसला तुममें से दो मोतबर शख्स कर दें, (चाहे वह जुर्माना ख़ास चौपायों में से हो) शर्त यह है कि नियाज़ के तौर पर काबा तक पहुँचाई जाए, चाहे कफ़फ़ारा कि ग़रीबों को खाना दे दिया जाए, चाहे उसके बराबर रोज़े रख लिए जाएँ, ताकि अपने किए की शामत का मज़ा चखे। जो गुज़र गया अल्लाह ने उसको माफ़ कर दिया, और जो शख्स फिर ऐसी ही हरकत करेगा तो अल्लाह उससे इन्तिकाम लेंगे, और अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, इन्तिकाम ले सकते हैं। (95) तुम्हारे लिए दरिया का शिकार पकड़ना और उसका खाना हलाल किया गया है,⁴ तुम्हारे फ़ायदा उठाने के वास्ते और मुसाफ़िरों के वास्ते, और खुश्की का शिकार पकड़ना तुम्हारे लिए हराम किया गया, जब तक कि तुम एहराम की हालत में हो, और अल्लाह तआला से डरो जिसके पास जमा किए जाओगे। (96) खुदा तआला ने काबा को जो कि

1. हासिल यह हुआ कि यह शराब, जुआ, बुत-परस्ती और कुफ़्र के करीब इसलिए हैं कि नमाज़ से जो कि ईमान की बड़ी निशानियों और अलामतों में से है, रोक बने हुए है। जब इस तौर पर ईमान से दूरी हुई तो कुफ़्र से नज़दीकी हुई।
2. इम्तिहान का मतलब यह है कि एहराम की हालत में जंगली जानवरों के शिकार करने को तुमपर हराम करके उन जंगली जानवरों को तुम्हारे आस-पास फिराते रहेंगे। चुनौचे जंगली जानवर इसी तरह आस-पास लगे फिरते थे। चूँकि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में बहुत-से शिकार के आदी थे, इसमें उनकी इताअत का इम्तिहान हो रहा था जिसमें वे पूरे उतरे।
3. इसी तरह जबकि वह शिकार हरम में हो, अगरचे शिकारी एहराम में न हो, उसका भी यही हुक्म है।
4. दरियाई जानवर वह है कि जिस तरह पानी उसके रहने की जगह है उसी तरह पानी ही उसके पैदा होने की जगह हो, पस बत्तख़ व मुरगाबी वगैरह इससे ख़ारिज और खुश्की के शिकार में दाख़िल हैं।

तआमुहू मताअल्लकुम् व लिस्सय्या-रति व हुरि-म अलैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुस्तुम् हुरुमन्,
वत्तकुल्लाहल्लजी इलैहि तुह्शरून (96) ज-अलल्लाहुल् कअ-बतल् बैतल्-हरा-म कियामल्
लिन्नासि वशशहरल्-हरा-म वल्हद्-य वल्कलाइ-द, जालि-क लितअलमू अन्नल्ला-ह यअलमु
मा फिस्समावाति व मा फिलअर्जि व अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम (97) इअलमू
अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिकाबि व

अन्नल्ला-ह गफूररहीम (98) मा
अलरसूलि इल्लल्-बलागु, वल्लाहु
यअलमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून
(99) कुल् ला यस्तविल्-खाबीसु
वत्तयिबु व लौ अअज-ब-क कस्तुल्-
खबीसि फत्तकुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबि
लअल्लकुम् तुफिल्हून (100) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनू ला
तस्अलू अन् अश्या-अ इन् तुब्-द
लकुम् तसुअकुम् व इन् तस्अलू अन्हा
ही-न युनज्जलुल्-कुरआनु तुब्-द लकुम्,
अफल्लाहु अन्हा, वल्लाहु गफूरुन् हलीम
(101) कद् स-अ-लहा कौमुम् मिन्
कब्लिकुम् सुम्-म अस्बहू बिहा काफिरीन
(102) मा ज-अलल्लाहु मिम्-

बही-रतिंव-व ला साइ-बतिंव-व ला

वसीलतिंव-व ला हामिंव-व लाकिन्नल्लजी-न क-फरू यफतरू-न अलल्लाहिल्-कजि-ब, व
अक्सरुहुम् ला यअकिलून (103) व इजा की-ल लहुम् तआलौ इला मा अन्जलल्लाहु व
इलरसूलि कालू हस्बुना मा वजद्ना अलैहि आबा-अना, अ-व लौ का-न आबाउहुम् ला
यअलमू-न शैअंव-व ला यस्तदून (104) या अय्युहल्लजी-न आमनू अलैकुम् अन्फु-सकुम्
ला यजुरुकुम् मन् जल्-ल इजह्तदैतुम्, इलल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअन् फयुनब्बिउकुम् बिमा

حُرْمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ
ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ
اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ۝ قُلْ لَا يَسْتَوِي الْغَنِيُّ وَالْفَقِيرُ وَلَوْ أَجَبَكُمُ
الْغَنِيُّ فَقَالُوا اللَّهُ يَأُولِي الْأَلْبَابِ لَعَذَابُكُمْ فَعْلَحُونَ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَن شَيْءٍ إِن تَبَدَّلَ لَكُمْ تَشَوْكُمْ إِنَّ
تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبَدِّلُكُمْ عَنَّا اللَّهُ عَنَّا اللَّهُ
غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا
كَافِرِينَ ۝ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَيْعَةٍ وَلَا سَآئِةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا
لِحَاوٍ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَانُوا
كَافِرِينَ ۝ وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ
فَالْوَاحِسِينَ أَنَا وَجَدْنَا عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا وَلَوْ كَانُوا يَأْمُرُونَ
شَيْئًا وَلَا يُحْتَدُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا تَعْدُوا
مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَىٰ يَتِمُّ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَبِئْسَ لَكُمْ

अदब का मकान है लोगों के कायम रहने का सबब करार दे दिया¹ और इज़्जत वाले महीने को भी, और हरम में कुरबानी होने वाले जानवरों को भी और उन (जानवरों) को भी जिनके गले में पट्टे हों, यह इसलिए कि तुम इस बात का यकीन कर लो कि बेशक अल्लाह तआला तमाम आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का इल्म रखते हैं। और बेशक अल्लाह तआला सब चीज़ों को ख़ूब जानते हैं। (97) तुम यकीन जान लो कि अल्लाह तआला सज़ा भी सख्त देने वाले हैं, और अल्लाह तआला बड़े मग़्फ़िरत वाले (और) रहमत वाले भी हैं। (98) रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पहुँचाना है। और अल्लाह सब जानते हैं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छुपाकर रखते हो। (99) आप फ़रमा दीजिए कि नापाक और पाक बराबर नहीं, अगरचे तुझको नापाक की कसरत “यानी ज़्यादा होना” ताज्जुब में डालती हो, तो खुदा तआला से डरते रहो ऐ अक्लमन्दो! ताकि तुम कामयाब हो जाओ। (100) ♦

ऐ ईमान वालो! ऐसी (फुज़ूल) बातें मत पूछो² कि अगर तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हारी नागवारी का सबब हो। और अगर तुम कुरआन के नाज़िल होने के ज़माने में (कारामद बातें) पूछो तो तुमसे ज़ाहिर कर दी जाएँ, वे (गुज़रे हुए सवालात) अल्लाह ने माफ़ कर दिए और अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले हैं, बड़े बर्दाश्त करने वाले हैं। (101) ऐसी बातें तुमसे पहले और लोगों ने भी पूछी थीं, फिर उन बातों का हक़ न पूरा किया। (102) अल्लाह तआला ने न बहीरा को मश्रूअ “यानी जायज़ और मुकर्रर” किया है और न सायबा को और न वसीला को और न हामी को, लेकिन जो लोग काफ़िर हैं वे अल्लाह तआला पर झूठ लगाते हैं, और अक्सर (काफ़िर) उनमें के अक्ल नहीं रखते।³ (103) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने जो अहक़ाम नाज़िल फ़रमाए हैं उनकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ रुजू करो, तो कहते हैं कि हमको वही काफी है जिसपर हमने अपने बड़ों को देखा है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ समझ रखते हों और न हिदायत रखते हों! (104) ऐ ईमान वालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम राह पर चल रहे हो, तो जो शख्स गुमराह रहे तो उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं, अल्लाह ही के पास तुम सबको जाना है, फिर वह तुम सबको जतला देंगे जो-जो तुम सब किया करते थे। (105) ऐ ईमान वालो! तुम्हारे आपस में दो शख्सों का वसी “यानी जिसको वसीयत की गई हो, वसीयत पर अमल करने वाला” होना

1. काबा की दुनियावी मस्लहतों और बरकतों में से बाज़ ये हैं। १. उसका अमन की जगह होना। २. वहाँ हर साल मजमा होना जिसमें माली तरक्की और कौमी इत्तिहाद बहुत सहूलत से मयस्सर हो सकता है। ३. उसके बाकी रहने तक दुनिया का बाकी रहना, यहाँ तक कि जब कुफ़्फ़ार उसको ढा देंगे तो करीब ही कियामत आ जाएगी।

2. फुज़ूल की क़ैद इसलिए लगाई कि ज़रूरत की बात पूछने में कोई हर्ज़ नहीं, जैसे जब बाज़ औरतों की इद्त का हुक्म नाज़िल हुआ और बाज़ का नहीं हुआ और ज़रूरत सबकी पड़ती है। उसको सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा तो बिला नाराज़गी के इस आयत में जवाब नाज़िल हुआ: “वल्लाई यअिस्-न मिनल् महीजि....।

3. बहीरा वह जानवर है जिसका दूध बुतों के नाम कर देते, उसे कोई अपने काम में न लाता, और साइबा वह जानवर है जिसको बुतों के नाम पर छोड़ देते, उससे कोई काम न लेते। जैसे इस मुल्क में बाज़े लोग साँड़ छोड़ देते हैं। और वसीला वह ऊँटनी है जो पहली बार मादा बच्चा जने, फिर दूसरी बार भी मादा बच्चा दे, दरमियान में नर बच्चा न पैदा हो। उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ देते थे। और हामी वह नर ऊँट है जो एक खास गिन्ती से जुफ़्ती (यानी सोहबत) कर चुका हो, उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ देते। यह सब बातिल, कुफ़ और शिर्क हैं।

कुन्तुम् तअमलून (105) या अय्युहल्लजी-न आमनू शहादतु बैनिकुम् इजा ह-ज-र
अ-ह-दकुमुल्मौतु हीनल्- वसिय्यतिस्नानि ज़वा अदलिम् मिन्कुम् औ आखरानि मिन् गैरिकुम्
इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फिल् अर्जि फ-असाबत्कुम् मुसीबतुल्मौति, तह्बिसूनहुमा
मिम्-बअदिस्सलाति फयुक्सिमानि बिल्लाहि इनिर्तब्तुम् ला नशतरी बिही स-मनंव-व लौ
का-न जा कुरबा व ला नक्तुमु

शहा-दतल्लाहि इन्ना इज़ल् लमिनल्-
आसिमीन (106) फ-इन् अ़सि-र अ़ला
अन्नहुमस्तहक्का इस्मन् फ-आखरानि
यकूमानि मका-महुमा मिनल्लज़ीनस्-
-तहक्-क अलै हिमुल्-औ लयानि
फयुक्सिमानि बिल्लाहि ल-शहादतुना
अहक्कु मिन् शहादतिहिमा व मअतदैना
इन्ना इज़ल् लमिनज़्ज़ालिमीन (107)

ज़ालि-क अदना अय्यअतू बिश्शहा-दति
अ़ला वज्हिहा औ यखाफू अन् तुरद्-द
ऐमानुम् बअ-द ऐमानिहिम्, वत्तकुल्ला-ह
वस्मअू, वल्लाहु ला यहिदल् कौमल्
फासिकीन (108) ❖

यौ-म यज्मअुल्लाहुरूसु-ल फ-यकूलु
माज़ा उजिब्तुम्, कालू ला अ़िल्-म लना,
इन्न-क अन्-त अल्लामुल्-गुयूब

(109) इज़् कालल्लाहु या अ़ीसब्-न मर्यमज्कुर निअ्मती अलै-क व अ़ला वालिदति-क
❖ इज़् अय्यत्तु-क बिरुहिल्कुदुसि, तुकल्लिमुन्ना-स फिल्महिद व कहलन् व इज़्
अल्लस्तुकल्-किता-ब वल्हिकम-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल व इज़् तखलुकु मिनत्तीनि
कहै-अतित्तरि बि-इज़्नी फतन्फुखु फीहा फ-तकनु तैरम् बि-इज़्नी व तुबिरुल्-अक्म-ह

والا سمعوا
بِأَنَّهُمْ يَعْمَلُونَ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ
أَحَدُكُمْ الْمَوْتَ حِينَ الْوَصِيَّةِ أَتَيْنَ ذُوَا عَدَلٍ مِنْكُمْ أَوْ آخَرَانِ
مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ حَضَرْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ
الْمَوْتِ تَحْسِبُوهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَتُقْسِمُنِ بِاللَّهِ إِنَّ
الرَّبَّ لَهُ لَا تَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا تَكُنْتُمْ شَهِادَةً
اللَّهِ إِذَا لَبِثَ الْأَيُّمِينَ ﴿وَأَنْ غُيِّرَ عَلَى الْهَمَّا اسْتَشْغَا الْأُمُ
وَأَخَرَانِ يَقُومُنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوَّلِينَ
فَيُقْسِمُنِ بِاللَّهِ لِشَهَادَتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَلْنَا
إِنَّا إِذَا لَبِثَ الظَّالِمِينَ ﴿ذَلِكَ أَتَى أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَى
وُجْهِهَا أَوْ يَخَافُونَ أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانُ بَعْدَ آيْمَانِهِمْ وَأَقْسُوا اللَّهَ
وَاسْمَعُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ
الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ قَالَوَا لَا عِلْمَ لَنَا بِكَ أَنْتَ عَالِمُ
الْغُيُوبِ ﴿إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ
وَأَلَّا تَكُونَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿إِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّاسِ فِي
الْهَدْيِ وَكَلَّمُوا إِذْ عَلَّمْنَاكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالْقُرْآنَ
وَإِلَّا تَهْتَبِلُ ﴿وَإِذْ خَلَقْنَا مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِأَذْنٍ فَتَنَفَخُ

मुनासिब है, जबकि तुममें से किसी को मौत आने लगे, जब वसीयत करने का वक्त हो वे दो शख्स ऐसे हों कि दीनदार हों और तुममें से हों या ग़ैर कौम के दो शख्स हों, अगर तुम कहीं सफ़र में गए हो फिर तुमपर मौत का वाकिआ पड़ जाए, अगर तुमको शुब्हा हो तो उन दोनों को बाद नमाज़ के रोक लो, फिर दोनों खुदा की कसम खाएँ कि हम इस कसम के बदले कोई नफ़ा नहीं लेना चाहते अगरचे कोई रिश्तेदार भी होता, और अल्लाह की बात को हम छुपाकर न रखेंगे (वरना) हम इस हालत में सख़्त गुनाहगार होंगे। (106) फिर अगर इसकी इत्तिहा हो कि वे दोनों (वसी) किसी गुनाह के करने वाले हुए हैं तो उन लोगों में से जिनके मुकाबले में गुनाह का काम हुआ था और दो शख्स जो सबमें ज़्यादा करीब हैं, जहाँ वे दोनों खड़े हुए थे वे दोनों खड़े हों, फिर दोनों खुदा की कसम खाएँ कि यकीनन हमारी यह कसम इन दोनों की उस कसम से ज़्यादा सच्ची और दुरुस्त है और हम ज़रा भी हद से नहीं बढ़ें, (वरना) हम इस हालत में सख़्त ज़ालिम होंगे। (107) यह बहुत करीब ज़रिया है इस बात का कि वे लोग वाकिए को ठीक तौर पर ज़ाहिर कर दें, या इस बात से डर जाएँ कि उनसे कस्में लेने के बाद (वारिसों पर) कस्में मुतवज्जह की जाएँगी। और अल्लाह तआला से डरो और सुनो, और अल्लाह तआला फ़ासिक लोगों की रहनुमाई न करेंगे। (108) ♦

जिस दिन अल्लाह तआला पैग़म्बरों को (मय उनकी उम्मतों के) जमा करेंगे, फिर इरशाद फ़रमाएँगे कि तुमको (उन उम्मतों की तरफ़ से) क्या जवाब मिला था? वे अज़्र करेंगे कि (ज़ाहिरी जवाब तो हमें मालूम है, लेकिन उनके दिल की) हमको कुछ ख़बर नहीं, आप बेशक छुपी बातों के जानने वाले हैं। (109) जब अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! मेरा इनाम याद करो जो तुमपर और तुम्हारी माँ पर (हुआ है) जबकि मैंने तुमको रूहुल-कुदुस से ताईद दी। तुम आदमियों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी, और जबकि मैंने तुमको किताबें और समझ की बातें और तौरात और इन्जील तालीम कीं, और जबकि तुम मेरे हुक्म से गारे से एक शक़ल बनाते थे जैसे परिन्दे की शक़ल होती है, फिर तुम उसके अन्दर मेरे हुक्म से फूँक मार देते थे जिससे वह परिन्दा बन जाता था, और तुम मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे जन्म के अन्धे को और कोढ़ के बीमार को, और जबकि तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को निकालकर खड़ा कर लेते थे, और जबकि मैंने बनी इसराईल को तुमसे (यानी तुम्हारे क़त्ल व हलाक करने से) बाज़ रखा जब तुम उनके पास दलीलें लेकर आए थे, फिर उनमें जो काफ़िर थे उन्होंने कहा था कि यह सिवाय खुले जादू के और कुछ भी नहीं। (110) और जबकि मैंने हवारियों को हुक्म दिया

1. क्योंकि पराया माल जान-बूझकर बिला इजाज़त ले लेना जुल्म है।
2. ऊपर मुख़्तलिफ़ अहक़ाम का ज़िक्र हुआ है और दरमियान में उनपर अमल करने की तरगीब और उनकी मुख़ालफ़त पर डरावा और डाँट बयान फ़रमाई गई है, इसी की ताकीद के लिए अगली आयत में कियामत की हौल व हैबत याद दिलाते हैं ताकि इताअत का ज़्यादा सबब हो और मुख़ालफ़त से ज़्यादा रोकने वाला हो, और अक्सर कुरआन मजीद का यही तरीका है।
3. मतलब यह है कि एक ऐसा दिन होगा और आमाँल व हालात की पूछ-गछ होगी, इसलिए तुमको मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी से डरते रहना चाहिए।
4. ज़िक्र की गई चीज़ों का हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए इनाम होना तो ज़ाहिर है, लेकिन हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम के हक़ में इनाम होना इस तौर पर है कि इन सब उमूर से आपका नबी होना साबित है, और आपने उनकी पाकीज़गी की ख़बर दी, और नबी की दी हुई ख़बरें सब सच्ची होती हैं। पस उनकी पाकदामनी साबित हो गई और यह बड़ा इनाम है। और वालिदा पर जो इनाम हुआ वह ईसा अलैहिस्सलाम को इसलिए याद दिलाया गया कि असल और जड़ पर इनाम होना एक तरह से शाख़ पर भी है, कि वे उसी असल से निकली हुई हैं।

वल्अब्-स बि-इज्नी व इज् तुख़िजुल्मौता बि-इज्नी व इज् कफफ़तु बनी इस्राई-ल अन्-क
 इज् जिअतहुम् बिल्बय्थिनाति फ़क़ालल्लज़ी-न क-फ़रु मिन्हुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन
 (110) व इज् औहैतु इलल्-हवारिय्यी-न अन् आमिन् बी व बि-रसूली कालू आमन्ना
 वशहद् बिअन्नना मुस्लिमून (111) इज् कालल्-हवारिय्यू-न या औसब्-न मर्य-म हल्
 यस्ततीअु रब्बु-क अय्युनज़ि-ल अलैना
 माइ-दतम् मिनस्समा-इ, कालत्तकुल्ला-ह
 इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (112) कालू
 नुरीदु अन् नअकु-ल मिन्हा व
 तत्मइन्-न कुलूबुना व नअल्-म अन्
 कद् सदक्तना व नकू-न अलैहा
 मिनश्शाहिदीन ♦ (113) का-ल
 औसब्नु मर्यमल्लाहुम्-म रब्बना अन्ज़िल्
 अलैना माइ-दतम् मिनस्समा-इ तकूनु
 लना औदल् लि-अव्वलिना व आखिरिना
 व आयतम्- मिन्-क वरज़ुकना व
 अन्-त खैरुरराज़िकीन (114)
 कालल्लाहु इन्नी मुनज़िज़ुहा अलैकुम्
 फ-मय्यक्फुर बअदु मिन्कुम् फ-इन्नी
 उअज़िज़ुहु अज़ाबल्-ला उअज़िज़ुहु
 अ-हदम् मिनल्-आलमीन (115) ♦

لَا تَكْفُرُوا بِاللَّهِ
 ۱۱۵
 وَلَا تَحْزَنْهُمْ
 فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا يَلَاذِقِي وَتَبْرِي الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ يَلَاذِقِي
 وَلَا تَحْزَنْهُمْ الْمَوْتَى يَلَاذِقِي وَلَا تَكْفُرُوا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ
 جَعَلَهُمْ بِالْبَيْتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا
 سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَإِذْ أُوحِيَتْ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَ
 بِرُسُلِي قَالُوا أَمَّا وَاللَّهِ مَا نَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۝ إِذْ قَالَ
 الْحَوَارِيُّونَ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ
 عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝
 قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ
 صَدَقْتَنَا وَكَانُوا عَلَيْهِ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ قَالَ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
 اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا
 لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝
 قَالَ اللَّهُ إِنَّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدَ ذَلِكَ فَإِيَّيَّيْ
 عَذَابِي أَلَّا أَعَذِّبَهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْيسَى ابْنُ
 مَرْيَمَ أَنْتَ قُلْتُ لِلنَّاسِ امْكُذِّبُونِي وَأَنجِي إِلَيَّ مِنَ الدُّنْيَا
 اللَّهُ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِشَيْءٍ إِنْ كُنْتُ
 قُلْتُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمَ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ
 مَرْكَ

कि तुम मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए, आप गवाह रहिए कि हम पूरे फरमाँबर्दार हैं। (111) (वह वक्त याद करने के काबिल है) जबकि हवारियों ने अर्ज किया कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या आपके रब ऐसा कर सकते हैं कि हमपर आसमान से दस्तरख्वान (यानी कुछ खाना) नाज़िल फरमा दें? आपने फरमाया खुदा तआला से डरो अगर तुम ईमान वाले हो।¹ (112) वे बोले, हम यह चाहते हैं कि उसमें से खाएँ और हमारे दिलों को पूरा इत्मीनान हो जाए, और हमारा यह यकीन और बढ़ जाए कि आपने हमसे सच बोला है, और हम गवाही देने वालों में से हो जाएँ। ♦ (113) ईसा इब्ने मरियम ने दुआ की, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवर्दिगार! हमपर आसमान से दस्तरख्वान (यानी खाना) नाज़िल फरमाइए कि वह हमारे लिए यानी हममें जो अब्बल हैं और जो बाद में हैं सबके लिए ईद (यानी एक खुशी की बात) हो जाए, और आपकी तरफ से एक निशान हो जाए, और आप हमको अता फरमाइए कि आप सब अता करने वालों से अच्छे हैं। (114) हक तआला ने इरशाद फरमाया कि मैं वह खाना तुम लोगों पर नाज़िल करने वाला हूँ, फिर जो शख्स तुममें से हक न पहचानने का जुर्म करेगा तो मैं उसको ऐसी सज़ा दूँगा कि वह सज़ा दुनिया जहान वालों में से किसी को न दूँगा।² (115) ♦

और (वह वक्त भी ज़िक्र के काबिल है) जबकि अल्लाह तआला फरमाएँगे³ कि ऐ ईसा इब्ने मरियम! क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि खुदा के अलावा मुझको और मेरी माँ को भी दो माबूद करार दे लो। (ईसा अलैहिस्सलाम) अर्ज करेंगे कि (तौबा-तौबा मैं) आप (को शरीक से) पाक (समझता हूँ और) हैं, मुझको किसी तरह मुनासिब न था कि मैं ऐसी बात कहता जिस (के कहने) का मुझको कोई हक नहीं,⁴ अगर मैंने यह कहा होगा तो आपको इसका इल्म होगा, आप तो मेरे दिल के अन्दर की बात भी जानते हैं, और मैं आपके इल्म में जो कुछ है उसको नहीं जानता, तमाम गैबों के जानने वाले आप ही हैं। (116) मैंने तो उनसे और कुछ नहीं कहा मगर सिर्फ वही जो आपने मुझसे कहने को फरमाया था कि तुम अल्लाह की बन्दगी (इख़्तियार) करो, जो मेरा भी रब है और

1. मतलब यह है कि तुम ईमान वाले हो इसलिए खुदा से डरो और मोजिज़ात की फरमाइश से जो कि बेज़रूरत होने की वजह से अदब के खिलाफ है, बचो।
2. हक न पहचानने का जुर्म करेगा, यानी अक्ली और नकली तौर पर जो हुक्क वाजिब हैं उनको अदा न करेगा। मजमूआ उन हुक्क का यह था कि उसपर शुक्र किया जाए कि अक्ल के एतिबार से भी वाजिब है और उसमें ख़ियानत न करें और अगले दिन के लिए उठाकर न रखें, चुनौचे इसका हुक्म होना तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस में अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु से नकल किया गया है, और उस हदीस में यह भी है कि जो दस्तरख्वान आसमान से नाज़िल हुआ उसमें रोटी और गोश्त था। और उस हदीस में यह भी है कि उन लोगों ने (यानी उनमें से बाज़ ने) ख़ियानत की और अगले दिन के लिए उठाकर रखा, पस बन्दर और खिन्ज़ीर की सूरत में शक्लें बिगड़ गई।
3. यानी कियामत में।
4. न अपने अक़ीदे के एतिबार से कि मैं मुव्हिद (यानी अल्लाह को एक मानने वाला, पक्का सच्चा मुसलमान) हूँ और न हकीकत के एतिबार से कि आप वाहिद हैं।

बिही अनिअबुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् व कुन्तु अलैहिम् शहीदम् मा दुन्तु फीहिम् फ-लम्मा तवफफैतनी कुन्-त अन्तरकी-ब अलैहिम्, व अन्-त अला कुल्लि शैइन् शहीद (117) इन् तुअज्जिब्हुम् फ-इन्नुहुम् अिबादु-क व इन् तगिफर् लहुम् फ-इन्न-क अन्तल् अजीजुल्-हकीम (118) कालल्लाहु हाजा यौमु यन्फअुस्सादिकी-न सिद्कुहुम्, लहुम् जन्नातुन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु खालिदी-न फीहा अ-बदन्, रजियल्लाहु अन्हुम् व रज्जू अन्हु, जालिकल् फौजुल् अजीम (119) लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा फीहिन्-न, व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर (120) ♦

6 सूरतुल् अन्आमि 55

(मक्की) इस सूर: में अरबी के

12935 अक्षर 3100 शब्द

165 आयतें, और 20 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी ख-लकस्-

समावाति वल्अर्-ज व ज-अलज्-

जुलुमाति वन्नू-र, सुम्मल्लजी-न क-फरु

बिरब्बिहिम् यअ्दिलून (1) हुवल्लजी

ख-ल-ककुम् मिन् तीनिन् सुम्-म कजा अ-जलन्, व अ-जलुम् मुसम्मन् अिन्दहू सुम्-म

अन्तुम् तम्तरून (2) व हुवल्लाहु फिस्समावाति व फिल्अर्जि, यअ्लमु सिरर्कुम् व जहरकुम्

व यअ्लमु मा तक्सिबून (3) व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला

कानू अन्हा मुअ्रिजीन (4) फ-कद् कज्जबू बिल्हविक लम्मा जा-अहुम् फसौ-फ यअ्तीहिम्

إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ
عَبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ ۝
فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ إِنَّ تُعَذِّبُهُمْ وَإِنَّهُمْ فِيَّ عَذَابٍ وَإِنْ تُغْفِرْ لَهُمْ
فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ
صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
وَاللَّهُ أَكْبَرُ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ
وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ
مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَى أَجَلَكُمْ وَأَجَلٌ مُسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ
تَمْتَدُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ بِسِرِّكُمْ وَ
جَهْرِكُمْ وَيَعْلَمُ مَا كُتِبُونَ ۝ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ فَقَدْ كَذَّبَا بِالصِّحْقِ إِذْ جَاءَهُمْ ۝
فَسَوْفَ يَأْتِيهِمُ الْبُيُوتُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ

तुम्हारा भी रब है, और मैं उनपर बा-ख़बर रहा जब तक उनमें रहा, फिर जब आपने मुझको उठा लिया तो आप उनपर मुत्तला रहे, और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। (117) अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं, और अगर आप इनको माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (118) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएँगे कि यह वह दिन है कि जो लोग सच्चे थे उनका सच्चा होना उनके काम आएगा, उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा को रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और खुश और वे अल्लाह तआला से राज़ी और खुश हैं, यह बड़ी भारी कामयाबी है। (119) अल्लाह ही की हुक्मत है आसमानों की और ज़मीन की, और उन चीज़ों की जो उनमें मौजूद हैं, और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं। (120) ♦

6 सूर: अन्आम 55

सूर: अन्आम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 166 आयतें और 20 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

1 तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरियों को और नूर को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग दूसरों को अपने रब के बराबर करार देते हैं। (1) वह ऐसा है जिसने तुमको मिट्टी से बनाया, फिर एक वक़्त मुक़र्रर किया, और दूसरा मुक़र्रर वक़्त खास उसी के (यानी अल्लाह ही के) नज़दीक है, फिर भी तुम शक़ रखते हो। (2) और वही है अल्लाह (माबूद बरहक़) आसमानों में भी और ज़मीन में भी, वह तुम्हारे छुपे हालात को भी और ज़ाहिरी हालात को भी जानते हैं, और तुम जो कुछ अमल करते हो उसको जानते हैं। (3) और उनके पास कोई निशानी भी उनके रब की निशानियों में से नहीं आती, मगर वे उससे मुँह ही मोड़ लेते हैं। (4) सो उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बतलाया जबकि वह उनके पास पहुँची। सो जल्दी ही उनको ख़बर मिल जाएगी उस चीज़ की जिसके साथ ये लोग मज़ाक़-ठट्टा किया करते थे। (5) क्या उन्होंने देखा नहीं कि

1. पिछली सूर: के ख़तम और इस सूर: के आगाज़ में तो मुनासबत यह है कि दोनों शिर्क के बातिल करने और तौहीद के साबित करने और उसके दलाइल पर मुश्तमिल हैं, और दोनों में शरीअतों पर का बयान किया गया है। अगरचे पिछली सूर: में उसूल की तरह फ़ुरूअ यानी अहक़ाम भी बहुत हैं, चुनाँचे बीस तक उनकी गिन्ती पहुँची है। और इसमें तक़रीबन तमाम सूर: में उसूल ही ज़्यादा हैं और फ़ुरूअ बहुत कम हैं, जो कि ज़िक़्र की गई गिन्ती के तिहाई या चौथाई से ज़्यादा नहीं। और खुद इस सूर: के हिस्सों में आपस में मुनासबत व ताल्लुक़ यह है कि हासिल सूर: का चन्द उमूर हैं। तौहीद का साबित करना, रिसालत का साबित करना, तौहीद व रिसालत की ताईद के लिए बाज़ अम्बिया के वाकिआत, कुरआन का साबित करना, हुज़ूरे पाक के नबी बनाकर भेजने को साबित करना, उनके इनकारियों की कौली व फेली दुश्मनी, उन इनकारियों पर वईदें, उन वईदों की ताईद के लिए बाज़ झुठलाने वाली उम्मतों की बर्बादी का हाल, उन इनकारियों से गुफ़्तगू, बहस व हुज्जत, खुद उनके तौर-तरीकों व आदत की बुराई ज़ाहिर करना, उनके साथ मामला रखने में एनिदाल की तालीम, कि तब्बीग़ में कमी न हो, सख़्ती में शरई हद्दों से गुज़रना न हो, मेल-जोल में दीन की किसी बात की तरफ़ से चश्मपोशी न हो, दिलजोई या हिदायत की फ़िक़्र में मुबालागा न हो, उनकी जहालत की रस्मों के मुकाबले में बाज़ बुलन्द इस्लामी अख़्लाक़ का बयान, और यह पूरी की पूरी गुफ़्तगू मुशिरकीन से है, सिर्फ़ दो तीन जगह नुबुव्वत व कुरआन के मसले में या चीज़ों के हलाल व हराम होने की बहस में मुनासबत से ज़िम्नन अहले किताब खासकर यहूद की बुराई और कमियों का बयान आ गया है। यह हासिल है सूर: का, और इन सब मज़ामीन में ताल्लुक़ व रब्त का सबब पोशीदा नहीं। पस सबसे पहले तौहीद की आयतें हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 232 पर)

अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तहिज़ऊन (5) अलम् यरौ कम् अह्लकना मिन् कब्लिहिम् मिन् करनिम् मक्कन्नाहुम् फिल्अर्जि मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्लस्समा-अ अलैहिम् मिद्दरारंव्-व जअल्लल्-अन्हा-र तज्री मिन् तह्तिहिम् फ-अह्लकन्नाहुम् बिज्जुनूबिहिम् व अन्शअन्ना मिम्-बअदिहिम् करनन् आखरीन (6) व लौ नज्जल्ना अलै-क किताबन् फी किरतासिन् फ-ल-मसूहु बिऐदीहिम् लकालल्लजी-न क-फरु इन् हाज़ा इल्ला सिहरुम् मुबीन (7) व कालू लौ ला उन्जि-ल अलैहि म-लकुन्, व लौ अन्जल्ना म-लकल् लक्कुजियल्-अम्रु सुम्-म ला युन्जरुन (8) व लौ जअल्नाहु म-लकल् ल-जअल्नाहु रजुलंव्-व ल-लबस्ना अलैहिम् मा यल्बिसून (9) व ल-कदिस्तुहिज़-अ बिरुसुलिम्-मिन् कब्लि-क फहा-क बिल्लजी-न सखिरु मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तहिज़ऊन (10) ♦

कुल् सीरु फिल्अर्जि सुम्मन्जुरु कै-फ का-न आकि-बतुल् मुकज्जिबीन (11) कुल्-लिमम्-मा फिस्समावाति वल्अर्जि कुल्-लिल्लाहि, क-त-ब अला नफिसिहिरह्म-त, ल-यज्मअन्नकुम् इला यौमिल्-कियामति ला रै-ब फीहि, अल्लजी-न खसिरु अन्फु-सहुम् फहुम् ला युअ्मिनून (12) व लहू मा स-क-न फिल्लैलि वन्नहारि, व हुवस्समीअुल् अलीम (13) कुल् अगैरल्लाहि अत्तखिजु वलिय्यन् फातिरिस्समावाति वल्अर्जि व हु-व युत्अिमु व ला युत्अिमु, कुल् इन्नी उमिरतु अन् अकू-न अव्व-ल मन् अस्ल-म व

والأسمعوا 116 النساء
أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مَنْ قَرْنٌ مَكَلَّمُهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَهُمْ فِيهَا مِنْ شَيْءٍ
لَهُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ قِطْرًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمْ فَاهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا
آخَرِينَ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَسَوْهُ بِآيَاتٍ يُخَيَّرُ
لِقَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ
عَلَيْكَ الْكِتَابُ ۝ وَلَوْ أُنْزِلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنُ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُونَ ۝ وَ
لَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا جَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَكِنَّا جَعَلْنَاهُمْ قُلُوبًا يَلْسُنُونَ ۝
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَخَافَ بِالْكَلِذِبِ سَخِرُوا مِنْهُ
فَإِذَا نَافَا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ۝ قُلْ لِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
قُلْ لِلَّهِ كُتِبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ لِيَجْمَعَ كُفْرًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَهُ
مَا سَكَنَ فِي الْبَيْتِ وَالتَّهَارُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَعْيَدُ
اللَّهُ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يَخْشَى الْفِتْنَةَ
قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ

हम उनसे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुके हैं, जिनको हमने ज़मीन (यानी दुनिया) में ऐसी कुव्वत दी थी कि तुमको वह कुव्वत नहीं दी, और हमने उनपर ख़ूब बारिशें बरसाईं, और हमने उनके नीचे से नहरें जारी कीं, फिर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला, और उनके बाद दूसरी जमाअतों को पैदा कर दिया।¹ (6) और अगर हम कागज़ पर लिखी हुई कोई तहरीर आप पर नाज़िल फ़रमाते फिर उसको ये लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी ये काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं, मगर खुला जादू है। (7) और ये लोग यूँ कहते हैं कि उनके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया? और अगर हम कोई फ़रिश्ता भेज देते तो सारा किस्सा ही ख़त्म हो जाता, फिर उनको ज़रा भी मोहलत न दी जाती। (8) और अगर हम उसको फ़रिश्ता तजवीज़ करते तो हम उसको आदमी ही बनाते, और हमारे इस फ़ेल से फिर उनपर वही इश्काल होता जो इश्काल अब कर रहे हैं।² (9) और वाकई आपसे पहले जो पैग़म्बर हुए हैं उनका भी हँसी और मज़ाक़ उड़ाया गया है, फिर जिन लोगों ने उनसे हँसी-मज़ाक़ किया था उनको उस अज़ाब ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे। (10) ❖

आप फ़रमा दीजिए कि ज़रा ज़मीन में चलो-फिरो, फिर देख लो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ। (11) आप कहिए कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है, यह सब किसकी मिल्क है? आप कह दीजिए कि सब अल्लाह ही की मिल्क है, उसने (यानी अल्लाह तआला ने) मेहरबानी फ़रमाना अपने ऊपर लाज़िम फ़रमा लिया है। तुमको खुदा तआला कियामत के दिन जमा करेंगे इसमें कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने को जाया कर दिया है सो वे ईमान न लाएँगे। (12) और उसी की (यानी अल्लाह ही की मिल्क) है सब जो कुछ रात और दिन में रहते हैं, और वही है बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला। (13) आप कहिए कि क्या अल्लाह के सिवा जो कि आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले हैं और जो कि खाने को देते हैं और उनको कोई खाने को नहीं देता, किसी को माबूद करार दूँ? आप फ़रमा दीजिए कि मुझको यह हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं इस्लाम कबूल करूँ, और तुम मुश्रिकों में से हरगिज़ न होना। (14) आप कह दीजिए कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15) जिस शख्स से उस दिन वह अज़ाब हटाया जाएगा तो उसपर

(पृष्ठ 230 का शेष)

2. तौहीद तीनों आयतों का मकसूदे मुश्तरक है। यानी इबादत के लायक वह है जिसमें ये सिफ़तें हों कि वह दुनिया ज़हान का पैदा करने वाला हो, और हाज़िर व ग़ायब का जानने वाला हो। और आख़िर की दो आयतों में नबी करीम को भेजने की ख़बर और उसके मना करने को रद्द करना और किए हुए आमाल पर हिसाब व पूछताछ पर तंबीह भी है, जिससे शिर्क पर वर्द साबित हो गई। और दूसरे 'वक्त्' (ग़ालिबन इससे मुराद कियामत है) के इल्म को अपने साथ मख्सूस फ़रमाया, क्योंकि पहले 'वक्त्' (यानी मौत) का अगरचे कतई इल्म न सही मगर अन्दाज़े के तौर पर निशानियों से मालूम हो जाता है।

3. मुराद इससे वह अज़ाब है जिसकी ख़बर कुरआन में सुनकर हँसते थे, जिससे कुरआन का झुठलाना लाज़िम आता था। उसकी ख़बर मिलने का मतलब यह है कि जब अज़ाब नाज़िल होगा उसकी ख़बर आँखों से देख लेंगे।

1. मुराद इन हलाक होने वाली जमाअतों से आद व समूद वगैरह हैं कि अज़ाब के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से हलाक किए गए।

2. यानी उस फ़रिश्ते को बशर (यानी इन्सान) समझकर फिर वही एतिराज़ करते। गरज़ फ़रिश्ते के नाज़िल होने से उनका नफ़ा तो कुछ न होता, क्योंकि उनका शक व शुब्हा अपनी जगह बाक़ी रहता, और उनका नुक़सान यह होता कि हलाक कर दिए जाते। इसलिए हमने इस तरह नाज़िल नहीं किया। खुलासा यह हुआ कि हद दर्जा दुश्मनी की वजह से ऐसी बातें मुँह से निकालते थे जो हिदायत और हक़ के वाज़ेह होने का तरीक़ (यानी रास्ता और तरीक़ा) नहीं, और जो उसका तरीक़ा है कि मौजूद आयात व मौजिज़ात में ग़ौर करना, उससे काम नहीं लेते।

ला तकूनन्-न मिनल्मुशिरकीन (14) कुल् इन्नी अखाफु इन् असेतु रब्बी अजा-ब यौमिन् अजीम (15) मय्युस्रफ़ अन्हु यौमइजिन् फ-कद् रहि-महू, व जालिकल् फौजुल्मुबीन (16) व इय्यम्सस्कल्लाहु बिजुरिन् फला काशि-फ लहू इल्ला हु-व, व इय्यम्सस्-क बिखैरिन् फहु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर (17) व हुवल्काहिरु फौ-क अिबादिही, व हुवल् हकीमुल्-खबीर (18) कुल् अय्यु शैइन् अक्बरु शहा-दतन्, कुलिल्लाहु, शहीदुम् बैनी व बैनकुम्, व ऊहि-य इलय्-य हाजल् कुरआनु लिउन्जि-रकुम् बिही व मम्-ब-ल-ग, अइन्नकुम् लतशहदू-न अन्-न मअल्लाहि आलि-हतन् उख़रा, कुल् ला अशहदु कुल् इन्नमा हु-व इलाहुं-व-वाहिदुं-व इन्ननी बरीउम् मिम्मा तुशिरकून ✱ (19) अल्लजी-न आतैनाहुमुल् किता-ब यअ्रिफून्हू कमा यअ्रिफू-न अब्ना-अहुम् ✱ अल्लजी-न ख़ासिरु अन्फु-सहुम् फहुम् ला युअ्मिनून (20) ✱

व मन् अज़ल्मु मिम्-मनिफ़तरा अलल्लाहि कजिबन् औ कज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़िलहुज़्-जालिमून (21) व यौ-म नहशुरुहुम् जमीअन् सुम्-म नकूलु लिल्लजी-न अशरकू ऐ-न शु-रकाउ- कुमुल्लजी-न कुन्तुम् तज़अुमून (22) सुम्-म लम् तकुन् फिलतुहुम् इल्ला अन् कालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुशिरकीन (23) उन्जुर कै-फ क-जबू अला अन्फुसिहिम् व जल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़तरून (24) व मिन्हुम् मय्यस्तमिअु इलै-क व जअल्ला अला कुलूबिहिम् अकिन्नतन् अय्यफ़कहूहु व फी

والاعمال
118
الاعمال
عَظِيمٌ ۝ مَنْ يُصِرْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْنَا ۝ وَذَلِكَ الْقَوْمُ
الْمُتَّبِعُونَ ۝ وَإِنْ يَسْتَسْكِبْ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۝ وَ
إِنْ يَسْتَسْكِبْ بِضُرٍّ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ
فَوْقَ عِبَادِهِ ۝ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْغَنِيُّ ۝ قُلْ أَسَىٰ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً
قُلْ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُمْ
بِهِ ۝ وَمَنْ يَكْفُرْ أَفَكُنْ لَهُ لِقَاءُ اللَّهِ ۝ إِنَّ اللَّهَ إِلَهُهُ ۝ أُخْرَىٰ قُلْ
لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَاللَّهُ وَاحِدٌ ۝ وَأَنَا نَبِيٌّ ۝ وَمِنَ الْأَنْبِيَاءِ ۝
الَّذِينَ آمَنُوا أَتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ آبَاءَهُمْ ۝ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۝ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الظَّالِمُونَ ۝ وَيَوْمَ
نُفِثَهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَتَيْنَاكُمْ أَفَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ
لَكُمْ تَرَعُونَ ۝ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فَتَنَّبَهُمُ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبَّنَا
مَا أَكُنَّا مُشْرِكِينَ ۝ أَنْظِرْ كَيْفَ كَذَّبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَصَلَّ عَلَهُمْ
مَا كَانُوا يَعْتَدُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۝ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۝ وَإِنْ يَرَوْا كَلِمًا
أَبَىٰ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ

अल्लाह तआला ने बड़ा रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16) और अगर अल्लाह तआला तुझको कोई तकलीफ पहुँचा दें तो उसका दूर करने वाला सिवाय अल्लाह तआला के कोई नहीं। और अगर तुझको वह (यानी अल्लाह तआला) कोई नफा पहुँचा दें तो वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाले हैं। (17) और वही अल्लाह तआला अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब (व बरतर) हैं, और वही बड़ी हिकमत वाले (और) पूरी ख़बर रखने वाले हैं।¹ (18) आप कहिए कि गवाही देने के लिए सबसे बढ़कर चीज़ कौन है? आप कहिए कि मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह तआला गवाह है, और मेरे पास यह कुरआन बतौर वह्य के भेजा गया है ताकि मैं इस कुरआन के ज़रिये से तुमको और जिस-जिसको यह कुरआन पहुँचे उन सबको डराऊँ, क्या तुम सब सचमुच यही गवाही दोगे कि अल्लाह तआला के साथ कुछ और माबूद भी हैं? आप कह दीजिए कि मैं तो गवाही नहीं देता, आप कह दीजिए कि बस वह तो एक ही माबूद है, और बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। (19) जिन लोगों को हमने किताब दी है वे लोग इस (रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को ज़ाया कर लिया है² सो वे ईमान न लाएँगे। (20) ♦

और उससे ज़्यादा और कौन बेइन्साफ़ होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ बोहतान बाँधे या अल्लाह तआला की आयतों को झूठा बतलाए, ऐसे बेइन्साफ़ों को छुटकारा न मिलेगा।³ (21) और (वह वक़्त याद करने के काबिल है) जिस दिन हम उन तमाम मख़्लूकों को जमा करेंगे, फिर हम मुशिरकों से (वास्ते से या बिला वास्ता सज़ा और झिड़की के तौर पर) कहेंगे कि (बतलाओ) तुम्हारे वे शुरका जिनके माबूद होने का तुम दावा करते थे कहाँ गए? (22) फिर उनके शिर्क का अन्जाम इसके सिवा कुछ भी न होगा कि वे यूँ कहेंगे कि अल्लाह की कसम, अपने परवर्दिगार की, हम मुशिरक न थे।⁴ (23) ज़रा देखो तो किस तरह झूठ बोला अपनी जानों पर, और जिन चीज़ों को तराशा करते थे वे सब उनसे ग़ायब हो गई।⁵ (24) और उनमें⁶ बाज़े ऐसे हैं कि आपकी तरफ़ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, इससे कि वे उसको समझें और उनके कानों में डाट दे रखी है, और अगर वे लोग तमाम दलीलों को देख लें; उनपर भी ईमान न लाएँ, यहाँ तक कि जब ये लोग आपके पास आते हैं तो आपसे ख़्वाह-मख़्वाह झगड़ते हैं। ये लोग जो काफ़िर हैं यूँ कहते हैं कि यह तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बातें हैं जो पहलों से चली आ रही हैं। (25) और ये लोग उससे औरों को भी रोकते हैं और खुद भी उससे दूर रहते हैं, और

1. ऊपर तौहीद व रिसालत के बारे में अलग-अलग कलाम हुआ है, आगे दोनों के बारे में इकट्ठे तौर पर कलाम है। चुनाँचे “अ-इन्नकुम् ल-तशहदू-न” में तौहीद की बहस है, और “कुलिल्लाहु शहीदुम् बैनी व बैनकुम्” में रिसालत की बहस है। शाने नुजूल भी इसका दो वाकिआत दोनों मसलों के मुताल्लिक हैं। चुनाँचे कलूबी ने रिवायत किया है कि मक्का के काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा कि क्या खुदा तआला को आपके सिवा कोई रसूल नहीं मिला? हम तो नहीं समझते कि आपके दावे की कोई तस्दीक़ कर सकता है? और हमने तो यहूद व नसारा (यानी ईसाइयों) से पूछकर देख लिया है कि उनकी किताबों में आपका ज़िक्र ही नहीं, सो हमको कोई ऐसा शख्स बतलाइए जो इस बात की गवाही दे कि आप अल्लाह के रसूल हैं। इसपर यह आयत नाज़िल हुई और इब्ने जरीर वगैरह ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि नुहाम बिन ज़ैद और करुम बिन कअ़ब और बहज़ी बिन अम्र आपकी ख़िदमत में आए और कहा कि क्या आपके इल्म में सिवाय अल्लाह तआला के और कोई माबूद नहीं? आपने फ़रमाया कि हकीकत में भी अल्लाह के सिवा और कोई माबूद नहीं, मैं तो यही देकर भेजा गया हूँ और इसी की दावत देता हूँ। इसपर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

2. यानी अपनी अक़ल को मज़क़ूरा शहादत पर दलालत करने वाली वुजूहात में सही ग़ौर व फ़िक्र करने से बेकार कर लिया है, चाहे वे अहले किताब हों या ग़ैर-अहले किताब हों।

3. ऊपर कुफ़र का फ़लाह न पाना ज़िक्र हुआ है। आगे इस फ़लाह न पाने की कुछ कैफ़ियत ज़िक्र है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 236 पर)

ये लोग अपने ही को तबाह कर रहे हैं और कुछ ख़बर नहीं रखते। (26) और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि ये दोज़ख़ के पास खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे: क्या अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिए जाएँ, और (अगर ऐसा हो जाए तो) हम अपने परवर्दिगार की आयतों को झूठा न बताएँ और हम ईमान वालों में से हो जाएँ। (27) बल्कि जिस चीज़ को इससे पहले दबाया करते थे वह उनके सामने आ गई है।¹ और अगर ये लोग फिर वापस भी भेज दिए जाएँ तब भी यह वही काम करें जिससे उनको मना किया गया था, और यकीनन ये लोग बिलकुल झूठे हैं।² (28) और ये कहते हैं कि जीना और कहीं नहीं सिर्फ़ यही फिलहाल का जीना है, और हम ज़िन्दा न किए जाएंगे। (29) और अगर आप (उस वक़्त) देखें जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे और अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि क्या यह अम्र वाकई नहीं है? वह कहेंगे बेशक क़सम अपने रब की! अल्लाह तआला फ़रमाएगा तो अब अपने कुफ़्र के बदले अज़ाब चखो। (30) ♦

बेशक घाटे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह तआला से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह मुक़र्रर वक़्त³ उनपर अचानक आ पहुँचेगा तो कहने लगेंगे कि हाय अफ़सोस हमारी कोताही पर जो इसके बारे में हुई!⁴ और हालत उनकी यह होगी कि वे अपने बोझ अपनी कमर पर लादे होंगे। ख़ूब सुन लो कि बुरी होगी वह चीज़ जिसको वे लादेंगे। (31) और दुनियावी ज़िन्दगानी तो कुछ भी नहीं सिवाय खेल-कूद, सैर-तमाशे और तफ़रीह के,⁵ और पिछला घर मुत्तकियों के लिए बेहतर है, क्या तुम सोचते समझते नहीं हो! (32) हम ख़ूब जानते हैं कि आपको उनकी बातें ग़मगीन करती हैं। सो ये लोग आपको झूठा नहीं कहते, लेकिन ये ज़ालिम तो अल्लाह तआला की आयतों का इनकार करते हैं। (33) और बहुत-से पैग़म्बर जो आपसे पहले हुए हैं उनको भी झुठलाया जा चुका है, सो उन्होंने उसपर सब्र ही किया कि उनको झुठलाया गया और उनको तकलीफ़ें पहुँचाई गईं, यहाँ तक कि हमारी मदद उनको पहुँची, और अल्लाह तआला की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और आपके पास बाज़ पैग़म्बरों के बाज़ किस्से पहुँच चुके हैं।⁶ (34) और अगर आपको उनका मुँह मोड़ना नागवार गुज़रता है तो आपको यह ताक़त है कि

(पृष्ठ 234 का शेष) मुश्रीकीन की तो खुले तौर पर, कि मक्का में जो इस सूरः के नाज़िल होने की जगह है और वहाँ मुश्रीकीन ज़्यादा थे, और दूसरे कुफ़्रार की कियास के तौर पर, क्योंकि असल इल्लत फ़लाह न होने की यानी कुफ़्र सबमें पाई जाती है।

4. यानी जिसके हक़ होने का आज दावा है उसका अन्जाम यह होगा कि खुद ही उसको बातिल समझने लगेंगे।

5. यानी उनके कोई काम न आएगा।

6. यानी मुश्रीकीन में से।

7. यह जो फ़रमाया कि हमने पर्दे डाल रखे हैं तो यह मिसाल के तौर पर है, अगरचे परिचित पर्दे वगैरह न हों। और खुदा तआला की तरफ़ उसकी निस्वत होने से न तो ये माज़ूर हो सकते हैं न अल्लाह तआला पर कोई इल्ज़ाम आ सकता है, क्योंकि इस पर्दे वगैरह का सबब उनका इख़्तियारी तौर पर मुँह मोड़ना है और निस्वत तख़लीक़ के एतिबार से है।

1. मुराद उस चीज़ से वह अज़ाब है जिसकी वईद कुफ़्र और झुठलाने पर उनको की जाती थी। और दबाने से मुराद इनकार है।

2. ऊपर तौहीद व रिसालत और क़ुरआन के इनकार पर सज़ाओं का बयान था, आगे इनकारे बअस (यानी नबी को भेजने का इनकार) और उसकी सज़ा का बयान है।

3. यानी कियामत का दिन मय मुक़द्दिमात।

4. अगरचे झुठलाना उनके मरने के वक़्त ही ख़त्म हो जाएगा लेकिन कियामत को इसलिए हद करार दिया कि उस दिन सब कुछ खुलकर सामने आ जाएगा। और 'साहिबे कश्शाफ़' ने कहा है कि मौत का वक़्त भी कियामत के मुक़द्दिमात में से है, इसलिए वह भी कियामत के हुक्म में दाख़िल है।

5. खुद दुनियावी ज़िन्दगी को 'लख़व-व-लअिब' फ़रमाना मक़सूद नहीं बल्कि इसके उन मशग़लों और आमाल को जो कि आख़िरत के लिए नहीं बनाए गए और न आख़िरत के लिए मददगार हैं। तो इस कैद से नेक काम और अच्छाइयाँ (शेष तफ़सीर पृष्ठ 238 पर)

हत्ता अताहुम् नस्रुना व ला मुबदि-ल लि-कलिमातिल्लाहि व ल-कद् जाअ-क मिन् न-बइल्
मुर्सलीन (34) व इन् का-न कबु-र अलै-क इअ्राजुहुम् फ-इनिस्-ततअ-त अन् तब्बगि-य
न-फकन् फिल्अर्जि औ सुल्लमन् फिस्समा-इ फ-तअ्तियहुम् बिआयतिन्, व लौ शाअल्लाहु
ल-ज-म-अहुम् अलल्हुदा फला तकूनन्-न मिनल् जाहिलीन ● (35) इन्नमा

यस्तजीबुल्लजी-न यस्मअू-न, वल्मौता
यब्असुहुमुल्लाहु सुम्-म इलैहि युर्जअून
(36) व कालू लौ ला नुज्जि-ल अलैहि
आयतुम् मिर्रिब्बिही, कुल् इन्नल्ला-ह
कादिरुन् अला अय्युनज्जि-ल आयतव्-व
लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअूलमून
(37) व मा मिन् दाब्बतिन् फिल्अर्जि
व ला ताइरिंय्यतीरु बि-जनाहैहि इल्ला
उ-ममुन् अम्सालुकुम्, मा फर्तना
फिल्किताबि मिन् शैइन् सुम्-म इला
रब्बिहिम् युहशरून (38) वल्लजी-न
कज्जबू बिआयातिना सुम्मुव्-व बुकुमुन्
फिज्जुलुमाति, मय्य-शइल्लाहु युज्जिल्लहु,
व मय्यशअू यज्अल्हु अला सिरातिम्
मुस्तकीम (39) कुल् अ-रपेतकुम् इन्
अताकुम् अजाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्-

सा-अतु अगैरल्लाहि तद्अू-न इन् कुन्तुम् सादिकीन (40) बल् इय्याहु तद्अू-न फ-यक्शिफु
मा तद्अू-न इलैहि इन् शा-अ व तन्सौ-न मा तुशिरकून (41) ♦

व ल-कद् अरसल्ला इला उ-ममिम् मिन् कब्लि-क फ-अख़्जनाहुम् बिल्बअसा-इ
वज्जर्रा-इ लअल्लहुम् य-तजर्अून (42) फलौ. ला इज् जाअहुम् बअ्सुना तजर्अू व

إِغْرَاضَهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلٰمًا
فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعْتُمْ عَلَى الْهُدٰى
فَلَا تَكُونُونَ مِنَ الْبٰهِلِينَ ۝ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ
وَالْمَوْتِ يَجْعَلُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنْ اللَّهُ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ آيَةً وَ
لَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا ظَلِيمٍ
يُغَيِّرُ بَحَثًا حَيًّا إِلَّا أَمَّ أَمْلًا كَمَا مَا فَرَقْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ضَلُّوا عَنْهَا
فِي الظُّلُمَاتِ مَنْ يَشَاءُ اللَّهُ يُضِلِّهِ وَمَنْ يَشَاءُ اللَّهُ يُهْدِهِ عَلَىٰ سَبِيلٍ
مُسْتَقِيمٍ ۝ قُلْ إِنْ أَرَيْتَكُمْ أَنَّ اتَّكُمُ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ اتَّكُمُ السَّاعَةُ
أَغَيَّرَ اللَّهُ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ بَلْ آيَاتُهُ تَدْعُونَ
فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ النَّبِيرَ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ۝ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَآخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ وَالْفُسْءِ وَعَلَّمْنَاهُمْ
يَخْضَعُونَ ۝ فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ
وَزَيَّنَّ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ
فَخَرْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فُزِحُوا بِمَا أُوتُوا

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا

لَقَدْ

مَنْ

ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी ढूँढ लो, फिर कोई मोजिज़ा ले आओ (तो ऐसा करो), और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो उन सबको सही रास्ते पर जमा कर देता, सो आप नादानों में से न होइए।¹ ● (35) वही लोग क़बूल करते हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह तआला ज़िन्दा करके उठाएँगे फिर वे सब अल्लाह ही की तरफ़ लाए जाएँगे। (36) और ये लोग कहते हैं कि उनपर उनके रब की तरफ़ से कोई मोजिज़ा क्यों नाज़िल नहीं किया गया, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह तआला को बेशक इसपर पूरी कुदरत है कि वह मोजिज़ा नाज़िल फ़रमाएँ, लेकिन उनमें अक्सर बेख़बर हैं। (37) और जितने किस्म के जानदार ज़मीन पर चलने वाले हैं और जितने किस्म के परिन्दे (जानवर) हैं कि अपने दोनों बाज़ुओं से उड़ते हैं उनमें कोई किस्म ऐसी नहीं जो कि तुम्हारी ही तरह के गिरोह न हों,² हमने दफ़्तर (लौहे महफूज़) में कोई चीज़ नहीं छोड़ी (सब कुछ लिख लिया है)। फिर सब अपने परवर्दिगार के पास जमा किए जाएँगे। (38) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं वे तो बहरे और गूँगे हो रहे हैं, तरह-तरह की अंधेरियों में हैं,³ अल्लाह तआला जिसको चाहे बेराह कर दें और जिसको चाहें सीधी राह पर लगा दें। (39) आप कहिए कि अपना हाल तो बतलाओ कि अगर तुमपर खुदा का कोई अज़ाब आ पड़े या तुमपर कियामत ही आ पहुँचे तो क्या खुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे, अगर तुम सच्चे हो? (40) बल्कि ख़ास उसी को पुकारने लगे, फिर जिसके लिए तुम पुकारो, अगर वह चाहे तो उसको हटा भी दे, और जिन-जिन को तुम शरीक ठहराते हो उन सबको भूल जाओ।⁴ (41) ♦

और हमने और “यानी दूसरी” उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आपसे पहले हो चुकी हैं पैग़म्बर भेजे थे, सो हमने उनको तंगदस्ती और बीमारी से पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाएँ। (42) सो जब उनको हमारी सज़ा पहुँची थी वे ढीले क्यों न पड़े? लेकिन उनके दिल तो सख़्त रहे और शैतान उनके आमाल को उनके ख़्याल में सँवार करके दिखलाता रहा। (43) फिर जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिनकी उनको नसीहत की जाती थी तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए,⁵ यहाँ तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उनको मिली थीं वे ख़ूब इतरा गए तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया, फिर तो वे बिल्कुल भौचक्के रह गए। (44) फिर ज़ालिम लोगों की जड़ कट गई

(पृष्ठ 236 का शेष) और वे मुबाह काम जो नेक कामों में मददगार हों सब निकल गए, और वे मुबाह काम जो बेफ़ायदा हों और गुनाह व नाफ़रमानी सब दाख़िल रह गए, अगरचे ऐसे मुबाहात यानी जायज़ कामों में गुनाह न हो, लेकिन बेफ़ायदा और बेअसर तो हैं। और ‘लह्व’ और ‘लअ़िब’ के मायने अहले लुगत न करीब-करीब बल्कि एक ही लिखे हैं सिर्फ़ एतिबारी फ़र्क हो सकता है। वह यह कि बेफ़ायदा काम में मशगूल होने के दो असर हैं, एक खुद उसकी तरफ़ मुतवज्जह होना, दूसरे उस तवज्जोह की वजह से फ़ायदेमन्द चीज़ों से बेतवज्जोह हो जाना। वह पहले मामले के एतिबार से ‘लअ़िब’ कहलाता है और दूसरे के एतिबार से ‘लह्व’।

6. तसल्ली के मज़मून का हासिल यह हुआ कि ये जो आपको झुठला रहे हैं, ये हकीकत में अल्लाह तआला और उसकी आयतों को झुठला रहे हैं। इस वजह से कि आप अल्लाह की जानिब से अहकाम पहुँचाने वाले हैं, पस देखने में तो आपको झुठलाना है और हकीकत में जान-बूझकर अल्लाह तआला को झुठलाना है।

1. “फ़ला तकूनन्-न मिनल् जाहिलीन” नसीहत व मुहब्बत के तौर पर है। चुनाँचे तर्जुमा से ज़ाहिर है। और लफ़ज़ “जहल” या “जहालत” से तर्जुमा न करना इस वजह से है कि हमारे मुहावरे में ये अल्फ़ाज़ अपमान करने, बेवकूफ़ ज़ाहिर करने और डॉटने के लिए इस्तेमाल होते हैं इसलिए बेअदबी का गुमान और वहम पैदा करने वाले हैं।

2. यानी कियामत के दिन जमा होने की सिफ़त में।

3. क्योंकि हर कुफ़्र एक जुल्मत यानी अंधेरी है, उनका मुँह मोड़ना जो कि न सुनने और बहरा बनने का हासिल है, एक कुफ़्र है। उनका कुफ़्र भरी बातें बकना जो कि गूँगा होने से मकसूद है, एक कुफ़्र है। और यह खुद ऊई मर्तबा होता है इसलिए बहुत-सी जुल्मते (अंधेरियाँ) हो गईं।

4. पस इसी से समझ लो कि खुदा के सिवा जब कोई कादिर व मुख़्तार नहीं तो इबादत का हक़दार भी उसके सिवा कोई नहीं हो सकता।

5. यानी ख़ूब नेमत व दौलत दी।

लाकिन् क-सत् कुलूबुहुम् व जय्य-न लहुमुशैतानु मा कानू यअमलून (43) फ-लम्मा नसू
मा जुक्किरु बिही फतहना अलैहिम् अब्बा-ब कुल्लि शैइन्, हत्ता इजा फरिहू बिमा ऊतू
अखज्जनाहुम् बग्-ततन् फ-इजा हुम् मुब्लिसून (44) फकुति-अ दाबिरुल् कौमिल्लजी-न
ज-लमू, वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-अलमीन (45) कुल् अ-रएेतुम् इन् अ-खजल्लाहु

सम्अकुम् व अब्सारकुम् व ख-त-म

अला कुलूबिकुम् मन् इलाहुन् गैरुल्लाहि

यअ॒तीकुम् बिही, उन्ज॒रु कै-फ़

नूसरिफ़ल-आयाति सूम्-म हम् यस्दिफ़न

(46) कल अ-रएतकम इन अताकम

अजाबल्लाहि बग-ततन औ जह-रतन

हल यहलक इल्लल कौमज्जालिमन (47)

और अल्लाह का शुक्र है¹ जो तमाम जहानों का परवर्दिगार है। (45) आप कहिए कि यह बतलाओ कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारी सुनने और देखने की कुव्वत बिलकुल ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो अल्लाह तआला के सिवा और कौन माबूद है कि ये तुमको फिर से दे दे? आप देखिए तो हम किस तरह दलीलों को मुख्तलिफ़ पहलुओं से पेश कर रहे हैं, फिर (भी) ये मुँह मोड़ते हैं। (46) आप कहिए कि यह बतलाओ, अगर तुमपर अल्लाह तआला का अज़ाब आ पड़े चाहे बेख़बरी में या ख़बरदारी में तो क्या सिवाय ज़ालिम लोगों के और भी कोई हलाक किया जाएगा? (47) और हम पैग़म्बरों को सिर्फ़ इस वास्ते भेजा करते हैं कि वे खुशख़बरी दें और डराएँ, फिर जो शख्स ईमान ले आए और दुरुस्ती कर ले, सो उन लोगों को कोई अन्देशा नहीं और न वे ग़मज़दा होंगे। (48) और जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाएँ उनको अज़ाब लगता है, इस वजह से कि वे दायरे से निकलते हैं।² (49) आप कह दीजिए कि न तो मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मेरे पास³ खुदा तआला के ख़ज़ाने हैं और न मैं तमाम ग़ैबों को जानता हूँ, और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो सिर्फ़ उसकी इत्तिबा कर लेता हूँ जो मेरे पास वद्य आती है।⁴ आप कहिए कि अन्धा और देखने वाला कहीं बराबर हो सकता है? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50) ♦

और ऐसे लोगों को डराइए जो इस बात से अन्देशा रखते हैं⁵ कि अपने रब के पास ऐसी हालत से जमा किए जाएंगे कि ग़ैरुल्लाह में से न कोई उनका मददगार होगा और न कोई शफ़ाअत करने वाला होगा,⁶ इस उम्मीद पर कि वे डर जाएँ। (51) और उन लोगों को न निकालिए जो सुबह व शाम अपने परवर्दिगार की इबादत करते हैं, जिससे ख़ास उसकी रज़ामन्दी का इरादा रखते हैं, उनका हिसाब ज़रा भी आपसे मुताल्लिक और आपका हिसाब ज़रा भी उनसे मुताल्लिक नहीं कि आप उनको निकाल दें, वरना आप नामुनासिब काम करने वालों में हो जाएंगे। (52) और

1. इसलिए कि ऐसे ज़ालिमों का पाप कटा जिनके होने से नहसत ही फैलती।
2. यानी वह अज़ाब जुल्म की वजह से होगा, जैसा कि पहली उम्मतों पर भी इसी वजह से हुआ है। सो लाज़िमी तौर पर ज़ालिमों ही के साथ ख़ास होगा और ज़ालिम तुम हो, पस ख़ास तुमपर ही पड़ेगा और मोमिन लोग बचे रहेंगे। सो तुमको सचेत होना चाहिए और यह ख़्याल भी दिल से निकाल देना चाहिए कि अगर मुसीबत आम हो तो उसका एहसास कम होता है। (क्योंकि यहाँ अज़ाब आम नहीं बल्कि सिर्फ़ ज़ालिमों को होगा)।
3. यानी पैग़म्बरों का असल काम और उसका नतीजा यह है न कि तमाम फ़रमाइशों का पूरा करना। पस इसी कायदे के मुवाफ़िक़ यह रसूल भी है।
4. यानी मेरी कुदरत में।
5. आयत में तीन उमूर-की नफ़ी की गई है। ख़ज़ानों पर कुदरत, इल्मे ग़ैब और मिल्लियत। मकसूद इससे कुफ़्फ़ार के एतिराज़ का दूर करना हो सकता है। यानी तुम जो निशानियों के पेश करने से मेरे रसूल होने को झुठलाते हो तो वह बिलकुल बेमानी है, इसलिए कि रिसालत जिसका मैं दलील के साथ दावेदार हूँ कोई मुहाल अमूर नहीं है। किसी अजीब व ग़रीब बात और मामले जैसे कुदरत, इल्म, मज़कूरा मिल्लियत का तो मैं दावेदार नहीं, जो उसको मुहाल समझकर इनकार करते हो।
6. हश्र के मुताल्लिक कुल तीन तरह के आदमी हैं, एक वे जो यकीनी तौर पर उसके सुबूत के मोतकिद हैं, दूसरे वे जो शक में हैं। आयत में इन्हीं दोनों जमाअतों का ज़िक्र है। तीसरे वे जो कि यकीनी तौर पर इसके इनकारी हैं, और डराना अगरचे उनको भी आम है जैसा कि दूसरी आयतों में साफ़ मौजूद है, लेकिन यहाँ मुतलक़ डराना मुराद नहीं बल्कि वह डराना जिसमें ख़ास एहतिमाम हो। सो यह वहाँ ही होगा जहाँ नफ़ा यकीनी हो या नफ़े की उम्मीद हो, जैसा कि पहली और दूसरी किस्म का हाल है। बख़िलाफ़ इस तीसरी किस्म के कि नफ़े की उम्मीद न होने की वजह से उनको डराना सिर्फ़ हुज्जत पूरा करने के लिए होगा, दुश्मनी की वजह से उनमें तवज्जोह की काबलियत ही नहीं, इसलिए यहाँ पहली दो किस्मों की तख़सीस की गई है जैसा कि बाज़ आयतों में नफ़े के यकीनी होने की वजह से सिर्फ़ पहली किस्म ही की तख़सीस भी है।
7. ग़ैर-मोमिनों के लिए शफ़ाअत और ग़ैरुल्लाह की तरफ़ से किसी तरह की मदद होने की यहाँ मुतलक़ तौर पर नफ़ी है। और मोमिनों के लिए अल्लाह का मददगार होना और मकबूल हज़रात का शफ़ाअत करना साबित है।

बिल्गदाति वल्अशिथि युरीदू-न वज्हहू, मा अलै-क मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइव्-व मा मिन् हिसाबि-क अलैहिम् मिन् शैइन् फ-तत्त-दहुम् फ-तक्-न मिनज्जालिमीन (52) व कजालि-क फतन्ना बअज़हुम् बिबअज़िल्-लियकूलू अ-हाउला-इ मन्नल्लाहु अलैहिम् मिम्-बैनिना, अलैसल्लाहु बिअज़ल्-म बिश्शाकिरीन (53) व इज़ा जा-अकल्लजी-न

युअमिन्-न बिआयातिना फकुल् सलामुन् अलैकुम् क-त-ब रब्बुकुम् अला नफ़िसहिर्हम्-त अन्नहू मन् अमि-ल मिन्कुम् सूअम् बि-जहालतिन् सुम्-म ता-ब मिम्-बअदिही व अस्ल-ह फ-अन्नहू गफ़ूररहीम (54) व कजालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी-न सबीलुल्-मुज्मिमीन (55) ❖

कुल् इन्नी नुहीतु अन् अअबुदल्-लजी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, कुल् ला अत्तबिअु अह्वा-अकुम् कद् जलल्लु इजंव्-व मा अ-न मिनल् मुहत्तदीन (56) कुल् इन्नी अला बय्यि-नतिम् मिरब्बी व कज्जब्तुम् बिही, मा अिन्दी मा तस्तअज़िलू-न बिही, इनिल्हुक्मु

इल्ला लिल्लाहि, यकुस्सुल्हक्-क व हु-व खैरुल्-फासिलीन (57) कुल् लौ अन्-न अिन्दी मा तस्तअज़िलू-न बिही लकुजियल्-अम्र बैनी व बैनकुम्, वल्लाहु अअलमु बिज्जालिमीन (58) व अिन्दहू मफ़ातिहुल्लैबि ला यअलमुहा इल्ला हु-व, व यअलमु मा फिल्बर्ि वल्बहिर, व मा तस्क़तु मिंव्व-र-कातिन् इल्ला यअलमुहा व ला हब्बतिन् फी जुलुमातिल्-अजि व ला रत्बिंव्-व ला याबिसिन् इल्ला फी किताबिम् मुबीन (59) व हुवल्लजी य-तवप्फाकुम्

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٢٢﴾
لِيَقُولُوا هَؤُلَاءِ مَنْ ابْنَتْنَا عَلَيْهِمْ فَالْعَنَّا عَلَيْهِمْ وَالْعَنَّا عَلَيْهِمْ ﴿١٢٣﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٢٤﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٢٥﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٢٦﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٢٧﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٢٨﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٢٩﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٠﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣١﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٢﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٣﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٤﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٥﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٦﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٧﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٨﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٣٩﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٠﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤١﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٢﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٣﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٤﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٥﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٦﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٧﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٨﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٤٩﴾
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ﴿١٥٠﴾

इसी तरीके पर हमने एक को दूसरे से आजमाइश में डाल रखा है ताकि लोग कहा करें कि क्या ये लोग हैं कि हम सबमें से उनपर अल्लाह ने फज़ल किया है? क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह तआला हक पहचानने वालों को खूब जानता है? (53) और ये लोग जब आपके पास आएँ जो कि हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो यूँ कह दीजिए कि तुमपर सलामती है, तुम्हारे रब ने मेहरबानी फरमाना अपने जिम्मे मुकर्रर कर लिया है कि जो शख्स तुममें से कोई बुरा काम कर बैठे नादानी से फिर वह उसके बाद तौबा कर ले और सुधार रखे तो (अल्लाह तआला की यह शान है कि) वह बड़े मफ़िरत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (54) और इसी तरह हम आयतों की तफ़सील करते रहते हैं और ताकि मुज़िर्मों का तरीका ज़ाहिर हो जाए।¹ (55) ♦

आप कह दीजिए कि मुझे इससे मना किया गया है कि मैं उनकी इबादत करूँ जिनकी तुम लोग अल्लाह को छोड़कर इबादत करते हो। आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे ख़्यालात की पैरवी न करूँगा, क्योंकि इस हालत में तो मैं बेराह हो जाऊँगा और राह पर चलने वालों में न रहूँगा।² (56) आप कह दीजिए कि मेरे पास तो मेरे रब की तरफ़ से एक दलील है,³ और तुम उसको झुठलाते हो, जिस चीज़ का तुम तकाज़ा कर रहे हो वह मेरे पास नहीं। हुक्म किसी का नहीं सिवाय अल्लाह तआला के, वह (यानी अल्लाह तआला) हक बात को बतला देता है और सबसे अच्छा फैसला करने वाला वही है। (57) आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास वह चीज़ होती जिसका तुम तकाज़ा कर रहे हो तो मेरा और तुम्हारा आपसी किस्से का फैसला हो चुका होता, और ज़ालिमों को अल्लाह तआला खूब जानता है।⁴ (58) और उसी के (यानी अल्लाह तआला के) पास हैं ख़जाने तमाम छुपी चीज़ों के, उनको कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह तआला के,⁵ और वह तमाम चीज़ों को जानता है जो कुछ खुशकी में हैं और जो कुछ दरियाओं में हैं, और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर वह उसको भी जानता है, और कोई दाना ज़मीन के अन्धेरे वाले हिस्सों में नहीं पड़ता, और न कोई तर और खुशक चीज़ गिरती है मगर ये सब किताबे-मुबीन में हैं।⁶ (59) और वह ऐसा है कि रात में तुम्हारी रूह को एक तरह से कब्ज़ कर देता है,⁷ और जो कुछ दिन में करते हों उसको जानता है, फिर तुमको जगा उठाता है ताकि मुकर्ररा मीयाद “यानी निश्चित समय” पूरी कर दी जाए, फिर उसी की तरफ़ तुमको जाना है, फिर तुमको बतला देगा जो कुछ तुम किया करते थे। (60) ♦

और वही अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब हैं (बरतर् हैं) और तुमपर निगरानी रखने वाले भेजते हैं, यहाँ तक कि

1. और हक व बातिल के वाज़ेह होने से तालिबे हक को हक का पहचानना आसान हो जाए।

2. इस मज़मून का ज़्यादा ताल्लुक तौहीद से था, आगे का मज़मून रिसालत से ज़्यादा मुताल्लिक है।

3. यानी कुरआन मजीद जो कि मेरा मौजिज़ा है, जिससे मेरी तस्दीक होती है।

4. उनके इल्म में जब मुनासिब होगा अज़ाब नज़िल हो जाएगा, चाहे दुनिया में भी जैसे बद्र वगैरह में हलाक किए गए और चाहे आखिरत में कि दोज़ख में जाएँगे। गरज़ न मुझको उसकी कुदरत है न उसके मुनासिब होने का वक़्त मुझको मालूम है और न इसकी ज़रूरत है।

5. इनमें से जिस चीज़ को जिस वक़्त चाहें जुहूर में ले आते हैं, इन चीज़ों में अज़ाब भी आ गया। मतलब यह है कि और किसी को उन पर कुदरत नहीं, और जिस तरह मुकम्मल कुदरत उनके साथ खास है उसी तरह मुकम्मल इल्म भी।

6. किताबे-मुबीन यानी लौहे महफूज़ में हर वह चीज़ जो कियामत तक होने वाली है लिखी है, और ज़ाहिर है कि बिना इल्म के लिखना मुष्किन नहीं है। पस हासिल यह हुआ कि सब चीज़ें अल्लाह तआला के इल्म के घेरे में हैं। और यह न समझो कि अल्लाह तआला की तमाम मालूमात लौहे महफूज़ ही में मुन्हसिर हैं बल्कि उनकी तो कोई इन्तिहा ही नहीं।

7. “रूहे-नफ़सानी” तीन पाक रूहों में से है। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने “अल्लाहु य-तवफ़फ़ल् अन्फु-स” की तफ़सीर में इसको “नफ़से तमीज़” फरमाया है, और “रूहे हैवानी” को जिसके निकलने से मौत आ जाती है “नफ़से हयात” फरमाया है। कुरआन में लफ़्ज़े नफ़्स दोनों को शामिल है, जिस जगह पर जो तफ़सीर मुनासिब होगी वही की जाएगी।

बिल्लैलि व यअलमु मा जरस्तुम् बिन्नहारि सुम्-म यअसुकुम् फीहि लियुक्ज़ा अ-जलुम्
मुसम्मन् सुम्-म इलैहि मर्जिअुकुम् सुम्-म युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तअमलून (60) ❖

व हुवल्काहिरु फौ-क अिबादिही व युर्सिलु अलैकुम् ह-फ-ज़तन्, हत्ता इज़ा जा-अ
अ-ह-दकुमुल्मौतु तवफ्फल्हु रुसुलुना व हुम् ला युफर्रितून (61) सुम्-म रुद्दू इलल्लाहि

मौलाहुमुल्-हक्कि, अला लहुल्हुक्कु, व
हु-व अस्सरअुल्-हासिबीन (62) कुल्
मय्युनज्जीकुम् मिन् जुलुमातिल्-बर्
वल्बहिर तद्अूनहू तज़रुअंव-व खुफ्यतन्
ल-इन् अन्जाना मिन् हाजिही
ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (63)

कुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन्
कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुशिरकून
(64) कुल् हुवल्कादिरु अला

अय्यबअ-स अलैकुम् अज़ाबम् मिन्
फौकिकुम् औ मिन् तह्ति अरजुलिकुम्
औ यल्बि-सकुम् शि-यअंव-व युज़ी-क
बअज़कुम् बअ-स बअज़िन्, उन्ज़ुर
कै-फ नुसरिफुल्-आयाति लअल्लहुम्
यफ्कहून (65) व कज़-ब बिही

कौमु-क व हुवल्हक्कु, कुल् लस्तु
अलैकुम् बि-वकील (66) लिकुल्लि

न-बइम् मुस्तकरुंव-व सौ-फ तअलमून (67) व इज़ा रएतल्लज़ी-न यखूजू-न फी
आयातिना फ-अअ्रिज़ अन्हुम् हत्ता यखूजू फी हदीसिन् गैरिही, व इम्मा युन्सियन्न-कश्शैतानु
फला तक्अुद् बअदज़िक्का मअल् कौमिज़्ज़ालिमीन (68) व मा अलल्लज़ी-न यत्तकू-न मिन्
हिसाबिहिम् मिन् शैइंव-व लाकिन् ज़िक्का लअल्लहुम् यत्तकून (69) व ज़रिल्लज़ीनत्त-खजू
दीनहुम् लअिबंव-व लह्वंव-व गर्रह्मुल् हयातुद्दुन्या व ज़क्किर् बिही अन् तुब्स-ल

وَلَا تَعْصُوا
الْأَمْرَ
يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ
رُسُلُنَا وَهُمْ أَفِيضُونَ ۚ ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ أَلَا
لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ۚ قُلْ مَنْ يُضَيِّعُكُمْ مِّنْ
أَمْوَالِكُمْ أَمْ يَمْنُنَ عَلَيْكُمْ وَمَنْ أَتَىٰ غَيْرُكَ فَأَخْطِئَ لِنَفْسِهِ إِنَّ
هَذِهِ لَنُكُوفٌ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۚ قُلْ اللَّهُ يُضَيِّعُكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ
كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ مُّشْرِكُونَ ۚ قُلْ هُوَ الْعَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ
عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ قَوْلِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجَالِكُمْ أَوْ يَكْسِفُكُمْ
شَيْعًا أَوْ يُزِيلُ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ أَنْظُرْ كَيْفَ تُصَرِّفُ
الْأَمْوَالَ لَعَلَّكُمْ يَفْقَهُونَ ۚ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ
لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۚ وَلِكُلِّ نَبِيٍّ مُّسْتَفْزِعٌ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ
وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ
يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ
بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۚ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ
مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَكِنْ ذِكْرِ لَعَلَّكُمْ يَتَّقُونَ ۚ وَذَرِ
الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لِبَآئِهِمْ لَعْنَةً وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَوةُ الدُّنْيَا ۚ
ذُكِّرُوا أَن تَبْسُلَ نَفْسٌ مَّا كَسَبَتْ ۚ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ

مَنْ

जब तुममें किसी को मौत आ पहुँचती है, उसकी रूह हमारे भेजे हुए कब्ज़ कर लेते हैं, और वे ज़रा भी कोताही नहीं करते।¹ (61) फिर सब अपने हकीकी मालिक अल्लाह के पास लाए जाएँगे। ख़ूब सुन लो कि फैसला उसी का (यानी अल्लाह ही का) होगा, और वह बहुत जल्द हिसाब ले लेगा। (62) आप कहिए कि वह कौन है जो तुमको खुशकी और दरिया की अंधेरियों से उस हालत में नजात देता है कि तुम उसको पुकारते हो आजिज़ी ज़ाहिर करके और चुपके-चुपके, कि अगर आप हमको इनसे नजात दे दें तो हम ज़रूर हक़ पहचानने वालों में से हो जाएँगे। (63) आप कह दीजिए कि खुदा तआला ही तुमको उनसे नजात देता है, और हर ग़म से, तुम फिर भी शिर्क करने लगते हो।² (64) आप कहिए कि इसपर भी वही कादिर है कि तुमपर कोई अज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे,³ या तुम्हारे पाँव तले से,⁴ या कि तुमको गिरोह-गिरोह करके सबको भिड़ा दे, और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई चखा दे। आप देखिए तो सही हम किस तरह से मुख़्तलिफ़ पहलुओं से दलीलें बयान करते हैं, शायद वे समझ जाएँ। (65) और आपकी कौम उसको झुठलाती है हालाँकि वह यकीनी है। आप कह दीजिए कि मैं तुम पर तैनात नहीं किया गया हूँ। (66) हर ख़बर के ज़ाहिर होने का एक वक़्त है, और जल्द ही तुमको मालूम हो जाएगा (कि यह अज़ाब आया)।⁵ (67) और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में ऐब ढूँढ़ रहे हैं तो उन लोगों से किनारा करने वाला हो जा, यहाँ तक कि वे किसी और बात में लग जाएँ। और अगर तुझको शैतान भुला दे⁶ तो याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिम लोगों के पास मत बैठ। (68) और जो लोग एहतियात रखते हैं उनपर उनकी पूछताछ का कोई असर न पहुँचेगा।⁷ लेकिन उनके ज़िम्मे नसीहत कर देना है शायद कि वे भी एहतियात करने लगे। (69) और ऐसे लोगों से बिल्कुल अलग रह जिन्होंने अपने दीन को लहव-व-लज़िब “यानी खेल-तमाशा” बना रखा है, और दुनियावी ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है, और इस कुरआन के ज़रिये से नसीहत भी करता रह ताकि कोई शख्स अपने किरदार के सबब इस तरह न फंस जाए कि अल्लाह के अलावा कोई न उसका मददगार हो न सिफ़ारिश करने वाला, और (यह कैफ़ियत हो कि) अगर दुनिया भर का मुआवज़ा भी दे डाले तब भी उससे न लिया जाए, ये ऐसे ही हैं कि अपने किरदार के सबब फंस गए, उनके लिए पीने के लिए बहुत तेज़ (खोलता हुआ) पानी होगा और दर्दनाक सज़ा होगी अपने कुफ़्र के सबब से।⁸ (70) ♦

1. ग़रज़ मौत नहीं टलती। आयत के ज़ाहिर से इस मक़ाम पर तीन किस्म के फ़रिश्तों का ज़िक्र है। एक आमाज़ लिखने वाले जिनका ज़िक्र इस आयत में है, “व इन्-न अलैकुम् ल-हाफ़िज़ी-न, किरामन् कातिबीन” दूसरे जान की हिफ़ाज़त करने वाले जिनको नुक़सानात से हिफ़ाज़त करने का हुक्म हो और जब तक हुक्म हो, उनका ज़िक्र इस आयत में है “लहू मुअक्किबातुम् मिन्बैनि यदैहि” तीसरे जान निकालने वाले। और दूसरी आयत से मालूम होता है कि यह काम मौत के फ़रिश्ते का है। इसलिए उलमा ने रूहुल्-मआनी में ज़िक्र हुई इन बाज़ रिवायतों की बिना पर कहा है कि ये मौत के फ़रिश्ते के मददगार हैं। साथ रहने और ताल्लुक की वजह से उनकी तरफ़ निस्वत कर दी गई, अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं।
2. ग़रज़ यह कि परेशानी और सख़्ती के वक़्त में तुम्हारे इकरार से तौहीद का हक़ होना साबित हो जाता है, फिर इनकार कब तवज्जोह के काबिल है।
3. जैसे पत्थर या हवा या तूफ़ानी बारिश।
4. जैसे जलजला या गर्क हो जाना।
5. अज़ाब दुनिया और आख़िरत के अज़ाब दोनों को शामिल है, जिसमें जिहाद भी दाख़िल है।
6. यानी ऐसी मज्लिस में बैठने की मनाही याद न रहे।
7. यानी ज़रूरत की वजह से वहाँ जाने वाले गुनाहगार न होंगे।
8. कुछ रिवायतों में आया है कि मुशिरकीन ने मुसलमानों से इस्लाम को छोड़ने की दरख़्वास्त भी की थी। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 246 पर)

नफ्सुम्-बिमा क-सबत् लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि वलियुं-व ला शफीअुन् व इन् तअदिल्
कुल्-ल अद्लिल्-ला युअ्खज् मिन्हा, उला-इकल्लजी-न उब्सिलू बिमा क-सबू लहुम् शराबुम्
मिन् हमीमिं-व अज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्फूसन (70) ❖

कुल् अ-नद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फअुना व ला यजुरुना व नुरद्दु अला
अअ्काबिना बअ्-द इज् हदानल्लाहु
कल्लजिस्-तह्वत्हुशशयातीनु फिल् अर्जि
है रा-न लहू अस्हाबुं य-यद् अूनहू
इलल्-हुदअ्तिना, कुल् इन्-न हुदल्लाहि
हुवल्हुदा, व उमिरना लिनुस्लि-म
लिरब्बिल् आलमीन (71) व अन्
अकीमुस्सला-त वत्तकूहु, व हुवल्लजी
इलैहि तुहशरून (72) व हुवल्लजी
ख-लकस्समावाति वल्अर्-ज बिल्हक्कि,
व यौ-म यकूलु कुन् फ-यकून ▲ (73)
कौलुहुल्-हक्कु, व लहुल्मुल्कु यौ-म
युन्फखु फिस्सूरि, आलिमुल्गै बि
वशहा-दति, व हुवल् हकीमुल्-खबीर
(74) व इज् का-ल इब्राहीमु
लि-अबीहि आज-र अ-तत्तखिज्
अस्नामन् आलि-हतन् इन्नी अरा-क व
कौम-क फी ज़ाललिम् मुबीन (75) व

وَلَيْكُمُ الْعَذَابُ الَّذِي لَكُمْ وَلَئِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا وَلَئِنَّ
الَّذِينَ يُبْسِلُوا بِمَآسِبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَرِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ
لِّمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۖ قُلْ أَتَدْعُونِ إِلَى دُورِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا
وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا اللَّهَ كَالَّذِي اسْتَكُوتَ
الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانًا لَّكَ أَصْحَابٌ يَدْعُونَكَ إِلَى
الْهُدَىٰ أُنْتَبِهْ ۖ قُلْ إِن هُدَىٰ اللَّهُ هُوَ الْهُدَىٰ وَأَمَّا الْكُفْرُ
فَإِنَّهُ لَبُذْءٌ لِّلْعَالَمِينَ ۖ وَإِنَّ أَقْبَمُ الصَّلَاةِ وَالتَّقْوَىٰ وَهُوَ الَّذِي أُتِيَ
بِهِ ۖ تَحْشُرُونَ ۖ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَیَوْمَ
يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُ الْحَقِّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ
عَلِيمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۖ وَلَإِذَا قَالَ إِبْرَاهِيمُ
لِإِسْمَاعِيلَ إِنِّي أَخَافُ أَنَّكَ تُضِلُّنَا أَلَيْسَ لَكَ إِلَٰهٌ إِلَّا أَنْتَ وَتَقُولُ
مُؤْمِنٌ ۖ وَكَذَلِكَ نَبْشُرُ إِبْرَاهِيمَ أَن كَوْنَتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَيَكُونُ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى الْكَوْكَبَ قَالَ هَٰذَا رَبِّي
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أَحِبُّ الْآفِلِينَ ۖ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَٰذَا
رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَيْنَ كَمْ يَهْدِي رَبِّي لَا كُنتَ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّالِّينَ ۖ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا الْكَبَرُ فَلَمَّا

आप कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत करें कि वह हमको न नफ़ा पहुँचाए और न हमको नुक़सान पहुँचाए? और क्या हम इसके बाद उल्टे फिर जाएँ कि हमको खुदा तआला ने हिदायत कर दी है? जैसे कोई शख्स हो कि उसको शैतानों ने कहीं जंगल में बेराह कर दिया हो और वह भटकता फिरता हो,¹ उसके कुछ साथी भी हों कि वे उसको ठीक रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ, आप कह दीजिए कि यकीनी बात है कि सही रास्ता वह खास अल्लाह ही का रास्ता है, और हमको यह हुक्म हुआ है कि हम परवर्दिगारे आलम के पूरे फ़रमाँबर्दार हो जाएँ। (71) और यह कि नमाज़ की पाबन्दी करो और उससे डरो, और वही है जिसके पास तुम सब जमा किए जाओगे। (72) और वही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को बाकायदा पैदा किया, और जिस वक़्त वह (यानी अल्लाह तआला) इतना कह देगा कि (हश्) हो जा, बस वह हो जाएगा। ▲ (73) उसका कहना असरदार है, और जबकि सूर में फूँक मारी जाएगी, सारी हुक्मत खास उसी की होगी, वह छुपी हुई और ज़ाहिर चीज़ों का जानने वाला है, वही है बड़ी हिक्मत वाला (और) पूरी ख़बर रखने वाला।² (74) और (वह वक़्त भी याद करने के काबिल है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से फ़रमाया कि क्या तू बुतों को माबूद करार देता है?³ बेशक मैं तुझको और तेरी सारी कौम को खुली ग़लती में देखता हूँ। (75) और हमने ऐसे ही तौर पर इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन की मख़्लूक़ात दिखलाई (ताकि वे आरिफ़ हो जाएँ) और ताकि कामिल यकीन करने वालों में से हो जाएँ। (76) फिर जब उनपर रात का अंधेरा छा गया तो उन्होंने एक सितारा देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमाया कि मैं छुप जाने वालों से मुहब्बत नहीं रखता। (77) फिर जब चाँद को चमकता हुआ देखा तो फ़रमाया कि यह मेरा रब है,⁴ सो जब वह छुप गया तो आपने फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझको हिदायत न करता रहे तो मैं गुमराह लोगों में शामिल हो जाऊँ। (78) फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा⁵ तो आपने फ़रमाया कि यह मेरा रब है, यह तो सबसे बड़ा है, सो जब वह छुप गया तो फ़रमाया: ऐ मेरी कौम! बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ।⁶ (79) मैं यक्सू होकर अपना रुख़ उसकी तरफ़ करता हूँ जिसने-

(पृष्ठ 244 का शेष)

अगली आयत में इसका जवाब है, ऊपर “ज़िक़रा” और “ज़क्विर” में हुक्म था कि मुशिरकीन को इस्लाम की तरफ़ बुलाएँ, आगे उनके इस्लाम को छोड़ देने की दावत देने का जवाब है।

1. मिसाल देने में जो शैतानों का राह भुला देना ज़िक़र किया गया है, इससे मालूम हुआ कि शैतान और ख़बीस जिन्न की तरफ़ से कभी-कभी इस किस्म का कब्ऱा जमाना और अफ़आल ज़ाहिर हो सकते हैं।

2. ऊपर शिर्क को बातिल करना और तौहीद को साबित करना मज़कूर था, आगे इसी मज़मून की ताईद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तौहीद की तरफ़ दावत का किस्सा बयान फ़रमाते हैं, और इस वजह से कि अरब वाले इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मानते थे, ज़िक़र किए गए मज़मून की ताईद में ज़्यादा कुव्वत हो गई। और इस किस्से में रिसालत के मसले की भी ताईद है कि नुबुव्वत कोई ऐसी अज़ीब व ग़रीब चीज़ नहीं है, पहले से भी अम्बिया होते आए हैं।

3. इन आयतों की तफ़सीर से पहले चन्द ज़रूरी उमूर का लिहाज़ रखना तफ़सीर के समझने में मददगार होगा। अब्बल इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कौम के जो हालात कुरआन में ज़िक़र हुए हैं उनसे मालूम होता है कि वह बुत-परस्ती भी करती थी और सितारों को भी दुनिया के कामों में तसर्लूफ़ करने वाला जानती थी। पस वह दो तरीक़े पर मुशिरक थी, बुतों के माबूद होने का एतिकाद रखने और सितारों के रब होने का एतिकाद रखने से, इसी वास्ते इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुनाज़रों में दोनों पर कलाम है। दूसरे इब्राहीम अलैहिस्सलाम होश सँभालने ही के वक़्त से तौहीद के पहचानने वाले और मुहक्किक् थे। तीसरे आपकी कौम खुदा की भी कायल थी या नहीं, दोनों एहतिमाल हैं। (यानी खुदा की कायल हो भी सकती है और नहीं भी)।

4. यानी आपने अपनी कौम से मुखातिब होकर फ़रमाया कि तुम्हारे गुमान के मुवाफ़िक़ यह मेरा और तुम्हारा रब है।

5. चूँकि उस बस्ती में जिसमें बाबिल और हलब भी दाख़िल हैं जो कि इतिहासकारों के मुताबिक़ इस गुफ़्तगू (शेष तफ़सीर पृष्ठ 248 पर)

का-ल याकौमि इन्नी बरीउम् मिम्मा तुशिरकून (79) इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य लिल्लज्जी
फ-तरस्समावाति वल्अर्-ज हनीफ्व-व मा अ-न मिनल्-मुशिरकीन (80) व हाज्जहू कौमुहू,
का-ल अतुहाज्जून्नी फिल्लाहि व कद् हदानि, व ला अखाफू मा तुशिरकू-न बिही इल्ला
अय्यशा-अ रब्बी शैअन्, वसि-अ रब्बी कुल्-ल शैइन् अिल्मन्, अ-फला त-तजक्करुन
(81) व कै-फ अखाफू मा अशरक्तुम् व ला तखाफू-न अन्नकुम् अशरक्तुम् बिल्लाहि मा
लम् युनज्जिल् बिही अलैकुम् सुल्तानन्,
फ-अय्युल् फरीकैनि अहक्कु बिल्-अम्नि
इन् कुन्तुम् तअलमून ✱ (82)
अल्लज्जी-न आमनू व लम् यल्बिसू
ईमानहुम् बिजुल्मिन् उलाइ-क लहुमुल्-
अम्नु व हुम् मुह्तदून (83) ✧

व तिल्-क हुज्जतुना आतैनाहा
इब्राही-म अला कौमिही, नरफ़ अ
द-रजातिम् मन्- नशा-उ, इन्-न
रब्ब-क हकीमुन् अलीम (84) व वहब्ना
लहू इस्हा-क व यअक्कू-ब, कुल्लन् हदैना
व नूहन् हदैना मिन् कब्लु व मिन्
जुरिय्यातिही दावू-द व सुलैमा-न व
अय्यू-ब व यूसु-फ व मूसा व हारू-न,
व कज़ालि-क नज़्ज़िल् मुह्सिनीन (85)
व ज़-करिय्या व यह्या व अ़ीसा व
इल्या-स कुल्लुम् मिनस्सालिहीन (86) व इस्माअी-ल वल्य-स-अ व यूनू-स व लूतन्, व
कुल्लन् फज़्ज़ल्ला अलल् अलामीन (87) व मिन् आबाइहिम् व जुरिय्यातिहिम् व इख्वानिहिम्
वज्जबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम् मुस्तकीम (88) ज़ालि-क हुदल्लाहि यहदी बिही
मय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, व लौ अशरकू ल-हबि-त अन्हुम् मा कानू यअ्मलून (89)

الْأَنبِيَاءِ ١٢٥ وَإِلَهُمَّ عَزَّ وَجَلَّ
أَفَلَمْ تَقَالِ يَقُومُوا لِي بِرَبِّي عَمَّا أَشْرَكُونَ ۚ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ
لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ
حَاجَّةُ قَوْمِهِ قَالَ أَنْتُمْ أَحَقُّونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ وَلَا أَخَافُ
مَآ شَرُّكُمْ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا
أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۚ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ
أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَتَى الْفَرِيقَيْنِ
أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِنَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا
إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۚ وَتِلْكَ
مُجْتَمَعَاتُ آلِ إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ شَاءُ ۚ إِنَّ
رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۚ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ كُلًّا هَدَيْنَا
وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ وَمَن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ
وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۚ وَذَكَرْنَا
وَنَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ كُلًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ۚ وَاسْمِعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيُوسُفَ وَهُودًا وَكَوْنًا فَضَلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ وَمِنَ آيَاتِهِمْ
ذُرِّيَّتُهُمْ وَإِخْوَانُهُمْ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ
ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمِنْ عَبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا

आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया, और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। (80) और उनसे उनकी कौम ने हुज्जत करना शुरू की। फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे हुज्जत करते हो, हालाँकि उसने मुझको तरीका बतला दिया है, और मैं उन चीज़ों से जिनको तुम अल्लाह तआला के साथ शरीक बनाते हो नहीं डरता, लेकिन हाँ अगर मेरा परवर्दिगार ही कोई मामला चाहे, मेरा परवर्दिगार हर चीज़ को अपने इल्म में घेरे हुए है।¹ क्या तुम फिर ख़्याल नहीं करते? (81) और मैं उन चीज़ों से कैसे डरूँ जिनको तुमने शरीक बनाया है, हालाँकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह तआला के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहराया है जिनपर अल्लाह तआला ने कोई दलील नाज़िल नहीं फ़रमाई,² सो उन दो जमाअतों में से अमन का ज़्यादा हक़दार कौन है? अगर तुम ख़बर रखते हो। (82) जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को शिर्क के साथ नहीं मिलाते ऐसों ही के लिए अमन है, और वही राह पर (चल रहे) हैं। (83) ♦

और यह हमारी हुज्जत थी जो हमने इब्राहीम को उनकी कौम के मुकाबले में दी थी। हम जिसको चाहते हैं रुतबों में बढ़ा देते हैं, बेशक आपका रब बड़ा हिकमत वाला, बड़ा इल्म वाला है। (84) और हमने उनको (एक बेटा) इसहाक और (एक पोता) याकूब दिया, हर एक को (हक़ रास्ते की) हमने हिदायत की, और (इब्राहीम से) पहले ज़माने में हमने नूह को हिदायत की, और उन (इब्राहीम) की औलाद में से दाऊद को और सुलैमान को और अय्यूब को और यूसुफ़ को और मूसा को और हारून को (हक़ रास्ते की हिदायत की थी), और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला दिया करते हैं। (85) और ज़करिया को और यहया को और ईसा को और इलियास को (हमने हक़ रास्ते की हिदायत की थी), और ये सब (हज़रात) पूरे शायस्ता “यानी तहज़ीब वाले और अख़्लाक व मुरव्वत वाले नेक” लोगों में थे। (86) और फिर इसमाईल को और यसअू को और यूनुस को और लूत को (हक़ रास्ते की हिदायत की थी) और (इनमें से) हर एक को (उन ज़मानों के) तमाम ज़हान वालों पर हमने (नुबुव्वत से) फज़ीलत दी (87) और साथ ही उनके कुछ बाप-दादों को और कुछ औलाद को और कुछ भाइयों को, और हमने उन (सब) को मकबूल बनाया और हमने उन सबको सही रास्ते की हिदायत की। (88) अल्लाह की हिदायत वह यही (दीन) है, अपने बन्दों में से जिसको चाहे इसकी हिदायत करता है, और अगर (थोड़ी देर को मान लें कि) ये हज़रात भी शिर्क करते तो जो कुछ ये (आमाल किया) करते थे उनसे सब बेकार हो जाते। (89) ये ऐसे थे कि हमने उन (के मजमूए) को (आसमानी) किताब और हिकमत (के उलूम) और नुबुव्वत अता की थी, सो अगर

(पृष्ठ 246 का शेष) का मौक़ा था, सितारों की जो मामूल की रफ़्तार है उसके मुताबिक़ यह एक रात में नहीं हो सकता कि चाँद का अपने किनारे से निकलना किसी सय्यारे के छुपने के बाद हो, और फिर सूरज के निकलने से पहले छुप जाए, इसलिए ये तीनों वाकिए एक रात के नहीं हो सकते, या तो दो रात के हैं या तीन रात के। पस दोनों जगह “फलम्मा रआ” में जो “फ़ा” है वह उर्फ़ के एतिबार से मिलाने और एक दूसरे के बाद होने के मायने में है, न कि हकीकी तौर पर मिलाने के लिए।

6. यानी बराअत ज़ाहिर करता हूँ। यूँ एतिकाद के तौर पर तो हमेशा से बेज़ार ही थे।

1. ग़रज़ कुदरत और इल्म दोनों उसी के साथ ख़ास हैं, और तुम्हारे माबूद को न कुदरत है न इल्म है।

2. मतलब यह कि तुमको डरना चाहिए, फिर उल्टा मुझ ही को डराते हो।

उला-इकल्लजी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त फ-इय्यक्फुर बिहा हा-उला-इ
फ-कद् वक्कल्ना बिहा कौमल्लैसू बिहा बिकाफिरीन (90) उला-इकल्लजी-न हदल्लाहु
फबिहुदाहुमुक्तदिह्, कुल् ला अस्अलुकुम् अलैहि अजरन्, इन् हु-व इल्ला जिक्रा
लिल्-आलमीन (91) ❖

व मा क-दरुल्ला-ह हक्-क
कद्रिही इज़् कालू मा अन्ज़लल्लाहु अला
ब-शरिम् मिन् शैइन्, कुल् मन्
अन्ज़लल्-किताबल्लजी जा-अ बिही मूसा
नूरंव्-व हुदल्-लिन्नासि तज्अलूनहू
कराती-स तुब्बूनहा व तुक्फू-न कसीरन्
व अल्लिम्तुम् मा लम् तअलमू अन्तुम् व
ला आबाउकुम्, कुलिल्लाहु सुम्-म
ज़रहुम् फी खौज़िहिम् यलअबून (92) व
हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्लाहु मुबारकुम्-
मुसदिकुल्लजी बै-न यदैहि व लितुन्ज़ि-र
उम्मल्कुरा व मन् हौलहा, वल्लजी-न
युअ्मिन्-न बिल्आखि-रति युअ्मिन्-न
बिही व हुम् अला सलातिहिम् युहाफिज़ून
(93) व मन् अज़लमु मिम्-मनिफ़तरा

अलल्लाहि कज़िबन् औ का-ल ऊहि-य इलय्-य व लम् यू-ह इलैहि शैउव्-व मन् का-ल
स-उन्ज़िलु मिस्र-ल मा अन्ज़लल्लाहु, व लौ तरा इज़िज़्जालिमू-न फी ग-मरातिल्-मौति
वल्मलाइ-कतु बासितू ऐदीहिम् अख़िज़ू अन्फु-सकुम्, अल्यौ-म तुज़्जौ-न अज़ाबल्हूनि बिमा
कुन्तुम् तक्लू-न अलल्लाहि गैरल्हक्कि व कुन्तुम् अन् आयातिही तस्तविबरून (94) व

الانعام ١٢٦ ولذاسموا
لَحِيطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ اُولَٰئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنَاهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَ وَالنَّبُوَّةَ ۝ اِنْ يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوْا بِهَا بِكَافِرِيْنَ ۝ اُولَٰئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰى اللّٰهُ فَيَهْدِيْهُمْ
اَقْبِسْ ۚ قُلْ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِمْ اَجْرًا اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ۝
وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِذْ قَالُوْا مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ
شَيْءٍ ۚ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُّوْسٰى نُوْرًا وَّ
هُدٰى لِّلنَّاسِ ۚ يَجْعَلُوْنَهُ قَرَاطِيْسَ يُبَدِّلُوْنَهَا وَيُخْفَوْنَ كَثِيْرًا ۝
وَعَلَيْكُمْ قَالَمٌ تَعْلَمُوْنَ اَنْتُمْ وَاَبَاؤُكُمْ قُلِ اللّٰهُ ذَرٰهُمْ فِيْ
خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ وَهَٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكًا مُّصَدِّقُ الَّذِيْ
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يَحْفَظُوْنَ ۝ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرٰى عَلٰى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحٰى اِلٰى وَلَمْ يُوْحَ
اِلَيْهِ شَيْءٌ ۚ وَمَنْ قَالَ سَاَنْزِلْ مِثْلَ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَوْ تَرٰى اِذِ
الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْا اَيْدِيَهُمْ اَخْرَجُوْا
اَنْفُسَكُمْ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلٰى
اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهِ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا

ये लोग नुबुव्वत का इनकार करें तो हमने उसके लिए बहुत-से ऐसे लोग मुकर्रर कर दिए हैं जो उसके इनकारी नहीं हैं। (90) ये (हज़रात) ऐसे थे जिनको अल्लाह तआला ने (सब्र की) हिदायत की थी, सो आप भी उन्हीं के तरीके पर चलिए। आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस (कुरआन की तब्लीग) पर कोई मुआवज़ा नहीं चाहता, यह कुरआन तो तमाम जहान वालों के वास्ते सिर्फ एक नसीहत है। (91) ❖

और उन लोगों ने अल्लाह तआला की जैसी क़द्र पहचानना वाजिब थी वैसी क़द्र न पहचानी, जबकि यूँ कह दिया कि अल्लाह ने किसी इनसान पर कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की। आप कहिए कि वह किताब किसने नाज़िल की है जिसको मूसा लाए थे? (जिसकी यह कैफ़ियत है) कि वह नूर है और लोगों के लिए हिदायत है, जिसको तुमने अलग-अलग पन्नों में रख छोड़ा है, जिनको ज़ाहिर कर देते हो और बहुत-सी बातों को छुपाते हो। और तुमको बहुत-सी ऐसी बातें तालीम की गईं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बड़े, आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया है फिर उनको उनके मशग़ले में बेहूदगी के साथ लगा रहने दीजिए। (92) और यह भी ऐसी ही किताब है जिसको हमने नाज़िल किया है, जो बड़ी बरकत वाली है, अपने से पहली किताबों की तस्दीक करने वाली है, और ताकि आप मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डराएँ, और जो लोग आख़िरत का यकीन रखते हैं ऐसे लोग इसपर ईमान ले आते हैं और वे अपनी नमाज़ की पूरी पाबन्दी करते हैं। (93) और उस शख्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ तोहमत लगाए, या यूँ कहे कि मुझ पर वह्य आती है, हालाँकि उसके पास किसी भी बात की वह्य नहीं आई, और जो शख्स (यूँ) कहे कि जैसा कलाम अल्लाह तआला ने नाज़िल किया है इसी तरह का मैं भी लाता हूँ, और अगर आप उस वक़्त देखें जबकि ये ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे: हाँ अपनी जानें निकालो, आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस सबब से कि तुम अल्लाह तआला के ज़िम्मे झूठी बातें बकते थे, और तुम उसकी (यानी अल्लाह तआला की) आयतों से घमण्ड करते थे। (94) और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए, जिस तरह हमने तुमको अव्वल बार पैदा किया था और जो कुछ हमने तुमको दिया था उसको अपने पीछे ही छोड़ आए, और हम तो तुम्हारे साथ

1. ऊपर तौहीद का मज़मून मक़सद बनाकर मज़कूर था अगरचे उसके तहत रिसालत के मसले की भी ताईद थी। आगे रिसालत के मसले को मक़सद बनाकर ज़िक्र किया गया है, और इसके नाज़िल होने का सबब यह हुआ था कि एक यहूदी जिसका नाम मालिक बिन सैफ़ था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कुछ मज़हबी गुप्तगू होने लगी तो जोश में आकर इस क़द्र मुबालगा किया कि कहने लगा कि किसी इनसान पर अल्लाह तआला ने कोई किताब नाज़िल नहीं की। एक रिवायत में है कि यहूद ने कहा कि खुदा की क़सम! आसमान से कोई किताब अल्लाह तआला ने नाज़िल नहीं की, इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

2. यह कहना क़द्र न पहचानना इसलिए है कि इससे नुबुव्वत के मसले का इनकार लाज़िम आता है, और नुबुव्वत का इनकार करने वाला अल्लाह तआला को झुठलाता है। और हक़ की तस्दीक़ वाजिब है, पस इसमें वाजिब क़द्र पहचानने में खलल डालना हुआ।

3. “तज्ज़लूनहू कराती-स” से तो यही ज़ाहिर होता है कि हर मज़मून के पन्ने अलग कर रखे थे, और बाज़ का ऐसा कर लेना कुछ ताज़्जुब की बात भी नहीं। और अगर “कराती-स” से वह मुराद लिया जाए जो पन्नों में है तो मायने यह हो सकते हैं कि अपने ज़ेहन में तौरात के मुख्तलिफ़ हिस्से तजवीज़ कर रखे थे, जिनमें से बाज़ मज़ामीन को जैसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ व सिफ़ात को छुपाते थे और उसकी और तावीलें कर देते थे, और अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं। मतलब यह कि जिस तौरात कि यह हालत है कि उसको अव्वल तो तुम मानते हो, दूसरे नूर व हिदायत होने की वजह से मानने के काबिल भी है, तीसरे हर वक़्त तुम्हारे इस्तेमाल में है अगरचे वह इस्तेमाल शर्मनाक है, लेकिन उसकी वजह से इनकार की गुन्जाइश तो नहीं रही, चौथे तुम्हारे हक़ में वह बड़ी नेमत और एहसान की चीज़ है, उसी की बदौलत आलिम बने बैठे हो, इस हैसियत से भी उसमें इनकार की गुन्जाइश नहीं। यह बताओ कि उसको किसने नाज़िल किया है।

ल-कद् जिअतुमूना फुरादा कमा खलक्नाकुम् अव्व-ल मरतिव्-व तरक्तुम् मा खव्वल्नाकुम्
वरा-अ जुहूरिकुम् व मा नरा म-अकुम् शु-फआ-अकुमुल्लजी-न जअम्तुम् अन्नहुम् फीकुम्
शु-रका-उ, लक्त-क्त-अ बैनकुम् व जल्-ल अन्कुम् मा कुन्तुम् तज्अमून (95) ❖

इन्नल्ला-ह फालिकुल्-हब्बि वन्नवा, युखिरजुल् हय्-य मिनल्मय्यिति व मुखिरजुल्मय्यिति

मिनल्-हय्यि, जालिकुमुल्लाहु फ-अन्ना

तुअफकून (96) फालिकुल्-इस्बाहि व

ज-अलल्लै-ल स-कनव्-व शशम्-स

वल्क-म-र हुस्बानन्, जालि-क तक्दीरुल्

अजीजिल्-अलीम (97) व हुवल्लजी

ज-अ-ल लकुमुन्नुजू-म लितहतदू

बिहा फी जुलुमातिल्बर् वल्बहिर, कद्

फस्सलन्ल्-आयाति लिकौमिन्-यअलमून

(98) व हुवल्लजी अन्श-अकुम् मिन्

नफिसंव्वाहि-दतिन् फमुस्त-करुव्-व

मुस्तौदअुन्, कद् फस्सलन्ल्-आयाति

लिकौमिन्-यफकहून (99) व हुवल्लजी

अन्ज-ल मिनस्समा-इ माअन्

फ-अखरज्जा बिही नबा-त कुल्लि शैइन्

फ-अखरज्जा मिन्हु खाजिरन् नुखिरजु

मिन्हु हब्बम् मु-तराकिबन् व मिनन्नख्लि मिन् तलिअहा किन्वानुन् दानियतुव्-व जन्नातिम् मिन्

अअ्नाबिन्-वज्जैतू-न वर्म्म-न मुशतबिहव्-व गै-र मु-तशाबिहिन्, उन्जुरू इला स-मरिही

इजा अस्म-र व यन्अिही, इन्-न फी जालिकुम् लआयातिल्-लिकौमिय्युअमिनून (100) व

ज-अलू लिल्लाहि शु-रकाअल्-जिन्-न व ख-ल-कहुम् व ख-रकू लहू बनी-न व बनातिम्



तुम्हारे उन शफ़ाअत करने वालों को नहीं देखते जिनके बारे में तुम दावे रखते थे कि वे तुम्हारे मामले में शरीक हैं। वाकई तुम्हारा आपस में तो ताल्लुक ख़त्म हो गया, और वह तुम्हारा दावा सब तुमसे गया-गुज़रा हुआ।¹ (95) ❖

बेशक अल्लाह तआला फाड़ने वाला है दाने और गुठलियों को,² वह जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़) से निकाल लाता है³ और वह बेजान (चीज़) को जानदार (चीज़) से निकालने वाला है,⁴ अल्लाह यही है।⁵ सो तुम कहाँ उल्टे जा रहे हो? (96) वह सुबह का निकालने वाला है, और उसने रात को राहत की चीज़ बनाई है, और सूरज और चाँद (की रफ़्तार) को हिसाब से रखा है।⁶ यह ठहराई हुई बात है ऐसी ज़ात की जो कि कादिर है, बड़े इल्म वाला है। (97) और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम्हारे (फायदे के) लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनके ज़रिये से खुशकी और दरिया के अंधेरों में रास्ता मालूम कर सको, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो ख़बर रखते हैं। (98) और वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने तुम (सब) को (असल में) एक शख्स से पैदा किया, फिर एक जगह ज़्यादा रहने की है और एक जगह थोड़ा रहने की है, बेशक हमने ख़ूब खोल-खोलकर दलीलें बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो समझ-बूझ रखते हैं। (99) और वह ऐसा है जिसने आसमानों से पानी बरसाया, फिर हमने उसके ज़रिये से हर किस्म के पेड़-पौधों को निकाला, फिर हमने उससे हरी डाली निकाली कि उससे हम ऊपर-तले चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूर के दरख़्तों से यानी उनके गुप्फे में से गुच्छे निकलते हैं, जो (बोझ के मारे) नीचे को लटक जाते हैं, और उसी पानी से हमने अंगूरों के बाग़ और जैतून और अनार के दरख़्त पैदा किए जो कि एक-दूसरे से मिलते-जुलते होते हैं और एक-दूसरे से मिलते-जुलते नहीं होते। ज़रा हर एक के फल को तो देखो जब वह फलता है, और (फिर) उसके पकने को देखो,⁷ उनमें (भी तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं उन लोगों के लिए जो ईमान (लाने की फ़िक्र) रखते हैं।⁸ (100) और उन लोगों ने शैतानों को अल्लाह का शरीक करार दे रखा है, हालाँकि उन लोगों को खुदा ने पैदा किया है, और उन लोगों ने अल्लाह के हक़ में बेटे और बेटियाँ बिना सनद तराश रखी हैं,⁹ वह उन बातों से पाक और बरतर है जिनको ये लोग बयान करते हैं। (101) ❖

1. ऊपर रिसालत के मसले की तहकीक मय उसके मुताल्लिकात के थी, और उससे ऊपर तौहीद का मसला मज़कूर था। आगे फिर तौहीद की तरफ़ वापसी है, और उसके साथ इस्तिदलाल में अपनी नेमतों का ज़िक्र और अपने नेमत देने वाला होने का भी बयान है ताकि शिर्क का फ़ितरी तौर पर बुरा होना भी जाहिर हो जाए।
2. यानी ज़मीन में दबाने के बाद जो दाना या गुठली फूटती है तो यह अल्लाह ही का काम है।
3. जैसे नुतुफ़े (वीर्य के क़तरे) से आदमी पैदा होता है।
4. जैसे आदमी के बदन से नुतुफ़ा (वीर्य की बूँद) जाहिर होता है।
5. जिसकी ऐसी कुदरत है।
6. यानी उनकी रफ़्तार मुक़र्रर और एक निज़ाम के तहत (व्यवस्थित) है, जिससे वक़्तों के मुक़र्रर करने और पाबन्दी में सहूलत हो।
7. इन मज़ामीन में एक अजीब तरतीब की रियायत रखी गई है। वह यह कि यहाँ कायनात की तीन किस्में ज़िक्र की गयी हैं: सिफ़लियात (यानी नीचे की चीज़ें), उलुवियात (बुलन्दी की चीज़ें), फ़िज़ाई कायनात। और शुरू किया नीचे की चीज़ों से कि वे हमसे ज़्यादा करीब हैं, और फिर उसके दो हिस्से किए, एक पेड़-पौधों का बयान, दूसरे जानदार चीज़ों का बयान, फिर फ़िज़ाई कायनात का ज़िक्र किया जैसे सुबह व रात, फिर बुलन्दी की चीज़ों का ज़िक्र किया जैसे सूरज व चाँद और सितारे। फिर चूँकि नीचे की चीज़ों का ज़्यादा मुशाहदा होता है इसलिए इसको दोबारा लाकर इसपर ख़त्म फ़रमाया कि पहले वे मुख़्तसर तौर पर मज़कूर थे अब तफ़सील से ज़िक्र किए गए। लेकिन तफ़सील की तरतीब में मुख़्तसर बयान का उल्टा कर दिया गया कि जानदारों के बयान को पहले लाया गया और पेड़-पौधों के बयान को बाद में लाया गया।
8. ऊपर तौहीद की दलीलों का ज़िक्र था, आगे वाज़ेह तौर पर तौहीद को साबित करने (शेष तफ़सीर पृष्ठ 254 पर)

बिगैरि अिल्मिन्, सुब्हानहू व तआला अम्मा यसिफून (101) ❖

बदीअुस्समावाति वल्अर्जि, अन्ना यकूनु लहू व-लदुव्-व लम् तकुल्लहू साहि-बतुन्, व ख-ल-क कुल्-ल शैइन् व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम (102) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ला इला-ह इल्ला हु-व खालिकु कुल्लि शैइन् फअबुदूह व हु-व अला कुल्लि शैइव्-वकील

(103) ला तुद्रिकुहुल्-अब्सारु व हु-व

युद्रिकुल्-अब्सा-र व हुवल् लतीफुल्-खबीर (104) कद् जा-अकुम् बसा-इरु

मिर्रब्बिकुम् फ-मन् अब्स-र फलिनफिसही व मन् अमि-य फ-अलैहा, व मा अ-न

अलैकुम् बिहफीज (105) व कज़ालि-क नुसरिफुल्-आयाति व लियकूलू दरस्-त

व लिनुबय्यि-नहू लिक्कौमिंय्-यअ्लमून (106) इत्तबिअ् मा ऊहि-य इलै-क

मिर्रब्बि-क ला इला-ह इल्ला हु-व व अअरिज् अनिल् मुशिरकीन (107) व

लौ शाअल्लाहु मा अशरकू, व मा जअल्ला-क अलैहिम् हफीजन् व मा

अन्-त अलैहिम् ब-वकील (108) व ला तसुब्बुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन्

दूनिल्लाहि फ-यसुब्बुल्ला-ह अद्वम्-बिगैरि अिल्मिन्, कज़ालि-क जय्यन्ना

लिकुल्लि उम्मतिन् अ-म-लहुम् सुम्-म इला रब्बिहिम् मर्जिअुहुम् फ-युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ्लमून (109) व अक्समू बिल्लाहि

जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् जाअतुम् आयतुल् लयुअ्मिनुन्-न बिहा, कुल् इन्नमल्-आयातु अिन्दल्लाहि व मा युशिरुकुम् अन्नहा इज़ा जाअत् ला युअ्मिनून (110) व नुकल्लिबु

अफ़-द-तहुम् व अब्सारहुम् कमा लम् युअ्मिनू बिही अव्व-ल मर्रतिव्-व न-ज़रुहुम् फी तुग़्यानिहिम् यअ्लमून (111) ❖

يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةً وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ
شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ لَا تَدْرِكُهُ
الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ الْغَظِيفُ الْحَبِيرُ ۝ قَدْ
جَاءَكُمُ بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ عَمِيَ
فَعَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِظٍ ۝ وَكَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يُدْرِكُونَ ۖ وَلَنُبَيِّنَنَّ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۖ إِخْبِرْ مَا أُوحِيَ
إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْفُشْرِ كَيْفَ يَكُنْ
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۖ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۖ وَمَا أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۖ وَلَا تَسْجُدُوا لِلَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ فَيَسْبُغُوا اللَّهُ عَذَابًا لَعَنًا ۖ كَذَلِكَ نُبَيِّنُ لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ وَ
أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ آيَةٌ لَيُؤْمِنُنَّ
بِهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ
يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

مَنْ

वह आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है, उसके (यानी अल्लाह के) औलाद कहाँ हो सकती है? हालाँकि उसकी कोई बीवी तो है नहीं, और अल्लाह तआला ने हर चीज़ को पैदा किया और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है। (102) यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला है, तो तुम उसकी इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ है।¹ (103) उसको तो किसी की निगाह नहीं घेर सकती और वह सब निगाहों को घेर लेता है, और वही बड़ा बारीक देखने वाला, ख़बर रखने वाला है। (104) अब बिला शुब्हा तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से हक़ देखने के ज़राए “यानी साधन” पहुँच चुके हैं, सो जो शख्स देख लेगा वह अपना फ़ायदा करेगा, और जो शख्स अन्धा रहेगा वह अपना नुक़सान करेगा, और मैं तुम्हारा निगराँ नहीं हूँ। (105) और हम इस तौर पर दलाइल को मुख़्तलिफ़ पहलुओं से बयान करते हैं (ताकि आप सबको पहुँचा दें) और ताकि ये यूँ कहें कि आपने किसी से पढ़ लिया है, और ताकि हम उसको समझदारों के लिए ख़ूब ज़ाहिर कर दें। (106) आप खुद इस रास्ते पर चलते रहिए जिसकी वजह आपके रब की तरफ़ से आपके पास आई है, अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, और मुशिरकों की तरफ़ ख़्याल न कीजिए। (107) और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो ये शिर्क न करते, और हमने आपको उनका निगराँ नहीं बनाया और न आप उनपर मुख़्तार हैं।² (108) और उनको ग़ाली मत दो जिनकी ये लोग खुदा को छोड़कर इबादत करते हैं, (यानी उनके माबूदों को क्योंकि) फिर वे जहालत की वजह से हद से गुज़र कर अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी करेंगे, हमने इसी तरह हर तरीक़े वालों को उनका अमल पसन्दीदा बना रखा है,³ फिर अपने रब ही के पास उनको जाना है, सो वह उनको बतला देगा जो कुछ भी वे किया करते थे। (109) और उन (इनकार करने वाले) लोगों ने अपनी कस्मों में बड़ा ज़ोर लगाकर अल्लाह की कसम खाई कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे ज़रूर ही उसपर ईमान ले आएँगे। आप (जवाब में) कह दीजिए कि निशानियाँ सब खुदा तआला के कब्ज़े में हैं, और तुमको इसकी क्या ख़बर (बल्कि हमको ख़बर है) कि वे निशान जिस वक़्त आ जाएँगे, ये लोग जब भी ईमान न लाएँगे।⁴ (110) और हम भी उनके दिलों और निगाहों को फेर देंगे⁵ जैसा कि ये लोग उसपर पहली बार ईमान नहीं लाए और हम उनको उनकी सरकशी में हैरान रहने देंगे। (111) ♦

(पृष्ठ 252 का शेष)

और शिर्क को बातिल करने का बयान है।

9. जैसे ईसाई लोग हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को और कुछ यहूदी हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को खुदा का बेटा और अरब के मुशिरक फ़रिश्तों को खुदा की बेटियाँ कहते थे।

1. गरज़ ख़ालिफ़ भी वही, जानने वाला भी वही, वकील भी वही और ये सब उमूर इसका तकाज़ा करते हैं कि माबूद भी वही हो।

2. ऊपर के मज़ामीन में मुशिरकीन के तरीक़े का बातिल होना और साथ ही ज़िक्र हुए मज़ामीन के साथ उसकी तब्तीग़ का हुक्म भी किया गया है। आगे मुशिरकीन के बातिल माबूदों को बुरा-भला कहने से मुसलमानों को मना फरमा कर तब्तीग़-दीन की हदें कायम करते हैं, जिसका हासिल यह है कि ग़ैर-क़ौम से मुनाज़रा करना तो तब्तीग़ का हिस्सा है लेकिन ग़ाली-ग़लोच और दिल दुखाने ग़ाली बातें उनके हक़ में कहना जिनका वे एहतिराम करते हैं मना है। सबब यह है कि इस तरह वे भी हमारे माबूद या रसूलों और काबिले एहतिराम शख्सियतों की शान में गुस्ताख़ी करेंगे, तो गोया उसके सबब हम हुए।

★ बुतों को बुरा कहना अपने आपमें जायज़ है मगर जब वह ज़रिया बन जाए एक हराम काम यानी अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी का तो वह भी मना और ना-पसन्दीदा हो जाएगा। इससे शरीअत का एक कायदा साबित हुआ कि जब कोई जायज़ काम या मामला हराम का सबब बन जाए तो वह भी हराम हो जाता है, और कुरआन मजीद की बाज़ आयतों में जो बातिल माबूदों की तहकीर (अपमान) मज़कूर है वह बुरा-भला कहने के तौर पर नहीं, बल्कि मुनाज़रे में बतौर मक़सद की तहकीक़ व इस्तिदलाल और मुख़्तलिफ़ पर इल्ज़ाम रखने के लिए है जो मुनाज़रों में इस्तेमाल होता है, और हालात से मुखातब को फ़र्क़ (शेष तफ़सीर पृष्ठ 256 पर)

पन्जिल 2

आठवाँ पार: व लौ अन्नना

सूर: अन्आम (आयत 112 से 166)

और अगर हम उनके पास फ़रिश्तों को भेज देते और उनसे मुर्दे बातें करने लगते और हम (ग़ैब में) मौजूद तमाम चीज़ों को उनके पास उनकी आँखों के सामने लाकर जमा कर देते तब भी ये लोग ईमान न लाते, हाँ अगर खुदा ही चाहे (तो और बात है), लेकिन उनमें से अक्सर लोग जहालत की बातें करते हैं। (112) और इसी तरह हमने हर नबी के लिए दुश्मन बहुत-से शैतान पैदा किए, कुछ आदमी और कुछ जिन्न, जिनमें से बाज़े दूसरे बाज़ों को चिकनी-चुपड़ी बातों का वस्वसा डालते रहते थे ताकि उनको धोखे में डाल दें। और अगर तुम्हारा परवर्दिगार चाहता तो ये ऐसे काम न कर सकते, सो उन लोगों को और जो कुछ ये बोहतान लगा रहे हैं उसको आप रहने दीजिए। (113) और ताकि उसकी तरफ़ उन लोगों के दिल माइल हो जाएँ जो आख़िरत पर यकीन नहीं रखते, और ताकि उसको पसन्द कर लें और ताकि उन उमूर के करने वाले हो जाएँ जिनको वे करते थे। (114) तो क्या अल्लाह तआला के सिवा किसी और फैसला करने वाले को तलाश करूँ? हालाँकि वह ऐसा है कि उसने एक कामिल किताब तुम्हारे पास भेज दी है, उसकी हालत यह है कि उसके मज़ामीन ख़ूब साफ़-साफ़ बयान किए गए हैं, और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इस बात को यकीन के साथ जानते हैं कि यह (कुरआन) आपके रब की तरफ़ से हक़ के साथ भेजा गया है, सो आप शुब्हा करने वालों में न हों। (115) और आपके रब का कलाम हकीकत और एतिदाल के एतिबार से कामिल है, उसके कलाम का कोई बदलने वाला नहीं, और वे ख़ूब सुन रहे हैं, ख़ूब जान रहे हैं। (116) और दुनिया में अक्सर लोग ऐसे हैं कि अगर आप उनका कहना मानने लें तो वे आपको अल्लाह की राह से बेराह कर दें,¹ वे सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चलते हैं और बिलकुल ख़्याली बातें करते हैं।² (117) यकीनन आपका रब उसको ख़ूब जानता है जो उसकी राह से बेराह हो जाता है, और वह उनको भी ख़ूब जानता है जो उसकी राह पर चलते हैं। (118) सो जिस जानवर पर अल्लाह का नाम लिया जाए उसमें से खाओ³ अगर तुम उसके अहकाम पर ईमान रखते हो⁴ (119) और तुमको कौन-सी चीज़ इसका सबब हो

(पृष्ठ 254 का शेष)

मालूम हो जाता है कि तहकीक़ मंकसूद है या अपमान। अव्वल जायज़ है दूसरा नाजायज़।

3. यानी ऐसे असबाब जमा हो जाते हैं कि उनकी वजह से हर एक को अपना तरीका पसन्द होता है, इससे मालूम हुआ कि यह जहान असल में आज़माइश का है, पस इसमें सज़ा ज़रूरी नहीं।

4. “लयुअमिनुन्-न बिहा” में कुफ़ार के कौल की नक़ल है और “इन्मल् आयातु अिन्दल्लाहि” में उनका जवाब है, और “व मा युशिअरुकुम्” से आख़िर तक मुसलमानों को तंबीह और ख़िताब है। जवाब का हासिल यह है कि रसूल नुबुव्वत के दावेदार हैं और मोजिज़ात इस दावे की दलील हैं और मुद्दई के ज़िम्मे अक्ली कायदे के मुताबिक़ मुतुलक़ दलील का कायम करना ज़रूरी है, किसी खास दलील का मुतैयन करना ज़रूरी नहीं, इसलिए इन इनकार करने वालों को नई निशानियों के तलब करने का हक़ न था, हाँ पेश की हुई दलीलों पर बहस व सवालात करें तो उसका जवाब खुद या अपने किसी नायब के ज़रिये मुद्दई के ज़िम्मे है, जिसके लिए इस्लाम के हक़ होने का हर मुद्दई अब भी आमादा है।

5. इससे यह शुब्हा न किया जाए कि अल्लाह तआला ही ने उनको ख़राब कर दिया फिर पकड़ व इल्ज़ाम क्यों, इसलिए कि इस फेर देने का सबब उनका मुँह मोड़ना है। यह नहीं कि उनके दिल हक़ की तरफ़ पहले ही से मुतवज्जह हों और फेर फेर दिया गया हो, खुदा की पना हरगिज़ ऐसा नहीं, बल्कि तवज्जोह के साथ तो यह वायदा है कि “वल्लज़ी-न जाहदू फीना ल-नहदियन्नुहुम् सुबु-लना” (यानी जो हमारे रास्ते में मशक्कतें बर्दाश्त करते हैं हम ज़रूर उनको अपने कुर्ब व सबाब यानी जन्नत के रास्ते दिखा देंगे)।

1. “ला तकूनन्-न” और “इन तुतिअ.....” में फ़ैअल की निस्बत जो रसूलुल्लाह सल्ल. (शेष तफ़सीर पृष्ठ 258 पर)

मुअ्मिनीन (119) व मा लकुम् अल्ला तअकुलू मिम्मा जुकिरस्मुल्लाहि अलैहि व कद्
फस्स-ल लकुम् मा हर-म अलैकुम् इल्ला मज्जुरिरुतुम् इलैहि, व इन्-न कसीरल्-लयुजिल्लू-न
बिअह्वाइहिम् बिगैरि अलिमिन्, इन्-न रब्ब-क हु-व अअलमु बिल्मुअतदीन (120) व ज़रू
जाहिरल्-इस्मि व बाति-नहू, इन्नल्लजी-न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्जौ-न बिमा कानू

यकतरिफून (121) व ला तअकुलू
मिम्मा लम् युज्जकरिस्मुल्लाहि अलैहि व
इन्नहू लफिस्कुन्, व इन्नशशयाती-न
लयूहू-न इला औलिया-इहिम्
लियुजादिलूकुम् व इन् अतअतुमूहुम्
इन्नकुम् लमुशिरकून (122) ❖

अ-व मन् का-न मै तन्
फ-अह्यैनाहु व जअल्ला लहू नूरय्यम्शी
बिही फिन्नासि कमम् म-सलुहू
फिज्जुलुमाति लै-स बिखारिजिम् मिन्हा,
कज़ालि-क जुय्यि-न लिस्काफिरी-न मा
कानू यअम्लून (123) व कज़ालि-क
जअल्ला फी कुल्लि करयतिन् अकाबि-र
मुज्जिमीहा लियम्कुरू फीहा, व मा
यम्कुरू-न इल्ला बिअन्फुसिहिम् व मा
यशअरून (124) व इज़ा जाअतहुम्

आयतुन् कालू लन्-नुअमि-न हत्ता

नुअता मिस-ल मा ऊति-य रुसुलुल्लाहि ❖ अल्लाहु अअलमु हैसु यजअलु रिसाल-तहू,
सयुसीबुल्लजी-न अजरमू सगारुन् अिन्दल्लाहि व अज़ाबुन् शदीदुम् बिमा कानू यम्कुरून्
(125) फमय्युरिदिल्लाहु अय्यहिद-यहू यशरह् सद्-रहू लिह्दस्लामि व मय्युरिद् अय्युजिल्लहू
यजअल् सद्-रहू जय्यिकन् ह-रजन् कअन्नमा यस्सअ-अदु फिस्समा-इ, कज़ालि-क
यजअलुल्लाहुर्रिज्-स अलल्लजी-न ला युअमिनून (126) व हाज़ा सिरातु रब्बि-क

الاعمال ۱۳۰ دولتنا
مَاحِزَةً عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرُّتُمْ إِلَيْهِ وَإِنْ كَثُرَ الْيُضْلُونَ
بَاهْوَاهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝
وَذُرُوا ظَاهِرَ الْأَشْوَاعِ وَأَطِئُوا الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْأَسْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يَذْكُرْ
أَسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيَوْحُونَ إِلَى
أُولَئِهِمْ لِجَادِ لُوْكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُتَشْرِكُونَ ۝
أَوْ مَنْ كَانَ مِيتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَنْشِينِي بِهِ فِي
النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَلِكَ
زَيْنٌ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ
قُرْيَةٍ أَكْبَرًا يُحْكُمُ فِيهَا وَفِيهَا مَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بَأَنفُسِهِمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَيْدٍ مِنْهُمْ أَوْ قَالَ أَيْنَ نُّؤْمِنُ حَتَّى
نُؤْتِي مِثْلَ مَا أَوْقَى رُسُلُ اللَّهِ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسَالَاتِهِ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ
شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ۝ فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَهْدِهِ
صَدْرُهُ لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا
حَرَجًا كَثِيرًا يَضَعُدُ فِي السَّمَاءِ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ

सकती है कि तुम ऐसे जानवर में से न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, हालाँकि अल्लाह तआला ने उन सब जानवरों की तफ़सील बतला दी है जिनको तुमपर हराम किया है, मगर जब तुमको सख़्त ज़रूरत पड़ जाए तो वे भी हलाल हैं, और यह यकीनी बात है कि बहुत-से आदमी अपने ग़लत ख्यालात से विला किसी सनद के गुमराह करते हैं। इसमें कोई शुब्हा नहीं कि आपका रब हद से निकल जाने वालों को ख़ूब जानता है। (120) और तुम ज़ाहिरी गुनाह को भी छोड़ो और बातिनी गुनाह को भी (छोड़ो), बिला शुब्हा जो लोग गुनाह कर रहे हैं उनको उनके किए की जल्द ही सज़ा मिलेगी। (121) और उन (जानवरों) में से मत खाओ जिनपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, और यह नाफ़रमानी (की बात) है,¹ और यकीनन शयातीन अपने दोस्तों को तालीम कर रहे हैं, ताकि ये तुमसे (बेकार) झगड़ा करें। और अगर (खुदा न करे) तुम उन लोगों की इताअत करने लगे तो यकीनन तुम मुशिरक हो जाओ।² (122) ❖

ऐसा शख्स जो कि पहले मुदा था³ फिर हमने उसको ज़िन्दा बना दिया,⁴ और हमने उसको एक ऐसा नूर दे दिया कि वह उसको लिए हुए आदमियों में चलता फिरता है,⁵ क्या उस शख्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत यह है कि वह अंधेरियों में है, उनसे निकलने ही नहीं पाता, इसी तरह काफ़िरों को उनके आमाल अच्छे मालूम हुआ करते हैं।⁶ (123) और इसी तरह हमने हर बस्ती में वहाँ के रईसों 'यानी बड़े लोगों और सरदारों' ही को जुर्मों का करने वाला बनाया ताकि वे लोग वहाँ शरारतें किया करें,⁷ और वे लोग अपने ही साथ शरारत कर रहे हैं⁸ और उनको ज़रा ख़बर नहीं। (124) और जब उनको कोई आयत पहुँचती है तो यूँ कहते हैं कि हम हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक कि हमको भी ऐसी ही चीज़ (न) दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी जाती है।⁹ उस मौके को तो खुदा ही ख़ूब जानता है जहाँ अपना पैग़ाम भेजता है, जल्द ही उन लोगों को जिन्होंने यह जुर्म किया है खुदा के पास पहुँचकर ज़िल्लत पहुँचेगी, और उनकी शरारतों के मुकाबले में सख़्त सज़ा। (125) सो जिस शख्स को अल्लाह तआला रास्ते पर डालना चाहते हैं उसके सीने को¹⁰ इस्लाम के लिए खोल देते हैं, और जिसको बेराह रखना चाहते हैं उसके सीने को तंग, बहुत तंग कर देते हैं, जैसे कोई आसमान में चढ़ता हो,¹¹ इसी तरह अल्लाह ईमान न लाने वालों पर फिटकार डालता है। (126)

(पृष्ठ 256 का शेष)

की तरफ़ की गई है, इससे सुनाना औरों को मन्ज़ूर है। आपकी तरफ़ निस्वत करने से मुवाला हो गया कि जब आपको वावज़ूद इसके कि इसका इम्क़ान ही नहीं कि आप ग़ैरुल्लाह की इताअत करें, ऐसा कहा गया तो दूसरों की क्या हस्ती है, जैसा कि "अव्दगी" में भी ज़ाहिरन निस्वत आपकी तरफ़ है और मकसूद यह है कि तुम किसी और को तलाश करते हो, जिसका सबब मुनाज़रे में नमी का अन्दाज़ इख़्तियार करना है जो दावत में ज़्यादा मुफ़ीद है।

2. यानी अक़ीदों में वे महज़ बेअसल ख्यालात पर चलते हैं, और गुफ़्तगू में बिलकुल ख्याली और अन्दाज़े की बातें करते हैं।

3. ऊपर "व इन् तुतिअ....." में गुमराह लोगों की पैरवी से बिलकुल मना फ़रमाया था, अब एक वाकिए की ज़रूरत के सबब एक ख़ास मामले में पैरवी करने से मना फ़रमाते हैं, और वह ख़ास मामला ज़िब्द किए गए और ग़ैर-ज़िब्द किए गए जानवर के हलाल और हराम होने का मामला है। और वह वाक़िआ यह है कि कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को यह शुब्हा डालना चाहा कि अल्लाह के मारे हुए जानवर को तो ख़ाते नहीं हो और अपने मारे हुए यानी ज़िब्द किए हुए को ख़ाते हो। बाज़ मुसलमानों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में यह शुब्हा नक़ल किया, उसपर ये आयतें "ल-मुशिरकून" तक नाज़िल हुई।

4. क्योंकि हलाल को हराम जानना ख़िलाफ़े ईमान है।

1. यानी "मा लम् युज़करिस्मुल्लाहि अलैहि" का खाना नाफ़रमानी है।

2. यानी उनकी इताअत ऐसी बुरी चीज़ है कि उसकी तरफ़ ध्यान लगाने से भी बचना चाहिए।

3. यानी गुमराह था।

4. यानी मुसलमान बना दिया।

5. यानी ईमान दे दिया जो हर वक़्त उसके साथ रहता है, जिससे वह सब नुक़सानों (शेष तफ़सीर पृष्ठ 260 पर)

मुस्तकीमन्, कद् फस्सल्लन्-आयाति लिकौमिन्-यज्जक्करुन (127) लहुम् दारुस्सलामि
 अिन्-द रब्बिहिम् व हु-व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअमलून (128) व यौ-म यहशुरुहुम्
 जमीअन् या मअशरल्-जिन्नि कदिस्तक्सरतुम् मिनल्-इन्सि व का-ल औलियाउहुम् मिनल्-
 इन्सि रब्बनस्तम्त-अ बअजुना बिबअजिन्-व बलगना अ-ज-लनल्लजी अज्जल्-त लना,
 कालन्नारु मस्वाकुम् खालिदी-न फीहा
 इल्ला मा शाअल्लाहु, इन्-न रब्ब-क
 हकीमुन् अलीम (129) व कजालि-क
 नुवल्ली बअज्जजालिमी-न बअजम् बिमा
 कानू यक्सिबून (130) ❖

या मअशरल्-जिन्नि वल्-इन्सि
 अलम् यअतिकुम् रुसुलुम् मिन्कुम्
 यकुस्सू-न अलैकुम् आयाती व
 युज्जिरुनकुम् लिका-अ यौमिकुम् हाजा,
 कालू शहिदना अला अन्फुसिना व
 गररतुमुल्-हयातुदुन्या व शहिदू अला
 अन्फुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफिरीन
 (131) जालि-क अल्लम् यकुरब्बु-क
 मुहिलकल्कुरा बिजुल्मिन्-व अहलुहा
 गाफिलून (132) व लिकुल्लिन्
 द-रजातुम्-मिम्मा अमिलू, व मा रब्बु-क

बिगाफिलिन् अम्मा यअमलून (133) व रब्बुकल्-गनिय्यु जुरिह्मति, इय्यशअ युज्हिब्कुम् व
 यस्तखलिफ् मिम्-बअदिकुम् मा यशा-उ कमा अन्श-अकुम् मिन् जुरिय्यति कौमिन् आखरीन
 (134) इन्-न मा तू-अदू-न लआतिन्-व मा अन्तुम् बिमुअजिजीन (135) कुल् या
 कौमिअमलू अला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन् फसौ-फ तअलमू-न मन् तकूनु लहू

الانسان
 ١٣١
 دلونته
 عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَهَذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۚ قَدْ
 فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذْكُرُونَ ۖ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ
 وَهُمْ وَلِيُّهُمَا ۚ كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَمِيعًا
 يَنْعَشَرُ الْإِنِّ ۚ قَدْ اسْتَكْبَرْتُمْ مِنَ الْإِنِّ ۚ وَقَالَ أَوْلِيَهُمْ
 مِنَ الْإِنِّ رَبَّنَا اسْمِعْهُ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ ۚ وَبَلَّغْنَا الْجَنَّةَ الَّتِي
 أَجَلْتُمْ لَنَا ۚ قَالَ الْكَافِرُونَ كَمْ خَلِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ
 إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۖ وَكَذَلِكَ نُوحِي إِلَىٰ بَعْضِ الظَّالِمِينَ
 بَعْضًا ۚ إِنَّمَا كَانُوا يُكْسَبُونَ ۖ يَمْعَشَرُ الْإِنِّ وَالْإِنِّ أَلَمْ
 يَأْتِكُمْ رَسُولٌ مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُوكُمْ
 لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمْ الْحَيَاةُ
 الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۖ ذَلِكَ
 أَنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْفَرَىٰ ۚ يَظْلِمُ وَأَهْلَاهَا غُفْلُونَ ۖ
 وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِنْهُمْ عَمَلٌ ۚ وَأَمَّا رَبُّكَ بِمَا فَعَلَ عَمَلُهُمْ
 وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ۚ وَالرَّحِيمُ ۚ إِنَّ يَسْأَلُكَ رَبُّكَ عَنْ هَٰؤُلَاءِ
 قُلْ هَٰؤُلَاءِ كَمَا أَنْشَأَكُم مِّنْ ذُرِّيَّةٍ قَوْمٍ آخَرِينَ ۚ إِنَّ مَا
 تُوَعَّدُونَ لَا يَأْتِي ۚ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا

مَنْكَ

और यही आपके रब का सीधा रास्ता है।¹ हमने नसीहत हासिल करने वालों के वास्ते इन आयतों को साफ-साफ बयान कर दिया।² (127) उन लोगों के वास्ते उनके रब के पास सलामती का घर है, और वह (यानी अल्लाह तआला) उनसे उनके आमाल की वजह से मुहब्बत रखता है। (128) और जिस दिन अल्लाह तआला तमाम मख्लूकों को जमा करेंगे (और कहेंगे) ऐ जिन्नात की जमाअत! तुमने इनसानों (को गुमराह करने) में बड़ा हिस्सा लिया। जो इनसान उनके साथ ताल्लुक रखने वाले थे वे (इकरार के तौर पर) कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हममें एक ने दूसरे से फायदा हासिल किया था, और हम अपनी इस मुकर्ररा मीयाद “यानी निश्चित समय” तक आ पहुँचे जो आपने हमारे लिए मुअय्यन “यानी निर्धारित” फरमाई थी (यानी कियामत)। वह (यानी अल्लाह तआला सारे काफिर जिन्न और काफिर इनसानों से) फरमाएँगे कि तुम सबका ठिकाना दोज़ख है, जिसमें हमेशा-हमेशा को रहोगे। हाँ अगर खुदा ही को मन्जूर हो (तो दूसरी बात है)। बेशक आपका रब बड़ा हिक्मत वाला, बड़ा इल्म वाला है।³ (129) और इसी तरह हम बाज़ कुप्फार को बाज़ के करीब रखेंगे उनके आमाल के सबब। (130) ♦

ऐ जिन्नात और इनसानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास तुम्ही में से पैगम्बर नहीं आए थे? जो तुमसे मेरे अहकाम बयान किया करते थे, और तुमको इस आज के दिन की खबर दिया करते थे। वे सब अर्ज करेंगे कि हम अपने ऊपर (जुर्म का) इकरार करते हैं, और उनको दुनियावी जिन्दगानी ने भूल में डाल रखा है, और ये लोग इकरार करेंगे कि वे काफिर थे। (131) यह इस वजह से है कि आपका रब किसी बस्ती वालों को कुफ़्र के सबब ऐसी हालत में हलाक नहीं करता कि उस बस्ती के रहने वाले बेखबर हों।⁴ (132) और हर एक के लिए दर्जे हैं उनके आमाल के सबब, और आपका रब उनके आमाल से बेखबर नहीं है। (133) और आपका रब बिलकुल गनी है, रहमत वाला है,⁵ अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह आबाद कर दे, जैसा कि तुमको एक-दूसरी कौम की नस्ल से पैदा किया है। (134) जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह बेशक आने वाली चीज़ है,⁶ और तुम अजिज़ नहीं कर सकते। (135) आप यह फरमा दीजिए कि ऐ मेरी कौम! तुम अपनी हालत पर अमल करते रहो, मैं भी अमल कर रहा हूँ। सो अब जल्दी ही तुमको मालूम हो जाता है कि (उस जहान का) अन्जामकार किसके लिए नफ़ा देने वाला

(पृष्ठ 258 का शेष) जैसे गुमराही वगैरह से महफूज़, मामून और बेफिक्र है।

6. चुनौचे इसी वजह से ये मक्का के सरदार लोग जो आपसे बेकार फरमाइशें और शुब्हात व झगड़े पेश करते रहते हैं, अपने कुफ़्र को अच्छा ही समझकर उसपर अड़े हुए हैं।

7. जिससे उनका सज़ा का हकदार होना खूब साबित हो जाए।

8. क्योंकि उसका वबाल तो खुद-उनको ही भुगतना पड़ेगा।

9. इस कौल का बहुत बड़ा जुर्म होना ज़ाहिर है कि झुठलाने, दुश्मनी, घमण्ड और गुस्ताखी सब को शामिल है।

10. यानी दिल को।

11. यानी चढ़ना चाहता हो और चढ़ा नहीं जाता, और जी तंग होता है, और मुसीबत का सामना होता है।

1. यानी इस्लाम।

2. ताकि वे इसके मोजिज़ा होने से इसकी तस्दीक करें और फिर इसके मज़ामीन पर अमल करके नजात हासिल करें, यही तस्दीक व अमल सीधा रास्ता है, बख़िलाफ़ उनके जिनको नसीहत हासिल करने की फ़िक्र ही नहीं। उनके वास्ते न यह काफी है न दूसरी दलीलें काफी हैं।

3. इल्म से सबके जराइम मालूम करता है और हिक्मत से मुनासिब सज़ा देता है।

4. इसलिए रसूलों को भेजते हैं ताकि उनको जराइम की इत्तिला हो जाए, फिर जिसको अज़ाब हो उसका हकदार होने की वजह से हो।

5. वह रसूलों को कुछ इसलिए नहीं भेजता कि नज़्जु बिल्लाह (अल्लाह की पनाह) वह इबादत का (शेष तफ़सीर पृष्ठ 262 पर)

١٧٠
١٧١
١٧٢
١٧٣
١٧٤
١٧٥
١٧٦
١٧٧
١٧٨
١٧٩
١٨٠
١٨١
١٨٢
١٨٣
١٨٤
١٨٥
١٨٦
١٨٧
١٨٨
١٨٩
١٩٠
١٩١
١٩٢
١٩٣
١٩٤
١٩٥
١٩٦
١٩٧
١٩٨
١٩٩
٢٠٠
٢٠١
٢٠٢
٢٠٣
٢٠٤
٢٠٥
٢٠٦
٢٠٧
٢٠٨
٢٠٩
٢١٠
٢١١
٢١٢
٢١٣
٢١٤
٢١٥
٢١٦
٢١٧
٢١٨
٢١٩
٢٢٠
٢٢١
٢٢٢
٢٢٣
٢٢٤
٢٢٥
٢٢٦
٢٢٧
٢٢٨
٢٢٩
٢٣٠
٢٣١
٢٣٢
٢٣٣
٢٣٤
٢٣٥
٢٣٦
٢٣٧
٢٣٨
٢٣٩
٢٤٠
٢٤١
٢٤٢
٢٤٣
٢٤٤
٢٤٥
٢٤٦
٢٤٧
٢٤٨
٢٤٩
٢٥٠
٢٥١
٢٥٢
٢٥٣
٢٥٤
٢٥٥
٢٥٦
٢٥٧
٢٥٨
٢٥٩
٢٦٠
٢٦١
٢٦٢
٢٦٣
٢٦٤
٢٦٥
٢٦٦
٢٦٧
٢٦٨
٢٦٩
٢٧٠
٢٧١
٢٧٢
٢٧٣
٢٧٤
٢٧٥
٢٧٦
٢٧٧
٢٧٨
٢٧٩
٢٨٠
٢٨١
٢٨٢
٢٨٣
٢٨٤
٢٨٥
٢٨٦
٢٨٧
٢٨٨
٢٨٩
٢٩٠
٢٩١
٢٩٢
٢٩٣
٢٩٤
٢٩٥
٢٩٦
٢٩٧
٢٩٨
٢٩٩
٣٠٠
٣٠١
٣٠٢
٣٠٣
٣٠٤
٣٠٥
٣٠٦
٣٠٧
٣٠٨
٣٠٩
٣١٠
٣١١
٣١٢
٣١٣
٣١٤
٣١٥
٣١٦
٣١٧
٣١٨
٣١٩
٣٢٠
٣٢١
٣٢٢
٣٢٣
٣٢٤
٣٢٥
٣٢٦
٣٢٧
٣٢٨
٣٢٩
٣٣٠
٣٣١
٣٣٢
٣٣٣
٣٣٤
٣٣٥
٣٣٦
٣٣٧
٣٣٨
٣٣٩
٣٤٠
٣٤١
٣٤٢
٣٤٣
٣٤٤
٣٤٥
٣٤٦
٣٤٧
٣٤٨
٣٤٩
٣٥٠
٣٥١
٣٥٢
٣٥٣
٣٥٤
٣٥٥
٣٥٦
٣٥٧
٣٥٨
٣٥٩
٣٦٠
٣٦١
٣٦٢
٣٦٣
٣٦٤
٣٦٥
٣٦٦
٣٦٧
٣٦٨
٣٦٩
٣٧٠
٣٧١
٣٧٢
٣٧٣
٣٧٤
٣٧٥
٣٧٦
٣٧٧
٣٧٨
٣٧٩
٣٨٠
٣٨١
٣٨٢
٣٨٣
٣٨٤
٣٨٥
٣٨٦
٣٨٧
٣٨٨
٣٨٩
٣٩٠
٣٩١
٣٩٢
٣٩٣
٣٩٤
٣٩٥
٣٩٦
٣٩٧
٣٩٨
٣٩٩
٤٠٠
٤٠١
٤٠٢
٤٠٣
٤٠٤
٤٠٥
٤٠٦
٤٠٧
٤٠٨
٤٠٩
٤١٠
٤١١
٤١٢
٤١٣
٤١٤
٤١٥
٤١٦
٤١٧
٤١٨
٤١٩
٤٢٠
٤٢١
٤٢٢
٤٢٣
٤٢٤
٤٢٥
٤٢٦
٤٢٧
٤٢٨
٤٢٩
٤٣٠
٤٣١
٤٣٢
٤٣٣
٤٣٤
٤٣٥
٤٣٦
٤٣٧
٤٣٨
٤٣٩
٤٤٠
٤٤١
٤٤٢
٤٤٣
٤٤٤
٤٤٥
٤٤٦
٤٤٧
٤٤٨
٤٤٩
٤٥٠
٤٥١
٤٥٢
٤٥٣
٤٥٤
٤٥٥
٤٥٦
٤٥٧
٤٥٨
٤٥٩
٤٦٠
٤٦١
٤٦٢
٤٦٣
٤٦٤
٤٦٥
٤٦٦
٤٦٧
٤٦٨
٤٦٩
٤٧٠
٤٧١
٤٧٢
٤٧٣
٤٧٤
٤٧٥
٤٧٦
٤٧٧
٤٧٨
٤٧٩
٤٨٠
٤٨١
٤٨٢
٤٨٣
٤٨٤
٤٨٥
٤٨٦
٤٨٧
٤٨٨
٤٨٩
٤٩٠
٤٩١
٤٩٢
٤٩٣
٤٩٤
٤٩٥
٤٩٦
٤٩٧
٤٩٨
٤٩٩
٥٠٠
٥٠١
٥٠٢
٥٠٣
٥٠٤
٥٠٥
٥٠٦
٥٠٧
٥٠٨
٥٠٩
٥١٠
٥١١
٥١٢
٥١٣
٥١٤
٥١٥
٥١٦
٥١٧
٥١٨
٥١٩
٥٢٠
٥٢١
٥٢٢
٥٢٣
٥٢٤
٥٢٥
٥٢٦
٥٢٧
٥٢٨
٥٢٩
٥٣٠
٥٣١
٥٣٢
٥٣٣
٥٣٤
٥٣٥
٥٣٦
٥٣٧
٥٣٨
٥٣٩
٥٤٠
٥٤١
٥٤٢
٥٤٣
٥٤٤
٥٤٥
٥٤٦
٥٤٧
٥٤٨
٥٤٩
٥٥٠
٥٥١
٥٥٢
٥٥٣
٥٥٤
٥٥٥
٥٥٦
٥٥٧
٥٥٨
٥٥٩
٥٦٠
٥٦١
٥٦٢
٥٦٣
٥٦٤
٥٦٥
٥٦٦
٥٦٧
٥٦٨
٥٦٩
٥٧٠
٥٧١
٥٧٢
٥٧٣
٥٧٤
٥٧٥
٥٧٦
٥٧٧
٥٧٨
٥٧٩
٥٨٠
٥٨١
٥٨٢
٥٨٣
٥٨٤
٥٨٥
٥٨٦
٥٨٧
٥٨٨
٥٨٩
٥٩٠
٥٩١
٥٩٢
٥٩٣
٥٩٤
٥٩٥
٥٩٦
٥٩٧
٥٩٨
٥٩٩
٦٠٠
٦٠١
٦٠٢
٦٠٣
٦٠٤
٦٠٥
٦٠٦
٦٠٧
٦٠٨
٦٠٩
٦١٠
٦١١
٦١٢
٦١٣
٦١٤
٦١٥
٦١٦
٦١٧
٦١٨
٦١٩
٦٢٠
٦٢١
٦٢٢
٦٢٣
٦٢٤
٦٢٥
٦٢٦
٦٢٧
٦٢٨
٦٢٩
٦٣٠
٦٣١
٦٣٢
٦٣٣
٦٣٤
٦٣٥
٦٣٦
٦٣٧
٦٣٨
٦٣٩
٦٤٠
٦٤١
٦٤٢
٦٤٣
٦٤٤
٦٤٥
٦٤٦
٦٤٧
٦٤٨
٦٤٩
٦٥٠
٦٥١
٦٥٢
٦٥٣
٦٥٤
٦٥٥
٦٥٦
٦٥٧
٦٥٨
٦٥٩
٦٦٠
٦٦١
٦٦٢
٦٦٣
٦٦٤
٦٦٥
٦٦٦
٦٦٧
٦٦٨
٦٦٩
٦٧٠
٦٧١
٦٧٢
٦٧٣
٦٧٤
٦٧٥
٦٧٦
٦٧٧
٦٧٨
٦٧٩
٦٨٠
٦٨١

व हुवल्लजी अन्श-अ जन्नातिम् मअरूशातिव्-व गै-र मअरूशातिव्-वन्नख्-ल वज्जर-अ

होगा। यह यकीनी बात है कि हक-तल्फी करने वालों को कभी फ़लाह “यानी कामयाबी” न होगी।¹ (136) और (अल्लाह तआला ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं, उन लोगों ने उनमें से कुछ हिस्सा अल्लाह का मुकर्रर किया और अपने गुमान के मुताबिक कहते हैं कि यह तो अल्लाह का है और यह हमारे माबूदों का है, फिर जो चीज़ उनके माबूदों की होती है वह तो अल्लाह की तरफ नहीं पहुँचती और जो चीज़ अल्लाह की होती है वह उनके माबूदों की तरफ पहुँच जाती है,² उन्होंने क्या बुरी तजवीज़ निकाल रखी है। (137) और इसी तरह बहुत-से मुशिरकों के ख़्याल में उनके माबूदों ने अपनी औलाद के क़त्ल करने को अच्छा और पसन्दीदा बना रखा है ताकि वे उनको बर्बाद करें और ताकि उनके तरीके को ख़ल्ल-मल्ल कर दें।³ और अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो ये ऐसा काम न करते। तो आप उनको और जो कुछ ये ग़लत बातें बना रहे हैं, यूँ ही रहने दीजिए। (138) और वे अपने (बातिल) ख़्याल पर यह भी कहते हैं कि ये (मख़सूस) मवेशी हैं और (मख़सूस) खेत हैं, जिनका इस्तेमाल हर शख्स को जायज़ नहीं, उनको कोई नहीं खा सकता सिवाय उनके जिनको हम चाहें,⁴ और कहते हैं कि ये (मख़सूस) मवेशी हैं जिनपर सवारी या बोझ लादने का काम हराम कर दिया गया है,⁵ और (मख़सूस) मवेशी हैं जिनपर ये लोग अल्लाह का नाम नहीं लेते, (ये सब बातें) सिर्फ़ अल्लाह पर बोहतान बाँधने के तौर पर (कहते) हैं⁶ अभी अल्लाह तआला उनको उनके बोहतान बाँधने की सज़ा दिए देता है (139) और वे (यूँ भी) कहते हैं कि जो चीज़ उन मवेशियों के पेट में (से निकलती) है⁷ वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर वह (पेट का निकला हुआ वच्चा) मुर्दा है तो उस (से नफ़ा उठाने के जायज़ होने) में (मर्द व औरत) सब बराबर हैं,⁸ अभी अल्लाह तआला उनको उनकी ग़लत-बयानी की सज़ा दिये देता है। बेशक वह बड़ा हिक्मत वाला है, बड़ा इल्म वाला है।⁹ (140) वाकई वे लोग ख़राबी में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को महज़ बेवकूफी की वजह से बिला किसी सनद के क़त्ल कर डाला, और जो (हलाल) चीज़ें उनको अल्लाह तआला ने खाने-पीने को दी थीं उनको हराम कर लिया महज़ अल्लाह पर तोहमत बाँधने के तौर पर, बेशक ये लोग गुमराही में पड़ गए और कभी राह पर चलने वाले नहीं हुए।¹⁰ ♦ (141) ♦

(पृष्ठ 260 का शेष) मोहताज है, वह तो बिल्कुल ग़नी है, बल्कि इसलिए भेजता है कि वह रहमत वाला भी है। अपनी रहमत से रसूलों को भेजा ताकि उनके ज़रिये से लोगों को फ़ायदेमन्द और नुक़सान देने वाली चीज़ें मालूम हो जाएँ, और वे नफ़ा देने वाली चीज़ों से फ़ायदा उठाएँ और नुक़सान देने वाली चीज़ों से महफूज़ रहें, इसमें बन्दों ही का नफ़ा है।

6. यानी क्रियामत व अज़ाब।

1. ऊपर मुशिरकीन के कुफ़्रिया व शिक्रिया एतिकादों की जहालतों का बयान था, आगे उनकी बाज़ अमली जहालतों का बयान है, जिसका मन्शा शिक्र व कुफ़्र था।

2. ग़ल्ले और फल में से कुछ हिस्सा अल्लाह के नाम का निकालते और कुछ बुतों और जिन्नात के नाम का। फिर अगर इत्तिफ़ाक़ से अल्लाह के हिस्से में से कुछ बुतों के हिस्से में मिल जाता तो उसको मिला रहने देते, और अगर उल्टा हो जाता तो उसको निकाल कर फिर बुतों के हिस्से में मिला देते, और बहाना यह करते कि अल्लाह तो ग़नी है, उसका हिस्सा कम हो जाने से उसको कोई नुक़सान नहीं, और शुरका यानी बुत मोहताज हैं, उनका हिस्सा न घटना चाहिए।

3. ताकि वे हमेशा ग़लती में फँसे रहें।

4. कुछ खेत बुतों के नाम वक्फ़ कर देते और कहते कि इसके ख़र्च होने की असल जगह मर्द हैं और औरतों को इसमें से कुछ देना हमारी राय पर है, अगर हमारी मरज़ी हो तो कुछ हिस्सा उनको दे सकते हैं वरना वे इसके ख़र्च होने की जगह नहीं। इसी तरह मवेशियों के बारे में भी उनका अमल था। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 264 पर)

मुख्तलिफन् उकुलूह वज्जैतू-न वरुम्मा-न मु-तशाबिहव्-व गै-र मु-तशाबिहिन्, कुलू मिन् स-मरिही इजा अस्म-र व आतू हक्कहू यौ-म हसादिही व ला तुस्सिफू इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्सिफीन (142) व मिनल्-अन्आमि हमूलतव्-व फरशन्, कुलू मिम्मा

र-ज-ककुमुल्लाहु व ला तत्तबिअ खुतुवातिशैतानि, इन्नहू लकुम् अदुव्वुम् मुबीन (143) समानिय-त अज्वाजिन् मिनज्जअनिस्नैनि व मिनल्-मअजिस्नैनि, कुल् आज्ज-करैनि हर-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मशत-मलत् अलैहि अरहामुल्-उन्सयैनि, नब्बिऊनी बिअिल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिकीन (144) व मिनल् इबिलिस्नैनि व मिनल् ब-करिस्नैनि, कुल् आज्ज-करैनि हर-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मशत-मलत् अलैहि अरहामुल्-उन्सयैनि, अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज् वस्साकुमुल्लाहु बिहाजा फ-मन् अजलमु मिम्-मनिफतरा अलल्लाहि कजिबल्-लियुजिल्लन्ना-स

बिगैरि अिल्मिन्, इन्नल्ला-ह ला यहिदल् कौमज्जालिमीन (145) ❖

कुल् ला अजिदु फी मा ऊहि-य इलय्-य मुहरमन् अला ताअिमिय्यत्-अमुहू इल्ला अय्यकू-न मै-ततन् औ दमम्-मस्फूहन् औ लह्-म खिन्जीरिन् फ-इन्नहू रिज्सुन् औ फिस्कन् उहिल्-ल लिगैरिल्लाहि बिही फ-मनिज्जुर्-र गै-र बागिन्-व ला आदिन् फ-इन्-न रब्ब-क गफूररहीम (146) व अलल्लजी-न हादू हरम्मा कुल्-ल जी जुफुरिन् व मिनल् ब-करि

وَالْخَلِّ وَالزَّرْعُ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخْلَانُ مَثَلًا
وَغَيْرُ مُتَشَابِهٍ كُلٌّ مِنْ ثَمَرَةٍ إِذَا أَشْرَوْا تَوَّافِقُهُ يَوْمَ
حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَمِنَ الْأَنْعَامِ
حَمُولَةٌ وَفَرَسَاتٌ كُلًّا مِمَّا رَزَقَكُمْ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوتِ
الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ ثَلَاثَةَ أَزْوَاجٍ مِنَ الضَّأْنِ
اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ قُلْ لِلَّذِينَ حَزَمُوا الْأَنْثَيْنِ
أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْثَيْنِ نَبِيُّنِي يَعْلَمُ إِنَّ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ
لِلَّذِينَ حَزَمُوا الْأَنْثَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ
الْأَنْثَيْنِ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَضَعَكُمُ اللَّهُ فِي أَرْحَامِ
مِثْنٍ فَقَدْ بَدَأَ بِذِكْرِ الْفَيْضِ النَّاسَ مِنْ بَعْدِ عِلْمِهِ إِنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوْحِيَ إِلَيَّ
مُعْزَمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مِثْمَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا
أَوْ لَحْمَ خَنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَعَلَى
الَّذِينَ هَادُوا حَزَمًا كُلِّ ذِي ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ

مَنْ

और वही (अल्लाह पाक) है जिसने बाग़ पैदा किए, वे भी जो टट्टियों “यानी बाँस या सरकन्डों के बने हुए छप्पर व झोंपड़ी” पर चढ़ाए जाते हैं, (जैसे अंगूर) और वे भी जो टट्टियों पर नहीं चढ़ाए जाते, और खजूर के पेड़ और खेती जिनमें खाने की चीज़ें मुख्तलिफ़ तौर की होती हैं, और आपस में जैतून और अनार (यानी अनार-अनार आपस में और जैतून-जैतून आपस में) एक-दूसरे के जैसे भी होते हैं और (कभी) एक-दूसरे के जैसे नहीं होते, उन सबकी पैदावार खाओ जब वह निकल आए, और उसमें (शरीअत की रू से) जो हक़ वाजिब है वह उसके काटने (और तोड़ने) के दिन (गरीबों को) दिया करो।¹ और हद से मत गुज़रो, यकीनन वह हद से गुज़रने वालों को ना-पसन्द करते हैं। (142) और मवेशियों में ऊँचे क़द के और छोटे क़द के, जो कुछ अल्लाह तआला ने तुमको दिया है खाओ, और शैतान के क़दम से क़दम मिलाकर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (143) (और ये मवेशी) आठ नर व मादा (पैदा किए) यानी भेड़ (और दुँबा) में दो किस्म (नर व मादा) और बकरी में दो किस्म (नर व मादा)। आप (उनसे) कहिए कि क्या अल्लाह तआला ने दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हैं! तुम मुझको किसी दलील से तो बतलाओ, अगर तुम सच्चे हो। (144) और ऊँट में दो किस्म और गाय (भैंस) में दो किस्म। आप कहिए कि क्या अल्लाह तआला ने उन दोनों नरों को हराम किया है या दोनों मादा को, या उस (बच्चे) को जिसको दोनों मादा (अपने) पेट में लिए हुए हों। क्या तुम उस वक़्त हाज़िर थे जिस वक़्त अल्लाह तआला ने इस (हराम व हलाल होने) का हुक्म दिया? तो उससे ज़्यादा (और) कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह तआला पर बिला दलील झूठ तोहमत लगाए? ताकि लोगों को गुमराह करे। यकीनन अल्लाह तआला ज़ालिम लोगों को (आखिरत में जन्नत का) रास्ता न दिखलाएँगे।² (145) ❖

आप कह दीजिए कि जो कुछ अहक़ाम व हद के ज़रिये से मेरे पास आए हैं उनमें तो मैं किसी खाने वाले के लिए कोई हराम (ग़िज़ा) नहीं पाता जो उसको खाए, मगर यह कि वह मुर्दार (जानवर) हो,³ या बहता हुआ खून हो, या सुअर का गोشت हो क्योंकि वह बिल्कुल नापाक है,⁴ या जो (जानवर) शिक़ का ज़रिया हो कि अल्लाह के सिवा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख़्स बेताब हो जाए, शर्त यह है कि न तो मज़े का तालिब हो और न (ज़रूरत की मात्रा से) आगे बढ़ने वाला हो तो वाकई आपका रब माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।⁵ (146) और यहूद पर हमने तमाम नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिए थे,

(पृष्ठ 262 का शेष) 5. जिन जानवरों को बुतों के नाम मख़सूस करके छोड़ देते थे उनपर सवारी करने और सामान लादने को जायज़ न समझते थे।

6. बोहतान बौधना इसलिए कि वे इन उमूर को अल्लाह तआला की खुश्रूदी का सबब समझते थे।

7. जैसे दूध या बच्चा।

8. बहीरा और साइबा के ज़िब्र के वक़्त जो बच्चा पेट में से निकलता, अगर वह ज़िन्दा होता तो उसको ज़िब्र कर लेते और उसे मर्दों के लिए हलाल और औरतों के लिए हराम समझते। और अगर वह मुर्दा होता तो सबके लिए हलाल समझते। इसी तरह बाज़ जानवरों के दूध को मर्दों के लिए हलाल और औरतों के लिए हराम समझते थे।

9. अब तक जो सज़ा नहीं मिली तो उसकी वजह यह है कि बेशक अल्लाह तआला हिक्मत वाला है, उसने बाज़ हिक्मतों से मोहलत दे रखी है। और अभी सज़ा न देने से कोई यह न समझे कि उसको ख़बर नहीं, क्योंकि वह बड़ा इल्म वाला है, उसको सब ख़बर है।

10. यह गुमराही नई नहीं क्योंकि पहले भी कभी राह पर चलने वाले नहीं हुए। पस इस आयत में उनके गुमराह होने को और ताकीद के साथ बयान किया गया और आयत के आखिरी हिस्से में उनके बुरे अन्जाम यानी सज़ा होने का ज़िक्र है।

1. इस आयत में जिस शरई हक़ ख़ैर-ख़ैरात का ज़िक्र है उससे उशर (यानी दसवाँ हिस्सा) मुराद नहीं जो कि ज़मीन की ज़कात है।

2. ऊपर मुशिरकों के खुद ही हलाल व हराम घड़ लेने के ग़लत और बेबुनियाद होने को बयान फरमाया है। आगे भी इसी मज़मून की ताईद है कि जिन जानवरों का बयान हो रहा है उनमें हराम तो फ़लों-फ़लों चीज़ें हैं, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 266 पर)

वल्ग-नमि हरर्मना अलैहिम् शुहू-महुमा इल्ला मा ह-मलत् जुहूरुहुमा अविल्हवाया औ
मख्त-ल-त बिअज्मिन्, ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिबगियहिम् व इन्ना लसादिकून (147) फ-इन्
कज़्ज़बू-क फ-कुर्रब्बुकुम् जू रह्मतिव्-वासि-अतिन् व ला युरद्दु बअसुहू अन्िल् कौमिल्-
मुज़्रिमीन (148) स-यकूलुल्लज़ी-न अशरकू लौ शाअल्लाहु मा अशरक्ना व ला आबाउना

व ला हरर्मना मिन् शैइन्, कज़ालि-क
कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् कब्लिहिम् हत्ता
ज़ाकू बअसना, कुल हल् अिन्दकुम् मिन्
अिल्मिन् फ-तुखिरजूहु लना इन्
तत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् अन्तुम्
इल्ला तखरूसून (149) कुल्
फलिल्लाहिल्- हुज्जतुल्-बालि-गतु फलौ
शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअीन (150)

कुल् हलुम्-म शु-हदा-अकुमुल्लज़ी-न
यशहदू-न अन्नल्ला-ह हर-म हाज़ा
फ-इन् शहिदू फला तशहद् म-अहुम् व
ला तत्तबिअू अह्वा-अल्लज़ी-न कज़्ज़बू
बिआयातिना वल्लज़ी-न ला युअ्मिन्-न
बिल्- आखि-रति व हुम् बिरब्बिहिम्
यअ्दिलून (151) ♦

कुल् तअलौ अल्लु मा हर-म रब्बुकुम् अलैकुम् अल्ला तुशिरकू बिही शैअंव-व
बिल्वालिदैनि इत्सानन् व ला तक्तुलू औलादकुम् मिन् इम्लाकिन्, नहनु नरज़ुकुम् व इय्याहुम्
व ला तक्वरबुल्-फवाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न व ला तक्तुलुन्नप्सल्लती
हरमल्लाहु इल्ला बिल्हक्कि, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअल्लकुम् तअक्लून (152) व ला

الاعراض ۱۴۲ ولواتنا

حَزَمْنَا عَلَيْهِمْ شَحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلْتَ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا
أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِغَيْرِهِمْ وَلَئِنْ أَصْرُ قَوْمٍ
فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ
عَنِ الْقَوْمِ النَّجِيرِينَ ۖ سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَزَمْنَا مِنْ شَيْءٍ مِّمَّا كَذَّبَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ قُرْ
آنٌ فَلْيَخْرُجُوهُ لَنَا إِنْ تَذَكَّرُونَ إِلَّا الظَّنُّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا
تَخْرُصُونَ ۚ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَيْكُمْ أَجْمَعِينَ ۚ
قُلْ هَلْ مِنْ شُهَدَاءَ كُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَزَمَ هَذَا
فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ يَرِيحُهَا بَعْدَ لَوْ
قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَزَمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ إِلَّا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَ
بِالنَّوَالِدِينَ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ
نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا
بَطْنٌ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَزَمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكَُمْ
وَضَعُكُمْ بِهِ لَعْنَكُمْ تَعْقِلُونَ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا

مَنْك

और गाय और बकरी (के अंगों) में से उन दोनों की चरबियाँ उनपर हमने हराम कर दी थीं, मगर वह जो उनकी पुश्त पर या अंतड़ियों में लगी हो, या जो हड्डी से मिली हो। उनकी शरारत के सबब हमने उनको यह सज़ा दी थी, और हम यकीनन सच्चे हैं। (147) फिर अगर ये आपको झूठा कहें तो आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारा रब बड़ी विशाल रहमत वाला है¹ और उसका अज़ाब मुज़्जिम लोगों से न टलेगा। (148) ये मुशिरक यूँ कहने को हैं कि अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम किसी चीज़ को हराम कह सकते, इसी तरह जो (काफ़िर) लोग उनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक कि उन्होंने हमारे अज़ाब का मज़ा चखा² आप कहिए कि क्या तुम्हारे पास कोई दलील है?³ तो उसको हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम लोग सिर्फ़ ख्याली बातों पर चलते हो, और तुम बिलकुल अटकल से बातें बनाते हो। (149) आप कहिए कि पस पूरी हुज्जत अल्लाह ही की रही, फिर अगर वह चाहता तो तुम सबको राह पर ले आता⁴ (150) आप कहिए कि अपने गवाहों को लाओ जो इस बात पर (बाकायदा) गवाही दें कि अल्लाह तआला ने इन (ज़िक्र की हुई चीज़ों) को हराम कर दिया है, फिर अगर वे गवाही दे दें तो आप उस गवाही को न सुनें। और (ऐ मुखातब!) ऐसे लोगों के बातिल ख्यालात की पैरवी मत करना जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और वे अपने रब के बराबर दूसरों को ठहराते हैं। (151) ♦

आप (उनसे) कहिए कि आओ मैं तुमको वे चीज़ें पढ़कर सुनाऊँ जिनको तुम्हारे रब ने तुमपर हराम फ़रमाया है, वे ये कि (१) अल्लाह तआला के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठहराओ,⁵ (२) और माँ-बाप के साथ एहसान किया करो, (३) और अपनी औलाद को बदहाली और तंगी के सबब क़त्ल मत किया करो, हम तुमको और उनको (तयशुदा) रिज़्क देंगे, (४) और बेहयाई के जितने तरीक़े हैं उनके पास भी मत जाओ, चाहे वे एलानिया हों या छुपे तौर पर हों, (५) और जिसका खून करना अल्लाह तआला ने हराम कर दिया है उसको क़त्ल मत करो मगर हक़ पर, इसका तुमको ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (152) (६) और

(पृष्ठ 264 का शेष) तुम अपनी तरफ़ से क्यों घड़ते हो। और इसमें उनकी एक दूसरी गुमराही की तरफ़ भी इशारा है, क्योंकि बहते हुए खून और अल्लाह के अलावा दूसरे के नाम पर ज़िब्द किए हुए जानवर के खाने की आ़म आदत थी। पस ऊपर हलाल को हराम करने का ज़िक्र था और यह हराम को हलाल करने का ज़िक्र है।

3. यानी जिसका ज़िब्द करना वाजिब हो और वह शरई तरीक़े पर ज़िब्द किए बिना मर जाए।
4. सुअर के सब हिस्से और अंग नापाक और हराम हैं, ऐसा नापाक मुकम्मल नापाक कहलाता है।
5. ऊपर जो मज़मून ज़िक्र किया गया था आगे उसके मुताल्लिक़ एक शुब्हा का जवाब है कि खाने-पीने की जिन चीज़ों की बहस जारी है उनमें कुछ चीज़ों को छोड़कर सबको हलाल किया गया है, हालाँकि बाज़ अहले किताब से मालूम हुआ कि बाज़े और जानवर भी हराम हैं। जवाब यह है कि यह हराम होना सिर्फ़ यहूद के लिए एक सबब की वजह से हुआ था जो अब ख़त्म हो गया, पस दावा अपनी जगह पर सही और उसकी ज़िद (यानी उसका उल्टा) अपनी जगह पर ग़लत है।

1. इसलिए बाज़ हिक्मतों से जल्दी पकड़ नहीं फ़रमाते।
2. चाहे दुनिया में जैसा कि अक्सर पिछले कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल हुआ है, या मरने के बाद तो ज़ाहिर ही है। और यह इशारा है इस तरफ़ कि उन लोगों के उन कुफ़्रियात (यानी कुफ़्र भरी बातों और हरकतों) के मुक़ाबले में सिर्फ़ ज़बानी जवाब और मुनाज़रे पर बस न किया जाएगा बल्कि पिछले कुफ़्फ़ार की तरह अमली सज़ा भी दी जाएगी। चाहे दुनिया में भी या सिर्फ़ आख़िरत में।
3. यानी इस दावे पर कि किसी अमल के सादिर होने की कुदरत देना रज़ामन्दी की दलील है।
4. मगर हक़ तआला की बहुत-सी हिक्मतें हैं, किसी को तौफ़ीक़ दी किसी को नहीं दी। अलबत्ता हक़ का इज़हार और इख़्तियार व इरादे का देना सबके लिए आ़म है।
5. पस शरीक़ ठहराना इराम हुआ।

तक्कबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्बु-ग अशुद्दहू व औफुल्कै-ल
वल्मीजा-न बिल्किस्ति ला नुकल्लिफु नफ्सन् इल्ला वुस्अहा व इजा कुल्लुम् फअदिलू व लौ
का-न जा कुरबा व बि-अहिदल्लाहि औफू, जालिकुम् वस्साकुम् बिही लअल्लकुम् तजक्करून
(153) व अन्-न हाजा सिराती मुस्तकीमन् फत्तबिअहु व ला तत्तबिअुस्सुबु-ल फ-तफर-क

बिकुम् अन् सबीलिही, जालिकुम्
वस्साकुम् बिही लअल्लकुम् तत्तकून
(154) सुम्-म आतैना मूसल्-किता-ब
तमामन् अलल्लजी अह्स-न व
तफसीलल्-लिकुल्लि शैइव्-व रहम-तल्
लअल्लहुम् बिलिका-इ रब्बिहिम्
युअमिनून (155) ❖

व हाजा किताबुन् अन्जल्लनाहु
मुबारकुन् फत्तबिअहु वत्तकू लअल्लकुम्
तुरहमून (156) अन् तकूलू इन्नमा
उन्जिलल्-किताबु अला ताइ-फतैनि मिन्
कब्लिना व इन् कुन्ना अन्
दिरा-सतिहिम् लगाफिलीन (157) औ
तकूलू लौ अन्ना उन्जि-ल अलैनल्-
किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् फ-कद्

जाअकुम् बय्यि-नतुम् मिररब्बिकुम् व हुदव्-व रहमतुन् फ-मन् अजल्लमु मिम्मन् कज्ज-ब
बिआयातिल्लहि व स-द-फ अन्हा, स-नज्जिल्लजी-न यस्दिफू-न अन् आयातिना सूअल्-
अजाबि बिमा कानू यस्दिफून (158) हल् यन्जुरू-न इल्ला अन् तअति-यहुमुल्मलाइ-कतु औ
यअति-य रब्बु-क औ यअति-य बअजु आयाति रब्बि-क, यौ-म यअती बअजु आयाति

بِالْبَيْتِ هِيَ أَحْسَنُ حَتَّى يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَيْلِ وَالْيَتَامَى
بِالْقِسْطِ لَا تُكَلِّفُوا نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدُوا
لَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَلِكُمْ وَضَعَكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَذَكَّرُونَ وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا
السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَضَعَكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ
وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّكُمْ يَلْقَوْنَ رِبَّكَ
يُؤْمِنُونَ وَهَذَا كِتَابُنَا أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ
قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنِ دَرَجَاتِهِمْ لَغَافِلِينَ ۚ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا
أُنْزِلَ عَلَيْهِ الْكِتَابُ لَنُكَلِّفَهُنَّ مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ بَيِّنَتِ
اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا
سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ۚ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ
تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ
يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُهُمْ نَفْسًا إِيْمَانُهُمْ لَمْ يَكُنْ

यतीम के माल के पास मत जाओ मगर ऐसे तरीके से जो कि अच्छा और पसन्दीदा है,¹ यहाँ तक कि वह अपने बालिग होने की उम्र को पहुँच जाए, (७) और नाप-तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ के साथ, हम किसी शख्स को उसकी ताकत से ज्यादा तकलीफ नहीं देते,² (८) और जब तुम बात किया करो तो इन्साफ रखा करो, चाहे वह शख्स³ रिश्तेदार ही हो, (९) और अल्लाह तआला से जो अहद किया करो⁴ उसको पूरा किया करो। इन (सब) का तुमको अल्लाह तआला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम याद रखो (और अमल करो)। (153) और यह कि यह दीन मेरा रास्ता है, जो कि सीधा है, सो इस राह पर चलो और दूसरी राहों पर मत चलो कि वे (राहें) तुमको उसकी (यानी अल्लाह की) राह से जुदा कर देंगी। इसका तुमको अल्लाह तआला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम (इस राह के खिलाफ करने से) एहतियात रखो। (154) फिर हमने मूसा को किताब दी थी, जिससे अमल करने वालों पर अच्छी तरह नेमत पूरी हो और सब अहकाम की तफसील हो जाए, और रहनुमाई हो और रहमत हो, ताकि वे लोग अपने रब की मुलाकात होने पर यकीन लाएँ। (155) ❖

और यह (कुरआन मजीद) एक किताब है जिसको हमने भेजा, बड़ी खैर व बरकत वाली, सो इसका इत्तिबा करो और डरो, ताकि तुम पर रहमत हो। (156) कभी तुम लोग यूँ कहने लगते कि किताब तो सिर्फ हमसे पहले जो दो फ़िक्रें थे उनपर नाज़िल हुई थी और हम उनके पढ़ने-पढ़ाने से बिलकुल बेख़बर थे। (157) या यूँ कहते कि अगर हमपर कोई किताब नाज़िल होती तो हम उनसे भी ज्यादा राह पर होते। सो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब के पास से एक वाज़ेह किताब और रहनुमाई का ज़रिया और रहमत आ चुकी है, सो उस शख्स से ज्यादा ज़ालिम कौन होगा जो हमारी इन आयतों को झूठा बतलाए और इससे रोके? हम अभी उन लोगों को जो कि हमारी आयतों से रोकते हैं उनके इस रोकने के सबब सख्त सज़ा देंगे। (158) ये लोग सिर्फ इस बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ या उनके पास आपका रब आए या आपके रब की कोई बड़ी निशानी आए।⁵ जिस दिन आपके रब की यह बड़ी निशानी आ पहुँचेगी, किसी ऐसे शख्स का ईमान उसके काम न आएगा जो पहले से ईमान नहीं रखता, या उसने अपने ईमान में कोई नेक अमल न किया हो, आप फ़रमा दीजिए कि तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं।⁶ (159) बेशक जिन लोगों ने अपने दीन को

1. जैसे उसके काम में लगाना, उसकी हिफ़ाज़त करना और बाज़ औलिया (सरपरस्तों) और जिनके लिए वसीयत की गई है, उनको उसमें यतीम के लिए तिज़ारत करने की भी इजाज़त है।
2. फिर उनके अहकाम में कोताही क्यों की जाए।
3. जिसके मुकाबले में वह बात कह रहे हो।
4. जैसे क़सम या मन्नत. शर्त यह है कि वह शरीअत में जायज़ हो।
5. मतलब यह हुआ कि क्या ईमान लाने में क़ियामत के आने या नज़दीक होने का इन्तिज़ार है।
6. यहाँ तक बयान का ज्यादा हिस्सा मुशिरकीन के बारे में है, आगे एक आम उनवान से दूसरे गुमराहों का हक़ से दूर और वईद (सज़ा की धमकी) का हक़दार होना बयान फ़रमाते हैं, जिसमें सब कुफ़ार, मुशिरकीन, अहले किताब और ख़्वाहिशों के पीछे चलने वाले और बिद्अत में मुब्तला लोग वईद के दर्जों के एतिबार से दाख़िल हो गए।
7. यानी दीने हक़ को मुकम्मल तौर पर कबूल न किया, चाहे सबको छोड़ दिया या बाज़ को, और शिर्क, बिद्अत और कुफ़र के तरीके इख़्तियार कर लिए।

रब्बि-क ला यन्फअु नफ्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् कब्बु औ क-सबत् फी ईमानिहा खैरन्, कुलित्तजिरु इन्ना मुन्तजिरुन (159) इन्नल्लजी-न फर्रकू दीनहुम् व कानू शि-यअल्लसू-त मिन्हुम् फी शैइन्, इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफअलून (160) मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ-लहू अशरु अम्सालिहा व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फला युज्जा इल्ला

मिस्लहा व हुम् ला युज्जमून (161)

कुल् इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम् मुस्तकीम, दीनन् कि-य-मम् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफन् व मा का-न मिनल् मुशिरकीन (162) कुल् इन्-न सलाती

व नुसुकी व मय्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (163) ला

शरी-क लहू व बिजालि-क उमिरतु व अ-न अव्वलुल् मुस्लिमीन (164) कुल्

अगैरल्लाहि अब्बी रब्ब्व-व हु-व रब्बु कुल्लि शैइन्, व ला तक्सिबु कुल्लु

नफिसन् इल्ला अलैहा व ला तजिरु वाजि-रतुंविज्ज-र उखूरा सुम्-म इला

रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फीहि तख्तलिफून (165) व हुवल्लजी ज-अ-लकुम् खला-इफल्-अजि व

र-फ-अ बअजकुम् फौ-क बअजिन् द-रजातिल् लियब्बु-वकुम् फी मा आताकुम्, इन्-न रब्ब-क सरीअुल्-अिकाबि व इन्नहू ल-गफूररहीम ● (166) ♦

الانعام 139

اَمَنْتَ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْ اِيْمَانِهَا خَيْرًا قُلْ

اَنْتَظِرُوا اِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ فَزَعُوا مِنْهُمْ وَ

كَانُوا شُرَكَاءَ السَّيِّئَاتِ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ اِنْثَابًا مَّرْهُمُ اِلَى

اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ

فَلَهُ عَشْرٌ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى اِلَّا

مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اَتَقْبِىْ هٰذِهِ رَبِّىْ اِلَى

صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمَةٍ دِيْنًا قِيَمًا مِّمَّةً اِبْرٰهِيْمَ حَنِيفًا وَّ

مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنْ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَ

مَعَايِىْ وَمِمَّا فِىْ بِلَدِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَّ

بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ قُلْ اَعْبُدِ اللّٰهَ

اَبْنِىْ رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ اُخْرٰى ثُمَّ اِلَىٰ رَبِّكُمْ

مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِىْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۚ وَهُوَ

الَّذِى جَعَلَكُمْ خٰلِفٰى اِلَى الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ

دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَا اٰتٰكُمْ ۚ اِنَّ سَرَكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚ

وَاِنَّهُ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

مَكَّة

जुदा-जुदा कर दिया' और गिरोह-गिरोह बन गए, आपका उनसे कोई ताल्लुक नहीं, बस उनका मामला अल्लाह तआला के हवाले है, फिर वह उनको उनका किया हुआ जतला देंगे।' (160) जो शख्स नेक काम करेगा तो उसको उसके दस हिस्से (मिलेंगे) और जो शख्स बुरा काम करेगा सो उसको उसके बराबर ही सज़ा मिलेगी, और उन लोगों पर जुल्म न होगा।' (161) आप कह दीजिए कि मुझको मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बतला दिया है, कि वह एक मज़बूत दीन है, जो इब्राहीम का तरीका है, जिसमें ज़रा भी टेढ़पन नहीं, और वह शिर्क करने वालों में से न थे।' (162) आप फ़रमा दीजिए कि यकीनन मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना यह सब ख़ालिस अल्लाह तआला ही का है जो सारे ज़हान का मालिक है। (163) उसका कोई शरीक नहीं, और मुझको इसी का हुक्म हुआ है, और मैं सब मानने वालों से पहला हूँ।' (164) आप फ़रमा दीजिए कि क्या मैं खुदा तआला के सिवा किसी और को रब बनाने के लिए तलाश करूँ हालाँकि वह हर चीज़ का मालिक है, और जो शख्स भी कोई अमल करता है वह उसी पर रहता है, और कोई दूसरे का वोझ न उठाएगा। फिर तुम सबको अपने रब के पास जाना होगा, फिर वह तुमको जतला देंगे जिस-जिस चीज़ में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (165) और वह ऐसा है जिसने तुमको ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाया और एक का दूसरे पर रुतबा बढ़ाया ताकि (ज़ाहिरन्) तुमको उन चीज़ों में आजमाए जो तुमको दी हैं,⁵ यकीनन आपका रब जल्द सज़ा देने वाला है, और बेशक वह बड़ी मफ़िरत करने वाला, बड़ी मेहरबानी करने वाला है।' ● (166) ❖

1. दुर्गे मन्सूर में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से इन गिरोहों से यहूद व नसारा मुराद होना, और हज़रत अबू हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफूअन् बिद्अली लोगों का होना और तफ़सीरे ख़ाज़िन में हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से तमाम मुशिरकीन इस एतिबार से कि बाज़े बुत-परस्त हैं, बाज़े सितारों को पूजते हैं वगैरह, मुराद होना नक़ल किया गया है। चूँकि लफ़्ज़ "फ़रकू" सबको शामिल हो सकता है इसलिए आम मुराद लेना ज़्यादा मुनासिब है। अलबत्ता वर्ईद (सज़ा की धमकी और डाँट) के दर्जे अलग-अलग होंगे। यानी काफ़िरों को हमेशा का अज़ाब होगा और बिद्अतियों को ईमान के मौजूद होने के सबब बुरे और फ़ासिद अक़ायद की सज़ा पाने के बाद नज़ात होगी।

2. कि कोई नेकी लिखी न जाए या कोई बदी ज़्यादा करके लिख ली जाए।

3. आगे ज़िक्र हुए दीन की किसी क़द तफ़सील बयान फ़रमा दी।

4. इसमें दूसरों को एक ख़ास अन्दाज़ के साथ दावत है कि जब नवी भी ईमान लाने का मुक़ल्लफ़ है तो दूसरे क्यों न होंगे।

5. आज़माना यह कि कौन इन नेमतों की क़द करके नेमतों के देने वाले की इताअत करता है और कौन बेक़द्री करके इताअत नहीं करता। पस बाज़े फ़रमाँवरदार हुए और बाज़े नाफ़रमान हुए, और दोनों के साथ मुनासिब मामला किया जाएगा।

6. पस नाफ़रमानों के लिए सज़ा है और फ़रमाँवरदारों के लिए रहमत है, और नाफ़रमानी से फ़रमाँवरदारी की तरफ़ आने वालों के लिए मफ़िरत है। पस जो मुक़ल्लफ़ हैं उनके लिए यह ज़रूरी हुआ कि दीने हक़ के मुवाफ़िक़ इताअत इख़्तियार करें, बातिल (ग़ैर-हक़) पर अमल करने और हक़ की मुख़ालफ़त से बाज़ आएँ।

7 सूरतुल्-अअर्राफि 39

(मक्की) इस सूर: में अरबी के 14635 अक्षर, 3387 शब्द
206 आयतें और 24 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ-लाम्-मीम्-सौद् (1)

किताबुन् उन्जि-ल इलै-क फ़ला यकुन्

फी सदरि-क ह-रजुम् मिन्हु लितुन्जि-र

बिही व जिक्का लिल्मुअमिनीन (2)

इत्तबिअू मा उन्जि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम्

व ला तत्तबिअू मिन् दूनिही औलिया-अ,

कलीलम् मा तजक्करुन (3) व कम्

मिन् कुर्यतिन् अह्लक्नाहा फ़जा-अहा

बअसुना बयातन् औ हुम् का-इलून (4)

फ़मा का-न दअवाहुम् इज़् जा-अहुम्

बअसुना इल्ला अन् कालू इन्ना कुन्ना

ज़ालिमीन (5) फ़-लनस्-अलन्नल्लज़ी-न

उरसि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल्

मुरसलीन (6) फ़- ल-नकुस्सन्-न

अलैहिम् बिअिल्मिन्-व मा कुन्ना

गा-इबीन (7) वल्वज़नु यौमइज़ि-

निल्हक्कु फ़-मन् सकुलत् मवाज़ीनुहू

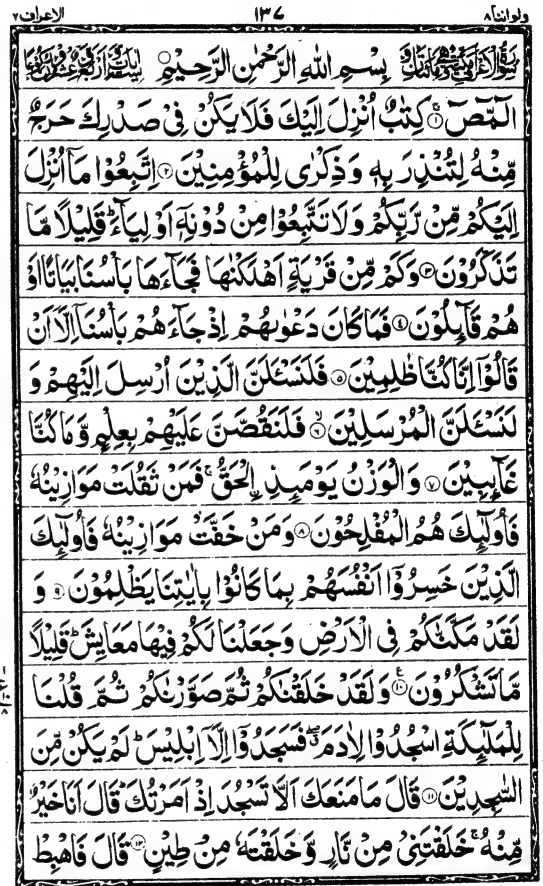
फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़िलहून (8) व मन्

ख़प्फत् मवाज़ीनुहू फ़-उला-इकल्लज़ी-न ख़सिरु

अन्फु-सहुम् बिमा कानू बिआयातिना यज़िलमून (9) व ल-कद् मक्कन्नाकुम्

फ़िल्अर्जि व जअल्ला लकुम् फ़ीहा मआयि-श, कलीलम् मा तश्कुरुन (10) ❖

व ल-कद् ख़लक्नाकुम् सुम्-म सब्बर्नाकुम् सुम्-म कुल्ला लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म



7 सूर: आराफ़ 39

सूर: आराफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 206 आयतें और 24 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-मीम-सौद।¹ (1) यह एक किताब है, जो आपके पास इसलिए भेजी गई है कि आप इसके ज़रिये से डराएँ, सो आपके दिल में इससे बिलकुल तंगी न होनी चाहिए,² और यह नसीहत है ईमान वालों के लिए। (2) तुम लोग इसका इत्तिबा करो, जो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से आई है,³ और खुदा तआला को छोड़कर दूसरे रफ़ीकों की इत्तिबा मत करो, तुम लोग बहुत ही कम नसीहत मानते हो। (3) और बहुत-सी वस्तियों को हमने तवाह कर दिया, और उनपर हमारा अज़ाब रात के वक़्त पहुँचा, या ऐसी हालत में कि वे दोपहर के वक़्त आराम में थे। (4) तो जिस वक़्त उनपर हमारा अज़ाब आया उस वक़्त उनके मुँह से सिवाय इसके और कोई बात न निकली थी कि वाकई हम ज़ालिम थे।⁴ (5) फिर हम उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे जिनके पास पैग़म्बर भेजे गए थे, और हम पैग़म्बरों से ज़रूर पूछेंगे।⁵ (6) फिर हम चूँकि पूरी ख़बर रखते हैं, उनके सामने वयान कर देंगे, और हम कुछ वेख़बर न थे। (7) और उस दिन वज़न भी किया जाएगा,⁶ फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा सो ऐसे लोग कामयाब होंगे। (8) और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा सो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया, इस वजह से कि वे हमारी आयतों की हक़-तल्फ़ी करते थे।⁷ (9) और वेशक़ हमने तुमको ज़मीन पर रहने के लिए जगह दी और हमने उसमें तुम्हारे लिए ज़िन्दगानी का सामान पैदा किया, तुम लोग बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।⁸ (10) ♦

और हमने तुमको पैदा किया, फिर हमने ही तुम्हारी सूरत बनाई, फिर हमने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया सिवाय शैतान के, वह सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। (11) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया, तू जो सज्दा नहीं करता, तुझको इससे कौन-सी बात रुकावट है, जबकि मैं तुझको हुक्म दे चुका। कहने लगा, मैं इससे बेहतर हूँ, आपने मुझको आग से पैदा किया है और

1. पूरी सूर: पर नज़र डालने से मालूम होता है कि इसमें ज़्यादा मज़ामीन मआद (यानी आखिरत) और नुबुव्वत से मुताल्लिक हैं।

2. क्योंकि किसी के न मानने से आपके डराने में तो (जो कि असली गरज़ है) ख़लल नहीं पड़ता, फिर आप क्यों दिल छोटा करें।

3. इत्तिबा यह कि तस्दीक़ भी करो, अमल भी करो।

4. यानी उस वक़्त अपने जुर्म का इक़रार किया जबकि इक़रार का वक़्त गुज़र गया।

5. दोनों सवालों से कुफ़्फ़ार को झिड़कना और मलामत होगी।

6. यानी क़ियामत के दिन।

7. उस तराजू में ईमान व कुफ़्र का वज़न किया जाएगा और उस तराजू में एक पल्ला ख़ाली रहेगा और एक पल्ले में अगर वह मोमिन है तो ईमान और अगर काफ़िर है तो कुफ़्र रखा जाएगा। जब उस तौल से मोमिन और काफ़िर अलग-अलग हो जाएँगे तो फिर ख़ास मोमिनो के लिए एक पल्ले में उनकी नेकियाँ और दूसरे पल्ले में उनकी बुराइयाँ रखकर उन आमाल का वज़न होगा। और जैसा कि दुर्रें मन्सूर में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया गया है कि अगर नेकियाँ ग़लिब हुईं तो जन्नत और अगर बुराइयाँ ग़ालिब हुईं तो दोज़ख़, और अगर दोनों बराबर हुईं तो आराफ़ उसके लिए तजवीज़ होगी। फिर चाहे सज़ा से पहले चाहे सज़ा के बाद शफ़ाअत से मफ़िरत हो जाएगी।

8. मुराद शुक्र से इताअत व फ़रमाँवरदारी है।

फ-स-जद् इल्ला इब्नी-स, लम् यकुम् मिनस्साजिदीन (11) का-ल मा म-न-अ-क अल्ला तस्जु-द इज् अमरतु-क, का-ल अ-न खैरुम्-मिन्हु खलक्तनी मिन् नारिन्-व खलक्तहू मिन् तीन (12) का-ल फत्बिन् मिन्हा फमा यकूनु ल-क अन् त-तकब्ब-र फीहा फर्रुज् इन्न-क मिनस्सागिरीन (13) का-ल अन्जिरनी इला यौमि युब्असून (14) का-ल इन्न-क मिनल्

मुन्ज़रीन (15) का-ल फबिमा अग्वैतनी ल-अकअुदन्-न लहुम् सिरा-तकल् मुस्तकीम (16) सुम्-म लआतियन्नहुम् मिम्-बैनि ऐदीहिम् व मिन् खल्फिहिम् व अन् ऐमानिहिम् व अन् शमा-इलिहिम्, व ला तजिदु अक्स-रहुम् शाकिरीन (17) कालखरुज् मिन्हा मंज़ुऊमम्-मद्हूरन्, ल-मन् तबि-अ-क मिन्हुम् लअम्-लअन्-न जहन्न-म मिन्कुम् अज्मअीन (18) व या आदमुस्कुन् अन्-त व जौजुकलजन्न-त फ-कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तकरबा हाजिहिश्-श-ज-र-त फ-तकूना मिनज्-जालिमीन (19) फ-वस्व-स लहुमश्-शैतानु लियुब्दि-य लहुमा मा वूरि-य अन्हुमा मिन् सौआतिहिमा व का-ल मा नहाकुमा

रब्बुकुमा अन् हाजिहिश्श-ज-रति इल्ला अन् तकूना म-लकैनि औ तकूना मिनलखालिदीन (20) व का-स-महुमा इन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन (21) फदल्लाहुमा बिगुरुरिन् फ-लम्मा जाकश्श-ज-र-त बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफिका यदिसफानि अलैहिमा मिन्व-रकिल्-जन्नति, व नादाहुमा रब्बुहुमा अलम् अन्हकुमा अन् निल्कुमश्श-ज-रति व अकुल्-लकुमा इन्नश्शैता-न लकुमा अदुवुम् मुबीन (22) काला रब्बना जलम्ना अन्फु-सना

وَلَا تَأْكُلْ أَمْوَالَهُمْ بَعْضُهَا ذِكْرِ بَعْضٍ ۚ الْكُفْرُ بِلِلَّهِ وَرَسُولِهِ يُكْتَبُ عَلَى الْكَافِرِ الْعَذَابُ عَذَابًا مُّذَوْنًا ۖ ۝۱۳۵
مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ ۝۱۳۶ قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ۖ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ۖ ۝۱۳۷ قَالَ فِيمَا أُغْوِيْتَنِي لِأَفْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۖ ثُمَّ لَا تَجِدَهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۖ ۝۱۳۸ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ وَيَأْدُمُ السَّكَنُ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ ۝۱۳۹ قَوْسُوسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَائِهِمَا وَقَالَ مَا تُخَلَّكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ۖ ۝۱۴۰ فَاسْتَهْمَا إِلَى لَحْمَانِ التَّحْسِينِ ۖ فَذَلَّهُمَا بِعُرْوَةٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَاوَاهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذَرْقِ الْجَنَّةِ ۖ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلْتُ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُبِينٌ ۖ ۝۱۴۱ رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ ۝۱۴۲

इसको आपने मिट्टी से पैदा किया। (12) (अल्लाह तआला ने) फरमाया, तू आसमान से उतर, तुझको कोई हक हासिल नहीं कि तू इसमें (यानी आसमान में रहकर) तकबुर करे, सो तू निकल, बेशक तू ज़लीलों में शुमार होने लगा। (13) वह कहने लगा कि मुझे कियामत के दिन तक मोहलत दीजिये। (14) (अल्लाह तआला ने) फरमाया कि तुझको मोहलत दी गई।¹ (15) वह कहने लगा इस सबब से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं कसम खाता हूँ कि मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर बैठूँगा। (16) फिर उनपर हमला करूँगा, उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी, और उनकी दाहिनी तरफ़ से भी और उनकी बाई तरफ़ से भी,² और आप उनमें ज्यादातर को एहसान मानने वाला न पाइएगा। (17) (अल्लाह तआला ने) फरमाया कि यहाँ से ज़लील व ख़्वाब होकर निकल, जो शख्स उनमें से तेरा कहना मानेगा मैं ज़रूर तुम सबसे³ जहन्नम को भर दूँगा। (18) और (हमने हुक्म दिया कि) ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से चाहो दोनों आदमी खाओ और उस पेड़ के पास मत जाओ, कभी उन लोगों की गिनती में आ जाओ जिनसे नामुनासिब काम हो जाया करता है। (19) फिर शैतान ने उन दोनों के दिलों में वस्वसा डाला, ताकि उनका पर्दे का बदन जो एक-दूसरे से छुपा हुआ था दोनों के सामने बेपर्दा कर दे, और कहने लगा कि तुम्हारे रब ने तुम दोनों को इस पेड़ से और किसी सबब से मना नहीं फरमाया, मगर सिर्फ़ इस वजह से कि तुम दोनों कहीं फ़रिश्ते हो जाओ, या कहीं हमेशा ज़िन्दा रहने वालों में से हो जाओ। (20) और उन दोनों के सामने कसम खाई कि यकीन जानिए मैं आप दोनों का ख़ैरख़्वाह “यानी तुम दोनों का भला चाहने वाला” हूँ। (21) सो उन दोनों को फ़रेब से नीचे ले आया,⁴ पस उन दोनों ने जब पेड़ को चखा तो दोनों के पर्दे का बदन एक-दूसरे के सामने बेपर्दा हो गया, और दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे। और उनके रब ने उनको पुकारा, क्या मैं तुम दोनों को इस पेड़ से मना न कर चुका था, और यह न कह चुका था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है? (22) दोनों कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमने अपना बड़ा नुक़सान किया, और अगर आप हमारी मग़्फ़िरत न करेंगे और हमपर रहम न करेंगे तो वाकई हमारा बड़ा नुक़सान हो जाएगा। (23) (अल्लाह तआला ने) फरमाया कि नीचे ऐसी हालत में जाओ कि तुम आपस में बाज़े दूसरे बाज़ों ‘यानी एक-दूसरे’ के

1. इससे मालूम हुआ कि काफ़िर की दुआ भी कभी कबूल हो जाती है, और इससे अल्लाह के नज़दीक उसका महबूब और सम्मानित होना लाज़िम नहीं आता।

2. यानी उनके बहकाने में खूब कोशिश करूँगा, जिससे वे आपकी इबादत न करने पाएँ।

3. यानी तुझसे और उनसे।

4. नीचे ले आया, हालत और राय के एतिबार से भी और जगह के एतिबार से भी, यहाँ तक कि अपनी बुलन्द राय से उसकी घटिया राय की तरफ़ माइल हो गए, जिससे जन्नत से नीचे की तरफ़ उतारे गए।

व इल्लम् तग़फिर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् खासिरीन (23) कालह्वितू
बअज़ुकुम् लि-बअज़िन् अदुवुन् व लकुम् फिल्अर्जि मुस्तकर्रुव्-व मताअुन् इला हीन (24)
का-ल फीहा तस्यौ-न व फीहा तमूतू-न व मिन्हा तुख़रज़ून (25) ❖

या बनी आद-म कद् अन्ज़ल्ला अलैकुम् लिबासय्युवारी सौआतिकुम् वरीशन्, व
लिबासुत्तक्वा ज़ालि-क खैरुन्, ज़ालि-क
मिन् आयातिल्लाहि लअल्लहुम्
यज़्ज़क्करुन (26) या बनी आद-म ला
यफ़ितनन्नकुमुशशैतानु कमा अख़र-ज
अ-बवैकुम् मिनल्जन्नति यन्ज़िअु अन्हुमा
लिबा-सहुमा लियुरि-यहुमा सौआतिहिमा,
इन्नहू यराकुम् हु-व व कबीलुहू मिन्हैसु
ला तरौनहुम्, इन्ना जअल्लन्शशयाती-न
औलिया-अ लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनून
(27) व इज़ा फ़-अलू फ़ाहि-शतन्
कालू वजदन्ना अलैहा आबा-अना वल्लाहु
अ-म-रना बिहा, कुल् इन्नल्ला-ह ला
यअ्मुरु बिल्फ़हशा-इ, अ-तकूलू-न
अलल्लाहि मा ला तअ़्लमून (28) कुल्
अ-म-र रब्बी बिल्किस्ति, व अकीमू
वुजूहकुम् अिन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-
वद्अूहु मुख़िलसी-न लहुद्दी-न, कमा
ब-द-अकुम् तअ़दून (29) फ़रीकन् हदा व फ़रीकन् हक्-क अलैहिमुज़्ज़लालतु,
इन्नहुमुत्त-ख़जुशशयाती-न औलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व यत्सबू-न अन्नहुम् मुहत्तदून (30)
या बनी आद-म ख़ुजू ज़ीन-तकुम् अिन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-व कुलू वशरबू व ला तुस्रिफ़ू,
इन्नहू ला युहिब्बुल् मुस्रिफ़ीन (31) ❖

الاعراف ١٢٩
الْغَيْرِينَ ۖ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي
الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۚ قَالَ فِيهَا تُحْيَوْنَ وَ
فِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ۚ يَبْنَئُ أَدَمُ فَذَٰلِكَ نَزَّلْنَا عَلَيْكُمْ
لِبَاسًا يُؤَارِي سَوَاقِكُمْ وَرِيثًا لِّأُولِيَ السَّفْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ
ذَٰلِكَ مِنَ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۚ يَبْنَئُ أَدَمُ لَا يَقْتَنِبُكُمْ
الشَّيْطَانُ كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا
لِيُرِيَهُمَا سَوْآتِهِمَا إِنَّ يَرْكَبُهُ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ
إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَإِذَا فَعَلُوا
فَاجِسَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آيَةً ۚ وَاللَّهُ أَمَرْنَا بِهَا قُلُوبَنَا إِنَّا
اللَّهُ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ اتَّقُوا اللَّهَ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝
قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ۚ
فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۚ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا
الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنََّّهُم مُّنتَدُونَ ۚ
يَبْنَئُ أَدَمُ مَخْدُورًا زَيْنَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا
وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۚ قُلْ مَنْ حَزَمَ زِينَةَ اللَّهِ

दुश्मन रहोगे।¹ और तुम्हारे वास्ते ज़मीन में रहने की जगह है और फ़ायदा हासिल करना एक वक़्त तक। (24) (और) फ़रमाया कि तुमको वहाँ ही ज़िन्दगी बसर करना है और वहाँ ही मरना है, और उसी में से फिर पैदा होना है।² (25) ♦

ऐ आदम की औलाद! हमने तुम्हारे लिए लिबास पैदा किया जो कि तुम्हारे पर्दे वाले बदन को भी छुपाता है और ज़ीनत का सबब भी है, और तक्वे का लिबास यह उससे बढ़कर है,³ यह अल्लाह तआला की निशानियों में से है ताकि ये लोग याद रखें।⁴ (26) ऐ आदम की औलाद! शैतान तुमको किसी ख़राबी में न डाल दे, जैसा कि उसने तुम्हारे दादा-दादी को जन्नत से बाहर करा दिया, (ऐसी हालत से) कि उनका लिबास भी उनसे उतरवा दिया, ताकि उनको उनके पर्दे का बदन दिखाई देने लगे। वह और उसका लश्कर तुमको ऐसे तौर पर देखता है कि तुम उनको नहीं देखते हो, हम शैतानों को उन्हीं लोगों का साथी होने देते हैं जो ईमान नहीं लाते। (27) और वे लोग जब कोई फुहश “यानी ग़लत और बेहूदा” काम करते हैं⁵ तो कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को इसी तरीके पर पाया है और अल्लाह तआला ने हमको यही बतलाया है। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला फुहश “यानी बुरी और बेहूदा” बात की तालीम नहीं देता, क्या खुदा के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी तुम सनद नहीं रखते?⁶ (28) आप कह दीजिए कि मेरे रब ने हुक्म दिया है इन्साफ़ करने का, और यह कि तुम हर सन्दे के वक़्त अपना रुख़ सीधा रखा करो, और उसकी (यानी अल्लाह की) इबादत इस तौर पर करो कि उस इबादत को ख़ालिस अल्लाह ही के वास्ते रखा करो,⁷ जिस तरह तुमको अल्लाह तआला ने शुरू में पैदा किया था उसी तरह फिर तुम दोबारा पैदा होगे। (29) बाज़ लोगों को तो अल्लाह ने हिदायत की है और बाज़ पर गुमराही साबित हो चुकी है। उन लोगों ने अल्लाह तआला को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया,⁸ और ख़्याल रखते हैं कि वे राह पर हैं। (30) ऐ आदम की औलाद! तुम मस्जिद की हर हाज़िरी के वक़्त अपना लिबास पहन लिया करो, और (ख़ूब) खाओ और पियो और हृद से मत निकलो, बेशक अल्लाह तआला हृद से निकल जाने वालों को पसन्द नहीं करते। (31) ♦

1. यानी जन्नत से नीचे ज़मीन पर जाओ।

2. मतलब “तुमको वहाँ ही ज़िन्दगानी बसर करनी है” का यह है कि आम आदत के मुताबिक़ तुम्हारा असली ठिकाना यह होगा, और अगर किसी सबब के पेश आने की वजह से इस आदत के ख़िलाफ़ हो जाए तो उसकी नफ़ी (इनकार) नहीं है। पस इससे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आसमान पर ज़िन्दा जाने और रहने के इनकार पर दलील पकड़ना ग़लत और बातिल है।

3. क्योंकि इस जाहिरी लिबास का शर्इ तौर पर पसन्दीदा होना इसी तक्वे के वाजिब होने की एक किस्म है। पस असली मक़सूद जो हर हालत में ज़रूरी है वह यह लिबास है।

4. ऊपर के किस्से में शैतान की गुमराही और आदम की औलाद से उसकी दुश्मनी ज़िक्र की गई थी, आगे उसके गुमराह करने और उससे बचने व एहतियात की ताक़ीद का बयान है।

5. चाहे अक़ीदों में से जैसे शिर्क़ कि बड़ी बेहयाई है, चाहे आमाल में से जैसे तवाफ़ के वक़्त नंगे हो जाना।

6. पैरवी उस मसले में जायज़ है जिसमें पैरवी करने के लिए इजाज़त और शर्इ सनद हो, जो उसकी शर्तों के जमा होने पर मौकूफ़ है। और यहाँ खुद “क़तई नस्स” की मुख़ालफ़त से शर्तें ग़ायब हैं, पस ऐसी पैरवी से एहतियाज़ (यानी मुख़ालफ़त में आवाज़ उठाना) खुद बातिल हो गया।

7. इन मामूरात (यानी जिन चीज़ों का हुक्म किया गया है) में शरीअत के सब उसूल आ गए। “इन्साफ़ करने” में बन्दों के हुक्क, “रुख़ सीधा करने” में आमाल व अच्छे काम, “ख़ालिस अल्लाह ही के लिए रखने” में अक़ायद। मतलब यह कि अल्लाह के तो ये अहक़ाम हैं, इनको मानो, क्योंकि सिर्फ़ तुमको हुक्म देकर नहीं छोड़ा जाएगा बल्कि एक वक़्त हिसाब-किताब के लिए भी आने वाला है, यानी क़ियामत।

8. यानी अल्लाह तआला की इताअत न की और शैतानों की इताअत की।

कुल् मन् हर-म जी-नतल्लाहिल्लती अखर-ज लिअिबादिही वत्तय्यिबाति मिनरिर्जिक, कुल् हि-य लिल्लजी-न आमनू फिल्हयातिद्दुन्या खालि-सतंय्यौमल्-कियामति, कजालि-क नुफस्सिलुल्-आयाति लिकौमिय्यअलमून (32) कुल् इन्मा हर-म रब्बियल्-फवाहि-श मा ज-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न वल्डस्-म वल्बग्-य बिगैरिल्हक्कि व अन् तुशिरकू बिल्लाहि मा लम् युनज्जिल् बिही सुल्तानव्-व अन्

तकूलू अलल्लाहि मा ला तअलमून (33) व लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् फ-इजा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअखिरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तकिदमून (34) या बनी आद-म इम्मा यअतियन्नकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यकुस्सू-न अलैकुम् आयाती फ-मनित्ता व अस्ल-ह फला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम् यहजून (35) वल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना वस्तक्बरू अन्हा उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून (36) फ-मन् अजलमु मिम्-मनिफतरा अलल्लाहि कजिबन् औ कज्ज-ब बिआयातिही, उलाइ-क यनालुहुम्

नसीबुहुम् मिनल्-किताबि, हत्ता इजा जाअल्हुम् रुसुलुना य-तवफौनहुम् कालू ऐ-न मा कुन्तुम् तद्अ-न मिन् दूनिल्लाहि, कालू जल्लू अन्ना व शहिदू अला अन्फुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफिरीन (37) कालद्खुलू फी उ-ममिन् कद् खलत् मिन् कब्लिकुम् मिनल्-जिन्नि वल्इन्सि फिन्नारि, कुल्लमा द-खलत् उम्मतुल्ल-अनत् उख्तहा, हत्ता इजद्दा-रकू फीहा

الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالظَّالِمِينَ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ
آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَذَلِكَ تَفْصِلُ
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرَكُوا
بِاللَّهِ مَا لَمْ يَرْزُقْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا
لَا تَعْلَمُونَ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ
سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ يَبْنِي أَدَمُ إِمَامًا يَنْبَغِيكُمْ رَسُولٌ مِّنْكُمْ
يُقْضُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنْ أَتَى وَأَصْلَهُ فَلَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا
أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ أُولَئِكَ يَتْلَوْنَ نَجْمَهُمْ فِيهِمْ مِّنَ
الْكِتَابِ حَتَّى إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّسْتَأْذِنٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ
تَدْعُونَنَا مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالَ أَصْنَوْا عَنَّا وَشْهَدُوا عَلَيَّ
أَنفُسُهُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ
أُخْرَى حَتَّى إِذَا دُرُّوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَئِهِمْ رَبَّنَا

आप फ़रमाइए कि अल्लाह तआला के पैदा किए हुए कपड़ों को, जिनको उसने अपने बन्दों के वास्ते बनाया है और खाने-पीने की हलाल चीज़ों को किस शख्स ने हराम किया है?¹ आप यह कह दीजिए कि ये चीज़ें इस तौर पर कि क़ियामत के दिन भी ख़ालिस रहें, दुनियावी ज़िन्दगानी में ख़ालिस ईमान वालों ही के लिए हैं, हम इसी तरह समझदारों के वास्ते तमाम आयतों को साफ़-साफ़ बयान किया करते हैं। (32) आप फ़रमाइए कि अलबत्ता मेरे रब ने हराम किया है तमाम फुहश “यानी गन्दी और बेहूदा” बातों को, उनमें जो खुले तौर पर हों वे भी² और उनमें जो छुपे तौर पर हों वे भी,³ और वह हर गुनाह की बात को और नाहक किसी पर जुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह तआला के साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक ठहराओ जिसकी अल्लाह तआला ने कोई सनद नाज़िल नहीं फ़रमाई। और इस बात को कि तुम लोग अल्लाह तआला के ज़िम्मे ऐसी बात लगा दो जिसकी तुम सनद न रखो।⁴ (33) और हर ग़िरोह के लिए एक मुक़र्ररा मीयाद है, सो जिस वक़्त उनकी मुक़र्ररा मीयाद आ जाएगी उस वक़्त एक घड़ी न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे।⁵ (34) ऐ आदम की औलाद!⁶ अगर तुम्हारे पास पैग़म्बर आएँ जो तुम्ही में से होंगे, जो मेरे अहक़ाम तुमपर बयान करेंगे, सो जो शख्स परहेज़ रखे और दुरुस्ती करे,⁷ सो उन लोगों पर न कुछ अन्देशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (35) और जो लोग हमारे इन अहक़ाम को झूठा बतलाएँगे और इनसे तकब्बुर करेंगे, वे लोग दोज़ख़ वाले होंगे, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (36) सो उस शख्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधे⁸ या उसकी आयतों को झूठा बतलाए, उन लोगों के नसीब का जो कुछ (लिखा) है वह उनको मिल जाएगा, यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान कब्ज़ करने आएँगे तो कहेंगे कि वे कहाँ गए जिनकी तुम खुदा को छोड़कर इबादत किया करते थे? वे कहेंगे कि हमसे सब ग़ायब हो गए,⁹ और अपने काफ़िर होने का इक़रार करने लगेंगे।¹⁰ (37) (अल्लाह) फ़रमाएगा कि जो फ़िर्के तुमसे पहले गुज़र चुके हैं जिन्नात में से भी और आदमियों में से भी, उनके साथ तुम भी दोज़ख़ में जाओ। जिस वक़्त भी (काफ़िरों की) कोई जमाअत (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी, अपनी जैसी दूसरी जमाअत को लानत करेगी,¹¹ यहाँ तक कि जब उसमें सब जमा हो जाएँगे तो बाद वाले लोग पहले लोगों के बारे में कहेंगे

1. यानी किसी चीज़ को हराम करने के लिए तो उसको हराप करने वाले की ज़रूरत है, वह हराम करार देने वाला अल्लाह तआला के सिवा कौन है।

2. जैसे नंगे तवाफ़ करना।

3. जैसे बदकारी।

4. यानी जो हकीकत में हलाल हैं उनको तो तुमने हराम समझा, और जो हकीकत में हराम हैं उनको हलाल समझा, अजीब जहालत में गिरफ़्तार हो। और जिस तरह आयत “कुल् अ-म-र रब्बी बिल्किस्ति (आख़िर तक)” में तमाम अहक़ाम दाख़िल हो गए थे उसी तरह यहाँ आयत “इन्मा हर-म (आख़िर तक)” में तमाम वे चीज़ें दाख़िल हैं जिनसे मना किया गया है। “बग़-य” में तो सब मामलात आ गए, और “अन् तुशिरकू व अन तकूलू” में तमाम फ़ासिद और बुरे अकायद आ गए, और “इस्-म” में तमाम गुनाह और नाफ़रमानियाँ आ गईं, जिनमें से फुहश गुनाहों को ख़ास तौर पर एहतिमाम के साथ ज़िक्र किया गया।

5. उस मीयाद से पहले सज़ा न होना इसकी दलील नहीं कि हराम कामों पर सज़ा न होगी।

6. ऊपर अ़कीदों व आमाल में शैतान की इत्तिबा व मुवाफ़क़त से मुमानअत फ़रमाई गई थी, अब यह बतलाते हैं कि इस मज़मून का ख़िताब तुमको नया नहीं, बल्कि “आलमे अरवाह” (यानी रूहों की दुनिया) में यह अहद ले लिया गया था, अब उसी को दोहराया जा रहा है। और इसमें रिसालत और आख़िरत के मसले का सुबूत भी हो गया, जो कि इस सूरत के बड़े मक़सिद में से है।

7. मुराद यह कि मुकम्मल इत्तिबा करे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 280 पर)

जमीअन् कालत् उख्राहुम् लिऊलाहुम् रब्बना हा-उला-इ अजल्लूना फआतिहिम् अज़ाबन् जिअफम्-मिनन्नारि, का-ल लिकुल्लिन् जिअफुव्-व लाकिल्ला तअलमून (38) व कालत् ऊलाहुम् लिउख्राहुम् फमा का-न लकुम् अलैना मिन् फज्लिन् फज्जूकुल्-अज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (39) ❖

इन्नल्लजी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अन्हा ला तुफत्तहु लहुम् अब्बाबुस्समा-इ व ला यदखूलूनल्-जन्न-त हत्ता यलिजल्-ज-मलु फी सम्मिल्-ख़ायाति, व कज़ालि-क नज़्ज़िल्-मुज़्ज़रिमीन (40) लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादुव्-व मिन् फौकिहिम् गवाशिन्, व कज़ालि-क नज़्ज़िज़्ज़ालिमीन (41) वल्लजी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति ला नुकल्लिफु नफ्सन् इल्ला वुस्अहा उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फीहा ख़ालिदून (42) व नज़्ज़ना मा फी सुदूरिहिम् मिन् गिल्लिन् तज़्ज़ी मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु व कालुल्हम्दु

लिल्लाहिल्लजी हदाना लिहाज़ा, व मा कुन्ना लिनहत्तदि-य लौ ला अन् हदानल्लाहु ल-कद् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक्कि, व नूदू अन् तिल्कुमुल्-जन्नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअमलून ▲ (43) व नादा अस्हाबुल्-जन्नति अस्हाबन्नारि अन् कद् वजद्ना मा व-अ-दना रब्बुना हक्कन् फ-हल् वजत्तुम् मा व-अ-द रब्बुकुम् हक्कन्, कालू न-अम् फ-अज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुम् बैनहुम् अल्लअ-नतुल्लाहि अलज़्ज़ालिमीन (44) अल्लजी-न

وَلَا يَصْلَوْنَ فَإِنَّهُمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٍ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ وَقَالَتْ أُولَئِكَ لَأُخْرِجَنَّكُمْ فَأُكَادُ كُفُّوا عَنَّا وَفَوَّ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّرُهُمْ أَبَدًا وَبِالنَّارِ وَالْجَنَّةِ خُلُوفٌ جُنَّةٌ حَتَّى يَلْبِغَ الْيَحْمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَارِ وَكَذَلِكَ نُجْزِي الْمُجْرِمِينَ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ قَوَّعِهِمْ غَوَاشٍ وَكَذَلِكَ نُجْزِي الظَّالِمِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلًا رَبَّنَا بِالْحَقِّ وَنُودُوا أَنْ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُفِثْنَا مِنْ قَبْلُ لَكُمْ تَعْمَلُونَ وَنَادَى أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا

कि ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था, सो इनको दोज़ख़ का अज़ाब (हमसे) दोगुना दीजिए। (अल्लाह तआला) फ़रमाएँगे कि सब ही का दोगुना है, लेकिन (अभी) तुमको ख़बर नहीं। (38) और पहले लोग बाद वाले लोगों से कहेंगे कि फिर तुमको हमपर कोई बरतरी नहीं, सो तुम भी अपने किरदार के मुकाबले में अज़ाब (का मज़ा) चखते रहो। (39) ❖

जो लोग हमारी आयतों को झूठा बतलाते हैं और उन (के मानने) से तकब्बुर करते हैं, उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएँगे, और वे लोग कभी जन्नत में न जाएँगे, जब तक कि ऊँट सूई के नाके के अन्दर से (न) चला जाए,¹ और हम मुज़िम लोगों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। (40) उनके लिए दोज़ख़ (की आग) का बिछौना होगा और उनके ऊपर (उसी का) ओढ़ना होगा, और हम ऐसे ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।² (41) और जो लोग ईमान लाए³ और उन्होंने नेक काम किए, हम किसी शख्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा कोई काम नहीं बतलाते, ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। (42) और जो कुछ उनके दिलों में गुबार था हम उसको दूर कर देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी और वे लोग कहेंगे कि अल्लाह का (लाख-लाख) एहसान है जिसने हमको इस मक़ाम तक पहुँचाया, और हमारी कभी रसाई न होती अगर अल्लाह तआला हमको न पहुँचाते,⁴ वाकई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची बातें लेकर आए थे। और उनसे पुकारकर कहा जाएगा कि तुमको यह जन्नत दी गई है⁵ तुम्हारे आमाल के बदले।⁶ ▲ (43) और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि हमसे जो हमारे रब ने वायदा फ़रमाया था हमने तो उसको हकीक़त के मुताबिक़ पाया,⁷ सो तुमसे जो तुम्हारे रब ने वायदा किया था तुमने भी उसको हकीक़त के मुताबिक़ पाया?⁸ वे कहेंगे हाँ, फिर एक पुकारने वाला उन (दोनों) के दरमियान में पुकारेगा कि अल्लाह की मार हो उन ज़ालिमों पर (44) जो अल्लाह की राह से मुँह फेरा करते थे, और उसमें कज़ी “यानी टेढ़ और कमी” तलाश करते रहते थे,

(पृष्ठ 278 का शेष)

8. यानी जो बात खुदा की कही हुई हो उसको बेकही बतला दे।

9. यानी वाकई कोई काम न आया।

10. लेकिन उस वक़्त का इकरार बिल्कुल बेकार होगा।

11. यानी आपस में हमदर्दी न होगी। हकीक़त के सामने आ जाने की वजह से हर शख्स दूसरे को बुरी नज़र से देखेगा और बुरा कहेगा।

1. और यह मुहाल है। पस जो चीज़ मुहाल (नामुम्किन) के साथ मशरूत (जुड़ी हुई) हो वह भी हमेशा के लिए मन्फ़ी (न होने वाली) होगी।

2. यानी हमको कोई दुश्मनी न थी, जैसा किया वैसा भुगता।

3. ऊपर झुठलाने वालों की सज़ा की तफ़सील थी। अब मोमिनों की जज़ा और बदले की तफ़सील है।

4. इसमें यह भी आ गया कि यहाँ तक पहुँचने का जो तरीका था, ईमान व आमाल, वह हमको बतलाया और उसपर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

5. यह आवाज़ देने वाला एक फ़रिश्ता होगा, जैसा कि दुरें मन्सूर में इब्ने अबी हातिम की रिवायत से अबू मुआज़ बसरी से मरफूअन् नक़ल किया गया है।

6. “तुम्हारे आमाल के बदले” से ज़ाहिर में आमाल का जन्नत में दाख़िल होने का सबब होना मालूम होता है, और हदीस में आया है कि आमाल के सबब कोई जन्नत में न जाएगा बल्कि रहमते इलाही के सबब जाएँगे। असल यह है कि आयत में ज़ाहिरी सबब मुराद है और हदीस में हकीक़ी सबब मुराद है। पस ज़ाहिरी के होने और हकीक़ी के न होने में कोई टकराव नहीं।

7. कि ईमान और नेक आमाल के इख़्तियार करने से जन्नत देंगे।

8. यानी अब तो अल्लाह तआला व रसूल के सच्चा होने और अपनी गुमराही की हकीक़त मालूम हुई।

और वे लोग आखिरत का इनकार करने वाले भी थे। (45) और उन दोनों के दरमियान एक आड़ होगी,¹ और आराफ के ऊपर बहुत-से आदमी होंगे, वे लोग हर एक को उनके निशानों से पहचानेंगे और जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे, अस्सलामु अलैकुम। अभी ये (आराफ वाले) उसमें (यानी जन्नत में) दाखिल नहीं हुए होंगे और उसके उम्मीदवार होंगे। (46) और जब उनकी निगाहें दोज़ख वालों की तरफ जा पड़ेंगी तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमको उन ज़ालिम लोगों के साथ शामिल न कीजिए। (47) ♦

और आराफ “जन्नत और दोज़ख के बीच एक जगह” वाले बहुत-से आदमियों को जिनको कि उनके निशानों और अन्दाज़ों से पहचानेंगे, पुकारेंगे। कहेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना तुम्हारे कुछ काम न आया। (48) क्या ये वही हैं जिनके बारे में तुम कस्में खा-खाकर कहा करते थे कि अल्लाह तआला उनपर रहमत न करेगा? (उनको यूँ हुक्म हो गया कि) जाओ जन्नत में, तुमपर न कुछ अन्देशा है और न तुम ग़मज़दा होंगे। (49) और दोज़ख वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि हमारे ऊपर थोड़ा पानी ही डाल दो, या और ही कुछ दे दो, जो अल्लाह तआला ने तुमको दे रखा है। (जन्नत वाले) कहेंगे कि अल्लाह तआला ने दोनों चीज़ों की काफ़िरों के लिए बन्दिश कर रखी है। (50) जिन्होंने (दुनिया में) अपने दीन को लहव-व-लअ़िब “यानी खेल-तमाशे की चीज़” बना रखा था, और जिनको दुनियावी ज़िन्दगानी ने धोखे में डाल रखा था, सो हम भी आजके दिन उनका नाम न लेंगे, जैसा कि उन्होंने इस दिन का नाम तक न लिया था, और जैसा कि ये हमारी आयतों का इनकार किया करते थे।² (51) और हमने उन लोगों के पास एक ऐसी किताब³ पहुँचा दी है जिसको हमने अपने कामिल इल्म से बहुत ही वाज़ेह करके बयान कर दिया है, (और वह) हिदायत का ज़रिया और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं। (52) उन लोगों को और किसी बात का इन्तिज़ार नहीं सिर्फ़ उसके आखिरी नतीजे का इन्तिज़ार है,⁴ जिस दिन उसका आखिरी नतीजा पेश आएगा उस दिन जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे यूँ कहने लगेंगे कि वाकई हमारे रब के पैग़म्बर सच्ची-सच्ची बातें लाए थे, सो अब क्या हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला है कि वह हमारी सिफ़ारिश कर दे, या क्या हम फिर वापस भेजे जा सकते हैं ताकि हम लोग उन आमाल के उलट जिनको हम किया करते थे दूसरे आमाल करें? बेशक उन लोगों ने अपने को घाटे में डाल दिया, और ये जो-जो बातें बनाते थे सब गुम हो गईं।⁵ (53) ♦

1. इसकी खा़सा यह होगा कि जन्नत का असर दोज़ख तक और दोज़ख का असर जन्नत तक न जाने देगी।

2. ऊपर जज़ा और सज़ा की तफ़सील बयान की गई है। आगे यह फ़रमाते हैं कि इस खुले बयान का और फिर कुरआन के दूसरे मज़ामीन का तकाज़ा यह है कि कुफ़्र और मुखा़लफ़त से वाज़ आ जायें। चुनाँचे ईमान वाले इस सज़ादत से मुशरफ़ होते भी हैं लेकिन कुफ़्र और मुखा़लिफ़ान की सख़्तदिला इस दर्जा बढ़ी हुई है कि वे सज़ा के ज़ाहिर होने से पहले न मानेंगे, लेकिन उस वक़्त मानना काम न आएगा।

3. यानी कुरआन।

4. यानी सज़ा का वायदा।

5. ऊपर आख़िरत की तफ़सील थी। चूँकि मुशिरक़ान दोबारा ज़िन्दा होने को दूर की और न होने वाली बात समझते थे, इसलिए आगे अपनी कुदरत और कामिल तसरूफ़ का बयान फ़रमाते हैं।

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने सब आसमानों और ज़मीन को छह दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर कायम हुआ,¹ छुपा देता है रात से दिन को,² ऐसे तौर पर कि वह रात उस दिन को जल्दी से आ लेती है,³ और सूरज और चाँद और दूसरे सितारों को पैदा किया, ऐसे तौर पर कि सब उसके हुक्म के ताबे हैं, याद रखो अल्लाह ही के लिए खास है ख़ालिफ़ “यानी पैदा करने वाला” होना और हाकिम होना, बड़ी ख़ूबियों से भरे हुए हैं अल्लाह तआला जो तमाम जहान के पालने वाले हैं। (54) तुम लोग अपने परवर्दिगार से दुआ किया करो आजिजी ज़ाहिर करके भी और चुपके-चुपके भी, (अलबत्ता यह बात) वाकई (है कि) अल्लाह तआला उन लोगों को ना-पसन्द करते हैं जो हद से निकल जाएँ।⁴ (55) और दुनिया में बाद इसके कि इसकी दुरुस्ती कर दी गई है, फ़साद मत फैलाओ, और उसकी (यानी अल्लाह की) इबादत किया करो डरते और उम्मीदवार रहते हुए,⁵ बेशक अल्लाह की रहमत नज़दीक है नेक काम करने वालों से। (56) और वह (अल्लाह) ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वे खुश कर देती हैं, यहाँ तक कि जब वे हवाएँ भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उस बादल को किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ हाँक ले जाते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं, फिर उस पानी से हर किस्म के फल निकालते हैं, यूँ ही हम मुर्दों को निकाल खड़ा कर देंगे,⁶ ताकि तुम समझो। (57) और जो सुथरी सरज़मीन होती है उसकी पैदावार तो खुदा के हुक्म से ख़ूब निकलती है, और जो ख़राब है उसकी पैदावार (अगर निकली भी) तो बहुत कम निकलती है। इसी तरह हम (हमेशा) दलीलों को तरह-तरह से बयान करते रहते हैं, उन लोगों के लिए जो क़द्र करते हैं।⁷ (58) ❖

हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी कौम की तरफ़ भेजा, सो उन्होंने फ़रमाया: ऐ मेरी कौम! तुम सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद होने के लायक नहीं, मुझको तुम्हारे लिए एक बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब का अन्देशा है। (59) उनकी कौम के आबरूदार “यानी समाज के इज़्ज़तदार” लोगों ने कहा कि हम तुमको खुली ग़लती में (मुब्तला) देखते हैं। (60) उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! मुझमें तो ज़रा भी ग़लती नहीं लेकिन मैं परवर्दिगारे-आलम का रसूल हूँ। (61) तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही करता हूँ और मैं खुदा की तरफ़ से उन चीज़ों की ख़बर रखता हूँ जिनकी तुमको

1. यानी ज़मीन व आसमान में अहक़ाम जारी करने लगा।

2. यानी रात के अन्धकार से दिन की रोशनी छुप जाती और ख़त्म हो जाती है।

3. यानी दिन आनन-फ़ानन गुजरता मालूम होता है, यहाँ तक कि अचानक रात आ जाती है।

4. जैसे वे चीज़ें माँगने लगे जो अक्ली या शरई तौर पर मुहाल हों, या ऐसी चीज़ों का मुतालबा करने लगे जो आदतन् न पाई जाती हों, या गुनाह की या बेकार चीज़ें माँगने लगे, जैसे खुदाई या नुबुव्वत या फ़रिशतों पर हुक्ूमत या बेनिकाह किए औरतों से फ़ायदा हासिल करना, या जन्नत के दाहिनी तरफ़ का सफ़ेद महल और इसी तरह की चीज़ें माँगने लगे, यह सब अदब के खिलाफ़ है। हाँ जन्नत और फ़िरदौस की दुआ मतलूब है, इसमें ये फ़ुज़ूल कैदे ममनूअ (वर्जित) हैं।

5. यानी इबादत करके न तो नाज़ हो और न मायूसी हो।

6. यानी क़ियामत के दिन।

7. इन आयतों का खुलासा यह है कि जब हक़ तआला के ये ज़ाती व सिफ़ाती कमालात साबित हुए तो इबादत और अपनी हाज़त तलब करने में उनके साथ किसी को शरीक मत करो, और उनकी कुदरत को सामने रखकर मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने का इनकार मत करो।

लाकिन्नी रसूलुम् मिरिब्बिल्-आलमीन (61) उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व
अअलमु मिनल्लाहि मा ला तअलमून (62) अ-व अजिबुम् अन् जा-अकुम् जिक्कुरुम्-
मिरिब्बिकुम् अला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्जि-रकुम् व लि-तत्तकू व लअल्लकुम् तुर्हमून (63)
फ-कज्जबूहु फ-अन्जैनाहु वल्लजी-न म-अहू फिल्लफुल्कि व अग्रक्कनल्लजी-न कज्जबू
बिआयातिना, इन्नहुम् कानू कौमन्.

अमीन (64) ♦

व इला आदिन् अखाहुम् हूदन्,
का-ल या कौमिअबुदुल्ला-ह मा लकुम्
मिन् इलाहिन् गैरुहू, अ-फला तत्तकून
(65) कालल्-म-लउल्लज़ी-न क-फरू
मिन् कौमिही इन्ना ल-नरा-क फी
सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुनु-क मिनल्-
काज़िबीन (66) का-ल या कौमि लै-स
बी सफ़ाहतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम्
मिर्रिब्बिल्-आलमीन (67) उबल्लिगुकुम्
रिसालाति रब्बी व अ-न लकुम् नासिहुन्
अमीन (68) अ-व अज़िब्तुम् अन्
जा-अकुम् ज़िकरुम्-मिर्रिब्बिकुम् अला
रज़ुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम्, वज़्कुरू

इज् ज-अ-लकुम् खु-लफा-अ मिम्-बअदि कौमि नूहिंव्-व जादकुम् फिल्बल्कि बस्त-तन्
फज्कुरू आला-अल्लाहि लअल्लकुम् तुफिलहून (69) कालू अजिअतना लिनअबुदल्ला-ह
वह्दहू व न-ज़-र मा का-न यअबुदु आबाउना फअतिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्-
सादिकीन (70) का-ल कद् व-क-अ अलैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव्-व ग-ज़बुन्,

١٢٣
١٢٣
قَالَ الْإِسْرَافُ

قَالَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَلَيْسَ لَكُمْ رَسُولٌ أَرْسَلْتُ إِلَيْكَ وَأَصْحَبَاكُمْ ۝
أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ أَوْ يَحْبِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا ۖ وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِ وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝ وَإِلَىٰ عَادِ إِخْلَاهُمْ
هُودًا ۖ قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ اللَّهِ عِذَّةٌ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرُّكَ
فِي سَفَاهَةٍ ۖ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۝ قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ
بِي سَفَاهَةٌ ۖ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَلَيْسَ لَكُمْ
رَسُولٌ أَرْسَلْتُ إِلَيْكُمْ نَاصِحًا أَمِينًا ۝ أَوْ يَحْبِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ
ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۖ وَاذْكُرُوا
إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ ۖ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ
بَضْطَةً ۖ فَادْكُرُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ قَالَ آتَا
أَحِبَّتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا
فَأَنتَابُوا يُعْبُدُونَنَا ۖ كُنْتُ مِنَ الضَّالِّينَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ
عَلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ رَجْسٌ وَغَضَبٌ ۖ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءِ

منزل

ख़बर नहीं। (62) क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक ऐसे शख्स के ज़रिये जो तुम्हारी ही जिन्स का है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख्स तुमको डराए और ताकि तुम डर जाओ, और ताकि तुमपर रहम किया जाए? (63) सो वे लोग उनको झुठलाते ही रहे तो हमने उनको (यानी नूह को) और जो लोग उनके साथ कश्ती में थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हमने डुबो दिया, बेशक वे लोग अन्धे हो रहे थे। (64) ♦

और हमने आद कौम की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा,¹ उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, सो क्या तुम नहीं डरते? (65) उनकी कौम में जो आबरूदार काफ़िर थे उन्होंने कहा कि हम तुमको कम-अक्ली में देखते हैं, और हम बेशक तुमको झूठे लोगों में से समझते हैं।² (66) उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! मुझमें ज़रा भी कम-अक्ली नहीं, लेकिन मैं परवर्दिगारे-आलम का भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ। (67) तुमको अपने परवर्दिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैर-ख़्वाह हूँ। (68) और क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक शख्स की मारिफ़त जो तुम्हारी जिन्स का (आदमी) है कोई नसीहत की बात आ गई, ताकि वह शख्स तुमको डराए? और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआला ने तुमको नूह की कौम के बाद आबाद किया और डील-डोल में तुमको फैलाव (भी) ज़्यादा दिया। सो खुदा तआला की (इन) नेमतों को याद करो³ ताकि तुमको कामयाबी हो। (69) वे कहने लगे कि क्या आप हमारे पास इस वास्ते आए हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत किया करें और जिनको हमारे बाप-दादा पूजते थे हम उनको छोड़ दें? और हमको जिस अज़ाब की धमकी देते हो उसको हमारे पास मँगवा दो अगर तुम सच्चे हो। (70) उन्होंने फ़रमाया कि वस अब तुमपर खुदा की तरफ़ से अज़ाब और ग़ज़ब आया ही चाहता है, क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने (आप ही) ठहरा लिया है। उसकी (यानी उनके माबूद होने की) खुदा तआला ने कोई (नक़ली या अक्ली) दलील नहीं भेजी, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ। (71) गरज़ हमने उनको और उनके साथियों को अपनी रहमत से बचा लिया,

1. मशहूर अहले नसब के नज़दीक यही है कि हूद अलैहिस्सलाम आद कौम के नसबी भाई और खुद कौमे आद से हैं। और कुछ लोगों का ख़्याल है कि वे दूसरी कौम के हैं, और “उनके भाई” के मायने “उनके साथी” लेते हैं, अल्लाह ही को ख़ूब मालूम है। और आद असल में एक शख्स का नाम है, फिर उसकी औलाद को भी आद कहने लगे, और ये लोग बड़े लम्बे-तड़ने और मज़बूत जिस्म के मालिक होते थे।

“ज़ा-दकुम् फ़िल् ख़ल्कि वस्त-तन्” के यही मायने हैं।

2. यानी (अल्लाह की पनाह) न तौहीद सही मसला है और न अज़ाब का आना सही है।

3. और याद करके एहसान मानो और इताअत करो।

अतुजादिलू-ननी फी असमाइन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा नज़्जलल्लाहु बिहा मिन्
सुल्तानिन्, फन्तज़िरू इन्नी म-अकुम् मिनल् मुन्तज़िरीन (71) फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न
म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना व क़तअन्ना दाबिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू
मुअ्मिनीन (72) ❖

व इला समू-द अखाहुम् सालिहन्
❖ का-ल या कौमिअबुदुल्ला-ह मा
लकुम् मिन् इलाहिन् गैरुहू, कद्
जाअत्कुम् बथिय-नतुम् मिर्रब्बिकुम्,
हाजिही नाकतुल्लाहि लकुम् आ-यतन्
फ-ज़रुहा तअकुल् फी अर्ज़िल्लाहि व
ला तमस्सूहा बिसूइन् फ-यअखु-ज़कुम्
अज़ाबुन् अलीम (73) वज़्कुरु इज़्
ज-अ-लकुम् खु-लफा-अ मिम्-बअदि
अदिंव्-व बव्व-अकुम् फिल्अर्जि
तत्तख़िज़्-न मिन् सुहूलिहा कुसूरंव्-व
तन्हितूनल् जिबा-ल बुयूतन् फज़्कुरु
आलाअल्लाहि व ला तअ्सौ फिल्अर्जि
मुफ़्सदीन (74) कालल्-
म-लउल्लज़ीनस्तक्बरु मिन् कौमिही
लिल्लज़ीनस्-तुज़िअफ़् लिमन् आम-न

मिन्हुम् अ-तअलमू-न अन्-न सालिहम् मुर्सलुम्-मिर्बिही, कालू इन्ना बिमा उर्सि-ल बिही
मुअ्मिनून (75) कालल्लजीनस्तक्बरु इन्ना बिल्लजी आमन्तुम् बिही काफिरून (76) फ-
अ-करुन्नाक-त व अतौ अन् अमिर रब्बिहिम् व कालू या सालिहुअतिना बिमा तअिदुना इन्
कुन्-त मिनल्-मुर्सलीन (77) फ-अ-खजत्हुमुर्ज्फतु फ-अस्वहू फी दारिहिम् जासिमीन (78)
फ-तवल्ला अन्हुम् व का-ल या कौमि ल-कद् अब्लग्लुकुम् रिसाल-त रब्बी व नसह्तु लकुम्

سَمِعْتُمْوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ
فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْبَيِّنَاتِ مَا كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۚ قَدْ جَاءَ تِلْكَ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ هَذِهِ
نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
بِسَوْءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ الْيَوْمِ ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ
مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُلِهَا
قُصُورًا وَتَتَّخِذُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۚ فَادْكُرُوا الْآيَةَ اللَّهُ وَلَا تَعْمُوا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ قَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ
قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لَهُمْ أَمْرًا مِنْهُمْ أَنْ تَعْلَمُونَ
أَنْ صَالِحًا أُمْرُسَلْ ۖ مِنْ رَبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝
فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ إِنَّا بِكَ
بِمَا تَعْبُدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيمِينَ ۝ فَقَوْلَى عَنْهُمْ وَقَالَ يَقَوْمِ

और उन लोगों की जड़ (तक) काट दी¹ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, और वे ईमान लाने वाले न थे। (72) ❖

और हमने समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़-से एक साफ़ और वाज़ेह दलील आ चुकी है यह ऊँटनी है अल्लाह की, जो तुम्हारे लिए दलील है,² सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको दर्दनाक अज़ाब आ पकड़े। (73) और तुम यह हालत याद करो कि अल्लाह तआला ने तुमको आद के बाद आबाद किया और तुमको ज़मीन पर रहने के लिए ठिकाना दिया कि नर्म ज़मीन पर महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश-तराशकर उसमें घर बनाते हो, सो खुदा तआला की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ। (74) उनकी कौम में जो घमण्डी सरदार थे, उन्होंने ग़रीब लोगों से जो कि उनमें से ईमान ले आए थे पूछा कि क्या तुमको इस बात का यकीन है कि सालेह अपने रब की तरफ़ से भेजे हुए हैं? उन्होंने कहा कि बेशक हम तो उसपर पूरा यकीन रखते हैं जो उनको देकर भेजा गया है। (75) वे घमण्डी लोग कहने लगे कि तुम जिस चीज़ पर यकीन लाए हुए हो हम तो उसका इनकार करते हैं। (76) गरज़ उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला और अपने परवर्दिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि ऐ सालेह! जिसकी आप हमको धमकी देते थे उसको मंगवाइए, अगर आप पैगम्बार हैं। (77) पस आ पकड़ा उनको ज़लज़ले ने, सो अपने घरों में औंधे (के औंधे) पड़े रह गए।³ (78) उस वक़्त वह (यानी सालेह अलैहिस्सलाम) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी कौम! मैंने तो तुमको अपने परवर्दिगार का हुक्म पहुँचा दिया था, और मैंने

1. यानी बिलकुल हलाक कर दिया “क-तअना दाबि-र.....” से बाज़ ने कहा है कि उनकी नस्ल बिलकुल ख़त्म हो गई। और बाज़ ने कहा कि कुप्फ़ार बिलकुल हलाक हो गए और मोमिनीन बाकी रहे, और मुम्किन है कि कुप्फ़ार की छोटी औलाद भी रह गई हो, उनकी नस्ल आगे बढ़ी, उनको “दूसरी आद” कहते हैं और पहले वालों को “पहली आद”। और अज़ाब इस कौम का तेज़ औंधी थी जैसा कि कई जगह कुरआन में ज़िक्र है। और सूर: फुस्सिलत में जो “साअिका” (यानी कड़कदार बिजली) आया है उससे मुराद मुतलक अज़ाब है, और सूर: मोमिन में नूह अलैहिस्सलाम के किस्से के बाद जो “सुम्-म अन्शअना मिम्बअदिहिम कर्नन् आख़रीन” आया है। जिन्होंने उसकी तफ़सीर कौम आद से की है वे इसके कायल हैं कि उनपर ज़ोरदार आवाज़ या चीख़ भी आई और तेज़ औंधी भी आई, अल्लाह ही को ज़्यादा और सही इल्म है। और उसका ठिकाना दूसरी आयत में “अत्काफ़” आया है जो मुहम्मद बिन इसहाक के कौल के मुताबिक़ “अम्मान” और “हज़रे-मौत” के दरमियान एक रेगिस्तान है।

2. उन्होंने एक खास मौजिज़े की दरख्वास्त की कि उस पत्थर में से एक ऊँटनी पैदा हो तो हम ईमान लाएँ। चुनाँचे आपकी दुआ से ऐसा ही हुआ कि वह पत्थर फटा और उसके अन्दर से एक बड़ी ऊँटनी निकली।

3. दूसरी आयत में ‘सख़्त आवाज़ या चिन्चाड़’ यानी फ़रिश्ते के नारे से हलाक होना आया है। बाज़ ने कहा कि ऊपर से चीख़ और चिन्चाड़ और नीचे से ज़लज़ला आया था। और बाज़ ने कहा कि ज़लज़ले से मुराद दिल की वह हरकत है जो सख़्त आवाज़ या चीख़ के ख़ौफ़ से पैदा हुई थी। और जिसने ऊँटनी को क़त्ल किया उसका नाम क़िदार आया है। और दूसरी आयत में उनके रहने का मक़ाम हिज़्र आया है जो कि “हिजाज़” और “शाम” के दरमियान एक मक़ाम था। और आयत के ज़ाहिर से मालूम होता है कि सालेह अलैहिस्सलाम यहाँ से कौम के हलाक होने के बाद तशरीफ़ ले गए। फिर कुछ ने मुल्क शाम की तरफ़ जाना और कुछ ने मक्का को जाना नक़ल किया है।

व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन (79) व लूतन् इज़् का-ल लिक्कौमिही अ-तअतूनल्-फ़ाहि-श-त मा स-ब-ककुम् बिहा मिन् अ-हदिम् मिनल्-आलमीन (80) इन्नकुम् ल-तअतूनर्रिजा-ल शह्व-तम् मिन् दूनिन्निसा-इ, बल् अन्तुम् कौमुम्-मुस्स्रिफ़ून् (81) व मा का-न जवा-ब कौमिही इल्ला अन् कालू अख़िरजूहुम् मिन् करयतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय-ततह्हरून (82) फ-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लमूर-अ-तहू कानत् मिनल्-गाबिरीन (83) व अम्तरना अलैहिम् म-तरन्, फन्जूर कै-फ़ का-न आकि-बतुल्-मुज़्ज़रीन (84) ❖

व इला मद्य-न अखाहुम् शुअैबन्, का-ल या कौमिअबुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् गैरुहू, कद् जाअत्कुम् बय्यि-नतुम् मिर्रिब्विकुम् फ-औफ़ुल्लै-ल वल्मीज़ा-न व ला तब्खासुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तुफ़िस्दू फिल्अर्जि बअ-द इस्लाहिहा, ज़ालिकुम् खैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (85) व ला तक्अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअिदू-न व तसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्गूनहा अि-वजन्

वज़्कुरु इज़् कुन्तुम् कलीलन् फ-कस्स-रकुम् वन्जुरु कै-फ़ का-न आकि-बतुल् मुफ़िस्दीन (86) व इन् का-न ताइ-फ़तुम् मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्लु बिही व ताइ-फ़तुल्-लम् युअ्मिनू फ़स्बिरु हत्ता यहकुमल्लाहु बैनना व हु-व खैरुल् हाकिमीन (87)

لَقَدْ أَرْسَلْنَاكُمْ رَسُولًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلَكِنَّكُمْ لَا تَحْتَسِبُونَ
الْمُحْصِينَ ۚ وَلَوْ أَنَّ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ
بَهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ ۚ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً
مِّن دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۚ وَأَمَّا كَانَ جَوَابُ
قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُونَ ۚ فَانْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَايِينَ
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ
وَالَّذِينَ مَدَّيْنِ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَبْقُورُوا عَبْدًا وَاللَّهُ مَا لَكُمْ
مِّنَ الْوَعْدَةِ قَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْيَمِينَ ۚ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذِكْرُكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ وَلَا
تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ مَن أَمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا
كَكُتِرْكُمْ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۚ وَإِنْ كَانَ
طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا
فَاصْبِرْ ۖ وَحَتَّىٰ يُخْلِفَ اللَّهُ بُيُوتًا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۚ

مَرْكَز

तुम्हारी खैर-ख्वाही की, लेकिन तुम लोग खैर-ख्वाहों को पसन्द ही नहीं करते थे। (79) और हमने लूत को भेजा जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया, क्या तुम ऐसा फुहश “यानी गंदा और बुरा” काम करते हो जिसको तुमसे पहले किसी ने दुनिया जहान वालों में से नहीं किया। (80) (यानी) तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के साथ ख्वाहिश पूरी करते हो, बल्कि तुम (इनसानियत की) हद से ही गुज़र गए हो।¹ (81) और उनकी कौम से कोई जवाब न बन पड़ा सिवाय इसके कि (आपस में) कहने लगे कि इन लोगों को तुम अपनी बस्ती में से निकाल दो, ये लोग बड़े पाक-साफ़ बनते हैं। (82) सो हमने उनको (यानी लूत अलैहिस्सलाम को) और उनके मुताल्लिकीन को बचा लिया सिवाय उनकी बीवी के,² कि वह उन्हीं लोगों में रही जो अज़ाब में रह गए थे। (83) और हमने उनके ऊपर एक नई तरह की बारिश बरसाई (जो कि पत्थरों की थी)। सो देख तो सही उन मुज्रिमों का अन्जाम कैसा हुआ? (84) ❖

और हमने मद्यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा।³ उन्होंने फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह तआला की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ़ से एक वाज़ेह और खुली दलील आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो और लोगों का इन चीज़ों में नुकसान मत किया करो, और रू-ए-ज़मीन में इसके बाद कि उसकी दुरुस्ती कर दी गई, फ़साद मत फैलाओ, यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है, अगर तुम तस्दीक़ करो। (85) और तुम सड़कों पर (इस गरज़ से) मत बैठा करो कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों को धमकियाँ दो और अल्लाह की राह से रोको, और उसमें कज़ी “यानी टेढ़ और कमी” की तलाश में लगे रहो, और उस हालत को याद करो जबकि तुम कम थे फिर अल्लाह तआला ने तुमको ज़्यादा कर दिया, और देखो कि कैसा अन्जाम हुआ फ़साद करने वालों का। (86) और अगर तुममें से बाज़े उस हुक्म पर जिसको देकर मुझे भेजा गया है, ईमान लाए हैं, और बाज़े ईमान नहीं लाए हैं तो ज़रा ठहर जाओ यहाँ तक कि हमारे दरमियान में अल्लाह तआला फैसला किए देते हैं, और वह सब फैसला करने वालों से बेहतर हैं। (87)

1. “बल अन्तुम” की तफ़सीर का हासिल यह है कि बाज़ गुनाहों में बाप-दादा की पैरवी वगैरह से धोखा हो जाता है, इसमें तो यह भी नहीं। और बाज़ आयतों में जो “तन्हलून” (यानी तुम नहीं जानते) आया है उससे यह शुब्हा न हो कि उनको उसकी बुराई मालूम न थी, क्योंकि वहाँ जहालत से मुराद यह नहीं बल्कि मुराद यह है कि तुमको इसका बुरा अन्जाम यानी अज़ाब मालूम नहीं।
2. यह बीवी काफ़िरा थी। जब लूत अलैहिस्सलाम को अज़ाब से पहले बस्ती से निकल जाने का हुक्म हुआ, कुछ ने तो कहा है कि यह बीवी साथ नहीं गई, कुछ ने कहा कि साथ चली थी फिर वापस लौटने लगी और हलाक कर दी गई। और लूत अलैहिस्सलाम फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आकर रहने लगे।
3. कुरआन में शुऐब अलैहिस्सलाम का ‘मद्यन’ और ‘ऐका’ वालों की तरफ़ नबी बनाकर भेजा जाना और मद्यन वालों पर कहीं ज़ोरदार चीख़ और कहीं ज़लज़ले का अज़ाब और ऐका वालों पर सायबान का अज़ाब होना ज़िक्र किया है। बाज़ ने तो दोनों कौमों को एक ही कहा है और बाज़ ने अलग-अलग कहा है कि एक कौम यानी मद्यन वालों के हलाक होने के बाद दूसरों की यानी ऐका वालों की तरफ़ जो कि मद्यन के करीब रहते थे और निकटता की वजह से उनमें भी कम तौलने-नापने का मर्ज़ मुशतरक था, नबी बनाकर भेजे गए, और अक्सर का कौल यही है। और अज़ाब की किस्मों में दो का या तीनों को जमा होना कुछ बर्द नही। और इन काफ़िरों के हलाक होने के बाद आप मक्का में आकर रहने लगे थे, और वहीं पर आपकी वफ़ात हुई। और मद्यन असल में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एक लड़के का नाम था, फिर उस कबीले पर जो उनकी औलाद थे या उस शहर पर जो उनकी औलाद के रहने की जगह था, इसको बोला जाने लगा।

नवाँ पारः कालल् म-लउ

सूरतुल् अअराफि (आयत 88 से 206)

कालल् म-लउल्लजीनस्तक्बरु मिन् कौमिही लनुखिरजन्न-क या-शुअैबु वल्लजी-न आमनु
म-अ-क मिन् कर्यतिना औ ल-तअदुन्-न फी मिल्लतिना, का-ल अ-व लौ कुन्ना कारिहीन

(88) कदिफ़तरैना अलल्लाहि कज़िबन्

इन् अुद्ना फी मिल्लतिकुम् बअ-द इज़्

नज्जानल्लाहु मिन्हा, व मा यकूनु लना

अन्-नअ-द फीहा इल्ला अय्यशा-

अल्लाहु रब्बुना, वसि-अ रब्बुना कुल्-ल

शैइन् अिल्मन्, अलल्लाहि तवक्कल्ला,

रब्बनफ़तह् बैनना व बै-न कौमिना

बिल्-हक्कि व अन्-त खैरुल्-फ़ातिहीन

(89) व कालल् म-लउल्लजी-न

क-फ़रु मिन् कौमिही ल-इनिन्नबअ्तुम्

शुअैबन् इन्नकुम् इज़ल्-लखासिरुन

(90) फ-अ-खज़त्हुमुर्जफ़तु फअस्बहू

फी दारिहिम् जासिमीन (91)

अल्लजी-न कज़्ज़बू शुअैबन् कअल्लम्

यग्नौ फीहा, अल्लजी-न कज़्ज़बू शुअैबन्

कानू हुमुल् खासिरीन (92) फ-तवल्ला

अन्हुम् व का-ल या कौमि ल-कद् अब्लातुकुम् रिसालाति रब्बी व नसस्तु लकुम् फकै-फ

आसा अला कौमिन् काफिरीन (93) ❖

व मा अरसल्ला फी कर्यतिम् मिन् नबियिन् इल्ला अख़ज्जा अह्लहा बिल्बअसा-इ

वज़्ज़र्रा-इ लअल्लहुम् यज़्ज़रअून (94) सुम्-म बद्दल्ला मकानस्सयि-अतिल् ह-स-न-त

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَشْعَبُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَنَعُودَنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ
أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ قَدْ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي
مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ مَجَعْنَا اللَّهُ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ
فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا
عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا إِنَّهُ بِبَيْنِنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا لَاحِقٌ وَ
أَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنْ
اشْعَبْتُمْ شَعْبًا إِنْ كُنْتُمْ إِذْ الْخَيْرُونَ فَأَخَذْتُمْهُمُ الرِّجْفَةُ
فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثُثِينَ الَّذِينَ كَذَّبُوا شَعْبًا كَانُوا
لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا الَّذِينَ كَذَّبُوا شَعْبًا كَانُوا هُمُ الْخَيْرِينَ
فَقَتَلُوا عَنْهُمْ وَقَالَ يَقَوْمُ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولَ رَبِّي وَصَحَّتْ
لَكُمْ قَافِيَةُ السُّي عَلَى قَوْمٍ كَافِرِينَ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ
مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالنَّاسِ وَالضَّرَاءِ لَعَلَّهُمْ
يَحْذَرُونَ ثُمَّ بَدَلْنَا مَكَانَ الشَّيْءِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوْا وَقَالُوا
قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَاءُ وَالسَّرَاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَى اسْتَوَوْا لَفَتَّنَاهُمْ عَلَيْهِمْ

नवाँ पार: काल्लू म-लउ

सूर: आराफ (आयत 88 से 206)

उनकी कौम के घमण्डी सरदारों ने कहा कि ऐ शुऐब! हम आपको और आपके साथ जो ईमान वाले हैं उनको अपनी बस्ती से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में फिर आ जाओ,¹ (शुऐब अलैहिस्सलाम ने) जवाब दिया कि क्या (हम तुम्हारे मज़हब में आ जाएंगे) अगरचे हम उसको (समझ की दलील से) ना-पसन्द और मक्रूह ही समझते हैं? (88) हम तो अल्लाह पर बड़ी झूठी तोहमत लगाने वाले हो जाँएँ अगर (खुदा न करे) हम तुम्हारे मज़हब में आ जाँएँ, (खास कर) इसके बाद कि अल्लाह तआला ने हमको उससे नजात दी हो, और हमसे मुम्किन नहीं कि उसमें (यानी तुम्हारे मज़हब में) फिर आ जाँएँ, लेकिन हाँ यह कि अल्लाह ही ने जो कि हमारा मालिक है हमारे मुकद्दर (में) किया हो, हमारे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। हम अल्लाह तआला ही पर भरोसा रखते हैं,³ ऐ हमारे परवर्दिगार! हमारे और हमारी (इस) कौम के बीच हक के मुवाफिक़ फैसला कर दीजिए, और आप सबसे अच्छा फैसला करने वाले हैं। (89) और उनकी कौम के (उन्ही ज़िक्र किए गए) काफ़िर सरदारों ने कहा कि अगर तुम शुऐब की राह पर चलने लगोगे तो बेशक बड़ा नुक़सान उठाओगे। (90) पस उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा, सो अपने घर में (औंधे के औंधे) पड़े रह गए। (91) जिन्होंने शुऐब को झुटलाया था (उनकी यह हालत हो गई कि) जैसे उन घरों में कभी बसे ही न थे। जिन्होंने शुऐब को झुटलाया था वही घाटे में पड़ गए। (92) उस वक़्त वह (यानी शुऐब अलैहिस्सलाम) उनसे मुँह मोड़कर चले और फ़रमाने लगे कि ऐ मेरी कौम! मैंने तुमको अपने परवर्दिगार के अहक़ाम पहुँचा दिए थे, और मैंने तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की, फिर मैं उन काफ़िर लोगों पर क्यों रंज करूँ? (93) ♦

और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा मगर यह कि वहाँ के रहने वालों को (झुटलाने पर) हमने मोहताजी और बीमारी में पकड़ा ताकि वे ढीले पड़ जाँएँ। (94) फिर हमने उस बदहाली की जगह खुशहाली बदल दी, यहाँ तक कि उनको ख़ूब तरक्की हुई और (उस वक़्त अपनी उल्टी समझ की वजह से) कहने लगे कि हमारे बाप-दादा को भी तंगी और राहत पेश आई थी, तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया और उनको ख़बर भी न थी। (95) और अगर उन बस्तियों के रहने वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी “यानी हराम

1. यह बात मोमिनों के लिए इसलिए कही कि वे लोग ईमान से पहले उसी कुफ़्र के तरीक़े पर थे। लेकिन शुऐब अलैहिस्सलाम के हक़ में बावजूद इसके कि नबियों से कभी कुफ़्र सादिर नहीं होता इसलिए कही कि नबी बनाए जाने से पहले उनके चुप रहने से वे यही समझते थे कि उनका एतिकाद भी हम ही जैसा होगा।

2. यानी जब उसके बातिल होने पर दलील कायम है तो हम उसको कैसे इख़्तियार कर लें।

3. इससे यह शुब्हा न किया जाए कि उनको अपने ख़ैर पर ख़ात्मे का यकीन न था, अम्बिया को यह यकीन दिया जाता है। मक़सूद आजिज़ी और अपने मालिक को अपने तमाम मामलात सौंपने का इज़हार करना है जो कि नुबुव्वत के लवाज़िमात में से है।

4. ऊपर जिन कौमों का किस्सा ज़िक्र हुआ है चूँकि और कौमों के भी ऐसे किस्से पेश आए हैं, आगे आम उनवान से मुख़्तसर तौर पर उन सबकी जुर्म की हालत और जुर्म पर भी शुरू में मोहलत मिलने की और फिर भी न समझने पर सज़ा जारी होने को ज़िक्र किया गया है। और किस्से को नक़ल करने के बाद आयत “अ-वलम् यहिद लहुम्.....” से इसके नक़ल करने की गरज़ पर जो कि इससे इबरत और सबक़ हासिल करना है, तंबीह फ़रमाई गई है।

हत्ता अफौ व कालू कद् मस्-स आबा-अनज्जर्-उ वस्सर-उ फ-अखज्जाहुम् बग्त-तंव-व
हुम् ला यश्अरुन (95) व लौ अन्-न अह्लल्कुरा आमनू वक्तकौ ल-फतह्ना अलैहिम्
ब-रकातिम् मिनस्समा-इ वल्अर्जि व लाकिन् कज्जबू फ-अखज्जाहुम् बिमा कानू यक्सिबून
(96) अ-फअमि-न अह्लल्कुरा अय्यअति-यहुम् बअसुना बयातंव-व हुम् ना-इमून (97)
अ-व अमि-न अह्लल्कुरा अय्यति-यहुम् बअसुना जुहव्वहुम् यल्अबून (98) अ-फअमिन्
मकरल्लाहि फला यअमनु मकरल्लाहि
इल्लल् कौमुल्-खासिरून (99) ♦

अ-व लम् यहिद लिल्लजी-न
यरिसूनल्-अर्-ज मिम्-बअदि अह्लिहा
अल्लौ नशा-उ असब्नाहुम् बिजुनूबिहिम्
व नत्वअ अला कुलूबिहिम् फहुम् ला
यस्मअून (100) तिल्कल्कुरा नकुस्सु
अलै-क मिन् अम्बा-इहा व ल-कद्
जाअहुम् रुसुलुहुम् बिब्बयिनाति फमा
कानू लियुअमिन् बिमा कज्जबू मिन्
कब्लु, कजालि-क यत्वअल्लाहु अला
कुलूबिल् काफिरीन (101) व मा
वजद्ना लिअक्सरिहिम् मिन् अहदिन् व
इव-वजद्ना अक्स-रहुम् लफासिकीन
(102) सुम्-म बअस्ना मिम्-बअदिहिम्
मूसा बिआयातिना इला फिर्औ-न व
म-लइही फ-ज-लमू बिहा फन्जुर कै-फ

का-न आकि-बतुल् मुफ्सिदीन (103) व का-ल मूसा या फिर्औनु इन्नी रसूलुम् मिर्बिब्ल-
आलमीन (104) हकीकुन् अला अल्ला अकू-ल अलल्लाहि इल्लल्हक्-क, कद् जिअतुकुम्
बिबयि-नतिम् मिर्बिबिकुम् फ-अर्सिल् मअि-य बनी इस्राईल (105) का-ल इन् कुन्-त

قال الله
١٢٨
الاعراب
بَرَكِي مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ
نَائِمُونَ ۝ أَوْ آمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ
يُلْعَبُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ
الْخَاسِرُونَ ۝ أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ
أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَنَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ تِلْكَ الْقُرَى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ
وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۝ كَذَّبُوا
مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۝ وَمَا وَجَدْنَا
لَا كَثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۝ ثُمَّ
بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا
بِهَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى لِفِرْعَوْنَ
إِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ حَقِيقٌ عَلَى أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى
اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ ۝ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ
بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ قَالَ إِنْ كُنْتَ جئتَ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُبِينٌ ۝

مَذَك

कामों से बचते और एहतियात" करते तो हम उनपर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते,¹ लेकिन उन्होंने तो (पैगम्बरों को) झुटलाया, तो हमने (भी) उनके (बुरे) आमाल की वजह से उनको पकड़ लिया। (96) क्या फिर भी उन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गए हैं कि उनपर (भी) हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े, जिस वक़्त वे (पड़े) सोते हों। (97) और क्या इन (मौजूदा) बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गए हैं कि उनपर हमारा अज़ाब दिन-दोपहरी आ पड़े, जिस वक़्त कि वे अपने फुज़ूल किस्सों में मशगूल हों? (98) हाँ तो क्या अल्लाह की इस (अचानक) पकड़ से बेफ़िक्र हो गए, सो (समझ लो कि) खुदा तआला की पकड़ से सिवाय उनके जिनकी शामत ही आ गई हो और कोई बेफ़िक्र नहीं होता? (99) ♦

और इन (गुज़रे हुए) ज़मीन पर रहने वालों के बाद जो लोग (अब) ज़मीन पर उनकी जगह रहते हैं, क्या (इन ज़िक्र हुए वाकिआत ने) उनको यह बात (अभी) नहीं बतलाई कि अगर हम चाहते तो उनको उनके जुर्मों के सबब हलाक कर डालते, और हम उनके दिलों पर बन्द लगाए हुए हैं, इससे वे सुनते नहीं! (100) उन (ज़िक्र हुई) बस्तियों के कुछ-कुछ किस्से हम आपसे बयान कर रहे हैं, और उन सबके पास उनके पैगम्बर मोजिज़ात लेकर आए थे, फिर जिस चीज़ को उन्होंने पहली (ही मर्तबा में एक बार) झूठा कह दिया, यह बात न हुई कि फिर उसको मान लेते, अल्लाह तआला इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर बन्द लगा देते हैं। (101) और ज़्यादातर लोगों में हमने अहद को पूरा करना न देखा, और हमने अक्सर लोगों को बेहुकम ही पाया। (102) फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी दलीलें⁵ देकर फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, सो उन लोगों ने उनका हक़ बिलकुल अदा न किया, सो देखिए उन फसादियों और बिगाड़ करने वालों का क्या अन्जाम हुआ?⁶ (103) और मूसा ने फ़रमाया कि ऐ फिरऔन! मैं रब्बुल्-अलमीन की तरफ़ से पैगम्बर हूँ। (104) मेरे लिए (यही) मुनासिब है कि सिवाय सच के खुदा की तरफ़ कोई बात मन्सूब न करूँ, मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक बड़ी दलील भी लेकर आया हूँ, सो तू बनी इसराईल को मेरे साथ भेज दे। (105) (फिरऔन ने कहा) अगर आप कोई मोजिज़ा लेकर आए हैं तो उसको पेश कीजिए, अगर आप सच्चे हैं। (106) पस आपने (फ़ौरन) अपना असा "यानी लाठी" डाल दिया, सो वह देखते ही देखते साफ़ एक अज्दहा (बन गया)! (107) और अपना हाथ बाहर निकाल लिया, सो वह एकदम सब देखने वालों

1. यानी आसमान से बारिश और ज़मीन से पैदावार उनको बरकत के साथ अता फरमाते। और अगरचे इस हलाकत से पहले उनको खुशहाली एक हिकमत के लिए दी, लेकिन उस खुशहाली में इसलिए बरकत न थी कि आखिर में वह वबाले जान हो गई, उन नेमतों के उलट जो ईमान और इताअत के साथ मिलती हैं कि उनमें यह ख़ैर व बरकत होती है कि वे वबाल कभी नहीं होतीं, न दुनिया में न आखिरत में। हासिल यह है कि अगर वे ईमान व तक्वा इख्तियार करते तो उनको भी ये बरकतें देते।

2. मुराद इससे दुनियावी कारोबार है।

3. इस आयत से यह बात निकाली गई है कि अल्लाह के अज़ाब से बेख़ौफ़ होना कुफ़्र है, क्योंकि कुरआनी मुहावरों में अक्सर "खासिर" (यानी घाटा उठाने वाले) से मुराद काफ़िर होता है।

4. इस बन्द लगाने का सबब उन्हीं का शुरू में कुफ़्र करना है, अल्लाह तआला के कौल "त-बअल्लाहु अलैहा बिकुफ़िरहिम्" के सबब।

5. यानी मोजिज़े।

6. यह तो तमाम किस्से का मुक़्तसर बयान था, आगे तफ़सील है।

7. 'मुबीन' यानी साफ़ से मालूम होता है कि हकीकत बदल जाती थी, ख़्याली किस्सा न था।

जिअ-त बिआयतिन् फअति बिहा इन् कुन्-त मिनस्सादिकीन (106) फअल्का असाहु
फ-इजा हि-य सुअबानुम् मुबीन (107) व न-ज-अ य-दहू फ-इजा हि-य बैजा-उ
लिन्नाजिरीन (108) ❖

कालल्म-लउ मिन् कौमि फिरऔ-न इन्-न हाजा लसाहिरुन् अलीम (109) युरीदु

अय्युखरि-जकुम् मिन् अर्जिकुम् फ-माजा
तअमुखन (110) कालू अर्जिह व
अखाहु व अरसिल् फिल्माइनि हाशिरीन
(111) यअतू-क बिकुल्लि साहिरिन्
अलीम (112) व जाअस्स-ह-रतु
फिरऔ-न कालू इन्-न लना लअजरन्
इन् कुन्ना नहनुल् गालिबीन (113)
का-ल न-अम् व इन्नकुम् लमिन्ल्
मुकरबीन (114) कालू या मूसा इम्मा
अन् तुल्कि-य व इम्मा अन्नकू-न
नहनुल्-मुल्कीन (115) का-ल अल्कू
फ-लम्मा अल्कौ स-हरु अअयुनन्नासि
वस्तरहबूहुम् व जाऊ बिसिटिरिन् अजीम
(116) व औहैना इला मूसा अन्
अल्कि असा-क फ-इजा हि-य तल्कफु
मा यअफिकून (117) फ-व-कअल्-
हक्कु व ब-त-ल मा कानू यअमलून

وَنَزَعْنَاهُ مِنْهَا إِذْ هِيَ بُيُوتُ لِلنَّظَرِ ۖ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ
فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ عَلِيمٌ ۖ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ
أَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۖ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي
الْبَدَايِنِ حُشِرِينَ ۖ يَا تَوَكُّ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۖ وَجَاءَ السَّحَرَةُ
فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَكْبَرَ إِنْ تَوَلَّيْنَا عَنْ الْغُلَبِ ۖ قَالَ نَعَمْ
وَأَنْتُمْ لَمِنَ الْمَقْرُوبِينَ ۖ قَالُوا يَمُوسَى إِنَّا أَنْ تُلْقَى وَإِنَّا
أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلُوقِينَ ۖ قَالَ الْقَوَا فَمَا لِكُمُ اسْعَوْا أَعْيُنَ
النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَى
مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۖ فَوَكَهَهُ
الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ فَغُلِبُوا هُنَاكَ وَانْقَلَبُوا
ضَعِيفِينَ ۖ وَأُوتِيَ السَّحَرَةُ سِجْدِينَ ۖ قَالُوا امْكُتِبْ عَلَيْنَا
رَبِّ مُوسَى وَهَرُونَ ۖ قَالَ فِرْعَوْنُ امْنَتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ
أَذِّنَ لَكُمْ إِنَّ هَذَا الْبَكْرُ مَكْرُتُهُ ۖ وَفِي الْمَدِينَةِ لَبِئْسَ أَجْوَافًا
هَٰؤُلَاءِ قَسُوفٌ تَغْلِبُونَ ۖ لَا قِطْعَانَ أَيُّدِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ
مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ أَصْلَبْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ قَالُوا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا
مُنْقَلِبُونَ ۖ وَمَا نَعْمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَنَا ۖ

مَنْ

(118) फगुलिबू हुनालि-क वन्क-लबू सागिरीन (119) व उल्कियस्स-ह-रतु साजिदीन
(120) कालू आमन्ना बिरब्बिल्-आलमीन (121) रब्बि मूसा व हारून (122) का-ल
फिरऔनु आमन्तुम् बिही कब्-ल अन् आज-न लकुम् इन्-न हाजा लमकरुम्-मकरतुमूहु
फिल्मदीनति लितुखिरजू मिन्हा अह्लहा फसौ-फ तअलमून (123) ल-उकत्तिअन्-न ऐदियकुम्
व अरजु-लकुम् मिन् खिलाफिन् सुम्-म ल-उसल्लिबन्नकुम् अज्मअीन (124) कालू इन्ना

के सामने बहुत चमकता हुआ (हो गया)¹ (108) ♦

फिरऔन की कौम में जो सरदार “यानी बड़े” लोग थे, उन्होंने कहा कि वाकई यह शख्स बड़ा माहिर जादूगर है। (109) (ज़रूर) यह चाहता है कि तुमको तुम्हारे (इस) मुल्क से बाहर कर दे, सो तुम लोग क्या मशिवरा देते हो। (110) उन्होंने कहा कि आप इनको और इनके भाई को थोड़ी मोहलत दीजिए और शहरों में चपरासियों को भेज दीजिए (111) कि वे सब माहिर जादूगरों को आपके पास लाकर हाज़िर कर दें। (112) (चुनाँचे ऐसा ही किया गया) और वे जादूगर फिरऔन के पास हाज़िर हुए! कहने लगे कि अगर हम ग़ालिब आए तो क्या हमको कोई (बड़ा) सिला मिलेगा? (113) (फिरऔन) ने कहा कि हाँ! (बड़ा इनाम मिलेगा) और (उसके अलावा यह कि) तुम क़रीबी और ख़ास लोगों में दाख़िल हो जाओगे। (114) (उन जादूगरों ने) अर्ज़ किया, ऐ मूसा! चाहे आप डालिए और या हम ही डालें। (115) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि (पहले) तुम ही डालो। जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो लोगों की नज़र-बन्दी कर दी,² और उनपर हैबत ग़ालिब कर दी और एक (तरह का) बड़ा जादू दिखलाया। (116) और हमने मूसा को (वह्न के ज़रिये) हुक्म दिया कि आप अपनी लाठी डाल दीजिए। (सो लाठी का डालना था कि) उसने अचानक (अज़्दहा बनकर) उनके सारे बने-बनाए खेल को निगलना शुरू किया। (117) पस (उस वक़्त) हक़ (का हक़) होना ज़ाहिर हो गया, और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब (आता) जाता रहा। (118) पस वे लोग उस मौक़े पर हार गए और ख़ूब ज़लील हुए। (119) और वे जो जादूगर थे सज़्दे में गिर गए। (120) (और पुकार-पुकार कर) कहने लगे कि हम ईमान लाए रब्बुल-आलमीन पर। (121) जो मूसा और हारून का भी रब है।³ (122) फिरऔन कहने लगा कि हाँ तुम उसपर (यानी मूसा पर) ईमान लाए हो इसके बग़ैर ही कि मैं तुमको इजाज़त दूँ, बेशक यह एक कार्रवाई थी जिसपर इस शहर में तुम्हारा अमल दरामद हुआ है ताकि तुम सब इस (शहर) के रहने वालों को इससे बाहर निकाल दो, सो (बेहतर है) अब तुमको हकीकत मालूम हुई जाती है। (123) मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाँव काटूँगा, फिर तुम सबको सूली पर टाँग दूँगा।⁴ (124) उन्होंने जवाब दिया कि (कुछ परवाह नहीं) हम मरकर अपने मालिक ही के पास जाएँगे।⁵ (125) और तूने हममें कौन-सा ऐब देखा सिवाय इसके कि हम अपने रब के अहक़ाम पर ईमान ले आए, जब वे (अहक़ाम) हमारे पास आए। ऐ हमारे रब! हमारे ऊपर सब्र का फैज़ान फ़रमा और हमारी जान इस्लाम की हालत पर निकालिए।⁶ (126) ♦

1. “लिन्नाज़िरीन” (यानी देखने वालों के सामने) से कोई नज़रबन्दी का शुब्हा न करे, क्योंकि यह उसकी वाकई सफ़ेदी की ताकीद है, जैसे कहा करते हैं कि लोगों ने खुली आँखों देखा।

2. जिससे वे लाठियाँ और रस्सियाँ साँप की शक्ल में लहराती हुई नज़र आने लगीं।

3. “जो मूसा और हारून का भी रब है” इसलिए बढ़ाया कि फिरऔन अपने को रब्बे-आला बतलाता था। तो रब्बुल-आलमीन का मिस्दाक़ सुनने वाले उसको न समझ जाएँ, इसलिए इसको बढ़ाकर मुराद तय कर दी कि जिसको मूसा व हारून रब कहते हैं।

4. ताकि औरों को इबरत हो।

5. जहाँ हर तरह अमन व राहत है।

6. ताकि उसकी सख़्ती से परेशान होकर कोई बात ईमान के खिलाफ़ न हो जाए।

इला रब्बिना मुन्कलिबून (125) व मा तन्किमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिआयाति
रब्बिना लम्मा जाअत्ना, रब्बना अफिरग अलैना सबरंव-व तवफफना मुस्लिमीन (126) ❖

व कालल्म-लउ मिन् कौमि फिर्औ-न अ-त-ज़रु मूसा व कौमहू लियुफिसदू फिल्लअर्जि
व य-ज़-र-क व आलि-ह-त-क, का-ल सनुकत्तिलु अब्ना-अहुम् व नस्तह्यी निसा-अहुम् व
इन्ना फौकहुम् काहिरून (127) का-ल
मूसा लिक्कौमिहिस्तअीनू बिल्लाहि वस्बिरू
इन्नल्-अर्-ज़ लिल्लाहि यूरिसुहा
मय्यशा-उ मिन् अिबादिही, वल्आकि-बतु
लिल्मुत्तकीन (128) कालू ऊज़ीना मिन्
कब्लि अन् तअत्ति-यना व मिम्-बअ्दि
मा जिअत्तना, का-ल असा रब्बुकुम्
अय्युहिल-क अदुव्वकुम् व यस्तखिल-
-फकुम् फिल्लअर्जि फ-यन्ज़ु-र कै-फ
तअ्मलून (129) ❖

व ल-कद् अखज्जा आ-ल फिर्औ-न
बिस्सिनी-न व नक्सिम् मिनस्स-मराति
लअल्लहुम् यज़्ज़क्करून (130) फ-इज़ा
जाअत्हुमुल् ह-स-नतु कालू लना हाज़िही
व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुंय्यत्तय्यरू
बिमूसा व मम्-म-अहू, अला इन्नमा
ताइरुहुम् अिन्दल्लाहि व लाकिन्-न
अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (131) व कालू मह्मा तअत्तिना बिही मिन् आयतिल्-लितस्ह-रना
बिहा फमा नहनु ल-क बिमुअ्मिनीन (132) फ-अर्सल्ना अलैहिमुत्तूफा-न वल्जरा-द
वल्कुम्म-ल वज़्ज़फादि-अ वद्-म आयातिम् मुफस्सलातिन्, फस्तक्बरू व कानू कौमम्
मुज्जिमीन (133) व लम्मा व-क-अ अलैहिमुर्जिज़ु कालू या मूसद्अु लना रब्ब-क बिमा

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقَّنَا مُسْلِمِينَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَدْرُمُوسَى وَقَوْمَهُ لِيَفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَ
يَذَرُوكَ وَالْهَيْكَلُ قَالَ سَتَقْبَلُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَتَسْتَعْتَبُونَ نِسَاءَهُمْ
وَإِنَّا قَوْمُهُمْ قَاهِرُونَ ۝ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَ
اصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عَبْدِهِ ۝ وَ
الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ قَالُوا أَوْزَيْنَا مِنْ قَبْلُ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ
بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَلَىٰ رُبِّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوُّكُمْ
وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ
أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصِ مِنَ الثَّمَرِ لَعَلَّهُمْ
يَذَكَّرُونَ ۝ وَقَدْ أَجَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَئِنْ هَذِهِ إِلَّا
تُصْبِحُهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَى وَمَنْ مَعَهُ إِلَّا إِنَّمَا يَطَّيَّرُ
عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا
بِهِ مِنْ آيَةٍ لَنَسْتَعْرِزَ بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِ
وَالدَّمَائِ مِفْصَلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا فَجُورِينَ ۝
وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا لَئِنْ يَأْتِيَنَا مِنْ رَبِّكَ بِمَا

और फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा कि क्या आप मूसा और उनकी कौम को यूँ ही रहने देंगे कि वे मुल्क में फ़साद करते फिरें,¹ और वे आपको और आपके माबूदों को छोड़े रहें? (फिरऔन ने) कहा कि हम अभी उन लोगों के बेटों को क़त्ल करना शुरू कर दें और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने दें, और हमको उनपर हर तरह का ज़ोर है। (127) मूसा ने अपनी कौम से फ़रमाया कि खुदा तआला का सहारा रखो और मुस्तक़िल “यानी जमे” रहो, (घबराओ मत) यह ज़मीन अल्लाह तआला की है, अपने बन्दों में से जिसको चाहें इसका मालिक (व हाकिम) बना दें, और अख़ीर कामयाबी उन्हीं (लोगों) की होती है जो खुदा तआला से डरते हैं।² (128) (कौम के लोग) कहने लगे कि हम तो (हमेशा) मुसीबत ही में रहे, आपके तशरीफ़ लाने से पहले भी और आपके तशरीफ़ लाने के बाद भी। (मूसा ने) फ़रमाया कि बहुत जल्द अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देंगे, और उनकी जगह तुमको इस ज़मीन का मालिक बना देंगे, फिर तुम्हारे अमल का तरीका देखेंगे।³ (129) ❖

और हमने फिरऔन वालों को कहत-साली (अकाल) में मुब्तला किया, और फलों की कम पैदावारी में ताकि वे (हक़ वात को) समझ जाएँ।⁴ (130) सो जब उनपर खुशहाली आ जाती तो कहते कि यह तो हमारे लिए होना ही चाहिए,⁵ और अगर उनको कोई बदहाली पेश आती तो मूसा और उनके साथियों की नहूसत बतलाते। याद रखो कि उनकी नहूसत अल्लाह तआला के इल्म में है,⁶ लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते थे। (131) और (यूँ) कहते थे (चाहे) कैसी ही अजीब बात हमारे सामने लाओ, कि उसके ज़रिये से हमपर जादू चलाओ, (जब भी) हम तुम्हारी बात हरगिज़ न मानेंगे। (132) फिर हमने उनपर तूफ़ान भेजा⁷ और टिट्टियाँ और घुन का कीड़ा और मेंढ़क और खून, कि ये सब खुले-खुले मोजिज़े थे,⁸ सो वे तकब्बुर करते रहे, और वे लोग कुछ थे ही जराइम-पेशा।⁹ (133) और जब उनपर कोई अज़ाब आता तो (यूँ) कहते कि ऐ मूसा! हमारे लिए अपने रब से दुआ कर दीजिए, जिसका उसने आपसे अहद कर रखा है। अगर आप इस अज़ाब को हमसे हटा दें तो हम ज़रूर आपके कहने से ईमान ले आएँगे और हम बनी इसराईल को भी (रिहा करके) आपके साथ कर देंगे। (134) फिर जब उनसे उस अज़ाब को एक खास वक़्त तक कि उस तक

1. फ़साद यह कि अपना मजमा बढ़ाएँ जिससे अन्जामकार बगावत का अन्देशा है।

2. यानी उनके माबूद होने के इनकारी रहें।

3. सो तुम ईमान व तक्वे पर कायम रहो, इन्शा-अल्लाह यह हुकूमत तुम ही को मिल जाएगी, थोड़े दिनों इन्तिज़ार की ज़रूरत है।

4. कि शुक, क़द्र और इताअत करते हो या बेक़द्री और ग़फ़लत व नाफ़रमानी। इसमें नेक कामों की तरफ़ शौक़ दिलाना और नाफ़रमानी से डराना और ख़ौफ़ दिलाना है।

5. और समझकर कबूल कर लें।

6. यानी हम अच्छी किस्मत वाले हैं। यह हमारी खुशकिस्मती का असर है। यह न था कि उसको खुदा की नेमत समझकर शुक बजा लाते और इताअत इख़्तियार करते।

7. यानी उनके कुफ़्र के आमाल तो अल्लाह को मालूम हैं। यह नहूसत उन्हीं आमाल की सज़ा है।

8. बारिश की ज़्यादती।

9. रुक़ूअ के शुरू में ज़िक्र हुए उमूर 9. कहतसाली यानी अकाल २. फलों कि कमी और ये पाँच चीज़ें और लाठी और सफ़ेद चमकता हुआ हाथ मिलकर नौ निशानियाँ कहलाती हैं।

10. क्योंकि इतनी सख़्ती पर भी बाज़ न आते थे।

अहि-द अिन्द-क ल-इन् कशफ्-त अन्नर्रिज्-ज लनुअमिनन्-न ल-क व लनुसिलन्-न
म-अ-क बनी इस्राईल (134) फ-लम्मा कशफना अन्हुमुरिज्-ज इला अ-जलिन् हुम्
बालिगूहु इजा हुम् यन्कुसून (135) फन्तकम्ना मिन्हुम् फ-अगरक्नाहुम् फिल्यम्मि बिअन्नहुम्
कज्जबू बिआयातिना व कानू अन्हा गाफिलीन (136) व औरस्नल् कौमल्लजी-न कानू

युस्तज्-अफू-न मशारिकल्-अर्जि व
मगारि-बहल्लती बारक्ना फीहा, व
तम्मत् कलि-मतु रब्बिकल्हुस्ना अला
बनी इस्राई-ल बिमा स-बरु, व दम्मरूना
मा का-न यस्नअु फिर्रौनु व कौमुहू व
मा कानू यअरिशून ♦ (137) व
जावज्ना बि-बनी इस्राईलल्-बह-र
फ-अतौ अला कौमिय्यअकुफू-न अला
अस्नामिल्लहुम् कालू या मूसज्अल्-लना
इलाहन् कमा लहुम् आलि-हतुन्, का-ल
इन्नकुम् कौमुन् तज्हलून (138) इन्-न
हाउला-इ मुतब्बरुम् मा हुम् फीहि व
बातिलुम् मा कानू यअमलून (139)

का-ल अगैरल्लाहि अब्गीकुम् इलाहव्-व
हु-व फज्ज-लकुम् अलल्-अलमीन
(140) व इज् अन्जैनाकुम् मिन् आलि

फिर्रौ-न यसूमूनकुम् सूअल्-अजाबि युक्तिलू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्,
व फी जालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अज़ीम (141) ♦

व वाअद्ना मूसा सलासी-न लै-लतव्-व अत्मम्नाहा बिअशिरन् फ-तम्-म मीकातु
रब्बिही अरबअी-न लै-लतन् व का-ल मूसा लिअखीहि हारूनख्लुफ्नी फी कौमी व अस्लिह्
व ला तत्तबिअ् सबीलल्-मुफ़िसदीन (142) व लम्मा जा-अ मूसा लिमीकातिना व कल्ल-महू

عَهْدَ عِنْدَكَ لَكِنْ كَشَفْتَ عَنْكَ الرَّجْزَ لَتُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ
مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَى
أَجَلٍ هُمْ بِالْعُرْوَةِ إِذْ أَهُمْ يَتَكَلَّمُونَ ۖ فَاتَّقِنَا مِنْهُمْ فَاغْرَقْنَاهُمْ
فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ۝
وَأَوْثَقْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضَعُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ
وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَى
عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ ۚ بِمَا صَبَرُوا وَادْرَأْنَا مِمَّا كَانُوا يَصْنَعُونَ
فِرْعَوْنَ وَقَوْمَهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۖ وَجَازَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ
الْبَصْرَ فَاتَّوَعَلَى قَوْمٌ يَبْكُونَ عَلَى أَصْنَامِهِمْ ۚ لَعْنَهُمْ قَالُوا
يُمُوسَى اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ
تَجْهَلُونَ ۖ إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَّبِعُونَ أَهْوَاهُمْ فِيهِ ۖ وَبِطُلَّ تَاكَاثُفُ الَّذِينَ يَعْلَمُونَ ۖ
قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۖ
وَإِذْ أَتَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ
يَقْتُلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَعْيِبُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِمَّنْ
رَبُّكُمْ عَظِيمٌ ۖ وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَيْنَاهَا
بِعَشْرِ فَنَكَمَ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ

उनको पहुँचना था हम हटा देते तो वे फौरन ही अहद तोड़ने लगते। (135) फिर हमने उनसे बदला लिया, यानी उनको दरिया में डुबो दिया, इस सबब से कि वे हमारी आयतों को झुठलाते थे, और उनसे बिलकुल ही लापरवाही बरतते थे। (136) और हमने उन लोगों को जो कि बिलकुल कमज़ोर ही शुमार किए जाते थे¹ उस सरज़मीन “यानी मुल्क” के पूरब-पश्चिम का² मालिक बना दिया, जिसमें हमने बरकत रखी है।³ और आपके रब का नेक वायदा बनी इसराईल के हक में उनके सब्र की वजह से पूरा हो गया, और हमने फिरऔन को और उसकी कौम के तैयार किए और सजाए हुए कारखानों को और जो कुछ वे ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाते थे, सबको उलट-पलट कर दिया। ♦ (137) और हमने बनी इसराईल को दरिया से पार उतार दिया, पस उन लोगों का एक कौम पर गुज़र हुआ जो अपने चन्द बुतों को लगे बैठे हैं। कहने लगे कि ऐ मूसा! हमारे लिए भी एक (जिस्म वाला) माबूद ऐसा ही मुकर्रर कर दीजिए, जैसे उनके ये माबूद हैं। आपने फरमाया कि वाकई तुम लोगों में बड़ी जहालत है।⁴ (138) ये लोग जिस काम में लगे हैं यह (अल्लाह की तरफ से भी) तबाह किया जाएगा और (अपने आप में भी) उनका यह काम महज़ बेबुनियाद है। (139) फरमाया कि क्या अल्लाह तआला के सिवा और किसी को तुम्हारा माबूद तजवीज़ कर दूँ? हालाँकि उसने तुमको तमाम दुनिया-जहान वालों पर बरतरी दी है। (140) और (वह वक़्त याद करो) जब हमने तुमको फिरऔन वालों (के जुल्म व तकलीफ पहुँचाने) से बचा लिया, जो तुमको बड़ी सख़्त तकलीफें पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को (कसूरत से) क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को (अपनी बेगार और ख़िदमत के लिए) ज़िन्दा छोड़ देते थे। और इस (वाकिए) में तुम्हारे परवर्दिगार की तरफ से बड़ी भारी आजमाइश थी। (141) ♦

और हमने मूसा से तीस रात का वायदा किया, और दस रात को उन (तीस रात) का पूरा करने वाला बनाया, सो उनके परवर्दिगार का वक़्त पूरी चालीस रात हो गया। और मूसा ने अपने भाई हारून से कह दिया था कि मेरे बाद मेरी कौम का इन्तिज़ाम रखना⁵ और इस्लाह करते रहना और बद-नज़्म “यानी बिगाड़ व ख़राबी पैदा करने वाले” लोगों की राय पर अमल मत करना। (142) और जब मूसा हमारे (मुकर्ररा) वक़्त

1. यानी बनी इसराईल को।

2. यानी तमाम हदों (सीमाओं) का।

3. यानी ज़ाहिरी और बातिनी बरकत। ज़ाहिरी बरकत पैदावार ज़्यादा होने से। और बातिनी बरकत अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के वहाँ रहने और उनके दफन होने की जगह होने से।

4. उनकी इस बेहूदा दरख्वास्त की वजह अल्लामा बग़वी रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह लिखी है कि उनको तौहीद में शक न हुआ था बल्कि अपनी जहालत से यह समझे कि ग़ायब माबूद की तरफ़ मुतवज्जह होने के लिए अगर किसी सामने मौजूद को ज़रिया बनाया जाए तो यह बात दियानत के मनाफ़ी नहीं है, बल्कि इसमें अल्लाह की ताज़ीम और निकटता ज़्यादा है। और चूँकि यह ख़याल नक़ल और अक़ल के एतिबार से अपने आप में ग़लत है, इसलिए इसको जहल (मूर्खता) फरमाया गया। और अल्लाह को ज़्यादा मालूम है।

5. मूसा अलैहिस्सलाम का ‘मेरे बाद मेरी कौम का इन्तिज़ाम रखना’ फरमाना इस बिना पर है कि हज़रत हारून अलैहिस्सलाम सिर्फ़ नबी थे, हाकिम और सुल्तान न थे। इस सिफ़त में ख़लीफ़ा बनाना मकसूद है, नुबुव्वत में ख़लीफ़ा बनाना मकसूद नहीं।

रब्बुहू का-ल रब्बि अरिनी अन्जुर इलै-क, का-ल लन् तरानी व लाकिनिन्जुर इलल्-ज-बलि
फ-इनिस्त-कर्-र मकानहू फसौ-फ तरानी फ-लम्मा तजल्ला रब्बुहू लिलज-बलि ज-अ-लहू
दक्कव्-व खर्-र मूसा सअिकन् फ-लम्मा अफा-क का-ल सुब्हान-क तुब्तु इलै-क व अ-न
अव्वलुल्-मुअ्मिनीन (143) का-ल या मूसा इन्निस्तफैतु-क अलन्नासि बिरिसालाती व

बि-कलामी फखुज् मा आतैतु-क व कुम्
मिनशशाकिरीन (144) व कतब्ना लहू
फिल्-अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम्
मौअि-जतव्-व तप्सीलल्-लिकुल्लि शैइन्
फखुज्हा बिकुव्वतिव्वअ्मुर कौम-क
यअ्खुज् बिअह्सनिहा, सउरीकुम् दारल्-
फासिकीन (145) सअस्रिफ् अन्
आयातियल्लजी-न य-तकब्बरू-न
फिल्अर्जि बिगैरिल्-हक्कि, व इय्यरौ
कुल्-ल आयतिल् ला युअ्मिन् बिहा व
इय्यरौ सबीलरुश्दि ला यत्तखिज्जूहू
सबीलन् व इय्यरौ सबीलल्-गय्थि
यत्तखिज्जूहू सबीलन्, जालि-क बिअन्नहुम्
कज्जबू बिआयातिना व कानू अन्हा
गाफिलीन (146) वल्लजी-न कज्जबू
बिआयातिना व लिकाइल् आखि-रति
हबितत् अअ्मालुहुम्, हल युज्जौ-न
इल्ला मा कानू यअ्मलून (147) ♦

वत्त-ख-ज कौमु मूसा मिम्-बअ्दिही मिन् हुलियिहिम् अिज्लन् ज-सदल्लहू खुवारुन्,
अलम् यरौ अन्नहू ला युक्ल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीला ✱ इत्त-खज्जूहू व कानू
जालिमीन (148) व लम्मा सुकि-त फी ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् कद् जल्लू कालू

والسلام ١٥٢ لا اعراف

هُرُونَ اخْلَفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ
وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ ارْنِي أَنْظُرَ
إِلَيْكَ قَالَ لَنْ نَرِيَّ وَلَكِنْ انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ
مَكَانَهُ فَسَوْفَ نَرِيَّ فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا
وَكُفَّ مُوسَى صَوْتًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ
وَإِنَّا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ قَالَ يُمُوسَى إِنَّي اصْطَفَيْتَكَ عَلَى
النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَلَامِي فَخُذْ مَا آتَيْتَكَ وَكُنْ مِنَ
الشَّاكِرِينَ وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَارِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْعِظَةً
وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَلْخُذُوا
بِأَحْسَنِهَا سَأُرِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ سَأَصْرِفُ عَنْ آيَتِيَ
الَّذِينَ يَبْكَرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كُنُوزًا
أَيًّا لَا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ
سَبِيلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْعَنِيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ وَالَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَى مِنْ بَعْدِهِ مِنْ

पर आए और उनके रब ने उनसे (बहुत ही लुत्फ और इनायत की) बातें की,¹ तो अर्ज किया कि ऐ मेरे परवरिदागर! मुझको अपना दीदार दिखला दीजिए कि मैं आपको एक नज़र देख लूँ। इरशाद हुआ कि तुम मुझको (दुनिया में) हरगिज़ नहीं देख सकते, लेकिन तुम इस पहाड़ की तरफ देखते रहो, सो अगर यह अपनी जगह बरकरार रहा तो (खैर) तुम भी देख सकोगे।² पस उनके रब ने जब पहाड़ पर तजल्ली फरमाई तो (तजल्ली ने) उस (पहाड़) के परख्चे “यानी धज्जियाँ” उड़ा दिए और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े।³ फिर जब होश में आए तो अर्ज किया कि बेशक आपकी ज़ात पाकीज़ा (और बुलन्द) है, मैं आपकी जनाब में माज़िरत करता हूँ और सबसे पहले मैं उसपर यकीन करता हूँ। (143) इरशाद हुआ कि ऐ मूसा! (यही बहुत है कि) मैंने पैगम्बरी और अपनी गुफ्तगू से और लोगों पर तुमको इस्तियाज़ दिया है, तो (अब) जो कुछ मैंने तुमको अता किया है उसको लो और शुक्र करो। (144) और हमने चन्द तख़्तियों पर हर किस्म की (ज़रूरी) नसीहत और (ज़रूरी अहकाम के मुताल्लिक) हर चीज़ की तफ़सील उनको लिखकर दी, तो उनको कोशिश के साथ (खुद भी) अमल में लाओ और अपनी कौम को (भी) हुक्म करो कि उनके अच्छे-अच्छे अहकाम पर अमल करें, मैं अब बहुत जल्द तुम लोगों को उन बेहुकों का मक़ाम दिखलाता हूँ।⁴ (145) मैं ऐसे लोगों को अपने अहकाम से बरग़श्ता “यानी विमुख” ही रखूँगा जो दुनिया में तकबुर करते हैं जिसका उनको कोई हक़ हासिल नहीं,⁵ और अगर तमाम निशानियाँ देख लें तब भी उनपर ईमान न लाएँ, और अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा न बनाएँ, और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा बना लें।⁶ यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी आयतों को झूठा बतलाया और उनसे गाफ़िल रहे। (146) और ये लोग जिन्होंने हमारी आयतों को और कियामत के पेश आने को झुठलाया, उनके सब काम ग़ारत गए, उनको वही सज़ा दी जाएगी जो कुछ ये करते थे। (147) ♦

और मूसा की कौम ने उनके बाद अपने (कब्जे में मौजूद) ज़ेवरों का एक बछड़ा ठहरा लिया जो कि एक कालिब “यानी ढाँचा और साँचा” था जिसमें एक आवाज़ थी। क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे बात तक नहीं करता था, और न उनको कोई राह बतलाता था, उसको उन्होंने (माबूद) करार दिया और बड़ा बेढंगा काम किया। (148) और जब शर्मिन्दा हुए और मालूम हुआ कि वाकई वे लोग गुमराही में पड़ गए तो कहने

1. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हक़ तअ़ाला ने कलाम फरमाया, मगर यह कि उसकी हकीकत क्या थी, अल्लाह ही को मालूम है। जिन अक्ली गुमानों की शरीअत नफी न करे उन सबके कायल होने की गुन्जाइश है, लेकिन बिना दलील यकीन का न होना ज़्यादा एहतियात की राह है।
2. मूसा अलैहिस्सलाम का दीदार की दरख़्वास्त करना दुनिया में उसके अक्ली तौर पर मुम्किन होने पर, और हक़ तअ़ाला का जवाब शर्ई तौर पर उसकी मुमानअत की दलील है। और अहले सुन्नत वल् जमाअत (यानी हक़ पर कायम जमाअत) का यही मज़हब है।
3. मूसा अलैहिस्सलाम की बेहोशी उनपर तजल्ली फरमाने से न थी, क्योंकि ज़ाहिरन् ‘लिज़-बलि’ के खिलाफ़ है, बल्कि पहाड़ की यह हालत देखकर और फिर तजल्ली के मक़ाम यानी पहाड़ के साथ एक तरह से ताल्लुक और क़रीब होने से बेहोशी हुई।
4. इसमें खुशाख़बरी और वायदा है कि ‘मिस्र’ या ‘शाम’ पर जल्द ही कब्ज़ा हुआ चाहता है। मक़सूद इससे इताअत का शौक दिलाना है, कि अल्लाह के अहक़ाम की इताअत की ये वरकतें हैं।
5. क्योंकि अपने को बड़ा समझना उसका हक़ है जो हकीकत में बड़ा हो, और वह एक खुदा की ज़ात है।
6. यानी हक़ के क़वूल न करने से फिर दिल सख़्त हो जाता है और बर्ग़श्तगी (विमुखता) इस हद तक पहुँच जाती है।
7. इसका किस्सा सूर: ‘ता-हा’ में है।

ल-इल्लम् यहम्ना रब्बुना व यग्फिर् लना ल-नकूनन्-न मिनल्खासिरीन (149) व लम्मा र-ज-अ मूसा इला कौमिही गज्बा-न असिफन् का-ल बिअ-समा खलफ्तुमूनी मिम्-बअदी अ-अजिल्लुम् अम्-र रब्बिकुम् व अल्कल्-अल्वा-ह व अ-ख-ज बिरअसि अखीहि यजुरुहू इलैहि, कालब्-न उम्-म इन्नल् कौमस्तज्अफूनी व कादू यक्तुल्-ननी फला तुश्मिन् बियल्-अअदा-अ व ला तज्अल्ली मअल् कौमिज्-जालिमीन (150) का-ल रब्बिगफिर् ली व लि-अखी व अदखिल्ला फी रहमति-क व अन्-त अहमूर्-राहिमीन (151) ♦

इन्नल्लजीनत्त-खजुल्-अिज्-ल स-यनालुहुम् ग-जबुम् मिररब्बिहिम् व जिल्लतुन् फिल्-हयातिद्दुन्या, व कजालि-क नज्जिल्-मुफ्तरीन (152) वल्लजी-न अमिलुस्सय्यिआति सुम्-म ताबू मिम्-बअदिहा व आमनू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअदिहा ल-गफूररहीम (153) व लम्मा स-क-त अम्-मूसल्-ग-जबु अ-खजल्-अल्वा-ह व फी नुस्खातिहा हुदव्-व रहमतुल्-

लिल्लजी-न हुम् लिरब्बिहिम् यहबून (154) वख्ता-र मूसा कौमहू सब्अी-न रजुलल् लिमीकातिना फ-लम्मा अ-खजत्तुमूर्ज-फतु का-ल रब्बि लौ शिअ-त अह्लक्तहुम् मिन् कब्लु व इय्या-य, अतुह्लिकुना बिमा फ-अलस्सु-फहा-उ मिन्ना इन् हि-य इल्ला फिल्तु-क, तुजिल्लु बिहा मन् तशा-उ व तह्दी मन् तशा-उ, अन्-त वलिय्युना फग्फिर् लना वरहम्ना व

قَالَ الْمَلَأُ ١٥٣
حُلِيَهُمْ عَجَلًا جَسَدَ اللَّهِ خُورًا أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ
وَلَا يُهْدِيهِمْ سَبِيلًا اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ۝ وَلَبَّأَ
سُقُوطٌ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِنْ لَمْ
يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَبَّأَ رَجَعَ
مُوسَى إِلَى قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي
مِنْ بَعْدِي اتَّخَذْتُمْ أُمُورَكُمْ وَأَلْقَى الْأَكْوَامَ وَأَخَذَ
بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ قَالَ ابْنُ أُمِّ لَكٍ الْقَوْمِ اسْتَزَعَفُونِي
وَكَاذِبًا يَفْتَنُونََنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوَتِي وَأَدْخِلْنَا فِي
رَحْمَتِكَ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ
سَيَنُاسِكُهُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَكَذَلِكَ
نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۝ وَالَّذِينَ عَمِلُوا الصَّالَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ
بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَبَّأَ
سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَكْوَامَ ۝ وَفِي نَجْعِهَا
هُدًى وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۝ وَاتَّخَذَ مُوسَى
قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا أَلِيفًا قَلْبًا أَخَذَ لِنَفْسِهِ الرَّجْفَةَ قَالَ

लगे कि अगर हमारा रब हमपर रहम न करे और हमारा (यह) गुनाह माफ़ न करे तो हम बिलकुल गए गुज़रे।¹ (149) और जब मूसा अपनी कौम की तरफ़ वापस आए गुस्से और रंज में भरे हुए,² तो फ़रमाया तुमने मेरे बाद यह बड़ी नामाकूल हरकत की। क्या अपने रब का हुक्म (आने) से पहले ही तुमने जल्दबाज़ी कर ली? और (जल्दी में) तख़्तियाँ एक तरफ़ रखी³ और अपने भाई का सर पकड़कर उनको अपनी तरफ़ घसीटने लगे। (हारून ने) कहा कि ऐ मेरे माँ-जाये (भाई!) इन लोगों ने मुझको बेहकीकत समझा और करीब था कि मुझको क़त्ल कर डालें, तो तुम मुझपर (सख़्ती करके) दुश्मनों को मत हँसाओ, और मुझको इन ज़ालिमों के साथ मत शुमार करो। (150) (मूसा ने) कहा कि ऐ मेरे रब! मेरी ख़ता माफ़ फ़रमा दे और मेरे भाई की भी, और हम दोनों को अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमाइए, और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं। (151) ♦

बेशक जिन लोगों ने गौसाला-परस्ती की है, उनपर बहुत जल्द उनके रब की तरफ़ से ग़ज़ब और ज़िल्लत इस दुनियावी ज़िन्दगी में ही पड़ेगी, और हम बोहतान बाँधने वालों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (152) और जिन लोगों ने गुनाह के काम किए फिर वे उनके बाद तौबा कर लें और ईमान ले आयें तो तुम्हारा रब उस (तौबा) के बाद गुनाह का माफ़ कर देने वाला, रहमत करने वाला है। (153) और जब मूसा का गुस्सा ख़त्म हुआ तो (उन) तख़्तियों को उठा लिया⁴ और उनके मज़ामीन में उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते थे हिदायत और रहमत थी। (154) और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने सत्तर आदमी अपनी कौम में से हमारे

1. चुनौचे खास तरीके से उनको तौबा को मुकम्मल करने का हुक्म हुआ, जिसका किस्सा सूर: ब-कर: आयत 'फ़क्कतुलू अन्फु-सकुम्' में गुज़रा है।
2. क्योंकि उनको वज़ह से यह मालूम हो गया था।
3. और जल्दी में ऐसे जोर से रखी गई कि देखने वाले को अगर गौर न करे तो शुब्हा हो कि जैसे किसी ने पटख दी हों।
4. मूसा अलैहिस्सलाम का गुस्सा अल्लाह के लिए था। उसकी मिसाल 'सुक्र मिनल मुबाह' (यानी जायज़ और हलाल चीज़ से नशे या बेहोशी की कैफ़ियत) जैसी है, जिसमें आदमी मुकल्लफ़ नहीं रहता। उसपर दूसरे शख्स के गुस्से को जो नफ़स के वास्ते हो कियास नहीं कर सकते बल्कि उसकी हालत 'सुक्र मिनल हराम' (यानी किसी हराम चीज़ से नशे व ख़ुमार की कैफ़ियत) जैसी है, जिसको शरीअत में उज़्र करार नहीं दिया गया। और फिर आदतन् मुम्किन है कि ज़्यादा मशग़ूली की वज़ह से ख़याल ही न रहा हो कि मेरे हाथ में क्या है, और भाई को पकड़ने और पूछताछ करने के लिए हाथ ख़ाली करना हो, इसलिए तख़्तियों के 'इल्का-ए-अल्वाह' (यानी तख़्तियों को डाल देने) का अमल हो गया हो। और बाज़ ने लिखा है कि इल्का के मायने हैं 'जल्दी से रख देना', मजाज़न व तश्बीहन इल्का से ताबीर किया।

अन्-त खैरुल्लाफिरीन (155) वक्तुब् लना फी हाजिहिद्दुन्या ह-स-नतन्-व-व फिल्आखि-रति
इन्ना हुद्ना इलै-क, का-ल अज़ाबी उसीबु बिही मन् अशा-उ व रहमती वसिअत् कुल्-ल
शैइन्, फ-सअक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तकू-न व युअतूनज़्जका-त वल्लज़ी-न हुम् बिआयातिना
युअमिनून (156) अल्लज़ी-न यत्तबिअनरसूलन्नबिय्यल् उम्मिय्यल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन्

अिन्दहुम् फित्तौराति वल्-इन्जीलि
यअमुरुहुम् बिल्-मअरूफि व यन्हाहुम्
अनिल्-मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तयिबाति
व युहरिर्मु अलैहिमुल् खाबाइ-स व
य-ज़अु अन्हुम् इस्हुम् वल्अललललीती
कानत् अलैहिम्, फल्लज़ी-न आमनू बिही
व अज़्ज़रुहु व न-सरुहु वत्त-बअुन्-
नूरल्लज़ी उन्जि-ल म-अहू उलाइ-क
हुमुल्-मुफिलहून (157) ♦

कुल् या अय्युहन्नासु इन्नी
रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अनिल्लज़ी लहू
मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि ला इला-ह
इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु फआमिनु
बिल्लाहि व रसूलिहिन्-नबिय्यल्
उम्मिय्यल्लज़ी युअमिनु बिल्लाहि व

कलिमातिही वत्तबिअहु लअल्लकुम् तह्त्तदून (158) व मिन् कौमि मूसा उम्मतुय्यह्दू-न
बिल्हक्कि व बिही यअदिलून (159) व कत्तअनाहुमुस्नतै अशर-त अस्बातन् उ-ममन्, व
औहैना इला मूसा इजिस्तस्काहु कौमुहू अनिज़िर्ब बिअसाकल् ह-ज-र फम्ब-जसत् मिन्हुस्नता
अशर-त अैनन्, कद् अलि-म कुल्लु उनासिम् मशर-बहुम्, व जल्लल्ला अलैहिमुल् गमा-म व

رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ مِنْ قَبْلِ وَإِلَآئِي أَهْلَكْتَنَا إِنَّمَا فَعَلَ
السَّفَهَاءُ مِمَّا أَنْ هِيَ إِلَّا وَفَعَلْتَ أَنْ تَضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاءُ وَ
تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ أَنْتَ وَلِيْنَا فَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الْعَافِرِينَ ۝ وَكَتَبْنَا لَكَ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ
إِنَّا هُنَا الْآخِرَةُ قَالَ عَدَايَ أُصِيبَ بِهِ مَنْ أَشَاءُ وَرَحْمَتِي
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَا كَتَبْنَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ
النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ
وَالْإِنْجِيلِ يَا مَرْغُومًا بِالْمَعْرُوفِ وَيَتَّبِعُهُمْ فِي الْبُكُورِ
يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْفَاحِشَاتِ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
إِحْزَانَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۝ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَزَوْا
وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ فَأَمِنُوا
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ
وَاتَّبِعُوا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُنْتَهَدُونَ

مَنْ

मुकर्ररा वक्त (पर लाने) के लिए चुने,¹ सो जब उनको जलजले (वगैरह) ने आ पकड़ा तो (मूसा) अर्ज करने लगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! अगर आपको यह मन्जूर होता तो आप इससे पहले ही इनको और मुझको हलाक कर देते, कहीं आप हममें के चन्द बेवकूफों की हरकत पर सबको हलाक कर देंगे? यह सिर्फ आपकी तरफ से एक इम्तिहान है, और इन (इम्तिहानों) से जिसको आप चाहें गुमराही में डाल दें और जिसको आप चाहें हिदायत पर कायम रखें, आप ही तो हमारे खबरगीरी करने वाले हैं। हमपर मग़िरत और रहमत फरमाइए, और आप सब माफ़ी देने वालों से ज्यादा हैं। (155) और हम लोगों के नाम दुनिया में भी नेक हालत पर रहना लिख दीजिए और आखिरत में भी हम आपकी तरफ रुजू करते हैं। (अल्लाह तआला) ने फरमाया कि मैं अपना अज़ाब तो उसी पर करता हूँ जिसपर चाहता हूँ और मेरी रहमत तमाम चीज़ों को घेरे हुए है। तो वह रहमत उन लोगों के नाम तो ज़रूर ही लिखूँगा जो अल्लाह तआला से डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो कि हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।² (156) जो लोग ऐसे रसूल नबी उम्मी की इत्तिबा करते हैं जिनको वे लोग अपने पास तौरात व इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, (जिनकी सिफ़त यह भी है) कि वह उनको नेक बातों का हुक्म फरमाते हैं और बुरी बातों से रोकते हैं, और पाकीज़ा चीज़ों को उनके लिए हलाल बतलाते हैं और गन्दी चीज़ों को (बदस्तूर) उनपर हराम फरमाते हैं, और उन लोगों पर जो बोझ और तौक “यानी बेड़ियाँ” थे उनको दूर करते हैं, सो जो लोग उन (नबी मौसूफ़) पर ईमान लाते हैं और उनकी हिमायत करते हैं और उनकी मदद करते हैं, और उस नूर की इत्तिबा करते हैं जो उनके साथ भेजा गया है,³ ऐसे लोग पूरी फ़लाह पाने वाले हैं। (157) ♦

आप कह दीजिए कि ऐ (दुनिया-जहान के) लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ (पैग़म्बर) हूँ जिसकी बादशाही है तमाम आसमानों और ज़मीन में, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वही ज़िन्दगी देता है और वही मौत देता है। सो (ऐसे) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके (ऐसे) नबी उम्मी पर (भी) जो कि (खुद) अल्लाह पर और उसके अहकाम पर ईमान रखते हैं,⁴ और उन (नबी) की पैरवी करो ताकि तुम सही रास्ते पर आ जाओ। (158) और मूसा की कौम में एक जमाअत ऐसी भी है जो (दीने) हक के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं।⁵ (159) और हमने उनको बारह

1. जब गौसाला का किस्सा तमाम हुआ तो मूसा अलैहिस्सलाम ने इत्मीनान से तौरात के अहकाम सुनाए। उन लोगों की शुब्हात निकालने की आदत थी ही, चुनौचे उसमें भी शुब्हा निकाला कि हमको यह कैसे मालूम हो कि ये अल्लाह तआला के अहकाम हैं। हमसे अल्लाह तआला खुद कह दें तो यकीन किया जाए। आपने हक़ तआला से अर्ज किया। वहाँ से हुक्म हुआ कि उनमें के कुछ आदमी जिनको ये लोग मोतबर समझते हों चुन करके उनको तूर पहाड़ पर ले आओ, हम उनसे खुद कह देंगे कि ये हमारे अहकाम हैं। और उनके लाने के लिए एक वक्त तय किया गया।
2. तक्वा और ज़कात व ईमान में सीमित करना मकसूद नहीं, हर बाब का एक अमल नमूने के तौर पर ज़िक्र फरमा दिया। मतलब यह है कि अहकाम की इताअत करते हैं, फिर जिस दर्जे की इताअत होगी उसी दर्जे की रहमत होगी।
3. इससे कुरआन मुराद है।
4. यानी बावजूद इस बड़े रुतबे के उनको अल्लाह पर और सब रसूलों व किताबों पर ईमान से आर और शर्म नहीं, तो तुमको अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने से क्यों इनकार है?
5. इससे अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु वगैरह मुराद हैं। और इससे यह भी मालूम हुआ कि आपकी नुबुव्वत जैसे दलीलों की शहादत से साबित है इसी तरह अहले इल्म की शहादत से भी ताईद पाई हुई है।

अन्जल्ना अलैहिमुल् मन्-न वस्सल्वा, कुलू मिन् तय्यिबाति मा रजक्नाकुम्, व मा ज-लमूना
व लाकिन् कानू अन्फु-सहुम् यज्लिमून (160) व इज़् की-ल लहुमुस्कून हाजिहिल्कर्य-त व
कुलू मिन्हा हैसु शिअतुम् व क़ूलू हित्ततुव्-वदखुलुल्-बा-ब सुज्जदन् नगिफर् लकुम्
खतीआतिकुम्, स-नज़ीदुल्-मुहिसनीन (161) फ-बदलल्लज़ी-न ज-लमू मिन्हुम् कौलन्
गैरल्लज़ी की-ल लहुम् फ-अरसल्ला
अलैहिम् रिज़्जम्-मिनस्-समा-इ बिमा
कानू यज्लिमून (162) ♦

वस्अल्हुम् अनिल्कर्यतिल्लती कानत्
हाजि-रतल्-बहिर ✱ इज़् यअदू-न
फिस्सब्ति इज़् तअतीहिम् हीतानुहुम्
यौ-म सब्तिहिम् शुरअंव्-व यौ-म ला
यस्बितू-न ला तअतीहिम् कज़ालि-क
नब्लूहुम् बिमा कानू यफ्सुकून ●
(163) व इज़् कालत् उम्मतुम्-मिन्हुम्
लि-म तअज़्ज-न कौ-मनिल्लाहु
मुह्लिकुहुम् औ मुअज़्जिबुहुम् अज़ाबन्
शदीदन्, कालू मअज़ि-रतन् इला

रब्बिकुम् व लअल्लहुम् यत्तकून (164) फ-लम्मा नसू मा जुक्किरु बिही अन्जैनल्लज़ी-न
यन्हौ-न अनिस्सू-इ व अख़्जल्लज़ी-न ज-लमू बिअज़ाबिम् बईसिम्-बिमा कानू यफ्सुकून
(165) फ-लम्मा अतौ अम्मा नुहू अन्हु कुल्ला लहुम् कून कि-र-दतन् खासिईन् (166) व
इज़् त-अज़्ज-न रब्बु-क लयबूअ-सन्-न अलैहिम् इला यौमिल्-कियामति मय्यसूमहुम्

وَالْحَقُّ بِهِ يَعْدُلُونَ وَقَطَعْنَاهُمْ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا
أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنْ اخْرِجْ بِعَصَاكَ
الْحَجَرَ فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ
مَشْرَبَهُمْ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّاءَ وَ
السَّلْوَى كُلًّا مِنْ طَيبَاتِ مَا رَزَقْنَاهُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا
أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا
مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَغْفِرْ
لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ سَتَرْنَاهُ الْمُحْسِنِينَ قَبْلَ ذَلِكَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ
فَوَلَا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَارْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجَالًا مِنَ السَّمَاءِ
يَمَاسِكُونَهُمْ وَيُظْلِمُونَ وَسَأَلَهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً
أَلَيْسَ إِذْ يَعْدُلُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ
شُرْعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ نَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا
يَفْعَلُونَ وَإِذْ قَالَتْ أُنثَىٰ مِنْهُمْ لِمَ تَعْطُونَ قَوْمًا لِلَّهِ
مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا مَعْرِزَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَنْقُوتُونَ فَلَمَّا نَسُوا مَا كُتِبُوا لَهُمْ أُنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ
عَنِ الشُّعْوَ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَدَابِ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا

खानदानों में बाँट करके सबकी अलग-अलग जमाअत मुकर्रर कर दी।¹ और (एक इनाम यह किया कि) हमने मूसा को हुक्म दिया जबकि उनकी कौम ने पानी माँगा कि अपनी लाठी को (फलों) पत्थर पर मारो, (बस मारने की देर थी) फौरन उससे बारह चश्मे फूट निकले, (चुनाँचे) हर-हर शख्स ने अपने पानी पीने का मौका “यानी जगह” मालूम कर लिया। और (एक इनाम यह किया कि) हमने उनपर बादल से साया किया, और (एक इनाम यह किया कि) उनको तुरन्जबीन “यानी एक किस्म की कुदरती शक्र” और बटेरें पहुँचाई, (और इजाजत दी कि) खाओ पाक चीजों से जो कि हमने तुमको दी हैं, और उन्होंने हमारा कोई नुकसान नहीं किया लेकिन अपना ही नुकसान करते थे।² (160) और (वह ज़माना याद करो) जब उनको हुक्म दिया कि तुम लोग उस आबादी में जाकर रहो, और खाओ उससे जिस जगह से तुम्हारा दिल चाहे, और (ज़बान से) कहते जाना कि तौबा है (तौबा है) और (अज़िज़ी से) झुके-झुके दरवाज़े में दाखिल होना, हम तुम्हारी (पिछली) ख़ताएँ माफ़ कर देंगे (यह तो सबके लिए होगा और) जो नेक काम करेंगे उनको और भी ज़्यादा देंगे। (161) सो बदल डाला उन ज़ालिमों ने एक और कलिमा जो ख़िलाफ़ था उस (कलिमे) के जिसकी उनसे फ़रमाइश की गई थी, (इसपर) हमने उनपर एक आसमानी आफ़त भेजी, इस वजह से कि वे हुक्म को ज़ाया करते थे। (162) ♦

और आप इन (अपने ज़माने के यहूदी) लोगों से (तंबीह के तौर पर) उस बस्ती³ (वालों) का जो कि दरिया-ए-शोर के करीब आबाद थे, (उस वक़्त का) हाल पूछिए, जबकि वे हफ़्ता “शनिवार” के बारे में (शर्ई) हद से निकल रहे थे, जबकि उनके हफ़्ते “शनिवार” के दिन उन (के दरिया) की मछलियाँ ज़ाहिर हो-होकर उनके सामने आती थीं, और जब हफ़्ते “शनिवार” का दिन न होता तो उनके सामने न आती थीं। हम उनकी इस तरह पर (सख़्त) आजमाइश करते थे, इस सबब से कि वे (पहले से) बेहुक्मी किया करते थे। ● (163) और (उस वक़्त का हाल पूछिए) जबकि उनमें से एक जमाअत ने (यूँ) कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जाते हो जिनको अल्लाह तआला (बिलकुल) हलाक करने वाले हैं या उनको सख़्त सज़ा देने वाले हैं? उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे (और अपने) रब के सामने उज़्र करने के लिए, और (साथ ही) इसलिए कि शायद ये डर जाएँ।⁴ (164) सो (आख़िर) जब वे उस अमूर “यानी बात और हुक्म” को छोड़े ही रहे जो उनको समझाया जाता था, (यानी न माना) तो हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो उस बुरी बात से मना किया करते थे, और उन लोगों को जो (ज़िक्र हुए हुक्म में) ज़्यादती करते थे एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया, इस वजह से कि वे नाफ़रमानी किया करते थे। (165) (यानी) जिस काम से उनको मना किया गया था

1. और हर एक पर एक सरदार निगरानी के लिए मुकर्रर कर दिया जिनका ज़िक्र सूर: मा-इद: के रुकूअ नम्बर तीन में है, ‘व बअस्मा मिन्हमुस्ने अ-श-र नकीबन्’।
2. ये वाकिआत वादी-ए-तीह के हैं। इनकी तफ़सील सूर: ब-कर: में गुज़र चुकी।
3. उस बस्ती का नाम अक्सर ने ईला लिखा है। समुद्र के करीब होने की वजह से ये लोग मछली पकड़ने के शौकीन थे।
4. जब नसीहत के असरदार होने की बिलकुल उम्मीद न हो तो नसीहत करना वाजिब नहीं रहता। अगर फिर भी नसीहत करे तो यह बुलन्द हिम्मती है। पस जिस जमाअत ने यूँ कहा कि ‘तुम क्यों नसीहत किए जाते हो’ नाउम्मीद होने की वजह से वाजिब न होने पर अमल किया। और जिस जमाअत ने यह कहा कि ‘तुम्हारे और अपने रब के सामने उज़्र करने के लिए’ तो या तो उनको नाउम्मीदी नहीं हुई या बुलन्द हिम्मती वाले पहलू को इख़्तियार किया। गरज़ दोनों सही थे और दोनों के नज़ात पाने को हज़रत इकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाला और साबित किया, और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने पसन्द करके उनको इनाम भी दिया।

सूअल्- अजाबि, इन्-न रब्ब-क ल-सरीअुल्-अिकाबि व इन्नहू ल-गफूररहीम (167) व
कत्तअनाहुम् फिल्अर्जि उ-ममन् मिन्हुमुस्सालिहू-न व मिन्हुम् दू-न जालि-क व बलौनाहुम्
बिल्ह-सनाति वस्सयिआति लअल्लहुम् यर्जिअून (168) फ-ख-ल-फ मिम्-बअदिहिम्

खाल्फुं व्वरिसुल्-किता-ब यअखुजू-न

अ-र-ज हाजल्-अदना व यकूलू-न

सयुगफरु लना व इय्यअतिहिम् अ-रजुम्

मिस्तुहू यअखुजूहु, अलम् युअखाजू

अलैहिम् मीसाकुल्-किताबि अल्ला यकूलू

अलल्लाहि इल्लल्हक्-क व द-रसू मा

फीहि, वदारुल् आखिरतु खैरुल्-

लिल्लजी-न यत्तकू-न, अ-फला

तअकिलून (169) वल्लजी-न

युमस्सिकू-न बिल्किताबि व अकामुस्-

सला-त, इन्ना ला नुजीअु अजरल्

मुस्लिहीन (170) व इज्ज न-तक्नल्

ज-ब-ल फौकहुम् क-अन्नहू जुल्लतुव्-व

जन्नू अन्नहू वाकिअुम् बिहिम् खुजू मा आतैनाकुम् बिकुव्वतिव्वज्कुरु मा फीहि लअल्लकुम्

तत्तकून (171) ❖

व इज्ज अ-ख-ज रब्बु-क मिम्-बनी आद-म मिन् जुहूरिहिम् जुरिय्य-तहुम् व अशह-दहुम्

अला अन्फुसिहिम् अलस्तु बिरब्बिकुम् कालू बला, शहिदना अन् तकूलू यौमल्-कियामति इन्ना

يَقْسُونَ فَلْيَنصَحُوا غَيْرَ مَا نُهَوَّاهُ عَنْهُ فَلْيُكَلِّمُوا إِذْ هُمْ يُقْسُونَ
وَإِذَا تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيَبْعَثْ عَلَيْكُمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ
مَنْ يَسْمُكُمْ سُمًّا عَذَابًا إِنَّ رَبَّكَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ
إِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ وَقَطَّعْنَهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَامًا وَنَهْمُ
الضَّالِّينَ وَمِنْهُمْ ذُوْنٌ ذَلِكَ وَبَكُونَهُمْ بِالْحَسَنَةِ وَالسَّيِّئَةِ
لَعَلَّهُمْ يُرْجَعُونَ فَخَلَفَ مِنْ بَعدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ
يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ
يَأْتِيَهُمْ عَرَضٌ مِثْلُهَا يَأْخُذُوا أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ
الْكِتَابِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ وَ
الَّذِينَ الْأَخْرَجُوا خِزْيَ الَّذِينَ يَقُولُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ وَالَّذِينَ
يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نَضِيعُ أَجْرَ
الْمُصْلِحِينَ وَإِذْ نَفَقْنَا الْجِبْلَ فَوْقَهُمْ كَانَتْ ظِلَّةٌ وَكَانُوا
أَنَّهُ وَقَعَ فِيهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَادْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ
وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَى شَهِدْنَا
أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ

जब वे उसमें हद से निकल गए तो हमने उनको (ग़ज़ब और गुस्से से) कह दिया कि तुम ज़लील बन्दर बन जाओ। (166) और (वह वक़्त याद करना चाहिए) जब आपके रब ने (यह बात) बतला दी कि वह उन (यहूद) पर कियामत (के करीब) तक ऐसे (किसी-न-किसी) शख्स को ज़रूर मुसल्लत करता रहेगा जो उनको सख्त सज़ाओं की तकलीफ़ पहुँचाता रहेगा,¹ बेशक आपका रब वाकई (जब चाहे) जल्द ही सज़ा दे देता है, और बेशक वह (अगर कोई बाज़ आ जाए तो) बड़ी ही मग़्फ़िरत (और) बड़ी ही रहमत वाला (भी) है (167) और हमने दुनिया में उनकी अलग-अलग जमाअतें कर दीं, बाज़े उनमें नेक थे और बाज़े उनमें और तरह के थे (यानी बुरे), और हम उनको खुशहालियों (सेहत और मालदारी) और बदहालियों (बीमारी और तंगी) से आजमाते रहे, शायद कि बाज़ आ जाएँ।² (168) फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए कि किताब (तौरात) को उनसे हासिल किया, इस ज़लील दुनिया का माल व सामान ले लेते हैं, और (इस गुनाह को मामूली समझकर) कहते हैं कि हमारी ज़रूर मग़्फ़िरत हो जाएगी, हालाँकि अगर उनके पास (फिर) वैसा ही माल व सामान (दीन बेचने के बदले) आने लगे तो उसको ले लेते हैं। क्या उनसे (इस) किताब (के इस मज़मून) का अहद नहीं लिया गया कि खुदा की तरफ़ सिवाय हक़ बात के और किसी बात की निस्बत न करें? और उन्होंने उस (किताब) में जो कुछ था उसको पढ़ (भी) लिया, और आखिरत वाला घर उन लोगों के लिए (इस दुनिया से) बेहतर है जो (इन बुरे अक़ीदों और आमाal से) परहेज़ रखते हैं, क्या फिर (ऐ यहूद) तुम नहीं समझते? (169) और (उनमें से) जो लोग किताब के पाबन्द हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो अपना सुधार और दुरुस्ती करें सवाब जाया न करेंगे। (170) और (वह वक़्त भी ज़िक्र के काबिल है) जब हमने पहाड़ को उठाकर छत की तरह उनके ऊपर (लटका हुआ) कर दिया और उनको यकीन हुआ कि अब उनपर गिरा,³ (और कहा कि जल्दी) क़बूल करो जो किताब हमने तुमको दी है, (यानी तौरात और) मज़बूती के साथ (क़बूल करो) और याद रखो जो अहक़ाम उसमें हैं, जिससे उम्मीद है कि तुम मुत्तकी बन जाओ। (171) ♦

और जबकि आपके रब ने आदम की औलाद की पुश्त से उनकी औलाद को निकाला, और उनसे उन्हीं के मुताल्लिक़ इकरार लिया⁴ कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सबने जवाब दिया कि क्यों नहीं, हम सब (इस हकीक़त के) गवाह बनते हैं, ताकि तुम लोग कियामत के दिन (यूँ न) कहने लगे कि हम तो इस (तौहीद) से (बिलकुल) बेख़बर थे। (172) या (यूँ) कहने लगे कि (असल) शिर्क तो हमारे बड़ों ने किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए, सो क्या उन ग़लत राह (निकालने) वालों के फ़ेल पर आप हमको तबाही में

1. यानी ज़िल्लत व रुस्वाई और मातहतती। चुनौचे मुदत से यहूदी किसी न किसी हुकूमत के मातहत और नाराज़गी का शिकार ही चले आते हैं।
2. क्योंकि कभी नेकियों से तरगीब (यानी शौक) हो जाती है और कभी बुराइयों से डराना और ख़ौफ़ दिलाना हो जाता है।
3. छत के साथ तश्बीह (उपमा) सर के ऊपर होने में है, लटका हुआ होने में नहीं।
4. यह रूहों के आलम में हुए अहद का बयान है।

कुन्ना अन् हाजा गाफिलीन (172) औ तक्लू इन्नामा अशर-क आबाउना मिन् कब्लु व कुन्ना जुर्रियतम्-मिम्-बअदिहिम् अ-फतुहलिकुना बिमा फ-अलल्-मुब्तिलून (173) व कजालि-क नुफस्सिलुल्-आयाति व लअल्लहुम् यर्जिअून (174) वल्लु अलैहिम् न-बअल्लजी आतैनाहु आयातिना फन्स-ल-ख मिन्हा फ-अत्व-अहुशैतानु फका-न मिनल्-गावीन (175)

व लौ शिअ्ना ल-रफअ्नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख्ल-द इलल्अर्जि वत्त-ब-अ हवाहु फ-म-सलुहू क-म-सलिल्कल्बि इन् तहिमल् अलैहि यल्हस् औ तत्तुक्हु यल्हस्, जालि-क म-सलुल्-कौमिल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना फक्सुसिल् क-स-स लअल्लहुम् य-तफक्करून (176) सा-अ म-स-ल-निल्कौमुल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना व अन्फु-सहुम् कानू यज्लिमून (177)

मय्यहिदल्लाहु फहुवल्-मुह्तदी व मय्युज्लिल् फउलाइ-क हुमुल्-खासिरून (178) व ल-कद् जरअ्ना लि-जहन्न-म कसीरम् मिनल्-जिन्नि वल्डिन्सि लहुम् कुलूबुल्-ला यफकहू-न बिहा व लहुम् अअ्युनुल्-ला युब्सिरून

बिहा व लहुम् आजानुल्-ला यस्मअून-न बिहा, उलाइ-क कलअन्आमि बल् हुम् अजल्लु, उलाइ-क हुमुल्-गाफिलून (179) व लिल्लाहिल्-अस्माउल्-हुस्ना फद्अूहु बिहा व जरुल्लजी-न युल्हिदू-न फी अस्माइही, सयुज्जौ-न मा कानू यअ्मलून (180) व मिम्-मन् खलक्ना उम्मतुय्यहदू-न बिल्हक्कि व बिही यअ्दिलून (181) ♦

الاعراف

١٥٤

قال الله

أَوْتَقُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ
بَعْدِهِمْ أَفَتُهَمِّلُنَا بِمَا فَعَلَ الْبَاطِلُونَ ۝ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ
الْأَيَّاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ
آيَاتِنَا فَانْسَلَخْ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ ۝
وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ
هُوَ فَذَلِكُنَّ كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ
تَتْرُكْ يَلْهَثْ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا
فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝ سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ
الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا بِظُلُمٍ ۝ مَنْ يَهْدِ
اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِى وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَا يَبْصُرُ ۝
وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ لَهُمْ قُلُوبٌ
لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَذَانٌ
لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكَ هُمُ
الْغَافِلُونَ ۝ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا
الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَاءِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
وَمَنْ خَلَقْنَا أُمَّةً يُهْدُونَ يُلْحِقْ بِهِ يَهْدُونَ ۝ وَالَّذِينَ

مَثَلُ

डाले देते हैं। (173) और हम इसी तरह आयतों को साफ-साफ बयान किया करते हैं, और ताकि वे बाज़ आ जाएँ। (174) और उन लोगों को उस शख्स का हाल पढ़कर सुनाइए कि उसको हमने अपनी आयतें दीं,² फिर वह उनसे बिलकुल ही निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग लिया, सो वह गुमराह लोगों में (दाखिल) हो गया। (175) और अगर हम चाहते तो उसको उन (आयतों) की बदौलत बुलन्द (रुतबे वाला) कर देते,³ लेकिन वह तो दुनिया की तरफ़ माइल हो गया और अपनी नफ़्सानी ख्वाहिश की पैरवी करने लगा। सो उसकी हालत कुत्ते की सी हो गई कि अगर तू उसपर हमला करे तब भी हाँपे या उसको छोड़ दे तब भी हाँपे। यही हालत (आम तौर पर) उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, सो आप उस हाल को बयान कर दीजिए, शायद वे लोग कुछ सोचें। (176) (हकीकत में) उन लोगों की (हालत भी) बुरी हालत है, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं, और (इस झुठलाने से) वे अपना (ही) नुकसान करते हैं।⁴ (177) जिसको अल्लाह हिदायत करता है सो हिदायत पाने वाला वही होता है, और जिसको वह गुमराह कर दे, सो ऐसे ही लोग (हमेशा के) घाटे में पड़ जाते हैं। (178) और हमने ऐसे बहुत-से जिन्न और इनसान द्रोख के लिए पैदा किए हैं, जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे नहीं समझते, और जिनकी आँखें ऐसी हैं जिनसे नहीं देखते, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते, ये लोग जानवरों की तरह हैं, बल्कि ये लोग ज़्यादा बेराह हैं, ये लोग गाफिल हैं। (179) और अच्छे-अच्छे नाम अल्लाह तआला ही के लिए हैं, सो उन (नामों) से अल्लाह तआला ही को पुकारा करो और ऐसे लोगों से ताल्लुक भी न रखो जो उसके नामों में ग़लत रास्ता इख्तियार करते हैं। उन लोगों को उनके किए की ज़रूर सज़ा मिलेगी। (180) और हमारी मख़्लूक (जिन्न और इनसान) में एक जमाअत ऐसी भी है जो हक़ (यानी दीन इस्लाम) के मुवाफ़िक़ हिदायत करते हैं और उसी के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ भी करते हैं।⁵ (181) ♦

1. ऊपर बनी इसराईल के हालात के दरमियान में उनका अल्लाह के अहक़ाम का मामूर होना और रूहों के आलमे अहद में तमाम आदमियों का तौहीद के लिए मामूर होने का ज़िक्र मकसूद बनाकर और इन ज़िक्रशुदा का तौहीद व रिसालत के इनकार से उन किए हुए अहदों के खिलाफ़ करना जिम्नन मज़कूर हुआ था। आगे अहक़ाम को जानने के बाद उनके खिलाफ़ करने वाले की मिसाल बयान फरमाते हैं।
2. यानी अहक़ाम का इल्म दिया।
3. यानी अगर वह उन आयतों पर अमल करता जिसका तकदीर से वाबस्ता होना एक मालूम चीज़ है तो उसकी कबूलियत का रुतबा बढ़ता।
4. ऊपर गुमराह लोगों की हालत बयान फरमाई कि इसके बावजूद कि हिदायत का रास्ता उनपर वाजेह हो गया फिर भी मुख़ालफ़त और बैर को नहीं छोड़ते। चूँकि उनके इस बैर और मुख़ालफ़त से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्त ग़म होता था इसलिए आगे आपकी तसल्ली का मज़मून है।
5. ऊपर मुशिरकों के हक़ में 'उन लोगों को सज़ा ज़रूर मिलेगी' फरमाया था। चूँकि वह जज़ा उस वक़्त तक ज़ाहिर न हुई थी, इससे ज़ाहिर न होने का उनको शुब्हा हो सकता था। आगे उसके ज़ाहिर न होने की वजह बयान करके उस शुब्हा को ख़त्म फरमाते हैं।

वल्लजी-न कज्जबू बिआयातिना सनस्तद्वरिजुहुम् मिन् हैसु ला यअलमून (182) व
उम्ली लहुम् इन्-न कैदी मतीन (183) अ-व लम् य-तफक्करु मा बिसाहिबिहिम् मिन्
जिन्नतिन्, इन् हु-व इल्ला नजीरुम्-मुबीन (184) अ-व लम् यन्जुरु फी
म-लकूतिस्समावाति वल्अर्जि व मा ख-लकल्लाहु मिन् शैइव्-व अन् असा अय्यकू-न
कदिक्त-र-ब अ-जलुहुम् फबिअय्यि

हदीसिम्-बअदहू युअमिनून (185)

मय्युज्जलिलिल्लाहु फला हादि-य लहू, व
य-जरुहुम् फी तुग्यानिहिम् यअमहून
(186) यस्अलून-क अनिस्सा-अति
अय्या-न मुरसाहा, कुल् इन्नमा अिल्मुहा
अिन्-द रब्बी ला युजल्लीहा लिवक्तिहा
इल्ला हु-व ❖ सकुलत् फिस्समावाति
वल्अर्जि, ला तअतीकुम् इल्ला
बग्त-तन्, यस्अलून-क कअन्न-क
हफिय्युन् अन्हा, कुल् इन्नमा अिल्मुहा
अिन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि
ला यअलमून (187) कुल् ला अम्लिकु
लिनफसी नफअव्-व ला जरन् इल्ला मा
शाअल्लाहु, लौ कुन्तु अअ-लमुल्-गै-ब
लस्तक्सरतु मिनल्-खैरि, व मा

मस्सनियस्-सू-उ इन् अ-न इल्ला नजीरुव्-व बशीरुल्- लिक्ौमिय्युअमिनून (188) ❖

हुवल्लजी ख-ल-ककुम् मिन् नफिस्व्याहि-दतिव्-व ज-अ-ल मिन्हा जौजहा लियस्कु-न
इलैहा फ-लम्मा तगशशाहा ह-मलत् हम्लन् खफीफन् फ-मरत् बिही फ-लम्मा अस्-कलद्-
द-अवल्ला-ह रब्बहुमा ल-इन् आतैतना सालिहल् ल-नकूनन्-न मिनश्-शाकिरीन (189)

قَالَ بِلَالٌ ۝ ١٥٨ ۝
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَخِرَ لَهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَأُمْلِئْ
لَهُمْ إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ ۖ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ
مِنْ حَقٍّ إِنَّا هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۚ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَنْ عَسَى
أَنْ يَكُونُوا قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَهَآئِ حَذِيرٌ ۚ بَعْدَ يُؤْمِنُونَ ۚ
مَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا مَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ۚ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجِيبُهَا إِلَّا هُوَ ۚ تَنفَلَتْ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمُ إِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا
قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ قُلْ
لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنْتُ
أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَا سَعْدُ لَكَ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسْنِيَ السُّوءُ ۚ
إِنَّا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۚ هُوَ الَّذِي
خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّيْهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيًّا فَمَرَّتْ بِهِ ۚ فَلَمَّا
أَفْطَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبِّهَا لَعَنَ آتِيتَنَا صَالِحًا لِنُكَونَنَّ مِنَ

और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं, हम उनको धीरे-धीरे लिए जा रहे हैं,¹ इस तरह पर कि उनको ख़बर भी नहीं।² (182) और उनको मैं मोहलत देता हूँ, इसमें कोई शक नहीं कि मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है।³ (183) क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर न किया कि उनका जिनसे वास्ता है उनको ज़रा भी जुनून नहीं, वे तो सिर्फ़ एक (अज़ाब से) साफ़-साफ़ डराने वाले हैं।⁴ (184) और क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया आसमानों और ज़मीन के आलम में, और साथ ही दूसरी चीज़ों में जो अल्लाह तआला ने पैदा की हैं, और इस बात में (भी ग़ौर नहीं किया) कि हो सकता है कि उनकी मुद्दत करीब ही आ पहुँची हो? फिर इस (कुरआन) के बाद कौन-सी बात पर ये लोग ईमान लाएँगे।⁵ (185) जिसको अल्लाह तआला गुमराह करे उसको कोई राह पर नहीं ला सकता (फिर गुम करना बेकार है) और अल्लाह तआला उनको उनकी गुमराही में भटकते हुए छोड़ देता है। (186) ये लोग आपसे कियामत के मुताल्लिक सवाल करते हैं कि वह कब आएगी, आप फ़रमा दीजिए कि उसका इल्म सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है,⁶ उसके वक़्त पर उसको सिवाय उसके (यानी अल्लाह के) कोई और ज़ाहिर न करेगा,⁷ वह आसमान और ज़मीन में बड़ा भारी (हादसा) होगा, इसलिए कि वह तुमपर बिल्कुल अचानक आ पड़ेगी। वे आपसे (इस तरह) पूछते हैं (जैसे) गोया आप उसकी तहकीकात कर चुके हैं। आप फ़रमा दीजिए कि उसका ख़ास इल्म अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।⁸ (187) आप कह दीजिए कि मैं खुद अपनी ख़ास ज़ात के लिए किसी नफ़े का इस्तिyार नहीं रखता और न किसी नुक़सान का, मगर इतना ही जितना खुदा तआला ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं बहुत-से मुनाफ़े हासिल कर लिया करता और कोई नुक़सान मुझको हरगिज़ न होता, मैं तो सिर्फ़ (शरई अहक़ाम बतला कर सवाब की) खुशख़बरी देने वाला और (अज़ाब से) डराने वाला हूँ, उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। (188) ♦

वह (अल्लाह तआला) ऐसा कादिर व नेमतें देने वाला है जिसने तुमको एकमात्र बदन (आदम) से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा (हव्वा अलैहस्सलाम को) बनाया, ताकि वह उस (अपने जोड़े) से उन्स हासिल करे। फिर जब मियाँ ने बीवी से कुरबत “निकटता” की तो उसको हल्का सा हमल “गर्भ” रह गया, सो वह उसको लिए हुए चलती फिरती रही, फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों (मियाँ-बीवी) अल्लाह से जो कि उनका मालिक है दुआ करने लगे कि अगर आपने हमको सही (सालिम औलाद) दे दी तो हम ख़ूब शुक्रगुज़ारी करेंगे। (189) सो जब अल्लाह तआला ने उन दोनों को सही (सालिम औलाद) दे दी तो अल्लाह

1. यानी जहन्नम की तरफ़।
2. और ‘ला यअलूमू-न’ के मायने यह है कि वे इस मोहलत को अपने तरीके के दुरुस्त होने पर गुमान करते हैं, और अल्लाह के यहाँ अपने महबूब व मक्बूल होने पर, हालाँकि वे जहन्नम तक की दूरी को तय कर रहे हैं।
3. हासिल यह कि उनकी शरारतों पर सख़्त सज़ा देना मन्ज़ूर है, इसलिए उसकी यह तदबीर की गई कि यहाँ कामिल पकड़ नहीं फ़रमाई।
4. हासिल यह कि अगर आपकी मजमूई हालत में ग़ौर करें तो आपकी पैग़म्बरी समझ में आ जाए।
5. हासिल यह कि न दीने हक़ तक पहुँचाने वाले यानी दलील की फ़िक्र है। और न इस पहुँचाने वाले के सहायक यानी मौत के ध्यान व ख़याल का ज़िक्र है।
6. यानी दूसरे किसी को उसकी ख़बर नहीं।
7. और वह ज़ाहिर करना यह होगा कि उसको कायम कर देगा। उस वक़्त सबको पूरी ख़बर हो जाएगी।
8. वाज़ उलूम हक़ तआला ने अपने इल्म के ख़जाने में महफूज़ रखे हैं। अम्बिया को भी तफ़सील के साथ उनकी इत्तिyारा नहीं दी। इस आयत और मुस्लिम व बुख़ारी में मौजूद उस हदीस जिसमें यह कहा गया है कि उसके बारे में जिससे पूछा जा रहा है वह भी पूछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता, से साफ़ मालूम होता है कि यकीन व तफ़सील के साथ कियामत की इत्तिyारा आपसे भी पोशीदा थी।

الشكرين ﴿فَلَمَّا أَتَاهَا صَاحِبًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾ ١٥٩ ﴿أَيُّ شِرْكٍ لَكُمْ مَالًا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ﴾ ١٦٠ ﴿وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرٌ وَلَا أُنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ﴾ ١٦١ ﴿وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْتَمِيعُواكُمْ سِوَاكُمْ عَلَيْهِمْ أَدْعَاؤُهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ﴾ ١٦٢ ﴿إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَلُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْمِعُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾ ١٦٣ ﴿أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آعِينٌ يَنْصُرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلْ ادْعُوا مَا كُنْتُمْ كِيدُونَ﴾ ١٦٤ ﴿فَلَا تَنْظُرُونَ﴾ ١٦٥ ﴿إِنَّ وَلِيََّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَكَّلُ الصَّالِحِينَ﴾ ١٦٦ ﴿وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ﴾ ١٦٧ ﴿وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْمِعُوا وَتَرْكَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ﴾ ١٦٨ ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْبَهِلِينَ﴾ ١٦٩ ﴿وَإِنَّمَا يَنْزِعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ ١٧٠ ﴿إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِنَ الشَّيْطَانِ

तअ़ाला की दी हुई चीज़ में वे दोनों अल्लाह तअ़ाला के शरीक करार देने लगे, सो अल्लाह तअ़ाला पाक है उनके शिर्क से।' (190) क्या ऐसों को शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज़ को बना न सकें और वे खुद ही बनाए जाते हों। (191) और वे उनको किसी किस्म की मदद (भी) नहीं दे सकते, और वे खुद अपनी भी मदद नहीं कर सकते। (192) और अगर तुम उनको कोई बात बतलाने को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें। तुम्हारे एतिबार से (दोनों बातें) बराबर हैं, चाहे तुम उनको पुकारो या तुम चुप रहो।' (193) वाकई तुम खुदा को छोड़कर जिनकी इबादत करते हो वे भी तुम जैसे ही बन्दे हैं, सो तुम उनको पुकारो, फिर उनको चाहिए कि तुम्हारा कहना कर दें अगर तुम सच्चे हो। (194) क्या उनके पाँव हैं जिनसे वे चलते हैं, या उनके हाथ हैं जिनसे वे किसी चीज़ को थाम सकें, या उनकी आँखें हैं जिनसे वे देखते हों, या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? आप (यह भी) कह दीजिए कि तुम अपने सब शरीकों को बुला लो, फिर मुझे नुकसान पहुँचाने की तदबीर करो, फिर मुझको बिलकुल भी मोहलत मत दो। (195) यकीनन मेरा मददगार अल्लाह तअ़ाला है जिसने यह किताब नाज़िल फ़रमाई, और वह (आम तौर पर) नेक बन्दों की मदद किया करता है। (196) और तुम जिन लोगों की खुदा को छोड़कर इबादत करते हो वे तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, और न वे अपनी मदद कर सकते हैं। (197) और अगर उनको कोई बात बताने को पुकारो तो (उसको) न सुनें, और उनको आप देखते हैं कि (जैसे) वे आपको देख रहे हैं, और वे कुछ भी नहीं देखते।' (198) सरसरी बर्ताव को कबूल कर लिया कीजिए और नेक काम की तालीम कर दिया कीजिए, और जाहिलों से एक किनारे हो जाया कीजिए।' (199) और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आने लगे तो अल्लाह तअ़ाला की पनाह माँग लिया कीजिए, बेशक वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (200) यकीनन जो लोग खुदा से डरने वाले हैं, जब उनको शैतान की तरफ़ से कोई ख़तरा आ जाता है तो वे याद में लग जाते हैं, सो एक दम उनकी आँखें खुल जाती हैं। (201) और जो (शैतानों के ताबे या अधीन) हैं वे उनको गुमराही में खींचे

1. यहाँ तक तो हक़ तअ़ाला की सिफ़तें ज़िक्र की गई थीं, जिनका तक्ज़ा यह है कि माबूद होने का हक़दार सिर्फ़ वही है। आगे बातिल और झूठे माबूदों की कमियों और ख़ामियों का ज़िक्र है, जिनसे अच्छी तरह वाज़ेह हो जाता है कि वे माबूद बनने और बनाने के लायक नहीं हैं।
2. इसके दो मतलब हो सकते हैं, एक यह कि तुम उनको पुकारो कि वे तुमको कोई बात बतला दें, तो तुम्हारा कहना न करें यानी न बतलाएँ। और दूसरे इससे ज़्यादा यह कि तुम उनको पुकारो कि आओ हम तुमको कुछ बतला दें तो वे तुम्हारे कहने पर न चलें, यानी तुम्हारी बतलाई हुई बात पर अमल न कर सकें।
3. खुलासा यह है कि जो काम सबसे ज़्यादा आसान है कि कोई बात बतलाने के लिए पुकारे तो सुन लेना, वे इसी से अज़िज़ हैं, तो जो इससे मुश्किल है कि अपनी हिफ़ाज़त करें। और फिर जो इससे भी ज़्यादा मुश्किल है कि दूसरों की इम्दाद करना, और फिर जो इन सबसे ज़्यादा दुश्वार है कि किसी चीज़ को पैदा करना, इससे तो और भी ज़्यादा अज़िज़ होंगे। फिर ऐसे अज़िज़ और मोहताज़ माबूद बनने के लायक कैसे हो सकते हैं?
4. ऊपर जाहिल मुश्रीक़ीन से एक बहस थी। चूँकि बावजूद इस बहस और दलील देने के भी वे लोग अपनी हद दर्ज़ा दुश्मनी से अपनी जहालत पर अड़े रहते थे जिससे गुस्सा आ जाना स्वभाविक था, इसलिए आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नर्मी का हुक्म है। और गुस्सा आ जाने पर अल्लाह तअ़ाला से पनाह माँगने की तालीम है, और उनके गुमराही में फँसे रहने का बयान है। जिससे उनकी तरफ़ से मुकम्मल तौर पर मायूसी हो जाए, ताकि फिर गुस्सा न आए।
5. यानी लोगों के आमाल व अख़्लाक की तह और हकीक़त तलाश न कीजिए, बल्कि ज़ाहिरी नज़र में सरसरी तौर पर जो काम किसी से अच्छा हो उसको भलाई पर महमूल कीजिए, बातिन का हाल अल्लाह के सुपुर्द कीजिए। हासिल यह कि समाजी ज़िन्दगी में आसानी रखिए, सख़्ती न कीजिए।
6. 'और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आने लगे' का मज़मून अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के गुनाहों से महफूज़ रहने के मनाफ़ी और ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि महफूज़ रहने का हासिल यह है कि शैतान गुनाह नहीं करा सकता, यह नहीं कि गुनाह की राय नहीं दे सकता।

चले जाते हैं, पस वे बाज़ नहीं आते। (202) और जब आप कोई मोजिज़ा उनके सामने ज़ाहिर नहीं करते तो वे लोग कहते हैं कि आप यह मोजिज़ा क्यों न लाए? आप फ़रमा दीजिए कि मैं उसकी पैरवी करता हूँ जो मुझपर मेरे रब की तरफ़ से हुक्म भेजा गया है, ये (गोया) तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत-सी दलीलें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।¹ (203) और जब कुरआन पढ़ा जाया करे तो उसकी तरफ़ कान लगा दिया करो और ख़ामोश रहा करो,² उम्मीद है कि तुमपर (नई या और ज़्यादा) रहमत हो। (204) और (आप हर-हर शख्स से यह भी कह दीजिए कि ऐ शख्स!) अपने रब की याद किया कर, अपने दिल में आजिज़ी के साथ, और ख़ौफ़ के साथ, और ज़ोर की आवाज़ के मुकाबले में कम-आवाज़ के साथ, सुबह और शाम, (यानी हमेशा) और गाफ़िलों में शुमार मत होना।³ (205) यकीनन जो (फ़रिश्ते) तेरे रब के नज़दीक (ख़ास और करीबी) हैं वे उसकी इबादत से (जिसमें असल अक़ायद हैं) तकब्बुर नहीं करते और उसकी पाकी बयान करते हैं, (जो कि ज़बान की नेकी है) और उसको सज्दा करते हैं, (जो कि हाथ-पाँव और जिस्म के अन्य अंगों के आमाल से है)। □ ▲ (206) ♦

8 सूर: अन्फाल 88

सूर: अन्फाल मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 75 आयतें और 10 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ये लोग⁴ आपसे (ख़ास) गुनीमतों का हुक्म मालूम करते हैं। आप फ़रमा दीजिए कि ये गुनीमतें अल्लाह की हैं और रसूल की हैं, सो तुम अल्लाह से डरो और अपने आपसी ताल्लुकात की इस्लाह (भी) करो, और अल्लाह की और उसके रसूल की इताअत करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (1) (क्योंकि) बस ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह तआला का ज़िक्र आता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वे (आयतें) उनके ईमान को और ज़्यादा (मज़बूत) कर देती हैं, और वे लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं। (2) (और) जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से खर्च करते हैं। (3) (बस) सच्चे ईमान वाले ये लोग हैं। उनके लिए बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और (उनके लिए) मग़्फ़िरत है और इज़्ज़त की रोज़ी। (4) जैसा कि आपके रब ने आपके घर (और वस्ती) से मस्तहत के साथ आपको (बद्र की तरफ़) रवाना किया, और मुसलमानों की एक

1. जवाब का हासिल यह है कि नुबुव्वत की असली गरज़ इस्लाह व सुधार है।
2. ताकि उसका मोजिज़ (यानी इनसानी ताक़त से बाहर) होना और उसकी तालीम की ख़ूबी समझ में आ जाए।
3. अदब का हासिल यह है कि दिल और हैयत में आजिज़ी व इन्किसारी और ख़ौफ़ हो, और आवाज़ बहुत ज़्यादा ऊँची न हो। या तो विलकुल आहिस्ता हो यानी ज़बान की हरकत के साथ और या दरमियानी दर्जे की हो।
4. ऊपर की सूर: में ज़्यादातर मुशिरकीन की मूर्खता और दुश्मनी और किसी क़द्र अहले किताब के कुफ़ व फ़साद का ज़िक्र था। इस सूर: में उस ज़हलत, दुश्मनी और कुफ़ व फ़साद का उनपर जो दुनिया में ववाल और निकाल (बद्र में मुशिरकीन पर और अन्य बाज़ वाकिआत में अहले किताब यहूद पर) नाज़िल हुआ उसका बयान है। बद्र का बयान ज़्यादा है और अहले किताब के वाकिआ का कम।

रब्बु-क मिम्-बैति-क बिल्हक्कि व इन्-न फरीकम् मिनल्-मुअमिनी-न लकारिहून (5)
 युजादिलून-क फिल्हक्कि बअ-द मा तबय्य-न कअन्नमा युसाकू-न इलल्मौति व हुम् यन्जुरून
 (6) व इज् यअिदुकुमुल्लाहु इह्दत्ताइ-फतैनि अन्नहा लकुम् व तवद्दू-न अन्-न गै-र
 जातिशशौ-कति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अय्युहिक्कल्-हक्-क बिकलिमातिही व
 यक्त-अ दाबिरल्-काफिरीन (7)

लियुहिक्कल्-हक्-क व युब्तिलल्-बाति-ल
 व लौ करिहल्-मुज्जिरमून (8) इज्
 तस्तगीसू-न रब्बकुम् फस्तजा-ब लकुम्
 अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फिम् मिनल्-
 मलाइ-कति मुर्दिफीन (9) व मा
 ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुशरा व
 लिततमइन-न बिही कुलूबुकुम्, व मन्नस्
 इल्ला मिन् अिन्दिल्लाहि, इन्नल्ला-ह
 अजीजुन् हकीम (10) ❖

इज् युगशशीकुमुन्नुआ-स अ-म-नतम्
 मिन्हु व युनज्जिलु अलैकुम् मिनस्समा-इ
 माअल्-लियुतहिह-रकुम व युज्जिह-ब
 अन्कुम् रिज्जशशैतानि व लियरबि-त
 अला कुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल्-
 अक्दाम (11) इज् यूही रब्बु-क इलल्-

मलाइ-कति अन्नी म-अकुम् फ-सब्बितुल्लजी-न आमनू, सउल्फी फी कुलूबिल्लजी-न
 क-फरुरूअ-ब फज्जिबू फौकल् अअ्नाकि वज्जिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान (12) जालि-क
 बिअन्नहुम् शाक्कुल्ला-ह व रसूलहू व मय्युशाकिक्किल्ला-ह व रसूलहू फ-इन्नल्ला-ह
 शदीदुल्-अिकाब (13) जालिकुम् फजूकूहु व अन्-न लिक्काफिरी-न अजाबन्नार (14) या

مَغْفِرَةٌ وَرِغْقٌ كَرِيمٌ ۝ كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ
 وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَرِهُونَ ۝ يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ
 بَعْدَ مَا بَيَّنَّ كَانُوا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝
 وَلَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ أَحَدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ
 أَنْ غَيْرَ ذَٰلِكَ الشَّوْكَةُ تَكُونَ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُفْعَلَ
 بِكُلِّ شَيْءٍ حِكْمَةً وَيَقْطَعُ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ۝ لِيُحَقِّقَ الْحَقَّ وَيَنْبِطِلَ
 الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝ إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ
 لَكُمْ أَنِّي مُبِدِّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرَدِّينَ ۝ وَمَا جَعَلَ
 اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَضْمِنَ لَهُ قُلُوبُكُمْ وَمَا النُّصْرَ إِلَّا مِنْ
 عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ إِذْ يَغْشَىٰ كُمُ الْفُلُكُ الْأَمَنَةُ
 مِنْهُ وَيُنْزِلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَ كُمْ بِهِ وَ
 يُذْهِبَ عَنْكُمُ رِجْسَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ
 بِهِ الْأَقْدَامَ ۝ إِذْ يُؤْتِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنْ مَعَكُمْ فَتَاهَا
 الَّذِينَ آمَنُوا سَالِفِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الزُّعْبُ
 فَأَضْرِبُوا قُلُوبَ الْكَافِرِينَ وَأَضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَلَاءٍ
 ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَ

مَرْكَ

जमाअत उसको नागवार समझती थी।¹ (5) (और) वे उस मस्तहत (के काम) में इसके बाद कि वह ज़ाहिर हो गया था, (अपने बचाव के लिए) आपसे (मश्वरे के तौर पर) इस तरह झगड़ रहे थे कि जैसे कोई उनको मौत की तरफ़ हाँके लिए जाता है और वे देख रहे हैं। (6) और (तुम लोग उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआला तुमसे उन दो जमाअतों में से एक का वायदा करते थे कि वह तुम्हारे हाथ आ जाएगी, और तुम इस तमन्ना में थे कि हथियारों से ख़ाली जमाअत (यानी काफ़िला) तुम्हारे हाथ आ जाए, और अल्लाह तआला को यह मन्ज़ूर था कि अपने अहकाम से हक़ का हक़ होना (अमली तौर पर) साबित कर दे, और उन काफ़िरों की बुनियाद (और ताक़त) को काट दे।² (7) ताकि हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना (अमली तौर पर) साबित कर दे, अगरचे ये मुज़िम लोग ना-पसन्द ही करें। (8) (उस वक़्त को याद करो) जबकि तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे। फिर उसने (यानी अल्लाह तआला ने) तुम्हारी सुन ली, कि मैं तुमको एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा जो सिलसिलेवार चले आएँगे। (9) और अल्लाह तआला ने यह (इम्दाद) सिर्फ़ इस (हिक्मत के) लिए की कि (ग़ल्बे की) खुशख़बरी हो, और ताकि तुम्हारे दिलों को (बेचैनी से) करार हो जाए, और (हकीकत में तो) मदद (और ग़ल्बा) सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है, बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (10) ♦

(उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तआला तुमपर ऊँघ को तारी कर रहा था अपनी तरफ़ से चैन सुकून देने के लिए, और (उससे पहले) तुमपर आसमान से पानी बरसा रहा था, ताकि उस (पानी) के ज़रिये से तुमको (छोटी-बड़ी नापाकी से) पाक कर दे, और तुमसे शैतानी वस्वसे को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे, और तुम्हारे पाँव जमा दे।³ (11) (और उस वक़्त को याद करो) जबकि आपका रब (उन) फ़रिश्तों को हुक्म देता था कि मैं तुम्हारा साथी (और मददगार) हूँ, सो (मुझको मददगार समझकर) तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ, मैं अभी काफ़िरों के दिलों में रोब डाले देता हूँ, सो तुम (काफ़िरों की) गर्दनो पर मारो और उनके पोर-पोर को मारो। (12) यह (सज़ा) इसलिए है कि उन्होंने अल्लाह की और उसके रसूल की मुखा़लफ़त की, और जो अल्लाह और उसके रसूल की मुखा़लफ़त करता है सो अल्लाह तआला (उसको) सख़्त सज़ा देते हैं। (13) (सो) यह (सज़ा) चखो, और (जान लो कि) काफ़िरों के लिए जहन्नम का अज़ाब

1. मक्का के ताजिरो का एक छोटा-सा काफ़िला मुल्क शाम से मक्का को चला, जिसके साथ माल व असबाब बहुत था। आपको वहाँ से मालूम हुआ, आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को ख़बर दी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को आदमियों के कम होने और माल के ज़्यादा होने का हाल मालूम होने से ग़नीमत का ख़याल हुआ और इसी इरादे से मदीना से चले। यह ख़बर जो मक्का पहुँची तो अबू जहल वहाँ के सरदारों और लश्कर के साथ उस काफ़िले की हिफ़ाज़त के लिए निकला, और काफ़िला समुद्र के किनारे-किनारे हो लिया, और अबू जहल लश्कर के साथ बद्र में आकर ठहरा। उस वक़्त जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वादी-ए-दजरान में तशरीफ़ रखते थे। और आपको यह सारा किस्सा वहाँ के ज़रिये मालूम हुआ और आपसे अल्लाह पाक का वायदा हुआ कि उन दो गिरोह यानी काफ़िला और लश्कर में से आपको एक गिरोह पर ग़ल्बा होगा। आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मशिवरा किया। चूँकि लश्कर के मुकाबले के इरादे से न आए थे इसलिए पूरे तौर पर लड़ाई का सामान भी साथ न था, और साथ ही तादाद भी तीन सौ से कुछ ज़्यादा थी, और कुफ़ार के लश्कर में एक हज़ार आदमी थे। इसलिए बाज़ हज़रात दुविधा में पड़ गए और अज़ु किया कि इस लश्कर का मुकाबला न कीजिए बल्कि काफ़िले का पीछा करना मुनासिब है। आप रंजीदा हुए तो उस वक़्त हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत मिक्दाद, हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इताअत की तक़रीरें कीं। तब आप बद्र की तरफ़ रवाना हुए।

2. इस ग़ल्बे को बावजूद इसके कि कुरैश के तमाम काफ़िर हलाक न हुए थे 'बुनियाद काटना' इसलिए कहा गया कि इस वाकिए से उनकी कुव्वत विलकुल फना हो गई थी क्योंकि उनके सत्तर बड़े-बड़े सरदार क़त्ल और सत्तर कैद हुए थे इस तरह गोया वे सब ही ख़त्म हो गए थे।

3. इसमें एक किस्से की तरफ़ इशारा है। जिसका मुख़्तसर बयान यह है कि बद्र में मुशिरकीन पहले जा पहुँचे थे और पानी पर कब्ज़ा कर लिया था। मुस्लमान बाद में पहुँचे और एक सूखे रेगिस्तान में उतरे, जहाँ पानी न होने से (शेष तफ़सीर पृष्ठ 322 पर)

अय्युहल्लज्जी-न आमनू इज़ा लकीतुमुल्लज्जी-न क-फरू ज़हफन् फला तुवल्लूहुमुल्-अद्बार
(15) व मय्युवल्लिहिम् यौमइज़िन् दुबु-रहू इल्ला मु-तहरिर्फल् लिक्कितालिन् औ मु-तहय्यिज़िन्
इला फि-अतिन् फ-कद् बा-अ बि-ग-ज़बिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअ्सल्-
मसीर (16) फ-लम् तक्तुलूहुम् व लाकिन्नल्ला-ह क-त-लहुम् व मा रमै-त इज़् रमै-त व
लाकिन्नल्ला-ह रमा व लियुब्लियल्-
मुअ्मिनी-न मिन्हु बलाअन् ह-सनन्,
इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम (17)

ज़ालिकुम् व अन्नल्ला-ह मूहिनु कैदिल्-
काफिरीन (18) इन् तस्ताफ़िहू फ-कद्
जा-अकुमुल्-फहू व इन् तन्तहू फहू-व
खैरुल्लकुम् व इन् तअदू नअुद् व लन्
तुग्नि-य अन्कुम् फि-अतुकुम् शैअंव-व
व लौ कसुरत् व अन्नल्ला-ह मअल्-
मुअ्मिनीन (19) ❖

या अय्युहल्लज्जी-न आमनू
अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तवल्लौ
अन्हु व अन्तुम् तस्मअून (20) व ला
तकूनू कल्लज्जी-न कालू समिअ्ना व हुम्
ला यस्मअून (21) इन्-न शर्हवाब्बि

अिन्दल्लाहिस्सुम्मुल्-बुकमुल्लज्जी-न ला यअ्किलून (22) व लौ अलिमल्लाहु फीहिम् खैरल्
ल-अस्म-अहुम्, व लौ अस्म-अहुम् ल-तवल्लौ व हुम् मुअ्रिज़ून (23) या अय्युहल्लज्जी-न
आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्सूलि इज़ा दआकुम् लिमा युह्यीकुम् वअ्लमू अन्नल्ला-ह यहूलु
बैनल्-मर्इ व कल्बिही व अन्नहू इलैहि तुहशरून (24) वत्तक् फित्न्-तल्-ला

قَالَ اللَّهُ
رُسُولُهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ذَلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ
لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُيَسِّمُ
الَّذِينَ كَفَرُوا زَوْجًا فَلَا تَوَلَّوْهُمْ الْأَذْبَارُ وَمَنْ يُؤْلِهِمْ
يَوْمَئِذٍ دُبْرَةَ الْإِمْتِحَانِ أَوْ مُتَعَتِّزًا إِلَى فِتْنَةٍ فَقَدْ
بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَا وَدَّ جَهَنَّمَ وَيَسَّ لِلْحَصِيرِ
فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتُمْ إِذْ رَمَيْتُمْ
وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَى وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءٌ حَسَنًا إِنَّ
اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنٌ كَثِيرٌ الْكَافِرِينَ
إِنْ تَسْتَفْتَحُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ وَإِنْ تَنْهَوْا فَيُؤْخِرْكُمْ
وَأِنْ تَعُوذُوا أَعَدَّ وَلَنْ تُغْنِي عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ
وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِيعُوا اللَّهَ
وَرُسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عُنَاهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ وَلَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ إِنْ شَرَّ
الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُّ إِلَيْكُمْ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ وَ
لَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا
وَهُمْ مُعْرِضُونَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَ

(मुकरर ही) है। (14) ऐ ईमान वालो! जब तुम (जिहाद में) काफिरों से आमने-सामने हो जाओ तो उनसे पुश्त मत फेरना। (15) और जो शख्स उनसे उस मौके पर (यानी मुकाबले के वक्त) पुश्त फेरेगा, मगर हाँ जो लड़ाई के लिए पैतरा बदलता हो या जो अपनी जमाअत की तरफ पनाह लेने आता हो (वह इससे अलग है, बाकी और जो ऐसा करेगा) तो वह अल्लाह तआला के गुज़ब में आ जाएगा और उसका ठिकाना दोज़ख होगा और वह बहुत ही बुरी जगह है।¹ (16) सो तुमने उनको कत्ल नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने (बेशक) उनको कत्ल किया, और आपने (खाक की मुट्ठी) नहीं फेंकी, जिस वक्त आपने फेंकी थी, लेकिन अल्लाह ने फेंकी,² और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ से उनकी मेहनत का खूब बदला दे, बेशक अल्लाह तआला (उन मोमिनो की बातों के) खूब सुनने वाले (और उनके कामों व हालात के) खूब जानने वाले हैं। (17) (एक बात तो) यह हुई और (दूसरी बात) यह (है) कि अल्लाह तआला को काफिरों की तदबीर को कमज़ोर करना था। (18) अगर तुम लोग फैसला चाहते हो तो वह फैसला तुम्हारे सामने आ मौजूद हुआ, और अगर बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छा है, और अगर तुम फिर (वही काम) करोगे तो हम भी फिर (वही काम) करेंगे और तुम्हारी जमअीयत “यानी जमाअत व संगठन” तुम्हारे ज़रा भी काम न आएगी, अगरचे कितनी ही ज़्यादा हो, और वाकई बात यह है कि अल्लाह (असल में) ईमान वालों के साथ है। (19) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का कहना मानो और उसके रसूल का, और उस (का कहना मानने) से मुँह मत फेरना, और तुम (एतिकाद से) सुन तो लेते ही हो। (20) और तुम उन लोगों की तरह मत होना जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया, हालाँकि वे सुनते-सुनाते कुछ नहीं।¹ (21) बेशक मख्लूक में सबसे बद्तर अल्लाह के नज़दीक वे लोग हैं जो बहरे हैं, गूंगे हैं, जो कि ज़रा नहीं समझते। (22) और अगर अल्लाह तआला उनमें कोई खूबी देखते तो उनको सुनने की तौफ़ीक देते, और अगर उनको अब सुना दें तो ज़रूर मुँह फेर लेंगे, बेरुखी करते हुए। (23) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के कहने पर अमल किया करो,

(पृष्ठ 320 का शेष)

प्यास की भी शिदत थी और नमाज़ के वक्त वुजू और गुस्ल से भी आजिज़ थे। और तयम्मूम

का हुकम उस वक्त तक नाज़िल न हुआ था। उधर रेगिस्तान में चलना-फिरना मुसीबत कि उसमें पाँव धँसे जाते थे। इन हालात से दिल सख्त परेशान हुआ, ऊपर से शैतान ने वस्वसा डालना शुरू किया कि अगर तुम अल्लाह के यहाँ मकबूल व मदद-याफ़ता होते तो इस परेशानी में क्यों मुब्तला होते। हक़ तआला ने अव्वल रहमत की बारिश नाज़िल फरमाई, जिससे पानी की बहुतायत हो गई, पिया भी, वुजू व गुस्ल भी किया और उससे रेत जम गया और धसन जाती रही। उसके उलट काफिर नर्म ज़मीन में थे, वहाँ कीचड़ हो गई, जिससे चलने-फिरने में दिक्कत होने लगी। गरज़ सब वस्वसे और परेशानियाँ ख़त्म हो गईं। उसके बाद उनपर ऊँघ का ग़ल्बा हुआ जिससे पूरी राहत हो गई और सब बेचैनी जाती रही। इस आयत में इन्ही वाकिआत की तरफ़ इशारा है।

1. जिहाद से भागना हराम है। हाँ अगर काफिर दोगुने से ज़्यादा हों तो जायज़ है। और जब वे दोगुने से ज़्यादा न हों तब भी दो सूरतें जायज़ होने की हैं जिनको आयत में अलग कर दिया है, एक यह कि धोखा देने को सामने से भागा हो, ताकि सामने वाला गा हो जाए, फिर अचानक उसपर लौटकर हमला करे। दूसरे यह कि असली मक़सद भागना न हो बल्कि ख़ाली हाथ होने या किसी और सबब से अपनी जमाअत में इस गरज़ से आ मिला कि उनसे ताक़त और मदद हासिल करे, फिर जाकर मुकाबला करे।

2. इसमें भी एक किस्से की तरफ़ इशारा है। वह यह कि आपने बद्र के दिन एक मुट्ठी कंकरीयों की उठाकर काफिरों की तरफ़ फेंकी, जिसके रेज़े सबकी आँखों में जा गिरे और उनको शिकस्त हुई। मुट्ठी खाक फेंकने का किस्सा कई बार हुआ, बद्र में, उहुद में, हुनैन में, लेकिन यहाँ मज़मून के रब्त से बद्र का मुराद लेना ज़्यादा मुनासिब है।

3. मतलब यह कि एतिकाद से सुनने का फायदा अमल है। जब अमल न हुआ तो यह ऐसा ही है कि जैसे एतिकाद के साथ सुना ही नहीं।

तुसीबन्नल्लजी-न ज-लमू मिन्कुम् ख़ास्स-तन् वअलमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिकाब (25)
 वज्कुरु इज् अन्तुम् कलीलुम् मुस्तज्अफू-न फिल्अर्जि तख़ाफू-न अय्य-तख़त्त-फकुमुन्नासु
 फआवाकुम् व अय्य-दकुम् बिनसिरी व र-ज-ककुम् मिनत्तय्यिबाति लअल्लकुम् तश्कुरुन
 (26) या अय्युहल्लजी-न आमनू ला तख़नुल्ला-ह वरसू-ल व तख़नू अमानातिकुम् व अन्तुम्
 तअलमून (27) वअलमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फित्नतुं-व अन्नल्ला-ह अिन्दहू
 अज्रुन् अजीम (28) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनू इन्
 तत्तकुल्ला-ह यज्अल्लकुम् फुरकानं-व-व
 युक्फिफर् अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व
 यग्फिफर् लकुम्, वल्लाहु जुल्फज़िल्ल-
 अजीम (29) व इज् यम्कुरु
 बिकल्लजी-न क-फरु लियुस्बितू-क औ
 यक्तुलू-क औ युख़िरजू-क, व यम्कुरु-न
 व यम्कुरुल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरुल्-माकिरीन
 (30) व इज़ा तुल्ला अलैहिम् आयातुना
 कालू कद् समिअना लौ नशा-उ लकुल्ला
 मिस-ल हाज़ा इन् हाज़ा इल्ला
 असातीरुल्-अव्वलीन (31) व इज्
 कालुल्लाहुम्-म इन् का-न हाज़ा

हुवल-हक्-क मिन् अिन्दि-क फअम्तिर् अलैना हिजा-रतम् मिनस्समा-इ अविअतिना
 बिअज़ाबिन् अलीम (32) व मा कानल्लाहु लियुअज़ि-बहुम् व अन्-त फीहिम्, व
 मा कानल्लाहु मुअज़ि-बहुम् व हुम् यस्तग्फिरुन (33) व मा लहुम् अल्-ला

الانفال ١٦٣

لِلرُّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ
 بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَهُ تَخْشَوْنَ ۝ وَأَتَوَفَّاتُنَّ
 لَا تُحْيِيَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
 شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَعْصِفُونَ
 فِي الْأَرْضِ مُخَافُونَ أَن يَخْطِفَكُمْ النَّاسُ فَأَوْسَكُوا
 أَيْدِيَكُمْ بِضُرُوبِهِمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا
 أَمْثَلَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ
 أُولَٰئِكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا
 الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَخَوُّوا اللَّهَ يَجْعَلَ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ
 سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ وَ
 إِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ
 وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝ وَإِذْ أَنْتَ
 عَلَيْهِمْ أَيْتَانَا فَالْوَاقِدِ سَيْفَنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا
 إِن هَٰذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِن كَانَ
 هَٰذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَابًا مِنَ السَّمَاءِ

जबकि रसूल तुमको तुम्हारी जिन्दगी देने वाली चीज़ की तरफ बुलाते हों,¹ और जान लो कि अल्लाह तआला आड़ बन जाया करता है आदमी के और उसके दिल के दरमियान में,² और बेशक तुम सबको खुदा ही के पास जमा होना है। (24) और तुम ऐसे वबाल से बचो कि जो खास उन्हीं लोगों पर न पड़ेगा जो तुममें से उन गुनाहों के करने वाले हुए हैं,³ और यह जान लो कि अल्लाह तआला सख्त सज़ा देने वाले हैं। (25) और उस हालत को याद करो जबकि तुम थोड़े से थे,⁴ सरज़मीन में कमज़ोर शुमार किए जाते थे,⁵ और इस अन्देशे में रहते थे कि तुमको (मुख़ालिफ़) लोग नोच-खसोट न लें। सो (ऐसी हालत में) अल्लाह ने तुमको (मदीना में) रहने को जगह दी, और तुमको अपनी मदद से कुव्वत दी, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें (खाने को) अता फरमाई, ताकि तुम शुक्र करो। (26) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल के हुक्क में ख़लल मत डालो, और अपनी हिफ़ाज़त के काबिल चीज़ों में ख़लल मत डालो, और तुम तो (उसका नुक़सानदेह होना) जानते हो। (27) और तुम (इस बात को) जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है, और (इस बात को भी जान रखो कि) अल्लाह तआला के पास बड़ा भारी अन्न (मौजूद) है। (28) ♦

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे, वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको एक फ़ैसले की चीज़ देगा और तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर देगा, और तुमको बख़्श देगा, और अल्लाह तआला बड़े फज़ल वाला है। (29) और (उस वाकिए का भी ज़िक्र कीजिए) जबकि काफ़िर लोग आपके बारे में (बड़ी-बड़ी) तदबीरें सोच रहे थे कि (आया) कैद कर लें या आपको क़त्ल कर डालें या आपको वतन से निकाल दें, और वे तो अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह (पाक) अपनी तदबीरें कर रहे थे, और सबसे ज़्यादा मज़बूत तदबीर वाला अल्लाह है। (30) और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, अगर हम इरादा करें तो इसके बराबर हम भी कहकर ले आएँ, ये तो कुछ भी नहीं, सिर्फ़ बे-सनद बातें हैं, जो पहलों से (नक़ल होती हुई) चली आ रही हैं। (31) और जबकि उन लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह! अगर यह (कुरआन) वाकई आपकी तरफ़ से है, तो हमपर आसमान से पत्थर बरसाइए, या हमपर (और) कोई दर्दनाक अज़ाब भेज दीजिए। (32) और अल्लाह तआला ऐसा न करेंगे कि उनमें आपके होते हुए उनको (ऐसा) अज़ाब दें, और (यह कि) अल्लाह तआला उनको (ऐसा) अज़ाब न देंगे, जिस हालत में कि वे

1. तिमिज़ी शरीफ़ की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उब्बी बिन कअब को पुकारा और वह नमाज़ में थे, तो उनके उज़्र पर आपने उनको यह आयत याद दिलाई। मालूम होता है कि 'इस्तजीबू' अपने आम होने की वजह से इस सूरत को भी शामिल है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी को पुकारें तो जवाब देना वाजिब है। और अपने मुतलक और आम होने से इस सूरत को भी शामिल है कि यह शख्स नमाज़ में मशगूल तो नमाज़ में ही जवाब देना वाजिब है।
2. दो रास्तों में से एक रास्ता यह कि मोमिन के दिल में नेकी की बरकत से कुफ़्र व नाफरमानी को नहीं आने देता। दूसरा रास्ता यह कि काफ़िर के दिल में मुख़ालफ़त की नहूसत से ईमान व नेकी को नहीं आने देता। इससे मालूम हुआ कि इताअत व फ़रमाँवरदारी पर हमेशा जमे रहना बड़ी फ़ायदे की चीज़ है और मुख़ालफ़त पर अड़े रहना बड़ी नुक़सान देनी वाली चीज़ है।
3. बल्कि उन गुनाहों को देखकर जिन्होंने मुदाहनत (यानी निगाह बचाई और रोक-टोक नहीं) की है वे भी उसमें शरीक होंगे।
4. यानी हिज़रत से पहले।
5. यानी मक्का में।

युअज़्जि-बहुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू-न अनिल् मस्जिदिल्-हरामि व मा कानू औलिया-अहू, इन् औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तकू-न व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअलमून (34) व मा का-न सलातुहुम् अिन्दल्-बैति इल्ला मुकाअंव-व तस्दि-यतन्, फजूकुल्- अज़ा-व बिमा कुन्तुम् तक्फुरुन (35) इन्नल्लज़ी-न क-फरू

युन्फिकू-न अम्वालहुम् लि-यसुद्दू अन् सबीलिल्लाहि, फ-सयुन्फिकूनहा सुम्-म तकूनु अलैहिम् हस्-रतन् सुम्-म युग़लबू-न, वल्लज़ी-न क-फरू इला जहन्न-म युहशरून (36)

लि-यमीजल्लाहुल्-खाबी-स मिनत्तय्यिबि व यज्अलल् खाबी-स बअज़हू अला बअज़िन् फ-यर्कु-महू जमीअन् फ-यजअ-लहू फी जहन्न-म, उलाइ-क हुमुल्-खासिरून (37) ♦

कुल् लिल्लज़ी-न क-फरू इय्यन्तहू युग़फर् लहुम् मा कद् स-ल-फ, व इय्यअदू फ-कद् मजत् सुन्नतुल्-

अव्वलीन (38) व कातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फिल्तुंव-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि फ-इनिन्तहौ फ-इन्नल्ला-ह बिमा यअमलू-न बसीर (39) व इन् तवल्लौ फअलमू अन्नल्ला-ह मौलाकुम्, निअमल्-मौला व निअमन्-नसीर (40)

أَوَانْتَبَا بِعَذَابِ الْيَمِينِ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ وَمَا لَكُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يُصَدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَ إِنْ أَوْلِيَاءُ إِلَّا الْمُتَفَوُّونَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ كَافِرُونَ إِنْ الَّذِينَ كَفَرُوا يَنْتَفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيَنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُخْتَرُونَ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضًا عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكَبُ جَمِيعًا فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ فَإِنْ انْتَهُوا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مُوَلِّكُمْ زَيْعَ الْمَوْلَىٰ وَيَغْمُ الْغَاضِرُ

इस्तिगफार भी करते रहते हैं।¹ (33) और (फिर) उनका क्या हक बनता है कि उनको अल्लाह तआला (बिलकुल ही मामूली) सजा भी न दे, हालाँकि वे लोग मस्जिदे-हराम से रोकते हैं,² हालाँकि वे लोग इस मस्जिद के मुतवल्ली (बनने के भी लायक) नहीं। उसके मुतवल्ली (बनने के लायक) तो सिवाय मुत्तकी लोगों के और कोई भी नहीं, लेकिन उनमें अक्सर लोग (अपनी नालायकी) का इल्म भी नहीं रखते।³ (34) और उनकी नमाज़ खाना काबा के पास सिर्फ यह थी, सीटियाँ बजाना और तालियाँ बजाना,⁴ सो इस अज़ाब का मज़ा चखो,⁵ अपने कुफ़ के सबब।⁶ (35) बेशक ये काफ़िर लोग अपने मालों को इसलिए खर्च कर रहे हैं कि अल्लाह तआला की राह से रोकें,⁷ सो ये लोग अपने माल खर्च करते ही रहेंगे (मगर) फिर वे माल उनके हक में हसरत का सबब हो जाएँगे, फिर (आख़िर) मग़लूब हो जाएँगे, और काफ़िर लोगों को दोज़ख़ की तरफ़ जमा किया जाएगा। (36) ताकि अल्लाह तआला नापाक (लोगों) को पाक (लोगों) से अलग कर दे और (उनसे अलग करके) नापाकों को एक-दूसरे से मिला दे। यानी उन सबको एक जगह कर दे, फिर उन सबको जहन्नम में डाल दे, ऐसे ही लोग पूरे ख़सारे “यानी घाटे” में हैं। (37) ♦

आप उन काफ़िरों से कह दीजिए कि अगर ये लोग (अपने कुफ़ से) बाज़ आ जाएँगे तो उनके सारे गुनाह जो (इस्लाम से) पहले हो चुके हैं सब माफ़ कर दिए जाएँगे। और अगर अपनी वही (कुफ़ की) आदत जारी रखेंगे तो (सुना दीजिए कि) पहले गुज़रे (काफ़िरों के हक) में (हमारा) क़ानून नाफ़िज़ हो चुका है।⁸ (38) और तुम उन (अरब के काफ़िरों) से इस हद तक लड़ो कि उनमें अक़ीदे की ख़राबी (यानी शिर्क) न रहे, और दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए।⁹ फिर अगर ये (कुफ़ से) बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखते हैं।¹⁰ (39) और अगर मुँह मोड़ें तो यकीन रखो कि अल्लाह तआला तुम्हारा रफ़ीक़ है, वह बहुत अच्छा रफ़ीक़ है और बहुत अच्छा मददगार है।¹¹ (40)

1. मतलब यह कि ज़बरदस्त सज़ाओं से दो चीज़ें रुकावट हैं, एक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक्का में या दुनिया में तशरीफ़ रखना, और दूसरा लोगों का अपने तवाफ़ वगैरह में यह कहना ‘गुफ़रान-क गुफ़रान-क’ जो कि हिज़रत के बाद और वफ़ात के बाद भी बाकी था।
2. यानी मस्जिदे हराम (बैतुल्लाह शरीफ़) में जाने, उसमें नमाज़ पढ़ने और उसमें तवाफ़ करने से रोकते हैं।
3. चाहे इल्म ही न हो या यह कि जब उस इल्म पर अमल न किया तो वह भी इल्म न होने की तरह है।
4. यानी बजाय नमाज़ के उनकी ये नामाकूल हरकतें होती थीं।
5. चुनौचे अनेक लड़ाइयों में यह सज़ा सामने आई।
6. यहाँ तक तो उन लोगों की बातों और जिस्मानी आमाल का ज़िक्र था, आगे उनके माली आमाल का बयान है।
7. चुनौचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले और मुख़ालफ़त के सामान जमा करने में ज़ाहिर है कि जो खर्च होता था उसमें यही ग़रज़ थी।
8. यानी दुनिया में हलाकत और आख़िरत में अज़ाब।
9. किसी के दीन का ख़ालिस तौर पर अल्लाह ही के लिए हो जाना मौकूफ़ है इस्लाम के क़बूल करने पर। तो हासिल यह हुआ कि शिर्क छोड़कर इस्लाम इस्तियार करें। खुलासा यह कि अगर इस्लाम न लाएँ तो उनसे लड़ो जब तक कि इस्लाम न लाएँ। क्योंकि अरब के काफ़िरों से जिज़या (टैक्स) नहीं लिया जाता।
10. यानी अगर कुफ़ से बाज़ आ जाएँ तो उनके ज़ाहिरी इस्लाम को क़बूल करो, दिल का हाल मत टटोलो। अगर ये दिल से ईमान न लाएँगे तो अल्लाह तआला उनके आमाल को ख़ूब देखते हैं, वह खुद समझ लेंगे, तुमको क्या?
11. ऊपर आयत ‘व क़ातिलहुम्.....’ में लड़ने और जंग करने का हुक्म था। चूँकि कभी लड़ाई और जंग में ग़नीमत भी हासिल होती है इसलिए आगे उसका हुक्म बयान फ़रमाते हैं।

दसवाँ पारः वअलमू

सूरतुल् अन्फालि (आयत 41 से 75)

वअलमू अन्नमा गनिस्तुम् मिन् शैइन् फ-अन्-न लिल्लाहि खुमु-सहू व लिरसूलि व

लिजिल्कुरबा वल्यतामा वल्मसाकीनि

वबिस्-सबीलि इन् कुन्तुम् आमन्तुम्

बिल्लाहि व मा अन्जल्ला अला अब्दिना

यौमल्फुरकानि यौमल्-तकल्जम्आनि,

वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीर (41)

इज् अन्तुम् बिल्अुद्वतिद्दुन्या व हुम्

बिल्अुद्वतिल्-कुस्वा वरक्बु अस्फ-ल

मिन्कुम्, व लौ तवाअ्तुम् लख्त-लफ्तुम्

फिल्मीआदि व लाकिल्- लियक्जियल्लाहु

अमरन् का-न मफअूलल्-लियह्लि-क मन्

ह-ल-क अम्बय्यि-नतिव्-व यह्या मन्

हय्-य अम्बय्यि-नतिन्, व इन्नल्ला-ह

ल-समीअुन् अलीम (42) इज्

युरीकहुमुल्लाहु फी मनामि-क कलीलन्,

व लौ अराकहुम् कसीरल् ल-फशिल्तुम्

व ल-तनाजअ्तुम् फिल्-अम्रि व

लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म, इन्नहू

अलीमुम्- बिजातिस्सुदूर (43) व इज्

युरीकुमूहम् इजिल्लकैतुम् फी अअ्युनिकुम् कलीलव्-व युक्लिल्लुकुम् फी अअ्युनिहिम्

लि-यक्जियल्लाहु अमरन् का-न मफअूलन्, व इलल्लाहि तुरजअुल्-उमूर (44) ❖

या अय्युहल्लजी-न आमनू इजा लकीतुम् फि-अतन् फस्बुतू वज्कुरुल्ला-ह कसीरल्-

लअल्लकुम् तुफिलहून (45) व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तनाजअू फ-तपशलू व

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ مِنْهُ وَالرَّسُولِ
وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَأُولَىٰ السَّبِيلِ إِن
كُنْتُمْ أَمْنَةً بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ
يَوْمَ التَّفَاقُ الْجَمْعِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ إِذْ أَنْتُمْ
بِالْعُدُوِّ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدُوِّ الْقُضُوِّ وَالرَّكْبِ اسْفَلَ
مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَنُتُمْ لَخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ وَلَكِنْ لِيَقْضَىٰ
اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَ
يَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ إِذْ
يُرِيهِمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا وَلَوْ أَرَاكُمْ كَثِيرًا لَفُتِنْتُمْ
لَتَنَزَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الْصُّدُورِ وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذْ التَّفَاقُ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا
وَيَقِيلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَ
إِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُضِيَٰ فِتْنَةٌ
فَانْتَبِهُوا وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ

दसवाँ पार: वअलमू

सूर: अनुफाल (आयत 41 से 75)

और (इस बात को) जान लो कि जो चीज़ (काफ़िरों) से ग़नीमत के तौर पर तुमको हासिल हो तो (उसका हुक्म यह है कि) कुल का पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह का और उसके रसूल का है, और (एक हिस्सा) आपके रिश्तेदारों का है, और (एक हिस्सा) यतीमों का है, और (एक हिस्सा) ग़रीबों का है, और (एक हिस्सा) मुसाफ़िरों का है, अगर तुम अल्लाह पर यकीन रखते हो और उस चीज़ पर जिसको हमने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर फैसले के दिन,¹ जिस दिन कि (मोमिनों व काफ़िरों की) दोनों जमाअतें आपस में आमने-सामने हुई थीं, नाज़िल फरमाया था² और अल्लाह तआला (ही) हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाले हैं। (41) (यह वह वक़्त था कि) जब तुम (उस मैदान के) इधर वाले किनारे पर थे और वे लोग (यानी काफ़िर उस मैदान के) उधर वाले किनारे पर थे,³ और वह (कुरैश का) काफ़िला तुमसे नीचे की तरफ़ (बचा हुआ) था,⁴ और अगर तुम (और वे) कोई बात ठहराते तो ज़रूर उस ठहराने के बारे में तुममें इख़्तिलाफ़ होता, लेकिन ताकि जो बात अल्लाह को करना मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे, यानी ताकि जिसको बर्बाद (गुमराह) होना है वह निशान आने के बाद बर्बाद हो, और जिसको ज़िन्दा (हिदायत-याफ़्ता) होना है वह (भी) निशान आने के बाद ज़िन्दा हो,⁵ और बेशक अल्लाह तआला ख़ूब सुनने वाले, ख़ूब जानने वाले हैं। (42) (वह वक़्त भी ज़िक्र करने के काबिल है) जब अल्लाह ने आपके ख़्वाब में आपको वे लोग कम दिखलाए और अगर अल्लाह आपको वे लोग ज़्यादा दिखा देते तो तुम्हारी हिम्मतें हार जातीं, और इस मामले में तुममें आपस में झगड़ा (व इख़्तिलाफ़) हो जाता, लेकिन (तय करने और ठहराने के बारे में) अल्लाह ने (उस कम-हिम्मती और इख़्तिलाफ़ से) बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात को ख़ूब जानता है। (43) और (उस वक़्त को याद करो) जबकि अल्लाह तुमको जबकि तुम आमने-सामने हुए, वे लोग तुम्हारी नज़र में कम करके दिखला रहे थे और (इसी तरह) उनकी निगाह में तुमको कम करके दिखला रहे थे, ताकि जो बात अल्लाह को करनी मन्ज़ूर थी उसको पूरा कर दे,⁶ और सब मुक़द्दमे खुदा ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (44) ♦

ऐ ईमान वालो! जब तुमको (जिहाद में) किसी जमाअत से मुकाबले का इत्तिफ़ाक़ हुआ करे तो (इन आदाब का लिहाज़ रखो) (१) साबित कदम रहो (२) और अल्लाह तआला का ख़ूब कसरत से ज़िक्र करो उम्मीद है कि तुम कामयाब हो। (45) (३) और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (का लिहाज़) किया

1. फैसले के दिन से मुराद बद्र का दिन है। क्योंकि उसमें अमली तौर पर हक़ व बातिल का फैसला वाज़ेह हो गया।
2. मुराद इससे फ़रिश्तों के वास्ते से ग़ैबी इम्दाद है। यानी अगर हम पर और हमारी ग़ैबी इनायतों पर यकीन रखते हो तो इस हुक्म को जान लो और अमल करो। यह इसलिए बढ़ा दिया कि पाँचवाँ हिस्सा निकालना भारी न हो, और समझ लें कि यह सारी ग़नीमत अल्लाह ही की इम्दाद से तो हाथ आई, फिर अगर हमको एक पाँचवाँ हिस्सा न मिला तो क्या हुआ, वे चार पाँचवे हिस्से भी तो हमारी कुदरत से ख़ारिज थे, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की कुदरत से हासिल हुए।
3. इधर वाले से मुराद मदीना से नज़दीक की जगह और उधर वाले से मुराद मदीना से दूर की जगह है।
4. यानी समुद्र के किनारे-किनारे जा रहा था।
5. मतलब यह कि अल्लाह को लड़ाई होना मन्ज़ूर था, ताकि एक खास तरीके से इस्लाम का हक़ होना ज़ाहिर हो जाए, कि तादाद और सामान की इस कमी पर भी मुसलमान ग़ालिब आए जो कि आम आदत के ख़िलाफ़ है। जिससे मालूम हुआ कि इस्लाम हक़ है। पस इससे अल्लाह की हुज्जत मुकम्मल हो गई। उसके बाद जो गुमराह होगा वह हक़ के वाज़ेह होने के बाद होगा, जिसमें अज़ाब का पूरा हक़दार होना हो गया और उज़्र की गुन्जाइश ही न रही। इसी तरह जिसको हिदायत होना होगा (शेष तफ़सीर पृष्ठ 330 पर)

وَيَا رِجْمَهُمْ بَطْرًا وَرِثَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَإِذْ زَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
أَعْمَاهُمْ وَقَالَ لَأَغَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي
جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَ آتِ الْفُتَيْنِ نَكَصَ عَلَى عَقْبَيْهِ وَقَالَ
إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّنْكُمْ إِنِّي أَمَّا لَآتِرُونَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ إِذْ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ غَرَّ هُوَ لَكُمْ وَنَبَهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ
كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَذْهَابُهُمْ وَدُفِنُوا
عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝ ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بظَلَامٍ لِلْعَمِيدِ ۝ كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا لِنِعْمَةٍ
أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرَ أَمَامَهُمْ أَنْ اللَّهُ سَبِيحٌ
عَلِيمٌ ۝ كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا
بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ

मन्जिल 2

करो। (४) और झगड़ा मत करो, (न अपने इमाम से और न आपस में) वरना कम-हिम्मत हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (५) सब्र करो बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ हैं। (46) (६) और उन (काफिर) लोगों के जैसे मत होना कि जो (इसी बद्र के वाकिए में) अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को (अपनी शान) दिखलाते हुए निकले और लोगों को अल्लाह के रास्ते (दीन) से रोकते थे, और अल्लाह तआला उनके आमाल को (अपने इल्म के) घेरे में लिए हुए है। (47) और (उस वक्त का जिक्र कीजिए) जबकि शैतान ने उन (कुफ़ार) को उनके आमाल अच्छे करके दिखलाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुमपर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारा हामी हूँ। फिर जब (काफ़िरो और मुसलमानों की) दोनों जमाअतें एक-दूसरे के आमने-सामने हुईं तो वह उल्टे पाँव भागा और (यह) कहा कि मेरा तुमसे कोई वास्ता नहीं, मैं उन चीज़ों को देख रहा हूँ जो तुमको नज़र नहीं आती (यानी फ़रिश्ते), मैं तो खुदा से डरता हूँ और अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (48) ♦

(और वह वक्त भी ज़िक्र करने के काबिल है कि) जब मुनाफ़िक लोग² और जिनके दिलों में (शक की) बीमारी थी³ (यूँ) कहते थे कि इन (मुसलमान) लोगों को उनके दीन ने भूल में डाल रखा है। और जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करता है तो बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले (भी) हैं। (49) और अगर आप (उस वक्त का वाक़िआ) देखें जबकि फ़रिश्ते इन (मौजूदा) काफ़िरो की जान कब्ज़ करते जाते हैं (और) उनके मुँह पर और उनकी पीठ पर मारते जाते हैं, और (यह कहते जाते हैं कि अभी क्या है आगे चलकर) आग की सज़ा झेलना। (50) यह (अज़ाब) उन (कुफ़िया आमाल) की वजह से है जो तुमने अपने हाथों समेटे हैं और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआला बन्दों पर जुल्म करने वाले नहीं। (51) (उनकी हालत ऐसी है) जैसी फ़िरऔन वालों की, और उनसे पहले के (काफ़िर) लोगों की हालत (थी) कि उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया, सो खुदा तआला ने उनके (उन) गुनाहों पर उनको पकड़ लिया, बेशक अल्लाह तआला बड़ी कुव्वत वाले, सख़्त सज़ा देने वाले हैं। (52) यह बात⁷ इस सबब से है कि अल्लाह तआला किसी ऐसी नेमत को जो किसी कौम को अता फ़रमाई हो, नहीं बदलते जब तक कि वही लोग अपने ज़ाती आमाल को नहीं बदल डालते,⁸ और यह (बात साबित ही है) कि अल्लाह तआला बड़े सुनने वाले, बड़े जानने वाले हैं। (53) (उनकी हालत) फ़िरऔन वालों और उनसे पहले वालों की-सी हालत (है) कि उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, उसपर हमने उनको उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔन

(पृष्ठ 328 का शेष)

वह हक़ को क़बूल कर लेगा। हिक्मत का खुलासा यह हुआ कि हक़ वाज़ेह हो जाए।

6. रिवायतों में है कि उस दिन मुसलमान तीन सौ तेरह (313) और कुफ़ार एक हजार थे। मगर फिर भी मुसलमान ही ग़ालिब रहे। इससे हर इन्साफ़-पसन्द समझदार नतीजा निकाल सकता है कि जब अल्लाह तआला अपने दीन को ग़ालिब करना चाहता है तो कुफ़ार की कसरत और माल व दौलत उसको रोक नहीं सकती। हक़ तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में कुफ़ार की तादाद कम करके दिखलाई थी ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ख़्वाब बयान करें तो उनमें मुकाबले की ज़ुरत बढ़े। फिर जब दोनों ग़िरोह आमने-सामने हुए तो भी मुसलमानों को काफ़िर कम तादाद में ही दिखाई दिए। अगर ऐसा न होता तो मुसलमानों में अपने ख़ाली हाथ और बेसामान होने की वजह से लड़ाई करने या न करने के बारे में राय का इख़्तिलाफ़ होता और शायद जंग की नौबत न आती, लेकिन लड़ाई हुई और खुदा-ए-क़दीर ने बद्र में फ़त्ह की बदीलत इस्लाम की तरक्की की राहें खोल दीं।

1. चूँकि बिना ईमान के ख़ाली ख़ौफ़ मक़बूल नहीं इसलिए शैतान का खुदा से डरना अगर हकीकत भी हो तो इसपर कुछ शुब्हा और इश्काल नहीं किया जा सकता।

2. मदीना वालों में से।

3. बाज़ मक्का वाले (यानी कुरैश) मुसलमानों का ख़ाली हाथ और बेसामानी के साथ काफ़िरो के मुकाबले में आ जाना देखकर कहने लगे।

4. गरज़ ज़ाहिरी सामान होने या न होने पर दारोमदार नहीं, कुदरत रखने वाला कोई और ही है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 332 पर)

फ-अह्लकनाहुम् बिजुनूबिहिम् व अग्रकना आ-ल फिरऔ-न व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन (54)

इन्-न शर्रदवाब्बि अिन्दल्लाहिल्लजी-न क-फरु फहुम् ला युअमिनुन (55) अल्लजी-न

आहत्-त मिन्दुम् सुम्-म यन्कुजू-न अह-दहुम् फी कुल्लि मरतिव्-व हुम् ला यत्तकून (56)

फ-इम्मा तस्कफन्नहुम् फिल्हर्बि फ-शरिद् बिहिम् मन् खल्फहुम् लअल्लहुम् यज्जक्करून (57)

व इम्मा तखाफन्-न मिन् कौमिन्

खिया-नतन् फम्बिज़् इलैहिम् अला

सवाइन्, इन्नल्ला-ह ला

युहिब्बुल्-खाइनीन (58) ♦

व ला यह्स-बन्नल्लजी-न क-फरु

स-बक्कू, इन्नहुम् ला युअजिज़ून (59) व

अअिद्दू लहुम् मस्त-तअ्तुम् मिन्

कुव्वतिव्-व मिर्रिबातिल्खैलि तुर्हिबू-न

बिही अदुव्वल्लाहि व अदुव्वकुम् व

आखरी-न मिन् दूनिहिम् ला

तअल्लमूनहुम् अल्लाहु यअल्लमुहुम्, व मा

तुन्फिक्कू मिन् शैइन् फी सबीलिल्लाहि

युवफ्-फ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज्लमून

(60) व इन् ज-नहू लिस्सल्मि फज्जह्

लहा व तवक्कल् अलल्लाहि, इन्नहू

हुवस्समीअुल्-अलीम (61) व इय्युरीद् अय्यख्दअू-क फ-इन्-न हस्ब-कल्लाहु हुवल्लजी

अय्य-द-क बिनसिही व बिल्मुअमिनीन (62) व अल्ल-फ बै-न कुलूबिहिम्, लौ अन्फक्-त

मा फिल्अर्जि जमीअम्-मा अल्लफ्-त बै-न कुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला-ह अल्ल-फ बैनहुम्,

इन्नहू अजीजुन् हकीम (63) या अय्युहन्नबिय्यु हस्बुकल्लाहु व मनित्त-ब-अ-क मिनल्

وَأَعْلَوْا ۝ إِنَّ شَرَّ الدِّينِ عِنْدَ اللَّهِ الدِّينُ
كُفْرًا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ
ثَوْبَ يَفْقُضُونَ ۝ فَأَمَّا تَثَقُّفُهُمْ
فَإِنَّمَا تَثَقُّفُهُمْ
فِي الْحَرْبِ فَشَرِّذْ بِهِمْ مَنْ خَلَفَهُمْ لَعَلَّهُمْ
يَدْرَكُونَ ۝ وَإِنَّمَا أَخَافُ أَنْ
يُؤْمِرُوا قَوْمِي أَنْ يُبَادِلُوا
بِالْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ
وَعَدُوَّكُمْ ۝ وَأَعِدَّ لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ
مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ
بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَأَخْرَجَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُوهُمْ
اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۝ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ
لَا تَغْلِبُونَ ۝ وَإِنْ جَسَدُوا لِنَسْأَلْ
فَأَجْزِمُهُمْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِنْ
يُرِيدُ أَنْ يَمُدَّ عَزْلَكَ
فَأَنْ حَسْبُكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي
أَيَّدَكَ بِتُغْرِهِ ۝ وَإِلَى اللَّهِ
يَرْجِعُ ۝ أَلَمْ يَكُنْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ
لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا ۝ مَا أَلْفَتْ بِينَ قُلُوبِهِمْ
وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ إِنَّ
عِزَّهُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ
اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

वालों को गर्क कर दिया, और वे सब ज़ालिम थे। (54) बिला शुब्हा मख्लूक में सबसे बुरे अल्लाह तआला के नज़दीक ये काफ़िर लोग हैं, तो ये ईमान न लाएँगे।¹ (55) जिनकी यह कैफ़ियत है कि आप उनसे (कई बार) अहद ले चुके हैं (मगर) फिर (भी) वे हर बार अपना अहद तोड़ डालते हैं, और वे (अहद तोड़ने से) डरते नहीं।² (56) सो अगर आप लड़ाई में उन लोगों पर काबू पाएँ तो उन (पर हमला करके उस) के ज़रिये से और लोगों को जो कि उनके अलावा हैं मुन्तशिर “यानी तित्तर-बित्तर” कर दीजिए, ताकि वे लोग समझ जाएँ। (57) और अगर आपको किसी कौम से ख़ियानत (यानी अहद तोड़ने) का अन्देशा हो तो आप (वह अहद) उनको इस तरह वापस कर दीजिए कि (आप और वे उस इत्तिला में) बराबर हो जाएँ,³ बेशक अल्लाह तआला ख़ियानत करने वालों को पसन्द नहीं करते। (58) ♦

और काफ़िर लोग अपने को यह ख़्याल न करें कि वे बच गए, यकीनन वे लोग (खुदा तआला को) अज़िज़ नहीं कर सकते। (59) और उन (काफ़िरों) के लिए जिस क़द्र हो सके तुमसे कुव्वत (यानी हथियार) से और पले हुए घोड़ों से, सामान दुरुस्त रखो, कि उसके ज़रिये से तुम उनपर (अपना) रोब जमाए रखो जो कि (कुफ़ की वजह से) अल्लाह के दुश्मन हैं और तुम्हारे दुश्मन हैं, और उनके अलावा दूसरों पर भी जिनको तुम (ख़ास और मुतैयन तौर पर) नहीं जानते, उनको अल्लाह ही जानता है, और अल्लाह की राह में जो कुछ भी खर्च करोगे वह तुमको पूरा-पूरा दे दिया जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ कमी न होगी।⁴ (60) और अगर वे (काफ़िर) सुलह की तरफ़ झुकें तो आप भी उस तरफ़ झुक जाइए और अल्लाह पर भरोसा रखिए, बिला शुब्हा वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है। (61) और अगर वे लोग आपको धोखा देना चाहें तो अल्लाह तआला आपके लिए काफ़ी हैं, वह वही है जिसने आपको अपनी (ग़ैबी) इम्दाद (फ़रिशतों) से और (ज़ाहिरी इम्दाद) मुसलमानों से कुव्वत दी (62) और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया,⁵ अगर आप दुनिया भर का माल खर्च करते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक़ पैदा न कर सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उनमें आपस में इत्तिफ़ाक़ पैदा कर दिया, बेशक वह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (63) ऐ नबी! आपके लिए अल्लाह तआला काफ़ी है, और जिन मोमिनों ने आपकी पैरवी की है (वे काफ़ी हैं)। (64) ♦

(पृष्ठ 330 का शेष) 5. सो अल्लाह तआला ने बेजुर्म सज़ा नहीं दी।

6. उनके मुकाबले में कोई ऐसी कुव्वत नहीं रखता कि उनके अज़ाब को हटा सके।

7. यानी यह कि बिना जुर्म के हम सज़ा नहीं देते।

8. इन मौजूदा काफ़िरों ने अपनी यह हालत बदली कि उनमें बावजूद कुफ़ के, पहले ईमान लाने की इस्तेदाद (काबलियत) करीब थी। इनकार व मुख़ालफ़त करके उसको दूर कर डाला। पस हमने अपनी ढील देने की नेमत को जो पहले से उनको हासिल थी पकड़-धकड़ से बदल दिया। उसकी वजह यह हुई कि उन्होंने ज़िक्क़ किए गए तरीक़े से काबलियत के करीब होने की नेमत को बदल डाला।

1. ‘ये ईमान न लाएँगे’ फ़रमाना उन्हीं के एतवार से है जो अल्लाह के इल्म में आख़िर तक काफ़िर रहने वाले थे।

2. इस आयत के नाज़िल होने का सबब यहूद बनी कुरैज़ा का अहद तोड़ना है कि उन्होंने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अहद किया था कि हम आपके मुख़ालिफ़ों को मदद न देंगे, और फिर गुज़वा-ए-अहज़ाब में मुश्रीकीन को मदद दी। और भी कई बार ऐसा हो चुका था। हर बार कह देते थे कि हम भूल गए, फिर ताज़ा अहद करते थे, फिर ऐसा ही करते थे। इसपर इन आयतों में आपको उनसे जंग और लड़ाई करने का हुक्म हुआ।

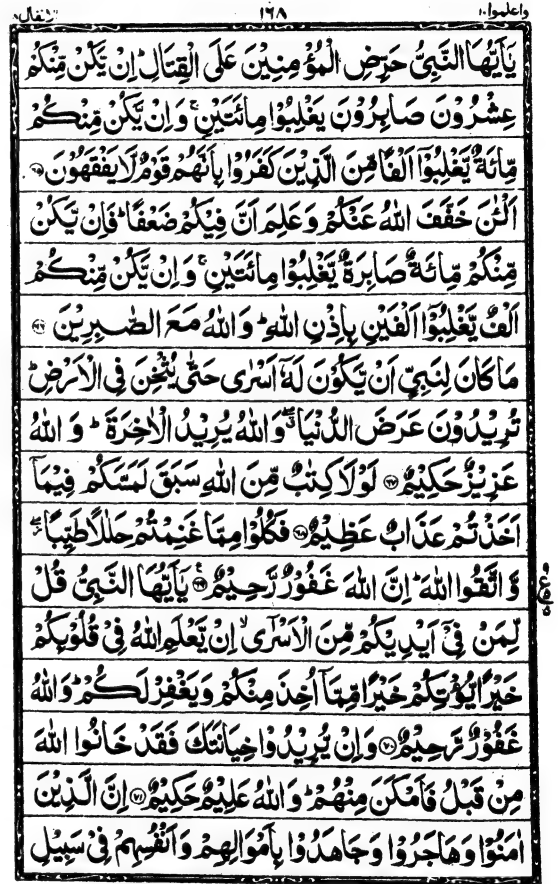
3. यानी इस तरह उस अहद के बाकी न रहने की इत्तिला कर दीजिए। बिना ऐसी इत्तिला के लड़ना ख़ियानत है।

4. हदीस में तीर चलाने की मशक़ और घोड़ों के रखने और घुड़-सवारी सीखने की बड़ी फज़ीलत आई है। अब बन्दूक और तोप तीर के कायम मक़ाम है। और अमूमन कुव्वत में यह सब और वर्जिश यानी कसूरत भी दाख़िल है।

5. ज़ाहिर है कि अगर आपस में इत्तिफ़ाक़ न हो तो कोई काम ख़ास कर दीन की मदद मिलकर नहीं कर सकते।

मुअ्मिनीन (64) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु हररिजिल्-मुअ्मिनी-न अलल्-कितालि, इय्यकुम्-मिन्कुम् अिशरु-न साबिरु-न यगिलबू मि-अतैनि व इय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुंय्यगिलबू अल्फम्-मिनल्लजी-न क-फरु बिअन्नहुम् कौमुल्-ला यफ्कहून (65) अल्आ-न खफ्फ-फल्लाहु अन्कुम् व अलि-म अन्-न फीकुम् जअ्फन्, फ-इय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुन् साबि-रतुंय्यगिलबू मि-अतैनि व इय्यकुम्-मिन्कुम् अल्फुय्-यगिलबू अल्फैनि बि-इज्जिल्लाहि, वल्लाहु मअस्-साबिरीन (66) मा का-न लि-नबिय्यिन् अय्यकू-न लहू अस्रा हत्ता युस्वि-न फिल्अजि, तुरीदू-न अ-रजद्-दुन्या वल्लाहु युरीदुल् आखि-र-त, वल्लाहु अजीजुन् हकीम (67) लौ ला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क लमस्सकुम् फीमा अखज्जुम् अजाबुन् अजीम (68) फकुलू मिम्मा गनिम्तुम् हलालन् तय्यिबन्-व-वत्तकुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह गफूररहीम (69) ❖



ऐ पैगम्बर! आप मोमिनों को जिहाद की तरगीब दीजिए, अगर तुममें के बीस आदमी साबित कदम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर गालिब आ जाएंगे, और (इसी तरह) तुममें के सौ आदमी हों तो एक हजार काफिरों पर गालिब आ जाएंगे।¹ इस वजह से कि वे ऐसे लोग हैं जो (दीन को) कुछ नहीं समझते। (65) अब अल्लाह ने तुमपर तख्फ़ीफ़ “यानी कमी और नरमी” कर दी और मालूम कर लिया कि तुममें हिम्मत की कमी है, सो अगर तुममें के सौ आदमी साबित कदम रहने वाले होंगे तो दो सौ पर गालिब आ जाएंगे, और अगर तुममें के हजार होंगे तो दो हजार पर अल्लाह के हुक्म से गालिब आ जाएंगे, और अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ हैं। (66) नबी (की शान) के लायक नहीं कि उनके कैदी (बाकी) रहें (बल्कि कत्ल कर दिए जाएँ) जब तक कि वह ज़मीन में अच्छी तरह (काफिरों का) खून न बहा लें।² तुम तो दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह तआला आखिरत (की मस्तहत) को चाहते हैं, और अल्लाह तआला बड़े ज़बरदस्त हैं, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (67) अगर खुदा तआला का एक लिखा हुआ (मुकद्दर) न हो चुकता तो जो मामला तुमने इख्तियार किया है उसके बारे में तुमपर कोई बड़ी सज़ा आ पड़ती। (68) सो जो कुछ तुमने लिया है उसको हलाल पाक (समझकर) खाओ और अल्लाह तआला से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला बड़े बख्शाने वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (69) ❖

ऐ पैगम्बर! आपके कब्जे में जो कैदी हैं, आप उनसे फ़रमा दीजिए कि अगर अल्लाह तआला को तुम्हारे दिल में ईमान मालूम होगा तो जो कुछ (फ़िदये में) तुमसे लिया गया है (दुनिया में) उससे बेहतर तुमको दे देगा, और (आखिरत में) तुमको बख्श देगा, और अल्लाह तआला बड़ी मरिफ़रत वाले हैं, बड़ी रहमत वाले हैं। (70) और अगर (फ़र्ज कर लो) ये लोग आपके साथ ख़ियानत करने (यानी अहद तोड़ने) का इरादा रखते हों तो (कुछ फ़िक्र न कीजिए) इससे पहले उन्होंने अल्लाह के साथ ख़ियानत की थी, फिर अल्लाह तआला ने उनको गिरफ़्तार करा दिया, और अल्लाह तआला ख़ूब जानने वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (71) बेशक जो लोग

1. अगरवे यहाँ ख़बर देने का सीगा इस्तेमाल किया है कि इतने आदमी इतनों पर गालिब आ जाएंगे लेकिन मकसूद ख़बर नहीं बल्कि उम्मीद और हुक्म है। यानी जमे रहना वाजिब है और भागना हराम है, और ख़बर के उनवान से ताबीर करने में बतौर किनाए के मुबालगा व ताकीद है, जिसका हासिल यह है कि जैसे ग़्लबे की ख़बर यकीनी होने पर जमे रहना वाजिब होना चाहिए उसी तरह अब भी वाजिब है।
2. इन आयतों के नाज़िल होने का सबब यह है कि बद्र में सत्तर काफ़िर पकड़े हुए आए तो आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से उनके बारे में मशिवरा किया। बाज़ ने मशिवरा दिया कि उनको कत्ल कर देना चाहिए, बाज़ ने कहा कि उनसे कुछ माल लेकर छोड़ देना चाहिए। आप पर वह्म नाज़िल हुई कि इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमा दीजिए कि तुमको इख्तियार दिया जाता है, चाहे उनको कत्ल कर दो चाहे उनसे फ़िदया लेकर छोड़ दो, मगर इस सूरत में अगले साल सत्तर आदमी शहीद होंगे। गरज़ अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की यही राय हुई कि ख़ैर हम शहीद हो जाएँगे, इस वक़्त उनको फ़िदया लेकर छोड़ दिया जाए, शायद ये मुसलमान हो जाएँ और इस वक़्त मुसलमानों को माली मदद मिले। आपने भी अपनी रहम-दिली की वजह से इस राय को पसन्द फ़रमाया। चुनौचे चन्द लोगों को छोड़कर कि वे तो कत्ल किए गए, जैसे उक़बा, नज़र और तअ़मा, बाकी सब कैदियों से फ़िदया लेकर छोड़ दिया गया। सिर्फ़ हज़रत अबुलआस रज़ियल्लाहु अन्हुम को कि वह भी उस वक़्त उनमें थे, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की मरज़ी से बिना कुछ लिए हुए छोड़ दिया। इसको शरीअत की इस्तिहाह में ‘मन्न’ कहते हैं। इसपर ये आयतें ‘मा का-न लि नबिय्यिन्’ से ‘अज़ाबुन अज़ीम’ तक नाज़िल हुई। इन आयतों से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को इस फ़िदए के हलाल व हराम होने में शुब्हा हो गया तो आयत ‘फ़कुलू.....आख़िर तक’ नाज़िल हुई। चूँकि बाज़े कैदी फ़िदया देने के बाद मुसलमान हो गए थे, जैसे हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम वग़ैरह और उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़िदया देने की वजह से अपने मुफ़लिस हो जाने की शिकायत की, इसपर आयत ‘या अय्युहन्नबिय्यु कुल लिमन् फ़ी ऐदीकुम्.....’ नाज़िल हुई। इस किस्से का बाकी और आख़िरी हिस्सा यह है कि उसके बाद बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आपको रोते हुए देखा। पूछा तो आपने फ़रमाया कि अज़ाब के आसार बहुत करीब आ गए थे मगर अल्लाह तआला का फ़ज्र हुआ कि नाज़िल नहीं हुआ।

आवव्-व न-सरु उलाइ-क बअजुहुम् औलिया-उ बअजिन्, वल्लजी-न आमनू व लम् युहाजिरु मा लकुम् मिंवला-यतिहिम् मिन् शैइन् हत्ता युहाजिरु व इनिस्तन्सरुकुम् फिद्दीन फ-अलैकुमुन्नस्रु इल्ला अला कौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाकुन्, वल्लाहु बिमा तअमलू-न बसीर (72) वल्लजी-न क-फरु बअजुहुम् औलिया-उ बअजिन्, इल्ला तफअलूहु तकुन्

फिल्तुन् फिल्अर्जि व फसादुन् कबीर (73) वल्लजी-न आमनू व हाजरु व जाहदू फी सबीलिल्लाहि वल्लजी-न आवव्-व न-सरु उलाइ-क हुमुल्-मुअमिन्-न हक्कन्, लहुम् मग्फि-रतुव्-व रिज्कुन् करीम (74) वल्लजी-न आमनू मिम्-बअदु व हाजरु व जाहदू म-अकुम् फ-उलाइ-क मिन्कुम्, व उलुल्-अर्हामि बअजुहुम् औला बिबअजिन् फी किताबिल्लाहि, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम ♦ (75) ♦

وَالَّذِينَ أَوْفُوا نَصْرًا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَايَتِهِمْ مِنْ
شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجَرُوا وَإِنْ اسْتَفْضَرْتُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمْ
النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ
إِلَّا تَتَّقُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ
أَوْفُوا نَصْرًا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَ
رِزْقٌ كَرِيمٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدِ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ
فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ
سُورَةُ التَّوْبَةِ مَكِّيَّةٌ ثَمَانِي وَخَمْسُونَ آيَةً وَمِنْ آيَاتِهِ الَّذِينَ
بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ
فَيَسُخَرُونَ فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ
مُعْجِزِي اللَّهِ وَأَنَّ اللَّهَ يُخَذِّرُ الْكَافِرِينَ وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ

9 सूरतुत्तौ-बति 113

(मदनी) इस सूर: में अरबी के

11360 अक्षर, 2537 शब्द 129 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

बराअतुम्-मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लजी-न आहतुम् मिनल् मुशिरकीन (1) फसीह फिल्अर्जि अर्ब-अ-त अशहुरिंव्वअल्मू अन्नकुम् गैरु मुअजिजिल्लाहि व अन्नल्ला-ह मुख़िजल्-काफिरीन (2) व अज़ानुम् मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल्-हज्जिल्-अकबारि

ईमान लाए उन्होंने हिजरत भी की और अपने माल और जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी किया, और जिन लोगों ने रहने को जगह दी और मदद की ये लोग आपस में एक-दूसरे के वारिस होंगे, और जो लोग ईमान तो लाए और हिजरत नहीं की, तुम्हारा उनसे मीरास का कोई ताल्लुक नहीं,¹ जब तक कि वे हिजरत न करें, और अगर वे तुमसे दीन के काम में मदद चाहें तो तुम्हारे ज़िम्मे मदद करना (वाजिब) है, मगर उस कौम के मुकाबले में (नहीं) कि तुममें और उनमें आपस में (सुलह का) अहद हो, और अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों को देखते हैं। (72) और जो लोग काफिर हैं वे आपस में एक-दूसरे के वारिस हैं, अगर इस (ऊपर ज़िक्र हुए हुक्म) पर अमल न करोगे तो दुनिया में बड़ा फ़ितना और बड़ा फ़साद फैलेगा। (73) और जो लोग (अव्वल) मुसलमान हुए और उन्होंने (नबी की हिजरत के ज़माने में) हिजरत की, और अल्लाह की राह में जिहाद (भी) करते रहे, और जिन लोगों ने (उन हिजरत करने वालों को) अपने यहाँ ठहराया और (उनकी) मदद की, ये लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं, उनके लिए (आखिरत में बड़ी) मग़्फ़िरत और (जन्नत में बड़ी) इज़्ज़त वाली रोज़ी है। (74) और जो लोग (नबी के हिजरत के ज़माने के) बाद के ज़माने में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया,² सो ये लोग (अगरचे फ़ज़ीलत में तुम्हारे बराबर नहीं लेकिन फिर भी) तुम्हारी ही गिन्ती में हैं, और जो लोग रिश्तेदार हैं किताबुल्लाह में एक-दूसरे (की मीरास) के ज़्यादा हक़दार हैं, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानते हैं।³ ♦ (75) ♦

9 सूर: तौबा 113

सूर: तौबा⁴ मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 129 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

अल्लाह की तरफ़ से और उसके रसूल की तरफ़ से, उन मुशिरकीन (के अहद) से अलग होना है जिनसे तुमने (बिना मुदत तय किए हुए) अहद कर रखा था। (1) सो तुम लोग इस सरज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और (यह भी) जान रखो कि तुम खुदा तआला को आजिज़ नहीं कर सकते, और यह (भी जान रखो) कि बेशक अल्लाह तआला (आखिरत में) काफ़िरों को रुस्वा करेंगे। (2) और अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से बड़े हज़ की तारीख़ों में आम लोगों के सामने ऐलान (किया जाता) है कि अल्लाह तआला और उसका रसूल दोनों अलग होते हैं उन मुशिरकीन (को अमन देने) से। फिर अगर तुम (कुफ़्र से) तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुमने (इस्लाम से) मुँह मोड़ा तो यह समझ रखो कि तुम खुदा तआला को

1. यानी न तुम उनके वारिस न वे तुम्हारे वारिस।

2. यानी काम तो सब किए मगर बाद में।

3. इसलिए हर वक़्त की मस्लहत के मुनासिब हुक्म मुक़र्रर फ़रमाते हैं।

4. इस सूर: में चन्द ग़ज़वात (यानी लड़ाइयाँ और जंगें) और चन्द वाकिआत जो कि ग़ज़वात ही के हुक्म में हैं, वे ज़िक्र किए गए हैं, जैसे अरब के कबीलों से अहद ख़त्म करने का ऐलान, मक्का की फ़तह, ग़ज़वा-ए-हुनैन, हरम शरीफ़ से काफ़िरों का निकालना, ग़ज़वा-ए-तबूक और उन्हीं आयतों के ज़िम्न में ताबे बनाकर हिजरत का वाकिआ।

अन्नल्ला-ह बरीउम् मिनल्-मुशिरकी-न व रसूलुह्, फ-इन् तुब्तुम् फहु-व खैरुल्लकुम् व इन् तवल्लैतुम् फअलमू अन्नकुम् गैरु मुअजिजिल्लाहि, व बशिशारिल्लजी-न क-फरु बि-अजाबिन् अलीम (3) इल्लल्लजी-न आहत्तुम् मिनल्-मुशिरकी-न सुम्-म लम् यन्कुसूकुम् शैअव्-व लम् युजाहिरु अलैकुम् अ-हदन् फ-अतिम्मू इलैहिम् अह-दहुम् इला मुदतिहिम्, इन्नल्ला-ह

युहिब्बुल्-मुत्तकीन (4) फ-इजन्स-लखल् अशहुरुल्-हुरुमु फक्तुलुल्-मुशिरकी-न हैसु वजत्तुमूहुम् व खुजूहुम् वह्सुरुहुम् वकअदू लहुम् कुल्-ल मर्सदिन् फ-इन् ताबू व अकामुस्सला-त व आतवुज्जका-त फ-खल्लू सबीलहुम्, इन्नल्ला-ह गफूररहीम (5) व इन् अ-हदुम् मिनल् मुशिरकीनस्तजार-क फ-अजिरहु हत्ता यस्म-अ कलामल्लाहि सुम्-म अब्लिगहु मअम्-नहू, जालि-क बिअन्नहुम् कौमुल्ला यअलमून (6) ❖

कै-फ यकूनु लिम्मुशिरकी-न अहदुन् अिन्दल्लाहि व अिन्-द रसूलिही इल्लल्लजी-न आहत्तुम् अिन्दल् मस्जिदिल्-हरामि फमस्तकामू लकुम् फस्तकीमू लहुम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्

मुत्तकीन (7) कै-फ व इय्यज्हरु अलैकुम् ला यर्कुबू फीकुम् इल्लव्-व ला जिम्म-तन्, युरजूनकुम् बिअफवाहिहिम् व तअबा कुलूबुहुम् व अक्सरुहुम् फासिकून (8) इशतरौ बिआयातिल्लाहि स-मनन् कलीलन् फ-सद्दू अन् सबीलिही, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअमलून (9) ला यर्कुबू-न फी मुअमिनिन् इल्लव्-व ला जिम्म-तन्, व उलाइ-क हुमुल्

وَالْعَلِيَّةُ ١٤٠
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَبَشِّرِ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِعَذَابِ الْبَاقِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوا شَيْئًا وَلَمْ يَطْهَرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتَوْا
إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مَدَنِهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝
وَإِذَا أَسْلَمْنَا الْأَمَّهْرُ الْحَرَمُ فَأَتَيْنَا الْبَشْرِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ
وَوَحَدْتُمُوهُمْ وَأَحْضَرْتُمُوهُمْ وَأَقْعَدْتُمُوهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ ۚ وَإِنْ
تَابُوا وَآفَاقُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَغَلَّوْا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ
فَاجْرَهُ حَتَّىٰ يَمِيعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۚ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ
اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
أَحْرَامٍ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِينَ ۝ كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَقْبُضُوا فِيكُمْ
إِلَّا ذَٰلِكُمْ ۚ يَرْضَوْنَكُمْ بِأَوَاهِيهِمْ وَتَأَنَّىٰ قُلُوبُهُمْ ۚ
أَكْثَرُهُمْ فَسِقُونَ ۚ ائْتُوا بِآيَاتِ اللَّهِ مِنْ قَلِيلٍ ۚ فَصَدَّ

مَرْكَز

आजिज़ नहीं कर सकोगे, और उन काफ़िरो को एक दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। (3) (हाँ) मगर वे मुशिरकीन (इससे अलग हैं) जिनसे तुमने अहद लिया, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ ज़रा कमी नहीं की और न तुम्हारे मुकाबले में किसी की मदद की, सो उनके मुआहदे को उनकी (मुकर्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, वाकई अल्लाह तआला (अहद के खिलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं। (4) सो जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएँ तो (उस वक़्त) उन मुशिरकों को जहाँ पाओ वहाँ मारो, और पकड़ो और बाँधो, और दाव-घात के मौकों में उनकी ताक में बैठो,¹ फिर अगर वे (कुफ़्र से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगेँ और ज़कात देने लगेँ तो उनका रास्ता छोड़ दो, वाकई अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। (5) और अगर मुशिरकों में से कोई शख्स आपसे पनाह का तालिब हो तो आप उसको पनाह दीजिए, ताकि वह अल्लाह का कलाम सुन ले,² फिर उसको उसकी अमन की जगह पहुँचा दीजिए,³ यह (हुक्म) इस सबब से है कि वे ऐसे लोग हैं कि पूरी ख़बर नहीं रखते।⁴ (6) ❖

उन (कुरैश के) मुशिरकों का अहद अल्लाह तआला के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक कैसे (रियायत के काबिल) रहेगा⁵ मगर जिन लोगों से तुमने मस्जिदे-हराम के नज़दीक अहद लिया है,⁶ सो जब तक ये लोग तुमसे सीधी तरह रहें, तुम भी उनसे सीधी तरह रहो,⁷ बेशक अल्लाह तआला (अहद के खिलाफ़ करने से) एहतियात रखने वालों को पसन्द करते हैं।⁸ (7) कैसे (उनका अहद रियायत के काबिल रहेगा) हालाँकि (उनकी हालत यह है कि) अगर वे तुमपर कहीं ग़ल्बा पा जायें तो तुम्हारे बारे में न रिश्तेदारी का ख़याल करें और न क़ौल व क़रार का। ये लोग तुमको अपनी ज़बानी बातों से राज़ी कर रहे हैं, और उनके दिल (उन बातों को) नहीं मानते, और उनमें ज़्यादा आदमी शरीर हैं। (8) उन्होंने अल्लाह के अहक़ाम के बदले (दुनिया की) वाक़ी न रहने वाली मत्ताअ “यानी सामान और फ़ायदे” को इख़्तियार कर रखा है, सो ये लोग उसके

1. यानी लड़ाई में जो-जो होता है सबकी इजाज़त है।

2. मुराद देने हक़ के मुतलक़ दलाइल हैं।

3. यानी पहुँचने दीजिए ताकि वे सोच-समझकर अपनी राय कायम करे।

4. इसलिए किसी क़द्र मोहलत देना ज़रूरी है।

5. क्योंकि रियायत तो उस अहद की होती है जिसको दूसरा शख्स खुद न तोड़े, वरना रियायत बाक़ी नहीं रहती। मतलब यह कि जब ये लोग खुद अहद को तोड़ेंगे तो उस वक़्त इस तरफ़ से भी रियायत न होगी।

6. यानी उनसे उम्मीद है कि ये अहद को कायम रखेंगे।

7. यानी जब तक ये लोग अहद न तोड़ें तुम भी उनसे किए हुए अहद की मुद्दत पूरी करो। चुनाँचे बराअत यानी उनसे अलग हो जाने के हुक्म के नाज़िल होने के वक़्त इस मुद्दत में नौ महीने वाक़ी रहे थे, और उनके अहद न तोड़ने की वजह से उनकी यह मुद्दत पूरी की गई।

8. पस तुम भी एहतियात रखने से अल्लाह तआला के महबूब हो जाओगे।

मुअ्तदून (10) फ-इन् ताबू व अकामुस्सला-त व आतवुज्जका-त फ-इख्वानुकुम् फिद्दीनि,
व नुफस्सिलुल्-आयाति लिकौमिंय्यअलमून (11) व इन्न-कसू ऐमानहुम् मिम्-बअदि
अहिदिहिम् व त-अनू फी दीनिकुम् फकातिलू अ-इम्मतल्-कुफिर इन्नहुम् ला ऐमा-न लहुम्
लअल्लहुम् यन्तहून (12) अला

तुकातिलू-न कौमन् न-कसू ऐमानहुम् व
हम्मू बि-इख्जारिर्सूलि व हुम् ब-दऊकुम्
अव्व-ल मरतिन्, अतख्शौनहुम् फल्लाहु
अहक्कु अन् तख्शौहु इन् कुन्तुम्
मुअ्मिनीन (13) कातिलूहुम्

युअज्जिबहुमुल्लाहु बिऐदीकुम् व
युखिजहिम् व यन्सुरकुम् अलैहिम् व
यशिफ सुदू-र कौमिम्-मुअ्मिनीन (14)

व युजिहब् गै-ज कुलूबिहिम्, व
यतूबुल्लाहु अला मय्यशा-उ, वल्लाहु
अलीमुन् हकीम (15) अम् हसिब्तुम्
अन् तुतरक् व लम्मा यअ-लमिल्ला-
-हुल्लजी-न जाहदू मिन्कुम् व लम्
यत्तखिजू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही

व लल्मुअ्मिनी-न वली-जतन्, वल्लाहु खबीरुम्-बिमा तअ्मलून (16) ♦

मा का-न लिल्मुशिरकी-न अय्यअ्मुरु मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अला अन्फुसिहिम्
बिल्कुफिर, उलाइ-क हबितत् अअ्मालुहुम् व फिन्नारि हुम् खालिदून (17) इन्नमा यअ्मुरु
मसाजिदल्लाहि मन् आम-न विल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि व अकामस्सला-त व आतज्जका-त

وَالْعَبَا ۝ ۱۷۱ ۝ التَّوْبَةُ ۝ ۱۷۲ ۝

عَنْ سَيِّدِهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْجُونَ
فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝ وَإِنْ
تَأْتُوا وَاقِمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَخُذُوا فِي الدِّينِ
وَقَضُوا الْأَيْتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ أَيْمَانَكُمْ
مَنْ بَعْدَ عَهْدِهِمْ وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَلَيْسَ الْأَكْفَرُ
إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْهَوْنَ ۝ أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا
كُنْتُمْ أَيْمَانَهُمْ وَهَبُوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَّوْكُمْ أَوَّلَ
مَرَّةٍ كُنْتُمْ تَخْشَوْنَ اللَّهَ أَحَقَّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝
قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِيهِمْ وَيَصْرِكُمْ عَلَيْهِمْ وَ
يُشْفَعُ صَدُورُ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ۝ وَيَذْهَبُ غَيْظُ قُلُوبِهِمْ
وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ أَمْ
حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَنْ يُعْلِمَ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ
وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ
وَلِجَنَّةٍ ۝ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ
أَنْ يَعْبُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ بِالْكَفْرِ
أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ۝ إِنَّمَا

(यानी अल्लाह तआला के) रास्ते से हटे हुए हैं, (और) यकीनन उनका यह अमल बहुत ही बुरा है। (9) ये लोग किसी मुसलमान के बारे में (भी) न रिश्तेदारी का पास करें और न कौल व करार का, और ये लोग बहुत ही ज़्यादा कर रहे हैं। (10) सो अगर ये लोग (कुफ़ से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगे और ज़कात देने लगे तो वे तुम्हारे दीनी भाई हो जाएँगे,¹ और हम समझदार लोगों के लिए अहकाम को खूब तफ़सील से बयान करते हैं। (11) और अगर वे लोग अहद करने के बाद अपनी कस्मों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन (इस्लाम) पर ताना मारें तो तुम लोग इस इरादे से कि ये बाज़ आ जाएँ, उन कुफ़ के पेशवाओं से (खूब) लड़ो, क्योंकि (इस सूरत की) कस्में बाकी नहीं रहीं। (12) तुम ऐसे लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी कस्मों को तोड़ डाला, और रसूल को वतन से निकालने की तजवीज़ की, और उन्होंने तुमसे पहले खुद छेड़ निकाली,² क्या उनसे (लड़ने से) तुम डरते हो? सो अल्लाह तआला इस बात के ज़्यादा मुस्तहिक हैं कि तुम उनसे डरो, अगर तुम ईमान रखते हो। (13) उनसे लड़ो, अल्लाह तआला (का वायदा है कि) उनको तुम्हारे हाथों सज़ा देगा और उनको ज़लील (व रुस्वा) करेगा, और तुमको उनपर ग़ालिब करेगा, और बहुत-से मुसलमानों के दिलों को शिफ़ा देगा। (14) और उनके दिलों के ग़ैज़ (व ग़ज़ब) को दूर करेगा, और जिसपर मन्ज़ूर होगा अल्लाह तआला तवज्जोह (भी) फ़रमाएगा,³ और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं। (15) क्या तुम यह ख़याल करते हो कि तुम यूँ ही छोड़ दिए जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह तआला ने (ज़ाहिरी तौर पर) उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुममें से (ऐसे मौके पर) जिहाद किया हो, और अल्लाह और रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को खुसूसी दोस्त न बनाया हो,⁴ और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है।⁵ (16) ♦

मुशिरकों में यह काबलियत ही नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जिस हालत में कि वे खुद अपने ऊपर कुफ़ (की बातों) का इकरार कर रहे हैं। उन लोगों के सब आमाल बेकार हैं⁶ और दोज़ख़ में वे लोग हमेशा रहेंगे। (17) हाँ अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है जो अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान लाएँ और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और सिवाय अल्लाह के किसी से

1. यानी उनके अहद तोड़ने वगैरह पर बिलकुल नज़र न होगी, चाहे उन्होंने कुछ ही किया हो।
2. यानी तुम्हारी तरफ़ से अहद को पूरा करने में कोई कमी नहीं हुई, उन्होंने बैठे-बिठाए खुद एक शोशा छोड़ा। पस ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो।
3. यानी मुसलमान होने की तौफ़ीक़ देगा। चुनाँचे मक्का फ़तह होने के दिन बाज़े लड़े और ज़लील व मक्तूल हुए और बाज़े मुसलमान हो गए।
4. जिसके ज़ाहिर होने का अच्छा ज़रिया ऐसे मौके का जिहाद है जहाँ मुकाबला अपने रिश्तेदारों और करीबी लोगों से हो कि इसमें पूरा इन्तिहान हो जाता है कि कौन अल्लाह को चाहता है और कौन बिरादरी को।
5. ऊपर मुशिरकीन की बुराइयाँ ज़िक्र की गई थीं। चूँकि उनको अपने बाज़ आमाल जैसे मस्जिदे-हराम की ख़िदमत और हाजियों को पानी पिलाने वगैरह पर गर्व था, इसलिए आगे पिछले मज़मून को मुकम्मल करने के लिए उनके इस फ़ख़र और गर्व का इन चन्द आयतों में जवाब देते हैं। और इसी के ज़िम्न में मुसलमानों के एक इख़्तिलाफ़ी मसले का जिसमें उस वक़्त कलाम हुआ था कि ईमान के बाद सबसे अफ़ज़ल अमल आया मस्जिदे-हराम की तामीर और हाजियों को पानी पिलाना है या जिहाद, आयत 'अ-जअल्लुम्.....' में जवाब देते हैं।
6. इस वजह से कि उनकी कबूलियत की शर्त नहीं पाई जाती।

व लम् यख्-श इल्लल्ला-ह, फ-असा उलाइ-क अय्यकून् मिनल् मुस्तदीन (18)
 अ-जअल्लुम् सिका-यतल्-हाज्जि व अिमा-रतल् मस्जिदिल्-हरामि कमन् आम-न बिल्लाहि
 वल्यौमिल्-आखिरि व जाह-द फी सबीलिल्लाहि, ला यस्तवू-न अिन्दल्लाहि, वल्लाहु ला
 यहिदिल् कौमज्जालिमीन ❖ (19)

अल्लजी-न आमनू व हाजरू व जाहदू
 फी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व
 अन्फुसिहिम् अअ-जमु द-र-जतन्
 अिन्दल्लाहि, व उलाइ-क हुमुल् फाइजून
 (20) युबशिशरुहुम् रब्बुहुम् बिरस्मतिम्
 मिन्हु व रिज्वानिन्व-व जन्नातिल्-लहुम्
 फीहा नअीमुम्-मुकीम (21) खालिदी-न
 फीहा अ-बदन्, इन्नल्ला-ह अिन्दहू
 अज्रन् अजीम (22) या अय्युहल्लजी-न
 आमनू ला तत्तखिजू आबा-अकुम् व
 इख्वानकुम् औलिया-अ इनिस्त-हब्बुल्-
 कुफ्-र अलल्-ईमानि, व मय्य-तवल्लहुम्
 मिन्कुम् फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून

(23) कुल् इन् का-न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख्वानुकुम् व अज्वाजुकुम् व
 अशीरतुकुम् व अम्वाल्-निक्त-रफ्तुमूहा व तिजारतुन् तख्शौ-न कसादहा व मसाकिनु
 तरजौनहा अहब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फी सबीलिही फ-तरब्बसू
 हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही, वल्लाहु ला यहिदिल् कौमल्-फासिकीन (24) ❖

يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ
 الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ
 أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ أَجَعَلْتُمْ بَيْنَافَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ
 الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ
 فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
 الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي
 سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ
 اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ
 مِنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّتْ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ خَلِدِينَ
 فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ
 آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا
 الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَاُولَٰئِكَ هُمُ
 الظَّالِمُونَ قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ
 أَرْزَأُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ
 تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكَنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبُّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ
 وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ

न डरें, सो ऐसे लोगों के मुताल्लिक उम्मीद (यानी वायदा) है कि अपने मकसूद तक पहुँच जाएँगे। (18) क्या तुम लोगों ने हाजियों के पानी पिलाने को और मस्जिदे-हराम के आबाद रखने को उस शख्स (के अमल) के बराबर करार दे लिया जो कि अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान लाया हो, और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया हो, ये लोग अल्लाह के नज़दीक बराबर नहीं, और जो लोग बेइन्साफ़ है¹ अल्लाह तआला उनको समझ नहीं देता। (19) जो लोग ईमान लाए और (अल्लाह के वास्ते) उन्होंने वतन छोड़ा और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद किया, वे दर्जे में अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़े हैं, और यही लोग पूरे कामयाब हैं। (20) उनका रब उनको खुशख़बरी देता है अपनी तरफ़ से बड़ी रहमत और बड़ी रज़ामन्दी और (जन्नत के) ऐसे बाग़ों की, कि उनके लिए उन (बाग़ों) में हमेशा रहने वाली नेमत होगी। (21) (और) उनमें ये हमेशा-हमेशा को रहेंगे। वेशक अल्लाह तआला के पास बड़ा अन्न है² (22) ऐ ईमान वालो! अपने बापों को, अपने भाइयों को (अपना) रफ़ीक़ “यानी साथी और दोस्त” मत बनाओ, अगर वे लोग कुफ़्र को ईमान के मुकाबले में (ऐसा) अज़ीज़ रखें (कि उनके ईमान लाने की उम्मीद न रहे), और जो शख्स तुममें से उनके साथ दोस्ती और दिली ताल्लुक रखेगा सो ऐसे लोग बड़े नाफ़रमान हैं³ (23) आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा कुन्बा और वे माल जो तुमने कमाए हैं, और वह तिजारत जिसमें निकासी न होने का तुमको अन्देशा हो, और वे घर जिनको तुम पसन्द करते हो, तुमको अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा प्यारे हों⁴ तो तुम इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तआला (हिजरत न करने की सज़ा का) अपना हुक्म भेज दें, और अल्लाह तआला बेहुक्मी करने वालों को उनके मकसूद तक नहीं पहुँचाता⁵ (24) ♦

1. मुराद मुश्रिक हैं।

2. ऊपर हिजरत का ज़िक्र था जिसमें वतन और रिश्तेदारों व कुन्बे वालों और अपने माल व जायदाद से ताल्लुक ख़त्म करना पड़ता है, जो कि तबई तौर पर नागवार मालूम होता है, जो कभी हिजरत न करने का सबब हो सकता है। इसलिए आगे उन ताल्लुकात के ग़ालिब होने की मज़मूमत (निंदा) फ़रमाते हैं।

3. मतलब यह कि हिजरत से बड़ी रुकावट उन लोगों का ताल्लुक है और खुद वही जायज़ नहीं, फिर हिजरत में क्या दुश्वारी है।

4. इन चीज़ों का ज्यादा प्यारा होना जो बुरा है। मुराद इससे वह मोहब्बत है जो अल्लाह और रसूल के अहक़ाम पर अमल करने से रोक दे। तर्बायत का जो मैलान होता है वह मुराद नहीं।

5. यानी उनका मकसूद उन चीज़ों से फ़ायदा हासिल करना था, वह बहुत जल्द उनकी उम्मीद के खिलाफ़ मौत से ख़त्म हो जाता है।

ल-कद् न-स-रकुमुल्लाहु फी मवाति-न कसीरतिव्-व यौ-म हुनैनिन् इज् अअ-जबत्कुम्
 कस्-रतुकुम् फ-लम् तुग्नि अन्कुम् शैअव्-व जाकत् अलैकुमुल् अरजु बिमा रहबत् सुम्-म
 वल्लैतुम् मुद्बिरीन (25) सुम्-म अन्जलल्लाहु सकीन-तहू अला रसूलिही व अलल्-
 मुअमिनी-न व अन्ज-ल जुनूदल्लम् तरौहा व अज्जबल्लजी-न क-फ़रु, व ज़ालि-क
 जज़ाउल्-काफ़िरीन (26) सुम्-म
 यतूबुल्लाहु मिम्-बअदि ज़ालि-क अला
 मय्यशा-उ, वल्लाहु ग़फ़ूररहीम (27) या
 अय्युहल्लजी-न आमनू इन्नमल्-
 मुशिरकू-न न-जसुन् फ़ला यकरबुल्
 मस्जिदल्-हरा-म बअ-द आमिहिम् हाज़ा
 व इन् ख़िफ़तुम् अैल-तन् फ़सौ-फ़
 युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़िलही इन्
 शा-अ, इन्नल्ला-ह अलीमुन् हकीम
 (28) कातिलुल्लजी-न ला युअमिन्-न
 बिल्लाहि व ला बिल्यौमिल्-आख़िरि व
 ला युहरिम्-न मा हरमल्लाहु व रसूलुहू
 व ला यदीनू-न दीनल्-हक्कि
 मिनल्लजी-न ऊतुल्किता-ब हत्ता
 युअतुल् जिज़य-त अय्यदिव्-व हुम्
 सागिरुन (29) ❖

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِي
 مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۝ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ اِذْ عَجَبْتَ كَمْ كَثُرَتْ كُمْ فَلَمْ
 تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
 وَلَيْتُمْ مُدَبِّرِينَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِينَتَهُ عَلٰى رَسُوْلِهِ وَ
 عَلٰى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَنْزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ
 كَفَرُوْا ۝ وَذٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِيْنَ ۝ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ
 ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۝ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا
 اِنَّمَا الْمَشْرُكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ
 عَامِهِمْ هٰذَا ۝ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمْ اللّٰهُ مِنْ
 فَضْلِهِ ۝ اِنْ شَآءَ اِنَّ اللّٰهَ عَلَيْهِ حَكِيْمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
 لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
 اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
 الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُوْنَ ۝
 وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ اِبْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصْرٰى الْمَسِيْحُ
 اِبْنُ اللّٰهِ ۝ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهُوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ
 كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ اَتٰى يَوْمُكُوْنَ ۝ اِنَّا خَدُّوْا

तुमको खुदा तआला ने (लड़ाई के) बहुत-से मौकों में (काफिरों पर) गल्बा दिया, और हुनैन के दिन भी,¹ जबकि तुमको अपने मजमे के ज्यादा होने से ग़रा “यानी एक तरह का उस मजमे पर फ़ख़र” हो गया था, फिर वह ज्यादाती तुम्हारे लिए कुछ कारामद न हुई, और तुमपर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंगी करने लगी, फिर (आख़िर) तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए। (25) फिर (उसके बाद) अल्लाह तआला ने अपने रसूल (के दिल) पर और दूसरे मोमिनों (के दिलों) पर अपनी (तरफ़ से) तसल्ली नाज़िल फ़रमाई,² और (मदद के लिए) ऐसे लश्कर नाज़िल फ़रमाए जिनको तुमने नहीं देखा और काफिरों को सज़ा दी, और यह काफिरों की (दुनिया में) सज़ा है। (26) फिर (उसके बाद) खुदा तआला जिसको चाहें तौबा नसीब कर दें, और अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत करने वाले, बड़ी रहमत करने वाले हैं। (27) ऐ ईमान वालो! मुशिरक लोग (अपने गन्दे और नापाक अक़ीदों की वजह से) बिल्कुल नापाक हैं, सो ये लोग इस साल के बाद मस्जिदे-हराम के पास न आने पाएँ, और अगर तुमको तंगदस्ती का अन्देशा हो तो (खुदा पर भरोसा रखो) खुदा तुमको अपने फज़ल से अगर चाहेगा (उनका) मोहताज न रखेगा, बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। (28) अहले किताब जो कि न खुदा पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं और न कियामत के दिन पर, और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं जिनको खुदा तआला ने और उसके रसूल ने हराम बतलाया है, और न सच्चे दीन (इस्लाम) को कबूल करते हैं, उनसे यहाँ तक लड़ो कि वे मातहत होकर और रअिय्यत बनकर जिज़या “यानी इस्लामी हुकूमत में रहने का टैक्स” देना मन्ज़ूर करें। (29) ♦

और यहूद (में से बाज़) ने कहा कि उज़ैर खुदा के बेटे हैं, और ईसाइयों (में से अक्सर) ने कहा कि मसीह खुदा के बेटे हैं, यह उनका कौल है, उनके मुँह से कहने का,³ यह भी उन लोगों जैसी बातें करने लगे जो इनसे पहले काफिर हो चुके हैं,⁴ खुदा इनको ग़ारत करे, ये किधर उल्टे जा रहे हैं। (30) उन्होंने खुदा को

1. हुनैन मक्का और ताइफ़ के दरमियान एक मक़ाम है, यहाँ कबीला ‘हवाज़न’ और ‘सकीफ़’ से मक्का फ़तह होने के दो हफ़्ते बाद लड़ाई हुई थी। मुसलमान बारह हजार थे और मुशिरकीन चार हजार। बाज़ मुसलमान अपना मजमा देखकर ऐसे तौर पर कि उससे नाज़ और ग़ुरूर टपकता था, कहने लगे कि हम आज किसी तरह मग़लूब नहीं हो सकते। चुनाँचे शुरू के मुकाबले में काफिरों को शिकस्त हुई। बाज़े मुसलमान ग़नीमत के माल व सामान को जमा करने लगे, उस वक़्त कुम्फ़ार टूट पड़े और वे तीर चलाने में बड़े माहिर थे। मुसलमानों पर तीर बरसाने शुरू किए। इस घबराहट में मुसलमानों के पाँव उखड़ गए। सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चन्द सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ मैदान में रह गए। आपने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मुसलमानों को आवाज़ दिलवाई। फिर सब लौटकर दोबारा काफिरों से मुकाबला करने लगे और आसमान से फ़रिशतों की मदद आई। आख़िर काफिर भागे और बहुत-से क़त्ल हुए। फिर उन कबीलों के बहुत-से आदमी आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम ले आए और आपने उनके अहल व अयाल (घर वाले और बाल-बच्चे) जो पकड़े गए थे सब उनकी वापस कर दिए।

2. यह जो फ़रमाया कि रसूल पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई, मुराद इससे मुतलक़ तसल्ली नहीं, वह तो आपको बल्कि उन सहाबा को भी जो आपके साथ रह गए थे हासिल थी, और वे इसी वजह से साबित क़दम रहे, बल्कि मुराद इससे ख़ास तसल्ली है जिससे ग़ल्बे की उम्मीद करीब हो गई।

3. जिसका हकीक़त में कहीं नाम व निशान नहीं।

4. मुराद अरब के मुशिरक हैं जो फ़रिशतों को खुदा की बेटियाँ कहते थे।

वल्मसीहब्-न मर्य-म व मा उमिरु इल्ला लियअबुदू इलाहंवाहिदन् ला इला-ह इल्ला हु-व,
सुब्हानहू अम्मा युशिरकून (31) युरीदू-न अय्युत्फिऊ नूरल्लाहि बिअफ्वाहिहिम् व यअबल्लाहु
इल्ला अय्युतिम्-म नूरहू व लौ करिहल् काफिरुन (32) हुवल्लजी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा
व दीनिल्-हक्कि लियुज्हि-रहू अलद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल् मुशिरकून ● (33) या

अय्युहल्लजी-न आमनू इन्-न कसीरम्
मिनल् अह्बारि वरुह्बानि ल-यअकुलू-न
अम्वालन्नासि बिल्बातिलि व यसुद्दू-न
अन् सबीलिल्लाहि, वल्लजी-न
यक्निजूनज्ज-ह-ब वल्-फिज्ज-त व ला
युन्फिकूनहा फी सबीलिल्लाहि
फ-बशिशरुहुम् बिअजाबिन् अलीम (34)
यौ-म युस्मा अलैहा फी नारि जहन्न-म
फतुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनुबुहुम् व
जुहूरुहुम्, हाजा मा कनज्जुम्
लिअन्फुसिकुम् फजूकू मा कुन्तुम्
तक्निजून (35) इन्-न अिद-तश्शुहरि
अिन्दल्लाहिस्ना अ-श-र शहरन् फी
किताबिल्लाहि यौ-म ख-लकस्समावाति
वल्अर्-ज मिन्हा अर्ब-अतुन् हुरुमुन्,

जालिकद्दीनुल्-कय्यिमु फला तज्जिलू फीहिन्-न अन्फु-सकुम्, व कातिलुल् मुशिरकी-न
काफ्फ-तन् कमा युकातिलूनकुम् काफ्फ-तन्, वअलमू अन्नल्ला-ह मअल्मुत्तकीन (36)
इन्नमन्नसी-उ ज़ियादतुन् फिल्कुफिर युजल्लु बिहिल्लजी-न क-फरु युहिल्लूनहू आमव्-व
युहरिमूनहू आमल्-लियुवातिऊ अिद-त मा हरमल्लाहु फयुहिल्लू मा हरमल्लाहु, जुय्यि-न लहुम्

وَأَعْلَوْا ۝
أَخْبَارَهُمْ وَرُفَبَانَهُمْ أَزَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالسَّيِّئِ مِنْ
مَرِيئِهِ وَمَا أَمْرُو إِلَّا لِلْعَبْدِ وَالْإِلهِ وَاحِدٍ إِلَّا إِلَهُ الْأُمُ
سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ
يَأْفُوهُهُمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝
هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِنْ كُنْتُمْ مِنَ الْأَحْيَارِ وَالتَّوْبَانِ لَيَأْكُلُنَّ أَمْوَالُ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْتُمُونَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ يَوْمَ يُخْفَىٰ عَلَيْهِمْ فَاكِهَتُهُمْ فَتَكُونُ
بِهَاجِرَةً لَهُمْ وَجَنُوبُهُمْ وظُهُورُهُمْ هَذَا مَا كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ
فَلَوْ قَوَّامًا لَكُنْتُمْ كَذَّابُونَ ۝ إِنَّ عَذَابَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ أَلَمٌ
عَشْرَ شَهْرٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا
أَرْبَعَةٌ حُمُومٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيْمُ فَلَا تَطْلُبُوا فِيهِمْ
أَنفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا قَاتَلْتُمُوهُمْ كَافَّةً
وَأَعْلَوْا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّمَا الدِّينُ مُزِيدٌ فِي

छोड़कर अपने आलिमों और बुजुर्ग हस्तियों को (इताअत के एतिबार से) रब बना रखा है,¹ और मसीह इब्ने मरियम को भी, हालाँकि उनको सिर्फ यह हुक्म किया गया है कि फ़क़त एक (बरहक़) माबूद की इबादत करें जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह उनके शिर्क से पाक है। (31) वे लोग (यूँ) चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीने इस्लाम) को अपने मुँह से बुझा दें,² हालाँकि अल्लाह तआला अपने नूर को कमाँल तक पहुँचाए बग़ैर नहीं मानेगा, चाहे काफ़िर लोग कैसे ही नाख़ुश हों। (32) (चुनाँचे) वह (अल्लाह) ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत (का सामान यानी कुरआन) और सच्चा दीन³ देकर भेजा है, ताकि उसको (बक़िया) तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, चाहे मुशिरक कैसे ही नाख़ुश हों।⁴ ● (33) ऐ ईमान वालो! अक्सर अह्बार और रुहबान⁵ लोगों के माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं,⁶ और अल्लाह की राह से रोकते हैं, और (हद दर्जा हिस्से से) जो लोग सोना-चाँदी जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, सो आप उनको एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। (34) जो कि उस दिन ज़ाहिर होगी कि उनको (पहले) दोज़ख़ की आग में तपाया जाएगा, फिर उनसे उनकी पेशानियों “यानी माथों” और उनकी करवटों और उनकी पुश्तों को दाग़ दिया जायेगा। यह है वह जिसको तुमने अपने वास्ते जमा करके रखा, सो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो। (35) यकीनन महीनों की गिनती (जो कि) अल्लाह की किताब में अल्लाह के नज़दीक (मोतबर हैं,) बारह महीने (चाँद के) हैं, जिस दिन उसने (यानी अल्लाह तआला ने) आसमान और ज़मीन पैदा किए थे (उसी दिन से, और) उनमें चार ख़ास महीने अदब के हैं,⁷ यही (जो ज़िक्र किया गया) दीने मुस्तकीम है⁸ सो तुम सब उन (महीनों) के बारे में (दीन के खिलाफ़ करके) अपना नुक़सान मत करना, और उन मुशिरकों से सबसे लड़ना जैसा कि वे तुम सबसे लड़ते हैं, और (यह) जान रखो कि अल्लाह तआला मुत्तकियों का साथी है।⁹ (36) यह हटा देना कुफ़्र में और तरक्की है जिससे कुफ़्फ़ार गुमराह किए जाते हैं कि

1. यानी हलाल व हराम में उनकी इताअत अल्लाह की इताअत की तरह करते हैं कि शरीअत के हुक्म पर उनके कौल को तरजीह देते हैं, और ऐसी फ़रमाँबरदारी एक तरह से इबादत ही है। पस इस हिसाब से वे उनकी इबादत करते हैं।
2. यानी मुँह से रद्द व एतिराज़ की बातें इस गरज़ से करते हैं कि दीने हक़ को फ़रोग और तरक्की न हो।
3. यानी इस्लाम।
4. मुकम्मल करना दलीलों से साबित करने और कुव्वत देने के मायने में तो इस्लाम के लिए हर ज़माने में आम है, और यही मुक़ाबिल है ‘इतफ़ा’ का जो कि रद्द के मायने में है, और तफ़सीर के सही होने के लिए काफ़ी है। और हुक्ूमत का मिलना मशरूत है अहले दीन के तक्वे व सुधार के साथ। और बक़िया तमाम दीनों का मिटना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में होगा।
5. यानी यहूद और ईसाइयों के आलिम और बुजुर्ग हज़रात।
6. यानी हक़ अहक़ाम को छुपाकर अ़वाम की मरज़ी के मुवाफ़िक़ फ़तवे देकर उनसे नज़राने लेते हैं।
7. यानी जीकादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब।
8. यानी इन महीनों का बारह होना और चार का तख़सीस के साथ हराम महीने होना।
9. आयत में मक़सूद उस हिसाब को बातिल करना है जिससे शरई अहक़ाम में ख़लल पड़ने या ग़लती होने लगे। अलबत्ता चूँकि शरई अहक़ाम का मदार चाँद के हिसाब पर है इसलिए उसकी हिफ़ाज़त फ़र्ज़े किफ़ाय़ा है। पस अगर सारी उम्मत दूसरी इस्तिलाह को अपना मामूल बना ले जिससे चाँद का हिसाब ज़ाय़ा हो जाए तो सब गुनाहगार होंगे। और अगर वह महफूज़ रहे तो दूसरे हिसाब का इस्तेमाल भी मुबाह और जायज़ है, लेकिन बुजुर्गों के तरीक़े और मामूल के खिलाफ़ ज़रूर है। और चाँद के हिसाब का बरतना उसके फ़र्ज़े किफ़ाय़ा होने की वजह से ज़रूरी, अफ़ज़ल और बेहतर है।

सू-उ अअमालिहिम्, वल्लाहु ला यस्दिल् कौमल्-काफिरीन (37) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनू मा लकुम् इजा की-ल लकुमुन्फिरु फी सबीलिल्लाहिस्साकल्लुम्
इलल्-अर्जि, अ-रजीतुम् बिल्हयातिद्दुन्या मिनल्-आखिरति फमा मताअुल्-हयातिद्दुन्या
फिल्आखिरति इल्ला कलील (38) इल्ला तन्फिरु युअज्जिबकुम् अजाबन् अलीमंव-व

यस्तब्दिल् कौमन् गैरकुम् व ला तजुरुहु
शैअन्, वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् कदीर
(39) इल्ला तन्सुरुहु फ-कद्
न-सरहुल्लाहु इज् अखर-जहुल्लजी-न
क-फरु सानियस्नैनी इज् हुमा फिल्गारि
इज् यकूलु लिसाहिबिही ला तहजन्
इन्नल्ला-ह म-अना फ-अन्ज-लल्लाहु
सकीन-तहू अलैहि व अय्य-दहू
बिजुनूदिल्लम् तरौहा व ज-अ-ल
कलि-मतल्लजी-न क-फरुस्सुफला, व
कलि-मतुल्लाहि हियल्-अुल्या, वल्लाहु
अजीजुन् हकीम (40) इन्फिरु
खिाफाफ्व-व सिकालंव-व जाहिदू
बिअम्वालिкуम् व अन्फुसिकुम् फी
सबीलिल्लाहि, जालिकुम् खैरुल्लकुम् इन्

कुन्तुम् तअलमून (41) लौ का-न अ-रजन् करीबंव-व स-फरन् कासिदल्लत्तबअू-क व
लाकिम्-बअुदत् अलैहिमुश्शुककतु, व स-यह्लिफू-न बिल्लाहि लविस्त-तअना ल-खारज्ना
म-अकुम् युह्लिकू-न अन्फु-सहुम् वल्लाहु यअलमु इन्हुम् लकाजिबून (42) ♦

अफल्लाहु अन्-क लि-म अजिन्-त लहुम् हत्ता य-तबय्य-न लकल्लजी-न स-द-कू व

الْكَافِرُ يُضِلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيُحِثُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ
عَامًا لِّيُؤْطُوا عِدَّةَ مَا حَزَمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَزَمَ اللَّهُ رُزِينَ
لَهُمْ سَوْءٌ أَعْمَاهُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ هـ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ اتَّقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
اتَّقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ
فَمَا مَتَاءُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا تَنْظُرُوا
يُعَذِّبُكُمْ عَذَابَ آبَاءِ الْيَسَاءَةِ وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَنْصَرُّوهُ
شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ هـ إِلَّا تَنْصَرُّوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ
اللَّهُ إِذَا أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِنِّي أَتَيْنِي إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ
إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّا اللَّهُ مَعَآ أَفْأَنْزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ
الَّذِينَ كَفَرُوا السَّقْلَى وَكَلِمَةَ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ هـ اتَّقُوا خِيفَاتِي وَتَقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ هـ لَوْ كَانَ
عَرَضًا قَرِينًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَاتَّبَعُوكَ وَلَكِنْ بَعَدَتْ
عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا مَخْرَجَنَا

مَنْ

वे इस (हराम महीने) को किसी साल (नफ़्सानी गरज़ से) हलाल कर लेते हैं, और किसी साल (जब कोई गरज़ न हो) हराम समझते हैं, ताकि अल्लाह तआला ने जो (महीने) हराम किए हैं (सिर्फ़) उनकी गिनती पूरी कर लें, फिर अल्लाह के हराम किए हुए (महीने) को हलाल कर लेते हैं। उनके बुरे आमांल उनको अच्छे मालूम होते हैं, और अल्लाह तआला ऐसे काफ़िरो को हिदायत (की तौफ़ीक़) नहीं देता।' (37) ❖

ऐ ईमान वालो! तुम लोगों को क्या हुआ कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो? क्या तुमने आख़िरत के बदले दुनियावी ज़िन्दगी पर क़नाअत कर ली? सो दुनियावी ज़िन्दगी से फ़ायदा हासिल करना तो आख़िरत के मुक़ाबले में (कुछ भी नहीं) बहुत कम है। (38) अगर तुम न निकलोगे तो वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको सख़्त सज़ा देगा (यानी तुमको हलाक कर देगा) और तुम्हारे बदले दूसरी क़ौम को पैदा कर देगा (और उनसे अपना काम लेगा) और तुम अल्लाह (के दीन) को कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा सकोगे, और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है। (39) अगर तुम लोग उनकी (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) मदद न करोगे तो अल्लाह तआला आपकी मदद उस वक़्त कर चुका है जबकि आपको काफ़िरो ने वतन से निकाल दिया था, जबकि दो आदमियों में से एक आप थे जिस वक़्त कि दोनों ग़ार में थे, जबकि आप अपने हमराही से फ़रमा रहे थे कि तुम (कुछ) ग़म न करो यकीनन अल्लाह तआला हमारे साथ है। सो अल्लाह तआला ने आप (के दिल) पर अपनी तसल्ली नाज़िल फ़रमाई और आपको ऐसे लश्करो से कुव्वत दी जिनको तुमने नहीं देखा, और अल्लाह तआला ने काफ़िरो की बात (और तदबीर) नीची कर दी, (कि वे नाकाम रहे) और अल्लाह ही का बोल-बाला रहा, और अल्लाह ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है। (40) निकल पड़ो (चाहे) थोड़े सामान से (हो) और (चाहे) ज़्यादा सामान से (हो) और अल्लाह तआला की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम यकीन रखते हो (तो देर मत करो)। (41) अगर कुछ हाथ के हाथ मिलने वाला होता और सफ़र भी मामूली-सा होता तो ये (मुनाफ़िक़) लोग आपके साथ हो लेते, लेकिन उनको तो सफ़र की दूरी ही दूर-दराज़ मालूम होने लगी। और अभी खुदा की कस्में खा जाएँगे कि अगर हमारे बस की बात होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते, ये लोग (झूठ बोल-बोलकर) अपने आपको तबाह कर रहे हैं, और अल्लाह तआला जानता है कि ये लोग यकीनन झूठे हैं। (42) ❖

1. यहाँ से तबूक की लड़ाई का बयान है। तबूक मुल्क शाम में एक मक़ाम है। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के फ़तह और हुनैन की लड़ाई वगैरह से फ़ारिग़ हुए तो आपको ख़बर हुई कि रूम का बादशाह मदीना पर फ़ौज भेजना चाहता है, और वह फ़ौज तबूक में जमा की जाएगी। आपने खुद ही मुक़ाबले के लिए सफ़र का इरादा फ़रमाया और मुसलमानों में इसका आ़म ऐलान कर दिया। चूँकि वह ज़माना गर्मी की शिदत का था और मुसलमानों के पास सामान बहुत कम था, और सफ़र भी बहुत लम्बा था, इसलिए इस लड़ाई में जाना बड़ी हिम्मत का काम था। इसलिए इन आयतों में उसकी बहुत तरगीब दी गई है। और चूँकि मुनाफ़िक़ लोग ईमान व इज़्लास न होने की वजह से उसमें तरह-तरह के वहाने सामने लाए और उनकी तरह-तरह की ख़बासतें ज़ाहिर हुईं, इसलिये इन आयतों में उनपर भी बहुत लानत मलामत हुई है। गरज़ आप उस मक़ाम तबूक तक तशरीफ़ लेजाकर ईसाइयों के लश्कर के मुन्तज़िर रहे, मगर वे ऐसे मरऊब हुए कि उनका हौसला जाता रहा, और आप वहाँ एक मुद्त तक ठहरकर ख़ैर व आफ़ियत के साथ मदीना मुनब्वरा तशरीफ़ ले आए। यह वाकिआ रजब सन् नौ हिज़री में हुआ।

तअ-लमल् काजिबीन (43) ला यस्तअजिनुकल्लजी-न युअमिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-
आखिरि अय्युजाहिद् बिअम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम्, वल्लाहु अलीमुम् बिल्मुत्तकीन (44)
इन्नमा यस्तअजिनुकल्लजी-न ला युअमिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आखिरि वरताबत् कुलूबुहुम्
फहुम् फी रैबिहिम् य-तरददून (45) व लौ अरादुल्-खुरू-ज ल-अअद्दू लहू अुदतंव-व
लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआ-सहुम्

फ-सब्ब-तहुम् व कीलक्अुद् मअल्
काअिदीन (46) लौ ख-रजू फीकुम् मा
जादूकुम इल्ला खबालंव-व ल-औजअू
खिलालकुम् यब्बूनकुमुल् फित्न्-त व
फीकुम् सम्माअू-न लहुम्, वल्लाहुम्
अलीमुम्-बिज्जालिमीन (47)

ल-कदिब्ब-गवुल् फित्न्-त मिन् कब्बु व
कल्लबू ल-कल् उमू-र हत्ता जाअल्-
हक्कु व ज-ह-र अम्रुल्लाहि व हुम्
कारिहून (48) व मिन्हुम्
मय्यकूलुअजल्ली व ला तफित्नी, अला
फिल्-फित्न्नति स-कतू, व इन्-न
जहन्न-म लमुही-ततुम् बिल्काफिरीन
(49) इन् तुसिब्-क ह-स-नतुन्

तसुअहुम् व इन् तुसिब्-क मुसीबतुयकूलू कद् अखज्ना अम्-रना मिन् कब्बु व य-तवल्लौ
व हुम् फरिहून (50) कुल् लय्युसीबना इल्ला मा क-तबल्लाहु लना हु-व मौलाना व
अलल्लाहि फल्य-तवक्कलिल् मुअमिन्न (51) कुल् हल् तरब्बसू-न बिना इल्ला इह्दल्
हुस्-नयैनि, व नह्नु न-तरब्बसु बिकुम् अय्युसी-बकुमुल्लाहु बिअजाबिम् मिन् अिन्दिही औ

والعليون 144 التوبة
مَعَكُمْ يَهْدِيكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ
عَقَّا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذْنَتْ لَهُمْ حَتَّى يَبْكِينَ لَكَ الَّذِينَ
صَدَقُوا وَتَعْلَمُ الْكَذِبِينَ لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَمَنْ فِي رَبِّهِمْ
يَكْرَهُ دُونَ «وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ
كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ
لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوا إِلَّا خَبَالًا وَلَا أَضَعُوكُمْ إِلَّا لَكُمْ
يَبْعَثُكُمْ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمْعُونُ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ لَقَدْ ابْتِغَاوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَبُوا الْأُمُورَ
حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ وَمِنْهُمْ
مَنْ يَقُولُ أَدْنُنِي وَلَا تَقْبِضُنِي إِلَّا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا
إِنْ جَهَنَّمَ لَمْ يَغِيظْ بِالْكَافِرِينَ إِنْ تُصِيبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ
وَإِنْ تُصِيبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرًا مِنْ قَبْلُ
وَيَقُولُوا وَهُمْ فَرِحُونَ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ

مَنْ

अल्लाह तआला ने आपको माफ़ (तो) कर दिया (लेकिन) आपने उनको (ऐसी जल्दी) इजाज़त क्यों देदी थी? जब तक कि आपके सामने सच्चे लोग ज़ाहिर न हो जाते, और आप झूठों को मालूम न कर लेते। (43) जो लोग अल्लाह तआला पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं वे अपने माल और जान से जिहाद करने के बारे में आपसे रुख़सत न माँगेंगे, (बल्कि वे हुक्म के साथ दौड़ पड़ेंगे), और अल्लाह तआला (उन) मुत्तकियों को ख़ूब जानता है। (44) अलबत्ता वे लोग (जिहाद में न जाने की) आपसे रुख़सत माँगते हैं जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और उनके दिल शक में पड़े हैं, सो वे अपने शर्कों में पड़े हुए हैरान हैं। (45) और अगर वे लोग (लड़ाई में) चलने का इरादा करते तो उसका कुछ सामान तो दुरुस्त करते, लेकिन (ख़ैर हुई) अल्लाह तआला ने उनके जाने को पसन्द नहीं किया, इसलिए उनको तौफीक नहीं दी और (तक्वीनी हुक्म की वजह से यूँ) कह दिया गया कि अपाहिज लोगों के साथ तुम भी यहाँ ही धरे रहो। (46) अगर ये लोग तुम्हारे साथ शामिल होकर जाते तो सिवाय इसके कि और दोगुना फ़साद करते और क्या होता, और तुम्हारे बीच फ़ितना डालने की फ़िक्र में दौड़े-दौड़े फिरते,¹ और (अब भी) तुममें उनके कुछ जासूस (मौजूद) हैं, और (उन) ज़ालिमों को अल्लाह तआला ख़ूब समझेगा। (47) उन्होंने तो पहले भी फ़ितना खड़ा करने की फ़िक्र की थी,² और आपके लिए कार्रवाइयों की उलट-फेर करते ही रहे, यहाँ तक कि हक़ (का वायदा) आ गया, और (उसका आना यह कि) अल्लाह का हुक्म ग़ालिब रहा, और उनको नागवार ही गुज़रता रहा।³ (48) और उन (ख़िलाफ़ करने वाले मुनाफ़िकों) में बाज़ा शख्स वह है जो कहता है कि मुझको इजाज़त दीजिए और मुझको ख़राबी में न डालिए। ख़ूब समझ लो कि ये लोग ख़राबी में तो पड़ ही चुके, और यकीनन (आख़िरत में) दोज़ख़ उन काफ़िरों को घेरेगी।⁴ (49) अगर आपको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो वह उनके लिए गुम का सबब होती है, और अगर आप पर कोई हादसा आ पड़ता है तो (खुश होकर) कहते हैं कि हमने तो (इसी लिए) पहले से अपना एहतियात (का पहलू) इख़्तियार कर लिया था, और वे खुश होते हुए वापस चले जाते हैं। (50) आप फ़रमा दीजिए कि हमपर कोई हादसा नहीं पड़ सकता मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़द्दर फ़रमाया है, वह हमारा मालिक है, और सब मुसलमानों को अपने सब काम अल्लाह ही के सुपुर्द रखने चाहिए।⁵ (51) आप फ़रमा दीजिए कि तुम तो हमारे हक़ में दो बेहतरियों में से एक बेहतरी ही

1. यानी लगाई-बुझाई करके आपस में फूट डलवाते और झूठी ख़बरें उड़ाकर परेशान करते, दुश्मन का रोब तुम्हारे दिलों में डालने की कोशिश करते, इसलिए उनका न जाना ही अच्छा हुआ।

2. यानी जंगे उहुद वगैरह में।

3. ऊपर मुनाफ़िकों के मुश्तरका हालात का बयान था। आगे कई आयतों में जो लफ़्ज़ 'मिन्हुम्' से शुरू हुई हैं, बाज़ के मख़सूस हालात और अक्वाल (बातें) और दरमियान में मुश्तरका हालात भी ज़िक्र किए गए हैं।

4. उस शख्स का नाम 'जद बिन कैस' था। उसने यह बहाना बनाया था कि मैं औरतों पर फ़िदा हो जाता हूँ और रूमियों की औरतें हसीन ज़्यादा हैं। जाने में मेरा दीनी नुक़सान है, इसलिए रुख़सत का इच्छुक हूँ।

5. हासिल यह है कि अल्लाह मालिक और हाकिम हैं। हाकिम होने की हैसियत से उनको हर तसरूफ़ का इख़्तियार है, इसलिए हम राज़ी हैं।

बिएदीना फ-तरब्बसू इन्ना म-अकुम् मु-तरब्बिसून (52) कुल् अन्फिकू तौअन् औ
करहल्-लंय्यु-तकब्ब-ल मिन्कुम्, इन्नकुम् कुन्तुम् कौमन् फासिकीन (53) व मा म-न-अहुम्
अन् तुक्ब-ल मिन्हुम् न-फकातुहुम् इल्ला अन्नहुम् क-फरु बिल्लाहि व बि-रसूलिही व ला
यअतूनस्सला-त इल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फिकू-न इल्ला व हुम् कारिहून (54) फला

तुअजिब्-क अम्वालुहुम् व ला
औलादुहुम्, इन्नमा यरीदुल्लाहु
लियुअज्जि-बहुम् बिहा फिल्हयातिदुन्या
व तज्ह-क अन्फुसुहुम् व हुम् काफिरून
(55) व यस्लिफू-न बिल्लाहि इन्नहुम्
लमिन्कुम्, व मा हुम् मिन्कुम् व
लाकिन्नहुम् कौमुय्यपरकून (56) लौ
यजिदू-न मलज-अन् औ मगारातिन् औ
मुद्द-खालल्-लवल्लौ इलैहि व हुम्
यज्महून (57) व मिन्हुम् मय्यल्मिजु-क
फिस्स-दकाति फ-इन् उअतू मिन्हा रजू
व इल्लम् युअतौ मिन्हा इजा हुम्
यस्-खतून (58) व लौ अन्नहुम् रजू
मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू व कालू
हस्बुनल्लाहु सयुअतीनल्लाहु मिन्
फजिलिही व रसूलुहू इन्ना इलल्लाहि रागिबून (59) ♦

لَنَّا هُوَ مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ هَلْ
تَرَى بَصُورًا إِلَّا الْإِذَا حَىٰ أَحْسَنِينَ وَنَحْنُ نَرَىٰ بَصْ
أَنْ يُصِيبَكَ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ يَأْتِيَنَّكَ فَرَصَةٌ
إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ۝ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ
يُتَقَبَلَ مِنْكُمْ إِلَّا كَنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ
تَقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كَسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ
كَرْهُونَ ۝ فَلَا تَعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ
كَافِرُونَ ۝ وَيَخْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ بِمِنْكُمْ
وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَتَّبِعُونَ ۝ لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغْرَبًا
أَوْ مَدَّجَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَن
يَكْمُرُكَ فِي الصَّدَقَاتِ ۚ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ
يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْتَعْطُونَ ۚ وَلَوْ أَنَّ هُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ
وَرَسُولُهُ ۚ إِنَّا إِلَى اللَّهِ وَاعْبُونَ ۚ إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ

مَزَك

के मुन्तज़िर रहते हो, और हम तुम्हारे हक में इसके मुन्तज़िर रहा करते हैं कि अल्लाह तआला तुमपर कोई अज़ाब भेजेगा, (चाहे) अपनी तरफ से (दुनिया या आखिरत में) या हमारे हाथों से। सो तुम (अपने तौर पर) इन्तिज़ार करो (और) हम तुम्हारे साथ (अपने तौर पर) इन्तिज़ार में हैं।¹ (52) आप फरमा दीजिए कि तुम (चाहे) खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, तुम किसी तरह (खुदा के नज़दीक) मकबूल नहीं, (क्योंकि) बेशक तुम हुक्म के खिलाफ करने वाले लोग हो। (53) और उनकी (खैर) खैरात कबूल होने से और कोई चीज़ इसके अलावा रुकावट नहीं कि उन्होंने अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ कुफ़ किया, और वे लोग नमाज़ नहीं पढ़ते मगर हारे जी से, और खर्च नहीं करते मगर नागवारी के साथ। (54) सो उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआला को सिर्फ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र की हुई) चीज़ों की वजह से दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) उनको अज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनकी जान कुफ़ ही की हालत में निकल जाए। (55) और ये (मुनाफ़िक) लोग अल्लाह तआला की कस्में खाते हैं कि वे तुममें के हैं।² हालाँकि (हकीकत में) वे तुममें के नहीं, लेकिन (बात यह है कि) वे डरपोक लोग हैं। (56) उन लोगों को अगर कोई पनाह मिल जाती, या ग़ार या कोई घुस-बैठने की ज़रा जगह (मिल जाती) तो ये ज़रूर मुँह उठाकर उधर चल देते (और ईमान का इज़हार न करते)। (57) और उनमें बाज़ वे लोग हैं जो सदकों (को तकसीम करने) के बारे में आप पर ताना मारते हैं। सो अगर उन (सदकों) में से (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक) उनको मिल जाता है तो वे राज़ी हो जाते हैं, और अगर उन (सदकों) में से उनको (उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक) नहीं मिलता तो वे नाराज़ हो जाते हैं।³ (58) और (उनके लिए बेहतर होता) अगर वे लोग उसपर राज़ी रहते जो कुछ उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने दिया था, और (यूँ) कहते कि हमको अल्लाह काफी है, आइन्दा अल्लाह अपने फ़ज़ल से हमको (और) देगा, और उसके रसूल देंगे, हम (शुरू से) अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं। (59) ♦

1. हासिल यह कि अल्लाह तआला हिकमत वाले हैं, इस मुसीबत में भी हमारे फ़ायदे का ख़्याल करते हैं, इसलिए हम हर हाल में फ़ायदे में हैं, बख़िलाफ़ तुम्हारे कि तुम्हारी खुशहाली का अन्जाम भी वबाल और निकाल है, अगर दुनिया में नहीं तो आखिरत में ज़रूर है।

2. यानी मुसलमान हैं।

3. इससे मालूम होता है कि उनके एतिराज़ और हर्फ़गीरी का असल मन्शा महज़ दुनियावी लालच और खुद-ग़रज़ी है। पस ऐसे एतिराज़ का बातिल होना ज़ाहिर है।

हु-व उजुनुन्, कुल् उजुनु खैरिल्लकुम् युअमिनु बिल्लाहि व युअमिनु लिल्मुअमिनी-न व
रह्मतुल् लिल्लजी-न आमनू मिन्कुम्, वल्लजी-न युअजू-न रसूलल्लाहि लहुम् अज़ाबुन् अलीम
(61) यह्लिफू-न बिल्लाहि लकुम् लियुरजूकुम् वल्लाहु व रसूलुहू अहक्कु अय्युरजूहु इन् कानू

मुअमिनीन ▲ (62) अलम् यअल्लमू

अन्नहू मय्युहादिदिल्ला-ह व रसूलहू

फ-अन्-न लहू ना-र जहन्न-म

खालिदन् फीहा, जालिकल् खिज़्युल्-

अज़ीम (63) यहज़रुल् मुनाफिकू-न

अन् तुनज़ज़-ल अलैहिम् सूरतुन्

तुनब्बिउहुम् बिमा फी कुलूबिहिम्,

कुलिस्तहिज़ऊ इन्नल्ला-ह मुखिरजुम् मा

तहज़रुन (64) व ल-इन् सअल्लतहुम्

ल-यकूलुन्-न इन्नमा कुन्ना नख़ूजु व

नल्अबु, कुल् अबिल्लाहि व आयातिही

व रसूलिही कुन्तुम् तस्तहिज़ऊन (65)

ला तअतज़िरु कद् कफरतुम् बअ-द

ईमानिकुम्, इन्नअफ़ु अन् ताइ-फतिम्

मिन्कुम् नुअज़िज़ब् ताइ-फतम्

बिअन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (66) ♦

وَالْمُسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ
اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَ
يَقُولُونَ هُوَ أَذْنٌ قُلْ أَذُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ
لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ
رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ
لِيُرْضَوْكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ
لَهُ تَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝ يَحْذَرُ
الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنْزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي
قُلُوبِهِمْ قُلْ اسْتَهِزُّوْا إِنَّا اللَّهُ مُخْرِجُ مَا تَحْذَرُونَ ۝
وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ
أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ
كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنَّ نَعْفَ عَنْ طَائِفَةٍ مِّنْكُمْ
نَعَذِّبُ طَائِفَةً يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْعَلُوا مِن بَيْنِكُمْ
الْمُنَافِقَتَ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَ

सदकात तो सिर्फ गरीबों का हक है और मोहताजों का,¹ और जो कार्यकरता उन सदकात पर मुतैयन हैं,² और जिनकी दिलजोई करना (मन्ज़ूर) है,³ और गुलामों की गर्दन छुड़ाने में,⁴ और कर्जदारों के कर्जे में, और जिहाद में, और मुसाफिरो में, यह हुक्म अल्लाह की तरफ से (मुकरर) है,⁵ और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले (और) बड़ी हिक्मत वाले हैं। (60) और उन (मुनाफिकों) में से बाजे ऐसे हैं कि नबी को तकलीफें पहुँचाते हैं और कहते हैं कि आप हर बात कान देकर “यानी तवज्जोह से” सुन लेते हैं। आप फरमा दीजिए कि (वह नबी) कान देकर “यानी तवज्जोह से” तो वही बात सुनते हैं जो तुम्हारे हक में खैर (ही खैर) है कि वे अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों का यकीन करते हैं, और आप उन लोगों के हाल पर मेहरबानी फरमाते हैं जो तुममें ईमान का इज़हार करते हैं, और जो लोग अल्लाह के रसूल को तकलीफें पहुँचाते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। (61) ये लोग तुम्हारे सामने अल्लाह तआला की (झूठी) कस्में खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें, (जिसमें माल व जान महफूज़ रहे) हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक रखते हैं, कि अगर ये लोग सच्चे मुसलमान हैं तो उसको राज़ी करें। ▲ (62) क्या आपको खबर नहीं कि जो शख्स अल्लाह की और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा (जैसा कि ये लोग कर रहे हैं) तो (यह बात तय हो चुकी है कि) ऐसे शख्स को दोज़ख़ की आग (इस तौर पर) नसीब होगी (कि) वह उसमें हमेशा रहेगा, यह बड़ी रुस्वाई है। (63) मुनाफ़िक लोग (तबई तौर पर) इससे अन्देशा करते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूर: (मिसाल के तौर पर, या आयत) नाज़िल (न) हो जाए जो उनको उन (मुनाफ़िकों) के दिल के हाल की इत्तिला दे दे। आप फरमा दीजिए कि अच्छा तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, बेशक अल्लाह तआला उस चीज़ को ज़ाहिर करके रहेगा जिस (के इज़हार) से तुम अन्देशा करते थे। (64) और अगर आप उनसे पूछिए तो कह देंगे कि हम तो बस मज़ाक़ और दिल्लगी कर रहे थे। आप (उनसे) कह दीजिएगा कि क्या अल्लाह के साथ और उसकी आयतों के साथ और उसके रसूल के साथ तुम हँसी करते थे? (65) तुम अब (यह बेहुदा) उज़्र मत करो, तुम तो अपने को मोमिन कहकर कुफ़्र करने लगे, अगर हम तुममें से बाज़ को छोड़ भी दें फिर भी बाज़ को तो (ज़रूर ही) सज़ा देंगे, इस वजह से कि वे (इल्मे-अज़ली में) मुज़्रिम थे।* (66) ♦

1. फ़कीर के मायने हैं जिसके पास कुछ न हो। मिस्कीन के मायने हैं जिसके पास निसाब (यानी माल की इतनी मात्रा जिसपर ज़कात वाजिब हो जाती है) से कम हो।
2. मुसलमान होना और अपनी बुनियादी असली ज़रूरतों से जायद निसाब के बक़द का मालिक व काबिज़ न होना सबमें शर्त है, सिवाय ज़कात को वसूल करने और कार्यकरताओं के जो मुसलमान बादशाह की तरफ से मुकरर हों कि उनको बावजूद ग़नी (यानी मालदार) होने के भी इस ज़कात में से उज़रत के तौर पर देना जायज़ है। बाकी तमाम किस्मों में उक्त क़ैद (यानी मुसलमान होना और शरई तौर पर मालदार न होना) शर्त है।
3. दिलजोई के लिए जनाव रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में ज़कात दी जाती थी, चाहे वे मुसलमान न हों मगर उनके मुसलमान होने की उम्मीद हो या सिर्फ उनके शर व फ़ितने से बचने के लिए। और या मुसलमान हों मगर ग़रीब न हों सिर्फ उनको इस्लाम से मुहब्बत पैदा करने के लिए। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के वक़्त में उनके इसका हक़दार न होने पर सबकी राय एक हो गई, जो पहले हुक्म के मन्सूख़ यानी ख़त्म हो जाने की निशानी है।
4. गर्दन छुड़ाने का मतलब यह है कि किसी गुलाम को उसके आका ने कह दिया हो कि इतना रुपया दे दे तो तू आज़ाद है। उस गुलाम को ज़कात दी जाए ताकि वह अपने आका को रुपया देकर आज़ाद हो जाए।
5. ज़कात के ख़र्च होने की सब जगहों में यह शर्त है कि जिनको ज़कात दी जाए उनको मालिक बना दिया जाए, बिना मालिक बनाए ज़कात अदा न होगी।
6. दीन के साथ जान-बूझकर हँसी-ठट्ठा करना चाहे बद-एतिकादी से हो या बिना बद-एतिकादी के हो, कुफ़्र है। और अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हँसी-ठट्ठा करना, तीनों का एक ही हुक्म है। (कि वह आदमी काफ़िर हो जाता है)।

मुनाफिकी-न हुमुल्-फासिकून (67) व-अदल्लाहुल् मुनाफिकी-न वल्मुनाफिकाति वल्कुप्फा-र
ना-र जहन्न-म खालिदी-न फीहा, हि-य हस्बुहुम् व ल-अ-नहुमुल्लाहु व लहुम् अज़ाबुम्
मुकीम (68) कल्लजी-न मिन् कब्लिकुम् कानू अशद्-द मिन्कुम् कुव्वतंव-व अक्स-र

अम्वालंव-व औलादन्, फस्तम्तअ
बि-खालाकिहिम् फस्तम्तअतुम्
बि-खालाकिकुम् कमस्तम्त-अल्लजी-न
मिन् कब्लिकुम् बि-खालाकिहिम् व खुज्तुम्
कल्लजी खाजू, उलाइ-क हबितत्
अअमालुहुम् फिद्दुन्या वल्आखिरति व
उलाइ-क हुमुल्-खासिरून (69) अलम्
यअतिहिम् न-बउल्लजी-न मिन्
कब्लिहिम् कौमि नूहिंव-व आदिंव-व
समू-द व कौमि इब्राही-म व अस्हाबि
मद्य-ने वल्मुअतफिकाति, अतत्तुहुम्
रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फमा कानल्लाहु
लि-यज़िल-महुम् व लाकिन् कानू

अन्फु-सहुम् यज़िलमून (70) वल्मुअमिनू-न वल्मुअमिनातु बअज़ुहुम् औलिया-उ बअज़िन्
यअमुरू-न बिल्-मअरूफि व यन्हौ-न अनिल्मुन्करि व युकीमूनस्सला-त व युअतूनज़्ज़का-त
व युतीअूनल्ला-ह व रसूलहू, उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (71)
व-अदल्लाहुल् मुअमिनी-न वल्मुअमिनाति जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु खालिदी-न

وَأَعْلَمُوا ۚ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيُقِضُونَ إِلَيْهِمْ سَوَاءٌ اللَّهُ
فَتَسِيَهُمْ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۖ وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ
وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ
وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۖ كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ
كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَكَانُوا أَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا
بِمَخْلَقَتِهِمْ فَاَسْتَمْتَعْتُمْ بِمَخْلَقَتِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِمَخْلَقَتِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا أُولَئِكَ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْخَسِرُونَ ۖ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ
وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَإِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَإِسْحَاقَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ أَتَتْهُمُ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ لِلَّهِ
لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۖ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ
الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ
لَئِنَّ اللَّهَ غَزِيرٌ حَكِيمٌ ۖ وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

مَرْكَز

मुनाफिक मर्द और मुनाफिक औरतें सब एक तरह के हैं, कि बुरी बात (यानी कुफ्र और इस्लाम की मुखालफत) की तालीम देते हैं और अच्छी बात (यानी ईमान व नबी-ए-करीम की पैरवी) से मना करते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने खुदा का ख्याल न किया, तो खुदा ने उनका ख्याल न किया,¹ बेशक ये मुनाफिक बड़े ही सरकश हैं। (67) अल्लाह तआला ने मुनाफिक मर्दों और मुनाफिक औरतों और (खुलेआम) कुफ्र करने वालों से दोज़ख की आग का अहद कर रखा है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे। वह उनके लिए काफी (सज़ा) है, और अल्लाह तआला उनको अपनी रहमत से दूर कर देगा, और उनको हमेशा का अज़ाब होगा। (68) (ऐ मुनाफिको!) तुम्हारी हालत उन लोगों की-सी है जो तुमसे पहले हो चुके हैं, जो कुव्वत में तुमसे ज़बरदस्त और माल व औलाद की कसरत में तुमसे भी ज़्यादा थे, तो उन्होंने अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया, सो तुमने भी अपने (दुनियावी) हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया, जैसा कि तुमसे पहले लोगों ने अपने हिस्से से ख़ूब फ़ायदा हासिल किया था। और तुम भी (बुरी बातों में) ऐसे ही घुसे जैसे वे घुसे थे, और उन लोगों के (अच्छे) आमाल दुनिया व आखिरत में बेकार गए,² और वे लोग बड़े नुक़सान में हैं। (69) क्या उन लोगों को उन (के अज़ाब व हलाक होने) की ख़बर नहीं पहुँची जो उनसे पहले हुए हैं, जैसे कौमे नूह और आद और समूद और इब्राहीम की कौम और मद्यन वाले और उल्टी हुई बस्तियाँ, कि उनके पास उनके पैग़म्बर (हक़ की) साफ़ निशानियाँ लेकर आए (लेकिन न मानने से बर्बाद हुए)। सो (इस बर्बादी में) अल्लाह ने उनपर जुल्म नहीं किया, लेकिन वे खुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते थे।³ (70) और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में एक-दूसरे के (दीनी) साथी हैं, नेक बातों की तालीम देते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और ज़कात देते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानते हैं। उन लोगों पर ज़रूर अल्लाह तआला रहमत करेगा, बेशक अल्लाह तआला (पूरी तरह) कादिर है, हिक्मत वाला है। (71) और अल्लाह तआला ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों से ऐसे बाग़ों का वायदा कर रखा है जिनके नीचे से नहरें चलती होंगी, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और नफ़ीस मकानों का जो कि उन हमेशा रहने वाले बाग़ों में होंगे, और (इन नेमतों के साथ) अल्लाह तआला की

1. यानी उन्होंने इताअत न की। अल्लाह तआला ने उनपर अपनी ख़ास रहमत न की।

2. क्योंकि दुनिया में उन आमाल पर सवाब की खुशख़बरी नहीं और आखिरत में सवाब नहीं।

3. ऊपर मुनाफिकों की ख़्वासतें, बुराइयाँ और नालायकियाँ ज़िक्र की गई थीं, आगे मज़मून की और ज़्यादा वज़ाहत के लिए इस कहावत पर नज़र रखते हुए कि चीज़ें अपनी ज़िद और मुखालिफ़ चीज़ों से पहचानी जाती हैं, मोमिनो की बाज़ खूबियों और अच्छाइयों का बयान है।

फ़ीहा व मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नाति अद्निन्, व रिज्वानुम् मिनल्लाहि अक्बर,
ज़ालि-क हुवल् फ़ौजुल्-अज़ीम (72) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुप्फा-र वल्मुनाफिकी-न वग्लुज् अलैहिम्, व मअ्वाहुम्
जहन्नमु, व बिअ्सल् मसीर (73)

यद्विलफू-न बिल्लाहि मा कालू, व ल-कद्
कालू कलि-मतल्कुफिर व क-फरू बअ-द
इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम् यनालू व
मा न-कमू इल्ला अन् अग्नाहुमुल्लाहु व
रसूलुहू मिन् फज़िलही फ-इय्यतूबू यकु
ख़ैरल्लहुम् व इय्य-तवल्लौ युअज़्ज़िबूह-
-मुल्लाहु अज़ाबन् अलीमन् फिद्दुन्या
वल्लाख़िरति व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि
मिंव्वलिथिंव्वला नसीर (74) व मिन्हुम्
मन् आ-हदल्ला-ह ल-इन् आताना मिन्
फ़ज़िलही लनस्सद्-द-कन्-न व
ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (75)

फ-लम्मा आताहुम् मिन् फज़िलही बख़िलू
बिही व त-वल्लौ व हुम् मुअ्रिज़ून
(76) फ-अअुक-बहुम् निफाकन् फी

कुलूबिहिम् इला यौमि यत्कौनहू बिमा अख्लफुल्ला-ह मा व-अदूह व बिमा कानू यकिज़बून
(77) अलम् यअलमू अन्नल्ला-ह यअलमु सिररहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अल्लामुल्
गुयूब (78) अल्लज्जी-न यल्मिज़ूनल् मुत्तव्विअी-न मिनल् मुअ्मिनी-न फ़िस्स-दक्क़ाति
वल्लज्जी-न ला यजिदू-न इल्ला जुह्दहुम् फ़-यसख़रू-न मिन्हुम्, सख़िरल्लाहु मिन्हुम् व लहुम्

وَالْعَمَلُ
الْقَبِيلُ
١٥
جَنَّتْ تَجَرُّى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خُلِدِينَ فِيهَا وَمَسْكَنٌ
طَيِّبَةٌ فِي جَنَّتِ عَذْنٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ يَأْكُمُ النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا بِهِمْ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ
الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بِعَدْلِ إِسْلَامِهِمْ وَهَتُوا بِيَاكُم يَتَّأَلَوُا
وَمَا نَعْمُوا إِلَّا أَنْ أَعْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ
فَإِنْ يَتُوبُوا إِلَيْكَ خَيْرٌ أَلَهُمْ وَإِنْ يَتُوبُوا يَعِدْ بِهِمُ اللَّهُ
عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ
مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَن مَّنَّ عَهْدَ اللَّهِ لَئِنْ
أَتَيْنَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَتَّصِدَقَنَّ وَلَنُكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ
فَلَمَّا أَتَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ
مُعْرِضُونَ ۝ فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَى يَوْمِ يَلْقَوْنَ
بِهَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِهَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ أَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ
الْغُيُوبِ ۝ الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

रज़ामन्दी सब (नेमतों) से बड़ी चीज़ है, यह (ज़िक्र हुई जज़ा) बड़ी कामयाबी है। (72) ♦

ऐ नबी! कुफ़ार (से तलवार के साथ) और मुनाफ़िकों से (ज़बानी) जिहाद कीजिए, और उनपर सख़्ती कीजिए। (ये दुनिया में तो इसके हक़दार हैं) और (आख़िरत में) इनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरी जगह है। (73) वे लोग अल्लाह की कस्में खा जाते हैं कि हमने (फ़लानी बात) नहीं कही, हालाँकि यकीनन उन्होंने कुफ़र की बात कही थी, और (वह बात कहकर) अपने (ज़ाहिरी) इस्लाम के बाद (ज़ाहिर में भी) काफ़िर हो गए, और उन्होंने ऐसी बात का इरादा किया था जो उनके हाथ न लगी, और यह उन्होंने सिर्फ़ इस बात का बदला दिया है कि उनको अल्लाह ने और उसके रसूल ने अल्लाह के रिज़्क से मालदार कर दिया, सो अगर (इसके बाद भी) तौबा करें तो उनके लिए (दोनों ज़हान में) बेहतर होगा। और अगर मुँह मोड़ा तो अल्लाह तआला उनको दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक सज़ा देगा, और उनका दुनिया में न कोई यार है और न मददगार। (74) और उन (मुनाफ़िकों) में बाज़ आदमी ऐसे हैं कि खुदा तआला से अहद करते हैं कि अगर अल्लाह तआला हमको अपने फ़ज़ल से (बहुत-सा माल) अता फ़रमा दे तो हम ख़ूब ख़ैरात करें, और हम (उसके ज़रिए से) ख़ूब नेक-नेक काम किया करें। (75) सो जब अल्लाह तआला ने उनको अपने फ़ज़ल से (बहुत-सा माल) दे दिया तो वे उसमें बुख़ल करने लगे (कि ज़कात न दी) और (इताअत से) मुँह मोड़ने लगे, और वे मुँह फेरने के आदी हैं। (76) सो अल्लाह तआला ने उसकी सज़ा में उनके दिलों में निफ़ाक़ (कायम) कर दिया (जो) खुदा के पास जाने के दिन तक (रहेगा) इस सबब से कि उन्होंने खुदा तआला से अपने वायदे में ख़िलाफ़ किया और इस सबब से कि वे (उस वायदे में शुरू ही से) झूठ बोलते थे। (77) क्या उनको ख़बर नहीं? कि अल्लाह तआला को उनके दिल का राज़ और उनकी सरगोशी “यानी कानाफ़ूसी” सब मालूम है, और यह कि अल्लाह तआला तमाम ग़ैब की बातों को ख़ूब जानते हैं। (78) ये (मुनाफ़िक लोग) ऐसे हैं कि नफ़्सी सदका देने वाले मुसलमानों पर सदकात के बारे में ताना मारते हैं, और (खासकर) उन लोगों पर (और

1. अगली आयत के मुताल्लिक़ किस्सा यह है कि तबूक से वापसी में चन्द मुनाफ़िकों ने जिनकी तादाद बारह तक नक़ल की गई है, एक रात सलाह की कि फ़लाँ घाटी में से आपकी सवारी गुज़रेगी तो सब मिलकर आपको ढकेल दें, फिर क़त्ल कर दें। ग़रज़ सब अपना मुँह लपेटकर जमा होकर उस जगह आ पहुँचे, मगर आपने देखकर डाँटा और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु व हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु साथ थे, उन्होंने हटाया, मगर पहचाने नहीं गए। आपको वहब से मालूम हुआ, आपने मन्ज़िल पर पहुँचकर उन लोगों को बुलाकर पूछा कि तुमने ऐसा-ऐसा इरादा किया था। वे सब कस्में खा गए कि न मश्वरा हुआ न इरादा हुआ। उनमें से बाज़ के साथ आपने ख़ास तौर पर माली इम्दाद भी फ़रमाई थी जैसे जिलास। इस किस्से में यह आयत नाज़िल हुई और इसके नाज़िल होने के बाद जिलास ने इख़लास और सच्चे दिल से इस्लाम कबूल किया।

2. सालबा विन हातिब नाम के एक शख्स ने आपसे माल के ज्यादा होने की दुआ कराई। आपने समझाया कि मस्तहत नहीं। उसने कहा कि मैं नेक कामों में खर्च किया करूँगा। ग़रज़ आपकी दुआ से वह मालदार हो गया। जब ज़कात का वक़्त आया तो कहने लगा कि इसमें (यानी ज़कात में) और जिज़ये (यानी टैक्स में) क्या फ़र्क़ है, और ज़कात न दी। इसपर अगली आयत नाज़िल हुई।

3. इन आयतों के नाज़िल होने की खबर सुनकर सालबा ज़कात लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे तेरी ज़कात लेने से मना फ़रमा दिया है। उसने बहुत हाय-तौबा की। फिर हज़रत सिद्दीके अक़बर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में ज़कात लाया, आपने भी कबूल न की। इसी तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी कबूल न की, यहाँ तक कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में वह मर गया।

अजाबुन् अलीम (79) इस्तगिफ्र लहुम् औ ला तस्तगिफ्र लहुम्, इन् तस्तगिफ्र लहुम् सब्अी-न मर्रतन् फ-लंय्यगिफ्रल्लाहु लहुम्, जालि-क बिअन्नहुम् क-फरु बिल्लाहि व रसूलिही, वल्लाहु ला यत्दिल् कौमल्-फासिकीन (80) ♦

फरिहल् मुखल्लफू-न बिमकअदिहिम् खिला-फ रसूलिल्लाहि व करिहू अय्युजाहिद् बिअम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम् फी सबीलिल्लाहि व कालू ला तन्फिरु फिल्हरि, कुल् नारु जहन्न-म अशद्दु हरन्, लौ कानू यप्कहून (81) फल्यज्जहकू कलीलव् वल्यब्कू कसीरन् जजाअम्-बिमा कानू यक्सिबून (82) फ-इर्र-ज-अकल्लाहु इला ताइ-फतिम् मिन्हुम् फस्तअज्जन्-क लिलखुरुजि फकुल्-लन् तक्कजू मअि-य अ-बदव्-व लन् तुकातिलू मअि-य अदुव्वन्, इन्नकुम् रजीतुम् बिल्कुअूदि अव्व-ल मर्रतिन् फकअुद्दू मअल् खालिफीन (83) व ला तुसल्लि अला अ-हदिम् मिन्हुम् मा-त अ-बदव्-व ला तकुम् अला कबिरी, इन्नहुम् क-फरु बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फासिकून (84) व ला तुअजिब-क अम्वालुहुम् व औलादुहुम्, इन्नमा युरीदुल्लाहु अय्युअज्जि-बहुम् बिहा फिद्दुन्या व तज्ज-क अन्फुसुहुम् व हुम् काफिरुन (85) व इजा उन्जिलत् सूरतुन् अन् आमिन् बिल्लाहि व जाहिद् म-अ रसूलिहिस्तअज्ज-न-क उलुतौलि मिन्हुम् व कालू जर्ना नकुम् मअल् काअिदीन (86)

وَالَّذِينَ لَا يُحَدِّثُونَ إِلَّا جَهْدَهُمْ فَيَسْتَفِرُّونَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ اسْتَغْفِرُوا لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرُوا لَهُمْ إِنَّ تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝ قَرَأَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِمْ خَلِيفَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرْبِ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝ فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكِوْا كَثِيرًا أَجْرًا ۚ إِنَّمَا كَانَ يَنْكُشُونَ ۝ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوا لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُفَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ۝ وَلَا تَصِلْ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ ۝ وَلَا تَعْبُوكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَإِذَا أَنْزَلْتُ سُورَةً أَنْ

ज्यादा) जिनको सिवाय मेहनत (व मजदूरी की आमदनी) के और कुछ मयस्सर नहीं होता, यानी उनसे मज़ाक-ठट्टा करते हैं, अल्लाह उनको इस मज़ाक उड़ाने का तो ख़ास बदला देगा,¹ और (मुतलक ताना मारने का यह बदला मिलेगा ही कि) उनके लिए (आखिरत में) दर्दनाक सज़ा होगी। (79) आप चाहे उन (मुनाफ़िकों) के लिए इस्तिग़फ़ार करें या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी इस्तिग़फ़ार करेंगे तब भी अल्लाह तआला उनको न बख़्शेगा, यह इस वजह से है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और अल्लाह तआला ऐसे सरकश लोगों को हिदायत नहीं किया करता। (80) ♦

ये पीछे रह जाने वाले खुश हो गए, अल्लाह के रसूल के (जाने के) बाद अपने बैठे रहने पर, और उनको अल्लाह तआला की राह में अपने माल और जान के साथ जिहाद करना नागवार हुआ, और (दूसरों को भी) कहने लगे कि तुम गर्मी में मत निकलो। आप कह दीजिए कि जहन्नम की आग (इससे भी) ज्यादा गर्म है, क्या ख़ूब होता अगर वे समझते। (81) सो थोड़े (दिनों दुनिया में) हँस लें, और बहुत (दिनों आखिरत में) रोते रहें,² उन कामों के बदले में जो कुछ (कुफ़्र, निफ़ाक और खिलाफ़त) किया करते थे। (82) तो अगर खुदा तआला आपको (इस सफ़र से मदीना को सही-सालिम) उनके किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाए, फिर ये लोग (किसी जिहाद में) चलने की इजाज़त माँगे तो आप (यूँ) कह दीजिए कि तुम कभी भी मेरे साथ न चलोगे, और न मेरे साथ होकर किसी (दीन के) दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहले भी बैठे रहने को पसन्द किया था, तो उन लोगों के साथ बैठे रहो जो (वाकई) पीछे रह जाने के लायक ही हैं। (83) और उनमें कोई मर जाए तो उस (के जनाज़े) पर कभी नमाज़ न पढ़िए और न (दफ़न के लिए) उसकी कब्र पर खड़े होइए, क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है और वे कुफ़्र ही की हालत में मरे हैं।³ (84) और उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह तआला को सिर्फ़ यह मन्ज़ूर है कि इन (ज़िक्र हुई चीज़ों) की वजह से उनको दुनिया में (भी) अज़ाब में गिरफ़्तार रखे और उनका दम कुफ़्र ही की हालत में निकल जाए।⁴ (85) और जब कभी कुरआन का कोई टुकड़ा (इस मज़मून में) नाज़िल किया जाता है कि तुम

1. मज़ाक उड़ाने से चूँकि ज्यादा दिल दुखता है इसलिए इसकी जगहों और सज़ा को ख़ास तौर पर ज़िक्र किया गया।

2. यानी हँसना थोड़े दिनों का है फिर रोना हमेशा-हमेशा का। अगरचे यहाँ इस तरह का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जैसे हुक्म दिया जा रहा हो, मगर मकसद इससे ख़बर देना है।

3. बुख़ारी व मुस्लिम में इस आयत का शाने नुज़ूल इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से यह नक़ल किया है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक मर गया तो उसके बेटे ने जो कि सहाबी (रज़ियल्लाहु अन्हु) थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि अपना मुबारक क़ुर्ता दे दीजिए कि उसमें उसको कफ़नाया जाए। आपने दे दिया। फिर दरख़्वास्त की कि उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ दीजिए। आप पढ़ने खड़े हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपका दामन पकड़ लिया और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप इसकी नमाज़ पढ़ते हैं, हालाँकि अल्लाह तआला ने आपको मुनाफ़िकों की नमाज़ पढ़ने को मना फ़रमाया है। यानी 'आप उन मुनाफ़िकों के लिए इस्तिग़फ़ार करें या न करें.....इस आयत में' आपने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया है (मना नहीं किया) ग़रज़ आपने नमाज़ पढ़ी। उसपर यह आयत नाज़िल हुई। फिर कभी आपने मुनाफ़िकों के जनाज़े पर नमाज़ नहीं पढ़ी।

मसला: काफ़िर के जनाज़े पर नमाज़ और उसके लिए इस्तिग़फ़ार या उसके कफ़न-दफ़न में शिर्कत जायज़ नहीं।

4. ऊपर तबूक की लड़ाई के मुताल्लिक़ मुनाफ़िकों के पीछे रह जाने और झूठे बहाने बनाकर इजाज़त माँगने का बयान था। आगे उनकी यह मुस्तक़िल आदत होना कि हर लड़ाई में उनकी यह हालत है। और उनके मुकाबले में ईमान वालों की जाँबाज़ी और उसकी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाते हैं।

रजू बिअय्यकूनू मअल् ख्वालिफि व तुबि-अ अला कुलूबिहिम् फहुम् ला यफ्कहून (87)
लाकिनिर्सूलु वल्लजी-न आमनू म-अहू जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फुसिहिम्, व उलाइ-क
लहुमुल्-खैरातु व उलाइ-क हुमुल् मुफिलहून (88) अ-अद्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तजरी मिन्
तस्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फीहा, ज़ालिकल् फौज़ल्-अज़ीम (89) ♦

व जाअल् मुअज़िज़रु-न मिनल्-
अअुराबि लियुअज़-न लहुम् व
क-अदल्लजी-न क-ज़बुल्ला-ह व
रसूलहू, सयुसीबुल्लजी-न क-फरू मिन्हुम्
अज़ाबुन् अलीम (90) लै-स
अलज़ु-अफा-इ व ला अलल्- मरज़ा
व ला अलल्लजी-न ला यजिदू-न मा
युन्फिकू-न ह-रज़ुन् इज़ा न-सहू
लिल्लाहि व रसूलिही, मा अलल्
मुहिसनी-न मिन् सबीलिन्, वल्लाहु
ग़फूररहीम (91) व ला अलल्लजी-न
इज़ा मा अतौ-क लितस्मि-लहुम् कुल्-त
ला अजिदु मा अहिमलुकुम् अलैहि

۱۸۲
وَأَعْلَمُوا
أَمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الطَّوْلِ
مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا عَمَّا الْقَعيدِينَ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا
مَعَ الْغَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ
لَكِنِ الرُّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا بِأَمْرِ اللَّهِ
وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْغَيَرَةُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ
أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَذَبَ تَجَرْنِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِدِينَ
فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ وَجَاءَ الْمُعَذِّبُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ
يُؤْذِنُ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ لَيْسَ عَلَى الضَّعَفَاءِ
وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ
حَرْجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ
سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا اتَّوَكَّلُوا
لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتُ لَا أَحَدٌ مَّا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيَيْنُهُمْ
تَفِضْ مِنَ الدَّامَةِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يَنْفِقُونَ إِنَّمَا
السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنَاءُ رَضُوا بِأَن
يَكُونُوا مَعَ الْغَوَالِفِ وَطُبِعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

तवल्लौ व अअ्युनुहुम् तफीजु मिनद्- दम्अि ह-ज़नन् अल्ला यजिदू मा युन्फिकून
(92) इन्नमस्सबीलु अलल्लजी-न यस्तअज़िनून-क व हुम् अग्निया-उ रजू बिअय्यकूनू मअल्
ख्वालिफि व त-बअल्लाहु अला कुलूबिहिम् फहुम् ला यअलमून (93)

(दिल के खुलूस से) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो, तो उनमें के ताकत वाले आपसे रुख्सत “यानी न जाने के लिए छुट्टी” माँगते हैं,¹ और कहते हैं, हमको इजाजत दीजिए कि हम भी यहाँ ठहरने वालों के साथ रह जाएँ। (86) वे लोग (निहायत बेगैरती के साथ) घर में बैठी औरतों के साथ रहने पर राजी हो गए और उनके दिलों पर मोहर लग गई, जिससे वे (गैरत या बेगैरती को) समझते ही नहीं। (87) (हाँ) लेकिन रसूल और आपके साथ में जो मुसलमान हैं उन्होंने (इस हुक्म को माना और) अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिए सारी खूबिया हैं, और यही लोग कामयाब हैं। (88) अल्लाह तआला ने उनके लिए ऐसे बाग तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, वे उनमें हमेशा को रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89) ♦

और कुछ बहाना बनाने वाले लोग देहातियों में से आए ताकि उनको (घर रहने की) इजाजत मिल जाए, और (उन देहातियों में से) जिन्होंने खुदा से और उसके रसूल से (ईमान के दावे में) बिलकुल ही झूठ बोला था, वे बिलकुल ही बैठ रहे, उनमें से जो (आखिर तक) काफिर रहेंगे उनको दर्दनाक अज़ाब होगा।² (90) कम ताकत लोगों पर कोई गुनाह नहीं, और न बीमारों पर, और न उन लोगों पर जिनको खर्च करने को मयस्सर नहीं, जबकि ये लोग अल्लाह और रसूल के साथ (दूसरे अहकाम में) खुलूस रखें, (उन) नेक काम करने वालों पर किसी किस्म का इल्जाम (आयद) नहीं, और अल्लाह पाक बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।³ (91) और न उन लोगों पर (कोई गुनाह और इल्जाम है) कि जिस वक़्त वे आपके पास इस वास्ते आते हैं कि आप उनको कोई सवारी दे दें और आप (उनसे) कह देते हैं कि मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं जिसपर मैं तुमको सवार कर दूँ, तो वे (नाकाम) इस हालत से वापस चले जाते हैं कि उनकी आँखों से आँसू बहते होते हैं, इस ग़म में कि (अफ़सोस) उनको खर्च करने को कुछ भी मयस्सर नहीं। (92) पस इल्जाम (और पकड़) तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो बावजूद सामान (और ताकत) वाले होने के (घर रहने की) इजाजत चाहते हैं, वे लोग (निहायत बेशर्मी से) घर में बैठी औरतों के साथ रहने पर राजी हो गए, और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी, जिससे वे (गुनाह व सवाब को) जानते ही नहीं।⁴ (93)

1. 'ताकत वालों' के ज़िक्र से ख़ास करना मकसूद नहीं, बल्कि जो ताकत वाले नहीं यानी इसकी ताकत व हिम्मत नहीं रखते उनका हाल इससे और भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि जब ताकत वालों का यह हाल है तो बेताकतों और कमज़ोरों का तो ज़रूर ही होगा।
2. यूँ तो ईमान के दावे में सब ही मुनाफ़िक़ीन झूठे थे, मगर जो उज़्र करने आए थे उन्होंने अपने दावे को दिखावे में तो निभाया और बाज़े ऐसे घमण्डी और बेबाक थे जिन्होंने ज़ाहिरी तौर पर भी न निभाया। वे जैसे दिल में झूठे थे ज़ाहिर में भी उनका झूठ खुल गया।
3. अगर ये लोग अपनी जानकारी में माज़ूर हों और अपनी तरफ़ से खुलूस व इताअत में कोशिशें करें और हकीकत में कुछ कमी रह जाए तो माफ़ कर देंगे।
4. ऊपर उन मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र था जिन्होंने रवानगी के वक़्त उज़्र घड़े थे। आगे उनका ज़िक्र है जिन्होंने वापसी के वक़्त बहाने बनाए थे। ये अगली आयतें वापसी से पहले नाज़िल हुईं, जिनमें फ़ानी ग़रज़ों और मख़्लूक की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए उनकी बहानेबाज़ी के मुताल्लिक़ 'यअतज़िरू-न' (यानी ये लोग तुम सबके सामने उज़्र पेश करेंगे) में पेशीनगोई है। और 'कुल ला तअतज़िरू' और 'फ-अअरिज़ू' (यानी 'आप सबकी तरफ़ से साफ़ कह दीजिए कि ये उज़्र मत पेश करो', और 'तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो') में इस उज़्र के वक़्त उनके साथ कौल व अमल के एतिबार से बर्ताव की तालीम है, और साथ-साथ अज़ाब की वईद यानी धमकियाँ उनको सुनाई गई हैं।

ग्यारहवाँ पारः यअतजिरु-न

सूरतुत्तौ-बति (आयत 94 से 129)

यअतजिरु-न इलैकुम् इजा र-जअतुम् इलैहिम्, कुल्-ला तअतजिरु लन्नुअमि-न लकुम् कद् नब्ब-अनल्लाहु मिन् अखबारिकुम्, व स-यरल्लाहु अ-म-लकुम् व रसूलुहू सुम्-म

तुरद्दू-न इला आलिमिलैबि वशशहादति फयुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअमलून

(94) स-यहिलफू-न बिल्लाहि लकुम्

इजन्कलब्तुम् इलैहिम् लितुअरिजू अन्हुम्,

फ-अअरिजू अन्हुम्, इन्हुम् रिज्जुव-व

मअवाहुम् जहन्नमु जजाअम् बिमा कानू

यक्सिबून (95) यहिलफू-न लकुम्

लितरजौ अन्हुम् फ-इन् तरजौ अन्हुम्

फ-इन्नल्ला-ह ला यरजा अनिल्

कौमिल्-फासिकीन (96) अलअअराबु

अशद्दु कुफरंव-व निफाकंव-व अज्दरु

अल्ला यअलमू हुदू-द मा अन्जलल्लाहु

अला रसूलिही, वल्लाहु अलीमुन् हकीम

(97) व मिनल्-अअराबि मय्यत्तखिजु

मा युन्फिकु मररमंव-व य-तरब्बसु

बिकुमुद्दवाइ-र, अलैहिम् दाइ-रतुसौ-इ,

वल्लाहु समीअुन् अलीम (98) व मिनल्-अअराबि मय्युअमिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आखिरि

व यत्तखिजु मा युन्फिकु कुरुबातिन् अिन्दल्लाहि व स-लवातिरसूलि, अला इन्नहा

कुर-बतुल्लहुम् सयुदखिलुहुमुल्लाहु फी रह्मतिही, इन्नल्ला-ह गफूररहीम (99) ❖

वस्साबिकूनल् अव्वलू-न मिनल्मुहाजिरी-न वलअन्सारि वल्लजीनत्त-बअहुम् बि-इहसानिर्-

يَعْتَنِ رُؤُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَنِ رُؤُونَ
لَنْ تُؤْمِنُوا كَمَا قَدْ تَبَيَّنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ يُعْزِزُكُمْ تَرْدُونَ إِلَى غُلَامِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ سَيُحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا
انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لَعْنُهُمْ فَاغْرُضُوا عَنْهُمْ إِنْ هُمْ
يَجْسُ وَمَا لَهُمْ بِهِمْ جَهَنَّمَ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ سَيُحْلِفُونَ
لَكُمْ لَتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَى
عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدُ
الْأَيْعُلُوْا وَحْدًا وَمَا أُنْزِلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَكْرِضُ
بِكُمُ الدَّوَابَّرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ
وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا
يُنْفِقُ قُرْبَىٰ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتُ الرَّسُولِ إِلَّا إِنْهَا قُرْبَىٰ لَهُمْ
سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ وَالشَّاقِقُونَ
الَّذِينَ كَانُوا مِنَ اللَّهِ مُهْجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ الْبُعُوثُ بِأَخْسَنِ
رَضَى اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَذَىٰ تَجْرِي

مَنْ

ग्यारहवाँ पार: यअतज़िर-न

सूर: तौबा (आयत 94 से 129)

ये लोग तुम्हारे (सबके) सामने उज़्र पेश करेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे। (सो ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप (सबकी तरफ से साफ) कह दीजिए कि (यह) उज़्र पेश मत करो, हम कभी तुमको सच्चा न समझेंगे, अल्लाह तआला हमको तुम्हारी (असली हालत की) ख़बर दे चुके हैं। और आगे भी अल्लाह तआला और उसका रसूल तुम्हारी कारगुजारी देख लेंगे। फिर ऐसे के पास लौटाए जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सबका जानने वाला है। फिर वह तुमको बतला देगा जो-जो कुछ तुम करते थे। (94) (हाँ) वे अब तुम्हारे सामने अल्लाह की कस्में खा जाएँगे (कि हम माज़ूर थे) जब तुम उनके पास वापस जाओगे, ताकि तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो। सो तुम उनको उनकी हालत पर छोड़ दो, वे लोग बिलकुल गन्दे हैं, और (अख़ीर में) उनका ठिकाना दोज़ख़ है, उन कामों के बदले में जो कुछ वे (निफ़ाक़ व मुखालिफ़त वग़ैरह) किया करते थे। (95) ये इसलिए कस्में खाएँगे कि तुम उनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओ तो (उनको क्या नफ़ा, क्योंकि) अल्लाह तआला तो ऐसे शरीर लोगों से राज़ी नहीं होता। (96) (उन मुनाफ़िकों में जो) देहाती लोग (हैं वे) कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त लोग हैं, और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको उन अहक़ाम का इल्म न हो जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाए हैं, और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक़मत वाले हैं। (97) और उन देहातियों में से बाज़-बाज़ ऐसा है कि जो कुछ वह ख़र्च करता है उसको जुर्माना समझता है, और तुम मुसलमानों के वास्ते (ज़माने की) गर्दिशों का मुन्तज़िर रहता है, बुरा वक़्त उन ही (मुनाफ़िकों) पर (पड़ने वाला) है,² और अल्लाह तआला सुनते हैं, जानते हैं। (98) और बाज़े देहात वाले ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और कियामत के दिन पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के पास कुर्ब “यानी निकटता” हासिल होने का ज़रिया और रसूल की दुआ का ज़रिया बनाते हैं,³ याद रखो कि (उनका) यह (ख़र्च करना) बेशक उनके लिए निकटता का सबब है, ज़रूर उनको अल्लाह तआला अपनी रहमत में दाख़िल कर लेंगे, अल्लाह तआला बड़ी मफ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (99) ♦

और जो मुहाजिरीन और अन्सार (ईमान लाने में सबसे) पहले और मुक़द्दम हैं, और (बक़िया उम्मत में) जितने इख़लास के साथ उनके पैरोकार हैं, अल्लाह उन सबसे राज़ी हुआ और वे सब उससे (यानी अल्लाह से) राज़ी हुए,⁴ और उसने (यानी अल्लाह ने) उनके लिए ऐसे बाग़ मुहैया कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) यह बड़ी कामयाबी है। (100) और कुछ तुम्हारे आस-पास वाले

1. उज़्र करने और हलफ़ उठाने में उनकी दो गरज़ें बयान फ़रमाई, मुँह मोड़ना और रिज़ा। और उसके मुताल्लिक़ तीन हुक्म फ़रमाए, एक ‘उज़्र पेश मत करो’ दूसरा ‘उनको उनकी हालत पर छोड़ दो’ तीसरा ‘रिज़ा हासिल न होना’ जो ‘फ़-इन तरज़ौ.....’ से समझ में आता है।
2. चुनौचे फ़तुहात की वुसूअत हुई, कुफ़्फ़ार ज़लील हुए, उनकी सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गई और तमाम उग्र रंज व ख़ौफ़ में कटी।
3. क्योंकि आपकी आदतें शरीफ़ा थी कि ऐसे मौकों पर ख़र्च करने वाले को दुआ देते थे, जैसा कि हदीसों में है।
4. ‘वस्साबिकूनल् अव्वलून’ में सब मुहाजिरीन व अन्सार आ गए। और ‘अल्लज़ीनल्ल-बऊहुम्’ में बक़िया मोमिनीन, जिनमें पहला दर्जा तो उनका है जो सहाबा हैं, चाहे मुहाजिर व अन्सार न हों, क्योंकि अख़ीर में हिज़रत फ़र्ज़ न थी, मुसलमान होकर अपने-अपने घर रहने की इजाज़त थी। और दूसरा दर्जा इस्तिलाही मायने में ताबिईन का है, फिर सहाबा और ताबिईन के अलावा का, फिर खुद इस आख़िरी दर्जे में भी अलग-अलग दर्जे हैं कि तब्-ए-ताबिईन फ़ज़ीलत में औरों से मुक़द्दम हैं, जिस तरह सहाबा में मुहाजिरीन व अन्सार दूसरे सहाबा से अफ़ज़ल हैं।

रज़ियल्लाहु अन्हुम् व रज़ू अन्हु व अ-अद्-द लहुम् जन्नातिन् तजरी तह-तहल्-अन्हारु
ख़ालिदी-न फीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फौजुल्-अज़ीम (100) व मिम्-मन् हौलकुम् मिनल्-
अअ़राबि मुनाफिक्-न, व मिन् अह्लिल्-मदीनति म-रदू अलन्निफ़ाकि, ला तअ़लमुहुम्, नहन्
नअ़लमुहुम्, सनुअज़िबुहुम् मरतैनि सुम्-म युरददू-न इला अज़ाबिन् अज़ीम (101) व

आख़रूनअ-त-रफू बिजुनूबिहिम् ख-लतू
अ-मलन् सालिहं-व आख-र सय्यिअन्,
असल्लाहु अय्यतू-ब अलैहिम्,
इन्नल्ला-ह ग़फ़ूररहीम (102) ख़ुज़्
मिन् अम्वालिहिम् स-द-कतन्
तुतहिहरुहुम् व तुजक्कीहिम् बिहा व
सल्लि अलैहिम्, इन्-न सलात-क
स-कनुल्लहुम्, वल्लाहु समीअुन् अलीम
(103) अलम् यअ़लमू अन्नल्ला-ह
हु-व यक्बलुत्तौब-त अन् अ़िबादिही व
यअ़ख़ुजुस्स-दकाति व अन्नल्ला-ह
हुवत्-तव्वाबुरहीम (104) व कुलिअ़मलू
फ-स-यरल्लाहु अ-म-लकुम् व रसूलहू
वल्-मुअ़मिन्-न, व सतुरददू-न इला
आलिमिल्-गैबि वशशहा-दति

تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ
وَمَنْ حَوَّلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ
مَرَدُّوا عَلَى الرَّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَعَدَ لَهُمْ
فَمَرَّتَيْنِ ثُمَّ يَرَدُّونَ إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا
بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَنْ
يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً
تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيَهُمْ بِهَا وَصَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ
لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ
وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَ
سُدُّونَ إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ
وَآخَرُونَ مُرْجُونَ لِعَمَلِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاسْتَمْسَقُوا بِزُرَارِئِ الْكُفْرِ
وَتَفَرَّقُوا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالزَّاهِقِينَ حَارَبَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ
مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَادْنَا إِلَّا الْحُسْنَى وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لِمَسْجِدٍ أُتِيَ عَلَى التَّقْوَى مِنْ

مِثْلُ

फ-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़मलून (105) व आख़रून-न मुरज़ौ-न लिअम्रिल्लाहि इम्मा
युअज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अलैहिम्, वल्लाहु अलीमुन् हकीम (106) वल्लज़ीनत्त-ख़ज़्
मस्जिदन् ज़िरारं-व कुफ़रं-व तफ़रीकम्-बैनल्मुअ़मिनी-न व इरसादल्-लिमन् हा-रबल्ला-ह
व रसूलहू मिन् कब्लु, व ल-यह्लिफुन्-न इन् अरदना इल्लल्-हुस्ना, वल्लाहु यशहदु इन्नहुम्

देहातियों में और कुछ मदीना वालों में ऐसे मुनाफिक हैं, कि निफाक की आखिरी हद को पहुँचे हुए हैं, कि आप (भी) उनको नहीं जानते (कि ये मुनाफिक हैं, बस) उनको हम ही जानते हैं। हम उनको (यानी मुनाफिकों को आखिरत से पहले भी) दोहरी सज़ा देंगे, (एक निफाक की दूसरे निफाक में हद से बढ़ने की) फिर (आखिरत में) वे बड़े भारी अज़ाब की तरफ़ भेजे जाएँगे।¹ (101) और कुछ और लोग हैं जो अपनी ख़ता के इकरारी हो गए। जिन्होंने मिले-जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे, (सो) अल्लाह तआला से उम्मीद है कि उन (के हाल) पर रहमत के साथ तवज्जोह फ़रमाएँ, (यानी तौबा कबूल कर लें) बेशक अल्लाह तआला बड़ी मग़्फ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं। (102) आप उनके मालों में से सदका (जिसको ये लाए हैं) ले लीजिए, जिसके (लेने के) ज़रिये से आप उनको (गुनाह के आसार से) पाक व साफ़ कर देंगे² और उनके लिए दुआ कीजिए, बेशक आपकी दुआ उनके लिए (दिल के) इत्मीनान का सबब है, और अल्लाह तआला (उनके मान लेने को) ख़ूब सुनते हैं (और उनकी शर्मिन्दगी को) ख़ूब जानते हैं। (103) क्या उनको यह ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला ही अपने बन्दों की तौबा कबूल करता है और वही सदकों को कबूल फ़रमाता है, (और क्या उनको ख़बर नहीं कि) अल्लाह तआला ही तौबा कबूल करने (की सिफ़त में, और) रहमत करने (की सिफ़त) में कामिल हैं। (104) और आप कह दीजिए कि (जो चाहो) अमल किए जाओ, सो अभी देखे लेता है अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले तुम्हारे अमल को, और ज़रूर तुमको ऐसे के पास जाना है जो तमाम छुपी और खुली चीज़ों को जानने वाला है। सो वह तुमको तुम्हारा सब किया हुआ बतला देगा। (105) और कुछ और लोग हैं जिनका मामला खुदा का हुक्म आने तक मुल्लवी “यानी स्थगित” है कि उनको सज़ा देगा या उनकी तौबा कबूल कर लेगा, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। (106) और (बाज़े ऐसे हैं कि) जिन्होंने (इन गरजों के लिए) मस्जिद बनाई है कि (इस्लाम को) नुक़सान पहुँचाएँ और (उसमें बैठ-बैठकर) कुफ़ की बातें करें, और ईमान वालों में फूट डालें,³ और उस शख्स के ठहरने का सामान करें जो पहले से ही खुदा और रसूल का मुख़ालिफ़ है⁴ और कस्में खा जाएँगे कि सिवाय भलाई के हमारी और कुछ

1. उनको और मुनाफिकों से बढ़ा हुआ इसलिए फ़रमाया कि निफाक के निफाक होने का मदार छुपाना है, और इसमें वे ऐसे बढ़े हुए हैं कि बावजूद यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़हानत, समझ और अक्ल में तमाम ज़हान से ज़्यादा मुकम्मल हैं, मगर उन्होंने आपको भी पता न चलने दिया।
2. इसी लिए उनकी तौबा कबूल की और अपनी रहमत से माल कबूल करने और उनके लिए दुआ करने का हुक्म फ़रमाया। पस आइन्दा भी ख़ता या गुनाहों के हो जाने पर तौबा कर लिया करें और अगर तौफीक हो तो ख़ैर-ख़ैरात भी किया करें। अगर कोई यह सवाल करे कि जब तौबा से गुनाह माफ़ हो गया तो सदके के पाक-साफ़ करने वाला होने के क्या मायने? जवाब इसका यह है कि तौबा से गुनाह तो माफ़ हो जाता है लेकिन कभी-कभी उसका अँधकार और मैल का असर बाकी रह जाता है, और अगरचे उसपर पकड़ नहीं लेकिन उससे आइन्दा और गुनाहों के पैदा होने का अन्देशा होता है। पस सदके से खुसूसन और दूसरे नेक आमाल से अमूमन यह अँधकार और मैल ख़त्म हो जाता है।
3. इस किस्से का खुलासा यह है कि शहर मदीना के करीब एक मौहल्ला है, कुबा उसका नाम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए तो अव्वल इसी मौहल्ले में ठहरे, फिर शहर में तशरीफ़ ले आए थे। तो वहाँ ठहरने के ज़माने में जिस जगह आप नमाज़ पढ़ते थे वहाँ उस मौहल्ले के मोमिनीन मुख़लिसीन ने एक मस्जिद बनाई थी और उसमें नमाज़ पढ़ा करते थे। मुनाफिकों में आपस में यह सलाह ठहरी कि एक मकान मस्जिद के नाम से अलग बनाया जाए और उसमें सब जमा होकर इस्लाम को नुक़सान पहुँचाने के मशिवरे किया करें। गरज़ मस्जिद की शक्ल पर वह मकान तैयार हुआ तो आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर दरख़्वास्त की कि आप वहाँ चलकर नमाज़ पढ़ लीजिए तो फिर वहाँ जमाअत होने लगे। आपने वायदा कर लिया कि तबूक से वापस आकर उसमें नमाज़ पढ़ूँगा। अल्लाह तआला ने इन आयतों में आपको असल हकीकत की इत्तिहा कर दी और वहाँ नमाज़ पढ़ने की गरज़ से जाने से मना फ़रमा दिया। चुनाँचे आपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को भेजकर उसको आग लगवा दी और गिरवा दिया। उस मस्जिद का लक़ब मस्जिदे-ज़रार मशहूर है, इस वजह से कि वह ज़रर यानी नुक़सान का सबब थी।
4. मुराद अबू आमिर राहिब है।

लकाज़िबून (107) ला तकुम् फीहि अ-बदन्, ल-मस्जिदुन् उस्सि-स अलत्तक्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अ-हक्कु अन् तक्-म फीहि, फीहि रिजालुंयुहिब्बू-न अय्यत-तह्ररु, वल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तहिहरीन (108) अ-फ-मन् अस्स-स बुन्यानहू अला तक्वा मिनल्लाहि व रिज्जानिन् खैरुन् अम्-मन् अस्स-स बुन्यानहू अला शफा ज़रुफिन् हारिन् फन्हा-र बिही फी नारि

जहन्न-म, वल्लाहु ला यत्दिल् कौमज़- ज़ालिमीन (109) ला यज़ालु बुन्यानु- -हुमुल्लज़ी बनौ री-बतन् फी कुलूबिहिम् इल्ला अन् त-कत्त-अ कुलूबुहुम्, वल्लाहु अलीमुन् हकीम (110) ♦

इन्नल्लाहशतरा मिनल्मुअमिनी-न अन्फु-सहुम् व अम्वालहुम् बिअन्-न लहुमुल्जन्न-त, युकातिलू-न फी सबीलिल्लाहि फ-यक्तलू-न व युक्तलू-न, वअदन् अलैहि हक्कन् फित्तौराति वल्इन्जीलि वल्कुरआनि, व मन् औफा बि-अहिदही मिनल्लाहि फस्तब्शिरु बिबैअिकुमुल्लज़ी बायअुतुम् बिही, व ज़ालि-क हुवल् फौज़ुल्-अज़ीम (111) अत्ता-इबूनल्-आबिदूनल्-हामिदूनस्-सा-इहूनर्-राकिअूनस्-साजिदूनल्-

आमिरु-न बिल्मअरुफि वन्नाहू-न अनिल्मुन्कारि वल्हाफिज़ू-न लिहुदूदिल्लाहि, व बशिशरिल् मुअमिनीन (112) मा का-न लिन्नबिथि वल्लज़ी-न आमनू अय्यस्तग़िफ़रु लिल्मुशिरकी-न व लौ कानू उली कुरबा मिम्-बअदि मा तबय्य-न लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुल्-जहीम (113) व मा कानस्तिग़फ़ारु इब्राही-म लिअबीहि इल्ला अम्-मौअि-दतिव् व-अ-दहा इय्याहु फ-लम्मा तबय्य-न लहू अन्नहू अदुव्वुल्-लिल्लाहि त-बर-अ मिन्हु, इन्-न इब्राही-म ल-अव्वाहुन्

التوبة ١٨٥
أَوَّلُ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ رَبِّ الْجَالِ يُخَوِّنُ أَنْ يَتَّخِذُوا
وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطْهَرِينَ ۝ أَفَمَنْ أَتَسَسُّ بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَى
مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَتَسَسُّ بُنْيَانَهُ عَلَى شَفَا
جُرْفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ
إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدَا عَلَيْهِ
حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ
اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِنِعْمَةِ اللَّهِ الَّتِي بِالْعِثْمِ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْمُ
الْعَظِيمُ ۝ النَّبِيُّونَ الْعَبْدُونَ السَّامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ
السَّاجِدُونَ الْأُمَرَاءُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
الْحَافِظُونَ يَحْدُودُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالْ
الَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَى قُرْبَى
مِنْ عِبَادِ مَا بَيَّنَّ لَهُمْ أَلَهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ
إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ

مَنْ

नीयत नहीं, और अल्लाह गवाह है कि वे बिल्कुल झूठे हैं। (107) आप उसमें कभी (नमाज़ के लिए) खड़े न हों, अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अब्बल दिन से तक्वे पर रखी गई है। (मुराद मस्जिदे कुबा है) वह (वाकई) इस लायक है कि आप उसमें (नमाज़ के लिए) खड़े हों।¹ उसमें ऐसे आदमी हैं कि वे ख़ूब पाक होने को पसन्द करते हैं, और अल्लाह तआला ख़ूब पाक होने वालों को पसन्द करता है। (108) फिर क्या ऐसा शख्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत (यानी मस्जिद) की बुनियाद अल्लाह तआला से डरने पर और उसकी की रिज़ा पर रखी हो, या वह शख्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी घाटी (यानी गुफा) के किनारे पर रखी हो जो कि गिरने ही को हो, फिर वह (इमारत) उस (बनाने वाले) को लेकर दोज़ख़ की आग में गिर पड़े, और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को (दीन की) समझ नहीं देता। (109) उनकी (यह) इमारत जो उन्होंने बनाई है (हमेशा) उनके दिलों में (काँटा-सा) खटकती रहेगी, (हाँ) मगर उनके (वे) दिल ही (अगर) फना हो जाएँ तो खैर,² और अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी हिकमत वाले हैं।³ (110) ♦

बेशक अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जानों और उनके मालों को इस बात के बदले ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी। वे लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, (जिसमें) क़त्ल करते हैं और क़त्ल किए जाते हैं,⁴ इसपर च्या वायदा (किया गया) है तौरात में (भी) और इन्ज़ील में (भी) और कुरआन में (भी) और (यह मुसल्लम है कि) अल्लाह से ज़्यादा अपने अहद को कौन पूरा करने वाला है। तो तुम लोग अपने इस बेचने पर जिसका तुमने उससे (यानी अल्लाह पाक से) मामला ठहराया है खुशी मनाओ,⁵ और यह बड़ी कामयाबी है। (111) वे ऐसे हैं जो (गुनाहों से) तौबा करने वाले हैं (और अल्लाह की) इबादत करने वाले (और) तारीफ़ करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ करने वाले, (और) सज्दा करने वाले, नेक बातों की तालीम करने वाले, और बुरी बातों से रोकने वाले, और अल्लाह की हदों का (यानी उसके अहकाम का) ख़याल रखने वाले (हैं), और ऐसे मोमिनीन कि (जिनमें जिहाद और ये सिफ़तें हैं) आप खुशख़बरी सुना दीजिए।⁶ (112) पैग़म्बर को और दूसरे मुसलमानों को जायज़ नहीं कि मुशिरकों के लिए मग़िफ़रत की दुआ माँगें, अगरचे वे रिश्तेदार ही (क्यों न) हों, इस (बात) के उनपर ज़ाहिर हो जाने के बाद कि ये लोग दोज़ख़ी हैं।⁷ (113) और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मग़िफ़रत की दुआ माँगना, वह (भी) सिर्फ़ वायदे के सबब था, जो उन्होंने उससे वायदा कर लिया था। फिर जब उनपर यह बात ज़ाहिर हो गई कि वह खुदा का दुश्मन है (यानी काफ़िर

1. चुनाँचे कभी-कभी आप वहाँ तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते।
2. 'मगर यह कि उनके वे दिल ही फना हो जाएँ' का यह मतलब नहीं कि मौत आने या फना होने के बाद राहत हो जाएगी, बल्कि यह मुहावरों में किनाया है हमेशा की हसरत में रहने का।
3. ऊपर जिहाद में पीछे हट जाने वालों की मज़म्मत (निंदा) थी, आगे मुजाहिदीन की फज़ीलत, फिर उनमें से ख़ास कामिलीन की, जिनमें इसके साथ दूसरी ईमानी सिफ़तें भी हों, उनकी तारीफ़ ज़िक्र की गई है।
4. यानी वह बैअ (सौदा) जिहाद करना है, चाहे उसमें कातिल होने की नौबत आए या मक्तूल होने की।
5. क्योंकि इस बैअ पर तुमको ज़िक्र हुए वायदे के मुताबिक जन्नत मिलेगी।
6. इन सिफ़तों की कैद लगाने का यह मतलब नहीं कि बिना इन सिफ़तों के जिहाद का सवाब नहीं मिलता। बल्कि मतलब यह है कि इन सबके इकट्ठा होने से सवाब और फज़ीलत में और ज़्यादाती और कुव्वत हो जाती है, ताकि ख़ाली जिहाद पर न बैठ जाएँ, बल्कि इन इबादतों को भी हमेशा बजा लाएँ।
7. वजह इस मना करने की यह हुई कि अबू तालिब की वफ़ात के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तक मुझको मनाही न होगी उनके लिए इस्तिग़फ़ार करूँगा। इसपर और मुसलमानों ने भी अपने मुशिरक होने की हालत में मौत पाए हुए रिश्तेदारों के लिए इस्तिग़फ़ार शुरू किया, तो इस आयत में इसकी मनाही आई। बाज़ को शुब्हा हुआ कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी तो अपने बाप के लिए इस्तिग़फ़ार फरमाया था, इसपर अगली आयत में जवाब नाज़िल हुआ।

हलीम (114) व मा कानल्लाहु लियुजिल्-ल कौमम् बअ-द इज् हदाहुम् हत्ता युबय्यि-न लहुम् मा यत्तकू-न, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम (115) इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि, युह्यी व युमीतु, व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंवल्लियिं-व ला नसीर (116) ल-कत्ताबल्लाहु अलन्नबिय्यि वल्मुहाजिरी-न वल्अन्सारिल्लजीनत्- त-बअहू

फी सा-अतिल्-अुसरति मिम्- बअदि मा का-द यजीगु कुलूबु फरीकिम् मिन्हुम् सुम्-म ता-ब अलैहिम्, इन्नहू बिहिम् रऊफुरहीम (117) व अलस्-सला-सतिल्लजी-न खुल्लिफू हत्ता इजा जाकत् अलैहिमुल्-अर्रजु बिमा रहबत् व जाकत् अलैहिम् अन्फुसुहुम् व जन्नू अल्ला मल्ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि, सुम्-म ता-ब अलैहिम् लि-यतूबू, इन्नल्ला-ह हुवत्तव्बाबुरहीम (118) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व कूनू मअस्सादिकीन (119) मा का-न लिअदिल्ल-मदीनति व मन् हौ-लहुम् मिनल्- अअराबि अय्य-तखल्लफू अर्रसूलिल्लाहि व ला यरगबू बिअन्फुसिहिम् अन् नफिसही, जालि-क बिअन्नहुम् ला युसीबुहुम्

ज-मउं-व-व ला न-सबुं-व-व ला मखम-सतुन् फी सबीलिल्लाहि व ला य-तऊ-न मौतिअय्यगीजुल्-कुप्फा-र व ला यनालू-न मिन् अदुव्विन्-नैलन् इल्ला कुति-ब लहुम् बिही अ-मलुन् सालिहुन्, इन्नल्ला-ह ला युजीअु अजरल्-मुहिसनीन (120) व ला युन्फिकू-न न-फ-कतन् सगी-रतं-व-व ला कबी-रतं-व-व ला यक्तअ-न वादियन् इल्ला कुति-ब लहुम्

أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرُّكَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝ مَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۝ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ لَا مَلَأَ مِنْ اللَّهِ إِلَّا إِلَهُهُ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ۝ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظُلْمٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخِصَّةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطُوعُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَتَالَوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نِيلاً إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَعْمَلَكُمْ

होकर मरा) तो वह उससे बिल्कुल बेताल्लुक हो गए, वाकई इब्राहीम बड़े रहम मिजाज वाले, तबीयत के हलीम थे। (114) और अल्लाह तआला ऐसा नहीं करता कि किसी कौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे जब तक कि उन चीजों को साफ-साफ न बतला दे जिनसे वे बचते रहें। बेशक अल्लाह तआला हर चीज को खूब जानते हैं। (115) (और) बेशक अल्लाह ही की हुकूमत है, आसमानों और ज़मीन की, वही जिलाता है और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवा न कोई यार है और न मददगार। (116) अल्लाह ने पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई,¹ और मुहाजिरीन और अन्सार (के हाल) पर भी,² जिन्होंने (ऐसी) तंगी के वक़्त में पैग़म्बर का साथ दिया,³ इसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिलों में कुछ हलचल हो चली थी, फिर उसने (यानी अल्लाह ने) उन (के हाल) पर तवज्जोह फ़रमाई। बेशक अल्लाह उन सबपर बहुत ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान है। (117) और उन तीन शख्सों (के हाल) पर भी (तवज्जोह फ़रमाई) जिनका मामला मुल्तवी “यानी स्थगित” छोड़ दिया गया था, यहाँ तक कि जब (उनकी परेशानी की यह नोबत पहुँची कि) ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के उनपर तंगी करने लगी और वे खुद अपनी जान से तंग आ गए, और उन्होंने समझ लिया कि खुदा (की गिरफ़्त) से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाय इसके कि उसी की तरफ़ रुजू किया जाए। (उस वक़्त वे ख़ास तवज्जोह के काबिल हुए), फिर उन (के हाल) पर (भी ख़ास) तवज्जोह फ़रमाई, ताकि वे (आइन्दा भी) रुजू (रहा) करें, बेशक अल्लाह तआला बहुत तवज्जोह फ़रमाने वाले, बड़े रहम करने वाले हैं।⁴ (118) ♦

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और (अमल में) सच्चों के साथ रहो। (119) मदीना के रहने वालों को और जो देहाती उनके आस-पास में (रहते) हैं उनको यह मुनासिब न था कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ न दें, और न यह (चाहिए था) कि अपनी जान को उनकी जान से ज़्यादा प्यारा समझें। (और) यह (साथ जाने का ज़रूरी होना) इस सबब से है कि उनको (यानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जाने वालों को) अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो थकान पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले, जो काफ़िरो के लिए नाराज़गी और गुस्से का सबब हुआ हो, और दुश्मनों की जो कुछ ख़बर ली, उन सबपर उनके नाम एक-एक नेक काम लिखा गया (अगर ये साथ जाते तो इनके नाम भी लिखा जाता), यकीनन अल्लाह तआला मुख़्लिसीन का अज़्र ज़ाया नहीं करते। (120) और (यह भी कि) जो कुछ छोटा-बड़ा उन्होंने खर्च किया और जितने मैदान उनको तय करने पड़े, यह सब भी उनके नाम (नेकियों में)

1. कि आपको नुबुव्वत, जिहाद की इमामत और तमाम खूबियाँ अता फ़रमाई।
2. कि उनको ऐसी मशक्कत के जिहाद में साबित कदम रखा।
3. तबूक की लड़ाई के ज़माने को ‘तंगी का वक़्त’ इस वास्ते फ़रमाया कि सख़्त गर्मी का वक़्त था, सफ़र लम्बा था, मुकाबला तर्बियत-याफ़ता लश्कर से था, सवारी की बहुत कमी थी। खाने-पीने के सामान की कमी इस कदर थी कि एक-एक छुआरा दो-दो शख्सों में तकसीम होता था। बाज़ दफ़ा एक छुआरे को एक के बाद एक कई-कई आदमी चूसते थे, सवारी के ऊँट ज़िब्ह करने पड़े, उनकी अंतड़ियों को निचोड़कर पीना पड़ा।
4. किसी शख्स को उसके शरीअत के ख़िलाफ़ कोई काम करने पर यह सज़ा देना कि उससे सलाम व कलाम बंद कर दें, यह जायज़ है। और हदीसों में जो मनाही आई है कि तीन दिन से ज़्यादा बातचीत बन्द न करें मुराद उससे वह है जिसका सबब कोई दुनियावी रंज हो।

लियज्जि-यहुमुल्लाहु अहस-न मा कानू यअमलून (121) व मा कानल्-मुअमिनू-न
लियन्फिरु काफ्फ-तन्, फलौ ला न-फ-र मिन् कुल्लि फिर्कतिम् मिन्हुम्
ताइ-फतुल् लि-य-तफक्कहू फिद्दीनि व लियुन्जिरु कौमहुम् इजा र-जअू इलैहिम् लअल्लहुम्
यह्जरुन (122) ♦

या अय्युहल्लजी-न आमनू
कातिलुल्लजी-न यलूनकुम् मिनल्कुफ्फारि
वलयजिदू फीकुम् गिल्ज-तन्, वअलमू
अन्नल्ला-ह मअल्मुत्तकीन ♦ (123) व
इजा मा उन्जिलत् सूरतुन् फ-मिन्हुम्
मय्यकूलु अय्युकुम् ज़ादतुहु हाजिही
ईमानन् फ-अम्मल्लजी-न आमनू
फज़ादतुहुम् ईमानव्-व हुम् यस्तब्शिरुन
(124) व अम्मल्लजी-न फी कुलूबिहिम्
म-रजुन् फज़ादतुहुम् रिज्सन् इला
रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफिरुन
(125) अ-वला यरौ-न अन्नहुम्
युफ्तनू-न फी कुल्लि आमिम्-मर-तन्
औ मरतैनि सुम्-म ला यतूबू-न व ला
हुम् यज्जक्करुन (126) व इजा मा
उन्जिलत् सूरतुन् न-ज-र बअजुहुम् इला
बअजिन्, हल् यराकुम् मिन् अ-हदिन्
सुम्मन्स-रफू, स-रफल्लाहु कुलूबहुम् बिअन्नहुम् कौमुल् ला यफ्कहून (127) ल-कद्
जा-अकुम् रसूलुम् मिन् अन्फुसिकुम् अजीजुन् अलैहि मा अनित्तुम् हरीसुन् अलैकुम्
बिल्मुअमिनी-न रऊफुरहीम (128) फ-इन् तवल्लौ फकुल् हस्बयल्लाहु ला इला-ह इल्ला
हु-व, अलैहि तवक्कल्लु व हु-व रब्बुल् अर्शिल्-अजीम (129) ♦

التوبة ١٨٤ بعد زنون

الْمُحْسِنِينَ ۖ وَلَا يَنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ لِبَنِيهِمْ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِقُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا
نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَ
لِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلَيْدُوا فِيكُمْ
غُلَظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذَا مَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ
فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ أَيُّكُمْ وَادَّاهُ هَذِهِ آيَاتُنَا فَأَمَّا الَّذِينَ
آمَنُوا فَرَادَتْهُمْ آيَاتُنَا وَهُمْ يَشْتَرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا
وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَرَّةً
أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا مَا أَنْزَلَتْ
سُورَةٌ نَظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ
انْصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝
لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا

लिखा गया ताकि अल्लाह उनको उनके (उन सब) कामों का अच्छे-से-अच्छा बदला दे।¹ (121) और (हमेशा के लिये) मुसलमानों को यह (भी) न चाहिए कि (जिहाद के लिये) सब-के-सब (ही) निकल खड़े हों। सो ऐसा क्यों न किया जाए कि उनकी हर बड़ी जमाअत में से एक छोटी जमाअत (जिहाद में) जाया करे ताकि बाकी रहने वाले लोग दीन की समझ-बूझ हासिल करते रहें, और ताकि ये लोग अपनी (उस) कौम को जबकि वे उनके पास वापस आएँ, डराएँ। ताकि वे (उनसे दीन की बातें सुनकर बुरे कामों से) एहतियात रखें।² (122) ♦

ऐ ईमान वालो! उन कुफ़ार से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास (रहते) हैं,³ और उनको तुम्हारे अन्दर सख्ती पाना चाहिए,⁴ और यह यकीन रखो कि अल्लाह की (इम्दाद) मुत्तकी लोगों के साथ है। ♦ (123) (पस उनसे डरो मत) और जब कोई (नई) सूर: नाज़िल की जाती है तो उन (मुनाफ़िकों) में से बाज़ ऐसे हैं जो (ग़रीब मुसलमानों से मज़ाक उड़ाने के तौर पर) कहते हैं कि (कहो) इस (सूर:) ने तुममें से किसके ईमान में तरक्की दी। सो (सुनो) जो लोग ईमान वाले हैं उस (सूर:) ने उनके (तो) ईमान में तरक्की दी है और वे (उस तरक्की के पाने से) खुश हो रहे हैं। (124) और जिनके दिलों में (निफ़ाक की) बीमारी है, उस (सूर:) ने उनमें उनकी (पहली) गन्दगी के साथ और (नई) गन्दगी बढ़ा दी, और वे कुफ़र ही की हालत में मर गए।⁵ (125) और क्या उनको नहीं दिखाई देता कि ये लोग हर साल में एक बार या दो बार किसी न किसी आफ़त में फँसे रहते हैं (मगर) फिर भी (अपनी बुरी हरकतों से) बाज़ नहीं आते, और न वे कुछ समझते हैं (जिससे आइन्दा बाज़ आने की उम्मीद हो)। (126) और जब कोई (नई) सूर: नाज़िल की जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं (और इशारे से बातें करते हैं) कि तुमको कोई (मुसलमान) देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। (ये लोग हुजुरे पाक की मज्लिस से क्या फिरे) खुदा तआला ने उनका दिल (ही ईमान से) फेर दिया है, इस वजह से कि वे बिलकुल बे-समझ लोग हैं (कि अपने नफ़े से भागते हैं)। (127) (ऐ लोगो!) तुम्हारे पास एक ऐसे पैगम्बर तशरीफ़ लाए हैं जो तुम्हारी जिन्स (बशर) से हैं, जिनको तुम्हारी नुक़सान की बात निहायत भारी गुज़रती है,⁶ जो तुम्हारे फ़ायदे के बड़े इच्छुक रहते हैं, (यह हालत तो सबके साथ है, खास तौर पर) ईमान वालों के साथ बड़े ही शफ़ीक़ (और) मेहरबान हैं। (128) फिर अगर ये मुँह मोड़ें तो आप कह दीजिए (मेरा क्या नुक़सान है) कि मेरे लिए (तो) अल्लाह (हिफ़ाज़त करने वाला और मदद करने वाला) काफी है, उसके सिवा कोई माबूद होने के लायक नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और वह बड़े भारी अर्श का मालिक है। (129) ♦

1. ऊपर जो पीछे रह जाने वालों के बारे में मलामत के मज़ामीन नाज़िल हुए उससे आइन्दा के लिए शुब्हा हो सकता था कि हमेशा के लिए सबके जिम्मे जिहाद में जाना ज़रूरी होगा, इसलिए आगे हर शख्स के जाने का फ़र्ज न होना बयान फरमाते हैं।
2. बाकी बचे लोगों के रह जाने में जो मस्लहतें हैं उनमें से एक बड़ी मस्लहत को जो कि दीनी मस्लहत है, ज़िक्र फरमा दिया। इसके अलावा दुनिया की भी मस्लहतें हैं जो ज़ाहिर होने की वजह से ज़िक्र की मोहताज़ नहीं। जैसे सबके चले जाने में खुद दारुल-इस्लाम का कब्ज़े से निकल जाना भी मुम्किन है।
3. ऊपर चन्द आयतों में जिहाद की तरगीब थी, अब उसकी तरतीब मय उसके मुताल्लिक़ चन्द चीज़ों के ज़िक्र है। हासिल तरतीब का ज़ाहिर है कि अव्वल पास वालों से निबटना चाहिए, फिर बक़िया में जो सबसे पास के हों, और इसी पर आगे क़ियास कर लिया जाए। और इस तरतीब के ख़िलाफ़ में जो ख़राबियाँ हैं वे ज़ाहिर हैं, चुनाँचे हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो अपने इख़्तियार से गुज़ावात (लड़ाइयाँ) फरमाए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी, सबमें यही तरतीब अपनाई है।
4. यानी जिहाद के वक़्त भी मजबूत रहना चाहिए। और वैसे भी सुलह के ज़माने को छोड़कर उनसे ढीलापन न बरतना चाहिए।
5. यानी जो उनमें मर चुके वे काफ़िर मरे और जो इसी ज़िद व हठ पर रहेंगे, वे काफ़िर मरेंगे। जवाब का हासिल यह है कि कुरआन में ईमान को तरक्की देने की बेशक ख़ासियत है लेकिन जगह और मक़ाम में काबलियत भी तो हो। और अगर पहले से गन्दगी जड़ जमाए हुए है तो और भी उसकी जड़ मजबूत हो जाएगी। जैसे बारिश कि हर जगह एक-सी होती है, लेकिन उसी बारिश से किसी जगह फूल-फल और ख़ूबसूरत पौधे पैदा होते हैं और उसी बारिश से दूसरी जगह कँटे और झाड़-झन्काड़ पैदा होते हैं। इसमें कुसूर बारिश का नहीं बल्कि कुसूर उस ज़मीन और जगह की काबलियत का है।
6. यानी चाहते हैं कि तुमको कोई नुक़सान न पहुँचे।

10 सूरतु यूनस 51

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 7733 अक्षर, 1861 शब्द, 109 आयतें और 11 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल्
किताबिल्-हकीम (1) अका-न लिन्नासि
अ-जबन् अन् औहैना इला रजुलिम्
मिन्हुम् अन् अन्जिरिन्ना-स व
बश्शिरिल्लजी-न आमनू अन्-न लहुम्
क-द-म सिद्किन् अिन्-द रब्बिहिम्
कालल्-काफिरू-न इन्-न हाजा
लसाहिरुम्-मुबीन (2) इन्-न
रब्बकुमुल्लाहुल्लजी ख-लकस्समावाति
वल्-अर्-ज़ फी सित्तति अय्यामिन्
सुम्मस्तवा अलल्-अर्शि युदब्बिरुल्-
अम्-र, मा मिन् शफीअिन् इल्ला
मिम्-बअ्दि इज़िनही, जालिकुमुल्लाहु
रब्बुकुम् फअ्बुदूहु, अ-फला तज़क्करून
(3) इलैहि मर्जिअुकुम् जमीअन्,

वअदल्लाहि हक्कन्, इन्नहू यब्दउल्-खल्-क सुम्-म युअीडुहू लियज्जियल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति बिल्किस्ति, वल्लजी-न क-फरू लहुम् शराबुम्-मिन् हमीमिन्-व अज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फुरुन (4) हुवल्लजी ज-अलशशम्-स ज़ियाअं-व-वल्क-म-र नूरं-व-कद्द-रहू मनाज़ि-ल लितअलमू अ-ददस्सिनी-न वल्हिसा-ब, मा ख-लकल्लाहु ज़ालि-क इल्ला बिल्हक्कि युफस्सिलुल्-आयाति लिकौमिन्-यअलमून (5) इन्-न फिख्तिलाफिल्लैलि

[illegible]

10 सूर: यूनुस 51

सूर: यूनुस मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 109 आयतें और 11 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

ये हिकमत से भरी किताब (यानी कुरआन) की आयतें हैं।¹ (1) क्या उन (मक्का के) लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हमने उनमें से एक शख्स के पास वहाँ भेज दी कि (खुदा तआला के अहकाम के खिलाफ करने पर) सब आदमियों को डराइए, और जो ईमान ले आएँ उनको यह खुशख़बरी सुनाइए कि उनके रब के पास (पहुँचकर) उनको पूरा मर्तबा मिलेगा। काफ़िर कहने लगे (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) कि यह शख्स तो बिना शुब्हा खुला जादूगर है। (2) बेशक तुम्हारा (हकीकी) रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों को और ज़मीन को छह दिन (की मात्रा) में पैदा कर दिया, फिर अर्श (यानी तख्ते शाही) पर कायम हुआ,² वह हर काम की (मुनासिब) तदबीर करता है, (उसके सामने) कोई सिफ़ारिश करने वाला (सिफ़ारिश) नहीं (कर सकता) बिना उसकी इजाज़त के। ऐसा अल्लाह तुम्हारा (हकीकी) रब है, सो तुम उसकी इबादत करो (और शिर्क मत करो), क्या तुम (इन दलीलों के सुनने के बाद) फिर भी नहीं समझते। (3) तुम सबको उसी के (यानी अल्लाह ही के) पास जाना है, अल्लाह ने (इसका) सच्चा वायदा कर रखा है। बेशक वही पहली बार भी पैदा करता है, फिर (कियामत में) वही दोबारा भी पैदा करेगा, ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, इन्साफ़ के साथ (पूरा-पूरा) बदला दे। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके वास्ते (आख़िरत में) पीने को ख़ौलता हुआ पानी मिलेगा और दर्दनाक अज़ाब होगा, उनके कुफ़्र की वजह से। (4) वह (अल्लाह) ऐसा है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चाँद को (भी) नूरानी बनाया, और उस (की चाल) के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं, ताकि तुम बरसों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो।³ अल्लाह तआला ने ये चीज़ें बेफ़ायदा पैदा नहीं कीं। वह ये दलीलें उन लोगों को साफ़-साफ़ बतला रहे हैं जो समझ रखते हैं।⁴ (5) बेशक रात और दिन के एक के बाद एक के आने में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सबमें उन लोगों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें हैं जो डर मानते हैं। (6) जिन लोगों को हमारे

1. इस पूरी सूर: का हासिल चन्द-मज़ामीन हैं। अब्ल तौहीद का साबित करना, दूसरे रिसालत का साबित करना, तीसरे कुरआन का साबित करना, चौथे आख़िरत का साबित करना, पाँचवे बाज़ वाकिआत के ज़रिये तबीह करना। और अब्ल के तहत में शिर्क को बातिल करना, और दूसरे के तहत में उसके मुताल्लिक बाज़ शुब्हात का जवाब, और तीसरे के तहत में उसके यानी आख़िरत के झुठलाने पर रद्द करना, और चौथे के तहत में बदले व सज़ा और दुनिया के फना होने का बयान, और पाँचवे के तहत में बाज़ शुब्हात का जवाब और आपकी तसल्ली के मज़ामीन ज़िक्र हैं। और ये सब मज़ामीन कुफ़्रार के साथ मुकाबला और मुनाज़रा हैं। और पहली सूर: में भी उनसे मुकाबला था, अगरचे वहाँ तलवार से था और यहाँ ज़बान से है, और वहाँ काफ़िरो के मुख़लिफ़ फ़िर्कों से था और यहाँ सिर्फ़ मुशिरकीन से है। चुनौचे आयतों में गौर करने से ये सब बातें ज़ाहिर हो सकती हैं। इस तकरीर से दोनों सूर: में भी और इस सूर: के हिस्सों में एक दूसरे के साथ भी मुनासबत व ताल्लुक ज़ाहिर हो गया।

2. यानी ज़मीन व आसमान में अहकाम जारी करने लगा।

3. मन्ज़िल से मुराद वह दूरी है जिसको कोई सितारा दिन-रात में तय कर ले, चाहे वह दूरी ख़ला (यानी ख़ाली जगह) हो या मला (यानी भरी हुई जगह) हो। और इस मायने के एतिबार से सूरज भी मन्ज़िलों वाला है, लेकिन चूँकि चाँद की चाल सूरज के मुकाबले में तेज़ है और उसका मन्ज़िलों को तय करना महसूस है। इसलिए उसके साथ मन्ज़िलों में चलने की तख़सीस मुनासिब हुई, और इस एतिबार से चाँद की उन्तीस या तीस मन्ज़िलें हुई। मगर चूँकि अठ्ठाईस रात से ज़्यादा नज़र नहीं आता (शेष तफ़सीर पृष्ठ 376 पर)

वन्नहारि व मा ख-लकल्लाहु फिस्समावाति वल्लअर्जि लआयातिल् लिकौमिंयत्तकून (6)
 इन्नल्लजी-न ला यर्जू-न लिका-अना व रजू बिल्हयातिदुदुन्या वत्म-अन्नू बिहा वल्लजी-न
 हुम् अन् आयातिना गाफिलून (7) उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून (8)
 इन्नल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति यस्दीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् तजरी मिन्
 तस्तिहिमुल्-अन्हारु फी जन्नातिन्-नअीम (9) दअ्वाहुम् फीहा सुब्हान-कल्लाहुम्-म व
 तहिय्यतुहुम् फीहा सलामुन् व आखिरु
 दअ्वाहुम् अनिल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-
 आलमीन (10) ♦

व लौ युअज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश्-
 शरसतिअजा-लहुम् बिल्खैरि लकुजि-य
 इलैहिम् अ-जलुहुम्, फ-न-जरुल्लजी-न
 ला यर्जू-न लिका-अना फी तुग्यानिहिम्
 यअमहून (11) व इजा मस्सल्
 इन्सानज-जुरु दअाना लिजम्बिही औ
 काअिदन् औ काइमन् फ-लम्मा कशफ्ना
 अन्हु जुर-रहू मर्-र क-अल्लम् यद्अुना
 इला जुरिम्-मस्सहू, कजालि-क जुयि-न
 लिल्मुस्तिफी-न मा कानू यअमलून (12)
 व ल-कद् अहलक्नल्-कुरु-न मिन्
 कब्बिकुम् लम्मा ज-लमू व जाअत्हुम्

रुसुलुहुम् बिल्बयिनाति व मा कानू लियुअमिन्, कजालि-क नज्जिल् कौमल्-मुज्जिमीन (13)
 सुम्-म जअल्लाकुम् खलाइ-फ फिल्अर्जि मिम्-बअदिहिम् लिनन्जु-र कै-फ तअमलून (14)
 व इजा तुल्ला अलैहिम् आयातुना बयिनातिन् कालल्लजी-न ला यर्जू-न लिका-अनअ्ति
 बिकुरआनिन् गैरि हाजा औ बहिल्हु, कृल् मा यकूनु ली अन् उबद्दि-लहू मिन् तिल्का-इ

يُونُس ١٨٩
 خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۖ إِنَّ
 الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنَّنُوا
 بِمَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ۚ أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ مِنَ النَّارِ
 بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
 يَجْعَلُهُمْ رَبُّهُمْ رِجَالًا مُّخْرَجِينَ مِنْ جُحُمٍ الْأَكْمَرِ ۖ فِي
 جَنَّتِ النَّعِيمِ ۖ دَعَوْهُمْ فِيهَا سَبْحَنَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ
 فِيهَا سَلَامٌ ۖ وَأُخْرَدَعَوْهُمْ أَنْ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ
 وَلَوْ يَخْتَلِ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْغَيْرِ لَفَضَحَىٰ إِلَيْهِمْ
 أَسْجَاهُ ۖ فَتَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۚ
 وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَا الْجِنَّةَ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا
 فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّكَانَ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرِّهِ مَسَّةً ۚ كَذَٰلِكَ
 تَذَرُ الْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونِ مِنْ
 قَبْلِكَ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَاءَهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا
 لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۖ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ
 خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۖ وَإِذَا
 تَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمْ الْبَلَاءُ تَنَزَّلْنَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُمُتٌ

पास आने का खटका नहीं है और वे दुनियावी जिन्दगी पर राजी हो गए हैं (आखिरत की तलब बिलकुल नहीं करते) और उसमें जी लगा बैठे हैं (आइन्दा की कुछ खबर नहीं), और जो लोग हमारी आयतों से बिलकुल गाफिल हैं, (7) ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से दोज़ख है। (8) (और) यकीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए, उनका रब उनके मोमिन होने की वजह से उनके मकसद (यानी जन्नत) तक पहुँचा देगा। उनके (ठिकाने के) नीचे नहरें जारी होंगी, चैन के बागों में। (9) उनके मुँह से यह बात निकलेगी कि सुब्हानल्लाह! और उनका आपस में सलाम उसमें यह होगा, अस्सलामु अलैकुम! और उनकी (उस वक़्त की उन बातों में) आखिरी बात यह होगी, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। (10) ♦

और अगर अल्लाह तआला लोगों पर (उनके जल्दी मचाने के मुवाफ़िक़) जल्दी से नुकसान डाल दिया करता, जिस तरह वे फ़ायदे के लिए जल्दी मचाते हैं तो उनका (अज़ाब का) वायदा कभी का पूरा हो चुका होता। सो (इसलिए) हम उन लोगों को जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, उनके हाल पर (बिना अज़ाब चन्द दिन) छोड़े रखते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें। (11) और जब इनसान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारने लगता है, लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी,³ फिर जब हम उसकी वह तकलीफ़ उससे हटा देते हैं तो फिर अपनी पहली हालत पर आ जाता है कि गोया जो तकलीफ़ उसको पहुँची थी उसके (हटाने) के लिए कभी हमको पुकारा ही न था। उन हद से निकलने वालों के (बुरे) आमाल उनको इसी तरह अच्छे मालूम होते हैं (जिस तरह हमने अभी बयान किया है)। (12) और हमने तुमसे पहले बहुत-से गिरोहों को (तरह-तरह के अज़ाब से) हलाक कर दिया है, जबकि उन्होंने जुल्म किया (यानी कुफ़्र व शिर्क) हालाँकि उनके पास उनके पैग़म्बर दलीलें लेकर आए, और वे (अपनी हद से बढ़ी हुई दुश्मनी के सबब) ऐसे कब थे कि ईमान ले आते, हम मुज़िम लोगों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (जैसा कि हमने अभी बयान किया है)। (13) फिर उनके बाद दुनिया में उनकी जगह हमने तुमको आबाद किया ताकि ज़ाहिरी तौर पर हम देख लें कि तुम किस तरह काम करते हो। (14) और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिलकुल साफ़-साफ़ हैं तो ये लोग जिनको हमारे पास आने का खटका नहीं है, (आपसे यूँ) कहते हैं कि इसके

(पृष्ठ 374 का शेष)

इसलिए अट्ठाईस मन्ज़िलें उसकी मशहूर हैं। और अगरचे सूरज व चाँद दोनों सालों की गिनती करने और हिसाब के आलात (यन्त्रों) में से हैं लेकिन सूरज का चक्कर एक साल में पूरा होने की वजह से ज़्यादा मुनासिब यह है कि सालों की गिनती को सूरज के मुताल्लिक किया जाए और उससे छोटे हिसाब को चाँद के मुताल्लिक किया जाए, और इसी वास्ते हिसाब का लफ़्ज़ बढ़ाया गया, ख़ास करने के बाद अमूमियत पैदा करने के लिए।

4. यूँ तो दलाइल उन लोगों के लिए भी बयान किए गए हैं जो इल्म और तक्वे वाले नहीं, मगर यह ख़ास करना इसलिए है कि इन दलाइल से फ़ायदा अहले इल्म और मुत्तकी लोग ही उठाते हैं।

1. ऊपर 'उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु' (यानी ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से दोज़ख है) में कुफ़्फ़ार का आखिरत में अज़ाब में होना बयान फ़रमाया है। ऐसे मज़ामीन पर काफ़िर झुठलाने की गरज़ से कहा करते कि हम तो अज़ाब को हक़ जब समझें कि हमपर यहाँ दुनिया ही में अज़ाब नाज़िल हो जाए, और उसके बाद अज़ाब नाज़िल न होने से आखिरत में अज़ाब न होने का जो शुब्हा हो सकता था, आगे उसका जवाब इशार्द होता है।

2. जो शर और फ़साद ज़ाहिर होता है उसमें किसी ख़ास शख्स या आम मसलहत के एतिबार से कोई ख़ैर छुपी होती है। और जिस ख़ैर में देर और ताख़ीर होती है इसी तरह उसमें कोई शर और बुराई छुपी होती है, तो शर का ज़ाहिर होना हकीक़त में ख़ैर का आना है, और उस ख़ैर का ज़ाहिर न होना हकीक़त में शर और बुराई का ज़ाहिर न होना है।

3. ऊपर तौहीद का ज़िक्र हुआ है, यहाँ शिर्क का बातिल होना एक ख़ास अन्दाज़ पर बयान फ़रमाते हैं। वह यह कि मुसीबत में खुद मुशिरक लोग भी खुदा के सिवा सबको छोड़ बैठते हैं। पस शिर्क हकीक़त में जिस तरह बातिल है उसी तरह उसके मानने वालों के तरीका-ए-अमल से भी वह लचर साबित होता है।

नफ़सी इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य इन्नी अखाफु इन् असेतु रब्बी अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (15) कुल् लौ शा-अल्लाहु मा तलौतुहू अलैकुम् व ला अद्राकुम् बिही फ-कद् लबिस्तु फीकुम् अुमुरम्-मिन् कब्लिही, अ-फ़ला तअ़क़िलून (16) फ़-मन् अज़लमु मिम्-मनिफ़तरा अलल्लाहि कज़िबन् औ कज़ज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल् मुज़्रिमून

(17) व यअ़बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुरुहुम् व ला यन्फ़अुहुम् व यकूलू-न हा-उला-इ शु-फ़आउना अिन्दल्लाहि, कुल् अतुनब्बिऊनल्ला-ह बिमा ला यअ़लमु फिस्समावाति व ला फ़िल्अज़ि, सुब्हानहू व तअ़ाला अम्मा युशिरकून (18) व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव्वाहि-दतन् फ़ख़्त-लफ़ू, व लौ ला कलि-मतुन् स-बकत् मिर्रब्बि-क लकुज़ि-य बैनहुम् फ़ीमा फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (19) व यकूलू-न लौ ला उन्ज़ि-ल अलैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही फ़कुल् इन्नमल्-ग़ैबु लिल्लाहि फन्तज़िरू इन्नी म-अकुम् मिनल् मुन्तज़िरीन (20) ♦

يُونُسُ ١٩
بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلَهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِي نَفْسِي إِنْ أَشِئْتُ إِلَّا مَا يُؤْتِي إِلَهَ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُمْ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِنْ قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ قَمِنَ أَظْلَمُ مِنْ أَفْطَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُبْرِمُونَ وَيَعِدُّونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتَنْتَبِهُونَ اللَّهُ بِمَا لَا يَعْلَمُونَ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُتِحَ بَيْنَهُمْ فِي مَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُمْ إِذِ الْهُم مَكْرُوفٍ آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنْ رُسُلَنَا يَكْتُوبُونَ مَا تَكْذِبُونَ هُوَ الَّذِي يُسَبِّحُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا

सिवा कोई (पूरा) दूसरा कुरआन (ही) लाइए, या (कम-से-कम) इसमें कुछ तरमीम कर दीजिए। आप (यूँ) कह दीजिए कि मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी तरफ से इसमें तरमीम कर दूँ। बस मैं तो उसी का इत्तिबा करूँगा जो मेरे पास वह्य के ज़रिये से पहुँचा है, अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़े भारी दिन के अज़ाब का अन्देशा रखता हूँ। (15) आप (यूँ) कह दीजिए कि अगर खुदा तआला को मन्ज़ूर होता तो न तो मैं तुमको यह (कलाम) पढ़कर सुनाता, और न वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको इसकी इत्तिला देता,¹ क्योंकि इससे पहले भी तो मैं उम्र के एक बड़े हिस्से तक तुममें रह चुका हूँ। फिर क्या तुम इतनी अक्ल नहीं रखते? (16) सो उस शख्स से ज्यादा कौन जालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झूठा बतला दे। यकीनन ऐसे मुज़िमों को हरगिज़ फ़लाह न होगी, (बल्कि हमेशा के अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे)। (17) और ये लोग अल्लाह (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको नुकसान पहुँचा सकें और न उनको नफ़ा पहुँचा सकें। और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिश करने वाले हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम खुदा तआला को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो जो खुदा तआला को मालूम नहीं, न आसमानों में और न ज़मीन में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से। (18) और तमाम आदमी एक ही तरीके के थे,² फिर (अपनी ग़लत राय से) उन्होंने इख़िलाफ़ पैदा कर लिया। और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले तय हो चुकी है तो जिस चीज़ में ये लोग इख़िलाफ़ कर रहे हैं उनका क़तई फैसला (दुनिया ही में) हो चुका होता। (19) और ये लोग (यूँ) कहते हैं कि उनके रब की तरफ़ से उनपर कोई मोज़िज़ा क्यों नाज़िल नहीं हुआ? सो आप फ़रमा दीजिए कि ग़ैब की ख़बर सिर्फ़ खुदा को है (मुझको नहीं), सो तुम भी मुन्तज़िर रहो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।³ (20) ♦

और जब हम लोगों को इसके बाद कि उनपर कोई मुसीबत पड़ चुकी हो, किसी नेमत का मज़ा चखा देते हैं तो फ़ौरन ही हमारी आयतों के बारे में शरारत करने लगते हैं,⁴ आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला (इस शरारत की) सज़ा बहुत जल्द देगा। यकीनन हमारे भेजे हुए (यानी फ़ारेश्ते) तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे हैं। (21) वह (अल्लाह) ऐसा है कि तुमको खुश्की और दरिया में लिए-लिए फिरता है,⁵ यहाँ तक कि कई बार जब तुम क़त्ती में सवार होते हो और वे (कश्तियाँ) लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के ज़रिये से लेकर चलती हैं और वे लोग उन (की रफ़्तार) से खुश होते हैं, (उस हालत में अचानक) उनपर (मुख़ालिफ़) हवा का एक झोंका आता है, और हर तरफ़ से उनपर लहरें (उठी चली) आती हैं, और वे समझते हैं कि (बुरे) आ धिरे, (उस

1. पस जब मैं तुमको सुना रहा हूँ और मेरे ज़रिये से तुमको इत्तिला हो रही है तो इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला को इस मोज़िज़ (यानी अज़ाब) कर देने वाले और इनसानी ताक़त से बाहर) कलाम का सुनवाना और इत्तिला करना मन्ज़ूर हुआ। और सुनाना और इत्तिला देना बिना वह्य के इस वजह मुम्किन नहीं कि यह कलाम इनसानी ताक़त से बाहर है। इससे मालूम हुआ कि वह वह्य अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह का कलाम है।

2. यानी अगर यह मेरा कलाम है तो या तो इतनी मुद्दत तक एक जुम्ला भी इस तरह का न निकला, और या एक दम इतनी बड़ी बात बना ली, यह तो बिल्कुल अक्ल के ख़िलाफ़ है। इसके मोज़िज़ा होने के सबूत में 'फ़-क़द लबिस्तु फ़ीकुम.....' से दलील पकड़ना नीचे के दर्जे पर उतरकर है, यानी इस्तिदलाल यह है कि 'इस जैसी कोई सूर: लाकर दिखाओ' और इसमें कोई दूर का एहतिमाल निकालना कि शायद आम लोग इसपर कादिर न हों, आप कादिर हों। इस एहतिमाल और शुब्हा पर यह जवाब दिया है कि अचानक ऐसे आला तर्ज़ का इतना बड़ा कलाम पेश कर देना ख़िलाफ़े आदत (यानी आम इनसानों के मामूल और ताक़त से बाहर) है, और मोज़िज़ा होने में ख़िलाफ़े आदत (यानी आम इनसानों के मामूल और ताक़त से बाहर होने) पर ही मदार होता है।

3. यानी सब मुसलमान थे, क्योंकि आदम अलैहिस्सलाम मुसलमान और खुदा को मानने वाले थे। बहुत मुद्दत तक उनकी औलाद उन ही के तरीके पर रही। पस सब मुसलमान (मुवहिद) रहे। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 380 पर)

कुल्लि मकानिन्व-व जन्नू अन्नहुम् उही-त बिहिम् द-अवुल्ला-ह मुख्लिसी-न लहुद्दी-न,
ल-इन् अन्नैतना मिन् हाजिही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (22) फ-लम्मा अन्जाहुम् इजा
हुम् यब्बू-न फिलअर्जि बिगैरिल्-हक्कि, या अय्युहन्नासु इन्नमा बग्युकुम् अला अन्फुसिकुम्
मताअल् हयातिद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअुकुम् फनुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअमलून (23)

इन्नमा म-सलुल्-हयातिद्दुन्या कमा-इन्
अन्जल्नाहु मिनस्समा-इ फख्त-ल-त
बिही नबातुल्-अर्जि मिम्मा यअकुलुन्नासु
वल्-अन्आमु, हत्ता इजा अ-ख-जतिल्-
अर्-जु जुक्क-फहा वज्जय्यनत् व
जन्-न अह्लुहा अन्नहुम् कादिरु-न
अलैहा अताहा अम्रुना लैलन् औ
नहारन् फ-जअल्नाहा हसीदन् क-अल्लम्
तग्-न बिल्अम्सि, कजालि-क
नुफस्सिलुल्- आयाति लिक्कौमिन्-
य-तफक्करून (24) वल्लाहु यद्अू इला
दारिस्सलामि, व यह्दी मय्यशा-उ इला
सिरातिम्- मुस्तकीम (25) लिल्लजी-न
अह्सनुल्- हुस्ना व जिया-दतुन्, व ला
यरहकु वुजू-हहुम् क-तरुन्-व ला

جَاءَتْهُمْ رَيْمٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُوا
أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَبَيَّتْنَا
مِنْ هَٰذَا لَنُكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۖ فَلَمَّا أَجْتَهُمُ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّمَا بُغِيَ لَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ مَاءٌ
الْحَيَوُاءُ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ
إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَوُاءِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أُنْزِلَتْ مِنَ السَّمَاءِ فَاسْتَطَابَتْهُ
ثِبَاتُ الْأَرْضِ وَمِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ
الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا
أَنَّهُمْ أَمْرٌ نَالِيٌّ أَوْ تَنْهَارٌ أَجْمَعُ لَهَا حَوْصِيًّا ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ
بِالْأَمْرِ كَذَلِكَ نَقُضُّ الْأَمْرَ لِقَوْمٍ يُفَكِّرُونَ ۖ وَاللَّهُ يَدْعُو
إِلَىٰ دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ لِلَّذِينَ
أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۚ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ
فَإِنَّ سَعْيَهُمْ يَبْغِيهِمْ ۖ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ
عَاصِمٍ ۚ كَانُوا أَغْشَيْتَ وَجُوهَهُمْ قُطْعًا مِنَ النَّارِ مَظْلَمًا ۚ
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۚ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ

जिल्लतुन्, उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फीहा खालिदून (26) वल्लजी-न
क-सबुस्सय्यिआति जजा-उ सय्यि-अतिम् बिमिस्लिहा व तरहकुहुम् जिल्लतुन्, मा लहुम्
मिनल्लाहि मिन् आसिमिन् क-अन्नमा उगिशयत् वुजूहुम् कि-तअम् मिनल्लैलि मुज्लिमन्,
उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून (27) व यौ-म नहशुरुहुम् जमीअन् सुम्-म

वक्त) खालिस एतिकाद करके सब अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, (कि ऐ अल्लाह) अगर आप हमको इस (मुसीबत) से बचा लें तो हम जरूर हक को पहचानने वाले (तौहीद के इकरारी) बन जाएँ। (22) फिर जब अल्लाह तआला उनको (उस तबाही से) बचा लेता है तो फौरन ही वे (चारों तरफ) ज़मीन में नाहक की सरकशी करने लगते हैं।¹ ऐ लोगो! (सुन लो) यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए वबाले (जान) होने वाली है, (बस) दुनियावी ज़िन्दगी में (उससे थोड़ा-सा) फायदा उठा रहे हो, फिर हमारे पास तुम सबको आना है, फिर हम तुम्हारा किया हुआ सब कुछ तुमको जतला देंगे (और उसकी सज़ा देंगे)।² (23) बस दुनियावी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस (पानी) से ज़मीन के पेड़-पौधे जिनको आदमी और चौपाए खाते हैं ख़ूब घने होकर निकले, यहाँ तक कि जब वह ज़मीन अपनी रौनक का (पूरा हिस्सा) ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश “यानी सँवरना” हो गई³ और उसके मालिकों ने समझ लिया कि अब हम इसपर बिलकुल काबिज़ हो चुके, तो (ऐसी हालत में) दिन में या रात में हमारी तरफ़ से कोई हादसा आ पड़ा (जैसे पाला या सूखा या और कुछ) सो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया गया कल वह (यहाँ) मौजूद ही न थी। हम इसी तरह आयतों को साफ़-साफ़ बयान करते हैं, ऐसे लोगों के लिए जो सोचते हैं। (24) और अल्लाह तआला दारुल-बका “यानी आखिरत” की तरफ़ तुमको बुलाता है, और जिसको चाहता है सही रास्ते (पर चलने) की तौफ़ीक़ दे देता है। (25) जिन लोगों ने नेकी की है उनके वास्ते ख़ूबी (जन्नत) है, और उसपर यह भी कि (खुदा का दीदार) भी, और उनके चेहरों पर न (ग़म की) कदूरत छाएगी और न ज़िल्लत, ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (26) और जिन लोगों ने बुरे काम किए⁴ उनकी बदी की सज़ा उसके बराबर मिलेगी, और उनको ज़िल्लत घेर लेगी, उनको अल्लाह तआला (के अज़ाब) से कोई न बचा सकेगा। (उनके चेहरों की कदूरत की ऐसी हालत होगी कि) गोया उनके चेहरों पर अन्धेरी रात के परत-के-परत लपेट दिए गए हैं। ये लोग दोज़ख़ (में रहने) वाले हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे।⁵ (27) और (वह दिन भी ज़िक्र करने के काबिल है) जिस दिन हम उन सब (मख़्लूक़ात) को (क़ियामत के मैदान में) जमा

(पृष्ठ 378 का शेष)

4. यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

5. खुलासा यह कि इन चीज़ों को रिसालत के मन्सब या उसके मुताल्लिकात से कोई ताल्लुक नहीं। मैं नहीं जानता न मुझको कोई दख़ल, असल मकसूद के साबित करने के लिए अलबत्ता हर वक्त तैयार हूँ और साबित भी कर चुका हूँ।

6. यानी उनसे किनारा करते हैं और उनके साथ झुठलाने और हँसी उड़ाने से पेश आते हैं, और एतिराज़ व बैर के तौर पर दूसरे मोजिज़ों की फरमाइश करते हैं, और गुज़री मुसीबत से सबक़ हासिल नहीं करते। पस एतिराज़ का सबब अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुई आयतों से मुँह मोड़ना है और इस मुँह मोड़ने की वजह ऐश व मस्ती में मशगूलियत है।

7. यानी जिन आलात (यन्त्रों) व असबाब से तुम चलते-फिरते हो, वे सब अल्लाह ही के दिए हुए हैं।

1. यानी वही शिर्क और नाफरमानी।

2. ऊपर ‘या अय्युहन्नासु इन्नमा बग्युकुम.....’ में फरमाया था कि दुनिया में कुफ़्र और नाफरमानी के साथ तुम्हारी यह कामयाबी चन्द दिन की है, फिर आखिरत में इसकी सज़ा भुगतना है। आगे दुनिया का फानी होना और आखिरत की जज़ा व सज़ा का बाक़ी होना मय जज़ा व सज़ा की तफ़सील और उसके हक़दारों के ज़िक्र की गई है।

3. यानी हरियाली से अच्छी मालूम होने लगी।

4. यानी शिर्क व कुफ़्र किया।

5. ऊपर मुशिरकों के हक़ में फरमाया था ‘उनको अल्लाह के अज़ाब से कोई बचा न सकेगा’ इसलिए कि वे लोग अपने माबूदों को अपना शफ़ाअत करने वाला कहते थे। आगे उन माबूदों का उन इबादत करने वालों से क़ियामत में बेताल्लुकी ज़ाहिर करना, जिसके लिए नफ़ा न होना लाज़िम है, बयान फरमाते हैं।

नकूलु लिल्लजी-न अशरकू मकानकुम् अन्तुम् व शु-रकाउकुम् फ-ज़य्यल्ला बैनहुम् व का-ल
शु-रकाउहुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअबुदून (28) फ-कफा बिल्लाहि शहीदम् बैनना व बैनकुम्
इन् कुन्ना अन् अिबादतिकुम् लगाफिलीन (29) हुनालि-क तब्बू कुल्लु नफिसम् मा
असल-फत् व रुद्दू इलल्लाहि
मौलाहुमुल्-हक्कि व जल्-ल अन्हुम् मा
कानू यफ्तरून ● (30) ♦

कुल् मय्यरज़ुकुम् मिनस्समा-इ
वल् अर्जि अम्-मय्यम्लिकुस्सम्-अ
वल् अब्सा-र व मय्युखिरजुल्-हय-य
मिनल्मय्यिति व युखिरजुल्-मय्यि-त
मिनल्-हय्यि व मय्युदब्बिरुल्-अम्-र,
फ-स-यकूलूनल्लाहु फकुल् अ-फला
तत्ताकून (31) फजालिकुमुल्लाहु
रब्बुकुमुल्-हक्कु फ-माज़ा बअदल्-हक्कि
इल्लज्जलालु फ-अन्ना तुस्फून (32)
कजालि-क हक्कत् कलि-मतु
रब्बि-क अलल्लजी-न फ-सकू अन्नहुम्
ला युअ्मिनून (33) कुल् हल् मिन्

शु-रकाइकुम् मय्यब्दुल्-खल्-क सुम्-म युअ्दीदुह् कुलिल्लाहु यब्दुल्-खल्-क सुम्-म युअ्दीदुह्
फ-अन्ना तुअफकून (34) कुल् हल् मिन् शु-रकाइकुम् मय्यह्दी इलल्-हक्कि, कुलिल्लाहु
यह्दी लिल्लहक्कि, अ-फमय्यह्दी इल्लहक्कि अ-हक्कु अय्युत्त-ब-अ अम्-मल्ला यहिद्दी इल्ला
अय्युह्दा फमा लकुम्, कै-फ तह्कुमून (35) व मा यत्तबिअु अक्सरुहुम् इल्ला जन्नन्,
इन्नज्जन्-न ला युग्ननी मिनल्-हक्कि शैअन्, इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिमा यफअलून (36) व

نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ
وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ قَالَتْهُمْ إِيَّا نَا تَعْبُدُونَ ۖ فَكُلَّمَا دَعَا اللَّهُ لِشَيْءٍ
مِّنْ بَيْنِنَا وَبَيْنَهُمْ لِنَذِيرٍ لَّئِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادِكُمْ غَافِلِينَ ۖ هَٰذَا لَكُم مَّا تَشَاءُونَ
كُلٌّ نَّفِيسٌ مَّا أَسْلَفَتْ وَرَدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ وَضَلُّوا عَنْهُمْ
مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۚ قُلْ مَنْ يَزِيدُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَنْ
يَمْلِكَ السَّمْعُ وَالْأَبْصَارُ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ
أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا
الظُّلُمُ ۚ قَالَى تَصْرَفُونَ ۚ كَذَلِكَ حَقَّتْ رِيبُكَ عَلَى
الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ
مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ
فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ ۚ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ
قُلِ اللَّهُ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ ۚ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ
أَمْ لَا يُهْدِي إِلَى الْحَقِّ إِلَّا أَنْ يُهْدَىٰ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۚ
وَمَا يَتَّبِعُهُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظُلْمًا ۚ إِنَّ الْخَلْقَ لَا يُغْنِي عَنْ الْحَقِّ شَيْئًا
إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ بِمَا يَفْعَلُونَ ۚ وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ

करेंगे, फिर मुशिरकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी जगह ठहरो। फिर हम उन (इबादत करने वालों और उनके माबूदों) के दरमियान में फूट डालेंगे, और उनके वे शुरका (उनसे ख़िताब करके) कहेंगे कि तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। (28) सो हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह काफ़ी गवाह है¹ कि हमको तुम्हारी इबादत की ख़बर भी न थी।² (29) उस मक़ाम पर हर शख्स अपने अगले किए हुए कामों का इम्तिहान कर लेगा, और ये लोग अल्लाह (के अज़ाब) की तरफ़ जो उनका मालिके हकीकी है लौटाए जाएँगे³ और जो कुछ (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे सब उनसे ग़ायब (और गुम) हो जाएँगे। (कोई भी तो काम न आएगा) ● (30) ♦

आप (उन मुशिरकों से) कहिए कि (बतलाओ) वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन में रिज़्क पहुँचाता है,⁴ या (यह बतलाओ कि) वह कौन है जो (तुम्हारे) कानों और आँखों पर पूरा इख़्तियार रखता है। और वह कौन है जो जानदार (चीज़) को बेजान (चीज़ से) निकालता है, और बेजान (चीज़) को जानदार से निकालता है, और वह कौन है जो तमाम कामों की तदबीर करता है? सो (इन सवालों के जवाब में) वे (ज़रूर यही) कहेंगे (कि इन सब कामों का करने वाला) अल्लाह (है), तो उनसे कहिए कि फिर (शिक़ से) क्यों परहेज़ नहीं करते। (31) सो यह है अल्लाह जो तुम्हारा हकीकी रब है, (और जब हक़ मामला साबित हो गया) फिर हक़ (मामले) के बाद और क्या रह गया, सिवाय गुमराही के,⁵ फिर (हक़ को छोड़कर बातिल की तरफ़) कहाँ फिरे जाते हो।⁶ (32) इसी तरह आपके रब की यह (तक़दीरी) बात कि ये ईमान न लाएँगे, तमाम नाफ़रमान (सरकश) लोगों के हक़ में साबित हो चुकी है। (33) आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे (तजवीज़ किए हुए) शरीकों में कोई ऐसा है जो पहली बार भी मख़्लूक को पैदा करे, फिर (क़ियामत में) दोबारा भी पैदा करे। आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला ही पहली बार भी पैदा करता है, फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा, सो फिर तुम (हक़ से) कहाँ फिरे जाते हो। (34) (और) आप (उनसे यूँ भी) कहिए कि क्या तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि (अम्र) हक़ का रास्ता बतलाता हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही (अम्र) हक़ का रास्ता (भी) बतलाता है।⁷ तो फिर आया जो शख्स हक़ (मामले) का रास्ता बतलाता हो वह ज़्यादा इत्तिबा के लायक है या वह शख्स जिसको बिना बतलाए खुद ही रास्ता न सूझे। तो (ऐ मुशिरको!) तुमको क्या हो गया, तुम कैसी तजवीज़ें करते हो। (35) और उनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ बेअसल ख़्यालात पर चल रहे हैं, (और) यकीनन बेअसल ख़्यालात हक़ (मामले) से मुस्तग़नी करने (या उसके साबित करने) में ज़रा भी मुफीद नहीं। (ख़ैर) ये जो कुछ कर रहे हैं यकीनन अल्लाह को सब ख़बर है, (वक़्त पर सज़ा देगा)। (36) और यह

1. अगर किसी को शुब्हा हो कि क्या बुत भी बोलेंगे तो ज़वाब यह है कि यह नामुम्किन नहीं।
2. उनका ग़ाफ़िल होना उनकी इबादत से ज़ाहिर है, इस वास्ते कि बुतों को ऐसा शऊर ज़ाहिर है कि यहाँ नहीं है। और अगर दूसरे माबूदों जैसे फ़रिश्ते वग़ैरह को भी आम मुराद लिया जाए तो भी ग़ाफ़िल होना सही है, क्योंकि फ़रिश्तों वग़ैरह का इल्म सब कुछ घेरने वाला नहीं है, और सब अपने-अपने काम में लगे हुए हैं।
3. यहाँ अल्लाह तआला को काफ़िरों का मौला फ़रमा देना मालिक होने के मायने के एतिबार से है। और 'ला मौला लहुम' में नफ़ी करना मददगार और चाहने वाले के एतिबार से है।
4. यानी आसमान से बारिश बरसाता और ज़मीन से पेड़-पौधे पैदा करता है, जिससे तुम्हारा रिज़्क तैयार होता है।
5. यानी जो चीज़ हक़ की ज़िद और उलट होगी वह गुमराही है, और तौहीद का हक़ होना साबित हो गया। पस शिक़ यकीनन गुमराही है।
6. आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली है कि आप उन लोगों की बातिल-परस्ती पर ग़मज़दा हुआ करते थे।
7. चुनौते उसने अक़ल दी, नबियों को भेजा, बख़िलाफ़ शैतानों के कि अव्वल तो वे उन अफ़अाल (यानी कामों) पर कादिर नहीं, और सिर्फ़ तालीम जिसकी कुदरत उनको दी गई है वे उसको गुमराह करने और बहकाने में ख़र्च करते हैं।

मा का-न हाजल्- कुरआनु अय्युफ्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीकल्लजी बै-न यदैहि व तफ्सीलल्-किताबि ला रै-ब फीहि मिर्बिल्ल-आलमीन (37) अम् यकूलूनफ्तराहु, कुल् फअतू बिसूरतिम्-मिस्लिही वद्अू मनिस्त-तअतुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिकीन (38) बल् कज्जबू बिमा लम् युहीतू बिअिल्मिही व लम्मा यअतिहिम् तअवीलुह्, कजालि-क

कज्जबल्लजी-न मिन् कब्लिहिम् फन्जुर

कै-फ का-न आकि-बतुज्जालिमीन (39)

व मिन्हुम् मय्युअमिनु बिही व मिन्हुम्

मल्ला युअमिनु बिही, व रब्बु-क

अअ्लमु बिल्मुफिसदीन (40) ♦

व इन् कज्जबू-क फकुल्-ली

अ-मली व लकुम् अ-मलुकुम् अन्तुम्

बरीऊ-न मिम्मा अअ्लमु व अ-न

बरीउम्-मिम्मा तअमलून (41) व

मिन्हुम् मय्यस्तमिअू-न इलै-क, अ-फ-

अन्-त तुस्मिअुस्सुम्-म व लौ कानू ला

यअकिलून (42) व मिन्हुम् मय्यन्जुरु

इलै-क, अ-फअन्-त तह्दिल्-अुम्-य व

लौ कानू ला युब्सिरून (43) इन्नल्ला-ह

ला यज्लिमुन्ना-स शैअंव्-व लाकिन्नन्-

ना-स अन्फु-सहुम् यज्लिमून (44) व यौ-म यहशुरुहुम् क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा-अतम्

मिनन्नहारि य-तआरफू-न बैनहुम्, कद् खसिरल्लजी-न कज्जबू बिलिका-इल्लाहि व मा कानू

मुह्तदीन (45) व इम्मा नुरियन्न-क बअजल्लजी नाअिदुहुम् औ न-तवप्फ-यन्न-क फ-इलैना

मर्जिअुहुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अला मा यफअलून (46) व लिकुल्लि उम्मतिरसूलुन् फ-इजा

يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ
وَتَفْصِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا
بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَّابٌ كَذَّابٌ ۝ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ
وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِنْ
كَذَّبُوا فَقُلْ إِنِّي عَمِلٌ وَلَا كُمْ عَمَلَكُمْ أَنْتُمْ تَرْتَوُونَ ۝ مَا أَغْنَىٰ
وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ
تَسْمِعُ الصَّمَّةَ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ
أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يَبْصُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
الْقَاسِ سَبِيلًا وَلَكِنَّ الْإِنْسَانَ أَنْفُسُهُمْ ظَالِمُونَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ
كَأَنَّهُمْ يَلْبَثُونَ إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ
خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِإِلْقَاءِ اللَّهِ وَكَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَإِنَّا
لَنُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيْكَ ۝ وَاللَّيْلُ مَرْجِعُهُمْ
ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رُسُلٌ ۝ فَإِذَا

مَنْ

कुरआन अल्लाह के सिवा किसी और का घड़ा हुआ नहीं है, (कि उनसे सादिर हुआ हो) बल्कि यह तो उन (किताबों) की तस्दीक (करने वाला) है जो इससे पहले (नाज़िल) हो चुकी हैं। और किताब (यानी अल्लाह के जरूरी अहकाम) की तफ़सील (बयान करने वाला) है, (और) इसमें कोई (बात) शक (व शुब्हा की) नहीं कि (वह) रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। (37) क्या ये लोग (यूँ) कहते हैं कि आपने इसको घड़ लिया है, आप कह दीजिए कि फिर तुम इसके जैसी एक ही सूर: (बना) लाओ, और (अकेले नहीं बल्कि) जिन-जिनको अल्लाह के सिवा बुला सको (उनको मदद के लिए) बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।¹ (38) बल्कि ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसके (यानी उसके सही और ग़ैर-सही होने) को अपने इल्मी घेरे में नहीं लाए। “यानी उन्हें खुद उसके बारे में कुछ इल्म नहीं” और अभी उनको इस (कुरआन के झुठलाने) का आखिरी नतीजा नहीं मिला। जो लोग (उनसे पहले) हुए हैं इसी तरह उन्होंने भी (हक चीज़ों को) झुठलाया था,² सो देख लीजिए कि उन ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ, (इसी तरह उनका होगा)। (39) और उनमें से बाज़े ऐसे हैं जो इस (कुरआन) पर ईमान ले आएँगे और बाज़े ऐसे हैं कि इसपर ईमान न लाएँगे, और आपका रब (उन) मुफ़सिदों को ख़ूब जानता है। (40) ♦

और अगर इन दलीलों के बाद भी आपको झुठलाते रहे तो (बस आखिरी बात यह) कह दीजिए कि (अच्छा साहिब) मेरा किया हुआ मुझको (मिलेगा) और तुम्हारा किया हुआ तुमको (मिलेगा)। तुम मेरे किए हुए के जवाबदेह नहीं हो, और मैं तुम्हारे किए हुए का जवाबदेह नहीं हूँ। (41) और (आप उनके ईमान की उम्मीद छोड़ दीजिए, क्योंकि) उनमें (अगरचे) बाज़ ऐसे भी हैं जो (ज़ाहिर में) आपकी तरफ़ कान लगा-लगा बैठते हैं, क्या आप बहरों को सुना (कर उनके मानने का इन्तिज़ार कर) रहे हैं, चाहे उनको समझ भी न हो। (42) और (इसी तरह) उनमें बाज़ ऐसे हैं कि (ज़ाहिर में) आपको (मोजिज़ात व कमालात के साथ) देख रहे हैं, तो फिर क्या आप अन्धों को रास्ता दिखलाना चाहते हैं चाहे उनको बसीरत “यानी अक्ल व समझ” भी न हो। (43) (यह) यकीनी बात है कि अल्लाह तआला लोगों पर जुल्म नहीं करता, लेकिन लोग खुद ही अपने आपको तबाह करते हैं।³ (44) और (उनको) वह दिन (याद दिलाइए) जिसमें अल्लाह तआला उनको (इस कैफ़ियत से) जमा करेगा कि (वे ऐसा समझेंगे) जैसे वे (दुनिया या बरज़ख़ में) सारे दिन की एक आध-घड़ी रहे होंगे⁴ और आपस में एक-दूसरे को पहचानेंगे (भी और) वाकई (उस वक़्त सख़्त) ख़सारे में पड़े वे लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया, और वे (दुनिया में भी) हिदायत पाने वाले न थे। (45) और जिस (अज़ाब) का उनसे हम वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा (अज़ाब) अगर हम आपको दिखला दें,⁵ या (उसके नाज़िल होने से पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें। सो हमारे पास तो उनको आना

1. यानी अल्लाह की पनाह अगर मैंने तैयार कर लिया है तो तुम भी तैयार कर लाओ।
2. ‘लम युहीतू’ का मतलब यह है कि आदमी जिस मामले में कलाम करे पहले उसकी तहकीक़ तो कर ले, तहकीक़ के बाद जो कलाम करना हो करे।
3. यानी खुद ही दी हुई काबलियत को ज़ाया कर देते हैं और उससे काम नहीं लेते।
4. ऊपर आयत ‘कज़ालि-क कज़़बल्लज़ी-न मिन क़ब्लिहिम.....’ और आयत ‘रब्बु-क अज़लमु.....’ में क़फ़ व झुठलाने पर अज़ाब की वईद फ़रमाई है। आगे उस अज़ाब के दुनिया में वाक़े न होने से वे कुम्फ़ार जो शुब्हात करते थे, उनका जवाब आखिरत की तहकीक़ के ज़िम्न में (अंतर्गत) बतलाते हैं। जिसका हासिल यह है कि दुनिया में चाहे कभी ज़ाहिर हो जाए लेकिन असली वक़्त उसका हश्र के दिन है, इसी लिए दुनिया में उसके सिर्फ़ बाज़ शोबे ज़ाहिर होते हैं, यानी मामूली हिस्से ही ज़ाहिर होते हैं, पूरे तौर पर नहीं, जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ‘बअज़ल्लज़ी’ और कामिल तौर पर उसी वक़्त होगा, जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया ‘व लौ अन्-न लिक्वलि नफ़िसन्’ पस दुनिया में ज़ाहिर न होना न नुक़सानदेह है और न मेरे इख़्तियार में है, जैसे कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया (शेष तफ़सीर पृष्ठ 386 पर)

जा-अ रसूलुहुम् कुज़ि-य बैनहुम् बिल्किस्ति व हुम् ला युज़्लमून (47) व यकूलू-न मता हाज़ल्-वअदु इन् कुन्तुम् सादिकीन (48) कुल् ला अम्लिकु लिनफसी ज़ररव्-व ला नफअन् इल्ला मा शा-अल्लाहु, लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन्, इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फला यस्तअखिरु-न सा-अतंव्-व ला यस्तविदमून (49) कुल् अ-रपेतुम् इन् अताकुम् अज़ाबुहू

बयातन् औ नहारम् माज़ा यस्तअजिलु मिन्हुल् मुज़िमून (50) अ-सुम्-म इज़ा मा व-क-अ आमन्तुम् बिही, आल्आ-न व कद् कुन्तुम् बिही तस्तअजिलून (51) सुम्-म की-ल लिल्लजी-न ज़-लमू जूकू अज़ाबल्-खुल्दि हल् तुज्जौ-न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (52) व यस्तम्बिऊन-क अ-हक्कुन् हु-व, कुल् ई व रब्बी इन्नहू ल-हक्कुन्, व मा अन्तुम् बिमुअजिजीन (53) ♦

व लौ अन्-न लिकुल्लि नफिसन् ज़-लमत् मा फिल्अर्जि लफ्त-दत् बिही, व अ-सरुन्नदाम-त लम्मा र-अवुल्-अज़ा-ब व कुज़ि-य बैनहुम् बिल्किस्ति व हुम् ला युज़्लमून (54) अला इन्-न

लिल्लाहि मा फिस्समावाति वल्अर्जि, अला इन्-न वअदल्लाहि हक्कुव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (55) हु-व युह्यी व युमीतु व इलैहि तुर्जअून (56) या अय्युहन्नासु कद् जाअल्कुम् मौअि-ज़तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफाउल्लिमा फिस्सुदूरि व हुदव्-व रहमतुल्-लिल्मुअमिनीन (57) कुल् बिफज़िल्लाहि व बिरह्मतिही फबिज़ालि-क फल्फरहू,

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَ
يَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ
لِنَفْسِي فَتَرًا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۝ قُلْ
أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُمْ عِدَابُهُ بَيِّنًا أَوْ نُهَارًا مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ
الْمُجْرِمُونَ ۝ أَلَمْ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْنُكُمْ بِهِ الْآلِثُ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ
تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ
هَلْ تُبْجَرُونَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ وَيَسْتَسْتَوُونَكَ أَحَقُّ هُوَ
قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ الْحَقُّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ
لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا
التَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَفُتِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ۝ الْآلِثُ اللَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا رِجْ
وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَالِيهِ تُرْجَعُونَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ
رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝
قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا

مَاتُكَ

(ही) है, फिर (सबको मालूम है कि) अल्लाह तआला उनके सब कामों की इत्तिला रखता ही है। (46) और हर-हर उम्मत के लिए एक हुक्म पहुँचाने वाला (हुआ) है। सो जब वह उनका रसूल (उनके पास) आ चुकता है (और अहकाम पहुँचा देता है, तो उसके बाद) उनका फैसला इन्साफ़ के साथ किया जाता है, और उनपर (ज़रा भी) जुल्म नहीं किया जाता।¹ (47) और ये लोग कहते हैं कि (ऐ नबी और ऐ मुसलमानो!) यह (अज़ाब का) वायदा कब (ज़ाहिर) होगा, अगर तुम सच्चे हो (तो ज़ाहिर क्यों नहीं करा देते)। (48) आप फरमा दीजिए कि मैं (खुद) अपनी जाते खास के लिए तो किसी नफ़े (के हासिल करने का) और किसी नुकसान (के दूर करने) का इख़्तियार रखता ही नहीं, मगर जितना (इख़्तियार) खुदा को मन्ज़ूर हो² हर उम्मत के (अज़ाब के) लिए (अल्लाह के नज़दीक) एक तय वक़्त है, (सो) जब उनका वह तय किया हुआ वक़्त आ पहुँचता है तो (उस वक़्त) एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न आगे सरक सकते हैं।³ (49) आप (उसके मुताल्लिक) फरमा दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अगर तुमपर उसका (यानी खुदा का) अज़ाब रात को आ पड़े, या दिन को, तो (यह बतलाओ कि) उस (अज़ाब) में कौन-सी चीज़ ऐसी है कि मुज़्रिम लोग उसको जल्दी माँग रहे हैं।⁴ (50) क्या फिर जब वो (मुकर्ररा आर तयशुदा वायदा) आ ही पड़ेगा (उस वक़्त) उसकी तस्दीक करोगे? हाँ अब (माना) हालाँकि (पहले से) तुम (झुटलाने के इरादे से) उसकी जल्दी (मचाया) करते थे। (51) फिर ज़ालिमों (यानी मुशिरकों) से कहा जाएगा कि हमेशा का अज़ाब चखो, तुमको तो तुम्हारे ही किए का बदला मिला है। (52) और वे (इन्तिहाई ताज्जुब व इनकार से आपसे) पूछते हैं कि क्या वह (अज़ाब) वाकई (कोई चीज़) है, आप फरमा दीजिए कि हाँ कसम है मेरे रब की, वह वाकई (चीज़) है, और तुम किसी तरह उसे (यानी खुदा को) आज़िज़ नहीं कर सकते (कि वह अज़ाब देना चाहे और तुम बच जाओ)। (53) ♦

और अगर हर-हर मुशिरक शख्स के पास इतना (माल) हो कि सारी ज़मीन में भर जाए तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे। और जब अज़ाब देखेंगे तो (और फज़ीहत के ख़ौफ़ से) शर्मिन्दगी को (अपने दिल ही में) छुपाकर रखेंगे और उनका फैसला इन्साफ़ के साथ होगा, और उनपर (ज़रा भी) जुल्म न होगा। (54) याद रखो कि जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब अल्लाह ही की (मिल्क) हैं। याद रखो कि अल्लाह का वायदा सच्चा है, (पस कियामत ज़रूर आएगी) लेकिन बहुत-से आदमी यकीन ही नहीं करते। (55) वही जान डालता है, वही जान निकालता है,⁵ और तुम सब उसी के पास लाए जाओगे, (और हिसाब किताब होगा)। (56) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से (एक ऐसी चीज़) आई है जो (बुरे कामों से रोकने के लिए) नसीहत (है) और दिलों में जो (बुरे कामों से) रोग (हो जाते हैं) उनके लिए शिफा है, और रहनुमाई करने वाली है, और रहमत (और सवाब का ज़रिया) है, (और ये सब बरकतें) ईमान वालों के लिए हैं। (57) आप (उनसे) कह दीजिए कि (जब कुरआन ऐसी चीज़ है) पस लोगों को खुदा के इस इनाम और रहमत पर खुश होना चाहिए। वह इस (दुनिया) से कहीं बेहतर है, जिसको वे जमा कर रहे हैं।⁶ (58)

(पृष्ठ 384 का शेष)

‘कुल ला अम्लिकु’ और न तुम्हारे लिए मस्तहत है क्योंकि फ़ौरन आ जाने में ईमान की मोहलत भी ख़त्म हो जाएगी, जैसे कि अल्लाह तआला ने फरमाया ‘मा ज़ा यस्तअज़िलु.....’।

5. चूँकि वह दिन लम्बा भी होगा और सख़्त भी होगा, इसलिए दुनिया और बरज़ख़ (यानी मौत और कियामत के दरमियान के ज़माने) की मुदत और तकलीफ़ सब भूलकर ऐसा समझेंगे कि वह ज़माना बहुत जल्द गुज़र गया।

6. यानी अगर आपकी ज़िन्दगी में उनपर वह नाज़िल हो जाए। गरज़ यह कि दुनिया में सज़ा हो या न हो मगर असली मौके पर ज़रूर होगी।

1. वह फैसला यही है कि न मानने वालों को हमेशा के अज़ाब में मुब्तला किया जाता है।

2. पस जब अपने नफ़े व नुकसान का मालिक नहीं तो दूसरे के नफ़े व नुकसान का तू क्योंकर मालिक होगा? पस अज़ाब का लाना मेरे इख़्तियार में नहीं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 388 पर)

हु-व खैरुम्-मिम्मा यज्मअून (58) कुल् अ-रऐतुम् मा अन्ज़लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्किन्
फ-जअल्लुम् मिन्हु हरामंव-व हलालन्, कुल् आल्लाहु अज़ि-न लकुम् अम् अलल्लाहि
तफ़तरून (59) व मा ज़न्नुल्लज़ी-न यफ़तरून-न अलल्लाहिल्-कज़ि-ब यौमल्-कियामति,
इन्नल्ला-ह लजू फज़िल्न् अलन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (60) ❖

व मा तकूनु फी शअ्निंव-व मा
तल्लू मिन्हु मिन् कुरआनिंव-व ला
तअ्मलू-न मिन् अ-मलिन् इल्ला कुन्ना
अलैकुम् शुहूदन् इज़ तुफ़ीजू-न फीहि, व
मा यअज़ुबु अररब्बि-क मिम्-मिस्कालि
ज़रतिन् फिल्अर्ज़ि व ला फिस्समा-इ व
ला असूग-र मिन् ज़ालि-क व ला
अक्ब-र इल्ला फी किताबिम् मुबीन
(61) अला इन्-न औलिया-अल्लाहि
ला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम्
यहज़नून (62) अल्लज़ी-न आमनू व
कानू यत्तकून (63) लहुमुल्बुशरा
फिल्हयातिदुन्या व फिल्-आखिरति, ला
तब्दी-ल लि-कलिमातिल्लाहि, ज़ालि-क
हुवल् फौजुल्-अज़ीम (64) व ला

यहज़ुन्-क कौलुहुम् ❖ इन्नल्-अज़्ज़-त लिल्लाहि जमीअन्, हुवस्समीअुल्-अलीम (65)
अला इन्-न लिल्लाहि मन् फिस्समावाति व मन् फिल्अर्ज़ि, व मा यत्तबिअुल्लज़ी-न यद्अू-न
मिन् दूनिल्लाहि शु-रका-अ, इय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़सून (66)
हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कून फीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्-न फी ज़ालि-क

يَجْعَلُونَ ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ
وَعْنَهُ حَرَامًا وَحَلَالًا ۚ قُلْ اللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۚ وَ
مَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ
اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۚ وَمَا
كَوْنُوا فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ
عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفْعَلُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يُغْنِي
عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا
أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۚ أَكَّانَ أَفْهَامُهُ
اللَّهُ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا
يَتَّقُونَ ۚ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا
تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَظِيمُ ۚ وَلَا يَحْزَنُكَ
قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ أَكَّانَ لِلَّهِ
مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا
يَخْرُصُونَ ۚ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْيَوْمَ الْآيَةَ تَسْكُنُوا فِيهِ وَالتَّهَارُ
مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُسْمَعُونَ ۚ قَالَ الْاِخْتَنَ اللَّهُ

आप (उनसे) कह दीजिए कि यह तो बतलाओ कि अल्लाह ने तुम्हारे (फायदा उठाने के) लिए जो कुछ रिज़्क भेजा था, फिर तुमने (अपनी घड़त से) उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हिस्सा हलाल करार दे लिया। आप (उनसे) पूछिए कि क्या तुमको खुदा ने हुक्म दिया है या (सिर्फ) अल्लाह पर (अपनी तरफ से) बोहतान ही बाँधते हो? (59) और जो लोग अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधते हैं, उनका कियामत के बारे में क्या गुमान है,¹ वाकई लोगों पर अल्लाह का बड़ा ही फज़्ल है,² लेकिन अक्सर (आदमी) उनमें से बेक़द्र हैं (वरना तौबा कर लेते)। (60) ❖

और आप (चाहे) किसी हाल में हों, और उन्ही हालात में से यह कि आप कहीं से कुरआन पढ़ते हों और (इसी तरह और लोग भी जितने हों) तुम जो काम करते हो हमको सबकी ख़बर रहती है, जब तुम उस काम को करना शुरू करते हो, और आपके रब (के इल्म) से कोई चीज़ ज़रूरी बराबर भी ग़ायब नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में, (बल्कि सब उसके इल्म में हाज़िर हैं) और न कोई चीज़ इस (ज़िक्र हुई मिक्दार) से छोटी है और न कोई चीज़ (उससे) बड़ी है, मगर यह सब (अल्लाह तआला के इल्म में होने की वजह से) किताबे मुबीन (यानी लौहे महफूज़) में (लिखा हुआ) है। (61) याद रखो कि अल्लाह के दोस्तों पर न कोई अन्देशे (वाला वाकिआ पड़ने वाला) है और न वे (किसी मतलूब के जाते रहने पर) ग़मज़दा होते हैं।³ (62) वे (अल्लाह के दोस्त) हैं जो ईमान लाए और (गुनाहों से) परहेज़ रखते हैं।⁴ (63) उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में भी और आखिरत में भी (अल्लाह तआला की तरफ से ख़ौफ़ व रंज से बचने की) खुशख़बरी है, (और) अल्लाह की बातों में (यानी वायदों में) कुछ फ़र्क नहीं (हुआ करता), यह (खुशख़बरी जो ज़िक्र हुई) बड़ी कामयाबी है। (64) और आपको उनकी बातें ग़म में न डालें, पूरी तरह ग़ल्बा (और कुदरत भी) खुदा ही के लिए (साबित) है,⁵ वह (उनकी बातें) सुनता है (और उनकी हालत) जानता है, (वह आपका बदला उनसे खुद ले लेगा)। (65) याद रखो कि जितने कुछ आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं (यानी जिन्नात, इनसान और फ़रिश्ते) ये सब अल्लाह तआला ही की (मिल्क में) हैं।⁶ और जो लोग अल्लाह तआला को छोड़कर दूसरे शरीकों की इबादत कर रहे हैं, (खुदा जाने) किस चीज़ की इत्तिबा कर रहे हैं? महज़ बे-सनद ख़्याल की पैरवी कर रहे हैं, और महज़ ख़्याली बातें कर रहे हैं। (66) वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन भी (इस तौर पर बनाया कि रोशन होने की वजह से) देखने-भालने का ज़रिया है। इस (के बनाने) में उन लोगों के लिए (तौहीद) की दलीलें हैं जो (ग़ौर व फ़िक्र के साथ इन मज़ामीन को)

(पृष्ठ 386 का शेष) 3. इसी तरह तुम्हारे अज़ाब का वक़्त भी तय है, उस वक़्त वह ज़ाहिर हो जाएगा।

4. यानी अज़ाब तो सख़्त चीज़ और पनाह माँगने की चीज़ है, न कि जल्दी माँगने की चीज़।

5. पस दोबारा पैदा करना उसको क्या मुश्किल है।

6. क्योंकि दुनिया का नफ़ा मामूली और फ़ानी, और कुरआन का नफ़ा बहुत ज़्यादा और बाकी है।

1. यानी जो बिल्कुल डरते नहीं, क्या यह समझते हैं कि कियामत नहीं आएगी, या आएगी मगर हमसे पूछगछ न होगी।

2. कि साथ के साथ सज़ा नहीं देता, बल्कि तौबा के लिए मोहलत दे रखी है।

3. यानी अल्लाह तआला उनको ख़ौफ़नाक और ग़मनाक हादसों से बचाता है। ख़ौफ़ से हक़ का ख़ौफ़ और ग़म से आखिरत का ग़म मुराद नहीं है, बल्कि दुनियावी ख़ौफ़ व ग़म की नफ़ी मुराद है जिसका एहतियाम दुश्मनों की मुखा़लफ़त से हो सकता है, वह कामिल मोमिनों को नहीं होता। हर वक़्त उनका अल्लाह पर एतियाम होता है। हर वाकिआ की हिक्मत का एतियाद रखते हैं, उसमें मस्लहत समझते हैं।

4. यानी ईमान और तक्वे से अल्लाह की निकटता नसीब होती है।

5. वह अपनी कुदरत से वायदे के मुताबिक़ आपकी हिफ़ाज़त करेगा।

6. उसकी हिफ़ाज़त या बदले को कोई नहीं रोक सकता, पस हर एतियार से तसल्ली रखना चाहिए।

लआयातिल् लिकौमिंय्यस्मअून (67) कालुत्त-खज़ल्लाहु व-लदन् सुब्हानहू, हुवल-गनिय्यु, लहू
मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि इन् अिन्दकुम् मिन् सुल्तानिम्-बिहाज़ा, अ-तक्लू-न
अलल्लाहि मा ला तअलमून (68) कुल् इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अलल्लाहिल्-कज़ि-ब ला
युफ़िलहून (69) मताअुन् फिद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअुहुम् सुम्-म नुज़ीकुहुमुल्-
अज़ाबश्शदी-द बिमा कानू यक्फ़ुरून ▲ (70) ❖

वल्लु अलैहिम न-ब-अ नूहिन् ❖

इज़् का-ल लिकौमिही या कौमि इन्
का-न कबु-र अलैकुम् मकामी व
तज्कीरी बिआयातिल्लाहि फ-अलल्लाहि
तवक्कलतु फ-अज्मिअू अम्रकुम् व
शु-रका-अकुम् सुम्-म ला यकुन्
अम्रकुम् अलैकुम् गुम्म-तन् सुम्मक्ज़ू
इलय-य व ला तुन्ज़िरून (71) फ-इन्
तवल्लैतुम् फमा सअलतुकुम् मिन्
अज्जिन्, इन् अज्जि-य इल्ला अलल्लाहि
व उमिरतु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन
(72) फ-कज़्ज़बूहु फ-नज्ज़ैनाहु व
मम्-म-अहू फिल्फुल्कि व जअल्लाहुम्
ख़लाइ-फ व अग़रक्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू
बिआयातिना फन्ज़ुर कै-फ का-न

आकि-बतुल्- मुन्ज़रीन (73) सुम्-म बअस्ना मिम्-बअदिही रुसुलन् इला कौमिहिम्
फजाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फमा कानू लियुअ्मिन् बिमा कज़्ज़बू बिही मिन् कब्लु, कज़ालि-क
नत्वअु अला कुलूबिल्- मुअ्तदीन (74) सुम्-म बअस्ना मिम्-बअदिहिम् मूसा व हारू-न

وَلَا اسْبَغْنَهُ هُوَ الْعَزِيزُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنَّ
عِنْدَكُمْ مِنْ سُلَاطِينَ بِهَذَا اتَّقُوا لَوْنِ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝
قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝
مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نَذَرُهُمُ الْعَذَابَ
الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ
لِقَوْمِهِ يَاقَوْمِ إِن كَانَ كِبَرُكُمْ عَلَيَّ مَقَامِي وَتَذْكِرِي بِاللَّهِ
اللَّهُ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجِيبُوا أَمْرَكُمْ وَشَرِّكُمْ لَكُمْ ثُمَّ لَا تُكْفِرُوا
أَمْرَكُمْ عَلَيْكُمْ عَنَاءٌ ثُمَّ افْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونَ ۝ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَاءَ لَكُمْ مِنْ أَجْوِدٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ
أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَتَبَايَعُوا مَعْهُ فِي
الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَةً وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ
رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا
كَذِبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ۝
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمُ مُوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ

सुनते हैं। (67) वे कहते हैं (अल्लाह की पनाह) कि अल्लाह औलाद रखता है? सुब्हानल्लाह! (कैसी सख्त बात कही) वह तो किसी का मोहताज नहीं (और सब उसके मोहताज हैं)। उसी की (मिल्क) है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। तुम्हारे पास (सिवाय बेहूदा दावे के) इस (दावे) पर कोई दलील (भी) नहीं, (तो) क्या अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम (किसी दलील से) इल्म नहीं रखते। (68) आप कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह तआला पर झूठ घड़ते हैं, (जैसे मुशिरक लोग) वे (कभी) कामयाब न होंगे। (69) (यह) दुनिया में (चन्द दिनों का) थोड़ा-सा ऐश है, (जो बहुत जल्द खत्म हुआ जाता है) फिर (मरकर) हमारे (ही) पास उनको आना है, फिर (आखिरत में) हम उनको उनके कुफ़्र के बदले सख्त सज़ा (का मज़ा) चखा देंगे। ▲ (70) ♦

और आप उनको नूह (अलैहिस्सलाम) का किस्सा पढ़कर सुनाइए, (जो कि उस वक़्त सामने आया था) जबकि उन्होंने अपनी कौम से फरमाया कि ऐ मेरी कौम! अगर तुमको (नसीहत व भलाई की बात कहने की हालत में) मेरा रहना और अहकामे खुदावन्दी की नसीहत करना भारी (और नागवार) मालूम होता है तो मेरा तो खुदा ही पर भरोसा है, सो तुम (मुझको नुकसान पहुँचाने के मुताल्लिक) अपनी तदबीर (जो कुछ कर सको) अपने शरीकों के साथ (यानी बुतों) के पुख्ता कर लो,¹ फिर तुम्हारी (वह) तदबीर तुम्हारी घुटन (और दिल की तंगी) का सबब न (होनी चाहिए),² फिर मेरे साथ (जो कुछ करना है) कर गुज़रो, और मुझको (बिलकुल) मोहलत न दो।³ (71) फिर भी अगर तुम मुँह ही मोड़े जाओ तो यह (समझो कि) मैंने तुमसे (इस तब्तीग पर) कोई मुआवज़ा तो नहीं माँगा, (और मैं तुमसे क्यों माँगता, क्योंकि) मेरा मुआवज़ा तो (करम के वायदे के मुताबिक) सिर्फ अल्लाह ही के ज़िम्मे है।⁴ और (चूँकि) मुझको हुक्म किया गया है कि मैं इताअत करने वालों में रहूँ (72) सो (बावजूद इस वाज़ेह नसीहत के भी) वे लोग उनको झुठलाते रहे, पस (उनपर तूफ़ान का अज़ाब मुसल्लत हुआ और) हमने (उस अज़ाब से) उनको और जो उनके साथ कश्ती में थे उनको नजात दी और उनको आबाद किया। और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको (उस तूफ़ान में) गर्क कर दिया। सो देखना चाहिए उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो (अल्लाह के अज़ाब) से डराए जा चुके थे।⁵ (73) फिर उन (नूह अलैहिस्सलाम) के बाद हमने और रसूलों को उनकी कौमों की तरफ भेजा, सो वे उनके पास मोजिज़े लेकर आए (मगर) फिर (भी उनकी ज़िद और हट की यह कैफियत थी कि) जिस चीज़ को उन्होंने अब्वल (बारी में एक बार) झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उसको मान लेते, (और जैसे ये दिल के सख्त थे) हम (अल्लाह तआला) इसी तरह काफ़िरों के दिल पर बन्द लगा देते हैं। (74) फिर इन (ज़िक्र हुए) पैगम्बरों के बाद हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) और हासून (अलैहिस्सलाम) को फिरऔन और उसके सरदारों के पास अपने मोजिज़े (लाठी और चमकता हुआ हाथ) देकर भेजा, सो उन्होंने (दावे के साथ ही उनकी तस्दीक करने से) तकब्बुर किया, और वे लोग अपराधों के आदी थे (इसलिए इताअत न की)। (75) फिर जब (दावे

1. यानी तुम और तुम्हारे माबूद सारे मिलकर मुझको नुकसान पहुँचाने में अपना अरमान पूरा कर लो।

2. यानी अक्सर खुफ़िया तदबीर से तबीयत घुटा करती है। सो खुफ़िया तदबीर की ज़रूरत नहीं, जो कुछ तदबीर करो दिल खोलकर ऐलानिया करो। मेरा न लिहाज़-पास करो और न मेरे चले जाने और निकल जाने का अन्देशा करो, क्योंकि इतने आदमियों के पहरे में से एक आदमी का निकल जाना भी नामुम्किन है, फिर खुफ़िया रखने की क्या ज़रूरत है।

3. हासिल यह कि मैं तुम्हारी इन बातों से न डरता हूँ और न तब्तीग से रुक सकता हूँ।

4. गुज़र न तुमसे डरता हूँ न कुछ इच्छा रखता हूँ।

5. यानी बेख़बरी में हलाक नहीं किए गए, पहले कह दिया, समझा दिया। न माना, सज़ा पाई।

इला फिरऔ-न व म-लइही बिआयातिना फस्तक्बरु व कानू कौमम्-मुज्रिमीन (75)
 फ-लम्मा जा-अहुमुल्-हक्कु मिन् अिन्दिना कालू इन्-न हाज़ा लसिह्रम्-मुबीन (76) का-ल
 मूसा अ-तक़ूलू-न लिह्विक् लम्मा जा-अकुम्, असिह्रन् हाज़ा, व ला युफ़िलहुस्साहिस्न
 (77) कालू अजिअ-तना लितल्फि-तना अम्मा वजद्ना अलैहि आबा-अना व तक्-न

लकुमल्-किब्रिया-उ फिल्अर्जि, व मा
 नहनु लकुमा बिमुअमिनीन (78) व
 का-ल फिरऔनुअतूनी बिकुल्लि साहिरिन्
 अलीम (79) फ-लम्मा जाअस्स-ह-रतु
 का-ल लहुम् मूसा अल्कू मा अन्तुम्-
 मुल्कून (80) फ-लम्मा अल्कौ का-ल
 मूसा मा जिअतुम् बिहिस्-सिह्र,
 इन्नल्ला-ह सयुब्तिलुहू, इन्नल्ला-ह ला
 युस्लिहु अ-मलल्-मुफ़िसदीन (81) व
 युहिव्कुल्लाहुल्-हक्-क बि-कलिमातिही व
 लौ करिहल्-मुज्रिमून (82) ♦

फ़मा आम-न लिमूसा इल्ला
 ज़ुर्रिय्यतुम्-मिन् कौमिही अला खौफिम्
 मिन् फिरऔ-न व म-लइहिम्
 अय्यफ़ित-नहुम्, व इन्-न फिरऔ-न

लअलिन् फिल्अर्जि व इन्नहू लमिनल् मुस्लिफ़ीन (83) व का-ल मूसा या कौमि इन् कुन्तुम्
 आमन्तुम् बिल्लाहि फ-अलैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (84) फ़कालू अलल्लाहि
 तवक्कल्ना रब्बना ला तज्अल्ना फ़िल्नतल् लिल्कौमिज़्ज़ालिमीन (85) व नज्जिना
 बिरह्मति-क मिनल् कौमिल्-काफ़िरीन (86) व औहैना इला मूसा व अख़ीहि अन् तबव्वआ
 लिकौमिकुमा बिमिस्-र बुयूतव्वज्अलू बुयू-तकुम् किब्लतव्व-व अकीमुस्सला-त, व बश्शिरिल्-

196
 مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا السِّعْرُ قِيمَتَانِ ۖ قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ
 لِحَقٍّ لَنَا جَاءَ كُمْ السِّعْرُ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ۖ قَالُوا
 لَاجِبَتَنَا إِلَٰهَاتُنَا عَمَّا وَعَدْنَا عَلَيْهِمْ وَأَنَّا وَتَكُونُ لَكُمُ الْكِبَرِيَّةُ
 فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا نَحْنُ لَكُمُ بِمُؤْمِنِينَ ۖ وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتَشْعُرُونَ
 بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ۖ فَلَمَّا جَاءَ السَّعِيرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى أَتَقُولُونَ
 مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ
 السِّعْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِلُّ عَمَّا يُفْسِدُ ۖ إِنَّ
 وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكُلِّ شَيْءٍ وَلَوْ كَرِهَ الْغَافِلُونَ ۖ فَمَا آمَنَ لِمُوسَى
 إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ
 أَن يَفْتِنَهُمْ ۖ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّ لِمَنْ
 السِّعْرَ فِينِ ۖ وَقَالَ مُوسَى يَقُولُونَ كُنْتُمْ أَمْنَةً بِاللَّهِ
 فَعَلَيْكُمْ تَوَكَّلُوا ۖ إِنَّ كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ ۖ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا
 رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ
 مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّآ
 لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا ۖ وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً ۖ وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ
 وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آخِيتَ فِرْعَوْنَ وَ

के बाद) उनको हमारे पास से (मूसा अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत पर) सही दलील पहुँची¹ तो वे लोग कहने लगे कि यकीनन यह खुला जादू है। (76) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया: क्या तुम इस सही दलील के बारे में जबकि वह तुम्हारे पास पहुँची, (ऐसी बात) कहते हो (कि यह जादू है)? और (हालाँकि) जादूगर कामयाब नहीं हुआ करते? (77) वे लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमको उस तरीके से हटा दो जिसपर हमने अपने बुजुर्गों को देखा है, और (इसलिए आए हो कि) तुम दोनों को दुनिया में रियासत (और सरदारी) मिल जाए, और (तुम अच्छी तरह समझ लो) हम तुम दोनों को कभी न मानेंगे। (78) और फिरऔन ने (अपने सरदारों से) कहा कि मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को (जो हमारे मुल्क में हैं) हाज़िर करो। (79) (चुनाँचे जमा किए गए) सो जब वे आए (और मूसा अलैहिस्सलाम से मुकाबला हुआ तो) मूसा ने उनसे फ़रमाया कि डालो जो कुछ तुमको (मैदान में) डालना है। (80) सो जब उन्होंने (अपना जादू का सामान) डाला तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो कुछ तुम (बनाकर) लाए हो, जादू (यह) है,² यकीनी बात है कि अल्लाह तआला इस (जादू) को अभी दरहम-बरहम “यानी उलट-पलट” किए देता है, (क्योंकि) अल्लाह तआला ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता।³ (81) और अल्लाह तआला हक़ (यानी सही दलील और मोज़िज़े) को अपने वायदों के मुवाफ़िक़ साबित कर देता है, चाहे मुज़्रिम (और काफ़िर) लोग (कैसा ही) नागवार समझें। (82) ♦

पस (जब लाठी का मोज़िज़ा ज़ाहिर हुआ तो) मूसा अलैहिस्सलाम पर (शुरू-शुरू में) उनकी कौम में से सिर्फ़ थोड़े-से आदमी ईमान लाए, वे भी फिरऔन से और अपने हाकिमों से डरते-डरते, कि कहीं (ज़ाहिर होने पर) उनको तकलीफ़ (न) पहुँचाये, और (हकीकत में उनका डरना बेजा न था) क्योंकि फिरऔन उस मुल्क में जोर (हुकूमत) रखता था, और यह (बात भी थी) कि वह (इन्साफ़) की हद से बाहर हो जाता था। (83) और मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! अगर तुम (सच्चे दिल से) अल्लाह पर ईमान रखते हो तो (सोच-विचार मत करो बल्कि) उसी पर तवक्कुल करो, अगर तुम (उसकी) इताअत करने वाले हो।⁴ (84) उन्होंने (जवाब में) अज़्र किया कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया। ऐ हमारे परवर्दिगार! हमको इन ज़ालिमों की मशक़ का तख़्ता “यानी निशाना” न बना। (85) और हमको अपनी रहमत के सदके में इन काफ़िरों से नजात दे।⁵ (86) और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनके भाई (हारून अलैहिस्सलाम) के पास वह्य भेजी कि तुम दोनों अपने उन लोगों के लिए (बदस्तूर) मिस्र में घर बरकरार रखो, (और नमाज़ के वक़्त में) तुम सब अपने उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह करार दे लो। और (यह ज़रूरी है कि) नमाज़ के पाबन्द रहो। और (ऐ मूसा!) आप मुसलमानों को खुशख़बरी दे दें।⁶ (87) और मूसा ने (दुआ में) अज़्र किया कि ऐ हमारे रब! (हमको यह बात मालूम हो गई कि) आपने फिरऔन को और उसके सरदारों को दुनियावी

1. मुराद इससे मोज़िज़ा है।

2. यानी जादूगर जबकि नुबुव्वत का दावा करें तो ख़िलाफ़े आदत उमूर के इज़हार में कामयाब नहीं हुआ करते।

3. न वह जिसको फिरऔन वाले जादू कहते हैं।

4. यानी ऐसे फ़सादियों का काम बनने नहीं देता जो मोज़िज़े के साथ मुकाबले से पेश आएँ।

5. तवक्कुल (यानी भरोसे) के लिए यह लाज़िम है कि मख़्लूक पर नज़र न रहे, न लालच के एतिबार से और न डरकर। पस यह दुआ के ख़िलाफ़ नहीं।

6. यानी जब तक हमपर उनकी हुकूमत मुक़दर है जुल्म न करने पाएँ, और फिर उनकी हुकूमत ही के दायरे से निकाल दीजिए।

7. कि यह मुसीबत ख़त्म हो जाएगी।

मुअ्मिनीन (87) व का-ल मूसा रब्बना इन्न-क आतै-त फिरऔ-न व म-ल-अहू जीनतंव-
व अम्वालन् फिल्हयातिदुदुन्या रब्बना लियुजिल्लू अन् सबीलि-क रब्बनत्मिस् अला
अम्वालिहिम् वशदुद् अला कुलूबिहिम् फला युअ्मिन् हत्ता य-रवुल् अजाबल्-अलीम (88)
का-ल कद् उजीबद्-दअवतुकुमा फस्तकीमा व ला तत्तबिआन्नि सबीलल्लजी-न ला

यअलमून (89) व जावज़्ना बि-बनी
इस्राईलल्-बह-र फअत्ब-अहुम् फिरऔनु
व जुनूदुहू बग्यंव-व अद्वन्, हत्ता इज़ा
अदर-कहुल्-ग-रकु का-ल आमन्तु
अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लजी आ-मनत्
बिही बनू इस्राई-ल व अ-न मिनल्-
मुस्लिमीन (90) आल्आ-न व कद्
असै-त कब्लु व कुन्-त मिनल्-
मुफ़िसदीन (91) फल्यौ-म नुनज्जी-क
बि-ब-दनि-क लितकू-न लिमन् खल्फ-क
आयतन्, व इन्-न कसीरम् मिनन्नासि
अन् आयातिना लगाफिलून (92) ♦

व ल-कद् बव्वअना बनी इस्राई-ल
मुबव्व-अ सिद्किंव-व रज़कनाहुम्
मिनत्ताथियबाति फमखत-लफू हत्ता
जा-अहुमुल्-अिल्मु, इन्-न रब्ब-क
यकज़ी बैनहुम् यौमल्-कियामति फीमा

कानू फीहि यखतलिफून (93) फ-इन् कुन्-त फी शक्किम् मिम्मा अन्ज़ल्ना इलै-क
फस्अलिल्लजी-न यक्कउनल्-किता-ब मिन् कब्लि-क ल-कद् जा-अकल्-हक्कु मिररब्बि-क
फला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन (94) व ला तकूनन्-न मिनल्लजी-न कज़ज़बू
बिआयातिल्लाहि फ-तकू-न मिनल्खासिरीन (95) इन्नल्लजी-न हक्कत् अलैहिम् कलि-मतु

١٩٨
مَكَانًا زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ
سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ قَالَ قَدْ أُجِيبْتُ
دَعْوَتَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا وَلَا تَتَّبِعِينَ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝
وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَآئِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُودُهُ
بَقِيًّا وَعَدَّوْا حَتَّى إِذَا ذَرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ
إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَآئِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝
الَّذِينَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝ قَالِيَوْمَ
نُجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِيَتَكُونُ لِمَنْ خَلَقَكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ
النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَآئِيلَ مَبَآئِ
صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّى جَاءَهُمُ
الْعِلْمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُتَابِعُكَ
فِيهِ ۚ يَخْتَلِفُونَ ۚ وَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَتَنَلِ
الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّكَ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُتَرَدِّينَ ۝ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُونَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ

مَذْكُورٌ

ज़िन्दगी में ठाट-बाट के सामान और तरह-तरह के माल ऐ हमारे रब! इसी वास्ते दिए हैं कि वे (लोगों को) आपकी राह से गुमराह करें। ऐ हमारे रब! उनके मालों को तबाह व बर्बाद कर दीजिए और उनके दिलों को (ज़्यादा) सख्त कर दीजिए (जिससे हलाकत के हकदार हो जाएँ) सो ये ईमान न लाने पाएँ यहाँ तक कि दर्दनाक अज़ाब (के हकदार होकर उस) को देख लें। (88) (हक़ तआला ने) फ़रमाया कि तुम दोनों की दुआ कबूल कर ली गई, सो तुम अपने मन्सबी काम (यानी तब्लीग़ पर) साबित कदम रहो, और उन लोगों की राह न चलना जिनको इल्म नहीं।¹ (89) और हमने बनी इसराईल को (उस) दरिया से पार कर दिया,² फिर उनके पीछे-पीछे फिरऔन अपने लश्कर के साथ जुल्म और ज़्यादती के इरादे से (दरिया में) चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा (और अज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आने लगे) तो (घबराकर) कहने लगा कि मैं ईमान लाता हूँ कि सिवाय उसके कि जिसपर बनी इसराईल ईमान लाए हैं, कोई माबूद नहीं, और मैं मुसलमानों में दाख़िल होता हूँ। (90) (जवाब दिया गया कि) अब (ईमान लाता है) और (अज़ाब के देखने से) पहले सरकशी करता रहा, और फ़सादियों में दाख़िल रहा। अब नजात चाहता है। (91) सो (जो तू नजात चाहता है उसके बजाय) आज हम तेरे बदन (यानी तेरी लाश को, पानी में नीचे बैठ जाने से) नजात देंगे, ताकि तू उनके लिए (इबरत का) निशान हो जो तेरे बाद (मौजूद) हैं।³ और हकीक़त यह है कि (फिर भी) बहुत-से आदमी हमारी (ऐसी-ऐसी) निशानियों से (यानी इबरतों से) गाफ़िल हैं, (और अल्लाह के अहक़ाम की मुख़ालफ़त से नहीं डरते)। (92) ♦

और हमने (फ़िरऔन को गर्क करने के बाद) बनी इसराईल को बहुत अच्छा ठिकाना रहने को दिया,⁴ और हमने उनको नफ़ीस और पाक चीज़ें (बागात और चश्मों वग़ैरह से) खाने को दी। सो उन्होंने (जहालत की वजह से) इख़िलाफ़ नहीं किया, यहाँ तक कि उनके पास (अहक़ाम का) इल्म पहुँच गया। यकीनी बात है कि आपका रब उन (इख़िलाफ़ करने वालों) के दरमियान कियामत के दिन उन मामलात में (अमली) फैसला करेगा जिनमें वे इख़िलाफ़ किया करते थे। (93) फिर अगर मान लीजिए आप इस (किताब) की तरफ़ से शक़ (व शुब्हा) में हों जिसको हमने आपके पास भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछ लीजिए जो आपसे पहले (की) किताबों को पढ़ते हैं, (मुराद तौरात व इन्जील हैं, तो वे कुरआन को सच बतलाएँगे)। बेशक आपके पास आपके रब की तरफ़ से सच्ची किताब आई है, आप हरगिज़ शक़ करने वालों में न हों। (94) और न (शक़ करने वालों से बढ़कर) उन लोगों में से हों जिन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाया, कहीं आप (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) तबाह न हो जाएँ।⁵ (95) यकीनन जिन लोगों के हक़ में आपके रब की (यह

1. यानी जिनको हमारे वायदे के सच्चे होने का, या देरी में हिक्मत होने का, या तब्लीग़ के ज़रूरी होने का इल्म नहीं।
2. जब अल्लाह तआला ने फिरऔन को हलाक करना चाहा तो मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि बनी इसराईल को मिस्र से बाहर निकाल ले जाइए। चुनाँचे वह सबको लेकर चले और रास्ते में दरिया-ए-शोर (यानी नमकीन पानी का दरिया) रुकावट बना और मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से उसमें रास्ता पैदा हो गया।
3. उसकी लाश के बचा लेने को और पानी पर तैर आने को नजात फ़रमाना मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर उसको मायूस कर देने के लिए है कि ऐसी नजात होगी जो तेरे लिए ज़्यादा रुस्वाई का सबब है।
4. 'मुबव्व-अ सिद्किन्' की तफ़सीर 'मिस्र' व 'शाम' के साथ दुर्रें मन्सूर में मन्कूल है।
5. ज़ाहिर में ख़िताब आपको है मगर ख़िताब का मक़सद दूसरों को है। और आयत के नाज़िल होने के वक़्त आपने ख़िताब में अपने को मक़सूद न होने को इन लफ़्ज़ों से ज़ाहिर फ़रमा दिया कि 'न मैं किसी शक़ में हूँ और न सवाल करता हूँ'।

रब्बि-क ला युअमिनून (96) व लौ जाअहुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता य-रवुल् अज़ाबल्-
अलीम (97) फलौ ला कानत् करयतुन् आम-नत् फ-न-फ-अहा ईमानुहा इल्ला कौ-म
यूनु-स, लम्मा आमनू कशफ्ना अन्हुम् अज़ाबल्-ख़िज़ि फिलहयातिद्दुन्या व मत्तअनाहुम् इला
हीन (98) व लौ शा-अ रब्बु-क लआम-न मन् फिल्अर्जि कुल्लुहुम् जमीअन्, अ-फअन्-त
तुकिरहुन्ना-स हत्ता यकूनू मुअमिनीन

(99) व मा का-न लिनफिसन् अन्
तुअमि-न इल्ला बि-इज़िनल्लाहि, व
यज्अलुर्रिज्-स अलल्लज़ी-न ला
यअकिलून (100) कुलिन्ज़ुरु माज़ा
फिस्समावाति वल्अर्जि, व मा तुग्निल्-
आयातु वन्नुज़ुरु अन् कौमिल् ला
युअमिनून (101) फ-हल् यन्तज़िरु-न
इल्ला मिस्र-ल अय्यामिल्लज़ी-न खलौ
मिन् कब्लिहिम्, कुल् फन्तज़िरु इन्नी
म-अकुम् मिनल्-मुत्तज़िरीन (102)
सुम्-म नुनज्जी रुसु-लना वल्लज़ी-न
आमनू कज़ालि-क हक्कन् अलैना
नुन्जिल्-मुअमिनीन (103) ❖

कुल् या अय्युहन्नासु इन्
कुन्तुम् फी शक्किम् मिन् दीनी फला

अअबुदुल्लज़ी-न तअबुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअबुदुल्लाहल्लज़ी य-तवप्फाकुम् व
उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुअमिनीन (104) व अन् अकिम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफन्
व ला तकूनन्-न मिनल्-मुशिरकीन (105) व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फअु-क
व ला यज़ुरु-क फ-इन् फअल्-त फ-इन्न-क इज़म् मिनज़ज़ालिमीन (106) व

يُونُس ١٩٩ مَتَذَرُونَ
عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ
حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۚ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ
فَنَقَعَهَا إِنسَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَنَا أَمْنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ
عَذَابَ الْغَوْزِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَنَمَتُّهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۖ
وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا ۖ أَفَأَنْتَ
تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ
تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَىٰ الَّذِينَ
لَا يَعْقِلُونَ ۖ قُلْ أَنْظَرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَمَا
تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ فَهَلْ
يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ
فَأَنْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۖ ثُمَّ نَزَّجْنَاهُ رُسُلَنَا
وَالَّذِينَ أَمْنُوا كَذَلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا فِيهِمُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ قُلْ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ رَبِّي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ
وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ
لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ وَلَا تَدْعُ مِنْ

तकदीरी) बात (कि ईमान न लाएँगे) साबित हो चुकी है वे (कभी) ईमान न लाएँगे। (96) चाहे उनके पास (हक के सबूत की) तमाम दलीलें पहुँच जाएँ, जब तक कि दर्दनाक अज़ाब को न देख लें, (मगर उस वक्त ईमान फ़ायदेमन्द नहीं होता)। (97) चुनाँचे (अज़ाब शुदा बस्तियों में से) कोई बस्ती ईमान न लाई, कि ईमान लाना उसको फ़ायदेमन्द होता, हाँ मगर यूनस (अलैहिस्सलाम) की कौम। जब वे ईमान ले आए तो हमने रुस्वाई के अज़ाब को दुनियावी ज़िन्दगी में उनपर से टाल दिया, और उनको एक ख़ास वक्त (यानी मौत के वक्त) तक (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ऐश “यानी चैन व सुकून” दिया।¹ (98) और उन कौमों और बस्तियों की क्या तख़्सीस है?) अगर आपका रब चाहता तो तमाम रू-ए-ज़मीन के लोग सबके सब ईमान ले आते,² सो (जब यह बात है तो) क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं जिससे वे ईमान ही ले आएँ। (99) हालाँकि किसी शख्स का ईमान बिना खुदा के हुक्म (यानी उसकी मरज़ी) के मुम्किन नहीं, और वह (यानी अल्लाह तआला) बेअक्ल लोगों पर (कुफ़ की) गंदगी डाल देता है। आप कह दीजिए कि तुम गौर करो। (100) (और देखो) कि क्या-क्या चीज़ें हैं आसमानों और ज़मीन में³ और जो लोग (दुश्मनी के तौर पर) ईमान नहीं लाते, उनको दलीलें और धमकियाँ कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचातीं, (यह बयान हुआ उनके बैर का), (101) सो वे लोग (जैसा कि उनके हाल से ज़ाहिर है) सिर्फ़ उन लोगों के जैसे वाकिआत का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं।⁴ आप फ़रमा दीजिए कि अच्छा तो तुम (तो उसके) इन्तिज़ार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ (उसके) इन्तिज़ार करने वालों में हूँ। (102) फिर हम (उस अज़ाब से) अपने पैग़म्बरों को और ईमान वालों को बचा लेते थे, (जिस तरह हमने उन मोमिनों को नजात दी थी) हम इसी तरह सब ईमान वालों को नजात दिया करते हैं। यह (वायदे के मुताबिक़) हमारे ज़िम्मे है।⁵ (103) ♦

आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक (और शुब्हा) में हो तो मैं उन माबूदों की इबादत नहीं करता खुदा के अलावा जिनकी तुम इबादत करते हो, लेकिन हाँ उस माबूद की इबादत करता हूँ जो तुम (यानी तुम्हारी जान) को कब्ज़ करता है, और मुझको (अल्लाह की तरफ़ से) यह हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से हूँ। (104) और यह कि अपने आपको इस (ज़िक्र हुए) दीन (और ख़ालिस तौहीद) की तरफ़ इस तरह मुतवज्जह रखना कि और सब तरीकों से अलग हो जाऊँ, और (मुझको यह हुक्म हुआ है कि) कभी भुशिरक मत बनना। (105) और (यह हुक्म हुआ है कि) खुदा (की तौहीद) को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करना जो तुझको न (इबादत करने की हालत में) कोई नफ़ा पहुँचा सके और न (इबादत छोड़ देने की हालत में) कोई नुक़सान पहुँचा सके। फिर अगर (मान लो) तुमने ऐसा किया (यानी अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत की) तो तुम उस हालत में (अल्लाह का) हक़ ज़ाया करने वालों में

1. यूनस अलैहिस्सलाम की कौम के किस्से का खुलासा यह है कि उनके ईमान न लाने पर अल्लाह की वब के मुताबिक़ यूनस अलैहिस्सलाम ने उनको अज़ाब की ख़बर दी और खुद चले गए। जब बताए हुए वक्त पर अज़ाब के आसार शुरू हुए तो तमाम कौम ने हक़ तआला के सामने रोना और गिड़गिड़ाना शुरू किया और ईमान ले आए और वह अज़ाब टल गया।
2. मगर बाज़ हिक्मतों की वजह से यह न चाहा, इसलिए सब ईमान न लाए।
3. यानी उनमें गौर करने से तौहीद की अक्ली दलील हासिल होगी।
4. यानी बावजूद दलीलों और वईदों के जो ईमान नहीं लाते तो उनकी हालत उस शख्स के जैसी है जो ऐसे अज़ाब का मुन्तज़िर हो जो कि पहली कौमों पर आया था।
5. पस इसी तरह अगर इन काफ़िरों पर कोई मुसीबत पड़ी तो मुसलमान उससे महफूज़ रहेंगे, चाहे दुनिया में चाहे आख़िरत में।

इय्यम्सस्कल्लाहु बिजुरिन् फला काशि-फ लहू इल्ला हु-व व इय्युरिद्-क बिखैरिन् फला राद्-द लिफज़िलही, युसीबु बिही मय्यशा-उ मिन् अिबादिही, व हुवल् गफूररहीम (107)

कुल् या अय्युहन्नासु कद् जा-अकुमुल्-हक्कु मिरिब्बिकुम् फ-मनिस्तदा फ-इन्नमा यस्तदी लिनफिसही व मन् जल्-ल फ-इन्नमा यज़िल्लु अलैहा, व मा अ-न अलैकुम् बि-वकील

(108) वत्तबिअ मा यूहा इलै-क वस्बिर्

हत्ता यत्कुमल्लाहु व हु-व खैरुल्-

हाकिमीन (109) ❖

11 सूरतु हूदिन् 52

(मक्की) इस सूर: में अरबी के

7924 अक्षर, 1936 शब्द

123 आयतें और 10 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ्-लाम्-रा, किताबुन् उल्किमत

आयातुहू सुम्-म फुस्सिलत् मिल्लदुन्

हकीमिन् खबीर (1) अल्-ला तअबुद्

इल्लल्ला-ह, इन्ननी लकुम् मिन्हु

नज़ीरुव्-व बशीर (2) व अनिस्तगिफरू

रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युमत्तिअकुम्

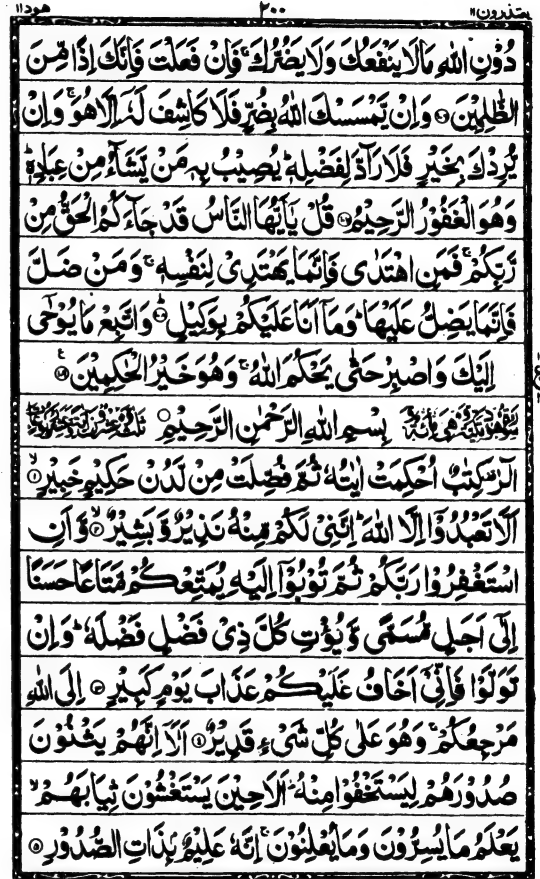
मताअन् ह-सनन् इला अ-जलिम्-

मुसम्मव्-व युअति कुल्-ल जी फज़िल्न् फज़ल्हू, व इन् तवल्लौ फ-इन्नी अखाफु अलैकुम्

अज़ा-ब यौमिन् कबीर (3) इलल्लाहि मर्जिअकुम् व हु-व अला कुल्लि शैइन् कदीर (4)

अला इन्नहुम् यस्नू-न सुदू-रहुम् लियस्तखफू मिन्हु, अला ही-न यस्तगशू-न सियाबहुम्

यअलमु मा युसिरू-न व मा युअलिन्-न इन्नहू अलीमुम्-बिजातिस्सुदूर (5)



से हो जाओगे। (106) और (मुझसे यह कहा गया है कि) अगर तुमको अल्लाह तआला कोई तकलीफ पहुँचाए तो सिवाय उसके और कोई उसका दूर करने वाला नहीं है, और अगर वह तुमको कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फज़ल का कोई हटाने वाला नहीं, (बल्कि) वह अपना फज़ल अपने बन्दों में से जिसपर चाहे मुतवज्जह फरमाए, और वह बड़ी मग़्फ़िरत वाले (और) रहमत वाले हैं।¹ (107) आप (यह भी) कह दीजिए² कि ऐ लोगो! तुम्हारे पास (दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (दलील के साथ) पहुँच चुका है, सो (उसके पहुँच जाने के बाद) जो शख्स सही रास्ते पर आ जाएगा सो वह अपने (नफ़े के) वास्ते सही रास्ते पर आएगा। और जो शख्स (अब भी) बेराह रहेगा तो उसका बेराह होना (यानी उसका वबाल भी) उसी पर पड़ेगा, और मैं तुमपर (कुछ बतौर जिम्मेदारी के) मुसल्लत नहीं किया गया। (108) और आप उसकी पैरवी करते रहिए जो कुछ आपके पास वहा भेजी जाती है, और (उनके कुफ़ व तकलीफ़ पहुँचाने पर) सब्र कीजिए, यहाँ तक कि अल्लाह (उनका) फैसला कर देंगे, और वह सब फैसला करने वालों में अच्छे (फैसला करने वाले) हैं। (109) ♦

11 सूर: हूद 52

सूर: हूद मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 123 आयतें और 10 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा, (के मायने तो अल्लाह को मालूम हैं)। यह (कुरआन) एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें (दलीलों से) मज़बूत की गई हैं, (फिर उसी के साथ) साफ़-साफ़ (भी) बयान की गई हैं। (वह किताब ऐसी है कि) एक बाख़बर हकीम (यानी अल्लाह तआला) की तरफ़ से (है)। (1) यह कि अल्लाह तआला के सिवा किसी की इबादत मत करो, मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ से (ईमान न लाने पर अज़ाब से) डराने वाला, और (ईमान लाने पर सवाब की) खुशख़बरी देने वाला हूँ। (2) और यह (भी है) कि तुम लोग अपने गुनाह (शिक़ व कुफ़्र वगैरह) अपने रब से माफ़ कराओ, फिर (ईमान लाकर) उसकी तरफ़ (इबादत से) मुतवज्जह रहो, वह तुमको मुक़र्रर वक़्त (यानी मौत के वक़्त) तक (दुनिया में) खुशऐशी “यानी अच्छी पुरसुकून ज़िन्दगी” देगा,³ और (आख़िरत में) हर ज़्यादा अमल करने वाले को ज़्यादा सवाब देगा। और अगर (ईमान लाने से) तुम लोग मुँह (ही) मोड़ते रहे तो मुझको (उस सूरत में) तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अज़ाब का अन्देशा है। (3) तुम (सब) को अल्लाह ही के पास जाना है, और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है। (4) याद रखो कि वे लोग अपने सीनों को दोहरा किए देते हैं, (और ऊपर से कपड़ा लपेट लेते हैं) ताकि (अपनी बातें) उससे (यानी खुदा से) छुपा सकें।⁴ याद रखो कि वे लोग जिस वक़्त (दोहरे होकर) अपने कपड़े (अपने ऊपर) लपेटते हैं, वह (उस वक़्त भी) सब जानता है, जो कुछ चुपके-चुपके (बातें) करते हैं और जो कुछ (बातें) वे ज़ाहिर करते हैं, (क्योंकि) यकीनन वह (तो) दिलों के अन्दर की बातें जानता है। (5)

1. खुलासा यह कि मेरा दीन तो यह है जिसमें किसी को शक न होना चाहिए। और कुफ़्रार इसके बावजूद कि इनकारी थे फिर शक क्यों फरमाया? इसमें इशारा इस तरफ़ है कि इस दीन में तो शक भी न होना चाहिए, कहाँ यह कि इनकार और झुठलाना।

2. मतलब यह कि आप अपने ज़ाती और सुपुर्द किए हुए काम में लगे रहिए, उनकी फ़िक्र न कीजिए।

3. ‘खुश-ऐशी’ से मुराद वह है जिसको ‘आतिना फ़िदुन्या ह-स-नतन्’ और ‘लनुथियन्नहू हयातन् तथ्यब-तन्’ में ज़िक्र फरमाया है।

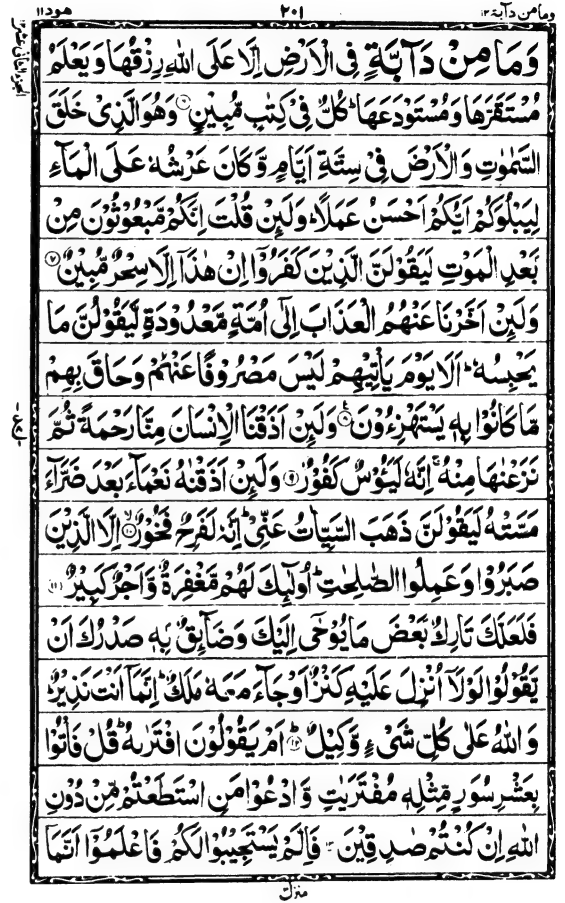
4. यानी इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ जो बातें करते हैं तो इस अन्दाज़ से करते हैं कि किसी को खबर न हो जाए। और जिसको पतिफ़ाद होगा कि खुदा को ज़रूर खबर होती है और आपका साहिबे-वहा (वहब वाला) होना दलीलों से साबित है, तो वह छुपाने की यह तदबीर कभी न करेगा। पस यह तदबीर करना गोया कि इसपर दलालत करता है कि अल्लाह से पोशीदा रहने की कोशिश की जा रही है।

बारहवाँ पारः व मा मिन् दाब्बतिन्

सूरतु हूदिन् (आयत 6 से 123)

व मा मिन् दाब्बतिन् फिल्अर्जि इल्ला अलल्लाहि रिज्कुहा व यअलमु मुस्तकरहा व मुस्तौद-अहा, कुल्लुन् फी किताबिम् मुबीन (6) व हुवल्लजी ख-लकस्-समावाति वल्अर-ज फी सित्ति अय्यामिन्-व का-न अरशुह् अलल्मा-इ लि-यब्लुवकुम् अय्युकुम् अहसनु अ-मलन्, व ल-इन् कुल्-त इन्नकुम् मब्असू-न मिम्-बअदिल्- मौति ल-यकूलन्नल्लजी-न क-फरु इन् हाजा इल्ला सिह्रम्- मुबीन (7) व ल-इन् अख्खारना अन्हुमुल्-अजा-ब इला उम्मतिम् मअदूदतिल्- ल-यकूलन्-न मा यहिबसुह्, अला यौ-म यअतीहिम् लै-स मस्रुफन् अन्हुम् व हा-क बिहिम् मा कानू बिही यस्तहिजऊन (8) ❖

व ल-इन् अजक्नल्-इन्सा-न मिन्ना रहम-तन् सुम्-म न-जअनाहा मिन्हु इन्नहू ल-यऊसुन् कफूर (9) व ल-इन् अजक्नाहु नअमा-अ बअ-द जर्रा-अ मस्सल्लु ल-यकूलन्-न ज-हबस्सयिआतु अन्नी, इन्नू ल-फरिहुन् फखूर (10) इल्लल्लजी-न स-बरु व अमिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग्फि-रतुव्-व अज्फन् कबीर (11) फ-लअल्ल-क तारिकुम् बअ-ज मा यूहा इलै-क व जाइकुम् बिही सद्रु-क अय्यकूलू लौ ला उन्जि-ल अलैहि कन्जुन् औ जा-अ म-अहू म-लकुन्, इन्नमा अन्-त नजीरुन्, वल्लाहु अला



बारहवाँ पार: व मा मिन् दाब्बतिन्

सूर: हूद (आयत 6 से 123)

और कोई (रिज़्क खाने वाला) जानवर रू-ए-ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं कि उसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो, और वह हर एक की ज़्यादा रहने की जगह को और चन्द दिन रहने की जगह को जानता है। सब चीज़ें किताबे मुबीन (यानी लौहे महफूज़) में (भी दर्ज और मुकर्रर) हैं। (6) और वह (अल्लाह) ऐसा है कि सब आसमान और ज़मीन को छह दिन (की मिकदार) में पैदा किया, और (उस वक़्त) उसका अर्श पानी पर था, ताकि तुमको आजमाए कि (देखें) तुममें अच्छा अमल करने वाला कौन है।¹ और अगर आप (लोगों से) कहते हैं कि यकीनन तुम लोग मरने के बाद (क़ियामत के दिन दोबारा) ज़िन्दा किए जाओगे तो (उनमें) जो लोग काफ़िर हैं वे (कुरआन के बारे में, जिसमें क़ियामत में ज़िन्दा होकर उठने की ख़बर है) कहते हैं कि यह तो बिलकुल खुला जादू है।² (7) और अगर थोड़े दिनों तक (मुराद दुनियावी ज़िन्दगी है) हम उनसे (वायदा किए गए) अज़ाब को मुल्तवी “यानी स्थगित” रखते हैं, (कि इसमें हिक्मतें हैं) तो (बतौर इनकार व मज़ाक उड़ाने के) कहने लगते हैं कि उस (अज़ाब) को कौन-सी चीज़ रोक रही है?³ याद रखो जिस दिन (मुकर्ररा वक़्त पर) वह (अज़ाब) उनपर आ पड़ेगा तो फिर (किसी के) टाले न टलेगा, और जिस (अज़ाब) के साथ यह हँसी-ठट्टा कर रहे थे वह उनको आ घेरेगा।⁴ (8) ♦

और अगर हम इनसान को अपनी मेहरबानी का मज़ा चखाकर उससे छीन लेते हैं तो वह नाउम्मीद और नाशुक्र हो जाता है। (9) और अगर उसको किसी तकलीफ़ के बाद जो कि उसपर आ पड़ी हो किसी नेमत का मज़ा चखा दें, तो कहने लगता है कि मेरा सब दुख-दर्द रुख़्सत हुआ, (अब कभी न होगा) पस वह इतराने लगता है, शैख़ी बघारने लगता है। (10) मगर जो लोग मुस्तक़िल मिज़ाज हैं और नेक काम करते हैं,⁵ (वे ऐसे नहीं होते)⁶ ऐसे लोगों के लिए बड़ी मग़्फ़िरत और बड़ा अज़्र है।⁷ (11) सो शायद आप (तंग होकर) उन (अहक़ाम) में से जो कि आपके पास वहब के ज़रिये से भेजे जाते हैं, बाज़ को (कि वह तब्सीग़ है) छोड़ देना चाहते हैं,⁸ और आपका दिल इस बात से तंग होता है कि वे कहते हैं कि (अगर यह नबी हैं तो) इनपर कोई ख़ज़ाना क्यों नाज़िल नहीं हुआ, या उनके साथ कोई फ़रिश्ता (जो हमसे भी बात-चीत करता) क्यों नहीं आया?⁹ आप तो (उन कुफ़्फ़ार के एतिबार से) सिर्फ़ डराने वाले हैं,¹⁰ और हर चीज़ पर पूरा इख़्तियार रखने वाला (तो) अल्लाह ही है।¹¹ (12) क्या (उसके मुताल्लिक़ यूँ) कहते हैं (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) कि आपने उसको (अपनी तरफ़ से) खुद बना लिया है? आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि अगर (यह मेरा बनाया हुआ है) तो (अच्छा) तुम भी इस जैसी दस सूरतें (जो तुम्हारी) बनाई हुई (हों) ले आओ, और (अपनी मदद

1. मतलब यह कि ज़मीन व आसमान को पैदा किया। तुम्हारी ज़रूरतें और फ़ायदे उसमें पैदा किए, ताकि तुम उनको देखकर तौहीद पर दलील पकड़ो, और उनसे फ़ायदा उठाकर नेमत देने वाले का शुक्र और ख़िदमत यानी नेक अमल बजा लाओ। सो बाज़ ने ऐसा किया, बाज़ ने न किया।

2. जादू इसलिए कहते हैं कि वह बातिल होता है मगर असर करने वाला, इसी तरह ‘अल्लाह अपनी पनाह में रखे’ कुरआन को बातिल समझते थे, लेकिन इसके मज़ामीन का असरदार होना भी ख़ूब देखते थे। इस मजमूए पर यह हुक्म किया। अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे।

3. यानी अगर अज़ाब कोई चीज़ होती तो अब तक हो चुकता, जब नहीं हुआ तो मालूम हुआ कि कुछ भी नहीं।

4. मतलब यह कि बावजूद हक़दार होने के यह देरी इसलिए है कि बाज़ हिक्मतों से उसका वक़्त तय है, फिर उस वक़्त सारी कसर निकल जाएगी।

5. मुराद इससे मोमिन लोग हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 402 पर)

कुल्लि शैइव्-वकील (12) अम् यकूलूनफतराहु, कुल् फअतू बिअशिर सु-वरिम्-मिस्लिही मुफ्त-रयातिव्वद्अू मनिस्त-तअतुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिकीन (13) फ-इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फअलमू अन्नमा उन्जि-ल बिअिल्मिल्लाहि व अल्ला इला-ह इल्ला हु-व फ-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (14) मन् का-न युरीदुल्-हयातद्दुन्या व जीन-तहा नुवफिफ इलैहिम् अअ्मालहुम् फीहा व हुम् फीहा

ला युब्बसून (15) उलाइ-कल्लजी-न लै-स लहुम् फिल्-आखिरति इल्लन्नारु व हबि-त मा स-नअू फीहा व बातिलुम्-मा कानू यअ्मलून (16) अ-फ-मन् का-न अला बय्यिनतिम् मिर्बिही व यत्लूहु शाहिदुम् मिन्हु व मिन् कब्लिही किताबु मूसा इमामव्-व रहमतन्, उलाइ-क युअ्मिनू-न बिही, व मय्यक्फुर बिही मिनल् अहज़ाबि फन्नारु मौअिदुहू फला तकु फी मिरयतिम् मिन्हु, इन्नुहुल्-हक्कु मिर्बि-क व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (17) व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफतरा अलल्लाहि कज़िबन्, उलाइ-क युअ्मिन्-न अला रबिहिम् व यकूलुल्-अशहादु हा-उलाइल्लजी-न क-ज़बू अला रबिहिम्

अला लअ्न्नतुल्लाहि अलज़्जालिमीन (18) अल्लजी-न यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्बूनहा अि-वजन्, व हुम् बिल्आखिरति हुम् काफिरून (19) उलाइ-क लम् यकूनू मुअ्जिजी-न फिल्अर्जि व मा का-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ युज़ा-अफ़ु लहुमुल् अज़ाबु, मा कानू यस्ततीअूनस्सम्-अ व मा कानू युब्सिरून (20) उलाइ-कल्लजी-न खसिरून अन्फु-सहुम् व जल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (21) ला ज-र-म अन्नहुम्

وَمِنْ دَابَّةٍ ۚ ۲۰۲
 أَنْزَلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ قَهْلَ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝
 مَنْ كَانَ يُرِيدِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّا لَوِ الْيَوْمِ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ
 فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُنْحَسُونَ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي
 الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحِطَّ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلُ تَاكَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
 أَكْفَرْتُمْ عَلَى بُيُوتِهِ مِنْ رَبِّهِ وَيَنْتَوِي سَاهِدٌ مِنْهُ وَمَنْ
 قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَى إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَ
 مَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ وَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۖ فَلَا تَكُ فِي مَرْيَةِ
 مِنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
 وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ أُولَئِكَ يُعْرَضُونَ
 عَلَى رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى رَبِّهِمْ
 أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
 اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝ أُولَئِكَ لَمْ
 يَكُونُوا مُجْرِمِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانْ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
 أَوْلِيَاءَ ۖ يَضَعُ لَهُمُ الْعَذَابَ مَا كَانُوا يَسْتَخْلِفُونَ السَّمْعَ وَ
 مَا كَانُوا يَبْصُرُونَ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ
 عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ لَاحِرَ جَرَمَ أَنْهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ

مَنْزِلَ

के लिए) जिन-जिन को अल्लाह के अलावा बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। (13) फिर ये (काफिर लोग) अगर तुम लोगों का कहना (कि इसके जैसा बना लाओ) न कर सकें तो तुम (उनसे कह दो कि अब तो) यकीन कर लो कि (यह कुरआन) अल्लाह ही के इल्म (और कुदरत) से उतरा है, और यह भी (यकीन कर लो) कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं।¹ तो फिर अब भी मुसलमान होते हो (या नहीं)? (14) जो शख्स (अपने अच्छे आमाल से) महज़ दुनियावी जिन्दगी (के फायदों) और इसकी रौनक (को हासिल करना) चाहता है, तो हम उन लोगों के (उन) आमाल (का बदला) उनको इस (दुनिया) ही में पूरे तौर से भुगता देते हैं, और उनके लिए (दुनिया) में कुछ कमी नहीं होती।² (15) ये ऐसे लोग हैं कि उनके लिए आखिरत में सिवाय दोज़ख के और कुछ (सवाब वगैरह) नहीं, और उन्होंने इस (दुनिया) में जो कुछ किया था वह (आखिरत में सब-का-सब) नाकारा (साबित) होगा, और (हकीकत में तो) जो कुछ कर रहे हैं वह अब भी बेअसर है।³ (16) क्या (कुरआन का इनकार करने वाला ऐसे शख्स की बराबरी कर सकता है) जो कुरआन पर (कायम हो?) जो कि उसके रब की तरफ से (आया) है, और इस (कुरआन) के साथ एक गवाह तो इसी में (मौजूद) है,⁴ और एक इससे पहले (यानी) मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब है, जो (अहकाम बतलाने के एतिबार से) इमाम है और रहमत है।⁵ ऐसे लोग इस (कुरआन) पर ईमान रखते हैं। और (दूसरे) फ़िर्कों में से जो शख्स इस (कुरआन) का इनकार करेगा तो दोज़ख उसके वायदे की जगह है, (काफिर का यही हाल है) सो (ऐ मुखातब!) तुम कुरआन की तरफ से शक में मत पड़ना, इसमें कोई शक व शुब्हा नहीं कि वह सच्ची (किताब) है, तुम्हारे रब के पास से (आई है) लेकिन (बावजूद इन दलीलों के ग़ज़ब है कि) बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। (17) और ऐसे शख्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है जो अल्लाह तआला पर झूठ बाँधे?⁶ ऐसे लोग (कियामत के दिन) अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और (आमाल के) गवाह (फरिश्ते सबके सामने यूँ) कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब के मुताल्लिक झूठी बातें लगाई थीं, (सब) सुन लो कि ऐसे ज़ालिमों पर खुदा की (ज़्यादा) लानत है। (18) जो कि (अपने कुफ़्र व जुल्म के साथ) दूसरों को भी खुदा की राह (यानी दीन) से रोकते थे, और उस (राह) में टेढ़ (और शुब्हात) निकालने की तलाश (और फ़िर्क) में रहा करते थे, (ताकि दूसरों को गुमराह करें) और वे आखिरत के भी इनकारी थे। (19) ये लोग (तमाम) ज़मीन (के तख्ते) पर (भी) खुदा तआला को आजिज़ नहीं कर सकते थे, और न उनका खुदा के सिवा कोई मददगार हुआ, (कि गिरफ्तारी के बाद छुड़ा लेता), ऐसों को (औरों से) दोगुनी सज़ा होगी,⁷ ये लोग न सुन सकते थे और न (हद से बढ़ी हुई दुश्मनी की वजह से राहे हक को) देखते थे। (20) ये वे लोग हैं जो अपने आपको

(पृष्ठ 400 का शेष)

6. वे नेमत के ख़त्म हो जाने के वक़्त सब्र से काम लेते हैं और नेमत के देने के वक़्त शुक्र व फ़रमाँबर्दारी बजा लाते हैं जो कि नेक आमाल का हासिल है।

7. ख़ुलासा यह कि मोमिनों के अलावा अक्सर आदमी ऐसे ही हैं कि ज़रा-सी देर में निडर हो जाएँ, ज़रा-सी देर में नाउम्मीद हो जाएँ। इसलिए ये लोग अज़ाब में देरी होने के सबब बेख़ौफ़ और इनकारी हो गए।

8. यानी क्या ऐसा मुम्किन है कि आप तब्लीग़ छोड़ दें, सो ज़ाहिर है कि ऐसा इरादा तो आप कर नहीं सकते, फिर तंगदिल होने से क्या फ़ायदा।

9. सो ऐसी बातों से आप तंग न हों।

10. यानी आप पैग़म्बर हैं जिसके लिए मुतलक मोजिज़े की ज़रूरत है, न कि फ़रमाइशी मोजिज़े की।

11. इन मोजिज़ों का ज़ाहिर करना आपके इख़्तियार से बाहर है, फिर उसकी फ़िर्क और इस फ़िर्क से तंगी क्यों हो, और चूँकि पैग़म्बर के लिए मुतलक मोजिज़े की ज़रूरत है और आपका बड़ा मोजिज़ा कुरआन है, तो इसको न मानने की क्या वजह?

1. क्योंकि माबूद, माबूद होने की सिफ़तों में का़मिल होता है। फिर अगर कोई और होता तो उसको कुदरत भी पूरी होती और उस कुदरत से वह तुम लोगों की मदद करता कि तुम उसका बदल ले आते, लेकिन जब तुम इससे आजिज़ हो तो (शेष तफ़सीर पृष्ठ 404 पर)

फिल्-आखिरति हुमुल्-अख्सरुन (22) इन्नल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व अख्बतू इला रब्बिहिम् उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फीहा खालिदून (23) म-सलुल्-फरीकैनि कल्-अअमा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअि, हल् यस्तवियानि म-सलन्, अ-फला तजक्करुन (24) ❖

व ल-कद् अरुसल्ला नूहन् इला कौमिही इन्नी लकुम् नजीरुम् मुबीन (25) अल्ला तअबुद् इल्लल्ला-ह, इन्नी अखाफु अलैकुम् अजा-ब यौमिन् अलीम (26) फकालल् म-लउल्लजी-न क-फरु मिन् कौमिही मा नरा-क इल्ला ब-शरम् मिस-लना व मा नराकत्त-ब-अ-क इल्लल्लजी-न हुम् अराजिलुना बादियर्-रअयि व मा नरा लकुम् अलैना मिन् फजिल्-बल् नजुन्नुकुम् काजिबीन (27) का-ल या कौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्-मिररब्बी व आतानी रहम-तम्-मिन् अिन्दिही फ-अुम्मियत् अलैकुम्, अनुल्लिमुकुमूहा व अन्तुम् लहा कारिहून (28) व या कौमि ला

अस् अलुकुम् अलैहि मालन्, इन् अजिर-य इल्ला अलल्लाहि व मा अ-न बितारिदिल्लजी-न आमनू, इन्नुहुम् मुलाकू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् कौमन् तजहलून (29) व या कौमि मय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम्, अ-फला तजक्करुन (30) व ला अकूलु लकुम् अिन्दी खजाइनुल्लाहि व ला अअलमुल्-गै-ब व ला अकूलु इन्नी म-लकुव्-व ला अकूलु लिल्लजी-न तज्दरी अअ्युनुकुम् लय्युअति-यहुमुल्लाहु खैरन्, अल्लाहु अअलमु बिमा फी अन्फुसिहिम् इन्नी

وَمِنْ دَابَّةٍ ۚ ۞
الْأَخْسَرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا
إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ مَثَلُ
الْفَرِيقَيْنِ كَالْآخِضِ وَالْبَاصِرِ ۝ وَالصِّدِّيقِ هَلْ يَسْتَوِينَ
مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ إِلَيمٍ ۝ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرِيدُ إِلَّا
بَشْرًا مِثْلَنَا وَمَا تَرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ
الزَّالِمِينَ ۝ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَحْنُكُمْ كَذِبِينَ ۝
قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيْنِكُمْ مِنْ رَبِّي وَالْغَيْبِ
رَحْمَةً مِنْ عِنْدِهِ فَعَبَّيْتُ عَلَيْكُمْ أَنْتُمْ مَكِيدُونَ ۝ وَأَنْتُمْ لَهَا
كَايُونَ ۝ وَيَقَوْمِ لَا تَسْأَلُونَهُ عَلَيْهِ مَا لَكُمْ أَنْ تُجْرَىٰ إِلَّا عَلَىٰ
اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدٍ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ لُلِقَا رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي
أَرَأَيْتُمْ قَوْمًا فَجَّهَلُونَ ۝ وَيَقَوْمِ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ
طَرَدْتُهُمْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ
اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ
تَزَادَرَىٰ أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۝ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي

مَثَلُ

बर्बाद कर बैठे, और जो (माबूद) उन्होंने घड़ रखे थे (आज) उनसे सब गायब (और गुम) हो गए, (कोई भी तो काम न आया)। (21) पस लाज़िमी बात है कि आखिरत में ज़्यादा ख़सारा “यानी घाटा” पाने वाले यही लोग होंगे। (22) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे-अच्छे काम किए और दिल से अपने रब की तरफ़ झुके,² ऐसे लोग जन्नत वाले हैं, और वे उसमें हमेशा रहा करेंगे।³ (23) दोनों फ़रीक़ (जिनका ज़िक्र हुआ यानी मोमिन व काफ़िर) की हालत ऐसी है जैसे एक शख्स हो अन्धा भी और बहरा भी, और एक शख्स हो कि देखता भी हो और सुनता भी हो, (जिसको समझना बहुत आसान है)। क्या ये दोनों शख्स हालत में बराबर हैं?⁴ क्या तुम (इस फ़र्क़ को) समझते नहीं?⁵ (24) ♦

और हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनकी कौम के पास रसूल बनाकर (यह पैग़ाम देकर) भेजा कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत मत करना। (25) मैं तुमको (अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत करने की सूरत में) साफ़-साफ़ डराता हूँ, मैं तुम्हारे हक़ में एक बड़े तकलीफ़ देने वाले दिन के अज़ाब का अन्देशा करता हूँ। (26) सो उनकी कौम में जो काफ़िर सरदार थे, वे (जवाब में) कहने लगे कि हम तो तुमको अपने ही जैसा आदमी देखते हैं, और तुम्हारी पैरवी उन्हीं लोगों ने की है जो हममें बिल्कुल कम दर्जे के और हकीर हैं, (जिनकी अक्ल अक्सर कम होती है, फिर वह पैरवी भी महज़) सरसरी राय से (हुई है) और हम तुम लोगों में (यानी तुममें और मुसलमानों में) कोई बात अपने से ज़्यादा भी नहीं पाते, बल्कि हम तुमको (बिल्कुल) झूठा समझते हैं। (27) (हज़रत नूह ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! भला यह तो बतलाओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर (कायम) हूँ, (जिससे मेरी नुबुव्वत साबित होती है) और उसने मुझको अपने पास से रहमत (यानी नुबुव्वत) अता फ़रमाई हो, फिर वह (नुबुव्वत या उसकी हुज्जत) तुमको न सूझती हो, तो (मैं क्या करूँ, मजबूर हूँ) क्या हम इस (दावे या दलील) को तुम्हारे गले मढ़ दें, और तुम उससे नफ़रत किए चले जाओ।⁶ (28) और (इतनी बात और भी फ़रमाई कि) ऐ मेरी कौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग़) पर कुछ माल नहीं माँगता, मेरा मुआवज़ा तो सिर्फ़ अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं तो इन ईमान वालों को निकालता नहीं (क्योंकि) ये लोग अपने रब के पास (इज़्ज़त व मक़बूलियत के साथ) जाने वाले हैं, लेकिन वाकई मैं तुम लोगों को देखता हूँ कि (ख़्वाह-मख़्वाह) की जहालत कर रहे हो, (और बेढंगी बातें कर रहे हो)। (29) और ऐ मेरी कौम! (मान लो) अगर मैं उनको निकाल भी दूँ तो (यह बतलाओ) मुझको खुदा की पकड़ से कौन बचा लेगा। क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते?⁷ (30) और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के (तमाम) ख़ज़ाने हैं, और न मैं (यह कहता हूँ कि मैं) तमाम ग़ैब की बातें जानता हूँ, और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और जो लोग तुम्हारी निगाहों में हकीर हों, मैं उनके मुताल्लिक़ (तुम्हारी तरह) यह नहीं कह सकता कि अल्लाह हरगिज़ उनको सवाब न देगा, उनके दिल में जो कुछ हो उसको अल्लाह ही ख़ूब जानता है, मैं तो (अगर ऐसी बात कह दूँ तो) उस सूरत में सितम ही कर दूँ।⁸ (31) वे लोग कहने लगे कि ऐ नूह! तुम

(पृष्ठ 402 का शेष)

तौहीद और रिसालत दोनों साबित हो गई।

2. यानी दुनिया ही में उन आमाल के बदले में उनको नेकनामी, सेहत, ज़िन्दगी की फ़रागत, माल व औलाद की ज़्यादती वगैरह देदी जाती है।
3. इस आयत का यह मतलब नहीं कि कुपफ़ार की नीयत दुनिया के अलावा कुछ नहीं होती, बल्कि उनमें जो ऐसे होते हैं कि उनकी नीयत सिवाय दुनिया के कुछ भी न हो, इस आयत में उनका बयान है।
4. यानी उसका आजिज़ कर देने वाला होना, जो कि अक्ली दलील है।
5. यह दलील नकली है। ग़रज़ कुरआन के सच्चा व सही होने के लिए दोनों दलीलें मौजूद हैं।
6. यानी उसकी तौहीद का, उसके रसूल की रिसालत का और उसके कलाम यानी कुरआन का इनकार करे।
7. एक अपने काफ़िर होने की, एक दूसरों को काफ़िर बनाने की कोशिश करने की।
1. यह तो अन्जाम होगा काफ़िरों का, आगे मुसलमानों का अन्जाम ज़िक्र किया गया है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 406 पर)

इज़ल्-लमिनज़्ज़ालिमीन (31) कालू या नूहु कद् जादल्लना फ़-अक्सर्-त जिदालना फ़अत्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिकीन (32) का-ल इन्नमा यअत्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा-अ व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन (33) व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स-ह लकुम् इन् कानल्लाहु युरीदु अय्युग्वि-यकुम्, हु-व रब्बुकुम्, व इलैहि तुर्जअून (34) अम् यकूलूनफ़तराहु, कुल् इनिफ़तरैतुहू फ़-अलय्-य इज़्ज़ामी व अ-न बरीउम्-मिम्मा तुर्जिमून (35) ❖

व ऊहि-य इला नूहिन् अन्नहू
लंय्युअमि-न मिन् कौमि-क इल्ला मन्
कद् आम-न फ़ला तब्तइस् बिमा कानू
यफ़अलून (36) वस्नअिल्-फ़ुल्-क
बिअअयुनिना व वह्यिना व ला
तुखातिब्नी फ़िल्लजी-न ज़-लमू इन्नहुम्
मुग्रकून (37) व यस्-नअल्फ़ुल्-क, व
कुल्लमा मर्-र अलैहि म-लउम्मिन्
कौमिही सख़िरु मिन्हु, का-ल इन्
तस्ख़रु मिन्ना फ़-इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम्
कमा तस्ख़ारुन (38) फ़सौ-फ़
तअ़लमू-न मय्यअ़तीहि अज़ाबुय्युख़ज़ीहि
व यहिल्लु अलैहि अज़ाबुम् मुकीम (39)

हमसे बहस कर चुके, फिर बहस भी बहुत कर चुके, सो (अब हम बहस-वहस नहीं करते) जिस चीज़ से तुम हमको धमकाया करते हो (कि अज़ाब आ जाएगा) वह हमारे सामने ले आओ, अगर तुम सच्चे हो। (32) उन्होंने फरमाया कि अल्लाह तआला उसको तुम्हारे सामने लाएगा, बशर्तेकि उसको मन्ज़ूर हो, और (उस वक़्त फिर) तुम उसको अजिज़ न कर सकोगे। (33) और मेरी ख़ैर-ख़्वाही तुम्हारे काम नहीं आ सकती, चाहे मैं तुम्हारी (कैसी ही) ख़ैर-ख़्वाही करना चाहूँ, जबकि अल्लाह ही को तुम्हारा गुमराह करना मन्ज़ूर हो,¹ वही तुम्हारा मालिक है और उसी के पास तुमको जाना है। (34) क्या ये लोग कहते हैं कि उन्होंने (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, अल्लाह अपनी पनाह में रखे) यह (कुरआन) घड़ लिया है। आप (जवाब में) फरमा दीजिए कि अगर (मान लो कि) मैंने घड़ा होगा तो मेरा (यह) जुर्म मुझपर आयद होगा और तुम मेरे जुर्म से बरी रहोगे, और मैं तुम्हारे इस जुर्म से बरी रहूँगा।² (35) ♦

और नूह (अलैहिस्सलाम) के पास वह भेजी गई कि सिवाय उनके जो (इस वक़्त तक) ईमान ला चुके हैं, और कोई (नया शख्स) तुम्हारी कौम में से ईमान न लाएगा, सो जो कुछ ये लोग (कुफ़्र, तकलीफ़ देना और हँसी मज़ाक) कर रहे हैं। (36) इसपर कुछ गुम न करो। और तुम हमारी निगरानी में और हमारे हुक्म से कश्ती तैयार कर लो,³ और मुझसे काफ़िरों के बारे में कुछ गुप्तगू मत करना, वे सब गर्क किए जाएंगे।⁴ (37) और वे कश्ती तैयार करने लगे, और जब कभी उनकी कौम के किसी गिरोह के सरदार का उनपर गुज़र होता तो उनसे हँसी करते। आप फरमाते कि अगर तुम हमपर हँसते हो तो हम तुमपर हँसते हैं, जैसा कि तुम (हमपर) हँसते हो।⁵ (38) सो अभी तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौन-सा शख्स है जिसपर ऐसा अज़ाब आया चाहता है जो उसको रुस्वा कर देगा, और उसपर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होगा। (39) यहाँ तक कि जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म (करीब) आ पहुँचा और तन्दूर (यानी ज़मीन से पानी) उबलना शुरू हुआ, हमने (नूह से) फरमाया कि हर एक (किस्म) में से (एक-एक नर और एक-एक मादा यानी) एक जोड़ा, यानी दो अदद उसपर चढ़ा लो,⁶ और अपने घर वालों को भी, उसको छोड़कर जिसपर हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है, और दूसरे ईमान वालों को भी (सवार कर लो) और सिवाय थोड़े से आदमियों के उनके साथ (यानी उनपर) कोई ईमान न लाया था। (40) और (नूह ने) फरमाया कि इस कश्ती में सवार हो जाओ, इसका

(पृष्ठ 404 का शेष)

2. यानी फरमाँबरदारी और आजिज़ी दिल में पैदा की।

3. यह दोनों के अन्जाम का फर्क बयान हो गया। आगे मौजूदा फर्क की मिसाल है जिसपर अन्जाम का फर्क मुरत्तब होता है।

4. यही हालत काफ़िर और मुसलमान की है कि पहला हिदायत से बहुत दूर है और दूसरा हिदायत से मौसूफ़ है। यानी हिदायत पाए हुए है।

5. यानी इसमें तरद्दुद की गुन्जाइश ही नहीं, बिल्कुल ज़ाहिर है।

6. मतलब यह कि तुम्हारा यह कहना कि जी को नहीं लगती, महज़ यह समझना है कि नुबुव्वत और बशरीयत एक जगह जमा नहीं हो सकते, जबकि तुम्हारे इस तरह का अक्कीदा रखने की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं, और मेरे पास इन दोनों के जमा होने की दलील मौजूद है, यानी मौजिजा वगैरह, न कि किसी की पैरवी। इससे इसका जवाब भी हो गया कि उनकी इत्तिबा हुज्जत नहीं, लेकिन दलील से नतीजा निकालना ग़ौर व फ़िक्र पर मौकूफ़ है, तुम ग़ौर व फ़िक्र करते नहीं। और यह मेरे बस से बाहर है।

7. इस तक़रीर में उनके तमाम शुब्हात का जवाब हो गया, लेकिन आगे उन सब जवाबों का पूरा करने वाला हिस्सा है। यानी जब मेरी नुबुव्वत दलील से साबित है तो अव्वल तो दलील के सामने किसी चीज़ का बर्द्द होना कोई चीज़ नहीं, फिर यह कि वह बर्द्द भी नहीं, अलबत्ता अगर मैं किसी अज़ीब व ग़रीब मामले का दावा करता तो इनकार व मुहाल समझना भी कोई बर्द्द न था, अगरचे दलील के बाद वह भी सुने जाने के काबिल नहीं। अलबत्ता अगर दलील भी नागुफ़िन् मालूम होती हो तो फिर वाजिब है, लेकिन मैं तो किसी ऐसे अज़ीब मामले का दावा नहीं करता।

8. क्योंकि बेदलील दावा करना गुनाह की बात है।

1. मतलब यह कि जब तुम ही अपनी बदकिस्मती से अपने लिए नफ़ा हासिल करना और नुक़सान से न बचना चाहो तो मेरे चाहने से क्या होता है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 408 पर)

का-न फी मअज़िलिन्-या बुनय्यरकब् म-अना व ला तकुम् म-अल्- काफिरीन (42) का-ल स-आवी इला ज-बलिन्-यअसिमुनी मिनल्मा-इ, का-ल ला आसिमल्यौ-म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला मरहि-म व हा-ल बैनहुमल्-मौजु फका-न मिनल्- मुग्रकीन (43) व की-ल या अरज़ुब्लअी मा-अकि व या समा-उ अक्लिअी व गीज़ल्-मा-उ व कुज़ियल्-अम्र वस्तवत्

अलल्-जूदिय्यि व की-ल बुअदल् लिल्- कौमिज़्जालिमीन ♦ (44) व नादा

नूहुर-रब्बहू फका-ल रब्बि इन्नब्नी मिन् अहली व इन्-न वअद-कल्-हक्कु व अन्-त अह्कमुल्-हाकिमीन (45)

का-ल या नूहु इन्नहू लै-स मिन् अहिल-क इन्नहू अ-मलुन् गैरु सालिहिन् फला तसअलिन् मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन्, इन्नी अअिजु-क अन् तकू-न मिनल्- जाहिलीन (46) का-ल रब्बि इन्नी अअूजु बि-क अन् अस्अ-ल-क

मा लै-स ली बिही अिल्मुन्, व इल्ला तगिफर् ली व तर्हम्नी अकुम् मिनल्- खासिरीन (47) की-ल या नूहुट्बि व बिसलामिम्-मिन्ना व ब-रकातिन्

अलै-क व अला उ-ममिम् मिम्-मम्म-अ-क, व उ-ममुन् सनुमत्तिअुहुम् सुम्-म यमस्सुहुम् मिन्ना अज़ाबुन् अलीम (48) तिल्-क मिन् अम्बाइल्-गैबि नूहीहा इलै-क मा कुन्-त तअल्मुहा अन्-त व ला कौमु-क मिन् कब्लि हाज़ा, फस्बिर्, इन्नल् आकि-ब-त

लिल्मुत्तकीन (49) ♦

إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۝
وَلَأَذَىٰ نَوْمٍ لِّبَنَاتِهِ ۚ وَكَانَ فِي مَعْرَلٍ يُبَيِّنُ ۚ ارْكَبْ مَعَنَا
وَلَا تَكُن مَعَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ سَأُوْنَىٰ إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِفُنِي
مِنْ هَاهُنَا ۚ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَ ۚ
وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۝ وَقِيلَ يَا أَرْضُ
ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَسَاءَ أَقْلِبِي ۚ وَغِيضَ الْمَاءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ
وَأَسْتَوَتْ عَلَىٰ الْجُودِيِّ ۚ وَقِيلَ بَعْدَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَ
لَأَذَىٰ نَوْمٍ لِّبَنَاتِهِ ۚ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي مِنْ أَهْلِهَا وَإِنَّ وَعْدَكَ
أَحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ۝ قَالَ يَنْفُورُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ
إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۚ فَلَا تَسْكُنْ لَكَ بِهِ عِلْمٌ
إِنِّي أُعْطِكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوْذُ بِكَ
أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَلَا تَغْفِرُنِي ۚ وَتَرْتَمِقُنِي أُكُنَّ مِنَ
الْخَاسِرِينَ ۝ قِيلَ يَنْفُورُ ۚ أَهْبِطْ بِسَلَامٍ فَرَأَتْهُمَا بِكَرَّاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ
فَرَمَنَ مَعَكَ ۚ وَأَمَرَ سَمْعَتَهُنَّ ثُمَّ يَبْتَغِيَهُنَّ مَبَاغِدَ أَبٍ إِلَيْهِنَّ ۚ فَلَأَك
مِنْ أَجْنَاءٍ الْغَيْبِ تُوْجِيهًا إِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ
مِنْ قَبْلِ هَٰذَا ۚ فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ۝ وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ

चलना और ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, यकीनन मेरा रब मग़ि़रत करने वाला (है), रहीम है। (41) और वह क़श्ती आपको लेकर पहाड़ जैसी लहरों में चलने लगी, और नूह ने अपने (एक सगे या सौतेले) बेटे को पुकारा, और वह अलग मक़ाम पर था,¹ कि ऐ मेरे (प्यारे) बेटे! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों के साथ मत हो।² (42) वह कहने लगा कि मैं अभी किसी पहाड़ की पनाह ले लूँगा जो मुझको पानी से बचा लेगा, (नूह ने) फ़रमाया कि आज अल्लाह के हुक्म (यानी क़हर से) कोई बचाने वाला नहीं, लेकिन जिसपर वही रहम करे, और दोनों के बीच में एक मौज़ “यानी लहर” आड़ हो गई, पस वह भी दूसरे काफ़िरों की तरह गर्क हो गया। (43) और हुक्म हो गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल जा, और ऐ आसमान थम जा, और पानी घट गया और किस्सा ख़त्म हुआ, और वह (क़श्ती) जूदी पर आ ठहरी, और कह दिया गया कि काफ़िर लोग रहमत से दूर।³ ♦ (44) और नूह ने अपने रब को पुकारा और अर्ज़ किया कि मेरा यह बेटा मेरे घर वालों में से है, और आपका वायदा बिल्कुल सच्चा है, और आप हाकिमों के हाकिम हैं।⁴ (45) (अल्लाह तआला ने) इरशाद फ़रमाया कि ऐ नूह! यह शख्स तुम्हारे घर वालों में से नहीं, यह तबाहकार है। सो मुझसे ऐसी चीज़ की दरख़्वास्त मत करो जिसकी तुमको ख़बर नहीं, मैं तुमको नसीहत करता हूँ कि तुम नादान न बन जाओ। (46) उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मैं इस (बात) से आपकी पनाह माँगता हूँ कि आपसे ऐसे मामले की दरख़्वास्त करूँ जिसकी मुझको ख़बर न हो, और अगर आप मेरी मग़ि़रत न फ़रमाएँगे और मुझपर रहम न फ़रमाएँगे तो मैं बिल्कुल ही तबाह हो जाऊँगा। (47) कहा गया कि ऐ नूह! उतरो हमारी तरफ़ से सलाम और बरक़तें लेकर जो तुमपर नाज़िल होंगी, और उन जमाअतों पर जो कि तुम्हारे साथ हैं, और बहुत-सी ऐसी जमाअतें भी होंगी कि उनको हम चन्द दिन की ऐश देंगे, फिर उनपर हमारी तरफ़ से सख़्त सज़ा वाक़ेअ होगी।⁵ (48) यह किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जिसको हम व़ह्य के ज़रिये से आपको पहुँचाते हैं, इसको इससे पहले न आप जानते थे और न आपकी कौम,⁶ सो सब्र कीजिए, यकीनन नेक अन्जाम होना

(पृष्ठ 406 का शेष)

2. यह आखिरी दर्जे का जवाब है। और असल जवाब वह है कि इस झूठ का झूठ होना साबित कर दिया जाए, जैसा कि इसी सूर: के दूसरे रुकूअ में जवाब दिया है, कि आप कह दीजिए कि तुम इस जैसी दस सूरतें बना लाओ लेकिन जो शख्स दलील में न बहस कर सके और न तसलीम करे, अख़ीर दर्जे में यही कहा जाता है कि ख़ैर भाई जैसा मैंने किया होगा, मैं भुगतूँगा, और जैसा तुम कर रहे हो तुम भुगतोगे।

3. यानी तुम उस तूफ़ान से बचने के लिए क़श्ती तैयार कर लो, कि उसके ज़रिये से तुम और ईमान वाले महफूज़ रहोगे।

4. यानी उनके लिए यह क़तई तौर पर तजवीज़ हो चुका है तो उनकी सिफ़ारिश बेकार होगी।

5. कि अज़ाब ऐसा नज़दीक आ पहुँचा है और तुमको हँसी सूझ रही है। हम इसपर हँसते हैं।

6. हर किस्म के जानवरों में से जो कि इनसान के कारामद हैं, और पानी में ज़िन्दा नहीं रह सकते।

1. उसका नाम किनआन था, वह बावजूद तंबीह के ईमान न लाया और ईमान न लाने की वजह से क़श्ती में सवार न किया गया था।

2. यानी कुफ़्र को छोड़ दे ताकि गर्क होने से बच जाए।

3. इससे मालूम हुआ कि तूफ़ान का पानी पहाड़ से ऊँचा था, और किस्सा ख़त्म होने में सब बातें आ गईं, नूह अलैहिस्सलाम की नजात, काफ़िरों का गर्क होना और तूफ़ान का ख़त्म हो जाना। और ‘काफ़िर लोग रहमत से दूर’ शायद इसलिए फ़रमाया गया हो कि इब्रत ताज़ा हो जाए कि कुफ़्र का यह वबाल है, ताकि आइन्दा आने वाले इससे बचे रहें।

4. इस गुज़ारिश का खुलासा उसके मोमिन होने के लिए दुआ थी।

5. नूह अलैहिस्सलाम के किस्से को ख़त्म करके किस्से के फ़ायदों में से दो फ़ायदे बयान फ़रमाते हैं, अव्वल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत पर दलालत करना, दूसरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली देना।

6. इस एतिबार से ग़ैब था और सिवाय व़ह्य के इल्म के दूसरे सब असबाब यकीनन नापैद हैं, पस साबित हो गया कि आपको व़ह्य के ज़रिये से मालूम हुआ है, और यही नुबुव्वत है। लेकिन ये लोग नुबुव्वत के साबित होने के बाद भी आपसे मुख़ालफ़त करते हैं।

व इला आदिन् अखाहुम् हूदन्, का-ल या कौमिअबुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन्
गैरुहू, इन् अन्तुम् इल्ला मुफ्तरून (50) या कौमि ला अस्अलुकुम् अलैहि अजरन्, इन्
अजिर-य इल्ला अलल्लजी फ-त-रनी, अ-फला तअकिलून (51) व या कौमिस्तगिफरू
रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युरसिलिस्समा-अ अलैकुम् मिद्रारव्-व यजिदकुम् कुव्व-तन् इला
कुव्वतिकुम् व ला त-तवल्लौ मुज्जिमीन

(52) कालू या हूदु मा जिअतना
बि-बय्यि-नतिव्-व मा नहनु बितारिकी
आलि-हतिना अन् कौलि-क व मा नहनु
ल-क बिमुअमिनीन (53) इन्नकूलु
इल्लअ-तरा-क बअजु आलि-हतिना
बिसूइन्, का-ल इन्नी उशिहदुल्ला-ह
वशहदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुशिरकून
(54) मिन् दूनिही फकीदूनी जमीअन्
सुम्-म ला तुन्जिरून (55) इन्नी
तवक्कल्लु अलल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम्,
मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आखिजुम्
बिनासि-यतिहा, इन्-न रब्बी अला
सिरातिम् मुस्तकीम (56) फ-इन्
तवल्लौ फ-कद् अबूलतुकुम् मा
उरसिल्लु बिही इलैकुम्, व यस्तखिलफु

रब्बी कौमन् गैरकुम् व ला तजुर्नहू शैअन्, इन्-न रब्बी अला कुल्लि शैइन् हफीज (57)
व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदव्वल्लजी-न आमनू म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना व
नज्जैनाहुम् मिन् अजाबिन् गलीज (58) व तिल्-क आदुन् ज-हदू बिआयाति रब्बिहिम् व
असौ रुसु-लहू वत्त-बअू अम्-र कुल्लि जब्बारिन् अनीद (59) व उत्बिअू फी हाजिहिदुन्या

هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ۝ يَقَوْمِ لَا أَنْتُمْ عَلَيَّ أَجْرٌ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ إِنِّي فُطِرْتُ فَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَكَّلُوا عِزِّ مَوْلَانِ ۝ قَالُوا يَهُودُ اجْعَلْ لَنَا بَيْتَةً وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝ إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدْ وَأَنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝ مَنْ دُونَهُ فَكَيْدٌ وَفِي جَمْعَانِ ۝ لَا تَنْظُرُونَ ۝ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا أَهْوَأْنَا حَيْثُ يَخْتَارُونَ ۝ إِنِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ فَإِنْ كُفِرُوا فَقَدْ أَوْفَقْنَاكُمْ قَا أَرْسَلْتُ بِهِ إِلَكُمْ وَيَسْتَعِظُونَ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنْ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِظٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرِسْمَةٍ مِنَّا وَتَبِعْتَهُمْ مِنْ عَدَاوٍ عَلِيظَةٍ ۝ وَتِلْكَ عَلَاءُ حُجُودِ بَابِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ وَاتَّبَعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝ إِلَّا إِنْ عَلَاءًا

مِنْ

मुत्तकियों के लिए है। (49) ♦

और हमने आद की तरफ उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (होने के काबिल) नहीं, तुम (इस बुत-परस्ती के एतिकाद में) बिलकुल झूठ घड़ने वाले हो। (50) ऐ मेरी कौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग) पर कुछ मुआवज़ा नहीं माँगता, मेरा मुआवज़ा तो सिर्फ उस (अल्लाह) के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया, फिर क्या तुम नहीं समझते! (51) और ऐ मेरी कौम! तुम अपने गुनाह अपने रब से माफ़ कराओ, फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो,² वह तुम पर ख़ूब बारिश बरसाएगा और तुमको और कुव्वत देकर तुम्हारी कुव्वत में तरक्की कर देगा, और मुज़िम रहकर मुँह मत फेरो। (52) उन लोगों ने जवाब दिया कि ऐ हूद! आपने हमारे सामने कोई दलील तो पेश नहीं की, और हम आपके कहने से तो अपने माबूदों को छोड़ने वाले नहीं, और हम किसी तरह आपका यकीन करने वाले नहीं। (53) हमारा कौल तो यह है कि हमारे माबूदों में से किसी ने आपको किसी ख़राबी में मुब्तला कर दिया है। (हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने) फरमाया कि मैं (ऐलानिया) अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी (सुन लो और) गवाह रहो कि मैं उन चीज़ों से बेज़ार हूँ जिनको तुम खुदा के सिवा शरीक करार देते हो। (54) सो तुम सब मिलकर मेरे साथ दाव-घात कर लो, फिर मुझको ज़रा भी मोहलत न दो। (55) मैंने अल्लाह पर भरोसा कर लिया है, जो मेरा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है, जितने (रू-ए-ज़मीन पर) चलने वाले हैं सबकी चोटी उसने पकड़ रखी है।³ यकीनन मेरा रब सीधे रास्ते पर है।⁴ (56) फिर अगर तुम फिरे रहोगे तो मैं तो जो पैग़ाम देकर मुझको भेजा गया है, वह तुमको पहुँचा चुका हूँ और तुम्हारी जगह मेरा रब दूसरे लोगों को (ज़मीन में आबाद कर) देगा और उसका तुम कुछ नुक़सान नहीं कर रहे हो, यकीनन मेरा रब हर चीज़ की हिफ़ाज़त और देखभाल करता है। (57) और जब (अज़ाब के लिए) हमारा हुक्म पहुँचा तो हमने हूद को और जो उनके साथ ईमान-वाले थे, उनको अपनी इनायत से बचा लिया, और उनको एक सख़्त अज़ाब से बचा लिया। (58) और यह (कौम) आद थी जिन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया⁵ और उसके रसूल का कहना न माना,⁶ और मुकम्मल तौर पर ऐसे लोगों के कहने पर चलते रहे जो ज़ालिम (और) ज़िदी थे। (59) और इस दुनिया में भी लानत उनके साथ-साथ रही और कियामत के दिन भी।⁷ ख़ूब सुन लो (कौमे) आद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से दूरी हुई आद को जो कि हूद की कौम थी। (60) ♦

1. नुबुव्वत को सही ठहराने वाली दलील मौजूद है और नुबुव्वत के सही होने में रुकावट यानी खुद-ग़रज़ी है ही नहीं, फिर नुबुव्वत में शुब्हा करने की क्या वजह?
2. यानी नेक अमल करो।
3. यानी सब उसके कब्जे में हैं, उसके हुक्म के बिना कोई कान नहीं हिला सकता।
4. पस तुम भी इस सही रास्ते को इख़्तियार करो, ताकि मकबूल व करीबी हो जाओ।
5. यानी दलाइल और अहक़ाम का इनकार किया।
6. यह जो फरमाया कि आद ने रसूलों का कहना नहीं माना, हालाँकि उनके पास सिर्फ़ हूद अलैहिस्सलाम का तशरीफ़ लाना साबित है। वजह इसकी यह है कि पैग़म्बर तौहीद के मसल में सब मुत्तफ़िक़ हैं। जब हूद अलैहिस्सलाम का कहना न माना तो जितने पैग़म्बर उनसे पहले हो गुज़रे थे, बल्कि जो आइन्दा भी हुए उन सब ही की मुख़ालफ़त हुई।
7. चुनौचे दुनिया में इसका असर हलाक करने का अज़ाब था और आख़िरत में हमेशा का अज़ाब होगा।

और हमने समूद के पास उनके भाई सालेह को (पैगम्बर बनाकर) भेजा, उन्होंने फरमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। उसने तुमको ज़मीन (के माद्रे) से पैदा किया और उसने तुमको इसमें आबाद किया, तो तुम अपने गुनाह उससे माफ़ कराओ (यानी ईमान लाओ) फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह रहो, बेशक मेरा रब करीब है, कबूल करने वाला है। (61) वे लोग कहने लगे कि ऐ सालेह! तुम तो इससे पहले हममें होनहार थे, क्या तुम हमको उन चीज़ों की इबादत से मना करते हो जिनकी इबादत हमारे बड़े करते आए हैं, और जिस (दीन) की तरफ़ तुम हमको बुला रहे हो वाकई हम तो उसकी तरफ़ से बड़े शुब्हा में हैं। जिसने हमको फ़िक्क में डाल रखा है। (62) आपने फरमाया, ऐ मेरी कौम! (भला) यह तो बताओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से रहमत (यानी नुबुव्वत) अता फरमाई हो, सो अगर मैं उसका कहना न मानूँ तो फिर मुझको खुदा से कौन बचा लेगा, तुम तो सरासर मेरा नुक़सान ही कर रहे हो।¹ (63) और ऐ मेरी कौम! (तुम जो मोजिज़ा चाहते थे, सो) यह ऊँटनी है अल्लाह की जो तुम्हारे लिए दलील है। सो इसको छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाती फिरा करे, और इसको बुराई के साथ हाथ भी मत लगाना, कभी तुमको फ़ौरी अज़ाब आ पकड़े। (64) सो उन्होंने उसको मार डाला, तो (सालेह अलैहि. ने) फरमाया कि तुम अपने घरों में तीन दिन और बसर कर लो। और यह ऐसा वायदा है जिसमें ज़रा झूठ नहीं। (65) सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने सालेह को और जो उनके साथ ईमान वाले थे उनको अपनी इनायत से बचा लिया। और उस दिन की बड़ी रुस्वाई से (बचा लिया), बेशक आपका रब ही बड़ी कुव्वत वाला, ग़ल्बे वाला है।² (66) और उन ज़ालिमों को एक नारा “यानी जोर की चीख़” ने आ दबाया,³ जिससे वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए, जैसे कभी उन घरों में बसे ही न थे। (67) ख़ूब सुन लो समूद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, ख़ूब सुन लो रहमत से समूद को दूरी हुई। (68) ♦

और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) इब्राहीम के पास खुशख़बरी लेकर आए और उन्होंने सलाम किया। उन्होंने

1. यानी अगर खुदा न करे कबूल कर लूँ तो सिवाय नुक़सान के और क्या हाथ आए।
2. जिसको चाहे सज़ा दे, जिसको चाहे बचा ले।
3. वह जिबराईल अलैहिस्सलाम की आवाज़ थी।

व ल-कद् जाअत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुशरा कालू सलामन्, का-ल सलामुन्
 फमा लबि-स अन् जा-अ बिअिजिल्न हनीज (69) फ-लम्मा रआ ऐदि-यहुम् ला तसिलु
 इलैहि नकि-रहुम् व औज-स मिन्हुम् खीफ-तन्, कालू ला तखफ् इन्ना उर्सिल्ना इला कौमि
 लूत (70) वम्-अतुहू काइ-मतुन् फ-जहिकत् फ-बशशरनाहा बि-इस्हा-क व मिंव्वरा-इ
 इस्हा-क यअकूब (71) कालत् या
 वैलता अ-अलिदु व अ-न अजुजुव्-व
 हाजा बअली शैखन्, इन्-न हाजा
 लशैउन् अजीब (72) कालू
 अतअजबी-न मिन् अम्रिल्लाहि
 रहमतुल्लाहि व ब-रकातुहू अलैकुम्
 अह्ललबैति, इन्नहू हमीदुम्-मजीद (73)
 फ-लम्मा ज-ह-ब अन् इब्राहीमर्-रौअु
 व जाअतुल्-बुशरा युजादिलुना फी कौमि
 लूत (74) इन्-न इब्राही-म ल-हलीमुन्
 अव्वाहुम् मुनीब (75) या इब्राहीमु
 अअरिज् अन् हाजा इन्नहू कद् जा-अ
 अम्रु रब्बि-क व इन्नहुम् आतीहिम्
 अजाबुन् गैरु मरदूद (76) व लम्मा
 जाअत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व
 जा-क बिहिम् जर्अव्-व का-ल हाजा
 यौमुन् असीब (77) व जा-अहू कौमुहू युहरअू-न इलैहि, व मिन् कब्लु कानू यअमलूनस्-
 सय्यिआति, का-ल या कौमि हा-उला-इ बनाती हुन्-न अत्हरु लकुम् फत्कुल्ला-ह व ला
 तुख्जूनि फी जैफी, अलै-स मिन्कुम् रजुलुरशीद (78) कालू ल-कद् अलिम्-त मा लना फी
 बनाति-क मिन् हक्किन् व इन्न-क ल-तअलमु मा नुरीद (79) का-ल लौ अन्-न ली
 बिकुम् कुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन् शदीद (80) कालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि-क

حَنِيبٌ ۝ فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَّرَهُمْ ۖ وَوَجَسَ
 مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَحْزَنْ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ۖ وَامْرَأَتُهُ
 قَالِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ۖ
 قَالَتْ يُوْثِقُ لِي ٱلْأَيْدِىَ وَأَنَا عَجُوزٌ ۖ وَهَٰذَا بَعْلِي شَيْخٌ ۚ إِنَّ هَٰذَا
 لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ قَالُوا ٱلْعَجَبِينَ مِنْ أَمْرِ ٱللَّهِ رَحِمَتُ ٱللَّهِ وَ
 بَرَكَتُهُ عَلَيْنَا ۖ أَهْلَ ٱلْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مُّجِيدٌ ۖ فَلَمَّا ذَهَبَ
 عَنْ إِبْرَاهِيمَ ٱلرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ ٱلْبَشْرَىٰ بَيَّأُولُنَا فِي قَوْمِ
 لُوطٍ ۖ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُّنِيبٌ ۖ يَا إِبْرَاهِيمُ ٱعْرِضْ
 عَنْ هَٰذَا إِنَّهُ قَدْ جَآءَ أَمْرٌ رَّبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ لَيُؤْمِنُونَكَ
 غَيْرَ مُرَدِّدٍ ۖ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطَآ يَوْمَ ذُنُوبِهِمْ ۖ وَضَاقَ
 بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۖ وَجَآءَهُ قَوْمُهُ مُعْجَمُونَ
 إِلَيْهِ ۖ وَمِنْ قَبْلِ كَآثَرُ ٱلَّذِينَ ٱلنَّجَآتِ ۖ قَالَ يَبْقَوُ ٱهْلَ ٱلْكَافَّةِ
 لِيَآئِي هُنَّ ٱظْهَرُ لَكُمْ فَٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنَ فِي ضَعْفِي ۖ
 أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيدٌ ۖ قَالُوا ٱلْقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي
 بَنِيكَ مِنْ حَقٍّ ۖ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۖ قَالَ لَوَ ٱنْزِلْنِي
 قُوَّةً أَوْ آوِنِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ۖ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ

مَكَّة

(यानी इब्राहीम ने) भी सलाम किया, फिर देर नहीं लगाई कि एक तला हुआ बछड़ा लाए। (69) सो जब उन्होंने (यानी इब्राहीम ने) देखा कि उनके हाथ उस (खाने) तक नहीं बढ़ते तो उनसे घबराहट महसूस की, और उनसे दिल में डर गए। वे (फरिश्ते) कहने लगे डरो मत, हम कौमे लूत की तरफ भेजे गए हैं।¹ (70) और उनकी (यानी इब्राहीम की) बीवी खड़ी थी, पस हँसी। सो हमने उनको इसहाक की खुशखबरी दी, और इसहाक के बाद याकूब की। (71) कहने लगी कि हाय खाक पड़े, अब मैं बुढ़िया होकर बच्चा जन्मूँगी, और यह मेरे मियाँ हैं बिलकुल बूढ़े, वाकई यह भी अजीब बात है। (72) (फरिश्तों ने) कहा, क्या तुम खुदा के कामों में ताज्जुब करती हो, और (खास कर) इस खानदान के लोगो! तुम पर तो अल्लाह तआला की (खास) रहमत और उसकी बरकतें हैं, बेशक वह तारीफ के लायक, बड़ी शान वाला है।² (73) फिर जब इब्राहीम का वह खौफ खत्म हो गया और उनको खुशी की ख़बर मिली तो हमसे लूत की कौम के बारे में झगड़ा करना शुरू किया।³ (74) वाकई इब्राहीम बड़े बर्दाश्त करने वाले और नर्म दिल वाले थे। (75) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो, तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुँचा है, और उनपर ज़रूर ऐसा अज़ाब आने वाला है जो किसी तरह हटने वाला नहीं। (76) और जब हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) लूत के पास आए तो वह (यानी लूत अलैहिस्सलाम) उनकी वजह से ग़मगीन हुए और उनके आने के सबब तंगदिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बहुत भारी है। (77) और उनकी कौम उनके पास दौड़ी हुई आई, और वे पहले से नामाकूल हरकतें किया ही करते थे। वह (यानी लूत) फरमाने लगे कि ऐ मेरी कौम! ये मेरी (बहू) बेटियाँ (जो तुम्हारे घरों में मौजूद) हैं,⁴ वे तुम्हारे लिए (अच्छी)-खासी हैं, सो अल्लाह तआला से डरो और मेरे मेहमानों में मुझको रुखा और फज़ीहत मत करो। क्या तुममें कोई भी (माकूल आदमी और) भला मानस नहीं? (78) वे लोग कहने लगे कि आपको तो मालूम है कि हमको आपकी (बहू) बेटियों की ज़रूरत नहीं,⁵ और आपको तो मालूम है जो हमारा मतलब है। (79) वह (यानी लूत) फरमाने लगे, क्या ख़ूब होता अगर मेरा तुमपर कुछ ज़ोर चलता, या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह पकड़ता। (80) वे (फरिश्ते) कहने लगे कि ऐ लूत! हम तो आपके रब के

1. ताकि उनको कुफ़्र की सज़ा में हलाक करें।
2. वह बड़े से बड़ा काम कर सकता है। पस बजाय ताज्जुब के उसकी तारीफ़ और शुक्र में मशगूल हो।
3. सिफ़ारिश जो बहुत ज़्यादा इसरार और देखने में झगड़ा थी, और यह गुप्तगू फरिश्तों से हुई थी, मगर मकसूद हक़ तआला से अर्ज़ करना था। इसलिए 'युजादिलुना' 'यानी हमसे झगड़ा करना शुरू किया,' फरमाया।
4. 'मेरी बेटियों' से मजाज़न उम्मत की औरतें मुराद हैं, क्योंकि नबी उम्मत के लिए बाप की जगह होता है, और हकीकी मायने इसलिए मुराद नहीं हो सकते कि आपकी दो या तीन बेटियाँ थीं, सो किस-किस से उनका निकाह कर देते, वे तो सारे इसी बीमारी में मुब्तला थे।
5. क्योंकि औरतों से हमें दिलचस्पी ही नहीं।

लंय्यसिलू इलै-क फ-अस्सि बिअह्लि-क बिकित्त्रिअम्-मिनल्लैलि व ला यल्लफित् मिन्कुम्
अ-हदुन् इल्लमूर-अ-त-क, इन्हू मुसीबुहा मा असाबहुम्, इन्-न मौअि-दहुमुस्सुब्हु,
अलैसस्-सुब्हु बि-करीब (81) फ-लम्मा जा-अ अम्रुना जअल्ला आलि-यहा साफि-लहा
व अम्तरना अलैहा हिजा-रतम् मिन् सिज्जीलिम्-मन्जूद (82) मुसव्व-मतन् अिन्-द
रब्बि-क, व मा हि-य मिनज्जालिमी-न
बि-बअीद ● (83) ♦

व इला मद्य-न अखाहुम् शुअैबन्,
का-ल या कौमिअबुदुल्ला-ह मा लकुम्
मिन् इलाहिन् गैरुहू, व ला तन्कुसुल्-
मिक्या-ल वल्मीजा-न इन्नी अराकुम्
बिखैरिन्- व इन्नी अखाफु अलैकुम्
अजा-ब यौमिम्-मुहीत (84) व या
कौमि औफुल्-मिक्या-ल वल्मीजा-न
बिल्-किस्ति व ला तब्खासुन्ना-स
अश्या-अहुम् व ला तअ्सौ फिल्अर्जि
मुफिसदीन (85) बकि य्यतुल्लाहि
खैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनी-न, व
मा अ-न अलैकुम् बि-हफीज (86)

कालू या शुअैबु अ-सलातु-क
तअ्मुरु-क अन् नतूरु-क मा यअ्बुदु
आबाउना औ अन्-नफअ-ल फी

अम्वालिना मा नशा-उ, इन्न-क ल-अन्तल् हलीमूर्शीद (87) का-ल या कौमि अ-रएेतुम्
इन् कुन्तु अला बय्यि-नतिम् मिरब्बी व र-ज-कनी मिन्हु रिज्कन् ह-सनन्, व मा उरीदु अन्
उखालि-फकुम् इला मा अन्हाकुम् अन्हु, इन् उरीदु इल्लल्-इस्ला-ह मस्त-तअ्तु, व मा
तौफीकी इल्ला बिल्लाहि, अलैहि तवक्कल्लु व इलैहि उनीब (88) व या कौमि ला

لَنْ يَصْلُوا إِلَيْكَ فَأَنْتَ بِأَهْلِكَ بِقِطْعَةٍ مِنَ الْيَلِّ وَلَا يُلْقِفُكَ مِنْهُمْ
أَحَدٌ إِلَّا أَمْرًا تَأْكُ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ
الضُّبْحُ أَلَيْسَ الضُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۖ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا لَهَا
سَاقِلَهَا وَآمَطَرْنَا عَلَيْهَا جَارًا مِنَ سَيْحِلٍ فَتَنُودُ مُتَوَدِّعًا
عِنْدَ رَتِّكَ وَمَا مِنْ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ۖ وَإِلَىٰ مَذِينِ أَخَاهُمْ
شُعَيْبٌ ۖ قَالَ يَقُومُوا عِبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ الْعِذَّةِ وَلَا تَقْصُوا
الْهَيْكَالَ وَالْبَيْتَانَ إِنِّي أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۖ وَيَقُومُوا أَوْفُوا الْهَيْكَالَ وَالْبَيْتَانَ بِالْقِطْعِ
وَلَا تَبْسُتُوا النَّاسَ أَشْيَاءَ لَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ
بِعَيْتِ اللَّهِ خَيْرَ كُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ
بِحَفِظٍ ۖ قَالُوا يَشُعَيْبُ أَصْلُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ تَتْرَكَ مَا يَعْبُدُ
أَبَاؤُنَا أَوْ أَنْ تَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ
الرَّشِيدُ ۖ قَالَ يَقُومُوا أَرَأَيْتُمْ إِن كُنْتُ عَلَىٰ بَيْتَةٍ مِنْ عَمْرِي
وَرَأَيْتُمْنِي مِنْهُ رَافِعًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَخَالِفَكُمْ عَلَىٰ مَا
أَنْهَكُمْ عَنْهُ إِن أُرِيدُ إِلَّا الْإِسْلَامَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي
إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۖ وَيَقُومُوا لَا يَجْعَلْ مِنْكُمْ

भेजे हुए (फ़रिश्ते) हैं, आप तक हरगिज़ उनकी रसाई न होगी, सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चलिए, और तुममें से कोई (पीछे) फिरकर भी न देखे, (हाँ) मगर आपकी बीवी (न जाएगी) उसपर भी वही (आफ़त) आने वाली है जो और लोगों पर आएगी। उनके वायदे का वक़्त सुबह (का वक़्त) है, क्या सुबह (का वक़्त) करीब नहीं। (81) सो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उस ज़मीन (को उलटकर उस) का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया (और नीचे का ऊपर) और उस ज़मीन पर खंगर के पत्थर (झाँवे) “यानी जली हुई ईंटों के टुकड़े” बरसाना शुरू किए (जो) लगातार (गिर रहे थे), (82) जिनपर आपके रब के पास का ख़ास निशान भी था।¹ और ये (बस्तियाँ) उन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं हैं। ● (83) ♦

और हमने मद्‌यन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और तुम नाप और तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको फ़राग़त की हालत में देखता हूँ² और मुझको तुमपर ऐसे दिन के अज़ाब का अन्देशा है जो (किस्म-किस्म की मुसीबतों) का जामे होगा। (84) और ऐ मेरी कौम! तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो इन्साफ़ से, और लोगो का उनकी चीज़ों में नुक़सान मत किया करो, और ज़मीन में फ़साद करते हुए हृद से नहीं निकलो। (85) अल्लाह का दिया हुआ जो कुछ बच जाए वह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है,³ अगर तुमको यकीन आए, और मैं तुम्हारा पहरा देने वाला तो हूँ नहीं। (86) वे कहने लगे कि ऐ शुऐब! क्या तुम्हारी पाकबाज़ी तुमको तालीम कर रही है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी परस्तिश “यानी पूजा और इबादत” हमारे बड़े करते आए हैं या (इस बात को छोड़ दें कि) हम अपने माल में जो चाहें तसर्फ़ करें। वाकई आप हैं बड़े अक्लमन्द, दीन पर चलने वाले।⁴ (87) शुऐब ने फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! भला यह बताओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूँ और उसने मुझको अपनी तरफ़ से एक उम्दा दौलत (यानी नुबुव्वत) दी हो, (तो फिर कैसे तब्तीग़ न करूँ) और मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे बरख़िलाफ़ उन कामों को करूँ जिनसे मैं तुमको मना करता हूँ,⁵ मैं तो इस्लाह “यानी सुधार” चाहता हूँ जहाँ तक मेरे बस में है, और मुझको जो कुछ तौफ़ीक़ हो जाती है सिर्फ़ अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मैं भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ़ रज़ू करता हूँ।⁶ (88) और ऐ मेरी कौम! मेरी ज़िद “और मुख़ालफ़त” तुम्हारे लिए इसका सबब न हो

1. कन्करियों को जो ख़ास कहा सो दुरें मन्सूर में रिवायतें हैं जिनसे मालूम होता है कि उनपर कुछ ख़ास रंग और शक़ल के नक्श बने थे जो दुनिया के पत्थरों में नहीं देखे जाते।
2. फिर तुमको नाप-तौल में कमी करने की क्या ज़रूरत पड़ी है, अगरचे हकीकत में तो किसी को भी ज़रूरत नहीं होती।
3. क्योंकि हराम में बरकत नहीं अगरचे वह ज्यादा हो, और उसका अन्जाम जहन्नम है। और हलाल में बरकत होती है अगरचे वह कम हो। और उसका अन्जाम अल्लाह की रिज़ा है।
4. यानी जिन बातों से हमको मना करते हो उनमें कोई बुराई नहीं। हलीम व रशीद यानी बड़े अक्लमन्द और दीन पर चलने वाले मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर कहा, जैसे बद-दीनों की आदत होती है दीनदारों के साथ छेड़ख़ानी करने की।
5. ‘बरख़िलाफ़’ से यही मुराद है कि तुमको और राह बतलाऊँ और खुद दूसरी राह पर चलूँ। मतलब यह है कि मेरी नसीहत महज़ ख़ैरख़्वाही व दिली दर्द के साथ है, जिसकी दलील यह है कि मैं तुमको वही बतलाता हूँ जो मैं अपनी ज़ात के लिये भी पसन्द करता हूँ।
6. खुलासा यह कि तौहीद व अदल के वाजिब होने पर दलाइल भी कायम और अल्लाह के हुक्म से उसकी तब्तीग़, और नसीहत करने वाला भी ऐसा हमदर्द और सुधारक, फिर भी नहीं मानते बल्कि उल्टी मुझसे उम्मीद रखते हो कि मैं कहना छोड़ दूँ। और चूँकि इस तद्क़ीर में दिलसोज़ी और सुधार की अपनी तरफ़ निस्वत है इसलिए ‘व मा तौफ़ीकी.....’ फ़रमा दिया।

यजिरमन्नकुम् शिकाकी अंय्युसी-बकुम् मिस्तु मा असा-ब कौ-म नूहिन् औ कौ-म हूदिन् औ कौ-म सालिहिन्, व मा कौमु लूतिम्-मिन्कुम् बि-बअीद (89) वस्तगिफिरु रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि, इन्-न रब्बी रहीमुंब्बदूद (90) कालू या शुअैबु मा नफ़्कहु कसीरम्-मिम्मा तकूलु व इन्ना ल-नरा-क फीना जअीफन्, व लौ ला रस्तु-क ल-रजम्ना-क व मा अन्-त अलैना बि-अजीज (91) का-ल या कौमि अ-रस्ती अ-अज्जु अलैकुम् मिनल्लाहि, वत्तखप्तुमूह वरा-अकुम् जिहिरय्यन्, इन्-न रब्बी बिमा तअ्मलू-न मुहीत (92) व या कौमिअ-मलू अला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन्, सौ-फ तअ्मलू-न मय्यअ्तीहि अज़ाबुंय्युख्जीहि व मन् हु-व काजिबुन्, वर्तकिबू इन्नी म-अकुम् रकीब (93) व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना शुअै बंव्-वल्लजी-न आमनू म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना व अ-खा-जतिल्-लजी-न ज-लमुस्सैहतु फ-अस्बहू फी दियारिहिम् जासिमीन (94) कअल्लम् यग्नौ फीहा, अला बुअ्दल् लिमद्-य-न कमा बअिदत् समूद (95) ❖

व ल-कद् अरसल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन (96) इला फिरऔ-न व म-लइही फत्तबअ् अम्-र फिरऔ-न व मा अम्र फिरऔ-न बि-रशीद (97) यक्दुम् कौमहू यौमल्-कियामति फऔ-र-दहुमुन्ना-र, व बिअ्सल् विरदुल्-मौरुद (98) व उत्बिअ् फी हाजिही लअ्-नतंव्-व यौमल्-कियामति, बिअ्सरिफ़दुल् मरफ़ूद (99) ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्कुरा नकुस्सुहू अलै-क मिन्हा काइमुंब्-व हसीद (100) व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् ज-लमू अन्फु-सहुम् फमा

وَمِنْ قَائِلِهِ ١٢
شَقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ
أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِنْكُمْ بِبَعِيدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ
ثُمَّ تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝ قَالُوا يَتَّبِعُ مَا نَفَقَهُ
كَبِيرٌ إِنَّمَا يَقُولُ وَإِنَّكَ لَمِنَ الضَّالِّينَ وَلَوْ لَا رَهْطُكَ
لَرَجَمْنَاكَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بَعِيدٌ ۝ قَالَ يَقَوْمِ أَهْطِ اعْرِضْ عَلَيْكُمْ
مِنْ اللَّهِ وَاتَّخِذُوا ثَمَرَهُمْ وَأَرَأَيْكُمْ ظَهَرَ يَا إِيَّاهُ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ فُحِطٌ ۝
وَيَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ
يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ
رَقِيبٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا لَمَجْنُونًا شُعْبًا وَالَّذِينَ اسْتَوَاعَهُ بِرَحْمَةٍ
مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْغَةَ فَاصْبِرُوا فِي دِيَارِهِمْ
جُثَيْنٍ ۝ كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا الْأَبْعَدُ الْبَعْدُ الَّذِينَ كَمَا بَعْدَتْ
ثَمُودٌ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى بَالِيْنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝ إِلَى
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبِعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ
بِرَشِيدٍ ۝ يَوْمَ قُوتِهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَيُحْسِنُ
الْوَرْدَ الْمَوْزُودَ ۝ وَاتَّبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةُ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يُسْ
الرَّفْدُ الْمَرْفُودُ ۝ ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْهَا

مَرْكَ

जाए कि तुमपर भी उसी तरह की मुसीबतें आ पड़ें जैसी नूह की कौम, या हूद की कौम, या सालेह की कौम पर आ पड़ी थीं, और लूत की कौम तो (अभी) तुमसे (बहुत) दूर (ज़माने में) नहीं (हुई)। (89) और तुम अपने रब से अपने गुनाह माफ़ कराओ फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो, बिला शुब्हा मेरा रब बड़ा मेहरबान (और) बड़ी मुहब्बत वाला है। (90) वे लोग कहने लगे कि ऐ शुऐब! बहुत-सी बातें तुम्हारी कही हुई हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तुमको अपने में कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर तुम्हारे ख़ानदान का पास न होता तो हम तुमको संगसार “यानी पत्थरों से मार-मारकर हलाक” कर चुके होते। और हमारी नज़र में तो तुम्हारी कुछ इज्ज़त व क़द्र ही नहीं।¹ (91) (शुऐब अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ऐ मेरी कौम! क्या मेरा ख़ानदान तुम्हारे नज़दीक अल्लाह से भी ज़्यादा इज्ज़त वाला है। और उसको तुमने पीठ पीछे डाल दिया, यकीनन मेरा रब तुम्हारे सब आपाल को घेरे में लिए हुए है। (92) और ऐ मेरी कौम! तुम अपनी हालत पर अमल करते रहो, मैं भी (अपने तौर पर) अमल कर रहा हूँ। अब जल्द ही तुमको मालूम हुआ जाता है कि वह कौन शख्स है जिसपर अज़ाब आया चाहता है, जो उसको रुस्वा कर देगा। और वह कौन शख्स है जो झूठा था, और तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।² (93) और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने शुऐब को और जो उनके साथ में ईमान वाले थे, उनको अपनी इनायत सेहत बचा लिया। और उन ज़ालिमों को एक सख़्त आवाज़ ने आ पकड़ा, सो अपने घरों के अन्दर औंधे गिरे रह गए (और मर गए)। (94) जैसे उन घरों में बसे ही न थे। ख़ूब सुन लो कि मद्यन को रहमत से दूरी हुई जैसा कि समूद रहमत से दूर हुए थे। (95) ♦

और हमने मूसा को अपने मोजिज़े और रोशन दलील देकर³ (96) फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा। सो वे लोग फिरऔन की राय पर चलते रहे, और फिरऔन की राय कुछ सही न थी। (97) वह कियामत के दिन अपनी कौम के आगे-आगे होगा, फिर उनको दोज़ख़ में जा उतारेगा, और वह उतरने की बहुत ही बुरी जगह है, जिसमें ये लोग उतारे जाएँगे। (98) और इस (दुनिया) में भी लानत उनके साथ-साथ रही और कियामत के दिन भी,⁴ बुरा इनाम है जो उनको दिया गया। (99) ये (तबाहशुदा) बस्तियों के बाज़ हालात थे, जिनको हम आपसे बयान करते हैं, (सो) बाज़ (बस्तियाँ) तो उनमें (अब भी) कायम हैं,⁵ और बाज़ का बिलकुल ख़ात्मा हो गया। (100) और हमने उनपर जुल्म नहीं किया लेकिन उन्होंने खुद ही अपने ऊपर

1. मतलब उनका यह था कि तुम हमको ये मज़ामीन मत सुनाओ, वरना तुम्हारी जान का ख़तरा है।
2. यानी तुम नुबुव्वत की दावत में मुझको झूठा कहते हो और हकीर समझते हो, तो अब मालूम हो जाएगा कि झूठ के जुर्म का करने वाला और ज़िल्लत की सज़ा का हक़दार कौन था, तुम या मैं। देखें अज़ाब पड़ता है जैसा कि मैं कहता हूँ या अज़ाब नहीं होता जैसा कि तुम्हारा गुमान है।
3. ‘रोशन दलील’ से मुराद या तो लाठी और चमकता हुआ हाथ है, जो उन नौ निशानियों में से हैं जो नवें पारे के पहले चौथाई पर ज़िक्र हुई हैं कि ये बड़ी हैं और या मूसा अलैहिस्सलाम की असरदार तक़रीर है जो आपने तौहीद से मुताल्लिक़ फिरऔन के सामने फ़रमाई।
4. चुनौचे यहाँ क़हर से गर्क हुए और वहाँ दोज़ख़ नसीब होगी।
5. जैसे मिस्र कि फिरऔनियों के हलाक करने के बाद आबाद रहा।

अग्नत् अन्हुम् आलि-हतुहुमुल्लती यद्अ-न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल्-लम्मा जा-अ अम्रु
 रब्बि-क, व मा जादूहुम् गै-र तत्बीब (101) व कज़ालि-क अख़ज़ु रब्बि-क इज़ा
 अ-खज़ल्-कुरा व हि-य ज़ालि-मतुन्, इन्-न अख़ज़हू अलीमुन् शदीद (102) इन्-न फी
 ज़ालि-क लआयतल् लिमन् खा-फ अज़ाबल्-आख़िरति, ज़ालि-क यौमुम्-मज्मूअुल्-लहुन्नासु
 व ज़ालि-क यौमुम्-मशहूद (103) व मा
 नु-अख़िख़ारुहू इल्ला लि-अ-जलिम्
 मअ़दूद (104) यौ-म यअ़ति ला
 तकल्लमु नफ़सुन् इल्ला बि-इज़िनीही
 फ-मिन्हुम् शकियुव्-व सअ़ीद (105)
 फ-अम्मल्लज़ी-न शकू फ़फ़िन्नारि लहुम्
 फीहा ज़फ़ीरुव्-व शहीक (106)
 ख़ालिदी-न फीहा मा दामतिस्समावातु
 वल्अरज़ु इल्ला मा शा-अ रब्बु-क,
 इन्-न रब्ब-क फ़अ़ालुल्लिमा युरीद
 (107) व अम्मल्लज़ी-न सुअ़िदू
 फ़फ़िल्-जन्नति ख़ालिदी-न फीहा मा
 दामतिस्समावातु वल्अरज़ु इल्ला मा
 शा-अ रब्बु-क, अताअन् गै-र मज़ज़
 (108) फ़ला तकु फी मिर्यतिम् मिम्मा
 यअ़बुदु हा-उला-इ मा यअ़बुदू-न इल्ला
 कमा यअ़बुदु आबाउहुम् मिन् कब्बु, व
 इन्ना लमुवफ़हूम् नसीबहुम् गै-र मन्कूस (109) ♦

وَمِنْ دَابَّةٍ ۚ
 قَالِمٌ وَحَصِيدٌ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا
 أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
 شَيْءٍ لَتَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتَنَبَّيْ ۖ وَكَذَلِكَ
 أَخَذَ رَبُّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخَذَهُ أَلْسِمُ
 شَدِيدٌ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۚ ذَلِكَ
 يَوْمُ مَجْمُوعٍ لِّلنَّاسِ ۚ وَذَلِكَ يَوْمُ مَشْهُودٍ ۚ وَمَا تُؤْخَرُونَ إِلَّا
 لِأَجَلٍ مُّعَدٍّ ۚ وَيَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ فَمِنْهُمْ
 شَقِيقٌ وَسُوءِدٌ ۚ فَأَمَّا الْبَاقِينَ فَشَقِوْا فِي النَّارِ ۚ فَمِنْهُمْ مُّسْتَفِيزٌ
 وَشَهِيقٌ ۚ خَلِيدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ ۚ إِلَّا
 مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ سُودُوا
 فِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ ۚ إِلَّا
 مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ عَطَاءٌ غَيْرُ مَجْدُوذٍ ۚ فَلَا تَكُ فِي مَرِيَّةٍ مُّتَبَدِّلِ
 هَؤُلَاءِ مَا يَعْبدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِنَّا
 لَنُوفُونَهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوصٍ ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ
 فَأَخْتَلَفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ
 وَاللَّهُمَّ لَعْنَى شَيْءٍ مِنْهُ مُرِيبٌ ۚ وَإِنَّ كَلَامَنَا لَيُوقِيهِمْ رَبُّكَ

जुल्म किया। सो उनके वे माबूद जिनको वे अल्लाह के अलावा पूजते थे उनको कुछ फायदा न पहुँचा सके, जब आपके रब का हुक्म आ पहुँचा, और उल्टा उनको नुकसान पहुँचाया।¹ (101) और आपके रब की पकड़ ऐसी ही है, जब वह किसी बस्ती पर पकड़ करता है जबकि वे जुल्म किया करते हों। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक (और) सख्त है।² (102) इन (वाकिआत) में उस शख्स के लिए बड़ी इबरत है जो आखिरत के अज़ाब से डरता हो।³ वह ऐसा दिन होगा कि उसमें तमाम आदमी जमा किए जाएँगे, और वह (सबकी) हाज़िरी का दिन है। (103) और हम उसको सिर्फ़ थोड़ी मुद्दत के लिए मुलतवी किए हुए हैं। (104) जिस वक़्त वह दिन आएगा, कोई शख्स बिना उसकी (यानी खुदा की) इजाज़त के बात तक न कर सकेगा। फिर उनमें बाज़े तो शकी “बदबख्त” होंगे और बाज़े सईद “यानी नेकबख्त” होंगे। (105) सो जो लोग शकी हैं वे तो दोज़ख में (ऐसे हाल से) होंगे कि उसमें उनकी चीख़-पुकार पड़ी रहेगी। (106) और हमेशा-हमेशा को उसमें रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन कायम हैं,⁴ हाँ अगर उसके रब ही को (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है) आपका रब जो कुछ चाहे उसको पूरा कर सकता है।⁵ (107) और रह गए वे लोग जो सईद हैं, सो वे जन्नत में होंगे और वे उसमें हमेशा-हमेशा को रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन कायम हैं। हाँ अगर आपके रबको (निकालना) मन्ज़ूर हो (तो दूसरी बात है)⁶ वह ख़त्म न होने वाला अतिया होगा। (108) सो जिस चीज़ की ये पूजा करते हैं उसके बारे में ज़रा शुब्हा न करना,⁷ ये लोग भी उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप-दादा इबादत करते थे। और हम यकीनन उनका (अज़ाब का) हिस्सा उनको (क़ियामत के दिन) पूरा-पूरा बिना किसी कमी के पहुँचा देंगे। (109) ♦

और हमने मूसा को किताब दी थी, सो उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया,⁸ और अगर एक बात न होती जो आपके रब की तरफ़ से पहले मुक़रर हो चुकी है तो उनका फैसला हो चुका होता, और ये लोग उसकी तरफ़ से ऐसे शक में हैं जिसने उनको तरद्दुद “यानी असमंजस” में डाल रखा है। (110) और यकीनन

1. यानी नुकसान के सबब हुए कि उनकी पूजा की बदौलत सज़ा पाई।
2. उससे सख्त तकलीफ़ पहुँचती है और उससे बच नहीं सकता।
3. सबक लेने की वजह जाहिर है कि जब दुनिया का अज़ाब ऐसा सख्त है, हालाँकि यह बदला मिलने की जगह नहीं, तो आखिरत का कैसा सख्त अज़ाब होगा जो कि बदला मिलने की जगह है।
4. यह मुहावरा है हमेशा रहने के लिए।
5. मगर बावजूद कुदरत के यह यकीनी बात है कि खुदा कभी यह बात न चाहेगा, पस निकलना भी नसीब न होगा।
6. मगर यह यकीनी है कि खुदा यह बात कभी न चाहेगा, पस उनके निकलने का भी कोई एहतिमाल और गुन्जाइश नहीं।
7. बल्कि यकीन रखना कि उनका यह अमल सज़ा को वाजिब करने वाला है, उसके बातिल होने की वजह से।
8. किसी ने माना किसी ने न माना, यह कोई आपके लिए नई बात नहीं हुई। पस आप ग़मगीन न हों।

सब-के-सब ऐसे ही हैं कि आपका रब उनको उनके आमाल का पूरा-पूरा हिस्सा देगा, वह यकीनन उनके आमाल की पूरी-पूरी ख़बर रखता है। (111) तो आप जिस तरह कि आपको हुक्म हुआ है मुस्तकीम रहिए, “यानी सही रास्ते पर कायम रहिए” और वे लोग भी जो (कुफ़्र से) तौबा करके आपके साथ में हैं, और दायरे से ज़रा मत निकलो, यकीनी तौर पर वह तुम सब के आमाल को ख़ूब देखता है। (112) और उन ज़ालिमों की तरफ़ मत झुको, कभी तुमको दोज़ख़ की आग़ लग जाए और खुदा के सिवा कोई तुम्हारा साथ देने वाला न हो, फिर हिमायत तो तुम्हारी ज़रा भी न हो। (113) और आप नमाज़ की पाबन्दी रखिए, दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्सों में।¹ बेशक नेक काम मिटा देते हैं बुरे कामों को, यह बात एक नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिए। (114) और सब्र किया कीजिए कि अल्लाह तआला नेक काम करने वालों का अन्न ज़ाया नहीं करते। (115) जो उम्मतें तुमसे पहले हो गुज़री हैं उनमें ऐसे समझदार लोग न हुए जो कि (दूसरों को) मुल्क में फ़साद (यानी कुफ़्र व शिर्क) फैलाने से मना करते, सिवाय चन्द आदमियों के कि जिनको उनमें से हमने (अज़ाब से) बचा लिया था।² और जो लोग नाफ़रमान थे वे नाज़ व नेमत में थे, उसी के पीछे पड़े रहे और अपराधों के आदी हो गए।³ (116) और आपका रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को कुफ़्र के सबब हलाक कर दे और उनके रहने वाले सुधार में लगे हों। (117) और अगर आपके रब को मन्ज़ूर होता तो सब आदमियों को एक ही तरीक़े का (यानी सब को मोमिन) बना देते, और (आगे भी) हमेशा इख़िलाफ़ करते रहेंगे, (118) मगर जिसपर आपके रब की रहमत हो। और (इस इख़िलाफ़ का ग़म न कीजिए, क्योंकि) उसने (यानी अल्लाह तआला ने) लोगों को इसी वास्ते पैदा किया है, और आपके रब की (यह) बात पूरी होगी कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इनसानों दोनों से भर दूँगा।⁴ (119) और पैग़म्बरों के किस्सों में से हम ये सारे किस्से आपसे बयान करते हैं जिनके ज़रिये से हम आपके दिल को मज़बूती देते हैं, और उन (किस्सों) में आपके पास (ऐसा मज़मून) पहुँचा है, (जो खुद भी) सही (है) और मुसलमानों के लिए नसीहत (है) और याद-दिहानी (है)।⁵ (120) और जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए कि तुम अपनी हालत पर अमल करते रहो, हम भी अमल कर रहे हैं। (121) और तुम मुन्तज़िर रहो हम भी मुन्तज़िर हैं। (122) और

1. दिन के दो सिरों से मुराद बाज़ के नज़दीक फ़ज़्र और अन्न है और बाज़ के नज़दीक इससे मुराद दिन के अब्ल व आख़िर के हिस्से हैं। अब्ल हिस्से में सुबह की नमाज़ है और आख़िर के हिस्से में जोहर और अन्न। और रात के हिस्सों से मुराद मग़रिब और इशा का वक़्त। पस एक कौल पर इस आयत में पाँचों नमाज़ें मुराद हैं और एक कौल पर सिवाय जोहर के चार नमाज़ें, और जोहर दूसरी आयत में ज़िक्र की गई है जो सूर: रूम में है: ‘व ही-न तुज़िह्रून.....’।
2. वे जैसे ख़ूद कुफ़्र व शिर्क से तौबा कर चुके थे औरों को भी मना करते रहते थे। और इन्हीं दोनों अमल की बरकत से वे अज़ाब से बच गए थे। बाकी और लोग चूँकि खुद ही कुफ़्र में मुब्तला थे और उन्होंने औरों को भी मना न किया, इसलिए उनपर अज़ाब आया।
3. मतलब का खुलासा यह कि नाफ़रमानी तो उनमें आम तौर पर रही और मना करने वाला कोई हुआ नहीं, इसलिए सब एक ही अज़ाब में मुब्तला हुए। वरना कुफ़्र का अज़ाब आम होता और फ़साद यानी ख़राबी और बिगाड़ का खास। अब मना न करने की वजह से जो फ़सादी नहीं थे वे भी उन्हें में शरीक क़ारार दिए गए। इसलिए जो अज़ाब कुफ़्र व फ़साद के मज़मूँ पर नाज़िल हुआ वह भी सबके लिए आम रहा।
4. खुद उसकी हिक्मत यह है कि जिस तरह मरहूमिन में रहमत की सिफ़्त का जुहूर हुआ, जिनपर गुज़ब किया गया उनमें गुज़ब की सिफ़्त ज़ाहिर हो। फिर उस ज़ाहिर होने की हिक्मत या उस हिक्मत की हिक्मत अल्लाह ही को मालूम है। ग़रज़ इस ज़ाहिर होने की हिक्मत से बाज़ों का जहन्नम में जाना ज़रूरी और जहन्नम में जाने के लिए काफ़िरों का वजूद तक्वीनी तौर पर ज़रूरी। और काफ़िरों के वजूद के लिए इख़िलाफ़ लाज़िम। यह वजह है सबके मुसलमान न होने की।
5. किस्सों के बयान करने का यह दूसरा फ़ायदा हुआ, एक फ़ायदा नबी के लिए, दूसरा उम्मत के लिए। फ़ायदा: हक़ ज़ाती सिफ़्त है क़ुरआन की उन आयतों की जो किस्सों पर मुशतमिल हैं, और नसीहत व याद-दिहानी उनकी इज़ाफ़ी सिफ़्तें हैं, जिनमें एक हाकिम और एक डॉट-डपट करने वाला है।

इलैहि युर्जअुल्-अम्फ कुल्लुहू फअ्बुद्हु व तवक्कल् अलैहि, व मा रब्बु-क बिगाफिलिन् अम्मा तअ्मलून (123) ❖

12 सूरतु यूसुफ 53

(मक्की) इस सूर: में अरबी के

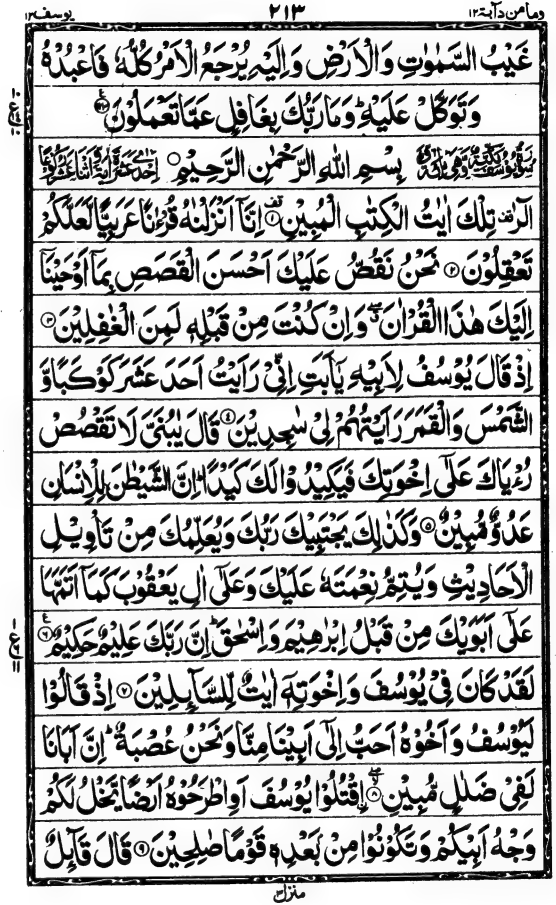
7411 अक्षर, 1808 शब्द 111

आयतें और 12 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ्-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल्-किताबिल् मुबीन (1) इन्ना अन्जल्लानाहु कुरआनन् अ-रबिय्यल् लअल्लकुम् तअ्किलून (2) नहनु नकुस्सु अलै-क अह्स-नल्-क-ससि बिमा औहैना इलै-क हाज़ल्-कुरआ-न व इन् कुन्-त मिन् कब्लिही लमिनल्-गाफिलीन (3) इज़् का-ल यूसुफु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी रऐतु अ-ह-द अ-श-र कौकब्व-वशशम्-स वल्क-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (4) का-ल या बुनय्-य ला तक्सुस् रुअ्या-क अला इखवति-क फ-यकीदू ल-क कैदन्, इन्नश्शैता-न लिल्डिन्सानि अदुव्वुम् मुबीन (5) व कज़ालि-क यज्जतबी-क रब्बु-क व युअल्लिमु-क मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि व युतिम्मु निअ्म-तहू अलै-क व अला आलि यअ्कू-ब कमा अ-तम्महा अला अ-बवै-क मिन् कब्लु इब्राही-म व इस्हा-क, इन्-न रब्ब-क अलीमुन् हकीम (6) ❖

ल-कद् का-न फी यूसु-फ व इखवतिही आयातुल् लिस्सा-इलीन (7) इज़् कालू



आसमानों और ज़मीन में जितनी गैब की बातें हैं उनका इल्म खुदा ही को है, और सब मामलात उसी की तरफ लौटाए जाएंगे। तो आप उसी की इबादत कीजिए और उसी पर भरोसा कीजिए, और आपका रब उन बातों से बेखबर नहीं जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो। (123) ♦

12 सूर: यूसुफ 53

सूर: यूसुफ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

¹अलिफ-लाम-रा। ये आयतें हैं एक वाजेह किताब की। (1) हमने उसको उतारा है कुरआन अरबी (ज़बान का) ताकि तुम समझो। (2) हमने जो यह कुरआन आपके पास भेजा है, इसके ज़रिये से हम आपसे एक बड़ा उम्दा किस्सा बयान करते हैं, और इससे पहले आप बिल्कुल बेखबर थे।² (3) (वह वक्त ज़िक्र करने के काबिल है) जब यूसुफ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा! मैंने ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद देखे हैं, उनको अपने सामने सज़्दा करते हुए देखा है। (4) उन्होंने फ़रमाया कि बेटा! अपने इस ख़्वाब को अपने भाइयों के सामने बयान मत करना, पस वे तुम्हारे लिए कोई ख़ास तदबीर करेंगे। बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। (5) और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको चुनेगा और तुमको ख़्वाबों की ताबीर का इल्म देगा, और तुमपर और याकूब के ख़ानदान पर अपना इनाम पूरा करेगा जैसा कि इससे पहले तुम्हारे दादा-परदादा (यानी) इब्राहीम और इसहाक़ पर अपना इनाम पूरा कर चुका है, वाकई तुम्हारा रब बड़ा इल्म (व) हिक्मत वाला है।³ (6) ♦

यूसुफ़ के और उनके भाइयों के किस्से में (खुदा की कुदरत और आँ-हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के) दलाइल मौजूद हैं, उन लोगों के लिए जो पूछते हैं।⁴ (7) (वह वक्त ज़िक्र करने के काबिल है) जबकि उनके भाइयों ने बातचीत की कि यूसुफ़ और उनका भाई हमारे बाप को हमसे ज़्यादा प्यारे हैं, हालाँकि हम एक जमाअत (की जमाअत) हैं, वाकई हमारे बाप खुली ग़लती में हैं।⁵ (8) या तो यूसुफ़ को क़त्ल कर डालो, या उसको किसी सरज़मीन में डाल आओ तो तुम्हारे बाप का रुख़ ख़लिस तुम्हारी तरफ़ हो जाएगा और तुम्हारे सब काम बन जाएंगे। (9) उन्हीं में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल मत करो,

1. यह सूरत तकरीबन पूरी की पूरी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के किस्से पर मुश्तमिल है और उसके शुरू करने से पहले कुरआन पाक के हक़ होने का बयान है, जिसमें वह किस्सा बयान हुआ है। और उसके ख़त्म करने से पहले अब्बल तौहीद का मज़मून और उसमें कोताही पर वर्ईद, फिर रिसालत की बहस और उसके इनकारियों का बुरा अन्जाम होने का मुख़्तसर तौर बयान, और ऐसी हिकायतों और किस्सों का इबरात का सबब होना और कुरआन का हक़ होना मज़कूर है जिसमें ये किस्से हैं और इसी पर सूर: ख़त्म है। पस सूर: का ज़्यादा हिस्सा किस्सों पर मुश्तमिल है और सूर: का कुछ हिस्सा दीन के उसूलों में है जिसमें कुम्फ़ार की मुख़ालफ़त की वजह से आपको जो ग़म था उसके ख़ात्मे और तसल्ली के लिए यह किस्सा बयान किया गया है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके भाइयों की मुख़ालफ़त से कोई नुक़सान नहीं पहुँचा, बल्कि अन्जामकार वही तरक्की का सबब हो गया। इसी तरह आपको आपकी कौम की मुख़ालफ़त नुक़सानदेह न होगी।

2. क्योंकि आपने न कोई किताब पढ़ी थी, न किसी किताब वाले से फ़ायदा हासिल किया था और अ़वाम में इस तरह सही तौर पर यह किस्सा मशहूर न था। पस इससे साबित हुआ कि यह कुरआन वद्व यानी अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल-शुदा है।

3. ये खुशख़बरीयाँ जो याकूब अलैहिस्सलाम ने दी या तो इस ख़्वाब से समझे या वद्व से।

4. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को ऐसी बेकसी और बेबसी से उस बुलन्दी और हुक्मत पर पहुँचा देना (शेष तफ़सीर पृष्ठ 426 पर)

ल-यूसुफु व अखूहु अहब्बु इला अबीना मिन्ना व नहनु अुस्वतुन्, इन्-न अबाना लफी जलालिम्-मुबीन (8) उक्तुलू यूसु-फ अवित्रहूहु अरजंय्यख्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम्-बअदिही कौमन् सालिहीन (9) का-ल काइलुम्-मिन्हुम् ला तक्तुलू यूसु-फ व अल्कूहु फी गया-बतिल्-जुब्बि यल्लकिहूहु बअजुस्सय्यारति इन् कुन्तुम् फाअिलीन (10) कालू या

अबाना मा ल-क ला तअमन्ना अला यूसु-फ व इन्ना लहू लनासिहून (11) अरसिल्हु म-अना गदंय्-यरतअ व यल्अब् व इन्ना लहू लहाफिजून (12) का-ल इन्नी ल-यहजुनुनी अन् तजहबू बिही व अखाफु अय्यअकु-लहुज्जिअबु व अन्तुम् अन्हु गाफिलून (13) कालू ल-इन् अ-क-लहुज्जिअबु व नहनु अुस्वतुन् इन्ना इजल्-लखासिरून (14) फ-लम्मा ज-हबू बिही व अजूमअ अय्यज्-अलूहु फी गया-बतिल्-जुब्बि व औहैना इलैहि लतुनब्बि-अन्नहुम् बिअम्रिहिम् हाजा व हुम् ला यशअरून (15) व जाऊ अबाहुम् अिशाय-यबूकून (16) कालू या अबाना इन्ना जहब्ना नस्तबिकु व तरक्ना यूसु-फ अिन्-द मताअिना फ-अ-क-लहुज्जिअबु व मा अन्-त बिमुअमिनिल्लना व लौ कुन्ना सादिकीन (17) व जाऊ अला

कमीसिही बि-दमिन् कजिबिन्, का-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फुसुकुम् अमरन्, फ-सब्रन् जमीलुन्, वल्लाहुल्-मुस्तआनु अला मा तसिफून (18) व जाअत् सय्यारतुन् फ-अरसलू वारि-दहुम् फ-अद्ला दल्वहू, का-ल या बुशरा हाजा गुलामुन्, व अ-सर्रहू बिजा-अतन्, वल्लाहु अलीमुम्-बिमा यअमलून (19) व शरौहु बि-स-मनिम् बखिसन् दराहि-म

وَمِنْ آيَاتِهِ ۚ
مَنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقَوْهُ فِي غِيَبَاتِ الْحُبِّ يَلْتَقِيَهُ بَعْضُ
النِّسَاءِ إِذْ كَانَ كَأَنَّ مَا كَلَّمَ لَهَا عَلَى
يُوسُفَ وَإِنَّهَا لَتَاَصْحَوْنَ ۖ أَرَسِلَهُ مَعَا غَدَّ ائِزَّتَهُ وَيَلْعَبُ
وَإِنَّهَا لَتَحْفَظُونَهُ ۖ قَالَ إِنِّي لِيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ
أَنْ يَأْكُلَهُ الدِّبُّ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۖ قَالَ الْإِنْسَانُ أَكَلَهُ
الدِّبُّ وَتَحَنَّنَ عَصْبَةُ إِيَّاهُ إِذَا الْخَيْرُونَ ۖ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَ
اجْتَمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غِيَبَاتِ الْحُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ
بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ وَجَاءُوْا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ
قَالَ يَا بَنِيَ آدَمَ أَهْبَأْ نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا
فَأَكَلَهُ الدِّبُّ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۖ
وَجَاءُوْا عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۖ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ
أَنْفُسُكُمْ أَمْ أَفَصْبِرُ يَحْيَىٰ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ۖ
وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَةً ۖ قَالَ يَبْنَؤُنِي
هَذَا غُلْمٌ وَاسْزُوهُ بِضَاعَةً ۖ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ غَافِلُونَ ۖ وَ
شَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَنِّي

مَرْكَز

और उनको किसी अन्धेरे कुँए में डाल दो,¹ ताकि उनको कोई राह चलता निकाल ले जाए, अगर तुमको करना है। (10) सबने कहा कि अब्बा! इसकी क्या वजह है कि यूसुफ के बारे में आप हमारा एतिबार नहीं करते, हालाँकि हम उनके खैर-ख्वाह हैं। (11) आप उनको कल के दिन हमारे साथ भेजिए कि ज़रा वे खाएँ और खेलें,² और हम उनकी पूरी हिफाज़त रखेंगे। (12) (हज़रत याकूब ने) फरमाया कि मुझको यह बात ग़म में डालती है कि उसको तुम ले जाओ और मैं यह अन्देशा करता हूँ कि उसको कोई भेड़िया खा जाए और तुम उससे बेख़बर रहो। (13) वे बोले अगर उनको कोई भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअत (की जमाअत मौजूद) हों तो हम बिलकुल ही गए गुज़रे हुए। (14) सो जब उनको ले गए और सबने पुख्ता इरादा कर लिया कि उनको किसी अन्धेरे कुँए में डाल दें, और हमने उनके पास वस्त्र भेजी कि तुम उन लोगों को यह बात जतलाओगे और वे पहचानेंगे भी नहीं।³ (15) और वे लोग अपने बाप के पास इशा के वक़्त रोते हुए पहुँचे। (16) कहने लगे, अब्बा! हम सब तो आपस में दौड़ने में लग गए और यूसुफ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया, पस एक भेड़िया उनको खा गया, और आप तो हमारा काहे को यकीन करने लगे, चाहे हम (कैसे ही) सच्चे हों। ▲ (17) और यूसुफ के कुर्ते पर झूठ-मूठ का खून भी लगा लाए थे, (याकूब अलैहि. ने) फरमाया, (ऐसा नहीं है) बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है,⁴ सो सब्र ही करूँगा जिसमें शिकायत का नाम न होगा। और जो बातें तुम बनाते हो उनमें अल्लाह तआला ही मदद करे।⁵ (18) और एक काफिला आ निकला और उन्होंने अपना आदमी पानी लाने के वास्ते भेजा, उसने अपना डोल डाला। कहने लगा कि (अरे भाई) बड़ी खुशी की बात है, यह तो (अच्छा) लड़का (निकल आया) और उनको (तिजारत का) माल करार देकर छुपा लिया,⁶ और अल्लाह को उन सबकी कारगुज़ारियाँ मालूम थीं।⁷ (19) और उनको बहुत ही कम कीमत में बेच डाला, यानी गिनती के चन्द दिरहम के बदले, और वे लोग उनके कुछ कद्रदान तो थे ही नहीं। (20) ♦

(पृष्ठ 424 का शेष) यह खुदा ही का काम था, इससे मुसलमानों को जो किसी किस्से के इच्छुक थे इब्रत और ईमान की कुव्वत हासिल होगी और यहूद को कि उन्होंने खुसूसियत के साथ यह किस्सा पूछा था नुबुव्वत की दलील मिल सकती है, अगर गौर करें।

5. हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के साथ सबसे ज़्यादा मुहब्बत होने की अनेक वजह बयान की गई हैं। जिनमें ज़्यादा सही यह है कि नुबुव्वत की समझ से याकूब अलैहिस्सलाम उनको होनहार देखते थे और ख़ाब सुनने के बाद यह बात और ज़्यादा पुख्ता हो गई थी जैसा कि उनके इशॉद 'और इसी तरह तुम्हारा रब तुमको चुनेगा' से साफ़ मालूम होता है। लेकिन यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई समझते थे कि यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के बारे में ऐसा ख़्याल याकूब अलैहिस्सलाम की अपनी सोच है, और सोच में ग़लती होना नुबुव्वत के मनाफ़ी नहीं। पस 'ज़लाले मुबीन' यानी खुली ग़लती से ग़ौर व फ़िक्र की ख़ता मुराद है, वरना नबी के बारे में गुमराही का ख़्याल व एतिकाद कुफ़्र है।

6. क्योंकि वह दोनों सूरतों में बाप से जुदा हो जाएँगे।

1. जिसमें पानी भी ज़्यादा न हो कि डूबने का डर हो, वरना वह तो क़त्ल ही है और जल्दी से हर किसी को पता भी न चले, क्योंकि अन्धेरा कुआँ है, और आम रास्ते से भी दूर न हो।

2. ज़ाहिरन खेलने को याकूब अलैहिस्सलाम ने जायज़ रखा, इसके बावजूद कि बेफ़ायदा और बेकार काम की तजवीज़ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की शान के खिलाफ़ है। सो असल यह है कि यह खेलना बेफ़ायदा नहीं, क्योंकि मुराद इससे दौड़ और तीर चलाना वगैरह है, जो फ़ायदेमन्द चीज़ों में से हैं। इसके अलावा खेल के जायज़ होने की दूसरी वजह यह थी कि और फ़ायदों के साथ-साथ तबीयत की ताज़गी भी है जो कि बच्चों के लिए ज़रूरी और लाज़िमी मशग़लों में जी लगने का ज़रिया है। और ज़रूरी का मुक़द्दिमा (यानी जो चीज़ उसके लिए ज़रूरी हो वह) भी ज़रूरी होता है।

3. चुनाँचे यह वायदा ज़ाहिर और पूरा हुआ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 428 पर)

मअद्दू-दतिन् व कानू फीहि मिनज्जाहिदीन (20) ❖

व कालल्लजिशतराहु मिम्-मिस्-र लिमूर-अतिही अकिरमी मस्वाहु असा अय्यन्फ-अना औ नत्तखि-जहू व-लदन्, व कजालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ फिल्अर्जि व लिनुअल्लि-महू मिन् तअवीलिल्-अहादीसि, वल्लाहु गालिबुन् अला अमिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअल्मून (21) व लम्मा ब-ल-ग

अशुद्-दहू आतैनाहु हुक्मं-व-व अिल्मन्, व काजालि-क नज्जिल्-मुत्सिनीन (22) व रा-वदत्तहुल्लती हु-व फी बैतिहा अन् नफिसही व गल्ल-कतिल्-अब्बा-ब व कालत् है-त ल-क, का-ल मआजल्लाहि इन्नहू रब्बी अहस-न मस्वा-य, इन्नहू ला युफिल्हुज्जालिमून (23) व ल-कद् हम्मत् बिही व हम्-म बिहा लौ ला अर्-रआ बुरहा-न रब्बिही, कजालि-क लिनसिर-फ अन्हुस्सू-अ वल्-फहशा-अ, इन्नहू मिन् अिबादिनल् मुख्लसीन (24) वस्त-बकल्बा-ब व कद्दत् कमी-सहू मिन् दुबुरिन्-व अल्फया सय्यि-दहा लदल्-बाबि, कालत् मा जजा-उ मन् अरा-द बि-अहिल-क सूअन् इल्ला

अय्युस्ज-न औ अजाबुन् अलीम (25) का-ल हि-य रा-वदत्ती अन्-नफसी व शहि-द शाहिदुम् मिन् अह्लिहा इन् का-न कमीसुहू कुद्-द मिन् कुबुलिन् फ-स-दकत् व हु-व मिनल्-काजिबीन (26) व इन् का-न कमीसुहू कुद्-द मिन् दुबुरिन् फ-क-जबत् व हु-व मिनस्सादिकीन (27) फ-लम्मा रआ कमी-सहू कुद्-द मिन् दुबुरिन् का-ल इन्नहू मिन् कैदिकुन्-न, इन्-न कै-दकुन्-न अजीम (28) यूसुफु अअरिज् अन् हाजा वस्तगिफरी

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يَبْعَثَ أَوْ تَخَذَهُ وَلَدًا وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَى أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢١﴾ وَرَاوَدَتْهُ الْفَاحِشَةُ مَوَافِقُهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهَا وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَاهُمَا رَبُّهُ كَذَلِكَ لَنَصْرَفَ عَنْهُ الشَّوْءَ وَالْعُشَّةَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٣﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَیْبُصَةً مِنْ دَبِّرٍ وَافِيَا سَيْدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ نُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾ قَالَتْ هِيَ رَاوَدْتَنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَیْبُصَةٌ فَدَمِنَ مِنْ قَبْلِ فَعَدَّتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٥﴾ وَإِنْ كَانَ قَیْبُصَةٌ فَدَمِنَ مِنْ دَبِّرٍ فَكَذَّبَتْ وَهُوَ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَى قَیْبُصَةً فَدَمِنَ مِنْ دَبِّرٍ قَالَتْ إِنَّ مِنْ كَيْدِكَ لَإِنْ كَيْدٌ لَنْ عَظِيمٌ ﴿٢٧﴾ يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنْ هَذَا وَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ لَدُنْكَ وَأَنْتَ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ سَوْءٌ

और जिस शख्स ने मिस्र में उनको खरीदा था उसने अपनी बीवी से कहा की इसको खातिर से रखना, क्या अजब है कि हमारे काम आए या हम इसको बेटा बना लें। और हमने इसी तरह यूसुफ को उस सरज़मीन में कुव्वत दी, और ताकि हम उनको ख्वाबों की ताबीर देना बतला दें,¹ और अल्लाह तआला अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर आदमी नहीं जानते।² (21) और जब वह अपनी जवानी को पहुँचे, हमने उनको हिक्मत और इल्म अता फ़रमाया, और हम नेक लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।³ (22) और जिस औरत के घर में यूसुफ रहते थे, वह (उनसे अपना मतलब हासिल करने को) उनको फुसलाने लगी और सारे दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी कि आ जाओ, तुम ही से कहती हूँ। (यूसुफ अलैहिस्सलाम ने) कहा, (यह तो भारी गुनाह है) अल्लाह बचाए। (दूसरे) वह मेरा पालने-परवरिश करने वाला है। मुझको कैसी अच्छी तरह रखा, ऐसे हक़-फ़रामोश को फ़लाह नहीं हुआ करती। (23) और उस औरत के दिल में तो उनका ख़्याल ज़म ही रहा था, और उनको भी उस औरत का कुछ-कुछ ख़्याल हो चला था,⁴ अगर अपने रब की दलील⁵ को उन्होंने न देखा होता⁶ तो ज़्यादा ख़्याल हो जाता अजब न था।⁷ इसी तरह (हमने उनको इल्म दिया) ताकि हम उनसे छोटे और बड़े गुनाह को दूर रखें,⁸ क्योंकि वह हमारे मुख़्लिस बन्दों में से थे। (24) और दोनों (आगे-पीछे) दरवाज़े की तरफ़ को दौड़े, और उस औरत ने उनका कुर्ता पीछे से फाड़ डाला, और दोनों ने उस औरत के शौहर को दरवाज़े के पास पाया।⁹ (औरत) बोली, जो शख्स तेरी बीवी के साथ बदकारी का इरादा करे उसकी सज़ा सिवाय इसके और क्या है कि वह जेलख़ाने भेजा जाए या और कोई दर्दनाक सज़ा हो। (25) (हज़रत यूसुफ ने) कहा, यही मुझसे अपना मतलब (निकालने) को फुसलाती थी, और उस औरत के ख़ानदान में से एक गवाह ने गवाही दी¹⁰ कि इनका कुर्ता अगर आगे से फटा है तो औरत सच्ची है और ये झूठे। (26) और अगर इनका कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूठी और यह सच्चे।¹¹ (27) सो जब उनका कुर्ता पीछे से फटा हुआ देखा तो कहने लगा कि यह तुम औरतों की चालाकी है, बेशक तुम्हारी चालाकियाँ ग़ज़ब ही की हैं। (28) ऐ यूसुफ! इस बात को जाने दो, और ऐ औरत! तू अपने कुसूर की माफ़ी माँग, बेशक पूरी की पूरी तू ही कुसूरवार है। (29) ♦

(पृष्ठ 426 का शेष)

4. याकूब अलैहिस्सलाम का 'बल सबलत्' 'यानी बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है,' फरमाना मशहूर कौल के मुताबिक़ उस कुर्ते के धब्बे देखने से था, लेकिन अगर वह रिवायत साबित न हो तो अपनी फ़िक्री सलाहियत और दिल की गवाही से होगा जो कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम में अक्सर तो हकीकत के मुताबिक़ होता है और कभी हकीकत के ख़िलाफ़ भी हो जाता है।

5. जब याकूब अलैहिस्सलाम को यकीनी तौर पर या अन्दाज़े से यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों का बयान ग़लत होना मालूम था तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तलाश क्यों न किया। ग़ालिब यह है कि याकूब अलैहिस्सलाम को वद्व से मुख़्तसर तौर पर मालूम हो गया होगा कि वह जाया न होंगे लेकिन मेरी किस्मत में लम्बी जुदाई मुकद्दर है, मेरी तलाश से न मिलेंगे।

6. ताकि कोई आकर दावेदार न हो, फिर उसको लेजाकर मिस्र में किसी बड़े आदमी के हाथ बेचकर ख़ूब नफ़ा कमाएँगे।

7. कि भाई उनको बेवतन और काफ़िले वाले माल हासिल करने का ज़रिया बना रहे थे, और अल्लाह तआला उनको ज़माने का बादशाह बना रहा था।

1. ख़ूब कुव्वत और ख़्वाब की ताबीरों का इल्म देने से मक़सद यह था कि दौलते जाहिरी व बांतिनी से मांलामाल करें।

2. यह जुम्ला किस्से के दरमियान में एक ज़ायद जुम्ले के तौर पर आ गया ताकि ख़रीद व बेच के साथ शुरू ही से सुनने वालों को मालूम हो जाए कि गोया इस वक़्त जाहिरन ऐसी नागवार हालत में हैं, मगर हमने उनको असल में एक शानदार हुकूमत और अज़ीब व ग़रीब उलूम के लिए बचाया है। और ये हालतें आरज़ी और असली मक़ासिद का मुक़द्दिमा हैं। क्योंकि हुकूमत हासिल करके तरक्की पाने का ज़रिया अज़ीज़ के घर आना ही हुआ। इसी तरह उलूम व दिल की कैफ़ियतों के लिए नागवारियाँ और मशक्कतें सबब हो जाते हैं। पस इस एतिबार से उलूम के फैज़ान में भी उसको दख़ल हुआ। और मुश्तरक तौर पर रईसों और सरदारों के घर में परवरिश पाना सलीका व तज़ुर्बा बढ़ाता है, जिसकी हुकूमत और उलूम दोनों में ज़रूरत है, ख़ासकर ताबीर के इल्म में। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 430 पर)

लिजम्बिकि इन्नकि कुन्ति मिनल्-खातिईन (29) ❖

व का-ल निस्वतुन् फिल्-मदीनतिमूर-अतुल्-अजीजि तुराविदु फताहा अन्-नफिसही कद् श-ग-फहा हुब्बन्, इन्ना ल-नराहा फी जलालिम्-मुबीन (30) फ-लम्मा समिअत् बिमकिरहिन्-न अर्-सलत् इलैहिन्-न व अअत्-दत् लहुन्-न मुत्त-कअव्-व आतत् कुल्-ल वाहि-दतिम् मिन्हुन्-न सिक्कीनव्-व

कालतिखरुज् अलैहिन्-न फ-लम्मा रए-नहू अक्बर-नहू व कत्तअ-न ऐदियहुन्-न व कुल्-न हा-श लिल्लाहि मा हाजा ब-शरन्, इन् हाजा इल्ला म-लकुन् करीम (31) कालत् फजालिकुन्नल्लजी लुम्तुन्ननी फीहि, व ल-कद् रावत्तुहू अन् नफिसही फस्तअ-स-म, व ल-इल्लम् यफअल् मा आमुरुहू लयुस्ज-नन्-न व ल-यकूनम् मिनस्सागिरीन (32) का-ल रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्-य मिम्मा यद्अ-ननी इलैहि व इल्ला तस्स्िफ् अन्नी कैदहुन्-न अस्बु इलैहिन्-न व अकुम् मिनल्-जाहिलीन (33) फस्तजा-ब लहू रब्बुहू फ-स-र-फ अन्हु कैदहुन्-न, इन्नहू हुवस्-समीअुल्-अलीम (34) सुम्-म

बदा लहुम् मिम्-बअदि मा र-अवुल्-आयाति ल-यस्जुनुन्नहू हत्ता हीन (35) ❖

व द-ख-ल म-अहुस्सिज्-न फ-तयानि, का-ल अ-हदुहुमा इन्नी अरानी अअ्सिरु खमूरन् व कालल्-आखरु इन्नी अरानी अस्मिलु फौ-क अरूसी खुब्जन् तअकुलुत्तैरु मिन्हु, नब्बिअन्ना बितअवीलिही इन्ना नरा-क मिनल्मुत्सिनीन (36) का-ल ला यअतीकुमा तआमुन्

۲۱۶
و ما من آية ۱۲
فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ فَلَمَّا كَمَمَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا ۚ وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّارَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ۝ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا أُمِرْتُ لَيَكُونَنَّ مِنَ الضَّالِّينَ ۝ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لِيَسْجُنَنَّهُ فَحَىٰ جَبِينٌ ۖ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أُفُوقُ رَأْسِي ظُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرَ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتِلْكَ أُيَّةِ اللَّهِ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُزْزِقْنِي إِلَّائِنْبَاءُكُمَا بِتِلْكَ أُيَّةِ اللَّهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذِكْرُكُمَا مِمَّا عَلَّمْتَنِي رَبِّي إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ

और कुछ औरतों ने जो कि शहर में रहती थीं यह बात कही कि अजीज की बीवी अपने गुलाम को (उससे अपना मतलब हासिल करने के वास्ते) फुसलाती है। उस गुलाम का इश्क उसके दिल में जगह कर गया है, हम तो उसको खुली गलती में देखते हैं। (30) सो जब उस औरत ने उन औरतों की यह बदगोई सुनी तो किसी के हाथ उनको बुला भेजा (कि तुम्हारी दावत है)¹ और उनके वास्ते (मसूद) तकिया लगाया, और हर एक को उनमें से एक-एक चाकू दे दिया। (यह तो सिर्फ बहाना था, असली गरज यह थी कि अपने आपे में न रहकर अपने हाथ जख्मी कर लें) और (यूसुफ से) कहा कि ज़रा इनके सामने तो आ जाओ। (वह यह समझकर कि कोई जायज़ और सही ज़रूरत होगी बाहर आ गए) सो औरतों ने जो उनको देखा तो (उनके हुस्न व खूबसूरती से) हैरान रह गईं और (उनपर ऐसी बदहवासी तारी हुई कि) अपने हाथ काट लिए, और कहने लगीं, खुदा की पनाह, यह शख्स आदमी हरगिज़ नहीं, यह तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता है!² (31) बोली, वह शख्स यही है जिसके बारे में तुम मुझको बुरा-भला कहती थीं (कि अपने गुलाम को चाहती है) और वाकई मैंने इससे अपना मतलब हासिल करने की ख्वाहिश की थी मगर यह पाक-साफ़ रहा, और अगर आइन्दा (भी) मेरा कहना नहीं करेगा तो बेशक जेलखाने भेजा जाएगा और बेइज़्जत भी होगा। (32) (यूसुफ ने) दुआ की कि ऐ मेरे रब! जिस काम की तरफ़ ये औरतें मुझको बुला रही हैं उससे तो जेल में जाना ही मुझको ज़्यादा पसन्द है। और अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा और नादानी का काम कर बैठूँगा।³ (33) सो उनके रब ने उनकी दुआ कबूल की और उन औरतों के दाव-पेच को उनसे दूर रखा, बेशक वह बड़ा सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है। (34) फिर बहुत-सी निशानियाँ देखने के बाद उन लोगों को यही मस्तहत मालूम हुआ कि उनको एक वक़्त तक कैद में रखें!⁴ (35) ♦

और उनके (यानी यूसुफ के) साथ और भी दो गुलाम कैदखाने में दाखिल हुए। उनमें से एक ने कहा कि मैं अपने को (ख़्वाब में) देखता हूँ कि शराब निचोड़ रहा हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैं अपने को इस तरह देखता हूँ कि मैं अपने सर पर रोटियाँ लिए जाता हूँ, उनमें से परिन्दे खाते हैं। हमको इस (ख़्वाब) की ताबीर बतलाइए, आप हमको नेक आदमी मालूम होते हैं। (36) (यूसुफ ने) फरमाया कि जो खाना तुम्हारे पास आता है जो कि तुमको खाने के लिए मिलता है, मैं उसके आने से पहले उसकी हकीकत तुमको बतला दिया करता हूँ। यह (बतला देना) उस इल्म की बदौलत है जो मुझको मेरे रब ने तालीम फरमाया है, मैंने तो उन लोगों का मज़हब छोड़ रखा है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, और वे लोग आखिरत के भी इनकारी हैं!⁵ (37) और

(पृष्ठ 428 का शेष)

3. इसमें पहले से यह बतलाना मकसूद है कि जो कुछ आगे किस्से में बाज़े मामलात और बातों की तोहमत आपके मुताल्लिक आएगी वह सब ग़लत होगी, क्योंकि वह साहिबे हिक्मत थे जिसका हासिल है नफ़ा देने वाला इल्म, यानी इल्म अमल के साथ, और इन चीज़ों का सादिर होना हिक्मत के खिलाफ़ है। पस सादिर और जाहिर होना ग़लत है।

4. तबई चीज़ होने के दर्जे में जो कि इख़्तियार से बाहर है जैसा कि गर्मी के रोज़े में पानी की तरफ़ तबई मैलान होता है अगरचे रोज़ा तोड़ने का वस्वसा भी नहीं आता।

5. यानी इस काम के गुनाह होने की दलील को कि शरई हुक्म है।

6. यानी उनको शरीअत का इल्म जो कि अमली कुव्वत के साथ मिला हुआ है, न होता।

7. क्योंकि असबाब और उसकी तरफ़ मुतवज्जह करने वाले हालात ऐसे ही ताक़तवर थे।

8. यानी इरादे से भी बचाया और फ़ैल से भी बचाया।

9. औरत शौहर को देखकर सटपटाई और फ़ौरन बात बनाकर बोली।

10. वह एक दूध पीता बच्चा था जो यूसुफ अलैहिस्सलाम के मोजिज़े से बोल पड़ा। अगर यूसुफ अलैहिस्सलाम उस वक़्त नबी न हों तो इस आम आदत के खिलाफ़ पेश आने वाले वाकिए को इस्तिलाह में मोजिजे के बजाय 'इरहास' (यानी उसकी बुनियाद और पहला दर्जा) कहेंगे।

11. इस गवाही देने वाले ने जो फ़ैसला बतलाया यह कोई शरई हुज्जत नहीं, काफ़ी हुज्जत तो सिर्फ़ उसका बोल पड़ना है, लेकिन हाज़िरीन के ज़ौक के मुवाफ़िक़ उसका बयान कर देना असली हुज्जत के लिए ज़्यादा ताईद करने वाला हो गया। (पृष्ठ 430 की तफ़सीर पृष्ठ 432 पर)

तुरज़कानिही इल्ला नब्बअतुकुमा बितअवीलिही कब्-ल अय्यअति-यकुमा, ज़ालिकुमा मिम्मा अल्ल-मनी रब्बी, इन्नी तरक्तु मिल्ल-त कौमिल् ला युअमिन्-न बिल्लाहि व हुम् बिल्आखिरति हुम् काफिरून (37) वत्तबअतु मिल्ल-त आबाई इब्राही-म व इस्हा-क व यअकू-ब, मा का-न लना अन् नुशिर-क बिल्लाहि मिन् शैइन्, ज़ालि-क मिन् फज़िल्लाहि अलैना व अलन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (38) या साहि-बयिस्सिज्जि अ-अर्बामुम् मु-तफर्रिकू-न खौरुन् अमिल्लाहुल् वाहिदुल्-कह्हार (39) मा तअबुदू-न मिन् दूनिही इल्ला अस्मा-अन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, अ-म-र अल्ला तअबुदू इल्ला इय्याहु, ज़ालिकद्-दीनुल्-कथ्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअलमून् (40) या साहि-बयिस्सिज्जि अम्मा अ-हदुकुमा फ-यस्की रब्बहू खम्रन् व अम्मल्-आखरु फयुस्-लबु फ-तअकुलुत्-तैरु मिर्रअसिही, कुज़ियल्-अम्रुल्लज़ी फीहि तस्तफ़ितयान (41) व का-ल लिल्लज़ी ज़न्-न अन्नहू नाजिम् मिन्हुमज़्ज़कुरनी अिन्-द रब्बि-क, फअन्साहुशैतानु ज़िक्-र रब्बिही फ-लबि-स फिस्सिज्जि बिज्-अ सिनीन (42) ❖

व कालल्-मलिकु इन्नी अरा सब्-अ ब-क़रातिन् सिमानिन्य्यअकुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुव्-व सब्-अ सुम्बुलातिन् खुज़िरव्-व उ-ख-र याबिसातिन्, या अय्युहल् म-लउ

وَمِنْ دَابَّةٍ ۚ
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۚ وَالتَّبَعْتُ مِلَّةَ
آبَائِي ابْرَهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ لَنَا أَنْ تُشْرِكَ
بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ
وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۚ يَصَاحِبِي التَّجْنِ أَزْيَابُكَ
مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمْ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَتَيِّبُوهُمَا سَتَذُو بَآؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ
اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنِ الْحُكْمُ لِلَّهِ الْأَمْرُ الْأَتَعْبُدُوا
إِلَّا إِيَّاهُ ذَلِكَ الَّذِينَ الْقَيْمُ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۚ يَصَاحِبِي التَّجْنِ أَمَا أَحَدُكُمَا فَيَسْنُقِي رَبِّهَ
خَمْرًا ۚ وَأَمَا الْآخَرُ فَيُضْلِبُ فَتَأْكُلُ الظَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ ۚ
فُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ۚ وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ
نَازِلٌ فِيهِمَا أَذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ ۚ فَانْسَلَسَ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ
فَكَهِنَ فِي التَّجْنِ بَضْعَ سِنِينَ ۚ وَقَالَ لِلْمَلِكِ إِنِّي أَرَى سَبْعَ
بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِمَافٌ ۚ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُفْرٍ
وَأُخْرَى سَبْعٌ يَأْكُلُهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِن كُنْتُمْ
لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ۚ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ

मैंने अपने बाप-दादों का मजहब इस्तिथार कर रखा है। इब्राहीम का और इसहाक का और याकूब का, हमको किसी तरह मुनासिब नहीं कि अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक करार दें।¹ यह (तौहीद का अकीदा) हमपर और दूसरे लोगों पर खुदा तआला का एक फज़्ल है,² लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।³ (38) ऐ कैदखाने के दोनों साथियो! मुतफ़र्रिक “यानी अलग-अलग” माबूद अच्छे या एक माबूद बरहक, जो सबसे ज़बरदस्त है (वह अच्छा)। (39) तुम लोग तो खुदा को छोड़कर सिर्फ़ चन्द बेहकीकत नामों की इबादत करते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बाप-दादाओं ने मुकर्रर कर लिया है। खुदा तआला ने तो उनकी कोई दलील भेजी नहीं। हुक्म खुदा ही का है, उसने यह हुक्म दिया है कि सिवाय उसके और किसी की इबादत मत करो, यही सीधा तरीका है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।⁴ (40) ऐ कैदखाने के दोनों साथियो! तुममें एक तो (बरी होकर) अपने आका को शराब पिलाया करेगा और दूसरा सूली दिया जाएगा, और उसके सर को परिन्दे खाएंगे, जिस बारे में तुम पूछते थे वह इसी तरह मुकद्दर हो चुका।⁵ (41) और जिस शख्स की रिहाई का गुमान था उससे (यूसुफ ने) फरमाया कि अपने आका के सामने मेरा भी ज़िक्र करना, (कि एक शख्स बेकुसूर कैद है। उसने वायदा कर लिया) फिर उसको अपने आका के सामने ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया तो कैदखाने में और भी चन्द साल उनका रहना हुआ।⁶ (42) ♦

और बादशाह ने कहा, मैं देखता हूँ कि सात गायें मोटी-ताज़ी हैं जिनको सात कमज़ोर और दुबली गायें खा गईं, और सात बालें हरी हैं और उनके अलावा (सात) और हैं जो कि सूखी हैं। ऐ दरबार वालो! अगर तुम ताबीर दे सकते हो तो मेरे इस ख्वाब के बारे में मुझको जवाब दो। (43) वे लोग कहने लगे कि यूँ ही परेशान ख्यालात हैं, और हम लोग ख्वाबों की ताबीर का इल्म भी नहीं रखते।⁷ (44) और उन (ज़िक्र हुए) दो

(तफ़सीर पृष्ठ 430) 1. इस दावत में उनके सामने मुख्तलिफ़ खाने और मेवे हाज़िर किए, जिनमें बाज़ चीज़ें चाकू से छीलकर खाने की थीं।
2. मतलब यह कि ऐसा हुस्न व जमाल आदमी में कहाँ होता है। फ़रिश्ते अलबत्ता ऐसे नूरानी होते हैं।
3. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का यह फ़रमाना ‘कि अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा’ पारसाई के खिलाफ़ नहीं, क्योंकि यह पारसाई भी तो अल्लाह की हिफ़ाज़त ही की बदौलत है। चूँकि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की नज़र हकीकी असर करने वाले की तरफ़ होती है इसलिए उनको अपनी पारसाई पर एतिमाद और नाज़ नहीं होता। और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का यह कहना ‘कि अगर आप उनके दाव-पेच को मुझसे दूर न करेंगे तो मैं उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा’ मकसूद इससे यह है कि ‘इसको मुझसे दूर फ़रमा दीजिए’ इसलिए इसके बाद ‘सो उनकी दुआ उनके रब ने कबूल की’ फ़रमाया। और इस कबूल होने का बयान खुद कुरआन में है: ‘और उन औरतों के दाव-पेच को उनसे दूर रखा’। जेल में जाना कबूलियत का हिस्सा नहीं, जैसा कि मशहूर है कि कैद की दुआ की इसलिए कैद में गए, क्योंकि कैद की दरख्वास्त तो नहीं की सिर्फ़ बुरे फ़ेल को जेलख़ाने से ज़्यादा बुरा होना बयान किया।
4. अ़वाम में चर्चा बन्द होने की ग़रज़ से।
5. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने चाहा कि जब ये मेरे मोतफ़िद हैं तो इनको पहले इमान की दावत देनी चाहिए, इसलिए अब्बल अपना नबी होना एक मौजिज़े से साबित किया। आगे तौहीद को साबित किया है, यानी जब मेरा कमाल और नुबुव्वत दलील से साबित है तो जिस तरीके को मैं इस्तिथार करूँ और उसको सही बतलाऊँ वह हक़ होगा, सो वह तरीका यह है।

(तफ़सीर पृष्ठ 432) 1. यानी तौहीद इस मजहब का सबसे बड़ा रुक्न है।
2. क्योंकि उसकी बदौलत दुनिया व आख़िरत की फ़लाह हासिल होती है।
3. यानी न तौहीद की क़द्र करते हैं और न उसको इस्तिथार करते हैं।
4. इमान के अरकान की तब्लीग़ करके अब उनके ख्वाब की ताबीर बतलाते हैं।
5. चुनाँचे मुकद्दिमे में सफ़ाई के बाद एक बरी साबित हुआ, दूसरा मुज़्रिम, दोनों जेलख़ाने से बुलाए गए। एक रिहाई के लिए दूसरा सज़ा के लिए।
6. ‘बिज़्रअनु’ अरबी में तीन से दस तक के लिए आता है। इसके दरमियान जितने अ़दद (अंक) हैं हर अ़दद का आयत में एहतिमाल है। चूँकि आदतन जो असबाब इस्तेमाल किए जाते हों उनका इस्तेमाल जायज़ है इसलिए इस मामले में (शेष तफ़सीर पृष्ठ 434 पर)

अफ्तूनी फी रुअ्या-य इन् कुन्तुम् लिर्अ्या तअ्बुखुन (43) कालू अज्गासु अह्लामिन् व मा नह्नु बितअ्वीलिल्-अह्लामि बिअलिमीन (44) व कालल्लजी नजा मिन्हुमा वद्द-क-र बअ्-द उम्मतिन् अ-न उनब्बिउकुम् बितअ्वीलिही फ-अरसिलून (45) यूसुफु अय्युहस्-सिद्दीकु अफितना फी सब्बि ब-करातिन् सिमानिय्यअकुलुहुन्-न सब्बुन् अिजाफुव्-व सब्बि

सुम्बुलातिन् खुज्रिव्-व उ-ख-र याबिसातिल्-लअल्ली अर्जिअु इलन्नासि लअल्लहुम् यअ्लमून (46) का-ल तज्-रअ-न सब्-अ सिनी-न द-अबन् फमा हसत्तुम् फ-जरुहु फी सुम्बुलिही इल्ला कलीलम्-मिम्मा तअकुलून (47) सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि जालि-क सब्बुन् शिदादुय्यअकुल्-न मा कद्दस्तुम् लहुन्-न इल्ला कलीलम् मिम्मा तुह्सिनून (48) सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि जालि-क आमुन् फीहि युगासुन्नासु व फीहि यअ्सिरून (49) ❖

व कालल् मलिकुअ्तूनी बिही फ-लम्मा जा-अहुरसूलु कालर्जिअु इला रब्बि-क फस्अल्हु मा बालुन्-निस्वतिल्-लाती कत्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न, इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न अलीम (50) का-ल मा खत्बुकुन्-न इज् रावत्तुन्-न यूसु-फ अन् नफिसही, कुल्-न हा-श लिल्लाहि मा अलिम्ना अलैहि मिन् सूइन्, कालतिमूर्-अतुल्-अजीजिल्-आ-न हस्ह-सल्हक्कु, अ-न रावत्तुहू अन् नफिसही व इन्नहू लमिनस्सादिकीन (51) जालि-क लि-यअ्ल-म अन्नी लम् अखुन्हु बिल्लैबि व अन्नल्ला-ह ला यह्दी कैदल्-खाइनीन (52)

يُوسُفُ ٢١٨ مَائِمَاتٍ
الْخَلَامُ بِعُلُوبَيْنِ ۖ وَقَالَ الَّذِي نَجَّاهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ
أَمْرِهِ إِنَّا أَنبَاكُمْ بِمَا كُنْتُمْ يَكْفُرُونَ ۖ يُونُسُ إِنَّا الصِّدِّيقُ
أَوْتَيْنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ
سُبُحَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَشِيتُ ۖ لَعَلِّي آرْجِعُ إِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ۖ قَالَ تَزْعُمُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا فَمَا
حَصَدْتُمْ فَذَرَوْهُ فِي سُنْبُلَةٍ لَّا قَلِيلًا فَمَا تَأْكُلُونَ ۖ ثُمَّ
يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ
لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا فَمَا تَأْكُلُونَ ۖ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
عَامٌ فِيهِ يَغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصُرُونَ ۖ وَقَالَ لِلْمَلَكِ
أَنْتُمْ فِيهَا فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ
فَسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ
رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ۖ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ
عَنِ نَفْسِهِ ۖ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ
قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّحْصُ حَصَّ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدْتُهُ
عَنِ نَفْسِهِ ۖ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۖ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي
لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِبِينَ ۖ

(कैदियों) में से जो रिहा हो गया था उसने कहा, और मुद्दत के बाद उसको (हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की वसीयत का) ख्याल आया कि मैं इसकी ताबीर की खबर लाए देता हूँ, आप लोग मुझको ज़रा जाने की इजाज़त दीजिए। (45) (वह कैद ख़ाने में पहुँचा और कहा) ऐ यूसुफ! ऐ सच्चाई के पैकर, आप हम लोगों को इस (ख़्वाब) का जवाब (यानी ताबीर) दीजिए कि सात गायें मोटी हैं, उनको सात दुबली गायें खा गई, और सात बाले हरी हैं और उसके अलावा (सात) सूखी हैं, ताकि मैं उन लोगों के पास लौटकर जाऊँ, ताकि उनको भी मालूम हो जाए। (46) आपने फ़रमाया कि 'तुम सात साल लगातार ग़ल्ला बोना, फिर जो फल काटो उसको बालों ही में रहने देना, (ताकि धुन न लग जाए) हाँ मगर थोड़ा-सा जो तुम्हारे खाने में आए (निकाल लेना) (47) फिर उसके बाद सात साल ऐसे सख्त आएँगे जो कि उस ज़ख़ीरे को खा जाएँगे जिसको तुमने (उन सालों के वास्ते) जमाकर रखा है, हाँ मगर थोड़ा-सा जो रख छोड़ोगे। (48) फिर उसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें लोगों के लिए ख़ूब बारिश होगी और उसमें शीरा भी निचोड़ेंगे। (49) ♦

और बादशाह ने हुक्म दिया कि उनको मेरे पास लाओ। फिर जब उनके पास कासिद पहुँचा, आपने फ़रमाया तू अपनी सरकार के पास लौट जा, फिर उनसे दरियाफ़्त कर कि उन औरतों का क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे, मेरा रब उन औरतों के फरेब को ख़ूब जानता है। (50) कहा कि तुम्हारा क्या वाकिआ है, जब तुमने यूसुफ से अपने मतलब की ख़्वाहिश की। औरतों ने जवाब दिया कि अल्लाह की पनाह, हमको उनमें ज़रा भी बुराई की बात मालूम नहीं हुई। अज़ीज़ की बीवी कहने लगी कि अब तो हक़ बात ज़ाहिर हो ही गई। मैंने ही उनसे अपने मतलब की ख़्वाहिश की थी, और बेशक वही सच्चे हैं। (51) (यूसुफ ने) फ़रमाया कि यह (एहतिमाम) सिर्फ़ इस वजह से है ताकि उसको (यानी अज़ीज़ को) यकीन के साथ मालूम हो जाए कि मैंने उनकी ग़ैर-मौजूदगी में उसकी आबरू पर हाथ नहीं डाला, और यह कि अल्लाह तअाला ख़ियानत करने वालों के फरेब को चलने नहीं देता। (52)

(पृष्ठ 432 का शेष)

हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम पर कोई शुब्हा नहीं हो सकता। और यह जो फ़रमाया: 'तो कैदख़ाने में और भी चन्द साल उनका रहना हुआ' यह बतौर इताब के नहीं फ़रमाया बल्कि महज़ भूल जाने पर इसका मुरत्तब करना मक़सद है कि वह भूल गया इसलिए यूसुफ अलैहिस्सलाम की रिहाई का कोई सामान न हुआ।

7. दो जवाब इसलिए दिए कि पहले जवाब से बादशाह के दिल से परेशानी और वस्वसा दूर करना है, और दूसरे जवाब से अपना उज़्र ज़ाहिर करना है। खुलासा यह कि अब्बल तो ऐसे ख़्वाब काबिले ताबीर नहीं, दूसरे हम इस फ़न से वाकिफ़ नहीं।

1. यानी उन सात मोटी गायों और सात हरी बालों से पैदावार और बारिश के साल मुराद हैं।

2. मतलब यह था कि उनको बुलाकर मेरा हाल उस वाकिफ़ के मुताल्लिक जिसमें मुझको कैद किया गया था तफ़्तीश किया जाए, और औरतों के हाल से मुराद उनका यूसुफ अलैहिस्सलाम के हाल से वाकिफ़ या नावाकिफ़ होना है। उन औरतों की तख़्सीस शायद इसलिए की हो कि उनके सामने जुलेखा ने कबूल किया था कि 'वाकई मैंने इससे अपना मक़सद हासिल करने की ख़्वाहिश की थी मगर यह पाक रहा'। यूसुफ अलैहिस्सलाम के अपने पाकदामन होने के इस एहतिमाम से मालूम हुआ कि तोहमत को हटाने में कोशिश करना पसन्दीदा बात है। हदीसों में इसका पसन्दीदा होना आया है। अन्य फ़ायदों के साथ इसका एक फ़ायदा यह भी है कि लोग ग़ीबत से बचेँगे और अपना दिल भी तश्वीश से महफूज़ रहेगा।

3. यानी वे बिलकुल पाक व साफ़ हैं।

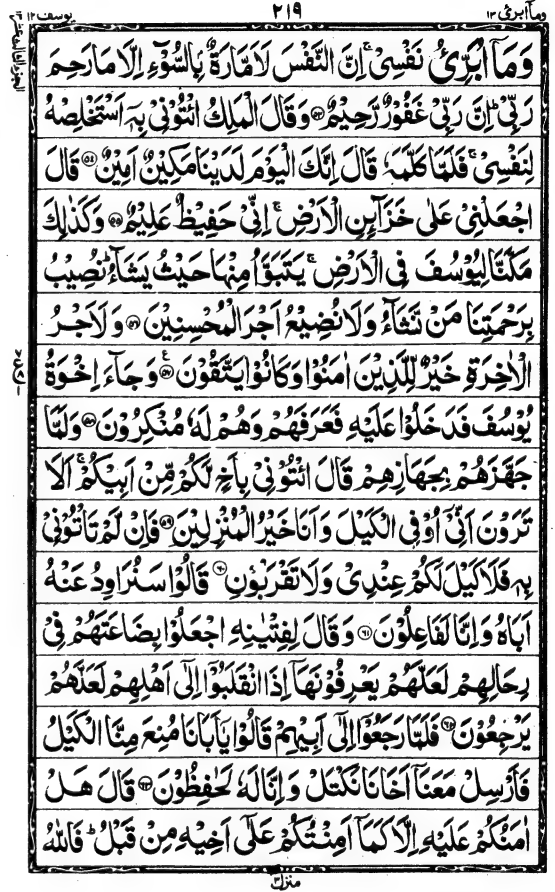
तेरहवाँ पारः व मा उबरिउ

सूरतु यूसुफ (आयत 53 से 111)

व मा उबरिउ नफसी इन्नन्फ-स ल-अम्मा-रतुम्-बिस्सू-इ इल्ला मा रहि-म रब्बी,
इन्-न रब्बी गफूररहीम (53) व
कालल्-मलिकुअतूनी बिही अस्तखिलस्हु
लिनफसी फ-लम्मा कल्ल-महू का-ल
इन्नकल्-यौ-म लदैना मकीनुन् अमीन
(54) कालज्अल्ली अला खजाइनिल्-
अर्जि इन्नी हफीजुन् अलीम (55) व
कजालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ फिल्अर्जि
य-तबव्वउ मिन्हा हैसु यशा-उ, नुसीबु
बि ह्मतिना मन्-नशा-उ व ला नुजीअु
अजरल्-मुत्सनीन (56) व ल-अजरल्-
आखिरति खैरुल्-लिल्लजी-न आमनू व
कानू यत्तकून (57) ❖

व जा-अ इख्वतु यूसु-फ फ-द-खलू
अलैहि फ-अ-र-फहुम् व हुम् लहू
मुन्किरून (58) व लम्मा जहह-जहुम्
बि-जहाजिहिम् कालअतूनी बि-अखिल-
लकुम् मिन् अबीकुम् अला तरौ-न अन्नी

ऊफिल्-कै-ल व अ-न खैरुल्-मुन्जिलीन (59) फ-इल्लम् तअतूनी बिही फला कै-ल लकुम्
अिन्दी व ला तक्वरबून (60) कालू सनुराविदु अन्हु अबाहु व इन्ना लफाअिलून (61) व
का-ल लिफित्यानिहिज्-अलू बिजा-अ-तहुम् फी रिहालिहिम् लअल्लहुम् यअरिफूनहा
इज़न्क-लबू इला अह्लिहिम् लअल्लहुम् यर्जिअून (62) फ-लम्मा र-जअू इला अबीहिम्
कालू या अबाना मुनि-अ मिन्नल्कैलु फ-अर्सिल् म-अना अखाना नक्तल् व इन्ना लहू



तेरहवाँ पार: व मा उबर्रिउ

सूर: यूसुफ (आयत 53 से 111)

और (बाकी) मैं अपने नफ्स को (जात के एतिबार से) बरी (और पाक) नहीं बतलाता, (क्योंकि) नफ्स तो (हर एक का) बुरी ही बात बतलाता है, सिवाय उस (नफ्स) के जिसपर मेरा रब रहम करे,¹ बेशक मेरा रब बड़ी मरिफ़रत वाला, बड़ी रहमत वाला है। (53) और (यह सुनकर) बादशाह ने कहा कि उनको मेरे पास लाओ, मैं उनको खास अपने (काम के) लिए रखूँगा। पस जब उसने (यानी बादशाह ने) उनसे बातें कीं तो (उनसे) कहा कि तुम हमारे नज़दीक आज (से) इज़्ज़त व इकराम वाले और मोतबर हो। (54) (यूसुफ अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मुल्की खज़ानों पर मुझको मामूर कर दो, मैं (उनकी) हिफ़ाज़त भी रखूँगा (और) ख़ूब वाकिफ़ (भी) हूँ।² (55) और हमने ऐसे (अज़ीब) अन्दाज़ पर यूसुफ़ को मुल्क में बाइख़्तियार बना दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें-सहें,³ हम जिसपर चाहें अपनी इनायत मुतवज्जह कर दें और हम नेकी करने वालों का अज़्र ज़ाया नहीं करते।⁴ (56) और आख़िरत का अज़्र कहीं ज़्यादा बढ़कर है, ईमान और तक्वा वालों के लिए।⁵ (57) ♦

और (किनआन में भी अकाल पड़ा तो) यूसुफ़ के भाई आए फिर उनके (यानी यूसुफ़ के) पास पहुँचे, सो उन्होंने (यानी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) उनको पहचान लिया और उन्होंने उनको (यानी यूसुफ़ को) नहीं पहचाना। (58) और जब उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) उनके (ग़ल्ले का) सामान तैयार कर दिया तो (चलते वक़्त) फ़रमा दिया कि अपने अल्लाती “माँ की तरफ़ से सौतेले” भाई को भी (साथ) लाना (ताकि उसका हिस्सा भी दिया जा सके), तुम देखते नहीं हो कि मैं पूरा नापकर देता हूँ, और मैं सबसे ज़्यादा मेहमान नवाज़ी करता हूँ।⁶ (59) और अगर तुम (दोबारा आए और) उसको मेरे पास न लाए⁷ तो न मेरे पास तुम्हारे नाम का ग़ल्ला होगा और न तुम मेरे पास आना। (60) वे बोले (देखिए) हम (अपनी कोशिश भर तो) उसके बाप से उसको माँगेंगे और हम (इस काम को) ज़रूर करेंगे। (61) और उन्होंने (यानी यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कह दिया कि उनकी जमा-पूँजी उन (ही) के सामान में (छुपाकर) रख दो, ताकि जब घर जाएँ तो उसको पहचानें, शायद (यह एहसान व करम देखकर) फिर दोबारा आएँ।⁸ (62) गरज़ जब वह लौटकर अपने बाप (याकूब) के पास पहुँचे, कहने लगे ऐ अब्बा!⁹ हमारे लिए (कतई तौर पर) ग़ल्ले की बन्दिश कर दी गई, सो आप हमारे भाई (बिनयामीन) को हमारे साथ भेज दीजिए ताकि हम (फिर) ग़ल्ला ला सकें, और हम उनकी पूरी हिफ़ाज़त रखेंगे। (63) उन्होंने (यानी याकूब अलैहि. ने) फ़रमाया कि बस (रहने दो) मैं इसके बारे में भी तुम्हारा वैसा ही एतिबार करता हूँ जैसा इससे पहले इसके भाई (यूसुफ़) के बारे में तुम्हारा एतिबार कर चुका हूँ। सो अल्लाह (के सुपुर्द, वही) सबसे बढ़कर निगहबान है, और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। (64)

1. खुलासा यह कि मेरी पाकीज़गी और पाकदामनी मेरे नफ्स का ज़ाती कमाल नहीं कि इसके ख़िलाफ़ हो ही न सके, बल्कि अल्लाह की रहमत व इनायत का असर है, इसलिए वह बुराई का हुक्म नहीं करता वरना जैसे औरों के नुफ़ूस हैं वैसा ही मेरा होता।

2. चुनाँचे बजाय इसके कि उनको कोई खास ओहदा देता जैसे अपने पूरे इख़्तियारात हर किस्म के दे दिए, गोया हकीकत में बादशाह यही हो गए। अगरचे बराये नाम वह बादशाह रहा, और यह अज़ीज़ के ओहदे से मशहूर हुए। इससे मालूम हुआ कि जब किसी काम की अपने अन्दर काबलियत देखें तो खुद उसकी दरखास्त जायज़ है, मगर मकसूद नफ़ा पहुँचाना हो, न कि नफ़्स-परवरी।

3. यानी या तो वह वक़्त था कि कुएँ में कैद थे, फिर अज़ीज़ की मातहत में बन्दी रहे, फिर कैदख़ाने में बन्द रहे। और या आज यह खुदमुख्तारी और आज़ादी इनायत हुई।

4. यानी दुनिया में भी नेकी का अज़्र है कि पाकीज़ा ज़िन्दगी अता फ़रमाते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 438 पर)

लहाफिज़ून (63) का-ल हल् आमनुकुम् अलैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अला अखीहि मिन् कब्बु, फल्लाहु खैरुन् हाफिज़व्-व हु-व अर्हमूर्-राहिमीन (64) व लम्मा फ-तहू मता-अहुम् व-जदू बिज़ाअ-तहुम् रुद्दत् इलैहिम्, कालू या अबाना मा नब्बी, हाज़िही बिज़ा-अतुना रुद्दत् इलैना व नमीरु अह्लना व नह्फजु अखाना व नज्दादु कै-ल बअीरिन्, जालि-क कैलुंय्यसीर (65) का-ल लन् उर्सि-लहू म-अकुम् हत्ता तुअतूनि मौसिकम्-मिनल्लाहि ल-तअतुन्ननी बिही इल्ला अय्युहा-त बिकुम् फ-लम्मा आतौहु मौसि-कहुम् कालल्लाहु अला मा नकूलु वकील (66) व का-ल या बनिय्-य ला तदखूलू मिम्-बाबिन्-वाहिदिन्-व दखूलू मिन् अब्बाबिम् मु-तफर्रि-कतिन्, व मा उग्नी अन्कुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन्, इनिल्हुकुम् इल्ला लिल्लाहि, अलैहि तवक्कल्लु व अलैहि फल्य-तवक्कलिल्-मु-तवक्किलून (67) व लम्मा द-खलू मिन् हैसु अ-म-रहुम् अबूहुम्, मा का-न युग्नी अन्हुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् इल्ला हा-जतन् फी नफिस यअक्कू-ब कज़ाहा, व इन्नहू लज़ू अिल्मिल्-लिमा अल्लम्नाहु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअल्लमून (68) ♦

خَيْرُ حِفْظٍ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۝ وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا بَانَ نَابِئِ هَذِهِ بَضَاعُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَنَا وَنَزِدُكَ كَيْلَ بَعِيرٍ ذَلِكَ كَيْلُ يَسِيرٍ ۝ قَالَ لَنْ أَرْسِلَ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝ وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُتَفَرِّقَةٍ ۝ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا يَكْفُرُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةٌ فِي نَفْسٍ يَعْقُوبَ قَضَاهُ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَهَنَّهُمْ بِجَهَارِهِمْ جَعَلَ التَّيْقَانَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيُّهَا الْعِبْرَةُ لَكُمْ لَسَارِقُونَ ۝ كَالْوَأَلَاءِ عَمِلُوا عَلَيْهِمْ مَا إِذَا تَفَقَّدُونَ ۝ قَالُوا تَفَقَّدُ صَوَاءَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ

और (इस गुप्तगू के बाद) जब उन्होंने अपना सामान खोला तो (उसमें) उनको उनकी जमा-पूँजी (भी) मिली कि उन्हीं को वापस कर दी गई। कहने लगे कि ऐ अब्बा! (लीजिए) और हमको क्या चाहिए, यह हमारी जमा-पूँजी भी तो हम ही को लौटा दी गई है, और अपने घर वालों के वास्ते (और) रसद लाएँगे और अपने भाई की खूब हिफाजत रखेंगे, और एक ऊँट का बोझ गल्ला और ज़्यादा लाएँगे, यह थोड़ा-सा गल्ला है। (65) उन्होंने (यानी याकूब अलैहि. ने) फरमाया कि उस वक़्त तक हरगिज़ इसको तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक कि अल्लाह की कसम खाकर मुझको पक्का कौल न दोगे कि तुम इसको ज़रूर ले ही आओगे, हाँ अगर धिर ही जाओ (तो मजबूरी है)। (घुनाँचे सबने इसपर कसम खाई) सो जब वे कसम खाकर उन्हें (यानी अपने बाप को) कौल दे चुके तो उन्होंने फरमाया कि हम लोग जो कुछ बात-चीत कर रहे हैं यह सब अल्लाह ही के हवाले है।¹ (66) और (चलते वक़्त) उन्होंने (यानी याकूब ने उनसे) फरमाया कि ऐ मेरे बेटो! सब-के-सब एक ही दरवाज़े से मत जाना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से जाना,² और मैं खुदा के हुक्म को तुमपर से टाल नहीं सकता। हुक्म तो बस अल्लाह ही का (चलता) है, (बावजूद इस ज़ाहिरी तदबीर के दिल से) उसी पर भरोसा रखता हूँ, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।³ (67) और जब (मिस्र पहुँचकर) जिस तरह उनके बाप ने कहा था (उसी तरह शहर के) अन्दर दाखिल हुए (तो बाप का अरमान पूरा हो गया, बाकी) उनको (यानी उनके बाप को उन्हें यह तदबीर बतलाकर) उनसे खुदा का हुक्म टालना मकसूद न था लेकिन याकूब (अलैहिस्सलाम) के जी में (तदबीर के दर्जे में) एक अरमान (आया) था जिसको उन्होंने ज़ाहिर कर दिया, और वह बेशक बड़े आलिम थे, इस वजह से कि हमने उनको इल्म दिया था,⁴ लेकिन अक्सर लोग इसका इल्म नहीं रखते।⁵ (68) ♦

और जब ये लोग (यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई) यूसुफ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने भाई को अपने साथ मिला लिया (और तन्हाई में उनसे) कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ) हूँ, सो ये लोग जो कुछ (बद-सुलूकी) करते रहे हैं उसका रंज मत करना।⁶ (69) फिर जब उन्होंने (यानी यूसुफ अलैहि. ने) उनका सामान तैयार कर दिया तो पानी पीने का बरतन अपने भाई के सामान में रख दिया।⁷ फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ काफिले वालो! तुम ज़रूर चोर हो। (70) वे उन (तलाश करने वालों) की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई है। (71) उन्होंने कहा कि हमको बादशाही पैमाना नहीं

(पृष्ठ 436 का शेष)

5. गरज़ यूसुफ अलैहिस्सलाम ने बाइख़्तियार होकर गल्ला पैदा कराना और जमा कराना शुरू किया और सात साल के बाद अकाल शुरू हुआ, यहाँ तक कि दूर-दूर से यह ख़बर सुनकर कि मिस्र में हुकूमत की तरफ़ से गल्ला फ़रोख़्त होता है, गिरोह के गिरोह लोग आना शुरू हुए और किनआन में भी अकाल पड़ा तो यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाई बिनयामीन के अलावा गल्ला लेने मिस्र आए। अगली आयतों में दूर तक इसी वाकिए को बयान किया गया है।

6. पस अगर तुम्हारा वह भाई आएगा तो उसको भी पूरा हिस्सा दूँगा, और उसकी खूब खातिर-मुदारात करूँगा, जैसा कि तुमने अपने साथ देखा।

7. तो मैं समझूँगा कि तुम मुझको धोखा देकर गल्ला ज़्यादा लेना चाहते थे।

8. चूँकि यूसुफ अलैहिस्सलाम को उनका दोबारा आना और उनके भाई का लाना मन्ज़ूर था इसलिए कई तरह से इसकी तदबीर की, अव्वल वायदा किया कि अगर उसको लाओगे तो उसका हिस्सा भी मिलेगा। दूसरे यह डॉट-डपट भी दी कि अगर न लाओगे तो अपना हिस्सा भी न पाओगे। तीसरे दाम जो नक़द के अलावा कोई और चीज़ थी वापस कर दिए, दो ख़्याल से एक यह कि इस एहसान व करम को ज़ेहन में रखकर फिर आएँगे, दूसरे इसलिए कि शायद इनके पास और दाम न हों और ख़ाली हाथ होने की वजह से फिर न आ सकें। लेकिन जब यह दाम होंगे तो इन्हीं को लेकर फिर आ सकते हैं।

9. हमारी बड़ी खातिर हुई और गल्ला भी मिला, मगर बिनयामीन का हिस्सा नहीं मिला बल्कि बिना बिनयामीन को साथ लाए आइन्दा भी बन्दिश कर दी गई।

1. यानी वही हमारे कौल व क़रार का गवाह है कि सुन रहा है, और वही इस कौल को (शेष तफ़सीर पृष्ठ 440 पर)

जा-अ बिही हिम्लु बअीरिव्-व अ-न बिही जअीम (72) कालू तल्लाहि ल-कद् अलिम्तुम्
 मा जिअना लिनुफिस-द फिल्अजि व मा कुन्ना सारिकीन (73) कालू फमा जज़ाउहू इन्
 कुन्तुम् काजिबीन (74) कालू जज़ाउहू मंवुजि-द फी रस्लिही फहु-व जज़ाउहू, कज़ालि-क
 नज्जिज़ालिमीन (75) फ-ब-द-अ बिऔअि-यतिहिम् कब्-ल विआ-इ अखीहि
 सुम्मस्तखर-जहा मिंविआ-इ अखीहि,
 कज़ालि-क किद्ना लियूसु-फ, मा का-न
 लियअखु-ज अखाहु फी दीनिल्-मलिकि
 इल्ला अय्यशाअल्लाहु, नरफअु
 द-रजातिम् मन्-नशा-उ, व फौ-क
 कुल्लि जी अलिम्न् अलीम (76) कालू
 इय्यसिरक् फ-कद् स-र-क अखुल्लहू
 मिन् कब्लु, फ-असररहा यूसुफु फी
 नफिसही व लम् युब्दिहा लहुम् का-ल
 अन्तुम् शरुम्-मकानन् वल्लाहु अअ्लमु
 बिमा तसिफून (77) कालू या अय्युहल्-
 अजीजु इन्-न लहू अबन् शैखन्
 कबीरन् फखुज् अ-ह-दना मकानहू इन्ना
 नरा-क मिनल्-मुत्सिनीन (78) का-ल
 मअाजल्लाहि अन् नअखु-ज इल्ला
 मंव-जद्ना मता-अना अिन्दहू इन्ना इजल्-लजालिमीन (79) ♦

وَأَنبِئْهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَقَالَ اللَّهُ لَقَدْ عَلِمْتُمْ أَنِّي أَخْتَلِفُ فِي الْأَرْضِ
 وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ۖ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ۖ قَالُوا
 جَزَاؤُهُ مَنْ وَجَدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَلِكَ نَجْزِي
 الظَّالِمِينَ ۖ قَبْدَ أَبَاوَعْبَةَ رَمَ قَبْلَ وَعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخَرْنَا
 مِنْ وَعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كَذَبْنَا يَوْسُفَ مَا كَانَ يَأْخُذُ أَخَاهُ
 فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَن شَاءَ وَهُوَ
 فَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۖ قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ
 لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَهَا يَوْسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبَيِّهْهَا لَهُمْ ۖ قَالَ
 أَنْتُمْ بَشَرٌ مِثْلُكُمْ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۖ قَالُوا يَا أَيْهَا الْعَزِيزُ إِنْ
 لَكَ آيَاتٌ كَبِيرَةٌ فَخُذْ أَحَدًا مِمَّا كَانَ إِيَّاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۖ
 قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعًا عِنْدَهُ إِلَّا نَجْأَ
 لِدَا الظَّالِمِينَ ۖ فَلَمَّا اسْتَأْذِنُوا مِنْهُ خَلَصُوا مُجْتَعًا قَالَ كَبِيرُهُمْ
 أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ
 قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي
 أَيْنَ أَوْ يَنْهَكُمُ اللَّهُ بِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۖ ارْجِعُوا إِلَى آبَائِكُمْ
 فَقُولُوا يَا أَبَائِنَا إِنَّ ابْنَكُمْ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمْنَا وَمَا

مَرْكُ

मिलता, (वह गायब है) और जो शख्स उसको (लाकर) हाज़िर करे उसको एक ऊँट के बोझ के बराबर गुल्ला मिलेगा, और मैं उस (के दिलवाने) का जिम्मेदार हूँ। (72) ये लोग कहने लगे कि खुदा की कसम तुमको खूब मालूम है कि हम लोग मुल्क में फ़साद फैलाने नहीं आए, और हम लोग चोरी करने वाले नहीं।¹ (73) उन (ढूँढने वाले) लोगों ने कहा (अच्छा) अगर तुम झूठे निकले तो उस चोर की क्या सज़ा? (74) उन्होंने जवाब दिया कि जिस शख्स के सामान में मिले बस वही शख्स अपनी सज़ा है,² हम लोग ज़ालिमों (यानी चोरों) को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं।³ (75) फिर उन्होंने (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) अपने भाई के सामान के थैले से पहले तलाशी की शुरुआत दूसरे भाइयों के (सामान के) थैलों से की, फिर (आखिर में) उस (बरतन को) अपने भाई के (सामान के) थैले से बरामद कर लिया। हमने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की खातिर से इस तरह तदबीर फ़रमाई।⁴ वह (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम) अपने भाई को उस (मिस्र के) बादशाह के कानून की रू से नहीं ले सकते थे,⁵ मगर यह कि अल्लाह ही को मन्ज़ूर था। हम जिसको चाहते हैं (इल्म में) खास दर्जों तक बढ़ा देते हैं, और तमाम इल्म वालों से बढ़कर एक बड़ा इल्म वाला है। (76) कहने लगे, (साहिब) अगर उसने चोरी की तो (ताज्जुब नहीं, क्योंकि) इसका एक भाई (था वह) भी (इसी तरह) इससे पहले चोरी कर चुका है। पस यूसुफ़ ने इस बात को (जो आगे आती है) अपने दिल में पोशीदा रखा और इसको उनके सामने (ज़बान से) ज़ाहिर नहीं किया, यानी (दिल में) यूँ कहा कि उस (चोरी) के दर्जे में तुम तो और भी ज़्यादा बुरे हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो उस (की हकीकत) का अल्लाह ही को खूब इल्म है।⁶ (77) कहने लगे कि ऐ अज़ीज़! इस (बिनयामीन) का एक बहुत बड़ा बाप है, सो (आप ऐसा कीजिए कि) इसकी जगह हम में से एक को रख लीजिए, (और अपना गुलाम बना लीजिए) हम आपको नेक-मिज़ाज देखते हैं। (78) उन्होंने (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐसी (बेइन्साफ़ी की) बात से खुदा बचाए कि जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है उसके सिवा दूसरे शख्स को पकड़ कर रख लें, इस हालत में तो हम बड़े बेइन्साफ़ समझे जाएँगे। (79) ♦

फिर जब उनको उनसे (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से) बिल्कुल उम्मीद न रही (कि बिनयामीन को देंगे) तो (उस जगह से) अलग होकर आपस में मशिवरा करने लगे। उन सबमें जो बड़ा था उसने कहा, क्या तुमको मालूम नहीं तुम्हारे बाप तुमसे खुदा की कसम खिलाकर पक्का कौल ले चुके हैं, और इससे पहले यूसुफ़ के बारे में तुम किस कदर कोताही कर ही चुके हो। सो मैं तो इस ज़मीन से टलता नहीं जब तक कि मेरे बाप मुझको (हाज़िरी की) इजाज़त न दें, या अल्लाह तआला मेरे लिए इस मुश्किल को सुलझा दे, और वही खूब सुलझाने वाला है। (80) तुम वापस अपने बाप के पास जाओ, और (जाकर उनसे) कहो कि अब्बा! आपके साहिबज़ादे

(पृष्ठ 438 का शेष) पूरा कर सकता है। इस इशार्द से दो मकसद हुए, अव्वल अपने कौल का पास व लिहाज़ रखने की तरगीब व तंबीह कि अल्लाह को हाज़िर-नाज़िर समझने से यह बात होती है, और दूसरे इस तदबीर की हद का आखिरी दर्जा तकदीर को करार देना जो कि तवक्कुल का हासिल है। गरज़ मिस्र के सफ़र को मय बिनयामीन सब दोबारा तैयार हुए।

2. बाज़ बुरी चीज़ों जैसे बुरी नज़र वगैरह से बचने की यह सिर्फ़ एक जाहिरी तदबीर है।

3. यानी तुम भी उसी पर भरोसा रखना, तदबीर पर नज़र मत करना।

4. पस वह इल्म के खिलाफ़ तदबीर को एतिकादी तौर पर हकीकतन असर करने वाली कब समझ सकते थे।

5. बल्कि जहालत की वजह से तदबीर को असल असर करने वाली एतिकाद कर लेते हैं। यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि पहली बार जो ये गुल्ला लेने गए थे उस वक़्त याकूब अलैहिस्सलाम ने उनसे यह क्यों न कहा कि एक ही दरवाज़े से दाखिल न होना? इसका जवाब यह है कि पहली बार मिस्र वाले उनको पहचानते नहीं थे, इसलिए किसी ने उनकी तरफ़ ध्यान भी न किया था। इस बार जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने उनके साथ इनायत का खास बर्ताव किया तो उनपर नज़रें पड़ने लगीं, और थे सब हसीन व खूबसूरत, इसलिए बुरी नज़र और हसद वगैरह का अन्देशा हुआ।

6. क्योंकि अब तो अल्लाह ने हमको मिला दिया है, अब सब ग़म भुला देना चाहिए। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ बद-सुलूकी तो ज़ाहिर और मशहूर है, रहा बिनयामीन के साथ या तो (पृष्ठ 438 की बकिया और पृष्ठ 440 की तफ़सीर पृष्ठ 442-446 पर)

इल्ला बिमा अलिम्ना व मा कुन्ना लिलौबि हाफिजीन (81) वस्अलिल्-कर्य-तल्लती कुन्ना फीहा वल्औरल्लती अक्बल्ला फीहा, व इन्ना लसादिकून (82) का-ल बल् सव्वलत् लकुम् अन्फुसुकुम् अमरन्, फ-सब्रुन् जमीलुन्, असल्लाहु अय्यअति-यनी बिहिम् जमीअन्, इन्नहू हुवल् अलीमुल्-हकीम (83) व तवल्ला अन्हुम् व का-ल या अ-सफा अला यूसु-फ वब्यज्जत् औनाहु मिनल्-हुज्जिन फहु-व कजीम (84) कालू तल्लाहि तफ़तउ तज़्कुरु यूसु-फ हत्ता तकू-न ह-रज़न् औ तकू-न मिनल्-हालिकीन (85) का-ल इन्नमा अशकू बस्सी व हुज्जी इलल्लाहि व अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून (86) या बनिय्यज़हबू फ-तहस्ससू मिय्यूसु-फ व अखीहि व ला तै-असू मिर्रौहिल्लाहि, इन्नहू ला यै-असू मिर्रौहिल्लाहि इल्लल् कौमुल्-काफिरून (87) फ-लम्मा द-खलू अलैहि कालू या अय्युहल्-अजीजु मस्सना व अहल-नज़्जुरु व जिअना बिबिज़ा-अतिम्-मुज़्जातिन् फऔफि लनल्कै-ल व तसदक् अलैना, इन्नल्ला-ह यज़्जिल् मु-तसद्विकीन (88) का-ल हल् अलिम्तुम् मा फअल्लुम् बियूसु-फ व अखीहि इज़् अन्तुम् जाहिलून (89) कालू अ-इन्न-क ल-अन्-त यूसुफ़, का-ल अ-न यूसुफ़ व हाज़ा अखी, कद् मन्नल्लाहु अलैना, इन्नहू मय्यत्तकि व यस्बिर् फ-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज़रल्-मुहिसनीन (90) कालू तल्लाहि ल-कद् आस-रकल्लाहु अलैना व इन् कुन्ना लखातिईन (91) का-ल ला तसरी-ब

لَكَ الْغَيْبِ خُفَيِّينَ ۝ وَسَأَلَ الْقُرَيْظَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْغِي
الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِلَّا الصِّدْقُونَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ
أَنْفُسُكُمْ أَمْراً ۝ فَصَدَّ عَنْهُمْ يُوْسُفُ ۝ عَنِ اللَّهِ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ
جَمِيعاً ۝ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَكَوَلَى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَقَى
عَلَى يُوْسُفَ ۝ وَابْيَضَّتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَاطِمٌ ۝
قَالُوا وَاللَّهِ تَفَنُّوا ۝ أَنْذَرْتُكُمْ يُوْسُفَ حَتَّى تَكُونُ حَرَصًا ۝ أَوْ
تَكُونُ مِنَ الْهَالِكِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي
إِلَى اللَّهِ ۝ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ يَبْقَى أَفْعَبُ ۝ فَتَحَسَّسُوا
مِنْ يُوْسُفَ ۝ وَأَخْبَهُ ۝ وَلَا تَأْتِسُوا مِنْ رُوحِ اللَّهِ ۝ إِنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
مِنْ رُوحِ اللَّهِ ۝ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا
يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسْنَا ۝ وَأَهْلْنَا الضَّرَّ ۝ وَجِئْنَا بِضَاعَةٍ مُزْجَاةٍ
فَأَوْفِنَا الْكَفِيلَ ۝ وَصَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُخْرِى الْمُتَصَدِّقِينَ ۝
قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ يُوْسُفَ ۝ وَأَخْبَهُ ۝ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ۝
قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوْسُفَ ۝ قَالَ أَنَا يُوْسُفَ ۝ وَهَذَا أَخِي ۝ قَدْ
مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۝ إِنَّهُ مِنْ يَتَّى ۝ وَيَصِدُّ ۝ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالُوا وَاللَّهِ لَقَدْ أَثَرْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا ۝ وَإِنْ كُنَّا

(बिनयामीन) ने चोरी की, (इसलिए गिरफ्तार हुए) और हम तो वही बयान करते हैं जो हमको (देखने से) मालूम हुआ है, और हम ग़ैब की बातों के तो हाफ़िज़ नहीं थे। (81) और उस बस्ती (यानी मिस्र) वालों से पूछ लीजिए जहाँ हम (उस वक़्त) मौजूद थे, और उस काफ़िले वालों से पूछ लीजिए जिनमें हम शामिल होकर (यहाँ) आए हैं।¹ और यकीन जानिए कि हम बिल्कुल सच कहते हैं। (82) वह (यानी याकूब अलैहिस्सलाम) फ़रमाने लगे कि बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली, सो सब्र ही करूँगा, (जिसमें शिकायत का नाम न होगा), (मुझको) अल्लाह से उम्मीद है कि उन सबको मुझ तक पहुँचा देगा, (क्योंकि) वह ख़ूब वाकिफ़ है,² बड़ी हिक़मत वाला है।³ (83) और उनसे दूसरी तरफ़ रुख़ कर लिया और कहने लगे कि हाय यूसुफ़, अफ़सोस! और ग़म से (रोते-रोते) उनकी आँखें सफ़ेद पड़ गईं, और वह (ग़म से जी ही जी में) घुटा करते थे।⁴ (84) (बेटे) कहने लगे, खुदा की क़सम (मालूम होता है) तुम हमेशा ही यूसुफ़ की यादगारी में लगे रहोगे, यहाँ तक कि धूल-धूलकर जान होंठों पर आ जाएगी या यह कि बिल्कुल मर ही जाओगे।⁵ (85) उन्होंने (यानी याकूब अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि मैं तो अपने रंज व ग़म की सिर्फ़ अल्लाह से शिकायत करता हूँ और अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (86) ऐ मेरे बेटो! जाओ यूसुफ़ और उनके भाई की तलाश करो, और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वही लोग नाउम्मीद होते हैं जो काफ़िर हैं। (87) फिर जब वे उनके (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के) पास पहुँचे। कहने लगे ऐ अज़ीज़! हमको और हमारे घर वालों को (अकाल की वजह से) बड़ी तकलीफ़ पहुँच रही है, और हम कुछ यह निकम्मी “यानी बेकार-सी और मामूली” चीज़ लाए हैं, सो आप पूरा ग़ल्ला दे दीजिए और हमको ख़ैरात (समझकर) दे दीजिए, बेशक अल्लाह तआला ख़ैरात देने वालों को (बेहतरीन) बदला देता है।⁶ (88) उन्होंने (यानी यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया, (कहो) वह भी तुमको याद है जो कुछ तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ (बर्ताव) किया था, जबकि तुम्हारी जहालत का ज़माना था।⁷ (89) कहने लगे, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ़ हो। उन्होंने फ़रमाया, (हाँ) मैं यूसुफ़ हूँ और यह (बिनयामीन) मेरा (हकीकी) भाई है। हमपर अल्लाह तआला ने बड़ा एहसान किया,⁸ वाकई जो शख्स गुनाहों से बचता है और सब्र करता है तो अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों का अज़्र ज़ाया नहीं किया करता।⁹ (90) वे कहने लगे कि खुदा की क़सम कुछ शक़ नहीं कि तुमको अल्लाह तआला ने हमपर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई,¹⁰ और बेशक हम (इसमें) ख़तावार थे। (91) उन्होंने

(पिछले पृष्ठ का शेष) उनको भी कुछ तकलीफ़ दी हो, वरना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई, क्या उनके हक़ में कुछ कम तकलीफ़ थी। फिर दोनों भाइयों ने मशिवरा किया कि कोई ऐसी सूरत हो कि बिनयामीन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास रहें, क्योंकि वैसे रहने में तो और भाइयों के क़सम खाने और कौल व क़रार की वजह से इसरार होगा, नाहक़ का झगड़ा होगा। फिर अगर वजह भी ज़ाहिर हो गई तो राज़ खुला और अगर पोशीदा रही तो याकूब अलैहिस्सलाम का रंज बढ़ेगा कि बिला सबब क्यों रखे गए या क्यों रहे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तदबीर तो है मगर ज़रा-सी तुम्हारी बदनामी है। बिनयामीन ने कहा, कुछ परवाह नहीं। गरज़ उनमें यह मामला क़रार पा गया जिसका बयान अगली आयत में है।

7. वही बरतन पैमाना ग़ल्ला देने का भी था।

(तफ़सीर पृष्ठ 440).

1. यानी हमारा यह तरीका और आदत नहीं।

2. यानी चोरी के बदले में खुद उसकी ज़ात को माल वाला अपना गुलाम बना ले।

3. यानी हमारी शरीअत में यही मसला और अमल है।

4. यानी अगरचे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम बड़े आलिम व अक़लमन्द थे, मगर फिर भी हमारी तरफ़ से तदबीर सुझाए जाने के मोहताज थे, इसलिए कि किसी का इल्म ज़ाती और ग़ैर-महदूद नहीं।

5. दुरें मन्सूर में मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल किया गया है कि मिस्र का बादशाह मुसलमान हो गया था, लेकिन ‘मा का-न लियाअखु-ज़...’ से मालूम होता है कि यह रिवायत सही नहीं, (पृष्ठ 440 की बकिया और पृष्ठ 442 की तफ़सीर पृष्ठ 444-448 पर)

अलैकुमुल्-यौ-म, यगिफरुल्लाहु लकुम् व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन (92) इज्हबू बि-कमीसी हाजा फअल्कूहु अला वजिह-अबी यअति बसीरन् वअतूनी बिअह्लिकुम् अज्मअीन (93) ♦

व लम्मा फ-स-लतिल्-अीरु का-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ लौ ला अन् तुफन्निदून (94) कालू तल्लाहि इन्न-क लफी जलालिकल्-कदीम ♦ (95) फ-लम्मा अन्

जाअल्-बशीरु अल्काहु अला वजिही फरतद्-द बसीरन्, का-ल अलम् अकुल् लकुम् इन्नी अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला

तअ्लमून (96) कालू या अबानस्तगिफ्र लना जुनूबना इन्ना कुन्ना खातिईन

(97) का-ल सौ-फ अस्तगिफ्र लकुम् रब्बी, इन्नहू हुवल् गफूररहीम (98)

फ-लम्मा द-खालू अला यूसु-फ आवा इलैहि अ-बवैहि व कालदखुलू मिस्र-र

इन्शा-अल्लाहु आमिनीन (99) व र-फ-अ अ-बवैहि अलल्- अर्शि व

खर्स् लहू सुज्जदन् व का-ल या अ-बति हाजा तअ्वीलु रुअ्या-य मिन् कब्लु,

कद् ज-अ-लहा रब्बी हक्कन्, व कद् अह्स-न बी इज् अखर-जनी मिनस्सिज्जि

व जा-अ बिकुम् मिनल्बद्वि मिम्-बअदि अन् न-जगशशैतानु बैनी व बै-न इख्वती, इन्-न

रब्बी लतीफुल्लिमा यशा-उ, इन्नहू हुवल् अलीमुल्-हकीम (100) रब्बि कद् आतैतनी मिनल्मुल्कि व अल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिल्- अहादीसि फातिरस्समावाति वल्अर्जि, अन्-त

वलिय्यी फिद्दुन्या वल्आखिरति तवप्फनी मुस्लिमव्-व अल्हक्नी बिस्सालिहीन (101)

وَسَاءِلُ ۞ قَالَ لَا تَأْتِيَنَّكَ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ
أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۞ إِذْ هَبُوا بَقِيَعِي هَذَا فَالْقُوَّةُ عَلَى وَجْهِ
أَبِي يَأْتِي بَصِيرًا ۞ وَأَتَوْنِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ۞ وَلَمَّا فَصَلَتِ
الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُقَدِّمُونِ
فَالْوَأْتِلُ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ۞ فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ
أَلْقَاهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۞ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي
أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۞ قَالُوا يَا بَنَا آدَمَ اسْتَغْفِرْنَا ذُنُوبَنَا
إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ۞ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ
الرَّحِيمُ ۞ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَبَوَاهُ وَقَالَ
ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ۞ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى
الْعَرْشِ وَخَرَّوَالَهُ سُجَّدًا ۞ وَقَالَ يَا بَنِي هَذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ
مِنْ قَبْلُ ۞ قَدْ جَعَلَهَا رُبِّي حَقًّا وَقد أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي
مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ
بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۞ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ
الْحَكِيمُ ۞ رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ
الْأَحَادِيثِ ۞ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۞ أَنْتَ وَلِيَّ الدُّنْيَا

(यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम) ने फरमाया कि तुमपर आज कोई इल्जाम नहीं,¹ अल्लाह तआला तुम्हारा कुसूर माफ करे, और वह सब मेहरबानों से ज्यादा मेहरबान है।² (92) अब तुम मेरा यह कुर्ता (भी) लेते जाओ और इसको मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, (इससे) उनकी आँखें रोशन हो जाएँगी,³ और अपने (बाकी) घर वालों को (भी) सबको मेरे पास ले आओ। (93) ♦

और जब काफिला चला तो उनके बाप ने कहना शुरू किया कि अगर तुम मुझको बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो (एक बात कहूँ कि) मुझको तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की खुशबू आ रही है।⁴ (94) वे (पास वाले) कहने लगे कि खुदा की कसम आप तो अपने उसी पुराने ग़लत ख्याल में मुब्तला हैं। ♦ (95) पस जब खुशख़बरी लाने वाला आ पहुँचा तो (आते ही) उसने वह कुर्ता उनके मुँह पर (लाकर) डाल दिया। पस फौरन ही उनकी आँखें खुल गईं, और (बेटों से) फरमाया, क्यों मैंने तुमसे कहा न था कि अल्लाह तआला की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (96) सब बेटों ने कहा कि ऐ हमारे बाप! हमारे लिए (खुदा से) हमारे गुनाहों की मग़्फ़िरत की दुआ कीजिए, हम बेशक ख़तावार थे।⁵ (97) उन्होंने (यानी याकूब अलैहिस्सलाम ने) फरमाया जल्द ही तुम्हारे लिए अपने रब से मग़्फ़िरत की दुआ करूँगा, बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।⁶ (98) फिर जब ये सब-के-सब यूसुफ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने माँ-बाप को (अदब के तौर पर) अपने पास जगह दी, और कहा कि सब मिस्र में चलिए (और) खुदा को मन्ज़ूर है तो (वहाँ) अमन-चैन से रहिए। (99) और अपने माँ-बाप को (शाही) तख़्त पर ऊँचा बिठाया, और सब-के-सब उनके (यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम के) आगे सन्धे में गिर गए,⁷ और उन्होंने (यानी यूसुफ अलैहिस्सलाम ने) कहा कि ऐ मेरे अब्बा! यह है मेरे ख्वाब की ताबीर जो पहले ज़माने में देखा था, जिसको मेरे रब ने सच्चा कर दिया। और उसने (यानी खुदा ने) मेरे साथ एहसान किया कि (एक तो) उसने मुझे कैद से निकाला और (दूसरा यह कि) तुम सबको बाहर से (यहाँ) लाया। (यह सब कुछ) इसके बाद (हुआ) कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच फ़साद डलवा दिया था,⁸ बेशक मेरा रब जो चाहता है उसकी उम्दा तदबीर करता है, बेशक वह बड़ा इल्म वाला (और) हिक्मत वाला है।⁹ (100) ऐ मेरे परवर्दिगार! तूने मुझको हुक्मत का बड़ा हिस्सा दिया और मुझको ख्वाबों की ताबीर देना तालीम फरमाया (जो कि एक बड़ा इल्म है), ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू मेरा कारसाज़ है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, मुझको पूरी फरमाँबरदारी की हालत में दुनिया से उठा ले और मुझको खास नेक बन्दों में शामिल कर ले।¹⁰ (101) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम!) यह किस्सा ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम आपको वह्य के ज़रिये से बतलाते

(पिछले पृष्ठ का शेष) वरना इस्लाम के बाद अपना क़ानून ग़ैर-शरई क्यों रखता। अलबत्ता अगर यह कहा जाए कि आम रिआया से मग़लूब रहा हो इसलिए क़ानून जारी न कर सका हो तो मुम्किन है। दूसरे यह कि यूसुफ अलैहिस्सलाम अपना शरई क़ानून जारी करने के मुख़्तार न थे तो हुक्मत का ओहदा क्यों लिया। जवाब यह है कि शरई क़ानून जारी न करने से यह लाज़िम नहीं आता कि ग़ैर-शरई क़ानून जारी करते हों, और एतिराज़ का मक़ाम यह दूसरी चीज़ हो सकती है। दूसरे जहाँ शरई तौर पर हद 'यानी इस्लामी सज़ा का क़ानून' हो और क़ानून सज़ा हो और हद का इख़्तियार न हो तो सज़ा के न होने से उसका वजूद ग़नीमत है, उसको ग़ैर-मुख़्तार के लिए बग़ैर शरई क़ानून का हाकिम न कहेंगे।

6. यानी हम दोनों भाइयों से तो चोरी का जुर्म नहीं हुआ और तुमने तो इतना बड़ा काम किया कि कोई माल ग़ायब करता है तुमने तो आदमी ग़ायब कर दिया कि मुझको बाप से बिछड़ा दिया। और जाहिर है कि आदमी की चोरी माल की चोरी से ज्यादा बुरी है। और यूसुफ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने यह जो कहा कि इसके भाई ने भी चोरी की थी, इसकी हकीकत दुर्गे मन्सूर में यह लिखी है कि यूसुफ अलैहिस्सलाम को उनकी फूफी परवरिश करती थी, जब होशियार हुए तो याकूब अलैहिस्सलाम ने उन्हें वापस लेना चाहा, लेकिन वह अपने पास रखना चाहती थीं इसलिए उनकी कमर में एक पटका कपड़ों के अन्दर बाँधकर मशहूर कर दिया कि पटका गुम हो गया, और जब तलाशी ली तो उनकी कमर में निकला (पृष्ठ 440 की बक़िया और पृष्ठ 442, 444 की तफ़सीर पृष्ठ 446-450 पर)

जालि-क मिन् अम्बाइल्लैबि नूहीहि इलै-क व मा कुन्-त लदैहिम् इज् अज्मअू अम्रहुम् व हुम् यम्कुरून (102) व मा अक्सरुन्नासि व लौ हरस्-त बिमुअमिनीन (103) व मा तस्अलुहुम् अलैहि मिन् अजिन्, इन् हु-व इल्ला जिक्कल्-लिल्-आलमीन (104) ♦

व क-अय्यिम्-मिन् आयतिन् फिस्समावाति वल्अर्जि यमुरू-न अलैहा व हुम् अन्हा मुअ्रिजून (105) व मा युअमिन् अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला व हुम् मुशिरकून (106) अ-फ-अमिन् अन् तअत्ति-यहुम् गाशि-यतुम् मिन् अजाबिल्लाहि औ तअत्ति-यहुमुस्साअतु बग्त-तंव-व हुम् ला यशअुरून (107) कुल् हाजिही सबीली अद्अू इलल्लाहि, अला बसीरतिन् अ-न व मनित्त-ब-अनी, व सुब्हानल्लाहि व मा अ-न मिनल्-मुशिरकीन (108) व मा अर्सल्ला मिन् कब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्कुरा, अ-फलम् यसीरु फिल्अर्जि फ-यन्जुरू कै-फ का-न आकि-बतुल्लजी-न मिन् कब्लिहिम्, व लदारुल्-आखिरति खैरुल्-लिल्लजीनत्तकौ, अ-फला तअक्किलून (109) हत्ता इजस्तै-असर्-रुसुलु व जन्नू अन्नहुम् कद् कुजिबू जा-अहुम् नस्रुना फनुज्जि-य मन् नशा-उ, व ला युरद्दु बअसुना अनिल् कौमिल्-मुज्जिमीन (110) ल-कद् का-न फी क-ससिहिम् अिब्रतुल्-लिउलिल्-अल्बाबि, मा का-न हदीसंयुफ्तरा व लाकिन् तस्दीक्ल्लजी बै-न यदैहि व तप्सी-ल कुल्लि शैइव्-व हुदव्-व रहम्-तल् लिक्कौमिय्युअमिन्नू (111) ♦

وَالْآخِرَةُ تَوَفِّيٰ مُسْلِمًا ۖ وَالْحَقَّقِي بِالطَّلِحِينَ ۖ ذٰلِكَ مِنْ اٰتِآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذَا جُمِعُوْا اَمْرُهُمْ وَهُمْ يَنْكُرُوْنَ ۚ وَمَا اَكْثَرَ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَا تَنْتَلِهْمُ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۚ وَكَآيِنٌ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۚ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۚ اَفَاَمِنُوْا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۚ قُلْ هٰذِهِ سَبِيْلِيْ ۙ اَدْعُوْا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنْ اَتَّبَعَنِ ۚ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۚ وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْ اِلَيْهِمْ مِنْ اٰهْلِ الْقُرْاٰنِ ۚ اَفَلَمْ يَسِيرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰتَقُوْا ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۚ حَتّٰى اِذَا السَّآئِسُ الرَّسُلَ وَظَنُّوْا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوْا ۚ جَاءَهُمْ نَصْرٌ مِّنَّا فَفُتِحِيَ مِّنْ ثَمَرَةٍ وَّلَا يَرُدُّ بِاسْتِغَاثِ النَّاسِ الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۚ لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولٰٓئِ الْاَلْبَابِ

مَزَك

हैं, (और) आप उन (यूसुफ के भाइयों) के पास उस वक्त मौजूद न थे जबकि उन्होंने अपना इरादा पुख्ता कर लिया था और वे तदबीरें कर रहे थे।¹ (102) और अक्सर लोग ईमान नहीं लाते गो आपका कैसा ही जी चाहता हो। (103) और आप उनसे इसपर कुछ मुआवज़ा तो चाहते नहीं। यह (कुरआन) तो तमाम जहान वालों के लिए सिर्फ नसीहत है। (104) ♦

और बहुत-सी निशानियाँ हैं आसमानों में और ज़मीन में, जिनपर उनका गुज़र होता रहता है,² और वे उनकी तरफ़ (बिलकुल) तवज्जोह नहीं करते। (105) और अक्सर लोग जो खुदा को मानते भी हैं तो इस तरह कि शिर्क भी करते जाते हैं।³ (106) सो क्या फिर भी इस बात से मुत्मइन हुए (बैठे) हैं कि उनपर खुदा के अज़ाब की कोई ऐसी आफ़त आ पड़े जो उनको घेर ले या उनपर अचानक कियामत आ जाए और उनको (पहले से) ख़बर भी न हो।⁴ (107) आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा रास्ता है, मैं (लोगों को) खुदा की (तौहीद की) तरफ़ इस तौर पर बुलाता हूँ कि मैं दलील पर कायम हूँ, मैं भी और मेरे साथ वाले भी,⁵ और अल्लाह (शिर्क से) पाक है और मैं मुशिरकों में से नहीं हूँ।⁶ (108) और हमने आपसे पहले मुख़्तलिफ़ बस्ती वालों में से जितने (रसूल) भेजे सब आदमी ही थे (कोई भी फ़रिश्ता न था), और (ये लोग जो बेफ़िक्र हैं, तो) क्या ये लोग मुल्क में (कहीं) चले-फिरे नहीं कि (अपनी आँखों से) देख लेते कि उन लोगों का कैसा (बुरा) अन्जाम हुआ जो इनसे पहले (काफ़िर) हो गुज़रे हैं, और अलबत्ता आख़िरत की दुनिया उन लोगों के लिए निहायत ख़ैर व फ़लाह की चीज़ है जो एहतियात रखते हैं, सो क्या तुम इतना भी नहीं समझते।⁷ (109) यहाँ तक कि जब पैग़म्बर (इस बात से) मायूस हो गए और उन पैग़म्बरों को गुमान ग़ालिब हो गया कि हमारी समझ ने ग़लती की, उनको हमारी मदद पहुँची,⁸ फिर (उस अज़ाब से) हमने जिसको चाहा वह बचा लिया गया,⁹ और हमारा अज़ाब मुज़्रिम लोगों से नहीं हटता।¹⁰ (110) उन (नबियों और पहली उम्मतों) के किस्से में समझदार लोगों के लिए (बड़ी) इब्रत है। यह कुरआन (जिसमें किस्से हैं) कोई घड़ी हुई बात तो है नहीं (कि इससे इब्रत न होती) बल्कि इससे पहले जो (आसमानी) किताबें हो चुकी हैं यह उनकी तस्दीक़ करने वाला है और हर ज़रूरी बात का खुलासा करने वाला है, और ईमान वालों के लिए हिदायत का ज़रिया और रहमत है। (111) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

और उस शरीअत के कानून के मुवाफ़िक़ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को फूफ़ी के कब्जे में रहना पड़ा, यहाँ तक कि उनकी फूफ़ी ने वफ़ात पाई और आप याकूब अलैहिस्सलाम के पास आ गए।

(तफ़सीर पृष्ठ 442)

1. मालूम होता है कि किनआन या आस-पास के और लोग भी ग़ल्ला लेने गए होंगे।

2. इसलिए उसको सबकी ख़बर है कि कहाँ-कहाँ और किस-किस हाल में हैं।

3. वह जब मिलाना चाहेगा तो हज़ारों असबाब व तदबीरें दुरुस्त कर देगा।

4. क्योंकि ज़्यादा रोने से आँखों की सियाही गुम हो जाती है और आँखें बेरौनक़ या बिलकुल बेनूर हो जाती हैं, और गुम की शिद्दत के साथ जब बर्दाश्त भी शिद्दत की होगी जैसा कि साबिरीन की शान है तो कज़्म (यानी घुटन) की कैफ़ियत पैदा होगी।

5. याकूब अलैहिस्सलाम का मख़्लूक की मुहब्बत में इस क़दर रोना वस्वसे का सबब न हो, क्योंकि मुहब्बत एक बेइख़्तियारी चीज़ है और रोना भी दिल के नर्म होने और रहम की दलील है, और खासकर उस वक्त जबकि मुहब्बत का सबब कोई दीनी मामला हो। और किसी को शुब्हा न हो कि जब याकूब अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था: 'फ़-सब्क़ु ज़मील' तो फिर ज़बान पर शिकायत क्यों लाए। इसका जवाब खुद कुरआन में है कि: 'अश्कू बस्ती व हुज़्नी इलल्लाहि' यानी मख़्लूक के पास शिकायत ले जाना सब्र ज़मील के मनाफ़ी है न कि ख़ालिफ़ की तरफ़ रज़ू करना, इसलिए कि यह तो दुआ और अल्लाह से माँगना है जो कि मतलूब है।

6. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जो उनके ये आज़िज़ी भरे अल्फ़ाज़ सुने तो न रहा गया और बेइख़्तियार चाहा कि अब उनसे खुल जाऊँ और अज़ब नहीं कि दिल के नूर से मालूम हो गया हो कि इस बार उनको तजस्सुस भी है, और यह मालूम हो गया हो कि अब जुदाई का ज़माना ख़त्म हो चुका। पस तआरुफ़ (परिचय) की तम्हीद के तौर पर यह बात फ़रमाई जो अगली आयत में ज़िक्र है।

7. यह सुनकर चकराए कि अज़ीज़े मिस्र को (पृष्ठ 442 की बक़िया और पृष्ठ 444, 446 की तफ़सीर पृष्ठ 448-454 पर)

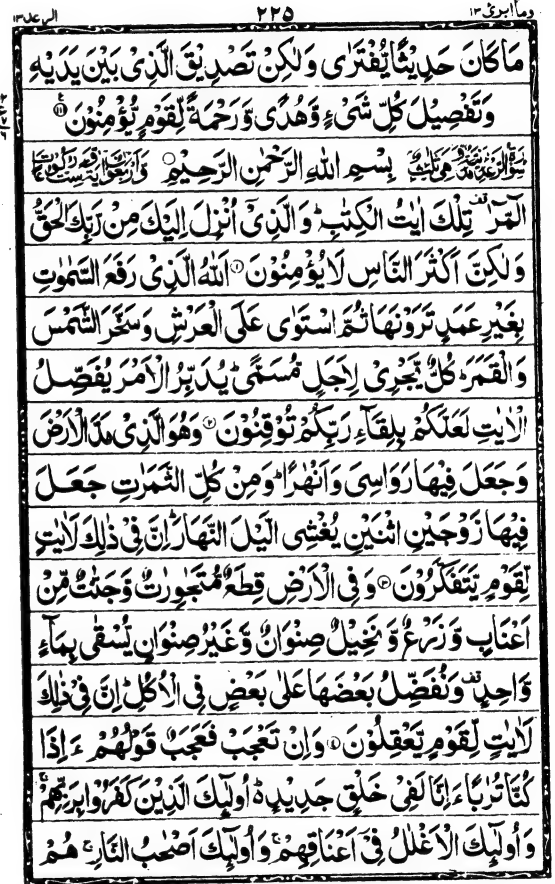
13 सूरतुर-रअदि 96

(मदनी) इस सूर: में अरबी के 3614 अक्षर, 863 शब्द, 43 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

आलिफ़-लाम्-मीम्-रा, तिल्-क
आयातुल्-किताबि, वल्लज़ी उन्ज़ि-ल
इलै-क मिर्रब्बिकल्-हक्कु व लाकिन्-न
अक्सरन्नासि ला युअ्मिनुन (1)
अल्लाहुल्लज़ी र-फ़अस्समावाति बिगैरि
अ-मदिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अलल्-
अर्शि व सख़्ख़ारश्शम्-स वल्क-म-र,
कुल्लुंय्यजरी लि-अ-जलिम्-मुसम्मन्,
युदब्बिरुल्-अम्-र युफस्सिलुल्-आयाति
लअल्लकुम् बिलिका-इ रब्बिकुम् तूकिनून
(2) व हुवल्लज़ी मदल्-अर-ज व
ज-अ-ल फीहा रवासि-य व अन्हारन्,
व मिन् कुल्लिस्स-मराति ज-अ-ल फीहा
जौजैनिस्नैनि युशिल्लैलन्नहा-र, इन्-न
फी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकौमिंय्-

य-तफक्कखन (3) व फिल्अर्जि कि-तअुम् मु-तजाविरातुं-व जन्नातुम्-मिन् अअ्नाबिं-व
ज़रअुं-व नखीलुन् सिन्वानुं-व गैरु सिन्वानिंय्युस्का बिमाइव्वाहिदिन्, व नुफज़्जिलु बअ्जहा
अला बअ्जिन् फिल्उकुलि, इन्-न फी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकौमिंय्यअ्किलून (4) व इन्
तअ्जब् फ-अ-जबुन् कौलुहुम् अ-इज़ा कुन्ना तुराबन् अ-इन्ना लफी खल्किन् जदीदिन्,
उलाइ-कल्लज़ी-न क-फरु बिरब्बिहिम् व उलाइकल्-अलालु फी अअ्नाकिहिम् व उलाइ-क



13 सूर: रअद 96

सूर: रअद मदीना में नाज़िल हुई। इसमें 43 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ्-लाम्-मीम्-रा।¹ यह (जो आप सुन रहे हैं) आयतें हैं (एक बड़ी) किताब (यानी कुरआन) की, और जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ से नाज़िल किया जाता है बिल्कुल सच है, और लेकिन बहुत-से आदमी ईमान नहीं लाते। (1) अल्लाह ऐसा (कादिर है) कि उसने आसमानों को बिना सुतून के ऊँचा खड़ा कर दिया, चुनाँचे तुम इन (आसमानों) को (इसी तरह) देख रहे हो, फिर अर्श पर कायम हुआ,² और सूरज व चाँद को काम में लगा दिया, हर एक मुकर्ररा वक़्त पर चलता रहता है।³ वही (अल्लाह) हर काम की तदबीर करता है, (और) दलीलों को साफ़-साफ़ बयान करता है ताकि तुम अपने रब के पास जाने का यकीन कर लो।⁴ (2) और वह ऐसा है कि उसने ज़मीन को फैलाया और उस (ज़मीन) में पहाड़ और नहरें पैदा कीं, और उसमें हर किस्म के फूलों से दो-दो किस्म के पैदा किए,⁵ रात (की अँधेरी) से दिन (की रोशनी) को छुपा देता है। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में सोचने वालों के (समझने के) वास्ते (तौहीद पर) दलीलें (मौजूद) हैं। (3) और ज़मीन में पास-पास (और फिर) मुख़्तलिफ़ टुकड़े हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ हैं और खजूरें हैं, जिनमें बाज़े तो ऐसे हैं कि एक तने से ऊपर जाकर दो तने हो जाते हैं और बाज़े में दो तने नहीं होते,⁶ सबको एक ही तरह का पानी दिया जाता है, और हम एक को दूसरे पर फलों में फौकियत “यानी बरतरी” देते हैं। इन (ज़िक्र हुए) उमूर में (भी) समझदारों के वास्ते (तौहीद की) दलीलें (मौजूद) हैं।⁷ (4) और (ऐ मुहम्मद!) अगर आपको ताज्जुब हो तो (वाकई) उनका यह कौल ताज्जुब के लायक है कि जब हम खाक हो गए तो क्या हम फिर (क़ियामत के दिन) नए सिरे से पैदा होंगे। ये वे लोग हैं कि उन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया और ऐसे लोगों की गर्दनो में (दोज़ख़ में) तौक डाले जाएँगे, और ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं (और) वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5) और ये लोग आफ़ियत से पहले आपसे मुसीबत (के नाज़िल होने) का तकाज़ा करते

(पिछले पृष्ठ का शेष) यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वाकिए से क्या सरोकार? उधर उस शुरू के ज़माने के ख़ाब से इहतिमाल था ही कि शायद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम किसी बड़े रुतबे को पहुँचें और हम सबको उनके सामने गर्दन झुकानी पड़े, इसलिए इस बात से शक़ हुआ और ग़ौर किया तो कुछ-कुछ पहचाना और वह बात कही जिसका आगे ज़िक्र है।

8. यानी हम दोनों को अब्बल सब्र व तक्वे की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, फिर उसकी बरक़त से हमारी तकलीफ़ को राहत से और फूट को इजतिमा (संगठन) से और माल व ओहदे की कमी को माल व ओहदे की ज़्यादती से तब्दील फ़रमा दिया।

9. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई पिछले तमाम वाक़िआत को याद करके शर्मिन्दा हुए और माज़िरत के तौर पर वह बात कहने लगे जो अगली आयत में है।

10. और वाकई आप इसी लायक थे।

(तफ़सीर पृष्ठ 444)

1. यानी बेफ़िक्र रहो मेरा दिल साफ़ हो गया।

2. इसी दुआ से यह भी समझ में आ गया कि मैंने भी माफ़ कर दिया।

3. यह इसलिए फ़रमाया कि उनको बीनाई में ख़राबी आने का इल्म हो गया होगा, और याकूब अलैहिस्सलाम का उस कुर्ते के डालने से बीना (यानी देखने वाला) हो जाना मोज़िजे के तौर पर था, और सही रिवायतों की बुनियाद पर कुर्ता कोई ख़ास न था, यही मामूली पहनने का था।

4. यह याकूब अलैहिस्सलाम का मोज़िजा था कि उस कुर्ते में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बदन का जो असर था वह महसूस हो गया, और चूँकि मोज़िजा इख़्तियारी नहीं होता इसलिए उससे पहले यह एहसास न हुआ।

5. मतलब यह कि आप भी माफ़ कर दीजिए, क्योंकि आदतन किसी के लिए इस्तिग़फ़ार वही करता है जो खुद भी कोई दारोगीर और पकड़ करना नहीं चाहता। (पृष्ठ 444 की बक़िया और पृष्ठ 446, 448 की तफ़सीर पृष्ठ 450-456 पर)

अस्हाबुन्नारि हुम् फीहा खालिदून (5) व यस्तअजिलून-क बिस्सथि-अति कब्लल्-ह-सनति
व कद् खलत् मिन् कब्लिहिमुल्-मसुलातु, व इन्-न रब्ब-क लजू मग्फि-रतिल् लिन्नासि अला
जुल्मिहिम् व इन्-न रब्ब-क ल-शदीदुल्-अिकाब (6) व यकूलुल्लजी-न क-फरु लौ ला
उन्जि-ल अलैहि आयतुम्-मिररब्बिही,
इन्नमा अन्-त मुन्जिरुव्-व लिकुल्लि
कौमिन् हाद (7) ♦

अल्लाहु यअलमु मा तस्मिलु कुल्लु
उन्सा व मा तगीजुल्-अरहामु व मा
तज्दादु, व कुल्लु शैइन् अिन्दहू
बिमिकदार (8) अालिमुल्- गैबि
वशहादतिल् कबीरुल्-मु-तआल (9)

सवाउम्-मिन्कुम् मन् अ-सरल्-कौ-ल व
मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व
मुस्तखिफम् बिल्लैलि व सारिबुम्-बिन्नहार
(10) लहू मुअकिक्बातुम् मिम्-बैनि
यदैहि व मिन् खल्फिही यस्फजूनहू मिन्
अम्रिल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युगय्थिरु मा
बिकौमिन् हत्ता युगय्थिरु मा
बिअन्फुसिहिम्, व इजा अरादल्लाहु

बिकौमिन् सूअन् फला म-रद्-द लहू व मा लहुम् मिन् दूनिही मिंवाल् (11) हुवल्लजी
युरीकुमुल्- बर-क खौफव्-व त-म-अंव्-व युन्शिउस्- सहाबस्- सिकाल (12) व
युसब्बिहुरअदु बिहम्दिही वल्मलाइ-कतु मिन् खीफतिही व युसिलुस्सवाअि-क फयुसीबु बिहा
मय्यशा-उ व हुम् युजादिलू-न फिल्लाहि व हु-व शदीदुल्- मिहाल् (13) लहू
दअवतुल्-हविक, वल्लजी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू-न लहुम् बिशैइन् इल्ला

فِيهَا خَلِيدُونَ ۖ وَيَسْتَعْمِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ
خَلَكْتَ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمُتَكَلِّمِينَ وَإِنْ رَبُّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ وَيَقُولُ الَّذِينَ
كَفَرُوا الْوَيْلَ أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةً ۖ مَنْ رَبُّهُ إِلَّا اتِّمَاءُ أَنْتَ مُتَدَبِّرٌ
لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۖ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ
الْأَرْحَامُ وَمَا تَرْذَاوُ كُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِحَقِّدٍ ۖ عَلِيمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۖ سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسْرَ
الْقَوْلِ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ
بِالنَّهَارِ ۖ لَهُمْ مَعْقِبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِمْ يَحْفَظُونَهُ
مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا
بِأَنْفُسِهِمْ ۚ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءَ أَفْلٍ أَمْرَدًا ۚ وَمَا لَهُمْ
مِنْ دُونِهِ مِنْ قَالٍ ۖ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خَوْفًا وَ
طَمَعًا وَيُخَشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۖ وَيَسْأَلُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ
وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ ۖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِسَابِ ۚ لَهُ
دَعْوَةُ الْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ

مَنْ

हैं, हालाँकि इनसे पहले (और काफ़िरोँ पर सज़ाओं के) वाकिआत गुज़र चुके हैं। और यह बात भी यकीनी है कि आपका रब लोगों की ख़ताएँ बावजूद उनकी बेजा हरकतों के माफ़ कर देता है, और यह बात भी यकीनी है कि आपका रब सख़्त सज़ा देता है।¹ (6) और (ये) काफ़िर लोग (यूँ भी) कहते हैं कि उनपर (वह ख़ास) मोज़िज़ा (जो हम चाहते हैं) क्यों नाज़िल नहीं किया गया, (हालाँकि) आप सिर्फ़ डराने वाले (नबी) हैं, और हर कौम के लिए हादी होते चले आए हैं।² (7) ♦

अल्लाह तआला को सब ख़बर रहती है जो कुछ किसी औरत को हमल “यानी गर्भ” रहता है,³ और जो कुछ रहम “यानी बच्चेदानी” में कमी व बेशी होती है। और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक ख़ास अन्दाज़ से (मुकरर) है। (8) वह (तमाम) छुपी और ज़ाहिर (चीज़ों) का जानने वाला (है), सबसे बड़ा (और) आलीशान है। (9) तुममें से जो शख्स कोई बात चुपके से कहे और जो पुकारकर कहे, और जो शख्स रात में कहे और जो दिन में चले-फिरे, ये सब (खुदा के इल्म में) बराबर हैं।⁴ (10) हर शख्स (की हिफ़ाज़त) के लिए कुछ फ़रिश्ते (मुकरर) हैं जिनकी बदली होती रहती है, कुछ उसके आगे और कुछ उसके पीछे कि वे अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।⁵ वाकई अल्लाह तआला किसी कौम की (अच्छी) हालत में बदलाव नहीं करता जब तक कि वे लोग खुद अपनी (सलाहियत की) हालत को नहीं बदल देते।⁶ और जब अल्लाह किसी कौम पर मुसीबत डालना तजवीज़ कर लेता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत ही नहीं, और कोई उसके (यानी खुदा के) सिवा उनका मददगार नहीं रहता।⁷ (11) वह ऐसा है कि तुमको बिजली दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है, और वह बादलों को (भी) बुलन्द करता है जो (पानी से) भरे होते हैं। (12) और रअद (फ़रिश्ता) उसकी तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करता है और (दूसरे) फ़रिश्ते (भी) उसके ख़ौफ़ से, और वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिसपर चाहे उन्हें गिरा देता है। और वे लोग अल्लाह के

(पिछले पृष्ठ का शेष)

6. इससे उनका माफ़ कर देना भी मालूम हो गया। गरज़ सब तैयार होकर मित्र को चल दिए और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ख़बर सुनकर स्वागत के लिए मित्र से बाहर तशरीफ़ ले गए और बाहर ही मुलाकात का बन्दोबस्त किया गया, जिसका बयान अगली आयत में है।

7. इसकी वजह कि पहली मुलाकात में सज्दा न किया और मित्र पहुँचकर किया, यह थी कि पहली मुलाकात में मुहब्बत का गुल्बा था और मित्र में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने शाही तख़्त पर थे। और यह सज्दा बतौर सलाम के था, जो पहली उम्मतों में जायज़ था। यहाँ यह शुब्हा होता है कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने माँ-बाप से इतनी बड़ी ताज़ीम और अदब को क्योंकर ग़वारा किया? इसका जवाब यह है कि याक़ूब और यूसुफ़ अलैहिमस्सलाम दोनों को ख़्वाब से मालूम हुआ था कि ऐसा मामला होने वाला है, इसलिए खुदाई मामलात में कुछ कहना मुश्किन न था। इसके बाद सब हँसी-खुशी रहते रहे, यहाँ तक कि याक़ूब अलैहिस्सलाम के इत्तिकाल का वक़्त आ पहुँचा और वह वसीयत के मुताबिक़ वफ़ात के बाद मुल्क शाम में लेजाकर अपने बुजुर्गों के पास दफ़न किए गए।

8. जिसका तकाज़ा यह था कि उम्र भर मेल-जोल और इत्तिफ़ाक़ न होता, लेकिन अल्लाह तआला की इनायत से मिलाप हो गया।

9. वह अपने इल्म व हिक्मत से सब उमूर की तदबीर दुरुस्त कर देता है।

10. यानी जिस तरह दुनिया में मेरे सब काम बना दिए कि हुक्मत दी, इल्म दिया, इसी तरह आख़िरत के काम भी बना दीजिए और जो मेरे बुजुर्गों में बड़े-बड़े नबी हुए हैं उनमें मुझको पहुँचा दीजिए। अगर मौत का शौक़ अल्लाह तआला की मुलाकात की तमन्ना के लिए हो तो जायज़ है।

(तफ़सीर पृष्ठ 446)

1. यह यकीनी बात है कि आपने किसी से यह किस्सा सुना-सुनाया भी नहीं। पस यह साफ़ दलील है आपकी नुबुव्वत की और इस बात की कि आपके पास अल्लाह की तरफ़ से वद्व आती है।

2. यानी उनको देखते रहते हैं।

3. बिना तौहीद के खुदा को मानना (पृष्ठ 446 की बकिया और पृष्ठ 448, 450 की तफ़सीर पृष्ठ 452-458 पर)

कबासिति कफफैहि इलल्-मा-इ लियब्लु-ग फाहु व मा हु-व बिबालिगिही, व मा दुआउल्-काफिरी-न इल्ला फी जलाल (14) व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फिस्समावाति वल्अर्जि तौअंव्-व करहंव्-व जिलालुहुम् बिल्लुदुव्वि वल्आसाल □ (15) कुल् मरब्बुस्समावाति वल्अर्जि, कुलिल्लाहु, कुल् अ-फत्तखाज्जुम् मिन् दूनिही औलिया-अ ला यम्मिलकू-न

लिअन्फुसिहिम् नफअंव्-व ला जर्नन्, कुल् हल् यस्तविल्-अअमा वल्बसीरु अम् हल् तस्तविज्जुलुमातु वन्नूरु, अम् ज-अल् लिल्लाहि शु-रका-अ ख-लकू क-खालिकिही फ-तशाबहल्-खाल्कु अलैहिम्, कुलिल्लाहु खालिकु कुल्लि शैइव्-व हुवल् वाहिदुल्-कह्हार (16)

अन्ज-ल मिनस्समा-इ माअन् फसालत् औदि-यतुम् बि-क-दरिहा फस्त-मलस्सैलु ज-बदर्-राबियन्, व मिम्मा यूकिदू-न अलैहि फिन्नारिबिगा-अ हिल्यतिन् औ मताअिन् ज-बदुम्-मिस्लुह्, कजालि-क यज़िबुल्लाहुल्-हक्-क वल्बाति-ल, फ-अम्मज्ज-बदु फ-यज्हुबु जुफा-अन् व अम्मा मा यन्फअुन्ना-स फयम्कुसु फिल्अर्जि, कजालि-क यज़िबुल्लाहुल्-

अम्साल (17) लिल्लजीनस्तजाबू लिरब्बिहिमुल्-हुस्ना, वल्लजी-न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन्-न लहुम् मा फिल्अर्जि जमीअंव्-व मिस्लहू म-अहू लफ्तदौ बिही, उलाइ-क लहुम् सूउल्-हिसाबि व मअ्वाहुम् ज-हन्नमु, व बिअ्सल्-मिहाद ● (18) ♦

وَمَا يَرْجُوا
۲۲۴
الرعد ۱۳
بَشَىءَ إِلَّا كَاسٍ سَوِيٍّ كَلْبَةٍ إِلَى اللَّهِ لَيْبَلَةٌ قَاهُ وَمَا هُوَ بِالْعَاقِبَةِ
وَمَا دَعَا الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝ وَلَوْ يَسْتَعِذُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُم بِالْعُدْوَى الْأَصَالِ ۝ قُلْ
مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ قُلْ أَفَأَعْمَدُ ثُمَّ مَنْ
دُونِهِ أَوْ يُلَاقِيكُمْ أَتَقُولُ لَا تَحْمِلُكُمْ أَتَقُولُ لَا تَحْمِلُكُمْ أَتَقُولُ لَا تَحْمِلُكُمْ
يَسْتَوِي الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَةُ وَالنُّورُ
أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهُ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ
قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ أَنْزَلَ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا
رَابِيًا وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِثْلَهُ ۝ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۝ فَإِنَّا الزَّبَدُ
قَدْ مَهَبَ جُفَاءً وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَكْتُمُ فِي الْأَرْضِ
كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالَّذِينَ لَمْ يَسْجُدُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَتَاعُ الْعَالَمِينَ
مِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۝ أُولَئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۝ وَمَأْوَاهُمْ
جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنَ

बारे में झगड़ते हैं, हालाँकि वह बड़ा ज़बरदस्त कुव्वत वाला है। (13) सच्चा पुकारना उसी के लिए खास है,¹ और उसके (यानी खुदा के) सिवा जिनको ये लोग पुकारते हैं वे इनकी दरखास्त को इससे ज्यादा मन्ज़ूर नहीं कर सकते जितना पानी उस शख्स की दरखास्त को मन्ज़ूर करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुँह तक (उड़कर) आ जाए, और वह उस (के मुँह) तक (अपने आप) आने वाला नहीं,² और काफ़िरो का (उनसे) दरखास्त करना बिल्कुल बेअसर है। (14) और अल्लाह ही के सामने सब सर झुकाए हुए हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं, खुशी से और मजबूरी से,³ और उनके साथे भी सुबह और शाम के वक्तों में।⁴ □ (15) आप कहिए कि आसमानों और ज़मीन का परवर्दिगार कौन है? आप (ही) कह दीजिए कि अल्लाह है। (फिर) आप (यह) कहिए कि क्या फिर भी तुमने उसके (यानी खुदा के) सिवा (दूसरे) मददगार करार दे रखे हैं जो खुद अपनी ज़ात के नफ़े-नुक़सान का भी इख़्तियार नहीं रखते। आप (यह भी) कहिए कि क्या अन्धा और आँखों वाला बराबर हो सकता है?⁵ या कहीं अँधेरा और रोशनी बराबर हो सकती है,⁶ या उन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक करार दे रखे हैं कि उन्होंने भी (किसी चीज़ को) पैदा किया हो जैसे कि खुदा पैदा करता है, फिर उनको पैदा करना एक-सा मालूम हुआ हो। आप कह दीजिए कि अल्लाह ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही वाहिद है, ग़ालिब है। (16) उसी (अल्लाह तआला) ने आसमानों से पानी नाज़िल फ़रमाया, फिर नाले (भरकर) अपनी मिक्दार “यानी मात्रा” के मुवाफ़िक़ चलने लगे, फिर (वह) सैलाब कूड़े-कबाड़ को बहा लाया जो उस (पानी) के ऊपर (आ रहा) है। और जिन चीज़ों को आग के अन्दर ज़ेवर और असबाब बनाने की गरज़ से तपाते हैं उसमें भी ऐसा मैल-कुचैल (ऊपर आ जाता) है।⁷ अल्लाह तआला हक़ (यानी ईमान वग़ैरह) और बातिल (कुफ़्र वग़ैरह) की इसी तरह की मिसाल बयान कर रहा है, सो जो मैल-कुचैल था वह तो फेंक दिया जाता है और जो चीज़ लोगों के लिए कारामद है ज़मीन (यानी दुनिया) में (नफ़ा पहुँचाने के साथ) रहती है। अल्लाह तआला इसी तरह (हर ज़रूरी मज़मून में) मिसालें बयान किया करते हैं।⁸ (17) जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया उनके वास्ते अच्छा बदला है,⁹ और जिन लोगों ने उसका कहना न माना उनके पास अगर तमाम ज़मीन (यानी दुनिया) भर की चीज़ें (मौजूद) हों और (बल्कि) उसके साथ उसी के बराबर और भी हो, तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का सख़्त हिसाब होगा और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह बुरा ठिकाना है। ● (18) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

न मानने की तरह है। पस ये लोग अल्लाह के साथ भी कुफ़्र करते हैं और नबी के साथ भी।

4. मतलब यह कि कुफ़्र का तकाज़ा है कि सज़ा हो, चाहे दुनिया में नाज़िल हो या क़ियामत के दिन वाक़े हो। उनको उससे डरना और कुफ़्र छोड़ देना चाहिए।

5. यानी मेरे पास भी तौहीद व रिसालत की दलील है, और मेरे साथ वाले भी दलील से इल्मीनान हासिल करने के साथ मुझपर ईमान लाए हैं। मैं बेदलील बात की तरफ़ किसी को नहीं बुलाता, इसलिए दलील सुनो और समझो। रास्ते का हासिल यह हुआ कि खुदा एक है और मैं उसकी तरफ़ बन्दों को बुलाने वाला हूँ।

6. खुलासा यह हुआ कि नुबुव्वत के दावे से मेरा मक़सद अपना बन्दा बनाना नहीं बल्कि अल्लाह का बन्दा बनाना है, लेकिन उसका तरीक़ा अल्लाह तआला के दाई यानी रसूल की तरफ़ से बतलाया जाता है, इसलिए मुझे दाई मानना वाज़िब है जबकि मेरे पास इसकी दलील भी है।

7. कि फ़ानी का इख़्तियार करना बेहतर है या बाकी का। और अगर तुमको अज़ाब में देरी से यह शक़ हो कि वह आएगा ही नहीं तो यह तुम्हारी ग़लती है, इसलिए कि पहली उम्मतों के काफ़िरो को भी बड़ी-बड़ी मोहलतें दी गईं।

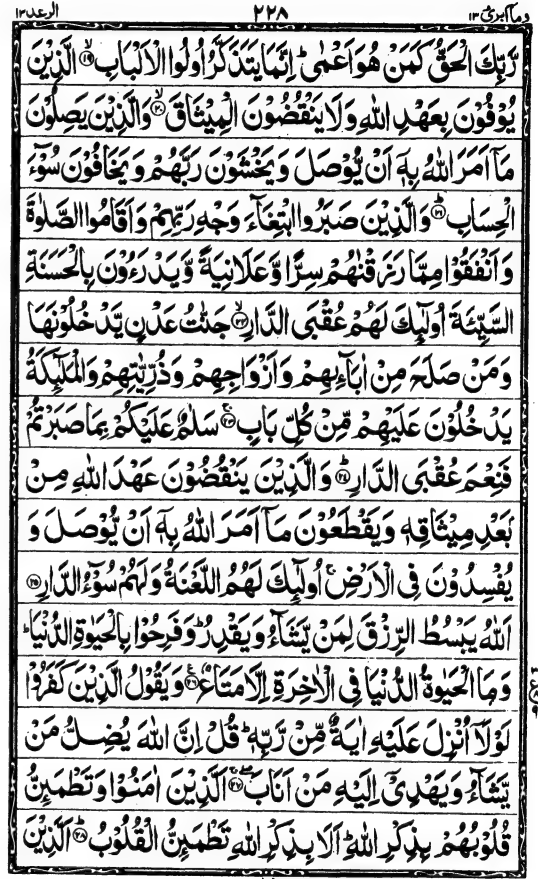
8. मोहलत की मुदत के लम्बा होने की वजह से पैग़म्बरों ने समझ लिया कि अल्लाह के वायदे का जो मुख़्तसर वक़्त अपने अन्दाज़े और ख़्याल से तय करके हमने अपने (पृष्ठ 446 की बक़िया और पृष्ठ 448, 450, 452 की तफ़सीर पृष्ठ 454-459 पर)

अ-फमंय्यअलमु अन्नमा उन्जि-ल इलै-क मिरिबिबकल्-हक्कु क-मन् हु-व अअमा, इन्नमा य-तजक्करु उलुल्-अल्बाब (19) अल्लजी-न यूफू-न बिअहिदल्लाहि व ला यन्कुजूनल्-मीसाक (20) वल्लजी-न यसिलू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व यखशौ-न रब्बहुम् व यखाफू-न सूअल्-हिसाब (21) वल्लजी-न स-बरुब्तिगा-अ वज्हि रब्बिहिम् व अकामुस्सला-त व अन्फक्कू मिम्मा रजक्नाहुम् सिररंव्-व अलानि-यतंव्-व यदरऊ-न बिल्ह-स-नतिस्सय्यि-अ-त उलाइ-क लहुम् अक्बद्दार (22)

जन्नातु अदनिंय्यदखुलू-नहा व मन् स-ल-ह मिन् आबइहिम् व अज्वाजिहिम् व जुरिय्यातिहिम् वल्मलाइ-कतु यदखुलू-न अलैहिम् मिन् कुल्लि बाब (23) सलामुन् अलैकुम् बिमा सबरतुम् फनिअ-म अक्बद्दार (24) वल्लजी-न यन्कुजू-न अहदल्लाहि मिम्-बअदि मीसाकिही व यक्तअ-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व युफिसदू-न फिल्अजि उलाइ-क लहुमुल्लअ-नतु व लहुम् सूउद्दार (25) अल्लाहु यब्सुतुरिज्-क

लिमंय्यशा-उ व यक्दिरु, व फरिहू बिल्हयातिदुन्या, व मल्हयातुदुन्या फिल्-आखिरति इल्ला मताअ (26) ♦

व यक्लुल्लजी-न क-फरु लौ ला उन्जि-ल अलैहि आयतुम् मिरिबिबिही, कुल् इन्नल्ला-ह युजिल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी इलैहि मन् अनाब (27) अल्लजी-न आमनू व तत्मइन्नु



مَلِك

जो शख्स (यह) यकीन रखता हो कि जो कुछ आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के रब की तरफ से आप पर नाज़िल हुआ है वह सब हक है, क्या ऐसा शख्स उसकी तरह हो सकता है जो कि अन्धा है,¹ पस नसीहत तो समझदार लोग ही कबूल करते हैं। (19) (और) ये (समझदार) लोग ऐसे हैं कि अल्लाह से जो कुछ उन्होंने अहद किया है उसको पूरा करते हैं और उस (अहद) को तोड़ते नहीं। (20) और (ये) ऐसे हैं कि अल्लाह तआला ने जिन ताल्लुकात के कायम रखने का हुक्म किया है उनको कायम रखते हैं, और अपने रब से डरते रहते हैं, और सख्त अज़ाब का अन्देशा रखते हैं।² (21) और ये लोग ऐसे हैं कि अपने रब की रज़ामन्दी को ढूँढते हुए मज़बूत रहते हैं, और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं, और जो कुछ हमने उनको रोज़ी दी है उसमें से चुपके भी और ज़ाहिर करके भी खर्च करते हैं।³ और बदसुलूकी को अच्छे सुलूक से टाल देते हैं,⁴ उस जहान “यानी आखिरत” में नेक अन्जाम उन्हीं लोगों के वास्ते है। (22) (यानी) हमेशा रहने की जन्नतें जिनमें वे लोग भी दाखिल होंगे और उनके माँ-बाप और बीवियाँ और औलाद में से⁵ जो (जन्नत के) लायक होंगे (वे भी दाखिल होंगे) और फरिश्ते उनके पास हर (तरफ़ के) दरवाज़े से आते होंगे (23) (और यह कहते होंगे कि) तुम सही-सलामत रहोगे इसकी बदौलत कि तुम (दीने हक़ पर) मज़बूत रहे थे, सो इस जहान में तुम्हारा अन्जाम बहुत अच्छा है। (24) और जो लोग खुदा तआला के मुआहदों को उनकी पुख्तगी के बाद तोड़ते हैं, और खुदा तआला ने जिन ताल्लुकात “और रिश्तों” के कायम रखने का हुक्म फरमाया है उनको तोड़ते हैं, और ज़मीन (यानी दुनिया) में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत होगी, और उनके लिए उस जहान में ख़राबी होगी। (25) अल्लाह जिसको चाहे रिज़्क ज़्यादा देता है और तंगी कर देता है। और ये (काफ़िर) लोग दुनियावी ज़िन्दगी पर इतराते हैं, और यह दुनियावी ज़िन्दगी आखिरत के मुकाबले में सिवाय एक मामूली फ़ायदे के और कुछ भी नहीं। (26) ♦

और ये काफ़िर लोग कहते हैं कि उनपर (हमारे फ़रमाइशी मोजिज़ों में से) कोई मोजिज़ा उनके रब की तरफ़ से क्यों नाज़िल नहीं किया गया। आप कह दीजिए कि वाकई अल्लाह तआला जिसको चाहें गुमराह कर देते हैं, और जो शख्स उनकी तरफ़ मुतवज्जह होता है उसको अपनी तरफ़ से हिदायत कर देते हैं। (27) (मुराद इससे वे लोग हैं) जो ईमान लाए और अल्लाह के ज़िक्र से उनके दिलों को इत्मीनान होता है।⁶ ख़ूब समझ लो कि अल्लाह के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हो जाता है।⁷ (28) जो लोग ईमान लाए और नेक काम

(पिछले पृष्ठ का शेष) ज़ेहन में करार दे रखा था कि उस वक़्त हम कामयाब व ग़ालिब और कुफ़्फ़ार मग़लूब और अल्लाह के कहर का शिकार होंगे, और गुमान ग़ालिब हो गया कि अल्लाह के वायदे की हद-बन्दी करने में हमसे ग़लती हुई कि बिला वाज़ेह वायदे के महज़ अन्दाज़ों या मदद के जल्द आने की खुशी में हमने करीब का वक़्त तय कर लिया हालाँकि वायदा मुतलक था, ऐसी हालत में कुफ़्फ़ार पर अज़ाब आ पहुँचा।

9. इससे मोमिन लोग मुराद हैं।

10. बल्कि उनपर ज़रूर आ पड़ता है चाहे देर से ही सही। पस यह मक्का के काफ़िर भी इसी धोखे में न रहें।

(तफ़सीर पृष्ठ 448)

1. इस सूर: का हासिल ये मज़ामीन हैं: तौहीद, रिसालत, रिसालत पर शुब्हात का जवाब, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली, कुरआन का हक़ होना और वायदा-वईद वग़ैरह।

2. यानी ज़मीन व आसमान में अहक़ाम जारी करने लगा।

3. चुनौचे सूरज अपने मदार (यानी दायरे और गर्दिश करने की जगह) को साल भर में तय कर लेता है और चाँद महीने भर में।

4. यानी मरने के बाद ज़िन्दा होने और क़ियामत के आने का यकीन कर लो, उसके मुफ़्किन होने को तो इस तरह कि जब अल्लाह तआला ऐसी अज़ीम चीज़ों के पैदा करने पर कादिर है तो मुद्दों को ज़िन्दा करने पर क्यों कादिर नहीं होगा, और उसके आने और मौजूद हो जाने का यकीन इस तरह कि (पृष्ठ 448 की बक़िया और पृष्ठ 450, 452, 454 की तफ़सीर पृष्ठ 456-459 पर)

कुलूबुहुम् बिजिक्विरल्लाहि, अला बिजिक्विरल्लाहि तत्तम्इन्नुल्-कुलूब (28) अल्लजी-न आमनू व
अमिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब (29) कज़ालि-क अर्सल्ला-क फी उम्मतिन् कद्
खलत् मिन् कब्लिहा उ-ममुल्-लिततुल्-व अलैहिमुल्लजी औहैना इलै-क व हुम् यक्फुरू-न
बिरिह्मानि, कुल् हु-व रब्बी ला इला-ह इल्ला हु-व अलैहि तवक्कल्लु व इलैहि मताब (30)

व लौ अन्-न कुरआनन् सुय्यिरत्
बिहिल्-जिबालु औ कुत्तिअत् बिहिल्-
अर्-जु औ कुल्लि-म बिहिल्मौता, बल्
लिल्लाहिल्-अम्रु जमीअन्, अ-फलम्
यै-असिल्लजी-न आमनू अल्-लौ
यशाउल्लाहु ल-हदन्ना-स जमीअन्, व
ला यज़ालुल्लजी-न क-फरु तुसीबुहुम्
बिमा स-नअू कारि-अतुन् औ तहुल्लु
करीबम् मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति-य
वअदुल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युख्लिफुल्-
मीआद (31) ♦

व ल-कदिस्तुहिज-अ बिरुसुलिम्
मिन् कब्लि-क फ-अम्लैतु लिल्लजी-न
क-फरु सुम्-म अखाज्तुहम्, फकै-फ
का-न अिकाब (32) अ-फ-मन् हु-व

काइमुन् अला कुल्लि नफ़िसम्-बिमा क-सबत् व ज-अलू लिल्लाहि शु-रका-अ, कुल् सम्मूहुम्
अम् तुनब्बिऊनहू बिमा ला यअ्लमु फिल्अर्जि अम् बिज़ाहिरिम्-मिनल्कौलि, बल् जुय्यि-न
लिल्लजी-न क-फरु मक्वहुम् व सुद्दू अनिस्सबीलि, व मय्युज़िलिल्ल्लाहु फमा लहू मिन् हाद
(33) लहुम् अज़ाबुन् फिल्हयातिद्दुन्या व ल-अज़ाबुल्-आखिरति अशक्कु व मा लहुम्

وَمَا آتَيْنَا
۲۲۹
الرعد

أَمْوًا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحَسُنَ مَا يُكْرَمُونَ ۝ كَذٰلِكَ
أَرْسَلْنَا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ
الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمٰنِ قُلْ هُوَ رَبِّي
لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ۝ وَلَوْ أَن قُرْآنًا
سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُفِّرَتْ بِهِ السَّمٰوٰتُ بَل
لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا أَفَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَن تَوَكَّلُوا اللَّهَ
لَهْدَى النَّاسِ جَمِيعًا وَلَا يَزَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ
بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ
وَعْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۚ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا بِرُسُلٍ
مِّن قَبْلِكَ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُ أَتَأْتِنَا بِالْبَاطِلِ
كَأَن عِقَابٌ ۝ أَكُنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ
وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُونَ
فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ بَل رَّبُّنَا لِلَّذِينَ كَفَرُوا
مَكْرَهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَن يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ هَادٍ ۚ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ
أَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ۚ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ

مَثَلُ

किए उनके लिए खुशहाली और नेक अन्जामी है।¹ (29) (और) इसी तरह हमने आपको एक ऐसी उम्मत में रसूल बनाकर भेजा है कि उस (उम्मत) से पहले और बहुत-सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि आप उनको वह (किताब) पढ़कर सुना दें जो हमने आपके पास वह्य के ज़रिये भेजी है,² और वे लोग बड़े रहमत वाले की नाशुक्री करते हैं।³ आप फ़रमा दीजिए कि वह मेरा पालने वाला (और निगहबान) है, उसके सिवा कोई इबादत के काबिल नहीं, मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और उसी के पास मुझको जाना है।⁴ (30) और अगर कोई ऐसा कुरआन होता जिसके ज़रिये से पहाड़ (अपनी जगह से) हटा दिए जाते या उसके ज़रिये से ज़मीन जल्दी-जल्दी तय हो जाती, या उसके ज़रिये से मुर्दों के साथ किसी को बातें करा दी जाती⁵ (तब भी ये लोग ईमान न लाते), बल्कि सारा इख़्तियार खास अल्लाह ही को है।⁶ क्या (यह सुनकर) फिर भी ईमान वालों को इस बात में तसल्ली नहीं हुई कि अगर खुदा तआला चाहता तो तमाम (दुनिया भर के) आदमियों को हिदायत कर देता,⁷ और (ये मक्का के) काफ़िर तो हमेशा (आए दिन) इस हालत में रहते हैं कि उनके (बुरे) किरदारों के सबब उनपर कोई न कोई हादसा पड़ता रहता है,⁸ या उनकी बस्ती के करीब नाज़िल होता रहता है, यहाँ तक कि अल्लाह का वायदा आ जाएगा।⁹ यकीनन अल्लाह तआला वायदे के खिलाफ़ नहीं करते। (31) ♦

और बहुत-से पैग़म्बरों के साथ जो आपसे पहले हो चुके हैं हँसी-ठट्टा हो चुका है,¹⁰ फिर मैं उन काफ़िरों को मोहलत देता रहा, फिर मैंने उनपर दारोगीर “यानी पकड़” की, सो मेरी सज़ा किस तरह की थी। (32) फिर (भी) क्या जो (खुदा) हर शख्स के आमाल पर बाख़बर हो (और उन लोगों के शरीक करार दिए हुए बराबर हो सकते हैं) और उन लोगों ने खुदा के लिए शरीक तजवीज़ किए हैं। आप कहिए कि (ज़रा) उन (शरीकों) का नाम तो लो, क्या तुम उसको (यानी खुदा तआला को) ऐसी बात की ख़बर देते हो कि दुनिया (भर) में उस (के वजूद) की ख़बर उसको (यानी अल्लाह को) न हो,¹¹ या ख़ाली जाहिरी लफ़्ज़ के एतिबार से उनको शरीक कहते हो, बल्कि काफ़िरों को अपने मुग़ालते की बातें पसन्दीदा मालूम होती हैं, और (इसी वजह से) ये लोग (हक़) रास्ते से महरूम रह गए। और जिसको खुदा तआला गुमराही में रखे उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं।¹² (33) उनके लिए दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है,¹³ और आख़िरत का अज़ाब इससे कई दर्जे ज़्यादा सख़्त है, और अल्लाह (के अज़ाब) से उनको कोई बचाने वाला नहीं होगा। (34) (और) जिस जन्नत का मुत्तकियों से वायदा किया गया है उसकी कैफ़ियत यह है कि उस (की इमारतों व पेड़ों) के नीचे से

(पिछले पृष्ठ का शेष) ऐसे शख्स ने उसकी ख़बर दी है जो बिल्कुल सच्चा है (यानी हुज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो ज़रूर ऐसा ही होगा।

5. जैसे खट्टे और मोठे या छोटे और बड़े। कोई किसी रंग का और कोई किसी रंग का।
6. बल्कि जड़ से शाखों तक एक ही तना चला जाता है, ‘सिन्वान’ के तर्जुमे में दो तने की तख़सीस मिसाल देने के लिए है वरना बाज़ में तीन चार तक देखे गए हैं। और फिर हर एक में पट्टे अलग-अलग निकलते हैं और फल अलग-अलग लगते हैं।
7. ऊपर तौहीद को साबित किया था, आगे काफ़िरों के उन शुक्कत का जवाब है जो नुबुव्वत के मुताल्लिक थे सज़ा की धमकी के साथ, और वे तीन शुब्हे थे। पहला शुब्हा यह था कि मरने के बाद ज़िन्दा होने को वे लोग मुहाल समझते थे और इससे नुबुव्वत की नफ़ी पर दलील पकड़ते थे। दूसरा शुब्हा यह था कि अगर आप नबी हैं तो नुबुव्वत के इनकार पर जिस अज़ाब की वर्द सुनाते हैं वह क्यों नहीं आता। तीसरा शुब्हा यह था कि जिन मोज़िज़ों की हम फ़रमाइश करते हैं वे क्यों ज़ाहिर नहीं किये जाते। आयत ‘व इन तअज़ब्...’ में पहले शुब्हे का रद्द है और आयत ‘व यस्तअज़िलून-क..’ में दूसरे शुब्हे का जवाब है, और आयत ‘व यकूलुल्लज़ी-न क-फ़रू..’ में तीसरे शुब्हे का जवाब है।

(तफ़सीर पृष्ठ 450) 1. यानी इसमें दोनों सिफ़तें हैं और हर एक के ज़ाहिर होने की शर्तें और असबाब हैं। पस उन्होंने बिला सबब अपने को रहमत व मफ़िरत के लिए हक़दार समझ लिया, बल्कि कुफ़ की वजह से उनके लिए तो अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है।

(पृष्ठ 450 की बक़िया और पृष्ठ 452, 454, 456 की तफ़सीर पृष्ठ 458-460 पर)

मिनल्लाहि मिंवाक (34) म-सलुल्- जन्नतिल्लती वुअिदल्-मुत्तकू-न, तजरी मिन् तह्तिहल्-
अन्हारु, उकुलुहा दाइमुंव्-व जिल्लुहा, तिल्-क अक्बल्लजीनत्तकौ व उक्बल् काफिरीनन्नार
(35) वल्लजी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यफरहू-न बिमा उन्जि-ल इलै-क व मिनल्-अहज़ाबि
मय्युन्किरु बअज़हू, कुल् इन्नमा उमिरतु अन् अअबुदल्ला-ह व ला उशिर-क बिही, इलैहि
अद्अू व इलैहि मआब (36) व

कजालि-क अन्जल्लाहु हुक्मन्
अ-रबिय्यन्, व ल-इनित्त-बअ-त
अह्वा-अहुम् बअ-द मा जाअ-क
मिनल्-अिल्मि मा ल-क मिनल्लाहि
मिंवल्लियिंव्-व ला वाक (37) ♦

व ल-कद् अरसल्ला रुसुलम् मिन्
कब्लि-क व जअल्ला लहुम् अज्वाजंव्-व
जुरिय्य-तन्, व मा का-न लि-रसूलिन्
अय्यअ-ति-य बिआयतिन् इल्ला
बि-इज़िन्ल्लाहि, लिक्लिलि अ-जलिन्
किताब (38) यम्हुल्लाहु मा यशा-उ व
युस्बितु व अिन्दहू उम्मुल्-किताब (39)
व इम्मा नुरियन्न-क बअज़ल्लजी
नअिदुहुम् औ न-तवफ़-यन्न-क
फ-इन्नमा अलैकल्-बलागु व अलैनल्-

हिसाब (40) अ-व लम् यरौ अन्ना नअतिल्-अर्-ज नन्कुसुहा मिन् अत्राफिहा, वल्लाहु
यह्कुमु ला मुअक्कि-ब लिहुक्मिही, व हु-व सरीअुल्-हिसाब (41) व कद् म-करल्लजी-न
मिन् कब्लिहिम् फलिल्लाहिल्-मक्रु जमीअन्, यअलमु मा तक्सिबु कुल्लु नफिसन्, व
स-यअलमुल्-कुफ़फ़ारु लिमन् अक्बद्दार (42) व यकूल्लल्लजी-न क-फरु लस्-त मुर्सलन्,

وَمَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُكُمْ وَلَا نِعْمَتُكُمْ وَلَا يُبْرِكُ لَهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا يَزِيدُ لَهُمْ فِي جَبَلِهِمْ شَيْءٌ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝
الْمُتَّقُونَ يَجْزِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۝ وَالَّذِينَ
عَقِبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعَقِبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝ وَالَّذِينَ
اتَّبَعَتْهُمْ يُقْرَعُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنْ الْأَنْزَابِ
مَنْ يُنْكَرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أَمْرٌ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أَشْرَكَ
بِهِ ۚ إِلَيْهِ أَدْعُو ۚ وَالْيَوْمَ مَآبٌ ۝ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا
عَرَبِيًّا وَلَعَلَّكَ تَعْلَمُ ۝ وَأَمَّا أَمْوَالُهُمْ فَلَا يَمَسُّهُمْ عَلَيْهَا شَيْءٌ مِنَ الْعَمَلِ
مَالِكٍ مِنَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ وَلَا وَاقٍ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا
مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ آدَآءًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ
أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ كِتَابٍ ۝ يَتَخَوَّاهُ
مَائِدَةً وَيُشْبِثُ ۚ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝ وَإِنْ مَا تُؤْتِيكَ
بَعْضُ النَّاسِ نِعْمَةً أَوْ تُنْفِقُهَا ۚ فَإِنَّمَا عِنْدَكَ إِلَهُكَ الْبَلْغُ
وَعَلَيْكَ الْحِسَابُ ۝ أَوْ كَمْ يَرَوُا أَنَّآ فِي الْأَرْضِ نَفْثًا
مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۚ وَقَدْ نَكَّرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الشُّكْرُ جَمِيعًا
يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عَقِبَى
الدَّارِ ۚ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا قُلْ كَفَى بِاللَّهِ

नहरें जारी होंगी, उसका फल और उसका साया हमेशा रहने वाला रहेगा।¹ यह तो अन्जाम होगा मुत्तकियों का, और काफिरों का अन्जाम दोज़ख होगा। (35) और जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस (किताब) से खुश होते हैं² जो आप पर नाज़िल की गई है, और उन्हीं के गिरोह में बाज़े ऐसे हैं कि उसके कुछ हिस्से का इनकार करते हैं।³ आप फरमाइए कि⁴ मुझको यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह तआला की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक न ठहराऊँ। मैं उसी (अल्लाह ही) की तरफ बुलाता हूँ और उसी की तरफ मुझको जाना है। (36) और इसी तरह हमने उसको इस तौर पर नाज़िल किया कि वह एक खास हुक्म है, अरबी (ज़बान में)⁵ और अगर आप (मान लो, अगरचे ऐसा होना नामुम्किन है) उनके नफ्सानी ख्यालात की पैरवी करने लगेँ इसके बाद कि आपके पास (सही) इल्म पहुँच चुका है, तो अल्लाह के मुकाबले में न कोई आपका मददगार होगा और न कोई बचाने वाला।⁶ (37) ♦

और हमने यकीनन आपसे पहले बहुत-से रसूल भेजे, और हमने उनको बीवियाँ और बच्चे भी दिए,⁷ और किसी पैगम्बर के इख्तियार में यह बात नहीं कि एक आयत भी बिना खुदा तआला के हुक्म के ला सके, हर ज़माने के (मुनासिब खास-खास) अहकाम (होते) हैं। (38) खुदा तआला (ही) जिस (हुक्म) को चाहे मौकूफ कर देते हैं और जिस (हुक्म) को चाहें कायम रखते हैं, और असल किताब उन्हीं के पास है।⁸ (39) और जिस (बात) का हम उनसे वायदा कर रहे हैं उसमें का बाज़ (वाकिआ) अगर हम आपको दिखला दें या हम आपको वफात दे दें, पस आपके ज़िम्मे तो सिर्फ (अहकाम का) पहुँचा देना है और दारोगीर “यानी पूछताछ और पकड़” करना हमारा काम है।⁹ (40) क्या वे इस (बात) को नहीं देख रहे हैं कि हम ज़मीन को हर (चारों) तरफ से लगातार कम करते चले आते हैं।¹⁰ और अल्लाह (जो चाहता है) हुक्म करता है, उसके हुक्म को कोई हटाने वाला नहीं, और वह बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। (41) और उनसे पहले जो (काफिर) लोग हो चुके हैं उन्होंने तदबीरें कीं, सो असल तदबीर तो खुदा ही की है,¹¹ उसको सब ख़बर रहती है जो शख्स जो कुछ भी करता है, और उन काफिरों को अभी मालूम हुआ जाता है कि उस आलम “यानी आखिरत” में नेक अन्जामी किसके हिस्से में है।¹² (42) और (ये) काफिर लोग (यूँ) कह रहे हैं कि (हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) आप पैगम्बर नहीं, आप फरमा दीजिए कि (मेरी नुबुव्वत पर) मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह और वह शख्स जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है, काफ़ी गवाह हैं।¹³ (43) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

2. आयत में लफ़्ज़ ‘हादी’ नबी और नबी के नायब दोनों को आम है, पस हिन्दुस्तान में मुतलक ‘हादी’ के आने से उसका नबी होना लाज़िम नहीं, हाँ इसका एहतिमाल और गुन्जाइश ज़रूर है।

3. बच्चों की तादाद की या मुदत की कि कभी एक बच्चा होता है कभी ज़्यादा, कभी जल्दी होता है कभी देर में।

4. यानी सबको यक्साँ जानता है। और जैसा कि तुममें से हर एक को जानता है इसी तरह हर एक ही हिफाज़त करता है।

5. बहुत-सी बलाओं से इनसान की हिफाज़त करते हैं। लेकिन इससे कोई यह न समझ जाए कि जब फ़रिश्ते हमारे मुहाफ़िज़ हैं फिर जो चाहो नाफरमानी करो, अगरचे कुछ ही क्यों न हो किसी तरह अज़ाब नाज़िल न होगा। यह गुमान ग़लत है।

6. जब वे अपनी सलाहियत में ख़लल डालने लगते हैं तो फिर अल्लाह तआला की तरफ से भी उनपर मुसीबत व सज़ा तजवीज़ की जाती है। आयत से जिस बात पर दलालत हो रही है उसका हासिल यह है कि बिना नाफरमानी के हम नाराज़ नहीं होते। पस गुनाहों से बचने में नाराज़ी की नफ़ी यकीनी है नेमत और आफ़ियत के न होने का वायदा नहीं। गुनाहों और नाफरमानी से अगरचे ज़ाहिरी नेमत व आफ़ियत ख़त्म भी न हो लेकिन हक़ तआला की नाराज़ी तो ज़रूर मुरत्तब हो जाती है।

7. ऐसे वक़्त में खुदा के सिवा कोई भी उनका मददगार नहीं रहता, यहाँ तक कि वे भी जिनकी हिफाज़त का उनको गुमान व नाज़ है। ग़रज़ यह कि फ़रिश्ते भी उनकी हिफाज़त नहीं करते और अगर करते तो भी हिफाज़त काम न आ सकती।

(पृष्ठ 452, 454, 456 और 458 की तफ़सीर पृष्ठ 459, 460 पर)

(तफसीर पृष्ठ 452)

1. क्योंकि उसको कबूल करने की कुदरत है।

2. पस जिस तरह पानी उनकी दरखास्त कबूल करने से आजिज़ है इसी तरह उनके माबूद आजिज़ हैं। अगर वे माबूद रूह वाले नहीं हैं तब तो बेबसी जाहिर है, और अगर रूह वाले हैं तब भी कादरे हकीकी यानी अल्लाह पाक के सामने आजिज़ हैं।

3. खुशी से यह कि अपने इख्तियार से इबादत करते हैं और मजबूरी के यह मायने हैं कि अल्लाह तआला जिस मख्लूक में जो तसरूफ करना चाहते हैं वह उसकी मुखालफत नहीं कर सकता।

4. यानी रब्बे कदीर साये को जितना चाहे बढ़ाए, जितना चाहे घटाए। और सुबह व शाम के वक़्त चूँकि उनका घटना और बढ़ना जाहिर होता है इसलिए तख़सीस की गई, वरना साया भी इसी मायने में हर तरह फरमाँबदार है।

5. यह मिसाल है मुशिरक और ईमान वाले की।

6. यह मिसाल है शिर्क और तौहीद की।

7. इन दो मिसालों में दो चीज़ें हैं, एक कारामद चीज़ कि असल पानी और असल माल है, और एक नाकारा चीज़ कि कूड़ा-करकट और मैल-कुचैल है।

8. दोनों मिसालों का हासिल यह है कि जैसा इन मिसालों में मैल-कुचैल थोड़ी देर के लिए असली चीज़ के ऊपर नज़र आता है लेकिन अन्जामकार वह फेंक दिया जाता है और असली चीज़ रह जाती है, इसी तरह बातिल अगरचे कुछ वक़्त के लिए हक के ऊपर ग़ालिब नज़र आए लेकिन आखिरकार बातिल मिट जाता और मग़लूब हो जाता है, और हक बाकी और साबित रहता है।

9. यानी जन्मत।

(तफसीर पृष्ठ 454)

1. यानी काफ़िर व मोमिन बराबर नहीं।

2. उस अज़ाब से खौफ खाते हैं जो काफ़िरों के साथ खास होगा, इसलिए कुफ़ से बचते हैं।

3. यानी जैसा मौका होता है।

4. यानी कोई उनके साथ बदसलूकी करे तो कुछ ख़याल नहीं करते बल्कि उसके साथ अच्छा सुलूक करते हैं।

5. जो अल्लाह के यहाँ खास और क़रीबी होंगे उनकी बरकत से उनके माँ-बाप और बीवियाँ और औलाद भी उसी दर्जे में ताबे होकर दाखिल होंगे। चुनौचे इस आयत की तफसीर में इब्ने अबी हातिम और अबू शैख़ ने सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि मोमिन जन्मत में दाखिल होकर कहेगा कि मेरी माँ कहाँ है, मेरा बेटा कहाँ है, मेरी बीवी कहाँ है। उससे कहा जाएगा कि उनके आमाल तुम्हारे आमाल के जैसे नहीं थे। जन्मती कहेगा कि मैं जो अमल करता रहा हूँ अपने लिए भी थे और उनके लिए भी। और औलाद व बाप-दादा से मुराद वे हैं जो बिला वास्ता (यानी प्रत्यक्ष रूप से) हों।

6. यानी वे कुरआन के मोजिज़ा होने को नुबुव्वत पर दलालत के लिए काफ़ी समझते हैं, और उल्टी-सीधी फरमाइश नहीं करते। फिर खुदा की याद और इताअत में उनको ऐसी रग़बत होती है कि काफ़िरों की तरह उनको दुनिया की ज़िन्दगी के समान रग़बत और खुशी नहीं होती।

7. यानी जिस दर्जे का ज़िक्र हो उसी दर्जे का इल्मीनान होता है। चुनौचे कुरआन से ईमान और नेक आमाल और नेकी से हद दर्जा ताल्लुक और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह मयस्सर होती है।

(तफसीर पृष्ठ 456)

1. खुलासा यह कि काफ़िरों के लिए कुरआन के मोजिज़ा होने को नाकाफ़ी समझना और गुमराही, और उससे पहले दुनिया की तरफ़ रग़बत और उसके लुफ़ व फायदे का फ़ानी होना। और उसके मुकाबले में मोमिनो के लिए कुरआन को काफ़ी समझना और हिदायत और आख़िरत की तरफ़ रग़बत और उसके फल और बदले का बाकी होना साबित फरमाया है, और इस मक़ाम का असल मक़सूद रिसालत की बहस है। आगे इस बहस का बाकी हिस्सा है। यानी ये लोग जो आपके रसूल होने पर शुब्हात करते हैं तो आपका रसूल होना कोई अनोखी चीज़ तो है नहीं, पहले भी रसूल होते आए हैं।

2. पस उनको चाहिए था कि इस अज़ीम नेमत की कद्र करते और इस किताब पर ईमान ले आते जो कि मोजिज़ा भी है।

3. और कुरआन पर ईमान नहीं लाते।

4. पस मेरी हिफ़ाज़त के लिए तो अल्लाह तआला काफ़ी है, तुम मुख़ालफ़त करके मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

5. यानी मुर्दा ज़िन्दा हो जाता और कोई उससे बातें कर लेता। ये वे मोजिज़े हैं जिनकी फरमाइश काफ़िर लोग अक्सर किया करते थे।

6. वह जिसको तौफीक अता फरमाते हैं वही ईमान लाता है, और उनकी आदत है कि जिसके अन्दर तलब होती है उसको तौफीक देते हैं और मुख़ालिफ़ व दुश्मन को महरूम कर देते हैं।

7. चूँकि बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का जी चाहता था कि ये फरमाइशी मोजिज़े जाहिर हो जाएँ, शायद ये ईमान ले आएँ, इसलिए फरमाया कि क्या यह सुनकर भी कि ये मुख़ालिफ़ और दुश्मन हैं, हरगिज़ ईमान नहीं लाएँगे, (शेष तफसीर अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

ईमान वालों को तसल्ली नहीं हुई? अगर खुदा चाहता तो दुनिया भर के आदमियों को हिदायत कर देता मगर बाज़ हिक्मतों से उसकी मरज़ी नहीं हुई, और सब ईमान नहीं लाएंगे। इसका करीबी सबब उनकी दुश्मनी और मुख़ालफ़त है, फिर उन मुख़ालिफ़ों के ईमान की फ़िक्र में क्यों लगे हैं।

8. कहीं कत्ल, कहीं कैद, कहीं शिकस्त और हार।

9. या बाज़े हादसे खुद उनपर नहीं पड़ते मगर उनकी बस्ती के करीब नाज़िल होते रहते हैं, जैसे किसी और क़ौम पर आफ़त आई और इनको ख़ौफ़ पैदा हुआ कि कहीं हमपर भी बला न आ जाए, यहाँ तक कि इसी हालत में आख़िरत के अज़ाब का सामना हो जाएगा, जो मरने के बाद शुरू हो जाएगा।

10. उन लोगों का यह मामला झुठलाना और हँसी उड़ाना कुछ आपके साथ ख़ास नहीं। और इसी तरह उनके लिए अज़ाब में देरी होना कुछ उनके साथ ख़ास नहीं, बल्कि पहले रसूलों और पहली उम्मतों के साथ भी ऐसा होता रहा है।

11. क्योंकि हक़ तआला तो उसी को मौजूद जानता है जो हकीक़त में मौजूद हो, और जो मौजूद न हो उसको मौजूद नहीं जानता, क्योंकि इससे इल्म का ग़लत होना लाज़िम आता है, अगरचे ज़ाहिर होने में दोनों बराबर हैं।

12. अलबत्ता वह उसी को गुमराह रखता है जो बावजूद हक़ वाज़ेह होने के मुख़ालफ़त करता रहे।

13. वह अज़ाब कत्ल, कैद और ज़िल्लत या बीमारियाँ व मुसीबतें हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 458)

1. मेवों के हमेशा रहने से यह मुराद है कि अगर एक बार मेवा खा लिया तो दूसरा उसके बदले दरख़्त पर और लम्बा जाएगा। और साये के हमेशा रहने की वजह यह है कि वहाँ सूरज न होगा। मगर याद रहे कि रोशनी का वजूद सूरज पर मुन्हासिर नहीं, इसलिए यह वस्वसा न होना चाहिए कि रोशनी कहाँ से आएगी।

2. जैसे यहूद में अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथी, और ईसाइयों में नज्जाशी और उनके भेजे हुए।

3. इससे मुराद वह हिस्सा है जिसमें उनकी किताब के ख़िलाफ़ अहक़ाम हैं।

4. अहक़ाम दो किस्म के हैं, उसूल यानी बुनियादी और फ़रूअ यानी उसूल से निकले हुए अहक़ाम। अगर तुम उसूल में मुख़ालिफ़ हो तो वे सब शरीअतों में मुश्तरक हैं।

5. अहक़ाम का इख़िलाफ़ उम्मतों के इख़िलाफ़ के सबब हुआ, क्योंकि उम्मतों की मस्लहतें हर ज़माने में अलग-अलग रहीं। पस शरीअतों का यह इख़िलाफ़ मुख़ालफ़त को नहीं चाहता। चुनौचे खुद तुम्हारी मानी हुई शरीअतों में भी अहक़ाम का ऐसा इख़िलाफ़ मौजूद था, फिर तुम्हारे लिए मुख़ालफ़त और इनकार की क्या गुन्जाइश है।

6. जब नबी को ऐसा ख़िताब किया जा रहा है तो और लोग इनकार करके कहाँ रहेंगे।

7. अहले किताब में से बाज़ों का जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह ताना है कि यह कैसे नबी? इनको तो बीवियों और बच्चों का शग़ल रहता है, सो यह चीज़ रसूल होने के ख़िलाफ़ नहीं, बहुत-से पैग़म्बरों के इनसे भी ज़्यादा बीवियाँ और बच्चे थे।

8. यानी लौहे महफूज़। ये सब अहक़ाम निरस्त करने वाले और निरस्त होने वाले और जो अपनी जगह कायम हैं सब उसमें दर्ज हैं। वह सब को जमा करने वाली और गोया तमाम चीज़ों का मजमूआ है। यानी जहाँ से ये अहक़ाम आते हैं वह अल्लाह ही के कब्ज़े में है। पस पहले अहक़ाम के मुवाफ़िक़ या उनसे अलग अहक़ाम लाने की किसी को गुन्जाइश और ताक़त ही नहीं हो सकती।

9. यानी ये लोग जो इस बिना पर नुबुव्वत का इनकार करते हैं कि अगर आप नबी हैं तो नुबुव्वत का इनकार करने पर जिस अज़ाब का वायदा किया जाता है वह क्यों नहीं नाज़िल होता, चाहे आपकी ज़िन्दगी में उनपर कोई अज़ाब नाज़िल हो जाए चाहे उस अज़ाब के नाज़िल होने से पहले हम आपको वफ़ात दे दें, फिर बाद में वह अज़ाब ज़ाहिर हो, चाहे दुनिया में या आख़िरत में, तो दोनों हालतों में आप इस फ़िक्र में न पड़ें कि अगर अज़ाब आ जाए तो बेहतर है कि शायद ये ईमान ले आएँ, क्योंकि आपके ज़िम्मे सिर्फ़ तब्तीग़ है और दारोगीर और पकड़ करना तो हमारा काम है।

10. यानी इस्लामी फ़ुतूहात की कसरत की वजह से उनकी हुकूमत और राज दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। सो यह भी तो एक किस्म का अज़ाब है, जो असली अज़ाब का दीबाचा यानी शुरूआत है।

11. उसके सामने किसी की नहीं चलती। सो अल्लाह ने उनकी वे तदबीरें नहीं चलने दीं।

12. यानी जल्द ही उनको अपना बुरा अन्जाम और आमाज़ की सज़ा मालूम हो जाएगी।

13. इससे अहले किताब के वे उलमा मुराद हैं जो इनसाफ़ वाले थे और नुबुव्वत की पेशीनगोई (यानी भविष्यवाणी) देखकर ईमान ले आए थे। मतलब यह हुआ कि मेरी नुबुव्वत की दो दलीलें हैं अक्ली और नक्ली। अक्ली तो यह कि हक़ तआला ने मुझको मोज़िजे अता फरमाए जो नुबुव्वत की दलील है, और अल्लाह के गवाह होने के यही मायने हैं। और नक्ली यह कि पहली आसमानी किताबों में इसकी ख़बर मौजूद है। अगर यकीन न आए तो इन्साफ़-पसन्द उलमा से पूछ लो, वे ज़ाहिर कर देंगे। पस अक्ली और नक्ली दलीलों के होते हुए नुबुव्वत का इनकार करना सिवाय बद-बख़्ती के और क्या है।

14 सूर: इब्राहीम 72

सूर: इब्राहीम मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 52 आयतें और 7 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ-लाम-रा। यह (कुरआन) एक किताब है जिसको हमने आप पर नाज़िल फ़रमाया है ताकि आप तमाम लोगों को उनके परवर्दिगार के हुक्म से अन्धकार से निकालकर रोशनी की तरफ़ यानी खुदा-ए-ग़ालिब तारीफ़ वाले की राह की तरफ़ लाएँ।¹ (1) (वह ऐसा खुदा है) कि उसी की मिल्क है जो कुछ कि आसमानों में है और जो कुछ कि ज़मीन में है, और बड़ी ख़राबी यानी बड़ा सख़्त अज़ाब है (2) उन (काफ़िरों) को जो कि दुनियावी ज़िन्दग़ानी को आख़िरत पर तरजीह देते हैं, और (बल्कि) अल्लाह की (ज़िक्र हुई) राह से रोकते हैं और उसमें टेढ़ (यानी शुब्हात) को ढूँढते रहते हैं।² ऐसे लोग बड़ी दूर की गुमराही में हैं।³ (3) और हमने (पहले) तमाम पैग़म्बरों को (भी) उन्हीं की कौम की ज़बान में पैग़म्बर बनाकर भेजा है⁴ ताकि उनसे (अल्लाह के अहकाम को) बयान करें। फिर जिसको अल्लाह तआला चाहें गुमराह करते हैं⁵ और जिसको चाहें हिदायत करते हैं,⁶ और वही (सब उमूर पर) ग़ालिब है (और) हिक़मत वाला है।⁷ (4) और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि अपनी कौम को (कुफ़्र) की अँधेरियों से (ईमान की) रोशनी की तरफ़ लाओ, और उनको अल्लाह तआला की (नेमत और सज़ा के) मामलात याद दिलाओ,⁸ बेशक उन (मामलात) में इब़रतें हैं हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए। (5) और (उस वक़्त को याद कीजिये कि) जब मूसा ने अपनी कौम से फ़रमाया कि तुम अल्लाह तआला का इनाम अपने ऊपर याद करो, जबकि तुमको फिरऔन वालों से नजात दी, जो तुमको सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाते थे और तुम्हारे बेटों को ज़िब्ह करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा इम्तिहान था।⁹ (6) ♦

और (वह वक़्त याद करो) जबकि तुम्हारे रब ने तुमको इत्तिला फ़रमा दी कि अगर तुम शुक्र करोगे तो तुमको ज़्यादा (नेमत) दूँगा और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो (यह अच्छी तरह समझ लो कि) मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है।¹⁰ (7) और मूसा ने (यह भी) फ़रमाया कि अगर तुम और दुनिया भर के आदमी सब-के-सब

1. रोशनी में लाने का मतलब यह है कि वह राह बतलाएँ।
2. यानी ऐसे शुब्हात पैदा करते हैं जिनके ज़रिये से दूसरों को गुमराह कर सकें।
3. यानी वह गुमराही हक़ से बड़ी दूर है।
4. यह उस शुब्हे का जवाब है कि कुरआन अरबी ज़बान में क्यों नाज़िल हुआ, इससे तो यह शुब्हा होता है कि खुद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैयार कर लिया होगा। अरबी के अलावा किसी दूसरी ज़बान में क्यों नाज़िल नहीं हुआ ताकि यह शुब्हा ही न होता, और कुरआन दूसरी आसमानी किताबों से ग़ैर-अरबी होने में उनके मुवाफ़िक़ भी होता। जवाब का खुलासा यह है कि तमाम पैग़म्बरों पर उन्हीं की कौमी ज़बान में अहकाम नाज़िल होते रहे, क्योंकि असल मक़सूद अहकाम का बयान करना और तब्तीग़ है, न कि ज़बानों में मुत्तफ़िक़ होना।
5. यानी उन अहकाम को कबूल न करके गुमराह होता है।
6. कि वह उन अहकाम को कबूल कर लेता है।
7. पस ग़ालिब होने की बिना पर सबको हिदायत कर सकता था मगर बहुत-सी हिक़मतों की वजह से ऐसा न हुआ।
8. क्योंकि नेमत को याद करके शुक्र करेगा। सज़ा और उसके ख़त्म होने को याद करके आइन्दा हादसों में सब्र करेगा कि याद दिलाने का एक फ़ायदा यह भी है।
9. यानी मुसीबत में बला थी और बला और नेमत दोनों बन्दे के लिए इम्तिहान हैं। पस इसमें मूसा अलैहिस्सलाम ने नेमत व सज़ा दोनों का ज़िक्र फ़रमाया।
11. शुक्र में ईमान और नाशुक्री में कुफ़्र भी दाख़िल है।

बलाउम्-मिररिब्विकुम् अज़ीम (6) ❖

व इज् त-अज्ज-न रब्बुकुम् ल-इन् श-कर्तुम् ल-अजीदन्नकुम् व ल-इन् क-फर्तुम्
इन्-न अजाबी ल-शदीद (7) व का-ल मूसा इन् तक्फुरू अन्तुम् व मन् फिल्अर्जि जमीअन्
फ-इन्नल्ला-ह ल-गनिय्युन् हमीद (8) अलम् यअतिकुम् न-बउल्लजी-न मिन् कब्लिकुम्
कौमि नूहिंव-व आदिंव-व समू-द,

वल्लजी-न मिम्-बअदिहिम्, ला
यअलमुहुम् इल्लल्लाहु, जाअत्हुम्
रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ-रद्दू
ऐदि-यहुम् फी अफवाहिहिम् व कालू
इन्ना क-फरूना बिमा उर्सिल्लुम् बिही व
इन्ना लफी शक्किम् मिम्मा तद्अूनना
इलैहि मुरीब ▲ (9) कालत् रुसुलुहुम्
अफिल्लाहि शक्कुन् फातिरिस्समावाति
वल्अर्जि, यद्अूकुम् लियगिफ-र लकुम्
मिन् जुनूबिकुम् व यु-अखिख-रकुम् इला
अ-जलिम्- मुसम्मन्, कालू इन् अन्तुम्
इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना, तुरीदू-न अन्
तसुद्दूना अम्मा का-न यअबुदु
आबाउना फअ्तूना बिसुल्लानिम्- मुबीन
(10) कालत् लहुम् रुसुलुहुम् इन् नह्नु
इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् व
लाकिन्नल्ला-ह यम्न्नु अला मय्यशा-उ

मिन् अिबादिही, व मा का-न लना अन् नअति-यकुम् बिसुल्तानिन् इल्ला बि-इज्जिल्लाहि, व अलल्लाहि फल्य-तवक्कलिल्- मुअ्मिनून (11) व मा लना अल्ला न-तवक्क-ल अलल्लाहि व कद् हदाना सुबु-लना, व लनस्बिरन्-न अला मा आजैतुमूना, व अलल्लाहि फल्य-तवक्कलिल् मु-तवक्कलून (12) ❖

द कालल्लजी-न क-फरु लिरुसुलिहिम् लनुखिरजन्कम् मिन् अरुजिना औ ल-तअदुन्-न

[illegible]

मिलकर भी नाशुकी करने लगे तो अल्लाह तआला (का कोई नुकसान नहीं, क्योंकि वह) बिलकुल गनी (और) तारीफ वाले हैं। (8) (ऐ मक्का के काफ़िरो!) क्या तुमको उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, यानी नूह की कौम, और (हूद की कौम) आद, और (सालेह की कौम) समूद, और जो लोग उनके बाद हुए हैं जिनको सिवाय अल्लाह तआला के कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलीलें लेकर आए, सो उन कौमों ने अपने हाथ उन (पैग़म्बरों) के मुँह में दे दिए,¹ और कहने लगे कि जो (हुक्म) तुमको देकर भेजा गया है हम उसके इनकारी हैं, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो हम उसकी तरफ़ से बहुत बड़े शुब्हे में हैं जो (हमको) तरद्दुद में डाले हुए है।² ▲ (9) उनके पैग़म्बरों ने कहा, क्या (तुमको) अल्लाह तआला के बारे में शक है जो कि आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है,³ वह तुमको बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे,⁴ और मुकर्ररा मुद्दत तक तुमको (ख़ैर व ख़ूबी के साथ) ज़िन्दगी दे।⁵ उन्होंने कहा कि तुम सिर्फ़ एक आदमी हो जैसे हम हैं,⁶ तुम (यूँ) चाहते हो कि हमारे बाप (और दादा) जिस चीज़ की इबादत करते थे (यानी बुत) उससे हमको रोक दो,⁷ सो कोई साफ़ मोजिज़ा दिखलाओ। (10) उनके रसूलों ने (इसके जवाब में) कहा कि हम भी तुम्हारे जैसे आदमी ही हैं, लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहे एहसान फ़रमा दे,⁸ और यह बात हमारे कब्जे की नहीं कि हम तुमको बिना खुदा के हुक्म के कोई मोजिज़ा दिखला सकें, और अल्लाह ही पर सब ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए।⁹ (11) और हमको अल्लाह पर भरोसा न करने का कौन-सी चीज़ सबब हो सकती है, हालाँकि उसने हमको हमारे (दोनों जहान के फ़ायदों के) रास्ते बतला दिए,¹⁰ और तुमने जो कुछ हमको तकलीफ़ पहुँचाई है हम उसपर सब्र करेंगे, और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (12) ♦

और (उन) काफ़िरोँ ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुमको अपनी सरज़मीन से निकाल देंगे, या (यह हो कि) तुम हमारे मज़हब में लौट आओ। पस उन (रसूलों) पर उनके रब ने (तसल्ली के लिए) वह्य नाज़िल फ़रमाई कि हम (ही) इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे। (13) और उनके (हलाक करने के) बाद तुमको इस सरज़मीन में आबाद रखेंगे। (और) यह हर उस शख्स के लिए (आम) है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे

1. यानी मानते तो क्या? बल्कि यह कोशिश करते थे कि उनको बात तक न करने दें।
2. मकसूद इससे तौहीद व रिसालत दोनों का इनकार है।
3. यानी उसका इन चीज़ों को पैदा करना खुद उसके वजूद और एक होने की दलील है, फिर इस दलील के होते हुए उसके वजूद और उसकी तौहीद में शक है।
4. इस्लाम से तमाम गुनाह तो माफ़ होते हैं लेकिन हुक्क व सज़ाएँ माफ़ नहीं होते। चुनाँचे इस्लाम के सबब ज़िम्मी (यानी वह ग़ैर-मुस्लिम जो मुआहदे के तहत इस्लामी हुक्मत में रहता हो) से सज़ा का ख़त्म न होना फ़िक्ह यानी मसाल के अन्दर ज़िक्र हुआ है।
5. मतलब यह कि तौहीद इसके अलावा कि अपने आप में हक़ है, तुम्हारे लिए दोनों जहान में फ़ायदेमन्द भी है।
6. और बशर (यानी इनसान) होना रसूल होने के खिलाफ़ है, जब पैग़म्बर नहीं हो तो तुम जो कुछ तौहीद के बारे में कहते हो वह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है।
7. हालाँकि शिर्क के हक़ होने की वाज़ेह दलील यह है कि हमारे बुर्जुग इसको करते आए हैं।
8. हम अपने बशर (यानी इनसान) होने को तसलीम करते हैं कि वाकई हम भी तुम्हारे जैसे आदमी ही हैं, लेकिन बशर होने और नुबुव्वत में कोई ऐसी बात नहीं कि दोनों जमा न हों, क्योंकि नुबुव्वत अल्लाह तआला का एक आला दर्जे का इनाम व एहसान है।
9. मोजिज़ा दिखाना हमारे बस की बात नहीं, फिर अगर इसपर भी तुम न मानो और मुख़ालफ़त किए जाओ तो हम तुम्हारी मुख़ालफ़त से नहीं डरते बल्कि अल्लाह पर भरोसा करते हैं।
10. जिसका इतना बड़ा फ़जल हो उसपर तो ज़रूर भरोसा करना चाहिए।

फी मिल्लतिना, फ-औहा इलैहिम् रब्बुहुम् लनुह्लिकन्नज्-जालिमीन (13) व लनुस्किनन्न-कुमुल्-अर्-ज मिम्-बअदिहिम्, जालि-क लिमन् खा-फ मकामी व खा-फ वअदीद (14) वस्तफ्तहू व खा-ब कुल्लु जब्बारिन् अनीद (15) मिंव्वराइही जहन्नमु व युस्का मिम्-माइन् सदीद (16) य-तजररुहू व ला यकादु युसीगुहू व यअतीहिल्-मौतु मिन् कुल्लि मकानिन्-व मा हु-व बि-मय्थितिन्, व मिंव्वराइही अजाबुन् गलीज (17)

म-सलुल्लजी-न क-फरु बिरब्बिहिम् अअ्मालुहुम् क-रमादि-निशतदत् बिहिरीहु फी यौमिन् आसिफिन्, ला यक्दिरु-न मिम्मा क-सबू अला शैइन्, जालि-क हुवज्जलालुल्-बअदीद (18) अलम् त-र अन्नल्ला-ह ख-लकस्-समावाति वल्-अर्-ज बिल्-हक्कि, इय्यशअ युज्हिब्कुम् व यअति बिखल्किन् जदीद (19) व मा जालि-क अलल्लाहि बि-अजीज (20) व ब-रजू लिल्लाहि जमीअन् फकालज्जु-अफा-उ लिल्लजीनस्-तक्बरु इन्ना कुन्ना लकुम् त-बअन् फ-हल् अन्तुम् मुग्नू-न अन्ना मिन् अजाबिल्लाहि मिन् शैइन्, कालू लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम्, सवाउन् अलैना अ-जजिअना अम् सबरना मा लना मिम्-महीस (21) ♦

व कालशैतानु लम्मा कुजियल्-अम्रु इन्नल्ला-ह व-अ-दकुम् वअदल्-हक्कि व व-अत्तुकुम् फ-अख्लफ्तुकुम्, व मा का-न लि-य अलैकुम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला अन् दऔतुकुम् फस्त-जब्बुम् ली फला तलूमनी व लूम अन्फु-सकुम्, मा अ-न बिमुस्तिखिकुम् व

وَمَا أَدْرَاكَ
فَأَوْتَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ۖ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ
الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ
وَعَيْدِي ۖ وَاسْتَغْفِرُوا لِخَطَبِكُمْ كُلِّ غَابٍ عَنِيدٍ ۖ فَمَنْ أَوَّاهٍ
جَهَنَّمَ وَيُفَسِّحُ مِنَ الْعَذَابِ ۖ وَمَا أَصْدَقُ عِتْقًا وَلَا يَكْذِبُ عِتْقًا
وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِعِتْقٍ وَمَنْ أَوَّاهٍ
عَذَابٍ عَلِيمٍ ۖ مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ
إِشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ كَسْبٍ
عَلَىٰ شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الظَّلَالُ الْبُعِيدُ ۖ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ يَشَاءُ يَذْهَبَكُمْ وَيَأْتِي بِخَلْقٍ
جَدِيدٍ ۖ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۖ وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا
فَقَالَ الضُّعَفَاءُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ فَمَا
أَنْتُمْ مُّغْنُونَ عَنْكُمْ مِنَ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا الْوَهْدَانَا
اللَّهُ لَهُدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرُنَا أَمْ صَدْرُنَا مَا لَنَا مِنَ
نَحْبِيبٍ ۖ وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ أَنَّ اللَّهَ وَعَدَهُ
وَعَدَ الْحَقِّ ۖ وَوَعَدَكُمْ فَأَخْلَفَكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ
سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَكُونُوا مِنَ الْوَالِينَ

مَرْكَز

और मेरी वईद “यानी सज़ा की धमकी” से डरे।¹ (14) और (काफ़िर लोग) फैसला चाहने लगे और जितने नाफरमान (और) ज़िद्दी (लोग) थे वे सब नाकाम हुए।² (15) उसके आगे दोज़ख़ है और उसको (दोज़ख़ में) ऐसा पानी पीने को दिया जाएगा जो कि पीप-लहू (के जैसा) होगा। (16) जिसको धूँट-धूँट करके पिएगा और (गले से) आसानी के साथ उतारने की कोई सूरत न होगी, और हर (चारों) तरफ़ से उसपर मौत (के सामान) की आमद होगी और वह किसी तरह से मरेगा नहीं,³ और उसको और सख़्त अज़ाब का सामना होगा।⁴ (17) जो लोग अपने परवर्दिगार के साथ कुफ़्र करते हैं उनकी हालत अमल के एतिबार से यह है कि जैसे कुछ राख हो, जिसको तेज़ आँधी के दिन में तेज़ी के साथ हवा उड़ा ले जाए। (इसी तरह) उन लोगों ने जो कुछ अमल किए थे उनका कोई हिस्सा उनको हासिल न होगा (राख की तरह बर्बाद हो जाएगा), यह भी बड़ी दूर दराज़ की गुमराही है।⁵ (18) क्या (ऐ मुख़ातब!) तुझको यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने आसमानों को और ज़मीन को बिलकुल ठीक-ठीक⁶ पैदा किया है, (इससे उसका कादिर होना भी मालूम हो गया, पस) अगर वह चाहे तो तुम सबको फ़ना कर दे और एक दूसरी नई मख़्लूक को पैदा कर दे। (19) और यह खुदा को कुछ भी मुश्किल नहीं।⁷ (20) और खुदा के सामने सब पेश होंगे, फिर छोटे दर्जे के लोग (यानी अ़वाम और पैरवी करने वाले) बड़े दर्जे के लोगों से कहेंगे कि हम (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, तो क्या तुम खुदा के अज़ाब का कुछ हिस्सा हमसे हटा सकते हो।⁸ वे (जवाब में) कहेंगे कि अगर अल्लाह हमको कोई राह बतलाता तो हम तुमको वह राह बतला देते, (और अब तो) हम सबके हक़ में (दोनों सूरतों) बराबर हैं, चाहे हम परेशान हों चाहे संयम से काम लें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं।⁹ (21) ♦

1. मुराद यह कि जो मुसलमान हो, जिसकी निशानी अल्लाह के सामने खड़ा होने और उसकी सज़ा की धमकी से खौफ़ है, सबके लिए यह अज़ाब से नजात देने का वायदा आम है।
2. यानी हलाक हो गए और जो उनकी मुराद थी कि अपने को हक़ पर समझकर फ़तह व कामयाबी चाहते थे वह हासिल न हुई।
3. रिसालत के बाज़ इनकारी अपने ख़याल व गुमान में अल्लाह से नज़दीकी और सवाब के भी कुछ आमांल करते थे जिनमें से कुछ तो अपनी ज़ात के एतिबार से भी नज़दीकी का सबब न थे जैसे बुतों को पूजना, और बाज़ अपनी ज़ात के एतिबार से तो कुर्ब व नज़दीकी का ज़रिया थे मगर ईमान के न होने के सबब उनके हक़ में कुर्बत नहीं रहे थे जैसे गुलामों और बौंदियों को आज़ाद करना, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक, मेहमानों की ख़ातिर-मुदारात वगैरह-वगैरह। पस इन आमांल का लिहाज़ करके उनको शुब्हा हो सकता था कि ये आमांल हमारे काम आएंगे और अज़ाब से बचा लेंगे। इसी तरह यह ख़याल हो सकता था कि क़ियामत ही कायम न होगी इसलिए अज़ाब भी न होगा। इसी तरह यह वस्वसा भी मुम्किन था कि हम जिनके हुक्म से इस बुत-परस्ती को इख़्तियार किए हुए हैं, वे और अल्लाह के अलावा हमारे माबूद हमको बचा लेंगे, इसलिए हक़ तआला ने उनके लिए नजात के तमाम रास्तों का बन्द हो जाना गुज़िश्ता आयतों में ज़ाहिर फ़रमा दिया।
4. अगर उन काफ़िरों को अपनी नजात के मुताल्लिक़ यह गुमान हो कि हमारे आमांल हमारे लिए फ़ायदेमन्द (लाभदायक) होंगे तो इसका कायदा कुल्लिया यह सुन लो कि काफ़िरों के आमांल की तो यह मिसाल है जैसे तेज़ आँधी राख को उड़ा ले जाए। इस सूरत में उस राख का नाम व निशान भी न रहेगा जो उड़ने में बहुत हल्की होती है, जिसका बयान अगली आयत में है।
5. गुमान तो यह हो कि हमारे अमल नेक और नफ़ा देने वाले हैं और फिर ज़ाहिर हों बुरे और नुक़सान देने वाले।
6. यानी फ़ायदों और मस्तहतों पर मुश्तमिल।
7. पस जब नई मख़्लूक पैदा करना आसान है तो तुमको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। पस इसमें आसमान व ज़मीन के पैदा करने से तो नई मख़्लूक के पैदा करने की कुदरत होने पर इस्तिदाल किया और उससे पुरानी मख़्लूक के दोबारा पैदा करने पर कादिर होने पर दलील पकड़ी। गरज़ नजात के रास्ते का यह ख़याल व गुमान भी बातिल हुआ।
8. यानी अगर यह गुमान हो कि हमारे बड़े हमको बचा लेंगे तो इसकी हकीक़त भी सुन लो कि अ़वाम और ताबिईन् ख़ास लोगों और जिनकी वे पैरवी करते थे उनसे बतौर मलामत व नाराज़गी के कहेंगे कि दीन का जो रास्ता तुमने हमको बतलाया हम उसी पर हो लिए और आज हमपर मुसीबत है, अगर बिलकुल न बचा सको तो कुछ तो बचा सकते हो?
9. इस सवाल व जवाब से मालूम हो गया कि कुफ़्र के रास्ते के बड़े भी अपने पैरोकारों के कुछ काम न आएंगे। नजात के इस तरीके में भी कोई गुन्जाइश न रही।

और जब (कियामत में) तमाम मुकद्दमों का फैसला हो चुकेगा तो (जवाब में) शैतान कहेगा कि अल्लाह तआला ने तुमसे सच्चे वायदे किए थे और मैंने भी तुमसे कुछ वायदे किए थे, सो मैंने वे वायदे तुमसे ख़िलाफ़ किए थे, और मेरा तुमपर और तो कुछ ज़ोर चलता न था, सिवाय इसके कि मैंने तुमको बुलाया था। सो तुमने (अपने इख़्तियार से) मेरा कहना मान लिया, तो तुम (सारी) मलामत मुझपर मत करो, और (ज्यादा) मलामत अपने आपको करो।¹ न मैं तुम्हारा मददगार (हो सकता) हूँ और न तुम मेरे मददगार (हो सकते) हो, मैं खुद (तुम्हारे) इस (फ़ेल) से बेज़ार हूँ कि तुम इसके पहले (दुनिया में) मुझको (खुदा का) शरीक करार देते थे। यकीनन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब (मुकर्रर) है।² (22) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए वे ऐसे बाग़ों में दाख़िल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, (और) वे उनमें अपने परवर्दिगार के हुक्म से हमेशा-हमेशा रहेंगे, (और) वहाँ उनको सलाम इस लफ़्ज़ से किया जाएगा। अस्सलामु अलैकुम।³ (23) क्या आपको मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई है, कलिमा-ए-तथियबा (यानी कलिमा-ए-तौहीद) की कि वह एक पाकीज़ा दरख़्त के जैसा है,⁴ जिसकी जड़ ख़ूब गड़ी हुई हो और उसकी शाखें “यानी टहनियाँ” ऊँचाई में जा रही हों। (24) वह अपने परवर्दिगार के हुक्म से हर फ़सल में अपना फल देता हो,⁵ और अल्लाह तआला (ऐसी) मिसालें लोगों के वास्ते इसलिए बयान फ़रमाते हैं ताकि वे ख़ूब समझ लें। (25) और गन्दे कलिमे (या कुफ़्र व शिर्क के कलिमे) की मिसाल ऐसी है जैसे एक ख़राब दरख़्त हो कि ज़मीन के ऊपर ही ऊपर से उखाड़ लिया जाए, उसको कुछ जमाव “और मज़बूती” न हो।⁶ (26) अल्लाह तआला ईमान वालों को इस पक्की बात (यानी कलिमा-ए-तथियबा की बरकत) से दुनिया और आख़िरत में मज़बूत रखता है,⁷ और अल्लाह तआला ज़ालिमों (यानी काफ़िरों) को (दीन में और इम्तिहान में) बिचला देता है,⁸ और अल्लाह तआला जो चाहता है करता है। (27) ♦

क्या आपने उन लोगों (मक्का वालों) को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत पर बजाय (शुक्र करने के) कुफ़्र किया और जिन्होंने अपनी कौम को हलाकत के घर (28) (यानी) जहन्नम में पहुँचा दिया।⁹ वे उसमें दाख़िल होंगे, और वह रहने की बुरी जगह है। (29) और उन लोगों ने अल्लाह के साझी करार दिए ताकि दूसरों को भी उसके दीन से गुमराह करें। आप कह दीजिए कि थोड़ी और ऐश कर लो, क्योंकि तुम्हारा अख़ीर अन्जाम दोज़ख़ में जाना है।¹⁰ (30) जो मेरे (खास) ईमान वाले बन्दे हैं उनसे कह दीजिए कि वे नमाज़ की पाबन्दी रखें और हमने जो कुछ उनको दिया है उसमें से छुपे और खुले तौर पर खर्च किया करें, ऐसे दिन के आने से पहले (पहले) कि जिसमें न ख़रीद व बेच होगी और न दोस्ती।¹¹ (31) अल्लाह ऐसा है कि जिसने

1. जब कियामत में ईमान वाले जन्मत में और कुफ़्रार दोज़ख़ में भेज दिये जायेंगे तो उस वक़्त शैतान भी उनका शरीके हाल होगा। दोज़ख़ वाले उसको मलामत करेंगे कि कमबख़्त! तू तो डूबा ही था हमको भी अपने साथ डुबो दिया। शैतान जवाब देगा कि मुझपर तुम्हारी मलामत बेजा है क्योंकि अल्लाह ने तुमसे जितने वायदे किये थे सब सच्चे वादे थे, कि ईमान से नजात और कुफ़्र से हलाकत होगी, और कियामत ज़रूर कायम होगी। इसके बरख़िलाफ़ मैंने कहा था कि कियामत कायम नहीं होगी और तुम्हारा कुफ़्र का तरीका ही नजात का सबब है। हक़ तआला का इश्राद सही और मेरा बयान ग़लत था। अल्लाह तआला के वायदों के हक़ होने और मेरे बयानात के ग़लत होने पर कतई दलीलें कायम थीं। सो बावजूद इसके तुमने मेरे वायदों को सही और खुदा के वायदों को ग़लत समझा। तो तुम अपने हाथों खुद डूबे।
2. पस इससे अल्लाह के अलावा दूसरे माबूदों का भरोसा भी ख़त्म हुआ। क्योंकि जो उन माबूदों की इबादत का असल ज़न्बा और सबब है। जब उसने साफ़ जवाब दे दिया तो औरों से क्या उम्मीद हो सकती है। पस काफ़िरों की नजात तमाम रास्ते बन्द हो गये।
3. यानी आपस में भी और फ़रिश्तों की तरफ़ से भी। अल्लाह तआला के कौल: ‘इल्ला कीलन् सलामन् सलामा’ और अल्लाह तआला के कौल: ‘वल्ल-मलाइ-कतु यदखुलू-न अलैहिम मिन् कुल्लि बाबिन्, सलामुन् अलैकुम बिमा स-बरतुम-.....’ की वजह से।
4. मुराद खज़ूर का दरख़्त है।
5. यानी ख़ूब फल देता हो कोई फ़सल मारी न जाती हो। इसी तरह कलिमा-ए-तौहीद यानी: (शेष तफ़सीर पृष्ठ 470 पर)

व सख्ख-र लकुमुल्फुल्-क लितजि-य फिल्- बहिर बि-अमिही व सख्ख-र लकुमुल्-अन्हार
(32) व सख्ख-र लकुमुश्शम्-स वल्- क-म-र दाइबैनि व सख्ख-र लकुमुल्- लै-ल
वन्नहार (33) व आताकुम् मिन् कुल्लि मा स-अल्तुमूह, व इन् तअुद्दू निअ-मतल्लाहि ला
तुह्सूहा, इन्नल्- इन्सा-न ल-जलूमुन् कफफार (34) ♦

व इज् का-ल इब्राहीमु रब्बिज्अल्
हाजल्-ब-ल-द आमिनव्-वज्नुब्नी व
बनिय्-य अन् नअब्बुदल्-अस्नाम (35)
रब्बि इन्नहुन्-न अजलल्-न कसीरम्-
मिनन्नासि फ-मन् तबि-अनी फ-इन्नहू
मिन्नी व मन् अंसानी फइन्न-क गफूर
रहीम (36) रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन्
जुर्रिय्यती बिवादिन् गैरि जी-जर्रिअिन्
अिन्-द बैतिकल्-मुहरर्मि रब्बना
लियुकीमुस्सला-त फज्अल् अफइ-दतम्
मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्रज्जुकहुम्
मिनस्स-मराति लअल्लहुम् यश्कुरून
(37) रब्बना इन्न-क तअल्मु मा
नुखफी व मा नुअ्लिनु, व मा यख्फा
अलल्लाहि मिन् शैइन् फिल्अजि व ला
फिस्समा-इ (38) अल्हम्दु

लिल्लाहिल्लजी व-ह-ब ली अलल्-
कि-बरि इस्माजी-ल व इस्हा-क, इन्-न
रब्बी ल-समीअुद्-दुआ-इ (39) रब्बिज्अल्ली मुकीमस्सलाति व मिन् जुर्रिय्यती रब्बना व
तक्ब्बल् दुआ-इ (40) रब्बनगिफ्र ली व लिवालिदय्-य व लिल्मुअ्मिनी-न यौ-म
यकूमुल्-हिसाब (41) ♦

व ला तह्स-बन्नल्ला-ह गाफिलन् अम्मा यअ्मलुज्जालिम्-न, इन्नमा युअख्खिरुहुम्
लियौमिन् तश्खसु फीहिल्-अब्सार (42) मुह्तिअी-न मुक्निअी रुऊसिहिम् ला यरतद्दु

وَالْأَرْضُ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الثَّلَاثَ لَلْجَبْرِ فِي الْبَحْرِ بَأْمَرَةٍ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآبِّينَ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ
وَاتَّكَمْتُمْ مِنْ كُلِّ مَآسَاءٍ قُوَّةً وَإِنْ تُعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصِيهَا
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا
الْبَيْتَ أَمِنًا وَاجْعَلْ بَيْنِي وَبَيْنَ رَبِّكَ الصَّلَاةَ رَبِّ اجْعَلْ
أَصْلَافًا كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ قَمِّنْ تَبَعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي وَمَنْ
عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ رَبَّنَا إِنِّي أَتَّكَمْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي
بِرَّادٍ غَيْرِ ذِي زُرْعَةٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ
فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَامْرَأَةً مُهْتَمَّةً مِنْ
الْثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا خَفِيَ وَمَا نَعْلُنُ
وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ
رَبِّي لَسَمِيعٌ الدُّعَاءِ رَبِّ اجْعَلْ لِي مَقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ
الْحِسَابُ وَلَا تَحْسِبَنَّ اللَّهُ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ إِنَّنَا

आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से पानी (यानी बारिश को) बरसाया, फिर उस (पानी) से फलों की किस्म से तुम्हारे लिए रिज्क पैदा किया और तुम्हारे नफे के वास्ते कश्ती (और जहाज़) को तुम्हारे ताबे बनाया ताकि वह उसके (यानी खुदा के) हुक्म (व कुदरत) से दरिया में चले, और तुम्हारे नफे के वास्ते नहरों को (अपनी कुदरत का) ताबे बनाया। (32) और तुम्हारे नफे के वास्ते सूरज और चाँद को (अपनी कुदरत का) ताबे बनाया जो हमेशा चलने ही में रहते हैं, और तुम्हारे नफे के वास्ते रात और दिन को (अपनी कुदरत का) ताबे बनाया। (33) और जो-जो चीज़ तुमने माँगी तुमको (हर चीज़) दी,¹ और अल्लाह तआला की नेमतें अगर शुमार करने लगे तो शुमार में नहीं ला सकते, (मगर) सच यह है कि आदमी बहुत ही बेइन्साफ़ और बड़ा ही नाशुक है।² (34) ♦

और जबकि इब्राहीम ने कहा,³ ऐ मेरे रब! इस शहर (यानी मक्का) को अमन वाला बना दीजिए⁴ और मुझको और मेरे खास फरज़न्दों को बुतों की हिफाज़त से बचाए रखिए।⁵ (35) ऐ मेरे परवर्दिगार! उन बुतों ने बहुत-से आदमियों को गुमराह कर दिया,⁶ फिर जो शख्स मेरी राह पर चलेगा वह तो मेरा है ही, और जो शख्स (इस बारे में) मेरा कहना न माने, सो आप तो बहुत ज़्यादा मफ़िरत करने वाले (और) बहुत ज़्यादा रहमत फरमाने वाले हैं।⁷ (36) ऐ हमारे रब! मैं अपनी औलाद को⁸ आपके अज़मत वाले “यानी प्रतिष्ठि” घर के करीब⁹ एक (चटियल और सुनसान) मैदान में जो काश्तकारी के काबिल नहीं,¹⁰ आबाद करता हूँ, ऐ हमारे रब ताकि वे लोग नमाज़ का एहतिमाम “यानी पाबन्दी” रखें, तो आप कुछ लोगों के दिल उनकी तरफ़ माइल कर दीजिए,¹¹ और उनको (महज़ अपनी कुदरत से) फल खाने को दीजिए¹² ताकि ये लोग (इन नेमतों का) शुक्र करें।¹³ (37) ऐ हमारे रब! आपको तो सब कुछ मालूम है जो हम अपने दिल में रखें और जो ज़ाहिर कर दें। और अल्लाह तआला से (तो) कोई चीज़ भी छुपी नहीं, (न) ज़मीन में और न आसमान में। (38) तमाम तारीफ़ (और प्रशंसा) खुदा के लिए (लायक) है जिसने मुझको बुढ़ापे में इसमाईल और इसहाक (दो बेटे) अता फरमाए। हकीकत में मेरा रब दुआ का बड़ा सुनने वाला है।¹⁴ (39) ऐ मेरे रब! मुझको भी नमाज़ का (खास) एहतिमाम करने वाला रखिए और मेरी औलाद में भी¹⁵ (बाज़ों को)। ऐ हमारे रब! और मेरी (यह) दुआ कबूल कीजिये। (40) (और) ऐ हमारे रब! मेरी मफ़िरत कर दीजिए और मेरे माँ-बाप की भी और तमाम मोमिनों की भी हिसाब के कायम होने के दिन।¹⁶ (41) ♦

(पृष्ठ 468 का शेष)

‘ला इला-ह इल्लल्लाहु’ की एक जड़ है यानी एतिकाद जो मोमिन के दिल में मज़बूती के साथ जगह पकड़े हुए है। और उसकी कुछ शाखें हैं यानी नेक आमाल जो ईमान पर मुरत्तब होते हैं जो बारगाहे कबूलियत में आसमान की तरफ़ ले जाये जाते हैं। फिर उनपर हमेशा की रिज़ा का फल और नतीजा मुरत्तब होता है।

6. मुराद हन्ज़ल यानी इन्दराइन का पेड़ है। वह तनेदार नहीं होता उसको मजाज़न पेड़ फरमा दिया गया। और ख़राब उसकी बू, रंग और मजे की वजह से फरमाया। और ऊपर से उखाड़ने का मतलब यह है कि उसकी जड़ दूर तक नहीं होती ऊपर ही रखी होती है।

7. दुनियावी ज़िन्दगी में साबित कदम रहने से यह मुराद है कि उसपर शैतानों के बहकाने और गुमराह करने का असर नहीं होता और मरते दम तक ईमान पर कायम रहता है। और आख़िरत की मज़बूती से मुराद क़ब्र में मुन्कर नकीर के जवाब का सही-सही और इत्मीनान से जवाब दे देना है। यह तफ़सीर बहुत-सी हदीसों में आई है।

8. दुनिया में तो काफ़िरों की गुमराही ज़ाहिर है और क़ब्र में हदीसों की वज़ाहत के मुताबिक़ उनसे जवाब न बन पड़ेगा बल्कि हैरानी व परेशानी भरा जवाब देंगे। हाँ हाँ मैं नहीं जानता।

9. यानी उनको भी कुफ़्र की तालीम दी।

10. ऐश से मुराद कुफ़्र की हालत में रहना है। क्योंकि हर शख्स को अपने मज़हब में लज़्ज़त होती है। यानी और थोड़े दिन कुफ़्र कर लो यह धमकी और डोंट है।

11. यानी जिस्मानी और माली इबादतों को (पृष्ठ 468 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 470 की तफ़सीर पृष्ठ 472-476 पर)

इलैहिम् तरफुहुम् व अफइ-दतुहुम् हवा-अ (43) व अन्जिरिन्ना-स यौ-म यअत्तीहिमुल्-
अज़ाबु फ-यकूलुल्लज़ी-न ज़-लमू रब्बना अख़िब्रना इला अ-जलिन् करीबिन् नुजिब
दअव-त-क व नत्तबिअिरुसु-ल, अ-व लम् तकूनू अक्सम्तुम् मिन् कब्बु मा लकुम् मिन्
ज़वाल (44) व सकन्तुम् फी मसाकिनिल्लज़ी-न ज़-लमू अन्फु-सहुम् व तबय्य-न
लकुम् कै-फ फअल्ला बिहिम् व ज़रब्ना
लकुमुल्- अमूसाल (45) व कद्
म-करु मकरहुम् व अिन्दल्लाहि मकरहुम्,
व इन् का-न मकरहुम् लि-तज़ू-ल
मिन्हुल्- जिबाल (46) फला
तहस-बन्नल्ला-ह मुख़िल-फ वअदिही
रुसु-लहू, इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन्
जुन्तिकाम (47) यौ-म तुबदलुल्- अरज़ु
गैरल्-अर्जि वस्समावातु व ब-रज़ू
लिल्लाहिल् वाहिदिल्-कहहार (48) व
तरल्मुज्रिमी-न यौ-मइज़िम् मुकर्रनी-न
फिल्-अस्फाद (49) सराबीलुहुम् मिन्
कतिरानिन्-व व तशशा वुजू-हहुमुन्नार
(50) लियज़्जियल्लाहु कुल्-ल नफ़िसम्
मा क-सबत्, इन्नल्ला-ह सरीअुल्-
हिसाब (51) हाज़ा बलागुल्-लिन्नासि व
लियुन्ज़रु बिही व लि-यअ्लमू अन्नमा
हु-व इलाहुंवाहिदुं-व लि-यज़्जक्क-र
उलुल्-अल्बाब (52) ♦

يُخْرِجُهُمْ لِيَوْمٍ تُنْخَسُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۖ لَهُمْ فِيهِ مَقْعَدٌ ۖ وَهُمْ فِيهِ مُقْنِنُونَ
رَبُّهُمْ لَا يَزِيدُ إِلَيْهِمْ طَرَفَهُمْ ۖ وَأَفِيدَتْ لَهُمُ الْوُكُودُ ۖ وَالَّذِينَ
النَّاسُ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ ۖ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ نَحْبُ دَعْوَتِكَ وَتَتَّبِعِ الرَّسُولَ ۖ أَوْ كَمْ تَكُونُوا
أَفْسَدْتُمْ مِنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِنَ زُلَالٍ ۖ وَسَكَنْتُمْ فِي مَسْكَانٍ
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْتُمْ ۖ وَخَرَّبْنَا
لَكُمْ الْأَمْثَالَ ۖ وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ ۖ وَإِنْ
كَانَ مَكْرُهُمْ لِيَتَرَدُّوا مِنْهُ إِلَى الْجِبَالِ ۖ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ فَخْفًا
لُسْلُسًا ۖ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۖ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ
وَالسَّمَوَاتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۖ وَتَرَى الْمُسْرِمِينَ
يَوْمَئِذٍ مُقْعَدِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۖ سَرَابٍ مُقْتَرِنٍ قَطْرَانٍ ۖ وَتَعْنَى
وَجُوهَهُمُ النَّارُ ۖ لِيُجْزَى اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۖ هَذَا آيَةُ لِلنَّاسِ وَلِيُنذِرُوهُ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّكُمْ
هُوَ اللَّهُ ۖ وَاحِدٌ وَلَيْدٌ ۖ كَرُّ أُولَ الْأَلْبَابِ ۖ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ تَعْلَاةٌ وَرَبُّكَ
الرَّحْمَنُ ۖ إِلَيْكَ الْكِتَابُ ۖ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ۖ

15 सूरतुल्-हिज्र 54

(मक्की) इस सूर: में अरबी के 2907 अक्षर, 663 शब्द, 99 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ्-लाम्-रा। तिल्-क आयातुल्- किताबि व कुरआनिम्-मुबीन (1)

और (ऐ मुख़ातब!) जो कुछ ये ज़ालिम (काफ़िर) लोग कर रहे हैं इससे अल्लाह को बेख़बर मत समझ (क्योंकि) उनको सिर्फ़ उस दिन तक मोहलत दे रखी है जिसमें (उन लोगों की) निगाहें फटी रह जाएंगी। (42) दौड़ते होंगे, अपने सर ऊपर उठा रखे होंगे, (और) उनकी नज़र उनकी तरफ़ हटकर न आएगी,¹ और उनके दिल बिल्कुल बदहवास होंगे। (43) और आप उन लोगों को उस दिन से डराइए जिस दिन उनपर अज़ाब आ पड़ेगा। फिर ये ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब! एक थोड़ी-सी मुद्दत तक हमको (और) मोहलत दे दीजिए, हम आपका सब कहना मान लेंगे और पैग़म्बरों की इत्तिबा “यानी पैरवी” करेंगे। (जवाब में इशार्द होगा) क्या तुमने इससे पहले कस्में न खाई थीं कि तुमको कहीं जाना ही नहीं है? (44) हालाँकि तुम उन (पहले) लोगों के रहने की जगहों में रहते थे जिन्होंने अपनी ज़ात का नुक़सान किया था, और तुमको (यह भी) मालूम हो गया था कि हमने उनके साथ क्योकर मामला किया था, और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं।² (45) और उन लोगों ने अपनी-सी बहुत ही बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं, और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। और वाकई उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएँ, (मगर सब बेकार हो गईं)।³ (46) पस अल्लाह तआला को अपने रसूलों से वायदा-ख़िलाफ़ी करने वाला न समझना, बेशक अल्लाह तआला बड़ा ज़बरदस्त (और) पूरा बदला लेने वाला है। (47) जिस दिन दूसरी ज़मीन बदल दी जाएगी इस ज़मीन के अलावा और आसमान भी,⁴ और सब-के-सब एक ज़बरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। (48) और तू मुज़्रिमों (यानी काफ़िरों) को ज़न्जीरों में जकड़े हुए देखेगा। (49) (और) उनके कुत्ते कतरान के होंगे,⁵ और आग उनके चेहरों पर लिपटी होगी। (50) ताकि अल्लाह तआला हर (मुज़्रिम) शख्स को उसके किए की सज़ा दे, यकीनन अल्लाह तआला बड़ी जल्दी हिसाब लेने वाला है। (51) यह (कुरआन) लोगों के लिए (अहक़ाम का) पहुँचाना है, और ताकि इसके ज़रिये से (अज़ाब से) डराए जाएँ, और ताकि इस बात का यकीन कर लें कि वही एक माबूद (बरहक़) है, और ताकि समझदार लोग नसीहत हासिल करें। (52) ♦

15 सूर: हिज्र 54

सूर: हिज्र मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 99 आयतें और 6 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अलिफ़-लाम-रा।¹ ये आयतें हैं एक (कामिल) किताब और वाज़ेह कुरआन की।² (1)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अदा करते हैं कि यही नेमत का शुक्र है। इस आयत में मोमिनों की कई तरह तारीफ़ हो गई। एक तो ‘अल्लज़ी-न आमनू’ से उनको ताबीर फ़रमाया, फिर उनको अ़िबादी (यानी मेरे बन्दे) सम्मान बढ़ाने के तौर पर फ़रमाया, फिर इनायत फ़रमाते हुए शुक्र करने की तरगीब देकर नाशुकी की बड़ी आफ़त से बचा लिया।

(तफ़सीर पृष्ठ 470)

1. जो-जो चीज़ में शर्त यह है कि वह बन्दे के हाल के भी मुनासिब हो। इससे यह शुब्हा जाता रहा कि बाज़ चीज़ें हम माँगते हैं मगर वे नहीं मिलतीं। सो वे अल्लाह की मस्तहत में माँगने वाले के हाल के मुनासिब न होंगी।

2. क्योंकि वह अल्लाह की नेमतों की क़द्र और उनका शुक्र अदा नहीं करता बल्कि और इसके उनट कुफ़ व नाफ़रमानी करने लगता है।

3. हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम और हज़रत हाज़रा अलैहस्सलाम को अल्लाह के हुक्म से मक्का के मैदान में लाकर रखने के वक़्त दुआ के तौर पर कहा।

4. यानी इसके रहने वाले अमन के हक़दार रहें, यानी इसको हरम कर दीजिए।

5. बुत-परस्ती से महफूज़ रखिए जो जाहिलों में राज़ि है, जैसा कि अब तक महफूज़ रखा।

6. यानी उनकी गुमराही के सबब हो गए, इसलिए डरकर आपकी पनाह चाहता हूँ। और मैं जिस तरह औलाद के बचने की दुआ करता हूँ इसी तरह उनको भी कहता-सुनता रहूँगा। (पृष्ठ 470 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 472 की तफ़सीर पृष्ठ 474-478 पर)

चौदहवाँ पारः रु-बमा

सूरतुल्-हिज्जि (आयत 2 से 99)

रु-बमा यवदुल्लजी-न क-फरू लौ कानू मुस्लिमीन (2) जरहुम् यअकुलू व य-तमतअ

व युल्हिहिमुल्-अ-मलु फसौ-फ यअलमून

(3) व मा अहलकना मिन् करयतिन्

इल्ला व लहा किताबुम्-मअलूम (4) मा

तस्बिक्कु मिन् उम्मतित् अ-ज-लहा व मा

यस्तअखिरून (5) व कालू या

अय्युहल्लजी नुज्जि-ल अलैहिज्जिक्क

इन्न-क ल-मज्जून (6) लौ मा

तअतीना बिल्मलाइ-कति इन् कुन्-त

मिनस्सादिकीन (7) मा नुनज्जिलुल्-

मलाइ-क-त इल्ला बिल्हक्क व मा कानू

इजम्-मुज्जरीन (8) इन्ना नहनु नज्जल्-

नज्जिक्-र व इन्ना लहू लहाफिजून (9)

व ल-कद् अर्सल्ला मिन् कब्लि-क फी

शि-यअिल्-अव्वलीन (10) व मा

यअतीहिम् मिरसूलिन् इल्ला कानू

बिही यस्तहिजऊन (11) कजालि-क

नस्तुकुहू फी कुलूबिल्-मुज्जिमीन (12)

ला युअमिन्-न बिही व कद् खलत् सुन्नतुल्-अव्वलीन (13) व लौ फतहना अलैहिम्

बाबम्-मिनस्समा-इ फजल्लू फीहि यअरूजून (14) लकालू इन्ना सुक्किरत् अब्सारुना बल्

नहनु कौमुम्-मसहूरून (15) ♦

व ल-कद् जअल्ला फिस्समा-इ बुरूजव्-व जय्यन्नाहा लिन्नाजिरीन (16) व

हफिज्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्जीम (17) इल्ला मनिस्त-रक्स्सम्-अ फअत्ब-अहू

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ذَرَهُمْ يَٰكُلُوا
وَيَسْمَعُوا وَيُلهِمُهُمُ ٱلْأَمَلَ فَهُمْ يُبْغُونَ ۝ وَمَآ أَهْلَكْنَا
مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ
أَجَلَهَا وَمَآ يَسْتَأْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَٰأَيُّهَا ٱلَّذِى نُزِّلَ عَلَيْهِ
ٱلْقُرْءَانُ ٱلْمُجْتَبُونَ ۝ تَوَٰمَاتِنَا يَٰمُكِبْكُمُ ۚ إِنْ كُنْتُمْ مِنَ
ٱلْصَٰدِقِينَ ۝ مَا نُنَزِّلُ ٱلْمُكِبَ إِلَّا ٱلْأَحْقَ وَمَآ كَانُوا إِذَآ
مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا ٱلْقُرْءَانَ وَإِنَّا لَهُ لَحَٰفِظُونَ ۝ وَ
لَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْعِ ٱلْأَوَّلِينَ ۝ وَمَآ يَأْتِيهِمْ
مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ كَذَٰلِكَ نَسُكُّهُ فِي
قُلُوبِ ٱلْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝
وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَٰبًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝
لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْجُورُونَ ۝
وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي ٱلسَّمَآءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّظِيرِينَ ۝ وَحَفِظْنَاهَا
مِنْ كُلِّ شَٰيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ ۝ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ ٱلسَّمْعَ فَٱتَّبَعَهُ
شَهَابٌ مُّبِينٌ ۝ وَٱلْأَرْضُ مَدَدْنَاهَا ٱلْقَيْنَافِهَا رَوَٰىى
وَٱكْتَبْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا

चौदहवाँ पार: रु-बमा

सूर: हिज़्र (आयत 2 से 99)

काफ़िर लोग बार-बार तमन्ना करेंगे कि क्या ख़ूब होता अगर वे मुसलमान होते।¹ (2) आप उनको (उनके हाल पर) रहने दीजिए कि वे खा लें और चैन उड़ा लें और ख़्याली मन्सूबे उनको ग़फलत में डाले रखें, उनको अभी हकीक़त मालूम हुई जाती है। (3) और हमने जितनी बस्तियाँ हलाक की हैं उन सबके लिए एक मुकर्रर (वक़््त) लिखा हुआ (होता रहा) है। (4) कोई उम्मत अपनी मुकर्ररा मीयाद से न पहले (हलाक) हुई है और न पीछे रही है।² (5) और (उन काफ़िरो ने यूँ) कहा कि ऐ वह शख़्स जिसपर कुरआन नाज़िल किया गया है, तहकीक़ कि तुम मजन्नु हो। (6) अगर तुम सच्चे हो तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं लाते। (7) हम फ़रिश्तों को साफ़ फ़ैसले ही के लिए नाज़िल किया करते हैं, और उस वक़््त उनको मोहलत भी न दी जाती। (8) हमने कुरआन को नाज़िल किया है और हम इसके मुहाफ़िज़ हैं।³ (9) और हमने आपसे पहले भी (पैग़म्बरों को) अगले लोगों के गिरोहों में भेजा था। (10) और कोई रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसके साथ उन्होंने हँसी-ठट्टा न किया हो। (11) इसी तरह हम यह (हँसी और मज़ाक़ उड़ाना) उन मुज़िर्मों के दिलों में डाल देते हैं। (12) (जिसकी वजह से) ये लोग इस (कुरआन) पर ईमान नहीं लाते, और (यह) दस्तूर पहलों ही से होता आया है। (13) और अगर हम उनके लिए आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें फिर ये दिन के वक़््त उसमें चढ़ जाएँ। (14) (तब भी यूँ) कह दें कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गई थी, बल्कि हम लोगों पर तो बिल्कुल जादू कर रखा है। (15) ♦

और बेशक हमने आसमान में बड़े-बड़े सितारे पैदा किए, और देखने वालों के लिए उसको सजाया।⁴ (16) और उसको हर शैतान मरदूद से महफूज़ फरमाया।⁵ (17) हाँ मगर कोई बात चोरी-छुपे सुन भागे तो उसके पीछे एक चमकदार शोला हो लेता है।⁶ (18) और हमने ज़मीन को फैलाया और उसमें भारी-भारी पहाड़ डाल दिए और उसमें हर किस्म की चीज़ एक मुतैयन मिक्कदार “मात्रा” से उगाई है। (19) और हमने तुम्हारे

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. उनकी मफ़िरत और रहमत का सामान भी कर सकते हैं कि उनको हिदायत कर दें। इस दुआ से मकसूद मोमिनो के लिए हिदायत तलब करना है।

8. यानी इसमाईल अलैहिस्सलाम को और उनके वास्ते से उनकी नस्ल को।

9. यानी ख़ाना काबा के करीब जो कि पहले से यहाँ बना हुआ था और हमेशा से लोग उसका अदब करते आते थे।

10. चटियल और सुनसान मैदान में जो पथरीला होने के सबब खेती-बाड़ी के काबिल नहीं।

11. कि यहाँ आकर रहें-सहें ताकि आबादी पुर-रौनक हो जाए।

12. चूँकि यहाँ खेती-बाड़ी वगैरह नहीं हो सकती, इसलिए उनको महज़ अपनी कुदरत से फल खाने को दीजिए।

13. ये दुआएँ महज़ बन्दगी और आजिजी के इज़हार के लिए हैं, इनसे यह गरज़ नहीं कि दरख़ास्त करके आपको अपनी हाजतों की इत्तिला दें।

14. कि औलाद के देने के मुताल्लिक मेरी दुआ कबूल की।

15. चूँकि मुझको वह्द से मालूम हो गया है कि मेरी औलाद में गैर-मोमिन भी होंगे इसलिए सारी औलाद के लिए दुआ नहीं कर सकता।

16. इस मक़ाम पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कई दुआएँ सिवाय माँ-बाप की मफ़िरत के सब कबूल हुई। अव्वल मक्का को अमन वाला बनाना। चुनाँचे वह इस तरह कबूल हुई कि वह हरम हो गया जिसमें कल्ल व ग़ारत यहाँ तक कि जंगली जानवरों और बाज़े घास और पौधों का काटना व हटाना भी हराम हो गया। दूसरी दुआ अपने और अपनी औलाद के शिर्क से महफूज़ रहने की थी। वह इस तरह कबूल हुई कि उनके ख़ास फ़रज़न्द (पृष्ठ 470 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 472, 474 की तफ़सीर पृष्ठ 476-480 पर)

शिहाबुम्-मुबीन (18) वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्कैना फीहा रवासि-य व अम्बल्ता फीहा
मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून (19) व जअल्ना लकुम् फीहा मआयि-श व मल्लस्तुम् लहू
बिराजिक्कीन (20) व इम्मिन् शैइन् इल्ला अिन्दना खज़ाइनुहू व मा नुनज़िलुहू इल्ला
बि-क-दरिम्-मअलूम (21) व अर्सल्लरिया-ह लवाकि-ह फ-अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ माअन्
फ-अस्कैनाकुमूह व मा अन्तुम् लहू बिखाजिनीन (22) व इन्ना ल-नह्नु नुह्यी व नुमीतु व
नहनुल्-वारिसून (23) व ल-कद्
अलिम्नल्-मुस्तकिदमी-न मिन्कुम् व
ल-कद् अलिम्नल्-मुस्तअखिरीन (24)
व इन्-न रब्ब-क हु-व यद्शुरुहुम्,
इन्नहू हकीमुन् अलीम (25) ❖

व ल-कद् खलक्नल्-इन्सा-न मिन्
सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-मसूनून (26)
वल्जान्-न खलक्नाहु मिन् कब्बु मिन्-
नारिस्समूम (27) व इज़् का-ल रब्बु-क
लिल्मलाइ-कति इन्नी ख़ालिक्कुम्
ब-शरम्-मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-
मसूनून (28) फ-इज़ा सव्वैतुहू व
नफख्तु फीहि मिर्खी फ-कअू लहू
साजिदीन (29) फ-स-जदल्-मलाइ-कतु
कुल्लुहुम् अज्मअून (30) इल्ला
इल्ली-स, अबा अय्यकू-न मअस्साजिदीन
(31) का-ल या इल्लीसु मा ल-क

अल्ला तकू-न मअस्साजिदीन (32) का-ल लम् अकुल्-लिअस्जु-द लि-ब-शरिन् खलक्तहू
मिन् सल्सालिम्-मिन् ह-मइम्-मसूनून (33) का-ल फख्रुज् मिन्हा फ-इन्न-क रजीम (34)
व इन्-न अलैकल्लअ-न-त इला यौमिद्दीन (35) का-ल रब्बि फ-अन्ज़िर्नी इला
यौमि युब्असून (36) का-ल फ-इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन (37) इला यौमिल्

مَعَايِشٍ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرِزْقِينَ ۖ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا
عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنْزِلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ۚ وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ
لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ
بِخَازِينَ ۚ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ نَجْوَىٰ نُفْسٍ وَنُفْسٍ وَنَحْنُ الْوَاعُونَ ۚ وَلَقَدْ
عَلَّمْنَا الْمُتَّقِينَ مِيزِينَ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ وَالْقَدِيرِينَ ۚ وَإِن
رَبَّكَ هُوَ يَشْرُفُهُمْ إِنَّهُ هَكِيمٌ عَلِيمٌ ۚ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ
مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۚ وَالْهَاقَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ
مِنْ نَّارِ السُّمُورِ ۚ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا
مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۚ وَإِذْ أَسَوَيْتُهُ لَقَعْتَ فِيهِ
مِنْ رُوحِي فَقَعَا لَهُ السُّجُودُ ۚ فَسَجَدَ لِلْمَلِكَةِ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۚ
إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ۚ قَالَ يَا أَبَدِيسُ
مَا لَكَ الْأَعْكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ۚ قَالَ لَمْ أَكُنْ لَأَسْجُدَ لِبَشَرٍ
خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۚ قَالَ فَخُذْ مِنْهَا
فَأِنَّكَ رَجِيمٌ ۚ وَإِن عَلَيْكَ اللَّعْنَةُ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۚ قَالَ
رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۚ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۚ
إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۚ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَتَّبِعَنَّ

مِنْ

वास्ते उसमें रोज़ी के सामान बनाए और उनको भी (रोज़ी दी) कि जिनको तुम रोज़ी नहीं देते। (20) और जितनी चीज़ें हैं हमारे पास सब ख़ज़ाने (के ख़ज़ाने) हैं। और हम उस (चीज़) को एक मुतैयन मिक्दार “यानी मात्रा” से उतारते रहते हैं। (21) और हम ही हवाओं को भेजते रहते हैं जो कि बादलों को पानी से भर देती हैं, फिर हम ही आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर वह (पानी) तुमको पीने को देते हैं, और तुम (इतना पानी) जमा करके न रख सकते थे। (22) और हम ही ज़िन्दा करते हैं और मारते हैं, और हम ही (बाकी) रह जाँगे। (23) और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और हम तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। (24) और बेशक आपका रब ही उन सबको जमा फ़रमाएगा, बेशक वह हिक़मत वाला, इल्म वाला है। (25) ♦

और हमने इनसान को¹ बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी हुई थी, पैदा किया। (26) और जिन्न को इससे पहले² आग से कि वह एक गर्म हवा थी, पैदा कर चुके थे। (27) और (वह वक़्त याद करने के काबिल है) जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं एक बशर को बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे से बनी होगी, पैदा करने वाला हूँ। (28) सो जब मैं उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें अपनी तरफ़ से जान डाल दूँ तो तुम सब उसके सामने सज्दे में गिर पड़ना। (29) सो सारे के सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया। (30) मगर इब्नीस ने (नहीं किया), उसने इस बात को कबूल नहीं किया कि सज्दा करने वालों में शामिल हो।³ (31) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया कि ऐ इब्नीस! तुझको कौन-सी बात इसकी सबब हुई कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। (32) कहने लगा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर “आदमी” को सज्दा करूँ जिसको आपने बजती हुई मिट्टी से जो कि सड़े हुए गारे की बनी है, पैदा किया है।⁴ (33) इर्शाद हुआ कि तू इस (आसमान) से निकल, क्योंकि बेशक तू मरदूद हो गया। (34) और बेशक तुझपर लानत रहेगी कियामत के दिन तक।⁵ (35) कहने लगा, तो फिर मुझको मोहलत दीजिए कियामत के दिन तक। (36) इर्शाद हुआ कि तुझको मोहलत दी गई। (37) तय वक़्त की तारीख़ तक। (38) कहने लगा कि ऐ मेरे परवर्दिगार! इस सबब

(पिछले पृष्ठ का शेष)

जो आपकी पुश्त से थे इससे महफूज़ रहे, पस औलाद दर औलाद के शिर्क से कोई इश्काल लाज़िम नहीं आता। खुद इब्राहीम अतैहिस्सलाम शिर्क से शुरू से बरी और पाक चले आते थे। अपने लिए जो शिर्क से महफूज़ रहने की दुआ की तो उससे हमेशा महफूज़ रहना मकसूद था, फिर यह कि हमेशा की हिफाज़त भी नुबुव्वत व मासूम होने की वजह से यकीनी थी फिर उसकी तलब के क्या मायने? जवाब यह है कि गुनाहों से महफूज़ रहने का लाज़िम रहना अल्लाह की तौफीक से है, कोई तबई चीज़ नहीं, इसलिए हिफाज़त की तलब ज़रूरी है। तीसरी दुआ नामाज़ की पाबन्दी के लिए थी, यह भी कबूल हुई। आपकी औलाद में बहुत-से आबिद बल्कि आबिदों के सरदार हुए। चौथी दुआ भी कबूल हुई, चुनौचे पहले कबीला जुहुम ने वहाँ आकर रिहाइश इख़्तियार की फिर मुख़्तलिफ़ ज़मानों में लोग मुख़्तलिफ़ मक़ामात से आकर वहाँ बसते रहे। पाँचवीं दुआ फलों के लिए थी। यह दो तरह से कबूल हुई एक ताइफ़ में पैदावार की ज़्यादती, दूसरे दुनिया के दूसरे शहरों और मुल्कों से उनका आना।

(तफ़सीर पृष्ठ 472)

1. यानी ऐसी टिकटिकी बंधेगी कि आँख न झपकेगी।

2. यानी कियामत के इनकारी थे और इसपर क़सम खाते थे।

3. यानी आसमानी किताबों में हमने इन वाकिआत को मिसाल के तौर पर बयान किया कि अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम भी ऐसे ही गुज़ब और अज़ाब के हक़दार होगे। पस वाकिआत का पहले तो ख़बरों से सुनना फिर हमारा उनको बयान करना, फिर उन जैसा बनने पर तबीह कर देना, इन सब असबाब का तकाज़ा यह था कि कियामत का इनकार न करते।

4. यह जो फ़रमाया कि उन तदबीरों से पहाड़ों का टल जाना भी हैरतनाक न था, तो यह किसी चीज़ की कुव्वत बयान करने के लिए एक मुहावरा है, और अपने आप में यह चीज़ कुछ मुहाल भी नहीं, क्योंकि पहाड़ों के तोड़ने और उड़ाने की तदबीरें आजकल ख़ूब कसरत से इस्तेमाल में आ रही हैं। और अल्लाह ही ज़्यादा बेहतर जानते हैं।

5. यानी इन आसमानों के अलावा आसमान भी (पृष्ठ 472 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 474, 476 की तफ़सीर पृष्ठ 478-482 पर)

वक्तिल्-मअलूम (38) का-ल रब्बि बिमा अग्वैतनी ल-उजय्यिनन्-न लहुम् फिल्अर्जि व ल-उग्वियन्नहुम् अज्मअीन (39) इल्ला अिबाद-क मिन्हुमुल्-मुखलसीन (40) का-ल हाजा सिरातुन् अलय्-य मुस्तकीम (41) इन्-न अिबादी लै-स ल-क अलैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनिन्न-ब-अ-क मिनल्-गावीन (42) व इन्-न जहन्न-म लमौअिदुहुम् अज्मअीन (43) लहा सब्-अतु अब्बाबिन्, लिक्लिल बाबिम् मिन्हुम् जुज्जुम्-मक्सूम (44) ❖

इन्नल् मुत्तकी-न फी जन्नातिव्-व अयून (45) उदखुलूहा बि-सलामिन् आमिनीन (46) व नजअ्ना मा फी सुदूरिहिम् मिन् गिल्लिन् इख्वानन् अला सुरुर्हिम् मु-तकाबिलीन (47) ला यमस्सुहुम् फीहा न-सबुव्-व मा हुम् मिन्हा बिमुखरजीन (48) नब्बिअ् अिबादी अन्नी अनल् गफूररहीम (49) व अन्-न अजाबी हुवल् अजाबुल् अलीम (50) व नब्बिअ्हुम् अन् जैफि इब्राहीम ❖ (51) इज् द-खलू अलैहि फकालू सलामन्, का-ल इन्ना मिन्कुम् वजिलून (52) कालू ला तौजल् इन्ना नबुशिशरु-क बिगुलामिन् अलीम (53)

का-ल अ-बशशरुतुमूनी अला अम्मस्-सनियल्-कि-बरु फबि-म तुबशिशरून (54) कालू बशशरुना-क बिल्हविक फला तकुम् मिनल् कानितीन (55) का-ल व मय्यक्नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज्जाल्लून (56) का-ल फमा खत्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (57) कालू इन्ना उर्सिल्ला इला कौमिम्-मुज्रिमीन (58) इल्ला आ-ल लूतिन्, इन्ना लमुनज्जूहुम् अज्मअीन (59) इल्लम्-र-अ-तहू कदरुना इन्नहा

لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَاغْوِيَّاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلِصِينَ ۖ قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۖ إِنَّكَ
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْعَوِينَ ۖ وَإِنْ جَهِتُمْ لَبُودُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ لَهَا سَبْعَةُ
أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ فَنُفِئَهُمْ جُزْءٌ مِّمَّا سَمَوْا ۖ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي
جَنَّتٍ وَعَيْنٌ أُدْخِلُوهَا بِسَلَامٍ آمِينَ ۖ وَتَزْعُمَانِي
صُدُّوا عَنْهُمْ مِنْ غَيْرِ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۖ لَا يَسْمَعُ
فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۖ نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي
أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۖ وَأَنْ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۖ
وَنَبِّئُهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا
قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۖ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ
عَلَيْهِ ۖ قَالَ أَبَشِّرْتُنِي عَلَى أَنْ مَسَّنِيَ الْكَرْبُ فَمِمَّ
تُبَشِّرُونِ ۖ قَالُوا بَشِّرْكَ بِحَقٍّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْفَاطِنِينَ
قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۖ قَالَ مِمَّا
خَطَبَكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُجْرِمِينَ
إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمَجُوبُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا امْرَأَتَهُ فَقَدَرْنَا

से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं कसम खाता हूँ कि मैं आपको दुनिया में (गुनाहों को) पसन्दीदा करके दिखाऊँगा, और उन सबको गुमराह करूँगा। (39) सिवाय आपके उन बन्दों के जो उनमें से चुन लिए गए हैं। (40) इर्शाद हुआ कि यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है। (41) वाकई मेरे उन बन्दों पर तेरा ज़रा भी बस न चलेगा, हाँ मगर जो गुमराह लोगों में से तेरी राह पर चलने लगे। (42) और उन सबसे जहन्नम का वायदा है। (43) जिसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (44) ♦

बेशक खुदा से डरने वाले बागों और चश्मों में होंगे। (45) तुम उनमें सलामती और अमन से दाखिल हो। (46) और उनके दिलों में जो कीना था हम वह सब दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह रहेंगे, तख़्तों पर आमने-सामने (बैठा करेंगे)। (47) वहाँ आपको ज़रा भी तकलीफ़ न पहुँचेगी और न वे वहाँ से निकाले जाएँगे। (48) आप मेरे बन्दों को इत्तिला दे दीजिए कि मैं बड़ा मग़्फ़िरत वाला, बड़ा रहमत वाला (भी) हूँ। (49) और यह कि मेरी सज़ा दर्दनाक सज़ा है। (50) और आप आपको इब्राहीम के मेहमानों की भी इत्तिला दीजिए। (51) जबकि वे उनके पास आए, फिर उन्होंने अस्सलामु अलैकुम कहा, (इब्राहीम) कहने लगे कि हम तो तुमसे डर रहे हैं। (52) उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम आपको एक फ़रज़न्द “यानी लड़के” की खुशख़बरी देते हैं जो बड़ा आलिम होगा। (53) (इब्राहीम) कहने लगे कि क्या तुम मुझको इस हालत पर खुशख़बरी देते हो कि मुझपर बुढ़ापा आ गया, सो किस चीज़ की खुशख़बरी देते हो। (54) वे बोले कि हम आपको हक़ चीज़ की खुशख़बरी देते हैं, सो आप नाउम्मीद न हों। (55) (इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि भला अपने रब की रहमत से कौन नाउम्मीद होता है सिवाय गुमराह लोगों के। (56) फ़रमाने लगे कि अब तुमको क्या मुहिम पेश आई है ऐ भेजे हुए (फ़रिश्तो)! (57) (फ़रिश्तों ने) कहा कि हम एक मुज्जिम कौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (58) मगर लूत का ख़ानदान, कि हम उन सबको बचा लेंगे। (59)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

दूसरे बदल दिए जाएँगे। क्योंकि पहली बार के सूर फूँकने से सब ज़मीन व आसमान टूट-फूट जाएँगे, फिर दूसरी बार नये सिरों से ज़मीन व आसमान बनेंगे। हदीसों से साबित होता है कि इस दोबारा पैदा करने के अलावा आसमानों और ज़मीन में कोई और तब्दीली भी होगी, जिसमें अहले महशर किसी तब्दीली के वक़्त ज़मीन पर नहीं होंगे बल्कि पुलसिरात पर होंगे, जैसा कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में वज़ाहत है। बाकी उस तब्दीली की हिक्मत खुदा-ए-अलीम ही को मालूम है।

6. कतरान चीड़ के पेड़ का रोगन होता है। यानी सारे बदन को चीड़ का तेल लिपटा होगा कि उसमें आग जल्दी और तेज़ी के साथ लगे।

7. खुलासा इस सूर: का ये मज़ामीन हैं: कुरआन का हक़ होना, काफ़िरों को अज़ाब देना, रिसालत की तहकीक़, तौहीद का साबित करना, बाज़ इनामात का ज़िक्र, फ़रमाँबर्दारों को बदला और जज़ा, मुखालिफ़ों को सज़ा, बतौर नमूना जज़ा और सज़ा के बाज़ किस्से, कियामत की हकीक़त और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तसल्ली।

8. यानी इसकी दोनों सिफ़तें हैं, कामिल किताब होना भी और वाज़ेह कुरआन होना भी।

(तफ़सीर पृष्ठ 474)

1. बार-बार इसलिए कि जब कोई नई शिद्दत वाक़ेअ होगी और मालूम होगा कि इसका सबब क़फ़्र है तब ही इस्लाम न लाने पर ताज़ा हसरत करेंगे।

2. पस इसी तरह जब उनका वक़्त आ जाएगा उनको भी सज़ा दे दी जाएगी।

3. इसलिए इसमें कोई कमी-बेशी नहीं कर सकता, जैसा कि और किताबों में होता आ रहा है कि बावजूद किसी मुखालिफ़ के न होने के उसके नुस्खों में कमी-ज़्यादती का इख़्तिलाफ़ होता है, और इसमें मुखालिफ़ों की कोशिश के बावजूद यह बात नहीं हुई।

4. ‘बुरुज’ की तफ़सीर सितारों के साथ (पृष्ठ 474 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 476, 478 की तफ़सीर पृष्ठ 480-484 पर)

लमिनल्-गाबिरीन (60) ❖

फ-लम्मा जा-अ आ-ल लूति-निल्मुर्सलून (61) का-ल इन्नकुम् कौमुम्-मुन्कखून (62) कालू बल् जिअना-क बिमा कानू फीहि यम्तखून (63) व अतैना-क बिल्हक्कि व इन्ना लसादिकून (64) फ-असिर बिअह्लि-क बिकित्तिअम् मिनल्लैलि वत्तबिअ् अद्बारहुम् व ला यल्तफित् मिन्कुम् अ-हदुव्वम्जू हैसु तुअमखून (65) व कजै ना इलैहि जालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउला-इ मक्तूअम्-मुस्बिहीन (66) व जा-अ अह्लुल्-मदीनति यस्तब्शिरून (67) का-ल इन्-न हाउला-इ जैफी फला तफ़्ज़हून (68) वत्तकुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ून (69) कालू अ-व लम् नन्ह-क अनिल्-आलमीन (70) का-ल हाउला-इ बनाती इन् कुन्तुम् फाअिलीन (71) ल-अम्रु-क इन्नहुम् लफी सक्कतिहिम् यअमहून (72) फ-अ-खज़तुहुमुस्सैहतु मुशिरकीन (73) फ-जअल्ला आलि-यहा साफि-लहा व अम्तरना अलैहिम् हिजा-रतम् मिन् सिज्जील (74) इन्-न फी जालि-क लआयातिल् लिल्-मु-तवस्सिमीन (75) व इन्नहा लबि-सबीलिम् मुकीम (76) इन्-न फी जालि-क लआ-यतल् लिल्मुअमिनीन (77) व इन् का-न अस्हाबुल्-ऐ-कति लजालिमीन (78) फन्त-कम्ना मिन्हुम् ❖ व इन्नहुमा लबि-इमामिम्- मुबीन (79) ❖

व ल-कद् कज़्ज-ब अस्हाबुल् हिज्रिल्-मुर्सलीन (80) व आतैनाहुम् आयातिना फकानू अन्हा मुअ्रिजीन (81) व कानू यन्हितू-न मिनल्-जिबालि बुयूतन् आमिनीन (82)

إِنَّمَا لِمَنِ الْغَيْبُ ۖ فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۚ قَالَ
إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّتَكَبِّرُونَ ۚ وَالْأَوَّلُ جُنُودُكُمْ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ
وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۚ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ
الَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُ وَاحِدٌ
تُّؤَمَّرُونَ ۚ وَقَضَيْنَا إِلَيْكَ ذَلِكَ الْأَمْرَ ۖ إِن دَايِرَ هَؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ
مُّصْبِحِينَ ۚ وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۚ قَالَ إِنَّ
هَؤُلَاءِ صِغْفِيرٌ فَلَا تُفَضُّحُونَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْرُؤْنَ ۚ
قَالُوا أَوَلَمْ تَنْهَكَ عَنِ الْعُلَمِينَ ۚ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن
كُنْتُمْ فَعَلِينَ ۚ لَعَنُوا لَعْنًا كَثِيرًا ۖ لِّغَىٰ سَكْرَتِهِمْ بِمَا هُمُونَ ۚ فَآخَذَهُمُ
الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۚ فَبَعَلْنَا أَلْيَها سَافِلَها وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِنَّ
جَحَاشًا مِّنْ سَجِيلٍ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ
وَإِنَّمَا لِّلسَّبِيلِ مُقِيمٌ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۚ
وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ ظَالِمِينَ ۚ فَاتَّقِنَا مِنْهُمْ وَ
إِنَّمَا إِلَهُ الْبَاطِنِ مُبِينٌ ۚ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ
وَآتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۚ وَكَانُوا يَنْحِتُونَ
مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ۚ فَآخَذَهُمُ الصَّيْحَةُ مُضْحِكِينَ

सिवाय उनकी बीवी के कि हमने उसके बारे में तय कर रखा है कि वह ज़रूर उसी मुज़्रिम कौम में रह जाएगी।^१ (60) ♦

फिर जब भेजे हुए (फ़रिश्ते) लूत के ख़ानदान के पास आए (61) (तो) वे कहने लगे, तुम तो अजनबी आदमी हो। (62) उन्होंने कहा, नहीं! बल्कि हम आपके पास वह चीज़ लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक किया करते थे।^२ (63) और हम आपके पास यकीनी (होने वाली) चीज़ लेकर आए हैं और हम बिलकुल सच्चे हैं। (64) सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर चले जाइए, और आप सबके पीछे हो लीजिए,^३ और तुममें से कोई पीछे फिरकर भी न देखे, और जिस जगह का तुमको हुक्म हुआ है उस तरफ़ सब चले जाना।^४ (65) और हमने उनके (यानी लूत अलैहिस्सलाम के) पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उनकी बिलकुल जड़ ही कट जाएगी।^५ (66) और शहर के लोग ख़ूब खुशियाँ करते हुए पहुँचे।^६ (67) (लूत अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया कि ये लोग मेरे मेहमान हैं, सो मुझको फ़ज़ीहत मत करो। (68) और अल्लाह तआला से डरो और मुझको रुस्वा मत करो। (69) वे कहने लगे कि क्या हम आपको दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर चुके। (70) (हज़रत लूत ने) फ़रमाया कि ये मेरी (बहु) बेटियाँ मौजूद हैं,^७ अगर तुम (मेरा कहना) करो। (71) आपकी जान की कसम वे अपनी मस्ती में मदहोश थे। (72) पस सूरज निकलते-निकलते उनको सख़्त आवाज़ ने आ दबाया। (73) फिर हमने उन बस्तियों का ऊपर का तख़्ता तो नीचे कर दिया और उन लोगों पर कँगर के पत्थर बरसाना शुरू किए। (74) इस (वाकिए) में कई निशानियाँ हैं अक्ल रखने वालों के लिए।^८ (75) और ये (बस्तियाँ) एक आबाद सड़क पर (मिलती) हैं।^९ (76) उन (बस्तियों) में ईमान वालों के लिए बड़ी इबरत है। (77) और बन वाले (शुऐब की उम्मत भी) बड़े ज़ालिम थे। (78) सो हमने उनसे बदला लिया,^{१०} और दोनों (बस्तियाँ) साफ़ सड़क पर हैं।^{११} (79) ♦

और हिज़्र वालों ने पैग़म्बरों को झूठा बतलाया।^{१२} (80) और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं, सो वे लोग उनसे मुँह मोड़ते रहे। (81) और वे लोग पहाड़ों को तराश-तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें। (82) सो उनको सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़ ने आन पकड़ा। (83) सो उनके हुनर उनके कुछ भी काम

(पिछले पृष्ठ का शेष) मुजाहिद और क़तादा से, और बड़े सितारों के साथ अबू सालेह से दुर्रें मन्सूर में नक़ल की गई है। तश्बीह देते हुए मजाज़न उनको बुरूज कह दिया गया।

5. कि वहाँ तक उनकी रसाई नहीं होने पाती।

6. जानना चाहिए कि कुरआन व हदीस में यह दावा नहीं कि बिना इस सबब के शिहाब (टूटने वाला चमकदार सितारा) पैदा नहीं होता बल्कि दावा यह है कि चोरी-छुपे आसमानी ख़बरें सुनने के वक़्त शिहाब (टूटने वाले चमकदार सितारे) से शैतानों को मारा जाता है। पस मुम्किन है कि शिहाब कभी महज़ तबई तौर पर होता हो और कभी इस ग़रज़ के लिए होता हो। और शिहाबे साकिब (टूटने वाला चमकदार सितारा) दिन को भी होता है लेकिन सूरज की रोशनी की वजह से नज़र नहीं आता। तो यह वस्वसा न रहा कि शैतान रात ही को चोरी-छुपे बात सुनने की कोशिश करते हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 476)

1. यानी इस ज़िन्स की पहली असल यानी आदम अलैहिस्सलाम को।

2. यानी आदम अलैहिस्सलाम से पहले।

3. यानी सज़्दा न किया।

4. यानी ऐसे हकीर व ज़लील मादे से बनाया गया है और मैं नूरानी मादे आग से पैदा हुआ हूँ, तो नूरानी होकर अंधेरी वाले को कैसे सज़्दा करूँ।

5. यानी कियामत तक तू मेरी रहमत से (पृष्ठ 476 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 478, 480 की तफ़सीर पृष्ठ 482-486 पर)

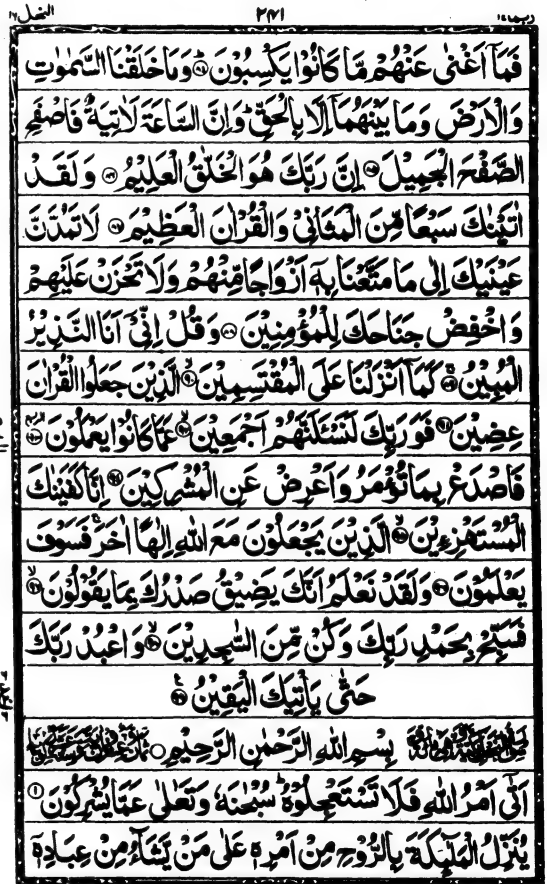
फ-अ-खजलहुमुस्सैहतु मुस्बिहीन (83) फमा अग्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून (84) व मा खलक्नस्समावाति वल्अर्-ज व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक्कि, व इन्नस्सा-अ-त लआति-यतुन् फस्फहिस्सफहल्-जमील (85) इन्-न रब्ब-क हुवल् खल्लाकुल्-अलीम (86) व ल-कद् आतैना-क सब्अम् मिनल्-मसानी वल्कुरआनल्-अजीम (87) ला तमुद्दन्-न अैनै-क इला मा मत्तअ्ना बिही अज्वाजम् मिन्हुम् व ला तहज़न् अलैहिम् वखिफज़ जनाह-क लिल्मुअमिनीन (88) व कुल् इन्नी अनन्नज़ीरुल्-मुबीन (89) कमा अन्ज़ल्ला अलल्-मुक्तसिमीन (90) अल्लज़ी-न ज-अलुल्-कुरआ-न अिज़ीन (91) फ-वरब्बि-क लनस्-अलन्नहुम् अज्मअीन (92) अम्मा कानू यअ्मलून ♦ (93) फस्दअ् बिमा तुअ्मरु व अअ्रिज़् अनिल्-मुशिरकीन (94) इन्ना कफैनाकल्- मुस्तहिज़ईन (95) अल्लज़ी-न यज्अलू-न मअल्लाहि इलाहन् आ-खा-र फसौ-फ यअ्मलून (96) व ल-कद् नअ्लमु अन्न-क यज़ीकु सदरु-क बिमा यकूलून (97) फ-सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क व कुम् मिनस्-साजिदीन (98) वअ्बुद् रब्ब-क हत्ता यअ्ति-यकल्-यकीन (99) ♦

16 सूरतुन्-नहलि 70

(मक्की) इस सूर: में अरबी के 7974 अक्षर, 1871 शब्द, 128 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अता अम्फुल्लाहि फला तस्तअ्जिलूहु, सुब्हानहू व तअ़ाला अम्मा युशिरकून (1) युनज़िलुल्-मलाइ-क-त बिर्स्हि मिन् अम्रिही अला मय्यशा-उ मिन् अिबादिही अन् अन्ज़िरू



न आए।¹ (84) और हमने आसमानों को और ज़मीन को और उनकी दरमियानी चीज़ों को बग़ैर मस्लहत के पैदा नहीं किया,² और ज़रूर कियामत आने वाली है। सो आप ख़ूबी के साथ दरगुज़र कीजिए।³ (85) बेशक आपका रब बड़ा ख़ालिफ़, बड़ा आलिम है। (86) और हमने आपको सात आयतें दीं जो (नमाज़ में) बार-बार (पढ़ी जाती) हैं⁴ और कुरआने अज़ीम (दिया)। (87) आप अपनी आँख उठाकर उस चीज़ को न देखिए जो कि हमने उन मुख़लिफ़ किस्म के (काफ़िर) लोगों को बरतने के लिए दे रखी है, और उनपर ग़म न कीजिए और मुसलमानों पर शफ़क़त रखिए। (88) और कह दीजिए कि मैं खुल्लम-खुल्ला डराने वाला हूँ (89) जैसा कि हमने उन लोगों पर (अज़ाब) नाज़िल किया है जिन्होंने हिस्से कर रखे थे। (90) यानी आसमानी किताब के मुख़लिफ़ हिस्से करार दिए थे। (तुमपर भी नाज़िल करेंगे)⁵ (91) सो आपके रब की कसम हम उन सबसे पूछताछ करेंगे (92) उनके आमाल की। ♦ (93) गरज़ आपको जिस बात का हुक्म किया गया है उसको साफ़-साफ़ सुना दीजिए, और (उन) मुशिरकों की परवाह न कीजिए। (94) हँसी उड़ाने वालों के लिए हम काफ़ी हैं। (95) ये लोग जो अल्लाह के साथ दूसरा माबूद करार देते हैं, उनसे आपके लिए हम काफ़ी हैं, सो उनको अभी मालूम हुआ जाता है। (96) और वाकई हमको मालूम है कि ये लोग जो बातें करते हैं उनसे आप तंगदिल होते हैं। (97) सो आप अपने परवर्दिगार की तस्बीह व तारीफ़ करते रहिए, और नमाज़ें पढ़ने वालों में रहिए। (98) और अपने रब की इबादत करते रहिए यहाँ तक कि आपको मौत आ जाए।⁶ (99) ♦

16 सूर: नह्ल 70

सूर: नह्ल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 128 आयतें और 16 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा,⁷ सो तुम उसमें जल्दी मत मचाओ। वह लोगों के शिर्क से पाक और बरतार है।⁸ (1) वह फ़रिश्तों को वह्य यानी अपना हुक्म देकर अपने बन्दों में से जिसपर चाहें नाज़िल फ़रमाते हैं, कि ख़बरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, सो मुझसे डरते रहो।⁹ (2) आसमानों को और

(पिछले पृष्ठ का शेष) दूर रहेगा, न मकबूल होगा और न तुझपर रहमत की जाएगी और न तौबा की तौफीक होगी। और जाहिर है कि कियामत तक जो रहमत नाज़िल होने का मक़ाम न होगा उसके कियामत में रहमत का महल होने का एहतिमाल ही नहीं। पस जिस वक़्त तक एहतिमाल था उसकी नफ़ी कर दी।

- (तफ़सीर पृष्ठ 478)
1. यानी जिनको आपने मेरे असर से महफूज़ रखा है।
 2. यानी इस वक़्त भी हर बुराई से सलामती है और आगे भी किसी बुराई का अन्देशा नहीं।
 3. ताकि इससे ख़बरदार होकर ईमान और तक्वे की तरफ़ दिलचस्पी और कुफ़ व नाफ़रमानी से नफ़रत हो।
 4. इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनकी मेहमान समझकर फ़ौरन उनके लिए खाना तैयार करके लाए मगर चूँकि वे फ़रिश्ते थे, उन्होंने खाना नहीं खाया, तब इब्राहीम अलैहिस्सलाम दिल में डरे कि ये लोग खाना क्यों नहीं खाते। चूँकि वे फ़रिश्ते इनसानी सूरत में थे इसलिए उनको इनसान ही समझा और उनके खाना न खाने से शुब्हा हुआ कि ये लोग कहीं मुख़लिफ़ न हों।
 5. मतलब यह कि नबी होगा। क्योंकि आदमियों में सबसे ज़्यादा इल्म अम्बिया को होता है। मुराद इस लड़के से हज़रत इसहाक हैं।
 6. मतलब यह कि यह बात अपने आप में अजीब है, न यह कि कुदरत से बईद है।
 7. यानी लड़के की पैदाइश यकीनन होने वाली है।
 8. यानी अपने बुढ़ापे पर नज़र न कीजिए कि (पृष्ठ 478 की बकिया तफ़सीर और पृष्ठ 480, 482 की तफ़सीर पृष्ठ 484-486 पर)

अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फत्तकून (2) ख-लकस्समावाति वल्अर्-ज बिल्हक्कि, तआला अम्मा युशिरकून (3) ख-लकल्-इन्सा-न मिन् नुत्फतिन् फ-इजा हु-व खसीमुम्-मुबीन (4) वल्-अन्आ-म ख-ल-कहा लकुम् फीहा दिफउं-व मनाफिअु व मिन्हा तअकुलून (5) व लकुम् फीहा जमालुन् ही-न तुरीहू-न व ही-न तस्रहून (6) व तस्मिलु अस्का-लकुम् इला ब-लदिल्-लम् तकूनू बालिगीहि इल्ला बिशिकिल्-अन्फुसि, इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफुर-रहीम (7) वल्खै-ल वल्बिगा-ल वल्हमी-र लितरकबूहा व जी-नतन्, व यख्लुकु मा ला तअलमून (8) व अलल्लाहि कस्दुस्सबीलि व मिन्हा जा-इरुन्, व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअीन (9) ❖

हुवल्लजी अन्ज-ल मिनस्समा-इ माअल्लकुम् मिन्हु शराबुं-व मिन्हु श-जरुन् फीहि तुसीमून (10) युम्बितु लकुम् बिहिज्जर-अ वज्जैतू-न वन्नखी-ल वल्-अअना-ब व मिन् कुल्लिस्स-मराति, इन्-न फी जालि-क ल-आ-यतल्-लिकौमिय्य-तफक्करून (11) व सख्ख-र लकुमुल्-लै-ल

वन्नहा-र वशशम्-स वल्क-म-र, वन्नुजूम

मुसख्खरातुम्-बिअम्रिही, इन्-न फी जालि-क लआयातिल्-लिकौमिय्यअकुलून (12) व मा ज-र-अ लकुम् फिल्अर्जि मुख्तलिफन् अल्वानुहू, इन्-न फी जालि-क लआ-यतल्-लिकौमिय्यज्जक्करून (13) व हुवल्लजी सख्खरल्-बह-र लितअकुलू मिन्हु लह्मन् तरिय्यं-व तस्तखिरजू मिन्हु हिल्य-तन् तल्बसूनहा व तरल्फुल्-क मवाखि-र फीहि व लितब्तागू मिन् फजिलही व लअल्लकुम् तश्कुरून (14) व अल्का फिल्अर्जि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम्

إِنْ أَنْزَلْنَا إِلَهُكَ إِلَّا إِلَهُكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَتَقُونَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِأَحَقُّ تَعْلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ
نُطْقَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ وَالْإِنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ
فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ
تُرْيَعُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ وَتَحْمِلُ الْوِثْلَ بِلْدَانِكُمْ
تَكُونُوا بِلِغْيِهِ الْإِبْشَقِ الْإِنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَوْفٌ رَّحِيمٌ
وَالْحَيْلَ وَالْعَالِ وَالْحَبِيرَ لَتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا
لَا تَعْلَمُونَ وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَاوِزٌ وَلَوْ شَاءَ
لَهَدَّكُمْ أَجْمَعِينَ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ
شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ يُثْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ
وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ وَسَخَّرَ لَكُمْ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا
أَلْوَانُهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ هُوَ الَّذِي
سَخَّرَ الْبَحْرَ لِيَتَأْكَلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حَبْلَةً

مَنْك

जमीन को हिक्मत से बनाया, वह उनके शिर्क से पाक है। (3) इनसान को नुत्फे से बनाया फिर वह यकायक खुल्लम-खुल्ला झगड़ने लगा। (4) और उसी ने चौपायों को बनाया, उनमें तुम्हारे जाड़े का (भी) सामान है, और (भी) बहुत-से फायदे हैं और उनमें से खाते भी हो। (5) और उनकी वजह से तुम्हारी रौनक भी है, जबकि शाम के वक्त लाते हो और जबकि सुबह के वक्त छोड़ देते हो। (6) और वे तुम्हारे बोझ भी ऐसे शहर को ले जाते हैं जहाँ तुम जान को मेहनत में डाले बिना नहीं पहुँच सकते थे, वाकई तुम्हारा रब बड़ी शफ़क़्त वाला, बड़ी रहमत वाला है। (7) और घोड़े और ख़च्चर और गधे भी पैदा किए ताकि तुम उनपर सवार हो और यह कि ज़ीनत के लिए भी, और वह ऐसी-ऐसी चीज़ें बनाता है जिनकी तुमको ख़बर भी नहीं। (8) और सीधा रास्ता अल्लाह तक पहुँचता है, और बाज़े रास्ते टेढ़े भी हैं। और अगर वह (यानी खुदा) चाहता तो सबको मकसूद तक पहुँचा देता। (9) ♦

वह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया, जिससे तुमको पीने को मिलता है और उस (के संबब) से दरख़्त (पैदा होते) हैं जिनमें तुम (अपने मवेशियों को) चरने छोड़ देते हो। (10) (और) उस (पानी) से तुम्हारे लिए खेती और जैतून और खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल उगाता है, बेशक इसमें सोचने वालों के लिए दलील है। (11) और उसने रात और दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारे ताबे “यानी अधीन” किया, और सितारे उसके हुक्म से ताबे हैं। बेशक इसमें अक्ल रखने वाले लोगों के लिए चन्द दलीलें हैं। (12) और उन चीज़ों को भी जिनको तुम्हारे लिए ज़मीन में इस तौर पर पैदा किया कि उनकी किस्में मुख़्तलिफ़ “यानी अलग-अलग और विभिन्न” हैं,⁵ बेशक इसमें समझदार लोगों के लिए दलील है। (13) और वह ऐसा है कि उसने दरिया को ताबे किया ताकि उसमें से ताज़ा-ताज़ा गोشت खाओ, और उसमें से गहना निकालो जिसको तुम पहनते हो, और तू कश्तियों को देखता है कि वे पानी चीरती हुई चली जा रही हैं। और ताकि तुम उसकी (यानी खुदा की) रोज़ी तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14) और उसने ज़मीन में

(पिछले पृष्ठ का शेष)

ऐसे असबाब पर नज़र करने से जो आदतन पाए जाते हों नाउम्मीदी के वस्वसे ग़ालिब होते हैं।

9. यानी नबी होकर गुमराहों की सिफ़्त अपने अन्दर कैसे पैदा कर सकता हूँ। मकसद सिर्फ़ इस बात का अज़ीब होना है, बाकी अल्लाह का वायदा सच्चा है और मुझको उम्मीद से बढ़कर उसका कामिल यकीन है।

10. यानी उनको बचने का तरीका बतला देंगे कि उन मुज़िम्मों से अलग हो जाएँ।

(तफ़सीर पृष्ठ 480)

1. और उनके साथ अज़ाब में मुक्त्ला होगी।

2. यानी अज़ाब।

3. ताकि कोई रह न जाए, लौट न जाए और आपके रोब और डर से कोई पीछे फिरकर भी न देखे।

4. यानी मुल्क शाम।

5. यह फरिश्तों की गुफ्तगू जो ऊपर ज़िक्र हुई ज़ाहिर होने में मुअख़्बर है। मकसद की अहमियत के लिए ज़िक्र में मुक़द्दम फरमा दिया, और वह नजात देने और हलाक करने की ख़बर देना है। और आगे जो हिस्सा आता है वह ज़ाहिर होने में मुक़द्दम है।

6. यह ख़बर सुनकर कि लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ हसीन-हसीन लड़के आए हैं।

7. यानी जो तुम्हारे घरों में हैं।

8. मिसाल के तौर पर एक यह कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है। एक यह कि ईमान व इताअत से नजात होती है। एक यह कि अल्लाह को बड़ी कुदरत है कि तबई असबाब के खिलाफ़ जो चाहे कर दे, और इसी तरह दूसरे।

9. यानी अरब से मुल्क शाम को जाते हुए उनके आसार और निशानियाँ मालूम होते हैं।

10. और उनको अज़ाब से हलाक कर दिया। (पृष्ठ 480 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 482, 484 की तफ़सीर पृष्ठ 486-488 पर)

पहाड़ रख दिए ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे, और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम मन्ज़िले-मकसूद तक पहुँच सको। (15) और बहुत-सी निशानियाँ (बनाईं) और तारों से भी लोग रास्ता मालूम करते हैं। (16) सो क्या जो शख्स पैदा करता हो वह उस जैसा हो जाएगा जो पैदा नहीं कर सकता, फिर क्या तुम नहीं समझते। (17) और अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनने लगे तो न गिन सको। वाकई अल्लाह तआला बड़ी मफ़िरत वाले, बड़ी रहमत वाले हैं।¹ (18) और अल्लाह तआला तुम्हारे छुपे और ज़ाहिरी हालात सब जानते हैं। (19) और खुदा के अलावा जिनकी ये लोग इबादत करते हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वे खुद ही मख़्लूक “यानी पैदा किए हुए” हैं। (20) मुर्दे हैं,² ज़िन्दा नहीं, और उनको ख़बर नहीं कि (मुर्दे) कब उठाए जाएंगे।³ (21) ♦

तुम्हारा माबूद (बरहक) एक ही माबूद है, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल मुन्किर हो रहे हैं और वे तकब्बुर करते हैं। (22) ज़रूरी बात है कि अल्लाह तआला उनके छुपे व ज़ाहिरी सब हालात जानते हैं, यकीनी बात है कि अल्लाह तआला तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करते। (23) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है,⁴ तो कहते हैं कि वे तो महज़ बेसनद बातें हैं जो पहलों से चली आ रही हैं।⁵ (24) (नतीजा इसका यह होगा) कि उन लोगों को क़ियामत के दिन अपने गुनाहों का पूरा बोझ और जिनको ये लोग बेइल्मी से गुमराह कर रहे थे उन (के गुनाहों) का भी कुछ बोझ अपने ऊपर उठाना पड़ेगा। ख़ूब याद रखो जिस (गुनाह) को ये अपने ऊपर लाद रहे हैं वह बुरा (बोझ) है।⁶ (25) ♦

जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे हैं उन्होंने (बड़ी-बड़ी) तदबीरें कीं, सो अल्लाह तआला ने उनका (बना-बनाया) घर जड़-बुनियाद से ढा दिया, फिर ऊपर से उनपर छत आ पड़ी और उनपर अज़ाब ऐसी तरह आया कि उनको ख़याल भी न था। (26) फिर क़ियामत के दिन वह (यानी अल्लाह तआला) उनको रुस्वा

(पिछले पृष्ठ का शेष)

11. और मुल्क शाम को जाते हुए राह में नज़र आती है।

12. क्योंकि जब सालेह अलैहिस्सलाम को झूठा कहा और सब पैग़म्बरों का असल दीन एक ही है तो सब ही को झूठा बताया।

(तफ़सीर पृष्ठ 482)

1. उन्हीं मज़बूत घरों में अज़ाब से काम तमाम हो गया। इस आफ़त से उनके घरों ने न बचा लिया। इस आफ़त का उनको एहतिमाल भी न था और अगर होता भी तो क्या करते।

2. बल्कि इस मसलहत से पैदा किया कि उनको देखकर दुनिया को बनाने वाले के वजूद और उसके तन्हा व यक्ता होने और उसकी बड़ाई पर इस्तिदलाल करके उसके अहकाम की इताअत करें। और इस हुज्जत के कायम करने के बाद जो ऐसा न करे वह अज़ाब का शिकार हो।

3. दरगुज़र का मतलब यह है कि इस ग़म में न पड़िए। इसका ख़याल न कीजिए। और ख़ूबी यह कि शिक्वा-शिकायत भी न कीजिए।

4. मुराद इससे सूर: फ़तिहा है।

5. उनमें जो मरज़ी के मुवाफ़िक़ हुआ मान लिया, जो मरज़ी के खिलाफ़ हुआ उससे इनकार कर दिया। इससे मुराद यहूदी व ईसाई हैं।

6. यानी मरते दम तक ज़िक्क व इबादत में मशगूल रहिए। इसमें जिन उमूर का हुक्म किया गया और जो अन्न व सवाब का सबब हैं उनके अलावा यह भी ख़ासियत है कि इस तरफ़ ध्यान सीमित रखने से दूसरा मशगला जो कि दिल की तंगी का सबब था, ख़त्म या मग़लूब हो जाता है।

7. यानी कुफ़्र व शिर्क की सज़ा का वक़्त करीब आ पहुँचा और उसका आना यकीनी है।

8. यानी उसका कोई शरीक नहीं।

9. इसमें यह बात ज़ाहिर फ़रमा दी कि तौहीद तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की शरीअत में मुश्तरक है।

(पृष्ठ 484, 486 की तफ़सीर पृष्ठ 488-490 पर)।

मिन् सूइन्, बला इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिमा कुन्तुम् तअमलून (28) फदखुलू अब्बा-ब जहन्न-म खालिदी-न फीहा, फ-लबिअ-स मस्वल् मु-तकब्बिरीन (29) व की-ल लिल्लजीनत्तकौ माजा अन्ज-ल रब्बुकुम्, कालू खैरन्, लिल्लजी-न अह्सनू फी हाजिहिद्दुन्या ह-स-नतुन्, व लदारुल्-आखिरति खैरुन्, व लनिअ-म दारुल्-मुत्तकीन (30) जन्नातु

अद्निन्यदखुलूनहा तजरी मिन् तहिहल्-अन्हारु लहुम् फीहा मा यशाऊ-न, कजालि-क यज्जिल्लाहुल्-मुत्तकीन (31) अल्लजी-न त-तवफ़ाहुमुल्-मलाइ-कतु तय्यिबी-न यकूलू-न सलामुन् अलैकुमुदखुलुल्-जन्न-त बिमा कुन्तुम् तअमलून (32) हल् यन्जुरू-न इल्ला अन् तअति-यहुमुल्-मलाइ-कतु औ यअति-य अम्रु रब्बि-क, कजालि-क फ-अलल्लजी-न मिन् कब्लिहिम्, व मा ज-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फु-सहुम् यज्लिमून (33) फ-असाबहुम् सय्यिआतु मा अमिलू व हा-क बिहिम् मा कानू बिही यस्तहिज़ऊन (34) ♦

व कालल्लजी-न अशरकू लौ

शाअल्लाहु मा अब्दना मिन् दूनिही मिन् शैइन् नहनु व ला आबाउना व ला हरम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन्, कजालि-क फ-अलल्लजी-न मिन् कब्लिहिम् फ-हल् अलरुसुलि इल्लल् बलागुल्-मुबीन (35) व ल-कद् बअस्ना फी कुल्लि उम्मतिरसूलन् अनिअबुदुल्ला-ह वज्त्तिबुत्तागू-त फमिन्हुम् मन् हदल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक्कत् अलैहिज्जलालतु, फसीरु

۲۲۲
رَبِّمَا ۱۵
الضَّل ۱۴
اِنَّ شَرَّكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقِقُونَ فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْعِلْمَ اِنَّ الْحِزْبَ الْيَوْمَ وَالشَّوْءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ الَّذِينَ تَوَدَّعُمْ
الْمَلِكَةُ ظَالِمِيْ اَنْفُسِهِمْ ۝ فَاقْبَلُوا السَّلَامَ مَا كُنْ اَنْتُمْ لْعَمَلٍ مِنْ
سُوْرٍ بَلَىٰ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَادْخُلُوا الْاَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خَالِدِيْنَ فِيْهَا فَلَيْسَ مَتْوًى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَقِيلَ
لِلَّذِيْنَ اٰتَوْا مَا ذَا الَّذِيْ رَكَّبَكُمْ وَالَّذِيْنَ اَلَلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً ۝ وَلَكَ اِنَّ الْاٰخِرَةَ خَيْرٌ وَلِيَعْمَدَارُ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ جَنَّتٌ عَدْنٌ يَدْخُلُوْنَهَا يُجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ
لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ يَمِيزُ اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِينَ
تَوَدَّعُمْ الْمَلِكَةُ طٰمِيْنِيْنَ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۝ اَدْخُلُوا
الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلِكَةُ اَوْ يَأْتِيَ اَمْرٌ رَبِّكَ ۝ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝
فَاَصَابَهُمْ سَيّٰتٌ مَّا عَمِلُوْا وَاحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا يَ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللّٰهُ مَا عِبَدْنَا
مِنْ دُوْنِهِ مِنْ شَيْءٍ ۝ نَحْنُ وَاٰبَاؤُنَا وَاَلْحَمُّوْنَا مِنْ دُوْنِهِ

مَنْ

करेगा और यह कहेगा कि मेरे शरीक जिनके बारे में तुम लड़ा-झगड़ा करते थे, कहाँ हैं, जानने वाले कहेंगे कि आज काफ़िरों पर पूरी रुस्वाई और अज़ाब है। (27) जिनकी जान फ़रिश्तों ने कुफ़ की हालत में निकाली थी, फिर वे (काफ़िर) लोग सुलह का (पैग़ाम) डालेंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे। क्यों नहीं? बेशक अल्लाह को तुम्हारे सब आमाल की पूरी ख़बर है। (28) सो जहन्नम के दरवाज़ों में (से) दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा-हमेशा को रहो। गरज़ तकब्बुर करने वालों का (वह) बुरा ठिकाना है। (29) और जो लोग (शिरक से) बचते हैं उनसे कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ नाज़िल फ़रमाई है, वे कहते हैं कि बड़ी ख़ैर नाज़िल फ़रमाई है। जिन लोगों ने नेक काम किए हैं उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत की दुनिया तो (और ज़्यादा) बेहतर है, और वाकई (वह शिरक से) बचने वालों का अच्छा घर है। (30) (वह घर) हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें ये दाख़िल होंगे, उन (बाग़ों) के नीचे से नहरें जारी होंगी। जिस चीज़ को उनका जी जाहेगा वहाँ उनको मिलेगी। इसी तरह का बदला अल्लाह (सब शिरक से) बचने वालों को देगा। (31) जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में निकालते हैं कि वे पाक होते हैं और कहते जाते हैं, अस्सलामु अलैकुम, तुम जन्मत में चले जाना अपने आमाल के सबब। (32) क्या ये लोग इसी बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या आपके परवर्दिगार का हुक्म आ जाए। ऐसा ही उनसे पहले जो लोग थे उन्होंने भी किया था, और उनपर अल्लाह ने ज़रा भी जुल्म न किया लेकिन वे आप ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। (33) आख़िर उनको उनके बुरे आमाल की सज़ाएँ मिलीं और जिस (अज़ाब) पर वे हँसते थे उनको उसी ने आन घेरा। (34) ♦

और मुशिरक लोग (यूँ) कहते हैं कि अगर अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होता तो उसके सिवा किसी चीज़ की न हम इबादत करते और न हमारे बाप-दादा, और न हम उसके (हुक्म के) बग़ैर किसी चीज़ को हराम कह सकते। जो लोग उनसे पहले हुए हैं ऐसी ही हरकत उन्होंने भी की थी, सो पैग़म्बरों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (35) और हम हर उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे हैं कि तुम अल्लाह

(तफ़सीर पृष्ठ 484)

1. मतलब यह कि हमारी तो ये नेमतें और इनसान की तरफ़ से यह नाशुक्री कि खुदा ही की ज़ात व सिफ़ात में झगड़ता है।

2. कि तुम्हारे आराम के लिए क्या-क्या सामान पैदा किए।

3. इन आयतों में ख़ूबसूरती और बनने-सँवरने का जायज़ होना मालूम होता है, और उसमें और तकब्बुर व बड़ाई जतलाने में फ़र्क़ यह है कि ख़ूबसूरती और सँवरना तो अपना दिल खुश करने के लिए या नेमत के इज़हार के लिए होता है। और दिल में अपने को न उस नेमत का मुस्तहिक़ समझता है और न दूसरों को हक़ीर व ज़लील समझता है बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ उसका मन्सूब होना उसकी नज़रों के सामने रहता है, और जिसमें हक़दार होने का दावा और दूसरों को हक़ीर व ज़लील समझना और अपने ऊपर नज़र और दूसरों की नज़र में बड़ाई और शान ज़ाहिर करना हो वह तकब्बुर और हराम है।

4. मगर वह उसी को पहुँचाते हैं जो इस सीधे रास्ते का तालिब हो, इसलिए तुमको चाहिए कि इन दलीलों में ग़ौर करो और उनसे हक़ तलब करो कि तुमको मकसूद तक पहुँचना नसीब हो।

5. इसमें तमाम जानदार, पेड़-पौधे और घास-फूस, बेजान चीज़ें, मुक्कब और अलग-अलग चीज़ें सब दाख़िल हो गए।

(तफ़सीर पृष्ठ 486)

1. कोई शिरक से तौबा कर ले तो मफ़िरत हो जाती है और न करे तो जब भी ये तमाम नेमतें ज़िन्दगी तक उससे दूर नहीं होती।

2. चाहे हमेशा के लिए जैसे बुत,

(पृष्ठ 486 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 488 की तफ़सीर पृष्ठ 490, 490 पर)

फिल्अर्जि फन्जुरू कै-फ का-न आकि-बतुल्-मुकज्जिबीन (36) इन् तहिरस् अला हुदाहुम्
 फ-इन्नल्ला-ह ला यह्दी मय्युजिल्लु व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (37) व अक्समू बिल्लाहि
 जह्-द ऐमानिहिम् ला यअसुल्लाहु मय्यमूतु, बला वअदन् अलैहि हक्कंव-व लाकिन्-न
 अक्सरन्नासि ला यअलमून (38) लियुबय्यि-न लहुमुल्लजी यखतलिफू-न फीहि व
 लियअ-लमल्लजी-न क-फरु अन्नहुम्
 कानू काजिबीन (39) इन्नमा कौलुना
 लिशैइन् इजा अरद्नाहु अन्-नकू-ल लहू
 कुन् फ-यकून (40) ❖

वल्लजी-न हाजरु फिल्लाहि मिम्-
 बअदि मा जुलिमू लनुबव्विअन्नहुम्
 फिद्दुन्या ह-स-नतन्, व लअज्रल्-
 आखिरति अक्बरु ❖ लौ कानू
 यअलमून (41) अल्लजी-न स-बरु व
 अला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (42) व
 मा अरसल्ला मिन् कब्लि-क इल्ला
 रिजालन् नूही इलैहिम् फस्अलू
 अह्लज्जिक्किर इन् कुन्तुम् ला तअलमून
 (43) बिल्-बय्यिनाति वज्जुबुरि, व

अन्जल्ला इलैकज्जिक्-र लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज्जि-ल इलैहिम् व लअल्लहुम्
 य-तफक्करून ● (44) अ-फ-अमिनल्लजी-न म-करुस्सय्यिआति अय्यखिसफल्लाहु
 बिहिमुल्-अर्-ज औ यअति-यहुमुल्-अजाबु मिन् हैसु ला यशअरून (45) औ यअखु-जहुम्

من شئ كذالك فعل الذين من قبلهم فهل على
 الرسل إلا البلة المبين ولقد بعثنا في كل أمة رسولا
 أن اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت فمنهم من هدى
 الله ومنهم من حقت عليه الضلالة فسيروا في الأرض
 فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين إن تعرض على
 هذا هم فإن الله لا يهدي من يضل وما لهم من
 نصيرين وأمسوا بالله جهداً أينهم لا يبعث الله من
 يموت بل وعداً عليه حقاً ولكن أكثر الناس لا يعلمون
 ليبين لهم الذي يخفون فيه وليعلم الذين كفروا
 أنهم كانوا كاذبين إننا قولنا الشئ إذا أردناه أن نقول
 له كن فيكون والذين هاجروا في الله من بعد ما
 ظلموا ننوئهم في الدنيا حسنة ولا أجر إلاخرة أكبر
 لو كانوا يعلمون الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون
 وما أرسلنا من قبلك إلا رجالاً نوحي إليهم فثبتوا أهل
 الديار إن كنتم لاتعلمون بالبينت والبر وأمرنا إليك
 الذكر لئيبين للناس ما نزل إليهم ولعلمهم يتفكرون

तआला की इबादत करो और शैतान से बचते रहो।¹ सो उनमें बाज़े वे हुए हैं कि जिनको अल्लाह तआला ने हिदायत दी, और बाज़े उनमें वे हुए जिनपर गुमराही साबित हो गई।² तो (अच्छा) ज़मीन में चलो-फिरो, देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ।³ (36) उनके सही रास्ते पर आने की अगर आपको तमन्ना हो तो अल्लाह तआला ऐसे शख्स को हिदायत नहीं करता जिसको गुमराह करता है, और उनका कोई हिमायती न होगा। (37) और ये लोग बड़े जोर लगा-लगाकर अल्लाह की कस्में खाते हैं कि जो मर जाता है अल्लाह उसे दोबारा ज़िन्दा न करेगा। क्यों नहीं? (ज़िन्दा करेगा) इस वायदे को तो उसने (यानी अल्लाह तआला ने) अपने ज़िम्मे लाज़िम कर रखा है, लेकिन अक्सर लोग यकीन नहीं लाते। (38) ताकि जिस चीज़ में ये लोग इख़्तिलाफ़ किया करते थे उनके सामने उसको ज़ाहिर कर दे, और ताकि काफ़िर लोग यकीन कर लें कि वाकई वही झूठे थे।⁴ (39) हम जिस चीज़ को चाहते हैं, तो हमारा उससे इतना ही कहना होता है कि तू हो जा, पस वह हो जाती है।⁵ (40) ♦

और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया⁶ उसके बाद कि उनपर जुल्म किया गया, हम उनको दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे,⁷ और आख़िरत का सवाब तो कई दर्जे बड़ा है, काश उनको ख़बर होती।⁸ (41) वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने रबपर भरोसा रखते हैं।⁹ (42) और हमने आपसे पहले सिर्फ़ आदमी ही (रसूल बनाकर और मोजिज़ात और किताबें देकर) भेजे हैं, कि हम उनपर वह्य भेजा करते थे, सो अगर तुमको इल्म नहीं तो जानने वालों से पूछ देखो।¹⁰ (43) और आप पर भी यह कुरआन उतारा है, ताकि जो मज़ामीन लोगों के पास भेजे गए उनको आप उनसे ज़ाहिर कर दें, और ताकि वे “ग़ौर व” फ़िक्र किया करें।¹¹ ● (44) जो लोग बुरी (बुरी) तदबीरें करते हैं क्या (ऐसे लोग) फिर भी इस बात से

(पिछले पृष्ठ का शेष)

या फ़िलहाल जैसे जो मर चुके, या अन्जाम के एतिबार से जैसे जो मरेंगे, मिसाल के तौर पर फ़रिश्ते और जिन्न और ईसा अलैहिस्सलाम।

3. यानी बाज़ को तो इल्म ही नहीं और बाज़ को उसका तयशुदा वक्त मालूम नहीं। और माबूद को तो पूरा इल्म चाहिए खुसूसन मरने के बाद ज़िन्दा होने का कि उसपर इबादत करने या न करने की जज़ा होगी, तो उसका इल्म तो माबूद के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

4. यानी कोई नावाक़िफ़ शख्स तहकीक़ के लिए या कोई वाक़िफ़ शख्स इम्तिहान के लिए उनसे पूछता है कि कुरआन जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला का नाज़िल किया हुआ फरमाते हैं, क्या यह सही है।

5. यानी मज़हब वाले पहले से तौहीद, नुबुव्वत और आख़िरत के दावेदार होते आए हैं, उन्हीं से यह भी नक़ल करने लगे।

6. जो शख्स किसी को गुमराह किया करता है उस गुमराह को तो गुमराही का गुनाह होता है और उस गुमराह करने वाले को गुमराही का सबब बन जाने का। इसी सबब बनने के हिस्से को कुछ बोझ फरमाया गया। और अपने गुनाह के बोझ का पूरे तौर पर उठाना ज़ाहिर है।

(तफ़सीर पृष्ठ 488)

1. आयत का हासिल यह हुआ कि तुमने अपने से पहले काफ़ि़रों का हाल घाटे में रहने और दुनिया व आख़िरत के अज़ाब का सुन लिया। इसी तरह जो तदबीर व फ़रेब और बहानेबाज़ी दीने हक़ के मुकाबले में तुम कर रहे हो और मख़्लूक को गुमराह करना चाहते हो तो यही अन्जाम तुम्हारा होगा।

2. रूह निकलने के बाद ज़न्त में जाना रूहानी जाना है, और जिस्मानी जाना मख़सूस है क़ियामत के साथ। और यह मायने भी हो सकते हैं कि क़ियामत में तुम ज़न्त में जाना और मक़सद हर हाल में खुशख़बरी सुनाना है। और आमाज़ को जो ज़न्त में दाख़िल होने का सबब फरमाया तो यह सबब आदतन है, और हकीक़ी सबब अल्लाह की रहमत है जैसा कि एक हदीस में आया है।

3. ऊपर मोमिनो के ज़िक्र से पहले काफ़ि़रों के गुमराह होने और गुमराह करने का ज़िक्र था। मोमिनो का ज़िक्र मुकाबले की मुनासबत से मज़मून के मुकम्मल करने के लिए दरमियान में आ गया, अब काफ़ि़रों की हठ-धर्मी और मुख़ालफ़त व दुश्मनी पर वईद है।

4. यानी क्या मौत के वक्त या क़ियामत में ईमान लाएँगे जबकि ईमान मक़बूल न होगा, अगरचे उस वक्त सब कुछ सामने आ जाने की वजह से तमाम कुफ़ार तौबा करेंगे। (पृष्ठ 490 की तफ़सीर पृष्ठ 492, 494 पर)

फी तकल्लुबिहिम् फमा हुम् बिमुअजिजीन (46) औ यअखु-जहुम् अला तखव्वुफिन्
फ-इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफुरहीम (47) अ-व लम् यरौ इला मा ख-लकल्लाहु मिन् शैइय-
य-तफय्यउ ज़िलालुहू अनिल्-यमीनि वशशमाइलि सुज्जदल्-लिल्लाहि व हुम् दाखिरून (48)

व लिल्लाहि यस्जुदू मा फिस्समावाति व
मा फिल्अर्जि मिन् दाब्बतिव्-वल्-मलाइ-
-कतु व हुम् ला यस्तक्विरून (49)

यखाफू-न रब्बहुम् मिन् फौकिहिम् व
यफअलू-न मा युअमरून □ (50) ♦

व कालल्लाहु ला तत्तखिज़ू
इलाहैनिस्-नैनि इन्नमा हु-व इलाहुंव-
वाहिदुन् फ-इय्या-य फरहबून (51) व
लहू मा फिस्समावाति वल्अर्जि व
लहुद्दीनु वासिबन् अ-फगैरल्लाहि
तत्तकून (52) व मा बिकुम् मिन्
निअमतिन् फमिनल्लाहि सुम्-म इज़ा
मस्सकुमुज़्-ज़ुरू फ-इलैहि तज्अरून
(53) सुम्-म इज़ा क-शफज़्ज़ुरू-र

अन्कुम् इज़ा फरीकुम्-मिन्कुम् बिरब्बिहिम्

युशिरकून (54) लियक्फुरू बिमा आतैनाहुम्, फ-तमत्तअ, फसौ-फ तअलमून (55) व

यजअलू-न लिमा ला यअलमू-न नसीबम् मिम्मा रज़कनाहुम्, तल्लाहि लतुस्अलुन्-न अम्मा
कुन्तुम् तफ़्तरून (56) व यजअलू-न लिल्लाहिल्-बनाति सुब्हानहू व लहुम् मा यशतहून

(57) व इज़ा बुशिश-र अ-हदुहुम् बिल्उत्सा ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दव्-व हु-व कज़ीम (58)

أَفَاَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِمِائِمْ الْأَرْضِ
أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۚ أَوْ يَأْخُذَهُمْ
فِي تَقْلِيْبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ
وَأَن رَّبُّكُمْ لَرَّوْفٌ رَّحِيمٌ ۚ أَوَلَمْ يَرْوُوا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ
سَبْئٍ يَبْقِيَاءُ ظِلَالَهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشِّمَالِ سَجْدًا لِلَّهِ وَهُمْ
دَاخِرُونَ ۚ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۚ يَخَافُونَ
رَبَّهُمْ قَرْنًا فَوْقَهُمْ وَيُقْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۚ وَقَالَ
اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا الْهَيْهَاتِ الْأُنثَىٰ إِنَّمَا هِيَ إِلَهُ وَاحِدٌ فَإِلَٰهِي
فَأَهْبُونَ ۚ وَلَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ
وَاصْبَاءُ أَفَعَيَّرَ اللَّهُ تَتَّقُونَ ۚ وَمَا يَكُمُ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ
ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَٰهِي تَجْرُونَ ۚ ثُمَّ إِذَا كُفَّتِ الضُّرُّ
عَنكُمُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۚ يَكْفُرُوا بِآيَاتِ
آيَاتِهِمْ فَمَتَّعُوا فَنُفُوتَ تَعْلَمُونَ ۚ وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَجْعَلُونَ
نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ تَاللَّهِ لَسْتُ لَكُمْ تَقَرُّونَ ۚ
وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَنَهُ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ۚ وَإِذَا

बेफिक्र हैं कि अल्लाह तआला आपको ज़मीन में धँसा दे या उनपर ऐसी जगह से अज़ाब आ पड़े जहाँ से आपको गुमान भी न हो।¹ (45) या आपको चलते-फिरते पकड़े, सो ये लोग (अल्लाह तआला) को हरगिज़ हरा नहीं सकते। (46) या आपको घटाते-घटाते पकड़ ले, सो तुम्हारा रब बड़ा शफ़ीक़, मेहरबान है। (47) क्या उन लोगों ने अल्लाह की उन पैदा की हुई चीज़ों को नहीं देखा जिनके साये कभी एक तरफ़ को कभी दूसरी तरफ़ को इस तौर पर झुक जाते हैं कि खुदा के ताबे “अधीन” हैं,² और वे चीज़ें भी आजिज़ हैं। (48) और अल्लाह तआला ही की ताबेदार हैं जितनी चीज़ें चलने वाली आसमानों में और ज़मीन में मौजूद हैं, और (खास तौर पर) फ़रिश्ते, और वे तकब्बुर नहीं करते। (49) वे अपने रब से डरते हैं जो कि उनपर हाकिम है, और आपको जो कुछ हुक्म किया जाता है वे उसको करते हैं। □ (50) ♦

और अल्लाह ने फ़रमाया है कि दो माबूद मत बनाओ, बस एक माबूद वही है, तो तुम लोग खास मुझ ही से डरा करो।³ (51) और सब चीज़ें उसी की हैं जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं, और लाज़िमी तौर पर इताअत बजा लाना उसी का हक़ है,⁴ तो क्या फिर भी अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो? (52) और तुम्हारे पास जो कुछ भी नेमत है वह सब अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुमको तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी से फ़रियाद करते हो।⁵ (53) फिर जब तुमसे उस तकलीफ़ को हटा देता है तो तुममें की एक जमाअत अपने रब के साथ शिर्क करने लगती है।⁶ (54) (जिसका हासिल यह है) कि वे हमारी दी हुई नेमत की नाशुक्री करते हैं। ख़ैर कुछ दिन ऐश उड़ा लो अब जल्दी ही तुमको ख़बर हुई जाती है। (55) और ये लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुताल्लिक़ आपको कुछ इल्म नहीं, कसम है खुदा की! तुमसे तुम्हारी इन बोहतान-बाज़ियों की ज़रूर बाज़पुर्स “यानी पूछताछ” होगी। (56) और अल्लाह तआला के लिए बेटियाँ तजवीज़ करते हैं, सुब्हानल्लाह! और अपने लिए पसन्दीदा चीज़ (यानी बेटे)। (57) और जब

(तफ़सीर पृष्ठ 490)

1. ‘और हम हर उम्मत में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे’ से जाहिरन यह मालूम होता है कि हिन्दुस्तान वालों के लिए भी पुराने ज़माने में कुछ रसूल भेजे गए हैं, चाहे वे हिन्दुस्तान ही में पैदा हुए और रहे हों या किसी और मुल्क में रहते हों और यहाँ उनके नायब तर्ज़ाग़ के लिए आए हों।
2. मतलब यह कि कुफ़्फ़ार और अम्बिया में यह मामला इसी तरह चला आ रहा है। और हिदायत व गुमराही के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला का मामला भी यँ ही जारी है कि काफ़िरों का झगड़ना और बहस करना भी पुराना और नबियों की तालीम भी पुरानी, और सबका हिदायत न पाना भी पुराना, फिर आपको गुम क्यों हो।
3. पस अगर वे गुमराह न थे तो उनपर अज़ाब क्यों नाज़िल हुआ। और इन वाकिआत को इत्तिफ़ाक़िया इसलिए नहीं कह सकते कि ख़िलाफ़े आदत हुए और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की पेशीनगोई के बाद हुए, और मोमिनीन उससे बचे रहे, फिर उसके अज़ाब होने में क्या शक़ है।
4. पस कियामत का आना यकीनी और अज़ाब व सवाब का फैसला होना ज़रूरी है।
5. तो इतनी बड़ी कुदरते कामिला के सामने बेजान चीज़ों में देवारा जान का पड़ जाना कौन-सी दुश्वार है, जैसा कि पहली बार जान डाल चुके हैं।
6. और हब्श़ा को चले गए।
7. यानी आपको मदीना पहुँचकर ख़ूब अमन व राहत देंगे। चुनाँचे थोड़े ही दिनों के बाद अल्लाह तआला ने पहुँचा दिया और उसको असली वतन करार दिया, और उसको ठिकाना कहा और हर तरह की वहाँ तरक्की हुई। इसलिए ‘ह-स-न-’ कहा गया, और हब्श़ा का ठहरना आरज़ी (अस्थायी) था इसलिए उसको ठिकाना नहीं फ़रमाया।
8. और उसके हासिल करने की राग़बत से मुसलमान हो जाते।

(पृष्ठ 490 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 492 की तफ़सीर पृष्ठ 494 पर)

य-तवारा मिनल्-कौमि मिन् सू-इ मा बुशिश-र बिही, अयुम्सिकुहू अला हूनिन् अम् यदुस्सुहू
फित्तुराबि, अला सा-अ मा यत्कुमून (59) लिल्लजी-न ला युअमिन्-न बिल्आखिरति
म-सलुस्सौइ व लिल्लाहिल् म-सलुल्-अअला व हुवल् अजीजुल् हकीम (60) ❖

व लौ युआखिजुल्लाहुन्ना-स बिजुल्मिहिम् मा त-र-क अलैहा मिन् दाब्बतिंव-व
लाकिंय्युअखिखारुहुम् इला अ-जलिम्-
मुसम्मन् फ-इजा जा-अ अ-जलुहुम् ला
यस्तअखिखारु-न सा-अतंव-व ला
यस्तकिदमून (61) व यज्अलू-न
लिल्लाहि मा यक्करहू-न व तसिफु
अल्सिनतुहुमुल्-कजि-ब अन्-न लहुमुल्-
हुस्ना, ला ज-र-म अन्-न लहुमुन्ना-र
व अन्नहुम् मुफरतून (62) तल्लाहि
ल-कद् अर्सल्ला इला उ-ममिम् मिन्
कब्बिल-क फ-जय्य-न लहुमुशशैतानु
अअमालहुम् फहु-व वलिय्युहुमुल्-यौ-म
व लहुम् अजाबुन् अलीम (63) व मा
अन्जल्ना अलैकल्-किता-ब इल्ला
लितुबय्यि-न लहुमुल्लजिख्त-लफू फीहि व
हुदंव-व रहम-तल् लिकौमिय्युअमिन् न

بَشِّرْ أَحَدَهُمْ بِالْأُنْثَىٰ ۖ ذَٰلِكَ وَجْهَهُ ۖ مُسَوِّدًا ۖ وَهُوَ كَظِيمٌ ۝
يُنَادِي مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ أَيَسْكَءُ عَلَىٰ
هُنَّ أَمْ يَكْتُمْنَ فِي الْكَرْبِ الْأَسَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝
لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ
الْأَعْلَىٰ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ
مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى
ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۝
وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكُذْبَ أَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَاجِرًا ۖ إِنَّ لَهُمُ النَّارَ ۖ أَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ۝ تَاللَّهِ
لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ ۖ ذَرَيْنِ ۖ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالُهُمْ
فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ
بِالْكِتَابِ إِلَّا لَتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ ۖ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْيَاهُ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝
وَلَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةٌ ۖ لَتُبَيِّنَ لَكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ
بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ۝ وَمِنْ

(64) वल्लाहु अन्ज-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ-अह्या बिहिल्अर्-ज बअ-द मौतिहा,
इन्-न फी जालि-क लआ-यतल् लिकौमिय्यसूमअून (65) ❖

व इन्-न लकुम् फिल्-अन्आमि लअिब-तन् नुस्कीकुम् मिम्मा फी बुतूनिही मिम्-बैन
फर्सिंव-व दमिल्-ल-बनन् खालिसन् साइगल्-लिश्शारिबीन (66) व मिन् स-मरातिन्नखीलि

उनमें से किसी को औरत (यानी बेटी) की ख़बर दी जाए तो सारे दिन उसका चेहरा बेरौनक रहे, और वह दिल ही दिल में घुटता रहे। (58) जिस चीज़ की उसको ख़बर दी गई है उसकी शर्म से लोगों से छुपा-छुपा फिरे कि आया उसको ज़िल्लत पर लिए रहे या उसको मिट्टी में गाड़ दे। ख़ूब सुन लो उनकी यह तजवीज़ बहुत ही बुरी है। (59) जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते उनकी बुरी हालत है,¹ और अल्लाह तआला के लिए तो बड़ी आला दर्जे की सिफ़तें (साबित) हैं, और वह बड़े ज़बरदस्त हैं (और) हिक्मत वाले हैं। (60) ♦

और अगर अल्लाह तआला लोगों पर उनके जुल्म के सबब दारोगीर “यानी पकड़” फरमाते तो ज़मीन के ऊपर कोई हरकत करने वाला न छोड़ते, लेकिन एक मुक़र्ररा वक़्त तक मोहलत दे रहे हैं। फिर जब उनका मुक़र्ररा वक़्त आ पहुँचेगा उस वक़्त एक घड़ी “पल” न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (61) और अल्लाह तआला के लिए वे उमूर तजवीज़ करते हैं जिनको खुद नापसन्द करते हैं और अपनी ज़बान से झूठे दावे करते जाते हैं कि उनके लिए हर तरह की भलाई है, लाज़िमी बात है कि उनके लिए दोज़ख़ है, और बेशक वे लोग सबसे पहले भेजे जाएँगे। (62) खुदा तआला की कसम! आपसे पहले जो उम्मतें हो गुज़री हैं उनके पास भी हमने (रसूलों को) भेजा था, सो उनको भी शैतान ने उनके आमाल अच्छे बना करके दिखलाए, पस वह आज उनका रफ़ीक़ “यानी साथी” था, और उनके वास्ते दर्दनाक सज़ा है।² (63) और हमने आप पर यह किताब सिर्फ़ इसलिए नाज़िल की है कि जिन उमूर में लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं आप (आम) लोगों पर उसको ज़ाहिर फरमा दें, और ईमान वालों की हिदायत और रहमत की गरज़ से (नाज़िल फरमाया), (64) और अल्लाह तआला ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा किया,³ इसमें ऐसे लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सुनते हैं। (65) ♦

और (साथा ही) तुम्हारे लिए मवेशियों में भी ग़ौर करने का मक़ाम है। उनके पेट में जो गोबर और खून है उसके दरमियान में से साफ़ और (गले में) आसानी से उतरनेवाला दूध हम तुमको पीने को देते हैं।⁴ (66)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

9. वतन छोड़ने के वक़्त यह ख़याल नहीं करते कि खाएँगे-पिएँगे कहाँ से।

10. ज़िक्र वालों से मुराद अहले किताब हैं।

11. गरज़ यह कि जब आपकी रिसालत भी पुराने तरीके के मुवाफ़िक़ है तो फिर इनकार की क्या वजह और ख़िलाफ़ होने के दावे की क्या दलील?

(तफ़सीर पृष्ठ 492)

1. जैसे बदर की लड़ाई में ऐसे बेसरो-सामान मुसलमानों के हाथ से उनको सज़ा मिली कि कभी उनको इसका अक़ली एहतिमाल भी न होता कि ये हमपर ग़ालिब आ सकेंगे।

2. यानी साये के असबाब कि सूरज का नूरानी होना और सायेदार जिस्म का भारी और गाढ़ा होना है, और साये की हरकत का सबब सूरज की हरकत है, फिर साये की खासियतें, ये सब अल्लाह के हुक्म से हैं।

3. क्योंकि जब माबूद होना मेरे साथ ख़ास है तो जो उसके लवाज़िम हैं मुकम्मल कुदरत होना वग़ैरह वे भी मेरे ही साथ ख़ास होंगे, तो इन्तिक़ाम वग़ैरह का ख़ौफ़ मुझ ही से होना चाहिए। और शिर्क़ इन्तिक़ाम को दावत देता है, पस शिर्क़ न करना चाहिए।

4. यानी वही इस बात का हक़दार है कि सब उसकी इताअत करें।

5. यानी जिस तरह डरने के काबिल अल्लाह के सिवा कोई नहीं उसी तरह नेमत देने वाला और उम्मीद के काबिल भी सिवाय अल्लाह तआला के कोई नहीं।

6. एक जमाअत इसलिए कहा गया कि बाज़े इस हालत को याद रखकर तौहीद व ईमान पर कायम हो जाते हैं।

(पृष्ठ 494 का तफ़सीर पृष्ठ 496 पर)

और खजूर और अंगूरों के फलों से तुम लोग नशे की चीज़¹ और उम्दा खाने की चीज़ें बनाते हो। बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो अक्ल रखते हैं। (67) और आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाली की तू पहाड़ों में घर बना ले और दरख्तों में और जो लोग इमारतें बनाते हैं, उनमें। (68) फिर हर किस्म के फूलों से चूसती फिर, फिर अपने रब के रास्तों में चल जो आसान हैं, उसके पेट में से पीने की एक चीज़ निकलती है जिसकी रंगतें मुख्तलिफ़ होती हैं, कि उसमें लोगों के लिए शिफा है, इसमें उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो सोचते हैं। (69) और अल्लाह तआला ने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हारी जान निकालता है। और बाज़े तुममें वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुँचाए जाते हैं, (जिसका यह असर होता है) कि एक चीज़ से बाख़बर होकर फिर बेख़बर हो जाता है, बेशक अल्लाह तआला बड़े इल्म वाले, बड़ी कुदरत वाले हैं। (70) ♦

और अल्लाह तआला ने तुममें बाज़ों को बाज़ों पर रिज्क में फ़ज़ीलत दी है। सो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी गई है वे अपने हिस्से का माल अपने गुलामों को इस तरह कभी देने वाले नहीं कि वे सब उसमें बराबर हो जाएँ, क्या फिर भी खुदा तआला की नेमत का इनकार करते हैं? (71) और अल्लाह तआला ने तुम ही में से तुम्हारे लिए बीवियाँ बनाई, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए, और तुमको अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने (पीने) को दीं,³ क्या फिर भी बेबुनियाद चीज़ पर ईमान रखेंगे और अल्लाह तआला की नेमत की नाशुकी करते रहेंगे। (72) और अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते रहेंगे जो उनको न आसमान में से रिज्क पहुँचाने का इख़्तियार रखती हैं और न ज़मीन में से, और न कुदरत रखती हैं। (73) सो तुम अल्लाह तआला के लिए मिसालें मत घड़ो, (और) अल्लाह तआला जानते हैं और तुम नहीं जानते। (74)

(तफ़सीर पृष्ठ 494)

1. दुनिया में भी कि ऐसी जहालत में मुब्तला हैं और आख़िरत में भी कि ज़िल्लत व सज़ा में मुब्तला होंगे।

2. गरज़ यह बाद में आने वाले भी पहले वालों की तरह कुफ़्र कर रहे हैं और उन्हीं की तरह इनको भी सज़ा होगी। फिर आप क्यों गुम में पड़ें।

3. यानी उसकी बढ़ोत्तरी की कुव्वत को इसके बाद कि खुशक हो जाने से कमज़ोर हो गई थी, ताक़त दे दी।

4. आयत से यह मुराद नहीं कि पेट में एक तरफ़ गोबर होता है और एक तरफ़ खून, और दोनों के दरमियान में दूध रहता है। बल्कि पेट में जो ग़िज़ा होती है उसमें वे हिस्से जो आगे चलकर दूध बनेंगे और वे हिस्से जो गोबर बन जाएंगे सब मिलेजुले होते हैं। अल्लाह तआला उनको अलग-अलग करते हैं। कुछ गोबर बनकर निकल जाता है और कुछ जिगर के ज़रिये हाज़िमे के बाद अख़लात (यानी खून, बलग़म, सौदावी मादा और सफ़रावी मादा) बनते हैं, जिनमें खून भी है। फिर उस खून में वह हिस्सा जो आगे चलकर दूध बनेगा ये दोनों मिलेजुले होते हैं। अल्लाह एक हिस्सा अलग करके छाती या थनों तक पहुँचाता है और वह वहाँ पहुँचकर दूध बन जाता है।

(तफ़सीर पृष्ठ 496)

1. नशे की चीज़। इसमें दो कौल हैं, एक यह कि आयत नाज़िल होने के वक़्त नशा लाने वाली चीज़ें हराम न थीं। क्योंकि यह आयत, मक्की है, इसलिए इसको एहसान करना फ़रमाया, लेकिन चूँकि हराम होने वाली थी इसलिए इसको अच्छा और पसन्दीदा वग़ैरह न फ़रमाया, जैसे रिज्क को फ़रमाया है। दूसरा कौल यह है कि अगरचे आयत के नाज़िल होने के वक़्त नशा लाने वाली चीज़ें हराम भी हो गई हों, इस एहतimal पर कि शायद यह आयत मदीनी हो, लेकिन यहाँ महसूस तौर पर एहसान करना मकसूद नहीं ताकि हलाल होने पर मौकूफ़ हो बल्कि मअनवी एहसान करना यानी तौहीद पर इस्तिदलाल है।

2. इसमें शिर्क की हद दर्जा बुराई है कि जब तुम्हारे गुलाम तुम्हारे रिज्क में शरीक नहीं हो सकते तो अल्लाह तआला के गुलाम उसकी खुदाई में कैसे शरीक हो सकते हैं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 498 पर)

ज-रबल्लाहु म-सलन् अब्दम्-मस्लूकल्-ला यक्दिरु अला शैइव्-व मर्रजक्नाहु मिन्ना रिज्कन्
ह-सनन् फहु-व युन्फिक्कु मिन्हु सिर्रव्-व जहरन्, हल् यस्तवू-न, अल्हम्दु लिल्लाहि, बल्
अक्सरुहुम् ला यअलमून् (75) व ज-रबल्लाहु म-सलर्रजुलैनि अ-हदुहुमा अब्कमु ला
यक्दिरु अला शैइव्-व हु-व कल्लुन् अला मौलाहु ऐ-नमा युवज्जिह्हु ला यअति बिखैरिन्,
हल् यस्तवी हु-व व मय्यअमुरु बिल्-अद्लि व हु-व अला सिरातिम्-मुस्तकीम (76) ❖

व लिल्लाहि गैबुस्समावाति वल्अर्जि
व मा अम्रुस्सा-अति इल्ला क-लम्हिल्-
ब-सरि औ हु-व अक्वरबु, इन्नल्ला-ह
अला कुल्लि शैइन् कदीर (77) वल्लाहु
अखर-जकुम् मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम्
ला तअलमू-न शैअव्-व ज-अ-ल
लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-
अफइ-द-त लअल्लकुम् तश्कुरुन् (78)
अलम् यरौ इलत्तैरि मुसख्खारातिन् फी
जव्विस्समा-इ, मा युम्सिक्कुहुन्-न
इल्लल्लाहु, इन्-न फी जालि-क
लआयातिल्-लिकौमिय्युअमिनून् (79)

वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम्
स-कनव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन्
जुलूदिल्-अन्आमि बुयूतन् तस्तखिफ्फूनहा

यौ-म जअन्निकुम् व यौ-म इकामतिकुम् व मिन् अस्वाफिहा व औबारिहा व अशआरिहा
असासव्-व मताअन् इला हीन (80) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्मा ख-ल-क जिलालव्-व
ज-अ-ल लकुम् मिन्ल् जिबालि अक्नानव्-व ज-अ-ल लकुम् सराबी-ल तकीकुमुल्हर्-र व

لَا تَعْلَمُونَ ۖ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِمَّا رَزَقْنَاكَ حَسَنًا فَهُوَ يَفْقَهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَجَهْرًا ۚ هَلْ يَسْتَوِي الْحَمْدُ لِلَّهِ بِلَا كُفْرٍ لَهُمْ وَلَا يَكْفُرُونَ ۚ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا تَجَلَّيْنِ أَحَدُهُمَا أَتٰكُمُ لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ كَلٌّ عَلَىٰ مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّههُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ۚ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أُمِرَ النَّاسُ إِلَّا بِالْحَكْمِ الْبَصِيرِ ۚ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۚ أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الظِّلِّ مُسْتَحَرَّتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يُبْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۚ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّن بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۚ وَمِنْ أَصْوَابِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارُهَا ۚ أَتَانَا وَمَتَّعَنَا إِلَىٰ حِينٍ ۚ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنَّا خَلْقَ ظِلَالًا

مَثَلًا

अल्लाह तआला एक मिसाल बयान फरमाते हैं, कि एक गुलाम है जो दूसरे की मिल्क में है कि किसी चीज़ का इख्तियार नहीं रखता। और एक शख्स है जिसको हमने अपने पास से ख़ूब रोज़ी दी है, तो वह उसमें से छुपे और खुले तौर पर खर्च करता है, क्या (इस किस्म के शख्स) आपस में बराबर हो सकते हैं। सारी तारीफें अल्लाह तआला ही के लिए लायक हैं, बल्कि उनमें से अक्सर तो जानते नहीं।¹ (75) और अल्लाह तआला एक और मिसाल बयान फरमाते हैं, कि दो शख्स हैं जिनमें एक तो गुँगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक वबाले जान है, वह उसको जहाँ भेजता है कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता, क्या यह शख्स और ऐसा शख्स आपस में बराबर हो सकते हैं जो अच्छी बातों की तालीम करता हो और खुद भी एक सही रास्ते पर हो।² (76) ♦

और आसमानों और ज़मीन की (तमाम) छुपी बातें अल्लाह ही के साथ खास हैं, और कियामत का मामला बस ऐसा (झटपट) होगा जैसे आँख झपकना, बल्कि इससे भी जल्दी,³ यकीनन अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं।⁴ (77) और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माओं के पेट से इस हालत में निकाला कि तुम कुछ भी न जानते थे,⁵ और उसने तुमको कान दिए और आँख और दिल ताकि तुम शुक्र करो। (78) क्या लोगों ने परिन्दों को नहीं देखा कि आसमान के (नीचे) मैदान में ताबे हो रहे हैं, उनको सिवाय अल्लाह के कोई नहीं थामता। इसमें ईमान वाले लोगों के लिए कई दलीलें हैं।⁶ (79) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारे घरों में रहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिनको तुम अपने कूच के दिन और ठहरने के दिन हल्का (फुल्का) पाते हो, और उनकी ऊन और उनके रूओं और उनके बालों से घर का सामान और फायदे की चीज़ें एक मुद्त तक के लिए बनाई।⁷ (80) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे

(पृष्ठ 496 का शेष)

3. यानी कुदरत व नेमत की दूसरी दलीलों में से अल्लाह तआला की कुदरत की एक बड़ी दलील और नेमत खुद तुम्हारा एक जन्म होने की हैसियत से और शख्सि (व्यक्तिगत) वजूद है।

(तफ़सीर पृष्ठ 498)

1. पस जब मजाज़ी मालिक व मजाज़ी मम्लूक बराबर नहीं हो सकते तो मालिके हकीकी और मम्लूके हकीकी कब बराबर हो सकते हैं। और इबादत का हकदार होना मौकूफ है बराबरी पर, और वह है नहीं।

2. जब मख्लूक मख्लूक में बावजूद इसके बहुत-सी सिफ़्तों और हकीकत में एक हैं इतना फर्क है तो ख़ालिक व मख्लूक के फर्क का खुद अन्दाज़ा कीजिए।

3. कियामत के मामले से मुराद है मुद्दों में जान पड़ना, और इसका जल्दी होना ज़ाहिर है। क्योंकि आँख झपकाना हरकत है और हरकत ज़मानी होती है, और जान पड़ना एक लम्हे में होना है और ज़ाहिर है कि एक लम्हे में होना ज़मानी हरकत से ज़्यादा जल्दी होना है।

4. कुदरत के साबित करने के लिए कियामत की तख़सीस शायद इस वजह से की हो कि वह मख़सूस ग़ैबी चीज़ों में से भी है। पस वह इल्म और कुदरत दोनों की दलील है। ज़ाहिर होने से पहले तो इल्म की और ज़ाहिर होने के बाद कुदरत की।

5. इस मरतबे का नाम इस्तिलाह में 'अक्ले हयूलानी' है।

6. कुछ निशानियाँ इसलिए फरमाया कि परिन्दों को एक खास अन्दाज़ पर पैदा करना जिससे उड़ना मुम्किन हो एक दलील है, फिर फ़िज़ा को ऐसे तौर पर पैदा करना जिसमें उड़ना मुम्किन हो, एक दलील है। फिर इस उड़ने का सामने ज़ाहिर होना एक दलील है। और जितने असबाब को उड़ने में दख़ल है जिसकी वजह से जिस्म का भारी या हल्कापन वग़ैरह चीज़ों का तबई असर ज़ाहिर नहीं होता, दलील हैं। क्योंकि वे सब अल्लाह ही के पैदा किए हुए हैं, फिर उन असबाब पर मुसब्बब यानी उड़ने का मुरततब हो जाना यह भी अल्लाह ही के हुक्म से है।

7. एक मुद्त तक इसलिए फरमाया कि आदतन यह सामान रूई के कपड़ों के मुकाबले में ज़्यादा देर तक टिकने वाला होता है।

सराबी-ल तकीकुम् बअसकुम्, कजालि-क युतिम्मु निअ-मतहू अलैकुम् लअल्लकुम् तुस्लिमून
(81) फ-इन् तवल्लौ फ-इन्नमा अलैकल्-बलागुल्-मुबीन (82) यअरिफू-न निअ-मतल्लाहि
सुम्-म युन्किरूनहा व अक्सरुहुमुल्-काफिरून (83) ♦

व यौ-म नब्असु मिन् कुल्लि उम्मतित्न् शहीदन् सुम्-म ला युअजनु लिल्लजी-न क-फरू

व ला हुम् युस्तअतबून (84) व इजा
रअल्लजी-न ज-लमुल्- अजा-ब फला
युखफफु अन्हुम् व ला हुम् युज्जरून

(85) व इजा रअल्लजी-न अशरकू

शु-रका-अहुम् कालू रब्बना हाउला-इ

शु-रकाउनल्लजी-न कुन्ना नद्अू मिन्

दूनि-क फअल्कौ इलैहिमुल्कौ-ल इन्नकुम्

लकाजिबून ▲ (86) व अल्कौ

इलल्लाहि यौमइजि-निस्स-ल-म व

जल्-ल अन्हुम् मा कानू यफतरून (87)

अल्लजी-न क-फरू व सद्दू अन्

सबीलिल्लाहि जिद्नाहुम् अजाबन्

फौकल्-अजाबि बिमा कानू युफिसदून

(88) व यौ-म नब्असु फी कुल्लि उम्मतित्न् शहीदन् अलैहिम् मिन् अन्फुसिहिम् व जिअना

बि-क शहीदन् अला हाउला-इ, व नज्जल्ला अलैकल्-किता-ब तिब्यानल्-लिकुल्लि शैइव्-व

हुदव्-व रहमतव्-व बुशरा लिल्मुस्लिमीन (89) ♦

इन्नल्ला-ह यअमुरु बिल्-अद्लि वल्-इहसानि व ईता-इ जिल्कुरबा व यन्हा

وَجَعَلْ لَكُمْ مِنْ أَجْبَالٍ أُمَّتًا وَجَعَلَ لَكُمُ سِرَاطٍ
تَقِيكُمْ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمْ بَأْسَكُمْ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ۝ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ
الْمُبِينُ ۝ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ
الْكَافِرُونَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا
يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ وَإِذَا الدِّينُ
ظَلَمُوا الْعَدَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝
وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شَرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا
الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِنْ دُونِكَ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ
لَكَاذِبُونَ ۝ وَالْقَوْلُ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ وَالسَّلَامُ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَعْتَرُونَ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ
اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝
وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ
وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ
تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ۝
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَائِي ذِي الْقُرْبَىٰ

लिए अपनी बाज़ मख्लूकात के साये बनाए, और तुम्हारे लिए पहाड़ों में पनाह की जगह बनाई,¹ और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते बनाए जो गर्मी से तुम्हारी हिफाज़त करें, और ऐसे कुर्ते बनाए जो तुम्हारी लड़ाई से तुम्हारी हिफाज़त करें।² अल्लाह तुमपर इसी तरह अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फरमाँबरदार रहो। (81) फिर अगर ये लोग मुँह मोड़ें तो आपके ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुँचा देना है। (82) वे लोग खुदा की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसके इनकारी होते हैं,³ और ज़्यादा उनमें नाशुके हैं। (83) ♦

और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर उन काफ़िरों को इजाज़त न दी जाएगी और न उनको हक़ तआला के राज़ी करने की फ़रमाइश की जाएगी।⁴ (84) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब को देखेंगे तो वह अज़ाब न उनसे कुछ हल्का किया जाएगा और न वे कुछ मोहलत दिए जाएँगे। (85) और जब वे मुशिरक लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे परवर्दिगार! वे हमारे शरीक यही हैं कि आपको छोड़कर हम इनको पूजा करते थे। सो वे उनकी तरफ़ बात को मुतवज्जह करेंगे कि तुम झूठे हो। ▲ (86) और ये लोग उस दिन अल्लाह के सामने इताअत की बातें करने लगेंगे और जो कुछ बोहत्तान बाज़ियाँ करते थे वे सब गुम हो जाएँगी। (87) जो लोग कुफ़्र करते थे और अल्लाह की राह से रोकते थे उनके लिए हम एक सज़ा पर दूसरी सज़ा उनके फ़साद की वजह से बढ़ा देंगे। (88) और जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह जो उन्हीं में का होगा, उनके मुकाबले में खड़ा करेंगे,⁵ और उन लोगों के मुकाबले में आपको गवाह बनाकर लाएँगे। और हमने आप पर कुरआन उतारा है कि (दीन की) तमाम बातों का बयान करने वाला है, और मुसलमानों के वास्ते बड़ी हिदायत और बड़ी रहमत और खुशख़बरी सुनाने वाला है। (89) ♦

1. यानी गुफा वगैरह जिसमें गर्मी, सर्दी, बारिश और तकलीफ़ देने वाले दुश्मन चाहे वह आदमी हो या जानवर, उन सबसे महफूज़ रह सकते हैं।
2. मुराद इससे ज़िरहें (यानी लोहे का कुर्ता जो लड़ाई में पहनते हैं) हैं।
3. कि जो बर्ताव एहसान करने वाले और नेमत देने वाले के साथ चाहिए था यानी इबादत, वह दूसरे के साथ करते हैं।
4. यानी उनसे यूँ न कहा जाएगा कि तुम तौबा या कोई अमल करके अल्लाह को खुश कर लो, वजह इसकी ज़ाहिर है कि आख़िरत दारुल जज़ा (यानी बदला मिलने की जगह) है, दारुल अमल (यानी अमल करने की जगह) नहीं।
5. मुराद उस उम्मत का नबी है और उन्हीं में का होना आ़ाम है चाहे नसब के एतिबार से उन्हीं में से हो या उनके साथ रहने में शरीक हो।

अनिल्-फहशा-इ वल्मुन्कारि वल्बगिय यअिजुकुम् लअल्लकुम् तजक्करुन (90) व औफू
बि-अहिदल्लाहि इजा आहतुम् व ला तन्कुजुल्-ऐमा-न बअ-द तौकीदिहा व कद्
जअल्लुमुल्ला-ह अलैकुम् कफीलन्, इन्नल्ला-ह यअल्लुमा तफअलून (91) व ला तकून्
कल्लती न-कजत् गज़लहा मिम्-बअदि कुव्वतिन् अन्कासन्, तत्तखिज़ू-न ऐमानकुम्
द-खलम्-बैनकुम् अन् तकू-न उम्मतुन्

हि-य अर्बा मिन् उम्मतिन्, इन्नमा
यब्लूकुमुल्लाहु बिही, व लयुबय्यिनन्-न
लकुम् यौमल्-कियामति मा कुन्तुम् फीहि
तख्तलिफून (92) व लौ शा-अल्लाहु
ल-ज-अ-लकुम् उम्मतव्-वाहि-दतव्-व
लाकिंय्-युजिल्लु मय्यशा-उ व यहदी
मय्यशा-उ, व लतुस्अलुन्-न अम्मा
कुन्तुम् तअमलून (93) व ला तत्तखिज़ू
ऐमानकुम् द-खलम् बैनकुम् फ-तजिल्-ल
क-दमुम्-बअ-द सुबूतिहा व
तजूकुस्सू-अ बिमा सदत्तुम् अन्
सबीलिल्लाहि व लकुम् अजाबुन् अजीम
(94) व ला तशतरु बि-अहिदल्लाहि
स-मनन् कलीलन्, इन्नमा अिन्दल्लाहि

हु-व खैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअलमून (95) मा अिन्दकुम् यन्फदु व मा अिन्दल्लाहि
बाकिन्, व ल-नज्जियन्नल्लजी-न स-बरु अजरहुम् बि-अह्सनि मा कानू यअमलून (96)
मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् ज-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअमिनुन् फ-लनुहिय-यन्नहू
हयातन् तय्यि-बतन् व लनज्जियन्नहुम् अजरहुम् बिअह्सनि मा कानू यअमलून (97)

وَيَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ۖ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَعْمَلُونَ ۖ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَقَضَتْ غُرْلَهُمَا
مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَارًا تَتَخَذُونَ آيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ
تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَى مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَلِيُبَيِّنَ
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُخَلِّقُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ وَلَنَتَشَاكَلَنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ وَلَا تَتَّخِذُوا
آيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَرَاكَ فَمَا بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذَوُّوا
الشُّعُوبَ بِمَا صَدَّقْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ
وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ
خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ مَا عِنْدَكُمْ يَنْقُذُ وَمَا
عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْفَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنَسْجِيَنَّهُ حَيَوةً طَيِّبَةً ۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا

مَنْ

बेशक अल्लाह तआला एतिदाल और एहसान और अहले कराबत “यानी रिश्तेदारों और करीबी ताल्लुक वालों” को देने का हुक्म फरमाते हैं, और खुली बुराई और मुतलक बुराई और जुल्म करने से मना फरमाते हैं। अल्लाह तआला तुमको इसलिए नसीहत फरमाते हैं कि तुम नसीहत कबूल करो।¹ (90) और तुम अल्लाह के अहद को पूरा करो² जबकि तुम उसको अपने जिम्मे कर लो, और कस्मों को उनके मज़बूत करने के बाद मत तोड़ो, और तुम अल्लाह तआला को गवाह भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह तआला को मालूम है जो कुछ तुम करते हो। (91) और तुम उस औरत के जैसे मत बनो जिसने अपना सूत कातने के बाद बोटी-बोटी करके नोच डाला, कि तुम अपनी कस्मों को आपस में फसाद डालने का ज़रिया बनाने लगे,³ महज़ इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए, बस इससे अल्लाह तआला तुम्हारी आजमाइश करता है।⁴ और जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे कियामत के दिन उन सबको तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर देगा। (92) और अगर अल्लाह को मन्ज़ूर होता तो तुम सबको एक ही तरीके का बना देते, लेकिन जिसको चाहते हैं बेराह कर देते हैं और जिसको चाहते हैं राह पर डाल देते हैं।⁵ और तुमसे तुम्हारे आमाल की ज़रूर पूछताछ और सवाल होगा। (93) और तुम अपनी कस्मों को आपस में फसाद डालने का ज़रिया मत बनाओ⁶ कि (कभी किसी और का) क़दम जमने के बाद न फिसल जाए। फिर तुमको इस सबब से कि तुम राहे खुदा से रुकावट हुए, तकलीफ़ भुगतना पड़े, और तुमको बड़ा अज़ाब होगा। (94) और तुम लोग अल्लाह के अहद के बदले में थोड़ा-सा फ़ायदा मत हासिल करो, बस अल्लाह के पास की जो चीज़ है वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुम समझना चाहो। (95) और जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह हमेशा रहेगा। और जो लोग साबित क़दम हैं हम उनके अच्छे कामों के बदले उनका अज़्र उनको ज़रूर देंगे। (96) जो शख्स कोई नेक काम करेगा चाहे वह मर्द हो या औरत हो, शर्त यह है कि ईमान वाला हो,⁷ तो हम उस शख्स को मज़ेदार ज़िन्दगी देंगे,⁸ और उनके अच्छे कामों के बदले में उनका अज़्र देंगे। (97)

1. जिन चीज़ों का हुक्म है उनमें एतिदाल कुव्वते इल्मिया व अमलिया को आम है। इसमें सारे अक़ायद व ज़ाहिरी व बातिनी आमाल गरज़ तमाम शरई अहक़ाम दाख़िल हो गए। फिर उनमें से एहसान इस वजह से ज़िक्र के साथ ख़ास किया गया कि उसका नफ़ा दूसरे तक पहुँचता है। फिर एहसान में से रिश्तेदारों और करीबी ताल्लुक वालों के साथ एहसान और ज़्यादा फज़ीलत व अहमियत रखता है, इसलिए उसके बाद इसको लाए। इसी तरह मना की हुई चीज़ों में बुराई आम है, शरीअत के ख़िलाफ़ तमाम उमूर को। फिर उसमें खुली बुराई को उसके ज़्यादा बुरा और ख़राब होने की वजह से मख़सूस तौर पर ज़िक्र फरमाया, और उसके ज़्यादा शदीद होने की वजह से मुक़द्दम फरमाया। इसी तरह उन मना किए गए उमूर में से जुल्म करने को उसका नुक़सान दूसरे तक पहुँचने की वजह से मख़सूस तौर पर ज़िक्र किया गया। पस इस तरह से इसमें तमाम अच्छे और बुरे उमूर दाख़िल हो गए।

2. ऊपर ‘यअ्मुरु बिल्अदिल’ में तमाम जायज़ उमूर का हुक्म था अब उनमें से एक ख़ास अमूर यानी वायदे के पूरा करने का निहायत पाबन्दी से हुक्म है। और इसके ख़ास करने की वजह अपने आप में इसके अहम होने के साथ-साथ शायद यह भी हो कि शुरू इस्लाम में अहद के पूरा करने और उसके तोड़ने का इस्लाम पर एक ख़ास असर था कि इस्लाम पर बाकी रहना यह भी अहद पूरा करने की एक किस्म थी। और सुलह व जंग में एतिबार का मदार इसी पर था, साथ ही इससे इस्लाम लाने वालों को अपने निजी और अ़वामी हुक्क के बारे में पूरा इत्मीनान होता था जो इस्लाम की तरक्की और कुव्वत का सबब था। इसी तरह अहद तोड़ने में इसके उलट ख़राबियाँ सामने आती थीं जिसका नुक़सान इस्लाम को पहुँचता था, इस वजह से यह मज़मून अहम (शेष तफ़सीर पृष्ठ 504 पर)

फ-इजा करअत्तल्-कुरआ-न फस्तअिज् बिल्लाहि मिनश्शैतानिरर्जीम (98) इन्नहू लै-स लहू सुल्लतानुन् अलल्लजी-न आमनू व अला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (99) इन्नमा सुल्लतानुहू अलल्लजी-न य-तवल्लौनहू वल्लजी-न हुम् बिही मुशिरकून (100) ♦

व इजा बद्दल्ला आ-यतम् मका-न आयतिव्-वल्लाहु अअलमु बिमा युनिज्जलु कालू इन्नमा अन्-त मुफ्तरिन्, बल् अक्सरुहुम् ला यअलमून (101) कुल् नज्ज-लहू रुहुल्-कुदुसि मिररब्बि-क बिल्हक्कि लियुसब्बितल्लजी-न आमनू व हुदव्-व बुशरा लिल्-मुस्लिमीन (102) व ल-कद् नअलमु अन्नहुम् यकूलू-न इन्नमा युअल्लिमुहू ब-शरुन्, लिसानुल्लजी युल्हिदू-न इलैहि अअ-जमियुव्-व हाजा लिसानुन् अ-रबियुम् मुबीन (103)

इन्नल्लजी-न ला युअमिनू-न बिआया-तिल्लाहि ला यहदीहिमुल्लाहु व लहुम् अजाबुन् अलीम (104) इन्नमा यफ्तरिल्-कजिबल्लजी-न ला युअमिनू-न बिआयातिल्लाहि व उलाइ-क हुमुल्-काजिबून (105) मन् क-फ-र बिल्लाहि

मिम्-बअदि ईमानिही इल्ला मन् उकिर-ह व कल्बुहू मुत्मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्-मन् श-र-ह बिल्कुफिर सद्रन् फ-अलैहिम् ग-जबुम्-मिनल्लाहि व लहुम् अजाबुन् अजीम (106) जालि-क बिअन्नहुमुस्त-हब्बुल्-हयातदुदुन्या अलल्-आखिरति व अन्नल्ला-ह ला यह्दिल् कौमल्-काफिरीन (107) उलाइ-कल्लजी-न त-बअल्लाहु अला कुलूबिहिम् व सम्मिअहिम् व

يَعْمَلُونَ ۚ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ
الرَّجِيمِ ۚ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۚ إِنَّمَا سُلْطَانُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَ وَالَّذِينَ
هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ۚ وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا يَنْزِلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ
قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ
آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ أَنَّكُمْ
يَقُولُونَ إِنَّمَا يَعْلَمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ
أَتَجْعَلِي وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُبِينٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمْ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ إِنَّمَا
يَقْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْكَافِرُونَ ۚ مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ
أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ
صَدْرًا فَاعْلَمْتُمْ غَضَبَ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۚ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى

तो जब आप कुरआन पढ़ना चाहें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँग लिया करें।¹ (98) यकीनन उसका काबू उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं² और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (99) बस उसका काबू तो सिर्फ उन्हीं लोगों पर चलता है जो उससे ताल्लुक रखते हैं, और उन लोगों पर जो उसके (यानी अल्लाह के) साथ शिर्क करते हैं। (100) ❖

और जब हम किसी आयत को दूसरी आयत की जगह बदलते हैं,³ और हालाँकि अल्लाह तआला जो हुक्म भेजता है उसको वही खूब जानता है, तो ये लोग कहते हैं कि आप घड़ने वाले हैं, बल्कि उन्हीं में अक्सर लोग जाहिल हैं। (101) आप फरमा दीजिए कि उसको रूहुल-कुदुस⁴ आपके रब की तरफ से हिक्मत के मुवाफिक लाए हैं,⁵ ताकि ईमान वालों को साबित कदम रखे और मुसलमानों के लिए हिदायत और खुशखबरी हो जाए।⁶ (102) और हमको मालूम है कि ये लोग यह भी कहते हैं कि उनको तो आदमी सिखला जाता है, जिस शख्स की तरफ उसकी निस्वत करते हैं उसकी ज़बान तो अज़मी “यानी गैर-अरबी” है, और यह कुरआन तो साफ़ अरबी है।⁷ (103) जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते उनको अल्लाह तआला कभी राह पर न लाएँगे, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी। (104) पस झूठ घड़ने वाले तो यही लोग हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते, और ये लोग हैं पूरे झूठे। (105) जो शख्स ईमान लाने के बाद अल्लाह के साथ कुफ़ करे, मगर जिस शख्स पर ज़बरदस्ती की जाए, शर्त यह है कि उसका दिल ईमान पर मुत्मइन हो, लेकिन हाँ जो जी खोलकर कुफ़ करे तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उनको बड़ी सज़ा होगी। (106) यह इस सबब से होगा कि उन्होंने दुनियावी ज़िन्दगी को आखिरत के मुकाबले में अज़ीज़ रखा, और इस सबब से होगा कि अल्लाह ऐसे काफ़िरों को हिदायत नहीं किया करता। (107) ये

(पृष्ठ 502 का शेष) और पाबन्दी के काबिल हुआ।

3. क्योंकि कसम और अहद तोड़ने से जो लोग मुवाफिक होते हैं उनको बेएतिबारी और मुखालिफ़ों को उठ खड़े होने का मौका मिलता है, और यह फ़साद की जड़ है।

4. कि देखें अहद पूरा करते हो या झुकता पल्ला देखकर उधर ढुल जाते हो।

5. चुनौचे हिदायत में से अहद का पूरा करना और गुमराही में से अहद को तोड़ना भी है।

6. यानी कस्मों और अहदों को मत तोड़ो।

7. क्योंकि काफ़िर के नेक आमाल मकबूल नहीं।

8. ‘हयाते तथ्यिबा’ यानी मज्जेदार ज़िन्दगी से यह मुराद नहीं कि उसको फ़िक्र या बीमारी कभी न होगी, बल्कि मतलब यह है कि इताअत की बरकत से उसके दिल में ऐसा नूर होगा जिससे वह हर हाल में शाकिर व साबिर और राज़ी रहेगा। और असल राहत व आराम और सुकून यही रिज़ा है।

1. यानी दिल से खुदा तआला पर नज़र रखना वाजिब है कि पनाह माँगने की असली हकीकत यही है। और पढ़ने में ज़बान से भी कह लेना मसनून है।

2. यानी उसका वस्वसा उनपर असरदार नहीं होता।

3. यानी एक आयत को लफ़्ज़ या मायनों के एतिबार से मन्सूख़ ‘निरस्त’ करके उसकी जगह दूसरा हुक्म भेज देते हैं।

4. यानी जिबराईल अलैहिस्सलाम।

5. पस यह अल्लाह का कलाम है और अहकाम में तब्दीली हिक्मत की वजह से है।

6. इस सबब के बढ़ाने से किनाया हो गया कि ऐसी फ़ायदेमन्द चीज़ से यह मुखालिफ़ीन फ़ायदा नहीं उठाते।

7. मुराद इससे एक गैर-अरब व रूमी ईसाई गुलाम या लुहार है, जिसका नाम बलआम या मकीस था। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें जी लगाकर सुनता तो हुज़ूर कभी उसके पास जा बैठते, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 506 पर)

अब्सारिहिम् व उलाइ-क हुमुल्फिलून (108) ला ज-र-म अन्नहुम् फिल्आखिरति हुमुल्-
खासिरून (109) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लजी-न हाजरु मिम्-बअदि मा फुतिनू सुम्-म
जाहदू व स-बरु इन्-न रब्ब-क मिम्-बअदिहा ल-गफूररहीम (110) ❖

यौ-म तअती कुल्लु नफिसन् तुजादिलु अन् नफिसहा व तुवप्फा कुल्लु नफिसम्-मा

अमिलत् व हुम् ला युज्लमून (111) व

ज-रबल्लाहु म-सलन् कर्-यतन् कानत्

आमि-नतम्- मुत्तमइन्नतय्-यअतीहा

रिज्कुहा र-गदम्-मिन् कुल्लि मकानिन्

फ-क-फ रत् बिअन्नु मिल्लाहि

फ-अजा-कहल्लाहु लिबासल्-जूअि

वल्बौफि बिमा कानू यस्नअून (112)

व ल-कद् जाअहुम् रसूलुम्-मिन्हुम्

फ-कज्जबूहु फ-अ-ख-जहुमुल्-अजाबु

व हुम् जालिमून (113) फकुलू मिम्मा

र-ज-ककुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबव्-

वश्कुरु निअ-मतल्लाहि इन् कुन्तुम्

इय्याहु तअबुदून (114) इन्नमा हर-म

अलैकुमुल्-मैत-त वद्द-म व लहम्-ल्-

खिन्जीरि व मा उहिल्-ल लिगैरिल्लाहि

बिही फ-मनिज्जुर्-र गै-र बागिंव्-व ला आदिन् फ-इन्नल्ला-ह गफूररहीम (115) व ला

तकूलू लिमा तसिफु अल्लि-नतुकुमुल्-कजि-ब हाजा हलालुव्-व हाजा हरामुल्-लितफ्तरु

अलल्लाहिल्-कजि-ब, इन्नल्लजी-न यफ्तरु-न अलल्लाहिल्-कजि-ब ला युफिलहून (116)

मताअुन् कलीलुव्-व लहुम् अजाबुन् अलीम (117) व अलल्लजी-न हादू हरमना मा

رَبِّهَا ٢٥٣ النحل

قُلُوبِهِمْ وَسَمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿٢٥٣﴾
لَا جَزْمَ لَكُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَيْرُونَ ﴿٢٥٤﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ
هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ
مِنْ بَعْدِهَا لَعَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٥٥﴾ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ بِجَدُولٍ
عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥٦﴾
وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا
رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا
اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٢٥٧﴾ وَلَقَدْ
جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ
ظَالِمُونَ ﴿٢٥٨﴾ فَكَلَّمَ امْبَارِئِيلُ اللَّهَ حُلُلًا طَيِّبًا ۖ أَشَدُّ وَانْعَمْتَ
اللَّهُ إِنَّ كُنْتُمْ إِذًا تَعْبُدُونَ ﴿٢٥٩﴾ إِنَّمَا حَزَمَ عَلَيْكُمُ الْمِيثَاقَ
الدَّمَ وَلَحْمَ الْخَيْزِرِ وَمَا أَهْلُ الْغَيْرِ اللَّهُ بِهِ مِنْ أَضْرَعٍ
بَاطِلٌ وَلَا عَادِلٌ فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ
الْأَيْدِي مِنَ الْكُذْبِ هَذَا حُلٌّ ۚ وَهَذَا حَرَامٌ لِمَنْ يَتَّقُوا عَلَى اللَّهِ
الْكُذْبِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذْبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٢٦١﴾
مَتَاءٌ قَلِيلٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٦٢﴾ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا

مَذَك

वे लोग हैं कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर और कानों पर और आँखों पर मोहर लगा दी है, और ये लोग बिलकुल गाफिल हैं। (108) लाज़िमी बात है कि आखिरत में ये लोग बिलकुल घाटे में रहेंगे। (109) फिर बेशक आपका रब ऐसे लोगों के लिए कि जिन्होंने (कुफ़ में) मुब्तला होने के बाद (ईमान लाकर) हिजरत की, फिर जिहाद किया और कायम रहे, तो आपका रब इन (आमाल) के बाद बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है।¹ (110) ❖

जिस दिन हर शख्स अपनी ही तरफ़दारी में गुफ्तगू करेगा,² और हर शख्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा, और उनपर जुल्म न किया जाएगा।³ (111) और अल्लाह तआला एक बस्ती वालों की (अजीब) हालत बयान फ़रमाते हैं कि वे अमन व इत्मीनान में थे। उनके खाने-पीने की चीज़ें बड़ी फ़रागत से हर (चार) तरफ़ से उनके पास पहुँचा करती थीं। सो उन्होंने खुदा की नेमतों की बेकद्री की।⁴ उसपर अल्लाह ने उनको इन हरकतों के सबब (एक घेरने वाले) कहत और ख़ौफ़ का मज़ा चखा दिया।⁵ (112) और उनके पास उन्हीं में का एक रसूल भी आया। सो उसको उन्होंने झूठा बतलाया। तब उनको अज़ाब ने आन पकड़ा, जबकि वे बिलकुल ही जुल्म पर कमर बाँधने लगे। (113) सो जो चीज़ें अल्लाह तआला ने तुमको हलाल और पाक दी हैं उनको खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो। (114) तुमपर तो सिर्फ़ मुर्दार को हराम किया है, और खून को, और सुअर के गोश्त को, और जिस चीज़ को अल्लाह के अलावा किसी और के लिए नामज़द कर दिया गया हो। फिर जो शख्स बिलकुल बेकरार हो जाए, शर्त यह कि लज़ज़त का तालिब न हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो अल्लाह बख़्श देने वाला, मेहरबानी करने वाला है।⁶ (115) और जिन चीज़ों के बारे में तुम्हारा महज़ झूठा ज़बानी दावा है, उनके बारे में यूँ मत कह दिया करो कि (फलानी चीज़) हलाल है और यह (फलानी चीज़) हराम है, (जिसका हासिल यह होगा) कि अल्लाह पर झूठी तोहमत लगा दो (गे), बिना शुब्हा जो लोग अल्लाह पर झूठ तोहमत लगाते हैं वे फ़लाह न पाएँगे। (116) (यह) कुछ दिन का ऐश है, और उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। (117) और यहूदियों

(पृष्ठ 504 का शेष) और वह इन्ज़ील वग़ैरह कुछ जानता था तो काफ़िरों ने यह एक बात निकाली कि हुज़ूर को यह सिखला देता है। अल्लाह तआला जवाब देते हैं कि कुरआन मजीद तो लफ़्ज़ व मायने के मजमूए का नाम है। सो अगर इसके ऊँचे मायनों की तुमको तमीज़ नहीं तो अल्फ़ाज़ की ग़ैर-मामूली बलागत को तो समझ सकते हो। पस अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि मज़ामीन वह शख्स सिखला देता है तो यह तो सोचो कि ये अल्फ़ाज़ कहाँ से आ गए।

1. यानी ईमान और नेक आमाल की बरकत से उनके सब पिछले गुनाह कुफ़ वग़ैरह माफ़ हो जाएँगे और अल्लाह की रहमत से उनको जन्नत और उसके बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे।
2. और इससे शफ़ाअत के न होने का शुब्हा न हो, क्योंकि वह अपनी राय से न होगी बल्कि इजाज़त से होगी। पस कहना चाहिए कि वह शफ़ाअत करने वाले की तरफ़ मन्सूब ही नहीं, और यहाँ उस गुफ्तगू का ज़िक्र है जो अपनी राय से हो।
3. यानी नेकी के बदले में कमी न होगी अगरचे ज़्यादती हो जाए। और बुराई के बदले में ज़्यादती न होगी अगरचे कमी हो जाए।
4. यानी खुदा के साथ कुफ़ किया।
5. मक्का शहर शान्तीपूर्ण था हालाँकि उसके आस-पास के लोग मारे और लूट लिए जाते थे। मक्के में अनाज भी सहूलत से पहुँचता रहता था, लेकिन जब मक्का वाले अपने रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान न लाए तो हक़ तआला ने उनकी ये दोनों अच्छी हालतें बदल दी और उनपर सात साल तक कहत (अकाल) का अज़ाब मुसल्लत रखा जिससे उनकी हालत बहुत ख़राब हो गई, और इसपर ज़्यादती यह कि वे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ख़ौफ़ से अमन को भी भूल गए।
6. चूँकि अरब वाले इसमाईल अलैहिस्सलाम की मिल्लत की पैरवी करने वाले थे इसलिए (शेष तफ़सीर पृष्ठ 508 पर)

कसस्ना अलै-क मिन् कब्बु व मा जलम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फु-सहुम् यजिलमून (118)

सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लजी-न अमिलुस्सू-अ बि-जहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्-बअदि जालि-क व अस्लहू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअदिहा ल-गफूररहीम (119) ♦

इन्-न इब्राही-म का-न उम्म-तन् कानितल्-लिल्लाहि हनीफन्, व लम् यकु मिनल्-मुशिरकीन (120) शाकिरल्-

लिअन्अुमिही, इज्ताबाहु व हदाहु इला सिरातिम्-मुस्तकीम (121) व आतैनाहु

फिद्दुन्या ह-स-नतन्, व इन्नहू फिल्-आखिरति लमिनस्-सालिहीन (122)

सुम्-म औहैना इलै-क अनित्तबिअ मिल्ल-त इब्राही-म हनीफन्, व मा का-न मिनल्-मुशिरकीन (123) इन्नमा

जुअिलस्सब्तु अलल्लजीनख्त-लफू फीहि, व इन्-न रब्ब-क ल-यहकुमु बैनहुम् यौमल्-कियामति फीमा कानू फीहि यख्तलिफून (124) उद्अु इला सबीलि

रब्बि-क बिल्हिकमति वल्मौअि-जतिल् ह-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लती हि-य अह्सनु, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिमन् जल्-ल अन्-सबीलिही व हु-व

अअ्लमु बिल्मुह्तदीन (125) व इन् आकब्तुम् फआकिबू बिमिस्लि मा अूकिब्तुम् बिही, व ल-इन् सबरतुम् लहु-व खैरुल्-लिस्साबिरीन (126) वस्बिर् व मा सबर-क इल्ला बिल्लाहि व ला तहज़न् अलैहिम् व ला तकु फी जैकिम्-मिम्मा यम्कुरुन (127) इन्नल्ला-ह मअल्लजीनत्तकौ वल्लजी-न हुम् मुद्सिनून (128) ♦

حَزَمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ
كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْ
بَیْهَا لَهٗ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ
بَعْدِ مَا لَعَنُوا رَٰحِمٌۭ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ
حَنِيفًا ۖ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ شَاكِرًا لِأَنْعُمِهِ إِجْتَبَاهُ وَجِئْنَا
هَٰذِهِ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَإِنِّي فِي الْأَنْبِيََاءِ حَسَنَةٌ ۖ وَاللَّهُ
فِي الْآخِرَةِ لَمَنِ الصَّٰلِحِينَ ۝ ثُمَّ أَوحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِثْمًا جَعَلَ
السَّبْءُ عَلَى الَّذِينَ اتَّخَفُوا فِيهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَكْمُلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ أَدْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ
رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ
أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِينَ ۝ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ
وَلَكِنْ صَدَرْتُ لَهُمْ ذِكْرًا لِلظَّٰلِمِينَ ۝ وَأَصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا
بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَلٰٓئِلِ مَا يَمْكُرُونَ ۝
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ۝

مَرْكَز

पर हमने वे चीजें हराम कर दी थीं जिनका बयान हम इससे पहले आपसे कर चुके हैं और हमने उनपर कोई ज़्यादाती नहीं की, लेकिन वे खुद ही अपने ऊपर ज़्यादाती किया करते थे। (118) फिर आपका रब ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुरा काम कर लिया, फिर उसके बाद तौबा कर ली और अपने आमाल दुरुस्त कर लिए, तो आपका रब उसके बाद बड़ी मफ़िरत करने वाला, बड़ी रहमत करने वाला है।¹ (119) ♦

बेशक इब्राहीम बड़े मुक्तदा “यानी पेशवा और रहनुमा” थे,² अल्लाह तआला के फ़रमाँबर्दार थे, बिलकुल एक तरफ़ के हो रहे थे, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। (120) यानी अल्लाह की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह तआला ने उनको चुन लिया था और उनको सीधे रास्ते पर डाल दिया था। (121). और हमने उनको दुनिया में भी खूबियाँ दी थीं और वे आख़िरत में भी अच्छे लोगों में होंगे।³ (122) फिर हमने आपके पास वह्य भेजी कि आप इब्राहीम के तरीक़े पर जो कि बिलकुल एक तरफ़ के हो रहे थे चलिए, और वह शिर्क करने वालों में से न थे। (123) बस हफ़्ते की ताज़ीम तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर लाज़िम की गई थी जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ़ किया था,⁴ बेशक आपका रब कियामत के दिन उनमें आपस में फैसला कर देगा जिस बात में ये इख़्तिलाफ़ किया करते थे।⁵ (124) आप अपने रब की राह की तरफ़⁶ इल्म की बातों और अच्छी नसीहतों के ज़रिये से बुलाइए, और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बहस कीजिए।⁷ आपका रब ख़ूब जानता है उस शख्स को भी जो उसके रास्ते से गुम हुआ और वही राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (125) और अगर बदला लेने लगे तो इतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया, और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के हक़ में बहुत ही अच्छी बात है। (126) और आप सब्र कीजिए और आपका सब्र करना खुदा ही की तौफीक़ से है,⁸ और उनपर ग़म न कीजिए। और जो कुछ ये तदबीरें किया करते हैं उससे तंगदिल न होइए। (127) अल्लाह तआला ऐसे लोगों के साथ (होता) है जो परहेज़गार (होते) हैं और जो नेक काम करने वाले (होते) हैं। (128) ♦

(पृष्ठ 506 का शेष)

उनमें बहुत-से इस्लामी तौर-तरीक़े हुज़ूरे पाक को नबी बनाकर भेजे जाने तक मौजूद थे। वे उन तमाम हलाल जानवरों को जिनको हम खाते हैं हलाल समझते और खाते थे और जिनको हम हराम समझते हैं उनको वे भी हराम समझते थे। लेकिन ज़माना गुज़र जाने की वजह से उनमें यह बुरी रस्म भी जारी हो गई थी कि वे उस खून को जो कि जानवर के जिब्ब के वक़्त बहता है, खाते थे और अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह किए हुए जानवरों को भी खाते थे, लेकिन इस्लाम ने इन चीज़ों की मनाही फ़रमा दी और बाकी हालत को बहाल रखा।

1. ऊपर शिर्क व कुफ़्र के उसूल व उससे निकलने वाली चीज़ों यानी तौहीद व रिसालत का इनकार और हराम को हलाल व हलाल को हराम समझने को बातिल और रद्द किया गया है। चूँकि मक्का के मुशिरक जिनसे इन मज़ामीन में अव्वल खिताब है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में थे और अपने को उनके तरीक़े पर बतलाते थे, इसलिए आगे ज़िक्र हुए मज़ामीन को मज़बूत बनाने के लिए ‘का-न उम्म-तन्’ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मज़बूत के लिए रहनुमा और पेशवा होना, जिसका हासिल नुबुव्वत व रिसालत है और ‘लम यकु मिनल मुशिरकीन’ में उनका मुशिरक न होना बयान किया जो कि तौहीद है। और ‘इन्ना जुअिलस्सबु’ में इशारे के तौर पर पाक चीज़ों का उनके यहाँ हराम न होना और ‘कानितन्’ के आ़म होने से ख्वाहिश-परस्ती से हराम का हलाल और हलाल का हराम करना दोनों का न होना, और ‘इज्ताबाहु व हदाहु व आतैनाहु’ में इस तरीक़े की और तरीक़े वाले की फज़ीलत और दरमियान में ‘सुम्-म औहेना इलै-क’ में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस तरीक़े पर होना, मय रिसालत को साबित करने के बयान फ़रमाते हैं, ताकि उनको इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीक़े की मुख़ालफ़त को छोड़ने की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े की मुवाफ़क़त की तरगीब हो जो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीक़े के मुवाफ़िक़ है, जिसके लवाज़िम से ख़ास तौर पर हुज़ूरे पाक के रसूल होने के इनकार से बाज़ आना भी है।

2. यानी एक बड़ी शान वाले नबी और एक बड़ी उम्मत के मुक्तदा (यानी जिनकी पैरवी की जाए)।

3. पस ऐसे मकबूल का जो तरीका होगा वह बिलकुल मकबूल होगा, उसको इख़्तियार करना चाहिए, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 510 पर)

पन्द्रहवाँ पारः सुब्हानल्लजी

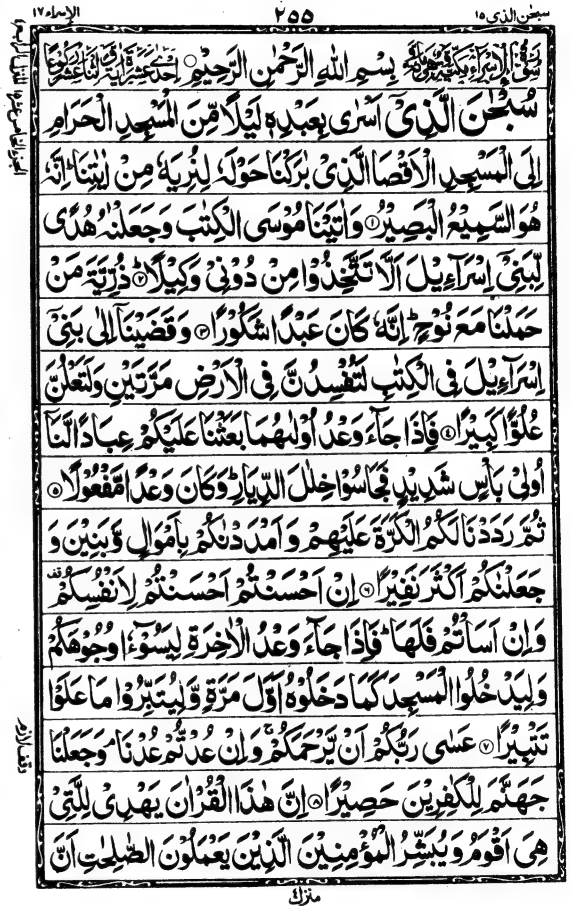
17 सूरतु बनी इस्राईल 50

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 6710 अक्षर, 1582 शब्द,

111 आयतें और 12 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिररह्मानिररहीम

सुब्हानल्लजी असूरा बिअब्दिही
लैलम्-मिनल्-मस्जिदिल्-हरामि इलल्
मस्जिदिल्-अक्सल्लजी बारकना हौलहू
लिनुरियहू मिन् आयातिना इन्नहू
हुवस्समीअल्-बसीर (1) व आतैना
मूसल्-किता-ब व जअल्नाहु हुदल्
लि-बनी इस्राई-ल अल्ला तत्तखिजू मिन्
दूनी वकीला (2) जुर्रिय्य-त मन् हमल्ना
म-अ नूहिन् इन्नहू का-न अब्दन् शकूरा
(3) व कजैना इला बनी इस्राई-ल
फिल्-किताबि लतुफिसदुन्-न फिल्अर्जि
मरतैनि व ल-तअलुन्-न अलुव्वन्
कबीरा (4) फ-इज़ा जा-अ वअदु
ऊलाहुमा बअस्ना अलैकुम् अिबादल्-
लना उली बअसिन् शदीदिन् फजासू
खिलालद्दियारि, व का-न वअदम्-
मफअूला (5) सुम्-म रददना लकुमुल्कर-त अलैहिम् व अम्ददनाकुम् बिअम्वालिं-व बनी-न
व जअल्नाकुम् अक्स-र नफीरा (6) इन् अह्सन्तुम् अह्सन्तुम् लिअन्फुसिकुम्, व इन्
अ-सअतुम् फ-लहा, फ-इज़ा जा-अ वअदुल्-आखिरति लि-यसूऊ वुजू-हकुम् व
लियद्खुलुल्-मस्जि-द कमा द-खलूहु अव्व-ल भरतिं-व लियुतब्बिरु मा अलौ तत्बीरा (7)



पन्द्रहवाँ पार: सुब्हानल्लजी

17 सूर: बनी इसराईल 50

सूर: बनी इसराईल मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 111 आयतें और 12 रुकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

‘वह पाक (जात) है जो अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात के वक्त मस्जिदे हराम (यानी काबा की मस्जिद) से मस्जिदे अक्सा (यानी बैतुल-मक्दिदस) तक, जिसके चारों तरफ़ (यानी मुल्क शाम में) हमने बरकतें² कर रखी हैं, ले गया ताकि हम उनको अपनी (कुदरत के) कुछ अजायबात दिखाएँ,³ बेशक अल्लाह तआला बड़े सुनने वाले, बड़े देखने वाले हैं।’¹ (1) और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब (यानी तौरात) दी, और हमने उसको बनी इसराईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया कि तुम मेरे सिवा (अपना) कोई कारसाज़ मत करार दो। (2) ऐ उन लोगों की नस्ल! जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, वह (नूह अलैहिस्सलाम) बड़े शुक्रगुज़ार बन्दे थे। (3) और हमने बनी इसराईल को किताब में (पेशीनगोई के तौर पर यह बात) बतला दी थी कि तुम (मुल्क शाम की) सरज़मीन में दो बार ख़राबी करोगे,⁵ और बड़ा ज़ोर चलाने लगोगे।⁶ (4) फिर जब उन दो (बार) में से पहली (बार की शरारत की सज़ा) की मीयाद आएगी हम तुमपर अपने ऐसे बन्दों को मुसल्लत करेंगे जो बड़े जंगजू होंगे, फिर वे तुम्हारे घरों में घुस पड़ेंगे (और तुमको क़त्ल करेंगे) और यह एक वायदा है जो ज़रूर होकर रहेगा। (5) फिर (जब तुम तौबा करोगे तो) उनपर तुम्हारा गुल्बा कर देंगे, और माल और बेटों से हम तुम्हारी मदद करेंगे,⁷ और हम तुम्हारी जमाअत को बढ़ा देंगे।⁸ (6) अगर अच्छे काम करते रहोगे तो अपने ही नफ़े के लिए अच्छे काम करोगे, और अगर (फिर) तुम बुरे काम करोगे तो भी अपने ही लिए, फिर जब पिछली (बार) की मीयाद आएगी (हम फिर दूसरों को मुसल्लत करेंगे) ताकि (मार-मारकर) तुम्हारे मुँह बिगाड़ दें, और जिस तरह वे लोग पहली बार मस्जिद (बैतुल मक्दिदस) में घुसे थे वे (पिछले) लोग भी उसमें घुस पड़ें और जिस-जिसपर उनका ज़ोर चले सबको बर्बाद कर डालें। (7) (और अगर आइन्दा इस्लाम का इत्तिबा करोगे तो) अज़ब नहीं कि तुम्हारा रब तुमपर रहम फ़रमाए, और अगर फिर वही (शरारत) करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे,⁹ और हमने जहन्नम को (ऐसे) काफ़िरों का जेलख़ाना बना (ही) रखा है। (8) बेशक यह कुरआन ऐसे (तरीके) की हिदायत करता है जो बिल्कुल सीधा है (यानी इस्लाम) और उन ईमान वालों को जो कि नेक काम करते हैं (यह) खुशख़बरी देता है

(पृष्ठ 508 का शेष) और वह अब मुन्हसिर है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीके में।

4. मुराद इससे यहूद हैं। यानी पाक चीज़ों को हराम करने की यह सूरत अन्य सूरतों की तरह सिर्फ़ यहूद के साथ मख़सूस थी, मिल्लते इब्राहीमी में न थी।

5. ऊपर ‘सुम्-म औहैना.....’ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत को साबित करने से यह मक़सूद था कि जिनपर आपको भेजा गया है वे इस रिसालत के हुक्क अदा करें। आगे खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रिसालत के हुक्क व आदाब के अदा करने की तालीम है, जिनमें से इत्तिकाफ़ में ख़ास तौर पर अदल की रियायत बरतने में आपके पैरोकारों को भी उम्मीन ख़िताब है, क्योंकि बदला लेने में आदतन पैरोकारों का शरीक रहना ज़रूरी है, बख़िलाफ़ तब्लीग़ व दावत और आयत में ज़िक्र हुए बक़िया अहक़ाम के, कि नबी से इम्फ़रादी तौर पर भी इसका सुदूर हो सकता है, इसलिए इसमें ख़ास ख़िताब है।

6. यानी दीन। (पृष्ठ 508 की बक़िया तफ़सीर और पृष्ठ 510 की तफ़सीर पृष्ठ 512, 514 पर)

असा रब्बुकुम् अय्यरह-मकुम् व इन् अल्लुम् अुदना ❖ व जअल्ला जहन्न-म लिल्काफिरी-न हसीरा (8) इन्-न हाजल्कुरआ-न यहदी लिल्लती हि-य अक्वमु व युबशिशरुल्-मुअमिनीनल्लजी-न यअमलूनस्सालिहाति अन्-न लहुम् अजरन् कबीरा (9) व अन्नल्लजी-न ला युअमिन्-न बिल्आखिरति अअतद्ना लहुम् अजाबन् अलीमा (10) ❖

व यद्अुल्-इन्सानु बिश्शरि दुआ-अहू बिल्खैरि, व कानल्-इन्सानु अजूला (11) व जअल्लल्लै-ल वन्नहा-र आयतैनि फ-महौना आयतल्लैलि व जअल्ला आयतन्नहारि मुब्सि-रतल्-लितब्गू फज्जल्-मिर्बिबिकुम् व लितअ-लमू अ-ददस्सिनी-न वल्-हिसा-ब, व कुल्-ल शैइन् फस्सल्लाहु तफसीला (12) व कुल्-ल इन्सानिन् अलज्मना ताइ-रहू फी अनुकिही, व नुखिरजु लहू यौमल्-कियामति किताबय्-यल्काहु मन्शूरा (13) इकरअ किता-ब-क, कफा बिनफिसकल्-यौ-म अलै-क हसीबा (14) मनिह्तादा फ-इन्नमा यह्तदी लिनफिसही व मन् जल्-ल फ-इन्नमा यजिल्लु अलैहा, व

ला तजिरु वाजि-रतुव्-विज्-र उख्रा, व मा कुन्ना मुअज्जिबी-न हत्ता नबअ-स रसूला (15) व इजा अरद्ना अन्नुह्लि-क कर्-यतन् अमरना मुत्-रफीहा फ-फ-सक् फीहा फ-हक्-क अलैहल्कौलु फ-दम्परनाहा तद्मीरा (16) व कम् अह्लक्ना मिनल्कुरुनि मिम्-बअदि नूहिन्, व कफा बिरब्बि-क बिजुनूबि अिबादिही खबीरम्-बसीरा (17) मन् का-न युरीदुल्-आजि-ल-त अज्जल्ला लहू फीहा मा नशा-उ लिमन् नुरीदु सुम्-म जअल्ला

سُبْحَانَ الَّذِي ۝۲۵۶ بَنَى الْمَدِينَةَ ۝ وَآلَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۝ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۝ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتَيْنِ ۝ فَمَنْ كَفَرَ فَأَتَتْهُ حُبُورٌ مِّنَ الْمَاءِ ۝ وَجَعَلْنَا آيَةَ الْفَاكِهَةِ وَالزَّيْتُونِ ۝ وَلِكُلِّ شَيْءٍ فَصْلٌ ۝ فَصَلِّ لَهُ تَفْصِيلًا ۝ وَلِكُلِّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَبْعَهُ ۝ فِي عُنُقِهِ ۝ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا ۝ يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۝ أَقْرَأْ كِتَابَكَ ۝ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝ مَن اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۝ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۝ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۝ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۝ وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً ۝ أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا ۝ فَخَرَقْنَا عَلَيْهَا الْقَوْلَ ۝ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِن بَعْدِ نُوحٍ ۝ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ۝ بَصِيرًا ۝ مَن كَانَ يَرِيدُ الْعَاجِلَةَ ۝ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ ۝ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ ۝ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا ۝ مَذْهُورًا ۝ وَمَن أَرَادَ الْآخِرَةَ ۝ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا ۝ وَهُوَ

مَذْهُورًا

कि उनको बड़ा भारी सवाब मिलेगा। (9) और (यह भी बतलाता है कि) जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके लिए एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रखी है। (10) ❖

और (बाज़ा) इनसान बुराई (यानी अज़ाब) की ऐसी दरखास्त करता है जिस तरह भलाई की दरखास्त, और इनसान (कुछ तबई तौर पर ही) जल्दबाज़ (होता) है। (11) और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया, सो रात की निशानी को तो हमने धुंधला बनाया और दिन की निशानी को हमने रोशन बनाया ताकि (दिन को) तुम अपने रब की रोजी तलाश करो और ताकि बरसों का शुमार और हिसाब मालूम कर लो। और हमने हर चीज़ को खूब तफ़सील के साथ बयान किया है।¹ (12) और हमने हर इनसान का अमल उसके गले का हार करके रखा है,² और (फिर) क़ियामत के दिन हम उसका आमाँलनामा उसके वास्ते निकाल (कर सामने कर) देंगे, जिसको वह खुला हुआ देख लेगा। (13) अपना आमाँलनामा (खुद) पढ़ ले, आज तू खुद अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफी है। (14) जो शख्स (दुनिया में) राह पर चलता है वह अपने नफ़े के लिए राह पर चलता है, और जो शख्स बेराही करता है सो वह भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है। और कोई शख्स किसी (के गुनाह) का बोझ न उठाएगा। और हम (कभी) सज़ा नहीं देते जब तक किसी रसूल को नहीं भेज लेते। (15) और जब हम किसी बस्ती को³ हलाक करना चाहते हैं⁴ तो उसके खुशहाल लोगों को⁵ हुक्म देते हैं, फिर (जब) वे लोग वहाँ शरारत मचाते हैं तो उनपर हुज्जत पूरी हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह और ग़ारत कर डालते हैं। (16) और नूह के बाद हमने बहुत-सी उम्मतों को (कुफ़्र व नाफ़रमानी के सबब) हलाक किया है।⁶ और आपका रब अपने बन्दों के गुनाहों को जानने वाला, देखने वाला काफी है। (17) जो शख्स दुनिया (के नफ़े) की नीयत रखेगा, हम ऐसे शख्स को दुनिया में जितना चाहेंगे (और) जिसके वास्ते चाहेंगे फ़िलहाल ही दे देंगे, फिर हम उसके लिए जहन्नम तज़वीज़ करेंगे, वह उसमें बंदहाल (बारगाह से) निकाला हुआ होकर दाख़िल होगा। (18) और जो शख्स आख़िरत (के सवाब) की नीयत रखेगा

(पिछले पृष्ठ का शेष)

7. बस इतना काम आपका है फिर आप इस तहकीक में न पड़िए कि किसने माना, किसने नहीं माना, क्योंकि यह काम खुदा का है।

8. इसलिए आप तसल्ली रखें कि सब्र में आपको दुश्वारी न होगी।

(तफ़सीर पृष्ठ 510)

1. इस सूर: में ज़्यादा मज़ामीन इनामात पर मुशतमिल हैं। चुनाँचे इसकी शुरूआत मेराज के किस्से से की गई कि वह एक बड़ा मोज़िज़ा है, जिससे बारी तआला की पाकी के साथ रिसालत पर दलालत करती है, और रिसालत को कुव्वत पहुँचाने के लिए मूसा और नूह अलैहिमस्सलाम का ज़िक्र लाया गया है और उसकी तस्दीक़ की तरगीब के लिए तूफ़ाने नूह (अलैहिस्सलाम) से नजात और झुठलाने से डराने के लिए बनी इसराईल की ख़राबी और उनके सज़ा पाने का किस्सा सुनाया गया। फिर कुरआन को जो कि रिसालत की दलील है हादी बताया गया। यह खुलासा है पहले रुकूअ का।

2. दीनी बरकत यह कि वहाँ कसूरत से अम्बिया हज़रात दफ़न हैं। दुनियावी बरकत यह कि वहाँ पेड़ और नहरें और पैदावार की कसूरत है।

3. जिनमें बाज़ तो खुद वहाँ के मुताल्लिक हैं, जैसे इतनी लम्बी दूरी थोड़े से वक़्त में तय करना, सब अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को देखना, उनकी बातें सुनना वगैरह। और बाज़ आगे के मुताल्लिक हैं जैसे आसमानों पर जाना और बहुत-सी अज़ीब चीज़ें देखना।

4. मस्जिदे-हराम से मस्जिदे-अक्सा तक ले जाने को 'इस्रा' कहते हैं और आगे आसमानों पर जाने को 'मेराज' कहते हैं। और कभी दोनों लफ़ज़ मजमूए पर बोल दिए जाते हैं।

5. एक बार मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत की मुख़ालफ़त, दूसरी बार ईसा अलैहिस्सलाम की शरीअत की मुख़ालफ़त।

6. यानी ज़्यादतियाँ करोगे 'लतुप्सिदुन्-न' में अल्लाह तआला के हुक्क और 'ल-तअलुन्-न' में बन्दों के हुक्क के ज़ाया करने की तरफ़ इशारा है।

7. यानी ये चीज़ें तुमको वापस मिलेंगी और उनसे तुमको कुव्वत पहुँचेंगी।

(पृष्ठ 510 की बक़िया और पृष्ठ 512 की तफ़सीर पृष्ठ 514 पर)

लहू जहन्न-म यस्ताहा मज्मूमम्-मद्हूरा (18) व मन् अरादल्-आखिर-त व सआ लहा सअ-यहा व हु-व मुअ्मिनुन् फ-उलाइ-क का-न सअयुहुम् मश्कूरा (19) कुल्लन्-नुमिद्दु हाउला-इ व हाउला-इ मिन् अता-इ रब्बि-क, व मा का-न अता-उ रब्बि-क मद्हूरा (20) उन्जुर कै-फ फज्जल्ना बअ-जहुम् अला बअजिन्, व लल्आखिरतु अक्बरु द-रजातिव्-व अक्बरु तफ्जीला (21) ला तज्अल् मअल्लाहि इलाहन् आ-ख-र फ-तक्अु-द मज्मूमम्-मज्जूला (22) ♦

व कजा रब्बु-क अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु व बिल्-वालिदैनि इत्सानन्, इम्मा यब्लुगन्-न अिन्द-कल्-कि-ब-र अ-हदुहुमा औ किलाहुमा फला तकुल्-लहुमा उफ्फिक्-व ला तन्हरहुमा व कुल्-लहुमा कौलन् करीमा (23) वखिफज् लहुमा जनाहज्जुल्लि मिनररह्मति व कुर्रब्बिरहम्हुमा कमा रब्बयानी सगीरा (24) रब्बुकुम् अअ्लमु बिमा फी नुफूसिकुम् इन् तक्नू सालिही-न फ-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न गफूरा (25) व आति जल्कुर्बा हक्कहू वल्-मिस्की-न वब्नस्सबीलि व ला तुबज्जिर् तब्जीरा (26) इन्नल्-मुबज्जिरी-न कानू इख्वानश्-शयातीनि, व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफूरा (27) व इम्मा तुअ्रिजन्-न अन्हुमुब्तिगा-अ रह्मतिम्-मिर्रब्बि-क तरजूहा फकुल्-लहुम् कौलम्-मैसूरा (28) व ला तज्अल् य-द-क मरलू-लतन् इला अनुकि-क व ला तब्सुत्हा कुल्लल्बस्ति फ-तक्अु-द मलूमम्-मद्हूरा (29) इन्-न रब्ब-क यब्सुतुरिज्-क लिमय्यशा-उ व यक्दिरु, इन्नहू का-न बिअिबादिही खबीरम्-बसीरा (30) ♦

مُؤْمِنٍ فَالْوَيْلُ لَكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝ كَلَّا نُمَدِّ هَؤُلَاءِ
وَهُؤُلَاءِ مِنْ عَطَا رَبِّكَ ۝ وَمَا كَانَ عَطَا رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝
أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۝ وَلِالْآخِرَةِ أَكْبَرُ
دَرَجَاتٍ ۝ وَكَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ۝ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ
مَذْمُومًا مَتَّعِدًا ۝ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدَ إِلَّا إِلَهًا وَ
بِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۝ إِلَهًا بَلَّغْنَا عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ
كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آيٌ وَلَا تُنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا
كَرِيمًا ۝ وَأَخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذِّئْلِ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ
رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۝ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِكُمْ
إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۝ وَأَبِ
ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ ۝ وَالْيَسِيرِينَ ۝ وَالْبَنِينَ ۝ وَلَا تُبْذِرْ بَنَدِيرًا ۝
إِنَّ الْمُبْدِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ۝ وَكَانَ الشَّيْطَانُ
لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝ وَإِنَّا نَعْرِضُ عَنْهُمْ عِتَّةَ رَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكَ
تَرْجُوهُمْ فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَيْسُورًا ۝ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً
إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَحْسُورًا ۝
إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۝ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ

مَزَل

और उसके लिए जैसी कोशिश करना चाहिए वैसी ही कोशिश भी करेगा, शर्त यह है कि वह शख्स मोमिन भी हो,¹ सो ऐसे लोगों की यह कोशिश मकबूल होगी।² (19) आपके परवरदिगार की (इस दुनियावी) अता में से तो हम इनकी भी इम्दाद करते हैं³ और उनकी भी,⁴ और आपके रब की (यह दुनियावी) अता (किसी पर) बन्द नहीं। (20) आप देख लीजिए हमने एक को दूसरे पर किस तरह बरतरी दी है, और अलबत्ता आखिरत दर्जों के एतिबार से भी बहुत बड़ी है और फज़ीलत के एतिबार से भी बहुत बड़ी है। (21) अल्लाह (बरहक) के साथ कोई और माबूद मत तजवीज़ कर (यानी शिर्क मत कर) वरना तू बदहाल बेमददगार होकर बैठ रहेगा। (22) ♦

और तेरे रब ने हुक्म कर दिया है कि सिवाय उसके किसी और की इबादत मत करो, और तुम (अपने) माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करो, अगर तेरे पास उनमें से एक या दोनों के दोनों बुढ़ापे में पहुँच जाएँ तो उनको कभी (हाँ से) हूँ भी मत करना और न उनको झिड़कना, और उनसे खूब अदब से बात करना। (23) और उनके सामने नर्मी से इन्किसारी के साथ झुके रहना, और (यूँ) दुआ करते रहना कि मेरे परवर्दिगार! इन दोनों पर रहमत फरमाइए जैसा कि इन्होंने मुझको बचपन में पाला, परवरिश किया है।⁵ (24) तुम्हारा रब तुम्हारे दिल की बात को खूब जानता है, अगर तुम नेक-बख्त हो तो वह तौबा करने वालों की ख़ता माफ़ कर देता है। (25) और कराबतदार “यानी रिश्तेदार” को उसका (माली व ग़ैर-माली) हक़ देते रहना, और मोहताज और मुसाफ़िर को भी देते रहना, और (माल को) बेमौका मत उड़ाना। (26) (क्योंकि) बेशक बेमौका उड़ाने वाले शैतानों के भाई (बन्द यानी उनके जैसे) हैं,⁶ और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। (27) और अगर अपने परवर्दिगार की तरफ़ से जिस रिज़क के आने की उम्मीद हो, उसके इन्तिज़ार में तुझको उनसे अलग होना पड़े तो उनसे नर्मी की बात कह देना।⁷ (28) और न तो अपना हाथ गर्दन ही से बाँध लेना चाहिए⁸ और न बिलकुल ही खोल देना चाहिए,⁹ वरना इल्ज़ाम लिए हुए ख़ाली हाथ होकर बैठ रहोगे। (29) बेशक तेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रिज़क देता है, और वही तंगी कर देता है।¹⁰ बेशक वह अपने बन्दों को खूब जानता है, देखता है। (30) ♦

(पिछले पृष्ठ का शेष)

8. यानी माल, ओहदे, औलाद और मानने वालों व पैरोकारों सबमें तरक्की होगी।

9. चुनौचे हुज़ूर सल्ल. के ज़माने में उन्होंने आपकी मुख़ालफ़त की, फिर क़त्ल और कैद किए गए और ज़लील हुए।

(तफ़सीर पृष्ठ 512)

1. चाहे ‘लोहे महफूज़’ में। पस कुल्लु शैइन “यानी हर चीज़” आम है। और या कुरआन में इस वक़्त

‘कुल्लु शैइन’ से मुआद ज़रूरी उमूर हैं। पहली सूरत में मतलब यह है कि ‘लोहे महफूज़’ में हर चीज़ का अलग-अलग मुकर्रर वक़्त लिखा है और दूसरी सूरत में यह मतलब कि देखो कुरआन में कैसे मुफ़ीद और हिदायत-भरे मज़ामीन ज़िक्र किए गए हैं जो शुब्हात में तरकीन व तसल्ली का सबब हैं।

2. यानी हर शख्स का अमल उसके साथ लगा हुआ है।

3. जो कुफ़्र व नाफ़रमानी के सबब हिक्मत के तकाज़े से हलाक करने के काबिल हो।

4. तो उसको रसूलों को भेजने से पहले हलाक नहीं करते, बल्कि किसी रसूल को भेजते हैं और इनकार व ज़िद के नतीजे में हलाक करते हैं

5. यानी अमीर और सरदार लोगों को खाकर और अ़वाम को उमूमन ईमान व भलाई का हुक्म भेजते हैं।

6. जैसे आद व समूद और उनके अ़लावा दूसरे। और नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम का हलाक होना तो मशहूर व मारुफ़ ही है।

(तफ़सीर पृष्ठ 514)

1. मतलब यह है कि वह अमल शर्इ कायदों के मुवाफ़िक़ किया हो, क्योंकि आखिरत के लिए वही कोशिश

करनी चाहिए जिसका हुक्म हुआ हो, उन आमाल के उलट जो नफ़सानी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हों क्योंकि वे मकबूल नहीं। गरज़ शरीअत के मुवाफ़िक़ अमल किया हो।

2. गरज़ कोशिश के कबूल होने यानी अमल के कबूल की तीन शर्तें हुईं, (9) नीयत का सही होना (शेष तफ़सीर पृष्ठ 516 पर)

व ला तक्तुलू औलादकुम् खश्य-त इस्लाकिन्, नह्नु नरजुकुहुम् व इय्याकुम्, इन्-न कल्लहुम् का-न खित्तुअन् कबीरा (31) व ला तक्वरबुज्जिना इन्नहू का-न फाहि-शतन्, व सा-अ सबीला (32) व ला तक्तुलून्-नफ्सल्लती हरमल्लाहु इल्ला बिल्हक्कि, व मन् कुति-ल मज्लूमन् फ-कद् जअल्ला लि-वलिय्यिही सुल्लतानन् फला युस्तिफ्-फिल्कल्लि, इन्नहू का-न

मन्सूरा (33) व ला तक्वरबू मालल् यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्बु-ग अशुद्दहू व औफू बिल्अह्दि इन्नल्-अह्-द का-न मस्ऊला (34) व औफुल्कै-ल इजा किल्लुम् व जिन् बिल्-किस्तासिल्-मुस्तकीमि, जालि-क खैरुव्-व अह्सनु तअवीला (35) व ला तक्फु मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन्, इन्नस्सम्-अ वल्ब-स-र वल्फुआ-द कुल्लु उलाइ-क का-न अन्हु मस्ऊला (36) व ला तम्शि फिल्अर्जि म-रहन् इन्न-क लन् तखिरकल्-अर्-ज व लन् तब्बुगल्-जिबा-ल तूला (37) कुल्लु जालि-क का-न सय्यिउहू अिन्-द रब्बि-क मक्रूहा (38) जालि-क मिम्मा

औहा इलै-क रब्बु-क मिनल्-हिक्मति, व ला तजअल् मअल्लाहि इलाहन् आख-र फ-तुल्का फी जहन्न-म मलूमम्-मद्हूरा (39) अ-फअस्फाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-खा-ज मिनल्-मलाइ-कति इनासन्, इन्नकुम् ल-तकूलू-न कौलन् अजीमा (40) ♦

व ल-कद् सरफना फी हाजल्-कुरआनि लि-यज्जक्करू, व मा यजीदुहुम् इल्ला

سُورَةُ الْأَنْعَامِ
الْبَقَرَةُ
خَيْرًا بَصِيرًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةً إِمْلَاقٍ ۚ تَحْسَنُ
رِزْقَهُمْ ۚ وَإِذَا كُنْتُمْ أَقْنَاهُمْ كَانَ خَطَا كَبِيرًا ۚ وَلَا تَقْرَبُوا
الرِّبَا إِنْهَ كَانَ فَاحِشَةً ۚ وَسَاءَ سَبِيلًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا
لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ۚ إِنَّهُ كَانَ مَنصُورًا ۚ
وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالْيَقِينِ ۚ هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ
أَشَدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۚ وَأَوْفُوا
النَّكِيلَ ۚ إِذَا كُنْتُمْ وَرَثَا الْفُتُوحِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَلِكَ خَيْرٌ
وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوا مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّيْفَ
وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۚ وَلَا تَمْشِ
فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ
كُلًّا ۚ كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۚ ذَلِكَ بِمَا
أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا
آخَرَ ۚ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ۚ أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُمُ
بِالْبَنِينَ ۚ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا
عَظِيمًا ۚ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ

और अपनी औलाद को नादारी के अन्देशे से कत्ल मत करो, (क्योंकि) हम उनको भी रिज्क देते हैं और तुमको भी, बेशक उनका कत्ल करना बड़ा भारी गुनाह है।¹ (31) और ज़िना के पास भी मत फटको,² बिला शुब्हा वह बड़ी बेहयाई (की बात) है, और बुरी राह है। (32) और जिस शख्स (के कत्ल) को अल्लाह तआला ने हराम फरमाया है उसको कत्ल मत करो, हाँ मगर हक पर।³ और जो शख्स नाहक कत्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख्तियार दिया है।⁴ सो उसको कत्ल के बारे में (शरीअत की) हद से आगे न बढ़ना चाहिए। वह शख्स तरफदारी के काबिल है। (33) और यतीम के माल के पास न जाओ⁵ मगर ऐसे तरीके से जो कि पसन्दीदा है, यहाँ तक कि वह अपने बालिग होने की उम्र को पहुँच जाए, और (जायज़) अहद को पूरा किया करो,⁶ बेशक (ऐसे) अहद की (क़ियामत में) पूछताछ और बाज़पुर्स होने वाली है। (34) और जब नाप-तौलकर दो तो पूरा नापो और सही तराजू से तौलकर दो। यह (अपने आप में भी) अच्छी बात है और इसका अन्जाम भी अच्छा है। (35) और जिस बात की तुझको तहकीक न हो उसपर अमल दरामद मत किया कर, क्योंकि कान. आँख और दिल हर शख्स से इन सबकी (क़ियामत के दिन) पूछ होगी।⁷ (36) और ज़मीन पर इतराता हुआ मत चल, (क्योंकि) तू न ज़मीन को फाड़ सकता है और न (बदन को तानकर) पहाड़ों की लम्बाई को पहुँच सकता है। (37) ये सारे बुरे काम तेरे रब के नज़दीक बिल्कुल नापसन्द हैं। (38) ये बातें उस हिक्मत में की हैं जो ख़ुदा तआला ने आप पर वद्व के ज़रिये से भेजी हैं, और अल्लाह बरहक के साथ कोई और माबूद तजवीज़ मत करना, वरना तू इल्ज़ाम खाया हुआ और मरदूद होकर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। (39) तो क्या तुम्हारे रब ने तुमको तो बेटों के साथ ख़ास किया है और खुद फ़रिश्तों को (अपनी) बेटियाँ बनाई हैं, बेशक तुम बड़ी (सख़्त) बात कहते हो।⁸ (40) ♦

और हमने इस क़ुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि (उसको) अच्छी तरह से समझ लें, और उनको (इस तौहीद से) नफ़रत ही बढ़ती जाती है। (41) आप फ़रमाइए कि अगर उसके साथ और माबूद भी

(पृष्ठ 514 का शेष) जिसपर 'अरादल् आख़ि-र-त' दलालत कर रहा है। (२) अमल का शरीअत के मुताबिक सही होना जिसपर 'सअयुहा' दलालत कर रहा है। (३) अकीदे का सही होना, जिसपर 'मुअ्मिनुन' दलालत कर रहा है। कबूल होने की शर्तें ये हैं, और इनके बग़ैर मकबूल नहीं।

3. यानी मकबूल लोगों की।

4. यानी ग़ैर-मकबूल लोगों की।

5. 'इहम्मुमा' में जो दुआ के लिए फ़रमाया है, ज़ाहिर में यह हुक्म पसन्दीदा और मुस्तहब होने के लिए है। और बाज़ ने कहा है कि इससे वाजिब होना साबित होता है। इस सूरत में उम्र भर में एक बार दुआ करने से भी वाजिब अदा हो जाएगा और शरई दलीलों से यह दुआ करना ईमान के साथ ख़ास है, यानी माँ-बाप मोमिन हों, अलबत्ता अगर कुफ़ की हालत में ज़िन्दा हों और रहमत की दुआ हिदायत की दुआ के मायने में की जाए तो जायज़ है।

6. बेजा खर्च करने का हासिल यह है कि गुनाह की जगह में खर्च करना, चाहे वह गुनाह अपनी ज़ात के एतिबार से हो जैसे शराब व जुआ और ज़िना, चाहे ग़ैर के साथ हो जैसे मुबाह काम में शोहरत व बड़ाई की नीयत से खर्च करना।

7. यानी दिलजोई के साथ उनसे वायदा कर लेना कि इन्शा-अल्लाह कहीं से आएगा तो देंगे, और दिल दुखाने वाला जवाब मत देना।

8. कि बुख़ल की वजह से बिल्कुल ही हाथ रोक लिया जाए।

9. कि फ़ुज़ूल-खर्ची की जाए।

10. इससे यह मकसूद नहीं कि कोई किसी का ग़म न करे। बल्कि मतलब यह है कि दूसरे के नफ़े के लिए अपने को दीनी नुक़सान पहुँचाना, या ऐसा दुनियावी नुक़सान बर्दाश्त करना जिसका अन्जाम दीनी नुक़सान हो, इससे मना किया गया है।

1. चूँकि जाहिलियत के ज़माने में बाज़ आदमी बेटियों को तंगदस्ती के ख़ौफ़ से मार डालते थे, इसलिए औलाद से मुराद लड़कियाँ होंगी। और औलाद के उन्वान से ताबीर करना ताल्लुक व खुसूसियत ज़ाहिर करने के लिए है कि रहम व शफ़क़त जोश में आए।

2. यानी ऐसी चीज़ों से भी बचो जो उसकी तरफ़ ले जाएँ। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 518 पर)

नुफूरा (41) कुल् लौ का-न म-अहू आलि-हतुन् कमा यकूलू-न इज़ल्-लब्तगौ इला ज़िल्-अर्शि सबीला (42) सुब्हानहू व तअला अम्मा यकूलू-न अलुव्वन् कबीरा (43) तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्सब्अु वल्अरज़ु व मन् फीहिन्-न, व इम्-मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्-ला तफ़कहू-न तस्बी-हहुम्, इन्नहू का-न हलीमन् गफूरा (44) व इज़ा करअतल्-

कुरआ-न जअल्ला बैन-क व बैनल्लजी-न ला युअ्मिन्-न बिल्-आखिरति हिजाबम्-मस्तूरा (45) व जअल्ला अला कुलूबिहिम् अकिन्नतन् अय्यफ़कहूहु व फी आज़ानिहिम् वक्करन्, व इज़ा ज़कर्-त रब्ब-क फिल्कुरआनि वह्दहू वल्लौ अला अद्वारिहिम् नुफूरा (46) नह्नु अअ़लमु बिमा यस्तमिअू-न बिही इज़् यस्तमिअू-न इलै-क व इज़् हुम् नज्वा इज़् यकूलुज्जालिम्-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्तूरा (47) उन्ज़ुर कै-फ ज़-रबू लकल्-अम्सा-ल फ-ज़ल्लू फला यस्ततीअू-न सबीला

◆ (48) व कालू अ-इज़ा कुन्ना अिज़ामं-व रुफ़ातन् अ-इन्ना

लमब्अूसू-न ख़ल्कन् जदीदा (49) कुल् कूनू हिजा-रतन् औ हदीदा (50) औ खल्कम्-मिम्मा यक्बुरु फी सुदूरिकुम् फ-स-यकूलू-न मय्युअीदुना, कुलिल्लजी फ-त-रकुम् अव्व-ल मरतिन् फ-सयुन्निज़ू-न इलै-क रुऊ-सहुम् व यकूलू-न मता हु-व, कुल् असा अय्यकू-न करीबा (51) यौ-म यद्अूकुम् फ-तस्तजीबू-न बिहम्दिही व तजुन्नू-न इल्लबिस्तुम्

سُبْحَانَ الَّذِي ۝۱۵
۲۵۹
بَقَرَةُ ۝۱۷

الْأَنْفُورِ ۝ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذْ الْأَبْغَاؤُ
إِلَى ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا
كَبِيرًا ۝ تَسْبِيحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ
وَلَنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا لَيْسَ بِهِمْ ۝ وَلَكِنْ لَا يَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ
إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ
بَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا ۝ وَجَعَلْنَا
عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۝ وَإِذَا
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوَّا عَلَى أَذْبَانِهِمْ نُفُورًا ۝
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ
يَتَجَوَّيْ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مُنْشُورًا ۝
أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
سَبِيلًا ۝ وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَاءً مَآوَرًا عِزًّا لَنَنْبَغُونَ خَلْقًا
جَدِيدًا ۝ قُلْ كُونُوا جِجَاءً أَوْ حِدِيدًا ۝ أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْتُمُونَ
فِي صُدُورِهِمْ فَيَقُولُونَ مَنْ يَأْتِيَنَا قُلْ الَّذِي فَطَرَكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ قَسِيغُصُونَ إِلَيْكَ رُجُوسُهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ
قُلْ عَلَى أَنْ يَكُونَ قَرِينًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوهُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِ

مِثَال

होते जैसे कि ये लोग कहते हैं तो उस हालत में अर्श वाले तक¹ उन्होंने रास्ता ढूँढ लिया होता।² (42) ये लोग जो कुछ कहते हैं अल्लाह तआला उससे पाक और बहुत ज्यादा बरतर है। (43) (तमाम) सातों आसमान और ज़मीन और उनमें जितने हैं उसकी पाकी बयान कर रहे हैं, और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो कि तारीफ़ के साथ उसकी पाकी (अपनी ज़बान से या अपने हाल से) बयान न करती हो, लेकिन तुम लोग उनके पाकी बयान करने को समझते नहीं हो,³ वह बड़ा हलीम है, बड़ा ग़फूर है। (44) और जब आप कुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दरमियान एक पर्दा आड़ कर देते हैं। (45) और (वह पर्दा यह है कि) हम उनके दिलों पर इससे पर्दा डाल देते हैं कि वे इस (कुरआन के मक़सद) को समझें, और उनके कानों में डाट दे देते हैं,⁴ और जब आप कुरआन में सिर्फ़ अपने रब का ज़िक्र करते हैं तो वे लोग नफ़रत करते हुए पीठ फेरकर चल देते हैं। (46) जिस वक़्त ये लोग आपकी तरफ़ कान लगाते हैं तो हम ख़ूब जानते हैं जिस ग़ुरज़ से ये सुनते हैं,⁵ और जिस वक़्त ये लोग आपस में सरगोशियाँ “यानी चुपके-चुपके बातें” करते हैं, जबकि ये ज़ालिम यूँ कहते हैं कि तुम लोग महज़ ऐसे शख्स का साथ दे रहे हो जिसपर जादू का असर हो गया है। (47) आप देखिए तो ये लोग आपके लिए कैसे-कैसे लक़ब तजवीज़ करते हैं। सो ये लोग गुमराह हो गए, रास्ता नहीं पा सकते।⁶ ♦ (48) और ये लोग कहते हैं कि क्या जब हम (मरने के बाद) हड्डियाँ और चूरा हो जाएँगे, तो क्या हम नए सिरे से पैदा और ज़िन्दा किए जाएँगे। (49) आप (जवाब में) फ़रमा दीजिए कि तुम पत्थर या लोहा (50) या और कोई ऐसी मख़्लूक होकर देख लो जो तुम्हारे ज़ेहन में बहुत ही दूर की चीज़ हो।⁷ इसपर पूछेंगे कि वह कौन है जो हमको दोबारा ज़िन्दा करेगा? आप फ़रमा दीजिए कि वह वह है जिसने तुमको अव्वल बार पैदा किया था। इसपर आपके आगे सर हिला-हिलाकर कहेंगे कि (अच्छा बतलाओ) यह कब होगा? आप फ़रमा दीजिए कि अज़ब नहीं यह करीब ही

(पृष्ठ 516 का शेष) 3. यानी जब क़त्ल के वाजिब या जायज़ होने का कोई शरई सबब पाया जाए तो क़त्ल करना दुरुस्त है, और उस वक़्त वह इस हुक्म में दाख़िल नहीं।

4. वारिस से मुराद वह शख्स है जिसको बदला लेने का हक़ हो, अगर कोई वारिस मौजूद हो तो वह, वरना बादशाह।

5. यानी हमें तसर्फ़ मत करो।

6. अहद में अल्लाह के तमाम अहक़ाम और बन्दों के दरमियान हुए तमाम मुआहदे भी दाख़िल हो गए।

7. इसलिए बेतहकीक़ बात पर यकीन करके उसपर अमल-दरामद मत करो।

8. बड़ी सख़्त बात इसलिए कि एक तो अल्लाह तआला के लिए औलाद करार देना, फिर औलाद भी वह जो कि अपने लिए नाकारा समझी जाए, जिससे अल्लाह तआला की तरफ़ दो कमियों की निस्बत करना लाज़िम आया।

1. यानी हकीकी खुदा तक।

2. यानी मुख़ालफ़त और मुकाबला सामने आता, फिर दुनिया का मौजूदा निज़ाम कैसे बाकी रहता, हालाँकि दुनिया का निज़ाम कायम है। तो मालूम हुआ कि फ़साद व बिगाड़ का सबब यानी कई खुदाओं का होना, मौजूद नहीं।

3. तस्बीह-हाली को इसलिए नहीं समझते कि उसकी हकीक़त इस्तिदलाल है, और वह मौकूफ़ है सोच-विचार पर, और तुम सोच-विचार नहीं करते। और ज़बान की तस्बीह को बाज़ चीज़ों में तो इसलिए कि वह कशफ़ी उमूर से मुताल्लिक़ है और मोमिनों की ज़बानी तस्बीह को इसलिए कि बावजूद सुनने के उसके मायने और उसकी हकीक़त में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते।

4. यानी वह ईर्दा न समझना और समझने का इरादा न करना है, जिससे वे आपकी शाने नुबुव्वत नहीं समझ सकते।

5. यानी उनकी ग़ुरज़ यही एतिराज़ करना और ताना देना है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 520 पर)

इल्ला कलीला (52) ❖

व कुल्-लिअिबादी यकूलुलती हि-य अह्सनु, इन्नशैता-न यन्जगु बैनहुम्, इन्नशैता-न का-न लिलइन्सानि अदुव्वम्-मुबीना (53) रब्बुकुम् अअलमु बिकुम्, इय्यशअ् यरहम्कुम् औ इय्यशअ् युअज्जिब्कुम्, व मा अर्सल्ला-क अलैहिम् वकीला (54) व रब्बु-क अअलमु बिमन्

फिस्समावाति वल्अर्जि, व ल-कद् फज्जल्ना बअजन्नबिय्यी-न अला बअजिन्व-व आतैना दावू-द जबूरा (55) कुलिद्अल्लज्जी-न जअम्तुम् मिन् दूनिही फला यम्मिलकू-न कश्फज्जुरि अन्कुम् व ला तहवीला (56) उलाइ-कल्लज्जी-न यद्अ-न यब्तगू-न इला रब्बिहिमुल्-वसी-ल-त अय्युहुम् अकरबु व यरजू-न रहम-तहू व यखाफू-न अजाबहू, इन्-न अजा-ब रब्बि-क का-न महजूरा (57) व इम्-मिन् करयतिन् इल्ला नहनु मुह्लिकूहा कब्-ल यौमिल्-कियामति औ मुअज्जिबूहा अजाबन् शदीदन्, का-न जालि-क फिल्किताबि मस्तूरा (58) व मा म-न-अना अन्नुर्सि-ल बिल्आयाति

इल्ला अन् कज्ज-ब बिहल्-अव्वलू-न, व आतैना समूदन्ना-क-त मुब्सि-रतन् फ-ज-लमू बिहा, व मा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तख्वीफा (59) व इज् कुल्ला ल-क इन्-न रब्ब-क अहा-त बिन्नासि, व मा जअल्लनरुअयल्लती अरैना-क इल्ला फितुन्-तल्-लिन्नासि वशश-ज-रतल्-मलअून-त फिल्कुरआनि, व नुखव्विफुहुम् फमा यजीदुहुम् इल्ला तुगयानन्

وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِئْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۚ رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۚ إِنَّ يَتْلُو رَبُّكُمْ أَوَّلَ يَتْلُو رَبُّكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَلَقَدْ فَطَنَّا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ ۚ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۚ قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ ۚ مِّنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۚ وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْفِتْمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۚ وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا نُوحًا الْإِنشَادَ مَبْصُورَةً ۚ فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۚ وَلَٰذِ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرَّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَمَنْعُوفُهُمْ ۚ قَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۚ وَلَٰذِ قُلْنَا

مَرْكَ

आ पहुँचा हो। (51) यह उस दिन होगा कि अल्लाह तुमको पुकारेगा और तुम (बिला इख़्तियार) उसकी तारीफ़ करते हुए हुक्म का पालन कर लोगे, और तुम यह ख़्याल करोगे कि तुम बहुत ही कम रहे थे।¹ (52) ♦

और आप मेरे (मुसलमान) बन्दों से कह दीजिए कि ऐसी बात कहा करें जो बेहतर हो,² शैतान (सख़्त-कलामी कराके) लोगों में फ़साद डलवा देता है, वाकई शैतान इनसान का खुला दुश्मन है। (53) तुम सबका हाल तुम्हारा परवर्दिगार ख़ूब जानता है, अगर वह चाहे तुमपर रहमत फ़रमाए या अगर वह चाहे तुमको अज़ाब देने लगे। और हमने आप (तक) को उन (की हिदायत) का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा।³ (54) और आपका परवर्दिगार ख़ूब जानता है उनको जो कि आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं,⁴ और हमने बाज़ नबियों को बाज़ पर फज़ीलत दी है, और हम दाऊद को ज़बूर दे चुके हैं।⁵ (55) आप फ़रमा दीजिए कि जिनको तुम अल्लाह तआला के सिवा (माबूद) करार दे रहे हो, ज़रा उनको पुकारो तो सही। सो (यकीनन) वे न तुमसे तकलीफ़ को दूर करने का इख़्तियार रखते हैं और न (उसके) बदल डालने का। (56) ये लोग जिनको ये (मुशिरक लोग) पुकार रहे हैं, वे खुद ही अपने रब की तरफ़ ज़रिया ढूँढ रहे हैं,⁶ कि उनमें कौन ज़्यादा मुकर्रब “यानी करीबी” (बनता) है। और वे उसकी रहमत के उम्मीदवार हैं और उसके अज़ाब से डरते हैं। (और) वाकई आपके रब का अज़ाब है भी डरने के काबिल।⁷ (57) और (काफ़िरों की) ऐसी कोई बस्ती नहीं जिसको हम क़ियामत से पहले हलाक न करेंगे, या (क़ियामत के दिन) उसको सख़्त अज़ाब न देंगे।⁸ यह (बात) किताब (यानी लौहे महफूज़) में लिखी हुई है। (58) और हमको ख़ास (फ़रमाइशी) मौजिज़ों के भेजने से यही बात रोक हुई कि पहले लोग उनको झुटला चुके हैं,⁹ और हमने कौमे समूद को ऊँटनी दी थी जो कि बसीरत “यानी समझ और दानाई” का ज़रिया थी, सो उन लोगों ने उसके साथ जुल्म किया, और हम ऐसे मौजिज़ों को साफ़ डराने के लिए भेजा करते हैं। (59) और (आप वह वक़्त याद कर लीजिए) जबकि हमने आपसे कहा था कि आपका रब अपने इल्म से तमाम लोगों को घेरे हुए है, और हमने जो तमाशा आपको (जागने की हालत में मेराज के अन्दर) दिखलाया था, और जिस दरख़्त की कुरआन में मज़म्मत “यानी निंदा” की गई है, हमने तो उन (दोनों चीज़ों) को उन लोगों के लिए गुमराही का सबब कर दिया, और हम उनको डराते रहते हैं

(पृष्ठ 518 का शेष) 6. क्योंकि ऐसे उमूर से सलाहियत ज़ाया हो जाती है।

7. जब उस चीज़ का ज़िन्दा करना मुश्किल है जो बहुत मुश्किल और दूर की बात है तो जो चीज़ आसान और करीब है उसका ज़िन्दा करना तो ज़्यादा आसानी से मुश्किल है। और ‘कूतू’ से मकसूद हुक्म नहीं है बल्कि यह बताना है कि अगर पत्थर और लोहा भी हो जाओ तब भी उसकी कुदरत से ख़ारिज नहीं हो सकते।

1. क्योंकि क़ब्र और दुनिया में उस दिन के मुकाबले में फिर भी राहत थी, और राहत व आराम का ज़माना सख़्ती और परेशानी के ज़माने के सामने कम मालूम होता है।

2. यानी उसमें बुरा-भला कहना और सख़्ती और उत्तेजना न हो।

3. इसलिए सख़्ती करने की ज़रूरत नहीं। मगर मुराद इससे बेज़रूरत सख़्ती करना है जैसा कि अक्सर लड़ाई-झगड़ों में हो जाती है, वरना ज़रूरत और मसलहत के मौके पर तो किताल तक की भी इजाज़त है।

4. ऊपर ‘व इज़ा करअतल् कुरआन’ और ‘कालू अ-इज़ा कुन्ना’ में कुम्फ़ार के रिसालत और मरने के बाद ज़िन्दा होने के इनकार पर दलालत थी, रिसालत के इनकार के अन्य कारणों में से उनका एक ख़्याल यह भी था कि रसूल फ़रिश्ता होना चाहिए, या अगर आदमी हो तो कोई सरदार और दुनियावी एतिबार से बड़ा आदमी हो। अब इस शुब्हे का जवाब और दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़िक्र से आपकी रिसालत की ताईद और सब रसूलों में आपके अफ़ज़ल होने की तरफ़ मुख़्तसर इशारा फ़रमाते हैं।

5. ज़बूर की ख़ास करने में यह नुक्ता है कि उसमें हुज़ूर सल्ल. के हुक्मत व बादशाही वाला होने की ख़बर दी गई है।

6. यानी इताअत व इबादत में मशगूल हैं, ताकि अल्लाह तआला का कुर्ब (यानी नज़दीकी) मयस्सर हो जाए। और चाहते हैं कि और ज़्यादा निकटता हो जाए। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 522 पर)

कबीरा (60) ❖

व इज़् कुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ-स-जदू इल्ला इब्ली-स, का-ल अ-अस्जुदु लिमन् खलक्-त तीना (61) का-ल अ-रए-त-क हाज़ल्लजी करम्-त अलय्-य, ल-इन् अख़्खरतनि इला यौमिल्-कियामति ल-अह्तनिकन्-न ज़ुरिय्य-तहू इल्ला कलीला

(62) कालज़हब् फ-मन् तबि-अ-क

मिन्हुम् फ-इन्-न जहन्न-म जज़ाउकुम् जज़ाअम्-मौफ़ूरा (63) वस्तफ़िज़्ज़् मनिस्त-तअ-त मिन्हुम् बिसौति-क व अज़िलब् अलैहिम् बिखौलि-क व रजिलि-क व शारिकहुम् फिल्अम्वालि वल्-औलादि व अिद्हुम्, व मा यअिद्हुमुश्-शैतानु इल्ला गुरुरा (64)

इन्-न अिबादी लै-स ल-क अलैहिम् सुल्लानुन्, व कफा बिरब्बि-क वकीला

(65) रब्बुकुमुल्लजी युज़्जी लकुमुल्-फुल्-क फिल्बहिर लितब्तगू मिन् फज़िलही, इन्नहू का-न बिकुम् रहीमा

(66) व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुरू फिल्बहिर ज़ल्-ल मन् तद्अू-न इल्ला इय्याहु फ-लम्मा नज्जाकुम् इलल्-बरि

अअ्रज़्तुम्, व कानल्-इन्सानु कफ़ूरा (67) अ-फ-अमिन्तुम् अय्यख़िस-फ बिकुम् जानिबल्-बरि औ युरिस्-ल अलैकुम् हासिबन् सुम्-म ला तजिदू लकुम् वकीला (68) अम्

अमिन्तुम् अय्युअी-दकुम् फीहि ता-रतन् उख़रा फयुरसि-ल अलैकुम् कासिफम्-मिनर्-रीहि फयुगिर-ककुम् बिमा कफरुत्तुम् सुम्-म ला तजिदू लकुम् अलैना बिही तबीआ (69) व

ल-कद् करम्ना बनी आद-म व हमल्नाहुम् फिल्बर्ि वल्बहिर व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व

سُبْحَانَ الَّذِي ۝ ٢٦١ ۝ يَتَنَزَّلُ فِي السَّمَوَاتِ يَخْفَىٰ ۝ لَا تُلَاقِيهُ السُّعُودُ وَلَا عَلَيْهِ السَّجُودُ ۝ يَخْتَارُ مَا يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ فَيَكُونُ لَكَ بِهِ حَقٌّ وَمِنْ دُونِهِ غَبْرٌ ۝ ٢٦٢ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ لَكَ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَنْتَقِلَ مِنْ فُضْلِهِ ۚ إِنَّكَ يُرِيدُ لَكَ الْغُلُوكَ ۚ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِلَهُهُ فَلَمَّا رَجَعْتُمْ إِلَى الْبَرِّ فَعُودُكُمْ كَانَ الْإِنْسَانُ لَكُفُورًا ۚ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يُخَفِّصَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ ۚ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا رُجُومًا ۚ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ ۚ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيَغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُ إِلَّا كُفْرًا ۚ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُتَبِّعَا ۚ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِمَّنْ

लेकिन उनकी बड़ी सरकशी बढ़ती ही चली जाती है। (60) ♦

और जबकि हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, सो उन सबने सज्दा किया मगर इब्लीस “यानी शैतान” ने (न किया और) कहा कि क्या मैं ऐसे शख्स को सज्दा करूँ जिसको आपने मिट्टी से बनाया है।¹ (61) कहने लगा कि इस शख्स को जो आपने मुझपर फौकियत “यानी बरतरी” दी है तो भला बताइए (तो, खैर) अगर आपने मुझको कियामत के ज़माने तक मोहलत दे दी तो मैं (भी) सिवाय थोड़े-से लोगों के इसकी तमाम औलाद को अपने बस में करूँगा।² (62) इर्शाद हुआ, जा जो शख्स उनमें से तेरे साथ हो लेगा, सो तुम सबकी सज़ा जहन्नम है, सज़ा पूरी। (63) और उनमें से जिस-जिसपर तेरा काबू चले, अपनी चीख-पुकार से³ उसका कदम उखाड़ देना, और उनपर अपने सवार और प्यादे चढ़ा लाना,⁴ और उनके माल और औलाद में अपना साझा कर लेना,⁵ और उनसे वायदा करना (कि गुनाहों पर पकड़ न होगी) और शैतान उन लोगों से बिलकुल झूठे वायदे करता है। (64) मेरे खास बन्दों पर तेरा ज़रा काबू न चलेगा और आपका रब काफी कारसाज़ है। (65) तुम्हारा रब ऐसा (नेमत देने वाला) है कि तुम्हारे लिए कशती को दरिया में ले चलता है ताकि तुम उसके रिज़्क की तलाश करो, बेशक वह तुम्हारे हाल पर बहुत मेहरबान है। (66) और जब तुमको दरिया में कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो सिवाय उस (खुदा) के और जितनों की तुम इबादत करते थे, सब ग़ायब हो जाते हैं,⁶ फिर जब तुमको खुशकी की तरफ़ बचा लाता है तो तुम फिर (पहली आदत के मुताबिक़) फिर जाते हो, और (वाकई) इनसान है बड़ा नाशुका। (67) तो क्या तुम इस बात से बेफ़िक्र हो (बैठे हो) कि तुमको खुशकी की तरफ़ लाकर ज़मीन में धँसा दे, या तुमपर कोई ऐसी तेज़ हवा भेज दे जो कंकर पत्थर बरसाने लगे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज़ न पाओ। (68) या तुम इससे बेफ़िक्र हो गए कि वह (अल्लाह) फिर तुमको दरिया ही में दोबारा ले जाए, फिर तुमपर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे, फिर तुमको तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे, फिर इस बात पर कोई हमारा पीछा करने वाला तुमको न मिले। (69) और हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त दी,⁷ और हमने उनको खुशकी और दरिया में सवार किया और उम्दा-उम्दा चीज़ें उनको अता फ़रमाईं। और हमने उनको अपनी बहुत-सी मख़्लूक पर बरतरी दी।⁸ (70) ♦

(पृष्ठ 520 का शेष) 7. मतलब यह है कि जब वे खुद इबादत करने वाले हैं तो माबूद क्योंकर होंगे, और जब वे खुद ही रहमत के हासिल करने में अल्लाह तआला के मोहताज हैं तो औरों को क्या नफ़ा पहुँचा सकते हैं। इसी तरह जब वे खुद नुक़सान यानी अज़ाब से बचने में अल्लाह तआला के मोहताज हैं तो औरों से नुक़सान को क्या दूर कर सकते हैं, लिहाज़ा उनका माबूद व मददगार बनाना महज़ बातिल होगा। 8. पस अगर कोई काफ़िर यहाँ किसी आफ़त में हलाक होने से बच गया तो कियामत के दिन बड़ी आफ़त से न बचेगा। आफ़त की कैद इसलिए है कि तबई मौत से तो सब ही हलाक होते हैं इसमें कुफ़्र की कोई खुसूसियत नहीं। 9. और तबीयतें इनकी और उनकी एक जैसी हैं, पस ये भी झुठलाएँगे। 1. इसपर मरदूद हुआ और धुतकारा गया। 2. अगर कोई यह सवाल करे कि शैतान को शुरू में यह कैसे मालूम हुआ कि मैं इनसानों को गुमराह करने और बहकाने पर काविर हूँ, इसका जवाब यह है कि ग़ालिबन इनसान के मुख़लिफ़ कुव्वतों से मुरक्कब होने से उसको यह ख़्याल आया। 3. यानी बहकाने और वस्वसे से। 4. ताकि सब मिलकर गुमराह करने में ख़ूब जोर लगाएँ। 5. यानी माल और औलाद को गुमराही का ज़रिया बना देना। चुनाँचे आँखों के सामने है कि यही दो चीज़ें ज़्यादातर गुमराही का अहम और ताक़तवर सबब हुआ करती हैं। 6. न सिर्फ़ ज़बान पर से बल्कि दिल से भी कि उनका ख़्याल ही नहीं आता, और फ़रियाद को पहुँचने से भी कि वे इम्दाद नहीं कर सकते, जिससे तुम्हारे हाल और ज़बान से एतिराफ़ करने से शिर्क का बातिल होना लाज़िम आता है। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 524 पर)

फज्जल्लाहुम् अला कसीरिम्-मिम्मन् खलक्ना तफ्जीला (70) ❖

यौ-म नद्अू कुल्-ल उनासिम् बि-इमामिहिम् फ-मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही
फ-उलाइ-क यक्कऊ-न किताबहुम् व ला युज्जलमू-न फतीला (71) व मन् का-न फी हाजिही
अअ्मा फहु-व फिलूआखिरति अअ्मा व अजल्लु सबीला (72) व इन् कादू लयफितनू-न-क

अनिल्लजी औहैना इलै-क लितफतरि-य
अलैना गैरहू व इजल् लत्त-खाजू-क
खलीला (73) व लौ ला अन्
सब्बल्ला-क ल-कद् कित्-त तर-कनु
इलैहिम् शैअन् कलीला (74) इजल्
ल-अजक्ना-क जिअफल्-हयाति व
जिअफल्-ममाति सुम्-म ला तजिदु
ल-क अलैना नसीरा (75) व इन्
कादू लयस्तफिज्जू-न-क मिनल् अजि
लियुखिरजू-क मिन्हा व इजल्-ला
यल्बसू-न खिलाफ-क इल्ला कलीला
(76) सुन्न-त मन् कद् अरसल्ला
कब्ल-क मिरूसुलिना व ला तजिदु
लिसुन्नतिना तह्वीला (77) ❖

अकिमिस्सला-त लिदुलूकिश्शमिस्
इला ग-सकिल्लैलि व कुरआनल्-फज्रि,

इन्-न कुरआनल्-फज्रि का-न मशहूदा (78) व मिनल्लैलि फ-तहज्जद् बिही नाफि-लतल्
ल-क असा अय्यब्अ-स-क रब्बु-क मकामम्-महमूदा (79) व कुरब्बि अदखिल्ली मुदख-ल
सिद्किव्-व अखिरज्नी मुखर-ज सिद्किव्-वज्अल्-ली मिल्लदुन्-क सुल्लानन् नसीरा (80) व
कुल् जाअल्-हक्कु व ज-हक्ल्-बातिलु, इन्नल्-बाति-ल का-न जहूका (81) व नुनज्जिलु
मिनल्-कुरआनि मा हु-व शिफाउव्-व रहमतुल् लिल्-मुअमिनी-न व ला यजीदुज्जालिमी-न

سُبْحَانَ الَّذِي ۝۲۶۲
خَلَقْنَا نَفْسًا ۖ يَوْمَ نَدْعُ كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوْفِيَ كِتَابُهُ بِمِيزَانٍ ۖ فَالْأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُلَظْمُونَ ۖ فَنُفِخُ فِي سُورَةٍ ۖ وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ ۖ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ ۖ وَأَصْلُ سَبِيلٍ ۖ وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَةً ۖ وَإِذَا لَا تَأْخُذُكَ خَلِيلٌ ۖ وَلَوْ أَنَّ ثُبُوكَ لَقَدْ كُنتَ تَرْكَبُ الْيَهُودَ شَيْئًا قَلِيلًا ۖ إِذَا الدُّنْيَا ضَعُفَ الْحَيَوةُ وَضَعُفَ الْمَبَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْنَا صَدِيرًا ۖ وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لَيُفْرِجَنَّكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَكْبُتُونَ خَلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ سُنَّةٌ مِّن قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِن رُّسُلِنَا ۖ وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۖ أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِكَ ۖ الشَّمْسُ إِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنُ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ الْفَجْرَ كَانَ مَشْهُودًا ۖ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدْ لَهُ ۖ وَأَقْبَلْهُ ۖ لَكَ عِشَىٰ ۖ إِنَّ يَتَّبِعُكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۖ وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ ۖ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ ۖ وَأَجْعَلْ لِّي مِّن لَّدُنكَ سُلْطَانًا صَدِيرًا ۖ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۖ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۖ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَلَا يَزِيدُ

مِنْكَ

जिस दिन हम तमाम आदमियों को उनके आमालनामे समेत बुलाएँगे। फिर जिसका आमाल-नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा, ऐसे लोग अपना आमाल-नामा पढ़ेंगे, और उनका ज़रा भी नुकसान न किया जाएगा। (71) और जो शख्स दुनिया में (नजात का रास्ता देखने से) अन्धा रहेगा, सो वह आखिरत में भी (नजात की मन्ज़िल तक पहुँचने से) अन्धा रहेगा, और ज़्यादा भटका हुआ होगा। (72) और ये (काफ़िर) आपको उस चीज़ से बिचलाने ही लगे थे जो हमने आपपर वह्न के ज़रिये से भेजी है,¹ ताकि आप उसके सिवा हमारी तरफ़ ग़लत बात की निस्वत करें, और ऐसी हालत में आपको गहरा दोस्त बना लेते। (73) और अगर हमने आपको साबित कदम न बनाया होता तो आप उनकी तरफ़ कुछ-कुछ झुकने के करीब जा पहुँचते। (74) (अगर ऐसा होता) तो हम आपको जिन्दगी की हालत में और मौत के बाद दोहरा (अज़ाब) चखाते, फिर आप हमारे मुकाबले में कोई मददगार भी न पाते।² (75) और ये लोग इस सरज़मीन से आपके कदम ही उखाड़ने लगे थे,³ ताकि आपको इससे निकाल दें, और (अगर ऐसा हो जाता तो) आपके बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। (76) जैसा कि उन (हज़रात) के बारे में (हमारा) कायदा रहा है जिनको आपसे पहले हमने रसूल बनाकर भेजा था, और आप हमारे (इस) कायदे में बदलाव न पाएँगे।⁴ (77) ♦

सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे (होने) तक नमाज़ें अदा किया कीजिए,⁵ और सुबह की नमाज़ भी, बेशक सुबह की नमाज़ (फ़रिशतों के) हाज़िर होने का वक़्त है।⁶ (78) और किसी क़द्र रात के हिस्से में, सो उसमें तहज़ुद पढ़ा कीजिए, जो कि आपके लिए (फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा) ज़ायद चीज़ है, उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे-महमूद⁷ में जगह देगा। (79) और आप (यूँ) दुआ कीजिए कि ऐ परवर्दिगार! मुझको ख़ूबी के साथ पहुँचाइयो, और मुझको ख़ूबी के साथ ले जाइयो,⁸ और मुझको अपने पास से ऐसा ग़ल्बा दीजियो जिसके साथ मदद हो।⁹ (80) और कह दीजिए कि हक़ आया और बातिल गया गुज़रा हुआ। (और) वाकई बातिल चीज़ तो (यूँ ही) आती-जाती (रहती) है।¹⁰ (81) और हम कुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं कि वे ईमान वालों के हक़ में तो शिफ़ा और रहमत है,¹¹ और नाइन्साफ़ों को उससे और उल्टा नुकसान बढ़ता है। (82) और आदमी को जब हम नेमत अता करते हैं तो मुँह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है,

(पृष्ठ 522 का शेष) 7. इनसान में बाज़ मख़सूस सिफ़तें ऐसी हैं जो और जानदारों में नहीं, जैसे सूरत की ख़ूबसूरती जिसमें जिस्म का सीधा व कायम होना भी आ गया, और अक्ल, और चीज़ों की ईजाद (यानी आविष्कार करना) वगैरह। और ये नेमतें पूरी इन्सानियत के लिए हैं। पस बनी आदम (यानी आदम की औलाद) से मुराद तमाम इन्सान हैं।

8. चूँकि ऊपर “कर्रम्ना”-मुख़्तसर था इसलिए इससे यह शुब्हा हो सकता था कि उन सिफ़तों में जो ऊपर जिक्र हुई हैं, यह सबसे अफ़ज़ल है, हालाँकि यह बात हकीक़त के खिलाफ़ थी। क्योंकि ये सिफ़तें फ़रिशतों पर फ़ज़ीलत का मदार नहीं हो सकतीं, और जो सिफ़तें फ़रिशतों पर फ़ज़ीलत का मदार हैं वे तमाम औलादे-आदम (यानी इन्सानों) में नहीं पाई जातीं, इसलिए ‘फ़ज़ल्ला’ में इस बात को वाज़ेह कर दिया कि मुराद इक्राम करने से बाज़ मख़लूक़ पर फ़ज़ीलत देना है, यानी हैवानात और हैवानात से जो कम रुतबा हैं उनपर इन्सानों को फ़ज़ीलत दी। पस यह आयत मुतकल्लिमीन के दरमियान ज़ेरे बहस मसले यानी फ़रिशतों और इन्सानों के एक-दूसरे से फ़ज़ीलत-याफ़ता होने के बारे में ख़ामोश है।

1. यानी इस कोशिश में लगे थे कि आप हमारे हुक्म के खिलाफ़ करें, यानी ग़रीब मुसलमानों को अपने पास से हटा दें, या मुसलमान होने के लिए एक साल की मोहलत दे दें, जबकि ये दोनों मामले शरीअत के खिलाफ़ हैं।

2. मगर चूँकि आपको मासूम (यानी गुनाहों से महफूज़) और सबित क़दम बनाया, इसलिए मामूली करीब होना और रुझान व मैलान भी नहीं हुआ, और ‘ज़िअफ़ल् हयाति व ज़िअफ़ल ममाति’ से भी बच गए।

3. यानी मक्का से या मदीना से।

4. कि जब उनकी कौम ने उनको वतन से निकाला तो खुद उनको भी रहना नसीब न हुआ।

5. इसमें जोहर, अस्त्र, मरिब, इशा चार नमाज़ें आ गईं। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 526 पर)

इल्ला खसारा (82) व इज़ा अन्अम्ना अलल्-इन्सानि अअर-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुशरु का-न यऊसा (83) कुल् कुल्लुंय्यअमलु अला शाकि-लतिही, फरब्बुकुम् अअलमु बिमन् हु-व अहदा सबीला (84) ♦

व यसअलून-क अनिरूहि कुलिरूहु मिन् अमिर रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्-अल्मि

इल्ला कलीला (85) व ल-इन् शिअना लनज़ह-बन्-न बिल्लजी औहैना इलै-क सुम्-म ला तजिदु ल-क बिही अलैना वकीला (86) इल्ला रहम-तम् मिरब्बि-क, इन्-न फज़लहू का-न अलै-क कबीरा (87) कुल् ल-इनिजूत-म-अतिल्-इन्सु वल्लिन्नु अला अय्यअतू बिमिस्लि हाज़ल्-कुरआनि ला यअतू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअज़ुहुम् लिबअज़िन् जहीरा (88) व ल-कद् सरफ़ना लिन्नासि फी हाज़ल्-कुरआनि मिन् कुल्लि म-सलिन्, फ-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफूरा (89) व कालू लन् नुअमि-न ल-क हत्ता तफ़्जु-र लना मिनल्-अर्जि यम्बूआ (90) औ तकू-न ल-क जन्नतुम् मिन्

سُبْحَانَ الَّذِي ۝ ٢٩٣ ۝ بَنَى السَّمَاءَ
الظَّالِمِينَ الْإِخْسَارَ ۝ وَإِذَا أَعْنَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ عُرْضًا
نَاجِيًا ۝ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرْكَانَ يَأْكُفُ ۝ قُلْ كُلُّ يَعْمَلْ عَلَى
شَاكِرَةٍ ۝ فَرَبِّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا ۝ وَيَتَكَلَّمُونَ عَنِ
الرُّوحِ ۝ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا
قَلِيلًا ۝ وَلَكِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ
لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۝ إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ ۝ إِنْ فَضَلْنَا كَانَ
عَلَيْكَ كَيْدٌ ۝ قُلْ لَكِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا
بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
ظَهِيرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
فَأَنَّى أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَفْقَهُونَ ۝ وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِكَ حَتَّى تُنْزِلَ
لَنَا مِنَ السَّمَاءِ مَائِدَةً ۝ أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِنْ نَجِيلٍ ۝ وَ
عَنْ يَمِينٍ فَتَنْفِرُ ۝ أَوْ تُنَادِيهِمْ فَيَقُولُوا سُبْحَانَ الْبَرَاءِ ۝ أَوْ تَقُولُ
لَهُمْ كَمَا نَزَّلْنَا عَلَى سُلَيْمَانَ ۝ أَوْ تَقُولُ لَكَ بِرَبِّكَ ۝ أَوْ يَكُونَ
لَكَ بَيْتٌ مِنْ زُخْرَفٍ ۝ أَوْ تَرْفَعُ فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ بِرَبِّكَ
حَتَّى تُنْزِلَ عَلَيْنَا كِتَابًا تُفَرِّقُوه ۝ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا
بَشَرًا مِثْلَ سُوْلَا ۝ وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى ۝

مَنْ

नखीलिव्-व अि-नबिन् फतुफज्जिरल्-अन्हा-र खिलालहा तफ़्जीरा (91) औ तुस्कितस्समा-अ कमा ज़अम्-त अलैना कि-सफन् औ तअति-य बिल्लाहि वल्मलाइ-कति कबीला (92) औ यकू-न ल-क बैतुम्-मिन् जुख्रुफिन् औ तरका फिस्समा-इ, व लन् नुअमि-न लिरुकिथि-क हत्ता तुनज़ि-ल अलैना किताबन् नकरउहू, कुल् सुब्हा-न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब-शरर्-रसूला (93) ♦

और जब उसको कोई तकलीफ पहुँचती है तो नाउम्मीद हो जाता है।¹ (83) आप फ़रमा दीजिए कि हर शख्स अपने तरीके पर काम कर रहा है, सो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है उसको जो ठीक रास्ते पर हो। (84) ♦

और ये लोग आपसे (इम्तिहान के तौर पर) रूह के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि रूह मेरे रब के हुक्म से बनी है,² और तुमको बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है।³ (85) और अगर हम चाहें तो जिस क़द्र वह्य आप पर भेजी है सब छीन लें, फिर उसके (वापस लाने के) लिए आपको हमारे मुकाबले में कोई हिमायती न मिले। (86) मगर (यह) आपके रब ही की रहमत है (कि ऐसा नहीं किया) बेशक आप पर उसका बड़ा फ़ज़ल है। (87) आप फ़रमा दीजिए कि अगर तमाम इनसान और जिन्नात (इस बात के लिए) जमा हो जाएँ कि ऐसा कुरआन बना लाएँ तब भी ऐसा न ला सकेंगे, अगरचे एक दूसरे का मददगार भी बन जाए। (88) और हमने लोगों के (समझाने के) लिए हर किस्म का उम्दा मज़मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इनकार किए बग़ैर न रहे। (89) और ये लोग कहते हैं कि हम आप पर हरगिज़ ईमान न लाएँगे जब तक आप हमारे लिए (मक्का की) ज़मीन से कोई चश्मा जारी न कर दें। (90) या ख़ास आपके लिए खजूर और अंगूरों का कोई बाग़ न हो, फिर उस बाग़ के बीच-बीच में जगह-जगह बहुत-सी नहरें आप जारी कर दें। (91) या जैसा कि आप कहा करते हैं, आप आसमान के टुकड़े हमपर न गिरा दें, या आप अल्लाह को और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने न (ला खड़ा) करें। (92) या आपके पास कोई सोने का बना हुआ घर न हो, या आप (हमारे सामने) आसमान पर न चढ़ जाएँ, और हम तो आपके (आसमान पर) चढ़ने को भी कभी यकीन न करें, जब तक कि (वहाँ से) आप हमारे पास एक तहरीर न लाएँ, जिसको हम पढ़ भी लें।⁴ आप फ़रमा दीजिए कि सुब्हानल्लाह! मैं सिवाय इसके कि आदमी हूँ (मगर) पैग़म्बर हूँ और क्या हूँ। (कि इन फ़रमाइशों को पूरा करना मेरी कुदरत में हो)। (93) ♦

(पृष्ठ 524 का शेष) 6. चूँकि सुबह का वक़्त नींद से उठने का था इसलिए इसका हुक्म भी अलग किया, और इसकी एक ख़ास बुजुर्गों भी बयान की।

7. जो शफ़ाअते कुबरा का मक़ाम है। और शफ़ाअते कुबरा वह है जिसमें तमाम मख़्लूक़ात के हिसाब-किताब शुरू होने की शफ़ाअत होगी।

8. यानी मक्का से जाने के बाद।

9. जिससे वह ग़ल्बा बढ़ता ही जाए, वरना आरज़ी (यानी अस्थायी) ग़ल्बा तो काफ़िरों को भी हो जाता है मगर वे अल्लाह की तरफ़ से मदद-याफ़्ता नहीं होते इसलिए जल्द ख़त्म हो जाता है। इसमें सुपुर्द करने का हुक्म हो गया।

10. चुनाँचे हिजरत के बाद मक्का फ़तह हुआ और सब वायदे पूरे हो गए।

11. क्योंकि वे उसे मानते हैं जिससे हक़ तआला की रहमत उनपर होती है, और बुरे अक्कीदों व आमाज़ के मर्ज़ से शिफ़ा होती है।

1. ये दोनों बातें अल्लाह से बेताल्लुकी की दलील हैं, और यही बेताल्लुकी असली सबब है हिदायत की तरफ़ मुतवज्जह न होने का, और हक़ में ग़ौर न करने का, और इसी से कुफ़्र वग़ैरह पैदा होता है।

2. ज़ाहिर में मालूम होता है कि इसी रूह के मुताल्लिक सवाल था जिससे इनसान जिन्दा है। क्योंकि जब रूह मुतलक़ बोलते हैं यही समझी जाती है, और जवाब से ज़ाहिर में यह मालूम होता है कि नुसूस (यानी कुरआन व हदीस) में इसकी हकीक़त ज़ाहिर न करने की वजह बतलाई है, और उसके हादीस (यानी फ़ानी) होने का ज़रूरी अक्कीदा ज़ाहिर कर दिया गया है। अब यह बात कि किसी दूसरे तरीके से इसका इज़हार हो सकता है या होता है, आयत इसके साबित होने और न होने दोनों से ख़ामोश है, पस दोनों बातों की गुन्जाइश है, और कोई सी सूरत भी कुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ नहीं।

3. यहाँ जो इल्म को क़लील यानी थोड़ा-सा फ़रमाया तो अल्लाह तआला के इल्म के मुकाबले में, और दूसरी आयत में जो इल्म को 'खैर कसीर' (यानी बड़ी भलाई) फ़रमाया तो दुनिया के फ़ायदे और दौलत की निस्बत से, पस दोनों में कोई टकराव नहीं।

4. और उसमें आपके आसमान पर पहुँचने की तस्दीक़ रसीद के तौर पर लिखी हुई हो।

व मा म-नअन्ना-स अय्युअमिन् इज् जा-अहुमुल्-हुदा इल्ला अन् कालू अ-ब-असल्लाहु
ब-शररसूला (94) कुल् लौ का-न फिल्अर्जि मलाइ-कतुंय्यश्शू-न मुत्तइन्नी-न लनज्जल्ला
अलैहिम् मिनस्समा-इ म-लकर्सूला (95) कुल् कफा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम्,
इन्नहू का-न बिअिबादिही खाबीरम्-बसीरा (96) व मय्यहिदल्लाहु फहुवल्-मुस्तदि व

मय्युजिलल् फ-लन् तजि-द लहुम्
औलिया-अ मिन् दूनिही, व नहशुरुहुम्
यौमल्-कियामति अला वुजूहिहिम्
अुम्यं-व बुक्मं-व सुम्मन्, मअ्वाहुम्
जहन्नमु, कुल्लमा खाबत् जिद्नाहुम्
सअीरा ● (97) जालि-क जज़ा-उहुम्
बिअन्नहुम् क-फरु बिआयातिना व कालू
अ-इज़ा कुन्ना अिज़ामं-व रुफातन्
अ-इन्ना लमब्अूसू-न खाल्कन् जदीदा
(98) अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लजी
ख-लकस्समावाति वल्अर्-ज कादिरुन्
अला अय्यख्लु-क मिसलहुम् व ज-अ-ल
लहुम् अ-जलल्-ला रै-ब फीहि,
फ-अबज्जालिम्-न इल्ला कुफूरा (99)
कुल् लौ अन्तुम् तम्मिलकू-न खज़ाइ-न
रहमति रब्बी इजल् ल-अम्सक्तुम्
खशय-तल्-इन्फाकि, व कानल्-इन्सानु कतूरा (100) ♦

व ल-कद् आतैना मूसा तिस्र-अ आयातिम्-बय्यिनातिन् फस्अल् बनी इस्राई-ल इज्
जा-अहुम् फका-ल लहू फिरऔनु इन्नी ल-अजुन्नु-क या मूसा मस्बूरा (101) का-ल
ल-कद् अलिम्-त मा अन्ज-ल हाउला-इ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्जि बसाइ-र व इन्नी
ल-अजुन्नु-क या फिरऔनु मस्बूरा (102) फ-अरा-द अय्यस्तफिज्जहुम् मिनल्-अर्जि

سُبْحَانَ الَّذِي هُوَ
إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ
مَلَائِكَةٌ يَتَشَوْنُ مَطْبِعَيْنِ لَكُنَّا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكَاتٍ
رَسُولًا قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ
خَبِيرًا بَصِيرًا وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ هَدًى وَمَنْ يَضِلْ فَلَنْ
يُجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ وَيَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَلَى
وُجُوهِهِمْ عَذَابًا وَبُكَامًا وَاصًّا مَا وَاعَدَ اللَّهُ مَلَائِكَةً يَنْزِلُ
سَعِيرًا ذَلِكَ جَزَاءُ هُمُ يَا لَهُمْ كُفْرًا وَبِالْبَيِّنَاتِ وَالْوَاءِ إِذَا كُنَّا
عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنْ أَلْمَعُونَ خَلَقْنَا جَدِيدًا أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ
اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ شَيْئًا
وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا أَرَبَّ فِيهِ فَإِنَّ الظَّالِمِينَ إِلَّا كُفُورًا قُلْ
لَوْ أَنَّكُمْ تَعْلَمُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذَا الْأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ
الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَفُورًا وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ فَسَمِعَ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ
إِنِّي لَأَكْظِمُكَ يَهُوسَى مَسْجُورًا قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزِلُ هَؤُلَاءِ
إِلَّا رُبَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَإِنِّي لَأَكْظِمُكَ يَفِرْعَوْنُ
مَذْمُورًا فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَقِرَ هُمُ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ

مَلَكَ

और जिस वक्त उन लोगों के पास हिदायत पहुँच चुकी, उस वक्त उनको ईमान लाने से सिवाय इसके और कोई (फ़ाबिले तवज्जोह) बात रोक नहीं हुई कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह तआला ने आदमी को रसूल बनाकर भेजा है। (94) आप फ़रमा दीजिए कि अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते (रहते) होते कि इसमें चलते-बसते तो ज़रूर हम उनपर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजते।¹ (95) आप (आखिरी बात) कह दीजिए कि अल्लाह तआला मेरे और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है, (क्योंकि) वह अपने बन्दों को ख़ूब जानता, ख़ूब देखता है। (96) और अल्लाह तआला जिसको राह पर लाए वही राह पर आता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो खुदा के सिवा आप किसी को भी ऐसों का मददगार न पाएँगे।² और हम क़ियामत के दिन उनको अंधा गूँगा बहरा करके मुँह के बल चलाएँगे, (फिर) उनका ठिकाना दोज़ख़ है। वह जब ज़रा धीमी होने लगेगी तब ही उनके लिए और ज़्यादा भड़काएँगे। ● (97) यह है उनकी सज़ा, इस सबब से कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया था, और (यूँ) कहा था कि जब हम हड्डियाँ और बिलकुल चूरा-चूरा हो जाएँगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके (कब्रों से) उठाए जाएँगे। (98) क्या उन लोगों को (इतना) मालूम नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किए वह इस बात पर (और भी ज़्यादा) कादिर है कि वह उन जैसे आदमी दोबारा पैदा कर दे, और उनके लिए एक मीयाद मुतैयन कर रखी है, इसमें ज़रा भी शक नहीं, इसपर भी बेइन्साफ़ लोग इनकार किए बग़ैर न रहे।³ (99) आप फ़रमा दीजिए कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत (यानी नुबुव्वत) के ख़ज़ानों (यानी कमालात) के मुख़्तार होते तो उस सूत में तुम (उसके) ख़र्च करने के अन्देशे से ज़रूर हाथ रोक लेते, और आदमी है ही बड़ा तँगदिल।⁴ (100) ♦

और हमने मूसा को खुले हुए नौ मोज़िज़े दिए,⁵ जबकि वह उन (बनी इसराईल) के पास आए थे। सो आप बनी इसराईल से पूछ लीजिए। तो फिरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मेरे ख़्याल में तो ज़रूर तुमपर किसी ने जादू कर दिया है। (101) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फ़रमाया तू (दिल में) ख़ूब जानता है कि ये (अज़ीब चीज़ें) ख़ास आसमान और ज़मीन के रब ने ही भेजी हैं, जो कि बसीरत “यानी समझ व अक्ल” के लिए (काफी) ज़रिये हैं, और मेरे ख़्याल में ज़रूर तेरी कम-बख़्ती के दिन आ गए हैं। (102) फिर उसने चाहा

1. यह रिसालत के मुताल्लिक एक शुब्हे का जवाब है। वह शुब्हा यह कि रसूल आदमी न होना चाहिये, फ़रिश्ता होना चाहिए। जवाब का हासिल यह है कि रसूल और जिनके पास रसूल को भेजा जा रहा है उनमें मुनासबत ज़रूरी है। जिनके पास रसूल भेजा जा रहा है अगर वे फ़रिश्ते होते तो रसूल भी फ़रिश्ता होता। जब वे आदमी हैं तो रसूल भी आदमी होना चाहिए। अगर वस्वसा हो कि जब मुनासबत की ज़रूरत से हम-जिन्स होने की रियायत हुई तो फिर रसूल के पास जबकि वह इनसान होता है फ़रिश्ता कैसे आता है और क्योंकर फ़ैज़ होता है? जवाब यह है कि रसूल में चूँकि फ़रिश्ते की शान भी होती है इसलिए उसको फ़रिश्ते और इनसान दोनों से मुनासबत होती है, कि फ़रिश्ते से वझ लेकर इनसानों को पहुँचा दे।

2. यानी जब तक खुदा की तरफ़ से दस्तगीरी (यानी मदद) न हो, न हिदायत हो सकती है न अज़ाब से बच सकते हैं। चुनाँचे ये लोग बावजूद हिदायत के असबाब के जमा होने के तौफ़ीक़ न होने की वजह से हिदायत तक न पहुँच सके।

3. ऊपर काफ़िरों का आपकी नुबुव्वत पर इनकार करना और आपसे बैर रखना ज़िक्र हुआ है, आगे फ़रमाते हैं कि अगर नुबुव्वत तुम्हारे इख़्तियार में होती तो तुम रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी न देते, मगर वह तो फ़ज़्ले खुदा के हाथ में है, इसलिए तुम्हारा बैर, दुश्मनी और नागवारी रोक नहीं हो सकती।

4. यानी कभी भी किसी को न देते, इसके बावजूद कि वह चीज़ ऐसी होती कि देने से भी न घटती, मगर खुद उसके देने ही को ख़र्च करने जैसा समझकर किसी को भी न देते। जैसे बाज़ लोग इल्म की बात बुख़्त की इन्तिहा की वजह से नहीं बतलाया करते।

5. जिनका ज़िक्र पारा नम्बर नौ के रुकूअ नम्बर छह की पहली और चौथी आयत में है।

फ-अग्रकनाहु व मम्-म-अहू जमीआ (103) व कुल्ला मिम्-बअदिही लि-बनी
 इस्राईलस्कुनुल्-अर्-ज़ फ-इज़ा जा-अ वअदुल्-आखिरति जिअन्ना बिकुम् लफीफा (104) व
 बिल्हविक अन्ज़ल्लाहु व बिल्हविक न-ज़-ल, मा अर्सल्ला-क इल्ला मुबशिशरव्-व नज़ीरा ✦
 (105) व कुरआनन् फरकनाहु लितक्-अहू अलन्नासि अला मुक्सिस्व-व नज़्ज़ल्लाहु तन्ज़ीला
 (106) कुल् आमिन्नु बिही औ ला
 तुअमिन्नु, इन्नल्लजी-न ऊतुल्-अिल्-म
 मिन् कब्लिही इज़ा युत्ता अलैहिम्
 यखिरू-न लिलअज्कानि सुज्जदा (107)
 व यकूलू-न सुब्हा-न रब्बिना इन् का-न
 वअदु रब्बिना ल-मफ़ूला (108) व
 यखिरू-न लिलअज्कानि यब्कू-न व
 यज़ीदुहुम् खुशूआ □ (109) कुलिद्-
 अल्ला-ह अविद्अरुस्मा-न, अय्यम् मा
 तद्अू फ-लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना व ला
 तज्हर बि-सलाति-क व ला तुखाफित्
 बिहा वब्तगि बै-न ज़ालि-क सबीला
 (110) व कुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लजी
 लम् यत्तखिज़् व-लदव्-व लम् यकुल्-लहू
 शरीकुन् फिल्मुल्कि व लम् यकुल्लहू
 वलिय्युम्-मिनज्जुल्लि व कब्बिरूहु
 तक्बीरा (111) ✦

سُبْحَانَ الَّذِي
 ٢٦٥
 مَعَهُ جَمِيعًا ۖ وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِيَنبِئَ إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا
 الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرِ جَعَلْنَاكُمْ لَفِيقًا ۚ هُوَ يَأْتِي
 أَنْزَلْنَاهُ وَيَأْتِي نَزْلًا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۚ
 وَقُرْآنَ فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مَكَّةَ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۚ
 قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُؤْتِيكُمُ اللَّهُ الْحُكْمَ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۚ إِذَا
 يُنَادِي عَلَيْهِمْ أَنْ يُخْرِجُوا لِيُؤْذَنَ لِلَّذِينَ آمَنُوا ۚ وَهُمْ يَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا
 إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۚ وَيُخْرِجُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا ۚ
 يُزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۚ قُلْ ادْعُوا اللَّهَ أَدْعُوا الرِّحْمَانَ أَيًّا مَا
 تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ فِي الْإِسْمِ ۚ وَلَا
 تَخَافُوهَا وَابْتَغُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۚ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي
 لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا ۖ وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمَلَكُوتِ ۖ وَلَمْ يَكُن
 لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلِيلِ ۖ وَكَبِيرًا ۚ
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ وَبِالْحَمْدِ لِلَّهِ الَّذِي
 الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ
 عِوَجًا ۚ قَلَمًا يَتَّبِعُونَ بِأُسْمِهِ يَذْكُرُونَ ۚ وَلَهُ الْغَيْبُ
 الْمُنِظَرُ ۚ وَمَا أَكْثَرُ الْعِلْمُ ۚ وَمَا أَكْثَرُ الْعِلْمُ ۚ

18 सूरतुल्-कह्फि 69

(मक्की) इस सूर: में अरबी के 6620 अक्षर, 1201 शब्द

110 आयतें और 12 रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी अन्ज़-ल अला अब्दिहिल्-किता-ब व लम् यज्जअल्-लहू

कि उन (बनी इसराईल) का उस सरज़मीन से कदम उखाड़ दे,¹ सो हमने उसको और जो उसके साथ थे सबको डुबो दिया। (103) और उसके बाद हमने बनी इसराईल को कह दिया कि (अब) तुम इस सरज़मीन में रहो (सहो) फिर जब आखिरत का वायदा आ जाएगा तो हम सबको जमा करके ला हाज़िर करेंगे। (104) और हमने इस (कुरआन) को रास्ती ही के साथ नाज़िल किया और वह रास्ती ही के साथ नाज़िल हो गया,² और हमने आपको सिर्फ़ खुशी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है।³ (105) और कुरआन में हमने जगह-जगह फ़ासला रखा, ताकि आप इसको लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ें, और हमने इसको उतारने में भी दर्जा-बदर्जा और सिलसिलेवार उतारा।⁴ (106) आप कह दीजिए कि तुम इस (कुरआन) पर चाहे ईमान लाओ चाहे ईमान न लाओ, जिन लोगों को इस (कुरआन) से पहले (दीन का) इल्म दिया गया था⁵ यह (कुरआन) जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं (107) और कहते हैं कि हमारा रब (वायदा-ख़िलाफ़ी से) पाक है, बेशक हमारे परवर्दिगार का वायदा ज़रूर पूरा ही होता है।⁶ (108) और ठोड़ियों के बल गिरते हैं रोते हुए।⁷ और यह (कुरआन मजीद) उनका खुशू “यानी आज़िज़ी” बढ़ा देता है। □ (109) आप फ़रमा दीजिए कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर पुकारो। जिस (नाम) से भी पुकारोगे, सो उसके बहुत अच्छे (अच्छे) नाम हैं।⁸ और अपनी नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़िए और न बिल्कुल चुपके-चुपके ही पढ़िए, और दोनों के दरमियान एक तरीका इख़्तियार कर लीजिए। (110) और कह दीजिए कि तमाम ख़ूबियाँ उसी अल्लाह (तआला) के लिए (ख़ास) हैं, जो न औलाद रखता है और न बादशाहत में कोई उसका शरीक है, और न कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और उसकी बड़ाइयाँ ख़ूब बयान किया कीजिए।⁹ (111) ♦

18 सूर: कहफ़ 69

सूर: कहफ़ मक्का में नाज़िल हुई। इसमें 110 आयतें और 12 रूकूअ हैं।

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान, निहायत रहम वाले हैं।

¹⁰तमाम ख़ूबियाँ उस अल्लाह के लिए (साबित) हैं जिसने अपने (ख़ास) बन्दे पर (यह) किताब नाज़िल फ़रमाई, और इसमें ज़रा भी टेढ़ नहीं रखी। (1) बिल्कुल इस्तिक़ामत “यानी मज़बूती” के साथ मौसूफ़ बनाया ताकि वह एक सख़्त अज़ाब से जो कि अल्लाह की तरफ़ से होगा, डराए। और उन ईमान वालों को जो नेक

1. यानी उनको शहर-निकाला दे दे।
2. यानी जिस तरह कातिब (लिखने वाले) के पास से चला था उसी तरह मक्तूब इलैहि (जिसके लिए लिखा था, उस) तक पहुँच गया, और दरमियान में कोई अदलाव-बदलाव और तसरूफ़ नहीं हुआ। पस वह पूरी तरह रास्ती ही रास्ती (यानी सच्चाई और दुरुस्ती) है।
3. इसलिए अगर कोई ईमान न लाए तो कुछ ग़म न कीजिए।
4. ताकि वे अच्छी तरह समझ सकें और ताकि मायने ख़ूब ज़ाहिर हो जाएँ।
5. यानी अहले किताब के इन्साफ़-पसन्द उलमा।
6. सो जिस किताब का जिस नबी पर नाज़िल करने का वायदा पहली किताबों में किया था उसको पूरा फ़रमा दिया।
7. यह सज्दे में गिरना या तो शुक्र के तौर पर है कि पहली किताबों में दर्ज वायदा पूरा हुआ, या ताज़ीम व बुजुर्गी के लिए है कि कुरआन सुनकर हैबत तारी होती है, या किनाया है इन्तिहाई यकीन और आज़िज़ी व इन्क़िसारी से। और सज्दा चेहरे के बल होता है मगर ठोड़ी के बल कहना मुबालग़े के लिए है, कि अपने चेहरे को ज़मीन और मिट्टी से इस क़द लगा देते हैं कि ठोड़ी लगने के क़रीब हो जाती है।
8. इसमें शिर्क से कोई ताल्लुक नहीं क्योंकि मुसम्मा (यानी जिसके ये नाम हैं, वह) तो एक ही है, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 532 पर)

अ-वजा (1) कय्यिमल् लियुन्जि-र बअसन् शदीदम्-मिल्लदुन्हु व युबशिशरल्-मुअमिनीनल्लजी-न यअमलूनस्सालिहाति अन्-न लहुम् अजरन् ह-सना (2) माकिसी-न फीहि अ-बदा (3) व युन्जिरल्लजी-न कालुत्त-खज़ल्लाहु व-लदा (4) मा लहुम् बिही मिन् अलिम्ब्व-व ला लि-आबाइहिम्, कबुरत् कलि-मतन् तख्रुजु मिन् अप्वाहिहिम्, इय्यकूलू-न इल्ला कज़िबा (5) फ-लअल्ल-क बाख़िअुन्-नफ़स-क अला आसारिहिम् इल्लम् युअमिन् बिहाज़ल्-हदीसि अ-सफ़ा (6) इन्ना जअल्ला मा अलल्-अर्जि जी-नतल्-लहा लिनब्बु-वहुम्

अय्युहुम् अह्सनु अ-मला (7) व इन्ना लजाअिलू-न मा अलैहा सअीदन् जुरुज़ा (8) अम् हसिब-त अन्-न अस्हाबल्-कह्फि वरकीमि कानू मिन् आयातिना अ-जबा (9) इज़् अवल्-फित्यतु इलल्-कह्फि फकालू रब्बना आतिना मिल्लदुन्-क रहम-तंव-व हय्यिअ लना मिन् अम्रिना र-शदा (10) फ-ज़रब्ना अला आज़ानिहिम् फिल-कह्फि सिनी-न अ-ददा (11) सुम्-म बअस्नाहुम् लि-नअल्-म अय्युहल्-हिज़बैनि अहसा लिमा लबिसू अ-मदा (12) ♦

नहनु नकुस्सु अलै-क न-ब-अहुम् बिल्हक्कि, इन्नहुम् फित्यतुन् आमनू बिरब्बिहिम् व जिद्नाहुम् हुदा (13) व रबत्ना अला कुलूबिहिम् इज़् कामू फकालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्जि लन्-नद्अु-व मिन् दूनिही इलाहल्-ल-कद् कुल्ला इज़न् श-तता (14) हाउला-इ कौमुनत्त-खज़ू मिन् दूनिही आलि-हतन्, लौ ला यअतू-न अलैहिम् बिसुल्लानिम्-बय्यिनिन्, फ-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़तरा अलल्लाहि कज़िबा (15) व

أَبَدًا وَيُنَادِرُ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۚ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ بِمَا يُكَفِّرُ عَلَى أَثَرِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ إِذْ يُؤْمِنُونَ بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهَا لِنَبْلُوَهُمْ إِنَّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۚ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۚ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رِزْقًا وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۚ فَفَرَّجْنَا عَلَى أَذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۚ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أُنْفَى إِلْحَاقِهِمْ أَخَصَى لِمَا كَانُوا أَمَدًا ۚ تَحَنَّنْ قَبْلُكَ يَا اللَّهُ عَلَى الْخَلْقِ ۚ إِنَّهُمْ قَتِيلَةٌ ۚ أَمْتُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَهُمْ هُدًى ۚ وَرَبُّنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذْ أَشْطَطَ ۚ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ الْهَةِ لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ وَإِذْ اغْتَرَّتْهُمُ هُمُومُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوْأَى إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ

مَرْك

काम करते हैं (यह) खुशखबरी दे कि उनको अच्छा अज्र मिलेगा। (2) जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (3) और ताकि उन लोगों को डराए जो (यूँ) कहते हैं (हम अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं) कि अल्लाह तआला औलाद रखता है। (4) न तो इसकी कोई दलील उनके पास है और न उनके बाप-दादों के पास थी। बड़ी भारी बात है जो उनके मुँह से निकलती है। (और) वे लोग बिलकुल ही झूठ बकते हैं। (5) सो शायद आप उनके पीछे ग़म से अपनी जान दे देंगे, अगर ये लोग इस (कुरआनी) मज़मून पर ईमान न लाए। (यानी इतना ग़म न करें कि हलाकत के करीब कर दे)। (6) हमने ज़मीन पर की चीज़ों को उस (ज़मीन) के लिए रौनक का सबब बनाया, ताकि हम लोगों की आजमाइश करें कि उनमें ज़्यादा अच्छा अमल कौन करता है।¹ (7) और हम इस (ज़मीन) पर की तमाम चीज़ों को एक साफ़ मैदान (यानी फ़ना) कर देंगे।² (8) क्या आप (यह) ख्याल करते हैं कि ग़ार वाले और पहाड़ वाले हमारी (कुदरत की) अजीब चीज़ों में से कुछ ताज़्जुब की चीज़ थे?³ (9) (वह वक़्त ज़िक्र के काबिल है) जबकि उन नौजवानों ने (उस) ग़ार में जाकर पनाह ली, फिर कहा कि ऐ हमारे परवर्दिग़ार! हमको अपने पास से रहमत (का सामान) अता फ़रमाइए, और हमारे लिए हमारे (इस) काम में दुरुस्ती का सामान मुहैया कर दीजिए। (10) सो हमने (उस) ग़ार में उनके कानों पर सालों तक (नींद का) पर्दा डाल दिया।⁴ (11) फिर हमने उनको उठाया ताकि हम मालूम कर लें कि उन दोनों गिरोह में से कौनसा (गिरोह) उनके रहने की मुद्दत का ज़्यादा जानकार था। (12) ♦

हम उनका वाकिआ आपसे ठीक-ठीक बयान करते हैं,⁵ वे लोग कुछ नौजवान थे, जो अपने रब पर ईमान लाए थे और हमने उनकी हिदायत में और तरक्की कर दी थी। (13) और हमने उनके दिल मज़बूत कर दिए, जबकि वे (दीन में) पक्के होकर कहने लगे कि हमारा रब (तो वह है जो) आसमानों और ज़मीन का रब है। हम तो उसको छोड़कर किसी माबूद की इबादत न करेंगे, (क्योंकि) उस सूरत में हमने यकीनन बड़ी ही बेजा बात कही। (14) यह जो हमारी कौम है, उन्होंने खुदा को छोड़कर और माबूद करार दे रखे हैं, ये लोग उच (माबूदों) पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते। तो उस शख्स से ज़्यादा कौन ग़ज़ब ढाने वाला होगा? जो अल्लाह तआला पर झूठी तोहमत लगा दे। (15) और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से भी, मगर अल्लाह तआला से (अलग नहीं हुए) तो तुम (फ़लाँ) ग़ार में चलकर पनाह लो, तुमपर तुम्हारा रब अपनी रहमत फैला देगा, और तुम्हारे लिए तुम्हारे इस काम में कामयाबी का सामान दुरुस्त कर

(पृष्ठ 530 का शेष)

नाम अनेक हैं। शिर्क जब वाजिब होता जब मुसम्मा दूसरा होता।

9. सूरः को तस्बीह (यानी अल्लाह की पाकी के बयान) से शुरू किया, तम्हीद व तकबीर (यानी अल्लाह की तारीफ़ और बड़ाई के बयान) पर ख़त्म किया। पस 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अकबर' के मायनों पर शुरूआत और ख़ात्मा हुआ।

10. इस सूरः में ये मज़ामीन हैं, तौहीद व रिसालत की बहसें, दुनिया का फ़ानी व ज़लील होना, आख़िरत की जज़ा व सज़ा, तकब्बुर व झगड़े की बुराई, शिर्क का बातिल होना, रिसालत व तौहीद और मरने के बाद ज़िन्दा होने पर दलालत करने के लिए कुछ किस्से, और इन सबके अन्दर ताल्लुक व मुनासबत जाहिर है कि इन सब मज़ामीन को ईमान के हासिल होने में दख़ल है।

1. यानी कौन तो इसके जीनत के असबाब में मशगूल होकर हक़ तआला से गाफ़िल हो जाता है, और कौन इसपर फ़रेष्टा न होकर हक़ तआला की तरफ़ मशगूल होता है। गरज़ यह आजमाइश का घर ठहरा, पस ज़रूरी हुआ कि कोई कुफ़्र में मुब्तला हो और कोई ईमान से शार्फ़ (इज़्ज़त व सम्मान) पाए, फिर ग़म बेकार है, आप अपना काम किए जाइए और उनके कुफ़्र के नतीजे की फ़िक्र में न पड़िए कि उसका मुरत्तब करना हमारा काम है।

2. कुरैश के काफ़िरों ने यहूद के सिखलाने से नुबुव्वत के इम्तिहान के लिए आपसे तीन सवाल किए थे, एक रूह के मुताल्लिक जिसका जवाब पिछली सूरः में गुज़र चुका है। एक 'अस्हाबे कहफ़' का किस्सा जिसका अभी ज़िक्र होता है। एक जुल्करनैन का किस्सा जो इस सूरः के आख़िर में आएगा। (शेष तफ़सीर पृष्ठ 534 पर)

इजिअ-तजल्लुमूहुम् व मा यअबुदू-न इल्लल्ला-ह फअवू इलल्-कस्फि यन्शुर लकुम् रब्बुकुम्
मिररह्मतिही व युहय्यिअ लकुम् मिन् अम्रिकुम् मिर्फका (16) व-तरश्शम्-स इजा
त-लअत्तजा-वरु अन् कस्फिहिम् जातल्-यमीनि व इजा ग-रबत् तकिरजुहुम् जातशिशमालि व
हुम् फी फज्वतिम् मिन्हु, जालि-क मिन् आयातिल्लाहि, मय्यहिदिल्लाहु फहुलमुस्तदि व
मय्युजिल्लल् फ-लन् तजि-द लहू
वलिह्यम्-मुर्शिदा (17) ♦

व तहसबुहुम् ऐकाजव्-व हुम्
रुकूदुव्-व नुकल्लिबुहुम् जातल्-यमीनि व
जातशिशमालि व कल्बुहुम् बासितुन्
जिराअैहि बिल्-वसीदि, लवित्त-लअ-त
अलैहिम् लवल्लै-त मिन्हुम् फिरारव्-व
लमुलिअ-त मिन्हुम् रुअबा (18) व
कजालि-क बअसनाहुम् लि-य-तसाअलू
बैनहुम्, का-ल काइलुम्- मिन्हुम् कम्
लबिस्तुम्, कालू लबिस्ना यौमन् औ
बअ-ज यौमिन्, कालू रब्बुकुम् अअलमु
बिमा लबिस्तुम् फअसू अ-ह-दकुम्
बिवरिकिकुम् हाजिही इलल्-मदीनति
फल्यन्जुर अय्युहा अज्का तआमन्
फल्यअतिकुम् बिरिज्किम्- मिन्हु
वल्य-त-❖-लत्तफ् व ला युशअिरन्-न

बिकुम् अ-हदा (19) इन्नहुम् इय्यज्हरु अलैकुम् यरजुमूकुम् औ युअीदूकुम् फी मिल्लतिहिम्
व लन् तुफिलहू इजन् अ-बदा (20) व कजालि-क अअसरना अलैहिम् लि-यअलमू अन्-न
वअदल्लाहि हक्कुव्-व अन्नस्साअ-त ला रै-ब फीहा, इज् य-तना-जअू-न बैनहुम् अम्रहुम्
फकालुबू अलैहिम् बुन्यानन्, रब्बुहुम् अअलमु बिहिम्, कालल्लजी-न ग-लबू अला अम्रिहिम्

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّيَ الْأَعْلَى
٢٢٤
الکھف

رَّحْمَتِهِ وَكَفَيْتُمْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرَفَقًا ۖ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا
طَلَعَتْ تَزَوُّجًا عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرَّبَتْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّ
يَعْقِلَ اللَّهُ فَهُوَ الْمُحِيتُ ۖ وَمَنْ يُّضِلِلْ فَكُنْ بِحُكْمِ اللَّهِ وَلِيًّا ۚ
مُرْشِدًا ۖ وَتَحْسَبُهُمْ آيَةً ۖ وَأَنْفَا ۖ وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَنُقِلْتُمْ ذَاتَ
الْيَمِينِ ۚ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ وَكَلْبُكُمْ بِأَسْطِ ذِرَاعَيْهِ ۖ يَا وَجِيدُ
لَوْ أَطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَكَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَئِلَّا لَمُنَّ مِنْهُمْ رُجْبًا ۚ
وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ كَمْ
لَبِثْتُمْ ۚ قَالُوا لَيْسَ بِيَوْمٍ ۖ أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ ۖ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا
لَبِثْتُمْ ۚ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْبَيْتِ ۖ وَلْيَخْزَ
أَيُّهَا أَزْكَ طَعَامًا ۖ فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ ۚ وَلَا يُشْعِرَنَّ
بِكُمْ أَحَدًا ۚ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُواكُمْ أَوْ يُعِيدُواكُمْ
فِي مَلَكِهِمْ وَلَنْ تُفْلَحُوا إِلَّا إِلَّا أَبَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ أَخْتَارْنَاهُمْ
لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا ۚ إِذْ
يَتَنَارَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا الْبُؤَاءُ عَلَيْكُمْ يَبْنَاءُ ۚ إِنَّهُمْ
أَعْلَمُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ

مَنْ لَكَ

देगा। (16) और (ऐ मुखातब!) जब धूप निकलती है तो तू उसको देखेगा कि वह उनके ग़ार के दाहिनी तरफ़ को बची रहती है,¹ और जब छुपती है तो (ग़ार के) बाईं तरफ़ हटी रहती है।² और वे लोग उस ग़ार की एक कुशादा जगह में थे। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसको अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाता है, और जिसको वह बेराह कर दे तो आप उसके लिए कोई मददगार, राह बताने वाला न पाएँगे। (17) ♦

और (ऐ मुखातब!) तू उनको जागता हुआ ख़्याल करता, हालाँकि वे सोते थे, और हम उनको (कभी) दाहिनी तरफ़ और (कभी) बाईं तरफ़ करवट दे देते थे, और उनका कुत्ता दहलीज़ पर अपने दोनों हाथ फैलाए हुए था। अगर (ऐ मुखातब!) तू उनको झाँककर देखता तो उनसे पीठ फेरकर भाग खड़ा होता, और तेरे अन्दर उनकी दहशत समा जाती।³ (18) और इसी तरह हमने उनको जगा दिया, ताकि वे आपस में पृथ्ठाछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि तुम (नींद की हालत में) कितनी देर रहे होगे? (उनमें से बाज़ों ने) कहा कि (ग़ालिबन) एक दिन या एक दिन से भी कुछ कम रहे होंगे। (दूसरे कुछ ने) कहा कि यह तो तुम्हारे खुदा ही को ख़बर है कि तुम कितनी देर रहे, अब अपने में से किसी को यह रुपया देकर शहर की तरफ़ भेजो, फिर वह खोज करे कि कौन-सा खाना (हलाल) है,⁴ सो उसमें से तुम्हारे पास कुछ खाना ले आए। और (सब काम) बड़ी होशियारी (से) करे, और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। (19) (क्योंकि) अगर वे लोग तुम्हारी ख़बर पा जाएँ तो तुमको या तो पत्थरों से मार डालेंगे या तुमको अपने तरीके में फिर कर लेंगे, “यानी वापस उसी में लौट लेंगे” और (ऐसा हुआ तो) तुमको कभी कामयाबी न होगी। (20) और इसी तरह हमने (लोगों को) उनपर मुत्तला कर दिया, ताकि वे लोग इस बात का यकीन कर लें कि अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है, और यह कि कियामत में कोई शक नहीं। (वह वक़्त भी ज़िक्र के काबिल है) जबकि (उस ज़माने के लोग) उनके मामले में आपस में झगड़ रहे थे,⁵ सो उन लोगों ने कहा कि उनके पास कोई इमारत बनवा दो, उनका रब उनको ख़ूब जानता था। जो लोग अपने काम पर ग़ालिब थे उन्होंने कहा⁶ कि हम तो उनके पास एक मस्जिद बना देंगे।⁷ (21) (कुछ लोग तो) कहेंगे कि वे तीन हैं चौथा उनका कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे कि वे

(पृष्ठ 532 का शेष)

3. ग़ार वाले और पहाड़ वाले दोनों एक ही जमाअत के लकब हैं।

4. यानी ऐसे बेखुद होकर सोए कि कोई आवाज़ उनके कान में न पहुँचती थी, और इसमें ज़्यादा मुद्बालगा है इससे मुकाबले में कि कहा जाए कि आँख पर पर्दा डाल दिया, क्योंकि आँख तो बिना गहरी नींद के भी चीज़ों के देखने से सुस्त और बेकार हो जाती है।

5. चूँकि लोगों ने इसको मुख्तलिफ़ तौर पर मशहूर किया था इसलिए फरमाया कि ठीक वह है जो कुरआन में है।

1. यानी ग़ार के दरवाज़े से अलग रहती है।

2. यानी उस वक़्त भी दरवाज़े पर नहीं पड़ती ताकि धूप से तकलीफ़ न हो। ग़ार की दाहिनी और बाईं जानिब या तो उसमें दाख़िल होने वाले के एतिबार से है, या उससे निकलने वाले के एतिबार से। पस पहली सूरत में वह ग़ार उत्तर मुँहाना होगा और दूसरी सूरत में दक्षिण मुँहाना। और पूरब मुँहाना होने में सूरज निकलने के वक़्त उनपर धूप पड़ती और पश्चिम मुँहाना होने में सूरज छुपने के वक़्त, और मकसूद इससे उस जगह का महफूज़ होना है।

3. ग़ालिबन ये सब चीज़ें उनकी हिफाज़त के असबाब हैं। इस आयत में आम लोगों को ख़िताब है, पस इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मरऊब होना लाज़िम नहीं आता।

4. क्योंकि उनके ग़ार में छुपने के ज़माने में बुतों के नाम पर ज़िब्ह किया हुआ गोश्त कसूरत से बिकता था।

5. वह मामला उनकी लाशों की हिफाज़त की गरज़ से या निशान के लिए यादगार कायम करने की गरज़ से उस ग़ार का मुँह बन्द करना था।

6. यानी अहले हुक्मत जो उस वक़्त दीने हक़ पर कायम थे।

7. ताकि मस्जिद इस बात की भी निशानी रहे कि ये लोग आबिद थे, उनको कोई माबूद न बना ले, जैसा कि दूसरी इमारतों में पूजा का अन्देशा है।

ल-नत्तखिजन्-न अलैहिम् मस्जिदा (21) स-यकूलू-न सला-सतुर्-राबिअुहुम् कल्बुहुम् व यकूलू-न खम्सतुन् सादिसुहुम् कल्बुहुम् रज्मम्-बिलौबि व यकूलू-न सब्अतुव्-व सामिनुहुम् कल्बुहुम्, कुरब्बी अअलमु बिअिद्दतिहिम् मा यअलमुहुम् इल्ला कलीलुन्, फला तुमारि फीहिम् इल्ला मिराअन् ज़ाहिरव्-व ला तस्तफित फीहिम् मिन्हुम् अ-हदा (22) ♦

व ला तकूलन्-न लिशैइन् इन्नी फाअिलुन् ज़ालि-क ग़दा (23) इल्ला अय्यशा-अल्लाहु, वज़्कुर-रब्ब-क इज़ा नसी-त व कुल् असा अय्यहिद-यनि रब्बी लिअकर-ब मिन् हाज़ा र-शदा (24) व लबिसू फी कस्फिहिम् सला-स मि-अतिन् सिनी-न वज़्दादू तिसूअ (25) कुलिल्लाहु अअलमु बिमा लबिसू लहू गैबुस्समावाति वल्अर्जि अब्सिर् बिही व अस्मिअ, मा लहुम् मिन् दूनिही मिव्वलियिंव्-व ला युशिरकु फी हुक्मिही अ-हदा (26) वल्लु मा ऊहि-य इलै-क मिन् किताबि रब्बि-क ला मुबदिद-ल लि-कलिमातिही, व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा (27) वस्बिर् नफ्स-क मअल्लजी-न यद्अू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अशिथि युरीदू-न वज्हहू व ला तअ्दु अैना-क अन्हुम् तुरीदु जी-नतल्-

مَسْجِدًا سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةً رَّابِعَةً كُلٌّ مِنْهُمْ يَقُولُونَ خَمْسًا سَادِسَةً
كُلٌّ مِنْهُمْ رَجَاءُ بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةً وَثَلَاثِينَ كُلٌّ مِنْهُمُ كَذِبٌ
أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ الْأُمُورِ
ظَاهِرًا وَلَا تَتَّبِعْتُمْ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا وَلَا تَقُولُوا لِمَا يُرَى إِلَّا
قَاعِلُ ذَلِكَ غَدًا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَذَلِكُمْ يَكُونُ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ
عَلَى أَنْ يَحْدِثَ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَذَا رَشَدًا وَلَيُؤْتِيَنَّهُمْ كَيْفَهُمْ
ثَلَاثَ وَائِثَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تَسْعًا قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسَ لَهُ
غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ
مِنْ قَوْلٍ وَلَا يُلْمَأْزَمُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا وَأَنْتَ لَا تَأْمُرُ بِالْإِيمَانِ
كَتَابَ رَبِّكَ الْأَمْبَدَلِ لِكَلِمَتِهِ وَلَنْ يَحْدِثَ مِنْ دُونِهِ مِثْلَهُ
وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ وَالْعَصِيِّ
يُرِيدُونَ وَحْدَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ
فُرْقَانًا وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمَرْ وَمَنْ شَاءَ
فَلْيُكْفَرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ
يَسْتَعِينُوا يُعَاثَوْا بِهَا وَالْمُهَلِّ يَتَّبِعُ الْوَجْهَ يَنْشَأُ الشَّرَابَ وَ

مَنْ

हयातिद्दुन्या व ला तुतिअ् मन् अग़फल्ना कल्बहू अन् ज़िकिरना वत्त-ब-अ हवाहु व का-न अम्रहू फुरुता ▲ (28) व कुलिल्-हक्कु मिरिब्बिकुम्, फ-मन् शा-अ फल्युअमिंव्-व मन् शा-अ फल्यक्फुर् इन्ना अअतद्ना लिज़्जालिमी-न नारन् अहा-त बिहिम् सुरादिकुहा, व इय्यस्तगीसू युगासू बिमाइन् कल्मुह्लि यशिवल्-वुजू-ह, बिअ्सशशराबु, व साअत् मुरत-फका (29) इन्ल्लजी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअु अज़्-र मन्

पाँच हैं छटा उनका कुत्ता है, (और) ये लोग बिना छाने-फटके बात को हाँक रहे हैं, और (कुछ) कहेंगे कि वे सात हैं आठवाँ उनका कुत्ता है, आप कह दीजिए कि मेरा रब उनकी गिनती खूब (सही-सही) जानता है, उन (की गिनती) को बहुत कम लोग जानते हैं¹ सो आप उनके बारे में सरसरी बहस के अलावा ज्यादा बहस न कीजिए,² और आप उनके बारे में उन लोगों में से किसी से भी न पूछिए। (22) ♦

और आप किसी काम के बारे में यूँ न कहा कीजिए कि मैं इसको कल कर दूँगा। (23) मगर खुदा तआला के चाहने को मिला दिया कीजिए, और जब आप भूल जाएँ तो अपने रब का जिक्र कीजिए और कह दीजिए कि मुझको उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (नुबुव्वत की) दलील बनने के एतिबार से इससे भी नज़दीकी बात बतला दे।³ (24) और वे लोग अपने ग़ार में (नींद की हालत में) तीन सौ वर्ष तक रहे, और नौ वर्ष ऊपर और रहे। (25) आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला उनके रहने (की मुद्दत) को ज्यादा जानता है, तमाम आसमानों और ज़मीन का ग़ैब (का इल्म) उसी को है, वह कैसा कुछ देखने वाला और कैसा-कुछ सुनने वाला है। उनका अल्लाह तआला के सिवा कोई भी मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने हुक्म में शरीक करता है। (26) और आपके पास जो आपके रब की किताब वहाँ के ज़रिये से आई है, (लोगों के सामने) पढ़ दिया कीजिए, उसकी बातों को (यानी वायदों को) कोई बदल नहीं सकता, और आप अल्लाह तआला के सिवा और कोई पनाह की जगह न पाएँगे। (27) और आप अपने को उन लोगों के साथ रोके रखा कीजिए जो सुबह व शाम (यानी हमेशा) अपने रब की इबादत सिर्फ़ उसकी खुशी हासिल करने के लिए करते हैं,⁴ और दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक के ख्याल से आपकी आँखें (यानी तवज्जोह) उनसे हटने न पाएँ⁵ और ऐसे शख्स का कहना न मानिए जिसके दिल को हमने अपनी याद से गाफ़िल कर रखा है, और वह अपनी नफ़्सानी ख्वाहिश पर चलता है, और उसका (यह) हाल हद से गुज़र गया है। ▲ (28) और आप कह दीजिए कि (यह दीने) हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से (आया) है, सो जिसका जी चाहे ईमान ले आए और जिसका जी चाहे काफ़िर रहे,⁶ बेशक हमने ऐसे जालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, कि उस (आग) की क्नातें उनको घेरे होंगी।⁷ और अगर (प्यास से) फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद-रसी की

1. चूँकि उसके निशानदेही से कोई ख़ास फ़ायदा हासिल न होता था लिहाज़ा इस इख़्तिलाफ़ का कोई वाज़ेह फ़ैसला आयत में नहीं फ़रमाया, लेकिन रिवायतों में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु व अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल आया है कि मैं उन्हीं क़लील (थोड़े लोगों) में से हूँ और वे सात थे, और आयत में भी इशारे के तौर पर इसका सही होना मालूम होता है, क्योंकि इस आख़िरी कौल को नक़ल करके इसको रद्द नहीं फ़रमाया।
2. सरसरी बहस से यह मुराद है कि आप वहाँ के मुताबिक़ उनके सामने किस्सा बयान कर दीजिए और ज्यादा सवाल व जवाब न कीजिए।
3. आपसे रुह, अस्थाबे कहफ़ और जुल्करनैन का किस्सा पूछा गया तो आपने वहाँ के भरोसे पर ज़बान से इन्शा-अल्लाह कहे बग़ैर वायदा फ़रमाया कि कल जवाब दूँगा। चुनौचे पन्द्रह दिन तक वहाँ नाज़िल न हुई और आपको बड़ा ग़म हुआ, उसके बाद जवाब के साथ यह हुक्म भी नाज़िल हुआ कि ये लोग आपसे कोई बात जवाब के काबिल दरियाफ़्त करें और आप जवाब का वायदा करें तो उसके साथ इन्शा-अल्लाह तआला या इसके मायने जैसी कोई बात ज़रूर मिला लिया करें।
4. 'वसिबर नफ़्स-क....' का यह मतलब नहीं है कि जब तक ये लोग न उठेंगे आप बैठे रहना कीजिए, बल्कि मतलब यह है कि पहले ही की तरह उनको अपनी लम्बी बैठक से सम्मान दीजिए।
5. रौनक के ख्याल से यह मुराद है कि सरदार मुसलमान हो जाएँ तो इस्लाम में ज्यादा जमाल व कमाल होगा। पस इसमें बतला दिया कि इस ज़ाहिरी सामान से इस्लाम का जमाल व कमाल नहीं है बल्कि इसका मदार इख़्लास और कामिल इताअत पर है, चाहे ग़रीबों ही से हो।
6. हमारा कोई नफ़ा व नुक़सान नहीं बल्कि ईमान न लाने से अपना ही नुक़सान और ईमान लाने से अपना ही नफ़ा है।
7. यानी वे क्नातें भी आग ही हैं जैसा कि हदीस में है, और उसमें से निकल न सकेंगे।

अहस्स-न अ-मला (30) उलाइ-क लहुम् जन्नातु अद्निन् तजरी मिन् तस्तिहिमुल्-अन्हारु
युहल्लौ-न फीहा मिन् असावि-र मिन् ज-हबिन्-व यल्बसू-न सियाबन् खुज़रम्-मिन्
सुन्दुसिन्-व इस्तब्रकिम्-मुत्तकिई-न फीहा अलल् अराइकि, निअमस्सवाबु, व हसुनत्
मुरत्-फका (31) ♦

वज़िर्ब लहुम् म-सलर्-रजुलैनि
जअल्ला लि-अ-हदिहिमा जन्नतैनि मिन्
अअनाबिन्-व हफफ्नाहुमा बिनखिलिन्-व
जअल्ला बैनहुमा जरआ (32) किल्लल्-
जन्नतैनि आतत् उकु-लहा व लम्
तज़िल्म मिन्हु शैअन्-व फज्जरना
खिला-लहुमा न-हरा (33) व का-न
लहू स-मरुन् फका-ल लिसाहिबिही व
हु-व युहाविरुहू अ-न अक्सरु मिन्-क
मालन्-व अ-अज़्जु न-फरा (34) व
द-खा-ल जन्नतहू व हु-व ज़ालिमुल्
लिनफ़िसही का-ल मा अज़्जुन्नु अन्
तबी-द हाज़िही अ-बदा (35) व मा
अज़्जुन्नुस्सा-अ-त काइ-मतन्-व
ल-इरुदित्तु इला रब्बी ल-अजिदन्-न
खैरम्-मिन्हा मुन्क-लबा (36) का-ल
लहू साहिबुहू व हु-व युहाविरुहू
अ-कफर्-त बिल्लज़ी ख-ल-क-क मिन्

तुराबिन् सुम्-म मिन् नुफ़तिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला (37) लाकिन्-न हुवल्लाहु रब्बी व
ला उशिरकु बिरब्बी अ-हदा (38) व लौ ला इज़् दखल्-त जन्न-त-क कुल्-त मा
शा-अल्लाहु ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि इन् तरनि अ-न अकल्-ल मिन्-क मालन्-व
व-लदा (39) फ-असा रब्बी अय्युअति-यनि खैरम्-मिन् जन्नति-क व युरसि-ल अलैहा
हुस्बानम्-मिनस्समा-इ फ़तुस्बि-ह सअीदन् ज-लका (40) औ युस्बि-ह माउहा ग़ौरन् फ-लन्

سَمِعْنَا الَّذِي دَا
٢٢٩
كَتَبْنَا
سَأَلْتُ مُرْتَفَقًا إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ
مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ يُخَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَكْبَسُونَ ثِيَابًا
خُفْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَبْغِ
الْقَوَابِ وَحُضُنْتُ مُرْتَفَقًا ۖ وَأَصْرِبَ لَهُمْ مَثَلًا لِكُلِّ بَشَرٍ جَعَلْنَا
لِكُلِّ بَشَرٍ جَنَّاتٍ مِنْ غَنَابٍ وَحَقِيقَتهما بِغُلٍ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا رِجًّا ۖ وَكَلَّمَا الْبَشَرَيْنِ اتَّكَا ۖ وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا ۖ
فَجَزَا خِلْمَهُمَا نَارًا ۖ وَكَانَ لَهُمْ فِيهَا إِصْحَابُهُ وَهُوَ يُحَاوَرُهُ
أَنَّا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا ۖ وَأَعْرَضُوا عَنْ نِقْمَتِ اللَّهِ ۖ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ
قَالَ مَا أَكُنْتُ بِمَنْعِكُمْ أَنْ تَبْتَغُوا هَذِهِ أَبَدًا ۖ وَمَا أَكُنْتُ بِالسَّاعَةِ قَائِمًا ۖ
لَكِنْ أَدْعُو إِلَى رَبِّي لِأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۖ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ
وَهُوَ يُحَاوَرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نَظْفٍ ۖ
ثُمَّ سَوَّكَ لَجُلًا ۖ لَكِنَّهُ هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أَشْرُ بِرَبِّي أَحَدًا ۖ وَكَوَلَا
إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا هَٰذَا إِلَّا الْفَوْزَةُ ۖ إِلَّا بِاللَّهِ إِنْ تَرَنِ أَنَا
أَكَلٌ مِنْكَ مَالًا ۖ وَلَدًا ۖ فَعَسَى رَبِّي أَنْ يُوَفِّيَنَّ خَيْرًا مِنْ خَيْرِكَ
وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحُ صَعِيدًا زَلَقًا ۖ وَ

مَرْك

जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा, मुँहों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और (दोज़ख़ भी) क्या ही बुरी जगह होगी। (29) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसों का बदला बर्बाद न करेंगे जो अच्छी तरह काम को करे। (30) (पस) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, उनके (ठिकानों के) नीचे नहरें बहती होंगी, उनको वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और हरे रंग के कपड़े¹ बारीक और मोटे रेशम के पहनेंगे, वहाँ मसहरियों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी जगह है। (31) ♦

और आप उन लोगों से दो शख्सों का हाल बयान कीजिए। उन दो शख्सों में से एक को हमने दो बाग़ अँगूर के दे रखे थे, और उन दोनों (बाग़ों) का खजूर के पेड़ों से घेरा बना रखा था, और उन दोनों के दरमियान में खेती भी लगा रखी थी। (32) (और) दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे, और किसी के फल में ज़रा भी कमी न रहती थी, और उन दोनों के दरमियान में नहर चला रखी थी। (33) और उस शख्स के पास (और भी) मालदारी का सामान था, सो वह (एक बार) अपने उस (दूसरे) मुलाकाती से इधर-उधर की बातें करते-करते कहने लगा कि मैं तुझसे माल में भी ज़्यादा हूँ और मजमा भी मेरा ज़बरदस्त है। (34) और वह अपने ऊपर (कुफ़ का) जुर्म कायम करता हुआ अपने बाग़ में पहुँचा, (और) कहने लगा कि मेरा तो ख्याल नहीं है कि यह (बाग़ मेरी ज़िन्दगी में) कभी भी बर्बाद हो।² (35) और मैं कियामत को नहीं ख्याल करता कि आएगी, और अगर मैं अपने रब के पास पहुँचाया गया तो ज़रूर इस (बाग़) से बहुत ज़्यादा अच्छी जगह मुझको मिलेगी। (36) उससे उसके मुलाकाती ने (जो कि दीनदार और ग़रीब था) जवाब के तौर पर कहा, क्या तू उस (पाक) ज़ात के साथ कुफ़ करता है जिसने (पहले) तुझको मिट्टी से पैदा किया,³ फिर नुत्फ़े से,⁴ फिर तुझको (सही व सालिम) आदमी बनाया। (37) लेकिन (मैं तो यह अक़ीदा रखता हूँ कि) वह (यानी) अल्लाह तआला मेरा (हकीकी) रब है, और मैं उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। (38) और तू जिस वक़्त अपने बाग़ में पहुँचा था तो तूने यूँ क्यों न कहा कि जो अल्लाह तआला को मन्ज़ूर (होता) है (वही होता है, और) अल्लाह तआला की मदद के बग़ैर (किसी में) कोई ताक़त नहीं, अगर तू मुझको माल और औलाद में कमतर देखता है (39) तो (मुझको वह वक़्त) नज़दीक (मालूम होता) है कि मेरा रब मुझको तेरे बाग़ से अच्छा (बाग़) दे दे, और इस (तेरे बाग़) पर कोई (तक्दीरी) आफ़त आसमान से भेज दे, जिससे वह (बाग़) यकायक एक साफ़ मैदान (होकर) रह जाए। (40) या (उससे) इसका पानी बिलकुल अन्दर (ज़मीन में) उतर

1. यह जो फ़रमाया कि हरा लिबास होगा, इससे इसी का ख़ास करना मकसूद नहीं क्योंकि आयतों में वाज़ेह है कि जिस चीज़ को जी चाहेगा वह मिलेगी।
2. यह उसने तौहीद के मसले में कलाम किया कि तू जो दुनिया को बनाने वाले का और उसकी कुदरत वग़ैरह का कायल है, सो मैं नहीं समझता कि तबई असबाब को कोई नाकारा कर सकता है, और इस बाग़ वग़ैरह का कारख़ाना, जिसके आबाद रहने के सारे असबाब जमा हैं, किस तरह इसके वीरान हो जाने का गुमान व ख्याल किया जा सकता है।
3. जो कि तेरा दूर का मादा है आदम अलैहिस्सलाम के वास्ते से।
4. जो कि तेरा करीबी मादा है माँ के रहम (यानी पेट या बच्चेदानी) में।

तस्तती-अ लहू त-लबा (41) व उही-त बि-स-मरिही फ-अस्ब-ह युक्ल्लिबु कफफैहि अला
मा अन्फ-क फीहा व हि-य खावि-यतुन् अला अरुशिहा व यकूलु यालैतनी लम् उशिरक्
बिरब्बी अ-हदा (42) व लम् तकुल्लहू फि-अतुय्यन्सुरुनहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का-न
मुत्तसिरा (43) हुनालिकल्-वला-यतु लिल्लाहिल्-हक्कि, हु-व खैरुन् सवाबंव-व खैरुन्
अक्बा (44) ❖

वज्रिब् लहुम् म-सलल्-हयातिदुन्या
कमाइन् अन्जल्नाहु मिनस्समा-इ
फख्त-ल-त बिही नबातुलअर्जि फअस्ब-ह
हशीमन् तज्रुहुरियाहु, व कानल्लाहु
अला कुल्लि शैइम्-मुक्तदिरा (45)
अल्मालु वल्बनू-न ज़ीनतुल्-हयातिदुन्या
वल्बाकियातुस्सालिहातु खैरुन् अिन्-द
रब्बि-क सवाबंव-व खैरुन् अ-मला
(46) व यौ-म नुसय्यिरुल्-जिबा-ल व
तरल्-अर्-ज़ बारि-ज़तंव-व हशरूनाहुम्
फ-लम् नुगादिर् मिन्हुम् अ-हदा (47)
व अुरिज़ू अला रब्बि-क सफफन्,
ल-कद् जिअतुमूना कमा खलक्नाकुम्
अव्व-ल मरतिम् बल् जअम्तुम् अल्-लन्
नज़-अ-ल लकुम् मौअिदा (48) व
वुजिअल्-किताबु फ-तरल्-मुज्रिमी-न
मुशिफकी-न मिम्मा फीहि व यकूलू-न

यावैल-तना मा लि-हाज़ल्-किताबि ला युगादिरु सगी-रतंव-व ला कबी-रतन् इल्ला अहसाहा
व व-जदू मा अमिलू हाज़िरन्, व ला यज़्लिमु रब्बु-क अ-हदा (49) ❖

व इज़् कुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ-स-जदू इल्ला इब्नी-स, का-न मिनल्-
जिन्नि फ-फ-स-क अन् अमिर रब्बिही, अ-फ-तत्तखिज़ूनहू व जुरिय्य-तहू औलिया-अ मिन्
दूनी व हुम् लकुम् अदुव्वुन्, बिअ-स लिज़्जालिमी-न ब-दला (50) मा अशहत्तुहुम् खल्कस्-

يُصِصِمَ مَا وَهَمَ غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۖ وَأُحِيطَ بِمُكْرِهِ فَاصْبِرْ
يَقْلَبُ كُفْرَهُ عَلَى مَا اتَّفَقَ فِيهَا وَهُوَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهِ وَيَقُولُ
يَلَيْتَنِي لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۖ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ فِتْنَةٌ يَبْصُرُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنْجِرًا ۚ هَٰذَا كَلَامُكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۖ هُوَ خَيْرٌ
تَوَابًا وَخَيْرٌ عَقْبًا ۖ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا
أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا
تَذَرُوهُ الرِّيحُ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۚ الْهَالِكُ وَالْبَائِتُونَ
زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ تَوَابًا
وَخَيْرٌ أَمَلًا ۖ وَيَوْمَ نُسْخِرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۖ وَوَدَّ
حَشَرُهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۖ وَعَرَضُوا عَلَى رَبِّكَ صَلَاحًا
لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ
لَكُمْ مَوْعِدًا ۖ وَوَضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِنْهَا
فِيهِمْ وَيَقُولُونَ يَوْمَئِذٍ نَبَأُ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا
كَبِيرَةً إِلَّا أُخْصِيَهَا ۖ وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاجِرًا ۖ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
أَحَدًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ
كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ ۖ أَفَتَتَذَكَّرُونَ ذُلَّيْنَا الْأَوَّلَ

(कर सूख) जाए, फिर तू उस (के लाने और निकालने) की कोशिश भी न कर सके।¹ (41) और उस शख्स के माल व दौलत के सामान को (आफ़त ने) आ घेरा² फिर उसने जो कुछ उस (बाग़) पर ख़र्च किया था, उसपर हाथ मलता रह गया, और वह (बाग़) अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ (पड़ा) था। और कहने लगा, क्या ख़ूब होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता।³ (42) और उसके पास कोई (ऐसा) मजमा न हुआ कि अल्लाह तआला के सिवा उसकी मदद करता, और न वह खुद (हमसे) बदला ले सका। (43) ऐसे मौके पर मदद करना अल्लाह बरहक ही का काम है, उसी का सवाब सबसे अच्छा है और उसी का नतीजा सबसे अच्छा है।⁴ (44) ♦

और आप उन लोगों से दुनिया की ज़िन्दगी की हालत बयान फ़रमाइए (कि वह ऐसी है) जैसे आसमान से हमने पानी बरसाया हो, फिर उसके ज़रिये से ज़मीन की नबातात “यानी घास और पेड़-पौधे” ख़ूब घनी हो गई हो, फिर वह चूरा-चूरा हो जाए कि उसको हवा उड़ाए लिए फिरती हो,⁵ और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखते हैं। (45) माल और औलाद दुनिया की ज़िन्दगी की एक रौनक हैं और (जो) नेक अमाल बाक़ी रहने वाले हैं वे आपके रब के नज़दीक सवाब के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं, और उम्मीद के एतिबार से भी (हज़ार दर्जा) बेहतर हैं।⁶ (46) और (उस दिन को याद करना चाहिए) जिस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे, और आप ज़मीन को देखेंगे (कि खुला मैदान पड़ा है) और हम उन सबको जमा कर देंगे, और उनमें से किसी को भी न छोड़ेंगे। (47) और (सबके-सब) आपके रब के सामने बराबर-बराबर खड़े करके पेश किए जाएंगे। (देखो, आख़िर) तुम हमारे पास आए (भी) जैसा कि हमने तुमको पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुम (यही) समझते रहे कि हम तुम्हारे लिए कोई वायदा किया गया वक़्त न लाएंगे। (48) और नामा-ए-आमाल रख दिया जाएगा, तो आप मुज़्रिमों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ (लिखा) होगा उससे डरते होंगे, और कहते होंगे कि हाय हमारी कम-बख़्ती इस नामा-ए-आमाल का अज़ीब हाल है कि बेलिखे हुए न कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा गुनाह (छोड़ा) और जो कुछ उन्होंने किया था वह सब (लिखा हुआ) मौजूद पाएंगे। और आपका रब किसी पर जुल्म न करेगा।⁷ (49) ♦

और जबकि हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के सामने सज्दा करो, सो सबने सज्दा किया, अलावा इब्लीस के, वह जिन्नों में से था। सो उसने अपने रबके हुक्म को न माना। सो क्या फिर भी तुम उसको और उसके पैरोकारों को दोस्त बनाते हो मुझको छोड़कर, हालाँकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं।⁸ ये ज़ालिमों के

1. हासिल यह हुआ कि तेरा शक व शुब्हा करने का मन्शा यह दौलत व जायदाद है जो तेरे पास है और मेरे पास नहीं, यह समझना ही ग़लत है। क्योंकि अब्बल तो यहाँ ही मुम्किन है कि उल्टा हो जाए, फिर कभी न कभी तो यह फ़ना होने वाली ही है और आख़िरत की नेमतें कभी फ़ना न होंगी, इसलिए एतिबार वहाँ का है यहाँ का नहीं।

2. मालूम नहीं क्या आफ़त थी मगर ज़ाहिरन उसके ग़ैर-वाज़ेह (अस्पष्ट) होने से मालूम होता है कि कोई बड़ी आफ़त थी।

3. मुराद यह कि कुफ़्र न करता। मतलब यह मालूम होता है कि वह समझ गया कि यह आफ़त कुफ़्र के इन्तिकाम में आई है इसलिए उसपर शर्मिन्दा होता है कि अगर कुफ़्र न करता तो या तो आफ़त न आती या आती तो उसका बदल आख़िरत में मिलता, अब दुनिया व आख़िरत दोनों जगह घाटे वाली बात हो गई। ये बातें मोमिन से उसके कान में पड़ी होंगी। और इससे यह लाज़िम नहीं आता कि वह मोमिन हो गया हो, क्योंकि यह शर्मिन्दगी नुक़सान की वजह से है कुफ़्र के बुरा होने की वजह से नहीं।

4. यानी अगर उसके मक़बूल बन्दों का कोई नुक़सान हो जाता है तो दोनों ज़हान में नेक बदला मिलता है, बख़िलाफ़ काफ़िर के कि बिलकुल घाटे में रह गया।

5. यही हाल दुनिया का है कि आज हरी-भरी नज़र आती है फिर इसका नाम व निशान भी न रहेगा।

6. यानी नेक आमाल पर जो-जो उम्मीदें बाँधी होती हैं वे आख़िरत में पूरी होंगी और उससे भी ज़्यादा सवाब मिलेगा, बख़िलाफ़ दुनिया के फ़ायदे और सामान के कि उससे खुद दुनिया में उम्मीदें पूरी नहीं होती और आख़िरत में तो गुन्जाइश ही नहीं, (शेष तफ़सीर पृष्ठ 542 पर)

समावाति वल्अर्जि व ला खल्-क अन्फुसिहिम् व मा कुन्तु मुत्तखिजल्-मुजिल्ली-न अजुदा
(51) व यौ-म यकूलु नादू शु-रकाइ-यल्लजी-न जअम्तुम् फ-दऔहुम् फ-लम् यस्तजीबू
लहुम् व जअल्ना बैनहुम् मौबिका (52) व र-अल् मुजिरमूनन्ना-र फ-जन्नू अन्नहुम्
मुवाकिअूहा व लम् यजिदू अन्हा मस्रिफा (53) ❖

व ल-कद् सरफ़ना फी हाज़ल्-
कुरआनि लिन्नासि मिन् कुल्लि
म-सलिन्, व कानल्-इन्सानु अक्स-र
शैइन् ज-दला (54) व मा म-नअन्-
ना-स अय्युअमिन् इज़ जाअहुमुल्हुदा व
यस्तफ़िरु रब्बहुम् इल्ला अन् तअत्ति-
यहुम् सुन्नतुल्-अव्वली-न औ यअत्ति-
यहुमुल्-अज़ाबु कुबुला (55) व मा
नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबशिशरी-न
व मुन्जिरी-न व युजादिलुल्लजी-न
क-फ़रु बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू
बिहिल्हक्-क वत्त-खज़ू आयाती व मा
उन्जिरु हुजुवा (56) व मन् अज़लमु
मिम्-मन् जुविक-र बिआयाति रब्बिही
फ-अअर-ज अन्हा व नसि-य मा
कदमतु यदाहु, इन्ना जअल्ना अला
कुलूबिहिम् अकिन्न-तन् अय्यफ़कहूह व
फी आजानिहिम् वकरन्, व इन् तद्अुहुम् इलल्-हुदा फ-लंय्यस्तदू इज़न् अ-बदा (57) व
रब्बुकल्-गफ़ूरु ज़रह्मति, लौ युआखिजुहुम् बिमा क-सबू ल-अज्ज-ल लहुमुल्-अज़ा-ब,
बल्-लहुम् मौअिदुल्-लंय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला (58) व तिल्कल्-कुरा अह्लकनाहुम्
लम्मा ज-लमू व जअल्ना लिमह्लिकिहिम् मौअिदा (59) ❖

व इज़ का-ल मूसा लि-फ़ताहु ला अब्रहु हत्ता अब्लु-ग मज्म-अल् बहरैनि औ अम्जि-य

مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝ مَا أَنشَأْنَاهُمْ
خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُمْ مُتَعَدِّينَ
الْمُضِلِّينَ عَصَا ۝ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝ وَرَأَى الْجَمُوعُونَ
التَّارِظِينَ أَنَّهُمْ مُوَاظِعُوهُمْ وَكُنُوا لَهُمْ حَصِرًا ۝ وَلَقَدْ
كَرِهْنَا فِي هَذِهِ الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَلَكٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ
شَيْءٍ جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ يُسْتَغْفِرُوا
رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ فُبُلًّا ۝
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آلِيَهُمْ
هُزُؤًا ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ
مَا قَدْ مَتَّ يَدَهُ إِنَّا جَعَلْنَا أَعْيُنَهُمْ كَتِفًا ۝ أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي
أَذَانِهِمْ وَقَفَرُوا وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِلَّا أَلْفَاكًا ۝
وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤْخِذُكُمْ بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلُ لَهُمْ
الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ مِنْ دُونِهِ مَوْعِدًا ۝ وَتِلْكَ
الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِهَيْكَلِهِمْ مَوْعِدًا ۝ وَلَئِنْ قَالُوا

लिए बहुत बुरा बदल है। (50) मैंने उनको न तो आसमान और ज़मीन के पैदा करने के वक़्त बुलाया और न खुद उनके पैदा करने के वक़्त (बुलाया) और मैं ऐसा (आज़िज़) न था कि गुमराह करने वालों को अपना (हाथ व) बाज़ू बनाता।¹ (51) और उस दिन (को याद करो कि) हक़ तआला फ़रमाएगा कि जिनको तुम हमारा शरीक समझा करते थे, उनको पुकारो। पस वे उनको पुकारेंगे, सो वे उनको जवाब ही न देंगे, और हम उनके दरमियान में एक आड़ कर देंगे। (52) और (उस वक़्त) मुज़िम लोग दोज़ख़ को देखेंगे, फिर यकीन करेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं, और उससे बचने की कोई राह न पाएँगे। (53) ♦

और हमने इस कुरआन में लोगों के वास्ते हर किस्म के (ज़रूरी) उम्दा मज़मून तरह-तरह से बयान फ़रमाए हैं और (इसपर भी इनकार करने वाला) आदमी झगड़े में सबसे बढ़कर है। (54) और लोगों को, इसके बाद कि उनको हिदायत पहुँच चुकी, ईमान लाने से और अपने परवर्दिगार से (कुफ़्र वग़ैरह की) मग़फ़िरत माँगने से और कोई चीज़ रोक नहीं रही, इसके अलावा कि (उनको इसका इन्तिज़ार हो) कि अगले लोगों के जैसा मामला उनको भी पेश आए, या यह कि (अल्लाह का) अज़ाब उनके सामने आकर खड़ा हो।² (55) और रसूलों को तो हम सिर्फ़ खुशख़बरी देने वाले और डराने वाले (बनाकर) भेजा करते हैं, और काफ़िर लोग नाहक़ की बातें पकड़-पकड़कर झगड़े निकालते हैं ताकि उसके ज़रिये से हक़ बात को बिचला दें। और उन्होंने मेरी आयतों को और जिस (अज़ाब) से उनको डराया गया था उसको दिल्लगी बना रखा है। (56) और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसको उसके रब की आयतों से नसीहत की जाए, फिर वह उससे मुँह फेर ले और जो कुछ अपने हाथों (गुनाह) समेट रहा है, उस (के नतीजे) को भूल जाए। हमने उस (हक़ बात) के समझने से उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, और (उसके सुनने से) उनके कानों में डाट (दे रखी) है, और (इसी वजह से) अगर आप उसको सही रास्ते की तरफ़ बुलाएँ तो ऐसी हालत में हरगिज़ भी रास्ते पर न आएँ। (57) और आपका रब बड़ा मग़फ़िरत करने वाला (और बड़ा) रहमत वाला है। अगर उनसे उनके आमाल पर पकड़ करने लगता तो उनपर फ़ौरन ही अज़ाब ला देता, (मगर ऐसा नहीं हुआ) बल्कि उनके वास्ते एक तय वक़्त है, (यानी क़ियामत का दिन) कि उससे इस तरफ़ (यानी पहले) कोई पनाह की जगह नहीं पा सकते।³ (58) और ये बस्तियाँ, (जिनके किस्से मशहूर व मज़कूर हैं) जब उन्होंने (यानी उनके रहने वालों ने) शरारत की तो हमने उनको हलाक कर दिया,⁴ और हमने उनके हलाक होने के लिए वक़्त तय किया था।⁵ (59) ♦

(पृष्ठ 540 का शेष) इसलिए दुनिया से दिलचस्पी या इसपर फ़ख़्र न करना चाहिए बल्कि आख़िरत का एहतिमाम करना चाहिए।

7. कि बिना किया हुआ गुनाह लिख ले, या की हुई नेकी जबकि शतों के साथ की जाए, न लिखे। ख़ुलासा यह कि मुशिरकों के सरदार जिस चीज़ पर फ़ख़्र करते हैं उन्होंने उसका हाल और अन्जाम सुन लिया, और जिन ग़रीबों को हकीर समझते हैं उनके नेक आमाल का कभी ख़त्म न होना मालूम कर लिया, अब भी अक्ल न आए तो गोली मारिए।
8. यानी मेरी पैरवी को छोड़कर अक़ीदे में उनकी पैरवी करते हो, जो कि बिल्कुल शिर्क है।
1. यानी मददगार तो वह दूँडे जो कादिर न हो।
2. मतलब यह है कि क्या इसलिए ईमान नहीं लाते कि ऐसी चीज़ें ज़ाहिर हों तब ईमान लाएँगे जैसा कि उनके हाल से ज़ाहिर होता है, और कह भी डालते थे कि ऐसी चीज़ें ज़ाहिर क्यों नहीं होतीं।
3. पस मोहलत इसलिए दी है कि अगर मुसलमान हो जाएँ तो उनकी मग़फ़िरत कर दूँगा, दूसरे खुद रहमत भी इसका तकाज़ा करती है कि ईमान न लाने पर भी दुनिया में सख़्त अज़ाब से मोहलत दी जाए।
4. पस कुफ़्र का हलाकत का सबब होना साबित हुआ।
5. ऊपर काफ़िरों के सरदारों की इस दरख़्वास्त की बुराई थी कि हमारी तालीम की मज्लिस में ग़रीब मुसलमान न रहने पाएँ। आगे हज़रत मूसा के एक किस्से से इसके बुरा होने को और ज़्यादा वाज़ेह किया है, कि उन्होंने तो अपने से छोटे को बाज़ खास उलूम में उस्ताद बनाने से भी शर्म नहीं फ़रमाई और तुमको इन ग़रीबों के तालीम में शरीक होने से शर्म आती है। और साथ ही इस मकसूद के साथ इस किस्से में आपकी नुबुव्वत पर भी दलालत हो गई जिसकी वजह ज़ाहिर है।

हुकुबा (60) फ-लम्मा ब-लगा मज्म-अ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फत्त-ख-ज सबीलहू
 फिलबहिर स-रबा (61) फ-लम्मा जा-वजा का-ल लि-फताहु आतिना गदा-अना, ल-कद्
 लकीना मिन् स-फरिना हाजा न-सबा (62) का-ल अ-रऐ-त इज् अवैना इलस्सखरति
 फ-इन्नी नसीतुल्-हू-त व मा अन्सानीहु इल्लशैतानु अन् अज्कु-रहू वत्त-ख-ज सबी-लहू
 फिलबहिर अ-जबा (63) का-ल
 जालि-क मा कुन्ना नबिा फरतद्दा अला
 आसारिहिमा क-ससा (64) फ-व-जदा
 अब्दम्-मिन् अिबादिना आतैनाहु
 रहम-तम् मिन् अिन्दिना व अल्लम्नाहु
 मिल्लदुन्ना अिल्मा (65) का-ल लहू
 मूसा हल् अत्तबिअु-क अला अन्
 तुअल्लि-मनि मिम्मा अुल्लिम्-त रुश्दा
 (66) का-ल इन्न-क लन् तस्तती-अ
 मअि-य सबरा (67) व कै-फ तस्बिरु
 अला मा लम् तुस्ति बिही खुबरा (68)
 का-ल स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु
 साबिरंव-व ला अअसी ल-क अम्रा
 (69) का-ल फ-इनिन्न-बअतनी फला
 तस्अल्नी अन् शैइन् हत्ता उहिद-स
 ल-क मिन्हु जिक्का (70) ❖

سُبْحَانَ الَّذِي هُوَ
 ٢٤٢
 الْكَافِرُ
 مُوسَى لَقْنَهُ لَا أَبْرَحَ حَتَّى أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا
 فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَيْبُلَهُ فِي الْبَحْرِ
 سُرًّا ۖ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لَقْنَهُ اتَّبَعْتُمَا قَوْمًا كَذِبًا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا
 هَذَا نَصَبًا ۖ قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي سَمِعْتُ الْهَوْتَ
 وَمَا أَسْمِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَيْبُلَهُ فِي الْبَحْرِ
 عِمًّا ۖ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْرَأُ فَاثْبِتْ وَارْتَدَّ عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا ۖ
 فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا اتَّبِعَهُ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِنَا وَكَانَ مِنَ الْمُدْقِقِينَ
 عَلِيمًا ۖ قَالَ لَهُ مُوسَى هَلْ أَتَعْلَمُ عَلَى أَنْ تَعْلَمَ مِنِّي وَمَا عَلِمْتَ
 رَشْدًا ۖ قَالَ إِيَّاكَ أَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَى مَا
 لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۖ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنِ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي
 لَكَ أَمْرًا ۖ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ وَحَتَّى أَخْبِرَكَ
 لَوْ كَانَ مِنْهُ ذِكْرٌ ۖ فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ
 اخْرُجْ هَا لِلْغَرْقِ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ
 لَكَ إِن لَّكَ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَ
 لَكَرْهِيغْنِي مِنْ أَمْرِي عَسَى ۖ فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّى إِذَا قَفَا عِلْمًا فَفَتَحَا
 ۖ قَالَ أَقْبَلْتُ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا ذِكْرًا ۖ

और (वह वक्त याद करो) जबकि मूसा ने अपने खादिम से फरमाया कि मैं (इस सफर में) बराबर चला जाऊँगा, यहाँ तक कि उस मौके पर पहुँच जाऊँ जहाँ दो दरिया आपस में मिले हैं, या (यूँ ही) लम्बे अर्से तक चलता रहूँगा। (60) पस जब (चलते-चलते) दोनों दरियाओं के जमा होने के मौके पर पहुँचे, अपनी मछली को दोनों भूल गए और उस (मछली) ने दरिया में अपनी राह ली और चल दी। (61) फिर जब दोनों (वहाँ से) आगे बढ़ गए (तो मूसा ने) अपने खादिम से फरमाया कि हमारा नाश्ता तो लाओ, हमको तो इस सफर में (यानी आजकी मन्ज़िल में) बड़ी तकलीफ़ पहुँची। (62) (खादिम ने) कहा, कि (लीजिए) देखिए (अजीब बात हुई) जब हम उस पत्थर के करीब ठहरे थे, सो मैं (उस) मछली (के जिक्र करने) को भूल गया और मुझको शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उसका जिक्र करता, और (वह किस्सा यह हुआ कि) उस (मछली) ने (ज़िन्दा होकर) दरिया में अजीब तौर पर अपनी राह ली। (63) (मूसा अलैहिस्सलाम ने यह किस्सा सुनकर) फरमाया, यही वह मौका है जिसकी हमको तलाश थी, सो दोनों अपने कदमों के निशान देखते हुए उल्टे लौटे। (64) सो (वहाँ पहुँचकर) उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे (यानी ख़िज़्र अलैहिस्सलाम) को पाया, जिनको हमने अपनी (खास) रहमत (यानी मकबूलियत) दी थी, और हमने उनको अपने पास से (एक खास तरीके का) इल्म सिखाया था। (65) मूसा ने (उनको सलाम किया और) उनसे फरमाया, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त से कि जो मुफ़ीद इल्म आपको (अल्लाह की तरफ़ से) सिखाया गया है, उसमें से आप मुझको भी सिखला दें। (66) (उन बुजुर्ग ने) जवाब दिया, आप से मेरे साथ (रहकर मेरे कामों पर) सब्र न हो सकेगा। (67) और (भला) ऐसे मामलों पर आप कैसे सब्र करेंगे जो आपकी जानकारी से बाहर हैं। (68) (मूसा ने) फरमाया कि इन्शा-अल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला (यानी ज़ब्त करने वाला) पाएँगे, और मैं किसी बात में आपके खिलाफ़े हुक्म न करूँगा। (69) (उन बुजुर्ग ने) फरमाया कि (अच्छा) अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो (इतना ख़याल रहे कि) मुझसे किसी बात के बारे में कुछ पूछना नहीं, जब तक कि उसके बारे में मैं खुद जिक्र (शुरू) न कर दूँ। (70) ♦

फिर दोनों (किसी तरफ़) चले, यहाँ तक कि जब दोनों नाव में सवार हुए तो (उन बुजुर्ग ने) उस नाव में छेद कर दिया। (मूसा ने) फरमाया कि क्या आपने इस नाव में इसलिए छेद किया (होगा) कि इसमें बैठने वालों को डुबो दें। आपने बड़ी भारी (यानी ख़तरे की) बात की। (71) (उन बुजुर्ग ने) कहा, क्या मैंने कहा नहीं था कि आप से मेरे साथ सब्र न हो सकेगा। (72) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) फरमाया, (कि मुझको याद न रहा था, सो) आप मेरी भूल (चूक) पर पकड़ न कीजिए और मेरे इस मामले में मुझपर ज़्यादा तंगी न डालिए। (73) फिर दोनों (कशती से उतरकर आगे) चले, यहाँ तक कि जब एक (छोटी उम्र के) लड़के से मिले तो (उन बुजुर्ग ने) उसको मार डाला, (मूसा अलैहिस्सलाम घबराकर) कहने लगे कि आपने एक बेगुनाह जान को मार डाला (और वह भी) किसी जान के बदले के बग़ैर, बेशक आपने (यह तो) बड़ी बेजा हरकत की। (74)

1. इस सफर की वजह यह हुई थी कि एक बार मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल में बअज़ (तकरीर) फरमाया तो किसी ने पूछा कि इस वक्त आदिमियों में सबसे बड़ा आलिम कौन शख्स है? आपने फरमाया, मैं। मतलब यह था कि उन उलूम में जिनको अल्लाह की निकटता हासिल करने में दखल है, मेरे बराबर कोई नहीं। और यह फरमाना सही था क्योंकि आप बड़े मर्तबे के रसूल थे। चूँकि ज़ाहिरन लफ़ज़ आम था इसलिए अल्लाह तआला को मन्ज़ूर हुआ कि आपको कलाम करने और बोलने में एहतियात की तालीम दी जाए। इशार्द हुआ कि दो दरियाओं के संगम में हमारा एक बन्दा तुमसे भी ज़्यादा इल्म रखता है। मतलब यह था कि बाज़ उलूम में वह तुमसे भी ज़्यादा है, अगरचे उन उलूम को अल्लाह से करीब होने में दखल न हो, लेकिन इस बिना पर जवाब में बिला कैद तो अपने को सबसे ज़्यादा जानने वाला न कहना चाहिए था। गरज़ मूसा अलैहिस्सलाम उनसे मिलने के इच्छुक हुए और पूछा कि उन तक पहुँचने की क्या सूरत है? इशार्द हुआ कि एक बेजान मछली अपने साथ लेकर सफ़र करो, जहाँ वह मछली गुम हो जाए वह शख्स वहाँ है। उस वक्त मूसा अलैहिस्सलाम ने यूँसा अलैहिस्सलाम को अपने साथ लिया और यह बात फरमाई।